तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (4)

(पारा 16 से 20 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर
"अ़ल्लामा इब्ने कसीर" रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम.ए. अलीग.)

Maktab E Ashraf

http://salfibooks.blogspot.com

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

इस्लामी दुनिया की निहायत मोतबर क़ुरआनी तफ़सीर। मुस्लिम उलेमा इस पर एकमत हैं कि इसके बाद की तमाम क़ुरआनी तफ़सीरों में इससे मदद ली गयी है।

Maktab E Ashraf

तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (4)

(पारा 16 से 20 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर

“अ़ल्लामा इब्ने कसीर” रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अलीग.)

रीडर अ़ल्लामा इक़बाल यूनानी मेडिकल कॉलेज, मुज़फ़्फ़र नगर (उ.प्र.)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

http://salfibooks.blogspot.com

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित हैं।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि अथवा अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

Maktab-e-Ashraf

तफ़सीर इब्ने कसीर - जिल्द (4)

(पारा 16 से 20 तक)

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी एम.ए. (अलीग.)

ISBN 81-7231-984-3

प्रथम संस्करण - 2011

पुनः प्रकाशन - 2015

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

1511-12, पटौदी हाउस, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)

फोन : +91-11-23244556, 23253514, 23269050, 23286551

e-mail: info@ibsbookstore.com

Website: www.ibsbookstore.com

OUR ASSOCIATES

- Angel Book House FZE, **Sharjah (U.A.E.)**
- Azhar Academy Ltd., **London (United Kingdom)**
- Lautan Lestari (Lestari Books), **Jakarata (Indonesia)**
- Husami Book Depot, **Hyderabad (India)**

Printed in India

Maktab E Ashraf

समर्पित

❁ अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला के कलाम क़ुरआन मजीद के प्रथम व्याख्यापक, हादी-ए-आ़लम, आख़िरी पैग़म्बर, तमाम नबियों में अफ़ज़ल **हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम** के नाम, जिनका एक-एक क़ौल व अ़मल कलामे रब्बानी और मन्शा-ए-इलाही की अ़मली तफ़सीर था।

❁ **दारुल-उलूम देवबन्द** के नाम, जो क़ुरआन मजीद और उसकी तफ़सीर (हदीसे पाक) की अ़ज़ीमुश्शान ख़िदमत और दीनी रहनुमाई के सबब पूरी इस्लामी दुनिया में एक मिसाली संस्था है। जिसके इल्मी फ़ैज़ से मुस्तफ़ीद (लाभान्वित) होने के सबब इस नाचीज़ को इल्मी समझ और क़ुरआन मजीद की इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ नसीब हुई।

❁ वालिदे मोहतरम **जनाब मुहम्मद दीन त्यागी मरहूम** के नाम, जिनकी जिद्दोजहद, मेहनत भरी ज़िन्दगी और बहाया हुआ पसीना मेरी रग व जाँ में ख़ून के क़तरे बनकर दौड़ रहा है, जो मेरी जिस्मानी और इल्मी ऊर्जा का ज़ाहिरी सबब है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktaba E Ashraf

दिल की गहराईयों से शुक्रिया

❁ मोहतरम जनाब अब्दुस्समी साहिब (मालिक समी पब्लिकेशंस/ इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) का, जिनकी मुहब्बतों, इनायतों, क़द्रदानियों और मुझे अपने इदारे से जोड़े रखने के सबब क़ुरआन मजीद की यह अहम ख़िदमत अन्जाम पा सकी।

❁ मोहरतम जनाब हाजी मुहम्मद शाहिद अख़्लाक़ साहिब (पूर्व मेयर/ सांसद लोक सभा, मेरठ शहर) का, जिनकी नवाज़िशों, मुहब्बत व इनायत, ख़ास तवज्जोह, हौसला-अफ़ज़ाई, दुआओं, उलेमा नवाज़ी और हर तरह की मदद ने शौक़ व जज़्बात में नई उमंगें पैदा कीं, जिससे इस काम के पूरा करने में बड़ी मदद मिली।

❁ जनाब मौलाना मुफ़्ती निसार अहमद शमूसुल-हुसैनी साहिब का, जिन्होंने मेरी इस कोशिश को आंशिक रूप से मुलाहिज़ा फ़रमाकर मेरी और इसका प्रकाशन करने वाले इदारे की सराहना की।

अल्लाह तआ़ला इन सब हज़रात और इनके अ़लावा मेरे दूसरे सहयोगियों, सलाह मश्विरा देने वालों, शुभ-चिन्तकों और हौसला बढ़ाने वाले हज़रात को भी अपनी तरफ़ से ख़ास जज़ा और बदला इनायत फ़रमाये जो क़दम-क़दम पर मेरी हिम्मत बढ़ाते और मेरी मामूली कोशिशों को सराहते हैं। आमीन या रब्बल्-अ़लमीन।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktab E Ashraf

प्रकाशक की ओर से

अल्लाह रब्बुल-आलमीन का बेहद करम व एहसान है कि उसने मुझे और मेरे इदारे (समी पब्लिकेशंस/ इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) को इस्लामी किताबों के प्रकाशन के ज़रिये अपने दीन की अदना ख़िदमत की तौफ़ीक़ से नवाज़ा।

माशा-अल्लाह हमारे इदारे से क़ुरआन पाक, हदीस मुबारक और दीनी विषयों पर अनेक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। बल्कि मुझे कहना चाहिये कि ख़िदमत का एक मैदान ऐसा है जिसको पूरा करने में इस्लामिक बुक सर्विस के हिस्से में जो दीनी ख़िदमत आई है देहली की दूसरी प्रकाशन-संस्थाओं को वह मक़ाम नहीं मिल सका। मेरी मुराद अंग्रेज़ी भाषा में इस्लामिक किताबों का मेयारी प्रकाशन और अमेरिकी व यूरोपीय देशों में इस्लामी तालीमात से वाक़फ़ियत तलब करने वालों तक इस्लामिक लिट्रेचर का पहुँचाना है। अल्लाह का करम व फ़ज़्ल है कि इस्लामिक बुक सर्विस के द्वारा प्रकाशित क़ुरआन पाक के अ़रबी और इंग्लिश तर्जुमे पूरी दुनिया में फैले हुए और मक़बूल हैं।

सन् 2003 में हमने हिन्दी भाषा में अनुवादित क़ुरआन करीम प्रकाशित किया। यह हकीमुल-उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह. के तर्जुमे (यानी 81 नम्बर क़ुरआन पाक) का हिन्दी संस्करण था। जिसको इस्लामिक बुक सर्विस की दरख़्वास्त पर एक मुआ़हदे के तहत जनाब मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी साहिब ने हिन्दी ज़बान में तर्जुमा किया था। अल्लाह का शुक्र है कि इस तर्जुमे को उर्दू की तरह हिन्दी भाषा में भी बहुत ज़्यादा मक़बूलियत हासिल हुई और हिन्दी में क़ुरआन पाक का तर्जुमा पढ़ने वालों ने इसे हाथों-हाथ लिया।

बहुत दिनों से मेरे दिल में यह बात खटकती थी कि हिन्दी भाषा में क़ुरआन पाक की कोई ऐसी तफ़सीर नहीं है जो हर तब्क़े के लिये क़ाबिले क़बूल हो। मैंने इसका ज़िक्र मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी से किया। उन्होंने बताया कि मेरा इरादा "तफ़सीर इब्ने कसीर" पर काम करने का है, और इस बारे में वह काम का एक ख़ाका भी तैयार कर चुके हैं। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! यह तो बहुत ही अच्छी बात है। और उनसे समी पब्लिकेशंस नई दिल्ली के लिये इस तफ़सीर को हिन्दी में तैयार करने का आग्रह किया। उन्होंने इसको मन्ज़ूर कर लिया और इस तरह मौजूदा ज़माने की एक अहम ज़रूरत की तकमील का सामान मुहैया हो गया।

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी की हिन्दी और उर्दू में दर्जनों किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। वह लेखक भी हैं और अनुवादक भी। उनकी लिखी और अनुवाद की हुई पचास से ज़ायद किताबें मार्केट में मौजूद हैं। वह अपने तर्जुमे में न तो अ़रबी और फ़ारसी के अलफ़ाज़ को ज्यों का त्यों बाक़ी रहने देते हैं और न ही मुश्किल और कठिन हिन्दी शब्दों को इस्तेमाल करते हैं। एक आ़म हिन्दुस्तानी ज़बान, जो ख़ास तौर पर मुस्लिमों में बोली और समझी जाती है, उसका इस्तेमाल करते हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह क़ुरआनी ख़िदमत की हिन्दी ज़बान में यह अहम कड़ी आपके सामने है। उम्मीद है कि आपको पसन्द आयेगी और क़ुरआन पाक के पैग़ाम को समझने और उसको आ़म करने में एक अहम रोल अदा करेगी।

हमने इस तफ़सीर को पाँच-पाँच पारों पर तक़सीम किया है। इस तरह मुकम्मल तफ़सीर छह जिल्दों में है। जो चार हज़ार से ज़्यादा पृष्ठों पर मुश्तमिल है।

मैं अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ होने पर सरे नियाज़ झुकाता हूँ और उस पाक ज़ात का बेहद शुक्र अदा करता हूँ। अल्लाह तआ़ला क़ुरआन पाक की इस ख़िदमत को आक़ा-ए-नामदार नबी-ए-रहमत, हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये, आपकी आले पाक और अहले-बैत के लिये, आपके सहाबा किराम के लिये, तमाम बुज़ुर्गाने दीन और उलेमा-ए-किराम के लिये, मेरे और मेरे माँ-बाप, अहले ख़ानदान, अहल व अ़याल और मेरे इदारे से जुड़े तमाम हज़रात के लिये मग़फ़िरत व रहमत और ख़ैर व बरकत का ज़रिया बनाये। आमीन

अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार
अ़ब्दुस्समी
चेयरमैन
समी पब्लिकेशंस/ इस्लामिक बुक सर्विस, नई दिल्ली

Maktab E Ashraf

फ़ेहरिस्ते उनवानात

पारा नम्बर 16-20

उनवान	पेज	उनवान	पेज
● समर्पित	3	● हैरानी	41
● दिल की गहराईयों से शुक्रिया	4	● कोई निशानी	42
● प्रकाशक की ओर से	5	● हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम	43
पारा नम्बर सोलह		● हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम का क़िस्सा	45
● हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का दोबारा वायदा	15	● पैदाईश का दर्द और रुस्वाई का ख़ौफ़	47
● सफ़र की एक और मन्ज़िल	16	● अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तसल्ली भरा इरशाद	49
● पर्दा उठने के बाद	16	● दुनिया में सबसे पहला बोलने वाला बच्चा	51
● क़त्ल किये जाने वाले लड़के का राज़	17	● ईसा बिन मरियम	55
● गिरती हुई दीवार	18	● कोई बाक़ी न रहेगा	57
● ज़ुल्क़रनैन	21	● हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा	59
● ज़ुल्क़रनैन की दूसरी मन्ज़िल	23	● आज़र की बद-नसीबी	60
● सूरज के निकलने की जगह	25	● हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह पर इनाम व इकराम	62
● याजूज माजूज	27	● हज़रत मूसा व फ़िरऔ़न, नेकबख़्ती की दावत और बदबख़्त का अन्जाम	63
● यह सिर्फ़ ख़ुदा का फ़ज़्ल है	29	● हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का तज़किरा	64
● जहन्नम	31	● नबी-ए-सादिक़ (सच्चे नबी)	66
● बहुत बुरा अ़मल	32	● यह अम्बिया की जमाअ़त	67
● नेक अ़मल	34	● ना-अहल और नाफ़रमान औलाद	68
● रब के कलिमात	34	● हमेशा रहने वाली जन्नतें	71
● आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी बशर हैं	35		
सूरः मरियम			
● हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा	39		
● ख़ुशख़बरी	40		

उनवान	पेज
● इनसान की इबादत	72
● क़ियामत का इनकार	
और इनसान की भूल	73
● जहन्नम के ऊपर से गुज़र	75
● काफ़िरों की बेहूदा बकवास	78
● जल्द ही मालूम हो जायेगा	79
● बाक़ी रहने वाली नेकियाँ	80
● ज़रूर पूछा जायेगा	80
● जल्दी मत कीजिये	82
● दम मारने की भी मजाल नहीं	82
● नफ़रत भरा कलिमा	85
● ईमान की मिठास और आपसी मुहब्बत	87
सूरः तॉ-हा	
● सूरः तॉ-हा की फ़ज़ीलत	88
● यह पवित्र किताब	89
● हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम	
का वाक़िआ़	92
● मैं तेरा रब हूँ	93
● हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की लाठी	94
● कुछ और मोजिज़े	96
● दुआ़ओं का कबूल होना	
और लुत्फ़ व करम की बारिश	100
● मद्यन में क़ियाम	112
● हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को ख़तरा	113
● फ़िरऔ़न के सवालात	115
● कुछ निशानियाँ	117
● हक़ स्पष्ट होने के बाद भी हठधर्मी,	
विरोध और बैर	118
● हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम	
की नसीहत	119

उनवान	पेज
● जादू वह जो सर चढ़कर बोले	121
● फ़िरऔ़न बदबख़्त ने हक़ को	
कबूल नहीं किया	122
● जन्नतुल-फ़िरदौस	124
● अल्लाह तआ़ला का हुक्म	125
● बनी इस्राईल पर ख़ुदा तआ़ला	
के एहसानात	126
● एक सवाल और उसका जवाब	128
● हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम	
की नसीहत और समझाना	130
● गुफ़्तगू और बहस-मुबाहसा	130
● सामरी पर डाँट-डपट	132
● पहले गुज़री उम्मतों की ख़बरें	133
● सूर का फूँका जाना	134
● पहाड़ों के बारे में सवाल	135
● वह दिन ऐसा होगा	136
● क़ुरआन मजीद	137
● हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की भूल	139
● एक हुक्म	141
● जज़ा व सज़ा	143
● पहले ज़मानों के लोग	144
● यह सिर्फ़ चन्द दिन की बहार है	145
● आसमानी किताबें और सहीफ़े	147
पारा नम्बर सत्रह	
सूरः अम्बिया	
● हिसाब-किताब की घड़ी	151
● जानने वालों से मालूम कर लो	153
● जब वह घड़ी आ पहुँची तो	155
● यह सब कुछ बेकार नहीं	156

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
अ़र्श-ए-अ़ज़ीम का मालिक	158
अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं	159
कितनी ग़लत बात कहते हैं	160
कुछ निशानियाँ	161
हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है	164
ये मज़ाक़ उड़ाते हैं	165
वह वायदे का वक़्त आने वाला है	166
पहली उम्मतों की बदबख़्ती और उसकी इब्रतनाक सज़ा	167
एक तराज़ू	168
ग़ैब पर ईमान लाना	170
हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम	171
हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह का एक हकीमाना क़दम	173
गुमराह क़ौम का अफ़सोस	176
अपनी झुंझलाहट और नाकामी को छुपाने के लिये	176
क़ौमे लूत और दुनिया की सबसे बेहूदा बद-अ़मली	179
नूह अ़लैहिस्सलाम और बेपनाह दर्द व तकलीफ़ से निजात	180
हज़रत दाऊद और सुलैमान अ़लैहिमस्सलाम	181
हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम का सब्र	185
चन्द सब्र वाले अम्बिया हज़रात	189
हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम का किस्सा	192
अल्लाह तआ़ला की बारगाह का एक और मक़बूल इनसान	195
हज़रत ईसा जिनके नूरे नज़र हैं	195
वह दीन जिस पर सबको चलना चाहिये	196
अमन व शान्ति के दुश्मन 'याजूज व माजूज'	197
बुत-परस्तों को तंबीह	202
क़ियामत के दिन की एक झलक	205
ज़बूर में एक अटल हक़ीक़त का इज़हार	206
वह ख़ुदा एक है	208
सूरः हज	
क़ियामत का ज़लज़ला	210
यह बड़ी बेवक़ूफ़ी और जहालत है	213
क़ियामत और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने की कुछ दलीलें	214
अल्लाह के बारे में बिना जानकारी के कलाम करना	218
यह निफ़ाक़ है	219
मोमिनों का हाल	220
एक ग़लत ख़्याल	221
क़ियामत के दिन	222
पूरी कायनात अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दे में है	222
दो मुक़ाबिल और उनका हाल	224
रेशमी लिबास	226
मस्जिदे हराम (काबे की मस्जिद)	227
हरम शरीफ़ के संस्थापक	230

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
● ख़ास मुद्दत में कुछ ख़ास अहकाम	232
● इन चीज़ों से बचो	235
● अल्लाह की यादगारें	236
● हर कौम का कोई दीन, क़िब्ला और मज़हब है	239
● क़ुरबानी के ऊँट	240
● तक़्वे और परहेज़गारी की ज़रूरत है	244
● ख़ुदा तआ़ला इन्हें पसन्द नहीं करता	245
● मज़लूमों के साथ अल्लाह है	246
● ये अगर ग़ालिब आ जायें	249
● पहली उम्मतें और उनके जुर्मों की एक लम्बी दास्तान	250
● अपनी बेवक़ूफ़ी का इज़हार कर रहे हैं	252
● मेरा काम तो सिर्फ़ डराना है	254
● कुछ ग़लत तमन्नायें	255
● अब किस चीज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं?	258
● हिजरत और उस पर अज्र व सवाब	259
● अल्लाह तआ़ला के अ़लावा तमाम माबूद लचर हैं	261
● ये दलाईल और निशानियाँ तुमसे क्या कहते हैं	262
● हर कौम की इबादत का एक तरीक़ा है	264
● अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को पूरी तरह जानता है	265
● यह कैसी बेवक़ूफ़ी और हिमाक़त है	266
● एक मिसाल	267
● ये ख़ुदा के क़ासिद और पैग़ाम पहुँचाने वाले	268
● बस उसकी इबादत करो	270

पारा नम्बर अट्ठारह

सूरः मोमिनून

उनवान	पेज
● फ़लाह और कामयाबी पाने वाले मोमिन हज़रात	273
● इनसान और उसकी पैदाईश	278
● सात आसमान	281
● यह मीठे पानी के भंडार	282
● लेकिन इसके बावजूद	284
● हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़	285
● फिर बहुत सी उम्मतें आयीं	287
● अल्लाह तआ़ला का निरंतर और लगातार पैग़ाम	288
● हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम	289
● हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम	289
● हर एक अपने अ़क़ीदों पर संतुष्ट है	290
● नेक लोगों की हालत	293
● एक क़ानून	294
● सोच-समझ से काम न लिया	296
● और जब अ़ज़ाब आया	300
● ग़ैर-इख़्तियारी तौर पर मानना और झुकाव	302
● वह है सबका मालिक	304
● अच्छे अख़्लाक़ का प्रदर्शन	305
● एक बेवक़्त की तमन्ना	307
● आमाल का तौला जाना	309
● अपनी ख़ता और जुर्म को स्वीकार करना	311
● तुम मुसलमानों से मज़ाक़ करते थे	312
● एक सवाल	313
● काफ़िर कभी फ़लाह नहीं पा सकता	315

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज	उनवान	पेज
सूरः नूर		● अल्लाह की पाकी और तारीफ़	370
● अहकाम व हिदायात	317	● उठते हुए बादल	371
● एक फ़ितरी बात	320	● तरह-तरह की मख़्लूक़ात	372
● पाकदामन औरतों पर बदकारी की तोहमत लगाना	323	● खुली और स्पष्ट निशानियाँ	372
● लिआ़न और उसके अहकाम	324	● ज़ाहिर में ईमान मगर दिल ईमान से ख़ाली	373
● मुनाफ़िक़ों की बकवास और नबी-ए-पाक के घराने पर डायरेक्ट हमला	328	● तुम्हारी हक़ीक़त मालूम है	375
● बहुत बड़ा बोहतान	336	● खुदा तआ़ला का वायदा	377
● बुरी हरकत और दुस्साहस	337	● रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फ़रमाँबरदारी	381
● नबी-ए-करीम की पाक बीवियों के साथ अच्छा गुमान रखना निजात का ज़रिया है	338	● इजाज़त लेने से संबन्धित कुछ और अहकाम	383
● बुरी और बेहयाई की बातों का फैलाना	338	● कुछ माज़ूर व मजबूर लोगों का ज़िक्र	385
● शैतान के क़दम से क़दम न मिलाओ	339	● नबी-ए-पाक के पास से रुख़्सत होने का तरीक़ा	389
● ख़ैर और भलाई से रुकना बुरा है	340	● रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अदब व एहतिराम	389
● पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाना	341	● खुदा तआ़ला को सब इल्म है	391
● बदकार औरतें क़ुदरती तौर पर बदकार मर्दों ही के हिस्से में आती हैं	343	**सूरः फ़ुरक़ान**	
● किसी के घर में इजाज़त के बग़ैर दाख़िल मत होओ	345	● सिर्फ़ अल्लाह ही की ज़ात इबादत के लायक़ है	392
● मोमिन औ़रतों को किस तरह रहना चाहिये?	348	● दूसरों को माबूद बनाना कितनी बड़ी हिमाक़त है	394
● औ़रतों से संबन्धित अहकाम की एक लम्बी फ़ेहरिस्त	351	● पहले लोगों की बेसनद बातें	395
● निकाह	355	● ये तो ख़ालिस हिमाक़तें हैं	397
● ज़मीन व आसमान का नूर	359	● हमेशा रहने की जन्नत	400
● मोमिनों की बाज़ सिफ़तें	362	● गुमराह और सही रास्ते से भटके हुए	401
● चमकते हुए रेत के ढेर	368	● यह सिलसिला तो पहले से चला आता है	403

Maktaba E Ashraf

उनवान	पेज
पारा नम्बर उन्नीस	
● असल मक़सद तो इनकार है, बेकार के बहाने बनाते हैं	404
● वक़्त निकलने के बाद हसरत व नाकामी का एहसास	408
● नबी अ़लैहिस्सलाम की एक शिकायत	411
● एक बेकार का एतिराज़	412
● कुछ और नाफ़रमान व घमंडी क़ौमें	414
● कायनात के सरदार से, कायनात के सबसे बुरे इनसान का मज़ाक़	416
● आयात व निशानियाँ	417
● ये निशानियाँ	418
● अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है	420
● काफ़िरों की बेवक़ूफ़ी और जहालत	422
● रोशन सूरज और चमकता हुआ चाँद	424
● अल्लाह के नेक बन्दे	426
● मोमिनों की कुछ और सिफ़ात	429
● मोमिन बन्दों की कुछ और ख़ुसूसियतें	433
● अल्लाह के इन नेक बन्दों का इनाम	435
सूरः शु-अ़रा	
● ईमान व इस्लाम की दावत को आम करने के लिये आपकी कोशिशें	437
● मूसा अ़लैहिस्सलाम की फ़िरऔ़न को सही राह पर लाने की बेइन्तिहा कोशिश	439
● फ़िरऔ़न का घमंड और सरकशी	441
● फ़िरऔ़न की हज़रत मूसा को धमकियाँ	443
● हक़ व बातिल का आमना-सामना बातिल की शिकस्त और हक़ की फ़तह	445
● फ़िरऔ़न का मोमिनों से धमकी भरा ख़िताब	446
● बनी इस्राईल का मुसीबतों और ग़ुलामी से छुटकारा	447
● दुनिया का सबसे बड़ा सरकश विनाशक मौजों की भेंट	450
● हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की तब्लीग़ी कोशिशें	452
● अल्लाह की ज़ात पर यह यक़ीन	453
● हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़	454
● जन्नत मोमिनों का बेहतरीन ठिकाना	456
● क़ौमे नूह की नाफ़रमानी	457
● कितनी बेवक़ूफ़ी की बात	458
● हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को धमकियाँ	459
● क़ौमे आद	460
● क़ौम की बद-नसीबी, दावत से मुँह फेरना और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से पकड़	462
● क़ौमे समूद और हज़रत सालेह अ़लैहि.	463
● बड़ी कारामद नसीहतें	464
● वही जहालत भरा और अहमक़ाना जवाब	465
● क़ौमे लूत	466
● क़ौमे लूत की बद-अ़मलियाँ और नसीहत न मानना	467
● शुऐब अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम	468
● कुछ नसीहतें	469
● क़ौमे शुऐब की नाफ़रमानी और बदबख़्ती	470

Mahtab E Ashraf

उनवान	पेज
● यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से उतारा हुआ है	472
● हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बेसत और क़ुरआन का ज़िक्र	473
● मुजरिमों का बुरा अन्जाम	474
● ये क़िस्मत के मारे और बद-नसीब	476
● नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कुछ हिदायतें	477
● शैतान के यार-दोस्त	482
सूरः नम्ल	
● यह अल्लाह का कलाम है	486
● हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की नुबुव्वत	488
● कायनात के एक अ़ज़ीमुश्शान बादशाह और हक़ीर चींवटी की गुफ़्तगू	491
● हुदहुद और सुलैमान अ़लैहिस्सलाम	494
● हुदहुद का जवाब	496
● सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का इरादा	497
● बिल्क़ीस का मश्विरा	499
● यह चाल यहाँ नहीं चलेगी	500
● हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की एक और तदबीर	502
● बिल्क़ीस की हैरानी	504
● क़ौमे समूद और हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम	508
● विरोधियों और मुख़ालिफ़ों की जमाअ़त, उनकी शरारत और ख़ुदा तआ़ला का इब्रतनाक अ़ज़ाब	509
● बदकार और बुरी राह चलने वाली क़ौम	511
● इन नाफ़रमान और सरकश क़ौमों की हलाकत ख़ुदा तआ़ला का एक एहसान है	512
पारा नम्बर बीस	
● इस दुनिया का पालनहार	514
● अल्लाह की क़ुदरत की ये निशानियाँ और दलीलें	516
● परेशान हाल और उस पर हमारी तवज्जोह व इनायत	517
● ज़रा ग़ौर तो करो!	520
● कौन है जो इन कामों को अन्जाम देता है	521
● ग़ैब का इल्म	522
● एक बेहूदा ख़्याल	524
● एक सवाल का जवाब	524
● क़ुरआन पाक हिदायत की किताब है	526
● क़ियामत के क़रीब ज़ाहिर होने वाला एक ख़ास जानवर	527
● मेहशर का दिन	529
● और जब सूर फूँका जायेगा	531
● चन्द अहकाम	533
सूरः क़सस	
● फ़िरऔ़न की सरकशी और बनी इस्राईल पर अल्लाह की रहमत	536
● मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔ़न का घर	538
● माँ की मुहब्बत जोश में	540
● एक नागवार वाक़िआ़ और हज़रत मूसा का मिस्र को छोड़ना	543

Maktaba-E-Ashraf

उनवान	पेज
राज़ का खुल जाना	544
एक ईमान वाले शख़्स की हमदर्दी	544
मोमिन का सफ़र	545
हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की पेशकश	547
नुबुव्वत मिलना और फ़िरऔन के दरबार में हक़ का ऐलान	551
हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की गुज़ारिश	553
हक़ की तरफ़ दावत पर फ़िरऔनियों का बेहूदा जवाब	555
फ़िरऔन का दुस्साहस	556
एक मुक़द्दस और पवित्र किताब	557
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ख़िताब	559
यह उनकी बहाने-बाज़ी और बकवास है	562
उन पर सलामती और अल्लाह की रहमत हो	564
हिदायत ख़ुदा तआ़ला ही देते हैं	567
हम ज़ुल्म नहीं करते	568
एक अच्छा वायदा	570
आख़िरत का दिन और काफ़िरों से एक सवाल	572
हुक्म सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला ही का है	574
अल्लाह के अ़लावा किसी के इख़्तियार में कुछ नहीं	575
शिर्क की कोई दलील है तो लाओ	576
क़ारून हलाक हो गया	577
क़ारून की हिमाक़त	578
ग़लत तमन्नायें	580
क़ारून का ज़मीन के अन्दर धंसना	581
आख़िरत का जहान	583
एक वायदा	584

सूरः अ़न्कबूत

उनवान	पेज
इम्तिहान और आज़माईश ज़रूरी है	587
अल्लाह की मुलाक़ात, जिससे बढ़कर कोई दौलत नहीं	588
माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक	589
ये कमज़ोर दिल वाले मुनाफ़िक़ लोग	590
काफ़िरों की बकवास और बेहूदा गोई	591
एक हज़ार साल तक लगातार तब्लीग़	593
हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम	595
दोबारा पैदा करना और मरने के बाद की ज़िन्दगी	597
हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की धमकियाँ	598
हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम	600
हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की तंबीह	602
फ़रिश्तों की हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह से गुफ़्तगू	603
मद्यन की सरज़मीन पर एक पैग़म्बर की पुकार	605
क़ौमे आ़द व समूद	606
मकड़ी का घर	607
यह कायनात कोई खेल नहीं	608

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर सोलह

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۭ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ۝	(उन बुज़ुर्ग ने) फ़रमाया कि क्या मैंने आप से नहीं कहा था कि आप से मेरे साथ सब्र न हो सकेगा? (75) (मूसा ने) फ़रमाया कि (ख़ैर अब की बार और जाने दीजिए) अगर इस (बार) के बाद आप से किसी मामले के बारे में कुछ पूछूँ तो आप मुझको अपने साथ न रखिए। बेशक आप मेरी तरफ़ से उज़्र (की इन्तिहा) को पहुँच चुके हैं। (76)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का दोबारा वायदा

हज़रत ख़ज़िर ने इस बार और ज़्यादा ताकीद से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को उनकी मन्ज़ूर की हुई शर्त के ख़िलाफ़ करने पर तंबीह फ़रमाई। इसी लिये हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने भी इस बार और ही राह इख़्तियार की और फ़रमाने लगे अच्छा अब की दफ़ा और जाने दो, अब अगर मैं आप पर एतिराज़ करूँ तो मुझे आप अपने साथ न रहने देना, यक़ीनन आप बार-बार मुझे तंबीह फ़रमाते रहे और अपनी तरफ़ से आपने कोई कमी नहीं की। अब अगर क़ुसूर (ग़लती) करूँ तो सज़ा पाऊँ। इब्ने जरीर में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्ल. की आ़दते मुबारक थी कि जब कोई याद आ जाता और उसके लिये आप दुआ़ करते तो पहले अपने लिये करते। एक दिन फ़रमाने लगे कि हम पर अल्लाह की रहमत हो और मूसा पर, काश कि वह अपने साथी के साथ और भी रुकते और सब्र करते तो और भी बहुत सी हैरत-अंगेज़ बातें मालूम होतीं, लेकिन उन्होंने तो यह कहकर बात मुख़्तसर कर दी कि अगर अब मालूम करूँ तो मुझको अपने साथ से अलग कर दीजिए। मैं अब आपको ज़्यादा तकलीफ़ में डालना नहीं चाहता।

فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ِاسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ۭ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ۝ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ	फिर दोनों (आगे) चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव वालों पर गुज़र हुआ तो वहाँ वालों से खाने को माँगा, (कि हम मेहमान हैं) सो उन्होंने उनकी मेहमानी करने से इनकार कर दिया। इतने में उनको वहाँ एक दीवार मिली जो गिरने ही वाली थी, तो (उन बुज़ुर्ग ने) उसको (हाथ के इशारे से) सीधा कर दिया। (हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि अगर आप चाहते तो (इस काम) पर कुछ मुआ़वज़ा ही ले लेते। (77) (उन बुज़ुर्ग ने) कहा कि यह वक़्त हमारे

Maktab E Ashraf

سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ○	और आपके अलग होने का है। (जैसा कि ख़ुद आपने शर्त रखी थी) मैं उन चीज़ों की हक़ीक़त आपको बतलाए देता हूँ जिन पर आपसे सब्र न हो सका। (78)

सफ़र की एक और मन्ज़िल

दो बार के इस वाक़िए के बाद फिर दोनों हज़रात मिलकर चले, एक बस्ती में पहुँचे। कहा जाता है कि वह बस्ती ऐका थी। यहाँ के लोग बड़े ही बख़ील थे, हद यह कि दो भूखे मुसाफ़िरों के तलब करने पर उन्होंने रोटी खिलाने से भी साफ़ इनकार कर दिया। वहाँ देखते हैं कि एक दीवार गिरना ही चाहती है, जगह छोड़ चुकी है, झुक पड़ी है। उसे देखते ही यह (हज़रत ख़ज़िर) कमर कस कर लग गये और देखते ही देखते उसे मज़बूत और बिल्कुल ठीक कर दिया। पहले हदीस बयान हो चुकी है कि आपने अपने दोनों हाथों से उसे सही तरह खड़ा कर दिया। उसका टेढ़ापन सही हो गया और दीवार दुरुस्त बन गयी।

उस वक़्त फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बोल उठे कि सुब्हानल्लाह! इन लोगों ने तो हमें खाने तक को न पूछा बल्कि माँगने पर देने के लिये तैयार न हुए। अब जो तुमने उनकी यह मज़दूरी कर दी, इस पर कुछ उजरत क्यों न ली? जो बिल्कुल हमारा हक़ था। उस वक़्त वह ख़ुदा का बन्दा बोल उठा कि लो साहिब अब मुझमें और आप में इक़रार के अनुसार जुदाई हो गयी। क्योंकि बच्चे के क़त्ल पर आपने सवाल किया था, उस वक़्त जब मैंने आपको उस ग़लती पर टोका था तो आपने ख़ुद ही कहा था कि अब किसी बात को पूछूँ तो मुझे अपने से अलग कर देना। अब सुनो जिन बातों पर आपने ताज्जुब से सवाल किया और बरदाश्त न कर सके, उनकी हिक्मत आप पर ज़ाहिर किये देता हूँ।

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ○	वह जो नाव थी, सो कुछ ग़रीब आदमियों की थी, जो (उसके ज़रिये से) दरिया में मेहनत (मज़दूरी) करते थे। सो मैंने चाहा कि उसमें ऐब डाल दूँ और (वजह उसकी यह थी कि) उन लोगों से आगे की तरफ़ एक (ज़ालिम) बादशाह था, जो हर (अच्छी) नाव को ज़बरदस्ती पकड़ रहा था। (79)

पर्दा उठने के बाद

बात यह है कि ख़ुदा तआ़ला ने उन बातों के अन्जाम से हज़रत ख़ज़िर को मुत्तला (अवगत) करा दिया था और उन्हें जो हुक्म मिला था वह उन्होंने किया था। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को उस राज़ का इल्म न था, इसलिये बज़ाहिर इसे ग़लत और नाजायज़ समझ कर उस पर रोक-टोक करते थे। लिहाज़ा हज़रत ख़ज़िर ने अब असल मामला समझा दिया। फ़रमाया कि कश्ती को ऐब दार (नुक़्स वाली) करने में तो यह मस्लेहत थी कि अगर सही सालिम होती तो आगे चलकर एक ज़ालिम बादशाह था जो हर अच्छी कश्ती को ज़बरदस्ती और ज़ुल्म करते हुए छीन लेता था। जब वह इसे टूटी-फूटी देखेगा तो छोड़ देगा।

अगर यह ठीक-ठाक और सही-सालिम होती तो सारी कश्ती ही उन मिस्कीनों के हाथ से छिन जाती और उनकी रोज़ी कमाने का यही एक ज़रिया था जो बिल्कुल जाता रहता। बयान किया गया है कि उस कश्ती के मालिक चन्द यतीम बच्चे थे। इब्ने जुरैज कहते हैं कि उस बादशाह का नाम हदद बिन बदद था। बुख़ारी शरीफ़ के हवाले से यह रिवायत पहले गुज़र चुकी है। तौरात में है कि यह अ़ीस बिन इस्हाक़ की नस्ल से था। तौरात में जिन बादशाहों का स्पष्ट ज़िक्र है उनमें एक यह भी है। वल्लाहु आलम।

और रहा वह लड़का, सो उसके माँ-बाप ईमान वाले थे, सो हमको अन्देशा (यानी तहक़ीक़) हुआ कि यह उन दोनों पर सरकशी और कुफ़्र का असर न डाल दे। (80) पस हम को यह मन्ज़ूर हुआ कि बजाय उसके उनका परवर्दिगार उनको ऐसी औलाद दे जो पाकीज़गी (यानी दीन) में उससे बेहतर हो, और (माँ-बाप के साथ) मुहब्बत करने में उससे बढ़कर हो। (81)	وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۝ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ۝

क़त्ल किये जाने वाले लड़के का राज़

पहले बयान हो चुका है कि उस नौजवान का नाम हैसूर था। हदीस में है कि उसकी फ़ितरत में ही कुफ़्र था। हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि बहुत मुम्किन था कि उस बच्चे की मुहब्बत उसके माँ-बाप को भी कुफ़्र की तरफ़ माईल कर दे। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि उसकी पैदाईश से उसके माँ-बाप बहुत खुश हुए थे और उसकी हलाकत (मारे जाने) से वे बहुत ग़मगीन हुए हालाँकि उसकी ज़िन्दगी उनके लिये हलाकत (तबाही) थी। पस इनसान को चाहिये कि ख़ुदा के फ़ैसले पर राज़ी रहे। क्योंकि ख़ुदा तआ़ला अन्जाम को जानता है और हम उससे ग़ाफ़िल हैं। मोमिन जो काम अपने लिये पसन्द करता है उसकी अपनी पसन्द से वह अच्छा है जो ख़ुदा उसके लिये पसन्द करता है। सही हदीस में है कि मोमिन के लिये जो ख़ुदा के फ़ैसले होते हैं वो सरासर बेहतरी और उम्दगी वाले होते हैं। क़ुरआने करीम में है:

عَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ.

यानी बहुत मुम्किन है कि एक काम तुम अपने लिये बुरा और नुक़सानदेह समझते हो और वही दर असल तुम्हारे लिये भला और मुफ़ीद हो।

हज़रत ख़ज़िर फ़रमाते हैं कि हमने चाहा कि ख़ुदा उन्हें ऐसा बच्चा दे जो बहुत परहेज़गार हो और जिससे माँ-बाप को ज़्यादा प्यार हो। या यह कि जो माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करे। पहले बयान हो चुका है कि उस लड़के के बदले ख़ुदा ने उनके यहाँ एक लड़की दी। बयान किया गया है कि उस बच्चे के क़त्ल के वक़्त उसकी माँ के हमल (गर्भ) में एक मुसलमान लड़का था और वह हामिला (गर्भवती) थीं।

और रही दीवार, सो वह दो यतीम लड़कों की थी जो इस शहर में (रहते) हैं, और उस (दीवार) के नीचे उनका कुछ माल दफ़न था,	وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ

اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۗ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝ۭ	(जो उनके बाप से मीरास में पहुँचा है) और उनका बाप (जो मर गया है वह) एक नेक आदमी था, सो आपके रब ने अपनी मेहरबानी से चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी (की उम्र) को पहुँच जाएँ और अपना ख़ज़ाना निकाल लें, आपके रब की रहमत से। और (ये सारे काम मैंने अल्लाह की तरफ़ से हुक्म होने की वजह से किए हैं, इनमें से) कोई काम मैंने अपनी राय से नहीं किया (लीजिये) यह है हक़ीक़त उन (बातों) की, जिन पर आप से सब्र न हो सका। (82)

ع ۱

गिरती हुई दीवार

इस आयत से साबित हुआ कि बड़े शहर को भी 'क़र्या' (गाँव/बस्ती) कहा जा सकता है। क्योंकि पहले "यहाँ तक कि वे गाँव वालों के पास आये" फ़रमाया था और यहाँ "शहर में" फ़रमाया। इसी तरह मक्का शरीफ़ को भी "क़र्या" कहा गया है। अल्लाह का फ़रमान हैः

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ.

और बहुत सी बस्तियाँ ऐसी थीं जो क़ुव्वत में इस बस्ती से बढ़ी हुई थीं जिसके रहने वालों ने आपको घर से बेघर कर दिया। (सूरः मुहम्मद आयत 13)

एक और आयत में मक्का और ताईफ़ दोनों शहरों को "क़र्या" फ़रमाया गया है। चुनाँचे इरशाद हैः

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ.

और कहने लगे कि यह क़ुरआन (अगर अल्लाह का कलाम है तो) इन दोनों बस्तियों (ताईफ़ और मक्का) के रहने वालों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल नहीं किया गया। (सूरः ज़ुख़रुफ़ आयत 31)

आयत में बयान हो रहा है कि उस दीवार को दुरुस्त कर देने में अल्लाह की यह मस्लेहत थी कि यह शहर के दो यतीमों की थी। उसके नीचे उनका माल दफ़न था। ठीक तफ़सीर तो यही है अगरचे यह भी बयान किया गया है कि वह इल्मी ख़ज़ाना था, बल्कि एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि क़ुरआन पाक में जिस ख़ज़ाने का ज़िक्र है यह ख़ालिस सोने की तख़्तियाँ थीं जिन पर लिखा हुआ था कि ताज्जुब है उस शख़्स पर जो तक़दीर का क़ायल होते हुए अपनी जान को मेहनत व मशक़्क़त में डाल रहा है और रंज व ग़म बरदाश्त कर रहा है। ताज्जुब है कि जहन्नम के अ़ज़ाब का मानने वाला है फिर भी हंसी-खेल (यानी बेकार के कामों) में मशग़ूल है। ताज्जुब है मौत का यक़ीन रखते हुए ग़फ़लत में पड़ा हुआ है। ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।

यह इबारत उन तख़्तियों पर लिखी हुई थी लेकिन इसमें एक रावी बशीर बिन मुन्ज़र हैं। कहा गया है कि यह मसीसिया के क़ाज़ी थे, इनकी हदीस में वहम है। पहले उलेमा और बुज़ुर्गों से भी इस सिलसिले में

Mahtab E Ashraf

बाज़ रिवायतें और अक़्वाल मन्क़ूल हैं। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि यह सोने की तख़्ती थी जिसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के बाद क़रीब-क़रीब ऊपर दर्ज हुई नसीहतें और आख़िर में कलिमा-ए-तय्यिबा था। उमर मौला ग़ुफ़रा से भी तक़रीबन यही नक़ल है। इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद रह. फ़रमाते हैं कि उसमें ढाई स्तरें (पंक्तियाँ) थीं, पूरी तीन न थीं (ये सब इन हज़रात के क़ौल हैं, तफ़सीर समझने में इनसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता)।

बयान किया गया है कि ये दोनों यतीम अपने सातवें दादा की नेकियों की वजह से महफ़ूज़ रखे गये थे। जिन बुज़ुर्गों ने यह तफ़सीर की है वह भी पहली तफ़सीर के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि उसमें भी है कि ये इल्मी बातें सोने की तख़्ती पर लिखी हुई थीं और ज़ाहिर है कि सोने की तख़्ती अपने आप में ख़ुद माल और बहुत बड़ी रक़म की चीज़ है। वल्लाहु आलम।

इस आयत से यह भी साबित होता है कि इनसान की नेकियों की वजह से उसके बाल-बच्चे भी दुनिया और आख़िरत में ख़ुदा की मेहरबानी हासिल कर लेते हैं जैसे क़ुरआन व हदीस में स्पष्ट तौर पर ज़िक्र किया गया है। देखिये आयत में उनकी अपनी कोई क़ाबलियत और योग्यता बयान नहीं हुई, हाँ उनके वालिद (बाप) की नेकबख़्ती और नेक आमाल वाला होना बयान किया गया है। और पहले गुज़र चुका कि यह बाप जिसकी नेकी की वजह से उनकी हिफ़ाज़त हुई यह उन बच्चों का सातवाँ दादा था। वल्लाहु आलम।

आयत में है कि 'तेरे रब ने चाहा' ख़ुदा की तरफ़ यह निस्बत इसलिये की गयी है कि जवानी तक पहुँचाने पर सिवाय उसके और कोई क़ादिर नहीं। देखिये बच्चे के बारे में और कश्ती के बारे में इरादे की निस्बत अपनी तरफ़ की गयी जैसा कि अलफ़ाज़ हैं "पस हमने इरादा किया" "तो मैंने इरादा किया"। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाते हैं कि दर असल ये तीनों बातें जिन्हें तुमने ख़तरनाक समझा, सरासर रहमत थीं। कश्ती वालों को अगरचे थोड़ा-बहुत नुक़सान हुआ लेकिन उससे पूरी कश्ती बच गयी। बच्चे के मरने की वजह से अगरचे माँ-बाप को रंज हुआ लेकिन हमेशा के रंज और अ़ज़ाबे ख़ुदा से बच गये और फिर नेक बदला हाथों हाथ मिल गया। और यहाँ उस नेक शख़्स की औलाद का भला हुआ। ये काम मैंने अपनी ख़ुशी से नहीं किये बल्कि अल्लाह के अहकाम पर अ़मल किया है (इससे यह बात साफ़ तौर पर मालूम होती है कि अल्लाह तआ़ला का कोई काम मस्लेहत और बेहतरी से ख़ाली नहीं होता चाहे बन्दे अपनी कम-अ़क़्ली की वजह से उस तक न पहुँच सकें)।

इससे बाज़ लोगों ने हज़रत ख़ज़िर की नुबुव्वत पर दलील पकड़ी है और पूरी बहस पहले गुज़र चुकी है। कुछ हज़रात कहते हैं कि यह रसूल थे। एक क़ौल है कि यह फ़रिश्ता थे, लेकिन अक्सर बुज़ुर्गों की राय है कि यह एक अल्लाह के वली थे। इमाम इब्ने क़ुतैबा ने मआ़रिफ़ में लिखा है कि उनका नाम बलिया बिन मल्कान बिन फ़ालिग़ बिन आ़मिर बिन शालिख़ बिन अर्फ़ख़श्ज़ बिन साम बिन नूह अ़लैहिस्सलाम था। उनकी कुन्नियत अबुल-अ़ब्बास और लक़ब ख़ज़िर है। इमाम नववी रह. ने "तहज़ीबुल-असमा" में लिखा है कि यह शहज़ादे (राजकुमार) थे। यह और इब्ने सलाह तो क़ायल हैं कि वह अब तक ज़िन्दा हैं और क़ियामत तक ज़िन्दा रहेंगे अगरचे बाज़ हदीसों में भी यह ज़िक्र आया है लेकिन उनमें से एक भी सही नहीं। सबसे ज़्यादा मशहूर हदीस इस बारे में वह है जिसमें है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. की ताज़ियत के लिये आप तशरीफ़ लाये थे। लेकिन उसकी सनद भी कमज़ोर है। अक्सर मुहद्दिसीन वग़ैरह इसके ख़िलाफ़ हैं। चुनाँचे "हयाते ख़ज़िर" (ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम के ज़िन्दा होने) के क़ायल नहीं। उनकी दलील क़ुरआन पाक की यह

Maktab E Ashraf

आयत है:

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ.

यानी तुझसे पहले भी हमने किसी को हमेशगी की ज़िन्दगी नहीं दी।

और एक दलील नबी करीम सल्ल. का ग़ज़वा-ए-बदर में यह फ़रमाना है कि इलाही अगर मेरी यह जमाअत हलाक हो गयी तो ज़मीन में तेरी इबादत फिर नहीं की जायेगी। एक दलील यह भी है कि अगर हज़रत ख़ुज़िर ज़िन्दा होते तो हुज़ूरे पाक सल्ल. की ख़िदमत में ज़रूर हाज़िर होते, इस्लाम क़ुबूल करते और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में मिलते। क्योंकि हुज़ूरे पाक तमाम जिन्नात व इनसानों की तरफ़ ख़ुदा के रसूल बनाकर भेजे गये थे। आपने तो यहाँ तक फ़रमाया है कि अगर मूसा और ईसा ज़िन्दा (ज़मीन पर) होते तो उन्हें भी सिवाय मेरी ताबेदारी के चारा न था। आप अपनी वफ़ात से कुछ दिन पहले फ़रमाते हैं कि आज जो ज़मीन पर हैं उनमें से एक भी आज से लेकर सौ साल पर बाक़ी नहीं रहेगा। इनके अ़लावा और भी बहुत सी दलीलें हैं।

नोटः हज़रत ख़ुज़िर अ़लैहिस्सलाम के ज़िन्दा होने या न होने के बारे में उलेमा का मतभेद है। ज़्यादातर यह देखा गया है जो अहले-तसव्वुफ़ और बुज़ुर्ग हज़रात हैं वे उनकी हयात (ज़िन्दगी) के क़ायल हैं। हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह. ने भी बाज़ वाक़िआ़त ऐसे बयान किये हैं जिनमें ख़ुज़िर अ़लैहिस्सलाम का बाज़ लोगों से मिलना साबित है। असल में इस मतभेद की जो बुनियाद है वह इस पर आधारित है कि "ख़ुज़िर" किसी ओ़हदे का नाम है या शख़्सियत का। जो लोग उन ख़ुज़िर की मौत के क़ायल हैं जिनकी हज़रत मूसा से मुलाक़ात हुई उनकी राय में ख़ुज़िर बुज़ुर्गी का एक ओ़हदा है, जिसको यह हासिल हो जाता है उसी पर ख़ुज़िर होने का हुक्म लग जाता है। उनका कहना है कि बाद के जो वाक़िआ़त ख़ुज़िर से लोगों की मुलाक़ात के बयान किये जाते हैं वे इसी तरह के बाद के बुज़ुर्गों के हैं जिनको यह ओ़हदा प्राप्त हो गया है और यह सिलसिला यूँ ही जारी है। जो लोग उन ही ख़ुज़िर की ज़िन्दगी के क़ायल हैं जिनकी हज़रत मूसा से मुलाक़ात हुई उनकी अपनी दलीलें हैं और ऐसे हज़रात की भी बहुत बड़ी संख्या है। हज़रत अ़ल्लामा इब्राहीम बलियावी रह. की राय भी यही थी कि ख़ुज़िर एक ओ़हदा है, अब वह ख़ुज़िर ज़िन्दा नहीं जिनका ज़िक्र क़ुरआन पाक में किया गया है। हज़रत मौलाना सैयद असग़र हुसैन देवबन्दी रह. ने इस विषय पर उर्दू में बाक़ायदा एक रिसाला लिखा है "हयात-ए-ख़ुज़िर"। बहरहाल मुहद्दिसीन की एक बड़ी जमाअ़त उनकी वफ़ात की और बुज़ुर्गों व मशाईख़ की एक बड़ी जमाअ़त उनकी हयात की क़ायल है। वल्लाहु आलम। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत ख़ुज़िर को ख़ुज़िर इसलिये कहा गया कि वह सफ़ेद रंग की सूखी घास पर बैठ गये थे यहाँ तक कि उसके नीचे से सब्ज़ा (हरियाली) उग आया। और मुम्किन है इससे मुराद यह हो कि आप ख़ुश्क ज़मीन पर बैठ गये थे और फिर वह लहलहाने लगी।

ग़र्ज़ कि हज़रत ख़ुज़िर ने हज़रत मूसा के सामने जब यह गुत्थी सुलझा दी और उन कामों की असल हिक्मत बयान कर दी तो फ़रमाया कि ये थे वो राज़ जिनके ज़ाहिर करने के लिये आप जल्दी कर रहे थे।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथी का क़िस्से के शुरू में तो ज़िक्र था लेकिन फिर नहीं, इसलिये कि मक़सद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ख़ुज़िर का वाक़िआ़ बयान करना था। हदीसों में है कि आपके यह साथी हज़रत यूशा बिन नून थे। यही हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद बनी इस्राईल के वाली बनाये गये थे। एक रिवायत में है कि उन्होंने "आब-ए-हयात" पी लिया था इसलिये उन्हें एक कश्ती में बैठाकर समुद्र के बीच में छोड़ दिया।

और ये लोग आप से ज़ुल्क़रनैन का हाल पूछते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि मैं उनका ज़िक्र अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूँ। (83) हमने उनको धरती पर हुकूमत दी थी, और हमने उनको हर किस्म का (काफ़ी) सामान दिया था। (84)	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۭ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۝ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝

Maktaba-E-Ashraf

ज़ुल्क़रनैन

पहले गुज़र चुका कि मक्का के काफ़िरों ने अहले किताब से कहलवाया था कि हमें कुछ ऐसी बातें बतलाओ जो हम मुहम्मद से दरियाफ़्त करें और उनके जवाब आपसे न बन पड़ें, तो उन्होंने सिखाया था कि एक तो उनसे उस शख़्स का वाकिआ पूछो जिसने रू-ए-ज़मीन की सैर की थी। दूसरा सवाल उनसे उन नौजवानों के बारे में करो जो बिल्कुल लापता हो गये हैं और तीसरा सवाल उनसे रूह के बारे में करो। उनके इन सवालों के जवाब में यह सूरत यानी सूरः कहफ़ नाज़िल हुई।

यह भी रिवायत है कि यहूदियों की एक जमाअत हुज़ूर सल्ल. से ज़ुल्क़रनैन का क़िस्सा दरियाफ़्त करने को आयी तो आपने उन्हें देखते ही फ़रमाया कि तुम इसलिये आये हो। फिर आपने वह वाक़िआ बयान फ़रमाया। उसमें है कि वह एक रूमी नौजवान था। उसी ने स्कन्दरिया बनाया है। उसे एक फ़रिश्ता आसमान तक चढ़ा ले गया था और दीवार तक ले गया था। उसने कुछ लोगों को देखा जिनके मुँह कुत्तों जैसे थे, वग़ैरह। लेकिन इस रिवायत में बहुत तूल, नकारत और कमज़ोरी है, इसका मरफ़ूअ होना साबित नहीं। दर असल ये बनी इस्राईल की रिवायात हैं। ताज्जुब है कि इमाम अबू ज़ुरआ राज़ी जैसे बड़े आलिम ने इसे अपनी किताब "दलाईले नुबुव्वत" में ज़िक्र किया है। वास्तव में यह बयान उन जैसे बुज़ुर्ग से तो आश्चर्य जनक ही है। उसमें जो यह है कि वह रूमी था, यह भी ठीक नहीं। स्कन्दरे सानी रूमी था, वह फ़ेलबस मक़दूनी का लड़का है, जिससे रोम की तारीख़ शुरू होती है। और सिकन्दरे अव्वल तो बक़ौल अज़रक़ी वग़ैरह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में था, उसने आपके साथ बैतुल्लाह शरीफ़ की तामीर के बाद बैतुल्लाह का तवाफ़ किया है। आप पर ईमान लाया था, आपका ताबेदार बना था, उनही के वज़ीर हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम थे। उसने ख़ुदा के नाम बहुत सी क़ुरबानियाँ की थीं। हमने अल्लाह के फ़ज़्ल से उनके बहुत से वाक़िआत अपनी किताब "अल-बिदाया वन्निहाया" में ज़िक्र कर दिये हैं।

नोटः हज़रत ज़ुल्क़रनैन की शख़्सियत के बारे में इतिहासकारों ने विभिन्न रायें ज़ाहिर की हैं। कुछ हज़रात ने सिकन्दरे मक़दूनी को ज़ुल्क़रनैन क़रार दिया है जैसा कि मुहम्मद बिन इस्हाक़ की भी यही राय है, लेकिन हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने इसको नकारा और ज़ुल्क़रनैन जैसी बुज़ुर्ग और अल्लाह वाली शख़्सियत के साथ एक ज़ुल्म क़रार दिया है। क्योंकि सिकन्दरे मक़दूनी एक ज़ालिम, जाबिर और काफ़िर बादशाह था, जबकि ज़ुल्क़रनैन एक मुत्तक़ी, परहेज़गार और मोमिन इनसान थे। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

वहब कहते हैं कि यह बादशाह थे, चूँकि इनके सर के दोनों ओर ताँबा रहता था इसलिये इन्हें ज़ुल्क़रनैन कहा गया। यह भी वजह बतलाई गयी है कि रोम और फ़ारिस दोनों का बादशाह था। बाज़ का क़ौल है कि वास्तव में इसके सर के दोनों तरफ़ कुछ सींग से थे। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं- इस नाम

की वजह यह है कि यह ख़ुदा के नेक बन्दे थे, अपनी क़ौम को ख़ुदा की तरफ़ बुलाया, ये लोग मुख़ालिफ़ हो गये और उनके सर के एक जानिब इस क़द्र मारा कि यह शहीद हो गये। अल्लाह तआ़ला ने दोबारा ज़िन्दा कर दिया। क़ौम ने फिर सर के दूसरी तरफ़ इस क़द्र मारा जिससे यह फिर मर गये, इसलिये इन्हें ज़ुल्क़रनैन कहा जाता है। एक क़ौल यह भी है कि चूँकि यह पूरब से पश्चिम तक सियाहत (सैर व सफ़र) कर आये थे इसलिये इन्हें ज़ुल्क़रनैन कहा गया है।

हमने उसे बड़ी सल्तनत दे रखी थी। साथ ही लश्कर की क़ुव्वत, जंग के सामान व हथियार सब कुछ ही दे रखा था। पूरब से पश्चिम तक उसकी सल्तनत थी। अ़रब अ़जम सब इसके मातहत थे। हर चीज़ का उसे इल्म दे रखा था। ज़मीन के अदना आला निशानात बतला दिये थे। तमाम ज़बानें (भाषायें) जानते थे। जिस क़ौम से लड़ाई होती उसकी ज़बान बोल लेते थे। एक बार हज़रत कअ़बे अहबार रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने फ़रमाया था- क्या तुम कहते हो कि ज़ुल्क़रनैन ने अपने घोड़े सुरैया (एक सितारा) से बाँधे थे? उन्होंने जवाब दिया कि अगर आप यह फ़रमाते हैं तो सुनिये- अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि हमने उसे हर चीज़ का सामान दिया था। हक़ीक़त में इस बात में सच्चाई हज़रत मुआ़विया रज़ि. के साथ है, इसलिये भी कि हज़रत कअ़ब रज़ि. को जो कुछ कहीं लिखा मिलता था रिवायत कर दिया करते थे, अगरचे वह ग़लत ही हो। इसी लिये आपने फ़रमाया है कि कअ़ब का झूठ (यानी ग़लत बात बयान करना) तो बहुत सी बार सामने आ चुका है, यानी ख़ुद झूठ नहीं गढ़ते थे लेकिन जो रिवायत मिलती चाहे वह बेसनद हो उसको बयान करने से न चूकते। और यह ज़ाहिर है कि बनी इस्राईल की रिवायात झूठ से, ख़ुराफ़ात से, रद्दोबदल और कमी-बेशी से सुरक्षित न थीं। बात यह है कि हमें उन इस्राईली रिवायात की तरफ़ तवज्जोह करने की भी क्या ज़रूरत है? जबकि हमारे हाथों में ख़ुदा की किताब और उसके पैग़म्बर की सच्ची और सही हदीसें मौजूद हैं। अफ़सोस कि इन्हीं बनी इस्राईल की रिवायतों ने बहुत सी बुराईयाँ मुसलमानों में डाल दीं और बड़ा फ़साद फैल गया। हज़रत कअ़ब ने इस बनी इस्राईली रिवायत के सुबूत में क़ुरआन की इस आयत का आख़िरी हिस्सा पेश किया है। यह भी कुछ ठीक नहीं, क्योंकि यह तो बिल्कुल ज़ाहिर बात है कि किसी इनसान को ख़ुदा तआ़ला ने आसमानों पर और सुरैया पर पहुँचने की ताक़त नहीं दी। देखिये बिलक़ीस के हक़ में भी क़ुरआन ने यही अलफ़ाज़ कहे हैं:

وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ.

यानी उसको हर चीज़ दी गयी थी।

इससे भी मुराद सिर्फ़ इसी क़द्र है कि बादशाहों के यहाँ उमूमन जो होता है वह सब उसके पास भी था। इसी तरह हज़रत ज़ुल्क़रनैन को ख़ुदा ने तमाम रास्ते और संसाधन मुहैया कर दिये थे कि वह अपनी विजयों और मुहिमों को विस्तृत करते जायें और ज़मीन को सरकशों और काफ़िरों से ख़ाली कराते जायें, और उसकी तौहीद के साथ ईमान वालों की बादशाहत दुनिया पर फैलायें और अल्लाह वालों की हुकूमत क़ायम करें। इन कामों में जिन असबाब व संसाधनों की ज़रूरत पड़ती है, वे सब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ज़ुल्क़रनैन को दे रखे थे। वल्लाहु आलम।

हज़रत अ़ली रज़ि. से किसी ने पूछा कि यह पूरब व पश्चिम तक कैसे पहुँच गये? आपने फ़रमाया सुब्हानल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने बादलों को उनके लिये मुसख़्ख़र (ताबे और क़ब्ज़े में) कर दिया था, तमाम असबाब उन्हें मुहैया कर दिये थे और पूरी क़ुव्वत व ताक़त दे दी थी।

Maktaba E Ashraf

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ○ حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ○ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ○ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ○ؕ	चुनाँचे वह (पश्चिमी मुल्कों को फ़तह करने के इरादे से) एक राह पर हो लिए। (85) यहाँ तक कि जब सूरज डूबने के मौक़े पर पहुँचे, तो (वह सूरज) उनको एक काले रंग के पानी में डूबता हुआ दिखाई दिया, और उसी जगह पर उन्होंने एक क़ौम देखी। हमने (उनके दिल में बात डाली और) यह कहा कि ऐ ज़ुल्क़रनैन! चाहे सज़ा दो और चाहे इनके बारे में नर्मी का मामला अपनाओ। (86) (ज़ुल्क़रनैन ने) अर्ज़ किया कि (बहुत अच्छा, पहले ईमान ही की दावत दूँगा) लेकिन जो ज़ालिम रहेगा उसको तो हम लोग सज़ा देंगे, फिर वह अपने (हक़ीक़ी) मालिक के पास पहुँचाया जाएगा, फिर वह उस को (दोज़ख़ की) सख़्त सज़ा देगा। (87) और जो शख़्स ईमान ले आएगा और नेक अमल करेगा, तो उसके लिए (आख़िरत में भी) बदले में भलाई मिलेगी, और हम (दुनिया में भी) अपने बर्ताव में उसको आसान (और नर्म) बात कहेंगे। (88)

ज़ुल्क़रनैन की दूसरी मन्ज़िल

ज़ुल्क़रनैन एक रास्ते पर चल पड़े, ज़मीन की एक दिशा यानी पश्चिम की ओर कूच कर दिया। जो निशानात ज़मीन पर थे उनके सहारे चल खड़े हुए। जहाँ तक पश्चिमी दिशा में चल सकते थे चलते रहे, यहाँ तक कि सूरज के ग़ुरूब होने की जगह तक पहुँच गये। यह याद रहे कि इससे मुराद आसमान का वह हिस्सा नहीं है जहाँ सूरज ग़ुरूब होता है, क्योंकि वहाँ तक तो किसी का जाना नामुम्किन है, हाँ इस दिशा में जहाँ तक ज़मीन पर जाना मुम्किन है वहाँ तक हज़रत ज़ुल्क़रनैन पहुँच गये। और यह जो बाज़े क़िस्से मशहूर हैं कि सूरज के छुपने की जगह से भी आगे बढ़ गये और सूरज मुद्दतों उनकी पीठ के पीछे ग़ुरूब होता रहा, ये बेबुनियाद बातें हैं और उमूमन अहले किताब की ख़ुराफ़ात हैं, और उनमें से भी बहुत सी बद्दीनों की गढ़ी हुई हैं जो कोरे झूठ पर आधारित हैं।

ग़र्ज़ कि जब पश्चिम की दिशा में आख़िरी हद तक पहुँच गये तो यह मालूम हुआ कि गोया बहरे मुहीत (मुहीत समुद्र) में सूरज ग़ुरूब हो रहा है, जो भी किसी समुद्र के किनारे खड़ा होकर सूरज को ग़ुरूब होते हुए देखेगा तो बज़ाहिर यही मन्ज़र उसके सामने होगा कि गोया सूरज पानी में डूब रहा है, हालाँकि सूरज चौथे आसमान पर है और उससे अलग कभी नहीं होता। "हमि-अतिन्" या तो "हमूअतन्" से निकला है यानी चिकनी मिट्टी, जैसा कि क़ुरआन पाक की एक आयत में भी यह लफ़्ज़ है। फ़रमायाः

إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ.

कि मैं एक इनसान को बजती हुई मिट्टी से जो कि सने हुए गारे से सनी होगी, पैदा करने वाला हूँ।

यही मतलब इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सुनकर हज़रत नाफ़े ने सुना कि हज़रत कअ़ब फ़रमाते थे- तुम हमसे ज़्यादा क़ुरआन के आ़लिम हो लेकिन मैं तो किताब में देखता हूँ कि वह काले रंग की मिट्टी में ग़ायब हो जाता था। एक क़िराअत में "ऐनिन् हामियतिन्" है यानी गर्म चश्मे में ग़ुरूब होता पाया। ये दोनों क़िराअतें मशहूर और दोनों दुरुस्त हैं, चाहे कोई सी क़िराअत पढ़े और इनके मायने में भी कोई फ़र्क़ नहीं, क्योंकि सूरज की नज़दीकी की वजह से पानी गर्म हो और वहाँ की मिट्टी की काली रंगत की वजह से उस पानी का कीचड़ उसी रंगत का हो।

हुज़ूरे पाक सल्ल. ने एक बार सूरज को ग़ुरूब होते देखकर फ़रमाया ख़ुदा की भड़कती आग में अगर ख़ुदा के हुक्म से इसकी जलन और तपिश कम न हो जाती तो यह ज़मीन की तमाम चीज़ों को झुलस डालता। लेकिन इस रिवायत का सही होना तहक़ीक़ का मोहताज है। या यह कि मरफ़ूअ़ होने में भी बहुत मुम्किन है कि यह अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर का अपना कलाम हो और उन दो थेलियों की किताबों से लिया गया हो जो उन्हीं यरमूक से मिली थीं। वल्लाहु आलम।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक बार हज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान रज़ि. ने सूरः कहफ़ की यही आयत तिलावत फ़रमाई तो आपने "ऐनिन् हामियतिन्" पढ़ा, इस पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि हम तो "हमि-अतिन्" पढ़ते हैं। हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. से पूछा आप किस तरह पढ़ते हैं? उन्होंने जवाब दिया जिस तरह आपने पढ़ा। इस पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया मेरे घर में क़ुरआने करीम नाज़िल हुआ है। हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने हज़रत कअ़ब के पास आदमी भेजा कि बतलाओ सूरज कहाँ ग़ुरूब होता है? तौरात में इसके मुताल्लिक़ कुछ है? हज़रत कअ़ब ने जवाब दिया कि इसे अ़रबियत वालों से पूछना चाहिये वही इसके पूरे आ़लिम हैं, हाँ तौरात में तो मैं यह पाता हूँ कि वह पानी और मिट्टी यानी कीचड़ में छुप जाता है और पश्चिम की तरफ़ अपने हाथ से इशारा किया। यह सब क़िस्सा सुनकर इब्ने हाज़िर ने कहा अगर मैं उस वक़्त होता आपकी ताईद में तुब्बा के वे दो शे'र पढ़ देता जिनमें उसने ज़ुल्क़रनैन का ज़िक्र करते हुए कहा है कि वह पूरब व पश्चिम तक पहुँचा।

नोटः हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने ज़ुल्क़रनैन के पूरब व पश्चिम की सियाहत व सफ़र की हक़ीक़त इस तरह बयान की है कि वह अपनी हुकूमत के मर्कज़ (केन्द्र) से चलकर पूरब व पश्चिम के किनारों तक पहुँचे। पश्चिम में वह वहाँ तक पहुँचे जहाँ ख़ुश्की के रास्ते ख़त्म हो गये और सामने समुद्र था, और पूरब में इतनी दूर तक सफ़र किया कि वहाँ ख़ाना-बदोश (आदि वासी) क़बीलों के अ़लावा कोई आबादी न थी। बाक़ी इस सिलसिले में जो अ़जीब व ग़रीब और अ़क़्ल से बाहर के क़िस्से नक़ल किये जाते हैं उनकी न कोई दलील है और न कोई हैसियत।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

क्योंकि ख़ुदा तआ़ला ने उसे हर क़िस्म के सामान मुहैया फ़रमाये थे। उसने देखा कि सूरज स्याह मिट्टी जैसे कीचड़ में ग़ुरूब हो रहा है। एक मर्तबा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सूरः कहफ़ की तिलावत हज़रत कअ़ब ने सुनी और जब आपने "हमि-अतिन्" पढ़ा तो कहा कि वल्लाह जिस तरह तौरात में है उस तरह पढ़ते हुए मैंने आप ही को सुना, तौरात में भी यही है कि वह काले रंग के कीचड़ में डूबता है।

वहीं एक शहर था जो बहुत बड़ा था, उसके बारह हज़ार दरवाज़े थे। अगर वहाँ शोर व गुल न हो तो क्या अ़जब कि उन लोगों को सूरज के ग़ुरूब होने की आवाज़ तक आये। वहाँ एक बहुत बड़ी उम्मत को

Maktaba E Ashraf

आपने बसता हुआ पाया। ख़ुदा तआ़ला ने उस बस्ती वालों पर उन्हें ग़लबा दिया। अब उनके इख़्तियार में था कि यह उन पर ज़ुल्म व ज़्यादती करें या उनमें अ़दल व इन्साफ़ करें। इस पर ज़ुल्क़रनैन ने अपने इन्साफ़ व ईमान का सुबूत दिया और अ़र्ज़ किया कि जो अपने कुफ़्र व शिर्क पर अड़ा रहेगा उसे तो हम सज़ा देंगे, क़त्ल व ग़ारत से या यह कि ताँबे के बर्तन को गर्म आग करके उसमें डाल देंगे, या यह कि सिपाहियों के हाथों उन्हें बदतरीन सज़ायें करायेंगे। वल्लाहु आलम। और फिर जब वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जायेगा तो वह उसे सख़्त और दर्दनाक अ़ज़ाब करेगा। इससे क़ियामत के दिन का भी सुबूत होता है। और जो ईमान लाये, हमारी तौहीद की दावत क़ुबूल कर ले, ख़ुदा के सिवा दूसरों की इबादत छोड़ दे उसे अल्लाह अपने बेहतरीन बदले देगा और ख़ुद हम भी उसका सम्मान करेंगे और भली बात कहेंगे।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ○ حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ○ كَذٰلِكَ ط وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ○

फिर एक (दूसरी) राह पर हो लिए। (89) यहाँ तक कि (जब दूरी तय करके) सूरज निकलने के मौक़े "यानी जगह" पर पहुँचे तो सूरज को एक ऐसी क़ौम पर निकलते देखा, जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी। (90) (यह क़िस्सा) इसी तरह (है) और ज़ुल्क़रनैन के पास जो कुछ (सामान वग़ैरह) था, हमको उसकी पूरी ख़बर है। (91)

सूरज के निकलने की जगह

ज़ुल्क़रनैन पश्चिम से वापस पूरब की तरफ़ चले। रास्ते में जो क़ौमें मिलतीं ख़ुदा की इबादत और उसकी तौहीद की उन्हें दावत देते। अगर वे क़ुबूल कर लेते तो बहुत अच्छा वरना उनसे लड़ाई होती और ख़ुदा के फ़ज़्ल से वे हारते, आप उन्हें अपना मातहत करके वहाँ के माल व मवेशी और ख़ादिम वग़ैरह लेकर आगे को चलते। बनी इस्राईली ख़बरों में है कि यह एक हज़ार छह सौ साल तक ज़िन्दा रहे (इस्राईली रिवायात को ऐसी ही बेबुनियाद बातों की वजह से नाक़ाबिले क़ुबूल गरदाना जाता है) और बराबर ज़मीन पर दीने ख़ुदा की तब्लीग़ करते रहे। साथ ही उनकी बादशाहत भी फैलती रही।

जब आप सूरज निकलने की जगह तक पहुँचे वहाँ देखा एक बस्ती आबाद है, लेकिन वहाँ के लोग बिल्कुल जंगली और जानवरों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारने वाले हैं। न वे मकानात बनाते हैं, न वहाँ कोई दरख़्त है, सूरज की धूप से पनाह देने वाली कोई चीज़ वहाँ उन्हें नज़र न आयी। उनके रंग सुर्ख़ थे, उनके क़द छोटे थे, उनकी आ़म ख़ुराक मछली थी। हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि सूरज के निकलने के वक़्त वे पानी में चले जाया करते थे और ग़ुरूब होने के बाद जानवरों की तरह इधर-उधर हो जाया करते थे। क़तादा रह. का क़ौल है कि वहाँ कुछ उगता न था, सूरज के निकलने के वक़्त वे पानी में चले जाते और ज़वाल के बाद दूर दराज़ अपनी खेतियों वग़ैरह में मशग़ूल हो जाते। सलमा का क़ौल है कि उनके कान बड़े थे, एक ओढ़ लेते एक बिछा लेते। क़तादा रह. कहते हैं ये वहशी हबशी थे।

इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि वहाँ कभी कोई मकान या दीवार या इहाता नहीं बना। सूरज के निकलने के वक़्त उनके पास एक लश्कर पहुँचा तो उन्होंने उनसे कहा कि देखो सूरज निकलते वक़्त बाहर न ठहरना,

Maktab E Ashraf

उन्होंने कहा नहीं! हम तो रात ही में यहाँ से चले जायेंगे, लेकिन यह बतलाओ कि ये हड्डियों के चमकीले ढेर कैसे हैं? उन्होंने कहा यहाँ पहले एक लश्कर आया था सूरज के निकलने के वक़्त वह यहीं ठहरा रहा, सब मर गये, ये उनकी हड्डिया हैं। यह सुनते ही वे वहाँ से वापस हो गये।

फिर फ़रमाता है कि ज़ुल्क़रनैन की उसके साथियों की कोई हरकत, कोई गुफ़्तार और रफ़्तार हम पर छुपी न थी। अगरचे उसका लाव-लश्कर बहुत था, ज़मीन के हर हिस्से पर फैला हुआ था, लेकिन हमारा इल्म ज़मीन व आसमान पर छाया हुआ है। हमसे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ○ حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغَ بَيْنَ
السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا
يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ○ قَالُوْا يٰذَا
الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ
فِي الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى
اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ○ قَالَ مَا
مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ
اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ○ اٰتُوْنِيْ
زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۭ حَتّٰىٓ اِذَا سَاوٰى بَيْنَ
الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ۭ حَتّٰىٓ اِذَا جَعَلَهٗ
نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ○

फिर (पूरब व पश्चिम फ़तह करके) एक और राह पर हो लिए। (92) यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुँचे तो उन (पहाड़ों) से उस तरफ़ एक क़ौम को देखा, जो कोई बात समझने के क़रीब भी नहीं पहुँचते। (93) उन्होंने (ज़ुल्क़रनैन से) अर्ज़ किया ऐ ज़ुल्क़रनैन! याजूज व माजूज (की क़ौम जो इस घाटी के उस तरफ़ रहते हैं, हमारी) इस धरती "यानी इस इलाक़े" पर (कभी-कभी) बड़ा फ़साद मचाते हैं, सो क्या हम लोग आपके लिए कुछ चन्दा जमा कर दें, इस शर्त पर कि आप हमारे और उनके बीच कोई रोक बना दें। (कि वे फिर आने न पाएँ)। (94) (ज़ुल्क़रनैन ने) जवाब दिया कि जिस (माल) में मेरे रब ने मुझको इख़्तियार दिया है वह बहुत कुछ है, सो (माल की मुझको ज़रूरत नहीं, हाँ) क़ुव्वत (यानी हाथ-पाँव) से मेरी मदद करो (तो) मैं तुम्हारे और उनके दरमियान में ख़ूब मज़बूत दीवार बना दूँ। (95) (अच्छा तो) तुम लोग मेरे पास लोहे की चादरें लाओ, यहाँ तक कि जब (रद्दे मिलाते-मिलाते) उनके "यानी पहाड़ों के" दोनों सिरों के बीच (के ख़ाली हिस्से) को बराबर कर दिया तो हुक्म दिया कि धौंको, (धौंकना शुरू हो गया) यहाँ तक कि जब उसको (लाल) अंगारा कर दिया तो उस वक़्त हुक्म दिया कि अब मेरे पास पिघला हुआ ताँबा लाओ (जो पहले से तैयार करा लिया होगा) कि इस पर डाल दूँ। (96)

Maktab E Ashraf

याजूज माजूज

अपने पूरब के सफ़र को ख़त्म करके फिर ज़ुल्क़रनैन वहीं पूरब की तरफ़ एक रास्ते पर चले, देखा कि दो पहाड़ हैं जो मिले हुए हैं लेकिन उनके बीच एक घाटी है जहाँ से याजूज माजूज निकल कर तुर्कों पर तबाही लाते और उन पर हमला बोल देते हैं। उन्हें क़त्ल करते हैं, खेत बाग़ात तबाह करते हैं, बाल बच्चों को भी हलाक करते हैं और सख़्त फ़साद बरपा करते रहते हैं। याजूज माजूज भी इनसान हैं जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस से साबित है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से फ़रमायेगा कि ऐ आदम! आप लब्बैक व सअ़्दैक के साथ जवाब देंगे। हुक्म होगा आग का हिस्सा अलग कर। पूछेंगे कितना हिस्सा? हुक्म होगा हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे दोज़ख़ में और एक जन्नत में। यही वह वक़्त होगा कि बच्चे बूढ़े हो जायेंगे और हर हामिला (गर्भवती) का हमल गिर जायेगा। फिर हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुममें दो उम्मतें हैं कि वे जिनमें हों उनकी अधिकता को बढ़ा देती हैं यानी याजूज माजूज।

इमाम नववी रह. ने शरह सही मुस्लिम में एक अ़जीब बात लिखी है, वह लिखते हैं कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के ख़ास पानी (यानी वीर्य) के चन्द क़तरे जो मिट्टी में गिरे थे उन्हीं से याजूज माजूज पैदा किये गये हैं। गोया वे हज़रत हव्वा और हज़रत आदम की नस्ल से नहीं, बल्कि सिर्फ़ हज़रत आदम की नस्ल से हैं। लेकिन यह याद रहे कि यह क़ौल बिल्कुल ही ग़रीब है, न इस पर अ़क़्ली दलील है न नक़ली, और ऐसी बातें जो अहले किताब से पहुँचती हैं वे मानने के क़ाबिल नहीं होतीं बल्कि उनके यहाँ के ऐसे ही क़िस्से गढ़े हुए होते हैं। वल्लाहु आलम।

मुस्नद अहमद की हदीस है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के तीन लड़के थे- 'साम' 'हाम' और 'याफ़िस'। साम की नस्ल से तमाम अ़रब हैं और हाम की नस्ल से तमाम हबशी हैं और याफ़िस की नस्ल से तमाम तुर्क हैं। बाज़ उलेमा का क़ौल है कि याजूज माजूज तुर्कों के इस पूर्वज याफ़िस की ही औलाद हैं। उन्हें तुर्क इसलिये कहा गया है कि उन्हें उनके फ़साद और शरारत की वजह से इनसानों की दूसरी आबादियों के पीछे और दूर पहाड़ों की आड़ में छोड़ दिया गया था।

इमाम इब्ने जरीर रह. ने ज़ुल्क़रनैन के सफ़र के मुताल्लिक़, उस दीवार के बनाने के मुताल्लिक़ और याजूज माजूज के जिस्मों उनकी शक्लों उनके कानों वग़ैरह के मुताल्लिक़ वहब बिन मुनब्बेह से एक बहुत लम्बा-चौड़ा वाक़िआ़ अपनी तफ़सीर में बयान किया है जो न सिर्फ़ यह कि अ़जीब व ग़रीब है बल्कि सही होना भी यक़ीनी नहीं। इब्ने अबी हातिम में भी ऐसे बहुत से वाक़िआ़त दर्ज हैं, लेकिन सब ग़रीब और ग़ैर-सही हैं।

उन पहाड़ों के दर्रे में ज़ुल्क़रनैन ने इनसानों की एक आबादी पाई जो दुनिया की दूसरी इनसानी आबादी से अलग-थलग और दूर होने और अपनी ख़ास भाषा रखने के सबब औरों की बात भी तक़रीबन नहीं समझ सकते थे। उन लोगों ने ज़ुल्क़रनैन की क़ुव्वत व ताक़त और अ़क़्ल व हुनर को देखकर दरख़्वास्त की कि अगर आप रज़ामन्द हों तो हम आपके लिये बहुत सारा माल जमा कर दें और आप इन पहाड़ों के बीच घाटी को किसी मज़बूत दीवार से बन्द कर दें ताकि हम उन फ़सादियों की रोज़मर्रा की इन तकलीफ़ों से बच जायें। इसके जवाब में हज़रत ज़ुल्क़रनैन ने फ़रमाया मुझे तुम्हारे माल की ज़रूरत नहीं, ख़ुदा का दिया सब कुछ मेरे पास मौजूद है, और वह तुम्हारे माल से बहुत बेहतर है। यही जवाब हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम

की तरफ़ से सबा की रानी के क़ासिदों को दिया गया था। ज़ुल्क़रनैन ने अपने इस जवाब के बाद फ़रमाया कि हाँ तुम अपनी क़ुव्वत व ताक़त और काम-काज से मेरा साथ दो तो मैं तुममें और उनमें एक मज़बूत दीवार खड़ी कर देता हूँ।

ज़ुल्क़रनैन ने फ़रमाया कि लोहे के टुकड़े ईंटों की तरह के मेरे पास लाओ, जब ये टुकड़े जमा हो गये तो आपने दीवार बनानी शुरू करा दी और वह लम्बाई चौड़ाई में इतनी हो गयी कि तमाम जगह घिर गयी और पहाड़ की चौटी के बराबर पहुँच गयी। उसकी लम्बाई-चौड़ाई और मोटाई के नापने में बहुत से मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं। जब यह दीवार पूरी तरह बन गयी तो हुक्म दिया कि अब इसके चारों तरफ़ आग भड़काओ। जब वह लोहे की दीवार बिल्कुल अंगारे जैसी सुर्ख़ हो गयी तो हुक्म दिया कि अब पिघला हुआ ताँबा लाओ और हर तरफ़ से इसके ऊपर बहा दो, चुनाँचे यह भी किया गया। पस ठण्डी होकर यह दीवार बहुत ही मज़बूत और पुख़्ता हो गयी और देखने में ऐसी मालूम होने लगी जैसे कोई धारीदार चादर हो।

इब्ने जरीर में है कि एक सहाबी ने रसूले ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैंने वह दीवार देखी है। आपने फ़रमाया कैसी है? उन्होंने कहा धारीदार चादर जैसी, जिसमें सुर्ख़ व स्याह धारियाँ हैं, तो आपने फ़रमाया ठीक है। लेकिन यह रिवायत मुर्सल है। ख़लीफ़ा वाफ़िक़ ने अपने ज़माने में अपने सरदारों को एक बड़ा लश्कर और बहुत सामान देकर रवाना किया था कि वह उस दीवार की ख़बर लायें, यह लश्कर दो साल से ज़्यादा सफ़र में रहा और मुल्क दर मुल्क फिरता रहा, आख़िरकार उस दीवार तक पहुँचा देखा कि लोहे और ताँबे की दीवार है, उसमें एक बहुत बड़ा निहायत पुख़्ता अज़ीमुश्शान दरवाज़ा भी उसी का है, जिस पर मनों के वज़नी ताले लगे हुए हैं और जो माल मसाला दीवार का बचा हुआ है वहीं पर एक बुर्ज में रखा हुआ है, जहाँ पहरा-चौकी मुक़र्रर है। दीवार बेहद ऊँची है, कितनी ही कोशिश की जाये लेकिन उस पर चढ़ना नामुम्किन है। उससे मिला हुआ पहाड़ियों का सिलसिला दोनों तरफ़ बराबर चला गया है। और भी बहुत सी अ़जीब व ग़रीब बातें (हैरत-अंगेज़) देखीं जो उन्होंने वापस आकर ख़लीफ़ा की ख़िदमत में बयान कीं।

नोटः इस मौक़े पर हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने याजूज माजूज और सिकन्दरी दीवार के मुताल्लिक़ जो तहरीर फ़रमाया है वह उलेमा की तारीख़ व हालात-ए-हाज़िरा पर गहरी नज़र की दलील है। फ़रमाया कि याजूज माजूज कोई नई तरह की और अ़जीब व ग़रीब मख़्लूक़ नहीं बल्कि इनसानों ही में से हैं और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। उनका ख़्याल है कि मंगोलिया के जंगली क़बीलों के रहने वाले ही दर असल याजूज माजूज हैं जो यूरोप और रूसी क़ौमों की शुरूआ़ती नस्ल से हैं। रहा सिकन्दरी दीवार का मसला तो इस बारे में अगरचे विभिन्न रायें हैं मगर अ़ल्लामा अनवर शाह कशमीरी और अबू हय्यान उन्दुलुसी रह. की राय है कि क़ज़वीन के समुद्र के दरबन्द से ऊपर क़फ़क़ाज़ के आख़िरी किनारों पर पहाड़ के बीच है। बहरहाल क़फ़क़ाज़ के इलाक़े में स्थित दीवार ही सिकन्दरी दीवार और क़ुरआनी बयानात व रिसर्च के ज़्यादा क़रीब है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

सो न तो वे लोग (यानी याजूज-माजूज) उसपर चढ़ सकते थे और (बहुत ज़्यादा मज़बूत होने की वजह से) न उसमें नक़ब दे सकते थे। (97) (ज़ुल्क़रनैन ने) कहा कि यह (दीवार की तैयारी) मेरे रब की एक रहमत है। फिर जिस	فَمَا اسْطَاعُوْا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ۝ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ

वक़्त मेरे रब का वायदा आएगा (यानी इसके फ़ना करने का वक़्त आएगा) तो इसको ढाकर (ज़मीन के) बराबर कर देगा। और मेरे परवर्दिगार का (हर) वायदा सच्चा है। (98) और हम उस दिन उनकी यह हालत करेंगे कि एक में एक गड्-मड् हो जाएँगे, और सूर फुँका जाएगा, फिर हम सबको (एक-एक करके) जमा कर लेंगे। (99)	وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۝ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوجُ فِي بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۝

Maktab E Ashraf

यह सिर्फ़ ख़ुदा का फ़ज़्ल है

इस दीवार पर न तो चढ़ने की ताक़त याजूज माजूज को है न वह उसमें कोई सुराख़ कर सकते हैं कि वहाँ से निकल आयें। चूँकि चढ़ना तोड़ने के मुक़ाबले में ज़्यादा आसान है, इसलिये चढ़ने में "मस्ताऊ" का लफ़्ज़ लाये और तोड़ने में "मस्तताऊ" का लफ़्ज़ लाये। ग़र्ज़ न तो वे चढ़कर आ सकते हैं न सुराख़ करके। मुस्नद अहमद में हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हर रोज़ याजूज माजूज उस दीवार को खोदते हैं यहाँ तक कि क़रीब होता है कि सूरज की किरनें उन्हें नज़र आ जायें, चूँकि दिन गुज़र जाता है इसलिये उनके सरदार का हुक्म होता है कि अब बस करो, कल आकर तोड़ देंगे। लेकिन जब वे दूसरे दिन आते हैं तो उसे पहले दिन से ज़्यादा मज़बूत पाते हैं। क़ियामत के क़रीब जब उनका निकालना ख़ुदा को मन्ज़ूर होगा तो यह खोदते हुए जब छिलके जैसी कर देंगे तो उनका सरदार कहेगा अब छोड़ दो कल इन्शा-अल्लाह इसे तोड़ डालेंगे, पस इन्शा-अल्लाह कह लेने की बरकत से दूसरे दिन जब वे आयेंगे तो जैसे छोड़ गये थे वैसे ही पायेंगे, फ़ौरन गिरा देंगे और बाहर निकल पड़ेंगे, तमाम पानी चाट जायेंगे, लोग तंग आकर क़िलों में पनाह लेंगे। ये अपने तीर आसमान की तरफ़ चलायेंगे और ख़ून में भरकर उनकी तरफ़ लौटाये जायेंगे, तो ये कहेंगे कि ज़मीन वाले सब दब गये, आसमान वालों पर भी हम ग़ालिब आ गये। अब उनकी गर्दनों में गुठलियाँ निकलेंगी और सब के सब अल्लाह के हुक्म से उसी वबा से हलाक कर दिये जायेंगे। उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है कि ज़मीन के जानवरों की ख़ुराक उनके जिस्म व ख़ून होंगे जिससे वे ख़ूब मोटे-ताज़े हो जायेंगे। इब्ने माजा में भी यह रिवायत है। इमाम तिर्मिज़ी रह. ने भी इसे ज़िक्र किया है और फ़रमाया है कि यह रिवायत ग़रीब है, सिवाय इस सनद के मशहूर नहीं। इसकी सनद बहुत क़वी (मज़बूत) है लेकिन इसका मतन नकारत से ख़ाली नहीं, इसलिये कि आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ साफ़ हैं कि न वे चढ़ सकते हैं न सुराख़ कर सकते हैं, क्योंकि दीवार निहायत मज़बूत बहुत पुख़्ता और सख़्त है।

कअ़बे अहबार रह. से रिवायत है कि याजूज माजूज रोज़ाना उसे चाटते और बिल्कुल छिलके जैसी कर देते हैं, फिर कहते हैं चलो कल तोड़ देंगे। दूसरे दिन आते हैं तो जैसी थी वैसी ही पाते हैं। आख़िरी दिन वे अल्लाह के दिल में डालने से जाते वक़्त इन्शा-अल्लाह कहेंगे, दूसरे दिन जो आयेंगे तो जैसी छोड़ गये थे वैसी ही पायेंगे। वे तोड़ डालेंगे, बहुत मुम्किन है कि इन्हीं कअ़ब से हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने यह बात सुनी हो, फिर बयान की हो, किसी रावी को वहम हो गया हो और उसने नबी करीम सल्ल. का फ़रमान समझकर इसे मरफ़ूअ़न बयान कर दिया हो। वल्लाहु आलम।

यह जो हम कह रहे हैं इसकी ताईद उस हदीस से भी होती है जो मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. नींद से बेदार हुए तो चेहरा-ए-मुबारक सुर्ख़ हो रहा था और फ़रमाते थे ला इला-ह इल्लल्लाह अ़रब की ख़राबी का वक़्त क़रीब आ गया। आज याजूज माजूज की दीवार में इतना सुराख़ हो गया। फिर आपने अपनी उंगलियों से हल्क़ा (गोल दायरा) बनाकर दिखाया, इस पर उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! क्या नेक लोगों की मौजूदगी में भी हलाक कर दिये जायेंगे? आपने फ़रमाया हाँ जब ख़बीस लोगों की कसरत (अधिकता) हो जाये। यह हदीस बिल्कुल सही है, बुख़ारी मुस्लिम दोनों में है, हाँ बुख़ारी शरीफ़ में रावियों के ज़िक्र में हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का ज़िक्र नहीं, मुस्लिम में है। और भी इसकी सनद में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो बहुत ही कम पाई गयी हैं, जैसे इमाम ज़ोहरी की रिवायत उर्वा से हालाँकि ये दोनों बुज़ुर्ग ताबिई हैं और चार औ़रतों का आपस में एक दूसरे से रिवायत करना, फिर चारों औ़रतें सहाबिया हैं। फिर उनमें भी दो हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम की बीवियों की लड़कियाँ और दो आपकी बीवियाँ। बज़्ज़ार में यही रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से है।

इस दीवार को बनाकर ज़ुल्क़रनैन इत्मीनान का साँस लेते हैं, ख़ुदा का शुक्र अदा करते हैं और फ़रमाते हैं कि लोगो! यह भी रब की रहमत है कि उसने उन शरीरों की शरारत से मख़्लूक़ को अब अमन दे दिया, हाँ जब ख़ुदा का वायदा आ जायेगा तो इसका ढेर हो जायेगा यह ज़मीन पर गिर पड़ेगी, मज़बूती कुछ काम न आयेगी।

क़ियामत के क़रीब यह दीवार टुकड़े-टुकड़े हो जायेगी और उनके निकलने का रास्ता हो जायेगा। ख़ुदा के वायदे अटल हैं, क़ियामत का आना यक़ीनी है। इस दीवार के टूटते ही ये लोग निकल पड़ेंगे और लोगों में घुस जायेंगे। अपने-बेगानों का फ़र्क़ उठ जायेगा। यह वाक़िआ़ दज्जाल के आ जाने के बाद क़ियामत के क़ायम होने से पहले होगा, इसका पूरा बयान आयतः

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ.

(सूरः अम्बिया आयत 96) की तफ़सीर में आयेगा, इन्शा-अल्लाह। इसके बाद सूर फूँका जायेगा और सब जमा हो जायेंगे। यह भी कहा गया है कि मुराद यह है कि क़ियामत के दिन इनसान जिन्नात सब ख़लत-मलत (यानी मिश्रित) हो जायेंगे। बनी ख़ज़ारा के एक शैख़ का बयान इब्ने जरीर में है कि जब जिन्नात व इनसान आपस में गुथ जायेंगे उस वक़्त इब्लीस कहेगा कि मैं जाता हूँ मालूम करता हूँ यह क्या बात है? पूरब की तरफ़ भागेगा, लेकिन वहाँ फ़रिश्तों की जमाअ़त को देखकर रुक जायेगा और लौटकर पश्चिम को पहुँचेगा, वहाँ भी यही रंग देखकर दायें बायें भागेगा लेकिन हर तरफ़ से फ़रिश्तों का घेराव देखकर नाउम्मीद होकर चीख़-पुकार शुरू कर देगा, अचानक उसे एक छोटा सा रास्ता दिखाई देगा, अपनी सारी औलाद और मानने वालों को लेकर उसमें चल पड़ेगा, आगे जाकर देखेगा कि दोज़ख़ भड़क रही है, जहन्नम का एक दरोग़ा उससे कहेगा कि ऐ मूज़ी ख़बीस! क्या अल्लाह ने तेरा मर्तबा नहीं बढ़ाया था? क्या तू जन्नतियों में न था? यह कहेगा आज डाँट-डपट क्यों करते हो? आज तो छुटकारे का रास्ता बतलाओ, मैं इबादते ख़ुदा के लिये तैयार हूँ। अगर हुक्म हो तो इतनी और इबादत करूँ कि रू-ए-ज़मीन पर किसी ने न की हो। दरोग़ा फ़रमायेगा ख़ुदा तआ़ला तेरे लिये एक फ़रीज़ा मुक़र्रर करता है, वह ख़ुश होकर कहेगा मैं उसके हुक्म के पालन के लिये फ़ौरन तैयार हूँ। हुक्म होगा यही कि तुम सब जहन्नम में चले जाओ। अब

यह ख़बीस हैरान व भौंचक्का रह जायेगा। वहीं फ़रिश्ते अपने पर से उसे और उसकी औलाद व मानने वालों को घसीटकर जहन्नम में डाल देगा। जहन्नम उन्हें लेकर ऐसा दबोचेगी और एक मर्तबा तो ऐसी झुल्लायेगी कि तमाम मुक़र्रब फ़रिश्ते और तमाम रसूल नबी घुटनों के बल ख़ुदा के सामने आ़जिज़ी में गिर पड़ेंगे।

तबरानी में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि याजूज माजूज हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से हैं, अगर वे छोड़ दिये जायें तो दुनिया की रोज़ी और ज़िन्दगी में फ़साद डाल दें। एक एक अपने पीछे हज़ार हज़ार बल्कि ज़्यादा छोड़कर मरता है, फिर उनके अ़लावा तीन उम्मतें और हैं- तावील, तायिस और मिन्सक। यह हदीस ग़रीब है, बल्कि मुन्कर और ज़ईफ़ है। नसाई में है कि उनकी बीवियाँ बच्चे हैं, एक एक अपने पीछे हज़ार हज़ार बल्कि ज़्यादा छोड़कर मरता है।

फिर फ़रमाया सूर फूँक दिया जायेगा। हदीस में है कि वह एक क़र्न (सींग) है जिसमें फूँक मारी जायेगी। फूँकने वाले हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम होंगे जैसा कि इससे पहले की लम्बी हदीस इस सिलसिले में बयान हो चुकी है। और भी बहुत सी हदीसों से इसका सुबूत है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं कैसे चैन और आराम से बैठूँ? सूर वाला फ़रिश्ता सूर को मुँह से लगाये हुए पेशानी झुकाये हुए कान लगाये हुए मुन्तज़िर बैठा है कि कब हुक्म हो और मैं फूँक दूँ। लोगों ने पूछा हुज़ूर फिर हम क्या कहें? फ़रमायाः

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا.

"हस्बुनल्लाहु व नेअ़्मल् वकील। अ़लल्लाहि तवक्कल्ना"

फिर फ़रमाता है कि हम सब को हिसाब के लिये जमा करेंगे, सबका हश्र हमारे सामने होगा। जैसे सूरः वाक़िआ़ में है कि अगले पिछले सब के सब मुक़र्रर दिन के वक़्त पर इकट्ठे किये जायेंगे। एक और आयत में है:

وَحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا.

कि हम सबको जमा करेंगे, एक भी तो बाक़ी न बचेगा।

और दोज़ख़ को उस दिन काफ़िरों के सामने पेश कर देंगे। (100) जिनकी आँखों पर (दुनिया में) हमारी याद से पर्दा पड़ा हुआ था और वे सुन भी न सकते थे। (101) सो क्या फिर भी इन काफ़िरों का ख़्याल है कि मुझको छोड़कर मेरे बन्दों को अपना करता-धरता (यानी माबूद और हाजत पूरी करने वाला) क़रार दें। हमने (तो) काफ़िरों की दावत के लिए दोज़ख़ को तैयार कर रखा है। (102)	وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ۙ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ۙ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ۝

जहन्नम

इससे पहले कि काफ़िर जहन्नम में जायें, जहन्नम को और उसके अ़ज़ाब को देख लेंगे और यह यक़ीन

करके कि वे उसी में दाख़िल होने वाले हैं दाख़िल होने से पहले ही जलने कुढ़ने लगेंगे। ग़म व रंज, डर और ख़ौफ़ के मारे घुलने लगेंगे। सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जहन्नम को क़ियामत के दिन घसीट कर लाया जायेगा, जिसकी सत्तर हज़ार लगामें होंगी। हर हर लगाम पर सत्तर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे। ये काफ़िर दुनिया की सारी ज़िन्दगी में अपनी आँखों और कानों को बेकार किये बैठे रहे, न हक़ को देखा न हक़ को सुना न माना न अ़मल किया। शैतान का साथ दिया और रहमान के ज़िक्र से ग़फ़लत बरती। ख़ुदा के अहकाम और मना की हुई बातों को पीठ पीछे डाले रहे। यही समझते रहे कि उनके झूठे माबूद ही उन्हें सारे नफ़े पहुँचायेंगे और तमाम सख़्तियाँ दूर कर देंगे। बिल्कुल ग़लत ख़्याल है, बल्कि वे तो उनकी इबादत के भी मुन्किर हो जायेंगे और उनके दुश्मन बनकर खड़े होंगे। उन काफ़िरों की मन्ज़िल तो जहन्नम ही है जो अभी से तैयार है।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝
الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝
أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ
جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوٓا اٰيٰتِي وَ
رُسُلِي هُزُوًا ۝

आप (उनसे) कहिए कि क्या हम तुमको ऐसे लोग बताएँ जो आमाल के एतिबार से बिल्कुल घाटे में हैं। (103) ये वे लोग हैं जिनकी दुनिया में की-कराई मेहनत सब गई गुज़री हुई और वे (जहालत की वजह से) इस ख़्याल में हैं कि वे अच्छा काम कर रहे हैं। (104) ये वे लोग हैं जो अपने रब की आयतों (यानी अल्लाह तआ़ला की किताबों) का और उससे (क़ियामत में) मिलने का इनकार कर रहे हैं। सो (इसलिए) उनके सारे काम ग़ारत हो गए, तो क़ियामत के दिन हम उन (के नेक आमाल) का ज़रा भी वज़न क़ायम न करेंगे। (105) (बल्कि) उनकी सज़ा वही होगी यानी दोज़ख़, इस वजह से कि उन्होंने कुफ़्र किया था, और (यह कि) मेरी आयतों और पैग़म्बरों का मज़ाक़ बनाया था। (106)

बहुत बुरा अ़मल

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से उनके बेटे मुस्अ़ब ने सवाल किया कि क्या इस आयत से मुराद ख़ारजी (यह एक फ़िर्क़ा है) हैं? आपने फ़रमाया नहीं, बल्कि इससे यहूदी व ईसाई मुराद हैं। यहूदियों ने हुज़ूरे पाक सल्ल. को झुठलाया और ईसाईयों ने जन्नत को सच्चा न माना और कहा कि वहाँ खाना पीना कुछ नहीं। हाँ ख़ारजियों ने ख़ुदा के वायदे को उसकी मज़बूती के बाद तोड़ दिया। पस हज़रत सअ़द रज़ि. ख़ारजियों को फ़ासिक़ (बदकार और बुरे अ़मल वाला) कहते थे। हज़रत अ़ली रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि इससे मुराद ख़ारजी हैं। मतलब यह है कि जैसे यह आयत यहूद व ईसाई वग़ैरह को शामिल है इसी तरह ख़ारजियों का हुक्म भी इसमें है, क्योंकि आयत आ़म है, जो भी ख़ुदा की इबादत व इताअ़त

Maktab E Ashraf

इस तरीक़े से बजा लाये जो तरीक़ा खुदा को पसन्द नहीं तो अगरचे वह अपने आमाल से ख़ुश हो और समझ रहा हो कि मैंने आख़िरत का ज़ख़ीरा बहुत कुछ जमा कर लिया है, मेरे नेक आमाल ख़ुदा के पसन्दीदा हैं और मुझे उन पर अज्र व सवाब ज़रूर मिलेगा, लेकिन उसका यह गुमान ग़लत है, उसके आमाल मक़बूल नहीं बल्कि मर्दूद हैं और वह ग़लत गुमान रखता है।

यह आयत मक्की है और ज़ाहिर है कि मक्के में यहूद व ईसाई मुख़ातब न थे और ख़ारजियों का तो उस वक़्त तक वजूद भी न था। पस उन बुज़ुर्गों का यही मतलब है कि आयत के आ़म अलफ़ाज़ उन सब को और उन जैसे और सब को शामिल हैं। जैसे सूरः ग़ाशिया में है कि क़ियामत के दिन बहुत से चेहरे ज़लील व ख़्वार होंगे जो दुनिया में बहुत मेहनत करने वाले बल्कि आमाल से थके हुए थे, और सख़्त तकलीफ़ें उठाये हुए थे। आज वे अपनी मेहनत व इबादत के बावजूद जहन्नम में जायेंगे और भड़कती हुई आग में डाल दिये जायेंगे। एक और आयत में है:

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا.

कि उनके तमाम किये कराये आमाल को हमने आगे बढ़कर रद्दी और बेकार कर दिया।

एक और आयत में है कि काफ़िरों के आमाल की मिसाल ऐसी है जैसे कोई प्यासा रेत के टीले को दूर से पानी समझ रहा हो, लेकिन जब पास आता है तो एक बूँद भी पानी की नहीं पाता। ये वे लोग हैं जो अपने तौर पर इबादत व रियाज़त (तपस्सया) तो करते रहे और दिल में भी समझते रहे कि हम बहुत कुछ नेकियाँ कर रहे हैं और वो अल्लाह की मक़बूल और पसन्दीदा हैं लेकिन चूँकि वो ख़ुदा के बतलाये हुए तरीक़ों के मुताबिक़ न थीं, नबियों के फ़रमान के मुताबिक़ न थीं, इसलिये बजाय मक़बूल होने के मर्दूद हो गयीं, और ये बजाय पसन्दीदा होने के नापसन्दीदा हो गये। इसलिये कि वे ख़ुदा की आयतों को झुठलाते रहे, ख़ुदा की वहदानियत (यानी उसके एक होने) और उसके रसूल की रिसालत के पूरे के पूरे सुबूत उनके सामने थे लेकिन उन्होंने आँखें बन्द कर लीं और मान कर ही न दिया। उनकी नेकी का पलड़ा बिल्कुल ख़ाली रहेगा। बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि क़ियामत के दिन एक मोटा ताज़ा बड़ा भारी आदमी आयेगा लेकिन ख़ुदा के नज़दीक उसका वज़न एक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा। फिर आपने फ़रमाया तुम अगर चाहो इस आयत की तिलावत कर लो:

فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا.

तो क़ियामत के दिन हम उन (के नेक आमाल) का ज़रा भी वज़न क़ायम न करेंगे।

इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि बहुत ज़्यादा खाने पीने वाले मोटे ताज़े इनसान को क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने लाया जायेगा, लेकिन उसका वज़न अनाज के एक दाने के बराबर भी न होगा। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। बज़्ज़ार में है कि एक क़ुरैशी काफ़िर अपने जोड़े में इतराता हुआ हुज़ूर सल्ल. के सामने से गुज़रा तो आपने हज़रत बरीदा रज़ि. से फ़रमाया यह उनमें से है जिनका कोई वज़न क़ियामत के दिन ख़ुदा के पास न होगा। मरफ़ूअ़ हदीस की तरह हज़रत कअ़ब का क़ौल भी है। यह बदला है उनके कुफ़्र का और ख़ुदा की आयतों और उसके रसूलों को हंसी मज़ाक़ में उड़ाने का, और उनके न मानने बल्कि उन्हें झुठलाने का।

Maktab E Ashraf

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनकी मेहमानी के लिए फ़िरदौस (यानी जन्नत) के बाग़ होंगे। (107) जिनमें वे हमेशा रहेंगे (न उनको कोई निकालेगा और) न वे वहाँ से कहीं और जाना चाहेंगे। (108)	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

नेक अ़मल

अल्लाह पर ईमान रखने वाले, उसके रसूलों को सच्चा मानने वाले, उनकी बातों पर अ़मल करने वाले बेहतरीन जन्नतों में होंगे। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि जब अल्लाह से जन्नत माँगो तो जन्नतुल् फ़िरदौस का सवाल करो, यह सबसे आला सबसे उम्दा जन्नत है। इसी से और जन्नतों की नहरें बहती हैं, यहीं उनका मेहमान-ख़ाना होगा। ये यहाँ हमेशा के लिये रहेंगे, न निकाले जायेंगे न निकलने का ख़्याल आयेगा, न उससे बेहतर कोई और जगह न वे वहाँ के रहने से घबरायेंगे, क्योंकि हर तरह के आला ऐश मुहैया हैं। एक पर एक रहमत मिल रही है, दिन-ब-दिन रग़बत, मुहब्बत व उन्स, उल्फ़त बढ़ती जा रही है, इसलिये न तबीयत उकताती है न दिल भरता है, बल्कि रोज़ शौक़ बढ़ता और नई नेमत मिलती है।

आप (उनसे) कह दीजिए कि अगर मेरे रब की बातें लिखने के लिए समुद्र (का पानी) रोशनाई (की जगह) हो तो मेरे रब की बातें ख़त्म होने से पहले समुद्र ख़त्म हो जाए, (और बातें घेरे में न आएँ) अगरचे उस (समुद्र) जैसा (एक दूसरा समुद्र उसकी) मदद के लिए हम ले आएँ। (109)	قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ۝

रब के कलिमात

हुक्म होता है कि अल्लाह की अ़ज़्मत (बड़ाई) समझाने के लिये दुनिया में ऐलान कर दीजिए कि अगर रू-ए-ज़मीन के समुद्रों की सियाही (रोशनाई) बन जाये और फिर ख़ुदाई कलिमात, ख़ुदाई क़ुदरतों के इज़्हार, ख़ुदाई बातें, ख़ुदाई हिक्मतें लिखनी शुरू की जायें तो यह तमाम रोशनाई ख़त्म हो जायेगी लेकिन ख़ुदा की तारीफ़ें ख़त्म न होंगी, अगरचे फिर ऐसे ही दरिया लाये जायें और फिर लाये जायें और फिर लाये जायें, लेकिन नामुम्किन है कि ख़ुदा की क़ुदरतें उसकी हिक्मतें, उसकी दलीलें ख़त्म हो जायें। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला जल्ल शानुहू का फ़रमान है:

وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْ ۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

यानी रू-ए-ज़मीन के दरख़्तों के क़लम बन जायें और तमाम समुद्रों की रोशनाई हो जाये फिर उनके

Maktab E Ashraf

बाद सात समुद्र और भी लाये जायें लेकिन नामुम्किन है कि अल्लाह के कलिमात पूरे लिख लिये जायें। ख़ुदा की इ़ज़्ज़त और हिक्मत, उसका ग़लबा और क़ुदरत वही जानता है। तमाम इनसानों का इल्म ख़ुदा के मुक़ाबले में इतना भी नहीं जितना समुद्र के मुक़ाबले में क़तरा। तमाम दरख़्तों की क़लम घिस-घिसकर ख़त्म हो जायें, तमाम समुद्रों की रोशनाई ख़त्म हो जाये लेकिन अल्लाह के कलिमात वैसे ही रह जायेंगे जैसे थे। वे अनगिनत हैं, बेशुमार हैं। कौन है जो ख़ुदा की सही और पूरी क़ुदरत व इ़ज़्ज़त जान सके? कौन है जो उसकी पूरी सना व सिफ़त (यानी तारीफ़) बजा ला सके? बेशक हमारा रब वैसा ही है जैसा वह ख़ुद फ़रमा रहा है। बेशक हम जो तारीफ़ें उसकी करें वह उन सबसे ऊपर है और उन सबसे बढ़-चढ़कर है। याद रखो जिस तरह सारी ज़मीन के मुक़ाबले पर एक राई का दाना है उसी तरह जन्नत और आख़िरत की नेमतों के मुक़ाबिले में तमाम दुनिया की नेमतें हैं।

(और) आप (यूँ भी) कह दीजिये कि मैं तो तुम ही जैसा बशर हूँ, मेरे पास बस यह 'वही' आती है कि तुम्हारा माबूद (बर्हक़) एक ही माबूद है, सो जो शख़्स अपने रब से मिलने की आरज़ू रखे तो नेक काम करता रहे और अपने रब की इबादत में किसी को शामिल न करे। (110)	قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۟

ع ١٢

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी बशर हैं

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि यह सबसे आख़िरी आयत है जो हुज़ूर सल्ल. पर उतरी (लेकिन इस बारे में मुहक़्क़िक़ उलेमा की राय अलग है)।

हुक्म होता है कि आप लोगों से फ़रमायें कि मैं तुम जैसा ही एक इनसान हूँ तुम भी इनसान हो, अगर मुझे झूठा जानते हो तो लाओ इस क़ुरआन जैसा एक क़ुरआन तुम भी बनाकर पेश कर दो। देखो मैं कोई ग़ैब का जानने वाला तो नहीं, तुमने मुझसे ज़ुल्क़रनैन का वाक़िआ़ मालूम किया, अस्हाब-ए-कहफ़ का क़िस्सा पूछा तो मैंने उनके सही वाक़िआ़त तुम्हारे सामने बयान कर दिये जो असलियत के मुताबिक़ हैं। अगर मेरे पास ख़ुदा की 'वही' न आती तो मैं इन पहले गुज़रे वाक़िआ़त को जिस तरह वो हुए हैं तुम्हारे सामने किस तरह बयान कर सकता? सुनो सारी की सारी 'वही' (अल्लाह के पैग़ाम) का ख़ुलासा यह है कि तुम ईमान वाले बन जाओ, शिर्क छोड़ दो, मेरी दावत यही है जो भी तुममें से ख़ुदा से मिलकर अज्र व सवाब लेना चाहता हो उसे मुताबिक़े शरीअ़त अ़मल करने चाहियें और शिर्क से बिल्कुल बचना चाहिये, बग़ैर इन दोनों बातों के कोई अ़मल अल्लाह के यहाँ क़ाबिले क़बूल नहीं। ख़ुलूस (यानी ख़ालिस अल्लाह के लिये) हो और नबी करीम सल्ल. के तरीक़े के मुताबिक़ हो।

एक शख़्स ने हुज़ूरे पाक सल्ल. से मालूम किया था कि बहुत से नेक कामों में अल्लाह की रज़ा को तलाश करने के साथ-साथ मेरा इरादा यह भी होता है कि लोग मेरी नेकी देखें, तो मेरे लिये क्या हुक्म है? आप ख़ामोश रहे और यह आयत उतरी। यह हदीस मुर्सल है। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. से एक शख़्स ने सवाल किया कि एक शख़्स नमाज़ रोज़ा सदक़ा ख़ैरात हज ज़कात करता है, ख़ुदा की रज़ामन्दी भी

Maktab E Ashraf

ढूँढता है और लोगों में नेकनामी और बड़ाई भी। आपने फ़रमाया उसकी तमाम इबादत अकारत (बेकार) है, अल्लाह तआ़ला शिर्क से बेज़ार है, जो उसकी इबादत में किसी और की नीयत भी करे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमा देता है कि यह सब उसी दूसरे को दे दो, मुझे इसकी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि हम हुज़ूर सल्ल. के पास बारी-बारी आते, रात गुज़ारते, कभी आपको कोई काम होता तो फ़रमा देते ऐसे लोग बहुत ज़्यादा थे। एक रात हम आपस में बातें कर रहे थे कि रसूले मक़बूल सल्ल. तशरीफ़ लाये और फ़रमाया यह क्या चुप-चाप बातें कर रहे हो? हमने जवाब दिया या रसूलल्लाह! हमारी तौबा है, हम मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे और दिल हमारे डरे हुए थे। आपने फ़रमाया मैं तुम्हें इससे भी ज़्यादा डरने और घबराने की बात बतलाऊँ? वह पोशीदा (छुपा हुआ) शिर्क है, कि इनसान दूसरे इनसान को दिखाने के लिये नमाज़ पढ़े।

मुस्नद अहमद में है, इब्ने ग़नम कहते हैं कि मैं और हज़रत अबू दर्दा जाबिया की मस्जिद में गये, वहाँ हमें हज़रत उबादा बिन सामित मिले। बायें हाथ से तो उन्होंने मेरा दाहिना हाथ थाम लिया और अपने दायें हाथ से हज़रत अबू दर्दा का बायाँ हाथ थाम लिया और इसी तरह हम तीनों वहाँ से बातें करते हुए निकले। आप फ़रमाने लगे देखो अगर तुम दोनों या तुम में से जो भी ज़िन्दा रहा तो मुम्किन है उस वक़्त को भी वह देख ले कि हुज़ूर की ज़बान से क़ुरआन सीखा हुआ भला आदमी हलाल को हलाल और हराम को हराम समझने वाला और हर हुक्म को मुनासिब जगह रखने वाला आये और उसकी क़द्र व इज़्ज़त लोगों में ऐसी हो जैसे मुर्दा गधे के सर की। अभी ये बातें हो रही थीं कि हज़रत शद्दाद बिन औस और हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि. भी आ गये और बैठते ही हज़रत शद्दाद रज़ि. ने फ़रमाया- लोगो! मुझे तो तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा उसका डर है जो मैंने रसूले करीम सल्ल. से सुना है यानी छुपी हुई ख़्वाहिश और शिर्क का। इस पर हज़रत उबादा और हज़रत अबू दर्दा रज़ि. ने फ़रमाया- अल्लाह माफ़ फ़रमाये हमसे हुज़ूरे पाक सल्ल. ने फ़रमाया है कि इस बात से शैतान मायूस हो गया है कि इस अ़रब के इलाक़े में उसकी इबादत की जाये, हाँ पोशीदा (छुपी) शहवतें तो यही ख़्वाहिश की चीज़ें औरतें वग़ैरह हैं। लेकिन यह शिर्क हमारी समझ में तो नहीं आया जिससे आप हमें डरा रहे हैं। हज़रत शद्दाद रज़ि. फ़रमाने लगे- अच्छा बतलाओ तो एक आदमी दूसरों को दिखाने के लिये नमाज़ रोज़ा सदक़ा ख़ैरात करता है, उसका हुक्म तुम्हारे नज़दीक क्या है? क्या उसने शिर्क किया? सबने जवाब दिया बेशक ऐसा शख़्स मुश्रिक है। आपने फ़रमाया मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि जो दुनिया-दिखावे के लिये नमाज़ पढ़े वह मुश्रिक है (लेकिन ऐसा मुश्रिक नहीं जो ख़ुदा तआ़ला और उसके रसूल का इनकारी हो)।

इस पर हज़रत औफ़ बिन मालिक ने कहा- यह नहीं हो सकता कि ऐसे आमाल में जो अल्लाह तआ़ला के लिये हों अल्लाह तआ़ला उसे क़ुबूल फ़रमा ले और जो दूसरे के लिये हो उसे रद्द कर दे। हज़रत शद्दाद रज़ि. ने जवाब दिया- यह हरगिज़ नहीं होने का, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है- मैं सबसे बेहतर हिस्से वाला हूँ जो भी मेरे साथ किसी अ़मल में दूसरे को शरीक करे मैं अपना हिस्सा भी उसी दूसरे के सुपुर्द कर देता हूँ और मैं बहुत ही बेपरवाही (यानी बेनियाज़ी) से हिस्सा और पूरा का पूरा सब कुछ छोड़ देता हूँ। एक और रिवायत में है कि हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि. एक दिन रोने लगे, हमने पूछा हज़रत आप क्यों रो रहे हैं? फ़रमाने लगे एक हदीस याद आ गयी और उसने रुला दिया। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि मुझे अपनी उम्मत के बारे में सबसे ज़्यादा ख़तरा शिर्क और छुपी शहवत (इच्छा और तमन्ना) का है। मैंने दरियाफ़्त किया- या रसूलल्लाह! क्या आपकी उम्मत

आपके बाद शिर्क करेगी? आपने फ़रमाया हाँ सुनो! वह सूरज चाँद पत्थर बुत को न पूजेगी बल्कि अपने आमाल में रियाकारी (दिखावा) करेगी। पोशीदा शहवत (छुपी इच्छा) यह है कि सुबह रोज़े से है और कोई ख़्वाहिश सामने आयी रोज़ा छोड़ दिया। (इब्ने माजा व मुस्नद अहमद)

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है- मैं तमाम शरीकों से बेहतर हूँ। मेरे साथ जो भी किसी को शरीक करे, मैं अपना हिस्सा भी उसी को दे देता हूँ। एक और रिवायत में है कि जो शख़्स किसी अ़मल में मेरे साथ दूसरे को मिलाये मैं उससे बरी हूँ और उसका वह पूरा अ़मल उस ग़ैर के लिये ही है। एक और हदीस में है कि मुझे तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा ख़तरा छोटे शिर्क का है। लोगों ने पूछा वह छोटा शिर्क क्या है? फ़रमाया रियाकारी (दिखावे के लिये कोई अ़मल करना)। क़ियामत के दिन रियाकारों को जवाब मिलेगा कि जाओ जिनके लिये आमाल किये थे उनही के पास अपने आमाल का बदला माँगो। देखो पाते भी हो?

अबू सईद बिन अबी फ़ुज़ाला अन्सारी सहाबी रज़ि. से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना कि जब अल्लाह तआ़ला तमाम अगलों पिछलों को उस दिन जमा करेगा जिस दिन के आने में कोई शक व शुब्हा नहीं, उस दिन एक पुकारने वाला पुकारेगा कि जिसने अपने जिस अ़मल में ख़ुदा तआ़ला के साथ दूसरे को मिलाया हो, उसे चाहिये कि अपने उस अ़मल का बदला उस दूसरे से माँग ले, क्योंकि ख़ुदा तआ़ला शिर्क से बहुत ही बेनियाज़ है। अबू बकरा रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है- रियाकार को अ़ज़ाब भी सबको दिखाकर होगा और नेक आमाल लोगों को सुनाने वाले को अ़ज़ाब भी सबको सुनाकर होगा। (मुस्नद अह़मद) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. से भी यह रिवायत है। इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है- अपने नेक आमाल उछालने वाले (यानी उनका दिखावा करने वाले) को अल्लाह तआ़ला ज़रूर रुस्वा करेगा। उसके अख़्लाक़ बिगड़ जायेंगे और वह लोगों की निगाहों में हक़ीर व ज़लील होगा। यह बयान फ़रमाकर हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. रोने लगे। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अनस रज़ि. रावी हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. ने फ़रमाया है- क़ियामत के दिन इनसान के नेक आमाल के मोहर लगे हुए रजिस्टर ख़ुदा के सामने पेश होंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा इसे फेंक दो, इसे क़बूल करो, इसे क़बूल करो इसे फेंक दो। उस वक़्त फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह! जहाँ तक हमारा इल्म है तो हम उस शख़्स के आमाल नेक ही जानते हैं। जवाब मिलेगा कि जिनको मैं फिंकवा रहा हूँ ये वे आमाल हैं जिनमें सिर्फ़ मेरी ही रज़ामन्दी मतलूब न थी, बल्कि उनमें रियाकारी थी। आज तो मैं सिर्फ़ उन आमाल को क़बूल फ़रमाता हूँ जो सिर्फ़ मेरे ही लिये किये गये हों। (बज़्ज़ार)

इरशाद है कि जो दिखावे सुनावे के लिये खड़ा हुआ हो, वह जब तक न बैठे ख़ुदा के गुस्से और ग़ज़ब में ही रहता है। अबू यअ़ला की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स लोगों के देखते हुए तो ठहर-ठहर कर अच्छी तरह नमाज़ पढ़े और तन्हाई में जल्दी-जल्दी बेदिली से अदा करे, उसने अपने परवर्दिगार की तौहीन की। पहले बयान हो चुका है कि इस आयत को हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ि. क़ुरआन की आख़िरी आयत बतलाते हैं, लेकिन यह क़ौल इश्काल से ख़ाली नहीं, क्योंकि सूरः कहफ़ पूरी की पूरी मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई है और ज़ाहिर है कि उसके बाद मदीने में बराबर दस साल तक क़ुरआने करीम उतरता रहा। तो बज़ाहिर यह मालूम होता है कि हज़रत मुआ़विया रज़ि. का मतलब यह हो कि यह आयत आख़िरी है, यानी किसी दूसरी आयत से मन्सूख़ नहीं हुई। इसमें जो हुक्म है वह आख़िर तक बदला नहीं गया। इसके बाद कोई ऐसी आयत नहीं उतरी जो इसमें तब्दीली और फेर-बदल करे। वल्लाहु आलम।

Maktab E Ashraf

एक बहुत ही ग़रीब हदीस हाफ़िज़ अबू बक्र बज़्ज़ार रह. अपनी किताब में लाये हैं, कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है- जो शख़्स आयतः

مَنْ كَانَ يَرْجُوا........ الخ.

(यही आयत जिसका बयान चल रहा है) को रात के वक़्त पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला उसे इतना बड़ा नूर अ़ता फ़रमायेगा जो अ़दन से मक्का शरीफ़ तक पहुँचे।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः कहफ़ की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः मरियम

सूरः मरियम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 98 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

इस सूरत के शुरू की आयतें हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हबशा के बादशाह के दरबार में बादशाह के दरबारियों के सामने तिलावत फ़रमाई थीं। (मुस्नद अहमद व सीरते मुहम्मद बिन इस्हाक़)

كٓهٰيٰعٓصٓo ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّاo اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّاo قَالَ رَبِّ اِنِّىْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّىْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ ۢبِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّاo وَاِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِىَ مِنْ وَّرَآءِىْ وَكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا فَهَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّاo يَّرِثُنِىْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّاo

काफ़-हा-या-ऐन-सॉद। (1) यह तज़्किरा है आपके परवर्दिगार के मेहरबानी फ़रमाने का अपने बन्दे ज़करिया पर। (2) जबकि उन्होंने अपने परवर्दिगार को पोशीदा तौर पर पुकारा। (3) (जिस में यह) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी हड्डियाँ (बुढ़ापे की वजह से) कमज़ोर हो गईं और सर में बालों की सफ़ेदी फैल गई, और (इससे पहले कभी मैं) आपसे माँगने में ऐ मेरे रब मैं नाकाम नहीं रहा हूँ। (4) और मैं अपने बाद (अपने) रिश्तेदारों (की तरफ़) से अन्देशा रखता हूँ और मेरी बीवी बाँझ है, (इस सूरत में) आप मुझको ख़ास अपने पास से एक ऐसा वारिस (यानी बेटा) दे दीजिए (5) कि वह (मेरे ख़ास उलूम में) मेरा वारिस बने, और (मेरे दादा) याक़ूब के ख़ानदान का वारिस बने, और उसको ऐ मेरे रब! (अपना) पसन्दीदा बनाईए। (6)

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा

इस सूरत के शुरू में जो पाँच हुरूफ़ हैं उन्हें "हुरूफ़े मुक़त्तआ़त" कहा जाता है। इसका तफ़सीली बयान हम सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में कर चुके हैं। हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम पर जो अल्लाह की मेहरबानी व लुत्फ़ नाज़िल हुआ उसका वाक़िआ़ बयान हो रहा है। आप बनी इस्राईल के ज़बरदस्त पैग़म्बर थे। सही बुख़ारी श०. फ़ में है कि आप बढ़ई का पेशा करके अपना पेट पालते थे। अल्लाह से दुआ़ करते थे, लेकिन इस वजह से कि यह लोगों के नज़दीक अनोखी दुआ़ थी कोई सुनता तो ख़्याल करता कि लो बुढ़ापे में औलाद की तमन्ना हुई है, और यह वजह भी थी कि पोशीदा दुआ़ ख़ुदा को ज़्यादा प्यारी और क़बूलियत से ज़्यादा क़रीब होती है। अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ी दिल को अच्छी तरह जानता है और आहिस्तगी की आवाज़ को पूरी तरह सुनता है।

बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि जो शख़्स ऐसे वक़्त उठे जबकि सोने वाले सो रहे हों और पोशीदगी (यानी धीमी आवाज़) से ख़ुदा को पुकारे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! ऐ मेरे पालनहार! ऐ मेरे रब! अल्लाह तआ़ला उसी वक़्त जवाब देता है कि लब्बैक मैं मौजूद हूँ, मैं तेरे पास मौजूद हूँ।

दुआ़ में कहते हैं कि ख़ुदाया मेरे बदनी अंग और क़ुव्वतें कमज़ोर हो गयी हैं, मेरी हड्डियाँ खोखली हो चुकी हैं, मेरे सर के बालों की सियाही अब तो सफ़ेदी से बदल गयी है, तमाम ताक़तें कमज़ोर हो गयी हैं। बुढ़ापे और कमज़ोरी ने घेर लिया है। मैं तेरे दरवाज़े से कभी ख़ाली हाथ नहीं गया। जब भी तुझ करीम से कुछ माँगा तूने अ़ता फ़रमाया।

फ़रमाते हैं कि चूँकि मेरी औलाद नहीं और जो मेरे रिश्तेदार हैं उनसे मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं वे मेरे बाद कोई बुरा मामला कर दें तो मुझे औलाद इनायत फ़रमा जो मेरे बाद मेरी नुबुव्वत संभाले। यह हरगिज़ न समझा जाये कि आपको अपने माल व जायदाद के इधर-उधर हो जाने का ख़ौफ़ था। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम इससे बहुत पाक हैं। उनका मर्तबा इससे बहुत ज़्यादा है कि वे इसलिये औलाद माँगें कि अगर औलाद न हुई तो मेरा माल दूर के रिश्तेदारों में चला जायेगा। दूसरे यह भी ज़ाहिर है कि हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम जो उम्र भर अपनी हड्डियाँ पेल कर बढ़ई का काम करके अपना पेट अपने हाथ के काम से पालते रहे, उनके पास ऐसी कौनसी बड़ी रक़म थी कि जिसकी विरासत के लिये इस क़द्र पसोपेश (असमंजस) होता कि कहीं यह दौलत हाथ से निकल न जाये। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम तो यूँ भी सारी दुनिया से ज़्यादा माल से बे-रग़बत (रुचि न रखने वाले) और ज़ाहिद (किनारा करने वाले) होते हैं। तीसरी वजह यह भी है कि बुख़ारी व मुस्लिम में कई सनदों से हदीस है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हमारा वरसा (विरासत और छोड़ा हुआ असासा) नहीं बंटता। जो कुछ हम छोड़ें सब सदक़ा है। तिर्मिज़ी में सही सनद से रिवायत है कि हम अम्बिया की जमाअ़त में नुबुव्वत है न कि माली जायदाद व विरासत। इसी लिये आपने यह भी फ़रमाया कि वह मेरा और आले याक़ूब का वारिस हो। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ.

कि सुलैमान दाऊद के वारिस हुए। यानी नुबुव्वत के वारिस हुए न कि माल के। वरना माल में और दूसरी औलाद भी शरीक होती है, किसी की विशेषता नहीं होती।

चौथी वजह यह भी है और यह भी माक़ूल वजह है कि औलाद का वारिस होना तो आ़म है, सब में है,

तमाम मज़हबों में है, फिर कोई ज़रूरत न थी कि हज़रत ज़करिया अपनी दुआ में यह वजह बयान फ़रमाते। इससे साफ़ साबित है कि वह विरासत कोई ख़ास विरासत थी और वह नुबुव्वत का वारिस बनना था। पस इन तमाम वजहों से साबित है कि इससे मुराद नुबुव्वत की मीरास है। जैसे कि हदीस में है कि हम जमाअ़ते अम्बिया का वरसा (यानी छोड़ा हुआ माल) नहीं बंटता, हम जो छोड़ जायें वह सदक़ा है।

मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यहाँ इल्म की विरासत मुराद है। हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से थे। अबू सालेह फ़रमाते हैं कि मुराद यह है कि वह भी अपने बड़ों की तरह नबी बने। हसन रह. फ़रमाते हैं कि नुबुव्वत और इल्म का वारिस बने। सुद्दी रह. का क़ौल है कि मेरी और याक़ूब की औलाद की नुबुव्वत का वारिस हो। मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में हदीस है कि अल्लाह तआ़ला हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम पर रहम करे, भला उन्हें माल के वारिस से क्या ग़र्ज़ थी? अल्लाह तआ़ला लूत अ़लैहिस्सलाम पर रहम करे कि वह किसी मज़बूत क़िले की तमन्ना करने लगे। इब्ने जरीर में है कि आपने फ़रमया- मेरे भाई ज़करिया पर ख़ुदा का रहम हो। कहने लगे ख़ुदाया मुझे अपने पास से वाली अ़ता फ़रमा जो मेरा और याक़ूब की औलाद का वारिस बने। लेकिन ये सब हदीसें मुर्सल हैं जो सही हदीसों के मुक़ाबले में पेश नहीं की जा सकतीं। वल्लाहु आलम।

और ऐ अल्लाह! उसे अपना पसन्दीदा ग़ुलाम बना ले, और ऐसे दियानतदार बना कि तेरी मुहब्बत के अ़लावा तमाम मख़्लूक़ भी उससे मुहब्बत करे। उसका दीन और अख़्लाक़ हर एक पसन्दीदगी और प्यार की नज़र से देखे।

ऐ ज़करिया! हम तुमको एक फ़रज़न्द (बेटे) की ख़ुशख़बरी देते हैं, जिसका नाम यह्या होगा कि इससे पहले हमने किसी को उस जैसी सिफ़त वाला न बनाया होगा। (7)	يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

ख़ुशख़बरी

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ मक़बूल होती है और फ़रमाया जाता है कि आप एक बच्चे की ख़ुशख़बरी सुन लें, जिसका नाम यहया है। जैसे एक और आयत में है:

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ......... الخ.

कि वहीं हज़रत ज़करिया ने अपने रब से दुआ़ की कि ख़ुदाया! मुझे अपने पास से बेहतरीन औलाद अ़ता फ़रमा, तू दुआ़ओं का सुनने वाला है।

फ़रिश्तों ने उन्हें आवाज़ दी और वह उस वक़्त नमाज़ की जगह में नमाज़ में खड़े थे कि ख़ुदा तआ़ला आपको अपने एक कलिमे की ख़ुशख़बरी देता है जो सरदार होगा और पाकबाज़ होगा और नबी होगा और पूरे नेक काम करने वाले आला दर्जे के भले लोगों में से होगा। यहाँ फ़रमाया कि उनसे पहले इस नाम का कोई और इनसान नहीं हुआ। यह भी कहा गया है कि उसके जैसा कोई और न होगा। यही मायने "समिय्या" (यानी उस जैसी सिफ़त वाला) के आयत "हल् तअ़्लमु लहू समिय्या" (यानी सूरः मरियम की आयत 65) के हैं।

यह मायने भी बयान किये गये हैं कि उससे पहले किसी बाँझ औरत से ऐसी औलाद नहीं हुई। हज़रत

Mahtab E Ashraf

ज़करिया के यहाँ कोई औलाद नहीं होती थी। आपकी बीवी साहिबा भी शुरू उम्र से बेऔलाद थीं। हज़रत इब्राहीम और हज़रत सारा अ़लैहिमस्सलाम ने भी बच्चे के होने की बशारत सुनकर बेहद ताज्जुब किया था लेकिन उनके ताज्जुब की वजह उनका बेऔलाद होना और बाँझ होना न थी बल्कि बहुत बुढ़ापे में औलाद का होना, यह ताज्जुब की वजह थी। और हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम के यहाँ तो अब तक कोई औलाद हुई ही न थी, इसी लिये हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मुझे इस बुढ़ापे में तुम औलाद की ख़बर कैसे दे रहे हो? वरना उससे तेरह साल पहले आपके यहाँ हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हुए थे। आपकी बीवी साहिबा ने भी इस ख़ुशख़बरी को सुनकर ताज्जुब से कहा था कि क्या इस बुढ़ापे में मेरे यहाँ औलाद होगी? जबकि मेरे मियाँ भी बहुत ज़्यादा बूढ़े हैं। यह तो बहुत ही ताज्जुब पैदा करने वाली चीज़ है। यह सुनकर फ़रिश्तों ने कहा था कि क्या तुम्हें ख़ुदा के मामले से ताज्जुब है? ऐ इब्राहीम के घराने वालो! तुम पर ख़ुदा की रहमतें और उसकी बरकतें हैं। ख़ुदा तारीफ़ों और बुज़ुर्गियों वाला है।

(ज़करिया अ़लैहिस्सलाम ने) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरे औलाद किस तौर पर होगी, हालाँकि मेरी बीवी बाँझ है और (इधर) मैं बुढ़ापे के इन्तिहाई दर्जे को पहुँच चुका हूँ। (8) इरशाद हुआ कि (मौजूदा हालत) यूँ ही (रहेगी, और फिर औलाद होगी। ऐ ज़करिया!) तुम्हारे रब का क़ौल है कि यह (बात) मुझको आसान है और मैंने तुमको पैदा किया हालाँकि तुम (पैदाईश से पहले) कुछ भी न थे। (9)	قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝

हैरानी

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम अपनी दुआ़ की क़बूलियत और अपने यहाँ लड़का होने की बशारत (ख़ुशख़बरी) सुनकर ख़ुशी और ताज्जुब से कैफ़ियत मालूम करने लगे कि ज़ाहिरी असबाब के हिसाब से तो यह एक नामुम्किन और बहुत दूर की बात मालूम होती है, दोनों जानिब से हालत नाउम्मीदी की है। बीवी बाँझ, जिससे अब तक औलाद नहीं हुई, मैं बूढ़ा और बेहद बूढ़ा जिसकी हड्डियों में अब तो गूदा भी नहीं रहा, सूखी टहनी के जैसा हो गया हूँ। फिर हमारे यहाँ औलाद कैसे होगी? ग़र्ज़ कि रब्बुल-आ़लमीन से ताज्जुब व ख़ुशी के मारे कैफ़ियत मालूम की।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि मैं तमाम सुन्नतों को जानता हूँ लेकिन मुझे यह मालूम नहीं हुआ कि हुज़ूर सल्ल. ज़ोहर व अ़सर में क़ुरआन मजीद पढ़ते थे या नहीं? और न यह मालूम है कि इस लफ़्ज़ को "अ़तिय्या" पढ़ते थे या "अ़सिय्या" (अहमद)।

फ़रिश्ते ने जवाब दिया कि यह तो वायदा हो चुका। इसी हालत में इसी बीवी से तुम्हारे यहाँ लड़का होगा। अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे यह काम मुश्किल नहीं, इससे ज़्यादा ताज्जुब वाला और इससे बड़ी क़ुदरत वाला काम तो तुम ख़ुद देख चुके हो और वह ख़ुद तुम्हारा वजूद है, जो कुछ न था और अल्लाह ने बना दिया। पस जो तुम्हारी पैदाईश पर क़ादिर था वह तुम्हारे यहाँ औलाद पर भी क़ादिर है। जैसे फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا.

यानी यक़ीनन इनसान पर उसके ज़माने का ऐसा वक़्त भी गुज़रा है जिसमें वह क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था।

قَالَ رَبِّ اجْعَل لِّي آيَةً ۚ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ أَن سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝

(जब ज़करिया अलैहिस्सलाम ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा दीजिए, इरशाद हुआ कि तुम्हारी (वह) निशानी यह है कि तुम तीन रात (और तीन दिन तक) आदमियों से बात न कर सकोगे, (हालाँकि तन्दुरुस्त होगे)। (10) पस हुजरे में से अपनी क़ौम के पास निकले और उनको इशारे से फ़रमाया कि तुम लोग सुबह और शाम अल्लाह की पाकी बयान किया करो। (11)

कोई निशानी

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम अपने और ज़्यादा इत्मीनान और दिल की तसल्ली के लिये ख़ुदा से दुआ करते हैं कि इस बात पर कोई निशान ज़ाहिर फ़रमा, जैसे कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुर्दों के ज़िन्दा होकर उठने के देखने की तमन्ना इसी लिये ज़ाहिर फ़रमाई थी, तो इरशाद हुआ कि तू गूँगा होगा। बीमार न होगा लेकिन इसके बावजूद तेरी ज़बान लोगों से बात न कर सकेगी, तीन दिन रात तक यही हालत रहेगी। यही हुआ भी कि तस्बीह इस्तिग़फ़ार, अल्लाह की हम्द व सना वग़ैरह पर तो ज़बान चलती थी लेकिन लोगों से बात न कर सकते थे। इब्ने अब्बास रज़ि. से यह भी मन्क़ूल है और जमहूर उलेमा की तफ़सीर भी यही है और यही ज़्यादा सही है। चुनाँचे सूरः आले इमरान में इसका बयान भी गुज़र चुका है कि निशानी तलब करने पर फ़रमान हुआ कि तीन दिन तक तुम सिर्फ़ इशारों किनायों से लोगों से बातें कर सकते हो, हाँ अपने रब की याद ख़ूब ज़्यादा करो और सुबह व शाम उसकी पाकीज़गी बयान किया करो।

पस उन तीन दिन रात में आप किसी इनसान से कोई बात नहीं कर सकते थे। हाँ इशारों से अपना मतलब समझा दिया करते थे। लेकिन यह नहीं कि आप गूँगे हो गये हों। अब आप अपने उस हुजरे से जहाँ जाकर तन्हाई में अपने यहाँ औलाद होने की दुआ की थी बाहर आये और जो नेमत ख़ुदा ने आप पर इनाम की थी और जिस तस्बीह व ज़िक्र का आपको हुक्म हुआ था वही क़ौम को भी हुक्म हुआ लेकिन चूँकि बोल न सकते थे इसलिये उन्हें इशारों से समझाया, या ज़मीन पर लिखकर उन्हें समझा दिया।

يَا يَحْيَىٰ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ ۖ وَآتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝ وَحَنَانًا مِّن لَّدُنَّا وَ

ऐ यहया! किताब को मज़बूत होकर लो, और हमने उनको (उनके) लड़कपन ही में (दीन की) समझ (12) और ख़ास अपने पास से दिल की नर्मी और (अख़्लाक़ की) पाकीज़गी अता फ़रमाई थी, और वह बड़े परहेज़गार थे। (13)

Maktab E Ashraf

और अपने माँ-बाप के ख़िदमत-गुज़ार थे, और वह (मख़्लूक़ के साथ) सरकशी करने वाले (या हक़ तआ़ला की) नाफ़रमानी करने वाले न थे। (14) और उनको (अल्लाह तआ़ला का) सलाम पहुँचे जिस दिन कि वह पैदा हुए और जिस दिन कि वह इन्तिक़ाल करेंगे और जिस दिन (क़ियामत में) ज़िन्दा होकर उठाये जाएँगे। (15)	زَكٰوةً ۗ وَكَانَ تَقِيًّا ۝ وَّبَرًّا ۢ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝ ع

हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम

अल्लाह की ख़ुशख़बरी के मुताबिक़ हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम के यहाँ हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें तौरात सिखा दी, जिसके अहकाम नेक लोग और अम्बिया दूसरों को बतलाते थे। उस वक़्त उनकी उम्र थोड़ी ही थी इसी लिये अपनी इस अनोखी नेमत का भी ज़िक्र किया कि बच्चा भी दिया और उसे आसमानी किताब का आ़लिम भी बचपन ही से कर दिया और हुक्म दे दिया कि कोशिश और जमाव के साथ अल्लाह की किताब सीख ले। साथ ही हमने उसी कम-उम्री में समझ और इल्म, क़ुव्वत व इरादा, दानाई और हिल्म अ़ता फ़रमाया। नेकियों की तरफ़ बचपन से ही झुक गये और कोशिश व ख़ुलूस के साथ ख़ुदा की इबादत और मख़्लूक़ की ख़िदमत में लग गये। बच्चे आपसे खेलने को कहते थे मगर यह जवाब पाते थे कि "हम खेल के लिये नहीं पैदा किये गये"। हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम का वजूद ज़करिया अ़लैहिस्सलाम के लिये हमारी रहमत का करिश्मा था, जिस पर सिवाय हमारे और कोई क़ादिर नहीं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह भी मन्क़ूल है कि अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानता कि "हनान" का मतलब क्या है, लुग़त में मुहब्बत शफ़क़त रहमत वग़ैरह के मायने में आया है। बज़ाहिर यह मालूम होता है कि हमने उसे बचपन ही से हुक्म दिया और उसे शफ़क़त व मुहब्बत और पाकीज़गी अ़ता फ़रमाई। मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि एक शख़्स जहन्नम में एक हज़ार साल तक "या हन्नान या मन्नान" पुकारता रहेगा। पस हर मैल-कुचैल से हर गुनाह और मासियत से आप बचे हुए थे, सिर्फ़ नेक आमाल आपकी उम्र का ख़ुलासा था। आप गुनाहों और ख़ुदा की नाफ़रमानियों से बिल्कुल अलग थे। साथ ही माँ-बाप के फ़रमाँबरदार, इताअ़त-गुज़ार और उनके साथ नेक सुलूक करने वाले थे। कभी किसी बात में माँ-बाप की मुख़ालफ़त नहीं की, कभी उनके फ़रमान से बाहर नहीं हुए, कभी उनके मना करने के बाद किसी काम को नहीं किया। कोई सरकशी कोई नाफ़रमानी आप में न थी। इन बेहतरीन ख़ूबियों और उम्दा आ़दतों के बदले तीनों हालतों में आपको ख़ुदा की तरफ़ से अमन व अमान और सलामती मिली। यानी पैदाईश वाले दिन, मौत वाले दिन और हश्र वाले दिन। यही तीनों जगहें घबराहट की और अन्जान होती हैं। माँ के पेट से निकलते ही एक नई दुनिया देखता है जो उसकी आज तक की दुनिया से बहुत बड़ी और बिल्कुल अलग होती है। मौत वाले दिन उस मख़्लूक़ से वास्ता पड़ता है जिससे ज़िन्दगी में कभी भी वास्ता नहीं पड़ा, न उन्हें कभी देखा। इसी तरह मेहशर (क़ियामत) वाले दिन भी अपने आपको एक बहुत बड़े मजमे में जो बिल्कुल नई चीज़ है, देखकर हैरान हो जायेगा। पस इन तीनों वक़्तों में ख़ुदा की तरफ़ से हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम को सलामती मिली।

Maktab E Ashraf

एक मुर्सल हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- तमाम लोग क़ियामत के दिन कुछ न कुछ गुनाह लेकर जायेंगे सिवाय हज़रत यहया के। हज़रत क़तादा रह. कहते हैं कि आपने गुनाह तो क्या कभी गुनाह का इरादा भी नहीं किया। यह हदीस मरफ़ूअन दूसरी दो सनदों से भी रिवायत है, लेकिन वे दोनों सनदें भी कमज़ोर हैं। वल्लाहु आलम

हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत यहया और हज़रत ईसा अ़लैहिमस्सलाम की मुलाक़ात हुई तो हज़रत ईसा हज़रत यहया से फ़रमाने लगे- आप मेरे लिये इस्तिग़फ़ार कीजिए आप मुझसे बेहतर हैं। हज़रत यहया ने जवाब दिया आप मुझसे बेहतर हैं। हज़रत ईसा ने फ़रमाया मैंने तो आप ही अपने ऊपर सलाम कहा और आप पर ख़ुद ख़ुदा ने सलाम कहा। अब इन दोनों अल्लाह के नबियों की फ़ज़ीलत ज़ाहिर है।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ
مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۙ فَاتَّخَذَتْ مِنْ
دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۗ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا
فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝ قَالَتْ اِنِّيْٓ
اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝
قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ
غُلٰمًا زَكِيًّا ۝ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ
وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ
كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ
وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ
اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝

और (ऐ मुहम्मद!) इस किताब में मरियम का भी ज़िक्र कीजिए, जबकि वह अपने घर वालों से अलग (होकर) एक ऐसे मकान में जो पूरब की जानिब था (नहाने के लिए) गईं। (16) फिर उन (घर वाले) लोगों के सामने उन्होंने पर्दा डाल लिया, पस (इस हालत में) हमने उनके पास अपने फ़रिश्ते (जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम) को भेजा, और वह उनके सामने एक पूरा आदमी बनकर ज़ाहिर हुआ। (17) कहने लगीं कि मैं तुझसे (अपने ख़ुदा-ए-) रहमान की पनाह माँगती हूँ अगर तू (कुछ) ख़ुदा से डरने वाला है (तो यहाँ से हट जाएगा)। (18) फ़रिश्ते ने कहा कि मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ (फ़रिश्ता) हूँ ताकि तुमको एक पाकीज़ा लड़का दूँ। (19) वह (ताज्जुब से) कहने लगीं कि (भला) मेरे लड़का किस तरह हो जाएगा हालाँकि मुझको किसी इनसान ने हाथ तक नहीं लगाया, और न मैं बदकार हूँ। (20) फ़रिश्ते ने कहा कि यूँ ही (औलाद हो जाएगी) तुम्हारे रब ने इरशाद फ़रमाया है कि यह (बात) मुझको आसान है। और (इस तौर पर) इसलिए पैदा करेंगे ताकि हम उस (लड़के) को लोगों के लिए (क़ुदरत की) एक निशानी बनाएँ, और रहमत (का सबब) बनाएँ, और यह एक तयशुदा बात है (जो ज़रूर होगी)। (21)

हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम का क़िस्सा

ऊपर हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र हुआ था और यह बयान फ़रमाया गया था कि वह अपने बुढ़ापे तक बेऔलाद रहे, उनकी बीवी हमेशा की बाँझ थीं जिस पर ख़ुदा तआ़ला ने उस उम्र में उनके यहाँ अपनी क़ुदरत से औलाद अ़ता फ़रमाई। हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए जो नेक तबीयत के और परहेज़गार थे। उसके बाद इससे भी बढ़कर अपनी क़ुदरत का प्रतीक पेश करता है। हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम का वाकिआ़ बयान करता है कि वह कुंवारी थीं, किसी मर्द का हाथ तक उन्हें नहीं लगा था, और बिना मर्द के अल्लाह तआ़ला ने महज़ अपनी कामिल क़ुदरत से उन्हें बच्चा अ़ता फ़रमाया।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जैसा बेटा उन्हें दिया जो ख़ुदा तआ़ला के चुने हुए और मक़बूल पैग़म्बर, रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह थे। चूँकि इन दो क़िस्सों में पूरा जोड़ और ताल्लुक़ है इसी लिये यहाँ भी और सूरः आले इमरान में भी और सूरः अम्बिया में भी इन दोनों को एक साथ बयान फ़रमाया ताकि बन्दे अल्लाह तआ़ला की बेमिसाल क़ुदरत और अ़ज़ीमुश्शान सल्तनत का मुआ़यना कर लें। हज़रत मरियम इमरान की बेटी थीं। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की नस्ल में से थीं। बनी इस्राईल में यह घराना पाकीज़ा और नेक था। सूरः आले इमरान में आपकी पैदाईश वग़ैरह का तफ़सीली बयान गुज़र चुका है। उस ज़माने के दस्तूर के मुताबिक़ आपकी वालिदा साहिबा ने आपको बैतुल-मुक़द्दस की मस्जिदे क़ुदुस की ख़िदमत के लिये दुनियावी कामों से आज़ाद कर दिया था। ख़ुदा तआ़ला ने यह नज़्र (मन्नत) क़बूल फ़रमाई और हज़रत मरियम की परवरिश बेहतरीन अन्दाज़ से की। आप ख़ुदा की इबादतों में, रियाज़तों (तपस्सयाओं) में और नेकियों में मशग़ूल हो गयीं। आपकी इबादत व रियाज़त, तक़वा व परहेज़गारी की शोहरत थी। आप अपने ख़ालू हज़रत ज़करिया की परवरिश व तरबियत में थीं जो उस वक़्त के बनी इस्राईली नबी थे। तमाम बनी इस्राईल दीनी मामलात में उन्हीं के फ़रमान के ताबे थे। हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम पर हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम की बहुत सी करामतें (अ़जीब बातें) ज़ाहिर हुयीं, ख़ुसूसन यह कि जब कभी आप उनके इबादत-ख़ाने में जाते तो क़िस्म-क़िस्म के बेमौसम फल वहाँ मौजूद पाते। मालूम किया कि मरियम ये कहाँ से आये हैं? जवाब मिला कि अल्लाह तआ़ला के पास से। वह ऐसा क़ादिर है कि जिसे चाहे बेहिसाब रोज़ियाँ अ़ता फ़रमाये।

अब अल्लाह तआ़ला का इरादा हुआ कि हज़रत मरियम के पेट से हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को पैदा करे, जो पाँच बड़े पैग़म्बरों में से एक हैं। आप मस्जिदे क़ुदुस की पूर्वी दिशा में गयीं, या तो इसलिये कि उनको माहवारी आ रही थी या किसी और सबब से। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अहले किताब पर बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुतवज्जह होना और हज करना फ़र्ज़ किया गया था लेकिन चूँकि मरियम सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बैतुल-मुक़द्दस से पूरब की तरफ़ गयी थीं, जैसे कि फ़रमाने ख़ुदा है, इस वजह से उन लोगों ने पूर्वी रुख़ पर नमाज़ें शुरू कर दीं।

हज़रत ईसा के पैदाईश के स्थान को उन्होंने अपनी तरफ़ से क़िब्ला बना लिया। मन्क़ूल है कि जिस जगह आप गयी थीं वह जगह यहाँ से दूर और ग़ैर-आबाद थी। कहते हैं कि वहाँ आपका खेत था जिसे पानी देने के लिये आप गयी थीं। यह भी कहा गया है कि वहीं हुजरा बना लिया था कि लोगों से अलग थलग अल्लाह की इबादत में सुकून के साथ मशग़ूल रहें। वल्लाहु आलम।

जब यह लोगों से दूर हो गयीं तो अल्लाह तआ़ला ने आपके पास अपने अमीन फ़रिश्ते हज़रत जिब्राईल

Maktab E Ashraf

अ़लैहिस्सलाम को भेजा। वह पूरी इनसानी शक्ल में आप पर ज़ाहिर हुए। यहाँ रूह से मुराद यही बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है, जैसा कि क़ुरआनी आयत में हैः

نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ........ الخ.

कि रोज़े अज़ल में जबकि इब्ने आदम की तमाम रूहों से ख़ुदा तआ़ला की ख़ुदाई का इक़रार लिया गया था, उन रूहों में हज़रत ईसा की रूह भी थी। उसी रूह को इनसान की सूरत में ख़ुदा की तरफ़ से भेजा गया था। इसी रूह ने आपसे बातें कीं और आपके जिस्म में हुलूल कर गयी (यानी समा गयी), लेकिन यह क़ौल अ़लावा ग़रीब होने के बिल्कुल ही मुन्कर है। बहुत मुम्किन है कि यह बनी इस्राईली रिवायत हो।

आपने जब इस तन्हाई के मकान में एक ग़ैर-शख़्स को देखा तो यह समझ कर कि कहीं यह कोई बुरा आदमी न हो, उसे अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दिलाया कि अगर तू परहेज़गार है तो ख़ौफ़े ख़ुदा कर। मैं ख़ुदा की पनाह चाहती हूँ। इतना पता तो आपको उनके चेहरे और हुलिये से चल गया था कि यह कोई भला इनसान है और यह जानती थीं कि नेक शख़्स को ख़ुदा का डर और ख़ौफ़ काफ़ी है। फ़रिश्ते ने आपका ख़ौफ़ व डर और घबराहट दूर करने के लिये साफ़ कह दिया कि और कोई गुमान न करो, मैं ख़ुदा का भेजा हुआ फ़रिश्ता हूँ।

कहते हैं कि ख़ुदा का नाम सुनकर हज़रत जिब्राईल काँप उठे और अपनी सूरत पर आ गये और कह दिया कि मैं ख़ुदा का क़ासिद हूँ इसलिये ख़ुदा तआ़ला ने मुझे भेजा है कि वह तुझे एक पाक-नफ़्स बेटा अ़ता करना चाहता है।

यह सुनकर मरियम सिद्दीक़ा को और ताज्जुब हुआ कि सुब्हानल्लाह! मुझे बच्चा कैसे होगा? मेरा तो निकाह ही नहीं हुआ, और बुराई का मुझे तसव्वुर नहीं हुआ। मेरे जिस्म पर किसी इनसान का कभी हाथ नहीं लगा, मैं बदकार नहीं। फिर मेरे यहाँ औलाद कैसी? "बिग़िय्या" से मुराद ज़िनाकार है, जैसे हदीस में भी यह लफ़्ज़ इसी मायने में है किः

مَهْرُ الْبَغِيِّ.

ज़ानिया की उजरत हराम है।

फ़रिश्ते ने आपके ताज्जुब को यह फ़रमाकर टाला कि सब सच है, लेकिन ख़ुदा इस पर क़ादिर है कि बग़ैर शौहर के और बग़ैर किसी और बात के भी औलाद दे दे, वह जो चाहे हो जाता है। ख़ुदा तआ़ला उस बच्चे को और इस वाक़िए को अपने बन्दों की तज़कीर (नसीहत और और यादगारी) का सबब बना देगा। यह क़ुदरते ख़ुदा की एक निशानी होगी ताकि लोग जान लें कि वह ख़ालिक़ हर तरह की पैदाईश पर क़ादिर है। आदम को बग़ैर औ़रत मर्द के पैदा किया, हव्वा को सिर्फ़ मर्द से बग़ैर औ़रत के पैदा किया, बाक़ी तमाम इनसानों को मर्द औ़रत से पैदा किया सिवाय हज़रत ईसा के, कि वह बग़ैर मर्द के औ़रत से ही पैदा हुए। पस तक़सीम की ये चार ही सूरतें हो सकती थीं जो सब पूरी कर दी गयीं और अपनी कामिल क़ुदरत और अ़ज़ीम सल्तनत की मिसाल क़ायम कर दी। हक़ीक़त में न उसके सिवा कोई माबूद है न परवर्दिगार।

और यह बच्चा ख़ुदा की रहमत बनेगा। रब का पैग़म्बर होगा। ख़ुदा की इबादत की दावत उसकी मख़्लूक़ को देगा। जैसे एक और आयत में है कि फ़रिश्तों ने कहा- ऐ मरियम! अल्लाह तआ़ला तुझे अपने, एक कलिमे की ख़ुशख़बरी सुनाता है, जिसका नाम मसीह ईसा बिन मरियम होगा। जो दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़त वाला होगा और होगा भी ख़ुदा तआ़ला का क़रीबी और ख़ास। वह पालने में ही बोलने लगेगा

Maktab E Ashraf

और अधेड़ उम्र में भी। और होगा भी नेक लोगों में से। यानी बचपन और बुढ़ापे में ख़ुदा के दीन की दावत देगा। मन्क़ूल है कि हज़रत मरियम ने फ़रमाया कि तन्हाई के मौक़े पर मुझसे ईसा बोलते थे और मजमे में ख़ुदा की तस्बीह बयान करते थे। यह हाल उस वक़्त का है जबकि आप मेरे पेट में थे। (यह रिवायत मोतबर नहीं)।

फिर फ़रमाता है कि यह काम ख़ुदा के इल्म में मुक़द्दर और मुक़र्रर हो चुका है, वह अपनी क़ुदरत से यह काम पूरा करके ही रहेगा। बहुत मुम्किन है कि यह क़ौल भी हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम का हो, और यह भी हो सकता है हुज़ूरे पाक सल्ल. से ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान हो, और मुराद इससे रूह का फूँक देना हो। जैसे फ़रमान है कि इमरान की बेटी मरियम पाकदामन बीबी थीं। हमने उसमें रूह फूँकी थी। एक और आयत में है कि वह पाकदामन औ़रत जिसमें हमने अपनी रूह फूँक दी। पस इस जुमले का मतलब यह है कि यह तो होकर ही रहेगा, ख़ुदा तआ़ला इसका इरादा कर चुका है। वल्लाहु आलम

फिर उनके पेट में वह (लड़का) रह गया, फिर उस (हमल) को लिए हुए (अपने घर से) किसी दूर जगह में अलग चली गईं। (22) फिर पैदाईश के दर्द के मारे खजूर के पेड़ की तरफ़ आईं, (घबरा कर) कहने लगीं काश! मैं इस (हालत) से पहले ही मर गई होती, और ऐसी नेस्तनाबूद हो जाती कि किसी को याद भी न रहती। (23)	فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ٥ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ٥

पैदाईश का दर्द और रुस्वाई का ख़ौफ़

नक़ल किया गया है कि जब आप फ़रमाने ख़ुदा सुन चुकीं और उसके आगे गर्दन झुका दी तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने उनके कुर्ते के गिरेबान में फूँक मारी, जिससे उन्हें अल्लाह के हुक्म से हमल (गर्भ) ठहर गया। अब तो सख़्त घबराईं और यह ख़्याल कलेजा छीलने लगा कि मैं लोगों को क्या मुँह दिखाऊँगी? लाख अपनी बराअत (बुराई से बरी और बेगुनाह होना) पेश करूँ लेकिन इस अनोखी बात को कौन मानेगा? इसी घबराहट में आपने किसी से यह वाक़िआ़ बयान नहीं किया था। हाँ जब आप अपनी ख़ाला हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की बीवी के पास गयीं तो वह आपसे मुआ़नक़ा करके (गले लगकर) कहने लगीं बच्ची! ख़ुदा की क़ुदरत से और तुम्हारे ख़ालू की दुआ़ से मैं इस उम्र में हामिला (गर्भवती) हो गयी हूँ। आपने फ़रमाया ख़ाला जान मेरे साथ भी यह वाक़िआ़ गुज़रा और मैं भी अपने आपको इसी हालत में पाती हूँ। चूँकि घराना नबी का घराना था, वह क़ुदरते ख़ुदा पर और हज़रत मरियम की सच्चाई पर ईमान लायीं। अब यह हालत थी कि जब कभी ये दोनों पाक औ़रतें मुलाक़ात करतीं तो ख़ाला साहिबा यह महसूस फ़रमातीं कि गोया उनका बच्चा भानजी के बच्चे के सामने झुकता है, और उसकी इ़ज़्ज़त करता है। उनके मज़हब में यह जायज़ भी था। इसी वजह से हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाईयों और आपके वालिद ने आपको सज्दा किया था और ख़ुदा ने फ़रिश्तों को हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के सामने सज्दा करने का हुक्म दिया था। लेकिन हमारी शरीअ़त में यह ताज़ीम अल्लाह तआ़ला के लिये मख़्सूस हो गयी और किसी

Maktab E Ashraf

दूसरे को सज्दा करना हराम हो गया। क्योंकि यह अल्लाह की बड़ाई के ख़िलाफ़ है, उसकी बड़ाई के शायाने-शान नहीं।

इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा और हज़रत यहया ख़ाला ज़ाद भाई थे, दोनों एक ही वक़्त हमल में थे। हज़रत यहया की वालिदा अक्सर हज़रत मरियम से फ़रमाती थीं कि मुझे तो मालूम होता है कि मेरा बच्चा तेरे बच्चे के सामने सज्दा करता है। इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं इससे हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत साबित होती है, क्योंकि ख़ुदा ने आपके हाथों अपने हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा किया और पैदाईशी अन्धों और कोढ़ियों को भला-चंगा कर दिया। जमहूर उलेमा का क़ौल क़वी (ताक़तवर) है कि आप नौ महीने तक हमल (अपनी माँ के पेट) में रहे। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि आठ माह तक रहे, इसी लिये आठ महीने के हमल का बच्चा उमूमन ज़िन्दा नहीं रहता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हमल (गर्भ) के साथ ही बच्चा हो गया। यह क़ौल ग़रीब है, मुम्किन है आपने आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ से यह समझा हो, क्योंकि हमल के अलग होने का और पैदाईशी दर्द का ज़िक्र इन आयतों में ''फ़'' के साथ है, और ''फ़'' ताक़ीब (यानी फ़ौरन बाद) के लिये आती है, लेकिन ताक़ीब हर चीज़ की उसके एतिबार से होती है। जैसे आ़म इनसानों की पैदाईश का हाल क़ुरआन की आयत में है:

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ ....الخ.

कि हमने इनसान को बजती हुई मिट्टी से पैदा किया, फिर उसे नुत्फ़े की शक्ल में रहम (गर्भ) में ठहराया, फिर नुत्फ़े को फुटकी (जमा हुआ ख़ून) बनाई, फिर उस फुटकी को लोथड़ा बनाया, फिर उस लोथड़े में हड्डियाँ पैदा कीं। यहाँ भी दो जगह ''फ़'' है और है भी ताक़ीब के लिये। लेकिन हदीस से साबित है कि इन दोनों हालतों में चालीस दिन का फ़ासला होता है। क़ुरआने पाक की दूसरी आयत में है:

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً.

यानी क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआ़ला आसमान से बारिश बरसाता है, पस ज़मीन हरी-भरी हो जाती है।

ज़ाहिर है कि पानी बरसने के बहुत बाद सब्ज़ा उगता है, हालाँकि ''फ़'' यहाँ भी है। पस ताक़ीब हर चीज़ की उस चीज़ के एतिबार से होती है। सीधी सी बात तो यह है कि औरतों की आ़म आ़दत के मुताबिक़ आपने हमल (गर्भ) का ज़माना पूरा गुज़ारा, मस्जिद में ही मस्जिद के ख़ादिम एक साहिब और थे जिनका नाम यूसुफ़ नज्जार था। उन्होंने जब हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम का यह हाल देखा तो दिल में कुछ शक सा पैदा हुआ, लेकिन हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम की पारसाई और परहेज़गारी, इबादत व रियाज़त, ख़ुदा का ख़ौफ़ और हक़-बीनी को ख़्याल करते हुए उन्होंने यह वस्वसा दिल से दूर करना चाहा। लेकिन ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते गये हमल का इज़हार होता गया। अब तो ख़ामोश न रह सके, एक दिन अदब के साथ कहने लगे कि ऐ मरियम! मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ नाराज़ न होना। भला बग़ैर बीज के किसी दरख़्त का होना, बग़ैर दाने के खेत का होना, बग़ैर बाप के बच्चे का होना क्या मुम्किन है? आप उनके मतलब को समझ गयीं और जवाब दिया कि यह सब मुम्किन है। सबसे पहले जो दरख़्त ख़ुदा तआ़ला ने उगाया वह बग़ैर बीज के था। सबसे पहले जो खेती ख़ुदा ने उगाई वह बग़ैर दाने के थी। सबसे पहले ख़ुदा ने आदम को पैदा किया वह बिना बाप के थे, बल्कि बिना माँ के भी। उनकी तो समझ में आ गया और हज़रत मरियम को और ख़ुदा की क़ुदरत को न झुठला सके, अब हज़रत सिद्दीक़ा ने जब देखा कि क़ौम के

Maktab E Ashraf

लोग उन पर तोहमत लगा रहे हैं तो आप उन सबको छोड़-छाड़कर दूर-दराज़ चली गयीं। इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ फ़रमाते हैं कि जब हमल (गर्भ) के हालात ज़ाहिर हो गये तो क़ौम ने फ़बतियाँ और आवाज़े कसने और बातें बनानी शुरू कर दीं, और हज़रत यूसुफ़ नज्जार जैसे नेक व पारसा शख़्स पर यह तोहमत लगाई। तो आप उन सबसे एक किनारे हो गयीं। न कोई उन्हें देखे न आप किसी को देखें।

जब बच्चे की पैदाइश का दर्द उठा तो आप एक खजूर के पेड़ की जड़ में आ बैठीं। कहते हैं कि तन्हाई का यह स्थान बैतुल-मुक़द्दस की पूर्वी दिशा में एक हुजरा था। यह भी क़ौल है कि शाम और मिस्र के बीच जब आप पहुँच चुकी थीं उस वक़्त बच्चा होने का दर्द होने लगा। एक क़ौल है कि बैतुल-मुक़द्दस से आप आठ मील चली गयी थीं। उस बस्ती का नाम बैतुल-लहम था। वल्लाहु आलम।

मशहूर बात भी यही है और ईसाईयों का तो इस पर इत्तिफ़ाक़ है और इस हदीस में भी है अगर यह सही हो। उस वक़्त आप मौत की तमन्ना करने लगीं क्योंकि दीन के फ़ितने के वक़्त यह तमन्ना भी जायज़ है। जानती थीं कि कोई उन्हें सच्चा न कहेगा। उनके बयान किये हुए वाक़िए को हर शख़्स ग़लत समझेगा। दुनिया आपको परेशान कर देगी और इबादत व इत्मीनान में ख़लल पड़ेगा। हर शख़्स बुराई से याद करेगा और लोगों पर बुरा असर पड़ेगा। तो फ़रमाने लगीं काश कि मैं इस हालत से पहले ही उठा ली जाती, बल्कि काश कि मैं पैदा ही न की जाती। इस क़द्र शर्म व हया दामनगीर हुई कि आपने इस तकलीफ़ पर मौत को तरजीह दी और तमन्ना की कि काश मैं खोई हुई और याद से उतरी हुई चीज़ हो जाती, कि न कोई याद करे न ढूँढे न ज़िक्र करे। हदीसों में मौत माँगने की मनाही आई है। हमने उन रिवायतों को आयतः

تَوَفَّنِىۡ مُسۡلِمًا وَّ اَلۡحِقۡنِىۡ بِالصّٰلِحِيۡنَ‏

(सूरः यूसुफ़ आयत 101) की तफ़सीर में बयान कर दिया है।

فَنَادٰٮهَا مِنۡ تَحۡتِهَاۤ اَلَّا تَحۡزَنِىۡ قَدۡ جَعَلَ رَبُّكِ تَحۡتَكِ سَرِيًّا‏ ○ وَهُزِّىۡۤ اِلَيۡكِ بِجِذۡعِ النَّخۡلَةِ تُسٰقِطۡ عَلَيۡكِ رُطَبًا جَنِيًّا○ فَكُلِىۡ وَاشۡرَبِىۡ وَقَرِّىۡ عَيۡنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الۡبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوۡلِىۡۤ اِنِّىۡ نَذَرۡتُ لِلرَّحۡمٰنِ صَوۡمًا فَلَنۡ اُكَلِّمَ الۡيَوۡمَ اِنۡسِيًّا ○	फिर जिब्राईल ने उनके (उस मकान के) नीचे से उनको पुकारा कि तुम ग़मज़दा मत हो, तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे के हिस्से में एक नहर पैदा कर दी है। (24) और इस खजूर के तने को (पकड़कर) अपनी तरफ़ को हिलाओ इससे तुम पर तरोताज़ा खजूरें झड़ेंगी। (25) फिर (उस फल को) खाओ और (वह पानी) पियो, और आँखें ठन्डी करो। फिर अगर तुम आदमियों में से किसी को भी (एतिराज़ करता) देखो तो कह देना कि मैंने तो अल्लाह के वास्ते रोज़े की मन्नत माँग रखी है, सो आज मैं किसी आदमी से नहीं बोलूँगी। (26)

अल्लाह तआला की तरफ़ से तसल्ली भरा इरशाद

हज़रत मरियम से ख़िताब करने वाले हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम थे (जो हज़रत मरियम के अदब व

Maktab E Ashraf

एहतिराम की वजह से उनके सामने नहीं गयी इसलिये यह फ़रमाया गया कि उनकी नीचे की दिशा से उनको आवाज़ दी गयी)। हज़रत ईसा का तो पहला काम नहीं था जो आपने अपनी वालिदा की बराअत व पाकदामनी में लोगों के सामने किया था। उस वादी के नीचे के किनारे से इस घबराहट और परेशानी के आलम में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने तसल्ली दी थी। यह भी कहा गया है कि यह बात हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने ही कही थी। आवाज़ आयी कि ग़मगीन न हो, तेरे क़दमों के नीचे रब ने साफ़-सुथरा और मीठे पानी का चश्मा जारी कर दिया है, यह पानी तुम पी लो। एक क़ौल यह है कि उस चश्मे से मुराद ख़ुद हज़रत ईसा हैं। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा सही है। चुनाँचे उस पानी के ज़िक्र के बाद ही खाने का ज़िक्र है कि खजूर के इस पेड़ को हिलाओ, इसमें से तरोताज़ा खजूरें झड़ेंगी, वो खाओ। कहते हैं कि यह पेड़ सूखा पड़ा हुआ था और यह क़ौल भी है कि फलदार था। बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि उस वक़्त वह दरख़्त खजूरों से ख़ाली था, लेकिन आपके हिलाते ही उसमें से अल्लाह की क़ुदरत से खजूरें झड़ने लगीं।

खाना पीना सब कुछ मौजूद हो गया और इजाज़त भी दे दी, फ़रमाया खा पी और दिल को ख़ुश रख। हज़रत अ़मर बिन मैमून का फ़रमान है कि निफ़ास वाली (जच्चा) औरतों के लिये तर और ख़ुश्क खजूरों से बेहतर और कोई चीज़ नहीं। एक हदीस में है कि खजूर के पेड़ का सम्मान करो, यह उस मिट्टी से पैदा हुआ है जिस मिट्टी से आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए थे। इसके सिवा और कोई पेड़ नर मादा मिलकर नहीं फलता। औरतों को बच्चे की पैदाईश के वक़्त तर खजूरें खिलाओ न मिलें तो ख़ुश्क ही सही। कोई दरख़्त इससे बढ़कर ख़ुदा के नज़दीक रुतबे वाला नहीं। इसी लिये उसके नीचे हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम को उतारा। यह हदीस बिल्कुल मुन्कर है।

फिर इरशाद हुआ कि किसी से बात न करना, इशारे से समझा देना कि मैं आज रोज़े से हूँ। या तो मुराद यह है कि उनके रोज़े में कलाम वर्जित था, या यह कि मैंने बोलने से ही रोज़ा रखा है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास दो शख़्स आये, एक ने तो सलाम किया, दूसरे ने न किया। आपने पूछा इसकी क्या वजह है? लोगों ने कहा इसने क़सम खाई है कि आज यह किसी से बात न करेगा। आपने फ़रमाया इसे तोड़ दे, सलाम कलाम शुरू कर। यह तो सिर्फ़ हज़रत मरियम के लिये ही था। क्योंकि ख़ुदा को आपकी सदाक़त व करामत (सच्चाई और बुज़ुर्गी) साबित करनी मन्ज़ूर थी इसलिये इसे उज़्र बना दिया था।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद कहते हैं कि जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी वालिदा से कहा कि आप घबरायें नहीं, तो आपने कहा मैं कैसे न घबराऊँ? शौहर वाली मैं नहीं, किसी की बाँदी मैं नहीं, क्या मुझे दुनिया न कहेगी कि यह बच्चा कैसे हुआ? मैं लोगों के सामने क्या जवाब दे सकूँगी? कौनसा उज़्र पेश कर सकूँगी? हाय काश कि मैं इससे पहले ही मर गयी होती। काश कि मैं भूली-बिसरी याद हो गयी होती। उस वक़्त ईसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा अम्माँ! आपको किसी से बोलने की ज़रूरत नहीं, मैं ख़ुद उन सबसे निपट लूँगा। आप तो उन्हें सिर्फ़ यह समझा दें कि आज आपने चुप रहने की नज़्र (मन्नत) कर ली है।

फिर वह उनको गोद में लिए हुए अपनी कौम के पास आई, लोगों ने कहा कि ऐ मरियम! तुमने बड़े ग़ज़ब का काम किया। (27) ऐ हारून की बहन! तुम्हारे बाप कोई बुरे	فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ط قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ۝ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا

كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۝ۖ فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۗ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝ قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ ۗ اٰتٰنِىَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِىْ نَبِيًّا ۝ وَّجَعَلَنِىْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۖ وَاَوْصٰنِىْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَادُمْتُ حَيًّا ۝ۖ وَّبَرًّا ۢ بِوَالِدَتِىْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِىْ جَبَّارًا شَقِيًّا ۝ وَالسَّلٰمُ عَلَىَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ۝

आदमी न थे और न तुम्हारी माँ बदकार थीं। (28) पस मरियम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा कर दिया। वे लोग कहने लगे कि भला हम ऐसे शख़्स से क्योंकर बातें करें जो अभी गोद में बच्चा ही है। (29) वह (बच्चा ख़ुद ही) बोल उठा कि मैं अल्लाह का (ख़ास) बन्दा हूँ, उसने मुझको किताब (यानी इन्जील) दी, और उसने मुझको नबी बनाया। (यानी बना देगा)। (30) और मुझको बरकत वाला बनाया, मैं जहाँ कहीं भी हूँ। और उसने मुझको नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक मैं (दुनिया में) ज़िन्दा रहूँ। (31) और मुझको मेरी माँ का ख़िदमत करने वाला बनाया और उसने मुझको सरकश बदबख़्त नहीं बनाया। (32) और मुझ पर (अल्लाह की जानिब से) सलाम है, जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन इन्तिक़ाल करूँगा और जिस दिन (क़ियामत में) ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। (33)

दुनिया में सबसे पहला बोलने वाला बच्चा

हज़रत मरियम ने ख़ुदा के इस हुक्म को भी तस्लीम कर लिया और अपने बच्चे को गोद में लिये हुए लोगों के पास आयीं। देखते ही हर एक हैरान व भौंचक्का रह गया और हर मुँह से निकल गया कि ऐ मरियम! तूने तो बड़ा ही बुरा काम किया। नौफ़ बकाली कहते हैं कि लोग हज़रत मरियम की जुस्तजू में निकले थे लेकिन ख़ुदा की शान कि उन्हें कहीं सुराग़ ही न मिला। रास्ते में एक चरवाहा मिला। उससे पूछा कि ऐसी-ऐसी औरत को तूने कहीं जंगल में देखा है? उसने कहा नहीं! लेकिन मैंने रात को एक अ़जीब बात यह देखी कि मेरी ये तमाम गायें उस वादी की तरफ़ सज्दे में गिर गयीं। मैंने इससे पहले कभी ऐसा वाक़िआ नहीं देखा। और मैंने अपनी आँखों से देखा है कि उस तरफ़ एक नूर नज़र आ रहा था।

वे उसकी निशानदेही पर जा रहे थे कि सामने से हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा बच्चे को लिये हुए आती दिखाई दे गयीं। उन्हें देखकर आप वहीं अपने बच्चे को गोद में लिये हुए बैठ गयीं। उन सभों ने आपको घेर लिया और बातें बनाने लगे। उनका यह कहना कि ऐ हारून की बहन! इससे मुराद यह है कि आप हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से थीं या आपके घराने में हारून नाम का एक नेक शख़्स था और उसी की इबादत व रियाज़त हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम ने की थी। इसलिये उन्हें हारून की बहन कहा गया। कोई कहता है कि हारून नाम का एक बदकार शख़्स था, इसलिये लोगों ने ताने के तौर पर इन्हें उसकी बहन कहा। इन सब अक़वाल से बढ़कर ग़रीब क़ौल एक यह भी है कि आप हज़रत हारून व मूसा

की ही सगी बहन हैं, जिन्हें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पेटी में डालकर दरिया में छोड़ा था तो उनसे कहा था कि तुम इस तरह इसके पीछे-पीछे किनारे-किनारे जाओ कि किसी को ख़्याल भी न गुज़रे। यह क़ौल तो बिल्कुल ग़लत मालूम होता है, इसलिये कि क़ुरआन से साबित है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के आख़िरी नबी थे। आपके बाद सिर्फ़ ख़ातमुल-अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. ही नबी हुए हैं। चुनाँचे सही बुख़ारी शरीफ़ में है, आप फ़रमाते हैं कि ईसा बिन मरियम से सबसे ज़्यादा क़रीब मैं हूँ इसलिये कि मेरे और उनके दरमियान में कोई नबी नहीं गुज़रा। पस अगर मुहम्मद बिन कअ़ब क़रज़ी का यह क़ौल कि आप हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की सगी बहन थीं, ठीक हो तो यह मानना पड़ेगा कि आप हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से भी पहले थे, क्योंकि क़ुरआन मजीद में मौजूद है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद हुए हैं। मुलाहिज़ा हो आयतः

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْ ، بَنِىْٓ اِسْرَآئِيْلَ مِنْ ، بَعْدِ مُوْسٰى....... الخ.

इन आयतों में हज़रत दाऊद का वाक़िआ और आपका जालूत को क़त्ल करना बयान हुआ है। और यह लफ़्ज़ मौजूद हैं कि यह मूसा के बाद का वाक़िआ है। उन्हें जो ग़लत-फ़हमी हुई है उसकी वजह तौरात की वह इबारत है जिसमें है कि जब हज़रत मूसा मय बनी इस्राईल के दरिया से पार हो गये और फ़िरऔन अपनी क़ौम के साथ डूब मरा, उस वक़्त इमरान की लड़की मरियम ने जो मूसा अलैहिस्सलाम और हारून अलैहिस्सलाम की बहन थीं दफ़ पर ख़ुदा के शुक्र के तराने बुलन्द किये। आपके साथ और औरतें भी थीं।

इस इबारत से इमाम क़रज़ी ने समझ लिया कि यही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की माँ थीं, इसका कोई सुबूत नहीं, बल्कि यह नामुम्किन है। हो सकता है कि नाम दोनों का एक हो। एक नाम पर दूसरे नाम रखे जाते हैं। बनी इस्राईल में तो आदत थी कि वह अपने नबियों वलियों के नाम पर अपने नाम रखते थे। मुस्नद अहमद में मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि. से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्ल. ने नजरान भेजा। वहाँ मुझसे बाज़ ईसाईयों ने पूछा कि तुम "या उख़्-त हारून" (ऐ हारून की बहन) पढ़ते हो, हालाँकि मूसा अलैहिस्सलाम तो ईसा अलैहिस्सलाम से बहुत पहले गुज़रे हैं। मुझसे तो कोई जवाब न बन पड़ा। जब मैं मदीना वापस आया और हुज़ूर सल्ल. से यह ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया तुमने उन्हें उसी वक़्त क्यों न जवाब दे दिया कि वे लोग अपने नबियों और नेक लोगों के नाम पर अपने और अपनी औलाद के नाम बराबर रखा करते थे। सही मुस्लिम शरीफ़ में भी यह हदीस है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही ग़रीब बतलाते हैं।

एक मर्तबा हज़रत कअ़ब ने कहा था कि यह हारून, मूसा के भाई हारून नहीं। इस पर उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने इनकार किया तो आपने कहा कि अगर तुमने रसूलुल्लाह सल्ल. से कुछ सुना हो तो हमें मन्ज़ूर है, वरना तारीख़ी तौर पर तो उनके बीच छह सौ साल का फ़ासला है। यह सुनकर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ख़ामोश हो गयीं। इस तारीख़ में हमें थोड़ा कलाम है।

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत मरियम का घराना ही नेक सालेह और दीनदार था, और यह दीनदारी वगवर गोया विरासत में चली आ रही थी। बाज़ लोग ऐसे भी होते हैं और बाज़ घराने इसके ख़िलाफ़ भी होते हैं कि ऊपर से नीचे तक सब बुरे ही बुरे। यह हारून बड़े बुज़ुर्ग आदमी थे, इस वजह से बनी इस्राईल में हारून नाम रखने का आ़म तौर पर रिवाज हो गया था, यहाँ तक ज़िक्र किया गया है कि

जिस दिन हज़रत हारून का जनाज़ा निकला है तो आपके जनाज़े में इसी हारून नाम के चालीस हज़ार आदमी थे (इस रिवायत का कोई हवाला और सनद बयान नहीं की गयी)।

ग़र्ज़ कि वे लोग मलामत करने लगे कि तुमसे यह बुराई कैसे हो गयी? तुम तो नेक बाप की बेटी हो, माँ-बाप दोनों नेक, सारा घराना पाक, फिर तुमने यह क्या हरकत की? यह कड़वी और तेज़ बातें सुनकर आपने हिदायत के मुताबिक़ अपने बच्चे की तरफ़ इशारा कर दिया कि इससे पूछ लो। उन लोगों को ताव पर ताव आया कि देखो कैसे ढिटाई का जवाब देती है? गोया हमें पागल बना रही है, भला गोद के बच्चे से हम क्या पूछेंगे और वह हमें क्या बतायेगा? इतने में बिन बुलाये आप बोल उठे कि लोगो! मैं ख़ुदा का एक गुलाम हूँ। सबसे पहला कलाम हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का यही है, ख़ुदा तआ़ला की पाकी व तस्बीह और बड़ाई बयान की और अपनी गुलामी और बन्दगी का ऐलान किया। ख़ुदा की ज़ात को औलाद से पाक बतलाया, बल्कि साबित कर दिया क्योंकि औलाद गुलाम नहीं होती। फिर अपनी नुबुव्वत का इज़हार किया कि मुझे उसने एक किताब दी है और मुझे अपना नबी बनाया है। उसमें अपनी वालिदा की बराअत बयान की, बल्कि दलील भी दे दी कि मैं तो ख़ुदा का पैग़म्बर हूँ, रब ने मुझे अपनी किताब भी इनायत फ़रमा दी है। कहते हैं कि जब लोग आपकी वालिदा माजिदा से बातें कर रहे थे, आप उस वक़्त दूध पी रहे थे, जिसे छोड़कर बायीं करवट से होकर उनकी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाकर यह जवाब दिया है।

कहते हैं कि इस क़ौल के वक़्त आपकी उंगली उठी हुई थी और हाथ मोंढे तक ऊँचा था। हज़रत इक्रिमा तो फ़रमाते हैं "मुझे किताब दी" इसका मतलब यह है कि देने का इरादा हो चुका है, यह पूरा होकर रहेगा। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि उसी वक़्त आपको याद थी, सब सीखे हुए ही पैदा हुए थे, लेकिन इस क़ौल की सनद ठीक नहीं। मैं जहाँ भी हूँ लोगों को भलाई सिखाने वाला, उन्हें नफ़ा पहुँचाने वाला हूँ।

एक आ़लिम अपने से बड़े आ़लिम से मिले और मालूम किया कि मुझे अपने किस अ़मल के ऐलान की इजाज़त है? फ़रमाया भली बात कहने और बुरी बात के रोकने की, इसलिये कि यही असल दीन है और यही अल्लाह के नबियों की विरासत है। यही काम उनके सुपुर्द होता रहा। पस इस पर सबका इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि हज़रत ईसा की इस आ़म बरकत से मुराद भलाई का हुक्म और बुराई से रोकना है, जहाँ बैठते-उठते आते-जाते यह शग़्ल बराबर जारी रहता। कभी ख़ुदा की बातें पहुँचाने से नहीं रुकते। फ़रमाते हैं कि मुझे हुक्म मिला है कि तमाम ज़िन्दगी नमाज़ व ज़कात का पाबन्द रहूँ। यही हुक्म हमारे नबी सल्ल. को मिला। इरशाद है:

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ.

कि मरते दम तक अपने रब की इबादत में लगा रह।

पस हज़रत ईसा ने भी फ़रमाया कि उसने मुझ पर ये दोनों काम मेरी ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक लिख दिये हैं (इससे तक़दीर का सुबूत और तक़दीर के इनकारियों की तरदीद भी हो जाती है)। रब की इताअ़त के इस हुक्म के साथ ही मुझे अपनी वालिदा की ख़िदमत-गुज़ारी का भी हुक्म मिला है। उमूमन क़ुरआन पाक में ये दोनों चीज़ें एक साथ बयान होती हैं। जैसे एक आयत में है:

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا.

Maktab E Ashraf

और तेरे रब ने हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी और की इबादत मत करो, और तुम अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया करो।

एक और आयत में है:

اَنِ اشْكُرْ لِىْ وَلِوَالِدَيْكَ.

यानी तू मेरी और अपने माँ-बाप की शुक्रगुज़ारी किया कर।

उसने मुझे नाफ़रमान नहीं बनाया कि मैं उसकी इबादत से या वालिदा की इताअ़त से नाफ़रमानी और तकब्बुर करूँ और बदबख़्त बन जाऊँ।

कहते हैं कि जब्बार व बदबख़्त वह है जो गुस्से में आकर ख़ूँरेज़ी (रक्तपात) कर दे। फ़रमाते हैं कि माँ बाप का नाफ़रमान वही होता है जो बदबख़्त और घमंडी हो। बुरे अख़्लाक़ वाला वही होता है जो अकड़ने वाला और बनने वाला हो। बयान किया गया है कि एक बार आपके मोजिज़ों को देखकर एक औ़रत ताज्जुब से कहने लगी- मुबारक है वह पेट जिसमें तूने परवरिश पाई, और मुबारक है वह सीना जिसने तुझे दूध पिलाया। आपने जवाब दिया मुबारक है वह जिसने अल्लाह की किताब की तिलावत की, फिर सरदारी की और सरकश और बदबख़्त न बना।

फिर फ़रमाते हैं कि मेरी पैदाईश के दिन, मेरी मौत के दिन और मेरे दोबारा जी उठने के दिन मुझ पर सलामती है। इससे भी आपकी अ़बूदियत (बन्दगी) और तमाम मख़्लूक़ात में से अल्लाह की एक मख़्लूक़ होना साबित हो रहा है, कि आप दूसरे इनसानों की तरह अ़दम (नापैदी) से वजूद में आये, फिर मौत का मज़ा भी चखेंगे, फिर क़ियामत के दिन दोबारा उठेंगे भी। लेकिन हाँ ये तीनों मौक़े ख़ूब सख़्त और कठिन हैं। आप पर आसान और सहल होंगे, न कोई घबराहट होगी न परेशानी बल्कि अमन-चैन और सरासर सलामती ही सलामती होगी। अल्लाह तआ़ला आप पर अपनी बेशुमार रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِىْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝

यह हैं ईसा मरियम के बेटे, (मैं बिल्कुल) सच्ची बात (कह रहा हूँ) जिसमें यह (कमी-बेशी करने वाले) लोग झगड़ रहे हैं। (34) अल्लाह तआ़ला की यह शान नहीं है कि वह (किसी को) औलाद बनाए, वह (बिल्कुल) पाक है। वह जब कोई काम करना चाहता है तो बस उसको इरशाद फ़रमा देता है कि हो जा, सो वह हो जाता है। (35) और बेशक अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, सो (सिर्फ़) उसकी इबादत करो, यही (दीन का) सीधा रास्ता है। (36) सो (फिर भी) मुख़्तलिफ़ गिरोहों ने (इस बारे में) आपस में इख़्तिलाफ़ डाल लिया, सो उन काफ़िरों के लिए एक बड़े दिन के आने से एक बड़ी ख़राबी (होने वाली) है। (37)

Maktab-E-Ashraf

ईसा बिन मरियम

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. से फ़रमाता है कि ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के वाक़िए में जिन लोगों का इख़्तिलाफ़ था उनमें जो बात सही थी वह इतनी ही थी जितनी हमने बयान फ़रमा दी। यह बयान फ़रमाकर कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के नबी थे और उसके बन्दे, फिर अपने नफ़्स की पाकीज़गी बयान फ़रमाता है कि ख़ुदा की शान से गिरी हुई बात है कि उसकी औलाद हो। ये जाहिल ज़ालिम जो अफ़वाहें उड़ा रहे हैं उनसे ख़ुदा तआ़ला पाक और दूर है। वह जिस काम को करना चाहता है उसे सामान व असबाब की ज़रूरत नहीं पड़ती, फ़रमा देता है कि हो जा उसी वक़्त वह काम उसी तरह हो जाता है। इधर हुक्म उधर मौजूद। जैसे फ़रमान है:

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ.

यानी ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की मिसाल ख़ुदा के नज़दीक आदम की तरह है, उसे मिट्टी से बनाकर फ़रमाया हो जा, वह उसी वक़्त हो गया, यह बिल्कुल सच है और ख़ुदा का फ़रमान, तुझे इसमें किसी क़िस्म का शक न करना चाहिये।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से यह भी फ़रमाया कि मेरा और तुम सबका रब अल्लाह तआ़ला ही है। तुम सब उसी की इबादत करते रहो, सीधी राह जिसे मैं ख़ुदा की जानिब से लेकर आया हूँ यही है, उसकी ताबेदारी करने वाला हिदायत पर है और उसके ख़िलाफ़ करने वाला गुमराही पर है। गुफ़्तगू (बातचीत) भी आप माँ की गोद से ही कर रहे थे। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के अपने बयान और हुक्म के ख़िलाफ़ बाद वालों ने नई-नई बातें निकालीं और उनके बारे में विभिन्न पार्टियों की शक्ल में ये लोग बट गये। चुनाँचे यहूद ने कहा कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम (अल्लाह की पनाह) नाजायज़ औलाद हैं, ख़ुदा की लानतें उन पर हों कि उन्होंने ख़ुदा के एक बेहतरीन रसूल पर बदतरीन तोहमत रखी और कहा कि उनका यह कलाम वग़ैरह सब जादू के करिश्मे थे। इसी तरह ईसाई बहक गये, कहने लगे कि यह तो ख़ुद ख़ुदा है, यह कलाम अल्लाह तआ़ला का ही है। किसी ने कहा यह ख़ुदा का लड़का है। किसी ने कहा तीन ख़ुदाओं में से एक है। हाँ एक जमाअ़त ने हक़ीक़त के मुताबिक़ कहा कि आप ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं। यह क़ौल सही है। मुसलमानों का अ़क़ीदा हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में यही तालीमे ख़ुदावन्दी है।

कहते हैं कि बनी इस्राईल जमा हुए और अपने में से उन्होंने चार हज़ार आदमी छाँटे। हर क़ौम ने अपना-अपना एक आ़लिम पेश किया। यह वाक़िआ़ हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के आसमान पर उठ जाने के बाद का है। ये लोग आपस में मुख़्तलिफ़ हुए। एक तो कहने लगा यह ख़ुद ख़ुदा था। जब तक उसने चाहा ज़मीन पर रहा। जिसे चाहा जिलाया, जिसे चाहा मारा, फिर आसमान पर चला गया। उस गिरोह को याक़ूबिया कहते हैं। लेकिन और तीनों ने उसे झुठलाया और कहा तूने झूठ कहा, अब दो ने तीसरे से कहा अच्छा तू कह तेरा क्या ख़्याल है? उसने कहा वह ख़ुदा के बेटे थे। इस जमाअ़त का नाम नस्तूरिया पड़ा। दो जो रह गये उन्होंने कहा तूने भी ग़लत कहा है, फिर उन दो में से एक ने कहा तुम कहो! उसने कहा मैं तो यह अ़क़ीदा रखता हूँ कि वह तीन में से एक हैं। एक तो अल्लाह जो माबूद है, दूसरे यही जो माबूद हैं, तीसरे उनकी वालिदा जो माबूद हैं। यह इस्राईलिया गिरोह हुआ और यही ईसाईयों के बादशाह थे। चौथे ने कहा तुम सब झूठे हो, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के बन्दे और रसूल थे, ख़ुदा ही का कलिमा था और

उसके पास की भेजी हुई रूह। ये लोग मुसलमान कहलाये और यही सच्चे थे, उनमें से जिसके ताबे जो थे वे उसी के क़ौल पर हो गये और आपस में ख़ूब विवाद और झगड़े हुए। चूँकि सच्चे इस्लाम वाले हर ज़माने में तायदाद में कम होते हैं, उन पर ये मलऊन छा गये, उन्हें दबा लिया, उन्हें मारना पीटना और क़त्ल करना शुरू कर दिया।

इतिहास लिखने वालों में से ज़्यादातर का बयान है कि क़ुस्तुनतीन बादशाह ने तीन बार ईसाईयों को जमा किया। आख़िरी बार के इज्तिमा में उनके दो हज़ार एक सौ सत्तर उलेमा जमा हुए थे, लेकिन ये सब आपस में हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में अलग-अलग राय और नज़रिया रखते थे। सौ कुछ कहते थे तो सत्तर और ही कुछ कहते थे, पचास कुछ और ही कह रहे थे, साठ का अ़क़ीदा कुछ और ही था। हर एक का ख़्याल दूसरे के ख़िलाफ़ था। सबसे बड़ी जमाअ़त तीन सौ साठ की थी। बादशाह ने इस तरफ़ कसरत (बहुमत) देखकर ज़्यादा संख्या वालों का साथ दिया। मुल्की मस्लेहत इसी में थी कि इस बड़ी जमाअ़त की तरफ़दारी की जाये। पस उसकी पॉलीसी ने उसे इसी तरफ़ मुतवज्जेह कर दिया। उसने बाक़ी सब लोगों को निकलवा दिया और उनके लिये अमानते कुबरा की रस्म ईजाद की जो दर असल सबसे ज़्यादा ख़ियानत है। अब शरई मसाईल की किताबें उन उलेमा से लिखवायीं और बहुत सी शहरी और मुल्की रस्मों को शरई सूरत में उनमें दाख़िल कर लिया। बहुत सी नई-नई बातें ईजाद कीं और असली ईसवी दीन की सूरत को बदल करके एक मजमूआ़ तैयार कराया और उसे लोगों में क़ानून के तौर पर राईज कर दिया और उस वक़्त से यही ईसवी दीन समझा जाने लगा।

जब उस पर उन सब को रज़ामन्द कर लिया तो अब हर तरफ़ कनीसे, गिरजे और इबादत के स्थान बनवाने, वहाँ उन उलेमा को बैठाने और उनके ज़रिये से उस अपने नये तैयार किये हुए मसीही दीन को फैलाने की कोशिश में लग गये। मुल्क शाम में, जज़ीरे में, रोम में उसके ज़माने में तक़रीबन बारह हज़ार ऐसे मकानात तामीर कराये गये, उसकी माँ बेलाना ने जिस जगह सूली गड़ी हुई थी वहाँ एक क़ुब्बा (गुंबद) बनवा दिया और उसकी बाक़ायदा परस्तिश (पूजा और इबादत) शुरू हो गयी, और सबने यक़ीन कर लिया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम सूली पर चढ़ गये, हालाँकि उनका क़ौल ग़लत है, ख़ुदा ने अपने इस सम्मानित बन्दे को अपनी तरफ़ आसमान पर उठा लिया है। यह है ईसाई मज़हब के इख़्तिलाफ़ (मतभेद और विवाद) की हल्की सी झलक।

ऐसे लोग जो ख़ुदा पर झूठा बोहतान बाँधें, उसकी औलाद और शरीक व साझी साबित करें, वे चाहे दुनिया में मोहलत पा लें लेकिन उस अ़ज़ीमुश्शान दिन उनकी हलाकत उन्हें हर तरफ़ से घेर लेगी और वे बरबाद हो जायेंगे। अल्लाह तआ़ला अपने नाफ़रमानों को जल्दी अ़ज़ाब न करे लेकिन बिल्कुल छोड़ता भी नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिम को ढील देता है लेकिन जब उसकी पकड़ शुरू होती है तो फिर कोई पनाह और बचाव की जगह बाक़ी नहीं रहती। यह फ़रमाकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने क़ुरआन पाक की यह आयत तिलावत फ़रमाईः

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ. اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ.

यानी तेरे रब की पकड़ का तरीक़ा ऐसा ही है। जब वह किसी ज़ुल्म से लबरीज़ बस्ती को पकड़ता है, यक़ीन मानो कि उसकी पकड़ निहायत दर्दनाक और बहुत सख़्त है।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक और हदीस में है कि नापसन्दीदा बातों को सुनकर सब्र करने वाला ख़ुदा से

Maktab E Ashraf

ज़्यादा कोई नहीं। लोग उसकी औलाद बतलाते हैं और वह उन्हें रोज़ियाँ दे रहा है और अमन व सुकून भी। खुद क़ुरआन फ़रमाता है:

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا وَاِلَىَّ الْمَصِيْرُ.

कि बहुत सी बस्तियों वाले वे हैं जिनके ज़ालिम होने के बावजूद मैंने उन्हें ढील दी, फिर पकड़ लिया आख़िर लौटना तो मेरी ही तरफ़ है।

एक और आयत में है कि ज़ालिम लोग अपने आमाल से ख़ुदा को ग़ाफ़िल न समझें, उन्हें जो मोहलत है वह उस दिन तक है जिस दिन आँखें ऊपर को चढ़ जायेंगी। यही फ़रमान यहाँ भी है कि उन पर उस बहुत बड़े दिन की हाज़िरी निहायत सख़्त दुश्वार होगी। एक सही हदीस में है कि जो शख़्स इस बात की गवाही दे कि अल्लाह एक ही है, वही माबूदे बर्हक़ है, उसके सिवा इबादत के लायक़ और कोई नहीं, और यह कि मुहम्मद सल्ल. ख़ुदा के बन्दे और रसूल हैं, और यह कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा तआ़ला के बन्दे, उसके पैग़म्बर और उसका कलिमा हैं, जिसे उसने हज़रत मरियम की तरफ़ डाला था और उसके पास की भेजी हुई रूह हैं, और यह कि जन्नत हक़ है और दोज़ख़ हक़ है, उसके चाहे कैसे ही आमाल हों अल्लाह तआ़ला उसे ज़रूर जन्नत में पहुँचायेगा।

اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِىَ الْاَمْرُ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ○ ع	जिस दिन ये लोग (हिसाब व बदले के लिए) हमारे पास आएँगे, कैसे कुछ सुनने और देखने वाले हो जाएँगे, लेकिन ये ज़ालिम आज (दुनिया में कैसी) खुली ग़लती में हैं। (38) और आप उन लोगों को हसरत के दिन से डराइए जबकि (जन्नत व दोज़ख़ का आख़िरी) फ़ैसला कर दिया जाएगा, और वे लोग (आज दुनिया में) ग़फ़लत में हैं, और वे लोग ईमान नहीं लाते। (39) (लेकिन आख़िर एक दिन मरेंगे और) तमाम ज़मीन और ज़मीन के रहने वालों के हम ही वारिस (यानी आख़िर मालिक) रह जाएँगे, और ये सब हमारे पास ही लौटाए जाएँगे। (40)

ع ٢ ٥

कोई बाक़ी न रहेगा

इरशाद है कि अगरचे आज दुनिया में ये काफ़िर आँखें और कान बन्द किये हुए हैं लेकिन क़ियामत के दिन इनकी आँखें ख़ूब रोशन हो जायेंगी और कान भी ख़ूब खुल जायेंगे। जैसे फ़रमाने ख़ुदा है:

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا.......الخ.

काश कि तू देखता जब गुनाहगार लोग अपने रब के सामने शर्मसार सर झुकाये खड़े हुए कह रहे होंगे कि ख़ुदाया! हमने देखा, हमने सुना..........।

Maktab E Ashraf

पस उस दिन न देखना काम आयेगा न सुनना, न हसरत व अफ़सोस करना, न रोना-पीटना व फ़रियाद करना। अगर ये लोग अपनी आँखों और अपने कानों से दुनिया में काम लेकर ख़ुदा के दीन को मान लेते तो आज उन्हें हसरत व अफ़सोस न करना पड़ता। उस दिन आँखें खुलेंगी और आज अन्धे बहरे बने फिरते हैं, न हिदायत को तलब करते हैं न देखते हैं। न भली बातें सुनते हैं न मानते हैं। मख़्लूक़ को उस हसरत वाले दिन से ख़बरदार कर दीजिए जबकि तमाम कामों के फ़ैसले कर दिये जायेंगे, जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में भेज दिये जायेंगे। इस हसरत व शर्मिन्दगी के दिन से ये आज ग़ाफ़िल हो रहे हैं बल्कि ईमान व यक़ीन भी नहीं रखते।

नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नतियों के जन्नत में और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में चले जाने के बाद मौत को एक भेड़े की शक्ल में लाया जायेगा और जन्नत व दोज़ख़ के बीच खड़ा किया जायेगा। जन्नत वालों से पूछा जायेगा कि इसे जानते हो? वे देखकर कहेंगे कि हाँ! यह मौत है। दोज़ख़ियों से भी यही सवाल होगा और वे भी यही जवाब देंगे। अब हुक्म होगा, मौत को ज़िबह कर दिया जायेगा और निदा कर दी जायेगी कि ऐ जन्नत वालो तुम्हारे लिये हमेशगी है, मौत नहीं। और ऐ दोज़ख़ वालो तुम्हारे लिये भी हमेशगी (यानी हमेशा इसी हाल में रहना) है और मौत नहीं। फिर हुज़ूर सल्ल. ने यही आयत पढ़ी:

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ...... الخ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर चल रही है) और आपने इशारा किया और फ़रमाया- दुनिया वाले ग़फ़लत (लापरवाही) में हैं। (मुस्नद इमाम अहमद)

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक वाक़िआ बयान करते हुए फ़रमाया है कि हर शख़्स अपने दोज़ख़ और जन्नत के घर को देख रहा होगा, वह दिन ही हसरत व अफ़सोस का है, जहन्नमी अपने जन्नती घर को देख रहा होगा और उससे कहा जाता होगा कि अगर तुम नेक अमल करते तो तुम्हें यह जगह मिलती, वे हसरत व अफ़सोस करने लगेंगे। उधर जन्नतियों को उनका जहन्नम का घर दिखाकर फ़रमाया जायेगा कि अगर अल्लाह का एहसान तुम पर न होता तो तुम यहाँ होते। दूसरी बाज़ रिवायतों में है कि मौत को ज़िबह करके जब हमेशगी (यानी लोगों के मौजूदा हालत ही में हमेशा रहने) की आवाज़ लगा दी जायेगी, उस वक़्त जन्नती तो इस क़द्र ख़ुश होंगे कि अगर ख़ुदा न बचाये तो मारे ख़ुशी के मर जायें, और जहन्नमी इस क़द्र रन्जीदा व ग़मगीन होकर चीख़ेंगे कि अगर मौत होती तो हलाक हो जायें। पस इस आयत का यही मतलब है। यह हसरत व अफ़सोस का वक़्त भी होगा और काम के ख़ात्मे का वक़्त भी यही होगा। पस "यौमुल-हस्रति" (हसरत व अफ़सोस का दिन) भी क़ियामत के नामों में से एक नाम है। चुनाँचे एक और आयत में है:

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَافَرَّطْتُّ فِيْ جَنْبِ اللّٰهِ..... الخ.

कभी (कल क़ियामत को) कोई शख़्स कहने लगे कि अफ़सोस मेरी उस कोताही पर जो मैंने ख़ुदा की जनाब में की, और मैं तो (अल्लाह के अहकाम पर) हंसता ही रहा।

फिर बतलाया कि ख़ालिक़ व मालिक और हर चीज़ पर इख़्तियार व क़ुदरत रखने वाला अल्लाह ही है, सब उसी की मिल्कियत है, और सब को फ़ना है। बाक़ी सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआ़ला ही है। कोई मिल्कियत और तसर्रुफ़ का सच्चा दावेदार नहीं, तमाम मख़्लूक़ का वारिस व हाकिम वही है। उसकी ज़ात ज़ुल्म से पाक है।

Maktab E Ashraf

इस्लामी बादशाह अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ रह. ने अब्दुल-हमीद बिन अब्दुर्रहमान को कूफ़े में ख़त लिखा, जिसमें लिखा- अल्लाह की तारीफ़ और नबी पाक पर दुरूद व सलाम के बाद- अल्लाह ने रोज़े अव्वल से ही सारी मख़्लूक़ पर फ़ना लिख दी है। सब को उसकी तरफ़ पहुँचना है। उसने अपनी नाज़िल की हुई उस सच्ची किताब में जिसे अपने इल्म से महफ़ूज़ किये हुए है और जिसकी हिफ़ाज़त अपने फ़रिश्ते से करा रहा है, लिख दिया है कि ज़मीन का और उसके ऊपर जो हैं उनका वारिस वही है, और उसी की तरफ़ सब लौटाये जायेंगे।

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ؕ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِىْ عَنْكَ شَيْـًٔا ۝ يٰٓاَبَتِ اِنِّىْ قَدْ جَآءَنِىْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِىْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝ يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ۝ يٰٓاَبَتِ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ۝

और इस किताब में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का (क़िस्सा) ज़िक्र कीजिए। वह बड़े रास्ती वाले (और) पैग़म्बर थे। (41) जबकि उन्होंने अपने बाप से (जो कि मुश्रिक था) कहा कि ऐ मेरे बाप! तुम ऐसी चीज़ की क्यों इबादत करते हो जो न कुछ सुने और न कुछ देखे और न तुम्हारे कुछ काम आ सके। (42) ऐ मेरे बाप! मेरे पास ऐसा इल्म पहुँचा है जो तुम्हारे पास नहीं आया, तो तुम मेरे कहने पर चलो मैं तुमको सीधा रास्ता बताऊँगा। (43) ऐ मेरे बाप! तुम शैतान की परस्तिश मत करो, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमानी करने वाला है। (44) ऐ मेरे बाप! मैं अन्देशा करता हूँ कि तुम पर रहमान की तरफ़ से कोई अज़ाब (न) आ पड़े, फिर तुम (अज़ाब में) शैतान के साथी हो जाओ। (45)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का क़िस्सा

मक्का के मुश्रिक जो बुतपरस्त (बुतों को पूजने वाले) हैं और अपने आपको अल्लाह के दोस्त (हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम) का पैरोकार ख़्याल करते हैं, ऐ नबी! उनके सामने ख़ुद हज़रत इब्राहीम का वाक़िआ बयान कीजिए। इस सच्चे नबी ने अपने बाप की भी परवाह न की और उसके सामने भी हक़ को वाज़ेह (स्पष्ट) कर दिया, और उसे बुतपरस्ती से रोका। साफ़ कहा कि क्यों बुतों की पूजा-पाठ कर रहे हो, जो न नफ़ा पहुँचा सकते हैं न नुक़सान (फ़रमाया कि मैं बेशक आपकी औलाद हूँ लेकिन ख़ुदाई इल्म जो मेरे पास है आपके पास नहीं, आप मेरी पैरवी कीजिए। मैं आपको सही रास्ता दिखला दूँगा। बुराईयों से बचाकर भलाईयों में पहुँचा दूँगा)। अब्बा जी! यह बुतपरस्ती तो शैतान की ताजदारी है, वही इसकी राह समझता है और वही इससे ख़ुश होता है। जैसा कि सूरः यासीन में है:

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ.

Mubtab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ इनसानो! क्या मैंने तुमसे अ़हद नहीं लिया था कि शैतान की इबादत न करना, यह तुम्हारा खुला दुश्मन है। एक और आयत में है:

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا..... الخ.

ये लोग तो औरतों को पुकारते हैं और ख़ुदा को छोड़ते हैं। दर असल ये सरकश शैतान के पुकारने वाले हैं।

आपने फ़रमाया शैतान ख़ुदा का नाफ़रमान है, मुख़ालिफ़ है, उसकी फ़रमाँबरदारी से तकब्बुर करने वाला है, इस वजह से अल्लाह की बारगाह से निकाला हुआ है। अगर तूने भी उसकी इताअ़त की (बात मानी) तो वह अपनी हालत पर तुझे भी पहुँचा देगा। अब्बा जान! आपके इस शिर्क व नाफ़रमानी की वजह से मुझे तो ख़ौफ़ है कि कहीं आप पर ख़ुदा का कोई अ़ज़ाब न आ जाये, और आप शैतान के दोस्त और उसके साथी न बन जायें, और ख़ुदा की मदद और उसका साथ आपसे छूट न जाये। देखो शैतान ख़ुद बेकस (असहाय) और बेबस है। उसकी ताबेदारी आपको बुरी जगह पहुँचा देगी। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ.

यानी यह यक़ीनी और हलफ़िया बात है कि तुझसे पहले की उम्मतों की तरफ़ भी हमने रसूल भेजे लेकिन शैतान ने उनके बुरे आमाल उन्हें संवार कर और अच्छे बनाकर दिखलाये और वही उनका साथी बन गया, लेकिन काम कुछ न आया और क़ियामत के दिन दुखदायी अ़ज़ाब में फंस गये।

(बाप ने) जवाब दिया कि क्या तुम मेरे माबूदों से फिरे हुए हो ऐ इब्राहीम! अगर तुम बाज़ न आए तो मैं ज़रूर तुमको (पत्थरों से मारकर) संगसार कर दूँगा, और हमेशा-हमेशा के लिए मुझसे अलग रहो। (46) (इब्राहीम ने) कहा मेरा सलाम लो, अब मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग़फ़िरत की दरख़्वास्त करूँगा, बेशक वह मुझ पर बहुत मेहरबान है। (47) और मैं तुम लोगों से और जिनकी तुम ख़ुदा को छोड़कर इबादत कर रहे हो उनसे किनारा करता हूँ, और (अलग होकर इत्मीनान से) अपने रब की इबादत करूँगा, उम्मीद है कि अपने रब की इबादत करके मेहरूम न रहूँगा। (48)	قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ○ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ○ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ○

आज़र की बद-नसीबी

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के इस तरह समझाने पर उनके बाप ने जो जहालत का जवाब दिया वह बयान हो रहा है कि उसने कहा ऐ इब्राहीम! तू मेरे माबूदों से बेज़ार है, उनकी इबादत से तुझे इनकार है। अच्छा सुन ले अगर तू अपनी इस हरकत से बाज़ न आया, उन्हें बुरा कहता रहा और उनके ऐब ढूँढने और

उन्हें गालियाँ देने से न रुका तो मैं तुझे संगसार (पत्थरों से मार-मारकर हलाक) कर दूँगा। मुझे तू तकलीफ़ न दे, न मुझसे कुछ कह। यही बेहतर है कि तू सलामती के साथ मुझसे अलग हो जा, वरना मैं तुझे सख़्त सज़ा दूँगा। मुझसे तू अब हमेशा के लिये अलग हो गया।

हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया अच्छा ख़ुश रहो, मेरी तरफ़ से आपको कोई तकलीफ़ न पहुँचेगी, क्योंकि आप मेरे वालिद (बाप) हैं। बल्कि मैं ख़ुदा तआ़ला से दुआ़ करूँगा कि वह आपको नेक तौफ़ीक़ दे और आपके गुनाह बख़्शे। मोमिनों का यही शेवा (तरीक़ा और चलन) होता है कि वे जाहिलों से भिड़ते नहीं। जैसा कि क़ुरआन में है:

وَاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُوْنَ قَالُوْا سَلَامًا.

जाहिलों से जब उनका ख़िताब होता है तो कह देते हैं कि सलाम (यानी भाई हमें माफ़ करो, हमारा पीछा छोड़ो)।

एक और आयत में है कि बेकार की और बेहूदा बातों से वे मुँह फेर लेते हैं और कह देते हैं कि हमारे आमाल हमारे साथ, तुम्हारे आमाल तुम्हारे साथ। तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों के मुँह नहीं लगते। फिर फ़रमाया कि मेरा रब मेरे साथ बहुत मेहरबान है, उसी की मेहरबानी है कि मुझे ईमान व इख़्लास की हिदायत की, मुझे उससे अपनी दुआ़ की क़बूलियत की उम्मीद है। इसी वायदे के मुताबिक़ आप उनके लिये बख़्शिश तलब करते रहे। मुल्क शाम की हिजरत के बाद भी, मस्जिदे हराम बनाने के बाद भी, आपके यहाँ औलाद हो जाने के बाद भी। आप कहते रहे कि ख़ुदाया! मुझे, मेरे माँ-बाप को और तमाम ईमान वालों को हिसाब के क़ायम होने के दिन बख़्श दे। आख़िर ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से 'वही' आयी कि मुश्रिकों के लिये इस्तिग़फ़ार (मग़फ़िरत व बख़्शिश की दुआ़) न करो।

आप ही की पैरवी करते हुए शुरू-शुरू में इस्लाम के प्रारंभिक ज़माने में मुसलमान भी अपने मुश्रिक रिश्तेदारों के लिये बख़्शिश की दुआ़यें करते रहे, आख़िर आयत नाज़िल हुई कि बेशक इब्राहीम क़ाबिले पैरवी हैं, लेकिन इस बात में उनका अ़मल इस क़ाबिल नहीं। एक और आयत में फ़रमायाः

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ...........الخ

यानी नबी को और ईमान वालों को मुश्रिकों के लिये इस्तिग़फ़ार न करना चाहिये।

और फ़रमाया कि इब्राहीम का यह इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से अपने बाप की बख़्शिश की दुआ़) सिर्फ़ इस बिना पर था कि आप अपने वालिद से इसका वायदा कर चुके थे, लेकिन जब आप पर स्पष्ट हो गया कि वह ख़ुदा का दुश्मन है तो आप उससे बरी (बेताल्लुक़) हो गये। इब्राहीम तो बड़े ही अल्लाह वाले और हिल्म वाले थे।

फिर फ़रमाते हैं कि मैं तुम सबसे और तुम्हारे उन तमाम माबूदों से अलग हूँ। मैं सिर्फ़ एक ख़ुदा का आ़बिद (इबादत करने वाला) हूँ। उसकी इबादत में किसी को शरीक नहीं करता, मैं सिर्फ़ उसी से दुआ़यें और इल्तिजायें करता हूँ और मुझे यक़ीन है कि मैं अपनी दुआ़ओं में मेहरूम न रहूँगा। वास्तविकता भी यही है। और यहाँ पर लफ़्ज़ "अ़सा" (उम्मीद है) यक़ीन के मायनों में है, इसलिये कि आप हुज़ूरे पाक सल्ल. के बाद तमाम अम्बिया के सरदार हैं।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۝ ع	पस जब उन लोगों से और जिनकी वे ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते थे उनसे अलग हो गए (तो) हमने उनको इस्हाक़ (बेटा) और याक़ूब (पोता) अ़ता फ़रमाया, और हमने (उन दोनों में से) हर एक को नबी बनाया। (49) और उन सबको हमने अपनी रहमत का हिस्सा दिया और (आगे नस्लों में) हमने उनका नाम नेक और बुलन्द किया। (50)

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह पर इनाम व इकराम

अल्लाह के दोस्त माँ-बाप को, रिश्ते कुनबे को, क़ौम व मुल्क को दीने ख़ुदा पर क़ुरबान कर चुके, सबसे एक तरफ़ हो गये, अपनी बराअत और अ़लैहदगी का ऐलान कर दिया तो ख़ुदा ने उनकी नस्ल जारी कर दी। आपके यहाँ हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए और हज़रत इस्हाक़ के यहाँ हज़रत याक़ूब हुए जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً.

एक और आयत में है:

وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ.

यानी इस्हाक़ के पीछे (बाद में) याक़ूब। पस हज़रत इस्हाक़ हज़रत याक़ूब के वालिद थे। जैसे सूरः ब-क़रह की आयत में साफ़ अलफ़ाज़ हैं:

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ......

कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अपने इन्तिक़ाल के वक़्त अपने बच्चों से पूछा कि तुम सब मेरे बाद किसकी इबादत करोगे? उन्होंने जवाब दिया कि उसी ख़ुदा की जिसकी इबादत आप करते रहे और आपके वालिद इब्राहीम इस्माईल और इस्हाक़ (अ़लैहिमुस्सलाम)।

पस यहाँ मतलब यह है कि हमने उसकी नस्ल जारी रखी, बेटा दिया, बेटे के यहाँ बेटा दिया और दोनों को नबी बनाकर आपकी आँखें ठण्डी कीं। यह ज़ाहिर है कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के बाद आपके बेटे हज़रत यूसुफ़ भी नबी बनाये गये थे, उनका ज़िक्र यहाँ नहीं किया। इसलिये कि हज़रत यूसुफ़ की नुबुव्वत के वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ज़िन्दा न थे। ये दोनों नुबुव्वतें यानी हज़रत इस्हाक़ व याक़ूब अ़लैहिमस्सलाम की नुबुव्वत आपकी ज़िन्दगी में आपके सामने थी। इसलिये इस एहसान का ज़िक्र फ़रमाया। रसूलुल्लाह सल्ल. से जब सवाल हुआ कि सबसे बेहतर शख़्स कौन है? तो आपने फ़रमाया अल्लाह के नबी यूसुफ़ पुत्र याक़ूब नबियुल्लाह पुत्र इस्हाक़ नबियुल्लाह पुत्र इब्राहीम नबियुल्लाह व ख़लीलुल्लाह। एक और हदीस में है कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम हैं (अ़लैहिमुस्सलाम)। हमने उन्हें अपनी बहुत सी नेमतें दीं और उनके ज़िक्रे ख़ैर को दुनिया में उनके बाद अ़ज़मत (सम्मान व बड़ाई) के साथ बाक़ी रखा। यहाँ तक कि हर मज़हब वाले उनके गुण गाते हैं। इन

Maktab E Ashraf

तमाम हज़रात पर अल्लाह की बेशुमार रहमतें नाज़िल हों।

और इस किताब में मूसा का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह (अल्लाह तआला के) ख़ास किए हुए (बन्दे) थे, और वह रसूल भी थे, नबी भी थे। (51) और हमने उनको तूर (पहाड़) की दाहिनी जानिब से आवाज़ दी, और हमने उनको राज़ की बातें करने के लिए मुक़र्रब बनाया। (52) और हमने उनको अपनी रहमत से उनके भाई हारून को नबी बनाकर अ़ता किया। (53)	وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰىۤ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ۝

हज़रत मूसा व फ़िरऔन

नेकबख़्ती की दावत और बदबख़्त का अन्जाम

अपने ख़लील (हज़रत इब्राहीम) अ़लैहिस्सलाम का बयान फ़रमाकर अब अपने कलीम (हज़रत मूसा) अ़लैहिस्सलाम का बयान फ़रमाता है:

वह "मुख़्लिस" यानी इख़्लास के साथ इबादत करने वाले थे। नक़ल किया गया है कि हवारियों (हज़रत ईसा के सहाबियों) ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से मालूम किया कि ऐ रूहुल्लाह! हमें बतलाईये कि मुख़्लिस शख़्स कौन है? आपने फ़रमाया जो सिर्फ़ अल्लाह के लिये अ़मल करे, उसे इस बात की चाहत न हो कि लोग मेरी तारीफ़ करें।

पाँच बड़े-बड़े बुलन्द रुतबे वाले और अ़ज़ीमुश्शान रसूलों में से एक आप हैं। यानी नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।

हमने उन्हें मुबारक पहाड़ तूर की दायीं तरफ़ से आवाज़ दी और गुफ़्तगू करते हुए अपने क़रीब कर लिया। यह वाक़िआ़ उस वक़्त का है जब आप आग की तलाश में तूर पहाड़ की तरफ़ यहाँ आग देखकर बढ़े थे। इब्ने अ़ब्बास वग़ैरह फ़रमाते हैं कि इस क़द्र क़रीब हो गये कि क़लम की आवाज़ सुनने लगे। मुराद इससे तौरात लिखने का क़लम है। सुद्दी रह. कहते हैं कि आसमान में गये और कलामे बारी से मुशर्रफ़ (सम्मानित) हुए। कहते हैं कि उन्हीं बातों में से यह फ़रमान भी है कि ऐ मूसा! जबकि मैं तेरे दिल को शुक्रगुज़ार और तेरी ज़बान को अपना ज़िक्र करने वाली बना दूँ और तुझे ऐसी बीवी दूँ जो नेकी के कामों में तेरी मददगार हो, तो तू समझ ले कि मैंने तुझसे कोई भलाई उठा नहीं रखी। और जिसे मैं ये चीज़ें न दूँ वह समझ ले कि उसे कोई भलाई नहीं मिली। उन पर एक मेहरबानी हमने यह भी की कि उनके भाई हारून को नबी बनाकर उनकी इमदाद के लिये उनके साथ कर दिया जैसा कि यह आपकी तमन्ना थी। हज़रत मूसा ने फ़रमाया थाः

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ...... الخ.

Maktab E Ashraf

और मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे ज़्यादा रवाँ है तू उनको भी मेरा मददगार बना। (सूरः क़सस: 34) एक और आयत में है:

قَدْاُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى.

कि तेरा सवाल हमने पूरा कर दिया। आपकी दुआ के यह लफ़्ज़ भी आये हैं:

فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ........

कि हारून को भी रसूल बना।

कहते हैं कि इससे ज़्यादा बेहतर दुआ और इससे बढ़कर शफ़ाअ़त किसी ने किसी की दुनिया में नहीं की। हज़रत हारून हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से बड़े थे। उन पर अल्लाह की बेशुमार रहमतें नाज़िल हों।

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ○ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا○	**और इस किताब में इस्माईल का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह वायदे के (बड़े) सच्चे थे, और वह रसूल भी थे, नबी भी थे। (54) और अपने मुताल्लिक़ीन को नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते रहते थे, और वह अपने रब के नज़दीक पसन्दीदा थे। (55)**

हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का तज़किरा

हज़रत इस्माईल बिन हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र हो रहा है। आप सारे हिजाज़ (अ़रब और ख़ास तौर पर सऊदी इलाक़े) के बाप हैं। जो नज़्र (मन्नत) ख़ुदा के नाम की मानते थे, जो इबादत करने का इरादा करते थे, पूरी ही करते थे। हर हक़ अदा करते थे। हर वायदा पूरा करते थे। एक शख़्स से वायदा किया कि मैं फ़ुलाँ जगह आपको मिलूँगा, वहाँ आ जाना। वायदे के मुताबिक़ हज़रत इस्माईल वहाँ गये लेकिन वह शख़्स नहीं आया था, आप उसके इन्तिज़ार में वहीं ठहरे रहे यहाँ तक कि एक दिन रात पूरी गुज़र गयी। अब उस शख़्स को याद आया। उसने आकर देखा कि आप वहीं इन्तिज़ार में हैं। पूछा कि क्या आप कल से यहीं हैं? आपने फ़रमाया जब वायदा हो चुका था तो फिर मैं आपके आये बग़ैर कैसे हट सकता था? उसने माज़िरत की कि मैं बिल्कुल भूल गया था।

हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. तो कहते हैं कि वहीं इन्तिज़ार में आपको एक पूरा साल गुज़र चुका था। इब्ने शोज़ब कहते हैं कि वहीं मकान ले लिया था। अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हमसा कहते हैं कि हुज़ूरे पाक सल्ल. की नुबुव्वत से पहले मैंने आपसे कुछ तिजारती लेन-देन किया था। मैं चला गया और कह गया कि आप यहीं ठहरिये मैं अभी वापस आता हूँ। फिर मुझे ख़्याल ही न रहा, वह दिन गुज़रा वह रात गुज़री, फिर एक और दिन भी गुज़र गया। तीसरे दिन मुझे ख़्याल आया तो देखा आप वहीं तशरीफ़ फ़रमा हैं। आपने फ़रमाया तुमने मुझे मशक़्क़त में डाल दिया, मैं आज तीन दिन से यहीं तुम्हारा इन्तिज़ार करता रहा। (ख़राईती)

यह भी कहा गया है कि यह उस वायदे का ज़िक्र है जो आपने ज़िबह के वक़्त किया था कि अब्बा जी! आप मुझे सब्र करने वाला पायेंगे। चुनाँचे वास्तव में आपने वायदा पूरा किया और सब्र व संयम से

काम लिया। वायदे और अहद पूरा करना नेक काम है। ईमान वालो! वे बातें ज़बान से क्यों निकालते हो जिन पर खुद अमल नहीं करते। अल्लाह के नज़दीक यह बात निहायत ही बुरी और नागवार है कि तुम वह कहो जो न करो। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं- बातों में झूठ, वायदा ख़िलाफ़ी, अमानत में ख़ियानत। इन बुराईयों से मोमिन अलग-थलग होते हैं। यही वायदे की सच्चाई हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम में थी और यही पाक सिफ़त जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में भी थी। कभी किसी से किसी वायदे का ख़िलाफ़ आपने नहीं किया।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक बार अबुल-आ़स बिन रबीअ़ की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया कि उसने मुझसे जो बात की सच्ची की, और जो वायदा उसने मुझसे किया पूरा किया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने ख़लीफ़ा होने के साथ ही ऐलान कर दिया कि जिससे नबी करीम सल्ल. ने कोई वायदा किया हो मैं उसके पूरा करने के लिये तैयार हूँ और हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम पर जिसका क़र्ज़ हो मैं उसकी अदायेगी के लिये मौजूद हूँ। चुनाँचे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. तशरीफ़ लाये और अ़र्ज़ किया कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्ल. ने वायदा फ़रमाया था कि अगर बेहरीन का माल आया तो मैं तुझे तीन लपें भरकर दूँगा। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ि. के पास जब बेहरीन का माल आया तो आपने हज़रत जाबिर रज़ि. को बुलवाकर फ़रमाया लो लप भर लो। आपकी लप में पाँच सौ दिर्हम आये, हुक्म दिया कि तीन लपों के पन्द्रह सौ दिर्हम ले लो।

फिर हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का रसूल व नबी होना बयान फ़रमाया, हालाँकि हज़रत इस्हाक़ का सिर्फ़ नबी होना बयान फ़रमाया गया है। इससे आपकी फ़ज़ीलत अपने भाई पर साबित होती है। चुनाँचे मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि औलादे इब्राहीम में से खुदा ने हज़रत इस्माईल को पसन्द फ़रमाया। फिर आपकी और ज़्यादा तारीफ़ बयान हो रही है कि आप खुदा की इताअ़त पर साबिर थे और अपने घराने को भी यही हुक्म फ़रमाते रहते थे। यही फ़रमान खुदा तआ़ला का हुज़ूरे पाक सल्ल. को है:

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا....... الخ.

अपने अहल व अ़याल (घर वालों) को नमाज़ का हुक्म करता रह और खुद भी उस पर मज़बूती से आ़मिल रह। एक और आयत में है:

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا........الخ.

ऐ ईमान वालो! अपने को और अपने घर वालों और बाल-बच्चों को उस आग से बचा लो जिसका ईंधन इनसान हैं और पत्थर। जहाँ अ़ज़ाब करने वाले फ़रिश्ते रहम से ख़ाली, ज़ोरावर और बड़े सख़्त हैं। नामुम्किन है कि ये खुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ करें, बल्कि जो उनसे कहा गया है उसी की तामील (पालन) में मशग़ूल हैं। पस मुसलमानों को हुक्मे खुदा है कि अपने घर-बार को खुदा की बातों की हिदायत करते रहें, गुनाहों से रोकते रहें, यूँ ही बे-तालीम न छोड़ दें कि वे जहन्नम के लुक़मे बन जायें। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि उस मर्द पर खुदा का रहम हो जो रात में तहज्जुद पढ़ने के लिये अपने बिस्तर से उठता है फिर अपनी बीवी को उठाता है, और अगर वह नहीं उठती तो उसके मुँह पर पानी छिड़क कर उसे बेदार करता है। उस औरत पर भी खुदा की रहमत हो जो रात को तहज्जुद पढ़ने के लिये उठती है, फिर अपने मियाँ को जगाती है और वह न जागे तो उसके मुँह पर पानी का छींटा डालती है। (अबू दाऊद, इब्ने माजा)

आपका फ़रमान है कि जब इनसान रात को जागे और अपनी बीवी को भी जगाये और दोनों दो

रक्अ़त भी नमाज़ की अदा कर लें, तो अल्लाह के यहाँ अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्दों औरतों में दोनों के नाम लिख लिये जाते हैं। (अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा)

और इस किताब में इदरीस (अ़लैहिस्सलाम) का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह बड़े रास्ती वाले नबी थे। (56) और हमने उनको (कमालात में) बुलन्द रुतबे तक पहुँचाया। (57)	وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝

नबी-ए-सादिक़ (सच्चे नबी)

हज़रत इदरीस का बयान है कि आप सच्चे नबी थे, ख़ुदा के ख़ास बन्दे थे, आपको हमने बुलन्द मकान पर उठा लिया। सही हदीस के हवाले से पहले गुज़र चुका है कि चौथे आसमान में रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात की। इस आयत की तफ़सीर में हज़रत इमाम इब्ने जरीर रह. ने एक अ़जीब व ग़रीब क़ौल नक़ल किया है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने हज़रत कअ़ब रज़ि. से सवाल किया कि इस आयत का मतलब क्या है? आपने फ़रमाया कि हज़रत इदरीस के पास 'वही' आयी कि आदम की तमाम औलाद के नेक आमाल के बराबर सिर्फ़ तेरे नेक आमाल हैं, जिन्हें मैं अपनी तरफ़ रोज़ चढ़ाता हूँ। इस पर आपको क्या ख़्याल आया कि आप अ़मल में और आगे बढ़ें। जब आपके पास आपका दोस्त फ़रिश्ता आया तो आपने उससे ज़िक्र किया कि मेरे पास यूँ 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) आयी है। अब तुम मलकुल-मौत से कहो कि वह मेरी मौत में ताख़ीर (देरी और विलम्ब) करें तो मैं नेक आमाल में और बढ़ जाऊँ। उस फ़रिश्ते ने आपको अपने परों पर बैठाकर आसमान पर चढ़ा दिया। आप पहुँचे तो मलकुल-मौत को देखा। फ़रिश्ते ने आप से हज़रत इदरीस के बारे में सिफ़ारिश की तो मलकुल-मौत ने फ़रमाया वह कहाँ हैं? उसने कहा यह हैं मेरे बाज़ू पर बैठे हुए। आपने फ़रमाया सुब्हानल्लाह मुझे अभी हुक्म हुआ कि इदरीस की रूह चौथे आसमान पर क़ब्ज़ करो, मैं फ़िक्रमन्द था कि वह ज़मीन पर हैं और मुझे यहाँ इस आसमान पर उनकी रूह के क़ब्ज़ करने का हुक्म हो रहा है। चुनाँचे उसी वक़्त उनकी रूह क़ब्ज़ कर ली गयी।

यह हैं इस आयत के मायने, लेकिन यह याद रहे कि कअ़ब रज़ि. का बयान इस्राईली रिवायात में से है और यह तमाम क़िस्सा क़ाबिले एतिबार नहीं है। वल्लाहु आलम

यही रिवायत एक और सनद से है, उसमें यह भी है कि आपने उस फ़रिश्ते के ज़रिये मालूम किया था कि मेरी उम्र कितनी बाक़ी है? एक और रिवायत में है कि फ़रिश्ते के इस सवाल पर मलकुल-मौत ने जवाब दिया कि मैं देख लूँ। देखकर फ़रमाया- सिर्फ़ एक आँख की पलक झपकने के बराबर। अब जो फ़रिश्ते ने अपने पंख के नीचे देखा तो हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम की रूह परवाज़ हो चुकी थी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि आप दर्ज़ी थे, सूई के एक-एक टाँके पर सुब्हानल्लाह कहते। शाम को उनसे ज़्यादा नेक अ़मल आसमान पर किसी के न चढ़ते। मुजाहिद रह. तो कहते हैं कि हज़रत इदरीस आसमानों पर चढ़ा लिये गये। आप मरे नहीं हैं बल्कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तरह बिना मौत के उठा लिये गये हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से औफ़ा की रिवायत से नक़ल किया गया है कि छठे आसमान पर उठा लिये गये और वहीं इन्तिक़ाल फ़रमा गये। हसन रह. वग़ैरह कहते हैं कि बुलन्द मकान से मुराद जन्नत है।

Maktab E Ashraf

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۙ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۙ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ السجدة	ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला ने (ख़ास) इनाम फ़रमाया है (दूसरे) अम्बिया में से कि आदम की नस्ल से और उन लोगों (की नस्ल) से जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था, और इब्राहीम और याक़ूब की नस्ल से और उन लोगों में से जिनको हमने हिदायत फ़रमाई और उनको मक़बूल बनाया, जब उनके सामने (अल्लाह) रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं तो सज्दा करते हुए और रोते हुए (ज़मीन पर) गिर जाते थे। (सज्दा) (58) ✿ (सज्दा)

۩ السجدة

यह अम्बिया की जमाअ़त

अल्लाह तआ़ला का फ़रमान यह है कि अम्बिया की जमाअ़त यानी जिनका ज़िक्र इस सूरत में है, या पहले गुज़रा है, या बाद में आयेगा, ये लोग ख़ुदा के इनाम-याफ़्ता हैं। पस यहाँ शख़्सियत (व्यक्तित्व) से जिन्स (प्रजाति) की तरफ़ इशारा है। यह हैं आदम की औलाद से, यानी हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम। और औलाद से उनकी जो हज़रत नूह के साथ कश्ती में सवार करा दिये गये थे। इससे मुराद हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम हैं, और इब्राहीम की नस्ल से मुराद हज़रत इस्हाक़, हज़रत याक़ूब, हज़रत इस्माईल हैं। और इस्राईल की नस्ल से मुराद हज़रत मूसा, हज़रत हारून, हज़रत ज़करिया, हज़रत यहया और हज़रत ईसा हैं। उन सब पर अल्लाह की रहमतें और दुरूद व सलाम हों।

यही क़ौल है हज़रत सुद्दी रह. और इब्ने जरीर रह. का। इसी लिये उनके नसब (ख़ानदान) अलग-अलग बयान फ़रमाये गये। गोया आदम की औलाद में सब हैं मगर उनमें बाज़ वे भी हैं जो उन बुज़ुर्गों की नस्ल से नहीं जो हज़रत नूह के साथी थे। क्योंकि हज़रत इदरीस तो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के दादा थे। मेरा ख़्याल है कि बज़ाहिर यही ठीक है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और उनके नसब में ख़ुदा के पैग़म्बर हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम हैं। हाँ बाज़ लोगों का ख़्याल है कि हज़रत इदरीस भी बनी इस्राईली नबी हैं ये कहते हैं कि मेराज वाली हदीस में हज़रत इदरीस का भी हुज़ूर सल्ल. से यह कहना नक़ल किया गया है कि मर्हबा हो नबी-ए-सालेह और भाई सालेह को मर्हबा हो। तो भाई सालेह कहा, न कि "वलदे सालेह" (नेक लड़का) जैसे कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने कहा था।

नक़ल है कि हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से पहले के हैं। आपने अपनी क़ौम से फ़रमाया था कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के क़ायल और मोतक़िद हो जाओ फिर जो चाहो करो। लेकिन उन्होंने इसका इनकार किया। अल्लाह तआ़ला ने उन सब को हलाक कर दिया। हमने इस आयत को अम्बिया की जिन्स (पूरी जमाअ़त) के लिये क़रार दिया है। इसकी दलील सूरः अन्आ़म की वे आयतें हैं जिनमें हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़, हज़रत याक़ूब, हज़रत नूह, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान, हज़रत अय्यूब, हज़रत यूसुफ़, हज़रत मूसा, हज़रत हारून, हज़रत ज़करिया, हज़रत यहया, हज़रत ईसा, हज़रत इलियास, हज़रत इस्माईल, हज़रत यसअ़ और हज़रत यूनुस अ़लैहिमुस्सलाम वग़ैरह का ज़िक्र और तारीफ़

Maktab E Ashraf

करने के बाद फ़रमायाः

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ.

यही वे लोग हैं जिन्हें ख़ुदा ने हिदायत दी। तू भी उनके हिदायत की पैरवी कर।

और यह भी फ़रमाया है कि नबियों में से बाज़ के वाक़िआत हमने बयान कर दिये हैं और बाज़ के वाक़िआत तुम तक पहुँचे ही नहीं। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत मुजाहिद रह. ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सवाल किया- क्या सूरः 'सॉद' में सज्दा है? आपने फ़रमाया हाँ! फिर इसी आयत की तिलावत करके फ़रमाया तुम्हारे नबी को इनकी इक़्तिदा (पैरवी) का हुक्म किया गया है, और हज़रत दाऊद भी मुक़्तदा (पेशवा और पैरवी किये जाने वाले) नबियों में से हैं। फ़रमान है कि उन पैग़म्बरों के सामने जब अल्लाह के पाक कलाम की आयतें तिलावत की जातीं तो उसकी दलीलें और हुज्जतें सुनकर ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (दिल के झुकाव और इन्किसारी) के साथ अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान मानते हुए रोते गिड़ गिड़ाते सज्दे में गिर पड़ते थे। इसी लिये इस आयत पर सज्दा करने का हुक्म उलेमा की सर्वसम्मति से है, ताकि इन पैग़म्बरों की इत्तिबा और पैरवी हो जाये। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने सूरः मरियम की तिलावत की और जब इस आयत पर पहुँचे तो सज्दा किया, फिर फ़रमाया सज्दा तो किया लेकिन वह रोना कहाँ से लायें? (इब्ने अबी हातिम और इब्ने जरीर)

फिर उनके बाद (बाज़े) ऐसे ना-ख़लफ़ "यानी नालायक़ और नाफ़रमान" पैदा हुए जिन्होंने नमाज़ को बरबाद किया और (नफ़्सानी नाजायज़) ख़्वाहिशों की पैरवी की, सो ये लोग जल्द ही (आख़िरत में) ख़राबी देखेंगे। (59) हाँ मगर जिसने तौबा कर ली और ईमान ले आया और नेक काम करने लगा, सो ये लोग जन्नत में जाएँगे और उनका ज़रा नुक़सान न किया जाएगा। (60)	فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَوٰةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۝

ना-अहल और नाफ़रमान औलाद

नेक लोगों का, ख़ुसूसन अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का ज़िक्र किया, जो अल्लाह की हदों (सीमाओं) के मुहाफ़िज़ और नेक आमाल के नमूने थे, और बुराईयों से बचते थे। अब बुरे लोगों का ज़िक्र हो रहा है कि उनके बाद के ज़माने वाले ऐसे हुए कि वे नमाज़ों तक से बेपरवाह बन गये, और जब नमाज़ जैसे फ़रीज़े की अहमियत को भुला बैठे तो ज़ाहिर है कि और वाजिबात (ज़रूरी अहकाम) की वे क्या परवाह करेंगे? क्योंकि नमाज़ तो दीन की बुनियाद और तमाम आमाल से अफ़ज़ल व बेहतर है। ये लोग नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गये। दुनिया की ज़िन्दगी पर मुत्मईन (संतुष्ट) हो गये। उन्हें क़ियामत के दिन सख़्त ख़सारा होगा, बड़े घाटे में रहेंगे। नमाज़ के ज़ाया करने से मुराद या तो इसे बिल्कुल ही छोड़ बैठना है, इसी लिये इमाम अहमद और बहुत से पहले और बाद के उलेमा का मज़हब है कि नमाज़ का तारिक (छोड़ने

वाला) काफ़िर है। यही एक क़ौल इमाम शाफ़ई रह. का भी है। क्योंकि हदीस में है कि बन्दे और शिर्क के दरमियान नमाज़ का छोड़ना है। दूसरी हदीस में है कि हम में और उनमें फ़र्क़ नमाज़ का है, जिसने नमाज़ छोड़ दी वह काफ़िर हो गया। इस मसले की तफ़सील से बयान करने का यह मक़ाम नहीं। या नमाज़ के छोड़ने से मुराद नमाज़ के वक़्तों की सही तौर पर पाबन्दी का न करना है। क्योंकि नमाज़ का छोड़ना तो कुफ़्र है।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से मालूम किया गया कि क़ुरआने करीम में नमाज़ का ज़िक्र बहुत ज़्यादा है, कहीं नमाज़ में सुस्ती करने वालों के अज़ाब का बयान है, कहीं नमाज़ की पाबन्दी का फ़रमान है, कहीं उसकी हिफ़ाज़त का। आपने फ़रमाया उनसे मुराद वक़्तों में सुस्ती न करना और वक़्तों की पाबन्दी करना है। मुसलमानों के ख़लीफ़ा अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ रह. ने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया कि इससे मुराद सिरे से नमाज़ छोड़ देना नहीं बल्कि नमाज़ के वक़्त को ज़ाया कर देना है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि ये बदतरीन लोग क़ियामत के क़रीब आयेंगे जबकि इस उम्मत के नेक लोग बाक़ी न रहे होंगे। उस वक़्त ये लोग जानवरों की तरह कूदते-फाँदते फिरेंगे। अता बिन रबाह भी यही फ़रमाते हैं कि ये लोग आख़िर ज़माने में होंगे। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यह इस उम्मत के लोग होंगे जो चौपायों और गधों की तरह रास्तों में ही उछल-कूद करेंगे और ख़ुदा तआला से जो आसमान में है बिल्कुल न डरेंगे और न लोगों से शर्मायेंगे।

इब्ने अबी हातिम की हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ये बुरे और नाफ़रमान लोग साठ साल के बाद होंगे जो नमाज़ों को ज़ाया कर देंगे, ऐश व मस्ती और इच्छाओं की पूर्ती में लग जायेंगे और क़ियामत के दिन इसका ख़ामियाज़ा भुगतेंगे। फिर उनके बाद वे नालायक़ लोग आयेंगे जो क़ुरआन की तिलावत तो करेंगे लेकिन उनके हलक़ से नीचे न उतरेगा। याद रखो क़ारी (पढ़ने वाले) तीन क़िस्म के होते हैं- मोमिन, मुनाफ़िक़ और फ़ाजिर। हदीस की बयान करने वाले हज़रत बलीद से जब उनके शागिर्द ने इसकी तफ़सील पूछी तो आपने फ़रमाया ईमान वाले तो उसकी तस्दीक़ करेंगे, निफ़ाक़ वाले इस पर अक़ीदा न रखेंगे और फ़ाजिर इससे अपना पेट पालेंगे। इब्ने अबी हातिम की एक ग़रीब हदीस में है कि हज़रत उम्मुल-मोमिनीन आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा अस्हाब-ए-सुफ़्फ़ा के लिये जब कुछ ख़ैरात भिजवातीं तो कह देतीं कि बराबरी मर्द व औरत को न देना, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि यही वे नालायक़ हैं जिनका ज़िक्र इस आयत में है।

मुहम्मद बिन कअब क़रज़ी का फ़रमान है कि मुराद इससे मग़रिब (पश्चिम) के बादशाह हैं जो बहुत बुरे बादशाह हैं। हज़रत कअब अहबार रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम मैं मुनाफ़िक़ों की निशानियाँ क़ुरआने करीम में पाता हूँ- ये नशा पीने वाले, नमाज़ें छोड़ने वाले, शतरंज चौसर वग़ैरह खेलने वाले, इशा की नमाज़ों के वक़्त सो जाने वाले, खाने पीने में मुबालग़ा और तकल्लुफ़ करके बहुत ज़्यादा खाने वाले हैं। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि मस्जिदें उन लोगों से ख़ाली नज़र आती हैं और बैठकें रौनक़दार बनी हुई हैं। अबू अशहब अतारदी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर 'वही' आयी कि अपने साथियों को होशियार कर दे कि वे अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों से बाज़ रहें जिनकी दिली ख़्वाहिशों की गिरफ़्त में रहते हैं। मैं उनकी अक़्लों पर पर्दे डाल देता हूँ। जब कोई बन्दा शहवत (जिन्सी इच्छा) में अन्धा हो जाता है तो सबसे हल्की सज़ा मैं उसे यह देता हूँ कि अपनी इताअत से उसे महरूम कर देता हूँ। मुस्नद अहमद में है कि मुझे अपनी उम्मत पर दो चीज़ों का बहुत ही ख़ौफ़ है- एक तो यह कि लोग झूठ,

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

बनाव-सिंघार और शहवत के पीछे पड़ जायेंगे और नमाज़ों को छोड़ बैठेंगे, दूसरी यह कि मुनाफ़िक़ लोग दुनिया दिखावे को क़ुरआन के आमिल (अमल करने वाले) बनकर सच्चे मोमिनों से लड़ें झगड़ेंगे।

"ग़य्यन्" के मायने घाटे, नुक़सान और बुराई के हैं। इब्ने मसऊद रज़ि. से नक़ल किया गया है कि "ग़य्युन" जहन्नम की एक वादी का नाम है जो बहुत गहरी है और निहायत हौलनाक अज़ाब वाली। उसमें ख़ून पीप भरा हुआ है। इब्ने जरीर में है कि लुक़मान बिन आमिर फ़रमाते हैं- मैं हज़रत अबू उमामा सुद्दी बिन अजलान बाहिली रज़ि. के पास गया और उनसे प्रार्थना की कि रसूलुल्लाह सल्ल. से सुनी हुई हदीस मुझे सुनाईये। आपने फ़रमाया सुनो- हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि अगर दस औक़िया के वज़न का कोई पत्थर जहन्नम के किनारे से जहन्नम में फेंका जाये तो वह पचास साल तक तो जहन्नम की तह में भी नहीं पहुँच सकता, फिर वह "ग़ई" और "असाम" में पहुँचेगा और असाम जहन्नम के नीचे के दो कुएँ हैं जहाँ जहन्नम में जहन्नमियों का लहू पीप जमा होता है। "ग़ई" का ज़िक्र आयतः

فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا.

(सूरः मरियम आयत 59) में है। और "असाम" का ज़िक्र आयतः

يَلْقَ اَثَامًا.

(सूरः फ़ुरक़ान आयत 68) में है। इस हदीस को फ़रमाने रसूल के तौर पर रिवायत करना मुन्कर है और यह हदीस सनद के एतिबार से भी ग़रीब है। फिर फ़रमाता है कि हाँ जो इन कामों से तौबा कर ले यानी नमाज़ों की सुस्ती और नफ़्सानी इच्छाओं की पैरवी छोड़ दे, अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा, उसकी आक़िबत संवार देगा, उसे जहन्नम से बचाकर जन्नत में पहुँचायेगा। तो यह अपने से पहले के तमाम गुनाहों को माफ़ करा देती है। एक और हदीस में है कि तौबा करने वाला ऐसा है जैसे बेगुनाह। यह लोग जो नेकियाँ करें उनके अज्र उन्हें मिलेंगे, किसी एक नेकी का सवाब कम न होगा, तौबा से पहले के गुनाहों पर कोई पकड़ न होगी। यह है करम उस करीम का और यह है हिल्म (बरदाश्त) उस हलीम का कि तौबा के बाद उस गुनाह को बिल्कुल मिटा देता है। सूरः फ़ुरक़ान में गुनाहों का ज़िक्र फ़रमाकर उनकी सज़ाओं का बयान करके फिर इसको हुक्म से अलग किया और फ़रमाया कि अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम (माफ़ करने वाला और रहम करने वाला) है।

वे हमेशा रहने के बाग़ जिनका रहमान ने अपने बन्दों से ग़ायबाना वायदा फ़रमाया है, (और) उसकी वायदा की हुई चीज़ को ये लोग ज़रूर पहुँचेंगे। (61) उस (जन्नत) में वे लोग कोई फ़ुज़ूल बात सुनने न पाएँगे सिवाय सलाम के, और उनको उनका खाना सुबह व शाम मिला करेगा। (62) यह जन्नत (जिसका ज़िक्र हुआ) ऐसी है कि हम अपने बन्दों में से उसका मालिक ऐसों को बना देंगे जो कि ख़ुदा से डरने वाले हों। (63)	جَنّٰتِ عَدْنِ ۨالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝

Maktab E Ashraf

हमेशा रहने वाली जन्नतें

जिन जन्नतों में गुनाहों से तौबा करने वाले दाख़िल होंगे ये जन्नतें हमेशगी वाली होंगी, जिनका ग़ायबाना वायदा उनसे उनका रब कर चुका है। उन जन्नतों को उन्होंने देखा नहीं लेकिन फिर भी देखने से भी ज़्यादा उन्हें उन पर ईमान व यक़ीन है। बात भी यही है कि अल्लाह के वायदे यक़ीनी होते हैं, वह सच्चाई और वास्तविकता हैं, जो सामने आकर ही रहेंगे। न ख़ुदा वायदा-ख़िलाफ़ी करे न वायदे को बदले। ये लोग वहाँ ज़रूर पहुँचाये जायेंगे और उसे ज़रूर पायेंगे। "मअ्तिय्या" के मायने "आ-तया" के भी आते हैं और यह भी है कि जहाँ हम जायें वह हमारे पास आ ही गया। जैसे कहते हैं कि मुझ पर पचास साल आये या मैं पचास साल को पहुँचा। मतलब दोनों जुमलों का एक ही होता है। नामुम्किन है कि उन जन्नतों में कोई बेहूदा और नापसन्दीदा कलाम उनके कानों में पड़े, सिर्फ़ मुबारक सलामती की धूम होगी, हर तरफ़ से ख़ुसूसन फ़रिश्तों की पाक ज़बान से यही मुबारक आवाज़ें कान में गूँजती रहेंगी। जैसे सूरः वाक़िआ में हैः

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيْمًا. اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا.

वहाँ कोई बेहूदा और ख़िलाफ़े तबीयत बात न सुनेंगे। सिवाय सलाम और सलामती के।

सुबह व शाम पाक तय्यिब उम्दा अच्छे ज़ायक़े वाली रोज़ियाँ बिला तकल्लुफ़ व तकलीफ़ बिना मशक़्क़त व ज़हमत के चली आयेंगी। लेकिन यह न समझा जाये कि जन्नत में भी दिन रात होंगे। नहीं! बल्कि उन अनवार से इन वक़्तों को जन्नती पहचान लेंगे जो ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर हैं। चुनाँचे मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि पहली जमाअ़त जो जन्नत में जायेगी उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद जैसे रोशन और नूरानी होंगे, न वहाँ उन्हें थूक आयेगा न नाक आयेगी, न पेशाब न पाख़ाना। उनके बरतन और फ़र्नीचर सोने के होंगे, उनका बख़ूर (ख़ुशबू के लिये जलाने की चीज़) ख़ुशबूदार अगरबत्ती की तरह होगा, उनके पसीने मुश्क जैसे होंगे। हर एक जन्नती मर्द की दो बीवियाँ तो ऐसी होंगी कि उनकी सफ़ाई से उनके पिंडलियों की नली का गूदा तक बाहर से नज़र आयेगा। उन सब जन्नतों में न तो किसी को किसी से अ़दावत (बैर और दुश्मनी) होगी न बुग़ज़, सब एक दिल के होंगे, आपस में कोई मतभेद और विवाद न होगा, सुबह व शाम ख़ुदा की तस्बीह में गुज़रेगी।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि शहीद लोग उस वक़्त जन्नत की एक नहर के किनारे जन्नत के दरवाज़े के पास सुर्ख़ रंग के क़ुब्बों (गुंबदों) में हैं। सुबह व शाम रोज़ी पहुँचाये जाते हैं। (मुस्नद अहमद)

पस सुबह व शाम दुनिया के एतिबार से हैं, वहाँ रात नहीं, बल्कि हर वक़्त नूर का समाँ है। पर्दे गिर जाने और दरवाज़े बन्द हो जाने से जन्नत वाले शाम के वक़्त को और इसी तरह पर्दों के हट जाने और दरवाज़ों के खुल जाने से सुबह के वक़्त को जान लेंगे। उन दरवाज़ों का खुलना बन्द होना भी जन्नतियों के इशारों और हुक्मों पर होगा। ये दरवाज़े भी इस क़द्र साफ़-सुथरे आईने की तरह हैं कि बाहर की चीज़ें अन्दर से नज़र आयें। चूँकि दुनिया में दिन रात की आ़दत थी इसलिये जो वक़्त जब चाहें मौजूद पायेंगे। चुनाँचे एक ग़रीब मुन्कर हदीस में है कि सुबह शाम की क्या पाबन्दी है रिज़्क़ तो बेशुमार हर वक़्त मौजूद है, लेकिन ख़ुदा के दोस्तों के पास इन वक़्तों में हूरें आयेंगी जिनमें अदना दर्जे की वे होंगी जो सिर्फ़ ज़ाफ़रान से पैदा की गयी हैं। ये नेमतों वाली जन्नतें उन्हें मिलेंगी जो ज़ाहिर बातिन में ख़ुदा के फ़रमाँबरदार थे, जो ग़ुस्सा पी जाने वाले और लोगों से दरगुज़र (माफ़) करने वाले थे। जिनकी सिफ़तें सूरः मोमिनून (यानी

Maktab E Ashraf

अट्ठारहवें पारे) की शुरू आयतों में बयान हुई हैं।

और फ़रमाया गया है कि यही जन्नतुल-फ़िरदौस के वारिस हैं, जिनके लिये हमेशा के लिये जन्नतुल-फ़िरदौस ख़ुदा ने लिख दी है (अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह! हमें भी आप अपनी कामिल रहमत से जन्नतुल-फ़िरदौस में पहुँचा दीजिए आमीन)।

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ۗ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ۝	और हम (यानी फ़रिश्ते) बिना आपके रब के हुक्म के वक़्त-वक़्त पर नहीं आ सकते, उसी की (मिल्क) हैं हमारे आगे की सब चीज़ें और हमारे पीछे की सब चीज़ें, और जो चीज़ें उनके दरमियान में हैं, और आपका रब भूलने वाला नहीं। (64) वह रब है आसमानों और ज़मीन का, और उन सब चीज़ों का जो उन दोनों के दरमियान में हैं, सो (ऐ मुख़ातब!) तू उसकी इबादत किया कर और उसकी इबादत पर क़ायम रह, भला तू किसी को उसकी सिफ़्तों जैसा जानता है? (65)

इनसान की इबादत

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक बार हज़रत जिब्राईल से फ़रमाया- आप जितना अब आते हैं इससे ज़्यादा क्यों नहीं आते? इसके जवाब में यह आयत उतरी। यह भी नक़ल किया गया है कि एक मर्तबा जिब्राईल के आने में बहुत ताख़ीर (देरी) हो गयी, जिससे हुज़ूर सल्ल. ग़मगीन हुए। फिर आप यह आयत लेकर नाज़िल हुए। एक रिवायत में है कि बारह दिन या इससे कुछ कम तक नहीं आये थे, जब आये तो हुज़ूर सल्ल. ने कहा इतनी ताख़ीर (देरी) क्यों हुई? मुश्रिक लोग तो कुछ और ही उड़ाने लगे थे, इस पर यह आयत उतरी। पस गोया यह आयत "वज़्ज़ुहा" की आयत जैसी है।

कहते हैं कि चालीस दिन तक मुलाक़ात न हुई थी जब मुलाक़ात हुई तो आपने फ़रमाया मेरा शौक़ तो बहुत ही बेचैन किये हुए था। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया इससे ज़्यादा शौक़ ख़ुद मुझे आपकी मुलाक़ात का था लेकिन मैं ख़ुदा के हुक्म का मामूर व पाबन्द हूँ वहाँ से जब भेजा जाऊँ तब ही आ सकता हूँ वरना नहीं। उस वक़्त यह 'वही' नाज़िल हुई। लेकिन यह रिवायत ग़रीब है।

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत जिब्राईल ने आने में देर लगाई फिर जब आये तो हुज़ूर सल्ल. ने न आने की वजह मालूम की, आपने जवाब दिया कि लोग नाख़ुन न कतरवायें, मिस्वाक न करें तो हम कैसे आ सकते हैं? फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई। मुस्नद इमाम अहमद में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया- मज्लिस दुरुस्त और ठीक-ठाक कर लो, आज वह फ़रिश्ता आ रहा है जो आज से पहले ज़मीन पर कभी नहीं आया। हमारे आगे पीछे की तमाम चीज़ें उसी ख़ुदा की हैं यानी दुनिया व आख़िरत और उसके दरमियान की यानी दोनों फ़ूंकों के दरमियान की चीज़ें भी उसी की मिल्कियत हैं। आने वाले आख़िरत के मामलात और गुज़र चुके दुनिया के मामलात, दुनिया व

आख़िरत के बीच के मामलात सब उसी के क़ब्ज़े में हैं। तेरा रब भूलने वाला नहीं, उसने आपको अपनी याद से भुलाया नहीं, न उसकी यह सिफ़त है। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

وَالضُّحٰى وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى مَاوَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَاقَلٰى.

क़सम है चाश्त के वक़्त की और रात की जबकि वह ढाँप ले, न तो तेरा रब तुझसे अलग और बेताल्लुक़ हुआ है न नाख़ुश।

इब्ने अबी हातिम में है कि आप फ़रमाते हैं- जो कुछ ख़ुदा ने अपनी किताब में हलाल कर दिया वह हलाल है और जो हराम कर दिया वह हराम है, और जिससे ख़ामोश रहा वह आ़फ़ियत (यानी रियायत व छूट) है, तुम ख़ुदा की आ़फ़ियत को क़बूल कर लो, ख़ुदा किसी चीज़ का भूलने वाला नहीं है। फिर आप सल्ल. ने यही जुमला तिलावत फ़रमाया। आसमान व ज़मीन और सारी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ व मालिक, इन्तिज़ाम करने वाला और बा-इख़्तियार वही है, कोई नहीं जो उसके किसी हुक्म को टाल सके, तू उसी की इबादत कर और उसी पर जमा रह। उसके जैसा, उसका सानी, उसका हम-नाम और उसके बराबर कोई नहीं। वह बरकत वाला है, वह बुलन्दियों वाला है, उसके नाम में तमाम ख़ूबियाँ हैं।

وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَامِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ○ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ○ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ○ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ○ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا○	और (मरने के बाद ज़िन्दा होने का इनकारी) इनसान (यूँ) कहता है कि मैं जब मर जाऊँगा तो क्या फिर ज़िन्दा करके (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा? (66) क्या (यह) इनसान इस बात को नहीं समझता कि हम उसको इससे पहले (नापैदी की हालत से) वजूद में ला चुके हैं, और यह (उस वक़्त) कुछ भी न था। (67) सो क़सम है आप के रब की हम उनको (उस वक़्त) जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उनको दोज़ख़ के गिर्दा-गिर्द इस हालत से हाज़िर करेंगे कि घुटनों के बल गिरे होंगे। (68) फिर (उन कुफ़्फ़ार के) हर गिरोह में से उन लोगों को अलग करेंगे जो उनमें से सबसे ज़्यादा अल्लाह से सरकशी किया करते थे। (69) फिर हम (ख़ुद) ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो दोज़ख़ में जाने के ज़्यादा (यानी प्रथम) हक़दार हैं। (70)

क़ियामत का इनकार और इनसान की भूल

क़ियामत के बाज़ मुन्किर क़ियामत का आना अपने नज़दीक मुहाल समझते थे और मौत के बाद का जीना (यानी मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना) उनके ख़्याल में नामुम्किन था। वे क़ियामत और उस दिन की बातों पर ताज्जुब करते थे जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उनके क़ौल को बयान किया है "क्या जब हम

मिट्टी हो जायेंगे तो फिर दोबारा पैदा किये जायेंगे?" अल्लाह फ़रमाता है कि क्या इनसान ने नहीं देखा कि हमने उसे एक नुत्फ़े (वीर्य की बूँद) से पैदा किया फिर देखते ही देखते वह खुलकर झगड़ा करने वाला बन गया। और फिर हमारे लिये मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाईश को भूल गया, कहने लगा कि हड्डियों के बोसीदा और चूरा-चूरा हो जाने के बाद उनको फिर कौन दोबारा ज़िन्दा करेगा? आप फ़रमा दीजिये कि उनको वही पैदा करेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया है।

यहाँ अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि इनसान कहता है- जब मैं मर जाऊँगा तो फिर दोबारा उठाया जाऊँगा? क्या इनसान इस चीज़ पर ग़ौर नहीं करता कि हमने उसको उस वक़्त पैदा किया जब कि वह कुछ भी न था (यानी अब तो कम से कम उसके कुछ न कुछ अवशेष हैं, उसका एक नमूना है)। अल्लाह तआ़ला इनसान की शुरू की पैदाईश से दोबारा पैदा किये जाने पर दलील देता और हुज्जत क़ायम करता है कि जब अल्लाह तआ़ला ने उसको उस वक़्त पैदा किया जब वह कोई वजूद ही न रखता था तो क्या अब उसके पैदा करने पर क़ादिर नहीं, जबकि उसका एक वजूद क़ायम हो चुका। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला पर यह बहुत आसान है।

एक सही हदीस में है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि इनसान ने मुझको झुठलाया, हालाँकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था, और उसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई जबकि उसे इससे बाज़ रहना चाहिये था। उसका मुझे झुठलाना उसका यह कहना है कि मैं दोबारा पैदा नहीं किया जाऊँगा, जबकि सबको मालूम है पहले के मुक़ाबले में किसी चीज़ को दोबारा बनाना ज़्यादा आसान होता है। और उसका तकलीफ़ देना यह है कि मेरी औलाद बताता है जबकि मैं सबसे बेनियाज़ हूँ। न कोई मेरी औलाद और न मैं किसी की औलाद, और न कोई मेरे बराबर का है।

उसके बाद अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ात की क़सम खाकर फ़रमाता है कि उन लोगों को और जिन शयातीन की ये इबादत करते उन सबको मैं ज़रूर जमा करूँगा, फिर उनको जहन्नम पर इस तरह हाज़िर किया जायेगा कि वे घुटनों के बल गिरे हुए होंगे।

औ़फ़ी हज़रत इब्ने अ़ब्बास से नक़ल करते हैं कि यहाँ घुटनों के बल मुराद है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. और सुद्दी रह. का क़ौल है कि यहाँ खड़े होने की हालत मुराद है।

आगे फ़रमाता है कि फिर हम गिरोह यानी उम्मत में से उन लोगों को अलग करेंगे जो अल्लाह तआ़ला की ज़्यादा नाफ़रमानी किया करते थे। क़तादा रह. कहते हैं कि इससे हर दीन के मुक़्तदा और सरदार लोग मुराद हैं। यही क़ौल इब्ने जुरैज वग़ैरह हज़रात का है। और इसी तरह का अल्लाह का वह फ़रमान है जिसमें इरशाद है कि जब वे सब (इबादत करने वाले और जिनकी इबादत करते थे) तो उनमें के बाद वाले पहले वालों के बारे में कहेंगे कि या इलाही! इनको दोहरा अ़ज़ाब दीजिये क्योंकि इन्होंने ही हमें गुमराह किया.....।

आगे इरशाद है कि हम ऐसे लोगों को अच्छी तरह जानते हैं जो दोज़ख़ में जाने के ज़्यादा (औरों से पहले) जाने के हक़दार हैं। यानी अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानते हैं कि कौन सबसे पहले जहन्नम की आग का मुस्तहिक़ है और ज़्यादा अ़ज़ाब पाने का हक़दार है, हाँ मगर तुम नहीं जानते।

और तुममें से कोई भी नहीं जिसका उस पर गुज़र न हो, यह आपके रब के एतिबार से (ताकीद के तौर पर) लाज़िम है जो (ज़रूर) पूरा	وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا

وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا٥	होकर रहेगा। (71) फिर हम उन लोगों को निजात दे देंगे जो ख़ुदा से डरते (यानी उससे डरकर ईमान लाते) थे, और ज़ालिमों को उसमें ऐसी हालत में रहने देंगे कि (रंज व ग़म के मारे) घुटनों के बल गिर पड़ेंगे। (72)

Maktab E Ashraf

जहन्नम के ऊपर से गुज़र

मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल की एक ग़रीब हदीस में है, अबू सुमैया फ़रमाते हैं कि जिस गुज़र का इस आयत में ज़िक्र है उसके बारे में हम में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हुआ, कोई कहता था मोमिन उसमें दाख़िल न होंगे, कोई कहता था दाख़िल तो होंगे लेकिन फिर अपने तक़्वे के सबब निजात पायेंगे। मैंने हज़रत जाबिर रज़ि. से मिलकर इस बात को दरियाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया गुज़रेंगे तो सभी। एक और रिवायत में है कि दाख़िल तो सब होंगे नेक भी और बद भी, लेकिन मोमिनों पर वह आग ठण्डी और सलामती बन जायेगी जैसे हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह पर थी, यहाँ तक कि उस ठंडक की शिकायत ख़ुद आग करने लगेगी। फिर उन मुत्तक़ी लोगों का वहाँ से छुटकारा हो जायेगा। ख़ालिद बिन मादिन रह. फ़रमाते हैं कि जब जन्नती जन्नत में पहुँच जायेंगे तो कहेंगे, ख़ुदा ने तो फ़रमाया था कि हर एक जहन्नम पर वारिद होने (यानी गुज़रने) वाला है और हमारा और गुज़र तो हुआ ही नहीं, तो उनसे फ़रमाया जायेगा कि तुम वहीं से गुज़र कर तो आ रहे हो, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उस वक़्त आग ठंडी कर दी थी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. एक बार अपनी बीवी साहिबा के घुटने पर सर रखकर लेटे हुए थे कि रोने लगे, आपकी बीवी साहिबा भी रोने लगीं तो आपने उनसे मालूम फ़रमाया- तुम कैसे रोयीं? उन्होंने जवाब दिया कि आपको रोता देखकर। आपने फ़रमाया मुझे तो आयतः

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا....... الخ.

याद आ गयी (यानी यही आयत जिसमें जहन्नम के ऊपर से गुज़रने का ज़िक्र है) और रोना आ गया मुझे क्या मालूम कि मैं निजात पाऊँगा या नहीं। उस वक़्त आप बीमार थे, हज़रत अबू मैसरा रह. जब रात को अपने बिस्तर पर सोने के लिये जाते तो रोने लगते और ज़बान से बेसाख़्ता निकल जाता कि काश मैं पैदा ही न होता। एक बार आपसे पूछा गया कि आख़िर इस रोने की क्या वजह है? फ़रमाया यही आयत है। यह तो साबित है कि वहाँ जाना होगा और यह नहीं मालूम कि निजात भी होगी या नहीं।

एक बुज़ुर्ग शख़्स ने अपने भाई से फ़रमाया कि आपको यह मालूम है कि हमें जहन्नम पर से गुज़रना है? उन्होंने जवाब दिया हाँ यक़ीनन मालूम है। फिर पूछा क्या यह भी जानते हो कि वहाँ से पार हो जाओगे? उन्होंने फ़रमाया इसका कोई इल्म नहीं। फिर हमारे लिये हंसी ख़ुशी कैसी? यह सुनकर जब से लेकर मौत की घड़ी तक उनके होंठों पर हंसी नहीं आयी। नाफ़े बिन अज़्रक़ हज़रत अ़ब्बास का इस बारे में मुख़ालिफ़ था कि यहाँ जाने और गुज़रने से मुराद दाख़िल होना है, तो आपने दलील में क़ुरआन की यह आयत पेश कीः

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ اَنْتُمْ لَهَا وَارِدُوْنَ.

Maktab E Ashraf

(सूरः अम्बिया आयत 99) और फ़रमाया देखो! यहाँ वरूद से मुराद दाख़िल होना है या नहीं? फिर आपने दूसरी आयत तिलावत फ़रमाईः

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ.

(सूरः हूद आयत 98) फ़रमाया बतलाओ फ़िरऔन अपनी क़ौम को जहन्नम में ले जायेगा या नहीं? पस अब ग़ौर करो कि हम उसमें दाख़िल तो ज़रूर होंगे, अब निकलेंगे भी या नहीं? ग़ालिबन तुझे तो अल्लाह न निकालेगा इसलिये कि तू इसका मुन्किर है। यह सुनकर नाफ़े खिसयाना होकर (यानी झेंपकर) हंस दिया। नाफ़े ख़ारजी था, उसकी कुन्नियत अबू राशिद थी। दूसरी रिवायत में है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने उसे समझाते हुए आयतः

وَنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا.

(सूरः मरियम आयत 86) भी पढ़ी थी। और यह भी फ़रमाया था कि बुज़ुर्ग लोगों की एक दुआ़ यह भी थी किः

اَللّٰهُمَّ اَخْرِجْنِىْ مِنَ النَّارِ سَالِمًا وَّاَدْخِلْنِى الْجَنَّةَ غَانِمًا.

ख़ुदाया! मुझे जहन्नम से सही सालिम निकाल ले और जन्नत में हंसी-ख़ुशी पहुँचा दे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि.. से अबू दाऊद तियालिसी में यह भी नक़ल किया गया है कि इसके मुख़ालिफ़ (इनकार करने वाले) काफ़िर हैं। इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि इसी तरह हम इस आयत को पढ़ते थे। यह भी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि नेक व बुरे वारिद होंगे। देखो फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लिये और गुनाहगारों के लिये भी वरूद का लफ़्ज़ दाख़िल होने के मायने में ख़ुद क़ुरआने करीम की दो आयतों में मौजूद है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि वारिद (गुज़रना और जाना) तो सब होंगे फिर गुज़र अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ होगा। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि पुलसिरात से सबको गुज़रना होगा। यही आग के पास खड़ा होना है। अब बाज़ तो बिजली की तरह गुज़र जायेंगे, बाज़ हवा की तरह, बाज़ परिन्दों की तरह, बाज़ तेज़-रफ़्तार घोड़ों की तरह, बाज़ तेज़-रफ़्तार ऊँटों की तरह, बाज़ तेज़ चाल वाले पैदल इनसान की तरह, यहाँ तक कि सबसे आख़िर में जो मुसलमान उससे पार होगा वह होगा जिसके सिर्फ़ पैर के अंगूठे पर नूर होगा, गिरता पड़ता निजात पायेगा। पुलसिरात फिसलनी चीज़ है, जिस पर बबूल जैसे और गोखरू जैसे काँटे हैं। दोनों तरफ़ फ़रिश्तों की क़तारें होंगी, जिनके हाथों में जहन्नम के काँटे होंगे, जिनसे वे पकड़-पकड़कर लोगों को जहन्नम में ढकेल देंगे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह तलवार की धार से ज़्यादा तेज़ होगा। पहला गिरोह तो बिजली की तरह आन की आन में पार हो जायेगा। दूसरा गिरोह हवा की तरह जायेगा, तीसरा तेज़-रफ़्तार घोड़ों की तरह, चौथा तेज़-रफ़्तार जानवर की तरह, फ़रिश्ते हर तरफ़ से दुआ़यें कर रहे होंगे कि ख़ुदाया सलामत रख, इलाही बचा ले।

बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की बहुत सी मरफ़ूअ़ हदीसों में भी यह मज़्मून है। हज़रत कअ़ब रज़ि. का बयान है कि जहन्नम अपनी पीठ पर तमाम लोगों को जमा कर लेगी, जब सब नेक व बद जमा हो जायेंगे तो अल्लाह का हुक्म होगा कि अपने वालों को तू पकड़ ले और जन्नतियों को छोड़ दे। अब जहन्नम सब बुरे लोगों को निवाला बनायेगी। वह बुरे लोगों को इस तरह जानती पहचानती है जिस तरह तुम अपनी

औलाद को बल्कि इससे भी ज़्यादा। मोमिन साफ़ बच जायेंगे। सुनो! जहन्नम के दरोग़ा के क़द एक सौ साल की राह के हैं। उनमें से हर एक के पास गुर्ज़ हैं। एक मारते हैं तो सात लाख आदमियों का चूरा हो जाता है।

मुस्नद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मुझे अपने रब की ज़ाते पाक से उम्मीद है कि बदर और हुदैबिया के जिहाद में जो ईमान वाले शरीक थे उनमें से एक भी दोज़ख़ में न जायेगा। यह सुनकर हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा यह कैसे? क़ुरआन तो कहता है कि तुम में से हर एक उस पर वारिद होने वाला है? तो आपने उसके बाद की दूसरी आयत पढ़ दी कि मुत्तक़ी लोग उससे निजात पा जायेंगे और ज़ालिम लोग उसी में रह जायेंगे। सहीहैन में है कि जिसके तीन बच्चे फ़ौत हो गये हों, उसे आग न छूएगी मगर सिर्फ़ क़सम पूरी होने के तौर पर। इससे मुराद यही आयत है। इब्ने जरीर में है कि एक सहाबी रज़ि. को बुख़ार चढ़ा हुआ था, जिसकी मिज़ाज-पुर्सी के लिये रसूलुल्लाह सल्ल. हमारे साथ तशरीफ़ ले चले। आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि यह बुख़ार भी एक आग है, मैं अपने मोमिन बन्दों को इसमें मुब्तला करता हूँ ताकि यह जहन्नम की आग का बदला हो जाये। यह हदीस ग़रीब है। हज़रत मुजाहिद रह. ने भी यही फ़रमाकर फिर इस आयत की तिलावत फ़रमाई है।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है कि जो शख़्स सूरः "क़ुल हुवल्लाहु अहद" दस बार पढ़ ले उसके लिये जन्नत में एक महल तामीर होता है। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा फिर तो हम बहुत से महल बना लेंगे? आपने जवाब दिया ख़ुदा के पास कोई कमी नहीं। वह बेहतर से बेहतर और बहुत देने वाला है। और जो शख़्स ख़ुदा की राह में एक हज़ार आयतें पढ़ ले अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसे नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालिहीन में लिख लेगा। हक़ीक़त में उनका साथ बेहतरीन साथियों का साथ है, और जो शख़्स किसी तन्ख़्वाह की वजह से नहीं बल्कि ख़ुदा की ख़ुशी के लिये मुसलमान लश्करों में उनकी हिफ़ाज़त करने के लिये पहरा दे वह अपनी आँख से भी जहन्नम की आग को न देखेगा, मगर सिर्फ़ क़सम पूरी करने के लिये। क्योंकि ख़ुदा का फ़रमान है कि तुम में से हर एक उस पर वारिद होने (गुज़रने) वाला है। ख़ुदा की राह में इसका ज़िक्र करना ख़र्च करने से भी सात सौ गुना ज़्यादा अज्र रखता है। एक और रिवायत में है कि सात हज़ार गुना।

अबू दाऊद में है कि नमाज़ रोज़ा और अल्लाह का ज़िक्र अल्लाह की राह के ख़र्च करने से भी सात सौ गुना दर्जा रखते हैं। क़तादा रह. फ़रमाते हैं, मुराद इस आयत से गुज़रना है। अ़ब्दुर्रहमान कहते हैं कि मुसलमान तो पुलसिरात से गुज़र जायेंगे और मुश्रिक जहन्नम में जायेंगे। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि उस दिन बहुत से मर्द औ़रत उस पर से फिसल पड़ेंगे। उसके दोनों किनारों पर फ़रिश्तों की क़तारें होंगी जो ख़ुदा से सलामती की दुआ़यें कर रहे होंगे। यह तो ख़ुदा की क़सम है जो पूरी होकर रहेगी। इसका फ़ैसला हो चुका और ख़ुदा तआ़ला उसे अपने ज़िम्मे लाज़िम कर चुका है। पुलसिरात पर जाने के बाद परहेज़गार तो पार हो जायेंगे, हाँ काफ़िर गुनाहगार अपने अपने आमाल के मुताबिक़ जहन्नम में झड़-झड़ जायेंगे, मोमिन भी अपने अपने आमाल के मुताबिक़ निजात पायेंगे, जैसे अ़मल होंगे उतनी देर वहाँ लग जायेगी। फिर यह निजात पाने वाले अपने दूसरे मुसलमान भाईयों की सिफ़ारिश करेंगे, फ़रिश्ते शफ़ाअ़त करेंगे और अम्बिया भी। फिर बहुत से लोग तो जहन्नम से निकाले जायेंगे जिनके दिलों में एक दीनार (सिक्के) के बराबर ईमान होगा वे पहले निकलेंगे, फिर उससे कम वाले, फिर उससे कम वाले, यहाँ तक कि राई के दाने के बराबर ईमान वाले, फिर उससे कम वाले, फिर उससे भी कम वाले। फिर वह जिसने अपनी पूरी उम्र में ला इला-ह

इल्लल्लाहु कह दिया हो अगरचे कुछ भी नेकी न की हो। फिर तो जहन्नम में वही रह जायेंगे जिनके लिये हमेशा को जहन्नम में रहना लिखा जा चुका है। यह तमाम ख़ुलासा है उन हदीसों का जो सेहत के साथ आ चुकी हैं। पस पुलसिरात पर जाने के बाद नेक लोग पार हो जायेंगे और बुरे लोग कट-कटकर जहन्नम में गिर पड़ेंगे।

Maktab E Ashraf

और जब उन (इनकार करने वाले) लोगों के सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो ये काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि दोनों फ़रीक़ों में से मकान "यानी ठिकाना" किसका ज़्यादा अच्छा है, और महफ़िल किसकी अच्छी है। (73) और हमने उनसे पहले बहुत-से (ऐसे-ऐसे) गिरोह हलाक किए हैं जो सामान और देखने में उनसे भी (कहीं) अच्छे थे। (74)	وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ۝

काफ़िरों की बेहूदा बकवास

ख़ुदा की साफ़ और स्पष्ट आयतों से, परवर्दिगार के दलीलों व हुज्जतों वाले कलाम से काफ़िरों को कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता। वे उनसे मुँह मोड़ लेते हैं, आँखें फेर लेते हैं और अपनी ज़ाहिरी शान व शौकत से उन्हें मरऊब करना चाहते हैं। कहते हैं कि बताओ किसके मकानात शानदार हैं और किसकी बैठकें सजी हुई और आबाद व रौनक़दार हैं? पस हम जबकि माल व दौलत, शान व शौकत, इज़्ज़त व आबरू में उनसे बढ़े हुए हैं तो हम ख़ुदा के प्यारे हैं? या ये जो कि छुपते फिरते हैं? खाने पीने को नहीं पाते। कहीं अर्क़म बिन अबू अर्क़म के घर में छुपते हैं और कहीं इधर-उधर भागते फिरते हैं। जैसे एक और आयत में है कि काफ़िरों ने कहाः

لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ.

अगर यह दीन बेहतर होता तो इसे पहले हम मानते या ये?

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने भी यही कहा था किः

اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ.

और कह उठते हैं कि क्या हम तुझ पर ईमान ले आयें जबकि तेरी पैरवी करने वाले कम-दर्जे के और घटिया लोग हैं?

फिर उनके मुग़ालते का जवाब दिया कि उनसे पहले उनसे भी बढ़े हुए और मालदारी में नुमायाँ लोग थे, लेकिन उनके बुरे आमाल की वजह से हमने उन्हें तहस-नहस कर दिया। उनकी मज्लिसें, उनके मकानात, उनकी क़ुव्वतें, उनकी मालदारियाँ इनसे कहीं ज़्यादा थीं। शान व शौकत में, टिप टॉप में, तकल्लुफ़ात में, सरदारी और इज़्ज़त में इनसे कहीं ज़्यादा थे। उनके तकब्बुर और दुश्मनी की वजह से हमने उनका नाम व निशान तक मिटा दिया और उनको बिल्कुल ही बरबाद कर दिया। फ़िरऔन वालों को देख लो, उनके बाग़ात उनकी नेहरें उनकी खेतियाँ उनके शानदार मकानात और आ़लिशान महल अब तक मौजूद हैं और वे

Maktab E Ashraf

ग़ारत कर दिये गये। मछलियों का लुक़्मा बन गये, "मक़ाम" से मुराद ठिकाना और नेमतें हैं, "नदिय्या" से मुराद मज्लिसें और बैठकें हैं। अरब में बैठकों और लोगों के जमा होने की जगहों को 'नादी' और 'नदिय्युन' कहते हैं।

यही उन मुश्रिकों का क़ौल था कि हम दुनिया के एतिबार से तुमसे बहुत बढ़े हुए हैं। लिबास में, माल में, दौलत में, सूरत शक्ल में हम तुमसे अफ़ज़ल (बेहतर और अच्छे) हैं।

आप फ़रमा दीजिए कि जो लोग गुमराही में हैं (यानी तुम), रहमान उनको ढील देता चला जा रहा है, यहाँ तक कि जिस चीज़ का उनसे वायदा किया गया है उसको देख लेंगे, चाहे (दुनिया में) अज़ाब को चाहे (दूसरी दुनिया में) क़ियामत को, सो (उस वक़्त) उनको मालूम हो जाएगा कि बुरा ठिकाना किसका है और कमज़ोर मददगार किसके हैं। (75)	قُلْ مَنْ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰىٓ اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ۗ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ○

जल्द ही मालूम हो जायेगा

उन काफ़िरों को जो तुम्हें नाहक़ (ग़लत रास्ते) पर और ख़ुद को हक़ (सही रास्ते) पर समझ रहे हैं और अपनी ख़ुशहाली और मालदारी व सुकून पर भरोसा किये बैठे हैं, उनसे कह दीजिए कि गुमराहियों की रस्सी लम्बी होती है, उन्हें ख़ुदा की तरफ़ से ढील दी जाती है, जब तक कि क़ियामत न आ जाये या उनकी मौत न आ जाये। उस वक़्त उन्हें पूरा पता चल जायेगा कि वास्तव में बुरा शख़्स कौन था और किसके साथी कमज़ोर थे। दुनिया तो ढलती चढ़ती छाँव है, न ख़ुद इसका एतिबार न इसके सामान व असबाब का। ये तो अपनी सरकशी (नाफ़रमानी और बग़ावत) में बढ़ते ही रहेंगे।

गोया इस आयत में मुश्रिकों से मुबाहला (चुनौती और मुक़ाबले की दावत) है जैसे यहूदियों से सूरः जुमा में मुबाहले की आयत है कि आओ हमारे मुक़ाबले में मौत की तमन्ना करो। इसी तरह सूरः आले इमरान में मुबाहले का ज़िक्र है कि जब तुम अपने ख़िलाफ़ दलीलें सुनकर भी ईसा अ़लैहिस्सलाम के अल्लाह का बेटा होने के दावेदार हो तो आओ बाल बच्चों समेत मैदान में जाकर झूठे पर लानते ख़ुदा पड़ने की दुआ़ करें। पस न तो मुश्रिक लोग मुक़ाबले पर आये न यहूद की हिम्मत पड़ी, न ईसाई मैदान के मर्द साबित हुए।

और अल्लाह तआ़ला हिदायत वालों को (दुनिया में तो) हिदायत बढ़ाता है और (आख़िरत में ज़ाहिर होगा कि) जो नेक काम हमेशा के लिए बाक़ी रहने वाले हैं, वे तुम्हारे रब के नज़दीक सवाब में भी बेहतर हैं और अन्जाम में भी बेहतर हैं। (76)	وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ○

Maktab E Ashraf

बाक़ी रहने वाली नेकियाँ

जिस तरह गुमराहों की गुमराही बढ़ती रहती है इसी तरह हिदायत वालों की हिदायत बढ़ती रहती है जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि जहाँ कोई सूरत (क़ुरआन का हिस्सा) उतरती है तो बाज़ लोग कहने लगते हैं कि तुम में से किसे इसने ईमान में ज़्यादा कर दिया? "बाक़ियाते सालिहात" (बाक़ी रहने वाली नेकियाँ) की पूरी तफ़सीर इन्हीं लफ़्ज़ों की तशरीह (व्याख्या) में सूरः कहफ़ में गुज़र चुकी है। यहाँ फ़रमाता है कि बाक़ी रहने वाली नेकियाँ जज़ा और सवाब के लिहाज़ से और अन्जाम और बदले के लिहाज़ से नेक काम करने वालों के लिये बेहतर हैं। मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि एक दिन हुज़ूर सल्ल. एक सूखे पेड़ के नीचे तशरीफ़ फ़रमा थे। उसकी टहनी पकड़कर हिलाई तो सूखे पत्ते झड़ने लगे, आपने फ़रमाया देखो इसी तरह इनसान के गुनाह "ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, सुब्हानल्लाह वल्हम्दु लिल्लाह" कहने से झड़ जाते हैं। ऐ अबूदर्दा! इनका विर्द रख, इससे पहले कि वह वक़्त आये कि तू इन्हें न कह सके। यही बाक़ियाते सालिहात (बाक़ी रहने वाली नेकियाँ) हैं, यही जन्नत के ख़ज़ाने हैं। इसको सुनकर हज़रत अबूदर्दा का यह हाल था कि इस हदीस को बयान फ़रमाकर फ़रमाते कि अल्लाह की क़सम मैं तो इन कलिमात को पढ़ता ही रहूँगा, कभी इनसे ज़बान न रोकूँगा चाहे लोग मुझे मजनूँ (पागल) कहने लगें। इब्ने माजा में भी यह हदीस दूसरी सनद से है।

भला आपने उस शख़्स (की हालत) को भी देखा जो हमारी आयतों के साथ कुफ़्र करता है और कहता है कि मुझको (आख़िरत में) माल और औलाद मिलेंगे। (77) क्या यह शख़्स ग़ैब पर बा-ख़बर हो गया है, या क्या उसने अल्लाह तआ़ला से (इस बात का) कोई अ़हद ले लिया है। (78) हरगिज़ नहीं, (बिल्कुल ग़लत कहता है, और) हम उसका कहा हुआ भी लिखे लेते हैं, और उसके लिए अ़ज़ाब बढ़ाते चले जाएँगे। (79) और उसकी कही हुई चीज़ों के हम वारिस रह जाएँगे और वह हमारे पास (माल व औलाद से) तन्हा (होकर) आएगा। (80)	أَفَرَءَيْتَ الَّذِى كَفَرَ بِـَٔايَـٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَـٰنِ عَهْدًا ۝ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُۥ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۝ وَنَرِثُهُۥ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝

ज़रूर पूछा जायेगा

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं लोहार था और मेरा आ़स बिन वाईल के ज़िम्मे कुछ क़र्ज़ था, मैं उससे तक़ाज़ा करने को गोया तो उसने कहा मैं तो तेरा क़र्ज़ उस वक़्त तक अदा न करूँगा जब तक कि तू मुहम्मद के दीन से न निकल जाये। मैंने कहा मैं तो यह कुफ़्र उस वक़्त भी नहीं कर सकता कि तू मरकर दोबारा ज़िन्दा हो। उस काफ़िर ने कहा बस तो फिर यही रही। जब मैं मरने के बाद ज़िन्दा हूँगा तो ज़रूर मुझे मेरा माल और मेरी औलाद भी मिलेगी, वहीं तेरा क़र्ज़ भी अदा कर दूँगा, तू आ जाना।

इस पर यह आयत उतरी। (बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में है कि मैंने मक्के में उसकी तलवार बनाई थी। उसकी उजरत (मज़दूरी) मेरी उधार थी। फ़रमाता है कि क्या उसे ग़ैब की ख़बर मिल गयी? या उसने ख़ुदा-ए-रहमान से कोई क़ौल व क़रार ले लिया? एक और रिवायत में है कि उस पर मेरे बहुत से दिर्हम बतौर क़र्ज़ के चढ़ गये थे। उसने मुझे जो जवाब दिया मैंने उसका तज़किरा रसूलुल्लाह सल्ल. से किया। इस पर ये आयतें उतरीं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि सहाबा में से बाज़ का आ़स बिन वाईल पर क़र्ज़ था, वे अपने क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने के लिये उसके पास आये तो उसने कहा क्या तुम्हारा यह गुमान है कि जन्नत में सोना चाँदी और रेशम फल फूल वग़ैरह होंगे? हमने कहा हाँ है तो कहा बस तो ये चीज़ें मुझे ज़रूर मिलेंगी, मैं वहीं तुम सबको दे दूँगा। पस ये चारों आयतें उतरीं।

इस मग़रूर (घमंडी) को जवाब मिलता है कि क्या उसे ग़ैब पर इत्तिला है? उसे आख़िरत के अपने अन्जाम की ख़बर है? जो यह क़समें खाकर कह रहा है? या उसने ख़ुदा से कोई क़ौल व क़रार अ़हद व पैमान ले लिया है? या उसने ख़ुदा की तौहीद मान ली (यानी ईमान ले आया) है? कि उसकी वजह से उसे जन्नत में दाख़िले का यक़ीन है? चुनाँचे आयतः

اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا.

(हाँ मगर जिसने रहमान के पास से इजाज़त ले ली है) में ख़ुदा की वह्दानियत के कलिमे का क़ायल हो जाना ही मुराद लिया गया है। फिर उसके कलाम की ताकीद के साथ नफ़ी की जाती है और उसके ख़िलाफ़ बयान हो रहा है कि उसका यह ग़ुरूर का कलिमा भी हमारे यहाँ लिखा जा चुका है, उसका कुफ़्र भी हम पर स्पष्ट है। आख़िरत में तो उसके लिये अ़ज़ाब ही अ़ज़ाब है, जो हर वक़्त बढ़ता रहेगा। उसे वहाँ माल व औलाद मिलना तो कहाँ बल्कि इसके विपरीत दुनिया का माल व मताअ़ और औलाद कुनबा भी इससे छीन लिया जायेगा। वह बिल्कुल अकेला हमारे दरबार में पेश होगा। इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में "व नरिसुहू मा अ़िन्दहू" है, कि उसकी जमा जत्था और उसके अ़मल हमारे क़ब्ज़े में हैं। यह तो ख़ाली हाथ सब कुछ छोड़-छाड़कर हमारे सामने पेश होगा।

और उन लोगों ने अल्लाह के अ़लावा और माबूद तजवीज़ कर रखे हैं ताकि उनके लिए वे (अल्लाह के यहाँ) इज़्ज़त का सबब हों। (81) (ऐसा) हरगिज़ नहीं (होगा, बल्कि) वे तो उनकी इबादत का ही इनकार कर बैठेंगे, और उनके मुख़ालिफ़ हो जाएँगे। (82) क्या आपको मालूम नहीं कि हमने शैतानों को (आज़माईश के तौर पर) काफ़िरों पर छोड़ रखा है, कि वे उनको (कुफ़्र व गुमराही पर) ख़ूब उभारते रहते हैं। (83) सो आप उनके लिए जल्दी न कीजिए, हम उनकी बातें ख़ुद शुमार कर रहे हैं। (84)	وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۝ كَلَّا ۭ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۝ۧ اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ۝ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۝ۚ

ع ٥ ٨

Maktab E Ashraf

जल्दी मत कीजिये

काफ़िरों का ख़्याल है कि ख़ुदा के सिवा और दूसरे माबूद उनके हिमायती और मददगार होंगे। ग़लत ख़्याल है बल्कि मुहाल है, बल्कि मामला इसके उलट और बिल्कुल विपरीत है। उनकी पूरी मोहताजी के दिन यानी क़ियामत में ये साफ़ मुन्किर हो जायेंगे और अपने आ़बिदों (पूजा और इबादत करने वालों) के दुश्मन बनकर खड़े होंगे। जैसे फ़रमाया कि उससे बढ़कर गुमराह और भटका हुआ कौन है जो ख़ुदा को छोड़कर उन्हें पुकार रहा है जो क़ियामत तक जवाब न दे सकें। उनकी दुआ़ से बिल्कुल ग़ाफ़िल हों और क़ियामत के दिन उनके दुश्मन बन जायें, और उनकी इबादत का बिल्कुल इनकार कर जायें। ख़ुद ये काफ़िर लोग भी उस दिन ख़ुदा के सिवा औरों की पूजा-पाठ का इनकार करेंगे। ये सब आ़बिद (पूजा-पाठ करने वाले) व माबूद (ख़ुदा के अ़लावा जिनकी पूजा की गयी होगी) जहन्नमी होंगे। एक दूसरे के साथी होंगे। वह इस पर यह उस पर लानत व फटकार करेगा। हर एक क़ुसूर (इल्ज़ाम) दूसरे पर डालेगा, एक दूसरे को बुरा कहेगा, बहुत सख़्त झगड़े होंगे, सारे ताल्लुक़ात कट जायेंगे, एक दूसरे के खुले दुश्मन हो जायेंगे। मदद तो कहाँ मुरव्वत तक न होगी। माबूद आ़बिदों के लिये और आ़बिद माबूदों के लिये एक मुसीबत और हसरत व अफ़सोस का सामान हो जायेंगे।

क्या तुझे नहीं मालूम कि उन काफ़िरों को हर वक़्त शयातीन नाफ़रमानियों पर आमादा करते रहते हैं। मुसलमानों के ख़िलाफ़ उकसाते रहते हैं। आरज़ूएँ (तमन्नायें और इच्छायें) बढ़ाते रहते हैं। नाफ़रमानी, गुमराही और सरकशी में आगे करते रहते हैं। जैसे फ़रमान है कि अल्लाह के ज़िक्र से मुँह मोड़ने वाले शैतान के हवाले हो जाते हैं। तू जल्दी न कर, उनके लिये कोई बददुआ़ न कर, हमने ख़ुद जान-बूझकर उन्हें ढील दे रखी है, उन्हें बढ़ता रहने दे, आख़िर वक़्ते मुक़र्ररा पर दबोच लिये जायेंगे। अल्लाह तआ़ला उन ज़ालिमों के आमाल से बेख़बर नहीं है। उन्हें तो कुछ यूँही (यानी बहुत थोड़ी) सी ढील है, जिसमें ये अपने गुनाहों में बढ़े चले जा रहे हैं। आख़िर सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ बेबसी के साथ जा पड़ेंगे। तुम फ़ायदा हासिल कर लो। लेकिन याद रखो कि तुम्हारा असली ठिकाना दोज़ख़ ही है, हम उनके साल महीने दिन और वक़्त शुमार कर रहे हैं। उनके साँस भी हमारे गिने हुए हैं। मुक़र्रर वक़्त पूरा होते ही अ़ज़ाब में फंस जायेंगे।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ۝ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ۝ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝	(और) जिस दिन मुत्तक़ियों को रहमान (की नेमतों के घर) की तरफ़ मेहमान बनाकर जमा करेंगे। (85) और मुजरिमों को दोज़ख़ की तरफ़ (प्यासा) हाँकेंगे। (86) (वहाँ) कोई सिफ़ारिश का इख़्तियार न रखेगा, मगर हाँ जिसने रहमान के पास से इजाज़त ली है। (87)

दम मारने की भी मजाल नहीं

जो लोग ख़ुदा की बातों पर ईमान लाये, पैग़म्बरों की तस्दीक़ की, ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी की, गुनाहों से बचे रहे, परवर्दिगार का डर दिल में रखा, वे ख़ुदा के यहाँ बतौर सम्मानित मेहमानों के जमा होंगे। नूरानी

सवारियों पर आयेंगे और ख़ुदा के मेहमान-ख़ाने में इज़्ज़त के साथ दाख़िल किये जायेंगे। उनके विपरीत ख़ुदा से न डरने वाले, गुनाहगार, रसूलों के दुश्मन धक्के खा-खाकर औंधे मुँह घिसटते हुए प्यास के मारे ज़ुबान निकाले हुए जबरन जहन्नम के पास जमा किये जायेंगे। अब बतलाओ कि कौन मर्तबे वाला और कौन अच्छे साथियों वाला है? मोमिन अपनी क़ब्र से मुँह उठाकर देखेगा कि उसके सामने एक हसीन ख़ूबसूरत शख़्स बहुत ही उम्दा लिबास पहने हुए ख़ुशबू से महकता दमकता चेहरा लिये खड़ा है। पूछेगा तुम कौन हो? वह कहेगा आपने पहचाना नहीं, मैं तो आपके नेक आमाल का मुजस्समा (एक शक्ल और तस्वीर) हूँ। आपके अ़मल नूरानी हसीन और महकते हुए थे आईये अब आपको मैं अपने कन्धों पर चढ़ाकर इज़्ज़त व इकराम के साथ मेहशर में ले चलूँगा। क्योंकि दुनिया की ज़िन्दगी में मैं आप पर सवार रहा हूँ। पस मोमिन ख़ुदा के पास सवारी पर सवार जायेगा। उनकी सवारी के लिये नूरानी ऊँट भी मुहैया होंगे, ये सब हंसी ख़ुशी आबरू व इज़्ज़त के साथ जन्नत में जायेंगे।

हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं, वफ़्द (किसी सम्मानित जमाअ़त) का यह दस्तूर ही नहीं कि वह पैदल आये, ये मुत्तक़ी हज़रात ऐसी नूरानी ऊँटनियों पर सवार होंगे कि मख़्लूक़ की निगाहों में उनसे बेहतर कोई सवारी कभी नहीं आयी। उनके पालान सोने के होंगे, ये जन्नत के दरवाज़ों तक उनही सवारियों पर जायेंगे, उनकी नकेलें ज़बर्जद की होंगी। एक मरफ़ूअ़ रिवायत में है, लेकिन हदीस बहुत ही ग़रीब है, इब्ने अबी हातिम की रिवायत है, हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक दिन हम रसूलुल्लाह सल्ल. के पास बैठे हुए थे, मैंने इस आयत की तिलावत की और कहा या रसूलल्लाह! वफ़्द तो सवारी पर सवार आया करता है। आपने फ़रमाया क़सम उस ख़ुदा की जिसके हाथ में मेरी जान है कि ये पारसा लोग क़ब्रों से उठाये जायेंगे और उसी वक़्त सफ़ेद रंग के नूरानी पंख वाली ऊँटनियाँ अपनी सवारी के लिये मौजूद पायेंगी, जिन पर सोने के पालान होंगे, जिनके पैरों से नूर बुलन्द हो रहा होगा, जो एक एक क़दम इतनी दूर रखेंगे जहाँ तक निगाह काम करे। ये उन पर सवार होकर एक जन्नती पेड़ के पास पहुँचेंगे, जहाँ से दो नहरें जारी देखेंगे- एक का पानी पियेंगे जिससे उनके दिलों के मैल (यानी आपस के मनमुटाव) दूर हो जायेंगे। दूसरी में ग़ुस्ल करेंगे जिससे उनके जिस्म नूरानी हो जायेंगे और बाल जम जायेंगे। उसके बाद न कभी उनके बाल उलझेंगे न ख़राब और मैले होंगे, उनके चेहरे चमक उठेंगे और ये जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचेंगे, सुर्ख़ याक़ूत का हल्क़ा (गोल दायरा और कुंडा) सोने के दरवाज़े पर होगा जिसे ये खटखटायेंगे, निहायत सुरीली आवाज़ उससे निकलेगी और हूरों को मालूम हो जायेगा कि उनके ख़ाविन्द (शौहर) आ गये। जन्नत के ख़ज़ानची आयेंगे, दरवाज़ा खोलेंगे, जन्नती उनके नूरानी जिस्मों और खिले हुए चेहरों को देखकर सज्दे में गिर पड़ना चाहेंगे लेकिन वे फ़ौरन कह उठेगा कि मैं तो आपका ताबेदार हूँ (यानी मेरा दर्जा आपसे कम है)। आपका हुक्म बजा लाना मेरी ज़िम्मेदारी है।

अब ये उनके साथ चलेंगे, उनकी हूरें ताब न ला सकेंगी और ख़ेमों से निकल कर उनसे चिमट जायेंगी और कहेंगी कि आप हमारे सरताज हैं, हमारे महबूब हैं। मैं हमेशगी वाली हूँ कि मौत से दूर हूँ, मैं नेमतों वाली हूँ कि कभी मेरी नेमतें ख़त्म न होंगी। मैं ख़ुश रहने वाली हूँ कि कभी न रूठूँगी। मैं यहीं रहने वाली हूँ कि कभी आपसे दूर न हूँगी। ये अन्दर दाख़िल होंगे, देखेंगे कि सौ-सौ गज़ बुलन्द ख़ाने हैं। लुअ्लुअ् और मोतियों पर ज़र्द सुर्ख़ सब्ज़ रंग की दीवारें सोने की हैं। हर दीवार एक दूसरे की हमशक्ल है, हर मकान में सत्तर तख़्त हैं। हर तख़्त पर सत्तर हूरें हैं। हर हूर पर सत्तर जोड़े हैं फिर भी उनका पिण्डा झलक रहा है, उनके साथ सोहबत (हमबिस्तरी) की मिक़्दार (मात्रा) दुनिया की पूरी एक रात के बराबर होगी। साफ़ सुथरे

Maktab E Ashraf

पानी की ख़ालिस दूध की जो जानवरों के थन से नहीं निकला, बेहतरीन अच्छे ज़ायक़े वाली, नुक़सान न देने वाली शराबे तहूर की जिसे किसी इनसान ने नहीं छेड़ा, उम्दा ख़ालिस शहद की जो मक्खियों के पेट से नहीं निकला, बह रही होंगी। फलदार पेड़ मेवों से लदे हुए झूम रहे होंगे, चाहें तो खड़े-खड़े मेवे तोड़ लेंगे, चाहें बैठे-बैठे चाहें लेटे-लेटे। सब्ज़ व सफ़ेद परिन्दे उड़ रहे हैं, जिसका गोश्त खाने को जी चाहा वह ख़ुद-ब-ख़ुद हाज़िर हो गया, जहाँ का गोश्त खाना चाहा खा लिया और फिर वह क़ुदरते ख़ुदा से ज़िन्दा चला गया। हर तरफ़ से फ़रिश्ते आ रहे हैं, सलाम कह रहे हैं और ख़ुशख़बरियाँ सुना रहे हैं कि तुम पर सलामती हो, यही वह जन्नत है जिसकी तुम ख़ुशख़बरियाँ दिये जाते रहे और आज इसके मालिक बना दिये गये हो। यह है बदला तुम्हारे नेक आमाल का जो तुम दुनिया में करते रहे। उनकी हूरों में से अगर किसी का एक बाल भी ज़मीन पर ज़ाहिर कर दिया जाये तो सूरज की रोशनी फीकी पड़ जाये।

यह हदीस तो मरफ़ूअ़ बयान हुई है लेकिन ताज्जुब नहीं कि यह मौक़ूफ़ ही हो जैसे कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अपने क़ौल से भी रिवायत है। वल्लाहु आलम।

ठीक इसके उलट (विपरीत) गुनाहगार लोग औंधे मुँह ज़न्जीरों में जकड़े हुए जानवरों की तरह धक्के देकर जहन्नम की तरफ़ जमा किये जायेंगे। उस वक़्त प्यास के मारे उनकी हालत बुरी हो रही होगी, कोई उनकी शफ़ाअ़त करने वाला, उनके हक़ में एक लफ़्ज़ निकालने वाला न होगा। मोमिन तो एक दूसरे की शफ़ाअ़त करेंगे लकिन ये बदनसीब उससे मेहरूम हैं। ये ख़ुद कहेंगे कि आज हमारा कोई सिफ़रिशी ही नहीं, न सच्चा दोस्त है, हाँ जिन्होंने ख़ुदा से अ़हद ले लिया है। अ़हद लेने से मुराद यह है कि ख़ुदा की तौहीद की गवाही और उस पर इस्तिक़ामत है (जमे रहे)। यानी सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत, दूसरों की पूजा से बराअत, मदद की उससे उम्मीद, तमाम आरज़ुओं के पूरा होने की उसी से आस।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं। उन ईमान वालों (अल्लाह को एक मानने वालों) ने ख़ुदा का वायदा हासिल कर लिया है। क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि जिससे मेरा अ़हद है वह खड़ा हो जाये। लोगों ने कहा कि हज़रत हमें भी वह बता दीजिए आपने फ़रमाया यूँ कहो:

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاِنِّيْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا اِنَّكَ اِنْ تَكِلْنِيْ اِلٰى عَمَلٍ يُّقَرِّبْنِيْ مِنَ الشَّرِّ وَيُبَاعِدْنِيْ مِنَ الْخَيْرِ وَاِنِّيْ لَآ اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ عِنْدَكَ عَهْدًا تُؤَدِّيْهِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ.

"ऐ आसमान व ज़मीन को पैदा करने वाले और ज़ाहिर व ग़ायब को जानने वाले अल्लाह! बेशक मैं दुनिया की इस ज़िन्दगी में तुझसे अ़हद करता हूँ कि मुझे ऐसे अ़मल के सुपुर्द मत कर जो मुझे बुराई से क़रीब और भलाई से दूर कर दे। मैं तेरी ही रहमत पर भरोसा करता हूँ तो तू मेरे लिये एक अ़हद क़ायम कर ले जिसे तू मुझे क़ियामत के दिन अदा करे, बेशक तू वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता।"

एक और रिवायत में इसके साथ यह भी है:

خَآئِفًا مُّسْتَجِيْرًا مُّسْتَغْفِرًا رَاهِبًا وَّرَاغِبًا اِلَيْكَ.

"तुझसे डरते हुए, अज्र की उम्मीद करते हुए, मग़फ़िरत की चाहत करते हुए और तेरी ही तरफ़ मुतवज्जह होते हुए।" (इब्ने अबी हातिम)

Muhtaq E Ashraf

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ۝ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا اِدًّا ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۝ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ۝ وَمَا يَنْبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ۝ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّا اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ۝ لَقَدْ اَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ۝	और ये (काफ़िर) लोग कहते हैं कि अल्लाह ने औलाद (भी) इख़्तियार कर रखी है। (88) (अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि) तुमने (जो) यह (बात कही तो) ऐसी सख़्त हरकत की है (89) कि इसके सबब कुछ बईद नहीं कि आसमान फट पड़ें और ज़मीन के टुकड़े उड़ जाएँ और पहाड़ टूटकर गिर पड़ें। (90) इस बात से कि ये लोग (ख़ुदा-ए-) रहमान की तरफ़ औलाद की निस्बत करते हैं (91) हालाँकि (ख़ुदा-ए-) रहमान की शान नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे। (92) (क्योंकि) जितने भी कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं सब (ख़ुदा-ए-) रहमान के सामने गुलाम होकर हाज़िर होते हैं। (93) (और) उसने सबको (अपनी क़ुदरत में) घेर रखा है, और सबको शुमार कर रखा है। (94) और क़ियामत के दिन सब-के-सब उसके पास तन्हा-तन्हा हाज़िर होंगे। (95)

नफ़रत भरा कलिमा

इस मुबारक सूरत के शुरू में इस बात का सुबूत गुज़र चुका कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के बन्दे हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला ने बाप के बग़ैर अपने हुक्म से हज़रत मरियम सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पेट से पैदा किया है। इसलिये यहाँ उन लोगों की नादानी बयान हो रही है जो आपको ख़ुदा का बेटा क़रार देते हैं, जिससे अल्लाह की ज़ात पाक है। उनके क़ौल को बयान फ़रमाया, फिर यह बड़ी भारी बात है।

उनकी यह बात इतनी बुरी है कि आसमान थरथरा कर टूट पड़े और ज़मीन फट जाये। इसलिये कि ज़मीन व आसमान ख़ुदा तआ़ला की इ़ज़्ज़त व बड़ाई जानते हैं। उनमें रब की तौहीद (अल्लाह को एक मानना) समाई हुई है, उन्हें मालूम है कि बदकार बेसमझ इनसानों ने ख़ुदा की ज़ात पर तोहमत बाँधी है। न उसकी जिन्स (क़िस्म) का कोई न उसके माँ-बाप न औलाद न उसका कोई शरीक न उस जैसा कोई, तमाम मख़्लूक़ उसकी वह्दानियत (अकेला ख़ुदा होने) की गवाह है। कायनात का एक-एक ज़र्रा उसकी तौहीद पर दलालत करने वाला है। ख़ुदा के साथ शिर्क करने वालों के शिर्क से सारी मख़्लूक़ काँप उठती है। क़रीब होता है कि कायनात की यह व्यवस्था उलट-पुलट हो जाये। शिर्क के साथ कोई नेकी कारामद नहीं होती। क्या अ़जब कि इसके विपरीत तौहीद के साथ तमाम के तमाम गुनाह ख़ुदा तआ़ला माफ़ फ़रमा दे। जैसे कि हदीस में है कि अपने मरने वालों को "ला इला-ह इल्लल्लाहु" की शहादत (गवाही) की तलक़ीन करो। मौत के वक़्त जिसने इसे कह लिया उसके लिये जन्नत वाजिब हो गयी। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा या हुज़ूर! और जिसने ज़िन्दगी में कह लिया? फ़रमाया उसके लिये और ज़्यादा वाजिब हो गयी। क़सम उस

ख़ुदा की जिसके हाथ में मेरी जान है कि ज़मीन व आसमान और उनकी और उनके बीच की और उनके नीचे की तमाम चीज़ें तराज़ू के एक पलड़े में रख दी जायें और ला इला-ह इल्लल्लाहु की शहादत (गवाही) दूसरे पलड़े में रखी जाये तो यह उन सबसे वज़न में बढ़ जायेगी। इसकी एक और दलील वह हदीस है जिसमें तौहीद के एक छोटे से पर्चे का गुनाहों के बड़े-बड़े दफ़्तरों से वज़नी हो जाना आया है। वल्लाहु आलम।

पस उनका यह कहना इतना बुरा है कि आसमान अल्लाह तआ़ला की बड़ाई के सबब काँप उठें और ज़मीन ग़ज़ब व नाराज़गी की वजह से फट जाये, और पहाड़ों का चूरा हो जाये। हज़रत अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि एक पहाड़ दूसरे पहाड़ से मालूम करता है कि क्या आज कोई ऐसा शख़्स भी तुझ पर चढ़ा है जिसने अल्लाह का ज़िक्र किया हो? वह ख़ुशी से जवाब देता है कि हाँ। पस पहाड़ भी बातिल और झूठ बात को और भली बात को सुनते हैं, और दूसरा कलाम नहीं सुनते। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

नक़ल किया गया है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने जब ज़मीन और उसके दरख़्तों को पैदा किया तो हर दरख़्त (पेड़) इनसान को फल फूल और नफ़ा देता था, मगर जब ज़मीन पर रहने वाले लोगों ने ख़ुदा के लिये औलाद का लफ़्ज़ बोला तो ज़मीन हिल गयी और दरख़्तों में काँटे पड़ गये। कअ़्ब कहते हैं कि फ़रिश्ते नाराज़ और ग़ुस्से में हो गये और जहन्नम ज़ोर व शोर से भड़क उठी। मुस्नद अहमद में फ़रमाने रसूल है कि तकलीफ़ देने वाली बातों पर ख़ुदा से ज़्यादा साबिर (बरदाश्त व सयंम करने वाला) कोई नहीं। लोग उसके साथ शरीक करते हैं, उसकी औलादें मुक़र्रर करते हैं और वह उन्हें आ़फ़ियत (चैन व सुकून) दे रहा है, रोज़ियाँ पहुँचा रहा है, बुराईयों से टालता रहता है। पस उनकी इस बात से कि ख़ुदा की औलाद है, ज़मीन व आसमान और पहाड़ तक तंग हैं। ख़ुदा की अ़ज़मत व शान के लायक़ नहीं कि उसके यहाँ औलाद हो, उसके लड़के लड़कियाँ हों, इसलिये कि तमाम मख़्लूक़ उसकी ग़ुलामी में है। उसके जोड़ का या उस जैसा कोई और नहीं, ज़मीन व आसमान में जो हैं सब उसके फ़रमान के ताबे और हाज़िरी के ग़ुलाम हैं। वह सब का आक़ा, सबका पालनहार, सबका ख़बर लेने वाला है। सब की गिनती उसके पास है। सबको उसके इल्म ने घेर रखा है। सब उसकी क़ुदरत के घेरे में हैं। हर मर्द व औ़रत छोटे बड़े की उसे इत्तिला है, शुरू पैदाईश से दुनिया के ख़त्म होने तक का उसे इल्म है। उसका कोई मददगार नहीं (यानी उसे किसी की मदद की ज़रूरत नहीं), न शरीक व साझी। हर एक बिना किसी हिमायती और मददगार के उसके सामने क़ियामत के रोज़ पेश होने वाला है। सारी मख़्लूक़ के फ़ैसले उसके हाथ में हैं। वही ऐसी ज़ात है जो अकेला है कोई उसका शरीक नहीं। वह आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) है, ज़ालिम नहीं। किसी की हक़-तल्फ़ी उसकी शान से बईद (दूर की और नामुम्किन बात) है।

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए (ख़ुदा-ए-) रहमान उनके लिए मुहब्बत पैदा कर देगा। (96) सो हमने इस (क़ुरआन) को आपकी ज़बान (यानी अरबी) में इसलिए आसान किया है कि आप इससे मुत्तक़ियों को ख़ुशख़बरी सुनाएँ और (साथ ही) इससे झगड़ालू आदमियों को ख़ौफ़ दिलाएँ। (97)	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ۝ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا

Maktab E Ashraf

और हमने उनसे पहले बहुत-से गिरोहों को (अज़ाब व कहर से) हलाक कर दिया है, (सो) क्या आप उनमें से किसी को देखते हैं, या उन की कोई आहिस्ता आवाज़ सुनते हैं? (98)	قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۗ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

ईमान की मिठास और आपसी मुहब्बत

अल्लाह फ़रमाता है कि जिनके दिलों में तौहीद (अल्लाह के एक होने का अक़ीदा) रची हुई है और जिनके आमाल में सुन्नत का नूर है, ज़रूरी बात है कि हम अपने बन्दों के दिलों में उनकी मुहब्बत पैदा करें। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत करने लगता है तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को बुलाकर फ़रमाता है कि मैं फ़ुलाँ से मुहब्बत रखता हूँ तू भी उससे मुहब्बत रख। खुदा का यह अमीन फ़रिश्ता भी उससे मुहब्बत करने लगता है। फिर आसमानों में निदा की जाती है कि खुदा तआ़ला फ़ुलाँ इनसान से मुहब्बत रखता है ऐ फ़रिश्तो! तुम भी उससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे तमाम आसमानों के फ़रिश्ते उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फिर उसकी मक़बूलियत ज़मीन पर उतारी जाती है।

और जब किसी बन्दे से ख़ुदा तआ़ला नाराज़ होता है तो जिब्राईल से फ़रमाता है कि उससे मैं नाख़ुश हूँ तू भी उससे अ़दावत (बैर और दुश्मनी) रख। हज़रत जिब्राईल भी उसके दुश्मन बन जाते हैं। फिर आसमानों में निदा कर देते हैं कि फ़ुलाँ दुश्मने ख़ुदा है, तुम सब उससे बेज़ार रहना। चुनाँचे आसमान वाले उससे बिगड़ बैठते हैं। फिर वही ग़ज़ब व नाराज़गी ज़मीन पर नाज़िल होती है। (बुख़ारी, मुस्लिम वग़ैरह)

मुस्नद अहमद में है कि जो बन्दा अपने मौला की मर्ज़ी का तालिब हो जाता है और उसकी पसन्दीदगी के कामों में मशग़ूल हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाता है कि मेरा फ़ुलाँ बन्दा मुझे ख़ुश करना चाहता है, सुनो मैं उससे ख़ुश हो गया। मैंने अपनी रहमतें उस पर नाज़िल करनी शुरू कर दीं। पस हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम निदा करते हैं कि फ़ुलाँ पर रहमते ख़ुदा हो गयी। फिर अ़र्श को उठाने वाले भी यही मुनादी करते हैं, फिर उनके पास वाले, ग़र्ज़ सातों आसमानों में यह आवाज़ गूँज जाती है। फिर ज़मीन पर उसकी मक़बूलियत उतरती है। यह हदीस ग़रीब है। ऐसी ही एक और हदीस भी मुस्नद अहमद में ग़राबत वाली है, जिसमें यह भी है कि मुहब्बत और शोहरत किसी की बुराई या भलाई के साथ यह आसमानों से ख़ुदा की जानिब से उतरती है। इब्ने अबी हातिम में इसी क़िस्म की हदीस के बाद हुज़ूर पाक सल्ल. का इस आयते क़ुरआनी को पढ़ना भी नक़ल किया गया है।

पस आयत का मतलब यह हुआ कि नेक अ़मल करने वाले ईमान वालों से ख़ुदा ख़ुद मुहब्बत करता है और ज़मीन पर भी उनकी मक़बूलियत उतारी जाती है। मोमिन उनसे मुहब्बत करने लगते हैं, उनका ज़िक्र ख़ैर और भलाई के साथ होता है और उनकी मौत के बाद भी उनकी नेकनामी बाक़ी रहती है। हरम बिन हय्यान कहते हैं कि जो बन्दे सच्चे और मुख़्लिस दिल से अल्लाह की तरफ़ झुकता है, अल्लाह तआ़ला मोमिनों के दिलों को उसकी तरफ़ झुका देता है, वे उससे मुहब्बत और प्यार करने लगते हैं। हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अ़न्हु का फ़रमान है कि बन्दा जो भलाई बुराई करता है अल्लाह तआ़ला उसे उसी की चादर उढ़ा देता है।

हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने इरादा किया कि मैं अल्लाह तआ़ला की इबादत

Maktab E Ashraf

इस तरह करूँगा कि तमाम लोगों में मेरी नेकी की शोहरत हो जाये। अब वह इबादते ख़ुदा में लग गया। जब देखो नमाज़ के लिये मस्जिद में सबसे पहले आये और सबके बाद जाये। इसी तरह उसे सात महीने गुज़र गये लेकिन उसने जब भी सुना यही सुना कि लोग उसे रियाकार (दिखावा करने वाला) कहते हैं। उसने यह हालत देखकर अब अपने जी में अ़हद कर लिया कि मैं सिर्फ़ ख़ुदा की ख़ुशनूदी के लिये अ़मल करूँगा, किसी अ़मल में तो न बढ़ा लेकिन ख़ुलूस के साथ आमाल शुरू कर दिये। नतीजा यह हुआ कि थोड़े ही दिनों में हर शख़्स की ज़बान से निकलने लगा कि अल्लाह तआ़ला फ़ुलाँ शख़्स पर रहम फ़रमाये, अब तो वह वाक़ई अल्लाह वाला बन गया। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

इब्ने जरीर में है कि यह आयत हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि. की हिजरत के बारे में नाज़िल हुई है, लेकिन यह क़ौल सही नहीं, इसलिये कि यह पूरी सूरत मक्के में नाज़िल हुई है। हिजरत के बाद इस सूरत की किसी आयत का नाज़िल होना साबित नहीं। और जो क़ौल इमाम इब्ने जरीर ने ज़िक्र किया है, वह सनद के एतिबार से भी सही नहीं। वल्लाहु आलम।

हमने इस क़ुरआन को ऐ नबी तेरी भाषा में यानी अ़रबी ज़बान में बिल्कुल आसान करके नाज़िल फ़रमाया है, जो फ़साहत व बलाग़त वाली (यानी भाषा के एतिबार से फ़न्नी कमालात से भरपूर) बेहतरीन ज़बान है, ताकि तू उन्हें ख़ुदा की ख़ुशख़बरियाँ सुना दे जो ख़ुदा का ख़ौफ़ रखते हैं, दिलों में ईमान और ज़ाहिर में नेक आमाल रखते हैं। और जो हक़ से हटे हुए, बातिल पर जमे हुए, सीधी राह से दूर, घमंड में चूर झगड़ालू झूठे अन्धे बहरे फ़ासिक़ फ़ाजिर ज़ालिम गुनाहगार बुरे किरदार वाले हैं उन्हें ख़ुदाई पकड़ और उसके अ़ज़ाब से सचेत कर दे। जैसे क़ुरैश के काफ़िर वग़ैरह। बहुत सी उम्मतों को जिन्होंने ख़ुदा के साथ कुफ़्र किया था, नबियों का इनकार किया था, हमने हलाक कर दिया है। जिनमें से एक भी बाक़ी नहीं बचा, एक की आवाज़ भी दुनिया में नहीं रही। "रिक्ज़" के लफ़्ज़ी मायने हल्की और और धीमी आवाज़ के हैं।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः मरियम की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः तॉ-हा

सूरः तॉ-हा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 135 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सूरः तॉ-हा की फ़ज़ीलत

इमामों के इमाम हज़रत मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन ख़ुज़ैमा रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपनी किताब "अत्तौहीद" में हदीस नक़ल करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने

Maktab-E-Ashraf

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से एक हज़ार साल पहले सूरः तॉ-हा और सूरः यासीन की तिलावत फ़रमाई जिसे सुनकर फ़रिश्ते कहने लगे- यह उम्मत बहुत ही ख़ुशनसीब है जिस पर यह कलाम नाज़िल होगा। वे ज़ुबानें यक़ीनन मुबारकबाद की हक़दार हैं जिनसे कलामे ख़ुदा के ये अलफ़ाज़ अदा होंगे। यह रिवायत ग़रीब है और इसमें नकारत भी है और इसके रावी इब्राहीम बिन मुहाजिर और उनके उस्ताद पर जिरह (आलोचनात्मक टिप्पणी) भी है।

طٰهٰ ۝ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۝
اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ
خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۝
اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۝ لَهٗ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ۝ وَاِنْ تَجْهَرْ
بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ۝ اَللّٰهُ لَآ
اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝

तॉ-हा (के मायने तो अल्लाह को मालूम हैं) (1) हमने आप पर क़ुरआन (मजीद) इसलिए नहीं उतारा कि आप तकलीफ़ उठाएँ। (2) बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए (उतारा है) जो (अल्लाह तआ़ला से) डरता हो। (3) यह उस (ज़ात) की तरफ़ से नाज़िल किया गया है जिसने ज़मीन को और बुलन्द आसमानों को पैदा किया है। (4) (और वह) बड़ी रहमत वाला (है) अ़र्श पर क़ायम है। (5) उसी की (मिल्क) हैं जो चीज़ें आसमानों में हैं और जो चीज़ें ज़मीन में हैं, और जो चीज़ें इन दोनों के बीच में हैं, और जो चीज़ें तहतुस्सरा में हैं। (6) और (उसके इल्म की यह शान है कि) अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह चुपके से कही हुई बात को और उससे भी ज़्यादा छुपी बात को जानता है। (7) (वह) अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं। (8)

यह पवित्र किताब

सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में सूरतों के आरंभ में आने वाले हुरूफ़े मुक़त्तआ़त की तफ़सीर पूरी तरह बयान हो चुकी है, जिसे दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। अगरचे यह भी नक़ल किया गया है कि मुराद तॉ-हा से "ऐ शख़्स" है। कहते हैं कि यह नब्ती कलिमा है, कोई कहता है किसी दूसरी भाषा का लफ़्ज़ है जो बाद में अ़रबी भाषा का हिस्सा बना। यह भी नक़ल किया गया है कि हुज़ूर सल्ल. नमाज़ में एक पाँव ज़मीन पर टेकते और दूसरा उठा लेते तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी यानी तॉ-हा, कि ज़मीन पर दोनों पाँव रखा कर। हमने यह क़ुरआन तुझ पर इसलिये नहीं उतारा कि तुझे मशक़्क़त व तकलीफ़ में डाल दें। कहते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा रज़ि. ने क़ुरआन पर अ़मल शुरू कर दिया तो मुश्रिक लोग कहने लगे कि ये लोग तो अच्छी-ख़ासी मुसीबत में पड़ गये। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी कि हमने यह पाक क़ुरआन तुम्हें मशक़्क़त में डालने को नहीं उतारा, बल्कि यह नेकों

के लिये इबरत है, यह ख़ुदाई इल्म है, जिसे यह मिला उसे बहुत बड़ी दौलत मिल गयी। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि जिसके साथ ख़ुदा का इरादा भलाई का हो जाता है उसे दीन की समझ अ़ता फ़रमाता है। हाफ़िज़ अबुल-क़ासिम तबरानी रह. एक मरफ़ूअ़ सही हदीस लाये हैं कि क़ियामत के दिन जबकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के फ़ैसले फ़रमाने के लिये अपनी कुर्सी पर बैठेगा तो फ़रमायेगा कि मैंने अपना इल्म और अपनी हिक्मत तुम्हें इसलिये अ़ता फ़रमाई थी कि तुम्हारे गुनाहों को बख़्श दूँ और कुछ परवाह न करूँ कि तुमने क्या किया है? पहले लोग ख़ुदा की इबादत के वक़्त ख़ुद को रस्सियों में लटका लिया करते थे। अल्लाह तआ़ला ने यह मशक़्क़त अपने इस कलामे पाक के ज़रिये आसान कर दी और फ़रमाया कि यह क़ुरआन तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता। जैसे एक और जगह फ़रमान है कि जिस क़द्र आसानी से पढ़ा जाये पढ़ लिया करो। यह क़ुरआन शक़ावत व बदबख़्ती की चीज़ नहीं बल्कि रहमत व नूर और दलील व जन्नत है। यह क़ुरआन नेक लोगों के लिये जिनके दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा है, तज़किरा, वअ़ज़, हिदायत, और रहमत है। इसे सुनकर ख़ुदा के नेक बन्दे हलाल व हराम से वाक़िफ़ हो जाते हैं और अपने दोनों जहान संवार लेते हैं। यह क़ुरआन तेरे रब का कलाम है, उसी की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। जो हर चीज़ का पैदा करने वाला, मालिक, राज़िक़, क़ादिर है, जिसने ज़मीन नीची और भारी बनाई है और जिसने आसमान को ऊँचा और लतीफ़ बनाया है।

तिर्मिज़ी वग़ैरह की सही हदीस में है कि हर आसमान की जसामत (आकार) पाँच सौ साल की राह है और हर आसमान से दूसरे आसमान तक का फ़ासला भी पाँच सौ साल का है। हज़रत अ़ब्बास रज़ि. वाली हदीस इमाम इब्ने अबी हातिम ने इसी आयत की तफ़सीर में ज़िक्र की है। वह रहमान वह अल्लाह अपने अ़र्श पर क़ायम है। इसकी पूरी तफ़सीर सूरः आराफ़ में गुज़र चुकी है, यहाँ ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं। सलामती भरा तरीक़ा यही है जिन आयतों और हदीसों में अल्लाह तआ़ला की कोई सिफ़त बयान की गयी है उनको पहले नेक उलेमा और बुज़ुर्गों के तरीक़े पर चलते हुए उनके ज़ाहिरी अलफ़ाज़ के मुताबिक़ ही माना जाये, बग़ैर किसी कैफ़ियत को ज़ेहन में लाये हुए और बग़ैर किसी रद्दोबदल और ज़ेहन में उसकी कोई सूरत व शक्ल बिठाये हुए। तमाम चीज़ें ख़ुदा की ही मिल्क में हैं, उसी के क़ब्ज़े व इरादे और मर्ज़ी के तहत हैं, वही सबका ख़ालिक़, मालिक, माबूद और रब है। किसी को उसके साथ किसी तरह की शिर्कत नहीं। सातवीं ज़मीन के नीचे भी जो कुछ है सब उसी का है।

नोटः मतलब यह है कि जैसे बाज़ आयतों और रिवायतों में अल्लाह की तरफ़ बाज़ जिस्मानी अंगों अर्थात् हाथ-पैर वग़ैरह का ज़िक्र है, या बाज़ हरकतों का बयान है जैसे चलना, उतरना, क़ायम होना वग़ैरह तो इनकी कोई शक्ल व कैफ़ियत तय करना, या अपने ऊपर क़ियास करना, कि वह अ़र्श पर ऐसे क़ायम है, वह कुर्सी पर ऐसे बैठा है, वह फ़ैसले के लिये ऐसे उतरेगा, वह बन्दे की तरफ़ ऐसे बढ़ता है, उसका क़दम ऐसा होगा, उसका चेहरा ऐसे आकार का होगा, इन सब बातों को छोड़ दे और यह यक़ीन रखे यह सब बन्दों को समझाने के लिये है, उसकी अपनी शान है, वह बदन के हिस्सों और तमाम कैफ़ियात व हरकात से पाक है, इनका मोहताज नहीं। बस वह अपनी शान के मुताबिक़ अपने इन आमाल और हरकतों को अन्जाम देता है, इनसानी अ़क़्ल की पहुँच से बाहर है कि वह इन चीज़ों की हक़ीक़त को पा सके। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

कअ़ब रह. कहते हैं कि इस ज़मीन के नीचे पानी है, पानी के नीचे फिर ज़मीन है। फिर उसके नीचे पानी है। इसी तरह सिलसिला है, फिर उसके नीचे एक पत्थर है, उसके नीचे एक फ़रिश्ता है, उसके नीचे एक मछली है जिसके दोनों बाज़ू (पंख) अ़र्श तक हैं। उसके नीचे अंधेरा है, यहीं तक इनसान का इल्म है,

बाक़ी ख़ुदा जाने। हदीस में है कि हर दो ज़मीनों के बीच पाँच सौ साल का फ़ासला है। सबसे ऊपर की ज़मीन मछली की पीठ पर है, जिसके दोनों बाज़ू आसमान से मिले हुए हैं। यह मछली एक पत्थर पर है, वह पत्थर फ़रिश्ते के हाथ में है। दूसरी ज़मीन हवाओं का ख़ज़ाना है, तीसरी ज़मीन में जहन्नम के पत्थर हैं, चौथी में जहन्नम की गंधक है, पाँचवीं में जहन्नम के साँप हैं, छठी में जहन्नमी बिच्छू हैं, सातवीं में दोज़ख़ है। वहीं इब्लीस जकड़ा हुआ है, एक हाथ आगे है एक पीछे है, जब ख़ुदा चाहता है उसे छोड़ देता है। यह हदीस बहुत ही ग़रीब है और इसका फ़रमाने रसूल से होना भी ग़ौर-तलब है (यानी यह क़ाबिले एतिबार रिवायत नहीं बल्कि फ़र्ज़ी दास्तान है)।

मुस्नद अबू यअ़ला में है, हज़रत जाबिर इब्ने अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम ग़ज़्वा-ए-तबूक से लौट रहे थे, गर्मी सख़्त पड़ रही थी, दो-दो चार-चार आदमी अलग-अलग होकर चल रहे थे। मैं लश्कर के शुरू में था। अचानक एक शख़्स आया और सलाम करके पूछने लगा कि तुममें से मुहम्मद कौन हैं? मैं उसके साथ लग गया। मेरे साथी आगे बढ़ गये। जब लश्कर के बीच का हिस्सा आया तो उसी में हुज़ूर सल्ल. थे। मैंने उसे बतलाया कि यह हैं हुज़ूर सल्ल. सुर्ख़ रंग की ऊँटनी पर सवार हैं, सर पर धूप की वजह से कपड़ा डाले हुए हैं। वह आपकी सवारी के पास गया और नकेल थामकर अ़र्ज़ करने लगा कि आप ही मुहम्मद हैं? आप सल्ल. ने जवाब दिया कि हाँ। उसने कहा मैं चन्द बातें आपसे मालूम करना चाहता हूँ जिन्हें ज़मीन वालों में से सिवाय एक दो आदमियों के और कोई नहीं जानता। आपने फ़रमाया तुम्हें जो कुछ पूछना हो पूछ लो। उसने कहा बतलाईये कि अल्लाह के नबी सोते भी हैं कि नहीं? आपने फ़रमाया उनकी आँखें सो जाती हैं लेकिन दिल जागता रहता है। उसने कहा सही इरशाद फ़रमाया। अब यह फ़रमाईये कि क्या वजह है कि बच्चा कभी तो बाप की शक्ल व सूरत पर होता है कभी माँ की? आपने फ़रमाया सुनो मर्द का पानी (वीर्य) सफ़ेद और गाढ़ा है और औ़रत का पानी पतला है, जौनसा पानी ग़ालिब आ गया उसी पर शक्ल व सूरत जाती है। उसने कहा यह भी सही इरशाद फ़रमाया। अच्छा यह भी फ़रमाईये कि बच्चे के कौनसे अंग मर्द के पानी से बनते हैं और कौनसे औ़रत के पानी से? फ़रमाया मर्द के पानी से हड्डियाँ रग और पट्ठे, और औ़रत के पानी से गोश्त ख़ून और बाल। उसने कहा यह भी सही जवाब मिला। अच्छा यह बतलाईये कि इस ज़मीन के नीचे क्या है? फ़रमाया एक मख़्लूक़ है। कहा उनके नीचे क्या है? फ़रमाया ज़मीन। कहा उसके नीचे क्या है? फ़रमाया पानी। कहा पानी के नीचे क्या है? फ़रमाया अंधेरा। कहा उसके नीचे क्या है? फ़रमाया हवा। कहा हवा के नीचे क्या है? फ़रमाया तर मिट्टी। कहा उसके नीचे क्या है? आपके आँसू निकल आये और इरशाद फ़रमाया कि मख़्लूक़ का इल्म तो यहीं तक पहुँचकर ख़त्म हो गया, अब ख़ालिक़ को ही उसके आगे का इल्म है। ऐ सवाल करने वाले! इसके बारे में तू जिससे सवाल कर रहा है वह तुझसे ज़्यादा जानने वाला नहीं। उसने आपके सच्चा होने की गवाही दी। आपने फ़रमाया इसे पहचाना भी? लोगों ने कहा ख़ुदा और रसूल को ही पूरा इल्म है। आपने फ़रमाया यह हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम थे। यह हदीस भी बहुत ही ग़रीब है और इसमें जो वाक़िआ़ है वह बड़ा ही अ़जीब है। इसके रावियों में क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रहमान का तफ़र्रुद है, जिन्हें इमाम यहया बिन मईन रह. कहते हैं कि उसकी कोई हैसियत नहीं। इमाम अबू हातिम राज़ी भी इन्हें ज़ईफ़ (कमज़ोर) कहते हैं, इमाम इब्ने अ़दी रह. फ़रमाते हैं कि यह मारूफ़ (परिचित और जाने-पहचाने) शख़्स नहीं। और इस हदीस में ख़ल्त-मल्त कर दिया है (यानी यह भी भरोसे के लायक़ रिवायत नहीं)। ख़ुदा ही जानता है कि जान-बूझकर ऐसा किया है या ऐसे ही किसी से नक़ल की है।

खुदा वह है जो ज़ाहिर व बातिन, ऊँची-नीची, छोटी-बड़ी, सब कुछ जानता है। जैसा कि फ़रमान है- ऐलान कर दे कि इस क़ुरआन को उसने नाज़िल फ़रमाया है जो आसमानों और ज़मीन की छुपी और ज़ाहिर चीज़ों से वाक़िफ़ है, जो माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है। इनसान ख़ुद जो छुपाये और जो उस पर ख़ुद भी छुपा हुआ हो, ख़ुदा के पास खुला हुआ है। इसके अ़मल को इसके इल्म से भी पहले अल्लाह तआ़ला जानता है। तमाम पहले गुज़री, मौजूदा और आगे आने वाली मख़्लूक़ का इल्म उसके पास ऐसा ही है जैसे एक शख़्स का इल्म। सबकी पैदाईश और मारकर जिलाना भी उसके नज़दीक एक शख़्स की पैदाईश और उसकी मौत के बाद की दूसरी बार की ज़िन्दगी की तरह है। तेरे दिल के ख़्यालात को और जो ख़्यालात नहीं आते उनको भी वह जानता है, तुझे ज़्यादा से ज़्यादा आज के पोशीदा आमाल की ख़बर है और उसे तेरे उन आमाल की भी ख़बर है जो तू कल करेगा। इरादे ही नहीं बल्कि वस्वसे (दिल के ख़्यालात) भी उस पर ज़ाहिर हैं। किये हुए अ़मल और जो करेगा वे अ़मल उस पर सब ज़ाहिर और खुले हैं। वही माबूदे बर्हक़ है। आला सिफ़तें और बेहतरीन नाम उसी के हैं। सूरः आराफ़ की तफ़सीर के आख़िर में अस्मा-ए-हुस्ना (अल्लाह के पाक नामों) के मुताल्लिक़ हदीसें गुज़र चुकी हैं। अल्लाह का शुक्र व एहसान है।

और क्या आपको मूसा (के क़िस्से) की ख़बर (भी) पहुँची है। (9) जबकि उन्होंने (मद्यन से आते हुए रात को) एक आग देखी, सो अपने घर वालों से फ़रमाया कि तुम रुके रहो मैंने आग देखी है, शायद उसमें से तुम्हारे पास कोई शोला लाऊँ या (वहाँ) आग के पास रास्ते का पता मुझको मिल जाए। (10)	وَهَلْ اَتٰـكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़

यहाँ से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा शुरू होता है। यह वाक़िआ़ उस वक़्त का है जबकि आप उस मुद्दत को पूरा कर चुके थे जो आप और आपके ससुर साहिब के दरमियान तय हुई थी। और आप अपने अहल व अ़याल (बीवी बच्चों) को लेकर दस साल से ज़्यादा अ़रसे के बाद अपने वतन मिस्र की तरफ़ जा रहे थे। सर्दी की रात थी, रास्ता भूल गये थे, पहाड़ियों की घाटियों के बीच थे, अन्धेरा था, बादल छाया हुआ था। हर चन्द चक़माक़ से आग निकालनी चाही लेकिन उससे बिल्कुल आग न निकली। इधर उधर नज़रें दौड़ायीं तो दायीं जानिब के पहाड़ पर कुछ आग दिखाई दी। बीवी साहिबा से फ़रमाया कि उस तरफ़ आग सी नज़र आ रही है, मैं जाता हूँ कि वहाँ से कुछ अंगारे ले लाऊँ ताकि तुम सेंक लो और कुछ रोशनी भी हो जाये, और हो सकता है कि वहाँ कोई आदमी मिल जाये जो रास्ता भी बतला दे। बहरहाल रास्ते का पता या आग मिल जायेगी।

सो वह जब उस (आग) के पास पहुँचे तो (उनको अल्लाह की तरफ़ से) आवाज़ दी गई, कि ऐ मूसा! (11) मैं ही तुम्हारा रब हूँ, पस	فَلَمَّآ اَتٰـهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ۝ اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ

ٱلْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَأَنَا ٱخْتَرْتُكَ فَٱسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰٓ ۝ إِنَّنِىٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَـٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدْنِى وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِىٓ ۝ إِنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعَىٰ ۝ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَن لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ فَتَرْدَىٰ ۝	तुम अपनी जूतियाँ उतार डालो, (क्योंकि) तुम एक पाक मैदान यानी 'तुवा' में हो (यह उसका नाम है)। (12) और मैंने तुमको (नबी बनाने के लिए) चुन लिया है, सो (इस वक़्त) जो कुछ 'वही' की जा रही है उसको सुन लो। (13) (वह यह कि) मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तुम मेरी ही इबादत किया करो और मेरी ही याद की नमाज़ पढ़ा करो। (14) (दूसरी बात यह सुनो कि) बेशक क़ियामत आने वाली है, मैं उसको (तमाम मख़्लूक़ से) छुपाकर रखना चाहता हूँ ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला मिल जाये। (15) सो तुमको उस (क़ियामत) से ऐसा शख़्स बाज़ न रखने पाए जो उसपर ईमान नहीं रखता, और अपनी (नफ़्सानी) ख़्वाहिशों पर चलता है, कहीं तुम (इस बेफ़िक्री की वजह से) तबाह न हो जाओ। (16)

मैं तेरा रब हूँ

जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम आग के पास पहुँचे तो उस मुबारक मैदान के दायीं ओर के पेड़ों की तरफ़ से आवाज़ आयी कि ऐ मूसा! मैं तेरा रब हूँ तो तू जूतियाँ उतार दे। या तो इसलिये यह हुक्म हुआ कि आपकी जूतियाँ गधे के चमड़े की थीं या इसलिये कि ताज़ीम करानी मक़सूद थी। जैसे जाने के वक़्त लोग जूतियाँ उतार कर जाते हैं। या इसलिये कि उस बरकत वाली जगह पर पाँव पड़ें। और भी कारण बयान किये गये हैं। तुवा उस वादी का नाम था या यह मतलब है कि अपने क़दम इस ज़मीन से मिला दो। या यह मतलब है कि यह ज़मीन कई-कई बार पाक की गयी है और इसमें बरकतें भर दी गयी हैं और बार-बार दोहराई गयी हैं, लेकिन ज़्यादा सही पहला क़ौल ही है जैसा कि एक दूसरी आयत में है:

إِذْ نَادَىٰهُ رَبُّهُۥ بِٱلْوَادِ ٱلْمُقَدَّسِ طُوًى.

मैंने तुझे अपना बरगुज़ीदा (चुनिन्दा और मक़बूल) कर लिया है। दुनिया में मैंने तुझे चुन लिया है, अपनी रिसालत और अपने कलाम के लिये तुझे ख़ास कर रहा हूँ। इस वक़्त रू-ए-ज़मीन पर जो लोग हैं उन तमाम लोगों से तेरा मर्तबा बढ़ा रहा हूँ।

कहा गया है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से पूछा गया- जानते भी हो कि मैंने तुझे और तमाम लोगों में से मुमताज़ (विशेष) और पसन्दीदा करके अपने साथ कलाम करने का सम्मान क्यों बख़्शा? आपने जवाब दिया ख़ुदाया! मुझे इसकी वजह मालूम नहीं। फ़रमाया गया इसलिये कि तेरी तरह कोई मेरी तरफ़ नहीं झुका (ज़ाहिर बात है जैसे नुबुव्वत ख़ुदा का अ़तीया है ऐसे ही अच्छे आमाल की तौफ़ीक़ भी ख़ुदा तआ़ला ही की अ़ता है)। अब तू मेरी 'वही' को कान लगाकर ध्यान से सुन। मैं ही माबूद हूँ कोई और

नहीं, यही पहला फ़रीज़ा है कि तू सिर्फ़ मेरी ही इबादत किये चले जाना, किसी और की किसी क़िस्म की इबादत न करना। मेरी याद के लिये नमाज़ें क़ायम करना, मेरी याद का यह बेहतरीन और सबसे बेहतर तरीक़ा है। या यह मतलब है कि जब मैं याद आऊँ तो नमाज़ पढ़ो, जैसे कि हदीस में है कि तुम में से अगर किसी को नींद आ जाये या ग़फ़लत हो जाये तो जब याद आये नमाज़ पढ़ ले, क्योंकि ख़ुदा का फ़रमान है कि मेरी याद के वक़्त नमाज़ क़ायम करो।

बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शख़्स सोने में या भूलकर नमाज़ का वक़्त गुज़ार दे उसका कफ़्फ़ारा यही है कि याद आते ही नमाज़ पढ़ ले, इसके सिवा और कफ़्फ़ारा नहीं। क़ियामत यक़ीनन आने वाली है, मुम्किन है मैं उसके वक़्त के सही इल्म को ज़ाहिर न करूँ। यानी उसका इल्म सिवाय अपने किसी को नहीं दूँगा। पस रू-ए-ज़मीन पर कोई ऐसा नहीं हुआ जिसे क़ियामत के क़ायम होने का मुक़र्रर (निर्धारित) वक़्त मालूम हो। यह वह चीज़ है कि अगर हो सके तो ख़ुद मैं अपने से भी उसे छुपा दूँ लेकिन रब से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं, चुनाँचे यह फ़रिश्तों से भी पोशीदा है, अम्बिया भी इससे बेइल्म हैं। जैसे कि फ़रमान है:

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ.

कि ज़मीन व आसमान वालों में से सिवाय ख़ुदा तआ़ला के कोई और ग़ैब का जानने वाला नहीं।

एक और आयत में है कि क़ियामत ज़मीन व आसमान पर भारी पड़ रही है। वह अचानक आ जायेगी यानी उसका इल्म किसी को नहीं। उस दिन हर आ़मिल को उसके अ़मल का बदला दिया जायेगा। चाहे ज़र्रा बराबर नेकी हो, चाहे बुराई हो। अपने किये का बदला उस दिन ज़रूर मिलना है। पस किसी को भी बेईमान लोग बहका न दें, क़ियामत के मुन्किर दुनिया के शैदाई, मौला के नाफ़रमान, इच्छाओं के ग़ुलाम किसी बन्दा-ए-ख़ुदा के इस पाक अ़क़ीदे में उसे ढुल-मुल न करने पायें। अगर वे अपनी चाहत में कामयाब हो गये तो यह ग़ारत (तबाह व बरबाद) हुआ और नुक़सान में पड़ा।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ० قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ० قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ० فَاَلْقٰهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ० قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ०	और यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है ऐ मूसा! (17) उन्होंने कहा कि यह मेरी लाठी है, मैं (कभी) इस पर सहारा लगाता हूँ और (कभी) अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूँ और इसमें मेरे और भी काम (निकलते) हैं। (18) इरशाद हुआ कि इसको (ज़मीन पर) डाल दो ऐ मूसा! (19) सो उन्होंने उसको डाल दिया, यकायक वह (ख़ुदा की क़ुदरत से) एक दौड़ता हुआ साँप (बन गया)। (20) इरशाद हुआ कि उसको पकड़ लो और डरो नहीं, हम अभी उसको उसकी पहली हालत पर कर देंगे। (21)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की लाठी

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के एक बहुत बड़े और साफ़ खुले मोजिज़े का ज़िक्र हो रहा है, जो बग़ैर

ख़ुदा की क़ुदरत के नामुम्किन है, और जो नबी के अ़लावा किसी और के हाथ पर भी नामुम्किन है। तूर पहाड़ पर मालूम किया जा रहा है कि तेरे दायें हाथ में क्या है? यह सवाल इसलिये था कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की घबराहट दूर हो जाये। यह भी कहा गया है कि यह सवाल बतौर तक़रीर के है। यानी तेरे हाथ में लकड़ी ही है, यह जैसी है तुझे मालूम है, अब यह जो हो जायेगी वह देख लेना। इस सवाल के जवाब में हज़रत मूसा अ़र्ज़ करते हैं कि यह एक लकड़ी है, जिस पर मैं टेक लगाता हूँ। यानी चलने में मुझे यह सहारा देती है, इससे मैं अपनी बकरियों का चारा पेड़ से झाड़ लेता हूँ। ऐसी लकड़ियों में ज़रा बलदार और मुड़ी हुई लकड़ी वग़ैरह लगाया करते हैं ताकि पत्ते फल आसानी से उतर आयें और लकड़ी टूटे भी नहीं। इसमें और भी बहुत से फ़ायदे हैं, उन फ़ायदों के बयान में बाज़ लोगों ने यह भी कह दिया है कि यही लकड़ी रात के वक़्त रोशन चिराग़ बन जाती थी, दिन को जब आप सो जाते तो यही लकड़ी आपकी बकरियों की रखवाली करती, जहाँ कहीं सायेदार जगह न होती आप इसे गाड़ देते यह ख़ेमे की तरह आप पर साया करती, वग़ैरह वग़ैरह। लेकिन यह क़ौल बनी इस्राईल का अफ़साना मालूम होता है। वरना फिर आज इसे साँप की सूरत में देखकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम इस क़द्र क्यों घबराते जबकि वह इस लकड़ी के अ़जायबात (आश्चर्य जनक बातें) देखते ही चले आते थे? फिर बाज़ों का क़ौल है कि दर असल यह लकड़ी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की थी। कोई कहता है यही लकड़ी क़ियामत के क़रीब "दाब्बतुल-अर्ज़" (ज़मीन से निकलने वाले अ़जीब जानवर) की सूरत में ज़ाहिर होगी। कहते हैं कि उसका नाम माशा-अल्लाह था। ख़ुदा ही जाने कि इन अक़्वाल में कहाँ तक सच्चाई और दम है।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को लकड़ी का लकड़ी होना जताकर, उन्हें बख़ूबी बेदार और होशियार करके हुक्म मिला कि इसे ज़मीन पर डाल दो। ज़मीन पर पड़ते ही वह एक ज़रबदस्त अज़्दहे की सूरत में फनफनाती हुई इधर-उधर चलने फिरने लगी, बल्कि दौड़ने भागने लगी। ऐसा ख़ौफ़नाक अज़्दहा उससे पहले किसी ने देखा ही न था। उसकी तो यह हालत थी कि एक दरख़्त सामने आ गया तो उसे हज़्म कर गया। पत्थर की एक चट्टान रास्ते में आ गयी तो उसका लुक़मा बना लिया।

यह हाल देखते ही हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उल्टे पाँव भागे। आवाज़ दी गयी कि ऐ मूसा इसे पकड़ ले, लेकिन हिम्मत न पड़ी। फिर फ़रमाया ऐ मूसा! डर नहीं, पकड़ ले, फिर भी झिझक बाक़ी रही। तीसरी मर्तबा फ़रमाया तू हमारी अमान में है। अब हाथ बढ़ाकर पकड़ लिया। कहते हैं कि फ़रमाने ख़ुदा के साथ ही आपने लकड़ी ज़मीन पर डाल दी, फिर इधर-उधर आपकी निगाह हो गयी। अब जो नज़र डाली तो बजाय लकड़ी के एक ख़ौफ़नाक अज़्दहा दिखाई दिया, जो इस तरह चल फिर रहा है जैसे किसी की जुस्तजू में हो। गर्भवती ऊँटनी जैसे बड़े-बड़े पत्थरों को, आसमान से बातें करते हुए ऊँचे-ऊँचे दरख़्तों को एक लुक़्मे में ही पेट में पहुँचा रहा है। आँखें अंगारों की तरह चमक रही हैं। इस डरावने ख़ूँख़्वार अज़्दहे को देखकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम सहम गये और पीठ मोड़कर ज़ोर से भागे। फिर ख़ुदा तआ़ला की हम-कलामी (बातचीत करना) याद आ गयी तो शर्माकर ठहर गये। वहीं आवाज़ आयी कि ऐ मूसा लौटकर वहीं आ जाओ जहाँ थे। आप लौटे लेकिन बहुत ज़्यादा डरे हुए थे। हुक्म हुआ कि अपने दाहिने हाथ से इसे थाम लो, कुछ भी ख़ौफ़ न करो हम इसे इसकी असली हालत में लौटा देंगे।

उस वक़्त हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ऊन का कम्बल ओढ़े हुए थे, जिसे एक काँटे से अटका रखा था। आपने उसी कम्बल को अपने हाथ पर लपेटकर उस हैबतनाक (डरावने) अज़्दहे को पकड़ना चाहा, फ़रिश्ते ने कहा ऐ मूसा! अगर ख़ुदा तआ़ला इसे काटने का हुक्म दे दे तो क्या तेरा कम्बल बचा सकता है?

Maktab E Ashraf

आपने जवाब दिया हरगिज़ नहीं। लेकिन मेरी कमज़ोरी के सबब मुझसे यह हरकत हो गयी। मैं ज़ईफ़ और कमज़ोर ही पैदा किया गया हूँ। अब दिलेरी के साथ कम्बल हटाकर हाथ बढ़ाया, उसके सर को थाम लिया। उसी वक़्त वह अज़्दहा फिर लकड़ी बन गया जैसा पहले था। उस वक़्त जबकि आप उस घाटी पर चढ़ रहे थे और आपके हाथ में यह लकड़ी थी, जिस पर टेक लगाये हुए थे, इसी हाल में आपने पहले देखा था, उसी हालत पर अब हाथ में लाठी की सूरत में मौजूद थी।

وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰىۙ لِنُرِيَكَ
مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰىۚ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ
اِنَّهٗ طَغٰىۙ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ ع ١٠
صَدْرِيْۙ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْۙ وَاحْلُلْ
عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْۙ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْۖ
وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْۙ هٰرُوْنَ
اَخِيْۙ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْۙ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ
اَمْرِيْۙ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًاۙ وَّنَذْكُرَكَ
كَثِيْرًاۙ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا

और तुम अपना (दाहिना) हाथ अपनी (बाईं) बग़ल में दे लो, (फिर निकालो) वह बिना किसी ऐब (यानी बिना किसी सफ़ेद कोढ़ की बीमारी वग़ैरह) के बहुत ही रोशन होकर निकलेगा, (कि यह) दूसरी निशानी होगी। (22) ताकि हम तुमको अपनी (क़ुदरत की) बड़ी निशानियों में से बाज़ (निशानियाँ) दिखलाएँ। (23) (अब ये निशानियाँ लेकर) तुम फ़िरऔन के पास जाओ, वह बहुत हद से निकल गया है। (24)

अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरा सीना (यानी हौसला) खोल दीजिए। (25) और मेरा (यह तब्लीग़ का) काम आसान फ़रमा दीजिए। (26) और मेरी ज़बान पर से बन्दिश (यानी रुक-रुक कर बोलने की हालत) को हटा दीजिए। (27) ताकि लोग मेरी बात समझ सकें। (28) और मेरे वास्ते मेरे कुनबे में से एक मददगार मुक़र्रर कर दीजिए। (29) यानी हारून को कि मेरे भाई हैं। (30) उनके ज़रिये से मेरी क़ुव्वत को मज़बूत कर दीजिए। (31) और उनको मेरे (इस तब्लीग़ के) काम में शरीक कर दीजिए (32) ताकि हम दोनों (शिर्क और नुक़्सों से) कसरत से आपकी पाकी बयान करें (33) और आपका (ख़ूब) कसरत से ज़िक्र करें। (34) बेशक आप हमको ख़ूब देख रहे हैं। (35)

कुछ और मोजिज़े

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को दूसरा मोजिज़ा दिया जाता है। हुक्म होता है कि अपना हाथ अपनी बग़ल में डालकर फिर उसे निकाल लो तो वह चाँद की तरह चमकता हुआ रोशन बनकर निकलेगा। यह नहीं कि बर्स की सफ़ेदी हो या कोई बीमारी और ऐब हो। चुनाँचे हज़रत मूसा ने जब हाथ डालकर निकाला

तो वह चिराग़ की तरह रोशन निकला, जिससे आपका यह यक़ीन कि आप ख़ुदा तआ़ला से कलाम कर रहे हैं और बढ़ गया। ये दोनों मोजिज़े यहाँ इसी लिये मिले थे कि आप ख़ुदा की इन ज़बरदस्त निशानियों को देखकर यक़ीन कर लें। फिर हुक्म हुआ कि फ़िरऔ़न ने हमारी बग़ावत पर कमर कस ली है। उसके पास जाकर उसे समझाओ। वहब रह. कहते हैं कि ख़ुदा तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को क़रीब होने का हुक्म दिया, यहाँ तक कि आप उस दरख़्त के पत्ते से लगकर खड़े हो गये। दिल मुत्मईन हो गया, ख़ौफ़ व डर दूर हो गया। दोनों हाथ अपनी लकड़ी पर टिकाकर सर झुकाकर अदब के साथ इरशादे ख़ुदावन्दी सुनने लगे तो फ़रमाया गया कि मुल्के मिस्र के बादशाह फ़िरऔ़न की तरफ़ हमारा पैग़ाम लेकर जाओ, यहीं से तुम भागकर आये हो। उससे कहो कि वह हमारी इबादत करे, किसी को शरीक न बनाये, बनी इस्राईल के साथ अच्छा सुलूक व एहसान करे, उन्हें तकलीफ़ व ईज़ा न दे। फ़िरऔ़न बड़ा ही बाग़ी हो गया है, दुनिया का शैदाई बनकर आख़िरत को भुला बैठा है और अपने पैदा करने वाले को भूल गया है। तू मेरी रिसालत लेकर उसके पास जा। मेरे कान और मेरी आँखें तेरे साथ हैं, मैं तुझे देखता भालता और तेरी बातें सुनता सुनाता रहूँगा। मेरी मदद तेरे साथ होगी, मैंने अपनी तरफ़ से तुझे हुज्जतें अ़ता फ़रमा दी हैं और तुझे क़वी और मज़बूत कर दिया है। तू अकेला ही मेरा पूरा लश्कर है। अपने एक ज़ईफ़ (यानी कमज़ोर और वास्तव में कोई इख़्तियार न रखने वाले) बन्दे की तरफ़ तुझे भेज रहा हूँ जो मेरी नेमतें पाकर भूल गया है और मेरी पकड़ को भूल गया है। दुनिया में फंस गया और ग़ुरूर व तकब्बुर में मुब्तला हो गया है। मेरी रबूबियत से बेज़ार, मेरी उलूहियत (माबूद होने) से उलझ रहा है, मुझसे आँखें फेर ली हैं। मेरी पकड़ से ग़ाफ़िल हो गया है। मेरे अ़ज़ाब से बेख़ौफ़ हो गया है, मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम अगर मैं उसे ढील देना न चाहता तो आसमान उस पर टूट पड़ते, ज़मीन उसे निगल जाती, दरिया उसे डुबो देते, लेकिन चूँकि वह मेरे मुक़ाबले का नहीं, हर वक़्त मेरे बस में है, मैं उसे ढील दिये हुए हूँ और उससे बेपरवाही बरत रहा हूँ। मैं हूँ भी सारी मख़्लूक़ से बेपरवाह, हक़ तो यह है कि बेपरवाही (यानी सबसे बेनियाज़ी) सिर्फ़ मेरी ही सिफ़त है।

तू मेरी रिसालत अदा कर, उसे मेरी इबादत की हिदायत कर, उसे तौहीद व इख़्लास की दावत दे, मेरी नेमतें याद दिला, मेरे अ़ज़ाब से डरा, मेरे ग़ज़ब से होशियार कर दे। जब मैं गुस्सा कर बैठता हूँ तो अमन नहीं मिलता। उसे नर्मी से समझा ताकि न मानने का उज़्र (बहाना) ख़त्म हो जाये। मेरी बख़्शिश की, मेरे रहम व करम की उसे ख़बर दे, कह दे कि अब भी अगर मेरी तरफ़ झुकेगा तो मैं तमाम बुरे आमाल से नज़र फेर लूँगा। मेरी रहमत, मेरी अ़ज़मत से बहुत ज़्यादा वसीअ़ है। ख़बरदार उसका दुनियावी ठाठ देखकर रौब में न आ जाना, उसकी चोटी मेरी हाथ में है, उसकी ज़बान चल नहीं सकती। उसके हाथ उठ नहीं सकते, उसकी आँख फड़क नहीं सकती, उसका साँस चल नहीं सकता जब तक मेरी इजाज़त न हो। उसे समझा कि मेरी मान ले तो मैं भी मग़फ़िरत से पेश आऊँगा।

चार सौ साल उसे सरकशी करते, मेरे बन्दों पर ज़ुल्म ढाते, मेरी इबादत से लोगों को रोकते गुज़र चुके हैं, फिर भी न मैंने उस पर बारिश बन्द की न पैदावार रोकी न बीमार डाला न बूढ़ा किया न मग़लूब किया। अगर चाहता ज़ुल्म के साथ ही पकड़ लेता, लेकिन मेरा हिल्म (बरदाश्त) बहुत बढ़ा हुआ है तो तू अपने भाई के साथ मिलकर उससे पूरी तरह जिहाद कर और मेरी मदद पर भरोसा रख, मैं अगर चाहूँ तो अपने लश्करों को भेजकर उसका भेजा निकाल दूँ लेकिन इससे बोदे बन्दे को दिखाना चाहता हूँ कि मेरी जमाअ़त का एक फ़र्द भी रू-ए-ज़मीन की ताक़तों पर ग़ालिब आ सकता है। मदद मेरे इख़्तियार में है, दुनियावी शान व शौकत और पर्दों की तू परवाह न करना, बल्कि आँख भरकर देखना भी नहीं। मैं अगर चाहूँ तो तुम्हें इतना

दे दूँ कि फ़िरऔन की दौलत उसके पासंग में भी न आ सके, लेकिन मैं अपने बन्दों को उमूमन ग़रीब ही रखता हूँ ताकि उनकी आख़िरत संवरी रहे।

यह इसलिये नहीं होता कि वह मेरे नज़दीक सम्मान व इज़्ज़त के क़ाबिल नहीं? बल्कि सिर्फ़ इसलिये होता है कि दोनों जहान की नेमतें आने वाले जहान में इकट्ठी मिल जायें। मेरे नज़दीक बन्दे का कोई अमल इतनी वक़अ़त (हैसियत व अहमियत) वाला नहीं जितना ज़ाहिद (दुनिया से दूर व्यक्ति) और दुनिया से दूरी में, अपने ख़ास बन्दों को सुकून व इत्मीनान और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (आजिज़ी और दिली इन्किसारी) का लिबास पहना देता हूँ। उनके चेहरे मस्जिदों की चमक से रोशन हो जाते हैं, यही अल्लाह के सच्चे दोस्त होते हैं। उनके सामने हर एक को अदब के साथ रहना चाहिये, अपनी ज़बान और दिल को उनके ताबे रखना चाहिये। सुन ले कि मेरे दोस्तों से दुश्मनी रखने वाला गोया मुझसे लड़ाई का ऐलान करता है, तो क्या मुझसे लड़ने का इरादा रखने वाला मेरा कुछ बिगाड़ सकता है? कभी नहीं। मैं अपने दोस्तों की आप मदद करता हूँ उन्हें दुश्मनों का शिकार नहीं होने देता। दुनिया व आख़िरत में उन्हें कामयाब और इज़्ज़त वाला रखता हूँ और उनकी मदद करता हूँ।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपने बचपन का ज़माना फ़िरऔन के घर में बल्कि उसकी गोद में गुज़ारा था। जवानी तक मिस्र देश में उसी की बादशाहत में वक़्त गुज़ारा था, फिर एक क़िब्ती बेइरादा आपके हाथ से मारा गया था जिससे आप यहाँ से भाग निकले थे, तब से लेकर आज तक मिस्र की सूरत नहीं देखी थी। फ़िरऔन एक पत्थर-दिल बद-अख़्लाक़, अक्खड़-मिज़ाज, आवारा इनसान था। ग़ुरूर और तकब्बुर इतना बढ़ गया था कि कहता था- मैं ख़ुदा को जानता ही नहीं, अपनी रिआ़या (प्रजा) से कहता था कि तुम्हारा ख़ुदा मैं ही हूँ। मुल्क व माल में, दौलत व मता में, लाव-लश्कर और शान व शौकत में दुनिया में कोई उसके मुक़ाबले का न था।

जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को उसे हिदायत करने (यानी सही रास्ता दिखाने) का हुक्म हुआ तो आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि मेरा सीना खोल दे और मेरे काम में आसानी पैदा कर दे। अगर तू मेरी मदद न करे तो यह भारी ज़िम्मेदारी मेरे कमज़ोर कन्धे नहीं उठा सकते। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे चूँकि आपके बचपन के ज़माने में आपके सामने खजूर और अंगारे रखे गये थे। आपने अंगारा लेकर मुँह में रख लिया था इसलिये ज़बान में लुक्नत हो गयी थी, तो दुआ़ की कि मेरी ज़बान की गिरह खुल जाये। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के इस अदब को देखिये कि हाजत के मुताबिक़ सवाल करते हैं, यह नहीं अ़र्ज़ करते कि मेरी ज़बान बिल्कुल साफ़ हो जाये बल्कि यह दुआ़ करते हैं कि गिरह खुल जाये ताकि लोग मेरी बात समझ लें। अम्बिया-ए-अ़लैहिमुस्सलाम ख़ुदा तआ़ला से सिर्फ़ ज़रूरत पूरी होने के मुताबिक़ ही अ़र्ज़ करते हैं, आगे नहीं बढ़ते। चुनाँचे आपकी ज़बान में फिर भी कुछ कसर रह गयी थी जैसे कि फ़िरऔन ने कहा था कि क्या मैं बेहतर हूँ या यह? जो कमज़ोर व आजिज़ है और साफ़ बोल भी नहीं सकता।

हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि एक गिरह खुलने की दुआ़ की थी जो पूरी हुई। अगर पूरी की दुआ़ होती तो वह भी पूरी होती। आपने सिर्फ़ इसी क़द्र दुआ़ की थी कि आपकी ज़बान ऐसी कर दी जाये कि लोग आपकी बात समझ लिया करें। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- डर था कि कहीं ये क़त्ल का इल्ज़ाम रखकर क़त्ल न कर दें। इसकी दुआ़ की, जो क़बूल हुई। ज़बान में लुक्नत थी उसके बारे में दुआ़ की कि इतनी साफ़ हो जाये कि लोग बात समझ लें, यह दुआ़ भी पूरी हुई। एक दुआ़ यह की कि हारून को भी नबी बना दिया जाये, यह भी पूरी हुई।

हज़रत मुहम्मद बिन कअ़ब रह. के पास उनके एक रिश्तेदार आये और कहने लगे यह तो बड़ी कमी है तुम बोलने में ग़लत बोल जाते हो। आपने फ़रमाया भतीजे क्या मेरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती? कहा हाँ समझ में तो आ जाती है। कहा बस यही काफ़ी है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने भी ख़ुदा से यही और इतनी ही दुआ़ की थी। फिर और दुआ़ की कि मेरी बाहरी और अन्दरूनी इमदाद के लिये मेरा वज़ीर बना दे, और हो भी वह मेरे कुनबे में से, यानी मेरे भाई हारून को नुबुव्वत अ़ता फ़रमा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसी वक़्त हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ ही नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई गयी। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा उमरे के लिये जाते हुए किसी देहाती के यहाँ ठहरी थीं, उन्होंने सुना कि एक शख़्स पूछता है कि दुनिया में किस भाई ने अपने भाई को सबसे ज़्यादा नफ़ा (फ़ायदा) पहुँचाया है? इस सवाल पर सब ख़ामोश हो गये और कह दिया कि हमें इसका इल्म नहीं। उसने कहा ख़ुदा की क़सम मुझे इसका इल्म है। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. फ़रमाती हैं कि मैंने अपने दिल में कहा देखो यह शख़्स कितना बेजा साहस करता है, बग़ैर इन्शा-अल्लाह के क़सम खा रहा है। लोगों ने उससे पूछा कि बतलाओ। उसने जवाब दिया हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने, कि अपने भाई को अपनी दुआ़ से नुबुव्वत दिलवाई। मैं भी यह सुनकर दंग रह गयी और दिल में कहने लगी कि बात तो सच कही, हक़ीक़त में इससे ज़्यादा कोई भाई अपने भाई को नफ़ा नहीं पहुँचा सकता। ख़ुदा ने सच फ़रमाया कि मूसा अल्लाह के पास बड़े आबरू वाले और सम्मानित थे।

इस दुआ़ की वजह बयान करते हैं कि मेरी कमर मज़बूत हो जाये। वह मुझे सलाह व मश्विरा देता रहे, मेरे काम में उसे भी मेरा साथी बना दे। ताकि हम तेरी तस्बीह अच्छी तरह बयान करें, हर वक़्त तेरी पाकीज़गी बयान करते रहें और तेरी याद ख़ूब ज़्यादा करें। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि बन्दा अल्लाह तआ़ला का ज़्यादा ज़िक्र करने वाला उसी वक़्त होता है जबकि वह बैठते उठते और लेटते अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल रहे। तू हमें देख रहा है, यह तेरा रहम व करम है कि तूने हमें बरगुज़ीदा (चुना हुआ और मक़बूल बन्दा) किया, हमें नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई और हमें अपने दुश्मन फ़िरऔ़न की तरफ़ अपना नबी बनाकर उसकी हिदायत के लिये भेजा। तेरा शुक्र है और तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें हैं। तेरी इन नेमतों पर हम तेरे शुक्रगुज़ार हैं।

इरशाद हुआ कि तुम्हारी (हर) दरख़्वास्त मन्ज़ूर की गई ऐ मूसा! (36) और हम तो एक दफ़ा और भी (इससे पहले बिना दरख़्वास्त ही) तुम पर एहसान कर चुके हैं। (37) जबकि हमने तुम्हारी माँ को वह बात इल्हाम "यानी दिल में डालने" से बतलाई जो बात इल्हाम से बतलाने की थी। (38) (वह यह) कि उनको (यानी मूसा को जल्लादों के हाथों से बचाने के लिए) एक सन्दूक़ में रखो, फिर उनको दरिया में डाल दो, फिर उनको (सन्दूक़ के साथ) दरिया किनारे तक ले आएगा, (आख़िरकार) उनको एक शख़्स	قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ○ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ○ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ○ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ۭ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّىْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى

Maktab E Ashraf

عَيْنِيْ ۝ اِذْ تَمْشِيْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ؕ۬ وَ قَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ؕ۬	पकड़ लेगा जो (काफ़िर होने की वजह से) मेरा भी दुश्मन है और उनका भी दुश्मन है। और (ऐ मूसा) मैंने तुम्हारे ऊपर एक मुहब्बत का असर डाल दिया (ताकि जो तुमको देखे प्यार करे) और ताकि तुम मेरी (ख़ास) निगरानी में परवरिश पाओ। (39) (यह क़िस्सा उस वक़्त का है) जबकि तुम्हारी बहन चलती हुई आईं फिर कहने लगीं, क्या तुम लोगों को ऐसे शख़्स का पता दूँ जो इसको (अच्छी तरह) पाले, (यानी रखे) फिर (इस तदबीर से) हमने तुमको तुम्हारी माँ के पास फिर पहुँचा दिया, ताकि उनकी आँखें ठन्डी हों और उनको ग़म न रहे। और तुमने (ग़लती से) एक (क़िब्ती) शख़्स को जान से मार डाला; फिर हमने तुमको इस ग़म से निजात दी, और हमने तुमको ख़ूब-ख़ूब मेहनतों में डाला,

दुआओं का क़बूल होना और लुत्फ़ व करम की बारिश

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तमाम दुआयें क़बूल हुयीं और फ़रमा दिया गया कि तुम्हारी दरख़्वास्त मन्ज़ूर है। इस एहसान के साथ ही एक और एहसान का भी ज़िक्र कर दिया गया कि हमने तुझ पर एक मर्तबा और भी बड़ा एहसान किया है। फिर उस वाक़िए को मुख़्तसर तौर पर याद दिलाया कि हमने तेरे बचपन के वक़्त तेरी माँ की तरफ़ 'वही' (अपना पैग़ाम) भेजी, जिसका ज़िक्र अब तुमसे हो रहा है, तुम उस वक़्त दूध पीते बच्चे थे।

तुम्हारी वालिदा (माँ) को फ़िरऔन और फ़िरऔन के आदमियों का खटका था, क्योंकि उस साल वह बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल कर रहा था। इस ख़ौफ़ के मारे वह हर वक़्त काँपती रहती थीं, तो हमने 'वही' की कि एक सन्दूक़ बना लो। दूध पिलाकर बच्चे को उसमें लिटाकर नील दरिया में सन्दूक़ को छोड़ दो। चुनाँचे वह यही करती रहीं। एक रस्सी उसमें बाँध रखी थी, जिसका एक सिरा अपने मकान से बाँध लेती थीं। एक मर्तबा बाँध रही थीं कि रस्सी हाथ से छूट गयी और सन्दूक़ को पानी की लहरें बहा ले चलीं। अब तो कलेजा थामकर रह गयीं, इस क़द्र ग़मगीन हुयीं कि सब्र नामुम्किन था। राज़ खोल देतीं लेकिन हमने उनका दिल मज़बूत कर दिया।

सन्दूक़ बहता हुआ फ़िरऔन के महल के पास से गुज़रा, फ़िरऔन के आदमियों ने उसे उठा लिया कि जिस ग़म से वे बचना चाहते थे, जिस सदमे से वे सुरक्षित रहना चाहते थे वह उनके सामने आ जाये। जिसकी ज़िन्दगी के चिराग़ को बुझाने के लिये वे बेगुनाह मासूमों का क़त्ले आ़म कर रहे थे वह उन्हीं के अधीन उन्हीं के यहाँ रोशन हो और ख़ुदा के इरादे पूरे हो जायें। उनका दुश्मन उन्हीं के हाथों पले, उन्हीं का

Maktab-E-Ashraf

खाये, उनके यहाँ उसका पालन-पोषण हो। खुद फ़िरऔन और उसकी बीवी मोहतरमा ने जब बच्चे को देखा तो रग-रग में मुहब्बत समा गयी, लेकर परवरिश करने लगे, आँखों का तारा समझने लगे, शहज़ादों की तरह नाज़ व नेमत से पलने लगे, शाही दरबार में रहने लगे। ख़ुदा ने अपनी मुहब्बत तुझ पर डाल दी।

अगरचे फ़िरऔन तेरा दुश्मन था लेकिन रब की बात कौन बदले? ख़ुदा के इरादे को कौन टाले? फ़िरऔन पर ही क्या मुन्हसिर है जो देखता तुझ पर फ़िदा हो जाता। यह इसलिये था कि तेरी परवरिश मेरी निगाह के सामने हो। शाही खान खा, इज़्ज़त व वक़्अ़त के साथ रह।

फ़िरऔन ने सन्दूक़चा उठा लिया, खोला बच्चे को देखा पालने का इरादा किया, लेकिन आप किसी दाया (दूध पिलाने वाली) का दूध लेते ही नहीं। बहन जो सन्दूक़ को देखती भालती किनारे किनारे आ रही थी, वह भी मौक़े पर पहुँच गयी। कहने लगी कि आप अगर इसकी परवरिश की तमन्ना करते हैं और माक़ूल (व्यापक) उजरत भी देते हैं तो मैं एक घराना बतला दूँ जो इसे मुहब्बत से पाले और इसके साथ हमदर्दी का बर्ताव करे। सबने कहा हम तैयार हैं। आप उन्हें लिये हुए अपनी वालिदा के पास पहुँचीं। जब बच्चा उनकी गोद में डाल दिया गया, आपने झट से मुँह लगाकर दूध पीना शुरू कर दिया, जिससे फ़िरऔन के यहाँ बड़ी ख़ुशियाँ मनाई गयीं और बहुत कुछ इनाम व इकराम दिया गया। तन्ख़्वाह मुक़र्रर हो गयी, अपने ही बच्चे को दूध पिलायें और तन्ख़्वाह, इनाम और इज़्ज़त व इकराम भी पायें। दुनिया भी मिले और दीन भी। इसलिये हदीस में आया है कि जो शख़्स अपने काम को करे और नेक नीयती से करे उसकी मिसाल मूसा अ़लैहिस्सलाम की माँ जैसी है, कि अपने ही बच्चे को दूध पिलाये और उजरत भी ले।

पस यह भी हमारा करम था कि हमने तुझे तेरी माँ की गोद में वापस किया कि उसकी आँखें ठण्डी रहें और ग़म व रंज जाता रहे। फिर तुम्हारे हाथ से एक फ़िरऔनी क़िब्ती मार डाला गया तो भी हमने तुम्हें बचा लिया। फ़िरऔन के लोगों ने तुम्हारे क़त्ल का इरादा कर लिया था, राज़ खुल चुका था, तुम्हें यहाँ से निजात दी। तुम भाग खड़े हुए मदयन के कुएँ पर जाकर तुमने दम लिया, वहीं हमारे एक नेक बन्दे ने तुम्हें बशारत (ख़ुशख़बरी) सुनाई कि अब कोई ख़ौफ़ नहीं, उन ज़ालिमों से तुमने निजात पा ली। तुझे हमने आज़माईश के लिये और भी बहुत से फ़ितनों (इम्तिहानों) में डाला।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से इसके बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया- अब तो दिन डूबने को है, वाक़िआत ज़्यादा हैं, फिर सही। चुनाँचे मैंने दूसरी सुबह फिर सवाल किया तो आपने फ़रमाया सुनो! फ़िरऔन के दरबार में एक दिन इस बात का ज़िक्र छिड़ा कि ख़ुदा का वायदा हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम से यह था कि उनकी औलाद में अम्बिया और बादशाह होंगे, चुनाँचे बनी इस्राईल उसके आज तक मुन्तज़िर हैं और उन्हें यक़ीन है कि मिस्र की सल्तनत फिर उन्हें मिल जायेगी। पहले तो उनका ख़्याल था कि यह वायदा हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के बारे में था, लेकिन उनकी वफ़ात तक जबकि यह वायदा पूरा नहीं हुआ तो अब वे अ़क़ीदा रखते हैं कि ख़ुदा उनमें अपने एक पैग़म्बर को भेजेगा जिनके हाथों उन्हें सल्तनत भी मिलेगी और उनकी क़ौमी व मज़हबी तरक़्क़ी भी होगी। ये बातें करके उन्होंने मश्विरे की मज्लिस क़ायम की कि अब क्या किया जाये जिससे आईन्दा के इस ख़तरे से सुरक्षित रह सकें। आख़िर उस मिटिंग में यह प्रस्ताव पास हुआ कि पुलिस का एक विभाग क़ायम किया जाये जो शहर का गश्त लगाता रहे और बनी इस्राईल में जो औलाद लड़के की शक्ल में पैदा हो उसे उसी वक़्त सरकार में पेश किया जाये और ज़िबह कर दिया जाये। लेकिन जब एक मुद्दत गुज़र गयी तो उन्हें ख़्याल पैदा हुआ कि इस तरह तो बनी इस्राईल बिल्कुल फ़ना हो जायेंगे और

Maktab-E-Ashraf

जो घटिया सेवायें और ख़िदमतें उनसे ली जाती हैं, जो बेगार उनसे कराई जा रही हैं सब बन्द हो जायेंगी। इसलिये अब प्रस्ताव तय हुआ कि एक साल उनके बच्चों को छोड़ दिया जाये और एक साल उनके लड़के क़त्ल कर दिये जायें। इस तरह मौजूदा बनी इस्राईलियों की तायदाद भी न बढ़ेगी और न इतनी कम हो जायेगी कि हमें अपनी ख़िदमत गुज़ारी के लिये भी न मिल सकें। जितने बूढ़े दो साल में मरेंगे उतने लड़के एक साल में पैदा हो जायेंगे, जिस साल क़त्ल का सिलसिला बन्द था उस साल तो हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए और जिस साल बच्चों का क़त्ले आ़म जारी था उस बरस मूसा अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए। आपकी वालिदा की उस वक़्त घबराहट और परेशानी का क्या पूछना? बे-अन्दाज़ा थी।

एक फ़ितना (आज़माईश) तो यह था, चुनाँचे यह ख़तरा उस वक़्त दूर हो गया जबकि ख़ुदा की 'वही' उनके पास आयी कि डर ख़ौफ़ न कर, हम उसे तेरी तरफ़ फिर लौटायेंगे, और उसे अपना रसूल बनायेंगे। चुनाँचे अल्लाह के हुक्म से आपने बच्चे को सन्दूक़ में बन्द करके दरिया में बहा दिया। जब सन्दूक़ नज़रों से ओझल हो गया तो शैतान ने दिल में वस्वसे (शंकायें और बुरे ख़्यालात) डालने शुरू किये कि अफ़सोस इससे तो यही बेहतर था कि मेरे सामने ही उसे ज़िबह कर दिया जाता, तो मैं उसे ख़ुद ही कफ़नाती दफ़नाती तो सही, लेकिन अब मैंने ख़ुद ही उसे मछलियों का शिकार बनाया।

यह सन्दूक़ यूँ ही बहता हुआ ख़ास फ़िरऔ़नी घाट से जा लगा। वहाँ उस वक़्त महल की बाँदियाँ मौजूद थीं। उन्होंने इस सन्दूक़ को उठा लिया और इरादा किया कि खोलकर देखें, लेकिन फिर डर गयीं कि ऐसा न हो कोई चोरी का इल्ज़ाम लगे। यूँही ताला बन्द सन्दूक़ फ़िरऔ़न की बीवी के पास पहुँचा दिया। वह बादशाह बेगम (यानी फ़िरऔ़न की बीवी) के सामने खोला गया तो उसमें से चाँद जैसी सूरत का एक छोटा सा मासूम बच्चा निकला जिसे दिखते ही फ़िरऔ़न की बीवी साहिबा का दिल मुहब्बत के जोश से उछलने लगा। उधर मूसा अ़लैहिस्सलाम की माँ की हालत ख़राब हो गयी। सिवाय अपने उस प्यारे बच्चे के ख़्याल के दिल में और कोई तसव्वुर ही न था। इधर उन क़साईयों को जो हुकूमत की तरफ़ से बच्चों के क़त्ल के महकमे के मुलाज़िम थे, मालूम हुआ तो वे अपनी छुरियाँ तेज़ किये हुए बढ़े और बादशाह की बेगम से तक़ाज़ा किया कि बच्चा उन्हें सौंप दें ताकि वे उसे ज़िबह कर डालें। ऐ इब्ने जरीर! यह दूसरा फ़ितना था।

आख़िर मलिका (रानी) ने जवाब दिया कि ठहरो मैं ख़ुद बादशाह से मिलती हूँ और इस बच्चे को तलब करती हूँ। अगर वह मुझे दे दें तो ख़ैर वरना तुम्हें इख़्तियार है। चुनाँचे आप आयीं और बादशाह से कहा कि यह बच्चा तो मेरी और आपकी आँखों की ठंडक साबित होगा। उस ख़बीस ने कहा बस तुम ही इससे अपनी आँखें ठंडी रखो, मेरी ठंडक वह क्यों होने लगा, मुझे उसकी कोई ज़रूरत नहीं। रसूलुल्लाह सल्ल. क़सम खाकर बयान फ़रमाते हैं कि अगर वह भी कह देता कि हाँ बेशक वह मेरी भी आँखों की ठंडक है तो ख़ुदा तआ़ला उसे भी ज़रूर सही रास्ता दिखा देता, जैसा कि उसकी बीवी साहिबा हिदायत पा गयीं और इस्लाम ले आयीं। लेकिन उसने ख़ुद उससे मेहरूम रहना चाहा। ख़ुदा ने भी उसे मेहरूम कर दिया। ग़र्ज़ कि फ़िरऔ़न को किसी तरह मुश्किल से राज़ी करके उस बच्चे के पालने की इजाज़त लेकर आप आयीं। अब महल की जितनी दाया थीं सबको जमा किया, एक-एक की गोद में बच्चा दिया गया लेकिन ख़ुदा तआ़ला ने सबका दूध आप पर हराम कर दिया। आपने किसी का दूध मुँह में लिया ही नहीं। इससे मलिका (रानी साहिबा) घबरायीं कि यह तो बहुत बुरा हुआ। यह प्यारा बच्चा यूँ ही हलाक हो जायेगा।

आख़िर सोचकर हुक्म दिया कि इन्हें बाहर ले जाओ, इधर उधर तलाश करो, और अगर किसी का दूध यह मासूम क़बूल करे तो उसे ख़ुशामद के साथ सौंप दो। बाहर बाज़ारों में मेला सा लग गया, हर शख़्स इस

सौभाग्य से मालामाल होना चाहता था, लेकिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने किसी औरत का दूध न पिया। आपकी वालिदा ने अपनी बड़ी बेटी आपकी बहन को बाहर भेज रखा था कि वह देखें क्या होता है? वह उस मजमे में मौजूद थीं और तमाम वाक़िआ़त देख सुन रही थीं। जब ये लोग आ़जिज़ आ गये तो आपने फ़रमाया अगर तुम कहो तो मैं एक घराना ऐसा बतला दूँ जो इसकी निगरानी व देखभाल करे और हो भी इसका भला चाहने वाला। यह कहना था कि लोगों को शक हुआ कि ज़रूर यह लड़की इस बच्चे को जानती है और उस घर को भी पहचानती है। ऐ इब्ने जुबैर यह था तीसरा फ़ितना। लेकिन ख़ुदा ने लड़की को समझ दे दी और उसने झट से कहा कि भला तुम इतना नहीं समझते कौन बद-नसीब ऐसा होगा जो इस बच्चे की ख़ैरख़्वाही (हमदर्दी) या परवरिश में कमी करे, जो बच्चा हमारी मलिका (बादशाह की बीवी) का प्यारा हो कौन न चाहेगा कि यह हमारे यहाँ पले, ताकि इनाम व इकराम से उसका घर भर जाये।

यह सुनकर सब की समझ में आ गया। उसे छोड़ दिया और कहा बता तू कौनसी दाया (दूध पिलाने वाली) इसके लिये तजवीज़ करती है? उसने कहा मैं अभी लाती हूँ। दौड़ी हुई गयीं और वालिदा को यह ख़ुशख़बरी सुनाई। वालिदा साहिबा शौक़ व उम्मीद से भरी हुई आयीं। अपने प्यारे से बच्चे को गोद में लिया, अपना दूध मुँह में दिया, बच्चे ने पेट भरकर पिया। उसी वक़्त शाही महलों में यह ख़ुशख़बरी पहुँचाई गयी। मलिका (रानी) का हुक्म हुआ कि फ़ौरन उस दाया को और बच्चे को मेरे पास लाओ। जब माँ बेटा पहुँचे तो अपने सामने दूध पिलवाया और यह देखकर कि बच्चा अच्छी तरह दूध पीता है, बहुत ही ख़ुश हुयीं और फ़रमाने लगीं कि मुझे इस बच्चे से वह मुहब्बत है जो दुनिया की किसी और चीज़ से नहीं। तुम यहीं महल में रहो और इस बच्चे की परवरिश करो। लेकिन मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा साहिबा के सामने ख़ुदा का वायदा था, उन्हें पूरा यक़ीन था इसलिये आप ज़रा रुकीं और फ़रमाया कि यह तो नामुम्किन है कि मैं अपने घर और अपने बच्चों को छोड़कर यहाँ रहूँ। अगर आप चाहती हैं तो यह बच्चा मेरे सुपुर्द कर दें, मैं इसे अपने घर ले जाती हूँ इसकी परवरिश में कोई कोताही न करूँगी।

मलिका साहिबा (फ़िरऔ़न की बीवी) ने मजबूरन इस बात को भी मान लिया और आप उसी दिन ख़ुशी-ख़ुशी अपने बच्चे को लिये हुए घर आ गयीं। इस बच्चे की वजह से उस मौहल्ले के बनी इस्राईल भी फ़िरऔ़न के ज़ुल्म व अत्याचारों से रिहाई पा गये। जब कुछ ज़माना गुज़र गया तो बादशाह की बेगम ने हुक्म भेजा कि किसी दिन मेरे बच्चे को मेरे पास लाओ। एक दिन मुक़र्रर हो गया। हुकूमत के तमाम सदस्य और दरबारियों को हुक्म हुआ कि आज मेरा बच्चा मेरे पास आयेगा, तुम सब क़दम क़दम पर उसका स्वागत करो और धूम-धाम से नज़्रें देते हुए उसे मेरे महल तक लाओ। चुनाँचे जब सवारी रवाना हुई। वहाँ से लेकर रानी के शाही महल तक बराबर तोहफ़े-तहाईफ़ नज़्रें और हदिये पेश होते रहे और बड़ी ही इज़्ज़त व सम्मान के साथ यहाँ पहुँचे तो ख़ुद बेगम ने भी ख़ुशी-ख़ुशी बहुत रक़म पेश की और बड़ी ख़ुशी मनाई गयी। फिर कहने लगी कि मैं तो इसे बादशाह के पास लेकर जाती हूँ वह भी इसे इनाम व इकराम देंगे। चुनाँचे ले गयीं और बादशाह की गोद में लिटा दिया। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उसकी दाढ़ी पकड़ कर ज़ोर से उसे घसीटी। फ़िरऔ़न खटक गया और उसके दरबारियों ने कहना शुरू किया कि हो सकता है यह वही लड़का हो, आप इसे फ़ौरन क़त्ल करा दीजिए। ऐ इब्ने जुबैर यह था चौथा फ़ितना।

मलिका बेताब होकर बोल उठीं। ऐ बादशाह! क्या इरादा कर रहे हो? आप इसे मुझे दे चुके हैं, मैं इसे अपना बेटा बना चुकी हूँ। बादशाह ने कहा यह तो ठीक है लेकिन देखो तो इसने तो आते ही दाढ़ी पकड़कर मुझे नीचा कर दिया, गोया यही मेरा गिराने वाला और मुझे तबाह व बरबाद करने वाला है। बेगम

साहिबा ने फ़रमाया ऐ बादशाह! बच्चों को इन चीज़ों की क्या तमीज़? सुनो मैं एक फ़ैसला करने वाली बात बतला देती हूँ। इसके सामने दो अंगारे आग के सुर्ख़ रख दो और दो मोती आबदार चमकते हुए रख दो, फिर देखो यह क्या उठाता है? अगर मोती उठाये तो समझना कि इसमें अ़क्ल है, और अगर आग के अंगारे थाम ले तो समझ लेना कि अ़क्ल नहीं। जब अ़क्ल व तमीज़ नहीं तो इसके दाढ़ी पकड़ लेने पर ऐसा ख़्याल करके इसकी जान के दुश्मन बन जाना कहाँ की अ़क्लमन्दी है? चुनाँचे यही किया गया। दोनों चीज़ें आपके पास रखी गयीं, आपने दहकते हुए अंगारे उठा लिये, उसी वक़्त वह छीन लिये कि ऐसा न हो कि हाथ जल जायें। अब फ़िरऔन का गुस्सा ठंडा हुआ और बदला हुआ रुख़ ठीक हो गया।

हक़ तो यह है कि ख़ुदा को जो करना मन्ज़ूर होता है उसके क़ुदरती असबाब (साधन और हालात) मुहैया हो ही जाते हैं। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की फ़िरऔन के दरबार में फ़िरऔन के ख़ास महल में फ़िरऔन की बीवी की गोद में ही परवरिश होती रही, यहाँ तक कि आप अच्छी उम्र को पहुँच गये और बालिग़ हो गये। अब तो फ़िरऔनियों के इस्राईलियों पर अत्याचार हो रहे थे, उनमें भी कमी हो गयी थी। सब अमन व अमान से थे।

एक दिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम कहीं जा रहे थे कि रास्ते में एक फ़िरऔनी और एक इस्राईली की लड़ाई हो रही थी। इस्राईली ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से फ़रियाद की। आपको सख़्त गुस्सा आया इसलिये कि उस वक़्त वह फ़िरऔनी उस बनी इस्राईली को दबोचे हुए था। आपने उसे एक मुक्का मारा, ख़ुदा की शान कि मुक्का लगते ही वह मर गया। यह तो लोगों को उमूमन मालूम था कि हज़रत मूसा इस्राईलियों की तरफ़दारी करते हैं, लेकिन लोग इसकी वजह अब तक यही समझते थे कि चूँकि आपने उन्हीं में दूध पिया है इसलिये उनके तरफ़दार हैं, असली राज़ का इल्म तो सिर्फ़ आपकी वालिदा को था। और मुम्किन है ख़ुदा तआ़ला ने अपने कलीम (यानी हज़रत मूसा) को भी मालूम करा दिया हो।

उसे मुर्दा देखते ही मूसा अ़लैहिस्सलाम काँप उठे कि यह तो शैतानी हरकत है, वह बहकाने वाला और खुला दुश्मन है। फिर ख़ुदा तआ़ला से माफ़ी माँगने लगे कि बारी तआ़ला! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया तू माफ़ फ़रमा। परवर्दिगार ने भी आपकी इस ख़ता को माफ़ फ़रमा दिया। वह तो ग़फ़ूर व रहीम है ही। आप फिर भी डरे हुए और भयभीत ही रहे। ताक-झाँक में रहे कि कहीं मामला खुल तो नहीं गया। उधर फ़िरऔन के पास शिकायत हुई कि एक क़िब्ती को किसी बनी इस्राईल के आदमी ने मार डाला है। फ़िरऔन ने हुक्म जारी कर दिया कि वाक़िए की पूरी तहक़ीक़ करो, क़ातिल की तलाश करके पकड़ लाओ और गवाही भी पेश करो, और जुर्म साबित हो जाने की सूरत में उसे भी क़त्ल कर दो। पुलिस ने बहुत कोशिश और तफ़्तीश की लेकिन क़ातिल का कोई सुराग़ न मिला।

इत्तिफ़ाक़ की बात कि दूसरे ही दिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम फिर कहीं जा रहे थे कि देखा वही बनी इस्राईली शख़्स एक दूसरे फ़िरऔनी से झगड़ रहा है। मूसा अ़लैहिस्सलाम को देखते ही वह दुहाई देने लगा, लेकिन उसने यह महसूस किया कि शायद मूसा अ़लैहिस्सलाम अपने कल के फ़ेल से शर्मिन्दा हैं। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को भी इसका यह बार-बार का झगड़ना और फ़रियाद करना बुरा मालूम हुआ। आपने कहा तुम तो बड़े लड़ाका और झगड़ालू हो। यह फ़रमाकर उस फ़िरऔनी को पकड़ना चाहा लेकिन उस इस्राईली बुज़दिल ने समझा कि शायद आप चूँकि मुझ पर नाराज़ हैं मुझे ही पकड़ना चाहते हैं, हालाँकि उसका यह सिर्फ़ बुज़दिलाना ख़्याल था, आप तो उसी फ़िरऔनी को पकड़ना चाहते थे और इसे बचाना चाहते थे। लेकिन ख़ौफ़ व घबराहट की हालत में बेसाख़्ता उसके मुँह से निकल गया कि ऐ मूसा! जैसे कि

Maktab E Ashraf

कल तूने एक आदमी को मार डाला था क्या आज मुझे मार डालना चाहता है? यह सुनकर वह फ़िरऔनी उसे छोड़ भागा, दौड़ा हुआ गया और सरकारी सिपाहियों को इस वाक़िए की इत्तिला कर दी।

फ़िरऔन को भी क़िस्सा मालूम हुआ, उसी वक़्त जल्लादों को हुक्म दिया गया कि मूसा को पकड़कर क़त्ल कर दो। ये लोग मुख्य मार्ग से आपकी तलाश में चले। इधर एक बनी इस्राईली ने रास्ता काटकर नज़दीक के रास्ते से आकर मूसा अ़लैहिस्सलाम को ख़बर कर दी। ऐ इब्ने ज़ुबैर यह है पाँचवाँ फ़ितना।

हज़रत मूसा यह सुनते ही मिस्र से फ़रार हो गये। न कभी पैदल चले थे, न कभी किसी मुसीबत में फंसे थे, शहज़ादों की तरह लाड-प्यार में पले थे। न रास्ते की ख़बर थी न कभी किसी सफ़र का इत्तिफ़ाक़ हुआ था। रब पर भरोसा करके यह दुआ करके कि ख़ुदाया मुझे सीधी राह ले चलना, चल खड़े हुए यहाँ तक कि मद्यन की सीमाओं में पहुँचे। यहाँ देखा कि लोग अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं। वहीं दो लड़कियों को देखा कि अपने जानवरों को रोके खड़ी हैं, पूछा कि तुम उनके साथ अपने जानवरों को पानी क्यों नहीं पिला लेतीं? अलग खड़ी हुई उन्हें क्यों रोक रही हो? उन्होंने जवाब दिया कि इस भीड़ में हमारे बस की बात नहीं कि अपने जानवरों को पानी पिलायें। हम तो जब ये लोग पानी पिला चुकते हैं इनका बचा हुआ पानी अपने जानवरों को पिला दिया करते हैं। आप फ़ौरन आगे बढ़े और उनके जानवरों को पानी पिला दिया। चूँकि बहुत जल्द पानी खींचा, आप बहुत ताक़तवर आदमी थे, सबसे पहले उनके जानवरों को सैर कर दिया। ये अपनी बकरियाँ लेकर अपने घर रवाना हुयीं, आप एक दरख़्त के साये तले बैठ गये और ख़ुदा से दुआ करने लगे कि परवर्दिगार मैं तेरी तमाम मेहरबानियों का मोहताज हूँ।

ये दोनों लड़कियाँ जब अपने वालिद के पास पहुँचीं तो सारा वाक़िआ कह सुनाया। आपने हुक्म दिया कि तुममें से एक अभी चली जाये और उन्हें मेरे पास बुला लाये। वह आयीं और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को अपने वालिद साहिब के पास ले गयीं। उन्होंने सरसरी मुलाक़ात के बाद वाक़िआ पूछा। आपने सारा क़िस्सा कह सुनाया। इस पर वह फ़रमाने लगे अब कोई डर की बात नहीं, आप उन ज़ालिमों से छूट गये, हम लोग फ़िरऔन की प्रजा नहीं, न हम पर उसका कोई दबाव है।

उसी वक़्त एक लड़की ने अपने बाप से कहा कि अब्बा जी! इन्होंने हमारा काम कर दिया है और यह हैं भी बहादुर और अमानत दार शख़्स, क्या अच्छा हो कि आप इन्हें अपने यहाँ मुक़र्रर कर लें कि यह उजरत पर हमारी बकरियाँ चरा लाया करें। बाप को ग़ैरत और ग़ुस्सा आ गया और पूछा बेटी तुम्हें यह कैसे मालूम हो गया कि यह बहादुर और अमीन हैं? बच्ची ने जवाब दिया कि क़ुव्वत व बहादुरी तो उस वक़्त मालूम हुई जब इन्होंने हमारी बकरियों के लिये पानी निकाला, इतने बड़े डोल को अकेले ही खींचते थे और बड़ी फ़ुर्ती और आसानी से, और अमानतदारी यूँ मालूम हुई कि मेरी आवाज़ सुनकर इन्होंने नज़र ऊँची की और जब यह मालूम हो गया कि मैं औरत हूँ फिर नीची गर्दन करके मेरी बातें सुनते रहे। वल्लाह आपका पूरा पैग़ाम पहुँचाने तक इन्होंने निगाह ऊँची नहीं की। फिर मुझसे फ़रमाया कि तुम मेरे पीछे रहो, मुझे दूर से रास्ता बता दिया करना। यह भी दलील है इनकी परहेज़गारी और अमानतदारी की।

बाप की ग़ैरत व हमिय्यत भी रह गयी, बच्ची की तरफ़ से भी दिल साफ़ हो गया और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की मुहब्बत दिल में समा गयी। अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाने लगे- मेरा इरादा है कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का निकाह आपसे कर दूँ इस शर्त पर कि आप आठ साल तक मेरे यहाँ काम-काज करते रहें और अगर दस साल तक करें तो और भी अच्छा है, इन्शा-अल्लाह तआ़ला आप देख लेंगे कि मैं भला आदमी हूँ। चुनाँचे यह मामला तय हो गया और ख़ुदा के पैग़म्बर ने बजाय आठ साल

के दस साल पूरे किये।

हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह. फ़रमाते हैं कि पहले मुझे यह मालूम न था और एक ईसाई आलिम मुझसे पूछ बैठा था तो मैं उसे कोई जवाब न दे सका। फिर जब मैंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से पूछा और आपने जवाब दिया तो मैंने उससे ज़िक्र किया। उसने कहा तुम्हारे उस्ताद बड़े आ़लिम हैं। मैंने कहा हाँ हैं ही। अब मूसा अ़लैहिस्सलाम उस मुद्दत को पूरा करके अपनी बीवी को लिये हुए यहाँ से चले। फिर वे वाक़िआत हुए जिनका ज़िक्र इन आयतों में है। आग देखी, वहाँ गये, ख़ुदा से कलाम किया, लकड़ी का अज़्दहा बनना, हाथ का नूरानी बनना मुलाहिज़ा किया। नुबुव्वत पाई, फ़िरऔ़न की तरफ़ भेजे गये तो क़त्ल के वाक़िए के बदले का अन्देशा (शंका) ज़ाहिर फ़रमाया। इससे इत्मीनान हासिल करके ज़बान की गिरह खुल जाने की दुआ़ की, इसको हासिल करके अपने भाई हारून की हमदर्दी और अपने काम में शिर्कत चाही। यह भी हासिल करके लकड़ी लिये हुए मिस्र के बादशाह की तरफ़ चले।

उधर हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम के पास 'वही' पहुँची कि अपने भाई की मुवाफ़क़त करें और उनका साथ दें। दोनों भाई मिले और फ़िरऔ़न के दरबार में पहुँचे। इत्तिला कराई बड़ी देर में इजाज़त मिली तो गये और फ़िरऔ़न पर ज़ाहिर किया कि हम ख़ुदा के रसूल बनकर तेरे पास आये हैं। अब जो सवाल हुए वे क़ुरआन में मौजूद हैं। फ़िरऔ़न ने कहा अच्छा तुम चाहते क्या हो? और क़त्ल वाला वाक़िआ़ याद दिलाया, जिसका उज़्र मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बयान किया जो क़ुरआन में मौजूद है, और कहा हमारा इरादा यह है कि तुम ईमान लाओ और हमारे साथ बनी इस्राईल को अपनी गुलामी से रिहाई दो। उसने इनकार किया और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो कोई मोजिज़ा दिखलाओ। आपने उसी वक़्त अपनी लकड़ी ज़मीन पर डाल दी, वह पड़ते ही एक ज़बरदस्त ख़ौफ़नाक अज़्दहे की सूरत में मुँह फाड़े कुचलियाँ निकाले फ़िरऔ़न की तरफ़ लपका। मारे ख़ौफ़ के फ़िरऔ़न तख़्त से कूद गया और भागता हुआ आ़जिज़ी से फ़रियाद करने लगा कि ऐ मूसा ख़ुदा के लिये इसे पकड़ लो। आपने हाथ लगाया, वह उसी वक़्त अपनी असली हालत में आ गयी। फिर आपने अपना हाथ अपने गिरेबान में डालकर निकाला तो वह बग़ैर किसी रोग के, बिना दाग़ की बीमारी के चमकता हुआ निकला, जिसे देखकर वह हैरान हो गया। आपने फिर हाथ डालकर निकाला तो वह अपनी असली हालत में था।

अब फ़िरऔ़न ने अपने दरबारियों की तरफ़ देखकर कहा कि तुमने देखा ये दोनों जादूगर हैं। चाहते हैं कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और तुम्हारे मुल्क पर क़ाबिज़ होकर तुम्हारे तरीक़े (यानी रस्म व रिवाज) मिटा दें। फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा कि हमें आपकी नुबुव्वत मानने से भी इनकार है और आपका कोई मुतालबा भी हम पूरा नहीं कर सकते, बल्कि हम अपने जादूगरों को तुम्हारे मुक़ाबले के लिये बुला रहे हैं, जो तुम्हारे इस जादू पर ग़ालिब आ जायेंगे। चुनाँचे ये लोग अपनी कोशिशों में मश्ग़ूल हो गये।

पूरे मुल्क से जादूगरों को बड़ी इज़्ज़त से बुलवाया, जब सब जमा हो गये तो उन्होंने पूछा कि उसका जादू किस किस्म का है? फ़िरऔ़न वालों ने कहा लकड़ी का साँप बना देता है। उन्होंने कहा इसमें क्या है? हम लकड़ियों के रस्सियों के वे साँप बनायेंगे कि दुनिया में उनका कोई मुक़ाबला न कर सकेगा। लेकिन हमारे लिये इनाम मुक़र्रर होना चाहिये। फ़िरऔ़न ने उनसे क़ौल क़रार किया कि इनाम कैसा! मैं तो तुम्हें अपना ख़ास, क़रीबी ओ़हदेदार और दरबारी बना लूँगा और तुम्हें निहाल कर दूँगा, जो माँगोगे पाओगे। चुनाँचे उन्होंने ऐलान कर दिया कि ईद के रोज़ दिन चढ़े फ़ुलाँ मैदान में मुक़ाबला होगा।

Maktab E Ashraf

रिवायत है कि उनकी ईद आशूरा (दस मुहर्रम) के दिन थी। उस दिन तमाम लोग सुबह ही सुबह उस मैदान में पहुँच गये कि आज चलकर देखेंगे कि कौन ग़ालिब आता है? हम तो जादूगरों के कमाल के क़ायल हैं, वही ग़ालिब आयेंगे और हम उन्हीं की मानेंगे। मज़ाक़ से इस बात को बदलकर कहते थे कि चलो उन्हीं दोनों जादूगरों के पैरोकार बन जायेंगे अगर वे ग़ालिब रहेंगे। मैदान में आकर जादूगरों ने अल्लाह के नबियों से कहा कि लो अब बताओ तुम पहले अपना जादू ज़ाहिर करते हो या हम ही शुरू करें? आपने फ़रमाया तुम ही शुरूआत करो, ताकि तुम्हारे हौसले निकल जायें।

अब उन्होंने अपनी लकड़ियाँ और रस्सियाँ मैदान में डालीं, वे सब साँप और बलायें बनकर ख़ुदा के नबियों की तरफ़ दौड़ीं जिससे ख़ौफ़ज़दा होकर आप पीछे हटने लगे। उसी वक़्त ख़ुदा की 'वही' आयी कि आप अपनी लकड़ी ज़मीन पर डाल दीजिए। आपने डाल दी वह एक ख़ौफ़नाक भयानक विशाल अज़्दहा बनकर उनकी तरफ़ दौड़ा। ये लकड़ियाँ रस्सियाँ सब गड-मड हो गयीं और वह इन सबको निगल गया।

जादूगर समझ गये कि यह जादू नहीं, यह तो सच-मुच अल्लाह की तरफ़ का निशान है। जादू में यह बात कहाँ? चुनाँचे सबने अपने ईमान का ऐलान कर दिया कि हम मूसा अ़लैहिस्सलाम के रब पर ईमान लाये और दोनों भाईयों की नुबुव्वत हमें तस्लीम है। हम अपने पिछले गुनाहों से तौबा करते हैं। फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की कमर टूट गयी, रुस्वा हुए, मुँह काले पड़ गये, ज़िल्लत के साथ ख़ामोश हो गये, ख़ून के घूँट पीकर चुप हो गये। इधर यह हो रहा था उधर फ़िरऔन की बीवी साहिबा जिन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को अपने सगे बच्चे की तरह पाला था, बेक़रार बैठी थीं और ख़ुदा से दुआयें माँग रही थीं कि या अल्लाह! अपने नबी को ग़ालिब कर। फ़िरऔनियों ने भी इस हाल को देखा था लेकिन उन्होंने ख़्याल किया कि अपने बच्चे की तरफ़दारी में उनका यह हाल है। यहाँ से नाकाम वापस जाने पर फ़िरऔन ने बेईमानी पर कमर बाँध ली।

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के हाथों बहुत से निशानात ज़ाहिर हुए। जब कभी कोई पकड़ आ जाती यह घबराकर बल्कि गिड़-गिड़ाकर वायदा करता कि अच्छा इस मुसीबत के हट जाने पर मैं भी बनी इस्राईल को तेरे साथ कर दूँगा। लेकिन जब अ़ज़ाब हट जाता फिर मुन्किर बनकर सरकशी पर आ जाता, और कहता तेरा रब इसके सिवा कुछ और भी कर सकता है? चुनाँचे उन पर तूफ़ान आया, टिड्डियाँ आयीं, जुएँ आयीं, मेंढक आये, ख़ून आया। और भी बहुत सी साफ़-साफ़ निशानियाँ देखीं। जहाँ आफ़त आयी, दौड़ा, वायदा किया, जहाँ वह टल गयी मुन्किर हो गया और अकड़ गया। अब अल्लाह तआ़ला का हुक्म हुआ कि बनी इस्राईल को लेकर यहाँ से निकल जाओ। आप रातों रात उन्हें लेकर रवाना हो गये। सुबह फ़िरऔनियों ने देखा कि रात को सारे बनी इस्राईली चले गये हैं। फ़िरऔन से कहा, उसने सारे मुल्क में अहकाम भेजकर हर तरफ़ से फ़ौजें जमा कीं और बहुत बड़ी जमाअ़त के साथ उनका पीछा किया। रास्ते में जो दरिया पड़ता था, उसकी तरफ़ ख़ुदा की 'वही' पहुँची कि तुझ पर जब मेरे बन्दे मूसा की लकड़ी पड़े तो तू उन्हें रास्ता दे देना, तुझमें बारह रास्ते हो जायें कि बनी इस्राईल के बारह क़बीले अलग-अलग अपने रास्ते पर लग जायें। फिर जब ये पार हो जायें और फ़िरऔनी आ जायें तो तू मिल जाना, और उनमें से एक को भी बिना डुबोये न छोड़ना।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जब दरिया पर पहुँचे देखा कि वह मौजें मार रहा है। पानी चढ़ा हुआ है, शोर उठ रहा है। घबरा गये और लकड़ी मारना भूल गये। दरिया बेक़रार यूँ था कि कहीं ऐसा न हो उसके किसी हिस्से पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम लकड़ी मार दें और उसे ख़बर न हो तो ख़ुदा की नाफ़रमानी के

सबब कहीं ख़ुदा के अ़ज़ाब में न फंस जाये। इतने में फ़िरऔ़न का लश्कर बनी इस्राईल पर जा पहुँचा। ये घबरा गये और कहने लगे लो मूसा! हम तो पकड़ लिये गये। अब आप वह कीजिए जो ख़ुदा का आपको हुक्म है, यक़ीनन न तो ख़ुदा झूठा न आप। आपने फ़रमाया मुझसे तो यह फ़रमाया गया है कि जब तू दरिया पर पहुँचेगा वह तुझे बारह रास्ते दे देगा, तू गुज़र जाना। उस वक़्त याद आया कि लकड़ी मारने का हुक्म हुआ है। चुनाँचे लकड़ी मारी। उधर फ़िरऔ़न के लश्कर का पहला हिस्सा बनी इस्राईल के आख़िरी हिस्से के पास आ चुका था कि दरिया ख़ुश्क हो गया और उसमें रास्ते ज़ाहिर हो गये। आप अपनी क़ौम को लिये हुए उसमें बेख़तरे उतर गये और आराम से जाने लगे। जब यह निकल चले तो फ़िरऔ़नी फ़ौज उनका पीछा करते हुए दरिया में उतरी। जब यह सारा लश्कर उसमें उतर गया तो फ़रमाने ख़ुदा के मुताबिक़ दरिया जारी हो गया और सबको एक ही वक़्त में ग़र्क़ कर दिया।

बनी इस्राईल इस वाक़िए को अपनी आँखों से देख रहे थे फिर भी उन्होंने कहा ऐ रसूलुल्लाह! हमें क्या ख़बर कि फ़िरऔ़न भी मरा या नहीं? आपने दुआ़ की, दरिया ने फ़िरऔ़न की बेजान लाश को किनारे पर फेंक दिया, जिसे देखकर उन्हें यक़ीने कामिल हो गया कि उनका दुश्मन मय अपने लाव-लश्कर के तबाह हो गया। अब यहाँ से आगे चले तो देखा कि एक क़ौम अपने बुतों की मुजाविर (ख़िदमतगार) बनकर बैठी है, तो कहने लगे ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे लिये भी कोई माबूद ऐसा ही मुक़र्रर कर दीजिए। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने नाराज़ होकर कहा कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो......। तुमने इतनी बड़ी सबक़ लेने वाली निशानियाँ देखीं, ऐसे अहम वाक़िआ़त सुने लेकिन अब तक न इबरत है न ग़ैरत। यहाँ से आगे बढ़कर एक मन्ज़िल पर आपने क़ियाम किया और यहाँ अपने भाई हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को अपना ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाकर क़ौम से फ़रमाया कि मेरी वापसी तक इनकी फ़रमाँबरदारी (हुक्म का पालन) करते रहना। मैं अपने रब के पास जा रहा हूँ तीस दिन का उसका वायदा है। चुनाँचे क़ौम से अलग होकर वायदे की जगह पहुँचकर तीस दिन रात के रोज़े पूरे करके ख़ुदा तआ़ला से बातें करने का ध्यान पैदा हुआ, लेकिन यह समझ कर कि रोज़ों की वजह से मुँह से भबका (एक गंध सी) निकल रहा होगा, थोड़ी सी घास लेकर आपने चबा ली। अल्लाह तआ़ला ने बावजूद इल्म के मालूम फ़रमाया कि ऐसा क्यों किया? आपने जवाब दिया सिर्फ़ इसलिये कि तुझसे बातें करते वक़्त मेरा मुँह ख़ुशबूदार हो। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया क्या तुझे मालूम नहीं कि रोज़ेदार के मुँह की बू (गंध) मुझे मुश्क व अंबर की ख़ुशबू से ज़्यादा अच्छी लगती है। अब तू दस रोज़े और रख, फिर मुझसे कलाम करना। आपने रोज़े रखने शुरू कर दिये।

जब क़ौम पर तीस दिन गुज़र गये और वायदे के मुताबिक़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम न लौटे तो वे ग़मगीन रहने लगे। हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम ने उनके सामने ख़ुतबा दिया और फ़रमाया कि जब तुम मिस्र से चले थे तो तुम में से बाज़ पर क़िब्तियों की रक़में उधार थीं। इसी तरह उनकी अमानतें भी तुम्हारे पास रह गयी हैं। ये हम उन्हें वापस तो नहीं करेंगे लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता कि वो हमारी मिल्कियत में रहें। इसलिये एक गहरा गड्ढा खोदो और जो सामान, बरतन-भांडा ज़ेवर सोना चाँदी वग़ैरह उनका तुम्हारे पास है सब उसमें डालो, फिर आग लगा दो। चुनाँचे यही किया गया।

उनके साथ सामरी नाम का एक शख़्स था। यह गाय बछड़े को पूजने वालों में से था, बनी इस्राईल में से न था। लेकिन पड़ोसी होने और फ़िरऔ़न की क़ौम में से न होने के सबब यह भी उनके साथ वहाँ से निकल आया था। उसने किसी निशान से कुछ मुट्ठी में उठा लिया था। हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया तू भी इसे डाल दे, उसने जवाब दिया कि यह तो उसके असर से है जो तुम्हें दरिया से पार करा ले

गया। ख़ैर मैं इसे डाल देता हूँ। लेकिन इस शर्त पर कि आप अल्लाह से दुआ करें कि इससे वह बन जाये जो मैं चाहता हूँ। आपने दुआ की और उसने अपनी मुट्ठी में जो था उसे डाल दिया। और कहा मैं चाहता हूँ कि एक बछड़ा बन जाये। क़ुदरते ख़ुदा से उस गड्ढे में जो था वह एक बछड़े की सूरत में हो गया, जो अन्दर से खोखला था। उसमें रूह न थी लेकिन हवा उसके पीछे के सुराख़ से जाकर मुँह से निकलती थी, उससे एक आवाज़ पैदा होती थी। बनी इस्राईल ने पूछा सामरी यह क्या है? उस बेईमान ने कहा यही तुम्हारा सब का रब है, लेकिन मूसा रास्ता भूल गये और दूसरी जगह रब की तलाश में चले गये।

इस बात ने बनी इस्राईल के कई फ़िर्क़े कर दिये। एक फ़िर्क़े ने तो कहा कि हज़रत मूसा के आने तक हम इसके बारे में कोई बात तय नहीं कर सकते, मुम्किन है यही ख़ुदा हो, तो हम इसकी बेअदबी क्यों करें? और अगर यह रब नहीं है तो मूसा के आते ही हक़ीक़त खुल जायेगी। दूसरी जमाअ़त ने कहा यह बिल्कुल वाहियात है। यह शैतानी हरकत है, इस बेहूदगी और बेकार चीज़ पर बिल्कुल भी ईमान नहीं रखते, न यह हमारा रब न हमारा इस पर ईमान। एक पाजी फ़िर्क़े ने दिल से उसे मान लिया और सामरी की बात पर ईमान लाये, मगर बज़ाहिर उसकी बात को झुठला दिया।

हज़रत हारून ने उसी वक़्त सबको जमा करके फ़रमाया कि लोगो! यह ख़ुदा की तरफ़ से तुम्हारी आज़माईश (परीक्षा) है, तुम इस झगड़े में कहाँ फंस गये, तुम्हारा रब तो रहमान है। तुम मेरी पैरवी करो और मेरा कहना मानो। उन्होंने कहा आख़िर इसकी क्या वजह है कि तीस दिन का वायदा करके हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम गये हैं, आज चालीस दिन होने को आये लेकिन अब तक लौटे नहीं। बाज़ बेवक़ूफ़ों ने यहाँ तक कह दिया कि उनसे उनका रब ख़ता कर गया (यानी निकल गया) अब यह उसकी तलाश में होंगे। उधर दस रोज़े और पूरे होने के बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला से हम-कलामी (अपने साथ बात-चीत) का शर्फ़ हासिल हुआ। आपको बतलाया गया कि आपके बाद आपकी क़ौम का इस वक़्त क्या हाल है। आप उसी वक़्त रंज व अफ़सोस और ग़म व ग़ुस्से के साथ वापस लौटे, और यहाँ आकर क़ौम से बहुत कुछ कहा सुना। अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर घसीटने लगे। ग़ुस्से की ज़्यादती की वजह से तख़्तियाँ भी हाथ से फेंक दीं। फिर असल हक़ीक़त मालूम हो जाने पर आपने अपने भाई से माज़िरत की। उनके लिये इस्तिग़फ़ार (माफ़ी की तलब) किया और सामरी की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाने लगे कि तूने ऐसा क्यों किया? उसने जवाब दिया कि ख़ुदा के भेजे हुए के पाँव के नीचे से मैंने एक मुट्ठी उठा ली, ये लोग उसे न पहचान सके और मैंने जान लिया था, मैंने वही मुट्ठी उस आग में डाली थी, मेरी राय में यही बात आयी। आपने फ़रमाया- जा इसकी सज़ा दुनिया में तो यह है कि तू यही कहता रहे कि "हाथ लगाना नहीं" फिर एक वायदे का वक़्त है जिसके ख़िलाफ़ होना नामुम्किन है, और तेरे देखते हुए हम तेरे इस माबूद को जलाकर इसकी ख़ाक भी दरिया में बहा देंगे। चुनाँचे आपने यही किया। उस वक़्त बनी इस्राईल को यक़ीन आ गया कि वाक़ई वह ख़ुदा न था। अब वे बड़े नादिम (शर्मिन्दा) हुए और सिवाय उन मुसलमानों के जो हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम के अ़क़ीदे पर रहे थे बाक़ी के लोगों ने उज़्र माज़िरत की और कहा ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह हमारे लिये तौबा का दरवाज़ा खोल दे, जो वह फ़रमायेगा हम उस पर अ़मल करेंगे, ताकि हमारी यह ज़बरदस्त ख़ता माफ़ हो जाये।

आपने बनी इस्राईल के उस गिरोह में से सत्तर आदमियों को छाँटकर अलग किया और तौबा के लिये चले। वहाँ ज़मीन फट गयी और आपके सब साथी उसमें उतार दिये गये। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को फ़िक्र लाहिक़ हुआ कि मैं बनी इस्राईल को क्या मुँह दिखाऊँगा। आपने रोना और अल्लाह से फ़रियाद करना

शुरू किया और दुआ की कि ऐ ख़ुदाया! अगर तू चाहता तो इससे पहले ही मुझे और इन सबको हलाक कर देता, हमारे बेवक़ूफ़ों के गुनाह के बदले तू हमें हलाक न कर। आप तो उनके ज़ाहिर को देख रहे थे और ख़ुदा की नज़रें उनके बातिन (दिलों) पर थीं। उनमें से ऐसे भी थे जो बज़ाहिर मुसलमान बने हुए थे लेकिन दर असल दिली अ़क़ीदा उनका उस बछड़े के रब होने पर था। उन्हीं मुनाफ़िक़ों की वजह से सब को ज़मीन में उतार दिया गया। हज़रत मूसा की इस आह व ज़ारी पर रहमते ख़ुदा जोश में आयी और जवाब मिला कि यूँ तो मेरी रहमत सब पर छायी हुई है लेकिन मैं उसे उनको अ़ता करूँगा जो मुतक़्क़ी परहेज़गार हों, ज़कात के अदा करने वाले हों, मेरी बातों पर ईमान लायें और मेरे उस रसूल व नबी की इत्तिबा (पैरवी) करें जिसके औसाफ़ (ख़ूबियाँ और निशानियाँ) वे अपनी किताबों में लिखे पाते हैं। यानी तौरात व इन्जील में। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ किया- या अल्लाह! मैंने अपनी क़ौम के लिये तौबा तलब की, तूने जवाब दिया कि तूने अपनी रहमत को उनके साथ कर देगा, जो आगे आने वाले हैं। या अल्लाह! फिर मुझे भी तू अपने उसी रहमत वाले नबी की उम्मत में पैदा करता।

रब्बुल-आ़लमीन ने फ़रमाया- सुनो! इनकी तौबा उस वक़्त क़बूल होगी कि ये लोग आपस में क़त्ल करना शुरू कर दें। न बाप बेटे को देखे न बेटा बाप को छोड़े, आपस में गुथ जायें और एक दूसरे को क़त्ल करना शुरू कर दें। चुनाँचे बनी इस्राईल ने यही किया और जो मुनाफ़िक़ लोग थे उन्होंने भी सच्चे दिल से तौबा की। अल्लाह तआ़ला ने उनकी तौबा क़बूल फ़रमाई। जो बच गये थे वे भी बख़्शे गये, जो क़त्ल हुए वे भी बख़्श दिये गये।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अब यहाँ से बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ चले, तौरात की तख़्तियाँ अपने साथ लीं और उन्हें अहकामे ख़ुदा सुनाये जो उन पर बहुत भारी पड़े और उन्होंने साफ़ इनकार कर दिया। चुनाँचे एक पहाड़ उनके सिरों पर लटका दिया गया। वह एक छज्जे की तरह उनके सरों पर था और हर दम डर था कि अब गिरा। उन्होंने अब इक़रार किया और तौरात ले ली। पहाड़ हट गया, उस पाक ज़मीन पर पहुँचे जहाँ हज़रत मूसा उन्हें ले जाना चाहते थे। देखा कि वहाँ एक बड़ी ताक़तवर ज़बरदस्त क़ौम का क़ब्ज़ा है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के सामने निहायत बुज़दिली से कहा कि यहाँ तो बड़ी ज़ोरावर क़ौम है। हम में उनके मुक़ाबले की ताक़त नहीं। ये निकल जायें तो हम इस शहर में दाख़िल हो सकते हैं।

ये तो यूँ ही नामर्दी और बुज़दिली ज़ाहिर करते रहे, उधर ख़ुदा तआ़ला ने उन सरकशों में से दो शख़्सों को हिदायत दे दी। वे शहर से निकल कर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम में आ मिले और उन्हें समझाने लगे कि तुम उनके जिस्मों और तायदाद से मरऊब न हो जाओ, ये लोग बहादुर नहीं। उनके दिल-गुर्दे कमज़ोर हैं। तुम आगे तो बढ़ो, उनके शहर के दरवाज़े में गये और उनके हाथ पाँव ढीले हुए। यक़ीनन तुम उन पर ग़ालिब आ जाओगे। और यह भी कहा गया है कि ये दोनों शख़्स जिन्होंने बनी इस्राईल को समझाया और उन्हें दिलेर बनाया ख़ुद बनी इस्राईल में से ही थे। वल्लाहु आलम। लेकिन उनके समझाने बुझाने, ख़ुदा का हुक्म हो जाने और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वायदे ने भी उन पर असर न किया, बल्कि उन्होंने साफ़ कोरा जवाब दे दिया कि जब तक ये लोग शहर में हैं हम तो यहाँ से हिलेंगे भी नहीं। ऐ मूसा तू ख़ुद अपने रब को अपने साथ लेकर चला जा और उनसे लड़-भिड़ ले हम यहाँ बैठे हुए हैं।

अब तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से सब्र न हो सका, आपके मुँह से उन बुज़दिलों और नाक़द्रों के हक़ में बददुआ निकल गयी और आपने उनका नाम फ़ासिक़ (बदकार व नाफ़रमान) रख दिया। ख़ुदा की तरफ़ से भी उनका यही नाम मुक़र्रर हो गया और उन्हें उसी मैदान में क़ुदरती तौर पर क़ैद कर दिया गया।

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

चालीस बरस उन्हें यहीं गुज़र गये। कहीं क़रार न था, उसी बयाबान में परेशानी के साथ भटकते रहे, उसी मैदान में क़ैद रहे। उन पर बादल का साया कर दिया गया और खाने के लिये 'मन्न' व 'सलवा' उतार दिया गया। न कपड़े फटते थे न मैले होते थे।

एक चार कोनों का पत्थर रखा हुआ था जिस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने लकड़ी मारी तो उसमें से बारह नहरें जारी हो गयीं। हर तरफ़ से तीन तीन लोग चलते थे। चलते-चलते आगे बढ़ जाते, थक कर ठहर जाते, सुबह उठते तो देखते कि वह पत्थर वहीं है जहाँ कल था। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इस हदीस को मरफ़ूअ़ बयान किया है। हज़रत मुआ़विया रज़ि. ने जब यह रिवायत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सुनी तो फ़रमाया कि इसमें जो है उस फ़िरऔ़नी ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पिछले वाले दिन के क़त्ल की ख़बर तफ़तीश करने वालों को पहुँचाई थी, यह बात समझ में नहीं आती, क्योंकि क़िब्ती के क़त्ल के वक़्त सिवाय उस बनी इस्राईली एक शख़्स के जो क़िब्ती से लड़ा था, वहाँ कोई और न था।

इस पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहुत बिगड़े और हज़रत मुआ़विया रज़ि. का हाथ थाम कर हज़रत सअ़द बिन मालिक रज़ि. के पास ले गये और उनसे कहा- आपको याद है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल. ने हमसे उस शख़्स का हाल बयान फ़रमाया था जिसने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल के राज़ को खोला था? बताओ वह बनी इस्राईली शख़्स था या फ़िरऔ़नी? हज़रत सअ़द रज़ि. ने फ़रमाया बनी इस्राईली से उस फ़िरऔ़नी ने सुना, फिर उसी ने जाकर हुकूमत से कहा और ख़ुद उसी का गवाह बना।

(सुनने कुबरा, नसाई)

यही रिवायत और किताबों में भी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के अपने कलाम से है, बहुत थोड़ा सा हिस्सा मरफ़ूअ़न् बयान किया गया है। हो सकता है कि आपने बनी इस्राईल में से किसी से यह रिवायत ली हो, क्योंकि उनसे रिवायतें लेने की गुंजाईश है। या तो आपने हज़रत कअ़बे अहबार से ही रिवायत सुनी होगी और मुम्किन है कि किसी और से सुनी हो। वल्लाहु आलम

मैंने अपने उस्ताद शैख़ हाफ़िज़ अबुल-हुज्जाज मुज़्ज़ी रह. से भी यही सुना है।

فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۬ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ○ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ○ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ○ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ○ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ○

फिर (मद्यन पहुँचे और) मद्यन वालों में कई साल रहे, फिर एक ख़ास वक़्त पर तुम (यहाँ) आए ऐ मूसा! (40) और (यहाँ आने पर) मैंने तुमको अपने लिए चुन लिया। (41) (सो अब) तुम और तुम्हारे भाई दोनों मेरी निशानियाँ (यानी मोजिज़े) लेकर जाओ और मेरी याद (गारी) में सुस्ती मत करना। (42) दोनों फ़िरऔ़न के पास जाओ, वह बहुत हद से निकल चुका है। (43) फिर उससे नर्मी के साथ बात करना, शायद वह (दिलचस्पी से) नसीहत कुबूल कर ले या (अल्लाह के अ़ज़ाब से) डर जाए। (44)

Maktab E Ashraf

मद्यन में कियाम

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहा है कि तुम फ़िरऔ़न से भागकर मद्यन पहुँचे यहाँ ससुराल मिल गयी और शर्त के मुताबिक़ बरसों तक उनकी बकरियाँ चराते रहे। फिर अल्लाह तआ़ला के अन्दाज़े और उसके मुक़र्रर वक़्त पर तुम उसके पास पहुँचे, उस रब का कोई इरादा पूरे हुए बग़ैर नहीं रहता, कोई फ़रमान नहीं टूटता। उसके वायदे के मुताबिक़ उसके मुक़र्रर वक़्त पर तुम्हारा उसके पास पहुँचना लाज़िमी बात थी। यह भी मतलब है कि तुम अपनी क़द्र व इ़ज़्ज़त को पहुँचे यानी रिसालत व नुबुव्वत मिली। मैंने तुम्हें अपना मक़बूल और चुना हुआ पैग़म्बर बना लिया।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की मुलाक़ात हुई तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा- आपने तो लोगों को मशक़्क़त में डाल दिया, उन्हें जन्नत से निकाल दिया। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- आपको ख़ुदा ने अपनी रिसालत से सम्मानित फ़रमाया, अपने लिये पसन्द फ़रमाया और तौरात अ़ता फ़रमाई, क्या उसमें आपने यह नहीं पढ़ा कि मेरी पैदाईश से पहले यह सब मुक़द्दर हो चुका था? कहा हाँ पढ़ा है। ग़र्ज़ कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर दलील में ग़लबा पा गये।

मेरी दी हुई दलीलें और मोजिज़े लेकर तू और तेरा भाई दोनों फ़िरऔ़न के पास जाओ, मेरी याद में ग़फ़लत न करना, थककर बैठ न रहना। चुनाँचे फ़िरऔ़न के सामने दोनों अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहते ताकि अल्लाह की मदद उनका साथ दे, उन्हें क़वी और मज़बूत बना दे और फ़िरऔ़न की शान व दबदबा टाल दे। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में भी है कि मेरा पूरा और सच्चा बन्दा वह है जो पूरी उम्र मेरी याद करता रहे। फ़िरऔ़न के पास तुम मेरा पैग़ाम लेकर पहुँचो, उसने बहुत सर उठा रखा है, ख़ुदा की नाफ़रमानियों पर दिलेर हो गया है। बहुत फूल गया (यानी घमंडी हो गया) है और अपने ख़ालिक़ व मालिक को भूल गया है। उससे नर्म गुफ़्तगू करना।

देखो फ़िरऔ़न किस क़द्र बुरा है, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम किस क़द्र भले हैं, लेकिन हुक्म यह हो रहा है कि नर्मी से समझाना। हज़रत यज़ीद रक़ाशी रह. इस आयत को पढ़कर फ़रमाते हैं:

يَامَنْ يَتَحَبَّبُ اِلٰى مَنْ يُّعَادِيْهِ فَكَيْفَ مَنْ يَّتَوَلَّاهُ وَيُنَادِيْهِ.

यानी ऐ वह ख़ुदा जो दुश्मनों से भी मुहब्बत और नर्मी करता है, तेरा कैसा कुछ बर्ताव होगा उसके साथ जो तुझसे मुहब्बत करता और तुझे पुकारा करता हो।

हज़रत वहब फ़रमाते हैं कि नर्म गुफ़्तगू करने से मुराद यह है कि उससे कहना कि मेरे ग़ज़ब व गुस्से से मेरी मग़फ़िरत व रहमत बहुत बढ़ी हुई है। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि नर्म बात कहने से ख़ुदा की वह्दानियत (एक होने) की तरफ़ दावत देना है ताकि वह ला इला-ह इल्लल्लाहु का क़ायल हो जाये। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि उससे कहना तेरा रब है, तुझे मरकर ख़ुदा के वायदे पर पहुँचना है, जहाँ जन्नत व दोज़ख़ दोनों हैं। हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि उसे मेरे दरवाज़े पर ला खड़ा करो। ग़र्ज़ कि तुम उससे नर्मी और आराम से गुफ़्तगू करना ताकि उसके दिल में तुम्हारी बातें बैठ जायें, जैसे फ़रमाने ख़ुदा है:

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ.

यानी अपने रब की राह की दावत उन्हें हिक्मत और अच्छे वअ़ज़ से दे, और उन्हें बेहतरीन तरीक़े से

समझा-बुझा दे, ताकि वे समझ लें और अपनी गुमराही व बरबादी से हट जायें। या अपने ख़ुदा से डरने लगें और उसकी इताअ़त व इबादत की तरफ़ मुतवज्जह हो जायें। जैसे फ़रमान है:

لِمَنْ اَرَادَاَنْ يَّذَّكَّرَاَوْيَخْشٰى.

कि यह नसीहत उसके लिये है जो इबरत हासिल कर ले या डर जाये।

पस इबरत (सबक़ व नसीहत) हासिल करने से मुराद बुराईयों से और ख़ौफ़ की चीज़ से हट जाना और डर से मुराद इताअ़त की तरफ़ माईल हो जाना है। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि उसकी बरबादी की दुआ़ न करना जब तक कि उसके तमाम उज़्र ख़त्म न हो जायें। ज़ैद बिन अ़मर बिन नुफ़ैल के या उमैया बिन सुल्त के शे'रों में है कि ऐ ख़ुदा! तू वह है जिसने अपने फ़ज़्ल व करम से मूसा अ़लैहिस्सलाम को यह कहकर बाग़ी फ़िरऔन की तरफ़ भेजा कि उससे पूछो तो कि क्या इस आसमान को बेसुतून के तूने थाम रखा है? और तूने ही इसे बनाया है? और क्या तूने ही इसके बीच में रोशन सूरज को चढ़ाया है? जो अन्धेरे को उजाले से बदल देता है। इधर सुबह के वक़्त वह निकला उधर दुनिया से अंधकार दूर हुआ। भला बतला तो कि मिट्टी में से दाने निकालने वाला कौन है? फिर उसमें बालें पैदा करने वाला कौन है? क्या इन तमाम निशानियों से भी तू ख़ुदा को नहीं पहचान सकता?

قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ० قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ० فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ० اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ०	दोनों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! हम को यह अन्देशा है कि (कहीं) वह हम पर ज़्यादती (न) कर बैठे, या यह कि ज़्यादा शरारत (न) करने लगे। (45) इरशाद हुआ कि तुम अन्देशा न करो (क्योंकि) मैं तुम दोनों के साथ हूँ सब सुनता और देखता हूँ। (46) सो तुम उसके पास जाओ और (उससे) कहो कि हम दोनों तेरे परवर्दिगार के भेजे हुए हैं (कि हमको नबी बनाकर भेजा है), सो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे और उनको तकलीफ़ मत पहुँचा हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से (अपनी नुबुव्वत का) निशान (यानी मोजिज़ा भी) लाए हैं, और ऐसे शख़्स के लिए सलामती है जो (सीधी) राह पर चले। (47) हमारे पास यह हुक्म पहुँचा है कि (अल्लाह तआ़ला का) अ़ज़ाब उस शख़्स पर होगा जो (हक़ को) झुठलाए और (उससे) मुँह मोड़े। (48)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को ख़तरा

ख़ुदा तआ़ला के इन दोनों पैग़म्बरों ने ख़ुदा की पनाह तलब करते हुए अपनी कमज़ोरी का इज़हार रब के सामने किया कि हमें ख़ौफ़ है कि फ़िरऔन कहीं हम पर कोई ज़ुल्म न करे और बदसुलूकी से पेश न

Maktaba E Ashraf

आये। हमारी आवाज़ को दबाने के लिये जल्दी से हमें मुसीबत में मुब्तला न कर दे और हमारे साथ नाइन्साफ़ी से पेश न आये। ख़ुदावन्दे आलम की तरफ़ से उनकी तसल्ली व तशफ़्फ़ी कर दी गयी। इरशाद हुआ कि इसका कुछ ख़ौफ़ न खाओ मैं ख़ुद तुम्हारे साथ हूँ तुम्हारी और उसकी बातचीत सुनता रहूँगा और तुम्हारा हाल देखता रहूँगा। कोई बात मुझ पर छुपी नहीं रह सकती। उसकी चोटी मेरे हाथ में है, वह बग़ैर मेरी इजाज़त के साँस भी तो नहीं ले सकता। मेरे क़ब्ज़े से कभी बाहर नहीं निकल सकता। मेरी हिफ़ाज़त और नुसरत व ताईद और मदद तुम्हारे साथ है।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ की कि मुझे यह दुआ़ सिखाई जाये जो मैं फ़िरऔ़न के पास जाते हुए पढ़ लिया करूँ, तो अल्लाह तआ़ला ने यह दुआ़ तालीम फ़रमाई:

هَيَاشَراهيا.

जिसके मायने अ़रबी में हैं:

اَنَا الْحَیُّ قَبْلَ کُلِّ شَیْءٍ وَّالْحَیُّ بَعْدَ کُلِّ شَیْءٍ.

यानी मैं ही हूँ सबसे पहले ज़िन्दा और सबसे बाद भी ज़िन्दा।

फिर उन्हें बतलाया गया कि वे फ़िरऔ़न को क्या कहें। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि ये गये, दरवाज़े पर रुक कर इजाज़त माँगी, बड़ी देर के बाद इजाज़त मिली। मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. फ़रमाते हैं कि दोनों पैग़म्बर दो साल तक रोज़ाना सुबह व शाम फ़िरऔ़न के यहाँ जाते रहे, दरबानों से कहते रहे कि हम दोनों पैग़म्बरों के आने की ख़बर बादशाह से करो, लेकिन फ़िरऔ़न के ख़ौफ़ की वजह से किसी ने ख़बर न की। दो साल के बाद एक रोज़ उसके एक बेतकल्लुफ़ दोस्त ने जो बादशाह से हंसी दिल्लगी भी कर लिया करता था, कहा कि आपके दरवाज़े पर एक शख़्स खड़ा है, और एक अ़जीब मज़े की बात कह रहा है। वह कहता कि आपके सिवा उसका कोई और रब है और उसके रब ने उसे आपकी तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा है। उसने कहा क्या वह मेरे दरवाज़े पर है? उसने कहा हाँ। हुक्म दिया कि अन्दर बुला लो। चुनाँचे वह आदमी गया और दोनों पैग़म्बर दरबार में आये। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- मैं रब्बुल-आ़लमीन का रसूल हूँ। फ़िरऔ़न ने आपको पहचान लिया कि यह तो मूसा हैं।

सुद्दी रह. का बयान है कि आप मिस्र में अपने ही घर ठहरे थे। माँ और भाई ने पहले तो आपको पहचाना नहीं, घर में जो पका था वह मेहमान समझकर उनके पास ला रखा, उसके बाद पहचाना, सलाम किया। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा का मुझे हुक्म हुआ है कि मैं उस बादशाह को अल्लाह की तरफ़ बुलाऊँ और तुम्हारे बारे में फ़रमान हुआ है कि तुम मेरी ताईद करो। हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया बिस्मिल्लाह कीजिए। रात को ही दोनों साहिब बादशाह के यहाँ गये। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी लकड़ी से किवाड़ खटखटाये। फ़िरऔ़न आग-बगूला हो गया कि इतना बड़ा दिलेर आदमी कौन आ गया जो यूँ डायरेक्ट दरबार के आदाब के ख़िलाफ़ अपनी लकड़ी से मुझे जगा रहा है? दरबारियों ने कहा- जनाब कुछ नहीं, यूँही एक पागल आदमी है, कहता फिरता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि उसे मेरे सामने पेश करो। चुनाँचे हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को लिये हुए आप उसके पास गये और उससे फ़रमाया कि हम अल्लाह के रसूल हैं, तू हमारे साथ बनी इस्राईल को भेज दे, उन्हें सज़ायें न दे। हम रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से अपनी रिसालत की दलीलें और मोजिज़े लेकर आये हैं। अगर तू हमारी बात मान ले तो तुझ पर ख़ुदा की तरफ़ से सलामती नाज़िल होगी। रसूले करीम सल्ल. ने भी जो ख़त रोम

Maktab E Ashraf

के बादशाह हिरक़्ल के नाम लिखा था, उसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के बाद यह मज़मून था कि यह ख़त मुहम्मद की तरफ़ से शाहे रोम हिरक़्ल के नाम है, जो हिदायत की पैरवी करे उस पर सलाम हो। उसके बाद यह कि तुम इस्लाम क़बूल कर लो तो सलामत रहोगे। अल्लाह तआ़ला दोहरा अज्र इनायत फ़रमायेगा।

मुसैलमा कज़्ज़ाब ने हुज़ूरे पाक ख़त्मुल-मुर्सलीन सल्ल. को एक ख़त लिखा था। जिसमें तहरीर था कि यह ख़त ख़ुदा के रसूल मुसैलमा की जानिब से ख़ुदा के रसूल मुहम्मद के नाम है। आप पर सलाम हो, मैंने आपको अपने काम में शरीक कर लिया है। शहरी आपके लिये और देहाती मेरे लिये। यह क़ुरैशी तो बड़े ही ज़ालिम लोग हैं। इसके जवाब में हुज़ूरे पाक सल्ल. ने उसे लिखा कि यह ख़त मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से मुसैलमा कज़्ज़ाब (झूठे) के नाम है। सलाम हो उन पर जो हिदायत की ताबेदारी करें। सुन ले ज़मीन अल्लाह की मिल्कियत है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे इसका वारिस बनाता है। अन्जाम के लिहाज़ से भले लोग वे हैं जिनके दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से भरे हों।

ग़र्ज़ कि पैग़म्बरे ख़ुदा कलीमुल्लाह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने भी फ़िरऔ़न से यही कहा कि सलामती उन पर है जो हिदायत की पैरवी करने वाले हों। फिर फ़रमाता है कि हमें अल्लाह की 'वही' के ज़रिये यह बात मालूम कराई गयी है कि अ़ज़ाब के लायक़ सिर्फ़ वही लोग हैं जो ख़ुदा के कलाम को झुठलायें और ख़ुदा की बातों के मानने से इनकार कर जायें। जैसे इरशाद है:

فَاَمَّا مَنْ طَغٰى وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى.

जो शख़्स सरकशी (नाफ़रमानी) करे और दुनिया की ज़िन्दगानी पर रीझकर इसी को पसन्द करे, उसका आख़िरी ठिकाना जहन्नम ही है।

दूसरी आयतों में है कि मैं तुम्हें शोले मारने वाली आग यानी जहन्नम से डरा रहा हूँ जिसमें सिर्फ़ वे बदबख़्त दाख़िल होंगे जो झुठलायें और मुँह मोड़ लें। एक और आयत में है कि उसने न तो मान कर दिया न नमाज़ अदा की, बल्कि दिल से मुन्किर रहा और काम फ़रमान के ख़िलाफ़ किये।

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ٥ قَالَ رَبُّنَا
الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ
هَدٰى ٥ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ٥
قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا
يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ٥

वह कहने लगा कि फिर (यह बतलाओ कि) तुम दोनों का रब कौन है? ऐ मूसा! (49) (मूसा ने) कहा कि हमारा (सबका) रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके मुनासिब बनावट अ़ता फ़रमाई, फिर रहनुमाई फ़रमाई। (50) (फ़िरऔ़न ने कहा) अच्छा तो पहले लोगों का क्या हाल हुआ। (51) (मूसा ने) फ़रमाया कि उन (लोगों) का इल्म मेरे रब के पास (आमाल के) दफ़्तर में (महफ़ूज़) है, मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है। (52)

फ़िरऔ़न के सवालात

चूँकि यह नामाक़ूल और बदबख़्त यानी मिस्र का फ़िरऔ़न अल्लाह तआ़ला के वजूद का मुन्किर था।

पैग़म्बरे ख़ुदा कलीमुल्लाह की ज़बानी सुनकर वजूदे ख़ालिक़ के इनकार के तौर पर सवाल करने लगा कि तुम्हें भेजने वाला और तुम्हारा रब कौन है? मैं तो उसे नहीं जानता, न उसे मानता हूँ। बल्कि मेरी जानकारी में तो तुम सबका रब मेरे सिवा और कोई नहीं। ख़ुदा के सच्चे रसूल ने जवाब दिया कि हमारा रब वह है जिसने हर शख़्स को उसका जोड़ा अ़ता फ़रमाया है। इनसान को इनसान की सूरत में, गधे को उसकी सूरत पर, बकरी को एक अलग सूरत पर पैदा फ़रमाया है। हर एक को उसकी मख़्सूस सूरत में बनाया है। हर एक की पैदाईश निराली शान से दुरुस्त कर दी है। इनसानी पैदाईश का तरीक़ा अलग है, जानवरों का अलग सूरत में हैं, दरिन्दे अलग सूरत व शक्ल में हैं। हर एक के जोड़े को बनाने का अन्दाज़ और उसकी शक्ल व सूरत अलग है। खाना पीना, खाने पीने की चीज़ें, जोड़े सब अलग-अलग और नुमायाँ व मख़्सूस हैं। हर एक का अन्दाज़ा मुक़र्रर करके फिर उसकी तरकीब उसे बतला दी है। अ़मल, मुद्दत, रिज़्क़, उसकी मात्रा मुक़र्रर करके उसी पर लगा दिया है। व्यवस्था के साथ सारी मख़्लूक़ का कारख़ाना चल रहा है। कोई उससे इधर-उधर नहीं हो सकता। मख़्लूक़ का पैदा करने और बनाने वाला, तक़दीरों का मुक़र्रर करने वाला, अपने इरादे पर मख़्लूक़ की पैदाईश करने वाला ही हमारा रब है।

यह सब सुनकर उस बेसमझ ने पूछा कि अच्छा फिर उनका क्या हाल होना है जो हमसे पहले थे और ख़ुदा की इबादत के मुन्किर थे? इस सवाल को उसने अहमियत के साथ किया, लेकिन ख़ुदा के पैग़म्बर ने ऐसा जवाब दिया कि आ़जिज़ हो गया। फ़रमाया उन सबका इल्म मेरे रब को है। लौह-ए-महफ़ूज़ में उनके आमाल लिखे हुए हैं। जज़ा व सज़ा (अच्छे बुरे बदले) का दिन मुक़र्रर है। न वह ग़लती करता है कि कोई छोटा बड़ा उसकी पकड़ से छूट जाये, न भूलता है कि मुजरिम उसकी गिरफ़्त से रह जाये। उसका इल्म तमाम चीज़ों को अपने में घेरे हुए है। उसकी ज़ात भूल चूक से पाक है। न उसके इल्म से कोई बाहर न इल्म के बाद भूल जाना उसकी सिफ़त, वह इल्म की कमी और भूल के नुक़्स से पाक है।

वह (रब) ऐसा है जिसने तुम लोगों के लिए ज़मीन को फ़र्श (की तरह) बनाया, और इस (ज़मीन) में तुम्हारे (चलने के) वास्ते रास्ते बनाए और आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उस (पानी) के ज़रिये से (मुख़्तलिफ़) क़िस्मों के नबातात "यानी पेड़-पौधे, हरियाली और सब्ज़ियाँ" पैदा किये। (53) (और तुमको इजाज़त दी कि) ख़ुद (भी) खाओ और अपने मवेशियों को (भी) चराओ। इन सब चीज़ों में अ़क़्ल वालों के वास्ते (अल्लाह की क़ुदरत की) निशानियाँ हैं। (54) हमने तुमको इसी ज़मीन से पैदा किया, और इसी में हम तुमको (मौत के बाद) ले जाएँगे और (क़ियामत के दिन) फिर दोबारा	الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِیْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰی ۝ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی النُّهٰی ۝ ع

Maktab E Ashraf

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ٥ وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ٥	इसी से हम तुमको निकालेंगे। (55) और हमने उस (फ़िरऔन) को अपनी (वे) सब ही निशानियाँ दिखलाईं सो (जब भी) वह झुठलाता ही रहा और इनकार ही करता रहा। (56)

कुछ निशानियाँ

मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के सवाल के जवाब में ख़ुदा तआ़ला की सिफ़तें बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि उसी ख़ुदा ने ज़मीन को लोगों के लिये फ़र्श बनाया है। ज़मीन को ख़ुदा तआ़ला ने बतौर फ़र्श के बना दी है कि तुम इस पर ठहरे हुए हो। इसी पर सोते बैठते, रहते सहते हो। उसने ज़मीन में तुम्हारे चलने फिरने और सफ़र करने के लिये रास्ते बना दिये हैं ताकि तुम रास्ता न भूलो और मन्ज़िले मक़सूद तक आसानी से पहुँच सको। वही आसमान से बारिश बरसाता है और उसकी वजह से ज़मीन से हर क़िस्म की पैदावार उगाता है। खेतियाँ, बाग़ात, मेवे तरह-तरह के ज़ायक़ेदार ताकि तुम ख़ुद खाओ और अपने जानवरों को चारा भी दो। तुम्हारा खाना और मेवे तुम्हारे जानवरों का चारा ख़ुश्क और तर सब उसी से ख़ुदा तआ़ला पैदा करता है। जिनकी अ़क़्लें सही सालिम हैं उनके लिये तो क़ुदरत की ये तमाम निशानियाँ दलील हैं ख़ुदा की ख़ुदाई और उसकी वह्दानियत (एक ख़ुदा होने) और उसके वजूद पर। इसी ज़मीन से हमने तुम्हें पैदा फ़रमाया, तुम्हारी शुरूआ़त इसी से है। इसलिये कि तुम्हारे बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश इसी से हुई है। इसी में तुम्हें फिर लौटना है। मरकर इसी में दफ़न होना है। इसी से फिर क़ियामत के दिन खड़े किये जाओगे। हमारी पुकार पर हमारी तारीफ़ें करते हुए उठोगे और यक़ीन कर लोगे कि तुम बहुत ही थोड़ी देर रहे। जैसे एक और आयत में है कि इसी ज़मीन पर तुम्हारी ज़िन्दगी गुज़रेगी, मरकर भी इसी में जाओगे, फिर इसी में से निकाले जाओगे। सुनन की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक मय्यित के दफ़न के बाद उसकी क़ब्र पर मिट्टी देते हुए पहली बार फ़रमायाः

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ.

"मिन्हा ख़लक़्नाकुम" (हमने तुम्हें इसी से पैदा किया)। दूसरी लप डालते हुए फ़रमायाः

وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ.

"व फ़ीहा नुअ़ीदुकुम" (और इसी में हम तुमको लौटायेंगे)। तीसरी बार फ़रमायाः

وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى.

"व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन् उख़्रा" (और इसी से हम तुम्हें दोबारा फिर निकालेंगे)।

नोटः जब किसी मय्यित को दफ़नायें तो सुन्नत तरीक़ा यही है कि तीन लप भरकर क़ब्र में डालें और लिखी हुई दुआ़यें हर हर लप पर पढ़ते जायें। इसी वजह से हमने उनका हिन्दी उच्चारण और अलफ़ाज़ भी लिख दिये हैं।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

ग़र्ज़ कि फ़िरऔन के सामने दलीलें आ चुकीं, उसने मोजिज़े और निशान देख लिये, लेकिन सबका

Maktab E Ashraf

इनकार किया और झुठलाता रहा। कुफ़्र, नाफ़रमानी, ज़िद और तकब्बुर से बाज़ न आया। जैसे फ़रमान है:

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا.

यानी इसके बावजूद कि उनके दिलों में यक़ीन हो चुका था, लेकिन फिर भी ज़ुल्म व ज़्यादती के सबब इनकार से बाज़ न आये।

قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ۝ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝ قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۝

(और) कहने लगा (ऐ मूसा!) तुम हमारे पास इस वास्ते आए हो-(गे) कि हमको हमारे मुल्क से अपने जादू (के ज़ोर) से निकाल बाहर करो। (57) सो अब हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाते हैं, तुम हमारे और अपने दरमियान एक वायदा मुक़र्रर कर लो जिसको न हम ख़िलाफ़ करें और न तुम (ख़िलाफ़ करो) किसी हमवार मैदान में (ताकि सब देख लें)। (58) (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, तुम्हारे (मुक़ाबले के) वायदे का वक़्त तो वह दिन है जिसमें (तुम्हारा) मेला होता है, और (जिसमें) दिन चढ़े लोग जमा हो जाते हैं। (59)

हक़ स्पष्ट होने के बाद भी हठधर्मी, विरोध और बैर

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का मोजिज़ा लकड़ी का साँप बन जाना, हाथ का रोशन हो जाना वग़ैरह देखकर फ़िरऔन ने कहा कि यह तो जादू है, और तू जादू के ज़ोर से हमारा मुल्क छीनना चाहता है। तो तू मग़रूर न हो, हम भी इस जादू में तेरा मुक़ाबला कर सकते हैं। दिन और जगह मुक़र्रर हो जाये और मुक़ाबला हो जाये। हम भी उस दिन उस जगह आ जायें और तू भी, ऐसा न हो कि कोई न आये, खुले मैदान में सबके सामने हार-जीत का फ़ैसला हो जाये। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुझे मन्ज़ूर है और मेरे ख़्याल से तो इसके लिये तुम्हारी ईद का दिन मुनासिब है। क्योंकि वह ख़ुशी और तफ़रीह का दिन होता है, सब आ जायेंगे और देखकर हक़ व बातिल में फ़र्क़ कर लेंगे। मोजिज़े और जादू का फ़र्क़ सब पर ज़ाहिर हो जायेगा। वक़्त दिन चढ़े का रखना चाहिये ताकि जो कुछ मैदान में आये सब देख सकें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उनके मेले और ईद का दिन आ़शूरा (यानी मुहर्रम की दस तारीख़) का दिन था। यह याद रहे कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ऐसे मौक़ों पर कभी पीछे नहीं रहते। ऐसा काम करते हैं जिससे हक़ साफ़ वाज़ेह हो जाये और हर एक पर खुल जाये। इसी लिये आपने उनकी ईद का दिन मुक़र्रर किया, वक़्त दिन चढ़े का बतलाया और साफ़ हमवार मैदान मुक़र्रर किया कि जहाँ से हर एक देख सके और जो बातें हों सुन सके। वहब बिन मुनब्बेह फ़रमाते हैं कि फ़िरऔन ने मोहलत चाही, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इनकार किया। इस पर 'वही' उतरी कि मुद्दत मुक़र्रर कर लो। फ़िरऔन ने चालीस दिन की मोहलत माँगी जो मन्ज़ूर की गयी।

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ○ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ○ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ○ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ○ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ○	ग़र्ज़ कि (यह सुनकर) फ़िरऔन (दरबार से अपनी जगह) लौट गया, फिर अपने मक्र (यानी जादू) का सामान जमा करना शुरू किया, फिर आया। (60) (उस वक़्त) मूसा ने उन (जादूगर) लोगों से फ़रमाया कि ऐ कमबख़्ती मारो! अल्लाह तआ़ला पर झूठ मत बाँधो, कभी वह (यानी ख़ुदा तआ़ला) तुमको (किसी क़िस्म की) सज़ा से बिल्कुल नेस्तनाबूद ही कर दे, और जो झूठ बाँधता है वह (आख़िरकार) नाकाम रहता है। (61) पस वे (जादूगर) यह बात सुनकर आपस में अपनी राय में इख़्तिलाफ़ करने लगे, और ख़ुफ़िया गुफ़्तगू करते रहे। (62) (आख़िर कार सब मुत्तफ़िक़ होकर) कहने लगे कि बेशक ये दोनों जादूगर हैं, इनका मतलब यह है कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारी सरज़मीन से निकाल बाहर करें, और तुम्हारे उम्दा (मज़हबी) तरीक़े का दफ़्तर ही उठा दें। (63) सो अब तुम मिल कर अपनी तदबीर का इन्तिज़ाम करो और सफ़ें बना करके (मुक़ाबले में) आओ, और आज वही कामयाब है जो ग़ालिब हो। (64)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की नसीहत

जबकि मुक़ाबला होना मुक़र्रर हो गया। दिन, वक़्त और जगह भी मुतैयन हो गयी तो फ़िरऔन ने इधर उधर से जादूगरों को जमा करना शुरू किया। उस ज़माने में जादू का बहुत ज़ोर था और बड़े-बड़े जादूगर मौजूद थे। फ़िरऔन ने आ़म तौर से हुक्म जारी कर दिया था कि तमाम होशियार जादूगरों को मेरे पास भेज दो। निर्धारित वक़्त तक तमाम जादूगर जमा हो गये। फ़िरऔन ने उसी मैदान में अपना तख़्त निकलवाया। उस पर बैठा, तमाम सरदार और वज़ीर लोग अपनी-अपनी जगह बैठ गये। तमाम पब्लिक जमा हो गयी, जादूगरों की सफ़ें की सफ़ें परा बाँधे तख़्त के आगे खड़े हो गयीं। फ़िरऔन ने उनकी कमर ठोकनी शुरू की और कहा देखो आज अपना वह हुनर और फ़न दिखाओ कि दुनिया में यादगार रह जाये। जादूगरों ने कहा अगर हम बाज़ी ले जायें तो हमें कुछ इनाम भी मिलेगा? कहा क्यों नहीं? मैं तो तुम्हें अपना ख़ास दरबारी बना लूँगा। उधर से कलीमे ख़ुदा हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें तब्लीग़ शुरू की कि देखो अल्लाह पर झूठ न बाँधो वरना तुम्हारे बुरे आमाल की शामत तुम्हें बरबाद कर देगी। लोगों की आँखों में ख़ाक न झोंको, कि वास्तव में कुछ न हो और तुम अपने जादू से बहुत कुछ दिखा दो। ख़ुदा के सिवा कोई ख़ालिक़ नहीं,

जो हक़ीक़त में किसी चीज़ को पैदा कर सके। याद रखो झूठे लोग कामयाबी नहीं पाते हैं। बाज़ों ने कहा नहीं! बल्कि यह जादूगर है, मुक़ाबला करो। ये बातें बहुत ही एहतियात और आहिस्तगी से की गयीं।

अब वे बुलन्द आवाज़ से कहने लगे कि ये दोनों भाई पहुँचे हुए जादूगर हैं। इस वक़्त तो तुम्हारी हवा बंधी हुई है। बादशाह की निकटता नसीब है, माल व दौलत क़दमों तले लौट रहा है, लेकिन आज अगर ये बाज़ी ले गये तो ज़ाहिर है कि रियासत इन्हीं की हो जायेगी तुम्हें मुल्क से निकाल देंगे। अ़वाम इनके मातहत हो जायेंगे, इनका ज़ोर बंध जायेगा। बादशाहत छीन लेंगे और साथ ही तुम्हारे मज़हब को मलियामेट कर देंगे। बादशाहत, ऐश व आराम सब चीज़ें तुमसे छिन जायेंगी। शराफ़त, अ़क्लमन्दी, रियासत यह इनके क़ब्ज़े में आ जायेगी, तुम यूँही रह जाओगे। तुम्हारे सरदार और सम्मानित लोग ज़लील हो जायेंगे, अमीर फ़क़ीर बन जायेंगे, सारी रौनक़ और बहार जाती रहेगी। बनी इस्राईल जो तुम्हारे गुलाम-बाँदी बने हुए हैं यह सब उनके साथ हो जायेंगे और तुम्हारी हुकूमत ख़त्म हो जायेगी। तुम सब इत्तिफ़ाक़ कर लो, इनके मुक़ाबले में सफ़-बन्दी करके (लामबद्ध होकर) अपना कोई फ़न बाक़ी न रखो, जी खोलकर होशियारी और दानाई से अपने जादू के ज़ोर से इसे दबा लो। एक ही बार में हर उस्ताद अपनी कारीगरी और फ़न दिखा दे, ताकि मैदान हमारे जादू से भर जाये। देखो वह जीत गया तो यह रियासत इसी की हो जायेगी। और अगर हम ग़ालिब आ गये तो तुम सुन चुके हो कि बादशाह हमें अपना क़रीबी और दरबारे ख़ास के सदस्यों में से बना देगा।

फिर उन्होंने कहा कि ऐ मूसा! तुम अपनी (लाठी) पहले डालोगे या हम पहले डालने वाले बनें। (65) आपने फ़रमाया- नहीं तुम ही पहले डालो, पस यकायक उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ उनकी नज़रबन्दी से उनके (यानी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के) ख़्याल में ऐसी मालूम होने लगीं जैसे (साँप की तरह चलती) दौड़ती हों। (66) सो मूसा के दिल में थोड़ा-सा ख़ौफ़ हुआ। (67) हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे। (68) और (इसकी सूरत यह है कि) तुम्हारे दाहिने हाथ में जो (लाठी) है उसको डाल दो, इन लोगों ने जो कुछ (साँग) बनाया है यह (लाठी) सबको निगल जाएगी, यह जो कुछ उन्होंने बनाया है जादूगरों का साँग है, और जादूगर कहीं जाए (मोजिज़े के मुक़ाबले में कभी) कामयाब नहीं होता। (69) सो जादूगर सज्दे में गिर गए (और बुलन्द आवाज़ से) कहा कि हम ईमान ले आए हारून और मूसा के परवर्दिगार पर। (70)	قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ۝ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ۝ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ۝ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ۝ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ۝ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ۝

Maktab E Ashraf

जादू वह जो सर चढ़कर बोले

जादूगरों ने मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा कि अब बतलाओ तुम अपना वार पहले करते हो या हम पहल करें? इसके जवाब में ख़ुदा के पैग़म्बर ने फ़रमाया तुम ही पहले अपने दिल की भड़ास निकाल लो, ताकि दुनिया देख ले कि तुमने क्या किया? और फिर ख़ुदा ने तुम्हारे किये को किस तरह मिटा दिया। उसी वक़्त उन्होंने अपनी लकड़ियाँ और रस्सियाँ मैदान में डाल दीं, कुछ ऐसा मालूम होने लगा कि गोया वे साँप बनकर चल-फिर रही और मैदान में दौड़-भाग रही हैं। कहने लगे फ़िरऔ़न के इक़बाल से ग़ालिब हम ही रहेंगे। लोगों की आँखों पर जादू करके उन्हें ख़ौफ़ज़दा कर दिया और जादू के ज़बरदस्त करतब भी दिखा दिये थे, ये लोग बहुत ज़्यादा थे। उनकी फेंकी हुई रस्सियों और लाठियों से अब सारा का सारा मैदान उन साँपों से भर गया। वे आपस में गद-बद करके ऊपर तले होने लगे।

इस मन्ज़र ने मूसा अ़लैहिस्सलाम को ख़ौफ़ज़दा (भयभीत) कर दिया कि कहीं ऐसा न हो लोग इनके करतब के क़ायल हो जायें और इस बातिल में फंस जायें। उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने 'वही' नाज़िल फ़रमाई कि अपने दाहिने हाथ की लकड़ी को मैदान में डाल दो, परेशान न होओ। आपने अल्लाह के हुक्म का पालन करते हुए ऐसा किया, यह लकड़ी एक ज़बरदस्त बेमिसाल अज़्दहा बन गयी। जिसके पैर भी थे और सर भी था। कुचलियाँ और दाँत भी थे, उसने सबके देखते सारे मैदान को साफ़ कर दिया। उसमें जादूगरों के जितने करतब थे सबको हड़प कर लिया। अब सब पर हक़ स्पष्ट हो गया। मोजिज़े और जादू में तमीज़ (फ़र्क़) हो गयी। हक़ व बातिल में पहचान हो गयी। सबने जान लिया कि जादूगरों की बनावट में असलियत कुछ भी न थी, वास्तव में जादूगर कोई चाल चलें लेकिन उसमें ग़ालिब नहीं आ सकते। मजमूआ़ इब्ने अबी हातिम में हदीस है, तिर्मिज़ी में भी मौक़ूफ़न और मरफ़ूअ़न मौजूद है कि जादूगरों को जहाँ पकड़ो मार डालो। फिर आपने यही जुमला तिलावत फ़रमाया यानी जहाँ पाया जाये अमन न दिया जाये।

जादूगरों ने जब यह देखा उन्हें यक़ीन हो गया कि यह काम इनसानी ताक़त से बाहर है। वे जादू के फ़न के माहिर थे, एक ही निगाह में पहचान गये कि वाक़ई यह उस ख़ुदा का काम है जिसके फ़रमान अटल हैं, जो कुछ वह चाहे उसके हुक्म से हो जाता है, उसके इरादे से मुराद जुदा नहीं। इसका इतना कामिल यक़ीन उन्हें हो गया कि उसी वक़्त उसी मैदान में सबके सामने बादशाह की मौजूदगी में वे ख़ुदा के सामने सज्दे में गिर गये और पुकार उठे कि हम रब्बुल-आ़लमीन पर यानी हारून और मूसा के परवर्दिगार पर ईमान लाये। सुब्हानल्लाह! सुबह के वक़्त काफ़िर और जादूगर थे और शाम को पाकबाज़ मोमिन और राहे ख़ुदा के शहीद थे। कहते हैं कि उनकी तायदाद अस्सी हज़ार, सत्तर हज़ार, कुछ ऊपर तीस हज़ार, उन्नीस हज़ार, पन्द्रह हज़ार या बारह हज़ार की थी (यानी उनकी संख्या के बारे में अनेक और विभिन्न क़ौल हैं)। यह भी नक़ल किया गया है कि ये सत्तर थे, सुबह जादूगर शाम को शहीद। रिवायत है कि जब ये सज्दे में गिरे हैं ख़ुदा तआ़ला ने उन्हें जन्नत दिखा दी और उन्होंने अपनी मन्ज़िलें (जन्नत में अपने ठिकाने और महल) अपनी आँखों से देख लीं।

(फ़िरऔ़न ने) कहा कि इसके बिना ही कि मैं तुम को इजाज़त दूँ (यानी मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़) तुम इस पर (यानी मूसा पर) ईमान ले	قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ط اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ج

Maktab E Ashraf

فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ ۡ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ۝ قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَاجَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ؕ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَلَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝

आए? वाक़ई (मालूम होता है कि) वह (जादू में) तुम्हारे भी बड़े हैं, कि उन्होंने तुम को जादू सिखलाया है, सो मैं तुम सबके हाथ-पाँव कटवाता हूँ, एक तरफ़ का हाथ और एक तरफ़ का पाँव, और तुम सबको खजूरों के पेड़ पर टँगवाता हूँ। और यह भी तुमको मालूम हुआ जाता है कि हम दोनों में (यानी मुझमें और मूसा के रब में) किसका अज़ाब ज़्यादा सख़्त और देरपा है। (71) उन लोगों ने (साफ़) जवाब (दे) दिया कि हम तुझको कभी तरजीह न देंगे उन दलीलों के मुक़ाबले में जो हमको मिली हैं, और उस ज़ात के मुक़ाबले में जिसने हम को पैदा किया है, तुझको जो कुछ करना हो (दिल खोलकर) कर डाल। तू सिवाय इसके कि इस दुनियावी ज़िन्दगी में कुछ कर ले और कर ही क्या सकता है। (72) अब तो हम अपने रब पर ईमान ला चुके हैं ताकि हमारे (पिछले) गुनाह (कुफ़्र वग़ैरह) माफ़ कर दें, और तूने जो जादू (के पेश करने) में हम पर ज़ोर डाला (उसको भी माफ़ कर दें) और अल्लाह तआ़ला (तुझसे) लाख दर्जे अच्छे और ज़्यादा बक़ा वाले हैं। (73)

फ़िरऔ़न बदबख़्त ने हक़ को क़बूल नहीं किया

खुदा की शान देखिये, चाहिये तो यह था कि फ़िरऔ़न अब राहे रास्त पर आ जाता, जिनको उसने मुक़ाबले के लिये बुलवाया था वे आ़म मजमे में हारे, उन्होंने अपनी हार मान ली, अपने करतूत को जादू और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मोजिज़े को खुदा की तरफ़ से अ़ता किया हुआ मोजिज़ा तस्लीम कर लिया। खुद वे ईमान लाये जो मुक़ाबले के लिये गये थे। आ़म मजमे में सब के सामने बेझिझक उन्होंने दीने हक़ को क़बूल कर लिया। लेकिन यह अपनी शैतानी में और बढ़ गया और लगा अपनी क़ुव्वत व ताक़त दिखाने, लेकिन भला हक़ वाले माद्दी ताक़तों को समझते ही क्या हैं?

पहले तो जादूगरों के उस मुस्लिम गिरोह से कहने लगा कि मेरी इजाज़त से पहले तुम इस पर ईमान क्यों लाये? फिर ऐसा बोहतान बाँधा (यानी उन पर इल्ज़ाम लगाया) जिसका झूठ होना बिल्कुल वाज़ेह है, कि मूसा तो तुम्हारे उस्ताद हैं, उन्हीं से तुमने जादू सीखा है, तुम सब आपस में एक ही हो, मश्विरा करके हमें बरबाद करने के लिये तुमने पहले उन्हें भेजा फिर उसके मुक़ाबले में खुद आये, और अपने गुप्त समझौते के मुताबिक़ सामने हार गये और उसे जिता दिया। और फिर उसका दीन क़बूल कर लिया ताकि

Maktaba-E-Ashraf

तुम्हारी देखा-देखी मेरी प्रजा भी इस चक्कर में फंस जाये, मगर तुम्हें अपनी इस साज़बाज़ का अन्जाम अभी मालूम हो जायेगा, मैं उल्टी-सीधी तरफ़ से तुम्हारे हाथ-पाँव काटकर तुमको खजूर के तनों पर सूली दूँगा और इस बुरी तरह तुम्हारी जान लूँगा कि दूसरों के लिये इबरत (सबक़) हो। इसी बादशाह ने सबसे पहले यह सज़ा दी है। तुम जो अपने आपको हिदायत (सही रास्ते) पर और मुझे और मेरी क़ौम को गुमराही पर समझते हो, इसका हाल अभी तुम्हें मालूम हो जायेगा कि हमेशा का अ़ज़ाब किस पर आता है।

इस धमकी का ख़ुदा के उन वलियों पर उल्टा असर हुआ। अपने ईमान में कामिल बन गये, निहायत बेपरवाही से जवाब दिया कि उस हिदायत व यक़ीन के मुक़ाबले में जो हमें अब ख़ुदा की तरफ़ से हासिल हुआ है, हम तेरा मज़हब किसी तरह क़बूल नहीं करेंगे, न तुझे हम अपने सच्चे ख़ालिक़ मालिक के सामने कोई चीज़ समझेंगे। यह भी मुम्किन है कि यह जुमला क़सम हो। यानी उस ख़ुदा की क़सम जिसने हमें शुरू में पैदा किया है कि हम इन खुली दलीलों पर तेरी गुमराही को तरजीह दे ही नहीं सकते, चाहे तू हमारे साथ कुछ भी करे। इबादत का मुस्तहिक़ वह है जिसने हमें बनाया, न कि तू जो ख़ुद उसी का बनाया हुआ है। तुझे जो करना हो उसमें कमी न कर, तू तो हमें उसी वक़्त तक सज़ायें दे सकता है जब तक हम दुनिया की ज़िन्दगी की क़ैद में हैं। हमें यक़ीन है कि उसके बाद हमेशा की राहत और ग़ैर-फ़ानी (कभी ख़त्म न होने वाली) ख़ुशी व मुसर्रत नसीब होगी। हम अपने रब पर ईमान लाये हैं, हमें उम्मीद है कि वह हमारे पिछले तमाम क़ुसूरों को माफ़ फ़रमा देगा। विशेष तौर पर यह क़ुसूर जो हमसे ख़ुदा के सच्चे नबी के मुक़ाबले पर जादू बाज़ी करने का हुआ है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि फ़िरऔन ने बनी इस्राईल के चालीस बच्चे लेकर उन्हें जादूगरों के सुपुर्द किया था कि इन्हें जादू की पूरी तालीम दो। अब लड़के यह बात कह रहे हैं कि तूने हमसे जब जादूगरी की ख़िदमत ली। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद रज़ि. का क़ौल भी यही है।

फिर फ़रमाया कि हमारे लिये तेरे मुक़ाबले में अल्लाह बहुत बेहतर है, और हमेशा का सवाब देने वाला है। न हमें तेरी सज़ाओं से डर न तेरे इनाम का लालच। अल्लाह तआ़ला की ज़ात ही इस लायक़ है कि उसकी इबादत व इताअ़त की जाये, उसी के अ़ज़ाब हमेशगी वाले और सख़्त ख़तरनाक हैं अगर उसकी नाफ़रमानी की जाये। पस फ़िरऔन ने भी उनके साथ यह किया कि सबके हाथ-पाँव उल्टी-सीधी तरफ़ से काटकर सूली पर चढ़ा दिया। वह जमाअ़त जो सूरज के निकलने के वक़्त काफ़िर थी, वही जमाअ़त सूरज डूबने से पहले मोमिन और शहीद थी। उन सब पर अल्लाह की बेशुमार रहमतें हों।

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ ۚ
لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝ وَمَنْ يَأْتِهِ
مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ
الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ ۝ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ
جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّىٰ ۝ ع

जो शख़्स (बग़ावत का) मुजरिम होकर अपने रब के पास हाज़िर होगा सो उसके लिए दोज़ख़ (मुक़र्रर) है, उसमें न मरेगा ही और न ज़िन्दा ही रहेगा। (74) और जो शख़्स रब के पास मोमिन होकर हाज़िर होगा, जिसने नेक काम भी किए हों, सो ऐसों के लिए बड़े ऊँचे दर्जे हैं। (75) (यानी) हमेशा-हमेशा रहने के बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे, और जो शख़्स (कुफ़्र व गुनाहों से) पाक हो उसका यही इनाम है। (76)

Maktaba E Ashraf

जन्नतुल-फ़िरदौस

बाज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि जादूगरों ने ईमान क़बूल फ़रमाकर जो नसीहतें कीं उन्हीं में से ये आयतें भी हैं। उसे अल्लाह के अ़ज़ाब से डरा रहे हैं और अल्लाह की नेमतों का लालच दिला रहे हैं। कि गुनाहगारों का ठिकाना जहन्नम है, जहाँ मौत तो कभी आने ही की नहीं, लेकिन ज़िन्दगी भी बड़ी ही मशक़्क़त वाली होगी जो मौत से बदतर होगी। जैसे फ़रमान है:

لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا....... الخ.

यानी न तो मौत ही आयेगी न अ़ज़ाब हल्के होंगे। काफ़िरों को हम इसी तरह सज़ा देते हैं।

एक और जगह है:

وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقٰى....... الخ.

यानी ख़ुदा की नसीहतों से मेहरूम वही रहेगा जो अज़ली (फ़ितरी और हमेशा का) बदबख़्त हो, जो आख़िरकार बड़ी सख़्त आग में गिरेगा, जहाँ न तो मौत आयेगी न चैन की ज़िन्दगी नसीब होगी।

एक और आयत में है कि जहन्नम में झुलसते हुए कहेंगे- ऐ दोज़ख़ के दरोग़ा! तुम दुआ़ करो कि ख़ुदा तआ़ला हमें मौत ही दे दे। लेकिन वह जवाब देगा कि यहाँ तुम्हें न मौत आयेगी न आराम की ज़िन्दगी मिलेगी। हाँ ऐसे लोग भी होंगे जिन्हें उनके गुनाहों की सज़ा में दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा। जहाँ वे जलकर कोयला हो जायेंगे। जान निकल जायेगी, फिर शफ़ाअ़त की इजाज़त के बाद उनका चूरा निकाला जायेगा, जन्नत की नहरों के किनारों पर बिखेर दिया जायेगा और जन्नतियों से फ़रमाया जायेगा कि इन पर पानी डालो, तो जिस तरह तुमने नहर के किनारे खेत के दानों को उगते हुए देखा है उसी तरह वे उगेंगे। यह सुनकर एक शख़्स कहने लगे हुज़ूर सल्ल. ने मिसाल तो ऐसी दी है गोया आप कुछ ज़माने जंगल में गुज़ार चुके हैं।

एक औरं हदीस में है कि ख़ुतबे में इस आयत की तिलावत के बाद आपने फ़रमाया था- और जो ख़ुदा से क़ियामत के दिन ईमान और नेक अ़मल के साथ जा मिला उसे ऊँचे बाला-ख़ानों (चौबारों) वाली जन्नत मिलेगी। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत के सौ दर्जे हैं, और हर दर्जे में इतना फ़ासला है जितना ज़मीन व आसमान में। सबसे ऊपर जन्नतुल-फ़िरदौस है। उसी से चारों नहरें जारी होती हैं। उसकी छत रहमान का अ़र्श है। तुम अल्लाह से जब जन्नत माँगो तो जन्नतुल-फ़िरदौस की दुआ़ किया करो। (तिर्मिज़ी)

इब्ने अबी हातिम में है, कहा जाता था कि जन्नत के सौ दर्जे हैं, हर दर्जे के फिर सौ दर्जे हैं, दो दर्जों में इतनी दूरी है जितनी आसमान व ज़मीन में। उनमें याक़ूत और मोती हैं और ज़ेवर भी। हर जन्नत में एक अमीर है, जिसकी फ़ज़ीलत और सरदारी के दूसरे क़ायल हैं। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है कि आला इल्लिय्यीन वाले ऐसे दिखाई देते हैं जैसे तुम लोग आसमान के सितारों को देखते हो। लोगों ने कहा फिर ये बुलन्द दर्जे तो नबियों के लिये ही मख़्सूस होंगे? फ़रमाया सुनो उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, ये वे लोग हैं जो अल्लाह पर ईमान लाये, नबियों को सच्चा जाना।

सुनन की हदीस में यह भी है कि अबू बक्र व उमर उन्हीं में से हैं। और कितने ही अच्छे मर्तबे वाले हैं। उन जन्नतों में हमेशा का रहना होगा, जहाँ ये हमेशा हमेशा के लिये रहेंगे। जो लोग अपने नफ़्स पाक रखें, गुनाहों से, ख़बासत और गन्दगी से और शिर्क व कुफ़्र से दूर रहें, एक अल्लाह की इबादत करते रहें,

रसूलों की इताअ़त (पैरवी) में ज़िन्दगी गुज़ार दें उनके लिये ही ये मुबारकबाद और रश्क (ईर्ष्या) के काबिल ठिकाने और इनाम हैं। या अल्लाह तू हमें भी इन्हीं कामयाब लोगों में से फ़रमा।

Maktab E Ashraf

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۝ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝	और हमने मूसा के पास 'वही' भेजी कि हमारे (उन) बन्दों (यानी बनी इस्राईल को मिस्र से) रातों-रात (बाहर) ले जाओ फिर उनके लिए दरिया में (लाठी) मारकर सूखा रास्ता बना देना, न तुमको किसी के पीछा करने का अन्देशा होगा और न और किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा। (77) पस फ़िरऔन अपने लश्करों को लेकर उनके पीछे चला, (जब सब अन्दर आ गए) तो (उस वक़्त चारों तरफ़) दरिया (का पानी सिमट कर) उन पर जैसा मिलने को था, आ मिला। (78) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को बुरी राह पर डाला और नेक राह उनको न बतलाई। (79)

अल्लाह तआ़ला का हुक्म

चूँकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के इस फ़रमान को भी फ़िरऔ़न ने टाल दिया था कि वह बनी इस्राईल को अपनी गुलामी से आज़ाद करके उन्हें हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के सुपुर्द कर दे। इसलिये अल्लाह तआ़ला ने आपको हुक्म फ़रमाया कि आप रातों-रात उनकी बेख़बरी में तमाम बनी इस्राईल को लेकर यहाँ से चले जायें। जैसा कि इसका तफ़सीली बयान क़ुरआने करीम में बहुत सी जगह पर हुआ है। चुनाँचे अल्लाह के इरशाद के अनुसार आपने बनी इस्राईल को अपने साथ लेकर यहाँ से हिजरत की। सुबह जब फ़िरऔ़नी जागे और सारे शहर में एक भी बनी इस्राईली न देखा तो फ़िरऔ़न को इत्तिला दी। वह गुस्से की वजह से चक्कर खा गया और हर तरफ़ मुनादी दौड़ाये कि लश्कर जमा हो जायें और दाँत पीस कर कहने लगा कि इस मुट्ठी भर जमाअ़त ने हमारा नाक में दम कर रखा है, आज उन सबको क़त्ल कर दूँगा। सूरज निकलते ही लश्कर आ मौजूद हुआ। उसी वक़्त ख़ुद सारे लश्कर को लेकर उनका पीछा करने के लिय रवाना हो गया। बनी इस्राईल दरिया के किनारे पहुँचे ही थे कि फ़िरऔ़नी लश्कर उन्हें दिखाई दे गया। घबराकर अपने नबी से कहने लगे लो हज़रत अब क्या होगा? सामने दरिया, पीछे फ़िरऔ़नी हैं। आपने जवाब दिया कि घबराने की कोई बात नहीं, मेरी मदद पर ख़ुद मेरा रब है। वह अभी मुझे राह दिखा देगा। उसी वक़्त अल्लाह का पैग़ाम आया कि ऐ मूसा! दरिया पर अपनी लकड़ी मार, वह हटकर तुम्हें रास्ता दे देगा। चुनाँचे आपने यह कहकर लकड़ी मारी कि ऐ दरिया! अल्लाह के हुक्म से तू हट जा। उसी वक़्त उसका पानी पत्थर की तरह इधर-उधर जम गया और बीच में रास्ते ज़ाहिर हो गये। बड़े-बड़े पहाड़ों की तरह पानी इधर-उधर खड़ा हो गया और तेज़ व ख़ुश्क हवाओं के झोंकों ने रास्तों को बिल्कुल सूखी ज़मीन के रास्तों की तरह कर दिया। न तो फ़िरऔ़न का ख़ौफ़ रहा, न दरिया में डूब जाने का ख़तरा रहा।

फ़िरऔन और उसके लश्कर वाले यह हालत देख रहे थे। फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि इन्हीं रास्तों से तुम भी पार हो जाओ। चुनाँचे ख़ुद मय तमाम लश्कर के उन्हीं रास्तों में उतर पड़ा। उनके उतरते ही पानी को बहने का हुक्म हो गया और देखते ही देखते तमाम फ़िरऔनी डूबो दिये गये। दरिया की लहरों ने उन्हें अपने अन्दर छुपा लिया। यहाँ जो फ़रमाया कि उन्हें उस चीज़ ने ढाँप लिया जिसने ढाँप लिया। यह इसलिये कि यह मशहूर और सबको मालूम है, नाम लेने की ज़रूरत नहीं, यानी दरिया की लहरों ने। इसी मज़मून जैसी यह आयत है:

Maktab E Ashraf

وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى. فَغَشّٰهَا مَا غَشّٰى.

यानी क़ौमे लूत की बस्तियों को भी उसी ने दे पटख़ा था, फिर उन पर जो तबाही आयी सो आयी।

अ़रब के शे'रों में भी ऐसी मिसालें मौजूद हैं। ग़र्ज़ कि फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को बहका दिया और सही रास्ता उन्हें न दिखाया। जिस तरह दुनिया में उन्हें उसने आगे बढ़कर दरिया में डुबोया इसी तरह आगे होकर क़ियामत के दिन उन्हें जहन्नम में जा झोंकेगा, जो बहुत बुरी जगह है।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ○ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ○ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ○

ऐ बनी इस्राईल! देखो हमने तुमको तुम्हारे (ऐसे बड़े) दुश्मन से निजात दी, और हमने तुमसे (यानी तुम्हारे पैग़म्बर से) तूर पहाड़ की दाहिनी जानिब (आने) का वायदा किया, और (वादी-ए-तीह में) हमने तुमपर 'मन्न' व 'सलवा' नाज़िल फ़रमाया। (80) (और इजाज़त दी कि) हमने जो अच्छी चीज़ें तुमको दी हैं, उनको खाओ और उस (खाने) में (शरई) हद से मत गुज़रो, कहीं मेरा ग़ज़ब तुम पर न आ जाए। और जिस शख़्स पर मेरा ग़ज़ब आ पड़ता है वह बिल्कुल गया गुज़रा हुआ। (81) और (तथा इसके साथ यह भी कि) मैं ऐसे लोगों के लिए बड़ा बख़्शने वाला भी हूँ जो तौबा कर लें और ईमान ले आएँ और नेक अ़मल करें, फिर (इसी) राह पर क़ायम (भी) रहें। (82)

बनी इस्राईल पर ख़ुदा तआ़ला के एहसानात

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने बनी इस्राईल पर जो बड़े-बड़े एहसान किये थे उन्हीं का यहाँ ज़िक्र है। उनमें से एक तो यह है कि उन्हें उनके दुश्मनों से निजात दी, यही नहीं बल्कि उनके दुश्मनों को उनकी आँखों के सामने दरिया में डुबो दिया। एक भी उनमें से बाक़ी न बचा। जैसा कि फ़रमाया:

وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ.

यानी हमने तुम्हारे देखते हुए फ़िरऔनियों को डुबो दिया।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि मदीने के यहूदियों को आशूरा (दस मुहर्रम) के दिन रोज़ा रखते हुए देखकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने उनसे इसका सबब मालूम फ़रमाया। उन्होंने जवाब दिया कि इसी दिन अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फ़िरऔन पर कामयाब किया था। आपने फ़रमाया तो हमें तुम्हारे मुक़ाबले में उनसे ज़्यादा क़ुर्ब (नज़दीकी और ताल्लुक़) है, चुनाँचे आपने मुसलमानों को उस दिन के रोज़े का हुक्म दिया। फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी हज़रत मूसा को तूर पहाड़ की दायीं जानिब का वायदा दिया। आप वहाँ गये और पीछे से बनी इस्राईल ने गौसाला परस्ती (यानी बछड़े की पूजा) शुरू कर दी जिसका बयान आगे आयेगा इन्शा-अल्लाह तआला।

इसी तरह उन पर एक एहसान यह किया कि "मन्न" व "सल्वा" खाने को दिया। इसका पूरा बयान सूरः ब-क़रह वग़ैरह की तफ़सीर में गुज़र चुका है। "मन्न" एक मीठी चीज़ थी जो उनके लिये आसमान से उतरती थी, और "सल्वा" एक क़िस्म के परिन्दे थे जो अल्लाह के हुक्म से उनके सामने आ जाते थे। एक दिन की ख़ुराक के मुवाफ़िक़ उन्हें ले लेते थे। हमारी दी हुई यह रोज़ी खाओ, इसमें हद से न गुज़र जाओ। हराम चीज़ या हराम ज़रिये से इसे तलब न करो, वरना मेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा। और जिस पर मेरा ग़ज़ब हो यक़ीन मानो कि वह बदबख़्त हो गया।

हज़रत शफ़ी बिन मातेअ़ फ़रमाते हैं कि जहन्नम में एक ऊँची जगह बनी हुई है जहाँ से काफ़िर को जहन्नम में गिराया जाता है तो ज़न्जीरों की जगह तक चालीस साल में पहुँचता है। यही मतलब इस आयत का है कि वह गड्ढे में गिर पड़ा। हाँ जो भी अपने गुनाहों से मेरे सामने तौबा करे मैं उसकी तौबा क़बूल फ़रमाता हूँ। देखो बनी इस्राईल में से जिन्होंने बछड़े की पूजा की थी उनकी तौबा के बाद ख़ुदा तआला ने उन्हें भी बख़्श दिया। ग़र्ज़ कि जिस कुफ़्र व शिर्क, गुनाह व मासियत पर कोई हो फिर वह उसे अल्लाह के ख़ौफ़ से छोड़ दे, अल्लाह तआला उसे माफ़ फ़रमा देता है। हाँ दिल में ईमान हो, नेक आमाल भी करता हो और हो भी सही रास्ते पर सुन्नते रसूल और जमाअ़ते सहाबा के तरीक़े पर, और उसमें सवाब जानता हो।

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِىْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ۝ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِىُّ ۝ فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ

और ऐ मूसा! आपको अपनी क़ौम से आगे जल्दी आने का क्या सबब हुआ? (83) उन्होंने (अपने गुमान के मुवाफ़िक़) अ़र्ज़ किया कि वे लोग यही तो हैं मेरे पीछे (पीछे आ रहे हैं) और मैं आपके पास जल्दी से (इसलिए) चला आया कि आप (ज़्यादा) ख़ुश होंगे। (84) इरशाद हुआ कि तुम्हारी क़ौम को तो हमने तुम्हारे (चले आने के) बाद (एक बला में) मुब्तला कर दिया, और उनको सामरी ने गुमराह कर दिया। (85) ग़रज़ मूसा (अ़लैहिस्सलाम मियाद पूरी करने के बाद) ग़ुस्से और रंज में भरे हुए अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आए (और) फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी क़ौम! क्या तुमसे तुम्हारे रब ने एक अच्छा वायदा नहीं किया था, क्या तुम पर मुक़र्ररा

Muftah E Ashraf

عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِىْ ۝ قَالُوْا مَآ أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِىُّ ۝ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ إِلٰهُكُمْ وَإِلٰهُ مُوْسٰى ۙ فَنَسِىَ ۝ أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۝	मियाद से (कुछ) ज़्यादा ज़माना गुज़र गया था, या तुमको यह मन्ज़ूर हुआ कि तुम पर तुम्हारे रब का गज़ब आ पड़े? इसलिए तुमने मुझसे जो वायदा किया था उसके ख़िलाफ़ किया। (86) वे कहने लगे कि हमने जो आपसे वायदा किया था उसको अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ नहीं किया, और लेकिन (क़िब्ती) क़ौम के ज़ेवर में से हम पर बोझ लद रहा था, सो हमने उसको (सामरी के कहने से आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने (भी) डाल दिया। (87) फिर उस (सामरी) ने उन लोगों के लिए एक बछड़ा (बनाकर) ज़ाहिर किया कि वह एक क़ालिब "यानी जिस्म और साँचा" था, जिसमें एक (बेमानी) आवाज़ थी, सो वे (अहमक़) लोग (एक-दूसरे से) कहने लगे कि तुम्हारा और मूसा का भी माबूद तो यह है, पस वह (यानी मूसा) तो भूल गए। (88) क्या वे लोग इतना भी नहीं देखते थे कि वह न तो उनकी किसी बात का जवाब दे सकता है और न उनके किसी नुक़सान या नफ़े पर क़ुदरत रखता है। (89)

एक सवाल और उसका जवाब

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जब दरिया पार करके निकल गये तो एक जगह पहुँचे जहाँ के लोग अपने बुतों के मुजाविर बनकर बैठे हुए थे। तो बनी इस्राईल कहने लगे ऐ मूसा! हमारे लिये भी इनकी तरह कोई माबूद मुक़र्रर कर दीजिए। आपने फ़रमाया तुम बड़े जाहिल लोग हो, ये तो बरबाद हुए लोग हैं और इनकी इबादत भी ग़लत है। फिर ख़ुदा तआ़ला ने आपको तीस रोज़ों का हुक्म दिया, फिर दस बढ़ा दिये गये, पूरे चालीस हो गये। दिन रात रोज़े से रहते। अब आप जल्दी से तूर पहाड़ की तरफ़ चले, बनी इस्राईल पर अपने भाई हारून को अपना ख़लीफ़ा (जानशीन) मुक़र्रर किया। वहाँ जब पहुँचे तो अल्लाह तआ़ला ने इस जल्दी की वजह मालूम फ़रमाई। आपने जवाब दिया कि वे भी तूर के क़रीब ही हैं, आ रहे हैं। मैंने जल्दी इसलिये की है कि तेरी रज़ामन्दी हासिल कर लूँ और उसमें बढ़ जाऊँ। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तेरे चले आने के बाद तेरी क़ौम में नया फ़ितना खड़ा हो गया और उन्होंने एक बछड़े को पूजना शुरू कर दिया है। उस बछड़े को सामरी ने बनाया और उन्हें उसकी इबादत में लगा दिया है। इस्राईली किताबों में है कि सामरी का नाम भी हारून था। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को अ़ता फ़रमाने के लिये तौरात की तख़्तियाँ लिख ली गयी थीं। जैसा कि फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ الخ

यानी हमने उसकी तख़्तियों में हर बात का नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील लिख दी थी, और कह दिया था कि इसे मज़बूती से थाम लो और अपनी क़ौम से भी कहो कि इस पर मज़बूती से अमल करें। मैं तुम्हें जल्द ही फ़ासिक़ों (बदकारों और गुनाहगारों) का अन्जाम दिखा दूँगा।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जब अपनी क़ौम की मुश्रिकाना हरकत का इल्म हुआ तो सख़्त रंज हुआ और ग़म व गुस्से में भरे हुए वहीं से वापस क़ौम की तरफ़ चले कि देखूँ इन लोगों ने ख़ुदा के इन इनामों के बावजूद ऐसे अहमक़ाना और मुश्रिकाना फ़ेल क्यों किया। रंज व ग़म और ग़ुस्से से आप भरे हुए थे। वापस आते ही कहने लगे कि देखो अल्लाह तआ़ला ने तुमसे तमाम नेक वायदे किये थे, तुम्हारे साथ बड़े-बड़े सुलूक व इनाम किये, लेकिन ज़रा सी देर में तुम अल्लाह की नेमतों को भुला बैठे, बल्कि तुमने वह हरकत की जिससे ख़ुदा का ग़ज़ब तुम पर उतर पड़ा। तुमने मुझसे जो वायदा किया था उसका बिल्कुल भी लिहाज़ न रखा। अब बनी इस्राईल माज़िरत करने लगे कि हमने यह काम अपने इख़्तियार से नहीं किया, बात यह है कि जो ज़ेवर फ़िरऔ़नियों के हमारे पास मांगे के तौर पर थे, हमने बेहतर यही समझा कि उन्हें फेंक दें। चुनाँचे हमने सबके सब फेंक दिये।

एक रिवायत में है कि ख़ुद हारून अलैहिस्सलाम ने एक गड्ढा खोदकर उसमें आग जलाकर उनसे फ़रमाया कि ये ज़ेवर सब इसमें डाल दो। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का इरादा था कि सब ज़ेवर एक जगह हो जायें और पिघल कर डला बन जायें, फिर जब मूसा अलैहिस्सलाम आ जायें जैसा वह फ़रमायें किया जाये। सामरी ने उसमें वह मुट्ठी डाल दी जो उसने ख़ुदा के क़ासिद के निशान से भरी थी, और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से कहा कि आप अल्लाह तआ़ला से दुआ कीजिए कि वह मेरी ख़्वाहिश क़बूल फ़रमा ले। आपको क्या ख़बर थी, आपने दुआ की, जो क़बूल हो गयी और उसका एक बछड़े की शक्ल का जानवर बन गया। पस इसी तरह सामरी ने भी डाल दिया।

हज़रत हारून अलैहिस्सलाम एक मर्तबा सामरी के पास से गुज़रे, वह बछड़े को ठीक-ठाक कर रहा था। आपने पूछा क्या कर रहे हो? उसने कहा वह चीज़ बना रहा हूँ जो नुक़सान दे और नफ़ा न दे। आपने दुआ की कि ख़ुदाया ख़ुद इसे ऐसा ही कर दे और आप वहीं से तशरीफ़ ले गये। सामरी की दुआ से यह बछड़ा बना और आवाज़ निकालने लगा। बनी इस्राईल बहकावे में आ गये और उसकी पूजा शुरू कर दी। उसकी आवाज़ पर यह उसके सामने सज्दे में गिर पड़ते और दूसरी आवाज़ पर सज्दे से सर उठाते। यह गिरोह दूसरे मुसलमानों को भी बहकाने लगा कि दर असल ख़ुदा यही है, मूसा भूलकर और कहीं इसकी तलाश में चल दिये हैं। वह कहना भूल गये कि तुम्हारा रब यही है। ये लोग पुजारी बनकर उसके इर्द-गिर्द बैठ गये। उनके दिलों में उसकी मुहब्बत क़ायम हो गयी। यह मायने हो सकते हैं कि सामरी अपने सच्चे ख़ुदा और अपने पाक दीन इस्लाम को भूल बैठा। उनकी बेवक़ूफ़ी देखिये कि ये इतना नहीं देखते कि यह बछड़ा तो बिल्कुल बेजान चीज़ है, उनकी किसी बात का न तो जवाब दे न सुने, न दुनिया व आख़िरत की किसी बात का उसे इख़्तियार, न कोई नफ़ा नुक़सान उसके हाथ में, बस आवाज़ निकलती थी। उसकी वजह भी सिर्फ़ यह थी कि पीछे के सुराख़ में से हवा गुज़र कर मुँह के रास्ते निकलती थी, उसी की आवाज़ आती थी। उन्होंने उस बछड़े का नाम बहमूत रख छोड़ा था। उनकी दूसरी हिमाक़त (बेवक़ूफ़ी) देखिये कि छोटे गुनाह से बचने के लिये बड़ा गुनाह कर लिया। फ़िरऔ़नियों की अमानतों से आज़ाद होने के लिये शिर्क शुरू कर

Maktab E Ashraf

दिया। यह तो नहीं मिसाल हुई कि किसी इराक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से पूछा कि कपड़े पर अगर मच्छर का ख़ून लग जाये तो नमाज़ हो जायेगी या नहीं? आपने फ़रमाया इन इराक़ियों को देखो रसूलुल्लाह की बेटी के लख़्ते जिगर (यानी इमाम हुसैन) को तो क़त्ल कर दें और मच्छर के ख़ून के मसले पूछते फिरें।

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ۝ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ۝

और उन लोगों से हारून ने (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लौटने से) पहले भी कहा था कि ऐ मेरी क़ौम! तुम इस (गौसाला) के सबब (गुमराही में) फँस गए (हो) और तुम्हारा (हक़ीक़ी) रब रहमान है, सो तुम मेरी राह पर चलो और मेरा कहना मानो। (90) उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जब तक मूसा हमारे पास वापस (होकर) आएँ इसी (की इबादत) पर (बराबर) जमे (बैठे) रहेंगे। (91)

हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की नसीहत और समझाना

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम आये, उससे पहले हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने उन्हें लाख समझाया बुझाया कि देखो फ़ितने में न पड़ो। ख़ुदा तआला के सिवा और के सामने न झुको। वह हर चीज़ का ख़ालिक़ व मालिक है। सबका अन्दाज़ा मुक़र्रर करने वाला वही है। वही अर्श का मालिक है। वही जो चाहे कर गुज़रने वाला है। तुम मेरी ताबेदारी और हुक्म का पालन करते रहो, जो मैं कहूँ वह बजा लाओ, जिससे रोकूँ रुक जाओ। लेकिन उन सरकशों ने जवाब दिया कि मूसा की सुनकर तो ख़ैर हम मान लेंगे, तब तक तो हम इसकी पूजा नहीं छोड़ेंगे। चुनाँचे लड़ने और मरने मारने के वास्ते तैयार हो गये।

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ۝ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ۝ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ۝

(मूसा ने) कहा कि ऐ हारून! जब तुमने उनको देखा था कि ये (बिल्कुल) गुमराह हो गए तो (उस वक़्त) तुमको मेरे पास चले आने से कौनसी चीज़ रोक हुई थी। (92) सो क्या तुमने मेरे कहने के ख़िलाफ़ किया। (93) (हारून ने) कहा कि ऐ मेरे माँ-जाय तुम मेरी दाढ़ी मत पकड़ो और न सर (के बाल पकड़ो) मुझे यह अन्देशा हुआ कि तुम यह कहने लगो कि तुमने बनी इस्राईल के बीच फूट डाल दी, और तुमने मेरी बात का पास न किया। (94)

गुफ़्तगू और बहस-मुबाहसा

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सख़्त गुस्से और ग़म से भरे लौटे, तख़्तियाँ ज़मीन पर डाल दीं, अपने भाई

Maktab E Ashraf

हारून की तरफ़ गुस्से से बढ़ गये और उनके सर के बाल थाम कर अपनी तरफ़ घसीटने लगे। इसका तफ़सीली बयान सूरः आराफ़ में गुज़र चुका है और वहीं वह हदीस भी बयान हो चुकी है कि किसी चीज़ का सुनना उसके देखने के बराबर नहीं होता। आपने अपने भाई और अपने जानशीन (उत्तराधिकारी) को मलामत करनी शुरू की, कि इस बुत-परस्ती के शुरू होते ही तूने मुझे क्यों ख़बर न की? जो कुछ मैं तुझे कह गया था क्या तू भी उसका उल्लंघन करने वाला बन बैठा? मैं तो साफ़ कह गया था कि मेरी क़ौम में मेरी जानशीनी कर। इस्लाह और सुधार करता रह और मुफ़सिदों (ख़राबी और बिगाड़ फैलाने वालों) की न मान।

हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम ने जवाब देते हुए कहा कि ऐ मेरे माँ जाये भाई! (यह सिर्फ़ इसलिये कहा ताकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को ज़्यादा रहम व मुहब्बत आये वरना इनके माँ-बाप अलग-अलग न थे, बाप भी एक ही थे, दोनों सगे भाई थे। आप उज़्र पेश करते हैं कि) जी में तो मेरे भी आया था कि आपके पास आकर आपको इसकी ख़बर करूँ लेकिन फिर ख़्याल आया कि इन्हें तन्हा छोड़ना मुनासिब नहीं, कहीं आप मुझ पर न बिगड़ बैठें कि इन्हें तन्हा क्यों छोड़ दिया? याक़ूब की औलाद में यह जुदाई क्यों डाल दी? और जो मैं कह गया था उसकी निगरानी क्यों न की? बात यह है कि हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम में जहाँ इताअ़त (बात मानने) का पूरा माद्दा था वहीं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की इज़्ज़त भी बहुत करते और उनका बहुत ही लिहाज़ रखते थे।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ۝ قَالَ
بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ
قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ
سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ۝ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ
لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ص وَ
اِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى
اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ط
لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝
اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط
وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

(फिर सामरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है? (95) उसने कहा कि मुझको ऐसी चीज़ नज़र आई थी जो औरों को नज़र न आई थी। फिर मैंने उस (ख़ुदा की तरफ़ से) भेजी हुई (सवारी) के नक़्शे क़दम "पैरों के निशान" से एक मुट्ठी (भर मिट्टी) उठा ली थी, सो मैंने वह मिट्टी (इस जिस्म-साँचे के अन्दर) डाल दी, और मेरे जी को यही बात पसन्द आई। (96) आपने फ़रमाया तो बस तेरे लिए इस (दुनियावी) ज़िन्दगी में यह (सज़ा) है कि तू यह कहता फिरा करेगा कि मुझको कोई हाथ न लगाना, और (इसके अलावा) तेरे लिए एक और वायदा है जो तुझसे टलने वाला नहीं। (यानी आख़िरत में अ़ज़ाब अलग होगा) और तू अपने इस (बातिल) माबूद को जिस पर तू जमा हुआ बैठा था (देख) हम इसको जला देंगे फिर इस (की राख) को दरिया में बिखेर कर बहा देंगे। (97) बस तुम्हारा (हक़ीक़ी) माबूद तो सिर्फ़ अल्लाह है जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अपने इल्म से तमाम चीज़ों को घेरे हुए है। (98)

Maktab_e_Ashraf

सामरी पर डाँट-डपट

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने सामरी से पूछा कि तूने यह फ़ितना क्यों उठाया? यह शख़्स बाजरमा का रहने वाला था, इसकी क़ौम गाय-परस्त (गाय की पूजा करने वाली) थी। इसके दिल में भी गाय की मुहब्बत बैठी हुई थी। उसने बनी इस्राईल के साथ ईमान का इज़्हार किया था। इसका नाम मूसा बिन ज़फ़र था। एक रिवायत में है कि यह किरमानी था। एक रिवायत में है कि इसकी बस्ती का नाम सामरा था।

उसने जवाब दिया कि जब फ़िरऔन की हलाकत के लिये हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम आये तो मैंने उनके घोड़े के पैरों के नीचे की थोड़ी सी मिट्टी उठा ली। अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक मशहूर बात यही है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मन्क़ूल है कि जब हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम आये और मूसा अलैहिस्सलाम को लेकर चढ़ने लगे तो सामरी ने देख लिया, उसने जल्दी से उनके घोड़े के खुर तले की मिट्टी उठा ली। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जिब्राईल आसमान तक ले गये, अल्लाह तआ़ला ने तौरात लिखी। हज़रत मूसा क़लम की तहरीर की आवाज़ सुन रहे थे, लेकिन जब आपको क़ौम की मुसीबत मालूम हुई तो नीचे उतर आये और उस बछड़े को जला दिया। लेकिन इस क़ौल की सनद ग़रीब है। उसी ख़ाक की चुटकी या मुट्ठी को उसने बनी इस्राईल के जमा किये हुए ज़ेवरों के जलने के वक़्त उनमें डाल दी जो एक बछड़े की शक्ल बन गये, और चूँकि बीच में ख़ला (ख़ाली जगह) था, वहाँ से हवा घुसती थी और उससे आवाज़ निकलती थी। हज़रत जिब्राईल को देखते ही उसके दिल में ख़्याल गुज़रा था कि मैं इसके घोड़े के टापू तले की मिट्टी उठा लूँ तो मैं जो चाहूँगा वह उस मिट्टी के डालने से बन जायेगा। उसकी उंगलियाँ उसी वक़्त सूख गयी थीं।

जब बनी इस्राईल ने देखा कि उनके पास फ़िरऔ़नियों के ज़ेवरात रह गये और फ़िरऔ़नी हलाक हो गये और उनको वापस नहीं हो सकते तो ग़मगीन होने लगे। सामरी ने कहा देखो इसकी वजह से तुम पर मुसीबत नाज़िल हुई है, इसे जमा करके आग लगा दो। जब वो जमा हो गये और आग से पिघल गये तो उसके जी में आया कि वह ख़ाक इस पर डाल दूँ और इसे बछड़े की शक्ल में बना लूँ। चुनाँचे यही हुआ और उसने कह दिया कि तुम्हारा और मूसा का रब यही है। यही वह जवाब दे रहा है कि मैंने उसे डाल दिया और मेरे दिल ने यही तरकीब मुझे अच्छी तरह समझा दी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तूने न लेने की चीज़ को हाथ लगाया, तेरी सज़ा दुनिया में यही है कि अब न तो तू किसी को हाथ लगा सकेगा न कोई और तुझे हाथ लगा सकेगा। बाक़ी सज़ा तेरी क़ियामत के दिन होगी, जिससे छुटकारा मुहाल है। उनके बक़ाया अब तक यही कहते हैं कि न छूना।

अब तू अपने ख़ुदा का हश्र भी देख ले जिसकी इबादत पर तू औंधा पड़ा हुआ था, कि हम उसे जलाकर राख कर देते हैं। चुनाँचे वह सोने का बछड़ा इस तरह जल गया जैसे ख़ून और गोश्त वाला बछड़ा **जले, फिर उसकी राख को तेज़ हवा में दरिया में ज़र्रा-ज़र्रा करके उड़ा दी।** नक़ल है कि उसने बनी इस्राईल **की औरतों के ज़ेवर** जहाँ तक उसके बस में थे, लिये, उनका बछड़ा बनाया जिसे हज़रत मूसा ने फूँक दिया **और दरिया में उसकी ख़ाक** बहा दी। जिसने भी उसका पानी पिया उसका चेहरा ज़र्द पड़ गया, इससे सारे **बछड़े के पूजने वाले मालूम** हो गये। अब उन्होंने तौबा की और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मालूम किया **कि हमारी तौबा कैसे क़बूल होगी?** हुक्म हुआ कि एक दूसरे को क़त्ल करो। इसका पूरा बयान पहले गुज़र **चुका है।**

फिर आपने फ़रमाया कि तुम्हारा माबूद यह नहीं बल्कि इबादत का हक़दार तो सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला है, बाक़ी तमाम जहान उसका मोहताज और उसके मातहत है। वह हर चीज़ का आ़लिम (जानने वाला) है। उसके इल्म ने तमाम मख़्लूक़ का इहाता (घेराव) कर रखा है। हर चीज़ की गिनती उसे मालूम है, एक ज़र्रा भी उसके इल्म से बाहर नहीं। हर पत्ते और हर दाने का उसे इल्म है, बल्कि उसके पास की किताब में वह लिखा हुआ मौजूद है। ज़मीन के तमाम जानदारों को रोज़ियाँ वही पहुँचाता है। सबकी जगह उसे मालूम है, सब कुछ खुली और स्पष्ट कि़ताब में लिखा हुआ है। अल्लाह तआ़ला का इल्म हर चीज़ पर फैला हुआ और तमाम चीज़ों को अपने घेरे में लिये हुए है। इस मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें हैं।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَاقَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۝ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ۖ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۝	(जिस तरह हमने मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान किया) इसी तरह हम आपसे और गुज़रे हुए वाक़िआ़त की ख़बरें भी बयान करते रहते हैं, और हमने आपको अपने पास से एक नसीहत-नामा भी दिया है (यानी क़ुरआन)। (99) जो लोग इससे मुँह मोड़ेंगे सो वे क़ियामत के दिन बड़ा भारी (अ़ज़ाब का) बोझ लादे होंगे। (100) (और) वे उस अ़ज़ाब में हमेशा-हमेशा रहेंगे, और यह बोझ क़ियामत के दिन उनके लिए बुरा (बोझ) होगा। (101)

पहले गुज़री उम्मतों की ख़बरें

अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि जैसे हज़रत मूसा का क़िस्सा वाक़िआ़ती रंग में आपके सामने बयान हुआ है ऐसे ही और भी गुज़रे हुए हालात हम आपके सामने बयान फ़रमा रहे हैं। हमने तो आपको क़ुरआन अ़ज़ीम दे रखा है, जिसके पास कभी बातिल नहीं फटक सकता, क्योंकि हम हिक्मत व तारीफ़ वाले हैं। किसी नबी को इससे ज़्यादा कमाल वाली और इससे ज़्यादा जामे व बरकत वाली कोई किताब नहीं मिली। हर तरह सबसे आला किताब यही कलामुल्लाह शरीफ़ है, जिसमें गुज़रे ज़माने की ख़बरें, आईन्दा के मामलात और हर काम के तरीक़े ज़िक्र किये गये हैं। इसे न मानने वाला, इससे मुँह फेरने वाला, इसके अहकाम से भागने वाला, इसके अ़लावा किसी और चीज़ में हिदायत तलाश करने वाला गुमराह और जहन्नम की तरफ़ जाने वाला है। क़ियामत के दिन वह अपना बोझ आप उठायेगा और उसमें दब जायेगा। इसके साथ जो भी कुफ़्र करे वह जहन्नमी है, किताबी हो या ग़ैर-किताबी (यानी जिनके पास पहले कोई आसमानी किताब आ चुकी या न आई), अ़जमी (अ़रब के इलाक़े से बाहर का) या अ़रबी, इसका मुन्किर जहन्नमी है। जैसा कि दूसरी जगह फ़रमान है कि मैं तुम्हें भी होशियार करने वाला हूँ और जिसे भी यह पहुँचे। पस इसके हुक्मों का पालन करने वाला हिदायत वाला और इसका मुख़ालिफ़ गुमराही व बदबख़्ती वाला है, जो यहाँ बरबाद हुआ और वहाँ दोज़ख़ी बना। उस अ़ज़ाब से उसे न तो कभी छुटकारा हासिल होगा न बच सकेगा। बुरा बोझ है जो उस पर उस दिन होगा।

Mahtab L Asraf

يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۞ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ۞ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ۞

जिस दिन सूर में फूँक मारी जाएगी (जिस से मुर्दे ज़िन्दा हो जाएँगे) और हम उस दिन मुजरिम (यानी काफ़िर) लोगों को (क़ियामत के मैदान में) इस हालत से जमा करेंगे कि (आँखों से) नीले होंगे। (102) चुपके-चुपके आपस में बातें करते होंगे कि तुम लोग (क़ब्रों में) सिर्फ़ दस दिन रहे होंगे। (103) जिस (मुद्दत) के बारे में वे बातचीत करेंगे उसको हम ख़ूब जानते हैं (कि वह किस क़द्र है) जबकि उन सब में का ज़्यादा सही राय वाला यूँ कहता होगा कि नहीं! तुम तो (क़ब्र में) एक ही दिन रहे हो। (104)

सूर का फूँका जाना

रसूले ख़ुदा सल्ल. से सवाल होता है कि सूर क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया- वह एक क़र्न (सींग के जैसा) है जो फूँका जायेगा। एक और हदीस में है कि उसका दायरा आसमानों और ज़मीन के बराबर है। हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम उसे फूँकेंगे। एक और रिवायत में है कि आपने फ़रमाया मैं कैसे आराम हासिल करूँ जबकि सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते ने सूर का लुक़्मा बना लिया है, पेशानी झुका दी है और इन्तिज़ार में है कि कब हुक्म दिया जाये। लोगों ने कहा हुज़ूर फिर हम क्या पढ़ें? फ़रमाया यह कहोः

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا.

"हस्बुनल्लाहु व नेअ्मल् वकील। अ़लल्लाहि तवक्कल्ना"

उस वक़्त तमाम लोगों का हश्र होगा (यानी सबको दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा)। डर और घबराहट की वजह से गुनाहगारों की आँखें नीली हो रही होंगी। एक दूसरे से चुपके-चुपके कह रहे होंगे कि दुनिया में तो हम बहुत ही कम रहे, ज़्यादा से ज़्यादा शायद दस दिन वहाँ गुज़रे होंगे। हम उनकी इस राज़दारी की (यानी आहिस्ता की जाने वाली) बातों को भी बख़ूबी जानते हैं। जबकि उनमें का बड़ा आ़क़िल और कामिल इनसान कहेगा कि मियाँ दस भी कहाँ के? हम तो सिर्फ़ एक दिन ही दुनिया में रहे। ग़र्ज़ कि काफ़िर को दुनिया की ज़िन्दगी एक ख़्वाब की तरह मालूम होगी। उस वक़्त वे क़समें खा-खाकर कहेंगे कि हम तो सिर्फ़ एक घड़ी ही दुनिया में ठहरे होंगे। चुनाँचे एक दूसरी आयत में है:

اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ .... الخ.

यानी क्या हमने तुम्हें इबरत हासिल करने के क़ाबिल उम्र भी न दी थी? फिर होशियार करने वाले भी तुम्हारे पास आ चुके थे। दूसरी आयतों में है कि इस सवाल पर कि तुम कितनी मुद्दत ज़मीन पर गुज़ार आये? उनका जवाब यह होगा कि एक दिन या इससे भी कम। हक़ीक़त में दुनिया भी आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसी ही है, लेकिन अगर इसी बात का पहले से यक़ीन कर लेते तो उस फ़ानी को इस बाक़ी पर, इस थोड़ी को उस बहुत पर पसन्द न करते, बल्कि आख़िरत का सामान उस दुनिया में करते।

Maktab E Ashraf

وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّىْ نَسْفًا ۝ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِىَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ۝	और लोग आपसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (कि क़ियामत में उनका क्या हाल होगा) सो आप फ़रमा दीजिए कि मेरा रब उनको बिल्कुल उड़ा देगा। (105) फिर इस (ज़मीन) को एक हमवार (यानी बराबर) मैदान कर देगा। (106) जिसमें तू (ऐ मुख़ातब!) न तो नाहमवारी देखेगा और न कोई ऊँचाई देखेगा। (107) उस दिन सब-के-सब (यानी मख़्लूक़) बुलाने वाले (यानी सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते) के कहने पर हो लेंगे, उसके सामने (किसी का) टेढ़ापन न रहेगा, और तमाम आवाज़ें (ख़ुदा-ए-) रहमान के सामने (हैबत की वजह से) दब जाएँगी, सो तू (ऐ मुख़ातब!) सिवाय पाँव की आहट के और कुछ न सुनेगा। (108)

पहाड़ों के बारे में सवाल

लोगों ने पूछा कि क़ियामत के दिन ये पहाड़ बाक़ी रहेंगे या नहीं? उनका सवाल नक़ल करके जवाब दिया जाता है कि ये हट जायेंगे और मिट जायेंगे। चलते फिरते नज़र आयेंगे और आख़िर टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। ज़मीन साफ़ चटियल हमवार मैदान की सूरत में हो जायेगी।

न इसमें कोई वादी रहेगी न टीला न ऊँच-नीच रहेगी। इन दिल हिला देने वाली बातों के साथ ही एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा जिसकी आवाज़ पर सारी मख़्लूक़ लग जायेगी, दौड़ती हुई फ़रमान के मुताबिक़ एक तरफ़ को चली जा रही होगी, न इधर उधर होगी न टेढ़ी-मेढ़ी चलेगी। काश कि यही रविश (तरीक़ा और चलन) दुनिया में रखते और ख़ुदा के अहकाम की तामील में मशग़ूल रहते, लेकिन आजकी यह रविश बिल्कुल बेफ़ायदा है। उस दिन तो ख़ूब देखने सुनने वाले बन जायेंगे और आवाज़ के साथ हुक्म का पालन करेंगे। अन्धेरी जगह में सबको उठाया जायेगा, आसमान लपेट लिया जायेगा, सितारे झड़ पड़ेंगे, सूरज चाँद मिट जायेंगे। आवाज़ देने वाले की आवाज़ पर सब चल खड़े होंगे, उस एक मैदान में सारी मख़्लूक़ जमा होगी मगर इस ग़ज़ब का सन्नाटा होगा कि अल्लाह के अदब की वजह से एक आवाज़ न उठेगी, बिल्कुल सुकून व ख़ामोशी होगी, सिर्फ़ पैरों की चाप होगी और काना-फूसी (यानी दबी आवाज़ में बातें करना)। चलकर जा रहे होंगे तो पैरों की चाप (आहट) तो लाज़िमी तौर पर होनी ही है और ख़ुदा तआ़ला की इजाज़त से कभी-कभी किसी-किसी हाल में बोलेंगे भी, लेकिन चलना भी अदब के साथ होगा और बोलना भी। जैसे कि अल्लाह का इरशाद है:

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ فَمِنْهُمْ شَقِىٌّ وَّسَعِيْدٌ.

यानी जिस दिन वे मेरे सामने हाज़िर होंगे किसी की मजाल न होगी कि बग़ैर इजाज़त के ज़बान खोल ले। बाज़ नेक होंगे और बाज़ बद (बुरे) होंगे।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ
الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ
عِلْمًا ۝ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ
وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝ وَمَن
يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا
يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۝

उस दिन (किसी को किसी की) सिफ़ारिश नफ़ा न देगी, मगर ऐसे शख़्स को कि जिसके वास्ते (ख़ुदा-ए-) रहमान ने इजाज़त दे दी हो, और उस शख़्स के वास्ते बोलना पसन्द कर लिया हो। (109) वह (अल्लाह तआला) उन सबके अगले-पिछले हालात को जानता है और उसको उनका इल्म इहाता नहीं कर सकता। (110) और (उस दिन) तमाम चेहरे उसी हय्यु व क़य्यूम "यानी अल्लाह" के सामने झुके होंगे। और ऐसा शख़्स तो (हर तरह) नाकाम रहेगा जो ज़ुल्म (यानी शिर्क) लेकर आया होगा। (111) और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा, सो उसको (पूरा सवाब मिलेगा) न किसी ज़्यादती का अन्देशा होगा और न किसी कमी का। (112)

Maktab E Ashraf

वह दिन ऐसा होगा

क़ियामत के दिन किसी की मजाल न होगी कि दूसरे के लिये शफ़ाअ़त करे, हाँ जिसे ख़ुदा इजाज़त दे। न आसमान के फ़रिश्ते बेइजाज़त किसी की सिफ़ारिश कर सकेंगे न और कोई बुज़ुर्ग बन्दा, सबको ख़ुद ख़ौफ़ लगा होगा, बिना इजाज़त किसी की सिफ़ारिश न होगी। फ़रिश्ते और रूह क़तार बाँधे हुए खड़े होंगे, ख़ुदा तआ़ला की इजाज़त के बग़ैर कोई लब न खोल सकेगा। ख़ुद तमाम इनसानों के सरदार और सबसे अफ़ज़ल हस्ती हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल. भी अ़र्श के नीचे ख़ुदा के सामने सज्दे में गिर पड़ेंगे। अल्लाह की ख़ूब तारीफ़ व सना करेंगे, देर तक सज्दे में पड़े रहेंगे, फिर ख़ुदा तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मुहम्मद! अपना सर उठाओ, कहो तुम्हारी बात सुनी जायेगी, शफ़ाअ़त करो तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल की जायेगी। फिर हद मुक़र्रर होगी, आप उनकी शफ़ाअ़त करके जन्नत में ले जायेंगे। फिर बोलेंगे, फिर यही होगा, चार मर्तबा यही होगा। (आप पर और तमाम अम्बिया पर बेशुमार दुरूद व सलाम हो)

एक और हदीस में है, हुक्म होगा कि जहन्नम से उन लोगों को भी निकाल लाओ जिनके दिल में एक मिस्क़ाल के बराबर ईमान हो। पस बहुत से लोगों को निकाल लायेंगे। फिर फ़रमायेगा जिसके दिल में आधा मिस्क़ाल ईमान हो उसे भी निकाल लाओ, जिसके दिल में एक ज़र्रे के बराबर ईमान हो उसे भी निकाल लाओ, जिसके दिल में इससे भी कम ईमान हो उसे भी जहन्नम से आज़ाद करा लाओ......।

उसने तमाम मख़्लूक़ का अपने इल्म से घेराव कर रखा है। मख़्लूक़ उसके इल्म का इहाता (घेराव) कर ही नहीं सकती। जैसे फ़रमान है कि उसके इल्म में से सिर्फ़ वह मालूम कर सकते हैं जो वह चाहे। तमाम मख़्लूक़ के चेहरे आ़जिज़ी, पस्ती, ज़िल्लत व नर्मी के साथ उसके सामने पस्त हैं। इसलिये कि वह मौत से पाक है, हमेशा से है और हमेशा ही रहने वाला है। न वह सोये न ऊँघे, ख़ुद अपने आप क़ायम रहने वाला

Maktab E Ashraf

और हर चीज़ को अपनी तदबीर से क़ायम रखने वाला है। सबकी देखभाल, हिफ़ाज़त और संभाल वही करता है, वह तमाम कमालात रखता है और सारी मख़्लूक़ उसकी मोहताज है। बग़ैर रब की मर्ज़ी के न पैदा हो सके न बाक़ी रह सके। जिसने यहाँ ज़ुल्म किये होंगे वह वहाँ बरबाद होगा। क्योंकि हर हक़दार को अल्लाह तआ़ला उस दिन उसका हक़ दिलवायेगा, यहाँ तक कि बिना सींग की बकरी को सींग वाली बकरी से भी बदला दिलवाया जायेगा।

एक हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ज़ालिम के ज़ुल्म को मैं अपने सामने से न गुज़रने दूँगा। एक सही हदीस में है कि लोगो! ज़ुल्म से बचो, ज़ुल्म क़ियामत के दिन अन्धेरियाँ बनकर आयेगा और सबसे बढ़कर नुक़सान उठाने वाला होगा। जो ख़ुदा से शिर्क करता हुआ मिला वह तबाह व बरबाद हुआ, इसलिये कि शिर्क बड़ा भारी ज़ुल्म है। ज़ालिमों का बदला बयान फ़रमाकर मुत्तक़ियों (नेकों और परहेज़गारों) का सवाब बयान हो रहा है कि न उनकी बुराईयाँ बढ़ाई जायेंगी न उनकी नेकियाँ घटाई जायेंगी। गुनाह की ज़्यादती और नेकी की कमी से वे बेखटके हैं।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ۝

और हमने इसी तरह इसको अ़रबी क़ुरआन (करके) नाज़िल किया है, और हमने इसमें तरह-तरह से वईद "यानी सज़ा की धमकी और तंबीह" बयान की है, ताकि वे (सुनने वाले) लोग डर जाएँ, यह (क़ुरआन) उनके लिए किसी क़द्र (तो) समझ पैदा कर दे। (113) सो अल्लाह तआ़ला जो हक़ीक़ी बादशाह है, बड़ा आ़लीशान है, और क़ुरआन (पढ़ने) में इससे पहले कि आप पर उसकी 'वही' नाज़िल हो चुके जल्दी न किया कीजिए, और आप यह दुआ़ कीजिए कि ऐ मेरे रब! मेरा इल्म बढ़ा दीजिए। (114)

क़ुरआन मजीद

चूँकि क़ियामत का दिन आना ही है और उस दिन अच्छे बुरे आमाल का बदला यक़ीनन मिलेगा। लोगों को होशियार करने के लिये हमने ख़ुशख़बरी देने वाला और धमकाने वाला अपना कलाम अ़रबी साफ़ और स्पष्ट भाषा में उतारा, ताकि हर शख़्स समझ सके और उसमें हर तरह से लोगों को डराया ताकि बुराईयों से बचें, भलाईयों के हासिल करने में लग जायें। या उनके दिलों में ग़ौर व फ़िक्र नसीहत व पन्द पैदा हो। इताअ़त की तरफ़ झुक जायें, नेक कामों की कोशिश में लग जायें। पस पाक और बरतर है वह अल्लाह जो हक़ीक़ी (वास्तविक) माबूद है, दोनों जहान का तन्हा मालिक है, वह ख़ुद हक़ है उसका वायदा हक़ है, उसकी वईद (सज़ा की धमकी और डाँट) हक़ है, उसके रसूल हक़ हैं, जन्नत व दोज़ख़ हक़ है, उसके सब फ़रमान और उसकी तरफ़ से जो हो सरासर हक़ और इन्साफ़ पर आधारित है। उसकी ज़ात इससे पाक है कि आगाह किये बग़ैर किसी को सज़ा दे। वह सबका उज़्र काट देता है, किसी के शुब्हे को बाक़ी नहीं रखता। हक़ खोल देता है, फिर सरकशों (नाफ़रमानों) को अ़दल (इन्साफ़) के साथ सज़ा देता है। और ऐ

Maktab E Ashraf

रसूल! जब हमारी 'वही' उतर रही हो उस वक़्त तुम हमारे कलाम को पढ़ने में जल्दी न करो, पहले पूरी तरह सुन लिया करो। जैसे सूरः क़ियामत में फ़रमायाः

لَاتُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ.........الخ.

यानी जल्दी करके भूल जाने के ख़ौफ़ से 'वही' उतरते हुए साथ ही साथ उसे न पढ़ने लगो, उसका आपके सीने में जमा करना और आपकी ज़बान से तिलावत कराना हमारे ज़िम्मे है। जब हम उसे पढ़ें तो आप उस पढ़ने वाले के ताबे हो जायें, फिर उसका समझा देना भी हमारे ज़िम्मे है।

हदीस में है कि पहले आप सल्ल. हज़रत जिब्राईल के साथ-साथ पढ़ते थे, जिसमें आपको दिक़्क़त होती थी। जब यह आयत उतरी आप उस मशक़्क़त से छूट गये और इत्मीनान हो गया कि जितनी अल्लाह की 'वही' नाज़िल होगी मुझे याद हो जाया करेगी, एक हर्फ़ भी न भूलूँगा, क्योंकि ख़ुदा का वायदा हो चुका। यही फ़रमान यहाँ है कि फ़रिश्ते की क़िराअत (क़ुरआन का पढ़ना) सुनो, जब वह पढ़ चुके फिर तुम पढ़ो। और मुझसे अपने इल्म की ज़्यादती की दुआ किया करो। चुनाँचे आपने दुआ की, ख़ुदा ने क़बूल की और इन्तिक़ाल तक इल्म में बढ़ते ही रहे। हदीस में है कि 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) बराबर लगातार आती रही यहाँ तक कि जिस दिन आपका इन्तिक़ाल होने वाला था उस दिन भी ख़ूब ज़्यादा 'वही' उतरी। इब्ने माजा की हदीस में हुज़ूर सल्ल. की यह दुआ नक़ल की गयी हैः

اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِىْ بِمَا عَلَّمْتَنِىْ وَزِدْنِىْ عِلْمًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ.

"ऐ अल्लाह तू मुझे जो इल्म अ़ता फ़रमाये उससे मुझे नफ़ा पहुँचा और मेरे इल्म में ज़्यादती फ़रमा। और हर हाल में तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं।"

तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है और आख़िर में ये अलफ़ाज़ ज़्यादा हैं:

وَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ حَالِ اَهْلِ النَّارِ.

"और ऐ अल्लाह मैं दोज़ख़ वालों के हाल से आपकी पनाह चाहता हूँ।"

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ
وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ ع ٦ ١٥
اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ
اَبٰى ۝ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَ
لِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ
فَتَشْقٰى ۝ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا

और इससे (बहुत ज़माना) पहले हम आदम को एक हुक्म दे चुके थे, सो उनसे ग़फ़लत (और बेएहतियाती) हो गई, हमने (उस हुक्म के एहतिमाम में) उनमें पुख़्तगी (और साबित-क़दमी) न पाई। (115)

और (वह वक़्त याद करो) जबकि हमने फ़रिश्तों से इरशाद फ़रमाया कि आदम के सामने (सलाम व ताज़ीम का) सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया सिवाय शैतान के, (कि) उसने इनकार किया। (116) फिर हमने (आदम से) कहा कि ऐ आदम! (याद रखो) यह बिला शुब्हा तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का (इस वजह से)

تَعْرٰى ○ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ○ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ○ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۚ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ○ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ○	दुश्मन है (कि तुम्हारे मामले में यह मर्दूद हुआ), सो कहीं तुम दोनों को जन्नत से न निकलवा दे, फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ। (117) यहाँ (जन्नत में) तो तुम्हारे लिए यह (आराम) है कि तुम न भूखे रहोगे और न नंगे होगे। (118) और न यहाँ प्यासे होगे और न धूप में तपोगे। (119) फिर उनको शैतान ने बहकाया, कहने लगा कि ऐ आदम! क्या मैं तुमको हमेशगी (की ख़ासियत) का पेड़ बतलाऊँ, और ऐसी बादशाही कि जिसमें कभी कमज़ोरी न आए। (120) सो (उसके बहकाने से) दोनों ने उस पेड़ से खा लिया, तो उन दोनों के सतर "यानी जिस्म की छुपाने की जगहें" एक-दूसरे के सामने खुल गए, और (अपना बदन ढाँकने को) दोनों अपने ऊपर जन्नत के (पेड़ों के) पत्ते चिपकाने लगे, और आदम से अपने रब का क़ुसूर हो गया, सो ग़लती में पड़ गये। (121) फिर (जब उन्होंने माज़िरत की तो) उनको उनके रब ने (ज़्यादा) मक़्बूल बना लिया, सो उनपर ज़्यादा तवज्जोह फ़रमाई और (हमेशा सीधे) रास्ते पर क़ायम रखा। (122)

हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की भूल

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इनसान को इनसान इसलिये कहा जाता है कि उसे जो हुक्म सबसे पहले फ़रमाया गया यह उसे भूल गया। और मुजाहिद व हसन फ़रमाते हैं कि उस हुक्म को हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने छोड़ दिया। फिर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की शराफ़त व बुज़ुर्गी का बयान हो रहा है। सूरः ब-क़रह सूरः आराफ़ सूरः हिज्र और सूरः कहफ़ में शैतान के सज्दा न करने वाले वाक़िए की पूरी तफ़सील गुज़र चुकी है, और सूरः सॉद में भी इसका बयान आयेगा इन्शा-अल्लाह तआ़ला। इन तमाम सूरतों में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश का, फिर उनकी बुज़ुर्गी के इज़हार के लिये फ़रिश्तों को उन्हें सज्दा करने के हुक्म का और इब्लीस की दुश्मनी का बयान हुआ है, उसने तकब्बुर किया और हुक्मे ख़ुदा से इनकार कर दिया। उस वक़्त हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को समझा दिया गया कि देख यह तेरा और तेरी बीवी हव्वा का दुश्मन है, इसके बहकाने में न आ जाना, वरना मेहरूम होकर जन्नत से निकाल दिये जाओगे और सख़्त मशक़्क़त में पड़ जाओगे, रोज़ी की तलाश की मेहनत सर पड़ जायेगी, यहाँ तो बिना मेहनत व मशक़्क़त के रोज़ी पहुँच रही है, यहाँ तो नामुम्किन है भूखे होना और नामुम्किन है कि नंगे

रहो और उस अन्दरूनी व बेरूनी (यानी अन्दर व बाहर अर्थात् पेट की भूख और तन ढाँकने के लिये लिबास की) तकलीफ़ से बचे हुए हो। फिर यहाँ न प्यास की गर्मी अन्दरूनी तौर से सताये, न धूप की तेज़ी की गर्मी बाहर से परेशान करे। अगर शैतान के बहकाने में आ गये तो ये राहतें (आराम और सुविधायें) छीन ली जायेंगी और इनके मुक़ाबिल की तकलीफ़ें सामने आ जायेंगी। लेकिन शैतान ने अपने जाल में उन्हें फंसा लिया और मक्कारी से उन्हें अपनी बातों में ले लिया। क़समें खा-खाकर उन्हें अपनी ख़ैरख़्वाही (हमदर्दी) का यक़ीन दिला दिया।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने पहले ही से उनसे फ़रमा दिया था कि जन्नत के तमाम मेवे खाना लेकिन इस पेड़ के क़रीब भी न जाना। मगर शैतान ने उन्हें इस क़द्र बहकाया आख़िरकार यह वही दरख़्त खा बैठे। उसने धोखा देते हुए उनसे कहा कि जो इस दरख़्त (पेड़, यानी इसके फल) को खा लेता है वह हमेशा यहीं रहता है। नबी करीम हुज़ूरे पाक सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक पेड़ है जिसके साये के नीचे सवार सौ साल तक चलता जायेगा लेकिन फिर भी वह ख़त्म न होगा। उसका नाम "श-जरतुल-ख़ुल्द" है। (मुस्नद अहमद व अबू दाऊद तियालिसी)

दोनों ने दरख़्त में से कुछ खाया ही था कि लिबास उतर गया और बदन के अंग ज़ाहिर हो गये। इब्ने अबी हातिम में है, रसूले अकरम सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को गन्दुमी रंग का लम्बे क़द व क़ामत वाला, ज़्यादा बालों वाला बनाया था, खजूर के दरख़्त जितना क़द था। वर्जित दरख़्त को खाते ही लिबास छिन गया। अपने सतर को देखते ही शर्म के मारे आप इधर-उधर छुपने लगे, दरख़्त में बाल उलझ गये, जल्दी से छुड़ाने की कोशिश कर ही रहे थे कि ख़ुदा तआ़ला ने आवाज़ दी- ऐ आदम! क्या मुझसे भाग रहा है? कलामे रहमान सुनकर अदब से अ़र्ज़ किया कि ख़ुदाया! मारे शर्मिन्दगी के सर छुपाता हूँ। अच्छा यह तो फ़रमा दे कि तौबा और रुजू के बाद भी जन्नत में पहुँच सकता हूँ या नहीं? जवाब मिला कि हाँ। यही मायने हैं ख़ुदा के इस फ़रमान के कि आदम ने अपने रब से कुछ कलिमात सीखे जिनकी वजह से ख़ुदा तआ़ला ने उसे फिर से अपनी मेहरबानी में ले लिया। यह रिवायत मुन्क़ता है और इसके मरफ़ूअ़ होने में भी कलाम है।

जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा से लिबास छिन गया तो अब जन्नत के दरख़्तों के पत्ते अपने जिस्म पर चिपकाने लगे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अन्जीर के पत्तों से अपना जिस्म छुपाने लगे। ख़ुदा की नाफ़रमानी की वजह से सही रास्ते से हट गये, लेकिन आख़िरकार ख़ुदा तआ़ला ने फिर उनकी रहनुमाई की। तौबा क़बूल फ़रमाई और अपने ख़ास बन्दों में शामिल कर लिया। सही बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की आपस में बातचीत हुई। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़रमाने लगे आपने अपने गुनाह की वजह से तमाम इनसानों को जन्नत से निकलवा दिया और उन्हें मशक़्क़त में डाल दिया। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया ऐ मूसा! आपको अल्लाह तआ़ला ने अपनी रिसालत और अपने कलाम से नवाज़ा है, आप मुझे उस बात पर इल्ज़ाम देते हैं जिसे अल्लाह तआ़ला ने मेरी पैदाईश से पहले ही मुक़द्दर और मुक़र्रर कर ली थी। पस हज़रत आदम ने इस गुफ़्तगू में हज़रत मूसा को ला-जवाब कर दिया (यानी उन्हें चुप होना पड़ा, कोई जवाब न बन पड़ा)।

एक और रिवायत में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का यह फ़रमान भी है कि आपको ख़ुदा तआ़ला ने अपने हाथ से पैदा किया था और आप में उसने अपनी रूह फूँकी थी, और आपके सामने अपने फ़रिश्तों से

सज्दा कराया था और आपको अपनी जन्नत में बसाया था। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के इस जवाब में यह भी मन्क़ूल है कि ख़ुदा ने आपको ये तख़्तियाँ दीं जिनमें हर चीज़ का बयान था। और धीमी आवाज़ में गुफ़्तगू करते हुए आपको क़रीब कर लिया। बतलाओ अल्लाह ने तौरात कब लिखी थी? जवाब दिया कि आपकी पैदाईश से चालीस साल पहले, पूछा क्या उसमें यह लिखा हुआ था कि आदम ने अपने रब की नाफ़रमानी की और राह भूल गया? कहा हाँ। फ़रमाया फिर तुम मुझे उस बात का इल्ज़ाम क्यों देते हो जो मेरी तक़दीर में अल्लाह तआ़ला ने मेरी पैदाईश से भी चालीस साल पहले लिख दिया था।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى ۚ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ○ وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ○ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ○ قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنسَىٰ ○	अल्लाह ने फ़रमाया कि दोनों के दोनों इस (जन्नत) से उतरो (और दुनिया में) ऐसी हालत से (जाओ) कि एक का दुश्मन एक होगा। फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत (का ज़रिया यानी रसूल या किताब) पहुँचे तो (तुममें) जो शख़्स मेरी (उस) हिदायत की इत्तिबा करेगा तो वह न (दुनिया में) गुमराह होगा और न (आख़िरत में) शक़ी "यानी बदबख़्त और मेहरूम" होगा। (123) और जो शख़्स मेरी (इस) नसीहत से मुँह मोड़ेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा, और क़ियामत के दिन हम उसको अन्धा (करके क़ब्र से) उठाएँगे। (124) वह (ताज्जुब से) कहेगा कि ऐ मेरे रब! आपने मुझको अन्धा (करके) क्यों उठाया, मैं तो (दुनिया में) आँखों वाला था। (125) इरशाद होगा कि ऐसा ही (तुझसे अ़मल हुआ था, और यह कि) तेरे पास हमारे अहकाम पहुँचे थे फिर तूने उनका कुछ ख़्याल न किया और ऐसा ही आज तेरा कुछ ख़्याल न किया जाएगा। (126)

एक हुक्म

हज़रत आदम व हव्वा अ़लैहिमस्सलाम और इब्लीस मरदूद से उसी वक़्त फ़रमा दिया गया कि तुम सब जन्नत से निकल जाओ। सूरः ब-क़रह में इसकी तफ़सीर गुज़र चुकी है। तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन हो। यानी आदम अ़लैहिस्सलाम और शैतान की औलाद। तुम्हारे पास मेरे रसूल और मेरी किताबें आयेंगी, मेरी बताई हुई राह की पैरवी करने वाले न तो दुनिया में रुस्वा होंगे न आख़िरत में ज़लील होंगे। हाँ हुक्मों के मुख़ालिफ़ (यानी उन पर अ़मल न करने वाले), मेरे रसूलों के रास्ते को छोड़ने वाले, दूसरे रास्तों पर चलने

Maktab E Ashraf

वाले दुनिया में भी तंग रहेंगे, इत्मीनान और दिल का सुकून मयस्सर न होगा, अपनी गुमराही की वजह से तंगियों में ही रहेंगे, चाहे देखने में खाने-पीने पहनने-ओढ़ने रहने-सहने की फ़रागत हो लेकिन दिल में यक़ीन व हिदायत न होने की वजह से हमेशा शक व शुब्हे, तंगी और क़िल्लत में ही मुब्तला रहेंगे। बद-नसीब, अल्लाह की रहमत से मेहरूम और ख़ैर से ख़ाली। क्योंकि ख़ुदा पर ईमान नहीं, उसके वायदों पर यक़ीन नहीं, मरने के बाद की नेमतों में कोई हिस्सा नहीं, ख़ुदा के साथ बदगुमान हैं, गयी हुई चीज़ को आने वाली नहीं समझते, हराम और ख़बीस रोज़ियाँ हैं, गन्दे आमाल हैं, क़ब्र तंग व अंधेरी है। वहाँ इस तरह दबोचा जायेगा कि दायीं तरफ़ की पसलियाँ बायीं में और बायीं तरफ़ की दायीं तरफ़ में घुस जायेंगी।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मोमिन की क़ब्र हरा-भरा सब्ज़ बाग़ीचा है। सत्तर हाथ खुली हुई है। ऐसा मालूम होता है गोया उसमें चाँद है। ख़ूब नूर और रोशनी फैल रही है। जैसे चौदहवीं रात का चाँद चढ़ा हुआ हो।

इस आयत का शाने-नुज़ूल मालूम है? कि मेरे ज़िक्र से मुँह फेरने वालों की ज़िन्दगियाँ तंग हैं। इससे मुराद काफ़िर की क़ब्र में उस पर अ़ज़ाब होना है। ख़ुदा की क़सम उस पर निन्नानवे अज़्दहे मुक़र्रर किये जाते हैं, हर एक के सात-सात सर होते हैं जो उसे क़ियामत तक डसते रहते हैं। इस हदीस़ का मरफ़ूअ़ होना बिल्कुल मुन्कर है। एक क़ाबिले एतिबार सनद से यह भी नक़ल है कि इससे मुराद क़ब्र का अ़ज़ाब है। यह क़ियामत के दिन अन्धा बनाकर उठाया जायेगा, सिवाय जहन्नम के कोई चीज़ इसे नज़र न आयेगी। देखने वाला होगा और मैदाने हश्र की तरफ़ चला जायेगा और जहन्नम के सामने खड़ा कर दिया जायेगा। जैसे कि एक आयत में फ़रमान है:

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا.............الخ

यानी हम उन्हें क़ियामत के दिन औंधे मुँह अंधे गूंगे बहरे बनाकर हश्र में ले जायेंगे, उनका असली ठिकाना दोज़ख़ है।

ये कहेंगे कि मैं तो दुनिया में आँखों वाला ख़ूब देखता भालता था, फिर मुझे अन्धा क्यों कर दिया गया? जवाब मिलेगा कि यह बदला है ख़ुदा की आयतों से मुँह मोड़ लेने का, और ऐसा हो जाने का गोया ख़बर ही नहीं। पस आज हम भी तेरे साथ ऐसा मामला करेंगे कि जैसे तू हमारी याद से उतर गया। जैसा कि एक दूसरी जगह फ़रमान है:

فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا.

आज हम उन्हें ठीक इसी तरह भुला देंगे जैसे उन्होंने आज के दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था। पस यह बराबर का और अ़मल की तरह का बदला है। क़ुरआन पर ईमान रखते हुए इसके अहकाम के आ़मिल होते हुए किसी शख़्स से अगर इसके अलफ़ाज़ हिफ़्ज़ से निकल जायें तो वह इस वईद (सज़ा की धमकी) में दाख़िल नहीं, उसके लिये रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि वह क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला से कोढ़ी होने की हालत में मुलाक़ात करेगा। (मुस्नद अहमद)

और इसी तरह (हर) उस शख़्स को हम (अमल के मुनासिब) सज़ा देंगे जो (इताअ़त की) हद से गुज़र जाए और अपने परवर्दिगार की	وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ

Maktab E Ashraf

بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ○	आयतों पर ईमान न लाए, और वाक़ई आख़िरत का अज़ाब है बड़ा सख़्त और बड़ा देर तक रहने वाला। (127)

जज़ा व सज़ा

जो अल्लाह की हदों की परवाह न करें, अल्लाह की आयतों को झुठलायें उन्हें हम इसी तरह दुनिया व आख़िरत के अज़ाबों में मुब्तला करते हैं। ख़ुसूसन आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही भारी है, और वहाँ कोई न होगा जो बचा सके। दुनिया के अज़ाब न तो सख़्ती में उसके मुक़ाबले के हैं न मुद्दत में। वे हमेशा रहने वाले और बहुत ही कष्ट देने वाले हैं। मुलाअ़ना (यानी एक दूसरे पर लानत) करने वालों को समझाते हुए रसूले मक़बूल सल्ल. ने यही फ़रमाया था कि दुनिया की सज़ा आख़िरत के अज़ाबों के मुक़ाबले में बहुत ही हल्की और मामूली है।

नोटः 'मुलाअ़ना' इसको कहा जाता है कि अगर कोई शौहर अपनी बीवी पर ज़िना की तोहमत लगाये और कोई गवाह उसके पास न हो तो उससे क़सम ली जायेगी, जिसमें वह चार बार अल्लाह की क़सम खायेगा कि मैं सच्चा हूँ और पाँचवीं बार कहेगा कि अगर मैं झूठा हूँ तो मुझ पर ख़ुदा की लानत हो। फिर शौहर के झूठा होने के लिये इसी तरह बीवी से चार क़समें लेने बाद पाँचवीं बार उससे कहलवाया जायेगा कि अगर मैं झूठी हूँ तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो। फिर उन दोनों को अ़लैहदा कर दिया जायेगा। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ○ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ اَجَلٌ مُّسَمًّى ○ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ○	क्या उन लोगों को (अब तक) इससे भी हिदायत नहीं हुई कि हम उनसे पहले बहुत-से गिरोहों को हलाक कर चुके हैं, कि उन (में से बाज़) के रहने के मक़ामात में ये लोग भी चलते (फिरते) हैं, इसमें तो समझ वालों के लिए (काफ़ी) दलीलें मौजूद हैं। (128) और अगर आपके रब की तरफ़ से एक बात पहले से फ़रमाई हुई न होती और (अज़ाब के लिए) एक मियाद मुतैयन न होती (कि वह क़ियामत का दिन है) तो (अज़ाब) लाज़िमी तौर पर होता। (129) सो (जब अज़ाब का आना यक़ीनी है तो) आप उनकी (कुफ़्र भरी) बातों पर सब्र कीजिए और अपने रब की तारीफ़ के साथ (उसकी) तस्बीह कीजिए, (इसमें नमाज़ भी आ गई) सूरज निकलने से पहले (जैसे फ़जर की नमाज़) और उसके छुपने से पहले (जैसे ज़ोहर व अस्र की नमाज़ें) और रात के वक़्तों में (भी) तस्बीह किया कीजिए (जैसे मग़रिब व इशा की नमाज़ें) और दिन के शुरू व आख़िर में, ताकि (आपको जो सवाब मिले) आप (उससे) ख़ुश हों। (130)

ع ١٣
١٢

Maktab E Ashraf

पहले ज़मानों के लोग

जो लोग तुझे नहीं मान रहे और तेरी शरीअ़त का इनकार कर रहे हैं, क्या वे इस बात से भी इबरत (सीख) हासिल नहीं करते कि उनसे पहले जिन्होंने यह तरीके निकाले थे हमने उन्हें तबाह व बरबाद कर दिया। आज उनकी एक आँख झपकती हुई, एक साँस चलता हुआ और एक ज़बान बोलती हुई बाक़ी नहीं बची। उनके ऊँचे-ऊँचे, पुख़्ता और ख़ूबसूरत कुशादा और सज्जित महल वीरान खंडर पड़े हुए हैं। जहाँ से उनकी आवाजाही रहती है। अगर ये अ़क्लमन्द होते तो यह सामने इबरत उनके लिये बहुत कुछ था। क्या ये ज़मीन में चल-फिरकर क़ुदरत की उन निशानियों पर दिल से ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते? क्या कानों से उनके दर्दनाक फ़साने सुनकर इबरत हासिल नहीं करते? क्या उनकी उजड़ी हुई बस्तियाँ देखकर भी आँखें नहीं खोलते? ये आँखों के ही अन्धे नहीं बल्कि दिल के भी अन्धे हैं। सूरः अलिफ़ लाम मीम सज्दा में भी उपर्युक्त आयत जैसी आयत है। ख़ुदा तआ़ला यह बात मुक़र्रर कर चुका है कि जब तक बन्दों पर अपनी हुज्जत ख़त्म न कर दे उन्हें अ़ज़ाब नहीं करता। उनके लिये उसने एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया है, उसी वक़्त उनको उनके आमाल की सज़ा मिलेगी। अगर यह बात न होती तो इधर गुनाह करते उधर पकड़ लिये जाते। तू उनके झुठलाने पर सब्र कर, उनकी बेहूदा बातों पर संयम से काम ले और तसल्ली रख, ये मेरे क़ब्ज़े से बाहर नहीं।

सूरज निकलने से पहले से फ़जर की नमाज़ मुराद है और सूरज डूबने से पहले से मुराद अ़सर की नमाज़ है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हम एक मर्तबा रसूले मक़बूल सल्ल. के पास बैठे हुए थे। आपने चौदहवीं रात के चाँद को देखकर फ़रमाया- तुम जल्द ही अपने रब को इसी तरह देखोगे जिस तरह इस चाँद को बग़ैर किसी रुकावट और तकलीफ़ के देख रहे हो। पस अगर तुम से हो सके तो सूरज निकलने से पहले की और सूरज ग़ुरूब होने से पहले की नमाज़ की पूरी तरह हिफ़ाज़त करो। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि आपने फ़रमाया- इन दोनों वक़्तों की नमाज़ पढ़ने वाला आग में न जायेगा। मुस्नद और सुनन में है कि आपने फ़रमाया- सबसे अदना दर्जे का जन्नती वह है जो दो हज़ार बरस की राह तक अपनी ही अपनी मिल्कियत देखेगा। सबसे दूर की चीज़ भी उसके लिये ऐसी ही होगी जैसे सबसे नज़दीक की, और सबसे आला मन्ज़िल वाले तो दिन में दो-दो दफ़ा अल्लाह तआ़ला का दीदार करेंगे। फिर फ़रमाता है कि रात के वक़्तों में भी तहज्जुद पढ़ा कर। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद मग़रिब व इशा की नमाज़ें हैं, और दिन के वक़्तों में भी ख़ुदा की पाकीज़गी बयान किया कर, ताकि ख़ुदा के अज्र व सवाब से तू ख़ुश हो जाये। जैसे एक और फ़रमान है कि जल्द ही तेरा ख़ुदा तुझे वह देगा कि तू ख़ुश हो जायेगा। सही हदीस में है, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ जन्नतियो! वे कहेंगे ऐ हमारे रब हम हाज़िर हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तुम ख़ुश हो गये? वे कहेंगे ख़ुदाया! हम बहुत ही ख़ुश हैं। तूने हमें वो नेमतें अ़ता फ़रमा रखी हैं जो अपनी मख़्लूक़ में से किसी को नहीं दीं। फिर क्या वजह है कि हम राज़ी न हों। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा लो मैं तुम्हें उन सबसे अफ़ज़ल और बेहतर चीज़ देता हूँ। पूछेंगे या इलाही! इससे अफ़ज़ल चीज़ क्या है? फ़रमायेगा मैं तुम्हें अपनी रज़ामन्दी देता हूँ कि अब किसी वक़्त भी मैं तुमसे नाख़ुश न हूँगा।

एक और हदीस में है कि जन्नतियों से फ़रमाया जायेगा कि ख़ुदा ने जो तुमसे वायदा किया था वह

Maktab e Ashraf

उसे पूरा करने वाला है। वे कहेंगे ख़ुदा के सब वायदे पूरे हुए, हमारे चेहरे रोशन हैं, हमारी नेकियों का पल्ला भारी रहा, हमें दोज़ख़ से हटा दिया गया, जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, अब कौनसी चीज़ बाक़ी है? उसी वक़्त हिजाब (पर्दे) उठ जायेंगे और अल्लाह तआला का दीदार होगा। ख़ुदा की क़सम उससे बेहतर और कोई नेमत न होगी, यही ज़्यादती (यानी अतिरिक्त चीज़) है।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا
مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ
فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ○ وَأْمُرْ
أَهْلَكَ بِالصَّلَوٰةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا
نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ
لِلتَّقْوَىٰ ○

और हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ आप आँख उठाकर न देखिए जिनसे हमने उन (काफ़िरों) के मुख़्तलिफ़ गिरोहों को आज़माईश के लिए फ़ायदा उठाने वाला बना रखा है कि वह (सिर्फ़) दुनियावी ज़िन्दगी की रौनक़ है, और आपके रब का अ़तिया (जो आख़िरत में मिलेगा) इससे कहीं बेहतर और देरपा है। (131) और अपने मुताल्लिक़ीन को (यानी ख़ानदान वालों को या मोमिनों को) भी नमाज़ का हुक्म करते रहिए और ख़ुद भी इसके पाबन्द रहिए, हम आप से (और दूसरों से) रोज़ी (कमवाना) नहीं चाहते, रोज़ी तो आपको हम देंगे, और बेहतर अन्जाम तो परहेज़गारी ही का है। (132)

यह सिर्फ़ चन्द दिन की बहार है

उन काफ़िरों की दुनियावी ज़ीनत और उनकी टीप-टॉप को तू हसरत भरी (लालची) निगाहों से न तक, ये तो ज़रा सी देर की चीज़ें हैं। यह सिर्फ़ उनकी आज़माईश के लिये उन्हें यहाँ मिली हैं कि देखें शुक्र व आ़जिज़ी करते हैं या नाशुक्री और तकब्बुर करते हैं। वास्तव में शुक्रगुज़ारों की कमी है। उनके मालदारों को जो कुछ मिला है उससे तुझे तो बहुत ही बेहतर नेमत मिली है। हमने तुझे सात आयतें दी हैं जो दोहराई जाती हैं और क़ुरआने अ़ज़ीम अ़ता फ़रमा रखा है। पस अपनी नज़रें उनके दुनियावी साज़ व सामान की तरफ़ न डाल।

नोटः इस आयत में ख़िताब का रुख़ अगरचे नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ है मगर दर असल यह हिदायत आपकी उम्मत को है। आप दूसरों के माल व जायदाद की तरफ़ हसरत व लालच की निगाह तो क्या डालते ख़ुद अपना माल भी जमा करके न रखते थे बल्कि सब कुछ अल्लाह की राह में देते रहते थे। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने निकाह के बाद अपनी सारी मिल्कियत और लाखों की मालियत आप पर क़ुरबान कर दी थी, अगर माल की ज़रा सी मुहब्बत और चाव भी आपके अन्दर होता तो उसके बाद की ज़िन्दगी में आपके घर में कभी फ़ाक़े का गुज़र न होता। जबकि तारीख़ गवाह है कि आपने बहुत से दिन फ़ाक़े और तंगी में गुज़ारे हैं। मतलब यह है कि इस तरह की जो आयतें और अल्लाह की तरफ़ से ख़िताब हैं उनसे आपकी उम्मत को हिदायत, तालीम और हुक्म मक़सूद है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते पाक पर लाखों दुरूद व सलाम हों। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

इसी तरह ऐ पैग़म्बरे ख़ुदा! आपके लिये ख़ुदा के पास जो मेहमानदारी है उसकी न तो कोई इन्तिहा है न इस वक़्त कोई उसके बयान की ताक़त रखता है। तुझे तेरा परवर्दिगार इस क़द्र देगा कि तू राज़ी हो जायेगा। ख़ुदा का दीन बेहतर और बाक़ी है। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने अपनी पाक बीवियों से "ईला" किया था। और एक बालाख़ाने में मुक़ीम थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु वहाँ पहुँचे तो देखा कि आप एक बोरिये पर लेटे हुए हैं, चमड़े का एक टुकड़ा एक तरफ़ रखा हुआ था और कुछ मश्कें लटक रही थीं। तंगदस्ती और ग़ुर्बत की यह हालत देखकर आपकी आँखों में आँसू आ गये। हुज़ूर सल्ल. ने मालूम किया कि कैसे रो दिये? जवाब दिया कि हुज़ूर ये क़ैसर व किसरा (यानी ईरान व रोम के बादशाह) किस क़द्र ऐश व आराम में हैं, और आप सारी मख़्लूक़ में से ख़ुदा के चुने हुए होने के बावजूद किस हालत में हैं? आपने फ़रमाया ऐ ख़त्ताब के बेटे! क्या अब तक तुम शक में ही हो? उन लोगों को उनकी अच्छाईयों का दुनिया ही में बदला मिल रहा है। पस रसूले ख़ुदा सल्ल. बावजूद क़ुदरत और पहुँच के दुनिया से बहुत ही ज़्यादा े-रग़बत (चाव न रखने वाले) थे। जो हाथ लगता उसे अल्लाह की राह में दे देते और अपने लिये एक पैसा भी उठाकर न रखते।

इब्ने अबी हातिम में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान मौजूद है कि आपने फ़रमाया- मुझे तो तुम पर सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ उस वक़्त का है कि दुनिया तुम्हारे क़दमों में अपना तमाम साज़ व सामान डाल देगी, अपनी बरकतें तुम पर उलट देगी।

ग़र्ज़ कि काफ़िरों को ज़िन्दगी का ऐश व आराम सिर्फ़ उनकी आज़माईश के लिये दिया जाता है। अपने घराने के लोगों को नमाज़ की ताकीद करो ताकि वे अ़ज़ाबे ख़ुदा से बच जायें। ख़ुद भी पाबन्दी के साथ उसकी अदायेगी करो। अपने आपको और अपने बाल-बच्चों और घर वालों को जहन्नम से बचा लो। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. की आ़दत मुबारक थी कि रात को जब तहज्जुद के लिये उठते तो अपने घर वालों को भी जगाते और इसी आयत की तिलावत फ़रमाते।

हम तुझसे रिज़्क़ के तालिब नहीं, नमाज़ की पाबन्दी कर लो, ख़ुदा ऐसी जगह से रोज़ी पहुँचायेगा जो ख़्वाब व ख़्याल में भी न हो। अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों के लिये निजात कर देता है और ऐसी जगह से रोज़ी पहुँचाता है जहाँ से गुमान व ख़्याल भी न हो। तमाम जिन्नात और इनसान सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत के लिये ही पैदा किये गये हैं। रज़्ज़ाक़ और ज़बरदस्त क़ुव्वतों का मालिक अल्लाह तआ़ला ही है।

फ़रमाता है कि हम ख़ुद तमाम मख़्लूक़ को रोज़ी पहुँचाते हैं। हम तुम्हें तलब की तकलीफ़ नहीं देते। हज़रत हिशाम के वालिद साहिब अमीर कबीर लोगों के मकान पर जाते, उनका ठाठ देखते तो वापस अपने मकान पर आकर इसी आयत की तिलावत फ़रमाते और कहते मेरे कुनबे वालो! नमाज़ की हिफ़ाज़त करो, नमाज़ की पाबन्दी करो, अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम फ़रमायेगा।

इब्ने अबी हातिम में है कि जब हुज़ूर सल्ल. को कोई तंगी होती तो अपने घर के सब लोगों को फ़रमाते ऐ मेरे घर वालो! नमाज़ें पढ़ो, नमाज़ें क़ायम रखो, तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का यही तरीक़ा रहा है कि अपनी हर घबराहट और हर काम के वक़्त नमाज़ शुरू कर देते। तिर्मिज़ी व इब्ने माजा वग़ैरह की हदीसे क़ुदसी में है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- ऐ आदम के बेटे! मेरी इबादत के लिये फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरा सीना अमेरी और बेपरवाही से पुर कर दूँगा। तेरी फ़क़ीरी और हाजत को दूर कर दूँगा। और अगर तूने यह न किया तो मैं तेरा दिल फ़िक्रों और कामों की मशग़ूलियत से भर दूँगा और तेरी फ़क़ीरी बन्द ही न होगी। इब्ने माजा शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जिसने अपनी तमाम ग़ौर व फ़िक्र और

इरादा व ख़्याल को इकट्ठा करके आख़िरत का ख़्याल बाँध लिया और उसी में मशग़ूल हो गया, अल्लाह तआ़ला उसे दुनिया की तमाम परेशानियों से महफ़ूज़ कर देगा। और जिसने दुनिया की फ़िक्रें पाल लीं, यहाँ के ग़म मोल ले लिये, अल्लाह को उसकी बिल्कुल भी परवाह न रहेगी चाहे किसी हैरानी में हलाक हो जाये।

एक और रिवायत में है कि दुनिया के ग़मों में ही उसकी फ़िक्रों में गुथ जाने वाले के तमाम कामों में ख़ुदा तआ़ला परेशानियाँ डाल देगा और उसकी फ़क़ीरी उसकी आँखों के सामने कर देगा और दुनिया उतनी ही मिलेगी जितनी मुक़द्दर में है। और जो अपने दिल का मर्कज़ (केन्द्र) आख़िरत को बना लेगा, अपनी नीयत वही रखेगा, अल्लाह तआ़ला उसे हर काम का इत्मीनान नसीब फ़रमा देगा, उसके दिल को सैर कर दे और शेर बना देगा, और दुनिया उसके क़दमों की ठोकरों में आया करेगी।

फिर फ़रमाया कि दुनिया व आख़िरत में नेक अन्जाम परहेज़गार लोगों ही का है। रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैंने आज रात ख़्वाब में देखा कि गोया हम उक़्बा बिन राफ़ेअ़ के घर में हैं। वहाँ हमारे सामने इब्ने ताब के बाग़ की तर खजूरें पेश की गयी हैं। मैंने उसकी ताबीर यह ली कि दुनिया में भी अन्जाम के लिहाज़ से हमारा ही पल्ला भारी रहेगा और बुलन्दी व ऊँचाई हमको मिलेगी। और हमारा दीन पाक-साफ़, तय्यिब व ताहिर, कामिल व मुकम्मल है।

وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ
تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝
وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا
رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ
اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ۝ قُلْ
كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ
اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ۝ ع ع 8 17

और वे लोग (दुश्मनी और बैर के तौर पर) यूँ कहते हैं कि यह (रसूल) हमारे पास अपने रब के पास से (अपनी नुबुव्वत की) कोई निशानी क्यों नहीं लाते। (जवाब यह है कि) क्या उनके पास पहली किताबों के मज़ामीन का ज़ाहिर होना नहीं पहुँचा। (133) और अगर हम उनको इस (क़ुरआन आने) से पहले (कुफ़्र की सज़ा में) किसी अ़ज़ाब से हलाक कर देते तो ये लोग (उज़्र के तौर पर यूँ) कहते कि ऐ हमारे रब! आपने हमारे पास (दुनिया में) कोई रसूल क्यों नहीं भेजा था कि हम आपके अहकाम पर चलते इससे पहले कि हम (यहाँ ख़ुद) बेक़द्र हों और दूसरों की निगाह में रुस्वा हों। (134) आप कह दीजिए कि (हम) सब इन्तिज़ार कर रहे हैं, सो (थोड़ा) और इन्तिज़ार कर लो। अब जल्द ही तुमको (भी) मालूम हो जाएगा कि सही रास्ते वाले कौन हैं, और वह कौन है जो (मन्ज़िले) मक़सूद तक पहुँचा। (135)

आसमानी किताबें और सहीफ़े

काफ़िर यह भी कहा करते थे कि आख़िर क्या वजह है कि यह नबी अपनी सच्चाई का कोई मोजिज़ा

हमें नहीं दिखाते? जवाब मिलता है कि यह है क़ुरआने करीम जो पहली आसमानी किताबों की ख़बर के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने अपने इस नबी-ए-उम्मी पर उतारा है, जो न लिखना जानते हैं न पढ़ना। देख लो इसमें पहले लोगों के हालात हैं और बिल्कुल उन किताबों के मुताबिक़ जो ख़ुदा की तरफ़ से इससे पहले नाज़िल हुई हैं। क़ुरआन उन सबका निगहबान (हिफ़ाज़त करने वाला) है। चूँकि पहली आसमानी किताबें कमी-बेशी (रद्दोबदल) से पाक नहीं रहीं इसलिये क़ुरआन उतरा है, कि उनके सही और ग़ैर-सही होने को ज़ाहिर और नुमायाँ कर दे। सूरः अ़न्कबूत में काफ़िरों के इस एतिराज़ के जवाब में फ़रमायाः

قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ.

यानी कह दे कि अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन हर क़िस्म के मोजिज़ों के ज़ाहिर करने पर क़ादिर है। मैं तो सिर्फ़ तंबीह करने वाला रसूल हूँ। मेरे क़ब्ज़े में कोई मोजिज़ा नहीं। लेकिन क्या उनके लिये यह मोजिज़ा काफ़ी नहीं कि हमने तुझ पर किताब नाज़िल फ़रमाई है, जो उनके सामने बराबर तिलावत की जा रही है, जिसमें हर यक़ीन वाले के लिये रहमत व नसीहत है।

सही बुख़ारी व मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर नबी को ऐसे मोजिज़े मिले कि उन्हें देखकर लोग उनकी नुबुव्वत पर ईमान ले आये, लेकिन मुझे जीता जागता ज़िन्दा और हमेशा रहने वाला मोजिज़ा दिया गया है। यानी अल्लाह की यह किताब क़ुरआन मजीद, जो 'वही' के ज़रिये मुझ पर उतरी है। पस मुझे उम्मीद है कि क़ियामत के दिन तमाम नबियों के ताबेदारों (मानने वालों और उम्मतियों) से मेरे ताबेदार ज़्यादा होंगे।

यह याद रहे कि यहाँ रसूलुल्लाह सल्ल. का सबसे बड़ा मोजिज़ा बयान हुआ है। इसका यह मतलब नहीं कि आपके मोजिज़े और थे ही नहीं। इस पाक मोजिज़े क़ुरआन के अ़लावा आपके हाथों इस क़द्र मोजिज़े ज़ाहिर हुए हैं कि गिनती में नहीं आ सकते। लेकिन उन तमाम बेशुमार मोजिज़ों से बढ़-चढ़कर आपका सबसे आला मोजिज़ा यह क़ुरआने करीम है। अगर इस मोहतरम ख़त्मुल-मुर्सलीन आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजने से पहले ही हम उन नाफ़रमानों को अपने अ़ज़ाब से हलाक कर देते तो उनका यह उज़्र बाक़ी रह जाता कि अगर हमारे सामने कोई पैग़म्बर आता, कोई 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) नाज़िल होती तो हम ज़रूर उस पर ईमान लाते और उसकी ताबेदारी और हुक्म के पालन में लग जाते, और ज़िल्लत व रुस्वाई से बच जाते। इसलिये हमने उनका यह उज़्र भी काट (यानी ख़त्म कर) दिया। रसूल भेज दिया, किताब नाज़िल फ़रमा दी, उन्हें ईमान नसीब न हुआ, अ़ज़ाबों के मुस्तहिक़ बन गये और उज़्र (मजबूरी और बहाना) भी दूर हो गया।

हम ख़ूब जानते हैं कि एक क्या हज़ारों आयतें और निशानियाँ देखकर भी उन्हें ईमान नहीं आने का, हाँ जब अ़ज़ाबों को अपनी आँखों से देख लेंगे उस वक़्त ईमान लायेंगे। लेकिन उस वक़्त ईमान लाना कोई फ़ायदा न देगा। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि हमने यह पाक और बेहतर किताब नाज़िल फ़रमा दी है, जो बरकत वाली है, तुम इसे मान लो और इसके हुक्मों का पालन करो तो तुम पर रहम किया जायेगा। यही मज़मून इस आयत में है:

اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ......... الخ.

यानी कहते हैं कि रसूल के आने पर हम मोमिन बन जायेंगे। मोजिज़ा देखकर ईमान क़बूल कर लेंगे। लेकिन हम उनकी फ़ितरत से वाक़िफ़ हैं। ये तमाम आयतें (निशानियाँ) देखकर भी ईमान न लायेंगे। फिर

इरशाद होता है कि ऐ नबी! इन काफ़िरों से कह दीजिए कि इधर हम उधर तुम इन्तिज़ार कर रहे हो, अभी हाल खुल जायेगा कि सीधे रास्ते पर कौन है, हक़ की तरफ़ कौन चल रहा है, अ़ज़ाबों के देखते ही आँखें खुल जायेंगी। उस वक़्त मालूम हो जायेगा कि कौन गुमराही में मुब्तला था। घबराओ नहीं, अभी अभी (बहुत जल्दी) जान लोगे कि झूठा और नाफ़रमान कौन था? यक़ीनन मुसलमान सही और सीधे रास्ते पर हैं और ग़ैर-मुस्लिम उससे हटे हुए हैं।

अल्लाह का शुक्र है कि सोलहवें पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

MaKtabE Ashraf

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर सत्रह

सूरः अम्बिया

सूरः अम्बिया मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 112 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मन्क़ूल है कि सूरः बनी इस्राईल, सूरः कहफ़, सूरः मरियम, सूरः तॉहा और सूरः अम्बिया "इताक़-ए-अव्वल" (यानी पुरानी और तफ़सीली सूरतों में) से हैं और यही तिलावत की जाती हैं।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِیْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝ قٰلَ رَبِّیْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِی السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ

उन (इनकार करने वाले) लोगों से उनका हिसाब (का वक़्त) नज़दीक आ पहुँचा, और ये (अभी) ग़फ़लत (ही) में (पड़े हैं और) मुँह मोड़े हुए हैं। (1) उनके पास उनके रब की तरफ़ से जो ताज़ा नसीहत (उनके हाल के मुताबिक़) आती है, ये उसको ऐसे तरीक़े से सुनते हैं कि (उसके साथ) हँसी करते हैं। (2) (और) उनके दिल मुतवज्जह नहीं होते, और ये लोग यानी ज़ालिम (और काफ़िर) लोग (आपस में) चुपके-चुपके सरगोशी करते हैं कि यह (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) महज़ तुम जैसे एक (मामूली) आदमी हैं, तो क्या तुम फिर भी जादू (की बात सुनने के लिये उन) के पास जाओगे, हालाँकि तुम जानते हो। (3) (पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने) फ़रमाया कि मेरा रब हर बात को (चाहे) आसमान में (हो) और (चाहे) ज़मीन में (हो) जानता है, और वह ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है। (4) बल्कि (यूँ भी) कहा कि (यह क़ुरआन) परेशान ख़्यालात हैं, बल्कि उन्होंने (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने) इसको गढ़ लिया है, बल्कि यह तो एक शायर (शख़्स) है, (अगर वाक़ई यह रसूल हैं) तो इनको चाहिए कि हमारे पास कोई ऐसी (बड़ी) निशानी लाएँ जैसा कि पहले लोग रसूल बनाए गए। (और बड़े-बड़े

Maktab E Ashraf

मोजिज़े ज़ाहिर किए) (5) उनसे पहले कई बस्ती वाले जिनको हमने हलाक किया है, ईमान नहीं लाए, सो क्या ये लोग ईमान ले आएँगे। (6)	اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ۝ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ۝

हिसाब-किताब की घड़ी

अल्लाह तआ़ला लोगों को सचेत फ़रमा रहा है कि क़ियामत क़रीब आ गयी है, फिर भी लोगों की ग़फ़लत में कमी नहीं आयी, न वे उसके लिये कोई तैयारी कर रहे हैं, जो उन्हें आड़े वक़्त काम आये। बल्कि दुनिया में फंसे हुए, ऐसे मशग़ूल और व्यस्त हो रहे हैं कि क़ियामत से बिल्कुल ग़ाफ़िल हो गये हैं। जैसे एक और आयत में है:

اَتٰى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ.

यानी ख़ुदा तआ़ला का हुक्म आ पहुँचा, अब क्यों जल्दी मचा रहे हो?

दूसरी आयत में फ़रमाया गया है:

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ...... الخ.

क़ियामत क़रीब आ गयी और चाँद फट गया......।

अबू नवास शायर का एक शे'र ठीक इसी मायने का यह है:

اَلنَّاسُ فِيْ غَفَلَاتِهِمْ ☆ وَرَحَا الْمَنِيَّةِ تَطْحَنُ

कि मौत की चक्की ज़ोर ज़ोर से चल रही है और लोग ग़फ़लतों में पड़े हुए हैं।

हज़रत आ़मिर बिन रबीआ़ रज़ि. के यहाँ एक साहिब मेहमान बनकर आये। उन्होंने उनका बहुत इकराम और एहतिराम किया और उनके बारे में रसूले करीम सल्ल. से भी सिफ़ारिश की। एक दिन यह बुज़ुर्ग मेहमान उनके पास आये और कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मुझे फ़ुलाँ वादी अ़ता फ़रमा दी है, मैं चाहता हूँ कि इस बेहतर ज़मीन का एक टुकड़ा आपके नाम कर दूँ कि आपको भी ख़ुशहाली मिले और आपके बाद आपके बाल-बच्चे भी आसूदगी (आराम व राहत) से गुज़र करें। हज़रत आ़मिर रज़ि. ने जवाब दिया कि भाई मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं, आज एक ऐसी सूरत नाज़िल हुई है कि हमें तो दुनिया कड़वी मालूम होने लगी है। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई (यानी जिसकी तफ़सीर चल रही है)।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ............الخ

उसके बाद क़ुरैश के काफ़िर और उन्हीं जैसे दूसरे काफ़िरों के बारे में फ़रमाता है कि ये लोग अल्लाह के कलाम और उसकी 'वही' की तरफ़ कान ही नहीं लगाते। ये ताज़ा और नया आया हुआ ज़िक्र दिल लगाकर सुनते ही नहीं। इस कान से सुनते हैं उस कान से उड़ा देते हैं, हंसी खेल में मशग़ूल हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि तुम्हें अहले किताब की बातों के पूछने की क्या ज़रूरत है? उन्होंने अल्लाह की किताब में बहुत कुछ रद्दोबदल कर ली, कमी ज़्यादती कर ली, और तुम्हारे पास तो ख़ुदा की अभी की उतारी हुई ख़ालिस किताब मौजूद है, जिसमें कोई मिलावट नहीं होने

Maktab E Ashraf

पाई। ये लोग अल्लाह की किताब से बेपरवाही कर रहे हैं, अपने दिलों को उसके असर से ख़ाली रखना चाहते हैं। बल्कि ये ज़ालिम औरों को भी बहकाते हैं कि अपने जैसे एक इनसान की मातहती तो हम नहीं कर सकते। तुम कैसे लोग हो कि देखते भालते जादू को मान रहे हो? यह नामुम्किन है कि हम जैसे आदमी को अल्लाह तआला रिसालत और 'वही' के साथ ख़ास कर दे (यानी यह नहीं हो सकता कि कोई इनसान रसूल बने) फिर ताज्जुब है कि लोग बावजूद इल्म के जादू में आ जाते हैं।

उन बुरे किरदार वालों के जवाब में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि ये जो बोहतान बाँधते हैं उनसे कहिये कि जो ख़ुदा आसमान व ज़मीन की तमाम बातें जानता है, जिस पर कोई बात पोशीदा नहीं उसने पाक कलाम क़ुरआने करीम को नाज़िल फ़रमाया है। उसमें अगली पिछली तमाम ख़बरों का मौजूद होना ही इस बात की दलील है कि उसका उतारने वाला आ़लिमुल-ग़ैब है, वह तुम्हारी सब बातों का सुनने वाला और तुम्हारे तमाम हालात का इल्म रखने वाला है। पस तुम्हें उसका डर रखना चाहिये। फिर काफ़िरों की ज़िद, नासमझी और उल्टी बहस बयान फ़रमा रहा है, जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि वे ख़ुद हैरान हैं, किसी बात पर जम नहीं सकते। कभी कलामे ख़ुदा को जादू कहते हैं, कभी शायरी कहते हैं, कभी परेशान ख़्यालात और बेमानी बातें कहते हैं और कभी हुज़ूरे पाक सल्ल. का अपनी तरफ़ से गढ़ा हुआ बतलाने लगते हैं। ख़्याल करो कि अपने किसी क़ौल पर भरोसा न रखने वाला, जो ज़बान पर चढ़े बक देने वाला भी कहीं मुस्तक़िल-मिज़ाज (एक जगह पर जमने वाला) कहलाने का मुस्तहिक़ है?

कभी कहते थे कि अच्छा अगर यह सच्चा नबी है तो हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की तरह कोई ऊँटनी ले आता, या हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरह का कोई मोजिज़ा दिखाता या हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का कोई मोजिज़ा ज़ाहिर करता। बेशक ख़ुदा इन चीज़ों पर क़ादिर तो ज़रूर है लेकिन अगर ज़ाहिर हुईं और फिर भी ये अपने कुफ़्र से न हटे तो अल्लाह की आ़दत और दस्तूर की तरह अ़ज़ाबे ख़ुदा में पकड़ लिये और पीस दिये जायेंगे। उमूमन पहले लोगों ने यही कहा और ईमान नसीब न हुआ, ग़ारत कर दिये गये। इसी तरह ये भी ऐसे मोजिज़े तलब कर रहे हैं, अगर ज़ाहिर हुए तो ईमान न लायेंगे और तबाह हो जायेंगे। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

إِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ.......... الخ.

कि जिन पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है वे अगरचे बेशुमार और सारे मोजिज़े देख लें, ईमान क़बूल न करेंगे, हाँ दुखदायी अ़ज़ाब को देखने के बाद फ़ौरन तस्लीम कर लेंगे, लेकिन उस वक़्त ईमान लाना बेफ़ायदा है। बात भी यही है कि उन्हें ईमान लाना ही न था, वरना हुज़ूर सल्ल. के बेशुमार मोजिज़े रोज़मर्रा की निगाहों के सामने थे, बल्कि आपके ये मोजिज़े दूसरे अम्बिया से बहुत ज़्यादा ज़ाहिर और खुले हुए थे।

इब्ने अबी हातिम की एक बहुत ही ग़रीब रिवायत में है कि सहाबा-ए-किराम का एक मजमा मस्जिद में था, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन सलूल मुनाफ़िक़ आया, अपनी गद्दी बिछाकर अपना तकिया लगाकर शान से बैठ गया। था भी गोरा चिट्टा, बढ़कर बहुत अच्छे अन्दाज़ में बातें बनाने वाला कहने लगा ऐ अबू बक्र! तुम हुज़ूर सल्ल. से कहो कि आप कोई निशानी हमें दिखायें जैसे कि आपसे पहले के अम्बिया निशानात लाये थे, जैसे मूसा अ़लैहिस्सलाम तख़्तियाँ लाये, दाऊद अ़लैहिस्सलाम ज़बूर लाये, सालेह ऊँटनी लाये, ईसा इन्जील लाये और आसमानी दस्तरख़्वान।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु यह सुनकर रोने लगे। इतने में हुज़ूर सल्ल. घर से निकले तो आपने

Maktab-e-Ashraf

दूसरे सहाबा से फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल. की ताज़ीम के लिये खड़े हो जाओ और इस मुनाफ़िक़ की फ़रियाद दरबारे रिसालत में पहुँचाओ। आपने इरशाद फ़रमाया- सुनो मेरे लिये खड़े न हो जाया करो, सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये खड़े हुआ करो। सहाबा ने कहा हुज़ूर! हमें इस मुनाफ़िक़ से बड़ी ईज़ा (तकलीफ़) पहुँची है। आपने फ़रमाया अभी-अभी जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मेरे पास आये थे और मुझसे फ़रमाया कि बाहर जाओ और लोगों के सामने अपने उन फ़ज़ाईल का इज़हार करो और उन नेमतों का बयान करो जो ख़ुदा ने आपको अ़ता फ़रमाई हैं। मैं सारी दुनिया की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया हूँ। मुझे हुक्म हुआ है कि मैं जिन्नात को भी पैग़ामे ख़ुदा पहुँचा दूँ। मुझे मेरे रब ने अपनी किताब इनायत फ़रमाई है हालाँकि मैं बिल्कुल बेपढ़ा हूँ। मेरे तमाम अगले पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा दिये हैं। मेरा नाम अज़ान में रखा है, मेरी मदद फ़रिश्तों से कराई है, मुझे अपनी इमदाद व नुसरत अ़ता फ़रमाई है, मेरा रौब मेरे आगे-आगे कर दिया है, मुझे हौज़े कौसर अ़ता फ़रमाया है जो क़ियामत के दिन दूसरे तमाम हौज़ों से बड़ा होगा। मुझे ख़ुदा तआ़ला ने मक़ामे महमूद का वायदा दिया है, उस वक़्त जबकि सब लोग हैरान व परेशान सर झुकाये हुए होंगे। मुझे ख़ुदा ने उस पहले गिरोह में किया है जो लोगों से निकलेगा, मेरी शफ़ाअ़त से मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार शख़्स बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जायेंगे, मुझे ग़लबा और सल्तनत अ़ता फ़रमाई है, मुझे जन्नते नईम का वह बुलन्द व ऊँचा बालाख़ाना मिलेगा कि उससे आला मन्ज़िल किसी की न होगी, मेरे ऊपर सिर्फ़ वे फ़रिश्ते होंगे जो ख़ुदा तआ़ला के अ़र्श को उठाये हुए होंगे, मेरे और मेरी उम्मत के लिये ग़नीमतों के माल हलाल किये गये हलाँकि मुझसे पहले वे किसी के लिये हलाल न थे।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۝ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ۝ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ۝	और हमने आपसे पहले सिर्फ़ आदमियों ही को पैग़म्बर बनाया जिनके पास हम 'वही' भेजा करते थे, सो (ऐ इनकारियो!) अगर तुमको (यह बात) मालूम न हो तो अहले किताब से मालूम कर लो। (7) और हमने उन (रसूलों) के लिए ऐसे जुस्से "यानी जिस्म और वजूद" नहीं बनाए थे जो खाना न खाते हों (यानी फ़रिश्ता न बनाया था) और वे (हज़रात भी दुनिया में) हमेशा रहने वाले नहीं हुए। (8) फिर हमने जो उनसे वायदा किया था उसको सच्चा किया, यानी उनको और जिन-जिनको (निजात देना) मन्ज़ूर हुआ हमने निजात दी और (इताअ़त) की हद से गुज़रने वालों को हलाक किया। (9)

जानने वालों से मालूम कर लो

चूँकि मुश्रिक लोग इसके मुन्किर थे कि इनसानों में से कोई इनसान ख़ुदा का रसूल हो, इसलिये अल्लाह तआ़ला उनके इस अ़क़ीदे की तरदीद करता है। फ़रमाता है कि तुझसे पहले जितने रसूल आये सब इनसान ही थे, उनमें एक भी फ़रिश्ता न था। जैसे एक दूसरी आयत में है:

Maktab-E-Ashraf

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰی.

यानी तुझसे पहले हमने जितने रसूल भेजे और उनकी तरफ़ 'वही' नाज़िल फ़रमाई, सब शहरों के रहने वाले इनसान ही थे। एक और आयत में है:

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ......الخ

यानी कह दे कि मैं कोई नया, अनोखा और सबसे पहला रसूल तो हूँ नहीं।

इन काफ़िरों से पहले के काफ़िरों ने भी नबियों के न मानने का यही हीला (बहाना) किया था जैसे क़ुरआन ने बयान फ़रमाया कि उन्होंने कहा था:

اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا.

क्या एक इनसान हमारा रहबर होगा?

अल्लाह तआ़ला इस आयत में फ़रमाता है कि अच्छा तुम अहले इल्म से यानी यहूदियों और ईसाईयों से और दूसरे गिरोह से पूछ लो कि उनके पास इनसान ही रसूल बनाकर भेजे गये या फ़रिश्ते? यह भी ख़ुदा का एहसान है कि इनसानों के पास उन्हीं जैसे इनसानों को रसूल बनाकर भेजता है ताकि लोग उनके पास बैठ-उठ सकें, उनसे तालीम हासिल कर सकें और उनकी बातें समझ सकें। वे पहले पैग़म्बर सबके सब ऐसे वजूद न थे जो खाने पीने की हाजत न रखते हों, बल्कि वे खाने पीने के मोहताज थे। जैसे फ़रमाते हैं:

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِی الْاَسْوَاقِ.

यानी तुझसे पहले जितने रसूल हमने भेजे वे सब खाना खाया करते थे, और बाज़ारों में आना-जाना भी करते थे। यानी वे सब इनसान थे, इनसानों की तरह खाते पीते थे और काम-काज, ख़रीद व फ़रोख़्त और तिजारत के लिये बाज़ारों में भी आना-जाना रखते थे। पस यह बात उनकी पैग़म्बरी के ख़िलाफ़ नहीं, जैसा कि मुश्रिकों का क़ौल था:

مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِیْ فِی الْاَسْوَاقِ......... الخ.

यानी यह रसूल कैसा है? जो खाता पीता है और बाज़ारों में आता-जाता है। इसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता ताकि वह भी इसके दीन की तब्लीग़ करता। अच्छा यह नहीं तो इसे किसी ख़ज़ाने का मालिक क्यों नहीं बना दिया जाता, इसे कोई बाग़ ही दे दिया जाता जिससे यह फ़राग़त और सहूलत से खा पी तो लेता......। इसी तरह पहले के पैग़म्बर भी दुनिया में न रहे, आये और गये। जैसे कि फ़रमान है:

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ..........الخ

यानी तुझसे पहले भी हमने किसी इनसान के लिये हमेशगी नहीं की। अलबत्ता उनके पास अल्लाह की 'वही' आती रही। फ़रिश्ता ख़ुदा के हुक्म से अहकाम पहुँचा दिया करता था। फिर रब का जो वायदा उनसे था वह सच्चा होकर रहा, यानी उनके मुख़ालिफ़ लोग अपने ज़ुल्म की वजह से तबाह हो गये। वे और उनके मानने वाले निजात पा गये और कामयाब हुए। और हद से गुज़र जाने वालों को यानी नबियों के झुठलाने वालों को अल्लाह ने हलाक कर दिया।

लَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْئَلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝	हम तुम्हारे पास ऐसी किताब भेज चुके हैं कि उसमें तुम्हारी नसीहत (काफ़ी मौजूद) है, क्या फिर भी तुम नहीं समझते (और नहीं मानते)। (10) और हमने बहुत-सी बस्तियाँ जहाँ के रहने वाले ज़ालिम (यानी काफ़िर) थे, ग़ारत कर दीं, और उनके बाद दूसरी क़ौम पैदा कर दी। (11) सो जब उन्होंने हमारा अज़ाब आता देखा तो उस (बस्ती) से भागना शुरू कर किया। (12) भागो मत और अपने ऐश के सामान की तरफ़ और अपने मकानों की तरफ़ वापस चलो, शायद तुमसे कोई पूछे-पाछे। (13) वे लोग (अज़ाब नाज़िल होने के वक़्त) कहने लगे कि हाय हमारी कमबख़्ती! इसमें कोई शक नहीं कि हम लोग ज़ालिम थे। (14) सो उनकी यही (चीख़) पुकार रही यहाँ तक कि हमने उनको ऐसा (नेस्तनाबूद) कर दिया, जिस तरह खेती कट गई हो और आग ठंडी हो गई हो। (15)

जब वह घड़ी आ पहुँची तो

अल्लाह तआ़ला अपने कलामे पाक की फ़ज़ीलत बयान करते हुए उसकी क़द्र व रुतबे की तरफ़ मुतवज्जह करने के लिये फ़रमाता है कि हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी है, जिसमें तुम्हारी बुज़ुर्गी (बड़ाई का बयान) है। तुम्हारा दीन तुम्हारी शरीअ़त और तुम्हारी बातें हैं। फिर ताज्जुब है कि तुम इस अहम नेमत की क़द्र नहीं करते और इतनी बड़ी शराफ़त वाली किताब से ग़फ़लत बरत रहे हो। जैसे एक और आयत में है:

وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ .... الخ

तेरे लिये और तेरी क़ौम के लिये यह नसीहत है और तुमसे इसके बारे में सवाल किया जायेगा।

फिर फ़रमाता है कि हमने बहुत सी बस्तियों के ज़ालिमों को बरबाद कर दिया। एक और आयत में है कि हमने नूह के बाद भी बहुत सी बस्तियाँ हलाक कर दीं। एक और आयत में है कि कितनी सारी बस्तियाँ हैं जो पहले बहुत तरक़्क़ी और इन्तिहाई रौनक़ पर थीं लेकिन फिर वहाँ के लोगों के ज़ुल्म की बिना पर हमने उनका चूरा-चूरा कर दिया, भुस उड़ा दिया, आबादी वीराने से और रौनक़ सुनसानी से बदल गयी। उनकी बरबादी के बाद और लोगों को उनका जानशीन (जगह लेने वाला) बना दिया। एक क़ौम के बाद दूसरी और तीसरी यूँ ही आती रहीं। जब उन लोगों ने अज़ाब को आता देख लिया और यक़ीन हो गया कि ख़ुदा के नबी के फ़रमान के मुताबिक़ ख़ुदा के अज़ाब आ गये तो उस वक़्त घबराकर राह ढूँढने लगे। लगे

Maktab E Ashraf

इधर-उधर दौड़-धूप करने। अब भागो दौड़ो नहीं, बल्कि अपने महलों में और अपने ऐश व आराम के सामानों में फिर आ जाओ, ताकि तुमसे सवाल जवाब तो हो जाये कि तुमने ख़ुदा की नेमतों का शुक्र अदा भी किया या नहीं? यह फ़रमान डाँट-डपट और उन्हें ज़लील व हक़ीर करने के लिये होगा। उस वक़्त ये अपने गुनाहों का इक़रार करेंगे, साफ़ कहेंगे कि बेशक हम ज़ालिम थे, लेकिन उस वक़्त का इक़रार बिल्कुल बेनफ़ा है। फिर तो ये इक़रारी ही रहेंगे यहाँ तक कि उनका नास हो जाये, उनकी आवाज़ दबा दी जाये और ये ख़त्म कर दिये जायें। उनका चलना-फिरना आना-जाना बोलना-चालना सब कुछ लिख लिया जाये।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
لٰعِبِيْنَ ○ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّا
تَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ○ بَلْ
نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا
هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ○
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَنْ
عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا
يَسْتَحْسِرُوْنَ ○ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
لَا يَفْتُرُوْنَ ○

हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है उसको इस तौर पर नहीं बनाया कि हम बेफ़ायदा काम करने वाले हों। (16) (और) अगर हमको मश्गला ही बनाना मन्ज़ूर होता तो हम ख़ास अपने पास की चीज़ को मश्गला बनाते, अगर हमको यह करना होता। (17) बल्कि हम हक़ बात को बातिल पर फेंक मारते हैं, सो वह (हक़) उस (बातिल) का भेजा निकाल देता है, (यानी उसको मग़लूब कर देता है) सो वह (मग़लूब होकर) यकायक जाता रहता है, और तुम्हारे लिए उस बात से बड़ी ख़राबी होगी जो तुम गढ़ते हो। (18) और (हक़ तआ़ला की वह शान है कि) जितने कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं सब उसी के हैं, और (उनमें से) जो उसके (यानी अल्लाह तआ़ला के) नज़दीक (बड़े मक़बूल व मुक़र्रब) हैं, वे उसकी इबादत से शर्म नहीं करते और न ही थकते हैं। (19) (बल्कि) रात और दिन (अल्लाह की) तस्बीह करते हैं (किसी वक़्त) बन्द नहीं करते। (20)

यह सब कुछ बेकार नहीं

आसमान व ज़मीन को ख़ुदा तआ़ला ने अ़दल से पैदा किया है, ताकि बुरों को सज़ा और नेकों को जज़ा दे। उसने इन्हें बेकार और खेल-तमाशे के तौर पर पैदा नहीं किया। एक आयत में इस मज़मून के साथ ही बयान है कि यह गुमान तो काफ़िरों का है जिनके लिये जहन्नम की आग तैयार है। दूसरी आयत के एक मायने तो यह हैं कि अगर हम खेल-तमाशा ही चाहते तो उसे बना लेते। एक मायने यह हैं कि अगर हम औरत करना चाहते। 'लह्व' के मायने यमन वालों के नज़दीक बीवी के भी आते हैं, यानी हम अगर बीवी बनाना चाहते तो 'हूरे ऐन' में से जो हमारे पास हैं किसी को बना लेते। एक मायने यह भी हैं

Maktab E Ashraf

कि हम अगर औलाद चाहते। लेकिन ये दोनों मायने आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, बीवी के साथ ही औलाद है। जैसे एक और जगह फ़रमान है:

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا........ الخ.

यानी अगर ख़ुदा को यही मन्ज़ूर होता कि उसकी औलाद हो तो अपनी मख़्लूक़ में से किसी आला दर्जे की मख़्लूक़ को यह मन्सब (दर्जा और हैसियत) अ़ता फ़रमाता। लेकिन वह इस बात से पाक और बहुत दूर है। यह उसकी तौहीद (एक होने की शान) और ग़लबे के ख़िलाफ़ है कि उसकी औलाद हो। पस वह औलाद से पूरी तरह पाक है। न ईसा उसका बेटा है, न उज़ैर, न फ़रिश्ते उसकी लड़कियाँ हैं। उन ईसाईयों, यहूदियों और मक्का के काफ़िरों की इस बेहूदा बात से, तोहमत से ख़ुदा तआ़ला पाक और बुलन्द है।

"इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन" में "इन्-न" को नाफ़िया कहा गया है। यानी हम यह करने वाले ही न थे। बल्कि इमाम मुजाहिद का क़ौल है कि क़ुरआन मजीद में हर जगह "इन्-न" नफ़ी (मना करने और नकारने) के लिये ही है, हम हक़ को वाज़ेह करते हैं, उसे खोलकर बयान करते हैं जिससे बातिल दब जाता और फ़ौरन हट जाता है। वह है भी इसी लायक़, वह ठहर नहीं सकता, न जम सकता है, न देर तक क़ायम रह सकता है। ख़ुदा के लिये जो लोग औलाद ठहरा रहे हैं उनके इस बेहूदा क़ौल की वजह से उनके लिये तबाही है, उन्हें पूरी ख़रावी है।

फिर इरशाद फ़रमाता है कि जिन फ़रिश्तों को तुम ख़ुदा की लड़कियाँ कहते हो उनका हाल सुनो और ख़ुदा की अ़ज़मत (बड़ाई) देखो। आसमान व ज़मीन की चीज़ उसकी मिल्कियत में है, फ़रिश्ते उसकी इबादत में मशग़ूल हैं। नामुम्किन है कि ये किसी वक़्त उसके हुक्म से मुँह फेरें। न हज़रत मसीह को अल्लाह का बन्दा होने से शर्म है न फ़रिश्तों को ख़ुदा की इबादत से आ़र, न उनमें से कोई तकब्बुर करे, न इबादत से जी चुराये, और जो कोई ऐसा करे तो एक वक़्त आ रहा है कि वह ख़ुदा के सामने मैदाने हश्र में सबके साथ होगा और अपना किया भरेगा। ये बुज़ुर्ग फ़रिश्ते उसकी इबादत से थकते भी नहीं, घबराते भी नहीं, सुस्ती और काहिली उनके पास भी नहीं फटकती। दिन रात अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में, उसकी इबादत में, उसकी तस्बीह व इताअ़त में लगे हुए हैं, नीयत और अ़मल दोनों मौजूद हैं, ख़ुदा की कोई नाफ़रमानी नहीं करते, न किसी फ़रमान की तामील से रोकते हैं।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल. सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के मजमे में थे कि फ़रमाया लोगो! जो मैं सुनता हूँ क्या तुम भी सुनते हो? सबने जवाब दिया कि हज़रत हम तो कुछ भी नहीं सुन रहे। आपने फ़रमाया मैं आसमानों की चरचराहट सुन रहा हूँ, और हक़ तो यह है कि उसे चरचराना ही चाहिये कि उसमें बालिश्त भर जगह भी ऐसी नहीं जहाँ किसी न किसी फ़रिश्ते का सर सज्दे में न हो। अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नौफ़ल फ़रमाते हैं, मैं हज़रत कअ़बे अहबार रह. के पास बैठा हुआ था, उस वक़्त मैं छोटी उम्र का था, मैंने उनसे इस आयत का मतलब पूछा कि बोलना-चालना, ख़ुदा का पैग़ाम लेकर जाना, कोई अ़मल करना, यह भी उन्हें तस्बीह से नहीं रोकता? मेरे इस सवाल पर चौकन्ने होकर आपने फ़रमाया- यह बच्चा कौन है? लोगों ने कहा अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद में से है। आपने मेरी पेशानी चूम ली और फ़रमाया प्यारे बच्चे! तस्बीह उन फ़रिश्तों के लिये ऐसी ही है जैसे हमारे लिये साँस लेना। देखो चलते-फिरते बोलते-चालते तुम्हारा साँस बराबर आता-जाता रहता है, इसी तरह फ़रिश्तों की तस्बीह हर वक़्त जारी रहती है।

Maktab E Ashraf

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ○ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ○ لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُوْنَ ○	क्या (बावजूद इन दलीलों के) उन लोगों ने अल्लाह के सिवा और माबूद बना रखे हैं, (ख़ासकर) ज़मीन (की चीज़ों में) से (जैसे पत्थर या खनिज पदार्थ के बुत) जो किसी को ज़िन्दा करते हों। (21) ज़मीन (में या) आसमान में अल्लाह तआ़ला के सिवा और माबूद (जिसका वजूद अपना ज़ाती हो) होता तो दोनों दर्हम-बर्हम "यानी उलट-पुलट" हो जाते, सो (इन तक़रीरों से साबित हुआ कि) अल्लाह मालिके अ़र्श उन चीज़ों से पाक है जो ये लोग बयान कर रहे हैं। (22) वह जो कुछ करता है उससे कोई पूछताछ नहीं कर सकता, और औरों से पूछताछ की जा सकती है। (23)

अ़र्श-ए-अ़ज़ीम का मालिक

शिर्क की तरदीद हो रही है कि जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूज रहे हो उनमें एक भी ऐसा नहीं जो मुर्दों को जिला सके, किसी में या सब में मिलकर यह क़ुदरत नहीं। फिर उन्हें इस क़ुदरत वाले के बराबर मानना या उनकी इबादत करना किस क़द्र नाइन्साफ़ी है। फिर फ़रमाता है, सुनो! अगर यह मान लिया जाये कि वास्तव में बहुत से ख़ुदा हैं तो लाज़िम आयेगा कि ज़मीन व आसमान तबाह व बरबाद हो जायें। जैसे एक और जगह फ़रमान है:

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ........ الخ.

ख़ुदा की औलाद नहीं, न उसके साथ और कोई माबूद है। अगर ऐसा होता तो हर माबूद अपनी अपनी मख़्लूक़ को लिये फिरता, और हर एक दूसरे पर ग़ालिब आने की कोशिश करता। अल्लाह तआ़ला उनकी बयान की हुई बातों से पाक और बरी है।

यहाँ फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अ़र्श का मालिक उनकी कही हुई बेहूदा और बेबुनियाद बातों से यानी लड़कियों से पाक है। इसी तरह शरीक और साझी से, अपने जैसे और साथी से भी बुलन्द व बाला है। उनकी ये सब तोहमतें हैं जिनसे ख़ुदा की ज़ात बुलन्द है। उसकी शान तो यह है कि वह हर चीज़ का मालिक और कुल कायनात का हक़ीक़ी शहंशाह है। उस पर कोई हाकिम नहीं, सब उसके ग़लबे और फ़रमान व ताक़त के तहत हैं। न तो उसके हुक्म का कोई पीछा कर सके, न उसके फ़रमान को कोई टाल सके, उसकी किब्रियाई और अ़ज़मत, जलाल और हुकूमत, इल्म और हिक्मत, लुत्फ़ और रहमत बेअन्दाज़ा है। किसी की उसके आगे दम मारने की मजाल नहीं। सब पस्त और आ़जिज़ हैं, लाचार और बेबस हैं। कोई नहीं जो चूँ कर सके। कोई नहीं जो उसके सामने बोल सके, कोई नहीं जिसे चूँ-चरा का इख़्तियार हो, जो उससे पूछ सके कि यह काम क्यों किया? ऐसा क्यों हुआ? वह चूँकि तमाम मख़्लूक़ात का ख़ालिक़ है, सबका मालिक है, उसे इख़्तियार है जिससे जो चाहे सवाल करे, हर एक के आमाल की वह पूछताछ करेगा।

Maktab E Ashraf

जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है:

فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ......... الخ.

तेरे रब की क़सम हम उन सबसे सवाल करेंगे, हर उस फ़ेल (अ़मल और हरकत) के बारे में जो उन्होंने किया। यही है कि जो उसकी पनाह में आ गया वह तमाम बुराईयों से बच गया और कोई नहीं जो उसके मुजरिम को पनाह दे सके।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ○ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ○	क्या उस (ख़ुदा) को छोड़कर उन्होंने और माबूद बना रखे हैं? (उनसे) कहिए कि तुम (इस दावे पर) अपनी दलील पेश करो, यह मेरे साथ वालों की किताब (यानी क़ुरआन) और मुझसे पहले लोगों की किताबें (यानी तौरात व इन्जील व ज़बूर) मौजूद हैं, बल्कि उनमें ज़्यादा वही हैं जो हक़ बात का यक़ीन नहीं करते, सो (इस वजह से) वे मुँह मोड़ रहे हैं। (24) और हमने आपसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिस के पास हमने यह 'वही' न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई माबूद (होने के लायक़) नहीं, पस मेरी (ही) इबादत किया करो। (25)

अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं

उन लोगों ने ख़ुदा के सिवा जिन-जिनको माबूद बना रखा है उनकी इबादत पर उनके पास कोई दलील नहीं, और हम जिस ख़ुदा की इबादत कर रहे हैं उसमें सच्चे हैं। हमारे हाथों में सबसे बड़ी दलील कलामे ख़ुदा मौजूद है और इससे पहले की तमाम ख़ुदाई किताबें भी इसी की दलील में बुलन्द आवाज़ से गवाही देती हैं जो तौहीद (अल्लाह के एक होने) की मुवाफ़क़त में और काफ़िरों की ख़ुद-परस्ती के ख़िलाफ़ में हैं। जो किताब जिस पैग़म्बर पर उतरी उसमें यह बयान मौजूद था कि ख़ुदा के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, लेकिन अक्सर मुशरिक हक़ से ग़ाफ़िल और ख़ुदाई बातों के मुन्किर हैं। तमाम रसूलों को अल्लाह की तौहीद की ही तलक़ीन होती रही। फ़रमान है:

وَاسْئَلْ مَنْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا........ الخ.

आप से पहले जो अम्बिया गुज़रे हैं तो आप पूछ लें कि क्या हमने उनके लिये अपने सिवा और कोई माबूद मुक़र्रर किया था कि वे उसकी इबादत करते हों? एक और आयत में है:

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ.

हमने हर उम्मत में अपना पैग़म्बर भेजा जिसने लोगों में ऐलान किया कि तुम सब एक अल्लाह ही की इबादत करो और उसके सिवा हर एक की इबादत से अलग रहो। पस अम्बिया की शहादत (गवाही) भी

यही है और ख़ुद अल्लाह की फ़ितरत (क़ुदरत) भी इसी की शाहिद (गवाह) है, और मुश्रिकों की कोई दलील नहीं। उनकी सारी हुज्जतें बेकार हैं, उन पर ख़ुदा का ग़ज़ब है और उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब हैं।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ۝

और ये (मुश्रिक) लोग (यूँ) कहते हैं कि (ख़ुदा-ए-) रहमान ने (फ़रिश्तों को) औलाद बना रखा है, वह (अल्लाह तआ़ला इससे) पाक है बल्कि (वे फ़रिश्ते उसके) सम्मानित बन्दे हैं। (26) वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं कर सकते, और वे उसी के हुक्म के मुवाफ़िक़ अ़मल करते हैं। (27) (वे जानते हैं कि) अल्लाह तआ़ला उनके अगले-पिछले हालात को जानता है, और सिवाय उसके जिसके लिए (शफ़ाअ़त करने की) ख़ुदा तआ़ला की मर्ज़ी हो और किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते, और वे सब अल्लाह तआ़ला की हैबत से डरते (रहते) हैं। (28) और उनमें से जो शख़्स (मान लो यूँ) कहे कि मैं अ़लावा ख़ुदा के माबूद हूँ, सो हम उसको जहन्नम की सज़ा देंगे, (और) हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (29)

कितनी ग़लत बात कहते हैं

मक्का के काफ़िरों का ख़्याल था कि फ़रिश्ते अल्लाह की लड़कियाँ हैं। उनके इस ख़्याल की तरदीद (खंडन) करते हुए ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि यह बिल्कुल ग़लत है, फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला के बुज़ुर्ग बन्दे हैं, बहुत बड़ाईयों वाले और इज़्ज़त वाले हैं। अपने क़ौल और फ़ेल के एतिबार से हर वक़्त अल्लाह की इताअ़त में मशग़ूल हैं। न तो किसी मामले में उससे आगे बढ़ते हैं न किसी बात में उसके फ़रमान के ख़िलाफ़ करते हैं, बल्कि जो वह फ़रमाये दौड़कर उसका पालन करते हैं। अल्लाह के इल्म में घिरे हुए हैं, उस पर कोई बात छुपी नहीं, आगे पीछे दायें बायें का उसे इल्म है, ज़र्रे ज़र्रे से वह वाक़िफ़ है। ये पाक फ़रिश्ते भी इतनी मजाल नहीं रखते कि ख़ुदा के किसी मुजरिम की ख़ुदा के सामने उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सिफ़ारिश के लिये लब हिला सकें। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ.

वह कौन है जो उसकी इजाज़त के बिना किसी की सिफ़ारिश उसके पास ले जा सके? एक और आयत में है:

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ.

यानी उसके पास किसी की शफ़ाअ़त उसकी अपनी इजाज़त के बिना चल नहीं सकती।

इस मज़मून की और भी बहुत सी आयतें क़ुरआने करीम में मौजूद हैं। फ़रिश्ते और अल्लाह के ख़ास क़रीबी बन्दे तमाम के तमाम अल्लाह के ख़ौफ़, हैबत और उसके जलाल से डरे सहमे हुए रहते हैं। उनमें से जो भी ख़ुदाई का दावा करे हम उसे जहन्नम का ईंधन बना देंगे। ज़ालिमों से हम ज़रूर इन्तिक़ाम ले लिया करते हैं। यह बात बतौर शर्त के है और शर्त के लिये यह ज़रूरी नहीं कि उसका वक़ूअ़ भी हो, यानी यह ज़रूरी नहीं कि अल्लाह के ख़ास बन्दों में से कोई ऐसा नापाक दावा करे और ऐसी सख़्त सज़ा भुगते। इसी तरह की आयतः

قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ.

औरः

لَئِنْ اَشْرَكْتَ........ الخ.

हैं। जिनमें कहा गया है कि अगर अल्लाह की कोई औलाद होती, और यह कि अगर आपने शिर्क किया। पस न तो रहमान की औलाद है न नबी करीम सल्ल. से शिर्क मुम्किन है।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَیْءٍ حَیٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ○ وَجَعَلْنَا فِی الْاَرْضِ رَوَاسِیَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ○ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ○ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ○	क्या उन काफ़िरों को यह मालूम नहीं हुआ कि आसमान और ज़मीन (पहले) बन्द थे, फिर हमने दोनों को (अपनी क़ुदरत से) खोल दिया, और हमने (बारिश के) पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया है, क्या (इन बातों को सुनकर) फिर भी ईमान नहीं लाते? (30) और हमने ज़मीन में इसलिए पहाड़ बनाए कि ज़मीन उन लोगों को लेकर हिलने (न) लगे, और हमने इस (ज़मीन) में खुले-खुले रास्ते बनाए ताकि वे लोग (उनके ज़रिये से) मन्ज़िले (मक़सूद) को पहुँच जाएँ। (31) और हमने (अपनी क़ुदरत से) आसमान को एक छत (की तरह) बनाया जो महफ़ूज़ है, और ये लोग इस (आसमान के अन्दर) की (मौजूदा) निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं। (32) और वह ऐसा है कि उसने रात और दिन और सूरज और चाँद बनाए (वे निशानियाँ यही हैं) हर एक एक-(एक) दायरे में तैर रहे हैं। (33)

कुछ निशानियाँ

अल्लाह तआ़ला इस बात को बयान फ़रमाता है कि उसकी क़ुदरत पूरी है और उसका ग़लबा ज़बरदस्त है। फ़रमाता है कि जो काफ़िर अल्लाह के सिवा औरों की पूजा-पाठ करते हैं, क्या उन्हें इतना भी इल्म नहीं

कि तमाम मख़्लूक़ का पैदा करने वाला अल्लाह ही है और सब चीज़ों का निगहबान भी यही है। फिर उसके साथ दूसरों की इबादत तुम क्यों करते हो? शुरू में ज़मीन व आसमान मिले-जुले एक दूसरे से जुड़े हुए तह-ब-तह थे, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अलग-अलग किया, ज़मीनों को नीचे आसमानों को ऊपर फ़ासले और हिक्मत से क़ायम किया। सात ज़मीनें पैदा कीं और सात ही आसमान बनाये। ज़मीन और पहले आसमान के बीच ख़ला (ख़ाली जगह) रखा। आसमान से पानी बरसाया और ज़मीन से पैदावार उगाई, हर ज़िन्दा चीज़ पानी से पैदा की। क्या ये तमाम चीज़ें जिनमें से हर एक बनाने वाले की ख़ुद-मुख़्तारी, क़ुदरत और वह्दत (एक अकेला होने) पर दलालत करती है, अपने सामने मौजूद पाते हुए भी ये लोग ख़ुदा की अ़ज़मत (बड़ाई) के क़ायल होकर शिर्क को नहीं छोड़ते? अ़रबी के एक शायर ने कहा है:

فَفِي كُلِّ شَيْءٍ لَّهُ آيَةٌ ☆ تَدُلُّ عَلَى اَنَّهُ وَاحِدٌ

यानी हर चीज़ में ख़ुदा की ख़ुदाई और उसकी वह्दानियत (एक होने) का निशान मौजूद है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सवाल हुआ कि पहले रात थी या दिन? आपने फ़रमाया कि पहले ज़मीन व आसमान मिले-जुले तह-ब-तह थे। तो ज़ाहिर है कि उनमें अंधेरे का नाम ही रात है तो साबित हुआ कि रात पहले थी। इब्ने उमर रज़ि. से जब इस आयत की तफ़सीर पूछी गयी तो आपने फ़रमाया कि तुम हज़रत इब्ने अ़ब्बास से सवाल करो और जो वह जवाब दें मुझे भी बता देना। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया ज़मीन व आसमान सब एक साथ थे। न बारिश बरसती थी, न पैदावार उगती थी। जब अल्लाह तआ़ला ने रूह वाली मख़्लूक़ पैदा की तो आसमान को फाड़कर उसमें से पानी बरसाया और ज़मीन को चीरकर उसमें से पैदावार उगाई। जब साईल (मालूम करने वाले) ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से यह जवाब बयान किया तो आप बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे आज मुझे और भी यक़ीन हो गया कि क़ुरआन के इल्म में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बहुत ही बढ़े हुए हैं। मेरे जी में कभी ख़्याल आता था कि ऐसा तो नहीं कि इब्ने अ़ब्बास की जुर्रत बढ़ गयी हो (यानी वह क़ुरआन की व्याख्या में कुछ बातें अपनी तरफ़ से बयान कर देते हों) लेकिन आज वह वस्वसा (दिल में आने वाला एक ख़्याल) दिल से जाता रहा।

आसमान को फाड़कर सात आसमान बनाये, ज़मीन के मजमूए को चीरकर सात ज़मीनें बनायीं। मुजाहिद रह. की तफ़सीर में यह भी है कि ये मिले हुए थे, यानी एक ही थे, फिर अलग-अलग कर दिये गये। ज़मीन आसमान के बीच ख़ला रख दिया गया। पानी को तमाम जानदारों की असल बना दिया। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने एक मर्तबा हुज़ूरे पाक से कहा हुज़ूर! जब मैं आपको देखता हूँ तो मेरा जी ख़ुश हो जाता है और मेरी आँखें ठण्डी होती हैं। आप हमें तमाम चीज़ों की असलियत से ख़बरदार कर दें। आपने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरह! तमाम चीज़ें पानी से पैदा की गयी हैं। एक और रिवायत में है कि फिर मैंने कहा या रसूलल्लाह! मुझे कोई ऐसा अ़मल बता दीजिए जिसमें मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ? आपने फ़रमाया लोगों को सलाम किया करो, खाना खिलाया करो, सिला-रहमी करते रहो और रात को जब लोग सोते हुए हों तुम तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो ताकि सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

ज़मीन को अल्लाह तआ़ला ने पहाड़ों की मेख़ों (कीलों) से मज़बूत कर दिया, ताकि ये हिल-जुलकर लोगों को परेशान न करें। मख़्लूक़ को ज़लज़ले में न डालें। ज़मीन की तीन चौथाईयाँ तो पानी में हैं और सिर्फ़ एक चौथाई हिस्सा सूरज और हवा के लिये खुला हुआ है, ताकि लोग आसमान को और उसके अ़जायबात (आश्चर्य चकित करने वाली चीज़ों) को अपनी आँखों से मुलाहिज़ा कर सकें। फिर ज़मीन में

Maktab E Ashraf

ख़ुदा तआला ने अपनी कामिल रहमत से राहें बना दीं कि लोग आसानी के साथ अपने सफ़र तय कर सकें और दूर-दराज़ मुल्कों में भी पहुँच सकें। शाने ख़ुदा देखिये इस हिस्से और टुकड़े के दरमियान बुलन्द पहाड़ी रोक और आड़ है, यहाँ से वहाँ पहुँचना बज़ाहिर सख़्त दुश्वार मालूम होता है, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत ख़ुद उस पहाड़ में रास्ता बना देती है कि यहाँ के लोग वहाँ और वहाँ के लोग यहाँ पहुँच जायें और अपने काम-काज पूरे कर लें।

आसमान को ज़मीन पर एक गुंबद की तरह बना दिया। जैसे कि फ़रमान है कि हमने आसमान को अपने हाथों से बनाया और हम वुस्अत और कुशादगी वाले हैं। फ़रमाता है- क़सम है आसमान और उसकी बनावट की। इरशाद है क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनके सरों पर आसमान को किस कैफ़ियत का बनाया है और किस तरह ज़ीनत दे रखी है, और लुत्फ़ यह है कि इतने बड़े आसमान में कोई सुराख़ तक नहीं। बिना कहते हैं गुंबद और ख़ेमे के खड़ा करने को, जैसे रसूले करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि इस्लाम की बिना पाँच हैं जैसे पाँच सुतून पर कोई गुंबद या ख़ेमा खड़ा हुआ हो। फिर आसमान जो एक छत की तरह है, यह है भी सुरक्षित, बुलन्द, पहरे चौकी वाला कि कहीं से उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचता। बुलन्द व बाला, ऊँचा और साफ़ है। जैसे हदीस में है कि किसी शख़्स ने हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया कि यह आसमान क्या है? आपने फ़रमाया- रुकी हुई मौज है। यह रिवायत सनद के एतिबार से ग़रीब है लेकिन लोग ख़ुदा की इन ज़बरदस्त निशानियों से भी बेपरवाह हैं। जैसे फ़रमान है कि आसमान व ज़मीन की बहुत सी निशानियाँ हैं जो लोगों की निगाहों के सामने हैं, लेकिन फिर भी वे उनसे मुँह मोड़े हुए हैं, कोई ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते। कभी नहीं सोचते कि कितना फैला हुआ, कितना बुलन्द, किस क़द्र अज़ीमुश्शान यह आसमान हमारे सरों पर बग़ैर सुतून के ख़ुदा तआला ने क़ायम कर रखा है, फिर उसमें किस ख़ूबसूरती से सितारों का जड़ाव हो रहा है। उनमें भी कोई ठहरा हुआ कोई चलता-फिरता है। फिर सूरज की चाल मुक़र्रर है, उसकी मौजूदगी दिन है, उसका नज़र न आना रात है। पूरे आसमान का चक्कर सिर्फ़ एक दिन रात में सूरज पूरा कर लेता है। उसकी चाल को उसकी तेज़ी को सिवाय ख़ुदा के कोई नहीं जानता, यूँ अटकलें और अन्दाज़े करना और बात है।

बनी इस्राईल के आबिदों में से एक ने अपनी तीस साल की मुद्दत की इबादत पूरी कर ली, मगर जिस तरह दूसरे और आबिदों पर तीस साल की इबादत के बाद बादल का साया हो जाया करता था उस पर न हुआ तो उसने अपनी वालिदा (माँ) से यह हाल बयान किया। उसने कहा बेटे तुमने इस इबादत के ज़माने में कोई गुनाह कर लिया होगा। उसने कहा माँ एक भी नहीं। कहा फिर तुमने किसी गुनाह का पूरा इरादा किया होगा। जवाब दिया कि ऐसा भी नहीं। माँ ने कहा हो सकता है कि तुमने आसमान की तरफ़ नज़र की हो और ग़ौर व तदब्बुर के बग़ैर ही हटा ली हो। आबिद ने जवाब दिया ऐसा तो बराबर होता रहा। फ़रमाया बस यही सबब है।

फिर अपनी कामिल क़ुदरत की बाज़ निशानियाँ बयान फ़रमाता है कि रात और उसके अन्धेरे को देखो, दिन और उसकी रोशनी पर नज़र डालो। फिर एक के बाद दूसरे का लगातार एक दूसरे के पीछे एक ख़ास व्यवस्था और एहतिमाम के साथ आना जाना देखो। एक का कम होना दूसरे का बढ़ना देखो, सूरज चाँद को देखो, सूरज का नूर एक मख़्सूस नूर है और उसका आसमान, उसका ज़माना, उसकी हरकत, उसकी चाल अलग है। चाँद का नूर अलग है, उसका दायरा अलग है, चाल अलग है, अन्दाज़ और है, हर एक अपनी अपनी हदों में गोया तैरता फिरता है और अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में मशग़ूल है। जैसे फ़रमान है कि वही सुबह का रोशन करने वाला है, वही रात को सुकून वाली बनाने वाला है, वही सूरज चाँद का अन्दाज़ा

मुक़र्रर करने वाला है, वही इज़्ज़त व ग़लबे वाला और तमाम चीज़ों और बातों का ख़ूब और सबसे ज़्यादा जानने वाला है।

Maktab E Ashraf

और हमने आपसे पहले भी किसी बशर के लिए हमेशा रहना तजवीज़ नहीं किया, फिर अगर आपका इन्तिक़ाल हो जाए तो क्या ये लोग (दुनिया में) हमेशा-हमेशा को रहेंगे। (34) हर जानदार मौत का मज़ा चखेगा, और हम तुमको बुरी-भली (हालतों) से अच्छी तरह आज़माते हैं, और (फिर इस ज़िन्दगी के ख़त्म पर) तुम सब हमारे पास चले आओगे। (35)	وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ اَفَائِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ○ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۖ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ○

हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है

जितने लोग पैदा और मौजूद हुए मौत सबको एक रोज़ ख़त्म करने वाली है। तमाम रू-ए-ज़मीन के लोग मौत से मिलने वाले हैं। हाँ रब की जलाल व इकराम वाली ज़ात हमेशगी और दवाम वाली है। इसी आयत से उलेमा ने दलील पकड़ी है कि हज़रत ख़ज़िर मर गये, यह ग़लत है कि वह अब तक ज़िन्दा हों, क्योंकि वह भी इनसान ही थे, वली हों या नबी हों या रसूल हों बहरहाल थे तो इनसान ही। इन काफ़िरों की यह आरज़ू कितनी नापाक है कि तुम मर जाओ। क्या ये हमेशा रहने वाले हैं? ऐसा तो बिल्कुल नामुम्किन है। दुनिया में तो चल-चलाव लग रहा है, अल्लाह की ज़ात के अलावा किसी को हमेशगी नहीं, कोई आगे है कोई पीछे है।

फिर फ़रमाया कि मौत का ज़ायक़ा हर एक को चखना पड़ेगा। हज़रत इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते थे कि लोग मेरी मौत के आरज़ूमन्द (इच्छुक) हैं तो क्या इस बारे में मैं ही अकेला हूँ? यह वह ज़ायक़ा नहीं जो किसी को छोड़ दे। फिर फ़रमाता है कि भलाई बुराई से, सुख-दुख से, मिठास कड़वाहट से, कुशादगी तंगी से हम अपने बन्दों को आज़मा लेते हैं, ताकि शुक्रगुज़ार और नाशुक्रा, साबिर और नाउम्मीद मालूम हो जाये। सेहत व बीमारी, मालदारी व फ़क़ीरी, सख़्ती व नर्मी, हलाल व हराम जो जैसा था खुल जायेगा। बुरों को सज़ा और नेकों को जज़ा मिलेगी।

और ये काफ़िर लोग जब आपको देखते हैं तो बस आपसे हँसी करने लगते हैं, (और आपस में कहते हैं) कि क्या यही हैं जो तुम्हारे माबूदों का (बुराई से) ज़िक्र किया करते हैं, और (ख़ुद) ये लोग (ख़ुदा-ए-) रहमान के ज़िक्र पर इनकार (किया) करते हैं। (36) इनसान जल्दी ही (के ख़मीर) का बना हुआ है, हम जल्द ही (वक़्त आने पर) तुमको अपनी (क़हर की) निशानियाँ (यानी सज़ायें) दिखाए देते हैं, पस तुम मुझसे जल्दी मत मचाओ। (37)	وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۖ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ○ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۖ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ○

Maktaba E Ashraf

ये मज़ाक़ उड़ाते हैं

अबू जहल वग़ैरह क़ुरैश के काफ़िर लोग हुज़ूरे पाक सल्ल. को देखते ही हंसी-मज़ाक़ शुरू कर देते और आपकी शान में बेअदबी करने लगते। कहते कि लो मियाँ देख लो यही हैं जो हमारे माबूदों को बुरा कहते हैं, तुम्हारे बुज़ुर्गों को बेवक़ूफ़ बताते हैं। एक तो उनकी यह सरकशी है, दूसरे यह कि ख़ुद अल्लाह रहमान के ज़िक्र के मुन्किर हैं। ख़ुदा के मुन्किर, रसूले ख़ुदा के मुन्किर। एक और आयत में उनके इसी कुफ़्र का बयान करके फ़रमाया गया है:

إِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا.

यानी वे तो कहते हैं कि हम जमे रहे वरना उसने तो हमें हमारे पुराने माबूदों से बरगश्ता करने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी। ख़ैर उन्हें अ़ज़ाब के मुआ़यने (देखने) से मालूम हो जायेगा कि गुमराह कौन था। इनसान बड़ा ही जल्दबाज़ है।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने तमाम चीज़ों की पैदाईश के बाद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को बनाना शुरू किया, शाम के क़रीब जब उनमें रूह फूँकी गयी, सर आँख और ज़बान में जब रूह आ गयी तो कहने लगे इलाही मग़रिब से पहले ही मेरी पैदाईश (बनाना) मुकम्मल हो जाये। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि तमाम दिनों में बेहतर व अफ़ज़ल दिन जुमे का है। इसी में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा किये गये, इसी में जन्नत में दाख़िल हुए, इसी में वहाँ से उतारे गये, इसी में क़ियामत क़ायम होगी, इसी दिन में एक ऐसी साअ़त (घड़ी और लम्हा) है कि उस वक़्त जो बन्दा नमाज़ में हो और ख़ुदा तआ़ला से जो कुछ तलब करे अल्लाह उसे अ़ता फ़रमाता है। आपने अपनी उंगलियों से इशारा करके बतलाया कि वह घड़ी बहुत छोटी सी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम फ़रमाते हैं- मुझे मालूम है कि वह साअ़त (घड़ी) कौनसी है, वह जुमा के दिन की आख़िरी घड़ी है।

नोटः इस मक़बूल घड़ी के बारे में जिसमें दुआ़ कबूल होती है उलेमा के अन्दर मतभेद है। कुछ हज़रात की राय यही है जो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. फ़रमाते हैं। बाज़ की राय में जुमा की तकबीर के वक़्त, बाज़ की राय में दोनों ख़ुतबों के बीच के वक़्त है। इसको हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साहिब रह. ने इस तफ़सीर के उर्दू संस्करण में बयान फ़रमाया है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा किया। फिर आपने यह आयत पढ़ी, पहली आयत में काफ़िरों की बदबख़्ती का ज़िक्र करके उसके बाद ही इनसानी जल्दबाज़ी का ज़िक्र इस हिक्मत से है कि गोया काफ़िरों की सरकशी (नाफ़रमानी) सुनते ही मुसलमान का इन्तिक़ामी जज़्बा भड़क उठता है और वह जल्द बदला लेना चाहता है, इसलिये कि इनसानी फ़ितरत में है ही जल्दबाज़ी, लेकिन आ़दते ख़ुदावन्दी यह है कि वह ज़ालिमों को ढील देता है, फिर जब पकड़ता है तो छोड़ता नहीं। इसी लिये फ़रमाया कि मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाने वाला ही हूँ कि गुनाहगारों व नाफ़रमानों पर किस तरह सख़्ती होती है। मेरे नबी का मज़ाक़ उड़ाने वालों की किस तरह खाल उधड़ती है, तुम अभी ही देख लोगे, जल्दी न मचाओ, देर है अन्धेर नहीं, मोहलत है भूल नहीं।

Maktab E Ashraf

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝

और ये लोग कहते हैं कि यह वायदा किस वक़्त आएगा अगर तुम (अ़ज़ाब के आने की ख़बर में) सच्चे हो। (38) काश! इन काफ़िरों को उस वक़्त की ख़बर होती, जबकि ये लोग (उस) आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से, और न उनकी कोई हिमायत करेगा। (39) बल्कि वह (आग तो) उनको एकदम से आ लेगी, सो उनको बदहवास कर देगी, फिर न उसके हटाने की उनको क़ुदरत होगी और न उनको मोहलत दी जाएगी। (40)

वह वायदे का वक़्त आने वाला है

अल्लाह के अ़ज़ाब और क़ियामत के आने को ये लोग चूँकि मुहाल जानते थे इसलिये जुर्रत से कहते थे कि बताओ तो सही तुम्हारे यह डरावे कब पूरे होंगे? उन्हें जवाब दिया जाता है कि तुम अगर समझदार होते और उस दिन की हौलनाकियों (दिल दहला देने वाली बातों और हालात) से आगाह होते तो जल्दी न मचाते। उस वक़्त अ़ज़ाबे ख़ुदा ऊपर नीचे से ओढ़ना बिछौना बने हुए होंगे, ताक़त न होगी कि आगे पीछे से ख़ुदाई अ़ज़ाब हटा सको। गंधक का लिबास होगा जिसमें आग लगी हुई होगी और खड़े जल रहे होंगे, हर तरफ़ से जहन्नम घेरे हुए होगी। कोई न होगा जो मदद को उठे। जहन्नम अचानक दबोच लेगी, उस वक़्त भौचक्के और हैरान रह जाओगे। बेदम और बेहोश हो जाओगे। हैरान व परेशान हो जाओगे। कोई हीला (बहाना) न मिलेगा कि उसे अपने से दूर करो और उससे बच जाओ। और न एक घड़ी की ढील और मोहलत मिलेगी।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ۝

और आपसे पहले जो पैग़म्बर हो गुज़रे हैं उन के साथ भी (काफ़िरों की तरफ़ से) मज़ाक़ और हँसी उड़ाना किया गया था, सो जिन लोगों ने हँसी-मज़ाक़ किया था, उनपर वह (अ़ज़ाब) आ ही पड़ा जिसके साथ वे मज़ाक़-ठट्ठा किया करते थे। (41) (और यह भी उनसे) कह दीजिए कि वह कौन है जो रात और दिन में रहमान (के अ़ज़ाब) से तुम्हारी हिफ़ाज़त करता हो, बल्कि वे लोग अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरने वाले (ही) हैं। (42) क्या उनके पास हमारे सिवा और ऐसे माबूद हैं कि (ज़िक्र हुए अ़ज़ाब से) उनकी हिफ़ाज़त कर लेते हों, वे ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त की ताक़त नहीं रखते, और न हमारे मुक़ाबले में कोई उनका साथ दे सकता है। (43)

Maktab E Ashraf

पहली उम्मतों की बदबख़्ती और उसकी इब्रतनाक सज़ा

अल्लाह तआ़ला अपने पैग़म्बर सल्ल. को तसल्ली देते हुए फ़रमाता है कि तुम्हें जो सताया जा रहा है, मज़ाक़ उड़ाया जाता है और झूठा कहा जाता है, इस पर परेशान न होना, काफ़िरों की यह पुरानी आ़दत है। आपसे पहले नबियों के साथ भी उन्होंने यही किया, जिसकी वजह से आख़िरकार अ़ज़ाबों में फंस गये। जैसे कि फ़रमान है:

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا........الخ

कि तुझसे पहले के अम्बिया भी झुठलाये गये और उन्होंने अपने झुठलाये जाने पर सब्र किया, यहाँ तक कि उनके पास हमारी मदद आ गयी। अल्लाह की बातों का बदलने वाला कोई नहीं। हमारे पास रसूलों की ख़बरें आ चुकी हैं।

फिर अपनी नेमत बयान फ़रमाता है कि वह तुम सबकी हिफ़ाज़त दिन रात अपनी उन आँखों से कर रहा है जो न कभी थकीं न सोयीं। "मिनर्रहमानि" के मायने हैं "रहमान के बदले" यानी रहमान के सिवा हैं। अ़रबी शे'रों में भी "मिन" बदल के मायने में है। इसी एक एहसान पर क्या मौक़ूफ़ है ये काफ़िर तो ख़ुदा के हर-हर एक एहसान की नाशुक्री करते बल्कि उसकी नेमतों के मुन्किर और उनसे मुँह फेरने वाले हैं। फिर बतौर इनकार के डाँट-डपट के साथ फ़रमाता है कि क्या उनके माबूद जो ख़ुदा के अ़लावा हैं उन्हें अपनी हिफ़ाज़त में रखते हैं? यानी वे ऐसा नहीं कर सकते। उनका यह गुमान बिल्कुल ग़लत है, बल्कि उनके झूठे माबूद ख़ुद अपनी मदद व हिफ़ाज़त के भी मालिक नहीं बल्कि वे हमसे बच भी नहीं सकते। हमारी जानिब से कोई ख़बर उनके हाथों में नहीं। एक मायने इस जुमले के यह भी हैं कि न तो वे किसी को बचा सकते हैं न ख़ुद बच सकते हैं।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ٥ قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ٥ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا	बल्कि हमने उनको और उनके बाप-दादाओं को (दुनिया का) ख़ूब सामान दिया, यहाँ तक कि उन पर (उसी हालत में) एक लम्बी मुद्दत गुज़र गई, क्या उनको यह नज़र नहीं आता कि हम (उनकी) ज़मीन को (इस्लामी फ़ुतूहात के ज़रिये) हर (चार) तरफ़ से (बराबर) घटाते (चले जाते) हैं, सो क्या ये लोग (उम्मीद रखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और ईमान वालों पर) ग़ालिब आएँगे? (44) आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ 'वही' के ज़रिये से तुमको डराता हूँ और (यह) बहरे जिस वक़्त डराए जाते हैं पुकार सुनते ही नहीं। (45) और (उनकी बुलन्द हिम्मती की कैफ़ियत यह है कि) अगर उनको आपके रब के अ़ज़ाब का एक

झोंका भी (ज़रा) लग जाए तो (यूँ) कहने लगें कि हाय हमारी कमबख़्ती वाक़ई हम ख़तावार थे। (46) और (वहाँ) क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ की तराज़ू खड़ी करेंगे (और सबके आमाल का वज़न करेंगे) सो किसी पर बिल्कुल भी ज़ुल्म न होगा, और अगर (किसी का अमल) राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको (वहाँ) हाज़िर कर देंगे, और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं। (47)	ظٰلِمِيْنَ ○ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ○

Maktaba Ashraf

एक तराज़ू

काफ़िरों के कीने-कपट और गुमराही पर जम जाने की वजह बयान हो रही है कि उन्हें खाने-पीने को मिलता है, लम्बी-लम्बी उम्रें मिलीं, उन्होंने समझ लिया कि हमारे करतूत ख़ुदा को पसन्द हैं। उसके बाद उन्हें नसीहत करता है कि वे यह नहीं देखते कि हमने काफ़िरों की बस्तियाँ की बस्तियाँ उनके कुफ़्र की वजह से मलियामेट कर दीं। इस जुमले के और भी बहुत से मायने बयान किये गये हैं जो सूरः रअ़द में हम बयान कर आये हैं, लेकिन ज़्यादा ठीक मायने यही हैं, जैसा कि एक और जगह फ़रमाया है:

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى........ الخ.

हमने तुम्हारे आस-पास की बस्तियाँ हलाक कर दीं और अपनी निशानियाँ बार-बार तुम्हें दिखा दीं ताकि लोग अपनी बुराईयों से बाज़ आ जायें।

हसन बसरी रह. ने इसके एक मायने यही बयान किये हैं कि हम कुफ़्र पर इस्लाम को ग़ालिब करते आये हैं, क्या तुम इससे इब्रत (सबक़ और नसीहत) हासिल नहीं करते कि किस तरह ख़ुदा तआ़ला अपने दोस्तों को अपने दुश्मनों पर ग़ालिब कर रहा है, और किस तरह झुठलाने वाली पहली उम्मतों को उसने मलियामेट कर दिया और अपने मोमिन बन्दों को निजात दे दी। क्या अब भी ये लोग ख़ुद को ग़ालिब ही समझ रहे हैं? नहीं नहीं! बल्कि ये मग़लूब हैं, ज़लील हैं, कमीने हैं, नुक़सान में हैं, बरबादी के मातहत हैं, मैं तो ख़ुदा की तरफ़ से मुबल्लिग़ (तब्लीग़ करने और उसके पैग़ाम का पहुँचाने वाला) हूँ। जिन-जिन अ़ज़ाबों से तुम्हें ख़बरदार कर रहा हूँ। यह अपनी तरफ़ से नहीं है बल्कि ख़ुदा का कहा हुआ है, हाँ जिनकी आँखें ख़ुदा ने निपट कर दी हैं, जिनके दिल व दिमाग़ बन्द कर दिये हैं उन्हें ख़ुदा की ये बातें फ़ायदेमन्द नहीं पड़तीं। बहरों को आगाह करना बेकार है, क्योंकि वे तो सुनते ही नहीं।

उन गुनाहगारों पर एक मामूली सा भी अ़ज़ाब आ जाये तो शोर मचाने लगते हैं और उस वक़्त बेसाख़्ता अपने क़सूर का इक़रार कर लेते हैं, क़ियामत के दिन अ़दल (इन्साफ़) की तराज़ू क़ायम की जायेगी। यह तराज़ू एक ही होगी लेकिन चूँकि जो आमाल उसमें तौलें जायेंगे वे बहुत से होंगे इस एतिबार से लफ़्ज़ जमा (बहुवचन का) लाये। उस दिन किसी पर किसी तरह का ज़रा सा भी ज़ुल्म न होगा। इसलिये कि हिसाब लेने वाला ख़ुद अल्लाह तआ़ला है जो अकेला ही तमाम मख़्लूक़ के हिसाब के लिये काफ़ी है।

हर छोटे से छोटा अ़मल भी वहाँ मौजूद हो जायेगा। एक और आयत में फ़रमाया- तेरा रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा। एक और जगह अल्लाह का फ़रमान है:

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ...... الخ.

कि अल्लाह तआ़ला एक राई के दाने के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता, नेकी बढ़ाता है और उसका अज्र अपने पास से बहुत बड़ा इनायत फ़रमाता है।

हज़रत लुक़मान ने अपनी वसीयतों में अपने बेटे से फ़रमाया था कि बच्चे! एक राई के दाने के बराबर भी जो अ़मल हो चाहे वह पत्थर में हो, आसमान में हो या ज़मीन में, अल्लाह उसे लायेगा। वह बड़ा ही बारीक-बीं और ख़बर रखने वाला है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़) में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- दो कलिमे हैं जो ज़बान में हल्के हैं, तराज़ू में वज़नी हैं और ख़ुदा को बहुत प्यारे हैं:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ.

सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीम।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत के एक शख़्स को क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला तमाम मेहशर वालों के सामने अपने पास बुलायेगा और उसके गुनाहों के एक कम एक सौ (यानी निन्नानवे) दफ़्तर उसके सामने खोले जायेंगे, जहाँ तक निगाह काम करेगी वहाँ तक का एक-एक दफ़्तर होगा। फिर उससे अल्लाह तआ़ला मालूम फ़रमायेगा कि क्या तुझे अपने किये हुए इन गुनाहों में से किसी का इनकार है? मेरी तरफ़ से जो मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते तेरे आमाल लिखने पर मुक़र्रर थे उन्होंने तुझ पर कोई ज़ुल्म तो नहीं किया? वह जवाब देगा कि ख़ुदाया! न इनकार की गुंजाईश है और न यह कह सकता हूँ कि मेरे ऊपर ज़ुल्म करके लिखा गया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अच्छा तेरे पास कोई उज़्र (मजबूरी और बहाना) है? या कोई नेकी है? वह घबराया हुआ होगा, कहेगा ख़ुदाया कोई नहीं। परवर्दिगारे आ़लम फ़रमायेगा क्यों नहीं! बेशक तेरी एक नेकी हमारे पास है और आज तुझ पर कोई ज़ुल्म न होगा। अब एक छोटा सा पर्चा निकाला जायेगा जिसमें 'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह' लिखा हुआ होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा उसे पेश करो। वह कहेगा ख़ुदाया यह पर्चा इन दफ़्तरों के मुक़ाबले में क्या करेगा? चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- तुझ पर ज़ुल्म न किया जायेगा। अब तमाम के तमाम दफ़्तर तराज़ू के एक पलड़े में रखे जायेंगे और वह पर्चा दूसरे पलड़े में रखा जायेगा तो उस पर्चे का वज़न उन तमाम दफ़्तरों से बढ़ जायेगा, यह झुक जायेगा और वे ऊँचे हो जायेंगे। और ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से कोई चीज़ वज़नी न होगी। इब्ने माजा और तिर्मिज़ी में भी यह रिवायत है।

मुस्नद अहमद में है कि क़ियामत के दिन जब तराज़ू रखी जायेगी तो एक शख़्स को लाया जायेगा और एक पलड़े में रखा जायेगा और जो कुछ उस पर शुमार किया गया है वह भी रखा जायेगा तो वह पलड़ा झुक जायेगा और उसे जहन्नम की तरफ़ भेज दिया जायेगा। अभी उसने पीठ फेरी ही होगी कि ख़ुदा की तरफ़ से एक आवाज़ देने वाला फ़रिश्ता आवाज़ देगा और कहेगा कि जल्दी न करो एक चीज़ उसकी बाक़ी रही गयी है, फिर एक पर्चा निकाला जायेगा जिसमें "ला इला-ह इल्लल्लाहु" होगा और उस शख़्स के साथ तराज़ू के पलड़े में रखा जायेगा तो यह नेकी का पलड़ा झुक जायेगा।

मुस्नद अहमद में है कि एक सहाबी रसूलुल्लाह सल्ल. के पास बैठकर कहने लगे कि या रसूलल्लाह! मेरे गुलाम हैं जो मुझे झुठलाते भी हैं, मेरी ख़ियानत भी करते हैं, मेरी नाफ़रमानी भी करते हैं और मैं भी

Maktab E Ashraf

उन्हें मारता पीटता और बुरा-भला भी कहता हूँ। अब फ़रमाईये कि मेरा और उनका क्या हाल होगा? आपने फ़रमाया उनकी ख़ियानत, नाफ़रमानी, झुठलाना वग़ैरह जमा किया जायेगा और तेरा मारना पीटना बुरा कहना भी। अगर तेरी सज़ा उन ख़ताओं के बराबर हुई तो छूट जायेगा और न अ़ज़ाब न सवाब, हाँ अगर तेरी सज़ा कम रही तो तुझे ख़ुदा का फ़ज़्ल व करम मिलेगा। और अगर तेरी सज़ा उनके करतूतों से बढ़ गयी तो तुझसे उस बढ़ी हुई सज़ा का इन्तिक़ाम (बदला) लिया जायेगा। यह सुनकर वह सहाबी रोने लगे और चीख़ना शुरू कर दिया। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि इसे क्या हो गया है? क्या इसने क़ुरआन में यह नहीं पढ़ा?

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ......... الخ.

कि क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ की तराज़ू क़ायम करेंगे........।

यह सुनकर उस सहाबी ने कहा या रसूलल्लाह! इन मामलात को सुनकर तो मेरा जी चाहता है कि मैं अपने उन तमाम ग़ुलामों को आज़ाद कर दूँ। आप गवाह रहिये वे सब अल्लाह की राह में आज़ाद हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۗ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝

और हमने (आपसे पहले) मूसा और हारून को एक फ़ैसले की और रोशनी की और मुत्तक़ियों के लिए नसीहत की चीज़ (यानी तौरात) अ़ता फ़रमाई थी। (48) जो (मुत्तक़ी) अपने परवर्दिगार से बिन देखे डरते हैं, और वे लोग क़ियामत से (भी) डरते हैं। (49) और यह (क़ुरआन भी) बहुत ज़्यादा फ़ायदों वाली नसीहत (की किताब) है, जिसको हमने नाज़िल किया, तो क्या फिर भी तुम इसके इनकारी हो। (50)

ग़ैब पर ईमान लाना

हम पहले भी इस बात को वाज़ेह कर चुके हैं कि हज़रत मूसा और हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम का ज़िक्र अक्सर मिला-जुला (यानी एक साथ) आता है और इसी तरह तौरात और क़ुरआन का ज़िक्र भी उमूमन एक साथ ही होता है। फ़ुरक़ान से मुराद किताब यानी तौरात है जो हक़ व बातिल, हराम व हलाल में फ़र्क़ करने वाली थी। उसी से जनाब मूसा अ़लैहिस्सलाम को मदद मिली। तमाम की तमाम आसमानी किताबें हक़ व बातिल, हिदायत व गुमराही, भलाई व बुराई, हलाल व हराम में जुदाई (यानी फ़र्क़) करने वाली होती हैं। उनसे दिलों में नूरानियत, आमाल में हक़्क़ानियत, ख़ुदा का ख़ौफ़ व डर और उसकी तरफ़ रुजू का बयान फ़रमाया कि वे अपने ख़ुदा से ग़ायबाना (बिना देखे ही) डरते रहते हैं। जैसे जन्नतियों की सिफ़तें बयान करते हुए फ़रमायाः

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبٍ.

कि जो रहमान से बिन देखे डरते हैं और झुकने वाला दिल रखते हैं।

एक और आयत में है कि जो लोग अपने रब का ग़ायबाना डर रखते हैं उनके लिये मग़फ़िरत और

बहुत बड़ा अज्र है। मुत्तक़ियों की दूसरी ख़ूबी और सिफ़त यह है कि ये क़ियामत का खटका रखते हैं, उसकी हौलनाकियों (डरावने हालात) से डरे-सहमे रहते हैं। फिर फ़रमाता है कि इस क़ुरआने अज़ीम को भी हमने ही नाज़िल फ़रमाया है जिसके आस-पास भी बातिल (ग़ैर-हक़) नहीं आ सकता, जो हिक्मतों और तारीफ़ों वाला ख़ुदा की तरफ़ से उतरा है। अफ़सोस क्या इस क़द्र वज़ाहत व हक़्क़ानियत (यानी स्पष्टता और सच्चाई) और सदाक़त व नूरानियत वाला क़ुरआन भी इस क़ाबिल है कि तुम उसके मुन्किर बने रहो?

Maktab E Ashraf

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝	और हमने (उस मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने से) पहले इब्राहीम को उनकी (शान के मुनासिब) अक़्ल व दानिश अता फ़रमाई थी, और हम उन को ख़ूब जानते थे। (51) (उनका वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी बिरादरी से फ़रमाया कि ये क्या (वाहियात) मूर्तियाँ हैं जिन (की इबादत) पर तुम जमे बैठे हो। (52) वे लोग (जवाब में) कहने लगे कि हमने अपने बड़ों को उनकी इबादत करते हुए देखा है। (53) (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप-दादे (उनको इबादत के लायक़ समझने में) खुली ग़लती में हो। (54) वे कहने लगे कि क्या तुम (अपने नज़दीक) सच्ची बात (समझकर) हमारे सामने पेश कर रहे हो, या दिल्लगी कर रहे हो? (55) (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि नहीं, (दिल्लगी नहीं) बल्कि तुम्हारा रब्बे (हक़ीक़ी जो इबादत के लायक़ है) वह है जो तमाम आसमानों और ज़मीन का रब है, जिसने उन सबको पैदा (भी) किया और मैं इस (दावे) पर दलील भी रखता हूँ। (56)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम को हमने उनके बचपन से ही हिदायत अता फ़रमाई थी। उन्हें अपनी दलीलें इल्हाम की थीं और भलाई समझाई थी। जैसे एक और आयत में है:

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَا اِبْرَاهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ.

ये हैं हमारी ज़बरदस्त दलीलें जो हमने इब्राहीम को दी थीं ताकि वह अपनी क़ौम को क़ायल कर सकें। ये जो क़िस्से मशहूर हैं कि हज़रत इब्राहीम के दूध पीने के ज़माने में ही उन्हें उनकी माँ ने एक ग़ार

(गुफा) में रखा था, जहाँ से मुद्दतों बाद वह बाहर निकले और अल्लाह की मख़्लूकात पर ख़ासकर चाँद तारों वग़ैरह पर नज़र डालकर ख़ुदा को पहचाना, ये सब बनी इस्राईल के अफ़साने हैं। क़ायदा यह है कि उनमें से जो वाक़िआ उसके मुताबिक़ हो जो हक़ हमारे हाथों में है यानी क़ुरआन व हदीस वह तो सच्चा और क़ाबिले क़बूल है, इसलिये कि वह सेहत के मुताबिक़ है, और जो ख़िलाफ़ हो वह क़ाबिले रद्द है। और जिसके बारे में हमारी शरीअ़त ख़ामोश हो, मुवाफ़क़त व मुख़ालफ़त में कुछ न हो, अगरचे उसका रिवायत करना बक़ौल अक्सर मुफ़स्सिरीन जायज़ है लेकिन न तो हम उसे सच्चा कह सकते हैं न ग़लत। हाँ यह ज़ाहिर है कि वे वाक़िआत हमारे लिये कुछ सनद नहीं, न उनमें हमारा कोई दीनी नफ़ा है। अगर ऐसा होता तो हमारी जामे नाफ़े कामिल व शामिल शरीअ़त उसके बयान में कोताही न करती। हमारा अपना मस्लक (राय और विचारधारा) तो इस तफ़सीर में यह रहा है कि हम ऐसी बनी इस्राईली रिवायतों को ज़िक्र नहीं करते क्योंकि इसमें सिवाय वक़्त ज़ाया करने के कोई नफ़ा नहीं, हाँ नुक़सान की शंका ज़्यादा है। क्योंकि हमें यक़ीन है कि बनी इस्राईल में रिवायत की जाँच-पड़ताल का माद्दा ही न था, वे सच-झूठ में तमीज़ करना जानते ही न थे, उनमें झूठ अन्दर तक घुस गया था, जैसे कि हमारे उलेमा, बुज़ुर्गों और हदीस के इमामों ने इस पर तफ़सील से रोशनी डाली है।

ग़र्ज़ यह कि आयत में इस बात का बयान है कि हमने इससे पहले हज़रत इब्राहीम को हिदायत बख़्शी थी और हम जानते थे कि वह उसके लायक़ है। बचपने में ही आपने अपनी क़ौम की अल्लाह के अ़लावा दूसरों की पूजा करने को नापसन्द फ़रमाया और निहायत जुर्रत से इसका सख़्त इनकार और विरोध किया, और क़ौम से खुलकर कहा कि इन बुतों के इर्द-गिर्द मजमा लगाकर क्या बैठे हो?

हज़रत अस्बग़ बिन नवाता एक रास्ते से गुज़र रहे थे, देखा कि शतरंज-बाज़ लोग बाज़ी खेल रहे हैं। आपने यही आयत तिलावत फ़रमाकर फ़रमाया कि तुममें से कोई अपने हाथ में जलता हुआ अंगारा ले ले यह इस शतरंज के मोहरों के लेने से अच्छा है। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की इस खुली दलील का जवाब उनके पास क्या था? जो देते। कहने लगे कि यह तो पुराना तरीक़ा और चलन है, बाप दादों से चला आता है। आपने फ़रमाया वाह! यह भी कोई दलील हुई? हमारा एतिराज़ जो तुम पर है वही तुम्हारे पहलों पर है। एक गुमराही में तुम्हारे बड़े मुब्तला हों और तुम भी उसमें मुब्तला हो जाओ तो वह कोई भलाई बनने से रही, मैं कहता हूँ कि तुम और तुम्हारे बाप दादे सभी हक़ और सही रास्ते से बरगश्ता (बहकने वाले) हो गये हो, और खुली गुमराही में डूबे हुए हो। अब तो उनके कान खड़े हुए क्योंकि उन्होंने अपने अ़क़्लमन्दों की तौहीन देखी, अपने बाप-दादों के बारे में न सुनने के कलिमात सुने, अपने माबूदों का अपमान होते हुए देखा तो घबरा गये और कहने लगे इब्राहीम क्या वाक़ई तुम ठीक कह रहे हो या मज़ाक़ कर रहे हो? हमने तो ऐसी बात कभी नहीं सुनी। आपको हक़ की तब्लीग़ का मौक़ा मिला और साफ़ ऐलान किया कि रब ही सिर्फ़ आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ है, तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ व मालिक वही है, तुम्हारे ये माबूद किसी मामूली सी चीज़ के भी न ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाले) हैं न मालिक, फिर ये कैसे इबादत और सज्दे के लायक़ हो गये? मेरी गवाही है कि ख़ालिक़ व मालिक ख़ुदा ही है और वही लायक़े इबादत है, न उसके सिवा कोई रब न कोई माबूद।

Maktab-e-Ashraf

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ○ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ○ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ○ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِيْمُ ○ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ○ قَالُوْۤا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ○ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْئَلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ○

और ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारे उन बुतों की गत ऐसी बनाऊँगा जब तुम (उनके पास से) पीठ फेरकर चले जाओगे। (57) तो (उनके चले जाने के बाद) उन्होंने उन (बुतों) को (कुल्हाड़ी वग़ैरह से) टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवाय उनके एक बड़े (बुत) के, कि शायद वे लोग इब्राहीम की तरफ़ (दरियाफ़्त करने के लिए) रुजू करें। (58) कहने लगे कि यह हमारे बुतों के साथ किसने किया है, इसमें कोई शक नहीं कि उसने बड़ा ही ग़ज़ब किया। (59) (बाज़ों ने) कहा कि हमने एक नौजवान आदमी को जिसको इब्राहीम करके पुकारा जाता है इन (बुतों) का (बुराई से) तज़किरा करते सुना है। (60) (फिर) वे लोग बोले, (जब यह बात है) तो अच्छा उसको सब आदमियों के सामने हाज़िर करो ताकि वे लोग (इस इक़रार के) गवाह हो जाएँ। (61) (ग़र्ज़ वह सबके सामने आए) उन लोगों ने कहा, क्या हमारे बुतों के साथ तुमने यह हरकत की है ऐ इब्राहीम! (62) उन्होंने (जवाब में) कहा नहीं! बल्कि उनके इस बड़े (गुरू) ने की, सो उन (ही) से पूछ लो (ना) अगर ये बोलते हों। (63)

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह का एक हकीमाना क़दम

ऊपर ज़िक्र गुज़रा कि ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को बुत-परस्ती से रोका और तौहीद के जज़्बे में आकर आपने क़सम खा ली कि मैं तुम्हारे इन बुतों का ज़रूर कुछ न कुछ इलाज करूँगा। इसे भी क़ौम के बाज़ अफ़राद ने सुना, उनकी जो ईद का दिन मुक़र्रर था, हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब तुम अपनी ईद की रस्में अदा करने के लिये बाहर जाओगे मैं तुम्हारे बुतों को ठीक कर दूँगा।

ईद के एक आध-दिन पहले आपके वालिद ने आपसे कहा कि बेटे तुम हमारे साथ हमारी ईद में चलो ताकि तुम्हें हमारे दीन की अच्छाई और रौनक़ मालूम हो जाये। चुनाँचे आपको ले चला, कुछ दूर जाने के बाद हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम गिर पड़े और फ़रमाने लगे अब्बा मैं बीमार हो गया। बाप आपको छोड़कर कुफ़्र की रस्में बजा लाने के लिये आगे बढ़ गये और जो लोग रास्ते से गुज़रते आपसे पूछते क्या बात है? रास्ते पर कैसे बैठे हो? जवाब देते कि मैं बीमार हूँ। जब आ़म लोग निकल गये और बूढ़े लोग रह गये तो आपने फ़रमाया तुम सबके चले जाने के बाद आज मैं तुम्हारे ख़ुदाओं की मरम्मत करूँगा। आपने

Maktab-E-Ashraf

यह जो फ़रमाया कि मैं बीमार हूँ तो वाक़ई आप उस दिन से पहले दिन थोड़े बीमार भी थे।

जब वे लोग चले गये तो मैदान ख़ाली पाकर आपने अपना इरादा पूरा किया और बड़े बुत को छोड़कर तमाम बुतों को चूरा-चूरा कर दिया, जैसा कि दूसरी आयतों में इसका तफ़सीली बयान मौजूद है कि अपने हाथ से उन बुतों के टुकड़े-टुकड़े कर दिया। उस बड़े बुत के बाक़ी रखने में हिक्मत व मस्लेहत यह थी कि सबसे पहले उन लोगों के ज़ेहन में ख़्याल जाये कि शायद इस बड़े ख़ुदा ने इन छोटे ख़ुदाओं को ग़ारत कर दिया होगा। क्योंकि उसे ग़ैरत मालूम हुई होगी कि मुझ बड़े के होते हुए ये छोटे ख़ुदाई के लायक़ कैसे हो गये? चुनाँचे इस ख़्याल की पुख़्तगी उनके ज़ेहनों में क़ायम करने के लिये आपने कुल्हाड़ा भी उसकी गर्दन पर रख दिया था जैसा कि मन्क़ूल है। जब ये मुश्रिक लोग अपने मेले से वापस आये तो देखा कि उनके सारे ख़ुदा मुँह के बल औंधे गिरे हुए हैं और अपनी हालत से वे बतला रहे हैं कि वे बिल्कुल बेजान बेनफ़ा व नुक़सान ज़लील व हक़ीर चीज़ हैं और गोया अपनी इस हालत से अपने पुजारियों की बेवक़ूफ़ी पर वे मोहर लगा रहे थे, लेकिन उन बेवक़ूफ़ों पर उल्टा असर हुआ, कहने लगे यह कौन ज़ालिम शख़्स था जिसने हमारे माबूदों का ऐसा अपमान किया? उस वक़्त जिन लोगों ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का वह कलाम सुना था उन्हें ख़्याल आ गया और कहने लगे वह नौजवान जिसका नाम इब्राहीम है उसे हमने अपने इन ख़ुदाओं की मज़म्मत (बुराई) करते हुए सुना है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस आयत को पढ़ते और फ़रमाते जो नबी आया जवान, जो आ़लिम बना जवान। शाने ख़ुदा देखिये जो मक़सद हज़रत ख़लीलुल्लाह का था वह अब पूरा हो रहा है। क़ौम के ये लोग मश्विरा करते हैं कि आओ सबको जमा करो और उसे बुलाओ और फिर उसको सज़ा दो। हज़रत ख़लीलुल्लाह यही चाहते थे कि कोई ऐसा मजमा हो और मैं उसमें उनकी ग़लती उन पर वाज़ेह करूँ और उनमें तौहीद (अल्लाह के एक होने) की तब्लीग़ करूँ, और उन्हें बतला दूँ कि ये कैसे ज़ालिम व जाहिल हैं कि उनकी इबादतें करते हैं जो नफ़ा व नुक़सान के मालिक नहीं बल्कि अपनी भी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते। चुनाँचे मजमा हुआ, सब छोटे-बड़े आ गये। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम भी मुल्ज़िम (आरोपी) की हैसियत से मौजूद हुए और आपसे सवाल हुआ कि हमारे ख़ुदाओं के साथ यह बेहूदा हरकत तुमने की है? इस पर आपने उन्हें एक माक़ूल बात का क़ायल करने के लिये फ़रमाया कि यह काम तो इनके इस बड़े बुत ने किया है और उसकी तरफ़ इशारा किया जिसे आपने तोड़ा न था। फिर फ़रमाया कि मुझसे क्या पूछते हो? अपने इन ख़ुदाओं से ही क्यों मालूम नहीं करते कि तुम्हारे टुकड़े करने वाला कौन है? इससे मक़सूद ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का यह था कि ये लोग ख़ुद-ब-ख़ुद ही समझ लें कि ये पत्थर क्या बोलेंगे? और जब ये इतने आ़जिज़ हैं तो ये इबादत के लायक़ कैसे ठहर सकते हैं? चुनाँचे अल्लाह के फ़ज़्ल से यह मक़सद भी पूरा हुआ और यह दूसरी चोट भी कारी लगी।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह के ख़लील ने तीन झूठ बोले हैं। दो तो राहे ख़ुदा में, एक तो उनका यह फ़रमाना कि इन बुतों को उनके बड़े ने तोड़ा है। दूसरा यह फ़रमाना कि मैं बीमार हूँ और एक मर्तबा आप हज़रत सारा के साथ सफ़र में थे, इत्तिफ़ाक़ से एक ज़ालिम बादशाह की हुकूमत से आप गुज़र रहे थे, आपने वहाँ मन्ज़िल की थी, किसी ने बादशाह को जाकर इत्तिला दी कि एक मुसाफ़िर के साथ बहुत ख़ूबसूरत औ़रत है और वह उस वक़्त हमारी सल्तनत में है। बादशाह ने फ़ौरन सिपाही भेजा कि वह हज़रत सारा को ले आये। उसने पूछा कि तुम्हारे साथ यह कौन है? हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरी बहन है। उसने कहा इसे बादशाह के दरबार में भेजो। आप हज़रत सारा के पास गये और

Maktab E Ashraf

फ़रमाया सुनो! उस ज़ालिम ने तुम्हें तलब किया है और मैं तुम्हें अपनी बहन बतला चुका हूँ। अगर तुमसे भी पूछा जाये तो यही कहना इसलिये कि दीन के एतिबार से तुम मेरी बहन हो। इस वक़्त रू-ए-ज़मीन पर मेरे और तुम्हारे सिवा कोई मुसलमान नहीं।

नोटः उस बादशाह की हुकूमत का क़ानून था कि वह किसी की बहन पर हाथ न डालता लेकिन किसी की बीवी से हरामकारी कर लेता, इसलिये हज़रत इब्राहीम ने मस्लेहत समझते हुए ऐसा कहा। हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साहिब ने फ़रमाया है कि हो सकता है आपने इसलिये कहा हो कि अगर मैं अपने को इनका शौहर कहूँगा तो कहीं वह इनको हासिल करने के लिये मुझे क़त्ल करना ज़रूरी समझे। अगर मैं अपनी बहन कहूँगा तो कम से कम वह मुझे क़त्ल न करेगा। बाक़ी अल्लाह के हाथ में है वही अपने पैग़म्बर की आबरू की हिफ़ाज़त फ़रमायेगा। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने आपकी आबरू की हिफ़ाज़त फ़रमाई। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

यह कहकर आप चले आये। हज़रत सारा वहाँ चलीं, आप नमाज़ में खड़े हो गये। जब हज़रत सारा को उस ज़ालिम ने देखा और उनकी तरफ़ लपका उसी वक़्त ख़ुदा के अ़ज़ाब ने उसे पकड़ लिया, हाथ-पाँव ऐंठ गये, घबराकर आ़जिज़ी से कहने लगा ऐ नेक औ़रत! ख़ुदा से दुआ़ कर कि वह मुझे छोड़ दे, मैं वायदा करता हूँ कि तुझे हाथ भी न लगाऊँगा। आपने दुआ़ की, उसी वक़्त वह अच्छा हो गया, लेकिन अच्छा होते ही उसने फिर बुरा इरादा किया और आपको पकड़ना चाहा, वहीं फिर अ़ज़ाबे ख़ुदा आ पहुँचा और यह पहली दफ़ा से भी ज़्यादा सख़्त पकड़ लिया गया। फिर आ़जिज़ी और ख़ुशामद करने लगा, ग़र्ज़ कि तीन दफ़ा लगातार यही हुआ। तीसरी दफ़ा छूटते ही उसने अपने क़रीबी मुलाज़िम को आवाज़ दी और कहा तू मेरे पास किसी इनसान औ़रत को नहीं लाया बल्कि शैतान औ़रत को लाया है, जा इसे निकाल और हाजरा को इसके साथ कर दे। उसी वक़्त आप वहाँ से निकाल दी गयीं और हज़रत हाजरा आपके हवाले की गयीं। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उनकी आहट पाते ही नमाज़ से फ़राग़त हासिल की और मालूम फ़रमाया कि कहो क्या गुज़री? आपने फ़रमाया अल्लाह ने उस काफ़िर के मक्र और फ़रेब को उसी पर लौटा दिया और हाजरा मेरी ख़िदमत के लिये आ गयीं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. इस हदीस को बयान फ़रमाकर फ़रमाते कि यह हैं तुम्हारी वालिदा ऐ आसमानी पानी के लड़को।

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ۙ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ۝ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝ۗ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا

इस पर वे लोग अपने जी में सोचे फिर (आपस में) कहने लगे कि हक़ीक़त में तुम लोग ही नाहक़ पर हो (कि जो ऐसा आ़जिज़ हो वह क्या माबूद होगा)। (64) फिर (शर्मिन्दगी के मारे) अपने सरों को झुका लिया (और बोले कि) ऐ इब्राहीम! तुमको तो मालूम ही है कि ये (बुत कुछ) बोलते नहीं। (65) (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया तो क्या तुम ख़ुदा को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो जो तुमको न कुछ नफ़ा पहुँचा सके और न कुछ नुक़सान पहुँचा

Maktaba E Ashraf

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ○	सके। (66) तुफ़ "यानी लानत व अफ़सोस" है तुम पर (कि बावजूद हक़ सामने आ जाने के बातिल पर जमे हुए हो) और उन पर (भी) जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते। (67)

गुमराह क़ौम का अफ़सोस

बयान हो रहा है कि ख़लीले ख़ुदा की बातें सुनकर उन्हें ख़्याल तो पैदा हो गया, अपने आप पर अपनी बेवक़ूफ़ी की वजह से मलामत करने लगे, सख़्त शर्मिन्दगी उठाई और आपस में कहने लगे कि हमने बड़ी ग़लती की, अपने ख़ुदाओं के पास किसी को हिफ़ाज़त के लिये न छोड़ना और चल दिये। फिर ग़ौर व फ़िक्र करके बात बनाई कि आप जो हमसे कहते हैं कि हम उनसे पूछ लें कि तुम्हें किसने तोड़ा है तो क्या आपको इल्म नहीं कि ये बुत बेज़ुबान हैं? आ़जिज़ी, हैरानी और इन्तिहाई लाजवाबी की हालत में उन्हें इस बात का इक़रार करना पड़ा। अब हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम को अच्छा मौक़ा मिल गया और आप फ़ौरन फ़रमाने लगे कि बेज़ुबान, नफ़ा व नुक़सान की मालिक न होने वाली चीज़ की इबादत कैसी? तुम क्यों इस क़द्र बेसमझ हो रहे हो? अफ़सोस है तुम पर और तुम्हारे इन झूठे ख़ुदाओं पर। आह किस क़द्र ज़ुल्म व नादानी है कि ऐसी चीज़ों की पूजा की जाये और एक ख़ुदा को छोड़ दिया जाये? यही थीं वो दलीलें जिनका ज़िक्र पहले हुआ था कि हमने इब्राहीम को वे दलीलें सिखा दीं जिनसे क़ौम हक़ीक़त तक पहुँच जाये।

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ○ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ○ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ○	(आपस में) वे लोग कहने लगे कि इनको (आग में) जला दो, और अपने माबूदों का (इनसे) बदला लो, अगर तुमको (कुछ) करना है। (68) (ग़र्ज़ कि उन्होंने मुत्तफ़िक़ होकर आग में डाल दिया, उस वक़्त) हमने आग को हुक्म दिया कि ऐ आग! तू इब्राहीम के हक़ में ठंडी और तकलीफ़ न पहुँचाने वाली बन जा। (69) और उन लोगों ने उनके साथ बुराई करना चाहा था, सो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम कर दिया। (70)

अपनी झुंझलाहट और नाकामी को छुपाने के लिये

यह क़ायदा है कि जब इनसान दलील से आ़जिज़ आ जाता है तो या तो नेकी उसे घसीट लेती है, या बदी ग़ालिब आ जाती है। यहाँ उन लोगों को उनकी बदबख़्ती ने घेर लिया और दलील से आ़जिज़ आकर अपने दबाव का प्रदर्शन करने और ख़ुद को समझाने के लिये आपस में मश्विरा किया कि इब्राहीम को आग में डालकर उसकी जान ले लो ताकि हमारे इन ख़ुदाओं की इ़ज़्ज़त न जाये। इस बात पर सब ने इत्तिफ़ाक़

कर लिया और लकड़ियाँ जमा करनी शुरू कर दीं, यहाँ तक कि बीमार औरतें भी नज़्र (मन्नत) मानती थीं तो यही कि अगर उन्हें शिफ़ा हो जाये तो इब्राहीम के जलाने को लकड़ियाँ लगायेंगी। ज़मीन में एक बहुत बड़ा और बहुत गहरा गड्ढ़ा खोदा, लकड़ियों से उसे पुर किया और अंबार खड़ा करके उसमें आग लगाई, रू-ए-ज़मीन पर कभी इतनी बड़ी आग देखी नहीं गयी।

जब आग के शोले आसमान से बातें करने लगे, उसके पास जाना मुहाल हो गया तो अब घबराये कि ख़लीले ख़ुदा को आग में डालें कैसे? आख़िर एक कुर्दी फ़ारसी देहाती के मश्विरे से जिसका नाम हेज़न था, एक मिन्जनीक़ (आजके दौर में इसे गोफन से समझा जा सकता है जिसमें ढेले रखकर दूर फेंके जाते हैं, यान तौप से जिसमें गोले रखकर दूर तक दागे और फेंके जाते हैं) तैयार कराई गयी कि उसमें बैठाकर झुलाकर फेंक दो। मन्क़ूल है कि उस शख़्स को अल्लाह तआ़ला ने उसी वक़्त ज़मीन में धंसा दिया और क़ियामत तक वह अन्दर उतरता जाता है।

जब आपको आग में डाला गया आपने फ़रमाया "हस्बियल्लाहु व नेअ्मल् वकील"। नबी करीम हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा के पास भी जब यह ख़बर पहुँची कि पूरा अ़रब बहुत बड़ा लश्कर लेकर आपके मुक़ाबले के लिये आ रहा है तो आपने भी यही पढ़ा था। यह भी नक़ल किया गया है कि जब आपको आग में डालने लगे तो आपने फ़रमाया इलाही! तू आसमानों में अकेला माबूद है और तौहीद के साथ तेरा आ़बिद ज़मीन पर सिर्फ़ मैं ही हूँ। बयान किया गया है कि जब काफ़िर आपको बाँधने लगे तो आपने फ़रमाया इलाही तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तेरी ज़ात पाक है, तमाम तारीफ़ व सना तेरे ही लिये सज़ावार है, सारे मुल्क का तू अकेला ही मालिक है, कोई तेरा शरीक व साझी नहीं। हज़रत शुऐब जबाई फ़रमाते हैं कि उस वक़्त आपकी उम्र सिर्फ़ सोलह साल की थी। वल्लाहु आलम।

बाज़ बुज़ुर्गों से नक़ल किया गया है कि उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आपके सामने आसमान व ज़मीन के बीच ज़ाहिर हुए और फ़रमाया क्या आपको कोई हाजत है? आपने जवाब दिया तुम से तो कोई हाजत नहीं, हाँ मगर अल्लाह तआ़ला से हाजत है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास फ़रमाते हैं कि बारिश का दरोग़ा फ़रिश्ता कान लगाये हुए तैयार था कि कब ख़ुदा का हुक्म हो और मैं इस आग पर बारिश बरसाकर उसे ठंडी कर दूँ लेकिन अल्लाह का हुक्म डायरेक्ट आग को ही पहुँचा कि मेरे ख़लील पर तू सलामती और ठंडक बन जा। फ़रमाते हैं कि इस हुक्म के साथ ही तमाम दुनिया की आग ठंडी हो गयी। हज़रत कअ़बे अहबार रह. फ़रमाते हैं कि उस दिन दुनिया भर में आग से कोई फ़ायदा न उठा सका, और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की रस्सियाँ तो आग ने जला दीं लेकिन आपके एक रोंगटे को भी आग नहीं लगी।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आग को हुक्म हुआ कि वह ख़लीले ख़ुदा हज़रत इब्राहीम को कोई नुक़सान न पहुँचाये। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि अगर आग को सिर्फ़ ठंडा होने का ही हुक्म होता तो फिर ठंडक भी आपको नुक़सान और तकलीफ़ पहुँचाती, इसलिये साथ ही फ़रमा दिया गया कि ठंडक के साथ ही सलामती बन जा। इमाम ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि बड़ा गड्ढा बहुत ही गहरा खोदा था और उसे आग से पुर किया था, हर तरफ़ आग के शोले निकल रहे थे, उसमें हज़रत इब्राहीम ख़लीले ख़ुदा को डाल दिया, लेकिन आग ने आपको छुआ तक नहीं, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने उसे बिल्कुल ठंडी कर दी। मज़कूर है कि उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आपके साथ थे, आपके मुँह पर से पसीना पौंछ रहे थे, बस इसके सिवा आपको आग ने कोई तकलीफ़ नहीं दी।

Maktab E Ashraf

सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि साये का फ़रिश्ता उस वक़्त आपके साथ था। मन्क़ूल है कि आप उसमें चालीस या पचास दिन रहे, फ़रमाया करते थे कि मुझे उस ज़माने में जो राहत व सुरूर हासिल था वैसा उससे निकलने के बाद हासिल नहीं हुआ। क्या अच्छा होता कि मेरी सारी ज़िन्दगी उसी में गुज़रती। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के वालिद ने सबसे अच्छा कलिमा जो कहा है वह यह है कि जब हज़रत इब्राहीम आग से ज़िन्दा सही सालिम निकले उस वक़्त आपको अपनी पेशानी से पसीना पौंछते हुए देखकर आपके वालिद ने कहा इब्राहीम! तेरा रब बहुत ही बुज़ुर्ग और बड़ा है।

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि उस दिन जो जानवर निकला वह आपकी आग को बुझाने की कोशिश करता रहा सिवाय गिरगेट के। हज़रत ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने गिरगेट के मार डालने का हुक्म फ़रमाया और उसे फ़ासिक़ कहा है। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर में एक नेज़ा देखा, एक औ़रत ने सवाल किया कि यह अपने पास क्यों रख रखा है? आपने फ़रमाया गिरगेटों को मार डालने के लिये। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग में डाले गये उस वक़्त तमाम जानवर उस आग को बुझा रहे थे सिवाय गिरगेट के, यह और फूँक रहा था। पस आपने उसके मार डालने का हुक्म फ़रमाया है।

फिर फ़रमाता है कि उनका मक्र (फ़रेब) हमने उन पर उलट दिया कि काफ़िरों ने अल्लाह के नबी को नीचा करना चाहा, ख़ुदा ने उन्हें नीचा दिखाया। हज़रत अ़तीया औफ़ी का बयान है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का आग में जलाये जाने का तमाशा देखने के लिये उन काफ़िरों का बादशाह भी आया था, इधर हज़रत इब्राहीम को आग में डाला जाता है उधर आग में से एक चिंगारी उड़ती है और काफ़िर बादशाह के अंगूठे पर आ पड़ती है, वह वहीं खड़े-खड़े सबके सामने इस तरह उसे जला देती है जैसे रूई जल जाये।

और हमने उनको (यानी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को) और (उनके भतीजे) लूत (अ़लैहिस्सलाम) को ऐसे मुल्क (यानी मुल्क शाम) की तरफ़ भेजकर बचा लिया जिसमें हमने दुनिया जहान वालों के लिए (ख़ैर व) बरकत रखी है। (71) और (हिजरत के बाद) हमने उनको इस्हाक़ (बेटा) और याक़ूब (पोता) अ़ता किया, और हमने उन सबको (आला दर्जे का) नेक बनाया। (72) और हमने उनको मुक़्तदा "यानी पेशवा और रहनुमा" बनाया, कि हमारे हुक्म से (मख़्लूक़ को) हिदायत किया करते थे, और हमने उनके पास नेक कामों के करने का और (ख़ासकर) नमाज़ की पाबन्दी का और ज़कात अदा करने का हुक्म भेजा, और वे (हज़रात) हमारी इबादत (ख़ूब) किया करते थे। (73)	وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ○ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ؕ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ○ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ○ۙ وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا

Maktaba E Ashraf

और लूत को हमने हिक्मत और इल्म (जो अम्बिया की शान के मुनासिब होता है) अ़ता फ़रमाया, और हमने उनको उस बस्ती से निजात दी जिसके रहने वाले गन्दे (-गन्दे) काम किया करते थे, बेशक वे लोग बड़े बदज़ात बदकार थे। (74) और हमने उसको (यानी लूत को) अपनी रहमत में दाख़िल किया, (क्योंकि) बेशक वह बड़े नेकों में थे। (75)	وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۝ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

कौमे लूत और दुनिया की सबसे बेहूदा बद-अ़मली

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि उसने अपने ख़लील (दोस्त) को काफ़िरों से बचाकर मुल्क शाम के मुक़द्दस मुल्क में पहुँचा दिया। उबई बिन कअ़ब फ़रमाते हैं कि तमाम मीठा पानी शाम के सख़रा के नीचे से निकलता है। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि आपको इराक़ की सरज़मीन से ख़ुदा ने निजात दी और शाम के मुल्क में पहुँचाया, शाम ही अम्बिया की हिजरत का स्थान रहा, ज़मीन में से जो घटता है वह शाम में बढ़ता है और शाम की कमी फ़िलिस्तीन में ज़्यादती होती है। शाम ही मेहशर की सरज़मीन है, यहीं हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उतरेंगे, यहीं दज्जाल क़त्ल किया जायेगा। बक़ौल कअ़ब आप हर्रान की तरफ़ गये थे। यहाँ आकर आपको मालूम हुआ कि यहाँ के बादशाह की लड़की अपनी क़ौम के दीन से बेज़ार है और उससे नफ़रत रखती है, बल्कि उन पर ताने मारती है, तो आपने उनसे इस इक़रार पर निकाह कर लिया कि वह आपके साथ हिजरत करके यहाँ से निकल चलें, उन्हीं का नाम हज़रत सारा है। रज़ियल्लाहु अ़न्हा।

यह रिवायत ग़रीब है, और मशहूर यह है कि हज़रत सारा आपके चचा की साहिबज़ादी थीं और आपके साथ ही हिजरत करके चली आयी थीं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह हिजरत मक्का शरीफ़ में ख़त्म हुई, मक्का ही के बारे में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि यह ख़ुदा का पहला घर है जो बरकत व हिदायत वाला है, जिसमें अ़लावा और बहुत सी निशानियों के मक़ामे इब्राहीम भी है, उसमें आ जाने वाला अमन व सलामती में आ जाता है। फिर फ़रमाता है कि हमने उसे इस्हाक़ दिया और याक़ूब को भी इनायत किया यानी लड़का और पोता, जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

فَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحَاقَ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحَاقَ يَعْقُوْبَ.

चूँकि ख़लीले ख़ुदा के सवाल में एक ही लड़के की तलब थी, दुआ़ की थी कि:

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصَّالِحِيْنَ.

कि ऐ अल्लाह मुझे नेक औलाद अ़ता फ़रमा।

अल्लाह तआ़ला ने यह दुआ़ भी क़बूल फ़रमाई और लड़के के यहाँ भी लड़का दिया जो सवाल से ज़ायद था और सबको नेकोकार बना दिया। और उन सबको दुनिया का मुक़्तदा और पेशवा बना दिया कि ख़ुदा के हुक्म से उसकी मख़्लूक़ को ख़ुदा की राह की दावत देते रहे, उनकी तरफ़ हमने नेक कामों की 'वही' फ़रमाई। इस आ़म बात पर अ़त्फ़ डालकर फिर ख़ास बातें यानी नमाज़ और ज़कात का बयान

Maktab E Ashraf

फ़रमाया, और इरशाद हुआ कि वह इन नेक कामों के हुक्म के साथ ख़ुद भी इन नेकियों पर आमिल थे। फिर हज़रत लूत अलैहिस्सलाम का ज़िक्र शुरू होता है, लूत बिन बारान बिन आज़र। आप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर ईमान लाये थे और आपकी ताबेदारी में आप ही के साथ हिजरत की थी, जैसा कि अल्लाह के कलामे पाक में है:

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ .... الخ.

लूत आप पर ईमान लाये और फ़रमाया कि मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करने वाला हूँ।

पस अल्लाह तआला ने उन्हें हिक्मत व इल्म अता फ़रमाया और 'वही' नाज़िल फ़रमाई और नबियों की पाक जमाअत में दाख़िल किया और सदूम और उसके आस-पास की बस्तियों की तरफ़ आपको भेजा। उन्होंने न माना और मुख़ालफ़त पर कमर बाँध ली, जिसके सबब अज़ाबे ख़ुदा में गिरफ़्तार हुए और फ़ना कर दिये गये, जिनकी बरबादी के वाक़िआत ख़ुदा तआला की पाक किताब में कई जगह बयान हुए हैं। यहाँ फ़रमाया कि हमने उन्हें बदतरीन काम करने वाले फ़ासिक़ों की बस्ती से निजात दे दी, और चूँकि वह आला नेकोकार थे हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल कर लिया।

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

और नूह (अलैहिस्सलाम के क़िस्से का तज़किरा कीजिए) जबकि उस (इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने) से (भी) पहले उन्होंने दुआ की, सो हमने उनकी दुआ क़बूल की और उनको और उनक पैरवी करने वालों को बड़े भारी ग़म से निजात दी। (76) और (निजात इस तरह दी कि) हमने ऐसे लोगों से उनका बदला लिया जिन्होंने हमारे हुक्मों को (जो कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम लाए थे) झूठा बताया था, बेशक वे लोग बहुत बुरे थे, इसलिए उन सबको हमने ग़र्क़ कर दिया। (77)

नूह अलैहिस्सलाम और बेपनाह दर्द व तकलीफ़ से निजात

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को उनकी क़ौम ने सताया, तकलीफ़ें दीं तो आपने ख़ुदा को पुकारा कि बारी तआला! मैं आजिज़ आ गया हूँ तू मेरी मदद फ़रमा, ज़मीन पर इन काफ़िरों में से किसी एक को भी बाक़ी न रख, वरना ये तेरे बन्दों को बहकायेंगे और उनकी औलाद भी ऐसी ही बदकार व काफ़िर होगी। अल्लाह तआला ने अपने नबी की दुआ क़बूल फ़रमाई और आपको और मोमिनों को निजात दी और आपके घर वालों को भी सिवाय उनके जिनके नाम बरबाद होने वालों में आ गये थे। आप पर ईमान लाने वालों की बहुत ही कम तायदाद थी, क़ौम के हद से ज़्यादा तकलीफ़ देने और सताने से ख़ुदा तआला ने अपने नबी को बचा लिया। साढ़े नौ सौ साल तक आप उनमें रहे और उन्हें दीन इस्लाम की तरफ़ बुलाते रहे, मगर सिवाय चन्द लोगों के और सब अपने शिर्क व कुफ़्र से न हटे बल्कि आपको सख़्त तकलीफ़ें दीं और एक

Maktaba E Ashraf

दूसरे को आपके सताने पर उभारते रहे। हमने उनकी मदद फ़रमाई और इज़्ज़त व आबरू के साथ काफ़िरों के सताने और तकलीफ़ें देने से छुटकारा दिया और उन बुरे लोगों को ठिकाने लगा दिया, और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ के मुताबिक़ इस ज़मीन पर एक भी काफ़िर न बचा, सब डुबो दिये गये।

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝ۙ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝ۙ

और दाऊद और सुलैमान (के क़िस्से का तज़किरा कीजिए) जबकि दोनों किसी खेत के बारे में फ़ैसला करने लगे, जबकि (उस खेत में) कुछ लोगों की बकरियाँ रात के वक़्त (जा घुसीं और) उसको चर गईं, और हम उस फ़ैसले को जो लोगों के मुताल्लिक़ हुआ था, देख रहे थे। (78) सो हमने उस (फ़ैसले) की समझ सुलैमान को दे दी, और (यूँ) हमने दोनों को हिक्मत और इल्म अ़ता फ़रमाया था, और हमने दाऊद के साथ ताबे कर दिया था पहाड़ों को, कि (उनकी तस्बीह के साथ) वे तस्बीह किया करते थे, और परिन्दों को भी और (दर असल उन कामों के) करने वाले हम थे। (79) और हमने उनको ज़िरह (बनाने) का हुनर तुम लोगों के (नफ़े के) वास्ते सिखलाया, ताकि वह (ज़िरह) तुमको (लड़ाई में) एक-दूसरे की मार से बचाए, सो तुम (इस नेमत का) शुक्र करोगे भी (या नहीं)? (80) और हमने सुलैमान का ज़ोर की हवा को ताबे बना दिया था कि वह उनके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ को चलती जिसमें हमने बरकत रखी है, (मुराद मुल्क शाम है) और हम हर चीज़ को जानते हैं। (81) और बाज़े शैतान (यानी जिन्न) ऐसे थे कि उनके (यानी सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के) लिए (दरियाओं में) डुबकी लगाते थे (ताकि मोती निकाल कर दें) और वे और (और) काम भी इसके अ़लावा किया करते थे, और उनके संभालने वाले हम थे। (82)

हज़रत दाऊद और सुलैमान अ़लैहिमस्सलाम

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि यह खेती अंगूर की थी जिसके ख़ोशे (गुच्छे) लटक

रहे थे। "न-फ़शत्" के मायने हैं रात के वक़्त जानवरों के चरने के, और दिन के वक़्त चरने को अ़रबी में "हमल्" कहते हैं। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उस बाग़ को बकरियों ने ख़राब कर दिया था। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने यह फ़ैसला किया कि बाग़ के नुक़सान के बदले ये बकरियाँ बाग़ वाले को दे दी जायें। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने यह फ़ैसला सुनकर अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी! इसके सिवा भी फ़ैसले की कोई सूरत है? आपने फ़रमाया वह क्या? जवाब दिया कि बकरियाँ बाग़ वाले के हवाले कर दी जायें, वह उनसे फ़ायदा उठाता रहे और बाग़ बकरी वाले को दे दिया जाये यह उसमें अंगूर की बेलों की ख़िदमत करे, यहाँ तक कि बेलें ठीक ठाक हो जायें, अंगूर लगें और फिर उसी हालत पर आ जायें जिस पर थे तो बाग़ वाले को यह उसका बाग़ सौंप दे और बाग़ वाला उसकी बकरियाँ सौंप दे, यही मतलब इस आयत का है कि हमने उस झगड़े का सही फ़ैसला सुलैमान को समझा दिया।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम का यह फ़ैसला सुनकर बकरियों वाले अपना सामान लेकर सिर्फ़ कुत्तों को अपने साथ लिये हुए वापस जा रहे थे। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने उनसे मालूम किया कि तुम्हारा फ़ैसला क्या हुआ? उन्होंने ख़बर दी तो आपने फ़रमाया अगर मैं उस जगह होता तो यह फ़ैसला न देता बल्कि कुछ और फ़ैसला करता। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम को जब यह बात पहुँची तो आपने उन्हें बुलवाया और पूछा कि बेटे तुम क्या फ़ैसला करते? आपने वही ऊपर वाला फ़ैसला फ़रमाया। हज़रत मसरूक़ फ़रमाते हैं कि उन बकरियों ने ख़ोशे और पत्ते सब खा लिये थे तो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के फ़ैसले के ख़िलाफ़ हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़ैसला दिया कि उन लोगों की बकरियाँ बाग़ वालों को दे दी जायें और यह बाग़ उन्हें सौंपा जाये, जब तक बाग़ उसी अपनी हालत पर आये तब तक बकरियों के बच्चे, उनका दूध और उनका तमाम नफ़ा बाग़ वालें का, फिर हर एक को उसकी चीज़ सौंप दी जाये।

क़ाज़ी शुरैह रह. के पास भी एक ऐसा ही झगड़ा आया तो आपने यह फ़ैसला किया कि अगर दिन को बकरियों ने नुक़सान पहुँचाया तब तो कोई मुआ़वज़ा नहीं, और अगर रात को नुक़सान पहुँचाया है तो बकरियों वाले ज़ामिन हैं। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हज़रत बरा बिन आ़ज़िब की ऊँटनी किसी बाग़ में चली गयी और वहाँ बाग़ का बड़ा नुक़सान किया तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने यह फ़ैसला फ़रमाया कि बाग़ वालों पर दिन के वक़्त की हिफ़ाज़त है और जो नुक़सान जानवरों से रात को हो उसका जुर्माना जानवरों के मालिकों पर है। इस हदीस में इल्लतें निकाली गयी हैं और हमने किताबुल-अहकाम में ख़ुदा के फ़ज़्ल से उसकी पूरी तफ़सील बयान कर दी है। नक़ल किया गया है कि हज़रत इयास बिन मुआ़विया रह. से जबकि उनसे क़ाज़ी बनने की दरख़्वास्त की गयी तो वह हज़रत हसन रह. के पास आये और रोये। पूछा गया कि ऐ अबू सईद आप क्यों रोते हैं? फ़रमाया भाई यह रिवायत पहुँची है कि अगर क़ाज़ी ने इज्तिहाद किया (यानी किसी फ़ैसले के देने में पूरी मेहनत और अपनी कोशिश भर सही फ़ैसले तक पहुँचने की मेहनत की) फिर भी ग़लती की तो वह जहन्नमी है और जो ख़्वाहिशे नफ़्स की तरफ़ झुक गया वह भी जहन्नमी है, हाँ जिसने इज्तिहाद किया और सेहत (सही फ़ैसले) पर पहुँच गया वह जन्नत में पहुँचा। हज़रत हसन यह सुनकर फ़रमाने लगे सुनो! अल्लाह तआ़ला ने हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अ़लैहिमस्सलाम के फ़ैसले करने का ज़िक्र फ़रमाया है। ज़ाहिर है कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम हकम (फ़ैसला करने वाले और जज) होते हैं, उनके क़ौल से उन लोगों की बातें रद्द हो सकती हैं। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत सुलैमान की तारीफ़ तो बयान फ़रमाई है लेकिन हज़रत दाऊद

Maktaba E Ashraf

अ़लैहिस्सलाम की मज़म्मत (बुराई) बयान नहीं फ़रमाई। फिर फ़रमाने लगे सुनो! तीन बातों का अ़हद अल्लाह तआ़ला ने क़ाज़ियों से लिया है, एक तो यह कि वह शरई अहकाम दुनियावी नफ़े की वजह से बदल न दें, दूसरे यह कि अपने दिली इरादों और ख़्वाहिशों के पीछे न पड़ जायें, तीसरे यह कि ख़ुदा के सिवा किसी से न डरें। फिर आपने यह आयत पढ़ी:

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

यानी ऐ दाऊद! हमने तुझे ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाया है, तू लोगों में हक़ के साथ फ़ैसला करता रह, ख़्वाहिश और इच्छा के पीछे न पड़ कि राहे ख़ुदा से बहक जाये। एक और जगह इरशाद है:

فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ.

लोगों से न डरो, मुझ ही से डरते रहा करो। एक और जगह फ़रमान है:

وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا.

कि मेरी आयतों को मामूली नफ़े की ख़ातिर बेच न दिया करो।

मैं कहता हूँ कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की मासूमियत (ख़ताओं से बरी और सुरक्षित रहने) में और अल्लाह की तरफ़ से उनकी ताईद होते रहने में तो किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं है और सही बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब हाकिम इज्तिहाद और कोशिश करे फिर सही बात तक भी पहुँच जाये तो उसे दोहरा अज्र मिलता है, और जब पूरी कोशिश के बाद भी ग़लती कर जाये तो उसे एक अज्र मिलता है। यह हदीस साफ़ बतला रही है कि हज़रत इयास रह. का जो यह ख़्याल था कि बावजूद पूरी जिद्दोजहद के भी ख़ता कर जाये तो दोज़ख़ी है, यह ग़लत है। वल्लाहु आलम।

सुनन की एक और हदीस में है कि क़ाज़ी तीन क़िस्म के हैं- एक जन्नती दो दोज़ख़ी। जिसने हक़ को मालूम कर लिया उसी के मुताबिक़ फ़ैसला किया वह जन्नती, और जिसने जहालत के साथ फ़ैसला किया वह जहन्नमी, और जिसने हक़ को जानते हुए उसके ख़िलाफ़ फ़ैसला दिया वह भी जहन्नमी। क़ुरआने करीम के बयान किये हुए इस वाक़िए के क़रीब ही वह क़िस्सा है जो मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि दो औरतें थीं जिनके साथ उनके दो बच्चे भी थे, भेड़िया आकर एक बच्चे को उठा ले गया, अब हर एक दूसरी से कहने लगी कि तेरा बच्चा गया, वह जो है मेरा बच्चा है। आख़िर यह क़िस्सा हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के सामने पेश हुआ, आपने बड़ी औरत के हक़ में फ़ैसला कर दिया कि यह बच्चा तेरा है। ये यहाँ से निकलीं, रास्ते में हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम थे आपने दोनों को बुलाया और फ़रमाया छुरी लाओ मैं इस लड़के के दो टुकड़े करके आधा आधा इन दोनों को देता हूँ। इस पर बड़ी तो ख़ामोश हो गयी लेकिन छोटी ने हाय-वावेला शुरू कर दिया कि ख़ुदा आप पर रहम करे, आप ऐसा न कीजिए। यह लड़का इसी बड़ी का है, इसको दे दीजिए। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम इस मामले को समझ गये और लड़का छोटी औरत को दिला दिया। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़ में भी है। इमाम नसाई रह. ने इस पर बाब क़ायम किया है कि हाकिम को जायज़ है कि अपना फ़ैसला अपने दिल में रखकर हक़ीक़त को मालूम करने के लिये उसके ख़िलाफ़ कुछ कहे।

ऐसा ही एक वाक़िआ इब्ने असाकिर में है कि एक ख़ूबसूरत औरत से वहाँ के सरदार ने मिलना चाहा

Maktab E Ashraf

लेकिन औरत ने न माना। इसी तरह तीन और शख़्सों ने भी उससे बदकारी का इरादा किया लेकिन वह बाज़ रही। इस पर वे सरदार बिगड़ गये और इत्तिफ़ाक़ करके हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की अदालत में जाकर सबने गवाही दी कि वह औरत अपने कुत्ते से ऐसा काम कराती है। चारों के मुत्तफ़िक़ा बयान पर हुक्म हो गया कि उसे रजम किया (यानी पत्थर मार-मारकर मौत के घाट उतार दिया) जाये। उसी शाम को हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम अपने हम-उम्र लड़कों के साथ बैठकर आप हाकिम बने और चार लड़के उन लोगों की तरह आपके पास इस मुक़द्दमे को लाये और एक औरत के बारे में यही कहा। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया कि इन चारों को अलग-अलग कर दो, फिर एक को अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि उस कुत्ते का रंग कैसा था? उसने कहा काला, फिर दूसरे को अलग बुलाया उससे भी यह सवाल किया उसने कहा सुर्ख़, तीसरे ने कहा ख़ाकी, चौथे ने कहा सफ़ेद। आपने उसी वक़्त फ़ैसला दिया कि औरत पर यह ख़ालिस तोहमत है, इन चारों को क़त्ल कर दिया जाये। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास भी यह वाक़िआ बयान किया गया, आपने उसी वक़्त फ़ौरन उन चारों अमीरों को बुलाया और इसी तरह अलग-अलग उनसे उस कुत्ते के रंग के बारे में सवाल किया।

फिर बयान हो रहा है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ऐसी उम्दा आवाज़ और ख़ुलूस के साथ ज़बूर पढ़ते थे कि परिन्दे भी अपनी परवाज़ छोड़कर थम जाते थे और ख़ुदा की तस्बीह बयान करने लगते थे, इसी तरह पहाड़ भी। एक रिवायत में है कि रात के वक़्त हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि. क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे। रसूलुल्लाह सल्ल. उनकी मीठी रसीली और ख़ुलूस भरी आवाज़ सुनकर ठहर गये और देर तक सुनते रहे, फिर फ़रमाने लगे कि इनको तो आले दाऊद की आवाज़ों की मिठास दी गयी है। हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु को जब यह मालूम हुआ तो फ़रमाने लगे या रसूलल्लाह! अगर मुझे मालूम होता कि हुज़ूर मेरी क़िराअत (क़ुरआन पाक का पढ़ना) सुन रहे हैं तो मैं और अच्छी तरह पढ़ता। हज़रत अबू उस्मान नहदी रह. फ़रमाते हैं कि मैंने तो किसी बेहतर से बेहतर बाजे की आवाज़ में भी वह मज़ा नहीं पाया जो हज़रत अबू मूसा की आवाज़ में था। पस इतनी उम्दा आवाज़ को हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की ख़ुश-आवाज़ी का एक हिस्सा क़रार दिया। अब समझ लीजिए कि ख़ुद दाऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ कैसी होगी।

फिर अपना एक और एहसान बतलाता है कि हज़रत दाऊद को ज़िरहें (लोहे का लिबास) बनानी हमने सिखा दी थीं। आपके ज़माने से पहले बग़ैर कुंडों और बग़ैर हल्क़ों की ज़िरहें बनती थीं, कुंडोंदार और हल्क़ों वाली ज़िरहें आपने ही बनायीं। जैसे एक और आयत में है कि हमने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिये लोहे को नर्म कर दिया कि वह बेहतरीन ज़िरहें तैयार करें और ठीक अन्दाज़ से उनमें हल्क़े (दायरे) बनायें। ये ज़िरहें मैदाने जंग में काम आती थीं, पस यह नेमत वह थी जिस पर लोगों को ख़ुदा की शुक्रगुज़ारी करनी चाहिये। हमने ज़ोरावर हवा को हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के ताबे कर दिया था जो उन्हें उनके फ़रमान के मुताबिक़ बरकत वाली ज़मीन यानी मुल्के शाम में पहुँचा देती थी, हमें हर चीज़ का इल्म है, आप अपने तख़्त पर मय अपने लाव-लश्कर और सामान व असबाब के बैठ जाते थे, फिर जहाँ जाना चाहते हवा आपको आपके फ़रमान के मुताबिक़ घड़ी भर में वहाँ पहुँचा देती। तख़्त के ऊपर से परिन्दे अपने पंख खोलकर आप पर साया डालते, जैसा कि फ़रमाया गया है:

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ .... الخ.

Maktab E Ashraf

यानी हमने हवा को उनके ताबे कर दिया कि जहाँ पहुँचना चाहते उनके हुक्म के मुताबिक़ उसी तरफ़ नर्मी से ले चलती। सुबह शाम महीने भर की राह को तय कर लेती।

हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह. फ़रमाते हैं कि छह हज़ार कुर्सी लगाई जातीं, आपसे क़रीब मोमिन इनसान बैठते उनके पीछे मोमिन जिन्नात होते, फिर आपके हुक्म से परिन्दे अपने पंखों से साया करते, फिर हुक्म करते तो हवा आपको ले चलती। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़बीद बिन उमैर रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम हवा को हुक्म देते, वह एक बड़े तोदे की तरह जमा हो जाती, गोया पहाड़ है। फिर उसके सब बुलन्द मकान पर फ़र्श-फ़रूश करने का हुक्म देते, फिर उड़ने वाले घोड़े पर सवार होकर अपने फ़र्श पर चढ़ जाते, फिर हवा को हुक्म देते वह 'आपको बुलन्दी पर ले जाती। आप उस वक़्त सर नीचा कर लेते, दायें-बायें बिल्कुल न देखते, इसमें आपकी तवाज़ो और ख़ुदा की शुक्रगुज़ारी मक़सूद होती थी, क्योंकि आपको अपनी आ़जिज़ी व विनम्रता का इल्म था। फिर जहाँ आप हुक्म देते वहीं हवा आपको उतार देती। इसी तरह सरकश जिन्नात भी ख़ुदा तआ़ला ने आपके क़ब्ज़े में कर दिये थे, जो समुद्रों में ग़ोता लगाकर मोती और जवाहर वग़ैरह निकाल लाया करते थे, और भी बहुत से काम-काज करते थे। जैसे कि फ़रमान है:

وَالشَّيَاطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ.

हमने सरकश जिन्नों को उनका मातहत कर दिया था जो राज मिस्त्री (इमारतें बनाने वाले) थे और ग़ोताख़ोर थे, और उनके अ़लावा और शयातीन भी उनके मातहत थे जो ज़न्जीरों में बंधे रहते थे और हम ही सुलैमान के हाफ़िज़ व निगहबान थे, कोई शैतान उन्हें बुराई न पहुँचा सकता था, बल्कि सबके सब उनके मातहत और हुक्म के ताबे थे। कोई उनके क़रीब भी न फटक सकता था, आपको उन पर हुक्मरानी हासिल थी, जिसे चाहते क़ैद कर लेते जिसे चाहते आज़ाद कर देते। इसी को फ़रमाया कि और जिन्नात थे जो जकड़े रहा करते थे।

और अय्यूब (का तज़किरा कीजिए) जबकि उन्होंने (सख़्त बीमारी में मुब्तला होने के बाद) अपने रब को पुकारा कि मुझको यह तकलीफ़ पहुँच रही है, और आप सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान हैं। (83) हमने उनकी दुआ़ क़बूल की और उनको जो तकलीफ़ थी उसको दूर कर दिया, और (बिना दरख़्वास्त) हमने उनको उनका कुनबा अ़ता फ़रमा दिया, और उनके साथ (गिनती में) उनके बराबर और भी अपनी ख़ास रहमत से, और इबादत करने वालों के लिए यादगार रहने के लिए (अ़ता फ़रमाए) (84)	وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ۚ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ۝

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम का सब्र

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की तकलीफ़ों का बयान हो रहा है जो माली, जिस्मानी और औलाद में

Maktab-E-Ashraf

थीं। उनके बहुत से क़िस्म-क़िस्म के जानवर थे, खेतियाँ बाग़ात वग़ैरह थे, औलाद बीवियाँ बाँदी-गुलाम जायदाद और माल-मता सभी कुछ ख़ुदा का दिया मौजूद था। अब जो रब की तरफ़ से आज़माईश आयी तो एक सिरे से सब कुछ फ़ना होता गया, यहाँ तक कि जिस्म में भी कोढ़ फूट पड़ा, दिल और ज़बान के सिवा सारे जिस्म का कोई हिस्सा इस रोग से महफ़ूज़ न रहा। आस-पास वाले घिन करने लगे, शहर के एक उजाड़ कोने में आपको सुकूनत इख़्तियार करनी पड़ी, सिवाय आपकी एक बीवी साहिबा के और कोई आपके पास न रहा। इस मुसीबत के वक़्त सबने किनारा कर लिया, यही एक थीं जो उनकी ख़िदमत करती थीं, साथ ही मेहनत मज़दूरी करके पेट पालने को भी लाया करती थीं।

नबी करीम सल्ल. ने सच फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा सख़्त इम्तिहान नबियों का होता है, फिर नेक लोगों का, फिर उनसे नीचे के दर्जे वालों का, फिर उनसे कम दर्जे वालों का। एक और रिवायत में है कि हर शख़्स का इम्तिहान उसके दीन के अन्दाज़ से होता है, अगर वह अपने दीन में मज़बूत है तो इम्तिहान भी ज़्यादा सख़्त होता है। हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम बड़े ही साबिर थे, यहाँ तक कि "सब्रे अय्यूब" एक कहावत के तौर पर अ़वाम की ज़बानों पर चढ़ गया है। यज़ीद बिन मैसरा रह. फ़रमाते हैं कि जब आपकी आज़माईश शुरू हुई तो अहल व अ़याल (बाल-बच्चे और घर के अफ़राद) मर गये, माल फ़ना हो गया, कोई चीज़ हाथ में बाक़ी न रही। आप ख़ुदा के ज़िक्र में और बढ़ गये, कहने लगे ऐ तमाम पलने वालों के पालने वाले! तूने मुझ पर बड़े-बड़े एहसान किये, माल दिया, औलाद दी, उस वक़्त मेरा दिल बहुत मशग़ूल था, अब तूने सब कुछ लेकर मेरे दिल को उन फ़िक्रों से पाक कर दिया, अब मेरे दिल में और तुझमें कोई रोक और बाधा न रही। अगर मेरा दुश्मन इब्लीस तेरी इस मेहरबानी को जान लेता तो वह मुझ पर बहुत ही हसद (जलन) करता। इब्लीस (शैतान) मर्दूद इस क़ौल से और उस वक़्त की इस हम्द (अल्लाह की तारीफ़) से जल-भुनकर रह गया। आपकी दुआ़ओं में यह दुआ़ भी थी कि ख़ुदाया! तूने जब मुझे मालदार, औलाद वाला और अहल व अ़याल वाला बना रखा था, तू ख़ूब जानता है कि उस वक़्त मैंने न कभी ग़ुरूर व तकब्बुर किया न कभी किसी पर ज़ुल्म व सितम किया। मेरे परवर्दिगार तुझ पर रोशन है कि मेरा नर्म व गर्म बिस्तर तैयार होता और मैं रातों को तेरी इबादतों में गुज़ारता और अपने नफ़्स को इस तरह डाँट देता कि तू इसलिये पैदा नहीं किया गया, तेरी रज़ामन्दी की तलब में मैं अपने राहत व आराम को छोड़ दिया करता था। (इब्ने अबी हातिम)

इस आयत की तफ़सीर में इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम में एक बहुत लम्बा क़िस्सा है, जिसे बहुत से मुफ़स्सिरीन ने भी ज़िक्र किया है, लेकिन उसमें ग़राबत है और उसके लम्बा होने की वजह से हमने उसे छोड़ दिया है। मुद्दतों तक आप इन बलाओं (तकलीफ़ों और आज़माईशों) में मुब्तला रहे। हज़रत हसन और क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि सात साल और कई माह आप मुब्तला रहे। बनी इस्राईल के कूड़ा फेंकने की जगह आपको डाल रखा था। फिर अल्लाह ने आप पर रहम व करम किया, तमाम बलाओं से निजात दी, अज्र दिया और तारीफ़ें दीं।

वहब बिन मुनब्बेह का बयान है कि पूरे तीन साल आप इस तकलीफ़ में रहे, सारा गोश्त झड़ गया था सिर्फ़ हड्डियाँ और चमड़ा रह गया था। आप राख में पड़े रहते थे, सिर्फ़ एक आपकी बीवी साहिबा थीं जो आपके पास थीं। जब ज़्यादा ज़माना गुज़र गया तो एक रोज़ अ़र्ज़ करने लगीं कि ऐ अल्लाह के नबी! आप ख़ुदा से दुआ़ क्यों नहीं करते कि वह इस मुसीबत को हम पर से टाल दे। आप फ़रमाने लगे बीवी साहिबा सुनो! सत्तर बरस तक अल्लाह तआ़ला ने मुझे सेहत व आ़फ़ियत में रखा, तो अगर सत्तर साल तक मैं इस

Maktab e Ashraf

हालत में रहूँगा और सब्र करूँगा तो यह भी बहुत कम है। इस पर बीवी साहिबा काँप उठीं। अब आप शहर में जातीं, लोगों का काम-काज करतीं, जो मिलता वह ले आतीं और आपको खिलातीं पिलातीं। आपके दो दोस्त और दिली हमदर्द थे, उन्हें फ़िलिस्तीन में जाकर शैतान ने ख़बर दी कि तुम्हारा दोस्त सख़्त मुसीबत में मुब्तला है, तुम जाओ उनकी ख़बरगीरी करो और अपने यहाँ की कुछ शराब अपने साथ ले जाओ, वह पिला देना उससे उन्हें शिफ़ा हो जायेगी। चुनाँचे ये दोनों आये, हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की हालत देखते ही उनके आँसू निकल आये, बिलबिला कर रोने लगे। आपने पूछा तुम कौन हो? उन्होंने याद दिलाया तो आप ख़ुश हुए उन्हें मर्हबा कहा। वे कहने लगे ऐ जनाब! आप शायद कुछ छुपाते होंगे और ज़ाहिर उसके ख़िलाफ़ करते होंगे? आपने अपनी निगाहें आसमान की तरफ़ उठाकर फ़रमाया अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं क्या छुपाता था और क्या ज़ाहिर करता था। मेरे रब ने मुझे इसमें मुब्तला किया है ताकि वह देखे कि मैं सब्र करता हूँ या बेसब्री? वे कहने लगे अच्छा हम आपके वास्ते दवा लाये हैं। यह सुनते ही आप सख़्त नाराज़ हुए और फ़रमाने लगे तुम्हें शैतान ख़बीस लाया है, तुमसे कलाम करना तुम्हारा खाना पीना मुझ पर हराम है। ये दोनों आपके पास से चले गये।

एक बार का ज़िक्र है कि आपकी बीवी साहिबा ने एक घर वालों की रोटियाँ पकायीं, उनका एक बच्चा सोया हुआ था तो उन्होंने उस बच्चे के हिस्से की टिकिया (छोटी रोटी) इन्हें दे दी। यह लेकर हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम के पास आयीं। आपने कहा यह आज कहाँ से लायीं? इन्होंने सारा वाक़िआ बयान कर दिया। आपने फ़रमाया अभी वापस जाओ, मुम्किन है बच्चा जाग गया हो और इसी टिकिया की ज़िद करता हो, और रो-रोकर सारे घर को परेशान करता हो। आप रोटी वापस लेकर चलीं, उनकी डेवढ़ी में एक बकरी बंधी हुई थी, उसने ज़ोर से आपको टक्कर मारी, आपकी ज़बान से निकल गया देखो अय्यूब कैसे ग़लत ख़्याल वाले हैं। फिर ऊपर गयीं तो देखा वाक़ई बच्चा जागा हुआ है, टिकिया के लिये मचल रहा है और घर भर का नाक में दम कर रखा है। यह देखकर बेसाख़्ता ज़बान से निकला कि अल्लाह अय्यूब पर रहम करे, अच्छे मौक़े पर पहुँची, टिकिया दे दी और वापस लौटीं। रास्ते में शैतान एक तबीब (चिकित्सक) की सूरत में मिला और कहने लगा कि तेरे शौहर तकलीफ़ में हैं, रोग पर मुद्दतें गुज़र गयीं, तुम उन्हें समझाओ फ़ुलाँ क़बीले के बुत के नाम पर एक मक्खी मार दें तो शिफ़ा हो जायेगी। फिर तौबा कर लें। जब आप हज़रत अय्यूब के पास पहुँचीं तो उनसे यह कहा, आपने फ़रमाया शैतान ख़बीस का जादू तुझ पर चल गया। मैं अगर तन्दुरुस्त हो गया तो तुझे सौ कोड़े लगाऊँगा।

एक दिन आप अपने नियमानुसार रोज़ी-रोटी की तलाश में निकलीं, घर-घर फिर आयीं लेकिन कहीं काम न लगा। मायूस हो गयीं, शाम को वापसी के वक़्त हज़रत अय्यूब की भूख का ख़्याल आया तो आपने अपने बालों की एक लट काटकर एक अमीर लड़की के हाथ फ़रोख़्त कर दी, उसने आपको बहुत कुछ खाने पीने का सामान दिया जिसे लेकर आप आयीं। हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने पूछा यह आज इतना सारा और इतना अच्छा खाना कैसे मिल गया? फ़रमाया एक अमीर घर का काम कर दिया था। आपने खा लिया। दूसरे रोज़ भी इत्तिफ़ाक़ से ऐसा ही हुआ और आपने अपने बालों की दूसरी लट काटकर फ़रोख़्त कर दी और खाना ले आयीं। आज भी यही खाना देखकर आपने फ़रमाया वल्लाह मैं हरगिज़ न खाऊँगा जब तक तू मुझे यह न बतला दे कि यह कैसे लाई? अब आपने अपना दुपट्टा सर से उतार दिया, देखा कि सर के बाल सब कट चुके हैं। उस वक़्त सख़्त घबराहट और बेचैनी हुई और अल्लाह से दुआ़ की कि या अल्लाह! मैं बड़ी तकलीफ़ और मुसीबत में हूँ और तू सबसे ज़्यादा रहीम है। हज़रत नौफ़ कहते हैं कि जो

शैतान हज़रत अय्यूब के पीछे पड़ा था उसका नाम मबसूत था।

नोटः हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साहिब रह. ने फ़रमाया है कि यहाँ तक हज़रत अय्यूब की बीवी की जो रिवायतें अ़ल्लामा इब्ने कसीर रह. ने बयान कीं ये सब इस्राईली रिवायात हैं जो ज़्यादा क़ाबिले एतिबार नहीं।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की बीवी साहिबा उमूमन आपसे अ़र्ज़ किया करती थीं कि ख़ुदा से दुआ़ करो लेकिन आप न करते थे, यहाँ तक कि एक दिन बनी इस्राईल के कुछ लोग आपके पास से निकले और आपको देखा। कहने लगे इस शख़्स को यह तकलीफ़ ज़रूर किसी न किसी गुनाह की वजह से है। उस वक़्त बेसाख़्ता आपकी ज़बान से यह दुआ़ निकल गयी।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़बीद बिन उमैर रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम के दो भाई थे, एक दिन वे मिलने के लिये आये, लेकिन जिस्म की बदबू की वजह से क़रीब न आ सके, दूर ही से खड़े होकर एक दूसरे से कहने लगे कि अगर इस शख़्स में भलाई होती तो अल्लाह तआ़ला इसे इस मुसीबत में न डालता। इस बात ने हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम को वह सदमा पहुँचाया जो आपको किसी चीज़ से न हुआ था। उस वक़्त कहने लगे ख़ुदाया! कोई रात मुझ पर ऐसी नहीं गुज़री कि कोई भूखा शख़्स मेरे इल्म में हो और मैंने पेट भर लिया हो। परवर्दिगार अगर मैं अपनी इस बात में तेरे नज़दीक सच्चा हूँ तो मेरी तस्दीक़ फ़रमा। उसी वक़्त आसमान से आपकी तस्दीक़ की गयी और वे दोनों सुन रहे थे। फिर फ़रमाया परवर्दिगार! कभी ऐसा नहीं हुआ कि मेरे पास एक से ज़ायद कपड़े हुए हों और मैंने किसी नंगे को न दिये हों, अगर मैं इसमें सच्चा हूँ तो तू मेरी तस्दीक़ आसमान से कर। इस पर आपकी तस्दीक़ उनके सुनते हुए की गयी। फिर यह दुआ़ करते हुए सज्दे में गिर पड़े कि या अल्लाह! मैं तो अब सज्दे से सर न उठाऊँगा जब तक तू मुझसे इन तमाम मुसीबतों को दूर न कर दे जो मुझ पर नाज़िल हुयीं। चुनाँचे यह दुआ़ क़बूल हुई और आपके सर उठाने से पहले वे तमाम तकलीफ़ें और बीमारियाँ आपसे दूर हो गयीं जो आप पर उतारी थीं।

इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम अट्ठारह बरस तक बलाओं में घिरे रहे, फिर उनके दो दोस्तों के आने का और बदगुमानी करने का ज़िक्र है, जिसके जवाब में आपने फ़रमाया कि मेरी तो यह हालत थी कि रास्ता चलते दो शख़्सों को झगड़ता देखता और उनमें से किसी को क़सम खाते सुन लेता तो घर आकर उसकी तरफ़ से कफ़्फ़ारा अदा कर देता कि ऐसा न हो उसने ख़ुदा का नाम नाहक़ लिया हो। आप अपनी इस बीमारी में इस क़द्र निढाल हो गये थे कि आपकी बीवी साहिबा आपका हाथ थामकर पाख़ाना पेशाब के लिये ले जाती थीं। एक मर्तबा आपको हाजत थी, आपने आवाज़ दी लेकिन उन्हें आने में देर लगी। आपको सख़्त तकलीफ़ हुई, उसी वक़्त आसमान से निदा (आवाज़) आयी कि ऐ अय्यूब! अपनी ऐड़ी ज़मीन पर मारो, उसी पानी को पी भी लो और उसी से नहा भी लो। इस हदीस का मरफ़ूअ़ होना बिल्कुल ग़रीब है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आपके लिये जन्नती लिबास (जोड़ा) नाज़िल फ़रमा दिया जिसे पहनकर आप यक्सू होकर बैठ गये। जब आपकी बीवी आयीं और आपको न पहचान सकीं तो आपसे पूछने लगीं कि ऐ ख़ुदा के बन्दे! यहाँ एक बीमार और बेकस व बेबस थे, तुम्हें मालूम है कि वह क्या हुए? कहीं उन्हें भेड़िये न खा गये हों, या कुत्ते न ले गये हों? तब आपने

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

फ़रमाया नहीं! मुझे ख़ुदा ने शिफ़ा दे दी और यह रंग-रूप भी। आपका माल आपको वापस दिया गया, आपकी औलाद भी आपको वापस मिली और उनके साथ वैसी ही और भी। अल्लाह के पैग़ाम के ज़रिये यह ख़ुशख़बरी भी आपको सुना दी गयी थी और फ़रमाया गया था कि क़ुरबानी करो और इस्तिग़फ़ार करो, तेरे वालों ने तेरे बारे में मेरी नाफ़रमानी कर ली थी।

एक और रिवायत में है कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम को आ़फ़ियत (सेहत व सुकून) अ़ता फ़रमाई, आसमान से सोने की टिड्डियाँ उन पर बरसायीं, जिन्हें लेकर आपने कपड़े में जमा करनी शुरू कर दीं तो आवाज़ दी गयी कि ऐ अय्यूब! क्या तू अब तक आसूदा (ख़ुशहाल और माली एतिबार से संतुष्ट) नहीं हुआ? आपने जवाब दिया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! तेरी रहमत से आसूदा कौन हो सकता है?

फिर फ़रमाता है कि हमने उसे उसके अहल (बाल-बच्चे) अ़ता फ़रमाये। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. तो फ़रमाते हैं कि वही लोग वापस किये गये, आपकी बीवी का नाम रहमत था। यह क़ौल अगर आयत से समझा गया है तो यह भी दूर की बात होगी और अगर अहले किताब से लिया गया है तो वह तस्दीक़ या तकज़ीब (यानी सच्चा जानने या झुठलाने) के क़ाबिल चीज़ नहीं। इब्ने अ़साकिर ने उनका नाम अपनी तारीख़ में लैया बतलाया है। यह मन्शा बिन यूसुफ़ बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की बेटी हैं। एक क़ौल यह भी है कि हज़रत लैया हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की बेटी हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की बीवी हैं जो शफ़ीआ़ की ज़मीन में आपके साथ थीं। नक़ल किया गया है कि आपसे फ़रमाया गया कि तेरे अहल (बाल-बच्चे) सब जन्नत में हैं, तू कहे तो मैं उन सबको यहाँ दुनिया में ला दूँ? और कहे तो वहीं रहने दूँ और दुनिया में उनके बदले में और दे दूँ? आपने दूसरी बात पसन्द फ़रमाई। पस आख़िरत का अज्र और दुनिया का बदला दोनों आपको मिले। यह सब आपके रब की रहमत का ज़हूर था और हमारे सच्चे आ़बिदों के लिये नसीहत व इबरत थी। आप सब्र व आज़माईश में पूरे उतरने वालों के सरदार और पेशवा थे।

यह सब कुछ इसलिये हुआ कि मुसीबतों में फंसे हुए लोग अपने लिये आपकी ज़ात में इबरत (सबक़ और सीख) देखें, बेसब्री से नाशुक्री न करने लगें, और लोग उन्हें ख़ुदा के बुरे बन्दे न समझें। हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम सब्र का पहाड़ और साबित-क़दमी का नमूना थे। अल्लाह के मुक़द्दर किये हुए हालात पर, उसके इम्तिहान पर इनसान को सब्र व सहार करनी चाहिये, न जाने क़ुदरत चुपके-चुपके अपनी क्या-क्या हिक्मतें दिखा रही है।

और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल (का तज़किरा कीजिए) ये सब (अल्लाह के अहकाम पर) साबित-क़दम रहने वाले लोगों में से थे। (85) और हमने उनको अपनी (ख़ास) रहमत में दाख़िल कर लिया था, बेशक ये पूरी सलाहियत वालों में से थे। (86)	وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

चन्द सब्र वाले अम्बिया हज़रात

हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम के फ़रज़न्द (बेटे) थे। सूरः

Maktab E Ashraf

मरियम में इनका वाकिआ बयान हो चुका है। हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का भी ज़िक्र गुज़र चुका है, जुलकिफ़्ल बज़ाहिर तो नबी ही मालूम होते हैं क्योंकि नबियों के ज़िक्र में उनका नाम आया है। बाज़ हज़रात कहते हैं कि यह नबी न थे बल्कि एक नेक शख़्स थे। अपने ज़माने के बादशाह थे, बड़े ही आदिल और मुरव्वत वाले आदमी थे। इमाम इब्ने जरीर रह. इसमें ख़ामोशी इख़्तियार करते हैं। बस अल्लाह ही को ज़्यादा इल्म है।

मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि एक नेक बुज़ुर्ग थे, जिन्होंने अपने ज़माने के नबी से अहद व पैमान किये और उन पर क़ायम रहे। क़ौम में अदल व इन्साफ़ किया करते थे। नक़ल किया गया है कि जब हज़रत यसअ् बहुत बूढ़े हो गये तो इरादा किया कि मैं अपनी ज़िन्दगी में ही अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूँ और देख लूँ कि वह कैसे अमल करता है? लोगों को जमा किया और कहा कि तीन बातें जो शख़्स मन्ज़ूर करे मैं उसे ख़िलाफ़त सौंपता हूँ- दिन भर रोज़े से रहे, रात भर क़ियाम करे (यानी अल्लाह के सामने खड़ा हो, नमाज़ पढ़े) और कभी भी गुस्सा न हो। कोई और तो खड़ा न हुआ एक शख़्स जिसे लोग बहुत हल्के दर्जे का समझते थे खड़ा हुआ और कहने लगा मैं इस शर्त को पूरी कर दूँगा। आपने पूछा यानी तू दिनों को रोज़े से रहेगा और रातों को तहज्जुद पढ़ता रहेगा और किसी पर गुस्सा न करेगा? उसने कहा हाँ। यसअ् ने फ़रमाया अच्छा यानी अब कल सही। दूसरे रोज़ भी आपने इसी तरह मज्लिस में आम सवाल किया लेकिन उस शख़्स के सिवा कोई और खड़ा न हुआ, चुनाँचे उन्हीं को ख़लीफ़ा बना दिया गया। अब शैतान ने छोटे छोटे शैतानों को उस बुज़ुर्ग के बहकाने के लिये भेजना शुरू किया मगर किसी की कुछ न चली। दोपहर को क़ैलूले (आराम) के लिये आप लेटे ही थे कि ख़ुद शैतान ख़बीस ने कुण्डियाँ पीटनी शुरू कर दीं। आपने मालूम फ़रमाया कि तू कौन है? उसने कहना शुरू किया कि मैं एक मज़लूम हूँ फ़रियादी हूँ मेरी क़ौम मुझे सता रही है, मेरे साथ उसने यह किया यह किया। अब जो लम्बा क़िस्सा सुनाना शुरू किया तो किसी तरह ख़त्म ही नहीं करता, सोने का सारा वक़्त उसी में चला गया और हज़रत जुलकिफ़्ल दिन रात में बस सिर्फ़ उसी वक़्त ज़रा सी देर के लिये सोते थे। आपने फ़रमाया अच्छा शाम को आना मैं तुम्हारा इन्साफ़ करूँगा। अब शाम को जब आप फ़ैसले करने लगे, हर तरफ़ उसे देखते हैं लेकिन उसका कहीं पता नहीं, यहाँ तक कि ख़ुद जाकर इधर-उधर भी तलाश किया मगर उसे न पाया।

दूसरी सुबह को भी वह न आया, फिर जहाँ आप दोपहर को दो घड़ी आराम करने के इरादे से लेटे तो यह ख़बीस आ गया और दरवाज़ा पीटने लगा। आपने खुलवा दिया और फ़रमाने लगे मैंने तो तुमसे शाम को आने को कहा था, मैं तुम्हारा इन्तिज़ार करता रहा लेकिन तुम न आये। वह कहने लगा हज़रत! क्या बतलाऊँ जब मैंने आपकी ख़िदमत में आने का इरादा किया तो वे कहने लगे तुम न जाओ, हम तुम्हारा हक़ अदा कर देते हैं। मैं रुक गया। फिर उन्होंने अब इनकार कर दिया और अब भी कुछ लम्बे-चौड़े वाक़िआत बयान करने शुरू कर दिये और आज की नींद भी खोई। अब शाम को फिर इन्तिज़ार किया लेकिन न उसे आना था न आया।

तीसरे दिन आपने आदमी मुक़र्रर किया कि देखो कोई दरवाज़े पर न आने पाये। नींद की वजह से मेरी हालत ख़राब हो रही है। आप अभी लेटे ही थे कि वह मर्दूद फिर आ गया। चौकीदार ने उसे रोका, यह एक ताक़ में से अन्दर घुस गया और अन्दर से दरवाज़ा खटखटाना शुरू कर दिया। आपने उठकर पहरेदार से कहा कि देखो मैंने तुम्हें हिदायत कर दी थी फिर भी दरवाज़े पर किसी को आने दिया? उसने कहा नहीं! मेरी तरफ़ से कोई नहीं आया। अब जो ग़ौर से आपने देखा तो दरवाज़े को बन्द पाया और उस शख़्स को

अन्दर मौजूद पाया। आप पहचान गये कि यह शैतान है। उस वक़्त शैतान ने कहा ऐ अल्लाह के वली! मैं तुझसे हारा, न तो तूने रात को क़ियाम छोड़ा न तू इस नौकर पर ऐसे मौक़े पर गुस्सा हुआ। पस ख़ुदा ने उनका नाम ज़ुलकिफ़्ल रखा। इसलिये कि जिन बातों की उन्होंने ज़िम्मेदारी ली थी उन्हें पूरा कर दिखाया। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी कुछ तफ़सील के साथ यह क़िस्सा मन्क़ूल है। उसमें है कि बनी इस्राईल के एक क़ाज़ी ने अपनी मौत के वक़्त कहा था कि मेरे बाद मेरा ओहदा कौन संभालेगा? उसने कहा मैं। चुनाँचे उनका नाम ज़ुलकिफ़्ल हुआ। उसमें है कि जब उनके आराम का वक़्त आया तो पहरे वालों ने शैतान को रोका, उसने इस क़द्र शोर मचाया कि आप जाग गये। दूसरे दिन भी यही किया, तीसरे दिन भी यही किया। अब आप उसके साथ चलने के लिये तैयार हुए कि मैं तेरे साथ चलकर तेरा हक़ दिलवाता हूँ, लेकिन रास्ते में से वह अपना हाथ छुड़ाकर भाग खड़ा हुआ। हज़रत अबू मूसा अश्अ़री ने मिम्बर पर फ़रमाया कि ज़ुलकिफ़्ल नबी न थे, बनी इस्राईल के एक सालेह नेक शख़्स थे, जो हर रोज़ सौ नमाज़ें पढ़ते थे। उसके बाद इन्होंने उसके जैसी इबादतों का ज़िम्मा उठाया, इसलिये उन्हें ज़ुलकिफ़्ल कहा गया।

एक मुन्तक़ता रिवायत में हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु से भी यह मन्क़ूल है। एक ग़रीब हदीस मुस्नद इमाम अहमद में है कि किफ़्ल नाम का एक शख़्स था जो किसी गुनाह से बचता न था। एक मर्तबा उसने एक औ़रत को साठ दीनार देकर बदकारी के लिये तैयार किया। जब अपना इरादा पूरा करने के लिये तैयार हुआ तो वह औ़रत रोने और काँपने लगी। उसने कहा मैंने तुझ पर कोई ज़बरदस्ती तो की नहीं, फिर रोने और काँपने की क्या वजह है? उसने कहा मैंने ऐसी कोई नाफ़रमानी आज तक अल्लाह तआ़ला की नहीं की, इस वक़्त मेरी मोहताजी (ग़ुर्बत) ने मुझे यह बुरा दिन दिखाया। किफ़्ल ने कहा तू एक गुनाह पर इस क़द्र परेशानी में और दुखी है? हालाँकि इससे पहले तूने कभी ऐसा नहीं किया। उसी वक़्त उसे छोड़कर उससे अलग हो गया और कहने लगा जा ये दीनार मैंने तुझे बख़्शे। ख़ुदा की क़सम! आज से मैं अल्लाह तआ़ला की किसी क़िस्म की नाफ़रमानी न करूँगा। अल्लाह की शान देखिये उसी रात उसका इन्तिक़ाल होता है। सुबह लोग देखते हैं कि उसके दरवाज़े पर क़ुदरती हर्फ़ों से लिखा हुआ था कि ख़ुदा ने किफ़्ल को बख़्श दिया।

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۗ وَكَذٰلِكَ نُـنْجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝	और मछली वाले (पैग़म्बर यानी यूनुस अ़लैहिस्सलाम का तज़किरा कीजिए) जबकि वह अपनी क़ौम से (जबकि वे ईमान न लाए) ख़फ़ा होकर चल दिए, और उन्होंने यह समझा कि हम उन पर (इस चले जाने में) कोई पकड़ न करेंगे, पस उन्होंने अन्धेरों में पुकारा कि (इलाही) आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप (सब कमियों से) पाक हैं, मैं बेशक क़ुसूरवार हूँ। (87) सो हमने उनकी दुआ़ क़बूल की और हमने उनको उस घुटन से निजात दी, और हम इसी तरह (और) ईमान वालों को (भी मुसीबत और परेशानी से) निजात दिया करते हैं। (88)

Maktab-E-Ashraf

Maktab E Ashraf

हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा

यह वाकिआ यहाँ भी बयान किया गया है, सूरः साफ़्फ़ात में भी है और सूरः नून में भी। यह पैग़म्बर हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम थे। इन्हें मूसल के इलाक़े की बस्ती नेनवा की तरफ़ नबी बनाकर ख़ुदा तआ़ला ने भेजा था। आपने ख़ुदा की राह की दावत दी लेकिन क़ौम ईमान न लाई। आप वहाँ से नाराज़ होकर चल दिये और उन लोगों से कहने लगे कि तीन दिन में तुम पर अ़ज़ाबे ख़ुदा आ जायेगा। जब उन्हें इस बात की तहक़ीक़ और पुष्टि हो गयी और उन्होंने जान लिया कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम झूठे नहीं होते तो ये सबके सब छोटे बड़े मय अपने जानवरों और मवेशियों के जंगल में निकल खड़े हुए। बच्चों को माँओं से अलग कर दिया और बिलक-बिलक कर निहायत गिरया व ज़ारी से अल्लाह की बारगाह में फ़रियाद शुरू कर दी। इधर उनका रोना और फ़रियाद जारी था उधर जानवरों की भयानक सदायें, ग़र्ज़ रहमते ख़ुदा मुतवज्जह हो गयी, अ़ज़ाब उठा लिया गया, जैसा कि फ़रमाया गया हैः

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ...........

यानी अ़ज़ाब के फ़ैसले के बाद ईमान ने किसी को नफ़ा नहीं दिया सिवाय क़ौमे यूनुस के, कि उनके ईमान की वजह से हमने उन पर से अ़ज़ाब हटा लिये और दुनिया की रुस्वाई से उन्हें बचा लिया और मौत तक की मोहलत दी।

हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम यहाँ से चलकर कश्ती में सवार हुए। आगे जाकर तूफ़ान के आसार ज़ाहिर हुये, क़रीब था कि कश्ती डूब जाये। मश्विरा यह हुआ कि किसी आदमी को दरिया में डाल देना चाहिये कि वज़न कम हो जाये। क़ुर्आ हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम के नाम का निकला, लेकिन किसी ने आपको दरिया में डालना पसन्द न किया। दोबारा क़ुर्आ-अन्दाज़ी हुई, आप ही का नाम निकला, तीसरी बार फिर क़ुर्आ डाला अब की बार भी आप ही का नाम निकला। चुनाँचे ख़ुद क़ुरआन में हैः

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ.

अब के हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ख़ुद खड़े हो गये, कपड़े उतार कर दरिया में कूद पड़े। अख़्ज़र समुद्र से अल्लाह के हुक्म से एक मछली पानी काटती हुई आयी और आपको लुक़्मा बना लिया, लेकिन अल्लाह के हुक्म से न आपकी हड्डी तोड़ी न जिस्म को कुछ नुक़सान पहुँचाया। आप उसके लिये ग़िज़ा न थे बल्कि उसका पेट आपके लिये क़ैदख़ाना (बन्दी ग्रह) था। इसी वजह से आपकी निस्बत मछली की तरफ़ की गयी। अ़रबी में मछली को "नून" कहते हैं। आपका ग़ज़ब व ग़ुस्सा आपकी क़ौम पर था, ख़्याल यह था कि अ़ज़ाब आपको तंग न पकड़ेगा। पस यहाँ "नक़्दि-र" के यही मायने हज़रत इब्ने अ़ब्बास, मुजाहिद और ज़ह्हाक रह. वग़ैरह ने किये हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को पसन्द फ़रमाते हैं और इसकी ताईद आयत "व मन् क़ुदि-र अ़लैहि रिज़्क़ुहू" से भी होती है। हज़रत अ़तीया औ़फ़ी रह. ने यह मायने किये हैं कि हम उस पर मुक़द्दर न करेंगे।

उन अन्धेरियों में फंसकर अब यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने अपने रब को पुकारा। समुद्र के तले का अन्धेरा, फिर मछली के पेट का अन्धेरा, ये सब अन्धेरे जमा थे। आपने समुद्र की तह की कंकरियों की तस्बीह सुनी और ख़ुद भी तस्बीह करनी शुरू की। आप मछली के पेट में जाकर पहले तो समझे कि मैं मर गया, फिर पैर को हिलाया तो वह हिला, यक़ीन हुआ कि मैं ज़िन्दा हूँ। वहीं सज्दे में गिर पड़े और कहने लगे या

अल्लाह! मैंने तेरे लिये इस जगह को मस्जिद बनाया जिसे इससे पहले किसी ने सज्दे की जगह न बनाया होगा। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि चालीस दिन आप मछली के पेट में रहे।

इब्ने जरीर में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब ख़ुदा तआ़ला ने हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम के कै़द करने का इरादा किया तो मछली को हुक्म दिया कि आपको निगल ले, लेकिन इस तरह कि न हड्डी टूटे और न जिस्म पर खरोंच आये। जब आप समुद्र की तह में पहुँचे तो वहाँ तस्बीह सुनकर हैरान रह गये। 'वही' आयी कि यह समुद्र के जानवरों की तस्बीह है। चुनाँचे आपने भी अल्लाह की तस्बीह शुरू कर दी उसे सुनकर फ़रिश्तों ने कहा कि इलाही! यह आवाज़ तो बहुत दूर की और बहुत कमज़ोर है, किसकी है? हम तो नहीं पहचान सके। जवाब मिला कि मेरे बन्दे यूनुस की आवाज़ है, उसने मेरी नाफ़रमानी की। मैंने उसे मछली के पेट के कै़दख़ाने में डाल दिया है। उन्होंने कहा परवर्दिगार! उनके नेक आमाल तो दिन रात के हर वक़्त चढ़ते ही रहते थे, अल्लाह तआ़ला ने उनकी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमाई और मछली को हुक्म दिया कि वह आपको किनारे पर उगल दे। तफ़सीर इब्ने कसीर के एक नुस्ख़े में यह रिवायत भी है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- किसी को लायक़ नहीं कि वह ख़ुद को यूनुस बिन मता से अफ़ज़ल कहे, ख़ुदा के उस बन्दे ने अन्धेरियों में अपने रब की तस्बीह बयान की है।

ऊपर जो रिवायत गुज़री उसकी वही एक सनद है। इब्ने अबी हातिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने यह दुआ़ की तो ये कलिमात अ़र्श के इर्द-गर्द (आस-पास) घूमने लगे। फ़रिश्ते कहने लगे कि यह बहुत दूर-दराज़ की आवाज़ है, लेकिन है यह जानी-पहचानी आवाज़। आवाज़ बहुत कमज़ोर है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या तुमने पहचाना नहीं? उन्होंने कहा नहीं! फ़रमाया यह मेरे बन्दे यूनुस की आवाज़ है। फ़रिश्तों ने कहा वही यूनुस जिसके पाक अ़मल क़बूल शुदा हर रोज़ तेरी तरफ़ चढ़ते थे और जिनकी दुआ़ तेरे पास मक़बूल थीं? ख़ुदाया जैसे वह आराम के वक़्त नेकियाँ करता था तू इस मुसीबत के वक़्त उस पर रहम कर। उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने मछली को हुक्म दिया कि वह आपको बग़ैर किसी तकलीफ़ के किनारे पर उगल दे। फिर फ़रमाता है कि हमने उनकी दुआ़ क़बूल कर ली और ग़म से निजात दे दी, उन अन्धेरियों से निकाल दिया, इसी तरह हम ईमान वालों को निजात दिया करते हैं। वे मुसीबतों में घिरकर हमें पुकारते हैं और हम उनकी मदद फ़रमाकर तमाम मुश्किलें आसान कर देते हैं। ख़ुसूसन जो लोग यूनुस की इस दुआ़ को पढ़ें।

सैयदुल-अम्बिया रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं। मुस्नद अहमद तिर्मिज़ी वग़ैरह में है, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में गया, हज़रत उस्मान वहाँ थे, मैंने सलाम किया, आपने मुझे ध्यान से देखा और मेरे सलाम का जवाब न दिया। मैंने अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से आकर शिकायत की, आपने हज़रत उस्मान को बुलवाया, उनसे वाक़िआ़ कहा कि आपने एक मुसलमान भाई को सलाम का जवाब क्यों न दिया? आपने फ़रमाया न यह आये न इन्होंने सलाम किया, ऐसा नहीं कि मैंने इन्हें जवाब न दिया हो। इस पर मैंने क़सम खाई तो आपने भी मेरे मुक़ाबले में क़सम खा ली। फिर कुछ ख़्याल करके हज़रत उस्मान ग़नी न तौबा इस्तिग़फ़ार किया और फ़रमाया ठीक है, आप निकले थे लेकिन मैं उस वक़्त अपने दिल से वह बात कह रहा था जो मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुनी थी। अल्लाह की क़सम मुझे जब वह याद आती है तो मेरी आँखों पर ही नहीं बल्कि मेरे दिल पर भी पर्दा पड़ जाता है। हज़रत सअ़द रज़ि. ने फ़रमाया मैं आपको उसकी ख़बर देता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हमारे सामने अव्वल दुआ़ का ज़िक्र किया ही था कि एक देहाती आ गया और आपको अपनी बातों में मशग़ूल कर लिया। बहुत

वक़्त गुज़र गया, अब हुज़ूर सल्ल. वहाँ से उठे और मकान की तरफ़ तशरीफ़ ले चले, मैं भी आपके पीछे हो लिया। जब आप घर के क़रीब पहुँच गये मुझे डर लगा कि कहीं आप अन्दर न चले जायें और मैं रह न जाऊँ तो मैंने ज़ोर-ज़ोर से ज़मीन पर पाँव मार-मारकर चलना शुरू किया। मेरी जूतियों की आहट सुनकर आपने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया कौन अबू इस्हाक़? मैंने कहा जी हाँ या रसूलल्लाह मैं हूँ। आपने फ़रमाया क्या बात है? मैंने कहा हुज़ूर! आपने अव्वल दुआ़ का ज़िक्र किया फिर वह देहाती आ गया और आपको मशग़ूल कर लिया। आपने फ़रमाया हाँ वह दुआ़ हज़रत ज़ुन्नून (यानी हज़रत यूनुस) अ़लैहिस्सलाम की थी जो उन्होंने मछली के पेट में की थी, यानी "ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन" सुनो! जो भी मुसलमान जिस किसी मामले में जब कभी अपने रब से यह दुआ़ करे अल्लाह तआ़ला इसे ज़रूर क़बूल फ़रमाता है।

इब्ने अबी हातिम में है कि जो भी हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम की इस दुआ़ के साथ दुआ़ करे उसकी दुआ़ ज़रूर क़बूल की जायेगी। अबू सईद फ़रमाते हैं कि इसी आयत में इसके बाद ही फ़रमान है कि हम इसी तरह मोमिनों को निजात देते हैं। इब्ने जरीर में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा का वह नाम जिस से वह पुकारा जाये तो क़बूल फ़रमा ले और जो माँगा जाये वह अ़ता फ़रमाये, वह हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम बिन मता की दुआ़ में है। हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! वह हज़रत यूनुस के लिये ही ख़ास थी या तमाम मुसलमानों के लिये आ़म है? फ़रमाया उनके लिये ख़ास और तमाम मुसलमानों के लिये आ़म है, जो भी यह दुआ़ करे। क्या तूने क़ुरआन में नहीं पढ़ा कि हमने उसकी दुआ़ क़बूल फ़रमाई, उसे ग़म से छुड़ाया और इसी तरह हम मोमिनों को छुड़ाते हैं। पस जो भी यह दुआ़ करे उससे अल्लाह का क़बूलियत का वायदा हो चुका है। इब्ने अबी हातिम में है, कसीर बिन सईद फ़रमाते हैं कि मैंने इमाम हसन बसरी रह. से पूछा कि अबू सईद ख़ुदा का वह इस्मे आज़म क्या है कि जब उसके साथ उससे दुआ़ की जाये तो अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमा ले और जब उसके साथ से सवाल किया जाये तो वह अ़ता फ़रमाये? आपने जवाब दिया कि भतीजे! क्या तुमने क़ुरआने करीम में ख़ुदा का यह फ़रमान नहीं पढ़ा? फिर आपने यही दो आयतें तिलावत फ़रमायीं और फ़रमाया- भतीजे! यही ख़ुदा का वह "इस्मे आज़म" है कि जब इसके साथ दुआ़ की जाये तो वह क़बूल फ़रमाता है, और जब इसके साथ उससे माँगा जाये तो वह अ़ता फ़रमाता है।

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝

और ज़करिया (का तज़किरा कीजिए) जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा, ऐ मेरे रब! मुझको लावारिस मत रखियो (यानी मुझको बेटा दे दीजिए कि मेरा वारिस हो) और सब वारिसों से बेहतर आप ही हैं। (89) सो हमने उनकी दुआ़ क़बूल कर ली और हमने उनको यहया (बेटा) अ़ता फ़रमाया और उनकी ख़ातिर उनकी बीवी को (जो कि बाँझ थीं औलाद के) क़ाबिल कर दिया, ये सब नेक कामों में दौड़ते थे, और उम्मीद व ख़ौफ़ के साथ हमारी इबादत किया करते थे, और हमारे सामने दबकर (यानी आजिज़ी के साथ) रहते थे। (90)

Maktabah Ashraf

अल्लाह तआ़ला की बारगाह का एक और मक़बूल इनसान

अल्लाह तआ़ला हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान फ़रमाता है कि उन्होंने दुआ़ की कि मुझे औलाद हो जो मेरे बाद नबी बने। सूरः मरियम और सूरः आले इमरान में यह वाक़िआ़ तफ़सील से है। आपने यह दुआ़ लोगों की पोशीदगी में की थी- मुझे तन्हा न छोड़, यानी बेऔलाद। दुआ़ के बाद ख़ुदा तआ़ला की तारीफ़ की जैसा कि इस दुआ़ के लायक़ थी। अल्लाह तआ़ला ने आपकी दुआ़ क़बूल फ़रमाई और आपकी बीवी साहिबा को जिन्हें बुढ़ापे तक कोई औलाद न हुई थी औलाद के क़ाबिल बना दिया। बाज़ लोग कहते हैं कि उनकी ज़बान की कमी दूर कर दी, बाज़ कहते हैं कि उनके अख़्लाक़ की कमी पूरी कर दी। लेकिन क़ुरआनी अलफ़ाज़ के क़रीब पहले मायने ही हैं। ये सब बुज़ुर्ग नेकियों और ख़ुदा की तरफ़ और ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी की तरफ़ भाग दौड़ करने वाले थे, और उम्मीद व डर से ख़ुदा से दुआयें करने वाले थे। और सच्चे मोमिन, रब की बातें मानने वाले, ख़ुदा का ख़ौफ़ रखने वाले, तवाज़ो, विनम्रता और आ़जिज़ी करने वाले, ख़ुदा के सामने अपना झुकाव ज़ाहिर करने वाले थे।

रिवायत किया गया है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने अपने एक ख़ुतबे में फ़रमाया- लोगो! मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला से डरते रहने, उसकी पूरी तारीफ़ व सिफ़त बयान करते रहने, उम्मीद व ख़ौफ़ से दुआयें माँगने और दुआ़ओं में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ करने (यानी विनम्रता और दिल से झुकने) की वसीयत करता हूँ। देखो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम के घराने की यही फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई।

और उनका (यानी बीबी मरियम अ़लैहस्सलाम का भी तज़्किरा कीजिए) जिन्होंने अपनी आबरू को (मर्दों से) बचाया (निकाह से भी और नाजायज़ से भी) फिर हमने उनमें (जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के वास्ते से) अपनी रूह फूँक दी और हमने उनको और उनके बेटे (ईसा) को दुनिया जहान वालों के लिए (अपनी कामिल क़ुदरत की) निशानी बना दी। (91)	وَالَّتِىٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

हज़रत ईसा जिनके नूरे नज़र हैं

हज़रत मरियम और हज़रत ईसा अ़लैहिमस्सलाम का क़िस्सा बयान हो रहा है। क़ुरआने करीम में उमूमन हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया अ़लैहिमस्सलाम के क़िस्से के साथ ही इनका क़िस्सा बयान होता रहा है। इसलिये कि इन लोगों में एक ख़ास जोड़ है। हज़रत ज़करिया पूरे बुढ़ापे के आ़लम में, आपकी बीवी साहिबा जवानी के दौर से गुज़री हुयीं और पूरी उम्र के बेऔलाद, उनके यहाँ औलाद अ़ता फ़रमाई। इस क़ुदरत को दिखाकर फिर सिर्फ़ औरत को बग़ैर शौहर के औलाद अ़ता फ़रमाना यह और भी ज़्यादा क़ुदरत का कमाल ज़ाहिर करता है। सूरः आले इमरान और सूरः मरियम में भी यही तरतीब रखी। ज़ाहिर है कि आबरू व अ़स्मत वाली औरत से मुराद हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम हैं। जैसा कि फ़रमान है:

Mahtab L Ashraf

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا............ الخ.

यानी इमरान की लड़की मरियम, जो पाकदामन थीं। उन्हें और उनके लड़के हज़रत ईसा को अपनी बेनज़ीर क़ुदरत का निशान बनाया ताकि मख़्लूक़ को ख़ुदा की हर तरह की क़ुदरत और अल्लाह के हर चीज़ के बनाने और पैदा करने पर विस्तृत इख़्तियारात और सिर्फ़ अपने इरादे से चीज़ों का बनाना मालूम हो जाये। ईसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह की क़ुदरत की एक अ़लामत (निशान) थे, जिन्नात के लिये भी और इनसानों के लिये भी।

إِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ۝ وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ كُلٌّ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ۝ فَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ۝	यह है तुम्हारा तरीक़ा कि (जिस पर तुमको रहना वाजिब है, और) वह एक ही तरीक़ा है, और मैं तुम्हारा (हक़ीक़ी) रब हूँ, सो तुम मेरी इबादत किया करो। (92) और उन लोगों ने अपने (दीन के) मामले में इख़्तिलाफ़ पैदा कर लिया, (सो उसकी सज़ा देखेंगे, क्योंकि) सब हमारे पास आने वाले हैं। (93) सो जो शख़्स नेक काम करता होगा और वह ईमान वाला भी होगा तो उसकी मेहनत बेकार (जाने वाली) नहीं, और हम उसको लिख लेते हैं। (94)

वह दीन जिस पर सबको चलना चाहिये

फ़रमान है कि तुम सबका दीन एक ही है। करने न करने के अहकाम तुम सब पर बराबर हैं। यानी यह शरीअ़त जो बयान हुई तुम सबकी सर्वसम्मति वाली शरीअ़त है, जिसका आला मक़सूद तौहीदे ख़ुदा (अल्लाह के एक होने के पैग़ाम को वाज़ेह करना) है। जैसे इस आयत में है:

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ............... الخ

ऐ पैग़म्बरो! तुम (और तुम्हारी उम्मतें) पाक और उम्दा चीज़ें खाओ और नेक काम (यानी इबादत) करो।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हम अम्बिया की जमाअ़त ऐसे हैं जैसे एक बाप के बेटे, कि दीन सब का एक है, यानी अल्लाह की इबादत जिसका कोई शरीक नहीं, अगरचे शरीअ़त के अहकाम अलग-अलग हैं। जैसे क़ुरआन का फ़रमान है:

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا.

हर एक की राह और तरीक़ा है। फिर लोगों ने इख़्तिलाफ़ (विवाद और मतभेद) किया। बाज़ अपने नबियों पर ईमान लाये और बाज़ न लाये। क़ियामत के दिन सबका लौटना हमारी तरफ़ है। हर एक को उसके आमाल का बदला दिया जायेगा। नेकों को नेक बदला और बुरों को बुरी सज़ा। जिसके दिल में ईमान

हो और जिसके आमाल नेक हों उसके आमाल अकारत (बेकार) न होंगे। जैसे फ़रमान है:

إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا.

नेक काम करने वालों का अज्र हम ज़ाया नहीं करते, ऐसे आमाल की क़द्रदानी करते हैं। एक ज़र्रे के बराबर हम ज़ुल्म रवा नहीं रखते, तमाम आमाल लिख लेते हैं, कोई चीज़ छोड़ते नहीं। हलाक होने वाले (यानी जिसको मौत आ गयी उन) लोगों का दुनिया की तरफ़ फिर पलटना मुहाल है। यह मतलब भी हो सकता है कि उनकी तौबा क़बूल नहीं, लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा बेहतर है।

وَحَرَٰمٌ عَلَىٰ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَٰهَآ أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ○ حَتَّىٰٓ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُم مِّن كُلِّ حَدَبٍ يَنسِلُونَ ○ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِىَ شَٰخِصَةٌ أَبْصَٰرُ الَّذِينَ كَفَرُوا۟ يَٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِى غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا بَلْ كُنَّا ظَٰلِمِينَ ○	और हम जिन बस्तियों को (अज़ाब से या मौत से) फ़ना कर चुके हैं उनके (रहने वालों के) लिए यह बात नामुम्किन है कि वे (दुनिया में) फिर लौटकर आएँ। (95) यहाँ तक कि जब याजूज व माजूज खोल दिए जाएँगे और वे (अपनी तादाद के ज़्यादा होने की वजह से) हर बुलन्दी (जैसे पहाड़ और टीले) से निकलते (मालूम) होंगे। (96) और (वह अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाने और मरने के बाद ज़िन्दा होने का) सच्चा वायदा नज़दीक आ पहुँचा होगा, तो बस फिर एकदम से यह (क़िस्सा) होगा कि इनकार करने वालों की निगाहें फटी-की-फटी रह जाएँगी (और यूँ कहते नज़र आएँगे) कि हाय हमारी कमबख़्ती हम इस (चीज़) से ग़फ़लत में थे, बल्कि वास्तविकता यह है कि हम ही क़ुसूरवार थे। (97)

अमन व शान्ति के दुश्मन 'याजूज व माजूज'

याजूज व माजूज आदम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से हैं बल्कि वे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के लड़के याफ़िस की औलाद में से हैं, जिनकी नस्ल तुर्क हैं। ये भी उन्हीं में का एक गिरोह है। यह ज़ुल्क़रनैन की बनाई हुई दीवार के बाहर ही छोड़ दिये गये थे। आपने दीवार बनाकर फ़रमाया था कि यह मेरे रब की रहमत है, ख़ुदा के वायदे के वक़्त इसका चूरा-चूरा हो जायेगा। मेरे रब का वायदा हक़ है.....।

याजूज माजूज क़ियामत के क़रीब वहाँ से निकल आयेंगे और ज़मीन में फ़साद मचा देंगे। हर ऊँची जगह को अ़रबी में "हदब" कहते हैं। उनके निकलने के वक़्त उनकी यही हालत होगी। तो इस ख़बर को इस तरह बयान किया जैसे सुनने वाला अपनी आँखों से देख रहा है, और हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा सच्ची ख़बर किसकी होगी? जो ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला है। हो चुकी और होने वाली तमाम बातों से आगाह है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने लड़कों को उछलते-कूदते खेलते-दौड़ते एक दूसरे पर सवार होते

Maktab E Ashraf

देखकर फ़रमाया कि इसी तरह याजूज माजूज आयेंगे। बहुत सी हदीसों में उनके निकलने का ज़िक्र हैः

1. मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि याजूज माजूज खोले जायेंगे और वे लोगों के पास पहुँचेंगे। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः

وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ.

कि वे हर बुलन्दी से निकलते हुए महसूस होंगे।

वे छा जायेंगे और मुसलमान अपने शहरों क़िलों में सिमट आयेंगे। अपने जानवरों को भी वहीं ले लेंगे और अपना पानी उन्हें पिलाते रहेंगे। याजूज माजूज जिस नहर से गुज़रेंगे उसका पानी सफ़ा-चट कर जायेंगे यहाँ तक कि उसमें ख़ाक उड़ने लगेगी। उनकी दूसरी जमाअ़त वहाँ पहुँचेगी तो वह कहेगी कि शायद इसमें किसी ज़माने में पानी होगा। जब ये देखेंगे कि अब ज़मीन पर कोई न रहा और वास्तव में सिवाय उन मुसलमानों के जो अपने शहरों और क़िलों में पनाह लिये हुए होंगे कोई और वहाँ होगा भी नहीं, तो ये कहेंगे कि अब ज़मीन वालों से हम फ़ारिग़ हो गये आओ आसमान वालों की ख़बर लें। चुनाँचे उनमें का एक शरीर अपना नेज़ा घुमाकर आसमान की तरफ़ फेंकेगा। अल्लाह की क़ुदरत से वह ख़ून से भरा होकर उनके पास गिरेगा, यह भी एक क़ुदरती इम्तिहान होगा। अब उनकी गर्दनों में गुठली हो जायेगी और इसी वबा में ये सारे के सारे एक साथ एक दम मर जायेंगे, एक भी बाक़ी न रहेगा, सारा शोर व गुल (हंगामा और अफ़रा-तफ़री) ख़त्म हो जायेगा।

मुसलमान कहेंगे कोई है जो अपनी जान हम मुसलमानों के लिये हथेली पर रखकर शहर के बाहर जाये और उन दुश्मनों को देखे कि किस हाल में हैं? चुनाँचे एक साहिब इसके लिये तैयार हो जायेंगे और अपने आपको क़त्ल शुदा समझकर राहे ख़ुदा में मुसलमानों की ख़िदमत के लिये निकल खड़े होंगे। देखेंगे कि सब का ढेर लग रहा है, सारे मरे हुए पड़े हैं, यह उसी वक़्त निदा (आवाज़ और ऐलान) करेगा कि ऐ मुसलमानो! ख़ुश हो जाओ अल्लाह ने ख़ुद तुम्हारे दुश्मनों को ग़ारत कर दिया। यह ढेर पड़ा हुआ है। अब मुसलमान बाहर आयेंगे।

2. मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक दिन सुबह ही सुबह दज्जाल का ज़िक्र किया, इस तरह पर कि हम समझे शायद वह इन दरख़्तों की आड़ में है और अब निकलने ही वाला है। आप फ़रमाने लगे कि मुझे दज्जाल से ज़्यादा ख़ौफ़ तुम पर और चीज़ का है। अगर दज्जाल मेरी मौजूदगी में निकला तो मैं ख़ुद उससे निपट लूँगा, वरना तुम में से हर शख़्स उससे बचे। मैं तुम्हें ख़ुदा की अमान में दे रहा हूँ। वह जवान उम्र का उलझे हुए बालों वाला कानी और उभरी हुई आँखों वाला है, वह शाम और इराक़ के दरमियान से निकलेगा और दायें-बायें घूमेगा। ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम साबित-क़दम रहना (यानी अपने दीन पर जमे रहना)। हमने मालूम किया या रसूलल्लाह! वह कितने दिन ठहरेगा? आपने फ़रमाया चालीस दिन। एक दिन एक साल के जैसा, एक दिन एक महीने के बराबर और एक दिन एक जुमा (यानी एक हफ़्ते) के बराबर और बाक़ी दिन आ़म मामूली दिनों जैसे होंगे। हमने पूछा या रसूलल्लाह! जो दिन साल भर के बराबर होगा उसमें हमें यही पाँच नमाज़ें काफ़ी होंगी? आपने फ़रमाया नहीं! तुम अपने अन्दाज़े से वक़्त पर नमाज़ पढ़ते रहा करना। हमने मालूम किया कि हुज़ूर! उसकी रफ़्तार कैसी होगी? फ़रमाया जैसे बादल कि हवा उन्हें इधर से उधर भगाये लिये जाती हो। एक क़बीले के पास जायेगा, उन्हें अपनी तरफ़ बुलायेगा, वे उसकी बात मान लेंगे, आसमान को हुक्म देगा कि उन पर बारिश बरसाये, ज़मीन से कहेगा कि उनके

लिये पैदावार उगाये, उनके जानवर उनके पास मोटे ताज़े भरे पेट लौटेंगे।

एक क़बीले के पास जाकर अपने आपको मनवाना चाहेगा, वे इनकार कर देंगे, यह वहाँ से निकलेगा तो उनके तमाम माल इसके पीछे लग जायेंगे, वे बिल्कुल ख़ाली हाथ रह जायेंगे। वह ग़ैर-आबाद जंगलों में आयेगा और ज़मीन से कहेगा कि अपने ख़ज़ाने उगल दे, वह उगल देगी और सारे ख़ज़ाने उसके पीछे ऐसे चलेंगे जैसे शहद की मक्खियाँ अपने सरदार के पीछे। यह भी दिखायेगा कि एक शख़्स को तलवार से ठीक दो टुकड़े करा देगा और इधर-उधर दूर-दराज़ फिंकवा देगा। फिर उसका नाम लेकर आवाज़ देगा तो वह ज़िन्दा चलता फिरता उसके पास आ जायेगा। यह इसी हाल में होगा कि अल्लाह तआ़ला हज़रत मसीह बिन मरियम को उतार देगा। आप दमिश्क़ की तरफ़ सफ़ेद मिनारे के पास उतरेंगे। अपने दोनों हाथ दो फ़रिश्तों के परों पर रखे हुए होंगे। आप उसका पीछा करेंगे और पूर्वी दरवाज़े लुद के पास उसे पाकर क़त्ल कर देंगे। फिर हज़रत ईसा बिन मरियम की तरफ़ ख़ुदा की 'वही' आयेगी कि मैं अपने ऐसे बन्दों को भेजता हूँ जिनसे लड़ने की तुम में ताब व ताक़त नहीं, मेरे बन्दों को तूर पहाड़ की तरफ़ समेट कर ले जाओ। फिर अल्लाह तआ़ला याजूज व माजूज को भेजेगा जैसा कि फ़रमायाः

وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ.

कि वे हर बुलन्दी से निकलते हुए महसूस होंगे।

उनसे तंग आकर हज़रत ईसा और आपके साथी अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करेंगे तो अल्लाह तआ़ला उन पर गुठली की बीमारी भेजेगा जो उनकी गर्दन में निकलेगी, सारे के सारे ऊपर तले एक साथ ही मर जायेंगे। तब ईसा मय मोमिनों के आयेंगे, देखेंगे कि तमाम ज़मीन उनकी लाशों से पटी पड़ी है और उनकी बदबू से खड़ा नहीं हुआ जाता। आप फिर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करेंगे तो अल्लाह तआ़ला बुख़्ती ऊँटों की गर्दनों जैसे परिन्दे भेजेगा जो उन्हें उठाकर ख़ुदा जाने कहाँ फेंक आयेंगे।

हज़रत कअ़ब रह. कहते हैं कि सूरज के निकलने की जगह में (यानी इनसानी दुनिया से बहुत दूर) उन्हें फेंक आयेंगे। फिर चालीस दिन तक तमाम ज़मीन पर लगातार बारिश बरसेगी, ज़मीन धुल धुलाकर हथेली की तरह साफ़ हो जायेगी। फिर अल्लाह के हुक्म से अपनी बरकतें उगा देगी। उस दिन एक जमाअ़त की जमाअ़त एक अनार से सैर हो जायेगी और उसके छिलके के नीचे साया हासिल कर लेगी। एक ऊँटनी का दूध लोगों की एक जमाअ़त और एक गाय का दूध एक क़बीले को और एक बकरी का दूध एक घराने को काफ़ी होगा। फिर एक पाकीज़ा हवा चलेगी जो मुसलमानों की बग़लों के नीचे से निकल जायेगी और उनकी रूह क़ब्ज़ हो जायेगी। फिर इस ज़मीन पर बुरे और शरीर लोग बाक़ी रह जायेंगे जो गधों की तरह कूदते होंगे। उन्हीं पर क़ियामत क़ायम होगी। इमाम तिर्मिज़ी इस हदीस को हसन कहते हैं।

3. मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. को एक बिच्छू ने काट खाया था तो आप अपनी उंगली पर पट्टी बाँधे हुए ख़ुतबे के लिये खड़े हुए और फ़रमाया तुम कहते हो कि अब दुश्मन नहीं हैं, लेकिन तुम तो दुश्मनों से जिहाद करते ही रहोगे यहाँ तक कि याजूज माजूज आयेंगे। वे चौड़े चेहरे वाले छोटी आँखों वाले हैं, उनके चेहरे तह-ब-तह ढालों जैसे होंगे।

4. यह रिवायत सूरः आराफ़ की तफ़सीर के आख़िर में बयान कर दी गयी है। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेराज वाली रात में इब्राहीम, मूसा और ईसा अ़लैहिमुस्सलाम से क़ियामत के दिन का मुज़ाकरा शुरू हुआ। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उसके इल्म से इनकार कर दिया। इसी तरह

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने भी। हाँ हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि उसके आने के वक़्त को तो सिवाय ख़ुदा के कोई नहीं जानता, हाँ मुझसे मेरे ख़ुदा ने यह तो फ़रमाया है कि दज्जाल निकलने वाला है, मेरे साथ दो टहनियाँ होंगी, वह मुझे देखते ही सीसे की तरह पिघलने लगेगा यहाँ तक कि अल्लाह उसे हलाक कर दे, जबकि वह मुझे देखे, यहाँ तक कि पत्थर और पेड़ भी पुकार उठेंगे कि ऐ मुस्लिम! यह है मेरे साये तले काफ़िर, आ और इसे क़त्ल कर। पस ख़ुदा उन्हें हलाक कर देगा और लोग अपने शहरों और वतनों की तरफ़ लौट जायेंगे। उस वक़्त याजूज माजूज निकलेंगे जो हर ऊँचाई से कूदते हुए आयेंगे, जो पायेंगे उसे तबाह कर देंगे, पानी जितना पायेंगे पी जायेंगे। लोग फिर तंग आकर अपने वतनों में घिरे हुए और नज़र-बन्द होकर बैठ जायेंगे। शिकायत करेंगे तो मैं फिर अल्लाह से दुआ़ करूँगा। अल्लाह उन्हें ग़ारत (तबाह और हलाक) कर देगा। सारी ज़मीन पर उनकी बदबू फैल जायेगी, फिर बारिश बरसेगी और पानी का नाला उनके सड़े हुए जिस्मों को घसीटकर दरिया में डाल देगा। यहाँ मेरे रब ने मुझसे फ़रमा दिया है कि जब यह सब कुछ ज़हूर में आ जायेगा फिर क़ियामत का होना ऐसा ही है जैसे पूरे दिनों की हामिला (गर्भवती) औ़रत, कि उसके घर वालों को फ़िक्र होती है कि न जाने बच्चा कब हो जाये, सुबह को, शाम को, दिन में या रात को। (इब्ने माजा)

इसकी तस्दीक़ (पुष्टि) अल्लाह के कलाम की इस आयत में मौजूद है। इस बारे में हदीसें बड़ी संख्या में और बुज़ुर्गों के अक़्वाल व रिवायात भी बहुत हैं। कअ़ब रज़ि. का क़ौल है कि याजूज माजूज के निकलने के वक़्त वे दीवार को खोदेंगे यहाँ तक कि उनकी कुदालों की आवाज़ पास वाले भी सुनेंगे। रात हो जायेगी उनमें से एक कहेगा कि अब सुबह आते ही इसे तोड़ डालेंगे और निकल खड़े होंगे। ये सुबह आयेंगे तो जैसे कल थी वैसी ही आज पायेंगे, ग़र्ज़ कि यूँ ही होता रहेगा, यहाँ तक कि ख़ुदा को उनका निकालना जब मन्ज़ूर होगा तो एक शख़्स की ज़बान से निकलेगा कि हम कल इन्शा-अल्लाह इसे तोड़ देंगे। अब जो आयेंगे तो जैसी छोड़ गये थे वैसी पायेंगे तो खोदकर तोड़ देंगे और बाहर निकल आयेंगे। उनका पहला गिरोह बहीरा दरिया के पास से निकलेगा और सारा पानी पी जायेगा। दूसरा आयेगा तो कीचड़ भी चाट जायेगा, तीसरा आयेगा तो कहेगा शायद यहाँ किसी वक़्त पानी होगा? लोग उनसे भाग-भागकर इधर-उधर छुप जायेंगे। जब उन्हें कोई भी नज़र न पड़ेगा तो वे अपने तीर आसमान की तरफ़ फेंकेंगे, वहाँ से वे तीर ख़ून से भरे हुए उनकी तरफ़ वापस आयेंगे तो ये फ़ख़्र करेंगे कि हम ज़मीन वालों और आसमान वालों पर ग़ालिब आ गये।

हज़रत ईसा बिन मरियम उन पर बददुआ़ करेंगे कि ख़ुदाया! हममें उनके मुक़ाबले की ताक़त नहीं और ज़मीन पर हमारा चलना फिरना भी ज़रूरी है, तू हमें जिस तरीक़े से चाहे इनसे निजात दे, तो अल्लाह उनको ताऊन में मुब्तला करेगा, गुठलियाँ निकल आयेंगी और सारे के सारे मर जायेंगे। फिर एक क़िस्म के परिन्दे आयेंगे जो अपनी चोंचों में उन्हें लेकर समुद्र में फेंक आयेंगे। फिर अल्लाह तआ़ला नहरे हयात जारी कर देगा जो ज़मीन को धोकर पाक-साफ़ कर देगी और ज़मीन पर अपनी बरकतें निकाल देगी। एक अनार एक घराने को काफ़ी होगा। अचानक एक शख़्स आयेगा और आवाज़ करेगा कि ज़ुस्सवीक़तैन निकल आया है। (यह एक हब्शी आदमी होगा जो काबा शरीफ़ को तबाह करेगा) हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम सात-आठ सौ लश्करियों की एक जमाअ़त भेजेंगे, ये अभी रास्ते में ही होंगे कि यमन की पाक हवा निहायत लताफ़त से चलेगी जो तमाम मोमिनों की रूह क़ब्ज़ कर लेगी। फिर तो रू-ए-ज़मीन पर रद्दी-खद्दी (यानी

Maktab-E-Ashraf

बेकार और बिना ईमान वाले) लोग रह जायेंगे जो चौपायों जैसे होंगे। उन पर क़ियामत क़ायम होगी। उस वक़्त क़ियामत इस क़द्र क़रीब होगी जैसे पूरे दिनों की घोड़ी बच्चे को जन्म देने के क़रीब हो और घोड़ी वाला उसके आस-पास घूम रहा हो कि कब बच्चा हो।

हज़रत कअ़ब रह. यह बयान फ़रमाकर फ़रमाने लगे अब जो शख़्स मेरे इस क़ौल और इस इल्म के बाद भी कुछ कहे उसने तकल्लुफ़ किया। कअ़ब रह. का यह वाक़िआ़ बयान करना बेहतरीन वाक़िआ़ है क्योंकि इसकी शहादत सही हदीसों में भी पायी जाती है। हदीसों में यह भी आया है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उस ज़माने में बैतुल्लाह शरीफ़ का हज भी करेंगे। चुनाँचे मुस्नद इमाम अहमद में यह हदीस मरफ़ूअ़न मौजूद है कि आप याजूज माजूज के निकलने के बाद यक़ीनन बैतुल्लाह का हज करेंगे। यह हदीस बुख़ारी में भी है। जब ये हौलनाकियाँ, जब ये ज़लज़ले, जब ये बलायें और आफ़तें आ जायेंगी तो उस वक़्त क़ियामत बिल्कुल क़रीब आ जायेगी। उसे देखकर काफ़िर कहने लगेंगे कि यह बहुत ही सख़्त दिन है। उनकी आँखें फट जायेंगी और कहने लगेंगे हाय हम तो ग़फ़लत में ही रहे, हाय हमने अपने आपको तबाह किया, गुनाहों का इक़रार और उस पर शर्मसार होंगे, लेकिन अब यह सब बेसूद (बेफ़ायदा) है।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝	बेशक (ऐ मुश्रिको!) तुम और जिनको तुम ख़ुदा तआ़ला को छोड़कर पूज रहे हो सब जहन्नम में झोंके जाओगे, (और) तुम सब उसमें दाख़िल होगे। (98) (और यह बात समझने की है कि) अगर ये (तुम्हारे माबूद वाक़ई) माबूद होते तो उस (जहन्नम) में क्यों जाते। और सब (इबादत करने वाले और जिनकी इबादत की जा रही है) उसमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे। (99) (और) उनका उसमें शोर होगा, और वहाँ (अपने शोरो-गुल में किसी की) कोई बात सुनेंगे भी नहीं। (100) (यह तो दोज़ख़ियों का हाल हुआ, और) जिनके लिए हमारी तरफ़ से भलाई मुक़द्दर हो चुकी है वे उस (दोज़ख़) से (इस क़द्र) दूर किए जाएँगे (101) (कि) उसकी आहट भी न सुनेंगे, और वे लोग अपनी दिल चाही चीज़ों में हमेशा रहेंगे। (102) (और) उनको बड़ी घबराहट (यानी दूसरी बार सूर फूँकने से ज़िन्दा होने की हालत) ग़म में न डालेगी, और (क़ब्र से निकलते ही) फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे (और कहेंगे कि) यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वायदा किया जाता था। (103)

Maktab E Ashraf

बुत-परस्तों को तंबीह

बुत-परस्तों (बुतों को पूजने वालों अर्थात अल्लाह के अलावा किसी की भी इबादत करने वालों) से खुदा तआला फ़रमाता है कि तुम और तुम्हारे बुत जहन्नम की आग की लकड़ियाँ बनोगे। जैसे फ़रमान है:

وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ.

उसका ईंधन इनसान हैं और पत्थर।

फ़रमाया जायेगा कि तुम सब आबिद व माबूद (यानी इबादत करने वाले और जिनकी इबादत की गयी) जहन्नमी हो, और वह भी हमेशा के लिये। अगर ये सच्चे माबूद होते तो क्यों आग में जलते? यहाँ तो पूजने वाले और जिसकी पूजा की गयी सब हमेशा के लिये दोज़ख़ी हो गये। वे उल्टी-सीधी साँसों से चीख़ेंगे, जैसे क़ुरआन का फ़रमान है:

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ.

वे सीधी-उल्टी साँसों से चीख़ेंगे और चीख़ों के सिवा उनके कान में और कोई आवाज़ न पड़ेगी।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से नक़ल किया गया है कि जब सिर्फ़ मुश्रिक जहन्नम में रह जायेंगे तो उन्हें आग के सन्दूक़ों में क़ैद कर दिया जायेगा, जिनमें आग के सिरे होंगे। उनमें से हर एक को यही गुमान होगा कि जहन्नम में उसके सिवा कोई नहीं। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। (इब्ने जरीर)

"हुस्ना" से मुराद रहमत व सआदत है। जहन्नमियों और उनके अ़ज़ाब का ज़िक्र करके अब नेक लोगों और उनकी जज़ाओं का ज़िक्र हो रहा है। ये लोग ईमान वाले थे, इनके नेक आमाल की वजह से सआदत (नेकबख़्ती) इनके स्वागत को तैयार थी जैसा कि फ़रमान है:

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ.

नेकों के लिये अज्र है और ज़्यादती भी। एक और जगह फ़रमान है:

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ.

नेकी का बदला नेकी ही है।

इनके दुनिया के आमाल नेक थे तो आख़िरत में सवाब और नेक बदला मिला, अ़ज़ाब से बचे और रब की रहमत से नवाज़े गये। ये जहन्नम से दूर कर दिये गये, कि उसकी आहट तक नहीं सुनते, न ये जहन्नमियों का जलना सुनते हैं। पुलसिरात पर दोज़ख़ियों को ज़हरीले नाग डसते हैं और ये वहाँ हिस्स-हिस्स करते हैं। जन्नती लोगों के कान भी इस दर्दनाक आवाज़ से नाआशना रहेंगे। इतना ही नहीं कि ख़ौफ़ डर से ये अलग हो गये बल्कि साथ ही राहत व आराम भी हासिल कर लिया। पसन्दीदा चीज़ें मौजूद, हमेशगी की राहत हाज़िर।

हज़रत अ़ली रज़ि. ने एक रात इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया मैं और उमर और उस्मान और ज़ुबैर और तल्हा और अ़ब्दुर्रहमान (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) उन्हीं लोगों में हैं, या हज़रत सअ़द का नाम लिया। इतने में नमाज़ की तकबीर हुई तो आप चादर घसीटते और यह आयत पढ़ते हुए उठ खड़े हुए:

وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا.

यानी वे दोज़ख़ से इतनी दूर किये जायेंगे कि उसकी आहट भी न सुनेंगे।

एक और रिवायत में है कि आपने फ़रमाया- हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु और उनके साथी ऐसे ही हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि ये लोग अल्लाह के वलियों में से हैं, बिजली से भी ज़्यादा तेज़ी के साथ पुलसिरात से पार हो जायेंगे और काफ़िर वहीं घुटनों के बल गिर पड़ेंगे। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद वे बुज़ुर्गाने दीन (अल्लाह वाले नेक लोग) हैं जो अल्लाह वाले थे, शिर्क से बेज़ार थे लेकिन उनके बाद लोगों ने उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उनकी पूजा-पाठ शुरू कर दी थी जैसे, हज़रत उज़ैर, हज़रत मसीह, फ़रिश्ते, सूरज, चाँद, हज़रत मरियम वग़ैरह। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़बअ़री हुज़ूरे पाक सल्ल. के पास आया और कहने लगा तेरा ख़्याल है कि अल्लाह ने यह आयत उतारी है?

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ.

(यानी बेशक ऐ मुश्रिको! तुम और जिनकी तुम अल्लाह के अ़लावा पूजा करते हो वे सब जहन्नम में झोंके जाओगे) अगर यह सच है तो क्या सूरज, चाँद, फ़रिश्ते, उज़ैर, ईसा सबके सब हमारे बुतों के साथ जहन्नम में जायेंगे? इसके जवाब में यह आयत नाज़िल हुईः

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ.........

और ईसा बिन मरियम के बारे में एक अ़जीब व ग़रीब मज़मून बयान किया गया तो यकायक आपकी क़ौम के लोग उससे (मारे ख़ुशी के) चिल्लाने लगे।

एक और आयत में हैः

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰى.

कि जिनके लिये हमारी तरफ़ से भलाई मुक़द्दर हो चुकी है वे उससे (यानी दोज़ख़ से) इस क़द्र दूर किये जायेंगे कि उसकी आहट भी न सुनेंगे।

सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि हुज़ूर सल्ल. एक दिन वलीद बिन मुग़ीरा के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि नज़र बिन हारिस आया। उस वक़्त वहाँ मस्जिद में बहुत सारे क़ुरैशी लोग भी थे। नज़र बिन हारिस रसूलुल्लाह सल्ल. से बातें कर रहा था लेकिन वह लाजवाब हो गया तो आपने यही आयतः

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ.........لَا يَسْمَعُوْنَ.

तिलावत फ़रमाई (यानी यही आयतें जिनकी तफ़सीर बयान हो रही है)।

जब आप उस मज्लिस से चले गये तो अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़बअ़री आया, लोगों ने उससे कहा आज नज़र बिन हारिस ने बातें कीं लेकिन बुरी तरह चित हुआ और हुज़ूर यह फ़रमाते हुए चले गये। उसने कहा अगर मैं होता तो उन्हें जवाब देता कि हम फ़रिश्तों को पूजते हैं, यहूद हज़रत उज़ैर को ईसाई हज़रत मसीह को तो क्या ये सब भी जहन्नम में जलेंगे? सबको यह जवाब पसन्द आया। जब हुज़ूर सल्ल. से इसका ज़िक्र आया तो अपने फ़रमाया- जिसने अपनी इबादत कराई वह आ़बिदों के साथ जहन्नम में है। ये बुज़ुर्ग अपनी इबादतें नहीं कराते थे बल्कि ये लोग तो उन्हें नहीं बल्कि शैतान को पूज रहे हैं, उसी ने इनको इबादत का यह रास्ता बतलाया है। आपके जवाब के साथ ही क़ुरआनी जवाब इसके बाद की आयतः

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰى.

Maktab E Ashraf

कि जिनके लिये हमारी तरफ़ से भलाई मुक़द्दर हो चुकी है वे उससे (यानी दोज़ख़ से) इस क़द्र दूर किये जायेंगे कि उसकी आहट भी न सुनेंगे, उतरा। तो जिन नेक लोगों की जाहिलों ने पूजा की थी वे इस हुक्म से अलग हो गये। चुनाँचे क़ुरआन में है:

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّىْٓ اِلٰـهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ........ الخ.

यानी उनमें से जो अपनी माबूदियत औरों से मनवानी चाहे उसका बदला जहन्नम है, हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं। एक और आयत उतरी:

وَلَمَّاضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا.......... الخ.

कि इस बात के सुनते ही वे लोग हैरान हो गये और कहने लगे कि हमारे माबूद अच्छे या वे? यह तो सिर्फ़ दंगा-मस्ती है और ये लोग झगड़ालू ही हैं। वह हमारा इनाम पाया हुआ बन्दा था, उसे हमने बनी इस्राईल के लिये नमूना बनाया था, अगर हम चाहें तो तुम्हारे जानशीन (ख़लीफ़ा और जगह लेने वाले) फ़रिश्तों को कर दें।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम क़ियामत की निशानी हैं, उनके हाथ पर जो मोजिज़े सादिर हुए वे ग़लत चीज़ें नहीं, वे क़ियामत की दलीलें हैं। तुझे इसमें कुछ शक न करना चाहिये, मेरी मानता चला जा यही सीधा और सही रास्ता है।

इब्ने ज़बअ़री की जुर्रत को देखिये। यह ख़िताब मक्का वालों से है और उनकी उन तस्वीरों और पत्थरों (यानी बुतों) के लिये कहा गया है जिन्हें वे अल्लाह के अ़लावा पूजा करते थे, न कि हज़रत ईसा वग़ैरह पाक नफ़्स ईमान वालों के लिये, जो ग़ैरे-ख़ुदा की इबादत से रोकते थे।

यह इब्ने ज़बअ़री उसके बाद मुसलमान हो गये थे। यह बड़े मशहूर शायर थे, पहले इन्होंने मुसलमानों की दिल खोलकर फबती उड़ाई थी लेकिन मुसलमान होने के बाद बड़ी माज़िरत की (यानी अपनी ग़लती पर पछताये)।

मौत की घबराहट, सूर फूँके जाने की घबराहट, लोगों के जहन्नम में दाख़िले के वक़्त की घबराहट, उस घड़ी की घबराहट जबकि जहन्नम पर ढक्कन ढक दिया जायेगा, जबकि मौत को दोज़ख़ और जन्नत के बीच ज़िबह किया जायेगा, ग़र्ज़ कि किसी अन्देशे का दर्द उन पर न होगा, वे हर ग़म और हर घबराहट से दूर होंगे, पूरे ख़ुश होंगे और रंज व ग़म से कोसों दूर होंगे। फ़रिश्तों के परे के परे उनसे मुलाक़ातें कर रहे होंगे और उन्हें तसल्ली देते हुए कहते होंगे कि इसी दिन का वायदा तुमसे किया गया था। उस वक़्त तुम क़ब्रों से उठने के दिन के मुन्तज़िर रहो।

(वह दिन भी याद करने के क़ाबिल है) जिस दिन हम (पहली बार सूर फूँकने के वक़्त) आसमानों को इस तरह लपेट देंगे जिस तरह लिखे हुए मज़मून का काग़ज़ लपेट लिया जाता है, (और) हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त (हर चीज़ की) शुरूआत की थी उसी तरह (आसानी से) उसको दोबारा (पैदा) कर देंगे, यह हमारे ज़िम्मे वायदा है (और) हम ज़रूर (इसको पूरा) करेंगे। (104)	يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۭ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ۭ وَعْدًا عَلَيْنَا ۭ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ○

Maktab E Ashraf

क़ियामत के दिन की एक झलक

यह क़ियामत के दिन होगा जबकि हम आसमान को लपेट लेंगे, जैसे कि फ़रमायाः

وَمَاقَدَرُوااللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ........ الخ.

उन लोगों ने ख़ुदा तआ़ला की ऐसी क़द्र नहीं की जैसी की जानी थी। तमाम ज़मीन क़ियामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और तमाम आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे, वह पाक और बरतर है हर उस चीज़ से जिसे लोग उसका शरीक ठहरा रहे हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में है, हुज़ूर पाक सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन ज़मीनों को मुट्ठी में ले लेगा और आसमान उसके दाहिने हाथ में होंगे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि सातों आसमानों और वहाँ की तमाम मख़्लूक़ को, सातों ज़मीनों और उसकी तमाम कायनात को अल्लाह तआ़ला अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा, वो उसके हाथ में ऐसे होंगे जैसे राई का दाना।

"सिजिल" से मुराद किताब है, और कहा गया है कि मुराद यहाँ एक फ़रिश्ता है। जब किसी का इस्तिग़फ़ार चढ़ता है तो वह कहता है कि इसे नूर से लिख लो। यह फ़रिश्ता नामा-ए-आमाल पर मुक़र्रर है, जब इनसान मर जाता है तो उसकी किताब को और दूसरी किताबों के साथ लपेटकर उसे क़ियामत के लिये रख दिया जाता है।

कहा गया है कि यह नाम है उस सहाबी का जो हुज़ूर सल्ल. की 'वही' लिखने वाले थे लेकिन यह रिवायत साबित नहीं, हदीस के अक्सर उलेमा ने इन सबको मौज़ूअ़ (बेबुनियाद और मनगढ़त) कहा है, ख़ुसूसन हमारे उस्ताज़ हाफ़िज़ अबुल-हुज्जाज मुज़्ज़ी रह. ने। मैंने इस हदीस को एक अलग किताब में लिखा है। इमाम अबू जाफ़र इब्ने जरीर रह. ने भी इस हदीस पर बहुत ही इनकार किया है और इसकी ख़ूब तरदीद की (यानी नकारा) और फ़रमाया है कि 'सिजिल' नाम का कोई सहाबी है ही नहीं। हुज़ूर सल्ल. के तमाम मुन्शियों के नाम मशहूर व परिचित हैं, किसी का नाम सिजिल नहीं।

वास्तव में इमाम साहिब ने सही और दुरुस्त फ़रमाया, यह बड़ी वजह है इस हदीस के मुन्कर होने की। बल्कि यह भी याद रहे कि जिसने इस सहाबी का ज़िक्र किया है उसने इसी हदीस पर एतिमाद (भरोसा) करके ज़िक्र किया है, जब यह साबित ही नहीं तो फिर वह ज़िक्र करना पूरी तरह ग़लत ठहरा, सही यही है कि सिजिल से मुराद सहीफ़ा (किताब और रजिस्टर) है, जैसा कि अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है, और लुग़त के हिसाब से भी यही बात साबित है। पस फ़रमान है कि जिस दिन हम आसमान को लपेट लेंगे जैसे कि ख़त लिखने के बाद उसे लपेट लिया जाता है। यह यक़ीनन होकर रहेगा।

उस दिन अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ को नये सिरे से पहले की तरह पैदा करेगा, जो इब्तिदा (शुरूआ़त में पैदा करने) पर क़ादिर था वह दोबारा लौटाने पर भी इससे ज़्यादा क़ादिर है। यह अल्लाह का वायदा है, उसके वायदे अटल होते हैं, वे न कभी बदलते हैं और न कभी उनमें ख़िलाफ़ होता है। वह तमाम चीज़ों पर क़ादिर है, वह इसे पूरा और साबित करके ही रहेगा। हुज़ूर सल्ल. ने खड़े होकर अपने एक वअ़ज़ (बयान) में फ़रमाया तो तुम लोग ख़ुदा के सामने जमा होने वाले हो, नंगे पैर, नंगे बदन, बिना ख़तना हुए। जैसे हमने पहली बार पैदा किया उसी तरह दोबारा लौटायेंगे, यह हमारा वायदा है जिसे हम पूरा करके रहेंगे..। (बुख़ारी)

सब चीज़ें नेस्त-नाबूद हो जायेंगी, फिर बनाई जायेंगी।

और हम ज़बूर (और सब आसमानी किताबों) में ज़िक्र (यानी लौहे-महफ़ूज़ में लिखने) के बाद लिख चुके हैं कि इस ज़मीन (यानी जन्नत) के मालिक मेरे नेक बन्दे होंगे। (105) बिला शुब्हा इस (क़ुरआन) में (हिदायत का) काफ़ी मज़मून है, उन लोगों के लिए जो बन्दगी करने वाले हैं। (106) और हमने (ऐसे नफ़ा देने वाले मज़ामीन देकर) आपको और किसी बात के वास्ते नहीं भेजा मगर दुनिया जहान के लोगों (यानी शरीअ़त के अहकाम के जो पाबन्द हैं, उन) पर मेहरबानी करने के लिए। (107)	وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ۝ اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

ज़बूर में एक अटल हक़ीक़त का इज़हार

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को जिस तरह आख़िरत देता है उसी तरह दुनिया में भी उन्हें मुल्क व माल देता है, यह ख़ुदा का निश्चित वायदा और सच्चा फ़ैसला है। जैसे फ़रमायाः

اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ.......... الخ.

ज़मीन अल्लाह की है, जिसे चाहता है इसका वारिस बनाता है। अन्जाम के एतिबार से परहेज़गार ही अच्छे हैं। एक जगह और फ़रमाता है कि हम अपने रसूलों और ईमान वालों की दुनिया और आख़िरत में मदद फ़रमाते हैं। एक और फ़रमान है कि तुममें के ईमान वालों और नेक लोगों से ख़ुदा का वायदा है कि वह उन्हें ज़मीन में ग़ालिब बनायेगा, जैसे कि इनसे पहलों को बनाया और इनके लिये इनके दीन को क़वी कर देगा, जिससे वह ख़ुश है। और फ़रमाया कि यह क़ानूने शरीअ़त और तक़दीरी बात किताबों में लिखी हुई है, यक़ीनन होकर ही रहेगा। ज़बूर से मुराद बक़ौल सईद बिन जुबैर रह. तौरात व इन्जील और क़ुरआन है। मुजाहिद कहते हैं कि ज़बूर से मुराद किताब है। बाज़ लोग कहते हैं कि ज़बूर उस किताब का नाम है जो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर उतरी थी। ज़िक्र से मुराद यहाँ पर तौरात है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि ज़िक्र से मुराद क़ुरआन है। सईद फ़रमाते हैं कि ज़िक्र वह है जो आसमानों में है, यानी अल्लाह के पास की उम्मुल-किताब जो सबसे पहली किताब है यानी लौहे महफ़ूज़। यह भी नक़ल किया गया है कि ज़बूर वे आसमानी किताबें हैं जो पैग़म्बरों पर नाज़िल हुयीं और ज़िक्र से मुराद पहली किताब यानी लौहे महफ़ूज़ है। फ़रमाते हैं कि तौरात, ज़बूर और अल्लाह के इल्म में पहले ही यह फ़ैसला हो गया था कि उम्मते मुहम्मदिया ज़मीन की बादशाह बनेगी और नेक होकर जन्नत में जायेगी। यह भी कहा गया है कि ज़मीन से मुराद जन्नत की ज़मीन है। हज़रत अबूदर्दा फ़रमाते हैं कि नेक सालेह लोग हम ही हैं, मुराद इससे ईमान वाले लोग हैं।

इस क़ुरआन में जो आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर उतारा गया है, पूरी नसीहत व किफ़ायत है उनके लिये जो हमारे इबादत-गुज़ार बन्दे हैं। जो हमारी मानते हैं, अपनी इच्छाओं को हमारे नाम पर क़ुरबान करते हैं। फिर फ़रमाता है कि हमने अपने पास से इस नबी को रहमतुल-लिल्आ़लमीन (तमाम जहान वालों

के लिये रहमत) बनाकर भेजा है, पस इस नेमत की शुक्रगुज़ारी करने वाला दुनिया व आख़िरत में ख़ुश और मसरूर है, और नाक़द्री करने वाला दोनों जहान में बरबाद व नाकाम है। जैसे इरशाद है कि क्या तुमने उन्हें नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत की नाशुक्री की और अपनी क़ौम को तबाह व बरबाद कर दिया। इस क़ुरआन के बारे में फ़रमाया कि यह ईमान वालों के लिये हिदायत व शिफ़ा है, हाँ बेईमान बहरे अन्धे हैं।

सही मुस्लिम में है कि एक मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्ल. के सहाबा ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर! इन काफ़िरों के लिये बद्दुआ कीजिए। आपने फ़रमाया- मैं लानत करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया, बल्कि रहमत बनाकर भेजा गया हूँ। एक और हदीस में है, आप फ़रमाते हैं कि मैं सिर्फ़ रहमत व हिदायत हूँ। एक और रिवायत में इसके साथ यह भी है कि मुझे एक क़ौम की तरक़्क़ी और दूसरी के पतन और ज़वाल के साथ भेजा गया है। तबरानी में है कि अबू जहल ने कहा ऐ क़ुरैशियो! मुहम्मद यसरिब (मदीना) में चला गया है, अपने इलाक़े के लश्कर इधर-उधर तुम्हारी जुस्तजू में भेज रहा है। देखो होशियार रहना वह भूखे शेर की तरह ताक में है। वह ख़ार खाये हुए है, क्योंकि तुमने उसे निकाल दिया है। अल्लाह की क़सम उसके जादूगर बेमिसाल हैं, मैं तो उसे या उसके साथियों में से जिस किसी को देखता हूँ मुझे उनके साथ शैतान नज़र आते हैं। तुम जानते हो कि 'औस' व 'ख़ज़्रज' (ये मदीने के दो मशहूर क़बीलों के नाम हैं) हमारे दुश्मन हैं, उस दुश्मन को उन दुश्मनों ने पनाह दी है।

इस पर मुतअिम बिन अदी कहने लगे ऐ अबुल-हिकम (यानी अबू जहल) सुनो! तुम्हारे उस भाई से जिसे तुमने इस मुल्क (यानी मक्का) से जिला वतन कर दिया है, मैंने तो किसी को ज़्यादा सच्चा और ज़्यादा वायदे को पूरा करने वाला नहीं पाया। अब जबकि ऐसे भले आदमी के साथ तुम यह बुरा सुलूक कर चुके हो अब तो उसे छोड़ो, यह नहीं होना चाहिये कि बिल्कुल अलग-थलग रहो। इस पर अबू सुफ़ियान बिन हारिस कहने लगा नहीं! तुम्हें उस पर पूरी सख़्ती करनी चाहिये, याद रखो कि अगर उसके हिमायती तुम पर ग़ालिब आ गये तो तुम कहीं के न रहोगे, न वे रिश्ते दिखेंगे न कुनबा। मेरी राय में तो तुम्हें मदीना वालों को तंग कर देना चाहिये कि या तो वे मुहम्मद को निकाल दें और वह बिल्कुल अकेला पड़ जाये या उन मदीना वालों का सफ़ाया कर देना चाहिये। अगर तुम तैयार हो जाओ तो मैं मदीना के कोने-कोने पर लश्कर बैठा दूँगा और उन्हें परेशान कर दूँगा।

जब हुज़ूर सल्ल. को ये बातें पहुँचीं तो आपने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं ही उन्हें क़त्ल व ग़ारत करूँगा और क़ैद करके फिर एहसान करके छोड़ दूँगा। मैं रहमत हूँ मेरा भेजने वाला ख़ुदा है, वह मुझे इस दुनिया से उस वक़्त तक नहीं उठायेगा जब तक अपने दीन को दुनिया पर ग़ालिब न कर दे। मेरे पाँच नाम हैं- मुहम्मद, अहमद, माही (मिटाने वाला, मेरी वजह से अल्लाह कुफ़्र को मिटा देगा), हाशिर (हश्र कि दिन लोग मेरे क़दमों पर जमा किये जायेंगे), और आक़िब।

मुस्नद में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा मदायन में थे, ज़्यादातर रसूले करीम सल्ल. की हदीसों का मुज़ाकरा जारी रहता था, एक दिन हज़रत हुज़ैफ़ा हज़रत सलमान के पास आये तो हज़रत सलमान ने फ़रमाया ऐ हुज़ैफ़ा! एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने ख़ुतबे में फ़रमाया कि जिसे मैंने ग़ुस्से में बुरा-भला कह दिया हो, उस पर लानत कर दी हो तो समझ लो कि मैं भी तुम जैसा एक इनसान ही हूँ तुम्हारी तरह मुझे भी ग़ुस्सा आता है। हाँ चूँकि मैं तमाम जहान वालों के लिये रहमत हूँ तो मेरी दुआ है कि ख़ुदा मेरे उन अलफ़ाज़ को भी उन लोगों के लिये रहमत का सबब बना दे। रही यह बात कि काफ़िरों के लिये आप रहमत कैसे थे? इसका जवाब यह है कि इब्ने जरीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इसी आयत

Maktab E Ashraf

की तफ़सीर में नक़ल किया गया है कि मोमिनों के लिये तो आप दुनिया और आख़िरत में रहमत थे और ग़ैर-मोमिनों के लिये आप दुनिया में रहमत थे कि वे ज़मीन में धंसाये जाने से, आसमान से पत्थर बरसाये जाने से बच गये, जैसे इससे पहली उम्मतों के मुन्किरों (इनकार करने वालों) पर ये अ़ज़ाब आये थे।

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ اَنَّمَاۤ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ○ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ۗ وَاِنْ اَدْرِيْۤ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ○ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ○ وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ○ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ○ع	आप (ख़ुलासे के तौर पर एक बार फिर) फ़रमा दीजिए कि मेरे पास तो सिर्फ़ यह 'वही' आती है कि तुम्हारा (हक़ीक़ी) माबूद एक ही माबूद है, सो अब भी तुम मानते हो (या नहीं? यानी अब तो मान लो) (108) फिर (भी) अगर ये लोग नाफ़रमानी करें तो (हुज्जत पूरी करने के तौर पर) आप फ़रमा दीजिए कि मैं तुमको बहुत ही साफ़ इत्तिला कर चुका हूँ, और मैं यह नहीं जानता कि जिस सज़ा का तुमसे वायदा हुआ है, क्या वह क़रीब है या (बहुत ज़्यादा) दूर (है, अलबत्ता वह आएगा ज़रूर, क्योंकि) (109) अल्लाह को तुम्हारी पुकार कर कही हुई बात की ख़बर है, और जो (बात) तुम दिल में रखते हो उसकी भी ख़बर है। (110) और मैं (मुतैयन तौर पर) नहीं जानता (कि क्या मस्लेहत है) शायद वह (अ़ज़ाब में देरी) तुम्हारे लिए (सूरत के एतिबार से) एक इम्तिहान हो, और एक वक़्त (यानी मौत) तक (ज़िन्दगी से) फ़ायदा पहुँचाना हो। (111) (पैग़म्बर ने अल्लाह के हुक्म से) कहा कि ऐ मेरे रब! फ़ैसला कर दीजिए, हक़ के मुवाफ़िक़, और (पैग़म्बर सल्ल. ने काफ़िरों से यह भी फ़रमाया कि) हमारा रब हम पर बड़ा मेहरबान है, जिससे उन बातों के मुक़ाबले में मदद चाही जाती है जो तुम बनाया करते हो। (112)

النصف ع ١٩

वह ख़ुदा एक है

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबी को हुक्म देता है कि आप मुश्रिकों से फ़रमा दें कि मेरी जानिब यही 'वही' की जाती है कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही माबूदे बरहक़ है, तुम सब भी उसे तस्लीम कर लो। और अगर तुम मेरी बात का यक़ीन नहीं करते तो हम तुम अलग-अलग हैं। तुम हमारे दुश्मन हो, हम तुम्हारे। जैसे एक और आयत में है कि अगर ये झुठलायें तो कह दीजिए कि मेरे लिये मेरा अ़मल है और तुम्हारे लिये तुम्हारा अ़मल। तुम मेरे आमाल से बरी हो और मैं तुम्हारे करतूत से बेज़ार हूँ।

Maktab E Ashraf

एक और आयत में है:

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ

यानी अगर तुझे किसी क़ौम से ख़ियानत व अ़हद के ख़िलाफ़ करने की आशंका हो तो अ़हद तोड़ देने की उन्हें फ़ौरन ख़बर दे दो। इसी तरह यहाँ भी है कि अगर तुम अ़लैहदगी इख़्तियार करो तो हमारे तुम्हारे ताल्लुक़ात ख़त्म हैं। यक़ीन मानो कि जो वायदा तुमसे किया जाता है वह पूरा तो ज़रूर होने वाला है, अब चाहे अभी हो चाहे देर से हो, इसका ख़ुद मुझे इल्म नहीं। ज़ाहिर व बातिन का आ़लिम अल्लाह ही है, जो तुम ज़ाहिर करो और जो छुपाओ उसे सब का इल्म है। बन्दों के तमाम आमाल ज़ाहिरी और पोशीदा उस पर ज़ाहिर व स्पष्ट हैं, छोटा-बड़ा खुला-छुपा वह सब जानता है। मुम्किन है उसकी ताख़ीर (यानी क़ियामत के देर से आने) में भी तुम्हारी आज़माईश हो और तुम्हें तुम्हारी ज़िन्दगानी तक नफ़ा देना हो।

अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को दुआ़ तालीम हुई थी कि ऐ अल्लाह! हममें और हमारी क़ौम में तू सच्चा फ़ैसला कर, और तू ही बेहतर फ़ैसला करने वाला है। हुज़ूर सल्ल. को भी इसी क़िस्म की दुआ़ का हुक्म हुआ। जब हुज़ूर सल्ल. किसी भी ग़ज़वे (जंग और लड़ाई) में जाते तो दुआ़ करते कि ऐ मेरे रब! तू सच्चा फ़ैसला फ़रमा। हम अपने मेहरबान रब से ही मदद तलब करते हैं कि वह तुम्हारे झूठ, इल्ज़ाम और बोहतान को हमसे टाले, इसमें हमारा मददगार वही है।

ख़ुदा तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः अम्बिया की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः हज

सूरः हज मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 78 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ○ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ○	ऐ लोगो! अपने रब से डरो, (क्योंकि) यक़ीनन क़ियामत (के दिन) का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ होगी। (1) जिस दिन तुम लोग उस (ज़लज़ले) को देखोगे (उस दिन) तमाम दूध पिलाने वालियाँ (डर के मारे) अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएँगी, और तमाम हमल "यानी गर्भ" वालियाँ अपने हमल को (पूरे दिन होने से पहले) डाल देंगी। और (ऐ मुख़ातब!) तुझको लोग नशे जैसी हालत में दिखाई देंगे, हालाँकि वे (हक़ीक़त में) नशे में न होंगे, और लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब है (ही) सख़्त चीज़। (2)

Mahtab E Ashraf

क़ियामत का ज़लज़ला

अल्लाह तआला अपने बन्दों को तक़्वे (परहेज़गारी) का हुक्म फ़रमाता है और आने वाली घबराहट वाले मामलात से डरा रहा है, खुसूसन क़ियामत के ज़लज़ले से। इससे मुराद या तो वह ज़लज़ला है जो क़ियामत के क़ायम होते हुए उठेगा जैसे कि फ़रमान है:

اِذَازُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا......... الخ.

ज़मीन ख़ूब अच्छी तरह झिंझोड़ दी जायेगी। और फ़रमाया:

وَحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَادَكَّةً وَّاحِدَةً......... الخ.

यानी ज़मीन और पहाड़ आपस में टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे। और फ़रमान है:

اِذَارُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا...... الخ.

यानी जबकि ज़मीन बड़े ज़ोर से हिलने लगेगी और पहाड़ चूरा-चूरा हो जायेंगे।

'सूर' वाली हदीस में है कि अल्लाह तआला जब आसमान व ज़मीन की पैदाईश कर चुका तो सूर को पैदा किया। उसे हज़रत इस्राफ़ील को दिया, वह उसे मुँह में लिये हुए आँखें ऊपर को उठाये हुए अ़र्श की जानिब देख रहे हैं कि कब हुक्मे ख़ुदा हो और वह सूर फूँक दें। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने पूछा या रसूलल्लाह! सूर क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया- एक फूँकने की चीज़ है, बहुत बड़ी, जिसमें तीन मर्तबा फूँका जायेगा। पहला फूँकना घबराहट का होगा, दूसरा बेहोशी का और तीसरा ख़ुदा के सामने खड़ा होने का। हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम को हुक्म होगा वे फूँकेंगे जिससे तमाम ज़मीन व आसमान वाले घबरा उठेंगे सिवाय उनके जिन्हें ख़ुदा चाहे, बग़ैर रुके बग़ैर साँस लिये बहुत देर तक बराबर उसे फूँकते रहेंगे। इसी पहले सूर का ज़िक्र इस आयत में है:

وَمَايَنْظُرُهٰٓؤُلَآءِ اِلَّاصَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّالَهَامِنْ فَوَاقٍ.

उससे पहाड़ रेज़ा-रेज़ा (चूरा-चूरा) हो जायेंगे। ज़मीन कपकपाने लगेगी। जैसा कि फ़रमाया:

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ......... الخ.

जबकि ज़मीन लरज़ने लगेगी और एक के बाद एक ज़बरदस्त झटके लगेंगे। दिल धड़कने लगेगा, ज़मीन की वह हालत हो जायेगी जो कश्ती की तूफ़ान में भंवर में होती है, या जैसे कोई क़िन्दील (लालटेन) अ़र्श (किसी ऊँची चीज़) में लटक रही हो, जिसे हवायें हर तरफ़ झुला रही हों। आह यही वक़्त होगा कि दूध पिलाने वालियाँ अपने दूध पीते बच्चों को भूल जायेंगी और हामिला (गर्भवती) औ़रतों के हमल (गर्भ) गिर जायेंगे और बच्चे बूढ़े हो जायेंगे, शयातीन भागने लगेंगे, ज़मीन के किनारों तक पहुँच जायेंगे, लेकिन वहाँ से फ़रिश्तों की मार खाकर लौट आयेंगे। लोग इधर-उधर हैरान परेशान भागने दौड़ने लगेंगे, एक दूसरे को आवाज़ें देने लगेंगे। इसी लिये उस दिन का नाम क़ुरआन ने "यौमुत्तनाद" (यानी एक दूसरे को पुकारने वाला दिन) रखा।

इसी वक़्त ज़मीन एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ फट जायेगी। उस वक़्त की घबराहट का अन्दाज़ा नहीं हो सकता। अब आसमान में इन्क़िलाब ज़ाहिर होंगे, सूरज चाँद बेनूर हो जायेंगे, सितारे झड़ने लगेंगे और खाल

Maktab E Ashraf

उधड़ने लगेगी। ज़िन्दा लोग यह सब कुछ देख रहे होंगे, हाँ मुर्दा लोग इससे बेख़बर होंगे। क़ुरआन पाक की इस आयत के अन्दर जिन लोगों को इस घबराहट व परेशानी से अलग रखा गया कि वे बेहोश न होंगे इससे मुराद शहीद लोग हैं। फ़रमायाः

فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ.

यह घबराहट ज़िन्दों पर होगी अल्लाह के रास्ते के शहीद अल्लाह के यहाँ ज़िन्दा हैं और रोज़ियाँ पाते हैं। अल्लाह तआ़ला उन्हें उस दिन के शर (बुराई और घबराहट) से निजात देगा और उन्हें पुर-अमन रखेगा।

अल्लाह का यह अ़ज़ाब सिर्फ़ बदतरीन मख़्लूक़ को होगा। इसी को अल्लाह तआ़ला इस सूरत की शुरू की आयतों में बयान फ़रमाता है। यह हदीस तबरानी, इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में है, और बहुत लम्बी है। इस हिस्से को यहाँ लाने से मक़्सूद यह है कि इस आयत में जिस ज़लज़ले का ज़िक्र है यह क़ियामत से पहले होगा, और क़ियामत की तरफ़ इसकी निस्बत इसके नज़दीक होने की वजह से है। जैसे कहा जाता है। वल्लाहु आलम।

या इससे मुराद वह ज़लज़ला है जो क़ियामत क़ायम होने के बाद मैदाने हश्र में होगा, जबकि लोग क़ब्रों से निकल कर मैदान में जमा होंगे। इमाम इब्ने जरीर इसी क़ौल को पसन्द फ़रमाते हैं। इसकी दलील में भी बहुत सी हदीसें हैं-

1. हुज़ूर सल्ल. एक सफ़र में थे। आपके सहाबा तेज़-तेज़ चल रहे थे कि आप सल्ल. ने बुलन्द आवाज़ से दोनों आयतों की तिलावत की। सहाबा के कान में आवाज़ पड़ते ही वे सब अपनी सवारियाँ लेकर आप सल्ल. के इर्द-गिर्द (आस-पास) जमा हो गये कि शायद आप कुछ और फ़रमायेंगे। आपने फ़रमाया जानते हो यह कौनसा दिन होगा? यह वह दिन होगा जिस दिन अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को फ़रमायेगा कि ऐ आदम! (अपनी औलाद में से) जहन्नम का हिस्सा निकाल। वह कहेंगे ख़ुदाया कितनों में से कितने? फ़रमायेगा हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे जहन्नम के लिये और एक जन्नत के लिये। यह सुनते ही सहाबा के दिल दहल गये, चुप्पी लग गयी। आपने यह हालत देखकर फ़रमाया कि ग़म न करो, ख़ुश हो जाओ, अ़मल करते रहो, उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है कि तुम्हारे साथ मख़्लूक़ की वह तायदाद है कि जिसके साथ हो उसे बढ़ा दे। यानी याजूज माजूज और इनसानों में से जो हलाक हो गये और इब्लीस की औलाद।

अब सहाबा की घबराहट कम हुई तो आपने फ़रमाया- अ़मल करते रहो और ख़ुशख़बरी सुनो। उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है तुम तो और लोगों के मुक़ाबले में इतने ही हो जैसे ऊँट के पहलू का या जानवर के हाथ का दाग़। इसी रिवायत की एक और सनद में है कि यह आयत सफ़र की हालत में उतरी। उसमें है कि सहाबा हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमान सुनकर रोने लगे। आपने फ़रमाया क़रीब-क़रीब रहो और ठीक-ठाक रहो, हर नुबुव्वत से पहले जाहिलीयत का ज़माना रहा है, वही इस गिनती को पूरी कर देगा, वरना मुनाफ़िक़ों से यह गिनती पूरी होगी। उसमें है कि आपने फ़रमाया- मुझे उम्मीद है कि जन्नत वालों का एक चौथाई हिस्सा सिर्फ़ तुम ही होगे। यह सुनकर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अल्लाहु अकबर कहा। इरशाद हुआ- क्या अ़जब कि तुम तिहाई हो, इस पर उन्होंने फिर तकबीर कही। आपने फ़रमाया मुझे उम्मीद है कि तुम ही आधे होगे। उन्होंने फिर तकबीर कही। हदीस को रिवायत करने वाले कहते हैं कि मुझे याद नहीं कि फिर आपने दो तिहाईयाँ भी फ़रमायीं या नहीं?

Mukhtar E Ashraf

एक और रिवायत में है कि तबूक की लड़ाई से वापसी में मदीने के क़रीब पहुँचकर आपने आयत की तिलावत शुरू की। एक और रिवायत में है कि जो हलाक हुए जिन्नों और इनसानों में से। एक और रिवायत में है कि तुम एक हज़ार हिस्सों में से सिर्फ़ एक हिस्सा ही हो। सही बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में है कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआ़ला आदम अ़लैहिस्सलाम को पुकारेगा, वह जवाब देंगे 'लब्बैक रब्बना व सअ्दैक'। फिर आवाज़ आयेगी कि अल्लाह तुझे हुक्म देता है कि अपनी औलाद में से जहन्नम का हिस्सा निकाल। पूछेंगे कि ख़ुदाया कितना? हुक्म होगा हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे। उस वक़्त हामिला (गर्भवती) औरतों के हमल (गर्भ) गिर जायेंगे, बच्चे बूढ़े हो जायेंगे, लोग अपने होश खो बैठेंगे, किसी नशे से नहीं बल्कि ख़ुदा के अ़ज़ाब की सख़्ती की वजह से।

यह सुनकर सहाबा के चेहरे पीले पड़ गये तो आपने फ़रमाया- याजूज माजूज में से नौ सौ निन्नानवे और तुममें से एक। तुम तो ऐसे हो जैसे सफ़ेद रंग के बैल के चन्द काले बाल जो उसके पहलू में हों, या उन चन्द सफ़ेद बालों की तरह जो काले रंग के बैल के पहलू (करवट) में हों। फिर फ़रमाया मुझे उम्मीद है कि तमाम जन्नत वाले गिनती में तुम्हारी गिनती से एक चौथाई होंगे। हमने इस पर तकबीर कही। फिर फ़रमाया आधी तायदाद में सब और आधी तायदाद सिर्फ़ तुम्हारी। एक रिवायत में है कि सहाबा रज़ि. ने कहा हुज़ूर! फिर वह एक ख़ुशनसीब हम में से कौन होगा? जबकि हालत यह है। एक और रिवायत में है कि तुम अल्लाह के सामने नंगे पैरों, नंगे बदन, बिना ख़तना हुए जमा किये जाओगे। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा हुज़ूर! मर्द औरतें एक साथ? एक दूसरे पर नज़रें पड़ेंगी? आपने फ़रमाया- आ़यशा! वह वक़्त बहुत ही सख़्त और ख़तरनाक होगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

मुस्नद अहमद में है, हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! दोस्त अपने दोस्त को क़ियामत के दिन याद करेगा? आपने फ़रमाया आ़यशा! तीन मौक़ों पर कोई किसी को याद न करेगा- आमाल की तौल (यानी वज़न किये जाने) के वक़्त, जब तक कमी-ज़्यादती मालूम न हो जाये। आमाल-नामों के उड़ाये जाने के वक़्त, जब तक दायें-बायें हाथ में न आ जायें। उस वक़्त जबकि जहन्नम में से एक गर्दन निकलेगी जो घेर लेगी, सख़्त गुस्से व ग़ज़ब में होगी और कहेगी मैं तीन क़िस्म के लोगों पर मुसल्लत की गयी हूँ- एक तो वे जो अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारते हों, दूसरे वे जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं लाते और सरकश ज़िद्दी घमंडी लोगों पर। फिर तो वह उन्हें समेट लेगी और चुन-चुनकर अपने पेट में पहुँचा देगी। जहन्नम पर पुलसिरात होगा जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से तेज़ होगा, उस पर आँकुस (लोहे के टेढ़े तार) और काँटे होंगे, जिसे ख़ुदा चाहेगा पकड़ लेंगे, उस पर से गुज़रने वाले कोई तो बिजली की तरह के होंगे और कोई आँख झपकने की तरह गुज़र जायेंगे, और कुछ हवा की तरह और कुछ तेज़-रफ़्तार घोड़ों और ऊँटों की तरह।

फ़रिश्ते हर तरफ़ खड़े दुआ़यें करते होंगे कि या अल्लाह! सलामती दे, या अल्लाह बचा दे। पस बाज़ तो बिल्कुल सही सालिम गुज़र जायेंगे, बाज़ कुछ चोट खाकर बच जायेंगे, बाज़ औंधे मुँह जहन्नम में गिरेंगे। क़ियामत की निशानियों और उसकी हौलनाकियों में और भी बहुत सी हदीसें हैं जिनको दूसरे मौक़ों पर हमने भी ज़िक्र किया है, यहाँ फ़रमाया कि क़ियामत का ज़लज़ला बहुत ही ख़तरनाक है, बहुत सख़्त है, बहुत ही तबाही वाला है, दिल हिलाने वाला और कलेजा उड़ाने वाला है। 'ज़लज़ला' रौब व घबराहट के वक़्त दिल के हिलने को कहते हैं। जैसे एक आयत में है कि उस मैदाने जंग में मोमिनों को मुब्तला किया गया और बुरी तरह झिंझोड़ दिये गये।

Maktab E Ashraf

जब तुम उसे (यानी क़ियामत की सख़्ती को) देखोगे तो उस सख़्ती की वजह से दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी और गर्भवती औरतों के हमल (गर्भ) गिर जायेंगे। लोग बदहवास हो जायेंगे, ऐसे मालूम होंगे जैसे कोई नशे में चूर हो रहा हो, जबकि वे नशे में न होंगे बल्कि ख़ुदा के अ़ज़ाब की सख़्ती ने उन्हें बेहोश कर रखा होगा।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝

और बाज़े आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह के बारे में (यानी उसकी ज़ात या सिफ़ात में) बेजाने-बूझे झगड़ा करते हैं और हर शैतान सरकश के पीछे हो लेते हैं। (3) जिस के मुताल्लिक़ (ख़ुदा के यहाँ से) यह बात लिखी जा चुकी है कि जो शख़्स उससे ताल्लुक़ रखेगा (यानी उसका कहना मानेगा) तो (उसका काम ही यह है कि) वह उसको (हक़ रास्ते से) गुमराह कर देगा, और उसको दोज़ख़ के अ़ज़ाब का रास्ता दिखला देगा। (4)

यह बड़ी बेवक़ूफ़ी और जहालत है

जो लोग मौत के बाद की ज़िन्दगी के मुन्किर हैं और ख़ुदा को उस पर क़ादिर ही नहीं मानते और अल्लाह के फ़रमान से हटकर नबियों की ताबेदारी को छोड़कर सरकश इनसानों और जिन्नात की मातहती इख़्तियार करते हैं, अल्लाह तआ़ला उनकी तरदीद फ़रमा रहा है। आप देखेंगे कि जितने बिदअ़ती (दीन में नई और बेबुनियाद बातें निकालने वाले) और गुमराह लोग हैं वे हक़ से मुँह फेर लेते हैं, बातिल की पैरवी में लग जाते हैं, ख़ुदा की किताब और उसके रसूल सल्ल. की सुन्नत को छोड़ देते हैं और गुमराह सरदारों की मानने लगते हैं। उनकी राय और इच्छा पर अ़मल करने लगते हैं। इसलिये फ़रमाया कि उनके पास कोई सही इल्म नहीं होता। ये जिसकी मानते हैं वह अज़ली (हमेशा का) मर्दूद है, अपनी पैरवी करने वालों को वह बहकाता रहता है और आख़िरकार उन्हें अ़ज़ाब में फंसा देता है, जो जहन्नम के जलाने वाले आग के अ़ज़ाब हैं।

यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी है। इस ख़बीस ने कहा था कि ज़रा बतलाओ तो अल्लाह तआ़ला सोने का है या चाँदी का या ताँबे का? उसके इस सवाल से आसमान लरज़ उठा और उसकी खोपड़ी उड़ गयी। एक रिवायत में है कि एक यहूदी ने ऐसा ही सवाल किया था उसी वक़्त आसमानी कड़ाके (गरज) ने उसे हलाक कर दिया।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ

ऐ लोगो! अगर तुम (क़ियामत के दिन) दोबारा ज़िन्दा होने से शक (व इनकार) में हो तो हमने (पहले) तुमको मिट्टी से बनाया, फिर नुत्फ़े से (जो कि ग़िज़ा से पैदा होता है) फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर बोटी से कि (बाज़ी) पूरी होती है और (बाज़ी) अधूरी भी, ताकि हम

وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۗ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۗ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ۝	तुम्हारे सामने (अपनी क़ुदरत) ज़ाहिर कर दें, और हम (माँ के) गर्भ में जिस (नुत्फ़े) को चाहते हैं एक मुक़र्ररा मुद्दत (यानी पैदाईश) तक ठहराए रखते हैं फिर हम तुमको बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं, फिर ताकि तुम अपनी भरी जवानी (की उम्र) तक पहुँच जाओ। और बाज़े तुममें वे भी हैं जो (जवानी से पहले ही) मर जाते हैं। और बाज़े तुममें वे हैं जो निकम्मी उम्र (यानी ज़्यादा बुढ़ापे) तक पहुँचा दिए जाते हैं, (जिसका असर यह है) कि एक चीज़ से जानकार होकर फिर बेख़बर हो जाते हैं, और (आगे दूसरा इस्तिदलाल है कि ऐ मुख़ातब!) तू ज़मीन को देखता है कि सूखी (पड़ी) है, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती और फूलती है, और हर क़िस्म के ख़ुशनुमा नबातात "यानी पेड़-पौधे और सब्ज़ियाँ व घास वग़ैरह" उगाती है। (5) यह (सब) इस सबब से हुआ कि (वजूद में) अल्लाह तआ़ला ही कामिल है, और वही बेजानों में जान डालता है, और वही हर चीज़ पर क़ादिर है। (6) और (तथा इस सबब से हुआ कि) क़ियामत आने वाली है इसमें ज़रा भी शुब्हा नहीं और अल्लाह क़ियामत में क़ब्र वालों को दोबारा पैदा कर देगा। (7)

क़ियामत और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने की कुछ दलीलें

मुख़ालिफ़ों और क़ियामत के इनकारियों के सामने दलील बयान की जाती है कि अगर तुम्हें दूसरी बार की ज़िन्दगानी से इनकार है तो हम उसकी दलील में तुम्हारी पहली दफ़ा की पैदाईश तुम्हें याद दिलाते हैं। तुम अपनी असलियत पर ग़ौर करके देखो कि हमने तुम्हें मिट्टी से बनाया। यानी तुम्हारे बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को, जिनकी नस्ल से तुम सब हो। फिर तुम सबको हक़ीर (घटिया, मामूली) पानी के क़तरे से पैदा किया है, जिसने पहले जमे हुए ख़ून की शक्ल इख़्तियार की फिर गोश्त का एक लोथड़ा बना। चालीस दिन तक तो नुत्फ़ा अपनी शक्ल में बढ़ता है फिर अल्लाह के हुक्म से उसमें ख़ून की सुर्ख़ फुटकी पड़ती है, फिर चालीस दिन के बाद वह एक गोश्त के टुकड़े की शक्ल इख़्तियार कर लेता है जिसमें कोई सूरत व

Maktab E Ashraf

शक्ल नहीं होती। फिर अल्लाह तआला उसे सूरत इनायत फ़रमाता है, सर हाथ सीना पेट रानें पाँव और तमाम अंग और हिस्से बनते हैं। कभी इससे पहले ही हमल गिर जाता है कभी उसके बाद बच्चा गिर पड़ता है, यह तो तुम्हारी आँखों के सामने की बात है। और कभी ठहर जाता है। जब उस लोथड़े पर चालीस दिन गुज़र जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़रिश्ते को भेजता है जो उसे ठीक-ठाक और दुरुस्त करके उसमें रूह फूँक देता है और जैसी ख़ुदा की मन्शा हो ख़ूबसूरत बदशक्ल मर्द औरत बना दिया जाता है। रिज़्क़, मौत, नेकी, बदी उसी वक़्त लिख दी जाती है।

हदीस की किताब बुख़ारी व मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुममें से हर एक की पैदाईश उसकी माँ के पेट में चालीस रात तक जमा होती है, फिर चालीस दिन तक जमे हुए ख़ून की सूरत रहती है, फिर चालीस दिन तक गोश्त के लोथड़े की, फिर फ़रिश्तों को चार चीज़ें लिख देने का हुक्म देकर भेजा जाता है- रिज़्क़, अ़मल, मौत और नेकबख़्त या बदबख़्त होना। यह लिख लिया जाता है, फिर उसमें रूह फूँकी जाती है। अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि नुत्फ़े के रहम (गर्भ) में ठहरते ही फ़रिश्ता पूछता है कि ख़ुदाया! यह मख़्लूक़ होगा या नहीं (यानी पैदाईश तक पहुँचेगा या नहीं)? अगर इनकार हुआ तो वह जमता ही नहीं, ख़ून की शक्ल में रहम उसे ख़ारिज कर देता है। और अगर हुक्म मिला कि इसकी पैदाईश की जायेगी तो फ़रिश्ता मालूम करता है कि लड़का होगा या लड़की? नेक होगा या बद? असर क्या है? कहाँ मरेगा? फिर नुत्फ़े से पूछा जाता है कि तेरा रब कौन है? वह कहता है अल्लाह। पूछा जाता है राज़िक़ कौन है? कहता है अल्लाह। फिर फ़रिश्ते से कहा जाता है तू जा और असल किताब में देख ले, वहीं इसका सारा हाल मिल जायेगा। फिर वह पैदा किया जाता है, लिखी हुई ज़िन्दगी गुज़ारता है, मुक़द्दर में लिखा रिज़्क़ पाता है, मुक़र्ररा जगह चलता फिरता है, फिर मौत आती है और दफ़्न किया जाता है जहाँ दफ़्न होना मुक़द्दर है। फिर हज़रत आ़मिर रह. ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। 'मुज़ग़ा' (गोश्त का टुकड़ा) होने के बाद चौथी पैदाईश की तरफ़ लौटाया जाता है और रूह वाला बनता (यानी उसमें जान पड़ती) है।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद की मरफ़ूअ़ रिवायत में है कि चालीस पैंतालीस दिन जब नुत्फ़े पर गुज़र जाते हैं तो फ़रिश्ता मालूम करता है कि यह दोज़ख़ी है या जन्नती? जो जवाब दिया जाता है लिख लेता है। फिर पूछता है लड़का है या लड़की? जो जवाब दिया जाता है लिख लेता है। फिर अ़मल, असर, रिज़्क़ और मौत लिखी जाती है और सहीफ़ा (रजिस्टर) लपेट लिया जाता है, जिसमें न कमी मुम्किन है न ज़्यादती।

फिर बच्चा होकर दुनिया में पैदा होता है, न अ़क़्ल न समझ है, कमज़ोर है और तमाम जिस्मानी अंग कमज़ोर हैं। फिर अल्लाह तआला बढ़ाता रहता है, माँ बाप को मेहरबान कर देता है, दिन रात उन्हें इसकी फ़िक्र रहती है, तकलीफ़ें उठाकर इसको पालते हैं और ख़ुदा तआला परवान चढ़ाता है, यहाँ तक कि जवानी के दौर को पहुँच जाता है। ख़ूबसूरत, सेहतमन्द और डील-डोल वाला हो जाता है। बाज़ तो जवानी में ही चल बसते हैं बाज़ बूढ़े हो जाते हैं, कि फिर से अ़क़्ल व समझ खो बैठते हैं और बच्चों की तरह कमज़ोर हो जाते हैं। याददाश्त, समझ-बूझ सब में फ़तूर पड़ जाता है, इल्म के बाद बेइल्म हो जाता है। जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है:

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ.......... الخ.

अल्लाह ने तुम्हें कमज़ोरी में पैदा किया, फिर ज़ोर (यानी ताक़त व हिम्मत) दिया, फिर क़ुव्वत व ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा आया, जो कुछ वह चाहता है पैदा करता है, वह पूरे इल्म वाला और

Maktaba Ashraf

पूरी क़ुदरत वाला है। मुस्नद हाफ़िज़ अबू यअ़्ला मूसली में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- बच्चा जब तक जवानी (बालिग़ होने की उम्र) को न पहुँचे उसकी नेकियाँ उसके बाप के या माँ-बाप के नामा-ए-आमाल में लिखी जाती हैं, और बुराई न उस पर होती है न उन पर। बालिग़ होने की उम्र को पहुँचते ही उस पर क़लम चलने लगता है, उसके साथ के फ़रिश्तों को उसकी हिफ़ाज़त करने और उसे दुरुस्त रखने का हुक्म मिल जाता है। वह इस्लाम में ही चालीस साल की उम्र को पहुँचता है तो ख़ुदा तआ़ला उसे तीन बलाओं से निजात दे देता है। जुनूँ (पागलपन) से, कोढ़ से और सफ़ेद दाग़ की बीमारी से। जब उसे ख़ुदा के दीन पर पचास साल गुज़रते हैं तो अल्लाह तआ़ला उसके हिसाब में तख़्फ़ीफ़ (कमी) कर देता है, जब वह साठ साल का होता है तो अल्लाह तआ़ला अपनी रज़ामन्दी के कामों की तरफ़ उसकी तबीयत का पूरा मैलान (रुझान और झुकाव) कर देता है और उसे अपनी तरफ़ राग़िब कर देता है। जब वह सत्तर बरस का होता है तो आसमानी फ़रिश्ते उससे मुहब्बत करने लगते हैं और जब वह अस्सी बरस का हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी नेकियाँ तो लिखता है लेकिन बुराईयों से दरगुज़र फ़रमा लेता है। जब वह नब्बे बरस की उम्र को पहुँचता है तो अल्लाह तआ़ला उसके अगले पिछले गुनाह बख़्श देता है, उसके घराने वालों के लिये उसे सिफ़ारिशी और शफ़ीअ़ बना देता है। वह ख़ुदा के यहाँ "अमीनुल्लाह" का ख़िताब पाता है और ज़मीन में ख़ुदा के क़ैदियों की तरह रहता है। जब बिल्कुल नाकारा उम्र को पहुँच जाता है जबकि इल्म के बाद बेइल्म हो जाता है (यानी याददाश्त नहीं रहती) तो जो कुछ वह अपनी सेहत और होश के ज़माने में नेकियाँ किया करता था सब उसके नामा-ए-आमाल में बराबर लिखी जाती हैं, और अगर कोई बुराई उससे हो गयी तो वह नहीं लिखी जाती। यह हदीस बहुत ग़रीब है और इसमें सख़्त नकारत है, इसके बावजूद इसे इमाम अहमद बिन हंबल रह. अपनी मुस्नद में लाये हैं, मौक़ूफ़न भी और मरफ़ूअ़न भी। हज़रत अनस रज़ि. से मौक़ूफ़न रिवायत है और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से फ़रमाने रसूल सल्ल. के हवाले से। फिर हज़रत अनस से ही दूसरी सनद से मरफ़ूअ़न यही हदीस नक़ल की है। हाफ़िज़ अबू बक्र बिन बज़्ज़ार रह. ने भी इसे अनस बिन मालिक रज़ि. की रिवायत से हदीसे मरफ़ूअ़ में बयान किया है (और मुसलमानों पर रब तआ़ला की मेहरबानी का तक़ाज़ा भी यही है। अल्लाह हमारी उम्र में नेकी के साथ बरकत दे, आमीन)।

नोटः इमाम इब्ने कसीर रह. ने ख़ुद ही फ़रमा दिया कि यह हदीस ग़रीब और मुन्कर है, यानी क़ाबिले एतिबार नहीं। इसमें बयान हुए मज़मून को अगर किसी दर्जे में सही मान लिया जाये तो इसमें अल्लाह के उन नेक बन्दों का हाल बयान हुआ है जो सारी उम्र नेक रास्ते पर चलते रहे। अब ज़ाहिर है कि अगर आख़िर उम्र में वे उन आमाल और वज़ीफ़ों की पाबन्दी न कर सकें जिनकी वे उस वक़्त करते थे जब उनके बदन में जान थी और जिस्मानी क़ुव्वतें काम कर रही थीं तो अल्लाह की रहमत से यह बईद नहीं कि वह इस लाचारी के दौर में उस दौर के आमाल जैसा सवाब इनायत फ़रमाता रहे। यही बात बीमारियों की है कि अल्लाह तआ़ला अक्सर अपने बन्दों को ऐसी भयानक बीमारियों से महफ़ूज़ रखता है, लेकिन अगर किसी को ऐसी बीमारी हो जाये तो उसकी तरफ़ से बदगुमान होने की ज़रूरत नहीं, हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला उसके ज़रिये से उसके गुनाह माफ़ करना या उसके दर्जे बुलन्द करना चाहता हो। इसी तरह यह भी न हो कि ऐसी हदीसों को सामने रखकर आदमी गुनाहों पर जरी हो जाये कि अब तो सिर्फ़ नेकियाँ लिखी जायेंगी, गुनाह न लिखे जायेंगे, यह बहुत ख़तरनाक बात है। आख़िर वक़्त में अपनी उम्र भर की जमा-पूँजी को गंवाने वाली बात है। एतिबार ख़ात्मे का है, आख़िर वक़्त में अल्लाह की तरफ़ ज़्यादा रुजू करने की ज़रूरत है। इसी लिये कहते हैं कि क़ुरआन व हदीस में अपनी अ़क़्ल चलाने के बजाय उलेमा से मालूम करना चाहिये वही सही रहनुमाई कर सकते हैं। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

मुर्दों के ज़िन्दा कर देने की एक दलील यह बयान करके फिर दूसरी दलील बयान फ़रमाता है कि चटियल मैदान, ग़ैर-उपजाऊ ख़ुश्क और सख़्त ज़मीन को हम आसमानी पानी से लहलहाती और तरोताज़ा कर देते हैं। तरह-तरह के फूल-फल मेवे दाने वग़ैरह के दरख़्तों से सरसब्ज़ हो जाती है, क़िस्म-क़िस्म के दरख़्त उग जाते हैं और जहाँ कुछ न था वहाँ सब कुछ हो जाता है। मुर्दा ज़मीन एक दम ज़िन्दगी की ताज़ा साँस लेने लगती है। जिस जगह डर लगता था वहाँ अब रूह और आँखों को राहत व सुकून और दिल को ख़ुशी का एहसास होने लगता है। तरह-तरह के क़िस्म-क़िस्म के मीठे-खट्टे अच्छे ज़ायक़े वाले, मज़ेदार, रंग-रूप वाले फल और मेवे से लदे हुए ख़ूबसूरत छोटे-बड़े पेड़ झूम-झूमकर बहार का लुत्फ़ दिखाने लगते हैं। यही वह मुर्दा ज़मीन है जो कल तक ख़ाक उड़ा रही थी, आज दिल का सुरूर और आँखों का नूर बनकर अपनी ज़िन्दगी की जवानी का मज़ा दे रही है। फूलों के छोटे-छोटे पौधे दिमाग़ को तरोताज़ा और सुगन्धित कर देते हैं। दूर से सुहानी हवा के हल्के-हल्के झोंके कितने ख़ुशगवार मालूम होते हैं। वाक़ई पाक है अल्लाह की ज़ात और वही तमाम तारीफ़ों के लायक़ है।

सच है ख़ालिक़ (हर चीज़ का पैदा करने और बनाने वाला), मुदब्बिर (हर चीज़ का इन्तिज़ाम करने वाला), अपनी मन्शा के मुताबिक़ करने वाला ख़ुद-मुख़्तार, हाकिमे हक़ीक़ी अल्लाह तआ़ला ही है। वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है और उसकी निशानी मुर्दा ज़मीन का ज़िन्दा होना मख़्लूक़ की निगाहों के सामने है। वह हर चीज़ के उलट-पुलट करने और चीज़ की हक़ीक़त व माहियत के बदलने पर क़ादिर है, जो चाहता है हो जाता है, जिस काम का इरादा करता है फ़रमाता है "हो जा" फिर नामुम्किन है कि वह कहते ही न हो जाये।

याद रखो कि क़ियामत निश्चित तौर पर आने वाली है इसमें कोई शक व शुब्हे की गुंजाईश नहीं। और क़ब्रों के मुर्दों को वह ख़ुदा-ए-क़ादिर ज़िन्दा करके उठाने वाला है। वह अ़दम (न होने) से वजूद में लाने पर क़ादिर था, है और रहेगा।

सूरः यासीन में भी बाज़ लोगों के इस एतिराज़ का ज़िक्र करके उन्हें उनकी पहली पैदाईश याद दिलाकर क़ायल किया गया है, साथ ही सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा करने का ज़िक्र करके अपनी हर तरह की क़ुदरत को भी दलील में पेश फ़रमाया गया है। इस बारे में और भी बहुत सी आयतें हैं।

हज़रत लक़ीत बिन आ़मिर जो अबू रज़ीन अक़ीली की कुन्नियत से मशहूर हैं, एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम करते हैं कि क्या हम लोग सबके सब क़ियामत के दिन अपने रब तआ़ला को देखेंगे? और उसकी मख़्लूक़ में उसे देखने की मिसाल कोई है? आपने फ़रमाया क्या तुम सबके सब चाँद को बराबर तौर पर नहीं देखते? हमने कहा हाँ। फ़रमाया फिर अल्लाह तो बड़ी अ़ज़मत वाला है। आपनें फिर पूछा हुज़ूर! मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने की भी कोई मिसाल दुनिया में है? जवाब मिला कि क्या उन जंगलों से तुम नहीं गुज़रे जो ग़ैर-आबाद वीरान पड़े हों, ख़ाक उड़ रही हो, ख़ुश्क मुर्दा हो रहे हों, फिर तुम देखते हो कि वही टुकड़ा सब्ज़े से और तरह-तरह के दरख़्तों से हरा-भरा ज़िन्दा उपजाऊ हो जाता है, रौनक़दार बन जाता है। इसी तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करता है और मख़्लूक़ में भी देखी हुई मिसाल इसका काफ़ी नमूना और सुबूत है। (अबू दाऊद वग़ैरह)

हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं- जो इस बात का यक़ीन रखे कि अल्लाह तआ़ला हक़ है और क़ियामत यक़ीनन बेशुब्हा आने वाली है और अल्लाह तआ़ला मुर्दों को क़ब्रों से दोबारा ज़िन्दा करेगा, वह यक़ीनी जन्नती है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝	और बाज़े आदमी ऐसे होते हैं कि अल्लाह के बारे में बिना जानकारी (यानी ज़रूरी इल्म) के और बिना दलील (यानी अक्ली तौर पर दलील लाने) और बिना किसी रोशन किताब (यानी नक्ली दलील लाने) के तकब्बुर करते हुए झगड़ा करते हैं (8) ताकि अल्लाह की राह से (यानी दीने हक़ से) बेराह कर दें, ऐसे शख़्स के लिए दुनिया में रुस्वाई है और क़ियामत के दिन हम उसको जलती आग का अज़ाब चखाएँगे। (9) (और उससे कहा जाएगा) कि यह तेरे हाथ के किए हुए कामों का बदला है, और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआ़ला (अपने) बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं, (पस तुझको बिला जुर्म सज़ा नहीं दी गई)। (10)

ع ٨

अल्लाह के बारे में बिना जानकारी के कलाम करना

चूँकि ऊपर की आयतों में गुमराह जाहिल मुक़ल्लिदों का हाल बयान फ़रमाया था, यहाँ उनके मुर्शिदों और पीरों का हाल बयान फ़रमा रहा है कि वे बेअक़्ली और बेदिलेरी से सिर्फ़ राय, क़ियास और नफ़्सानी इच्छा से ख़ुदा के बारे में कलाम करते रहते हैं। हक़ से मुँह फेरते हैं, तकब्बुर से गर्दन फेर लेते हैं, हक़ को क़बूल करने से बेपरवाही के साथ इनकार कर जाते हैं। जैसे फ़िरऔ़नियों ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के खुले मोजिज़ों को देखकर भी बेपरवाही की और न माना। एक और आयत में है कि जब उनसे ख़ुदा की 'वही' को तस्लीम करने के लिये कहा जाता है और रसूले ख़ुदा के फ़रमान की तरफ़ बुलाया जाता है तो तू देखेगा ऐ रसूल! कि ये मुनाफ़िक़ तुझसे रुक जाया करते हैं।

सूरः मुनाफ़िक़ून में इरशाद हुआ कि जब उनसे कहा जाता है कि आओ और अपने लिये रसूल (सल्ल.) से इस्तिग़फ़ार कराओ तो वे अपने सर घुमाकर घमण्ड में आकर बेनियाज़ी से इनकार कर जाते हैं। हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फ़रमाया थाः

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ.

कि तू लोगों से अपने गाल न फुला दिया कर। यानी ख़ुद को बड़ा समझकर उनसे तकब्बुर न कर।

एक और आयत में है कि हमारी आयतें सुनकर यह तकब्बुर से मुँह फेर लेता है। "लियुज़िल्-ल" का "लाम" या तो "लामे आ़क़िबत" है या "लामे तालील" है। इसलिये कि बहुत सी बार उसका मक़सूद दूसरों को गुमराह करना नहीं होता। और मुम्किन है कि इससे मुराद विरोध और इनकार ही हो। हो सकता है कि हमने उसे ऐसा बद-अख़्लाक़ इसलिये बना दिया है कि यह गुमराहों का सरदार हो जाये, इसके लिये दुनिया में ज़िल्लत व रुस्वाई है जो बदला है इसके तकब्बुर का। यह यहाँ तकब्बुर (घमंड) करके बड़ा बनना चाहता था, हम इसे और छोटा कर देंगे। यहाँ भी अपनी इच्छा और तमन्ना में नाकाम और बेमुराद रहेगा

और आख़िरत के दिन भी जहन्नम की आग का लुक़मा होगा। उसे बतौर डाँट-डपट के कहा जायेगा कि यह तेरे आमाल का नतीजा है, ख़ुदा की ज़ात ज़ुल्म से पाक है। जैसे फ़रमान है कि फ़रिश्तों से कहा जायेगा कि इसे पकड़ लो, घसीट कर जहन्नम में ले जाओ और इसके सर पर आग जैसे पानी की धार बहाओ। ले अब अपनी इज़्ज़त और बड़ाई का बदला लेता जा, यही वह है जिससे तू उम्र भर शक व शुब्हे में रहा। हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं- मुझे यह रिवायत पहुँची है कि एक दिन में वह सत्तर-सत्तर बार आग में जलकर भुरता हो जायेगा, फिर ज़िन्दा किया जायेगा, फिर जलाया जायेगा। (अल्लाह तआ़ला हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये)।

Maktab E Ashraf

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ
فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ِۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ
اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ ۛ
خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ
الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ
اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ
الْعَشِيْرُ ۝

और बाज़ आदमी अल्लाह की इबादत (ऐसे तौर पर) करता है (जैसे किसी चीज़ के) किनारे पर (खड़ा हो) फिर अगर उस को कोई (दुनियावी) नफ़ा पहुँच गया तो उसकी वजह से (ज़ाहिरी) क़रार पा लिया और अगर उसकी कुछ आज़माईश हो गई तो मुँह उठाकर (कुफ़्र की तरफ़) चल दिया, (जिससे) दुनिया और आख़िरत दोनों को खो बैठा, यही खुला नुक़सान (कहलाता) है। (11) ख़ुदा (की इबादत) को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत करने लगा जो न उसको नुक़सान पहुँचा सकती है और न उसको नफ़ा पहुँचा सकती है, यह इन्तिहाई दर्जे की गुमराही है। (12) वह ऐसे की इबादत कर रहा है कि उस (की इबादत) का नुक़सान उसके नफ़े के मुक़ाबले में ज़्यादा जल्द (सामने आने वाला) है, (और) ऐसा कारसाज़ भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा। (13)

यह निफ़ाक़ है

"हर्फ़" के मायने शक और एक तरफ़ के हैं। गोया वे दीन के एक किनारे खड़े हो जाते हैं। फ़ायदा हुआ तो फूले नहीं समाते, नुक़सान देखा तो भाग खड़े हुए। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि बाज़ लोग हिजरत करके मदीना पहुँचते थे, अब अगर बाल-बच्चे हुए, जानवरों में बरकत हुई तो कहते कि यह दीन बड़ा अच्छा है, और अगर न हुए तो कहते यह दीन तो बहुत ही बुरा है। इब्ने अबी हातिम में है कि देहाती लोग हुज़ूर सल्ल. के पास आते, इस्लाम क़बूल करते, वापस जाकर अगर अपने यहाँ बारिश पानी पाते, जानवरों में, घर-बार में बरकत देखते तो इत्मीनान से कहते "बड़ा अच्छा दीन है" और अगर इसके ख़िलाफ़ देखते तो झट से बक देते कि इस दीन में सिवाय नुक़सान के और कुछ नहीं। इस पर यह आयत उतरी।

औफ़ी की रिवायत में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि ऐसे लोग भी थे जो मदीना पहुँचते,

Maktab E Ashraf

यहाँ आकर अगर उनके यहाँ लड़का, उनकी ऊँटनी को बच्चा या उन्हें सेहत हुई तो ख़ुश हो जाते, और इस दीन की तारीफ़ें करने लगते। और अगर कोई बला या मुसीबत आ गयी, मदीने की हवा मुवाफ़िक़ न आयी, घर में लड़की पैदा हो गयी, सदक़े का माल मयस्सर न हुआ तो शैतानी वस्वसे में आ जाते और साफ़ कह देते कि इस दीन में तो मुश्किल ही मुश्किल है। अ़ब्दुर्रहमान का बयान है कि यह हालत मुनाफ़िक़ों की है, दुनिया अगर मिल गयी तो दीन से ख़ुश हैं, जहाँ न मिली या कोई इम्तिहान आ गया तो फ़ौरन पल्ला झाड़ लिया करते हैं। मुर्तद (दीन से फिर जाते) काफ़िर हो जाते हैं। ये पूरे बदनसीब हैं। दुनिया व आख़िरत बरबाद कर लेते हैं। इससे ज़्यादा और बरबादी क्या होगी जिन ठाकुरों, बुतों और बुज़ुर्गों से ये मदद माँगते हैं, जिनसे फ़रियाद करते हैं, जिनके पास अपनी हाजतें ले जाते हैं, जिनसे रोज़ी माँगते हैं वे तो बिल्कुल बेबस और आ़जिज़ हैं, नफ़ा-नुक़सान उनके हाथ में ही नहीं। सबसे बड़ी गुमराही यह है कि दुनिया में भी उनकी इबादत से नुक़सान नफ़े से पहले हो जाता है और आख़िरत में उनसे जो नुक़सान पहुँचेगा उसका तो कहना ही क्या है। ये बुत तो उनके निहायत बुरे वली और बहुत बुरे साथी साबित होंगे। या यह मतलब है कि ऐसा करने वाले ख़ुद बहुत ही बद और बुरे हैं, लेकिन पहली तफ़सीर ज़्यादा अच्छी है। वल्लाहु आलम

बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल फ़रमाएँगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, अल्लाह तआ़ला जो इरादा करता है कर गुज़रता है। (14)	اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ۝

मोमिनों का हाल

बुरे लोगों का बयान करके भले लोगों का ज़िक्र हो रहा है। जिनके दिलों में यक़ीन का नूर है और जिनके आमाल में सुन्नत का ज़हूर है। भलाईयों के इच्छुक बुराईयों से बचने वाले हैं। ये बुलन्द महलों में मुक़ीम होंगे, क्योंकि ये सही राह पाने वाले हैं, इनके अ़लावा दूसरे लोग परेशान और अपने होश खोये हुए हैं। अब जो चाहे करे, जो चाहे अपने लिये जमा करके रखे।

जो शख़्स (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मुख़ालफ़त करके) इस बात का ख़्याल रखता है कि अल्लाह तआ़ला उनकी (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की) दुनिया और आख़िरत में मदद न करेगा तो उसको चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक तान ले, फिर (उसके ज़रिये से आसमान तक पहुँच कर अगर हो सके इस 'वही' को) रुकवा दे। तो फिर (अब) ग़ौर करना चाहिए कि क्या उसकी (यह) तदबीर उसकी नागवारी की चीज़ को	مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ

كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ٥ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يُّرِيْدُ ٥	(यानी 'वही' को) बन्द कर सकती है? (15) और हमने इस क़ुरआन को इसी तरह उतारा है (जिसमें) खुली-खुली दलीलें (हक़ को मुतैयन करने की हैं) और (बात) यह (ही है) कि अल्लाह तआ़ला जिसको चाहता है (हक़ की) हिदायत करता है। (16)

एक ग़लत ख़्याल

यानी जो यह जान रहा है कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी की मदद न दुनिया में करेगा न आख़िरत में, वह यक़ीन माने कि उसका यह ख़्याल एक बेबुनियाद ख़्याल है। आपकी मदद होकर ही रहेगी अगरचे यह अपने गुस्से में मर जाये। बल्कि उसे चाहिये कि अपने मकान की छत में रस्सी बाँधकर अपने गले में फन्दा डालकर ख़ुद को हलाक कर दे। नामुम्किन है कि वह चीज़ यानी ख़ुदा की मदद उसके नबी के लिये न आये। चाहे ये जल-जलकर मर जायें मगर उनके इस तरह के ख़्याल ग़लत साबित होकर रहेंगे।

यह मतलब भी हो सकता है कि उसकी समझ और सोच के ख़िलाफ़ होकर रहेगा। ख़ुदाई इमदाद आसमान से नाज़िल होगी। हाँ अगर उसके बस में हो तो एक रस्सी लटका कर आसमान पर चढ़ जाये और उस उतरती हुई आसमानी मदद को काट दे। लेकिन पहले मायने ज़्यादा ज़ाहिर हैं और उसमें उनकी पूरी आ़जिज़ी और नाकामी का सुबूत है कि ख़ुदा अपने दीन को, अपनी किताब को, अपने नबी को तरक़्क़ी देगा। चूँकि ये लोग उसे देख नहीं सकते इसलिये इन्हें चाहिये कि ये मर जायें, अपने आपको हलाक कर डालें। जैसे फ़रमान है:

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا......... الخ.

हम अपने रसूलों और ईमान वाले बन्दों की मदद करते हैं, दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

यहाँ फ़रमाया कि यह फाँसी पर लटक कर यह देख ले कि शाने मुहम्मदी को किस तरह कम कर सकता है? अपने सीने की आग को किस तरह बुझा सकता है? इस क़ुरआन को हमने उतारा है जिसकी आयतें, अलफ़ाज़ व मायने के लिहाज़ से बहुत ही वाज़ेह (स्पष्ट) हैं, ख़ुदा की तरफ़ से उसके बन्दों पर यह हुज्जत है। हिदायत व गुमराही ख़ुदा के हाथ है, उसकी हिक्मत वही जानता है, कोई उससे पूछगछ नहीं कर सकता, वह सबका हाकिम है, वह रहमतों वाला, इन्साफ़ वाला, ग़लबे वाला, हिक्मत वाला, बड़ाई वाला और इल्म वाला है। कोई उस पर इख़्तियार नहीं रखता, जो चाहे करे, सबसे हिसाब लेने वाला वही है और वह भी बहुत जल्द।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئِيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ٥	इसमें कोई शुब्हा नहीं कि मुसलमान और यहूद और साबिईन और ईसाई और मजूस और मुश्रिकीन अल्लाह तआ़ला इन सबके दरमियान क़ियामत के दिन (अ़मली) फ़ैसला कर देगा, (मुसलमानों को जन्नत में दाख़िल कर देगा और काफ़िरों को दोज़ख़ में), बेशक ख़ुदा तआ़ला हर चीज़ से वाक़िफ़ है। (17)

Maktab e Ashraf

Maktab E Ashraf

क़ियामत के दिन

"साबिईन" का बयान मय इख़्तिलाफ़ (रायों के मतभेद के) सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में गुज़र चुका है। यहाँ फ़रमाता है कि उन विभिन्न और अनेक मज़हब वालों का फ़ैसला क़ियामत के दिन साफ़ हो जायेगा। अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को जन्नत देगा और काफ़िरों को जहन्नम में दाख़िल करेगा, सबके अक़वाल अफ़आ़ल ज़ाहिर बातिन ख़ुदा पर ज़ाहिर और स्पष्ट हैं।

(ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको (अ़क़्ल से या देखने से) यह (बात) मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला के सामने (अपनी-अपनी हालत के मुनासिब) सब आजिज़ी करते हैं जो कि आसमानों में हैं और जो कि ज़मीन में हैं, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाये और बहुत सारे (तो) आदमी भी। और बहुत-से ऐसे हैं जिनपर (फ़रमाँबरदार न होने की वजह से) अ़ज़ाब साबित हो गया है। और (सच यह है कि) जिसको ख़ुदा ज़लील करे (और उसको हिदायत की तौफ़ीक़ न हो) उसको कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं (और) अल्लाह तआ़ला (को इख़्तियार है) जो चाहे करे। (18) ✿ (सज्दा)	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَ الدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۩ السجدة

✿ सज्दा नम्बर - 6

السجدة ٦

पूरी कायनात अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दे में है

इबादत का हक़दार सिर्फ़ वही ख़ुदा है जिसका कोई शरीक नहीं। उसकी बड़ाई के सामने हर चीज़ सर झुकाये हुए है, चाहे मजबूर होकर या ख़ुशी से। हर चीज़ का सज्दा अपने-अपने मुताबिक़ है। चुनाँचे क़ुरआन ने साये का दायें-बायें ख़ुदा के सामने झुकना भी आयतः

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَىْءٍ......... الخ.

क्या उन लोगों ने अल्लाह की पैदा की हुई इन चीज़ों को नहीं देखा जिनके साये कभी एक तरफ़ को कभी दूसरी तरफ़ इस अन्दाज़ से झुक जाते हैं कि अल्लाह तआ़ला के ताबे हैं और वे चीज़ें भी आ़जिज़ हैं। (सूरः नहल आयत 48)

में बयान फ़रमाया है। आसमानों के फ़रिश्ते, ज़मीन के जानवर, इनसान, जिन्नात, परिन्द-चरिन्द सब उसके सामने सर झुकाये हुए हैं और उसकी तस्बीह और तारीफ़ बयान कर रहे हैं। सूरज चाँद सितारे भी उसके सामने सज्दे में गिरे हुए हैं। इन तीनों चीज़ों को अलग इसलिये बयान किया गया कि बाज़ लोग इनकी पूजा करते हैं हालाँकि वो ख़ुदा के सामने झुके हुए हैं। इसी लिये फ़रमाया- सूरज चाँद को सज्दा न करो, उसे सज्दा करो जो इनका ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है। बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि

रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत अबूज़र रज़ि. से पूछा- जानते हो यह सूरज कहाँ जाता है? आपने जवाब दिया अल्लाह को इल्म है और उसके नबी को। आपने फ़रमाया यह अ़र्श के नीचे जाकर ख़ुदा को सज्दा करता है फिर उससे इजाज़त तलब करता है, वक़्त आ रहा है कि इससे एक दिन कह दिया जायेगा कि जहाँ से आया है वहीं वापस चला जा। सुनन अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा और मुस्नद अहमद में ग्रहण की हदीस में है कि सूरज-चाँद अल्लाह की मख़्लूक़ हैं, वे किसी की मौत पैदाईश से ग्रहण में नहीं आते बल्कि अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ में से जिस किसी पर तजल्ली डालता है तो वह उसके सामने झुक जाता है। अबुल-आ़लिया रह. फ़रमाते हैं कि सूरज चाँद और तमाम सितारे ग़ुरूब होकर सज्दे में जाते हैं और ख़ुदा से इजाज़त माँगकर दाहिनी तरफ़ से लौटकर फिर अपने मतला (निकलने के स्थान) में पहुँचते हैं।

पहाड़ों और दरख़्तों (पेड़ पौधों) का सज्दा उनके साये का दायें बायें पड़ना है। एक शख़्स ने नबी करीम सल्ल. से अपना एक ख़्वाब बयान किया कि मैंने देखा है कि जैसे मैं एक दरख़्त के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ मैं सज्दे में गया तो वह दरख़्त भी सज्दे में गया और मैंने सुना कि वह अपने सज्दे में यह पढ़ रहा था:

اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ لِيْ بِهَا عِنْدَكَ اَجْرًا وَضَعْ عَنِّيْ بِهَا وِزْرًا وَاجْعَلْهَا لِيْ عِنْدَكَ ذُخْرًا وَتَقَبَّلْهَا مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ.

यानी ऐ अल्लाह इस सज्दे की वजह से मेरे लिये अपने पास अज्र व सवाब लिख, और मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा, और मेरे लिये इसे आख़िरत का ज़ख़ीरा कर, और इसे क़बूल फ़रमा जैसे कि तूने अपने बन्दे दाऊद अ़लैहिस्सलाम का सज्दा क़बूल फ़रमाया था।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि फिर मैंने देखा कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल. ने सज्दे की आयत पढ़ी, सज्दा किया और यही दुआ़ आपने अपने सज्दे में पढ़ी जिसे मैं सुन रहा था। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

तमाम हैवानात (पशु पक्षी और जानवर) भी उसे सज्दा करते हैं। चुनाँचे मुस्नद अहमद की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अपने जानवर की पीठ को अपना मिम्बर न बना लिया करो, बहुत सी सवारियाँ अपने सवार से ज़्यादा अच्छी और अल्लाह का ज़्यादा ज़िक्र करने वाली होती हैं, और अक्सर इनसान भी अपनी ख़ुशी से अल्लाह की इबादत बजा लाते हैं और सज्दे करते हैं। हाँ वे भी हैं जो इससे मेहरूम हैं, तकब्बुर करते हैं, सरकशी करते हैं। ख़ुदा जिसे ज़लील करे उसे कौन इज़्ज़त दे सकता है? रब तआ़ला हर चीज़ पर मुख़्तार व मालिक है।

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से किसी ने कहा- यहाँ एक शख़्स है जो ख़ुदा के इरादों और उसकी मशीयत को नहीं मानता। आपने उससे फ़रमाया ऐ शख़्स बतला तेरी पैदाईश अल्लाह तआ़ला ने तेरी ख़्वाहिश के मुताबिक़ की या अपनी? उसने कहा अपनी मशीयत के मुताबिक़। फ़रमाया यह भी बतला कि जब तू चाहता है मरीज़ हो जाता है या जब अल्लाह चाहता है? उसने कहा जब वह चाहता है। फ़रमाया फिर तुझे शिफ़ा तेरी तमन्ना से होती है या ख़ुदा के इरादे से? जवाब दिया ख़ुदा के इरादे से। फ़रमाया कि अच्छा यह बता अब वह जहाँ चाहेगा तुझे ले जायेगा या जहाँ तू चाहेगा? कहा जहाँ वह चाहेगा। फ़रमाया फिर क्या बात रह गयी? सुन अगर तू इसके ख़िलाफ़ (विपरीत) जवाब देता तो मैं वल्लाह तेरा सर उड़ा देता।

Mahtab E Ashraf

मुस्लिम शरीफ़ में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब इनसान सज्दे की आयत पढ़कर सज्दा करता है तो शैतान अलग हटकर रोने लगता है कि अफ़सोस आदम के बेटे को सज्दे का हुक्म फ़रमाया, इसने सज्दा कर लिया और जन्नती हो गया। मैंने इनकार कर दिया और जहन्नमी बन गया। हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि. ने एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि या रसूलल्लाह! सूरः हज को दूसरी तमाम सूरतों पर यह फ़ज़ीलत मिली कि उसमें दो आयतें सज्दे की हैं? आपने फ़रमाया हाँ! और जो इन दोनों पर सज्दा न करे उसे चाहिये कि उसे पढ़े ही नहीं। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

इमाम तिर्मिज़ी रह. फ़रमाते हैं कि यह हदीस क़वी (मज़बूत) नहीं, लेकिन इमाम साहिब रह. का यह क़ौल क़ाबिले ग़ौर है, क्योंकि इसके रावी इब्ने लहीआ ने अपनी समाअ़त (हदीस के ख़ुद सुनने) का इसमें ख़ुलासा कर दिया है। अबू दाऊद में हुज़ूरे पाक सल्ल. का फ़रमान है कि सूरः हज को क़ुरआन की दूसरी सूरतों पर यह फ़ज़ीलत दी गयी है कि उसमें दो सज्दे हैं। इमाम अबू दाऊद फ़रमाते हैं कि इस सनद से तो यह हदीस मुस्तनद नहीं लेकिन और सनद से यह मुस्तनद भी बयान की गयी है, मगर सही नहीं।

मन्क़ूल है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जाबिया में इस सूरत की तिलावत की और दो बार सज्दा किया और फ़रमाया इसे उन दो सज्दों की फ़ज़ीलत दी गयी है। हज़रत अ़मर बिन आ़स को रसूलुल्लाह सल्ल. ने पूरे क़ुरआन में पन्द्रह सज्दे पढ़ाये, तीन सूरः मुफ़स्सल में दो सूरः हज में। (इब्ने माजा वग़ैरह) पस ये रिवायतें इस बात को पूरी तरह मज़बूत कर देती हैं।

هٰذٰنِ خَصۡمٰنِ اخۡتَصَمُوۡا فِىۡ رَبِّهِمۡ ۡ
فَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا قُطِّعَتۡ لَهُمۡ ثِيَابٌ مِّنۡ
نَّارٍ ؕ يُصَبُّ مِنۡ فَوۡقِ رُءُوۡسِهِمُ
الۡحَمِيۡمُ ۝ يُصۡهَرُ بِهٖ مَا فِىۡ بُطُوۡنِهِمۡ
وَالۡجُلُوۡدُ ۝ وَلَهُمۡ مَّقَامِعُ مِنۡ حَدِيۡدٍ ۝
كُلَّمَاۤ اَرَادُوۡۤا اَنۡ يَّخۡرُجُوۡا مِنۡهَا مِنۡ غَمٍّ
اُعِيۡدُوۡا فِيۡهَا ۗ وَذُوۡقُوۡا عَذَابَ الۡحَرِيۡقِ ۝ ع ٢ ٩

ये (जिनका ऊपर की आयत में ज़िक्र हुआ है) दो फ़रीक़ हैं, जिन्होंने अपने रब के (दीन के) बारे में (आपस में) इख़्तिलाफ़ किया, सो जो लोग काफ़िर थे उनके (पहनने के) लिए (क़ियामत में) आग के कपड़े काटे जाएँगे, (और) उनके सर के ऊपर से तेज़ गर्म पानी छोड़ा जाएगा। (19) (और) उससे उनके पेट में की चीज़ें (यानी अंतड़ियाँ) और (उनकी) खालें सब गल जाएँगी। (20) और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे। (21) वे लोग जब (दोज़ख़ में) घुटे-घुटे (घबरा जाएँगे और) उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें धकेल दिए जाएँगे, और (उनको कहा जाएगा कि) जलने का अ़ज़ाब (हमेशा के लिए है) चखते रहो। (22)

दो मुक़ाबिल और उनका हाल

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु क़सम खाकर फ़रमाते हैं कि यह आयत हज़रत हमज़ा और उनके मुक़ाबले में बदर के दिन जो दो काफ़िर आये थे और उतबा और उसके दो साथियों के बारे में उतरी है। (बुख़ारी व मुस्लिम) बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के

दिन मैं सबसे पहले ख़ुदा के सामने अपनी हुज्जत साबित करने के लिये घुटनों के बल गिर जाऊँगा। हज़रत क़ैस रज़ि. फ़रमाते हैं कि उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी है। बदर के दिन ये लोग एक दूसरे के सामने आये थे, अ़ली और हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा और उबैदा और शैबा और उतबा और वलीद। और यह भी क़ौल है कि मुराद मुसलमान और अहले किताब हैं। अहले किताब कहते थे कि हमारा नबी तुम्हारे नबी से और हमारी किताब तुम्हारी किताब से पहले है, इसलिये हम अल्लाह से तुम्हारे मुक़ाबले में ज़्यादा क़रीब हैं, और मुसलमान कहते थे कि हमारी किताब तुम्हारी किताब का फ़ैसला करती है, और हमारे नबी ख़ातिमुल-अम्बिया हैं, इसलिये तुमसे अफ़ज़ल व बेहतर हैं। पस अल्लाह ने इस्लाम को ग़ालिब किया और यह आयत उतरी। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि मुराद इसकी तस्दीक़ करने वाले हैं। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि इस आयत में मोमिन व काफ़िर की मिसाल है, जो क़ियामत के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते थे। इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि मुराद जन्नत व दोज़ख़ का क़ौल है, दोज़ख़ का सवाल था कि मुझे सज़ा की चीज़ बना और जन्नत की आरज़ू थी कि मुझे रहमत बना।

मुजाहिद रह. का क़ौल इन तमाम अक़वाल को शामिल है और बदर का वाकिआ़ भी इसके अंतर्गत आ सकता है। मोमिन ख़ुदा के दीन का ग़लबा चाहते थे और काफ़िर ईमान के नूर को बुझाने, हक़ को पस्त करने और बातिल को उभारने की फ़िक्र में थे। इब्ने जरीर रह. भी इसको पसन्दीदा बतलाते हैं, और यह है भी बहुत अच्छा। चुनाँचे इसके बाद ही है कि काफ़िर के लिये आग के टुकड़े अलग-अलग मुक़र्रर कर दिये जायेंगे, ये ताँबे की सूरत में होंगे जो बहुत ही गर्मी पहुँचाता है, फिर ऊपर से गर्म उबलते हुए पानी का तरेड़ा (यानी धार बाँधकर पानी) डाला जायेगा जिससे आँतें और चर्बी घुल जायेंगी और खाल भी झुलस कर झड़ जायेगी।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि उस गर्म आग जैसे पानी से उनकी आँतें वग़ैरह पेट से निकल कर पैरों पर गिर पड़ेंगी, फिर जैसे थे वैसे हो जायेंगे, फिर यही होगा। अ़ब्दुल्लाह बिन सिर्री रह. फरमाते हैं कि फ़रिश्ता उस डोलचे को उसके कड़ों से थामकर लायेगा, उसके मुँह में डालना चाहेगा, यह घबराकर मुँह फेर लेगा तो फ़रिश्ता उसके माथे पर लोहे का हथोड़ा मारेगा जिससे उसका सर फट जायेगा, वहीं से उस गर्म आग पानी को डालेगा जो सीधा पेट में पहुँचेगा। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि उन हथोड़ों में से जिनसे दोज़ख़ियों की कुटाई होगी अगर एक ज़मीन पर लाकर रख दिया जाये तो तमाम इनसान और जिन्नात मिलकर भी उसे उठा नहीं सकते। (मुस्नद)

आप सल्ल. फ़रमाते हैं कि अगर वह किसी बड़े पहाड़ पर मार दिया जाये तो वह रेज़ा-रेज़ा (चूरा-चूरा) हो जाये। जहन्नमी उससे टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे फिर जैसे थे वैसे ही कर दिये जायेंगे। अगर "ग़स्साक़" जो जहन्नमियों की ग़िज़ा है, एक डोल दुनिया में बहा दिया जाये तो तमाम दुनिया वाले बदबू के मारे हलाक हो जायें। (मुस्नद अहमद)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसके लगते ही बदन का एक-एक अंग झड़ जायेगा और हाय वाय का गुल (शोर) मच जायेगा। जब कभी वहाँ से निकल जाना चाहेंगे वहीं लौटा दिये जायेंगे। हज़रत सलमान फ़रमाते हैं कि जहन्नम की आग सख़्त स्याह बहुत अन्धेरे वाली है, उसके शोले भी रोशन नहीं, न उसके अंगारे रोशनी वाले हैं। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। हज़रत ज़ैद रज़ि. का क़ौल है कि जहन्नमी उसमें साँस भी न ले सकेंगे। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रह. फ़रमाते हैं कि वल्लाह उन्हें छूटने की तो आस ही नहीं रहेगी, पैरों में बोझल बेड़ियाँ हैं, हाथों में मज़बूत हथकड़ियाँ हैं, हाँ आग के शोले उन्हें

इस कद्र ऊँचा कर देते हैं कि गोया बाहर निकल जायेंगे, लेकिन फिर फ़रिश्तों के हाथों से घन खाकर तह में उतर जाते हैं। उनसे कहा जायेगा कि अब जलने का मज़ा चखो। जैसे फ़रमान है- उनसे कहा जायेगा कि इस आग का अज़ाब बरदाश्त करो जिसे आज तक झुठलाते रहे, ज़बानी भी और अपने आमाल से भी।

(और) अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जो कि ईमान लाए और नेक काम किए (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, (और) उनको वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और उनका लिबास वहाँ रेशम का होगा। (23) और (यह सब इनाम उनके लिए इसलिए है कि दुनिया में) उनको कलिमा-ए-तय्यिबा (के एतिक़ाद) की हिदायत हो गई थी, और उनको उस (ख़ुदा) के रास्ते की हिदायत हो गई थी जो तारीफ़ के लायक़ है। (वह रास्ता इस्लाम है)। (24)	اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝ وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ۝

रेशमी लिबास

ऊपर जहन्नमियों का, उनकी सज़ाओं का, उनके तौक़ व ज़न्जीरों का, उनके जलने झुलसने का और उनके आग के लिबास का ज़िक्र करके अब जन्नत का, वहाँ की नेमतों का और वहाँ के रहने वालों का हाल बयान फ़रमा रहे हैं। अल्लाह हमें अपनी सज़ाओं से बचाये, आमीन।

फ़रमाता है कि ईमान और नेक अ़मल के बदले जन्नत मिलेगी, महलों और बाग़ों में हर तरफ़ पानी की नहरें लहरें मार रही हैं, जहाँ चाहेंगे वहीं ख़ुद-ब-ख़ुद उनका रुख़ हो जाया करेगा। सोने के ज़ेवरों से सजे हुए होंगे, मोतियों में तुल रहे होंगे। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि मोमिन का ज़ेवर वहाँ तक पहुँचेगा जहाँ तक वुज़ू का पानी पहुँचता है। कअ़बे अहबार रह. फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक फ़रिश्ता है जिसका नाम भी मुझे मालूम है, वह अपनी पैदाईश से मोमिनों के लिये ज़ेवर बना रहा है और क़ियामत तक इसी काम में रहेगा। अगर उनमें से एक कंगन भी दुनिया में ज़ाहिर हो जाये तो सूरज की रोशनी इसी तरह जाती रहे जिस तरह उसके निकलने से चाँद की रोशनी जाती रहती है।

दोज़ख़ियों के कपड़ों का ज़िक्र ऊपर हो चुका है, यहाँ जन्नतियों के कपड़ों का ज़िक्र हो रहा है कि वे नर्म, चमकीले, रेशमी कपड़े पहने हुए होंगे। जैसे सूरः दह्र में है कि उनके लिबास सब्ज़ रेशमी होंगे, चाँदी के कंगन होंगे और शराबे तहूर के जाम पर जाम पी रहे होंगे। यह है तुम्हारी जज़ा (अच्छा बदला) और यह है तुम्हारी कामयाब कोशिश व मेहनत का नतीजा। सही हदीस में है कि तुम रेशम न पहनो, जो इसे दुनिया में पहन लेगा वह आख़िरत के दिन इससे मेहरूम रहेगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जो उस दिन रेशमी लिबास से मेहरूम रहा वह जन्नत में न जायेगा, क्योंकि जन्नत वालों का यही लिबास है, उनको पाक बात सिखा दी गयी। जैसे फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ.

कि ईमान वाले अल्लाह के हुक्म से जन्नत में जायेंगे। जहाँ उनका तोहफ़ा आपस में सलाम होगा।

एक और आयत में है कि हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास आयेंगे और सलाम करके कहेंगे- तुम्हारे सब्र का क्या ही अच्छा अन्जाम हुआ। एक और जगह फ़रमाया:

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيمًا. إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا.

वहाँ कोई बेहूदा, बेकार की और रंज देने वाली बात न सुनेंगे सिवाय सलाम और सलामती के। पस उन्हें वह मकान दे दिया गया जहाँ सिर्फ़ दिल लुभाने वाली आवाज़ें और सलाम ही सलाम सुनते हैं।

जैसे एक और जगह फ़रमान है कि वहाँ मुबारक सलामत की आवाज़ें ही आयेंगी, जबकि इसके विपरीत दोज़ख़ियों को हर वक़्त डाँट-डपट सुनने को मिलेगा, झिड़के जाते हैं और कहा जाता है कि ऐसे अ़ज़ाब बरदाश्त करो, वग़ैरह। और इन्हें (यानी जन्नत वालों को) वह जगह दी गयी कि यह निहाल-निहाल हो गये और बेसाख़्ता इनकी ज़बानों से ख़ुदा की तारीफ़ अदा होने लगी, क्योंकि बेशुमार बेनज़ीर रहमतें पा लीं। सही हदीस में है कि जैसे बेइरादा व बेतकल्लुफ़ साँस आता जाता रहता है इसी तरह जन्नतियों को तस्बीह व हम्द (यानी अल्लाह की पाकी और तारीफ़ बयान करने) का इल्हाम होगा। बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि "तय्यिब कलाम" से मुराद क़ुरआने करीम है और "ला इला-ह इल्लल्लाहु" से हदीस के विर्द और ज़िक्र हैं और "सिराते हमीद" से मुराद इस्लामी रास्ता है। यह तफ़सीर भी पहली तफ़सीर के ख़िलाफ़ नहीं। वल्लाहु आलम

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और (मुसलमानों को) अल्लाह के (रास्ते से और मस्जिदे हराम यानी हरम) से (भी) रोकते हैं जिसको हमने तमाम आदमियों के वास्ते मुक़र्रर किया है, कि उसमें सब बराबर हैं, उसमें रहने वाला भी और बाहर से आने वाला भी, (ये रोकने वाले लोग अ़ज़ाब पाएँगे) और जो शख़्स उसमें (यानी हरम शरीफ़ में) कोई दीन के ख़िलाफ़ काम जान-बूझकर (ख़ासकर जबकि वह) ज़ुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) के साथ करेगा तो हम उसको दर्दनाक अ़ज़ाब (का मज़ा) चखाएँगे। (25)	إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ ع ۳ ۱۰

मस्जिदे हराम (काबे की मस्जिद)

अल्लाह तआ़ला काफ़िरों के उस फ़ेल की तरदीद करता है कि वह मुसलमानों को 'मस्जिदे हराम' (काबा शरीफ़ के इहाते के अन्दर जो मस्जिद है उसको मस्जिदे हराम कहते हैं, चूँकि वह हरम शरीफ़ है इसी निस्बत से इसका यह नाम है) से रोकते थे। वहाँ उन्हें हज के अरकान अदा करने से रोकते थे, इसके बावजूद वे अल्लाह का दोस्त होने के दावे करते थे हालाँकि अल्लाह के वली और दोस्त वे हैं जिनके दिलों

में अल्लाह का डर हो। इससे मालूम होता है कि यह ज़िक्र मदीना शरीफ़ का है, जैसे सूरः ब-क़रह की आयत "व यस्अलून-क अ़निश्शहरिल् हरामि........." में है। यहाँ फ़रमाया कि बावजूद कुफ़्र के फिर यह भी हरकत है कि राहे ख़ुदा से और मस्जिदे हराम से मुसलमानों को रोकते हैं, जो दर हक़ीक़त इसके अहल (पात्र) हैं। यही तरतीब इस आयत की है:

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ......... الخ.

यानी उनकी सिफ़त यह है कि उनके दिल ज़िक्रे ख़ुदा से मुत्मईन हो जाते हैं।

मस्जिदे हराम जो ख़ुदा ने सबके लिये बराबर तौर पर हुर्मत वाली बनाई है। मुक़ीम व मुसाफ़िर के हुक़ूक़ में कोई कमी ज़्यादती नहीं रखी, मक्का वाले भी मस्जिदे हराम में उतर सकते हैं और बाहर वाले भी, वहाँ की मन्ज़िलों में वहाँ के बाशिन्दे और बाहर के लोग सब एक ही हक़ रखते हैं। इस मसले में इमाम शाफ़ई रह. इमाम इस्हाक़ बिन राहवैह ने हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल की मौजूदगी में इख़्तिलाफ़ किया। इमाम शाफ़ई रह. तो फ़रमाने लगे कि मक्का की हवेलियाँ मिल्कियत में लाई जा सकती हैं, मीरास में बंट सकती हैं और किराये पर भी दी जा सकती हैं। दलील यह दी कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद ने हुज़ूरे पाक से सवाल किया कि कल आप मक्के में अपने ही मकान में उतरेंगे? तो आपने जवाब दिया कि अ़क़ील ने हमारे लिये कौनसी हवेली छोड़ी है? फिर फ़रमाया काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं होता, और न मुसलमान काफ़िर का। और दलील यह है कि अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने हज़रत सफ़वान बिन उमैया का मकान चार हज़ार दिर्हम में ख़रीदकर वहाँ जेलख़ाना (बन्दीग्रह) बनाया था।

ताऊस और अ़मर बिन दीनार रह. भी इस मसले में इमाम साहिब के साथी हैं। इमाम इस्हाक़ बिन राहवैह इसके ख़िलाफ़ कहते हैं कि वो मीरास में नहीं बंट सकते, न किराये पर दिये जा सकते हैं। बुज़ुर्गों में से एक जमाअ़त यही कहती है। मुजाहिद और अ़ता रह. का यही मस्लक है। इसकी दलील इब्ने माजा की यह हदीस है, हज़रत अ़ल्क़मा बिन नज़ला फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में सिद्दीक़ी और फ़ारूक़ी ख़िलाफ़त में मक्के की हवेलियाँ आज़ाद और बे-मिल्कियत कही जाती रहीं, अगर ज़रूरत होती तो रहते वरना किसी और को बसने के लिये दे देते। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि न तो मक्का शरीफ़ के मकानों का बेचना जायज़ है न उनका किराया लेना। हज़रत अ़ता भी हरम में किराया लेने को मना करते थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु मक्का शरीफ़ के घरों में दरवाज़े रखने से रोकते थे, क्योंकि सेहन में हाजी लोग ठहरा करते थे, सबसे पहले घर का दरवाज़ा सुहैल बिन अ़मर ने बनाया, हज़रत उमर रज़ि. ने उसी वक़्त उन्हें हाज़िरी का हुक्म भेजा। उन्होंने आकर कहा मुझे माफ़ फ़रमाया जाये मैं सौदागर (व्यापारी) शख़्स हूँ मैंने ज़रूरत की वजह से ये दरवाज़े बनाये हैं ताकि मेरे जानवर मेरे बस में रहें। आपने फ़रमाया ख़ैर हम इसे तेरे लिये जायज़ रखते हैं।

एक और रिवायत में हुक्मे फ़ारूक़ी इन अलफ़ाज़ में नक़ल किया गया है कि ऐ मक्का वालो! अपने मकानों के दरवाज़े न रखो, ताकि बाहर के लोग जहाँ चाहें ठहरें। अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि शहरी और ग़ैर-वतनी (यानी बाहर से आये लोग) उनमें बराबर हैं, जहाँ चाहें उतरें। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मक्का शरीफ़ के घरों का किराया खाने वाला अपने पेट में आग भरने वाला है। इमाम अहमद ने इन दोनों बातों के बीच की राह को पसन्द फ़रमाया है, यानी मिल्कियत और वरसे (मीरास बनने) को तो जायज़ बतलाया, हाँ किराये को नाजायज़ कहा है (इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक भी हरम के मकानात किराये पर

दिये और लिये जा सकते हैं, जैसा कि हज़रत उमर ने मकान किराये पर लेकर जेल बनाई)।

"इलहाद" से मुराद कबीरा शर्मनाक गुनाह है। "बिज़ुल्मिन" से मुराद जान-बूझकर है। तावील की रू से न होना है। और मायने शिर्क के ग़ैरे-ख़ुदा की इबादत के भी किये गये हैं। यह भी मतलब है कि हरम में ख़ुदा के हराम किये हुए काम को हलाल समझ लेना- जैसे गुनाह, क़त्ल, सितम वग़ैरह, ऐसे लोग दर्दनाक अ़ज़ाब के हक़दार हैं। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जो भी यहाँ बुरा काम करे यह हरम शरीफ़ की ख़ुसूसियत है कि ग़ैर-वतनी (यानी बाहरी) लोग जब किसी बुरे काम का इरादा कर लें तो उन्हें सज़ा होती है चाहे वे उसे न करें। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स 'अ़दन' (हरम से बाहर एक इलाक़ा) में हो और हरम में ज़ुल्म व गुनाह का इरादा रखता हो तो भी अल्लाह उसे दर्दनाक अ़ज़ाब का मज़ा चखायेगा। हज़रत शोबा रह. फ़रमाते हैं कि उसने तो इसे मरफ़ूअ़न बयान किया था लेकिन मैं इसे मरफ़ूअ़ नहीं करता, इसकी दूसरी सनद भी है जो सही है और मौक़ूफ़ होना मरफ़ूअ़ होने के मुक़ाबले में ज़्यादा ठीक है। उमूमन इब्ने मसऊद रज़ि. के क़ौल से ही रिवायत की गयी है। वल्लाहु आलम

एक और रिवायत में है कि किसी पर बुराई के सिर्फ़ इरादे से बुराई नहीं लिखी जाती, लेकिन अगर वह दूर-दराज़ जैसे अ़दन में बैठकर भी यहाँ के किसी शख़्स के क़त्ल का इरादा करे तो अल्लाह उसे दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि किसी चीज़ की "हाँ" "ना" पर यहाँ क़समें खाना भी गुनाह में दाख़िल है। सईद बिन ज़ुबैर रह. का फ़रमान है कि अपने ख़ादिम को यहाँ गाली देना भी गुनाह व इलहाद में है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि अमीर शख़्स का यहाँ आकर तिजारत करना, इब्ने उमर फ़रमाते हैं कि मक्के में अनाज का बेचना, हबीब बिन अबी साबित फ़रमाते हैं कि महंगा करके बेचने के लिये अनाज को यहाँ रोके रखना (यह सब बड़े गुनाह में शामिल है)।

इब्ने अबी हातिम में भी फ़रमाने रसूल सल्ल. से यही मन्क़ूल है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस के बारे में उतरी है, उसे हुज़ूर सल्ल. ने एक मुहाजिर और एक अन्सारी के साथ भेजा था। एक मर्तबा हर एक अपने-अपने नसब-नामे (ख़ानदान और ज़ात) पर फ़ख़्र करने लगा, उसने ग़ुस्से में आकर अन्सारी को क़त्ल कर दिया और मक्के की तरफ़ भाग खड़ा हुआ और दीने इस्लाम छोड़ बैठा। तो मतलब यह होगा कि जो 'इलहाद' (कबीरा गुनाह) करके मक्के की पनाह ले।

इन अक़वाल और रिवायात से यह मालूम होता है कि ये सब काम 'इलहाद' (बड़े और शर्मनाक गुनाह) में से हैं, लेकिन हक़ीक़त में यह इन सबसे ज़्यादा आ़म है बल्कि इसमें तंबीह और चेतावनी है इससे बड़ी चीज़ पर। इसी लिये जब हाथी वालों ने बैतुल्लाह शरीफ़ को बरबाद और मिस्मार करने का इरादा किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर परिन्दों के झुंड के झुंड भेज दिये, जिन्होंने उन पर कंकरियाँ फेंक कर उनका भुस उड़ा दिया और वे दूसरों के लिये एक सबक़ और इबरत का निशान बना दिये गये। चुनाँचे हदीस में है कि एक लश्कर इस बैतुल्लाह पर चढ़ाई के इरादे से आयेगा, जब वे पहुँचेंगे तो सबके सब मय अव्वल आख़िर के धंसा दिये जायेंगे.....।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. से फ़रमाते हैं कि आप यहाँ 'इलहाद' करने से बचें। मैंने हुज़ूर सल्ल. से सुना है कि यहाँ एक क़ुरैशी इलहाद (गुनाह व ज़ुल्म) करेगा उसके गुनाह अगर तमाम जिन्नात व इनसानों के गुनाहों से तौले जायें तो भी बढ़ जायेंगे। देखो ख़्याल रखो! तुम वही न बन जाना। (मुस्नद अहमद)

एक और रिवायत में यह भी है कि यह नसीहत आपने उन्हें 'हतीम' (काबे के इहाते में एक जगह) में

Maktab E Ashraf

बैठकर की थी।

और जबकि हमने इब्राहीम को ख़ाना काबा की जगह बतला दी (और हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक मत करना, और मेरे इस घर को तवाफ़ करने वालों और (नमाज़ में) क़ियाम व रुकूअ़ व सज्दा करने वालों के वास्ते (महसूस और ग़ैर-महसूस गन्दगी और नापाकियों से) पाक रखना। (26) और (इब्राहीम से यह भी कहा गया कि) लोगों में हज (के फ़र्ज़ होने) का ऐलान कर दो, (जिससे कि) लोग तुम्हारे पास (हज को) चले आएँगे, पैदल भी और (जो ऊँटनियाँ सफ़र के मारे) दुबली (हो गईं होंगी उन) ऊँटनियों पर भी, जो कि दूर-दराज़ रास्तों से पहुँची होंगी। (27)	وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِیْ شَيْئًا وَّطَهِّرْ بَيْتِیَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۝ وَاَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰی كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ۝

हरम शरीफ़ के संस्थापक

यहाँ मुश्रिकों को सचेत किया जाता है कि वह घर जिसकी बुनियाद पहले दिन से ख़ुदा की तौहीद पर रखी गयी है, तुमने उसमें शिर्क जारी कर दिया। उस घर के बानी (संस्थापक और बनाने वाले) अल्लाह के दोस्त हज़रत इब्राहीम हैं। सबसे पहले आपने ही इसे बनाया। हुज़ूरे पाक सल्ल. से हज़रत अबूज़र रज़ि. ने सवाल किया कि हुज़ूर! सबसे पहले कौनसी मस्जिद बनाई गयी? फ़रमाया मस्जिदे हराम। मैंने कहा फिर? फ़रमाया बैतुल-मुक़द्दस। मैंने कहा इन दोनों के बीच किस क़द्र मुद्दत का फ़ासला है? फ़रमाया चालीस साल का। ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान है:

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا..................سَبِيْلًا.

यक़ीनन वह मकान जो सबसे पहले लोगों के लिये मुक़र्रर किया गया वह मकान है जो कि मक्का में है। जिसकी हालत यह है कि वह बरकत वाला है और जहाँ भर के लोगों का रहनुमा है। उसमें खुली निशानियाँ हैं, उनमें से एक मक़ामे इब्राहीम है, और जो शख़्स उसमें दाख़िल हो जाये वह अमन वाला हो जाता है। और अल्लाह के वास्ते लोगों के ज़िम्मे उस मकान का हज करना है, यानी उसके ज़िम्मे जो कि ताक़त रखे वहाँ तक के सबील की। (सूरः आले इमरान आयत 96-98)

एक और आयत में है कि हमने इब्राहीम और इस्माईल से वायदा लिया कि मेरे घर को पाक रखना। बैतुल्लाह शरीफ़ की बिना का पूरा ज़िक्र हम पहले लिख चुके हैं, इसलिये यहाँ दोबारा लिखने की ज़रूरत नहीं। यहाँ फ़रमाया कि उसे सिर्फ़ मेरे नाम पर बना और उसे पाक रख, यानी शिर्क वग़ैरह से, और उसे ख़ास कर दे उनके लिये जो ईमान वाले हैं तवाफ़ व इबादत के लिये, जो सारी ज़मीन पर सिवाय बैतुल्लाह के और कहीं मयस्सर ही नहीं, न जायज़ है।

फिर तवाफ़ के साथ नमाज़ को मिलाया, क़ियाम, रुकूअ़, सज्दे का ज़िक्र फ़रमाया, इसलिये कि जिस

तरह तवाफ़ उसके साथ मख़्सूस है नमाज़ का क़िब्ला भी यही है। हाँ इस हालत में कि इनसान को मालूम न हो या जिहाद में हो या सफ़र में या नफ़िल नमाज़ पढ़ रहा हो तो बेशक क़िब्ले की तरफ़ मुँह न होने की हालत में भी नमाज़ हो जायेगी। वल्लाहु आलम।

और यह हुक्म मिला कि उस घर के हज के लिये तमाम इनसानों को बुला। बयान किया गया है कि आपने उस वक़्त अ़र्ज़ की कि बारी तआ़ला! मेरी आवाज़ उन तक कैसे पहुँचेगी? जवाब मिला कि आपके ज़िम्मे सिर्फ़ पुकारना है, आवाज़ पहुँचाना मेरे ज़िम्मे है। पस आपने मक़ामे इब्राहीम पर या सफ़ा पहाड़ी पर या अबू क़ुबीस पहाड़ पर खड़े होकर ऐलान किया कि ऐ लोगो! तुम्हारे रब ने अपना एक घर बनाया है, पस तुम उसका हज करो। पहाड़ झुक गये और आपकी आवाज़ सारी दुनिया में गूँज गयी। यहाँ तक कि बाप की पीठ में और माँ के पेट में जो थे उन्हें भी सुनाई दी। हर पत्थर, पेड़ और हर उस शख़्स ने जिसकी क़िस्मत में हज करना लिखा था बुलन्द आवाज़ से लब्बैक पुकारा। बहुत से बुज़ुर्गों से यह नक़ल किया गया है। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाया पैदल हज करना सवारी पर हज करने से अफ़ज़ल है, इसलिये कि पहले पैदल वालों का ज़िक्र है फिर सवारों का। तो उनकी तरफ़ तवज्जोह ज़्यादा हुई और उनकी हिम्मत की क़द्रदानी की गयी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेरी यह तमन्ना बाक़ी रह गयी कि काश मैं पैदल हज करता, इसलिये कि फ़रमाने ख़ुदा में पैदल वालों का ज़िक्र है, लेकिन अक्सर बुज़ुर्गों का क़ौल है कि सवारी पर अफ़ज़ल है, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल. ने बावजूद क़ुदरत व क़ुव्वत के पैदल हज नहीं किया, तो सवारी पर हज करना हुज़ूर सल्ल. की पूरी पैरवी है। फिर फ़रमाया कि दूर-दराज़ से हज के लिये आयेंगे। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ भी यही थी कि:

فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِىٓ اِلَيْهِمْ.

कि लोगों के दिलों को ख़ुदाया तू उनकी तरफ़ मुतवज्जह कर दे।

आज देख लो वह कौनसा मुसलमान है जिसका दिल काबे की ज़ियारत का मुश्ताक़ (इच्छुक और तमन्नाई) न हो? और जिसके दिल में तवाफ़ की तमन्नायें तड़प न रही हों। (अल्लाह हमें भी इसकी सआ़दत नसीब फ़रमाये)।

लِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِىٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ○ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ	ताकि अपने (दीनी और दुनियावी) फ़ायदों के लिए आ मौजूद हों और (इसलिए आएँगे) ताकि मुक़र्ररा दिनों (यानी क़ुरबानी के दिनों) में उन (मख़्सूस) चौपायों पर (ज़िबह के वक़्त) अल्लाह का नाम लें, (यानी बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कहें जो अल्लाह तआ़ला ने) उनको अ़ता किए हैं, सो उन (क़ुरबानी के जानवरों) में से तुम (को) भी (मुस्तहब होने के साथ इजाज़त है कि) खाया करो और (मुस्तहब यह है कि) मुसीबत के मारों, मोहताजों को भी खिलाया

करो। (28) फिर (लोगों को) चाहिए कि अपना मैल-कुचैल दूर कर दें और अपने वाजिबात को पूरा करें, और (उन्हीं मुक़र्ररा दिनों में) इस मामून (अमन वाले) घर (यानी ख़ाना-ए-काबा) का तवाफ़ करें। (29)	وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ۝

Mahtab E Ashraf

ख़ास मुद्दत में कुछ ख़ास अहकाम

दुनिया व आख़िरत के फ़ायदे हासिल करने को आयें, ख़ुदा की रज़ा के साथ ही दुनियावी फ़ायदे तिजारत वग़ैरह को भी हासिल कर लें, जैसे फ़रमायाः

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ........ الخ.

मौसमे हज में तिजारत करना मना (वर्जित) नहीं। मुक़र्रर दिनों से मुराद ज़िलहिज्जा (बक़र-ईद वाले महीने) का पहला दशक (पहले दस दिन) है। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है किसी दिन का अ़मल ख़ुदा के नज़दीक इन दिनों के अ़मल से अफ़ज़ल (बेहतर) नहीं। लोगों ने पूछा जिहाद भी नहीं? फ़रमाया जिहाद भी नहीं सिवाय उस मुजाहिद के अ़मल के जिसने अपनी जान व माल राहे ख़ुदा में खपा दिया हो। (सही बुख़ारी)

मैंने इस हदीस को इसकी तमाम सनदों के साथ एक मुस्तक़िल किताब में जमा कर दिया है। चुनाँचे एक रिवायत में है कि किसी दिन का अ़मल अल्लाह के नज़दीक इन दिनों से बड़ा और प्यारा नहीं, पस तुम इन दिनों में "ला इला-ह इल्लल्लाहु" और "अल्लाहु अकबर" और "अल्हम्दु लिल्लाह" ख़ूब ज़्यादा पढ़ा करो। इन्हीं दस दिनों की क़सम "व लयालिन् अ़श्र" की आयत में है। बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि "व अत्मम्नाहा बि-अ़श्रिन्" से मुराद भी यही दिन है। अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. इन दिनों में रोज़े से रहा करते थे। बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत इब्ने उमर और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. इन दिनों बाज़ार में आते और तकबीर पुकारते, बाज़ार वाले भी आपके साथ तकबीर कहते। इन ही दस दिनों में अ़रफ़े का दिन है, जिस दिन के रोज़े के बारे में रसूले ख़ुदा सल्ल. का फ़रमान है कि पिछले और आने वाले दो साल के गुनाह उससे माफ़ हो जाते हैं। (सही मुस्लिम शरीफ़)

इन्हीं दस दिनों में क़ुरबानी यानी बक़र-ईद का दिन है, जिसका नाम इस्लाम में हज्जे-अकबर का दिन है। एक रिवायत में है कि अल्लाह के नज़दीक यह सब दिनों से अफ़ज़ल है। ग़र्ज़ कि सारे साल में ऐसी फ़ज़ीलत के दिन और नहीं, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि ये दस दिन रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस दिनों से भी अफ़ज़ल हैं। क्योंकि नमाज़ रोज़ा सदक़ा वग़ैरह जो रमज़ान के इस आख़िरी अ़शरा (दशक) में होता है वह सब इन दिनों में भी होता है, इसके अतिरिक्त इनमें हज का फ़रीज़ा अदा होता है। यह भी कहा गया है कि रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस दिन अफ़ज़ल हैं, क्योंकि उनमें शबे-क़द्र है जो एक हज़ार महीनों से बेहतर है। तीसरा क़ौल दरमियाना है कि दिन तो ये अफ़ज़ल हैं और रातें रमज़ान मुबारक के आख़िरी दस दिनों की अफ़ज़ल हैं। इस क़ौल के मान लेने से विभिन्न दलीलें जमा हो जाती हैं। वल्लाहु आलम।

"अय्यामम् मअ़्लूमात" (निर्धारित दिनों) की तफ़सीर में एक दूसरा क़ौल यह है कि ये क़ुरबानी का

दिन और उसके बाद के तीन दिन हैं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि. और इब्राहीम नख़ई रह. से यही नक़्ल किया गया है। और एक रिवायत से इमाम अहमद बिन हंबल रह. का मज़हब भी यही है। तीसरा क़ौल यह है कि बक़्र-ईद और उसके बाद के दो दिन और मुक़र्ररा दिनों से बक़्र-ईद और उसके बाद के तीन दिन मुराद हैं, इसकी सनद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. तक सही है। सुद्दी रह. भी यही कहते हैं। इमाम मालिक रह. का भी यही मज़हब है और इसकी और इसके पहले की ताईद अल्लाह तआ़ला के फ़रमानः

عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ ۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ.

(सूरः हज आयत 34)

से होती है। क्योंकि इससे मुराद जानवरों की क़ुरबानी के वक़्त अल्लाह का नाम लेना है। चौथा क़ौल यह है कि अ़रफ़े (यानी 9 ज़िलहिज्जा) का दिन, बक़्र-ईद का दिन और उसके बाद का एक दिन है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. का मज़हब यही है। हज़रत असलम से मन्क़ूल है कि इससे मुराद "अ़रफ़ा का दिन" "क़ुरबानी का दिन" और "अय्यामे तशरीक़" (यानी 11, 12, 13 ज़िलहिज्जा के दिन) हैं। यहाँ चौपायों से मुराद ऊँट, गाय और बकरी हैं जैसे सूरः अन्आ़म की आयत "समानिय-त अज़्वाज" (सूरः अन्आ़म आयत 143) में तफ़सीली तौर पर मौजूद है।

फिर फ़रमाया कि उसे ख़ुद खाओ और मोहताजों (ज़रूरतमन्दों) को खिलाओ। इससे बाज़ लोगों ने दलील ली है कि क़ुरबानी का गोश्त खाना वाजिब है, लेकिन यह क़ौल ग़रीब है। अक्सर बुज़ुर्गों का मज़हब है कि यह रुख़्सत (इजाज़त, रियायत और छूट) है, या इस्तेहबाब (यानी पसन्दीदा) है। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने जब क़ुरबानी की तो हुक्म दिया कि हर ऊँट के गोश्त का एक टुकड़ा निकाल कर पका लिया जाये, फिर आपने वह गोश्त खाया और शोरबा पिया। इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं- मैं इसे पसन्द करता हूँ कि क़ुरबानी का गोश्त क़ुरबानी करने वाला खा ले, क्योंकि ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान है। इब्राहीम रह. फ़रमाते हैं कि मुश्रिक लोग अपनी क़ुरबानियों का गोश्त नहीं खाते थे, इसके विपरीत मुसलमानों को इस गोश्त के खाने की इजाज़त दी गयी। अब जो चाहे खाये जो चाहे न खाये। हज़रत मुजाहिद रह. और हज़रत अ़ता रह. से भी इसी तरह नक़्ल किया गया है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यहाँ का यह हुक्मः

وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا.

की तरह है, यानी जब तुम एहराम से फ़ारिग़ हो जाओ तो शिकार खेलो। इसी तरह सूरः जुमा में अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः

فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِى الْاَرْضِ.

कि जब नमाज़ पूरी हो जाये तो ज़मीन में फैल जाओ।

मतलब यह है कि इन दोनों आयतों में शिकार करने और ज़मीन में रोज़ी तलाश करने के लिये फैल जाने का हुक्म है, लेकिन यह हुक्म वुजूबी और फ़र्ज़ी नहीं (कि ऐसा करना वाजिब और फ़र्ज़ हो, बल्कि इजाज़त है)। इसी तरह अपनी क़ुरबानी के गोश्त को खाने का हुक्म भी ज़रूरी और वाजिब नहीं। इमाम इब्ने जरीर भी इसी क़ौल को पसन्द फ़रमाते हैं। बाज़ लोगों का ख़्याल है कि क़ुरबानी के गोश्त के दो हिस्से कर दिये जायें, एक हिस्सा ख़ुद क़ुरबानी करने वाले का दूसरा हिस्सा फ़क़ीर फ़ुक़रा का। बाज़ कहते हैं कि

Maktab E Ashraf

तीन हिस्से करने चाहियें, तिहाई अपना, तिहाई तोहफ़े में देने के लिये और तिहाई सदक़े के लिये। पहले क़ौल वाले ऊपर की आयत की सनद लाते हैं और दूसरे क़ौल वाले आयतः

وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ.

और ख़ुद खाओ और सवाल करने वाले और बिना सवाल करने वाले मोहताज को भी खिलाओ। (सूरः हज आयत 36)

को दलील में पेश करते हैं। इसका पूरा बयान आगे आयेगा इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं "बाइसल् फ़क़ीर" (मुसीबत का मारा मोहताज) से मुराद वह बेबस इनसान है जो ज़रूरत होने पर भी सवाल (माँगने) से बचता हो। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जो सवाल का हाथ न बढ़ाता हो, बीमार हो, कम बीनाई वाला हो।

फिर वे एहराम खोल डालें, सर मुंडवा लें, कपड़े पहन लें, नाखुन कटवा लें वग़ैरह। हज के अहकाम (अरकान) पूरे कर लें, नज़्रें (मन्नतें) पूरी कर लें, हज की, क़ुरबानी की और जो हो। पस जो शख़्स हज के लिये निकला उसके ज़िम्मे तवाफ़ है। हुज़ूर सल्ल. ने यही किया। जब दस ज़िलहिज्जा को मिना की तरफ़ वापस आये तो सबसे पहले शैतानों को कंकर मारना वग़ैरह सब कुछ लाज़िम है। इन तमाम अरकान को पूरे करें और सही तरीक़े पर पूरे करें। और बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करें जो क़ुरबानी के दिन वाजिब है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हज का आख़िरी काम तवाफ़ है। हुज़ूर सल्ल. ने यही किया, जब आप दस ज़िलहिज्जा को मिना की तरफ़ वापस आये तो सबसे पहले शैतानों को कंकरियाँ मारीं सात सात, फिर क़ुरबानी की, फिर सर मुंडवाया, फिर लौटकर बैतुल्लाह आकर तवाफ़े बैतुल्लाह किया। इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से बुख़ारी व मुस्लिम में मन्क़ूल है कि लोगों को हुक्म किया गया है कि उनका आख़िरी काम बैतुल्लाह का तवाफ़ हो। हाँ अलबत्ता माहवारी वाली औ़रतों के लिये इसमें रियायत कर दी गयी है। "बैतुल-अ़तीक़" के लफ़्ज़ से दलील पकड़ते हुए फ़रमाया गया है कि तवाफ़ करने वाले को हतीम भी अपने तवाफ़ के अन्दर ले लेना चाहिये, इसलिये कि वह भी असल बैतुल्लाह शरीफ़ में से है। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की बिना (तामीर) में यह दाख़िल था अगरचे क़ुरैश ने नया बनाते वक़्त उसे बाहर छोड़ दिया लेकिन उसकी वजह भी ख़र्च की कमी थी, न कि और कुछ। इसी लिये हुज़ूर सल्ल. ने हतीम के पीछे से तवाफ़ किया और फ़रमा भी दिया कि हतीम बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल है, और आपने दोनों शामी रुक्नों को हाथ नहीं लगाया, न बोसा दिया, क्योंकि वे हज़रत इब्राहीम की तामीर के मुताबिक़ पूरे नहीं।

इस आयत के उतरने के बाद हुज़ूर सल्ल. ने हतीम के पीछे से तवाफ़ किया। पहले इस तरह की इमारत थी कि यह अन्दर था, इसलिये इसे "पुराना घर" (बैते-अ़तीक़) कहा गया, यही सबसे पहला ख़ाना-ए-ख़ुदा है। और एक वजह यह भी है कि यह तूफ़ाने नूह में भी सलामत रहा। और यह भी वजह है कि कोई सरकश उस पर ग़ालिब नहीं आ सका, यह उन सबकी पहुँच और ज़्यादती से आज़ाद है। जिसने भी इसके बारे में बुरा इरादा किया वह तबाह हुआ। ख़ुदा ने उसे सरकशों के क़ब्ज़े से आज़ाद कर लिया है। तिर्मिज़ी में इसी तरह की एक मरफ़ूअ़ हदीस भी है जो हसन ग़रीब है और एक और सनद से मुर्सलन भी मौजूद है।

Maktab E Ashraf

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۝ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝

यह बात तो हो चुकी, और जो शख़्स अल्लाह तआला के मोहतरम अहकाम की वक़्अत करेगा, सो यह (वक़्अत करना) उसके हक़ में उसके रब के नज़दीक बेहतर है, और उन (मख़्सूस) चौपायों को उन (बाज़) को छोड़कर जो तुम को पढ़कर सुना दिए गए हैं तुम्हारे लिए हलाल कर दिया गया है, तो तुम लोग गन्दगी से यानी बुतों से (बिल्कुल) किनारा करने वाले रहो और झूठी बात से अलग रहो। (30) इस तौर से कि अल्लाह ही की तरफ़ झुके रहो (और) उसके साथ शरीक मत ठहराओ, और जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा, फिर परिन्दों ने उसकी बोटियाँ नोच लीं या उसको हवा ने किसी दूर-दराज़ जगह में लेजा पटका। (31)

इन चीज़ों से बचो

फ़रमाता है यह तो हज के अहकाम और उन पर जो जज़ा मिलती है उसका बयान था, अब और सुनो! जो शख़्स अल्लाह की सम्मानित चीज़ों की इज़्ज़त करे, यानी गुनाहों और हराम कामों से बचे, उनके करने से ख़ुद को रोके अैर उनसे बचता रहे, उसके लिये ख़ुदा के पास बड़ा अज्र है। जिस तरह नेकियों के करने पर अज्र है इसी तरह बुराईयों के छोड़ने पर भी सवाब है। मक्का, हज, उमरा भी अल्लाह के हुरुमात (एहतिराम वाली चीज़ें) हैं, तुम्हारे लिये चौपाये सब हलाल हैं हाँ जो हराम थे वे तुम्हारे सामने बयान हो चुके हैं। जो मुश्रिकों ने 'बहीरा' 'सायबा' 'वसीला' और 'हाम' नाम रख छोड़े हैं, ये ख़ुदा ने नहीं बतलाये, ख़ुदा को जो हराम करना था बयान फ़रमा चुका, जैसे मुर्दार जानवर, ज़िबह के वक़्त बहा हुआ ख़ून, सुअर का गोश्त, ख़ुदा के सिवा दूसरे के नामित किया हुआ, गला घोंटा हुआ वग़ैरह। तुम्हें चाहिये कि बुत-परस्ती की गन्दगी से दूर रहो और झूठी बात से बचो। इस आयत में शिर्क के साथ झूठ को मिला दिया, जैसे इस आयत में भी ऐसे ही बयान किया गया है:

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ......... الخ.

यानी मेरे रब ने गन्दे कामों को हराम कर दिया चाहे वे ज़ाहिर हों या छुपे हुए। और गुनाह और सरकशी को, और बेइल्मी के साथ ख़ुदा पर बातें बनाने को (यानी बिना इल्म के ख़ुदा की तरफ़ किसी बात को मन्सूब करना और बोहतान बाँधना)। इसी में झूठी गवाही भी दाख़िल है।

बुख़ारी व मुस्लिम में हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने पूछा- क्या मैं तुम्हें सबसे बड़ा कबीरा गुनाह बतला दूँ? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा इरशाद हो। फ़रमाया- ख़ुदा के साथ किसी को शरीक करना, माँ-बाप की

नाफ़रमानी करना, फिर तकिये से अलग हटकर फ़रमाया- झूठ बोलना और झूठी गवाही देना। इसे बार-बार फ़रमाते रहे यहाँ तक कि हमने कहा काश कि आप अब न फ़रमाते।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने ख़ुतबे में खड़े होकर तीन बार फ़रमाया- झूठी गवाही ख़ुदा के साथ शिर्क करने के बराबर कर दी गयी। फिर आपने उपर्युक्त फ़िक़रा तिलावत फ़रमाया। एक और रिवायत में है कि सुबह की नमाज़ के बाद आपने खड़े होकर यह फ़रमाया। इब्ने मसऊद रज़ि. का यह फ़रमान भी है कि ख़ुदा के दीन को ख़ुलूस के साथ थाम लो, बातिल से हटकर हक़ की तरफ़ आ जाओ, उसके साथ किसी को शरीक ठहराने वालों में न होओ।

फिर मुश्रिक की तबाही की मिसाल बयान फ़रमाई कि जैसे कोई आसमान से गिर पड़े, पस या तो उसे परिन्द (पक्षी) ही उचक ले जायेंगे या हवा किसी हलाकत के दूर-दराज़ गड्ढे में पहुँचा देगी। चुनाँचे काफ़िर की रूह को लेकर जब फ़रिश्ते आसमान की तरफ़ चढ़ते हैं तो उसके लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खुलते और वहीं से उसे फेंक दिया जाता है, इसी का बयान इस आयत में है। यह हदीस पूरी बहस के साथ सूरः इब्राहीम में गुज़र चुकी है। सूरः अन्आम में उन मुश्रिकों की एक और मिसाल बयान फ़रमाई है कि ये उनके जैसे हैं जिनको शैतान बावला (बेवक़ूफ़) बना दे।

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ○ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ○ ع	यह बात भी हो चुकी, और जो शख़्स अल्लाह (के दीन) की (इन ज़िक्र हुई) यादगारों का पूरा लिहाज़ रखेगा तो (उनका) यह (लिहाज़ रखना ख़ुदा तआ़ला से) दिल के साथ डरने से होता है। (32) तुमको उनसे एक मुतैयन वक़्त तक फ़ायदे हासिल करना (जायज़) है, फिर (यानी क़ुरबानी का जानवर बनने के बाद) उसके (ज़िबह) हलाल होने का मौक़ा बैते अ़तीक़ "यानी बैतुल्लाह" के क़रीब है। (33)

अल्लाह की यादगारें

ख़ुदा के "शआ़इर" की जिनमें क़ुरबानी के जानवर भी शामिल हैं, उनका सम्मान व इज़्ज़त बयान हो रही है कि अल्लाह के अहकाम पर अ़मल करना उसके फ़रमान का सम्मान करना है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- यानी क़ुरबानी के जानवरों को मोटा-ताज़ा और उम्दा करना। सहल रह. का बयान है कि हम क़ुरबानी के जानवरों को पाल कर उन्हें मोटा-ताज़ा और उम्दा करते थे, तमाम मुसलमानों का यही दस्तूर था। (बुख़ारी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि दो काले रंग के जानवरों के ख़ून से एक सफ़ेद रंग के जानवर का ख़ून अल्लाह तआ़ला को ज़्यादा महबूब और प्यारा है। (मुस्नद अहमद, इब्ने माजा)

पस अगरचे दूसरे रंग के जानवर भी जायज़ हैं लेकिन सफ़ेद रंग के जानवर अफ़ज़ल हैं। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने दो भेड़े चितकबरे बड़े-बड़े सींगों वाले अपनी क़ुरबानी में ज़िबह किये। हज़रत अबू सईद रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने एक भेड़ा बड़े सींग वाला चितकबरा ज़िबह किया

जिसके मुँह पर आँखों के पास और पैरों पर काला रंग था। (सुनन) इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे सही कहते हैं।

इब्ने माजा वग़ैरह में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हुक्म फ़रमाया कि हम क़ुरबानी के लिये जानवर ख़रीदते वक़्त उसकी आँखों और कानों को अच्छी तरह देखभाल लिया करें, और आगे से कटे हुए कान वाले की, पीछे से कटे हुए कान वाले की, लम्बाई में चिरे हुए कान वाले की, सुराख़ों वाले कान वाले की क़ुरबानी न करें। (अहमद) इसे इमाम तिर्मिज़ी रह. सही कहते हैं। इसी तरह हुज़ूर सल्ल. ने सींग टूटे हुए और कान कटे हुए जानवर की क़ुरबानी से मना फ़रमाया है। इसकी शरह (व्याख्या) में हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. फ़रमाते हैं कि जब आधा या आधे से ज़्यादा कान या सींग न हो। बाज़ अहले लुग़त कहते हैं कि अगर ऊपर से किसी जानवर का सींग टूटा हुआ हो तो उसे अ़रबी में "क़समा" कहते हैं और जब नीचे का हिस्सा टूटा हुआ हो तो उसे "अ़ज़ब" कहते हैं। एक और हदीस में लफ़्ज़ "अ़ज़ब" है और कान का कुछ हिस्सा कट गया हो तो उसे भी अ़रबी में "अ़ज़ब" कहते हैं। इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं कि ऐसे जानवर की क़ुरबानी अगरचे जायज़ है लेकिन कराहत के साथ। इमाम अहमद रह. फ़रमाते हैं कि जायज़ नहीं (बज़ाहिर यही क़ौल हदीस के मुताबिक़ है)। इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि अगर सींग से ख़ून जारी है तो जायज़ नहीं वरना जायज़ है। वल्लाहु आलम

हुज़ूर सल्ल. की हदीस है कि चार क़िस्म के ऐबदार जानवर क़ुरबानी में जायज़ नहीं, वह काना जानवर जिसका भेंगापन जाहिर हो, वह बीमार जानवर जिसकी बीमारी ख़ूब मालूम हो, वह लंगड़ा जिसका लंगड़ापन ज़ाहिर हो और वह दुबला-पतला मरियल जानवर जो गूदे बग़ैर का हो गया हो (यानी वह हड्डियों का ढाँचा हो, गोश्त और चरबी वग़ैरह कुछ न हो)। (अहमद व अहले सुनन) इसे इमाम तिर्मिज़ी रह. सही कहते हैं।

ये ऐब (नुक़्स) वो हैं जिनसे जानवर घट जाता है, उसका गोश्त नाक़िस हो जाता है, दूसरी बकरियाँ चरती चुगती रहती हैं और यह अपनी कमज़ोरी की वजह से चारा पूरा नहीं पाता। इसी लिये इस हदीस के मुताबिक़ इमाम शाफ़ई रह. वग़ैरह के नज़दीक इसकी क़ुरबानी नाजायज़ है। हाँ बीमार जानवर के बारे में जिसकी बीमारी ख़तरनाक दर्जे की न हो, बहुत कम हो, इमाम साहिब के दोनों क़ौल हैं। अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने मना फ़रमाया बिल्कुल सींग कटे जानवर से, और बिल्कुल कमज़ोर जानवर से, जो अपनी कमज़ोरी की वजह से हमेशा ही रेवड़ के पीछे रह जाता हो, या ज़्यादा उम्र वाला होने की वजह से। और लंगड़े जानवर से। पस इन तमाम ऐबों वाले जानवरों की क़ुरबानी नाजायज़ है। हाँ अगर क़ुरबानी के लिये सही-सालिम बिना ऐब का जानवर मुक़र्रर कर देने (यानी ख़रीद लेने या तय कर देने) के बाद इत्तिफ़ाक़न उसमें कोई ऐसी बात आ जाये, जैसे लूला लंगड़ा वग़ैरह हो जाये तो हज़रत इमाम शाफ़ई रह. के नज़दीक उसकी क़ुरबानी बिला-शुब्हा जायज़ है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. इसके ख़िलाफ़ हैं। इमाम शाफ़ई रह. की दलील वह हदीस है जो मुस्नद अहमद में हज़रत अबू सईद रज़ि. से मन्क़ूल है कि मैंने क़ुरबानी के लिये जानवर ख़रीदा, उस पर एक भेड़िये ने हमला किया और उसकी रान का बोटा तोड़ लिया, मैंने हुज़ूर सल्ल. से वाक़िआ बयान किया तो आपने फ़रमाया तुम उस जानवर की क़ुरबानी कर सकते हो। पस ख़रीदते वक़्त जानवर मोटा-ताज़ा होना, तैयार होना, बेऐब होना चाहिये, जैसे हुज़ूर सल्ल. का हुक्म है कि आँख कान देख लिया करो।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने एक बहुत ही उम्दा ऊँट को क़ुरबानी के लिये नामज़द (तय और मुक़र्रर) किया। लोगों ने उसकी क़ीमत तीन सौ अशरफ़ी लगाई तो आपने हुज़ूर सल्ल. से मसला मालूम किया कि अगर आप इजाज़त दें तो मैं उसे बेच दूँ और उसकी क़ीमत से और जानवर बहुत से ख़रीद लूँ और उन्हें

Maktab E Ashraf

अल्लाह के रास्ते में क़ुरबान कर दूँ? आप सल्ल. ने मना फ़रमा दिया और हुक्म दिया कि उसी को अल्लाह के रास्ते में ज़िबह करो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ुरबानी के ऊँट अल्लाह के शआ़इर (अल्लाह की यादगारों) में से हैं। मुहम्मद बिन अबी मूसा फ़रमाते हैं कि अ़रफ़ात में ठहरना और मुज़्दलिफ़ा और शैतानों को कंकरी मारना और सर मुंडवाना और क़ुरबानी के ऊँट, ये सब अल्लाह के शआ़इर हैं। इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि इन सबसे बढ़कर बैतुल्लाह शरीफ़ है।

फिर फ़रमाता है कि उन जानवरों के बालों में, ऊन में तुम्हारे लिये फ़ायदे (लाभ) हैं, उन पर तुम सवार होते हो, उनकी खालें तुम्हारे लिये कारामद हैं। यह सब एक मुक़र्रर वक़्त तक यानी जब तक उसे अल्लाह की राह के लिये ख़ास नहीं किया, उनका दूध पियो, उनसे नस्लें हासिल करो, जब क़ुरबानी के लिये मुक़र्रर कर दिया फिर वह ख़ुदा की चीज़ हो गयी।

बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि अगर ज़रूरत हो तो अब भी सवारी ले सकता है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि एक शख़्स को अपनी क़ुरबानी का जानवर हाँकते हुए देखकर आपने फ़रमाया- इस पर सवार हो जाओ। उसने कहा हुज़ूर! मैं इसकी क़ुरबानी की नीयत कर चुका हूँ। आपने दूसरी या तीसरी बार फ़रमाया अफ़सोस! बैठ क्यों नहीं जाता।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि जब ज़रूरत और हाजत हो तो सवार हो जाया करो। एक शख़्स की क़ुरबानी की ऊँटनी ने बच्चा दिया तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उसे हुक्म दिया कि इसको दूध पेट भरकर पी लेने दे, फिर भी अगर बच जाये तो ख़ैर तू अपने काम में ला और क़ुरबानी वाले दिन इसे और इस बच्चे दोनों को अल्लाह तआ़ला के नाम पर ज़िबह कर दे।

फिर फ़रमाता है कि उनकी क़ुरबानी की जगह बैतुल्लाह शरीफ़ है, जैसे फ़रमान है:

هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ.

शर्त यह है कि नियाज़ के तौर पर काबे तक पहुँचाई जाये। (सूरः मायदा आयत 95)

एक और आयत में है:

وَالْهَدْىَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ.

और क़ुरबानी के जानवर को जो रुका हुआ रह गया। (सूरः फ़तह आयत 25)

बैतुल-अ़तीक़ के मायने इससे पहले अभी-अभी बयान हो चुके हैं (यानी सबसे पहला और पुराना ख़ुदा का घर है जो इस ज़मीन पर बनाया गया)। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि बैतुल्लाह का तवाफ़ करने वाला एहराम से हलाल हो जाता है, दलील में यही आयत तिलावत फ़रमाई।

और (जितने शरीअ़तों वाले गुज़रे हैं उनमें से) हमने हर उम्मत के लिए क़ुरबानी करना इस ग़र्ज़ से मुक़र्रर किया था कि वे उन (मख़्सूस) चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन को अ़ता फ़रमाए थे, सो (इससे यह बात निकल आई कि) तुम्हारा (हक़ीक़ी) माबूद एक ही ख़ुदा	وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۭ فَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ۭ

Maktab_E_Ashraf

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ
اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝

है तो तुम पूरी तरह उसी के होकर रहो। आप (अल्लाह के अहकाम के सामने ऐसे) गर्दन झुका देने वालों को (जन्नत वग़ैरह की) ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। (34) जो ऐसे हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जो उन मुसीबतों पर जो कि उनपर पड़ती हैं सब्र करते हैं, और जो नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से (हुक्म और तौफ़ीक़ के मुताबिक़) ख़र्च करते हैं। (35)

हर क़ौम का कोई दीन, क़िब्ला और मज़हब है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तमाम उम्मतों में, हर मज़हब में, हर गिरोह को हमने क़ुरबानी का हुक्म दिया था, इसलिये एक दिन ईद का मुक़र्रर था। वे भी ख़ुदा के नाम ज़बीहा करते थे, सबके सब मक्का शरीफ़ में अपनी क़ुरबानियाँ भेजते थे, ताकि क़ुरबानी के चौपाये जानवरों पर ज़िबह के वक़्त अल्लाह का नाम ज़िक्र करें। हुज़ूर सल्ल. के पास भी दो भेड़े चितकबरे बड़े-बड़े सींगों वाले लाये गये, आपने उन्हें लेटाकर उनकी गर्दन पर पाँव रखकर "बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर" पढ़कर ज़िबह किया। मुस्नद अहमद में है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हुज़ूर सल्ल. से मालूम किया कि ये क़ुरबानियाँ क्या हैं? आपने जवाब दिया कि तुम्हारे बाप इब्राहीम की सुन्नत। पूछा कि हमें इसमें क्या मिलता है? फ़रमाया हर बाल के बदले एक नेकी। मालूम किया और ऊन का क्या हुक्म है? फ़रमाया ऊन के हर रुएँ के बदले एक नेकी। इसे इमाम इब्ने माजा रह. भी लाये हैं।

तुम सबका ख़ुदा एक है, शरीअ़त के बाज़ अहकाम अदल-बदल होते रहे लेकिन तौहीद में, ख़ुदा के एक होने (के अक़ीदे) में, किसी रसूल को, किसी नेक उम्मत को इख़्तिलाफ़ नहीं हुआ। सब ख़ुदा की तौहीद और उसी की इबादत की तरफ़ तमाम जहान को बुलाते रहे। सब पर अव्वल "वही" यही नाज़िल होती रही। पस तुम सब उसकी तरफ़ झुक जाओ, उसके होकर रहो, उसके अहकाम की पाबन्दी करो, उसकी इताअ़त में मज़बूत बनो। जो लोग मुत्मईन हैं, जो आ़जिज़ी और विनम्रता वाले हैं, जो तक़वे वाले हैं, जो ज़ुल्म से बेज़ार हैं, मज़लूमी की हालत में बदला लेने के आ़दी नहीं, मर्ज़ी-ए-मौला रब की रज़ा पर राज़ी हैं उन्हें ख़ुशख़बरियाँ सुना दें, वे मुबारकबाद के क़ाबिल हैं। जो अल्लाह का ज़िक्र सुनते हैं, दिल नर्म करके ख़ौफ़े ख़ुदा से पुर करके रब की तरफ़ झुक जाते हैं, कठिन कामों पर सब्र करते हैं, मुसीबतों पर सब्र करते हैं। इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम अगर तुमने सब्र व सहार की आ़दत न डाली तो तुम बरबाद कर दिये जाओगे।

आगे फ़रमाया कि जो फ़रीज़ा-ए-ख़ुदावन्दी के पाबन्द हैं और अल्लाह के हक़ को अदा करने वाले हैं, और अल्लाह का दिया हुआ देते रहते हैं, अपने घराने के लोगों को फ़क़ीरों मोहताजों को और तमाम मख़्लूक़ को जो भी ज़रूरतमन्द हों, सबके साथ सुलूक व एहसान से पेश आते हैं। ख़ुदा की हदों (सीमाओं) की

हिफ़ाज़त करते हैं, मुनाफ़िक़ों की तरह नहीं कि एक काम करें तो एक को छोड़ दें। सूरः बराअत में भी यही सिफ़तें बयान फ़रमाई हैं और वहीं अल्हम्दु लिल्लाह इसकी पूरी तफ़सीर भी हम बयान कर आये हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○	और क़ुरबानी के ऊँट (और गाय और इसी तरह भेड़ और बकरी को भी) हमने अल्लाह (के दीन) की यादगार बनाया है, इन (जानवरों) में तुम्हारे (और भी) फ़ायदे हैं, सो तुम उन पर खड़े करके (ज़िबह करने के वक़्त) अल्लाह का नाम लिया करो। पस जब वे (किसी) करवट के बल गिर पड़ें (और ठंडे हो जाएँ) तो तुम ख़ुद भी खाओ और बेसवाल और सवाली (मोहताज) को भी खाने को दो (और) हमने इन (जानवरों) को इस तरह तुम्हारे हुक्म के ताबे कर दिया, ताकि तुम (इस ताबे कर देने पर अल्लाह तआ़ला का) शुक्र करो। (36)

क़ुरबानी के ऊँट

यह भी अल्लाह तआ़ला का एहसान है कि उसने जानवर पैदा किये और उन्हें अपने नाम पर क़ुरबान करने और अपने घर बतौर क़ुरबानी के पहुँचाने का हुक्म दिया, और उन्हें अल्लाह के शआ़इर (यानी अल्लाह की यादगार और निशानियाँ) क़रार दिया और हुक्म फ़रमायाः

لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ............ الخ.

कि न तो ख़ुदा के इन अ़ज़मत वाले निशानों की बेअदबी करो न हुर्मत वाले महीनों की गुस्ताख़ी करो......।

पस हर ऊँट गाय जो क़ुरबानी के लिये मुक़र्रर कर दिया जाये, वह "बुद्न" में दाख़िल है अगरचे बाज़ लोगों ने सिर्फ़ ऊँट को ही "बुद्न" कहा है, लेकिन सही यह है कि ऊँट तो है ही, गाय भी इसमें शामिल है। हदीस में है कि जिस तरह ऊँट सात आदमियों की तरफ़ से क़ुरबान हो सकता है इसी तरह गाय भी। जाबिर इब्ने अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से सही मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है कि हमें रसूलुल्लाह सल्ल. ने हुक्म दिया कि हम ऊँट में सात शरीक हो जायें और गाय में भी सात आदमी शिर्कत कर लें। इमाम इस्हाक़ बिन राहवैह वग़ैरह तो फ़रमाते हैं कि इन दोनों जानवरों में दस-दस आदमी शरीक हो सकते हैं। मुस्नद अहमद और सुनन नसाई में भी ऐसी हदीस आयी है। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाया कि इन जानवरों में तुम्हारा आख़िरत का नफ़ा है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि बक़्र-ईद वाले दिन इनसान का कोई अ़मल ख़ुदा के नज़दीक क़ुरबानी से ज़्यादा पसन्दीदा नहीं, यह जानवर क़ियामत के दिन अपने सींगों ख़ुरों और बालों समेत इनसान की नेकियों में पेश किया जायेगा। याद रखो कि क़ुरबानी के ख़ून का क़तरा ज़मीन पर गिरने से पहले ख़ुदा के यहाँ पहुँच जाता है। पस ठंडे दिल से क़ुरबानियाँ करो।

(इब्ने माजा तिर्मिज़ी) हज़रत सुफियान सौरी रह. तो कर्ज़ उठाकर भी क़ुरबानी किया करते थे (यह उनके क़ुरबानी के अमल से लगाव की बात थी वरना कर्ज़ लेकर क़ुरबानी करना ज़रूरी नहीं) और लोगों के मालूम करने पर फ़रमाते कि खुदा तआ़ला फ़रमाता है कि इसमें तुम्हारा भला और फ़ायदा है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि किसी ख़र्च का फ़ज़्ल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उस ख़र्च के मुक़ाबले में जो बक़र-ईद वाले दिन की क़ुरबानी पर किया जाये हरगिज़ नहीं। (दारे क़ुतनी)

पस खुदा फ़रमाते हैं- तुम्हारे लिये उन जानवरों में सवाब है, नफ़ा है, ज़रूरत के वक़्त दूध पी सकते हो, सवार हो सकते हो। फिर उनकी क़ुरबानी के वक़्त अपना नाम पढ़ने की हिदायत करता है। हज़रत जाबिर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने ईदुल-अज़्हा (बक़र-ईद) की नमाज़ रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ पढ़ी। नमाज़ से फ़रागत पाते ही आपके सामने भेड़ा लाया गया जिसे आपने "बिस्मिल्लाही वल्लाहु अकबर" पढ़कर ज़िबह किया। फिर कहा खुदाया! यह मेरी तरफ़ से है और मेरी उम्मत में से जो क़ुरबानी न कर सके उसकी तरफ़ से है। (अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

फ़रमाते हैं कि ईद वाले दिन आपके पास दो भेड़े लाये गये, उन्हें क़िब्ला रुख़ करके आपने:

اِنِّی وَجَّھْتُ وَجْھِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ. اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ. لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَبِذٰلِکَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ. اَللّٰھُمَّ مِنْکَ وَلَکَ عَنْ مُحَمَّدٍ وَاُمَّتِہٖ.

"इन्नी वज्जहतु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-तरस्समावाति वल-अर्-ज़ हनीफ़ंव्-व मा अ-न मिनल् मुश्रिकीन। इन्-न सलाती व नुसुकी व महया-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन। ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिरतु व अ-न अव्वलुल् मुस्लिमीन। अल्लाहुम्-म मिन्-क व ल-क अ़न मुहम्मदिन् व उम्मतिही" पढ़कर "बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर" कहकर ज़िबह कर डाला।

हज़रत अबू राफ़े रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ुरबानी के मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्ल. दो भेड़े मोटे ताज़े तैयार उम्दा बड़े सींगों वाले चितकबरे ख़रीदते, जब नमाज़ पढ़कर ख़ुतबे से फ़रागत पाते तो एक जानवर आपके पास लाया जाता, आप वहीं ईदगाह में ही ख़ुद अपने हाथ से ज़िबह करते और फ़रमाते या अल्लाह! यह मेरी सारी उम्मत की तरफ़ से है, जो भी तौहीद व सुन्नत (अल्लाह के एक माबूद होने और मेरे सच्चा रसूल होने) का गवाह है। फिर दूसरा जानवर हाज़िर किया जाता जिसे ज़िबह करके फ़रमाते यह मुहम्मद और मुहम्मद की आल की तरफ़ से है। फिर दोनों का गोश्त मिस्कीनों को भी देते और आपके घर वाले भी खाते। (अहमद, इब्ने माजा)

"सवाफ़" के मायने इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने ऊँट को तीन पैरों पर खड़ा करके उसका बायाँ हाथ बाँधकर "बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहुम्-म मिन्-क व ल-क" पढ़कर उसे क़ुरबान करने के किये हैं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने एक शख़्स को देखा कि उसने अपने ऊँट को क़ुरबान करने के लिये बैठाया है, तो आपने फ़रमाया इसे खड़ा कर दे और इसका पैर बाँधकर इसे क़ुरबान कर, यही सुन्नत है अबुल-क़ासिम (यानी हुज़ूर सल्ल.) की।

हज़रत जाबिर रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा ऊँट का एक पाँव बाँधकर उसको तीन पाँव पर खड़ा करके ही क़ुरबान करते। (अबू दाऊद) हज़रत सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने सुलैमान बिन

अ़ब्दुल-मलिक से फ़रमाया था कि बायीं तरफ़ से क़ुरबान किया करो। नबी करीम सल्ल. के आख़िरी हज का बयान करते हुए हज़रत जाबिर रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने तरेसठ (63) ऊँट अपने हाथ मुबारक से क़ुरबान किये, आपके हाथ में छोटा नेज़ा था जिससे आप ज़ख़्मी कर रहे थे।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में सवाफ़न है, यानी खड़े करके पाँव बाँधकर। 'सवाफ़' के मायने ख़ालिस के भी किये गये हैं, यानी जिस तरह जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के ज़माने में ख़ुदा के साथ दूसरों को शरीक करते थे तुम न करो, सिर्फ़ एक अल्लाह के नाम पर ही क़ुरबानियाँ करो। फिर जब ये ज़मीन पर गिर पड़ें यानी क़ुरबान हो जायें, ठंडे पड़ जायें तो ख़ुद खाओ और दूसरों को भी खिलाओ। नेज़ा मारते ही टुकड़े काटने शुरू न करो, जब तक रूह न निकल जाये और ठंडा न पड़ जाये। चुनाँचे एक हदीस में भी आया है कि रूहों के निकालने में जल्दी न करो। सही मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ के साथ अच्छा सुलूक करना लिख दिया है, दुश्मनों को मैदाने जंग में क़त्ल करते वक़्त भी नेक सुलूक रखो और जानवरों को ज़िबह करने के वक़्त अच्छी तरह से नर्मी के साथ ज़िबह करो, छुरी तेज़ कर लिया करो और जानवर को तकलीफ़ न दिया करो। फ़रमान है कि जानवर में जब तक जान है और उसके जिस्म का कोई हिस्सा काट लिया जाये तो उसका खाना हराम है। (इमाम अबू दाऊद व तिर्मिज़ी)

फिर फ़रमाया कि उसे ख़ुद खाओ। बाज़ बुज़ुर्ग तो फ़रमाते हैं कि यह खाना मुबाह (जायज़) है। इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि मुस्तहब (पसन्दीदा) है। बाज़ लोग कहते हैं कि वाजिब है। और मिस्कीनों को भी चाहे वे घरों में बैठने वाले हों, चाहे दर-बदर सवाल करने वाले। यह भी मतलब है कि "क़ानेअ़" तो वह है जो सब्र से बैठा रहे, और "मोअ़तर्र" वह है जो इधर-उधर जाये लेकिन सवाल न करे। यह भी कहा गया है कि "क़ानेअ़" वह है जो सिर्फ़ सवाल पर बस करे और "मोअ़तर्र" वह है जो सवाल तो न करे लेकिन अपनी आ़जिज़ी मिस्कीनी का इज़हार करे। यह भी नक़ल किया गया है कि "क़ानेअ़" वह है जो मिस्कीन हो, आने-जाने वाला, और "मोअ़तर्र" से मुराद दोस्त और कमज़ोर लोग और वह पड़ोसी जो अगरचे मालदार हों लेकिन तुम्हारे पास जो कुछ माल आये-जाये उसे वे देखते हों, वे हैं जो लालच और तमन्ना रखते हों और वे भी जो अमीर फ़क़ीर मौजूद हों। यह भी कहा गया है कि "क़ानेअ़" से मुराद मक्का वाले हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. का फ़रमान है कि "क़ानेअ़" से मुराद तो साईल (माँगने और सवाल करने वाला) है, क्योंकि वह अपना हाथ सवाल के लिये बढ़ाता है, और "मोअ़तर्र" से मुराद वह है जो हेरे-फेरे करे (यानी इधर-उधर घूमे) कि कुछ मिल जाये।

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि क़ुरबानी के गोश्त के तीन हिस्से करने चाहियें- तिहाई अपने खाने को, तिहाई दोस्तों के देने को, तिहाई सदक़ा करने को। हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैंने तुम्हें क़ुरबानी के गोश्त को जमा करके रखने से मना कर दिया था कि तीन दिन से ज़्यादा तक न रोका जाये, अब मैं इजाज़त देता हूँ कि खाओ, जमा करो जिस तरह चाहो। एक और रिवायत में है कि खाओ, जमा करो और सदक़ा करो। एक और रिवायत में है कि खाओ खिलाओ और अल्लाह की राह में दो।

बाज़ लोग कहते हैं कि क़ुरबानी करने वाला आधा गोश्त ख़ुद खाये और बाक़ी आधा सदक़ा कर दे, क्योंकि क़ुरआन में फ़रमाया है कि ख़ुद खाओ और मोहताज फ़क़ीर को खिलाओ। एक और हदीस में भी है कि खाओ, जमा ज़ख़ीरा करो और अल्लाह की राह में दो। अब जो शख़्स अपनी क़ुरबानी का सारा गोश्त ख़ुद ही खा जाये तो एक क़ौल यह भी है कि उस पर कुछ हर्ज नहीं। बाज़ कहते हैं कि उस पर वैसी ही क़ुरबानी या उसकी क़ीमत की अदायेगी है। बाज़ कहते हैं कि आधी क़ीमत दे, बाज़ आधा गोश्त। बाज़

कहते हैं कि उसके बदन के टुकड़ों में से छोटे से छोटे हिस्से और टुकड़े की क़ीमत उसके ज़िम्मे है, बाक़ी माफ़ है।

खाल के बारे में मुस्नद अहमद में हदीस है कि खाओ और अल्लाह के रास्ते में दो, उसके चमड़ों से फ़ायदा उठाओ लेकिन उन्हें बेचो नहीं। बाज़ उलेमा ने बेचने की इजाज़त व छूट दी है। बाज़ कहते हैं कि ग़रीबों में तक़सीम कर दिये जायें।

मसलाः हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- सबसे पहले हमें उस दिन नमाज़े ईद अदा करनी चाहिये, फिर लौटकर क़ुरबानियाँ करनी चाहियें, जो ऐसा करे उसने सुन्नत की अदायेगी की और जिसने नमाज़ से पहले ही क़ुरबानी कर ली उसने गोया अपने वालों (घर वालों और बाल-बच्चों) के लिये गोश्त जमा कर लिया, उसे क़ुरबानी से कोई लगाव नहीं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

इसी लिये इमाम शाफ़ई रह. और उलेमा की एक जमाअ़त का ख़्याल है कि क़ुरबानी का अव्वल वक़्त उस वक़्त होता है जब सूरज निकल आये और इतना वक़्त गुज़र जाये कि नमाज़ हो ले और दो ख़ुतबे हो लें। इमाम अहमद रह. के नज़दीक उसके बाद का इतना वक़्त भी है कि इमाम ज़िबह कर ले, क्योंकि सही मुस्लिम में है कि इमाम जब तक क़ुरबानी न करे तुम क़ुरबानी न करो। इमाम अबू हनीफ़ा रह. के नज़दीक तो गाँव वालों पर ईद की नमाज़ ही नहीं, इसलिये कहते हैं कि वे सुबह सादिक़ के बाद (यानी फ़जर की नमाज़ से पहले) ही क़ुरबानी कर सकते हैं, हाँ शहरी लोग जब तक इमाम नमाज़ से फ़ारिग़ न हो क़ुरबानी न करें। वल्लाहु आलम

फिर यह भी कहा गया है कि सिर्फ़ ईद वाले दिन ही क़ुरबानी करने का हुक्म है। एक और क़ौल है कि शहर वालों के लिये तो यही है, क्योंकि यहाँ क़ुरबानियाँ आसानी से मिल जाती हैं, लेकिन गाँव वालों के लिये ईद का दिन और उसके बाद के तीन दिन। यह भी कहा गया है कि दसवीं और ग्यारहवीं तारीख़ सबके लिये क़ुरबानी है। यह भी कहा गया है कि ईद के बाद के दो दिन और यह भी कहा गया है कि ईद का दिन और उसके बाद के तीन दिन, जो "तशरीक़" के दिन हैं। इमाम शाफ़ई का मज़हब यही है, क्योंकि हज़रत ज़ुबैर बिन मुतअ़िम रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- "अय्यामे तशरीक़" (बक़र-ईद के बाद के वे तीन दिन जिनमें फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद तकबीर पढ़ी जाती है) सब क़ुरबानी के हैं। (अहमद, इब्ने हिब्बान) कहा गया है कि क़ुरबानी के दिन ज़िलहिज्जा महीने के ख़ात्मे तक हैं, लेकिन यह क़ौल ग़रीब है।

फिर फ़रमाता है कि इसी वजह से हमने उन जानवरों को तुम्हारा फ़रमाँबरदार और हुक्म के ताबे कर दिया है कि जब तुम चाहो सवारी लो, जब चाहो दूध निकाल लो, जब चाहो ज़िबह करके गोश्त खा लो। जैसे सूरः यासीन की आयत 71, 72, 73 में बयान हुआ है। यही फ़रमान यहाँ है कि ख़ुदा की इस नेमत का शुक्र अदा करो और नाशुक्री व नाक़द्री न करो।

अल्लाह के पास न उनका गोश्त पहुँचता है और न उनका ख़ून, और लेकिन उसके पास तुम्हारा तक़्वा पहुँचता है, इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने उन (जानवरों) को तुम्हारे हुक्म के ताबे कर दिया ताकि तुम (अल्लाह की राह में	لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا

उनकी क़ुरबानी करके) इस बात पर अल्लाह की बड़ाई (बयान) करो कि उसने तुमको तौफ़ीक़ दी, और (ऐ मुहम्मद!) इख़्लास वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। (37)	لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰكُمْ ۚ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ○

Mehtab E Ashraf

तक़्वे और परहेज़गारी की ज़रूरत है

इरशाद होता है कि क़ुरबानियों के वक़्त उन पर ख़ुदा का नाम लिया जाये, इसी लिये क़ुरबानियाँ मुक़र्रर हुई हैं कि ख़ालिक़ व राज़िक़ उसे माना जाये न कि क़ुरबानियों के गोश्त व ख़ून से ख़ुदा को कोई नफ़ा होता हो। अल्लाह तआ़ला सारी मख़्लूक़ से ग़नी (बेपरवाह) और तमाम बन्दों से बेनियाज़ है, जाहिलीयत की बेवक़ूफ़ियों में से एक यह भी थी कि क़ुरबानी के जानवर का गोश्त अपने बुतों के सामने रख देते थे और उन पर ख़ून का छींटा देते थे। यह भी दस्तूर था कि बैतुल्लाह शरीफ़ पर क़ुरबानी का ख़ून छिड़कते। मुसलमान होकर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने ऐसा करने के बारे में सवाल किया जिस पर यह आयत उतरी, कि ख़ुदा तो तक़्वे (परहेज़गारी और दिलों के हाल) को देखता है, उसी को क़बूल फ़रमाता है और उसी पर बदला इनायत फ़रमाता है। चुनाँचे सही हदीस में है कि ख़ुदा तआ़ला तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता, न उसकी नज़रें तुम्हारे माल पर हैं, बल्कि उसकी निगाहें तुम्हारे दिलों पर और तुम्हारे आमाल पर हैं।

एक और हदीस में है कि ख़ैरात सदक़ा साईल (माँगने वाले) के हाथ में पड़े इससे पहले ख़ुदा के हाथ में चला जाता है। क़ुरबानी के जानवर के ख़ून का क़तरा ज़मीन पर टपके इससे पहले ख़ुदा के यहाँ पहुँच जाता है। इसका भी यही मतलब है कि ख़ून का क़तरा अलग होते ही क़ुरबानी मक़बूल हो जाती है। वल्लाहु आलम

आ़मिर शाबी से क़ुरबानी की खालों के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया- ख़ुदा को गोश्त व ख़ून नहीं पहुँचता, अगर चाहो बेच दो, अगर चाहो खुद रख लो, अगर चाहो अल्लाह की राह में दे दो। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने ये जानवर तुम्हारे क़ब्ज़े में किये हैं कि तुम ख़ुदा के दीन और उसकी शरीअ़त की राह पाकर उसकी मर्ज़ी के काम करो, और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कामों से रुक जाओ, और उसकी अ़ज़मत व बड़ाई बयान करो। जो लोग नेक काम करने वाले हैं, अल्लाह की हदों के पाबन्द हैं, शरीअ़त के आ़मिल हैं, रसूलों की तस्दीक़ करते हैं, वे मुबारकबाद और ख़ुशख़बरी के हक़दार हैं।

मसलाः इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम सुफ़ियान सौरी रह. का क़ौल है कि जिसके पास ज़कात के निसाब के बराबर माल हो उस पर क़ुरबानी वाजिब है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. के नज़दीक यह शर्त भी है कि वह अपने घर में मुक़ीम हो (यानी कहीं सफ़र में न हो), चुनाँचे एक सही हदीस में है कि जिसे गुंजाईश हो और क़ुरबानी न करे तो वह हमारी ईदगाह के क़रीब न आये। यह रिवायत ग़रीब है और इमाम अहमद रह. इसे मुन्कर बतलाते हैं। हज़रत इब्ने उमर फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. बराबर दस साल तक हर साल क़ुरबानी करते रहे। (तिर्मिज़ी)

इमाम शाफ़ई रह. और हज़रत इमाम अहमद रह. का मज़हब है कि क़ुरबानी वाजिब व फ़र्ज़ नहीं बल्कि मुस्तहब है, क्योंकि हदीस में आया है कि माल में ज़कात के सिवा और कोई फ़र्ज़ियत नहीं। यह रिवायत भी पहले बयान हो चुकी है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपनी तमाम उम्मत की तरफ़ से क़ुरबानी की। पस क़ुरबानी का

वाजिब होना तो ज़िम्मे से उतर गया। हज़रत अबू सरीहा रह. फ़रमाते हैं मैं हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि. के पड़ोस या गली में से या घर में से किसी एक ने कर ली तो बाक़ी सब पर से हट गयी। इसलिये कि मक़सूद सिर्फ़ शिआ़र (इस्लामी यादगार और निशान) का ज़ाहिर करना है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मैदाने अ़रफ़ात में फ़रमाया- हर घर वालों पर हर साल 'क़ुरबानी' और 'अ़तीरा' है। कहा जानते हो 'अ़तीरा' क्या चीज़ है? वही जिसे तुम रजीबा (ज़िबह करना) कहते हो। इसकी सनद में कलाम किया गया है। हज़रत अबू अय्यूब रज़ि. फ़रमाते हैं कि सहाबा हुज़ूर सल्ल. की मौजूदगी में अपने पूरे घर की तरफ़ से एक बकरी अल्लाह की राह में ज़िबह कर दिया करते थे, ख़ुद भी खाते औरों को भी खिलाते, फिर लोगों ने इसमें वह कर लिया जो तुम देख रहे हो। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम अपनी और अपने तमाम घर वालों की तरफ़ से एक बकरी क़ुरबानी किया करते थे। (बुख़ारी)

अब क़ुरबानी के जानवर की उम्र का बयान मुलाहिज़ा हो। सही मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि न ज़िबह करो सिवाय मुसिन्ना (बड़ी उम्र वाले) के, हाँ मगर उस सूरत में कि वह तुम पर भारी पड़ जाये तो फिर भेड़ का बच्चा भी छह माह का ज़िबह कर सकते हो। इमाम ज़ोहरी तो कहते हैं कि 'जज़आ' यानी छह माह का कोई जानवर क़ुरबानी में काम नहीं आ सकता। और इसके विपरीत इमाम औज़ाई का मज़हब है, कि हर जानवर का 'जज़आ' काफ़ी है। लेकिन ये दोनों क़ौल कमी-बेशी पर आधारित हैं, जमहूर का मज़हब यह है कि ऊँट गाय बकरी तो वह जायज़ है जो 'सनी' हो। और भेड़ा छह माह का भी जायज़ है। ऊँट तो उस वक़्त 'सनी' होता है जब पाँच साल पूरे करके छठे में लग जाये, और गाय जब दो साल पूरे करके तीसरे में लग जाये। और यह भी कहा गया है कि तीन साल गुज़ार कर चौथे में लग गया हो और बकरी का 'सनी' वह है जो दो साल गुज़ार चुका हो और 'जज़आ' कहते हैं उसे जो साल भर का हो गया हो। और कहा गया है कि जो दस माह का हो। एक क़ौल है कि जो आठ माह का हो, एक क़ौल है कि जो छह माह का हो, इससे कम मुद्दत का कोई क़ौल नहीं। इससे कम उम्र वाले को 'हमल' कहते हैं, जब तक कि उसकी पीठ पर बाल खड़े हों और बाल लेट जायें और दोनों तरफ़ को झुक जायें तो उसे 'जज़आ' कहा जाता है। वल्लाहु आलम

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۟	बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला (उन मुश्रिकीन के ग़लबे और तकलीफ़ पहुँचाने की क़ुदरत को) ईमान वालों से (जल्द ही) हटा देगा, बेशक अल्लाह तआ़ला किसी दग़ाबाज़, कुफ़्र करने वाले को नहीं चाहता। (38)

ع ٥ ١٢

ख़ुदा तआ़ला इन्हें पसन्द नहीं करता

अल्लाह तआ़ला अपनी तरफ़ से ख़बर दे रहा है कि जो उसके बन्दे उस पर भरोसा रखें, उसकी तरफ़ झुकते रहें उन्हें वह अपनी अमान नसीब फ़रमाता है। शरीरों की बुराईयाँ, दुश्मनों की बदियाँ ख़ुद ही उनसे दूर कर देता है। अपनी मदद उनपर नाज़िल फ़रमाता है, अपनी हिफ़ाज़त में उन्हें रखता है। जैसे फ़रमान है:

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ.

Maktab E Ashraf

यानी क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिये काफ़ी नहीं? एक और आयत में है:

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ......... الخ.

कि जो ख़ुदा पर भरोसा रखे ख़ुदा आप उसे काफ़ी है।

दग़ाबाज़ और नाशुक्रे ख़ुदा की मुहब्बत से मेहरूम हैं। अपने अ़हद व पैमान पूरे न करने वाले ख़ुदा की नेमतों के मुन्किर (इनकार करने वाले) ख़ुदा के प्यार से दूर हैं।

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ ۝ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝	(अब) लड़ने की उन लोगों को इजाज़त दे दी गई जिनसे (काफ़िरों की तरफ़ से) लड़ाई की जाती है, इस वजह से कि उनपर (बहुत) ज़ुल्म किया गया है, और बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला उनके ग़ालिब कर देने पर पूरी क़ुदरत रखता है। (39) (आगे उनकी मज़लूमियत का बयान है) जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए, सिर्फ़ इतनी (बात) पर कि वे (यूँ) कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है, और अगर (यह बात न होती कि) अल्लाह तआ़ला (हमेशा से) लोगों का एक-दूसरे (के हाथ) से ज़ोर न घटवाता रहता तो (अपने-अपने ज़मानों में) ईसाइयों के ख़ल्वत-ख़ाने और इबादत-ख़ाने और यहूद के इबादत-ख़ाने और (मुसलमानों की) वे मस्जिदें जिनमें अल्लाह तआ़ला का नाम कसरत से लिया जाता है, सब ढहा दिए गए होते। और बेशक अल्लाह उसकी मदद करेगा जो अल्लाह के दीन की मदद करेगा, बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला (और) ग़लबे वाला है। (वह जिसको चाहे ग़लबा और क़ुव्वत दे सकता है)। (40)

मज़लूमों के साथ अल्लाह है

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा मदीने से भी निकाले जाने लगे और काफ़िर मक्के से चढ़ दौड़े तब जिहाद की इजाज़त की यह आयत उतरी। बहुत से बुज़ुर्ग और पुराने उलेमा से मन्क़ूल है कि जिहाद की यह पहली आयत है जो क़ुरआन में उतरी। इसी से बाज़ बुज़ुर्गों ने दलील पकड़ी है कि यह सूरत मदनी है। जब नबी करीम सल्ल. ने मक्का शरीफ़ से हिजरत की, अबू बक्र रज़ि. की ज़बान से निकला कि अफ़सोस इन काफ़िरों ने ख़ुदा के पैग़म्बर को वतन से निकाला, यक़ीनन ये तबाह होंगे। फिर यह आयत उतरी तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने जान लिया कि जंग होकर रहेगी। ख़ुदा अपने मोमिन बन्दों की मदद पर क़ादिर है। अगर चाहे तो बिना लड़े-भिड़े उन्हें ग़ालिब कर दे लेकिन

वह आज़माना चाहता है, इसलिये हुक्म दिया कि उन काफ़िरों की गर्दनें मारो.........। एक और आयत में है फ़रमायाः

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ......... الخ.

उनसे लड़ो, अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों सज़ा देगा, उन्हें रुस्वा करेगा और उन पर तुम्हें ग़ालिब करेगा। और मोमिनों को हौसले निकालने का वक़्त देगा कि उनके कलेजे ठंडे हो जायें, साथ ही जिसे चाहेगा तौबा की तौफ़ीक़ देगा, अल्लाह इल्म व हिक्मत वाला है। एक और आयत में है:

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا مِنْكُمْ......... الخ.

यानी क्या तुमने सोच रखा है कि तुम छोड़ दिये जाओगे हालाँकि अब तक वे नहीं खुले (ज़ाहिर हुए) जो मुजाहिद हैं और ख़ुदा व रसूल और मुसलमानों के सिवा किसी से दोस्ती और ताल्लुक़ का इज़हार नहीं करते। समझ लो कि ख़ुदा तुम्हारे आमाल से बाख़बर है।

एक और आयत में है- क्या तुमने यह गुमान किया है कि तुम जन्नत में चले जाओगे हालाँकि अब तक मुजाहिदीन (अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले) साबिरीन (हालात पर सब्र करने वाले) दूसरों से मुमताज़ (अलग और नुमायाँ) नहीं हुए।

एक और आयत में फ़रमायाः

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ وَنَبْلُوَاْ اَخْبَارَكُمْ.

हम तुम्हें यक़ीनन आज़मायेंगे यहाँ तक कि तुम में से ग़ाज़ी (अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले) और सब्र करने वाले हमारे सामने ज़ाहिर हो जायेंगे।

इस बारे में और भी बहुत सी आयतें हैं। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा उनकी इमदाद पर क़ादिर है। और यही हुआ भी कि अल्लाह तआ़ला ने अपने लश्कर को दुनिया पर ग़ालिब कर दिया। जिहाद को शरीअ़त ने जिस वक़्त मशरूअ़ फ़रमाया वह वक़्त भी उसके लिये बिल्कुल मुनासिब और निहायत ठीक था। जब तक कि हुज़ूर सल्ल. मक्के में रहे मुसलमान बहुत ही कमज़ोर थे, तायदाद में भी दस के मुक़ाबले में एक बमुश्किल बैठता, चुनाँचे जब अ़क़बा की रात में अन्सार ने रसूले करीम सल्ल. के हाथ पर बैअ़त की तो उन्होंने कहा कि अगर हुज़ूर सल्ल. हुक्म दें तो इस वक़्त मिना में जितने मुश्रिक लोग जमा हैं उन पर रात का धावा बोला जाये, लेकिन आपने फ़रमाया मुझे अभी इसका हुक्म नहीं दिया गया।

यह याद रहे कि ये हज़रात सिर्फ़ अस्सी से कुछ ऊपर थे जब मुश्रिकों की बग़ावत बढ़ गयी, जब वे सरकशी में हद से गुज़र गये, हुज़ूरे पाक को सख़्त तकलीफ़ें देते देते अब आपके क़त्ल करने के पीछे लग गये, आपको वतन से निकालने के मन्सूबे गाँठने लगे। इसी तरह सहाबा पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़ दिये, ये हज़रात बिल्कुल ख़ाली हाथ सब कुछ छोड़-छाड़कर जहाँ जिसका मौक़ा बना घबराकर चल दिये, कुछ तो हब्शा पहुँचे, कुछ मदीना गये, यहाँ तक कि ख़ुद नबी करीम सल्ल. भी मदीना शरीफ़ तशरीफ़ ले गये। आपके जाँनिसार और परवाने आपके झण्डे तले जोश व ख़रोश से जमा हो गये, लश्करी सूरत बन गयी, कुछ मुसलमान एक झण्डे तले दिखाई देने लगे, क़दम टिकाने की जगह मिल गयी, अब दीन के दुश्मनों से जिहाद के अहकाम नाज़िल हुए।

पस सबसे पहले यही आयत उतरी। इसमें बयान फ़रमाया गया कि ये मुसलमान मज़लूम हैं, इनके घर-

बार इनसे छीन लिये गये हैं, बेवजह घर से बेघर कर दिये गये हैं। मक्का से निकाल दिये गये, मदीना में ख़ाली हाथ पहुँचे, इनका कोई जुर्म सिवाय इसके न था कि सिर्फ़ ख़ुदा के परस्तार थे, रब को एक मानते थे, अपना परवर्दिगार सिर्फ़ अल्लाह को जानते थे। गोया मुश्रिकों के नज़दीक तो यह बात इतना बड़ा जुर्म है जो हरगिज़ किसी सूरत से माफ़ी के क़ाबिल नहीं। अल्लाह का फ़रमान है:

تُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ....... الخ.

तुम्हें और हमारे रसूल को सिर्फ़ इस बिना पर निकालते हैं कि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, जो तुम्हारा हक़ीक़ी परवर्दिगार है।

ख़न्दक़ वालों के क़िस्से में फ़रमाया:

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ.

यानी दर असल उनका कोई क़ुसूर न था सिवाय इसके कि वे अल्लाह तआ़ला ग़ालिब मेहरबान एहसान वाले पर ईमान लाये थे।

फिर फ़रमाता है कि अगर अल्लाह तआ़ला एक का इलाज दूसरे से न करता, अगर हर सैर पर सवा सैर न होता तो ज़मीन में शर व फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) मच जाता। हर ताक़तवर कमज़ोर को निगल जाता। ईसाई आ़बिदों के छोटे इबादत-ख़ानों को 'सवामेअ़' कहते हैं। एक क़ौल यह भी है कि साबी मज़हब के लोगों के इबादत-ख़ानों (पूजा स्थलों) का नाम है। और बाज़ कहते हैं कि मजूसियों (आग को पूजने वालों) के आतिशकदों को 'सवामेअ़' कहते हैं। मुक़ातिल कहते हैं कि ये वे घर हैं जो रास्तों पर होते हैं। "बीयअ़" उनसे बड़े मकानात होते हैं, ये भी ईसाईयों के आ़बिदों (पादरी और इबादत करने वालों) के इबादत-ख़ाने होते हैं। बाज़ कहते हैं कि ये यहूदियों के "कनीसे" हैं। "सलवात" के भी एक मायने तो यही किये गये हैं, बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद गिरजाघर हैं। बाज़ का क़ौल है कि साबी लोगों का इबादत ख़ाना। रास्तों पर जो इबादत के घर अहले किताब के हों उन्हें "सलवात" कहा जाता है, और जो मुसलमानों के हों उन्हें मसाजिद कहते हैं। "फ़ीहा" की ज़मीर (Pronoun) मसाजिद की तरफ़ लौट रही है, इसलिये कि सबसे पहले यही लफ़्ज़ है। यह भी कहा गया है कि मुराद ये सब जगहें हैं यानी दुनिया से अलग-थलग रहने और इसको छोड़ देने वाले लोगों के "सवामेअ़" ईसाईयों के "बियअ़" यहूदियों के "सलवात" और मुसलमानों की मस्जिदें, जिनमें ख़ूब ज़्यादा अल्लाह का नाम लिया जाता है। बाज़ उलेमा का बयान है कि इस आयत में कम से ज़्यादा की तरफ़ मज़मून बयान किया गया है, सबसे ज़्यादा आबाद सबसे बड़ा इबादत-घर जहाँ के आ़बिदों का इरादा सही, नीयत अच्छी और अ़मल नेक है वो मस्जिदें हैं। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा अपने दीन के मददगारों का ख़ुद मददगार है, जैसा कि फ़रमान है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ....... الخ.

यानी ऐ मुसलमानो! तुम ख़ुदा के दीन की इमदाद करोगे तो अल्लाह तआ़ला मदद फ़रमायेगा और तुम्हें साबित-क़दमी (दीन और सही रास्ते पर जमाव) अ़ता फ़रमायेगा। काफ़िरों पर अफ़सोस है और उनके आमाल ग़ारत हैं।

फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने दो वस्फ़ (विशेषतायें) बयान फ़रमाये, क़वी और ताक़तवर होना कि सारी मख़्लूक़ को पैदा कर दिया, इज़्ज़त वाला होना कि सब उसके मातहत हैं। हर एक उसके सामने ज़लील

Maktab E Ashraf

व पस्त, सब उसकी मदद के मोहताज, वह सबसे बेनियाज़, जिसे वह मदद दे वह ग़ालिब, जिस पर से उसकी मदद हट जाये वह मग़लूब। एक जगह फ़रमाता है:

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ. اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ......... الخ.

यानी हमने तो पहले से ही अपने रसूलों से वायदा कर लिया है कि उनकी यक़ीनी तौर पर मदद की जायेगी। और यह कि हमारा लश्कर ही ग़ालिब आयेगा। एक और आयत में है:

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ......... الخ.

ख़ुदा कह चुका है कि मैं और मेरा रसूल ग़ालिब हैं। बेशक अल्लाह तआला क़ुव्वत व इज़्ज़त वाला है।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ○	ये लोग ऐसे हैं कि अगर हम इनको दुनिया में हुकूमत दे दें तो ये लोग (ख़ुद भी) नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और (दूसरों को भी) नेक कामों के करने को कहें और बुरे कामों से मना करें, और सब कामों का अन्जाम तो अल्लाह के ही इख़्तियार में है। (41)

ये अगर ग़ालिब आ जायें

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह आयत हमारे बारे में उतरी है। हम पर ज़ुल्म करते हुए वतन से निकाला गया था, फिर हमें ख़ुदा ने सल्तनत दी, हमने नमाज़ व रोज़े की पाबन्दी के लिये अच्छे कामों का हुक्म दिया और बुराई से रोका। पस यह आयत मेरे और मेरे साथियों के बारे में है। अबुल-आलिया रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद रसूले पाक के सहाबा हैं। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. ने अपने ख़ुतबे में इस आयत की तिलावत फ़रमाकर फ़रमाया- इसमें सिर्फ़ बादशाहों का बयान ही नहीं बल्कि बादशाह व प्रजा दोनों का बयान है। बादशाह पर तो यह है कि अल्लाह के हुक़ूक़ तुमसे बराबर ले, ख़ुदा के हक़ की कोताही के बारे में तुम्हें पकड़े और एक का हक़ दूसरे से दिलवाये, और जहाँ तक मुम्किन हो तुम्हें सीधे रास्ते की रहनुमाई करता रहे। तुम पर उसका यह हक़ है कि ज़ाहिर व बातिन (यानी ज़ाहिरी तौर पर और दिल से) ख़ुशी-ख़ुशी उसकी इताअ़त-गुज़ारी (हुक्मों का पालन) करो। अ़तिया रह. फ़रमाते हैं कि इसी आयत का मज़मून इस आयत में बयान किया गया है:

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ.

(यानी सूरः नूर की आयत 55 में)

कामों का अन्जाम (परिणाम) ख़ुदा के हाथ में है। उम्दा नतीजा परहेज़गारों का होगा, हर नेकी का बदला उसी के यहाँ है।

Maktaba Ashraf

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝ وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ۝

और ये (झगड़ालू) लोग अगर आप को झुठलाते हैं तो (आप ग़मगीन न होईए, क्योंकि) इन लोगों से पहले क़ौमे नूह, आ़द और समूद (42) और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूत (43) और मद्यन वाले (भी अपने-अपने अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को) झुठला चुके हैं, और मूसा को भी (क़िब्त की तरफ़ से) झूठा क़रार दिया गया, सो (झुठलाए जाने के बाद) मैंने (उन) काफ़िरों को (थोड़ी-सी) मोहलत दी, फिर मैंने उनको पकड़ लिया, सो मेरा अ़ज़ाब कैसा हुआ। (44) (ग़र्ज़) कितनी बस्तियाँ हैं जिनको हमने (अ़ज़ाब से) हलाक किया, जिनकी यह हालत थी कि वे नाफ़रमानी करती थीं, सो (अब उनकी कैफ़ियत यह है कि) वे अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं और (इसी तरह उन बस्तियों में) बहुत-से बेकार कुएँ (जो पहले आबाद थे) और बहुत-से क़लई-चूने के महल (भी उन बस्तियों के साथ तबाह हुए) (45) सो क्या ये (इनकारी) लोग मुल्क में चले-फिरे नहीं, जिससे कि उनके दिल ऐसे हो जाएँ कि उनसे समझने लगें, या उनके कान ऐसे हो जाएँ जिससे सुनने लगें। बात यह है कि (न समझने वालों की कुछ) आँखें अन्धी नहीं हो जाया करतीं, बल्कि दिल जो सीनों में हैं वे अन्धे हो जाया करते हैं। (46)

पहली उम्मतें और उनके जुर्मों की एक लम्बी दास्तान

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. को तसल्ली देता है कि मुन्किरों का इनकार आपके साथ कोई नई चीज़ नहीं, नूह से मूसा तक तमाम अम्बिया का इनकार काफ़िर बराबर करते चले आये हैं। दलाईल सामने थे, हक़ खुल चुका था लेकिन मुन्किरों ने मानकर न दिया। मैंने काफ़िरों को मोहलत दी कि ये सोच-समझ लें, अपने अन्जाम पर ग़ौर कर लें, लेकिन जब वे अपनी नमक-हरामी से बाज़ न आये तो मेरे अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हुए। देख ले कि मेरी पकड़ कैसी ज़बरदस्त साबित हुई, किस क़द्र दर्दनाक अन्जाम हुआ। बुज़ुर्गों से नक़ल किया गया है कि फ़िरऔ़न के ख़ुदाई दावे और ख़ुदा की पकड़ के बीच चालीस साल का अ़रसा (समय) था। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला हर ज़ालिम को ढील देता है, फिर जब पकड़ता है तो छुटकारा नहीं होता। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाईः

Maktab E Ashraf

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ.

और आपके रब की पकड़ ऐसी ही है जब वह किसी बस्ती पर पकड़ करता है, जबकि वे ज़ुल्म किया करते हों बेशक उसकी पकड़ बड़ी सख़्त और दुखदायी है। (सूरः हूद आयत 102)

फिर फ़रमाया कि कई एक बस्तियों वाले ज़ालिमों को जिन्होंने रसूलों को झुठलाया था, हमने ग़ारत कर दिया। जिनके महल खंडर बने पड़े हैं, औंधे गिरे हुए हैं, उनकी मन्ज़िलें वीरान हो गयीं। उनकी आबादियाँ उजड़ गयीं, उनके कुएँ ख़ाली पड़े हैं जो कल तक आबाद थे आज ख़ाली हैं, उनके चूने-गच के महल जो दूर से चमकते हुए दिखाई देते थे, जो बुलन्द, ऊँचे और पुख़्ता थे, वे आज उजाड़ पड़े हैं, वहाँ उल्लू बोल रहा है। उनकी मज़बूती उन्हें न बचा सकी, उनकी ख़ूबसूरती और उनकी पायदारी बेकार साबित हुई। रब के अ़ज़ाब ने उसे तहस-नहस कर दिया। जैसे फ़रमान हैः

اَيْنَمَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِىْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ.

यानी चाहे तुम चूने-गच के पक्के क़िलों में महफ़ूज़ हो लेकिन मौत वहाँ भी तुम्हें छोड़ने की नहीं।

क्या वे ख़ुद ज़मीन में चले-फिरे नहीं, न कभी ग़ौर व फ़िक्र (विचार व मंथन) नहीं किया कि कुछ इब्रत हासिल होती। इमाम इब्ने अबिद्दुन्या "किताबुत्तफ़क्कुर वल-एतिबार" में रिवायत लाये हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास 'वही' भेजी कि ऐ मूसा! लोहे के जूते पहनकर लोहे की लकड़ी लेकर ज़मीन में चल-फिरकर इब्रत के निशानात को देख, वो ख़त्म न होंगे यहाँ तक कि तेरी लोहे की जूतियाँ टुकड़े-टुकड़े हो जायें और लोहे की लकड़ी भी टूट-फूट जाये। इसी किताब में बाज़ दानिश-मन्दों (बुद्धिमानों) का क़ौल है कि वअ़ज़ (नसीहत व तक़रीर) के साथ अपने दिल को ज़िन्दा कर और ग़ौर व फ़िक्र के साथ उसे नूरानी कर, और ज़ोहद व दुनिया से बचने के साथ उसे मार दे, और यक़ीन के साथ उसे ताक़तवर कर ले, और मौत के ज़िक्र से उसे ज़लील कर दे, और फ़ना के यक़ीन से उसे सब्र दे, दुनिया की मुसीबतें उसके सामने रखकर उसकी आँखें खोल दे, ज़माने की तंगी उसे दिखाकर उसे डरने और घबराहट वाला बना दे, दिनों के उलट-फेर समझाकर उसे बेदार कर दे, पहले गुज़रे वाक़िआ़त से सबक़ लेने वाला बना, अगलों के क़िस्से उसे सुनाकर होशियार रख, उनके शहरों में और उनकी हालात में उसे ग़ौर व फ़िक्र करने का आ़दी बना, और देख कि गुनाहगारों के साथ उसका मामला कैसा कुछ हुआ, किस तरह वे लोट-पोट कर दिये गये।

पस यहाँ भी यही फ़रमान है कि अगलों (पहले गुज़रे लोगों) के वाक़िआ़त सामने रखकर दिलों को समझदार बनाओ, उनकी तबाही के सच्चे वाक़िआ़त सुनकर इबरत (सीख) हासिल करो। सुन लो कि आँखें ही अंधी नहीं होतीं बल्कि सबसे बड़ा अन्धेरा दिल का है अगरचे आँखें सही सालिम मौजूद हों, दिल के लिये नूर हो जाने की वजह से न तो सीख हासिल होती है न भले बुरे की तमीज़ हासिल होती है।

अबू मुहम्मद बिन हय्यान उन्दुलुसी ने (जिनका इन्तिक़ाल सन् 517 हिजरी में हुआ है) इस मज़मून को अपने चन्द शे'रों में ख़ूब बाँधा है। वह फ़रमाते हैं- ऐ वह शख़्स जो गुनाहों में लज़्ज़त पा रहा है, क्या अपने बुढ़ापे और बुरे अन्जाम से भी तू बेख़बर है? अगर नसीहत असर नहीं करती तो क्या देखने सुनने से भी इब्रत (सबक़) हासिल नहीं होती? सुन ले आँखें और कान अपना काम न करें तो इतना बुरा नहीं, जितना बुरा यह है कि वाक़िआ़त से सबक़ न हासिल किया जाये। याद रख न तो दुनिया बाक़ी रहेगी न आसमान, न सूरज न चाँद, अगरचे जी न चाहे मगर दुनिया से तुमको एक रोज़ दिल न चाहते हुए भी कूच करना ही

पड़ेगा। क्या अमीर हो क्या ग़रीब, क्या शहरी हो क्या देहाती।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ○ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ○ ع	और ये लोग (नुबुव्वत में शुब्हा निकालने के लिए ऐसे) अज़ाब का तक़ाज़ा करते हैं, हालाँकि अल्लाह कभी अपना वायदा ख़िलाफ़ न करेगा, और आपके रब के पास का एक दिन (यानी क़ियामत का दिन लम्बा होने में या सख़्त होने में) एक हज़ार साल के बराबर है, तुम लोगों की गिनती के मुवाफ़िक़। (47) और बहुत-सी बस्तियाँ हैं जिनको मैंने (उनकी तरह) मोहलत दी थी, और वे (उन्हीं की तरह) नाफ़रमानी करती थीं, फिर मैंने उनको पकड़ लिया और (सब को) मेरी ही तरफ़ लौटना होगा। (48)

अपनी बेवक़ूफ़ी का इज़हार कर रहे हैं

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से फ़रमा रहा है कि बेदीन काफ़िर, ख़ुदा को, उसके रसूल को और क़ियामत के दिन को झुठलाने वाले तुझसे अ़ज़ाब तलब करने में जल्दी कर रहे हैं कि जल्दी से उन पर अ़ज़ाब को क्यों नहीं आ जाता? जिससे हमें हर वक़्त डराया धमकाया जा रहा है। चुनाँचे वे ख़ुदा से भी कहते थे कि इलाही अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थरों की बरसात कर या और किसी तरह का दर्दनाक अ़ज़ाब भेज। कहते थे कि हिसाब के दिन से पहले ही हमारा मामला साफ़ कर दे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है याद रखो ख़ुदा का वायदा अटल है, क़ियामत और अ़ज़ाब आकर ही रहेंगे। अल्लाह के दोस्तों की इ़ज़्ज़त और अल्लाह के दुश्मनों की ज़िल्लत यक़ीनी और होने वाली चीज़ है। इमाम अस्मई कहते हैं कि मैं अबू अ़मर बिन उला के पास था कि अ़मर बिन अ़बीद आया और कहने लगा कि ऐ अबू अ़मर! क्या अल्लाह तआ़ला अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता? आपने फ़रमाया नहीं! उसने उसी वक़्त अ़ज़ाब की आयत तिलावत की, इस पर आपने फ़रमाया क्या तू अ़जमी (अ़रब से बाहर का) है? सुन अ़रब में वायदे का यानी अच्छी बात के वायदे का ख़िलाफ़ (उल्लंघन करना) बुरा समझा जाता है, लेकिन "ईआ़द" का यानी सज़ा के अहकाम का रद्दोबदल या माफ़ी बुरी नहीं समझी जाती, बल्कि वह करम व रहम समझा जाता है। देखो शायर कहता है:

فانی وان اوعدته اووعدته ☆ لمخلف ایعادی ومنجز موعدی

कि मैं किसी को सज़ा कहूँ या उससे इनाम का वायदा करूँ तो यह तो हो सकता है कि मैं अपनी धमकी के ख़िलाफ़ कर लूँ बल्कि बिल्कुल ही सज़ा न दूँ लेकिन अपना वायदा तो ज़रूर पूरा करके ही रहूँगा।

ग़र्ज़ कि सज़ा का वायदा करके सज़ा न देना यह वायदा-ख़िलाफ़ी नहीं, लेकिन रहम व इनाम करके फिर रोक लेना यह बुरी सिफ़त है, जिससे ख़ुदा की ज़ात पाक है।

फिर फ़रमाता है कि एक-एक दिन ख़ुदा के नज़दीक तुम्हारे हज़ार-हज़ार दिनों के बराबर है। यह उसके

Maktab E Ashraf

इल्म और बुर्दबारी के एतिबार से है, क्योंकि उसे इल्म है कि वह हर वक़्त उनकी गिरफ़्त पर क़ादिर है, इसलिये जल्दी क्या है, चाहे कितनी ही मोहलत मिल जाये चाहे कितनी ही रस्सी लम्बी हो जाये, लेकिन जब चाहेगा साँस लेने की भी मोहलत न देगा और पकड़ लेगा। इसी लिये उसके बाद ही फ़रमान होता है कि बहुत सी बस्तियों के लोग ज़ुल्म पर कमर कसे हुए थे, मैंने भी उनसे चश्म-पोशी कर रखी थी (यानी उनकी ग़लतियों की तरफ़ से आँख फेरकर उन्हें मोहलत दे रखी थी), जब मस्त हो गये तो अचानक पकड़ कर ली, सब मजबूर हैं, सबको मेरे ही सामने हाज़िर होना है, सब का लौटना मेरी ही तरफ़ है।

तिर्मिज़ी वग़ैरह में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि ग़रीब मुसलमान अमीर मुसलमानों के मुक़ाबले आधा दिन पहले जन्नत में जायेंगे यानी पाँच सौ बरस पहले। एक और रिवायत में है, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने पूछा कि आधे दिन की मिक़्दार क्या है? फ़रमाया कि तूने क़ुरआन नहीं पढ़ा? मैंने कहा हाँ, तो यही आयत सुनाई। यानी ख़ुदा के यहाँ एक दिन एक हज़ार साल का है। अबू दाऊद की किताबुल-मलाहिम के आख़िर में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुझे अल्लाह तआ़ला की ज़ात से उम्मीद है कि वह मेरी उम्मत को आधे दिन तक तो ज़रूर मोअख़्ख़र (पीछे और लेट) रखेगा। हज़रत सअ़द रज़ि. से पूछा गया आधा दिन कितनी मुद्दत का हुआ? आपने फ़रमाया पाँच सौ साल का। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत को पढ़कर फ़रमाने लगे- यह उन दिनों में से है जिनमें अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया। (इब्ने जरीर) बल्कि इमाम अहमद बिन हंबल रह. ने "किताबुर्रदद् अ़लल-जह्मिया" में इस बात को खुले लफ़्ज़ों में बयान किया है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत इस आयत के जैसी हैः

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ .... الخ.

यानी अल्लाह तआ़ला काम की तदबीर आसमान से ज़मीन की तरफ़ करता है। फिर उसकी तरफ़ चढ़ जाता है एक ही दिन में, जिसकी मिक़्दार (मात्रा) तुम्हारी गिनती के एतिबार से एक हज़ार साल की है।

इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रह. एक नौ-मुस्लिम अहले किताब से नक़ल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को छह दिन में पैदा किया है और एक दिन तेरे रब के नज़दीक एक हज़ार साल के बराबर है जो तुम गिनते हो। अल्लाह ने दुनिया की मुद्दत छह दिन की की है, सातवें दिन क़ियामत है। और एक-एक दिन हज़ार-हज़ार साल के बराबर है। पस छह दिन तो गुज़र गये और अब तुम सातवें दिन में हो, अब तो बिल्कुल उस हामिला (गर्भवती) औरत की तरह हो जिसके दिन पूरे हो जायें, न जाने कब बच्चा हो जाये।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝

(और) आप (यह भी) फ़रमा दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तो सिर्फ़ तुम्हारे लिए एक खुला डराने वाला हूँ। (49) सो जो लोग (इस डर को सुन कर) ईमान ले आए और अच्छे काम करने लगे, उनके लिए मग़फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी (यानी जन्नत) है। (50) और जो लोग हमारी आयतों के मुताल्लिक़ (उनको झुठलाने की) कोशिश करते रहते हैं (नबी को और ईमान वालों को) हराने के लिए, ऐसे लोग दोज़ख़ (में रहने) वाले हैं। (51)

Maktaba E Ashraf

मेरा काम तो सिर्फ़ डराना है

चूँकि काफ़िर अ़ज़ाब माँगा करते थे और उनकी जल्दी मचाते रहते थे। उनके जवाब में ऐलान कराया जा रहा है कि ऐ लोगो! मैं तो ख़ुदा का भेजा हुआ आया हूँ ताकि तुम्हें रब के अ़ज़ाबों से जो तुम्हारे आगे हैं चौकन्ना कर दूँ। तुम्हारा हिसाब मेरे ज़िम्मे नहीं, अ़ज़ाब ख़ुदा के बस में है, चाहे अब लाये चाहे देर से लाये। मुझे क्या मालूम कि तुममें से किसकी क़िस्मत में हिदायत है और कौन ख़ुदा की रहमत से मेहरूम रहने वाला है। चाहत ख़ुदा की ही पूरी होनी है, हुकूमत उसी के हाथ में है, मुख़्तार और कर्ता-धरता वही है, किसी को उसके सामने चूँ-चरा की मजाल नहीं। वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। मेरी हैसियत तो सिर्फ़ एक आगाह करने वाले की है। जिन दिलों में यक़ीन व ईमान है और उसकी गवाही उनके आमाल से भी साबित है, उनके तमाम गुनाह माफ़ी के लायक़ हैं, और उनकी तमाम नेकियाँ क़द्रदानी (यानी मक़बूल होने) के क़ाबिल हैं। "रिज़्क़े करीम" (इज़्ज़त की रोज़ी) से मुराद जन्नत है, जो लोग औरों को भी राहे ख़ुदा से, अल्लाह के रसूल की पैरवी से रोकते हैं, वे जहन्नमी हैं, सख़्त अ़ज़ाब और तेज़ आग के ईंधन हैं। अल्लाह हमें बचाये। एक और आयत में है कि ऐसे काफ़िरों को उनके फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) के बदले अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब हैं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا
نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ
اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ ثُمَّ
يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ○
لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ
قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ○ وَّلِيَعْلَمَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ

और ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! हमने आपसे पहले कोई रसूल और कोई नबी ऐसा नहीं भेजा जिसको यह क़िस्सा पेश न आया हो कि जब उसने अल्लाह तआ़ला के हुक्मों में से कुछ पढ़ा (तब ही) शैतान ने उसके पढ़ने में (काफ़िरों के दिलों में) शुब्हा डाला, फिर अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए (शुब्हात) को नेस्तनाबूद कर देता है, फिर अल्लाह अपनी आयतों को ज़्यादा मज़बूत कर देता है, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब इल्म वाला, ख़ूब क़ुदरत वाला है। (52) (और यह सारा क़िस्सा इसलिए किया है) ताकि अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए (शुब्हात) को ऐसे लोगों के लिये आज़माईश (का ज़रिया) बना दे, जिनके दिल में (शक की) बीमारी है, और जिनके दिल (बिल्कुल) सख़्त हैं और वाक़ई (ये) ज़ालिम लोग बड़ी मुख़ालफ़त में हैं। (53) और ताकि जिन लोगों को (सही) समझ अ़ता हुई है वे (इन जवाबों और हिदायत के नूर से इस बात का ज़्यादा) यक़ीन कर लें

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ○	कि यह आपके रब की तरफ़ से हक़ है, ईमान पर ज़्यादा क़ायम हो जाएँ, फिर उसकी तरफ़ उनके दिल (और भी) झुक जाएँ। और वाक़ई (उन) ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला (ही) सीधा रास्ता दिखाता है। (54)

Maktab E Ashraf

कुछ ग़लत तमन्नायें

यहाँ पर अक्सर मुफ़स्सिरीन ने ग़रानीक़ का क़िस्सा नक़ल किया है और यह भी कि इस वाक़िए की वजह से अक्सर मुहाजिरीन हब्शा यह समझकर कि मक्का के मुश्रिक लोग अब मुसलमान हो गये, वापस मक्का आ गये, लेकिन यह रिवायत हर सनद से मुर्सल है। किसी सही सनद से मुस्नद नहीं। वल्लाहु आलम। चुनाँचे इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मक्का शरीफ़ में सूरः नज्म की तिलावत फ़रमाई। जब ये आयतें आप पढ़ रहे थेः

اَفَرَاَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى○ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى.

क्या तुमने लात, उज़्ज़ा और तीसरे मनात के हाल में ग़ौर भी किया है? (सूरः नज्म आयत 19-20)

तो शैतान ने आपकी ज़बाने मुबारक पर ये अलफ़ाज़ डाले किः

تِلْكَ الْغَرَانِيْقُ الْعُلٰى وَاِنَّ شَفَاعَتَهُنَّ تَرْتَجٰى.

यानी ये 'लात' व 'उज़्ज़ा' बुलन्द रुतबे वाले हैं जो अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिशी बनेंगे।

पस मुश्रिक लोग ख़ुश हो गये कि आज तो मुहम्मद (हुज़ूर सल्ल.) ने हमारे माबूदों की तारीफ़ की जो इससे पहले आपने कभी नहीं की। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने सज्दा किया उधर वे सब भी सज्दे में गिर पड़े, इस पर यह आयत उतरी। इसे इब्ने जरीर रह. ने भी रिवायत किया है कि यह मुर्सल है। मुस्नद बज़्ज़ार में भी इसके ज़िक्र के बाद है कि सिर्फ़ इसी सनद से यह मुत्तसिलन् रिवायत है, सिर्फ़ उमैया बिन ख़ालिद ही इसे मुत्तसिलन् रिवायत करते हैं। हैं वह मशहूर मोतबर, यह सिर्फ़ कलबी की सनद से ही मन्क़ूल है। इब्ने अबी हातिम में इसे दो सनदों से ली है, लेकिन दोनों मुर्सल हैं। इब्ने जरीर में भी मुर्सल है। क़तादा रह. कहते हैं कि मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ते हुए हुज़ूर सल्ल. को ऊँघ आ गयी और शैतान ने आपकी ज़बान पर डालाः

وان شفاعتهالترتجى .وانها لَمعَ الغرانيق العلٰى

यानी ये 'लात' व 'उज़्ज़ा' बुलन्द रुतबे वाले हैं जो अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिशी बनेंगे।

मुश्रिक लोगों ने इन लफ़्ज़ों को पकड़ लिया और शैतान ने यह बात फैला दी। इस पर यह आयत उतरी और उसे ज़लील होना पड़ा।

इब्ने अबी हातिम में है कि सूरः नज्म नाज़िल हुई और मुश्रिकीन कह रहे थे कि अगर यह शख़्स हमारे माबूदों का अच्छे लफ़्ज़ों में ज़िक्र करे तो हम इसे और इसके साथियों को छोड़ दें, मगर इसका तो यह हाल है कि यहूद व ईसाई और जो लोग इसके दीनी मुख़ालिफ़ हैं उन सबसे ज़्यादा गालियाँ और बुराई से हमारे

Maktab-E-Ashraf

माबूदों का ज़िक्र करता है। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा पर सख़्त मुसीबतें ढहाई जा रही थीं, आपको उनके सही रास्ते पर आने की तमन्ना और लालच भी था। जब सूरः नज्म की तिलावत आपने शुरू की और "व लहुल-उन्सा" तक पढ़ा तो शैतान ने बुतों के ज़िक्र के वक़्त ये कलिमात डाल दियेः

وانهن الغرانيق العلٰى وان شفاعتهن لهى التى ترتجى.

यानी ये 'लात' व 'उज़्ज़ा' बुलन्द रुतबे वाले हैं जो अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिशी बनेंगे।

यह शैतान की तरफ़ से एक इबारत थी, हर मुश्रिक के दिल में ये कलिमे बैठ गये और एक-एक को याद हो गये, यहाँ तक कि यह मशहूर हो गये कि मुहम्मद अपने पहले दीन की तरफ़ लौट आये हैं। और जब रसूलुल्लाह सल्ल. ने सूरः नज्म के ख़ात्मे पर सज्दा किया तो सारे मुसलमान और मुश्रिक लोग भी सज्दे में गिर पड़े, हाँ वलीद बिन मुग़ीरा चूँकि बहुत ही बूढ़ा था इसलिये उसने एक मुट्ठी मिट्टी की भरकर ऊँची लेजाकर उसी को अपने माथे से लगा लिया। अब हर एक को ताज्जुब मालूम होने लगा क्योंकि हुज़ूर सल्ल. के साथ दोनों फ़रीक़ सज्दे में शामिल थे, मुसलमानों का ताज्जुब था कि ये लोग ईमान तो लाये नहीं, यक़ीन नहीं, फिर हमारे साथ हुज़ूर सल्ल. के सज्दे पर सज्दा इन्होंने कैसे किया? शैतान ने जो अलफ़ाज़ मुश्रिकों के कानों में फूँके थे वे मुसलमानों ने सुने ही न थे, उधर उनके दिल खिल रहे थे, क्योंकि शैतान ने इस तरह आवाज़ में आवाज़ मिलाई कि मुश्रिकीन उसमें कोई तमीज़ (फ़र्क़) ही नहीं कर सकते थे। वह तो सब को इसी यक़ीन पर पक्का कर चुका था कि ख़ुद हुज़ूर सल्ल. ने इसी सूरत की इन दोनों आयतों को तिलावत फ़रमाया है। पस दर असल मुश्रिक लोगों का सज्दा अपने बुतों को था।

शैतान ने इस वाक़िए को इतना फैला दिया कि हब्शा के मुहाजिरीन के कानों में भी पहुँचा। उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि. और उनके साथियों ने जब सुना कि मक्का वाले मुसलमान हो गये हैं बल्कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल. के साथ नमाज़ पढ़ी और वलीद बिन मुग़ीरा सज्दा न कर सका तो उसने मिट्टी की एक मुट्ठी उठाकर उसी पर सर टिका लिया। मुसलमान अब पूरे अमन और इत्मीनान से हैं, तो उन्होंने वहाँ से वापसी की ठानी और ख़ुशी-ख़ुशी मक्का पहुँचे। उनके पहुँचने से पहले शैतान के इन अलफ़ाज़ की क़लई खुल चुकी थी, अल्लाह ने इन अलफ़ाज़ को हटा दिया था और अपना कलाम महफ़ूज़ कर दिया था। यहाँ मुश्रिकों की दुश्मनी की आग और भड़क उठी थी और उन्होंने मुसलमानों पर मुसीबतों के नये पहाड़ तोड़ने शुरू कर दिये थे। यह रिवायत भी मुर्सल है, बैहक़ी की किताब "दलाईलुन्नुबुव्वत" में भी यह रिवायत है। इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. भी इसे अपनी सीरत में लाये हैं, लेकिन यह सनदें मुर्सल और मुन्क़ता हैं। वल्लाहु आलम।

इमाम बग़वी रह. ने अपनी तफ़सीर में यह सब कुछ हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह के कलाम से इसी तरह की रिवायतें लाये हैं, फिर ख़ुद ही एक सवाल खड़ा किया है कि जब रसूले करीम सल्ल. की अ़स्मत (पारसाई और बेगुनाही) का मुहाफ़िज़ ख़ुद ख़ुदा तआ़ला है तो ऐसी बात कैसे वाक़े हो गयी? फिर बहुत से जवाब दिये हैं जिनमें एक लतीफ़ जवाब यह भी है कि शैतान ने ये अलफ़ाज़ लोगों के कानों में डाले और उन्हें वहम डाला कि ये अलफ़ाज़ हुज़ूर सल्ल. के मुँह से निकले हैं। हक़ीक़त में ऐसा न था, यह सिर्फ़ शैतानी हरकत थी न कि रसूलुल्लाह सल्ल. की आवाज़। वल्लाहु आलम।

नोटः इस मौक़े पर हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कश्मीरी रह. ने लिखा है कि तमाम मुफ़स्सिरीन और जमहूर उलेमा के नज़दीक यह रिवायत सही नहीं जिसमें यह आया है कि शैतान ने आप सल्ल. की ज़बान पर कुछ अलफ़ाज़ जारी कर दिये। क्योंकि सही रिवायतों से साबित है कि जब क़ुरआन पाक नाज़िल होता तो फ़रिश्तों की एक बड़ी जमाअ़त आपको

घेर लेती ताकि शैतान 'वही' में अपनी तरफ़ से कुछ मिला न दे। जब फ़रिश्ते हर तरफ़ से आपके पास रहते तो शैतान की क्या हिम्मत कि वह आगे बढ़कर अपनी कोई हरकत अन्जाम दे सके। फिर शैतान ने तो ख़ुद इस बात का इक़रार किया है कि अल्लाह के मुख़्लिस बन्दों पर मेरा कोई ज़ोर नहीं चलेगा, ज़ाहिर बात है कि अम्बिया से बढ़कर कौन मुख़्लिस हो सकता है? फिर वह भी तमाम अम्बिया के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर तो उसका ज़ोर चल ही न सकता था। लिहाज़ा यह रिवायत भरोसे के क़ाबिल नहीं, अल्लाह की 'वही' में शैतान कोई अपना कलाम शामिल कर सके यह उसकी मजाल नहीं। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

और भी इसी क़िस्म के बहुत से जवाब उलेमा हज़रात ने दिये हैं। क़ाज़ी अ़याज़ रह. ने भी शिफ़ा में इसे छेड़ा है और उनके जवाब का ख़ुलासा यह है कि आप इसमें परेशान न हों, पहले नबियों और रसूलों पर भी ऐसे इत्तिफ़ाक़ आये। बुख़ारी में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि इसकी आरज़ू में जब वह बात करता है तो शैतान उसकी बात में अपने लफ़्ज़ डाल देता है, पस शैतान के डाले हुए को बातिल करके फिर ख़ुदा तआ़ला अपनी आयात को मोहकम (पुख़्ता और मज़बूत) करता है। मुजाहिद कहते हैं कि "तमन्ना" के मायने "क़ा-ल" (उसने कहा) के हैं। मतलब यह है कि पढ़ते हैं लिखते नहीं। इमाम बग़वी और अक्सर मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि "तमन्ना" के मायने तिलावत करने के हैं यानी जब किताबुल्लाह पढ़ता है तो शैतान उसकी तिलावत में कुछ डाल देता है, चुनाँचे हज़रत उस्मान की तारीफ़ में शायर ने कहा है:

تمنّٰى كتاب الله اول ليلة ☆ وآخرها لاقى حماما لمقادر

यहाँ भी लफ़्ज़ "तमन्ना" पढ़ने के मायने में है। इब्ने जरीर कहते हैं कि यह क़ौल बहुत क़रीब की तावील वाला है।

"नस्ख़" के हक़ीक़ी मायने हटाने और मिटा देने के हैं। यानी अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए को बातिल कर देता है। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम बढ़ाई हुई चीज़ को अल्लाह के हुक्म से मिटा देते हैं और अल्लाह की आयतें मज़बूत रह जाती हैं। अल्लाह तआ़ला तमाम कामों का जानने वाला है, कोई छुपी बात भी कोई राज़ भी उस पर छुपा नहीं। वह हकीम है, उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं।

यह इसलिये कि जिनके दिलों में शक, शिर्क, कुफ़्र और निफ़ाक़ है, उनके लिये यह फ़ितना (आज़माईश) बन जाये। चुनाँचे मुश्रिकों ने इसे ख़ुदा की तरफ़ से मान लिया, हालाँकि वे अलफ़ाज़ शैतानी थे। पस बीमार दिल वालों से मुराद मुनाफ़िक़ हैं और सख़्त-दिल वालों से मुराद मुश्रिक हैं। यह भी क़ौल है कि इससे मुराद यहूद हैं, ज़ालिम हक़ से बहुत दूर निकल गये हैं, वे सीधे रास्ते से गुम हो गये हैं। और जिन्हें सही इल्म दिया गया है, जिससे वे हक़ व बातिल में तमीज़ (फ़र्क़) कर लेते हैं, उन्हें इस बात के बिल्कुल हक़ होने और अल्लाह की तरफ़ से होने का सही यक़ीन हो जाये और वे पूरे ईमान वाले बन जायें और समझ लें कि बेशक यह ख़ुदा का कलाम है, तभी तो इस क़द्र इसकी हिफ़ाज़त और निगरानी है कि किसी तरफ़ से, किसी रास्ते से इसमें बातिल (ग़ैर-हक़) की मिलावट नहीं हो सकती। हकीम (हिक्मत वाले) व हमीद (तारीफ़ के क़ाबिल) ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल-शुदा है। पस उनके दिल तस्दीक़ से भर जाते, झुक कर दिलचस्पी से मुतवज्जह हो जाते हैं। अल्लाह तआ़ला ईमान वालों की रहबरी दुनिया में हक़ और हिदायत की तरफ़ करता है, सीधा रास्ता समझा देता है और आख़िरत में अ़ज़ाब से बचाकर बुलन्द दर्जों में पहुँचाता है और नेमतें नसीब फ़रमाता है।

Maktab E Ashraf

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ٥ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ٥ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰۤئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ٥ ع ١٤

और (रह गए) काफ़िर लोग (सो वे) हमेशा इस (पढ़े हुए हुक्म) की तरफ़ से शक ही में रहेंगे, यहाँ तक कि उन पर अचानक क़ियामत आ जाए, या उन पर किसी बेबरकत दिन का (जो कि क़ियामत का दिन है) अज़ाब आ पहुँचे। (55) बादशाही उस दिन अल्लाह ही की होगी, वह इन सब (ज़िक्र-शुदा) के दरमियान (अमली) फ़ैसला फ़रमाएगा, सो जो लोग ईमान लाए होंगे और अच्छे काम किए होंगे वे चैन के बाग़ों में होंगे। (56) और जिन्होंने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा तो उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (वह फ़ैसला यह होगा)। (57)

अब किस चीज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं?

यानी काफ़िरों को जो शक व शुब्हा खुदा की इस 'वही' यानी क़ुरआन में है, वह उनके दिलों से नहीं निकलेगा। शैतान यह ग़लत गुमान क़ियामत तक उनके दिलों से न निकलने देगा, क़ियामत और उसके अज़ाब उनके पास अचानक आ जायेंगे, ये बिल्कुल बेशऊर होंगे। इस वक़्त जो मोहलत इन्हें मिल रही है उससे ये घमंडी हो गये हैं। जिस क़ौम के पास खुदा के अज़ाब आये उसी हालत में आये कि वे उनसे निडर बल्कि बेपरवाह हो गये थे। खुदा के अज़ाब से ग़ाफ़िल वे होते हैं जो पूरे फ़ासिक़ (बदकार व नाफ़रमान) और खुले तौर पर मुजरिम हों, या उन्हें बुरे दिन का अज़ाब पहुँचे जो दिन उनके लिये मन्हूस साबित होगा।

बाज़ हज़रात का क़ौल है कि इससे मुराद "बदर का दिन" है, और बाज़ ने कहा है कि इससे मुराद क़ियामत का दिन है, यही आख़िरी क़ौल सही है, अगरचे बदर का दिन भी उनके लिये अज़ाबे खुदा का दिन था। उस दिन खुदा ही की बादशाहत होगी जैसा कि एक दूसरी आयत में है कि खुदा तआ़ला क़ियामत के दिन का मालिक है। एक और आयत में है कि उस दिन रहमान का ही मुल्क होगा और वह दिन काफ़िरों पर बहुत ही भारी गुज़रेगा। फ़ैसले खुद खुदा करेगा, जिनके दिलों में खुदा पर ईमान, रसूल की सच्चाई और ईमान के मुताबिक़ जिनके आमाल थे, जिनके दिल और अ़मल में मुवाफ़क़त थी (यानी जो दिल में था उसी के मुताबिक़ अमल था) जिनकी ज़बानें दिल के मानिन्द थीं, वे जन्नत की नेमतों से मालामाल होंगे, जो नेमतें न फ़ना होंगी न घटेंगी, न बिगड़ेंगी न कम होंगी। और जिनके दिलों में हक़्क़ानियत से कुफ़्र (इनकार) था, जो हक़ को झुठलाते थे, नबियों का विरोध करते थे, हक़ की पैरवी से तकब्बुर करते थे, उनके तकब्बुर के बदले उन्हें ज़लील करने वाले अ़ज़ाब होंगे। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ.

कि जो लोग मेरी इबादतों से सरकशी (नाफ़रमानी) करते हैं, वे ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।

Maktab E Ashraf

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝	और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में (यानी दीन के लिए) अपना वतन छोड़ा, फिर वे लोग (कुफ़्र के मुक़ाबले में) क़त्ल किए गए या मर गए, अल्लाह तआ़ला ज़रूर उनको (एक) उम्दा रिज़्क़ देगा, और यक़ीनन अल्लाह तआ़ला सब देने वालों से अच्छा (देने वाला) है। (58) (और उम्दा रिज़्क़ के साथ अल्लाह तआ़ला उनको ऐसी जगह लेजाकर) दाख़िल करेगा जिसको वे (बहुत ही) पसन्द करेंगे, और बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला (हर बात की मस्लेहत को) ख़ूब जानने वाला है, बहुत हिल्म वाला (भी) है। (59) यह (मज़मून तो) हो चुका और जो शख़्स (दुश्मन को) उसी क़द्र तकलीफ़ पहुँचाए जिस क़द्र (उस दुश्मन की तरफ़ से) उसको तकलीफ़ पहुँचाई गई थी, (और) फिर उस शख़्स पर ज़्यादती की जाए तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स की ज़रूर मदद करेगा, बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत ज़्यादा माफ़ करने वाला, बहुत ज़्यादा मग़फ़िरत करने वाला है। (ऐसी बारीकियों पर पकड़ नहीं करता)। (60)

हिजरत और उस पर अज्र व सवाब

यानी जो शख़्स अपना वतन, अपने बाल-बच्चे, अपने दोस्त अहबाब छोड़कर ख़ुदा की रज़ामन्दी के लिये उसकी राह में हिजरत कर जाये, उसके रसूल की और उसके दीन की मदद के लिये पहुँचे, फिर वह मैदाने जिहाद में दुश्मन के हाथ से शहीद किया जाये या बिना लड़े-भिड़े अपनी क़ज़ा (मौत) से अपने बिस्तर पर उसे मौत आ जाये तो उसे बहुत बड़ा अज्र और ज़बरदस्त सवाब ख़ुदा की तरफ़ से है। जैसे इरशाद है:

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ ۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ.

यानी जो शख़्स अपने घर और वतन को छोड़कर ख़ुदा रसूल की तरफ़ हिजरत करके निकले, फिर उसे मौत आ जाये तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे साबित हो चुका। उन पर अल्लाह का फ़ज़्ल होगा, उन्हें जन्नत की रोज़ियाँ मिलेंगी, जिससे उनकी आँखें ठंडी हों। अल्लाह तआ़ला बेहतरीन राज़िक़ है, उन्हें परवर्दिगार जन्नत में पहुँचायेगा, जहाँ ये ख़ुश-ख़ुश होंगे।

जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है कि जो हमारे क़रीबी और ख़ास बन्दों में से है उसके लिये राहत, ख़ुशबूदार फूल और नेमतों भरे बाग़ात हैं। ऐसे लोगों को राहत व रिज़्क़ और जन्नत मिलेगी। अपनी राह के

Maktab E Ashraf

सच्चे मुहाजिरों को, अपनी राह में जिहाद करने वालों को, अपनी नेमतों के मुस्तहिक़ लोगों को खुदा तआ़ला ख़ूब जानता है। जो लोग राहे खुदा में शहीद हों, मुहाजिर हों या न हों वे रब के पास ज़िन्दगी और रोज़ी पाते हैं। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान हैः

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا......... الخ.

कि खुदा की राह के शहीदों को मुर्दा न समझो, वे अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, रोज़ियाँ दिये जाते हैं।

इस बारे में बहुत सी हदीसें हैं जो बयान हो चुकीं। पस अल्लाह के रास्ते में शहीद होने वालों का अज्र अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे साबित है। इस आयत से और इस मज़मून की हदीसों से भी।

हज़रत शुरह्बील बिन समत रह. फ़रमाते हैं कि रोम के एक क़िले के घिराव पर हमें मुद्दत गुज़र चुकी, इत्तिफ़ाक़ से हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. वहाँ से गुज़रे तो फ़रमाने लगे- मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि जो शख़्स राहे खुदा की तैयारी में मर जाये तो उसका अज्र और रिज़्क़ बराबर खुदा की तरफ़ से हमेशा उस पर जारी रहता है, और वह फ़ितने में डालने वालों से महफ़ूज़ रहता है। अगर तुम चाहो तो आयतः

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا........... الخ.

पढ़ लो (यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)।

हज़रत अबू क़बील और रबीआ़ बिन सैफ़ मुआ़फ़िरी कहते हैं कि हम रूस के जिहाद में थे, हमारे साथ हज़रत फ़ुज़ाला बिन अ़बीद रज़ि. भी थे, दो जनाज़े हमारे पास से गुज़रे जिनमें एक शहीद थे दूसरा अपनी मौत मरा था। लोग शहीद के जनाज़े पर झुक पड़े। हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि. ने फ़रमाया यह क्या बात है? लोगों ने कहा हज़रत! यह शहीद हैं और यह दूसरे शहादत से मेहरूम हैं। आपने फ़रमाया अल्लाह की क़सम मुझे तो दोनों बातें बराबर हैं, चाहे इसकी क़ब्र में से उठूँ चाहे इसकी। सुनो अल्लाह की किताब में है, फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

एक और रिवायत में है कि आप मरे हुए की क़ब्र पर ही ठहरे रहे और फ़रमाया तुम्हें और क्या चाहिये जन्नत का ठिकाना और बेहतरीन रोज़ी। एक और रिवायत में है कि वह उस वक़्त अमीर (सरदार) थे।

यह आख़िरी आयत सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के उस छोटे से लश्कर के बारे में उतरी है जिनसे मुश्रिकों के एक लश्कर ने बावजूद उनके रुक जाने के हुर्मत (सम्मान व एहतिराम) के महीने मे लड़ाई की। खुदा तआ़ला ने मुसलमानों की इमदाद फ़रमाई और मुख़ालिफ़ों (दुश्मनों और विरोधियों) को नीचा दिखाया। अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।

यह (मोमिनों का ग़ालिब कर देना) इस सबब से है कि अल्लाह तआ़ला रात (के हिस्सों) को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन के (हिस्सों) को रात में दाख़िल कर देता है, और (साथ ही) इस सबब से है कि अल्लाह तआ़ला (इन सब हालात और बातों को) ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब देखने वाला है। (61) यह (मदद) इस सबब से (यक़ीनी) है कि अल्लाह तआ़ला	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا

ही (वजूद में) कामिल है, और जिन चीज़ों की ये लोग अल्लाह के सिवा इबादत कर रहे हैं, वे बिल्कुल लचर हैं, और अल्लाह ही आलीशान और (सबसे) बड़ा है। (62)	يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ○

Maktab-E-Ashraf

अल्लाह तआ़ला के अ़लावा तमाम माबूद लचर हैं

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमा रहा है कि ख़ालिक़ (हर चीज़ का बनाने और पैदा करने वाला) और मुतसर्रिफ़ (हर तरह के अ़मल-दख़ल और इख़्तियार वाला) सिर्फ़ वही है। अपनी सारी मख़्लूक़ में जो चाहता है करता है। अल्लाह का फ़रमान हैः

اَللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ........ الخ.

इलाही तू ही मालिकुल-मुल्क है। जिसे चाहे मुल्क दे जिससे चाहे ले ले। जिसे चाहे इज़्ज़त का झूला झुलाये जिसे चाहे दर-दर से दुर-दुर कराये। सारी भलाईयाँ तेरे ही हाथ में हैं। तू ही हर चीज़ पर क़ादिर है। दिन को रात में रात को दिन में तू ही ले जाता है। ज़िन्दा को मुर्दे से मुर्दे को ज़िन्दे से तू ही निकालता है। जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ियाँ पहुँचाता है।

पस कभी के दिन बड़े रातें छोटी, कभी की रातें बड़ी दिन छोटे। जैसे गर्मियों और जाड़ों में होता है। बन्दों की तमाम बातें ख़ुदा सुनता है, उनकी तमाम हरकतों और कामों को देखता है, कोई हाल उस पर छुपा नहीं। उस पर कोई हाकिम नहीं, बल्कि कोई चूँ-चरा भी उसके सामने नहीं कर सकता। वही सच्चा माबूद है, इबादतों के लायक़ उसके सिवा कोई और नहीं। ज़बरदस्त ग़लबे वाला, बड़ी शान वाला वही है, जो चाहता है होता है, जो नहीं चाहता नामुम्किन है कि वह हो जाये। हर शख़्स उसके सामने फ़क़ीर, हर एक उसके आगे आ़जिज़, उसके सिवा जिसे लोग पूजें वह बातिल, कोई नफ़ा व नुक़सान किसी के हाथ नहीं, वह बुलन्दियों वाला, बड़ाईयों वाला है। हर चीज़ उसके मातहत (क़ब्ज़े में) उसके हुक्म के ताबे, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, न उसके सिवा कोई रब, न उससे कोई बड़ा, न उस पर कोई ग़ालिब। वह पाकीज़गी वाला, वह इज़्ज़त व शान वाला, ज़ालिमों की कही हुई तमाम निकम्मी (बेहूदा और ग़लत) बातों से पाक, सब ख़ूबियों वाला और तमाम नुक़सानात (कमियों और ऐबों) से दूर है।

(और ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया जिससे ज़मीन हरी-भरी हो गई, बेशक अल्लाह बहुत मेहरबान (और) सब बातों की ख़बर रखने वाला है। (63) (सब) उसी का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है (यानी वह सबका मालिक है), और बेशक अल्लाह ही ऐसा है जो किसी का मोहताज नहीं (और) हर तरह की तारीफ़ के लायक़ है। (64)	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ز فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ط اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ○ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ○

ع

اَلَمْ تَرَاَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَهُوَ الَّذِىْۤ اَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝

(और ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के काम में लगा रखा है ज़मीन की चीज़ों को और कश्ती को (भी) कि वह दरिया में उस (ख़ुदा) के हुक्म से चलती है, और वही आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है, हाँ! मगर उसी का हुक्म हो जाए (तो ख़ैर), यक़ीनन अल्लाह तआ़ला लोगों (के हाल) पर बड़ी शफ़क़त और रहमत फ़रमाने वाला है। (65) और वही है जिसने तुमको ज़िन्दगी दी, फिर (मुक़र्ररा वक़्त पर) तुमको मौत देगा, फिर (क़ियामत में दोबारा) तुमको ज़िन्दा करेगा, वाक़ई इनसान है बड़ा बेक़द्र। (66)

ये दलाईल और निशानियाँ तुमसे क्या कहते हैं

अल्लाह तआ़ला अपनी अज़ीमुश्शान क़ुदरत और ज़बरदस्त ग़लबे को बयान फ़रमा रहा है कि सूखी, ग़ैर-आबाद, मुर्दा ज़मीन पर उसके हुक्म से हवायें बादल को लाती हैं जो पानी बरसाता है, और वही ज़मीन आबाद, लहलहाती हुई, हरी-भरी हो जाती है। गोया ज़िन्दा हो उठती है। यहाँ पर "फ़" ताक़ीब (यानी एक के बाद एक होने) के लिये है। हर चीज़ की ताक़ीब उसी के अन्दाज़ से होती है। नुत्फ़े (वीर्य) का जमा हुआ ख़ून बनना, फिर उस जमे हुए ख़ून से गोश्त का लोथड़ा बनना जहाँ बयान फ़रमाया है वहाँ भी "फ़" आयी है। और हर दो शक्लों के बीच में चालीस दिन का फ़ासला होता है। और यह भी बयान किया गया है कि हिजाज़ (सऊदी इलाक़े) की बाज़ ज़मीनें ऐसी भी हैं कि बारिश के होते ही एक दम सब्ज़ (हरी-भरी) हो सकती हैं। वल्लाहु आलम।

ज़मीन के गोशों और उसके पेट में जो कुछ है सब अल्लाह के इल्म में है। एक-एक दाना उसकी मालूमात में है। पानी वहीं पहुँचता है और वह उग आता है। जैसे हज़रत लुक़मान अ़लैहिस्सलाम के क़ौल में है कि अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो फिर वह भी किसी चट्टान में हो या आसमान में हो या ज़मीन में हो तो अल्लाह उसे ज़रूर लायेगा। अल्लाह तआ़ला पाकीज़ा और बाख़बर है। एक और आयत में है कि ज़मीन व आसमान की छुपी चीज़ें अल्लाह ज़ाहिर कर देगा। एक और आयत में है कि हर पत्ते के झड़ने का, हर दाने का जो ज़मीन के अन्धेरों में हो, हर तर व ख़ुश्क चीज़ का अल्लाह को इल्म है और वह खुली किताब में है। एक और जगह है कि कोई ज़र्रा आसमान व ज़मीन में ख़ुदा से पोशीदा (छुपा और ओझल) नहीं, कोई छोटी बड़ी चीज़ ऐसी नहीं जो ज़ाहिरे किताब में न हो। उमैया बिन अबी सुलत ज़ैद बिन नुफ़ैल के क़सीदे में है:

وقولا له من ينبت الحب فى الثرى ☆ فيصبح منه البقل يهتز رابيا

Maktab E Ashraf

و يخرج منه حبه فى رءوسه ☆ ففى ذلك آيات لمن كان واعيا

ऐ मेरे दोनों पैग़म्बरो! तुम उससे कहो कि मिट्टी में से दाने कौन निकालता है? कि दरख़्त (पौधा) फूटकर झूमने लगता है, और उसके सिरे पर बाल निकल आती है। अक़्लमन्द के लिये तो इसमें क़ुदरत की एक छोड़ कई एक निशानियाँ मौजूद हैं।

तमाम कायनात का मालिक वही है, वह हर एक से बेनियाज़ है, हर एक उसके सामने फ़क़ीर और उसकी बारगाहे आ़ली का मोहताज है। सब इनसान उसके ग़ुलाम हैं। क्या तुम देख नहीं रहे हो कि तमाम हैवानात (जानवर), जमादात (बेजान चीज़ें), खेतियाँ बाग़ात उसने तुम्हारे फ़ायदे के लिये तुम्हारी ताबेदारी और क़ब्ज़े में दे रखे हैं। आसमान व ज़मीन की चीज़ें तुम्हारे लिये अपनी ड्यूटी में लगी हुई हैं। उसी का एहसान व फ़ज़्ल और करम है कि उसके हुक्म से कश्तियाँ तुम्हें इधर से उधर ले जाती हैं, तुम्हारे माल व मता उनमें यहाँ से वहाँ पहुँचते हैं। पानी को चीरती हुई मौजों को काटती हुई अल्लाह के हुक्म से हवाओं के साथ कश्तियाँ तुम्हारे नफ़े के लिये चल रही हैं। यहाँ की ज़रूरत की चीज़ें वहाँ से, वहाँ की यहाँ से बराबर पहुँचती रहती हैं। वह आसमान को थामे हुए है कि ज़मीन पर गिर न पड़े, वरना अभी वह हुक्म दे तो यह ज़मीन पर आ पड़ेगा और तुम सब हलाक हो जाओगे। इनसानों के गुनाहों के बावजूद ख़ुदा तआ़ला उन पर अपनी रहमत व मेहरबानी, बन्दा-नवाज़ी और फ़ज़्ल व करम का मामला फ़रमा रहा है। जैसे फ़रमान हैः

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْمَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ.......... الخ.

लोगों के गुनाहों के बावजूद ख़ुदा तआ़ला उन पर मग़फ़िरत करने वाला है। हाँ बेशक वह सख़्त अ़ज़ाबों वाला भी है, उसी ने तुम्हें पैदा किया, वही तुम्हें फ़ना करेगा, वही फिर दोबारा पैदा करेगा। जैसा कि एक और जगह फ़रमायाः

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ.......... الخ.

तुम ख़ुदा के साथ कैसे कुफ़्र करते हो हलाँकि तुम मुर्दा थे उसी ने तुम्हें ज़िन्दा किया, फिर वही तुम्हें मार डालेगा, फिर दोबारा ज़िन्दा कर देगा, फिर तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

एक और आयत में इरशाद फ़रमाता हैः

قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ........ الخ.

अल्लाह ही तुम्हें जिलाता है, फिर वही तुम्हें मार डालेगा, फिर तुम्हें क़ियामत वाले दिन जिसके आने में कोई शक व शुब्हा नहीं जमा करेगा।

एक और जगह फ़रमाया- वे कहेंगे ख़ुदाया! तूने हमें दो दफ़ा मारा और दो दफ़ा जिलाया।

पस कलाम का मतलब यह है कि ऐसे ख़ुदा के साथ तुम दूसरों को शरीक क्यों ठहराते हो? औरों की इबादत उसके साथ क्यों करते हो? पैदा करने वाला सिर्फ़ वही, रोज़ी देने वाला सिर्फ़ वही, मालिक व मुख़्तार सिर्फ़ वही, तुम कुछ न थे उसने तुम्हें पैदा कर दिया, फिर तुम्हारी मौत के बाद फिर से पैदा करेगा यानी क़ियामत के दिन। इनसान बड़ा ही नाशुक्रा और बेक़द्रा है।

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِى الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ○ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ○ اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ○	(जितनी उम्मतें शरीअ़त वालों की गुज़री हैं) हमने (उनमें) हर उम्मत के वास्ते ज़िबह करने का तरीक़ा मुक़र्रर किया है, कि वे उसी (तरीक़े) पर ज़िबह किया करते थे, सो इन (एतिराज़ करने वाले) लोगों को चाहिए कि आपसे इस (ज़िबह के) मामले में झगड़ा न करें, और आप (उनको) अपने रब (यानी उसके दीन) की तरफ़ बुलाते रहिए, क्योंकि आप यक़ीनन सही रास्ते पर हैं। (67) और अगर (इस पर भी) ये लोग आपसे झगड़ा निकालते रहें, तो आप (आख़िरी बात यह) फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है। (68) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दरमियान कियामत के दिन (अ़मली) फ़ैसला फ़रमा देगा, जिन चीज़ों में तुम इख़्तिलाफ़ (झगड़ते और मतभेद) करते थे। (69)

हर क़ौम की इबादत का एक तरीक़ा है

असल में अ़रबी ज़बान में "मन्सक" का लफ़्ज़ी तर्जुमा उस जगह का है जहाँ के जाने-आने की इनसान आ़दत डाल ले। हज के अहकाम के पूरा करने को इसी लिये "मनासिक" कहा जाता है कि लोग बार-बार वहाँ जाते और ठहरते हैं। नक़ल किया गया है कि यहाँ मुराद यह है कि हर उम्मत के पैग़म्बरों के लिये हमने शरीअ़त मुक़र्रर की है, तो इस मामले में ये लोग न लड़ें। इससे ये मुश्रिक लोग मुराद हैं। और अगर मुराद हर उम्मत के बतौर क़ुदरत के उन अफ़आ़ल का मुक़र्रर करना है जैसे सूरः ब-क़रह में फ़रमान है कि हर एक के लिये एक सिम्त (दिशा) है, जिधर वह मुतवज्जह होता है, यहाँ भी है कि वह उसके बजा लाने वाले हैं तो यहाँ इशारा ख़ुद उनकी तरफ़ होगा, यानी यह सब अल्लाह के इरादे और उसकी बनाई हुई तक़दीर से कर रहे हैं, तो तू उनके झगड़ने से परेशान और ग़मगीन न हो और हक़ से न हट जा। अपने रब की तरफ़ बुलाता रह और अपनी हिदायत व इस्तिक़ामत (यानी सही रास्ते और उस पर जमाव) के कामिल यक़ीन पर रह, यही रास्ता हक़ से मिलाने वाला और मक़सूद को हासिल कराने वाला है। जैसे कि एक और जगह फ़रमाया है:

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ........ الخ.

कि ख़बरदार कहीं ये लोग तुझे ख़ुदा की आयतों के तेरे पास पहुँच जाने पर भी उनसे रोक न दें। अपने रब के रास्ते की दावते आ़म बराबर देता रह। अगर उस पर कोई तुझसे उलझे और तेरी बात न माने तो उससे पल्ला झाड़ ले, कह दे कि अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहा है। जैसे कई जगह इसी मज़मून को

दोहराया गया है। एक जगह है कि अगर ये तुझे झुठलायें तो उनसे कह दे कि मेरे लिये मेरा अ़मल है और तुम्हारे लिये तुम्हारा अ़मल, तुम मेरे आमाल से बरी हो और मैं तुम्हारे आमाल से बेज़ार हूँ।

पस यहाँ भी उनके कान खोल दिये कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल से बाख़बर है, वह तुम्हारी मामूली से मामूली हरकत को भी जानता है, और वही हम तुम में काफ़ी गवाह है। क़ियामत के दिन हम तुम में फ़ैसला अल्लाह ख़ुद कर देगा। और उस वक़्त सारे इख़्तिलाफ़ात (विवाद और मतभेद) मिट जायेंगे। जैसे एक जगह फ़रमाया कि तू इसी की दावत देता रह, हमारे हुक्म पर क़ायम रह और किसी की ख़्वाहिश (इच्छा) के पीछे न लग, और साफ़ ऐलान कर दे कि ख़ुदा की नाज़िल की हुई किताब पर मेरा ईमान है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ فِىْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ○	(आगे इसकी ताईद है कि ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला सब चीज़ों को जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। यक़ीनी बात है कि यह (सब उन का क़ौल व फ़ेल) आमालनामे में (भी महफ़ूज़ यानी दर्ज) है, (पस) यक़ीनन (साबित हो गया कि) यह (फ़ैसला करना) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक (बहुत) आसान है। (70)

अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को पूरी तरह जानता है

अल्लाह तआ़ला के हर तरह के कामिल इल्म का बयान हो रहा है कि ज़मीन व आसमान की हर चीज़ उसके इल्म के घेरे में है, एक ज़र्रा भी उससे बाहर नहीं। कायनात के वजूद से पहले ही कायनात का इल्म उसे था, बल्कि उसने लौहे-महफ़ूज़ में लिखवा दिया था। सही मुस्लिम में हदीस है कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन की पैदाईश से पचास हज़ार साल पहले जबकि उसका अ़र्श पानी पर था, मख़्लूक़ की तक़दीरें लिखीं। सुनन की हदीस में है कि सबसे पहले ख़ुदा तआ़ला ने क़लम को पैदा किया और उससे फ़रमाया- लिख, उसने मालूम किया कि क्या लिखूँ? फ़रमाया जो कुछ होने वाला है। पस क़ियामत तक जो कुछ होने वाला था उसे क़लम ने लिख लिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि सौ साल की राह में अल्लाह तआ़ला ने लौहे-महफ़ूज़ पैदा किया और मख़्लूक़ की पैदाईश से पहले जबकि अल्लाह तआ़ला अ़र्श पर था क़लम को लिखने का हुक्म दिया। उसने पूछा क्या लिखूँ? फ़रमाया मख़्लूक़ के मुताल्लिक़ क़ियामत तक का जो मेरा इल्म है, पस क़लम चल पड़ा और क़ियामत तक के होने वाले मामलात और चीज़ें जो ख़ुदा के इल्म में थे उसने लिख लिये। इसी के बारे में अपने नबी (सल्ल.) से इस आयत में फ़रमा रहा है कि क्या तू नहीं जानता कि आसमान व ज़मीन की हर एक चीज़ का मैं आ़लिम (जानने वाला) हूँ? पस यह उसका कमाले इल्म है कि चीज़ के वजूद से पहले उसे मालूम है, बल्कि लिख भी लिया है, और वह सब यूँ ही वाक़े होने वाला है। बन्दों के तमाम आमाल का इल्म उनके अ़मल से पहले ख़ुदा को है, वे जो करते हैं उसके करने से पहले अल्लाह उसको जानता था, हर फ़रमाँबरदार और नाफ़रमान उसके इल्म में था और उसकी किताब में लिखा हुआ था। हर चीज़ उसके इल्मी घेरे के अन्दर ही अन्दर थी, और यह चीज़ ख़ुदा तआ़ला पर कुछ मुश्किल भी न थी, सब किताब में था और रब पर बहुत ही आसान।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ○ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○ ع ٨ ١٦

और ये (मुशिरक) लोग अल्लाह तआ़ला के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जिन (की इबादत के जायज़ होने पर) अल्लाह तआ़ला ने (अपनी किताब में) कोई हुज्जत नहीं भेजी और न उनके पास उसकी कोई (अक़्ली) दलील है, और उन ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। (71) और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें जो कि (अपने मज़ामीन में) ख़ूब वाज़ेह हैं, पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम उन काफ़िरों के चेहरों में (अन्दरूनी नागवारी की वजह से) बुरे आसार देखते हो, क़रीब है कि ये उन लोगों पर (अब) हमला कर बैठें-(गे) जो हमारी आयतें उनके सामने पढ़ रहे हैं। आप (उन मुशिरकों से) कहिए कि क्या मैं तुमको इस (क़ुरआन) से भी ज़्यादा नागवार चीज़ बतला दूँ, वह दोज़ख़ है (कि) उसका अल्लाह ने काफ़िरों से वायदा किया है, और वह बुरा ठिकाना है। (72)

यह कैसी बेवक़ूफ़ी और हिमाक़त है

बग़ैर दलील के, बिना सनद के ख़ुदा के सिवा दूसरे की पूजा-पाठ, इबादत व बन्दगी करने वालों का जहल व कुफ़्र बयान फ़रमाता है कि सिवाय शैतानी पैरवी और बाप-दादों की देखा-देखी के उनके पास न कोई नक़्ली दलील है न अक़्ली। चुनाँचे एक और आयत में है:

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ.......... الخ.

जो भी ख़ुदा के साथ दूसरे माबूद को बेदलील पुकारे उससे ख़ुदा ख़ुद पूछगछ कर लेगा, नामुम्किन है कि ऐसे ज़ालिम छुटकारा पा जायें।

यहाँ भी फ़रमाया कि उन ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं, कि ख़ुदा के किसी अ़ज़ाब से उन्हें बचा ले। उन पर ख़ुदा के पाक कलाम की आयतें सही दलीलें, स्पष्ट हुज्जतें जब पेश की जाती हैं तो उनके तन-बदन में आग लग जाती है, ख़ुदा की तौहीद, रसूलों की पैरवी को साफ़ तौर पर बयान किया कि उन्हें सख़्त तौर पर नागवार मालूम हुआ, शक्लें बदल गयीं, माथों पर बल पड़ने लगे, आँतें चढ़ने लगीं, अगर बस चले तो ज़बान खींच लें, एक लफ़्ज़ हक़्क़ानियत (सच्चाई) का ज़मीन पर न आने दें उसी वक़्त गला घोंट दें। उन सच्चे ख़ैरख़्वाहों की, ख़ुदा के दीन के मुबल्लिग़ों (तब्लीग़ करने वालों) की बुराईयाँ करने लगते हैं, ज़बानें उनके ख़िलाफ़ चलने लगती हैं और मुम्किन हो तो हाथ भी उनके ख़िलाफ़ उठने से नहीं रुकते।

फ़रमान होता है कि ऐ नबी! उनसे कह दो कि एक तरफ़ तो तुम जो दुख इन ख़ुदा के दीन के मतवालों को पहुँचाना चाहते हो उसे वज़न (अन्दाज़ा) करो, दूसरी तरफ़ उस दुख का वज़न कर लो जो तुम्हें

Maktab e Ashraf

यक़ीनन तुम्हारे कुफ़्र व इनकार की वजह से पहुँचने वाला है। फिर देखो कि बदतरीन (ज़्यादा बुरी) चीज़ कौनसी है? वह दोज़ख़ की आग और वहाँ के तरह-तरह के अ़ज़ाब? या जो तकलीफ़ तुम इन सच्चे ईमान वालों और अल्लाह के नेक बन्दों को पहुँचाना चाहते हो? अगरचे यह भी तुम्हारे इरादे ही इरादे हैं। अब तुम भी समझ लो कि जहन्नम कैसी बुरी जगह है, किस क़द्र तकलीफ़देह है, और कितनी मुश्किल वाली जगह है। यक़ीनन वह बहुत ही बुरी जगह और बहुत ही ख़ौफ़नाक मक़ाम है, जहाँ राहत व आराम का नाम भी नहीं।

يَآ اَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ط اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ط وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ط ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ○ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ط اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ○

ऐ लोगो! एक अ़जीब बात बयान की जाती है, उसको कान लगाकर सुनो। (वह यह है कि) इसमें कोई शुब्हा नहीं कि जिनकी तुम ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते हो, वे एक (मामूली) मक्खी को तो पैदा ही नहीं कर सकते चाहे सब के सब भी (क्यों न) जमा हो जाएँ। और (पैदा करना तो बड़ी बात है, वे तो ऐसे आ़जिज़ हैं कि) अगर उनसे मक्खी कुछ छीन ले जाए तो उसको (तो) उससे छुड़ा (ही) नहीं सकते, ऐसा इबादत करने वाला भी लचर और ऐसा माबूद भी लचर। (73) (अफ़सोस है) उन लोगों ने अल्लाह की जैसी ताज़ीम करनी चाहिए थी (कि उसके सिवा किसी की इबादत न करते) वह न की, अल्लाह तआ़ला बड़ी क़ुव्वत वाला है सब पर ग़ालिब है। (74)

एक मिसाल

ख़ुदा के सिवा जिनकी इबादत की जाती है उनकी कमज़ोरी और उनके पुजारियों की कम-अ़क़्ली बयान हो रही है कि ऐ लोगो! ये जाहिल ख़ुदा के अ़लावा जिन-जिनकी इबादत करते हैं, रब के साथ ये जो शिर्क करते हैं, उनकी एक मिसाल बहुत ही उम्दा और बिल्कुल हक़ीक़त के मुताबिक़ बयान हो रही है। ज़रा तवज्जोह से सुनो! कि उनके तमाम के तमाम बुत जिन्हें ये ख़ुदा के शरीक ठहरा रहे हैं अगर जमा हो जायें और एक मक्खी बनाना चाहें तो सारे आ़जिज़ आ जायेंगे और मक्खी भी पैदा न कर सकेंगे।

मुस्नद अहमद की हदीसे क़ुदसी में फ़रमाने ख़ुदा है कि उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है? जो मेरी तरह किसी को बनाना चाहता है, अगर वास्तव में किसी को यह क़ुदरत हासिल है तो एक ज़र्रा या एक मक्खी या अनाज का एक दाना ही ख़ुद बना दे। बुख़ारी व मुस्लिम में इन अलफ़ाज़ में है कि वे एक ज़र्रा एक जौ ही बना दें। अच्छा उनके झूठे माबूदों की कमज़ोरी और बेबसी और सुनो! कि ये एक मक्खी का मुक़ाबला भी नहीं कर सकते, वह उनका हक़ उनकी चीज़ उनसे छीने चली जा रही है, ये बेबस हैं, यह भी तो नहीं कर सकते कि उससे अपनी चीज़ ही वापस ले लें, भला मक्खी जैसी हक़ीर और कमज़ोर मख़्लूक़ से भी जो

अपना हक़ न ले सके उससे भी ज़्यादा कमज़ोर, बोदा, ज़ईफ़, नातवाँ, बेबस और गिरा-पड़ा कोई और हो सकता है?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि "तालिब" से मुराद बुत और "मत्लूब" से मुराद मक्खी है। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को पसन्द करते हैं और ज़ाहिर लफ़्ज़ों से भी यही स्पष्ट है। दूसरा मतलब यह बयान फ़रमाया गया है कि तालिब से मुराद आबिद और मतलूब से मुराद ख़ुदा के सिवा दूसरे माबूद हैं। ख़ुदा की क़द्र व अज़मत ही उनके दिलों में नहीं बैठी और जमी, अगर ऐसा होता तो इतने बड़े ताक़त वाले ख़ुदा के साथ ऐसी ज़लील मख़्लूक़ को क्यों शरीक कर लेते? जिसे मक्खी उड़ाने की भी क़ुदरत न हो। जैसे क़ुरैश के मुश्रिक लोगों के बहुत से बुत थे। ख़ुदा तआ़ला अपनी क़ुदरत व क़ुव्वत में यक्ता (बेमिस्ल) है, तमाम चीज़ें बिना किसी नमूने के सबसे पहली बार में उसने पैदा कर दी हैं, बिना इसके किसी एक से भी मदद ले, मश्विरा ले, शरीक करे। फिर सबको हलाक करके दोबारा उससे भी ज़्यादा आसानी से पैदा करने पर क़ादिर है। वह बड़ी मज़बूत पकड़ वाला, पहली बार में बनाने और पैदा करने वाला, फिर दोबारा लौटाने वाला, रिज़्क़ देने वाला और बेहिसाब क़ुव्वत रखने वाला है, सब कुछ उसके सामने पस्त (झुका हुआ और बेहक़ीक़त) है, कोई उसके इरादे को बदलने वाला, उसके फ़रमान को टालने वाला, उसकी बड़ाई और बादशाहत का मुक़ाबला करने वाला नहीं। वह वाहिद व क़ह्हार है।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝	अल्लाह तआ़ला (को इख़्तियार है) रसूल बनाने के लिए (जिसको चाहता है) चुन लेता है, फ़रिश्तों में से (जिन फ़रिश्तों को चाहे) अहकाम पहुँचाने वाले मुक़र्रर फ़रमा देता है, और (इसी तरह) आदमियों में से। यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब देखने वाला है। (75) (यानी) वह उन (सब फ़रिश्तों और आदमियों) की आने वाली और गुज़री हुई हालतों को (ख़ूब) जानता है, और तमाम कामों का मदार अल्लाह ही पर है। (यानी वह अपनी ज़ात से मुस्तक़िल मालिक है)। (76)

ये ख़ुदा के क़ासिद और पैग़ाम पहुँचाने वाले

अपनी मुक़र्रर और तय की हुई तक़दीर के जारी करने और अपनी मुक़र्रर की हुई शरीअ़त को अपने रसूल तक पहुँचाने के लिये ख़ुदा तआ़ला जिस फ़रिश्ते को चाहता है मुक़र्रर कर लेता है। इसी तरह लोगों (इनसानों) में से भी पैग़म्बरी के सम्मान से जिसे चाहता है नवाज़ता है। वह बन्दों की तमाम बातें सुनता है, एक-एक बन्दे और उसके आमाल पर उसकी निगाह है, वह बख़ूबी जानता है कि नुबुव्वत के पद और ज़िम्मेदारी का हक़दार कौन है। जैसा कि एक जगह फ़रमायाः

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ.

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला ही को इल्म है कि रिसालत के मन्सब (ओ़हदे और पद) का सही तौर पर अहल (पात्र) कौन है? रसूलों के आगे पीछे का ख़ुदा को इल्म है, क्या उस तक पहुँचा क्या उसने पहुँचाया सब उस पर स्पष्ट और ज़ाहिर है। जैसे फ़रमान है:

عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا............ الخ.

यानी वह ग़ैब का जानने वाला है। अपने ग़ैब का किसी पर इज़हार नहीं करता। हाँ जिस पैग़म्बर को वह पसन्द फ़रमाये तो उसके आगे पीछे पहरे मुक़र्रर कर देता है ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचा दिये, और अल्लाह तआ़ला हर उस चीज़ का इहाता किये (यानी अपने घेरे में लिये) हुए है जो उनके पास है, और हर चीज़ की गिनती तक उसके पास शुमार हो चुकी है।

पस अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला अपने रसूलों का निगहबान (मुहाफ़िज़) है, जो उन्हें कहा सुना जाता है उस पर ख़ुद गवाह है, ख़ुद ही उनका हाफ़िज़ है और उनका मददगार भी है। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमायाः

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ........ الخ.

ऐ रसूल! जो कुछ तेरे पास रब की तरफ़ से उतरा है उसे पहुँचा दे। अगर ऐसा न किया तो रिसालत (पैग़म्बरी और नुबुव्वत) का हक़ अदा न होगा, और तेरी हिफ़ाज़त अल्लाह के ज़िम्मे है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ؑ (السجدة) وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ۭ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ۭ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ۭ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ڏ مِنْ قَبْلُ وَفِىْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ښ

ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ़ किया करो और सज्दा किया करो, और अपने रब की इबादत किया करो, और (तुम) ऐसे नेक काम (भी) किया करो, उम्मीद (यानी वायदा) है कि तुम फ़लाह पाओगे। (77) ❁ और अल्लाह (के काम) में ख़ूब कोशिश किया करो जैसा कि उसमें कोशिश करने का हक़ है, उसने तुमको (और उम्मतों से) मुमताज़ फ़रमाया, और (उसने) तुम पर दीन (के अहकाम) में किसी क़िस्म की तंगी नहीं की, तुम अपने बाप इब्राहीम की (इस) मिल्लत पर (हमेशा) क़ायम रहो। उस (अल्लाह) ने तुम्हारा लक़ब मुसलमान रखा है, (क़ुरआन नाज़िल होने से) पहले भी और इस (क़ुरआन) में भी ताकि तुम्हारे (गवाही के क़ाबिल और मोतबर होने के) रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) गवाह हों, और (इस रसूलुल्लाह की गवाही से पहले) तुम लोगों के मुक़ाबले में गवाह (तजवीज़) हो। सो तुम लोग (ख़ुसूसियत के साथ) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह ही को

❁ सज्दा इमाम शाफ़ई रह. के नज़दीक

السجدة عند الشافعي رحمه الله تعالى ١٢

Mahtab E. Ashraf

فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝	मज़बूत पकड़े रहो, वह तुम्हारा कारसाज़ है, (किसी की मुख़ालफ़त तुम को हक़ीक़त में नुक़सानदेह न होगी) सो क्या ही अच्छा कारसाज़ है और क्या अच्छा मददगार है। (78)

बस उसकी इबादत करो

इस दूसरे सज्दे के बारे में दो क़ौल हैं- पहले सज्दे की आयत के मौक़े पर हमने वह हदीस बयान कर दी है जिसमें है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- सूरः हज को दो सज्दों से फ़ज़ीलत दी गयी, जो ये सज्दे न करे वह इसे पढ़े ही नहीं। पस रुकूअ़ सज्दा इबादत और भलाई का हुक्म करके फ़रमाता है कि अपने माल अपनी जान और अपनी ज़बान से राहे ख़ुदा में जिहाद करो, और जिहाद का हक़ अदा करो। जैसे हुक्म दिया है कि ख़ुदा से इतना डरो जितना उससे डरने का हक़ है। उसी ने तुम्हें मक़बूल, प्यारा और चुना हुआ कर लिया है, दूसरी उम्मतों पर तुम्हें शराफ़त व बुज़ुर्गी, इज़्ज़त व बड़ाई अ़ता फ़रमाई। कामिल रसूल और कामिल शरीअ़त से तुम्हें नवाज़ा, तुम्हें आसान, सहज और उम्दा दीन दिया। वे अहकाम तुम पर न रखे, वह सख़्ती तुम पर न की, वह बोझ तुम पर न डाला जो तुम्हारे बस के न हों, जो तुम पर भारी गुज़रें, जिन्हें तुम पूरे न कर सको।

इस्लाम के बाद सबसे आला और सबसे ज़्यादा ताकीद वाला रुक्न नमाज़ है, इसे देखिये- घर में आराम से बैठे हुए हों तो चार रक्अ़तें फ़र्ज़ और अगर सफ़र में हों तो वे भी दो ही रह जायें। और ख़ौफ़ में तो हदीस के मुताबिक़ सिर्फ़ एक ही रक्अ़त, वह भी सवारी पर हो तो और पैदल हो तो, क़िब्ले की तरफ़ रुख़ हो तो और दूसरी तरफ़ रुख़ हो तो। इसी तरह यही हुक्म सफ़र की नफ़िल नमाज़ का है कि जिस तरफ़ सवारी का मुँह हो पढ़ सकते हैं। फिर नमाज़ का क़ियाम (खड़ा होना) भी बीमारी की वजह से साक़ित (ख़त्म) हो जाता है, मरीज़ बैठकर नमाज़ पढ़ सकता है, इसकी भी ताक़त न हो तो लेटे-लेटे अदा कर ले। इसी तरह दूसरे फ़राईज़ और वाजिबात को देखो कि उनमें अल्लाह तआ़ला ने किस क़द्र आसानियाँ रखी हैं। इसी लिये हुज़ूरे पाक सल्ल. फ़रमाया करते थे मैं सहल और बिल्कुल आसानी वाला दीन देकर भेजा गया हूँ।

आप सल्ल. ने जब हज़रत मुआ़ज़ और हज़रत अबू मूसा रज़ि. को यमन का अमीर बनाकर भेजा तो फ़रमाया था कि ख़ुशख़बरी सुनाना, नफ़रत न दिलाना। आसानी करना सख़्ती न करना। और भी इस मज़मून की बहुत सी हदीसें हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत की यही तफ़सीर करते हैं कि तुम्हारे दीन में कोई तंगी व सख़्ती नहीं।

उसने तुम्हारा नाम "मुस्लिम" रखा है, यानी अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से भी पहले, क्योंकि उनकी दुआ़ थी कि हम दोनों बाप बेटों को और हमारी औलाद में से भी एक गिरोह को मुस्लिम बना दे। लेकिन इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि यह क़ौल कुछ जचता नहीं कि पहले से मुराद हज़रत इब्राहीम के पहले से हो, इसलिये कि यह तो बहुत ज़ाहिर है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने इस उम्मत का नाम इस क़ुरआन में मुस्लिम नहीं रखा। तो "पहले से" के मायने यह हैं कि पहली किताबों में और

ज़िक्र में और इस पाक और आख़िरी किताब में, यही क़ौल हज़रत मुजाहिद रह. वग़ैरह का है और यही दुरुस्त है। क्योंकि इससे पहले इस उम्मत की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत का बयान है, उनके दीन के आसान होने का ज़िक्र है, फिर उन्हें दीन की और ज़्यादा रग़बत दिलाने के लिये बतलाया जा रहा है कि यह वह दीन है जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम लेकर आये थे। फिर इस उम्मत की बुज़ुर्गी के लिये और उन्हें माईल करने के लिये फ़रमाया जा रहा है कि तुम्हारा ज़िक्र मेरी पहली किताबों में भी है। मुद्दतों से अम्बिया की आसमानी किताबों में तुम्हारे चर्चे चले आ रहे हैं। पहली किताबों के पढ़ने वाले तुमसे ख़ूब वाकिफ़ हैं। इस क़ुरआन से पहले और इस क़ुरआन में तुम्हारा नाम मुस्लिम है और ख़ुद ख़ुदा तआ़ला का रखा हुआ है।

नसाई शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स जाहिलीयत के दावे अब भी करे (यानी बाप-दादों पर, नसब और ख़ानदान पर फ़ख़्र करे और दूसरे मुसलमानों को कमतर, गिरा हुआ और हल्का ख़्याल करे) वह जहन्नम का ईंधन है। किसी ने पूछा या रसूलल्लाह! चाहे वह रोज़े रखता हो और नमाज़ें भी पढ़ता हो? आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ-हाँ अगरचे वह रोज़ेदार और नमाज़ी हो। अल्लाह तआ़ला ने जो नाम तुम्हारे रखे हैं उन्हीं नामों से पुकारो और ख़ुद को बुलवाओ, मुस्लिमीन, मोमिनीन और इबादुल्लाह। सूरः ब-क़रह की आयत नम्बर 21 की तफ़सीर में हम इस हदीस को पूरी बयान कर चुके हैं।

फिर फ़रमाता है कि हमने तुम्हें आ़दिल उम्दा बेहतर उम्मत इसलिये बनाया है और तमाम उम्मतों में तुम्हारी अ़दालत (मोतबर, इन्साफ़-पसन्द होने) की शोहरत कर दी है कि तुम क़ियामत के दिन और लोगों पर गवाही दो। पहली तमाम उम्मतें उम्मते मुहम्मदिया की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत की मानने वाली होंगी। इस उम्मत को दूसरी तमाम उम्मतों पर सरदारी हासिल है, इसलिये इनकी गवाही उन पर मोतबर मानी जायेगी। इस बारे में कि उनके रसूलों ने अल्लाह का पैग़ाम उन्हें पहुँचा दिया है, वे तब्लीग़ का फ़र्ज़ अदा कर चुके हैं। और ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. इस उम्मत पर गवाही देंगे कि आप सल्ल. ने इन्हें दीने ख़ुदा पहुँचा दिया और रिसालत का हक़ अदा कर दिया। इस बारे में जितनी हदीसें हैं और इस सिलसिले की जितनी तफ़सीर है वह हम सबकी सब सूरः ब-क़रह के सत्रहवें रुकूअ़ की आयतः

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا........ الخ.

(यानी सूरः ब-क़रह की आयत नम्बर 143) की तफ़सीर में लिख आये हैं। इसलिये यहाँ उसे दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं, वहीं देख ली जाये। वहीं हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और उनकी उम्मत का वाक़िआ भी बयान कर दिया है।

फिर फ़रमाता है कि इस इतनी बड़ी अ़ज़ीमुश्शान नेमत का शुक्रिया तुम्हें ज़रूर अदा करना चाहिये, जिसका तरीक़ा यह है कि जो फ़राईज़ ख़ुदा तआ़ला के तुम पर हैं उन्हें शौक़ से दिल की ख़ुशी से बजा लाओ। ख़ुसूसन नमाज़ और ज़कात का पूरा ख़्याल रखो। जो कुछ ख़ुदा ने वाजिब किया है उसे दिली मेहनत से पूरा करो और जो चीज़ें हराम कर दी हैं उनके पास भी न फटको। पस नमाज़ ख़ालिस रब की है और ज़कात जिसमें रब की इबादत के अ़लावा मख़्लूक़ के साथ एहसान भी है, कि अमीर लोग अपने माल का एक हिस्सा फ़क़ीरों को ख़ुशी-ख़ुशी देते हैं, उनका काम चलता है, दिल ख़ुश हो जाता है। इसमें ख़ुदा की तरफ़ से बहुत आसानी है, हिस्सा भी कम है और साल भर में एक ही बार है। ज़कात के तमाम अहकाम सूरः तौबा की ज़कात वाली आयतः

Maktab E Ashraf

إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ.......... الخ.

(यानी सूरः तौबा की आयत नम्बर 60) की तफ़सीर में हमने बयान कर दिये हैं, वहीं देख लिये जायें।

फिर हुक्म होता है कि ख़ुदा पर पूरा भरोसा रखो, उसी पर तवक्कुल करो, अपने तमाम कामों में उसी से इमदाद तलब किया करो। एतिमाद हर वक़्त उसी पर रखो, उसी की ताईद पर नज़र रखो। वह तुम्हारा मौला है, तुम्हारा हाफ़िज़ है, मददगार है, तुम्हें तुम्हारे दुश्मनों पर कामयाबी अ़ता फ़रमाने वाला है। वह जिसका वाली बन गया उसे किसी और की विलायत (सरपरस्ती) की ज़रूरत नहीं। सबसे बेहतर वाली वही है। सबसे बेहतर मददगार वही है। तमाम दुनिया अगरचे दुश्मन हो जाये लेकिन वह सब पर क़ादिर है और सबसे ज़्यादा क़वी है।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत वुहैब बिन वर्द रज़ि. से मन्क़ूल है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है ऐ इनसान! अपने गुस्से के वक़्त तू मुझे याद कर लिया कर मैं भी अपने गुस्से के वक़्त तुझे माफ़ फ़रमा दिया करूँगा और जिन पर मेरा अ़ज़ाब नाज़िल होगा मैं तुझे उनमें से बचा लूँगा। बरबाद होने वालों के साथ तुझे बरबाद न करूँगा। ऐ आदम के बेटे! जब तुझ पर ज़ुल्म किया जाये तो तू सब्र व बरदाश्त और सहार से काम ले, मुझ पर निगाहें रख, मेरी मदद पर भरोसा रख, मेरी इमदाद पर राज़ी रह। याद रख मैं तेरी मदद करूँ यह इससे बहुत बेहतर है कि तू ख़ुद अपनी मदद करे (अल्लाह तआ़ला हमें भलाईयों की तौफ़ीक़ दे और अपनी इमदाद नसीब फ़रमाये, आमीन)।

अल्लाह का शुक्र है कि सत्रहवें पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर अठारह

सूरः मोमिनून

सूरः मोमिनून मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 118 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ○ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ○ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ○ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ○ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ○

यक़ीनन उन मुसलमानों ने (आख़िरत में) फ़लाह पाई (1) जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ़ करने वाले हैं। (2) और जो लग़्व बातों से (चाहे क़ौली हों या फ़ेली) अलग रहने वाले हैं। (3) और जो (आमाल व अख़्लाक़ में) अपनी सफ़ाई करने वाले हैं। (4) और जो अपनी शर्मगाहों की (हराम शहवत पूरी करने से) हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (5) लेकिन अपनी बीवियों से या अपनी (शरई) बाँदियों से (हिफ़ाज़त नहीं करते), क्योंकि उन पर (उसमें) कोई इल्ज़ाम नहीं। (6) हाँ, जो इसके अ़लावा (और जगह शहवत पूरी करने का) तलबगार हो, ऐसे लोग (शरई) हद से निकलने वाले हैं। (7) और जो अपनी (सुपुर्दगी में ली हुई) अमानतों और अपने अ़हदों का ख़्याल रखने वाले हैं। (8) और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं। (9) (पस) ऐसे ही लोग वारिस होने वाले हैं। (10) जो जन्नत के वारिस होंगे (और) वे उसमें हमेशा हमेशा रहेंगे। (11)

फ़लाह और कामयाबी पाने वाले मोमिन हज़रात

नसाई, तिर्मिज़ी और मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जब 'वही' (अल्लाह

का पैग़ाम या क़ुरआन की आयतें) उतरती तो एक ऐसी मीठी-मीठी भीनी-भीनी हल्की-हल्की सी आवाज़ आपके पास सुनी जाती जैसे शहद की मक्खियों के उड़ने की भिनभिनाहट की होती है।

एक बार यही हालत तारी हुई, थोड़ी देर के बाद जब 'वही' उतर चुकी तो आपने क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह होकर अपने दोनों हाथ उठाकर यह दुआ पढ़ी कि ख़ुदाया! तू हमें ज़्यादा कर कम न कर, हमारा इकराम कर अपमान व तौहीन न कर, हमें इनाम अ़ता फ़रमा मेहरूम न रख, हमें दूसरों पर तरजीह दे हम पर दूसरों को पसन्द न फ़रमा, हमसे तू ख़ुश हो जा और हमें ख़ुश कर दे। अ़रबी के अलफ़ाज़ ये हैं:

اَللّٰهُمَّ زِدْنَاوَلَاتَنْقُصْنَاوَاَكْرِمْنَاوَلَاتُهِنَّاوَاَعْطِنَاوَلَاتَحْرِمْنَاوَاٰثِرْنَاوَلَا تُؤْثِرْعَلَيْنَاوَارْضَ عَنَّاوَاَرْضِنَا.

फिर फ़रमाया- मुझ पर दस आयतें उतरी हैं जो उन पर क़ायम हो गया वह जन्नती हो गया। फिर आपने उपर्युक्त दस आयतें तिलावत फ़रमायीं। इमाम तिर्मिज़ी रह. इस हदीस को मुन्कर बतलाते हैं, क्योंकि इसका रावी यूनुस बिन सलीम है जो मुहद्दिसीन के नज़दीक मारूफ़ (जाना-पहचाना) नहीं। नसाई में है हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से हुज़ूरे पाक सल्ल. के आ़दात व अख़्लाक़ के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया हुज़ूर सल्ल. का ख़ुल्क़ (अख़्लाक़) क़ुरआन था। फिर इन आयतों की (यानी इस पारे की शुरू की पाँच आयतों की) तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया यही हुज़ूर सल्ल. के अख़्लाक़ थे।

नक़ल किया गया है कि जब अल्लाह तआ़ला ने जन्नते अ़दन पैदा की और उसमें दरख़्त वग़ैरह अपने हाथ से लगाये तो उसे देखकर फ़रमाया कि कुछ बोल, उसने यही आयतें तिलावत क़ीं जो क़ुरआन में नाज़िल हुयीं। अबू सईद रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसकी एक ईंट सोने की और दूसरी चाँदी की है....। फ़रिश्ते उसमें दाख़िल हुए कहने लगे वाह-वाह यह तो बादशाहों की जगह है। एक और रिवायत में है कि उसका गारा मुश्क का था। एक और रिवायत में है कि उसमें वो-वो चीज़ें हैं जो न किसी आँख ने देखीं न किसी दिल में उनका ख़्याल आया। एक और रिवायत में है कि जन्नत ने जब इन आयतों की तिलावत की तो जनाबे बारी ने फ़रमाया मुझे अपनी बुज़ुर्गी और जलाल की क़सम तुझमें बख़ील हरगिज़ दाख़िल नहीं हो सकता। एक और हदीस में है कि उसकी एक ईंट सफ़ेद मोती की है और दूसरी सुर्ख़ याक़ूत की, और तीसरी ज़बर्जद की। उसका गारा मुश्क का है, उसकी घास ज़ाफ़रान है.....। उसके आख़िर में है कि इस हदीस को बयान फ़रमाकर हुज़ूर सल्ल. ने यह आयत पढ़ीः

وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ.

और वाक़ई जो शख़्स अपनी तबीयत के बुख़्ल (कन्जूसी) से महफ़ूज़ रखा जाये ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (सूरः हश्र आयत 9)

ग़र्ज़ कि अल्लाह फ़रमाता है कि मोमिन मुराद को पहुँच गये, वे नेकबख़्ती पा गये, उन्होंने निजात पा ली। उन मोमिनों की शान यह है कि वे अपनी नमाज़ों में ख़ौफ़े ख़ुदा रखते हैं, ख़ुशूअ़ और सुकून के साथ नमाज़ अदा करते हैं। दिल हाज़िर रखते हैं। निगाहें नीची होती हैं। बाज़ू झुके हुए होते हैं।

मुहम्मद बिन सीरीन रह. का क़ौल है कि रसूले करीम सल्ल. के सहाबा इस आयत के नाज़िल होने से पहले अपनी निगाहें आसमान की तरफ़ उठाते थे लेकिन इस आयत के नाज़िल होने के बाद उनकी निगाहें नीची हो गयीं, सज्दे की जगह से अपनी निगाहें नहीं हटाते थे। और यह भी नक़ल किया गया है कि जाय-नमाज़ (नमाज़ की जगह) से इधर-उधर उनकी नज़रें नहीं जाती थीं। अगर किसी को इसके सिवा

Maktab E Ashraf

आ़दत पड़ गयी हो तो उसे चाहिये कि अपनी निगाहें नीची कर ले। एक मुर्सल हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. भी इस आयत के नाज़िल होने से पहले ऐसा किया करते थे। पस यह ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ उस शख़्स को हासिल हो सकता है जिसका दिल फ़ारिग़ हो, दिल का ख़ुलूस हासिल हो, नमाज़ में पूरी दिलचस्पी हो और तमाम कामों से ज़्यादा उसी में दिल लगता हो। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुझे ख़ुशबू और औ़रतें ज़्यादा पसन्द हैं और मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में रख दी गयी है। (नसाई)

एक अन्सारी सहाबी रज़ि. ने नमाज़ के वक़्त अपनी लौंडी (बाँदी) से कहा कि पानी लाओ, नमाज़ पढ़कर राहत हासिल करूँ तो सुनने वालों को उनकी यह बात भारी गुज़री। आपने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्ल. हज़रत बिलाल रज़ि. से फ़रमाते थे- ऐ बिलाल! उठो और नमाज़ के साथ हमें राहत पहुँचाओ।

फिर मोमिनों का एक और वस्फ़ (ख़ूबी और गुण) बयान हुआ कि वे बातिल से, शिर्क से, गुनाह से और हर एक बेहूदा और बेफ़ायदा क़ौल व अ़मल से बचते हैं। जैसे फ़रमान है:

وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا.

वे बेहूदा और बेकार चीज़ों से बुज़ुर्गाना (यानी नज़र-अन्दाज़ करते और आँख बचाते हुए) गुज़र जाते हैं।

वे बुराई और बेफ़ायदा कामों से ख़ुदा की मनाही की वजह से रुक जाते हैं। एक और वस्फ़ उनका यह है कि वे माल की ज़कात अदा करते हैं। अक्सर मुफ़स्सिरीन यही फ़रमाते हैं लेकिन इसमें एक बात यह है कि यह आयत मक्की है और ज़कात की फ़र्ज़ियत हिजरत के दूसरे साल में हुई है। फिर मक्की आयत में इसका बयान कैसे? इसका जवाब यह है कि असल ज़कात तो मक्का में वाजिब हो चुकी थी, हाँ इसकी मिक़्दार माल का निसाब वग़ैरह ये सब अहकाम मदीने में मुक़र्रर हुए। देखिये सूरः अन्आ़म में भी मक्किया है और उसमें ज़कात का हुक्म मौजूद है:

وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ.

यानी खेती के कटने वाले दिन उसकी ज़कात अदा कर दिया करो।

हाँ यह भी मायने हो सकते हैं कि मुराद ज़कात से यहाँ नफ़्स को शिर्क व कुफ़्र के मैल-कुचैल से पाक करना हो, जैसे फ़रमान है:

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا........ الخ.

जिसने अपने नफ़्स को पाक कर लिया उसने फ़लाह (कामयाबी) पा ली। और जिसने उसे ख़राब कर लिया वह नामुराद हुआ। यही एक क़ौल आयतः

وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ....... الخ.

(सूरः हा-मीम सज्दा आयत 6-7) में भी है। जिसका तर्जुमा यह है:

और ऐसे मुश्रिकों के लिये बड़ी ख़राबी है जो ज़कात नहीं देते और वे आख़िरत के मुन्किर ही रहते हैं।

और यह भी हो सकता है कि आयत में दोनों ज़कातें एक साथ मुराद ली जायें, यानी नफ़्स की ज़कात भी और माल की ज़कात भी। वास्तव में पूरा मोमिन वही है जो कि अपने नफ़्स को भी पाक रखे और अपने माल की भी ज़कात दे। वल्लाहु आलम

फिर एक और वस्फ़ (ख़ूबी और गुण) बयान फ़रमाया कि वह सिवाय अपनी बीवियों और मिल्कियत की बाँदियों के दूसरी औ़रतों से अपने नफ़्स को दूर रखते हैं। यानी हरामकारी से बचते हैं। ज़िना, लवातत

(औरत या मर्द के साथ पाख़ाने के रास्ते में संभोग करना) वग़ैरह से ख़ुद को बचाते हैं। हाँ उनकी बीवियाँ जो ख़ुदा ने उन पर हलाल की हैं और जिहाद में मिली हुई बाँदियाँ जो उन पर हलाल हैं, उनके साथ मिलने में कोई मलामत और हर्ज नहीं। जो शख़्स उनके सिवा और तरीक़ों से या औरों से ख़्वाहिश पूरी करे वह हद से गुज़र जाने वाला है।

Maktab_E_Ashraf

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि एक औरत ने अपने ग़ुलाम को ले लिया और अपनी सनद में यही आयत पेश की, जब हज़रत उमर रज़ि. को यह मालूम हुआ तो आपने सहाबा के सामने इस मामले को पेश किया। सहाबा ने फ़रमाया कि उसने ग़लत मायने मुराद लिये हैं। इस पर फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने उस ग़ुलाम का सर मुंडवा कर जिला-वतन कर दिया और उस औरत से फ़रमाया कि इसके बाद तू हर मुसलमान पर हराम है। लेकिन यह वाक़िआ मुन्क़ता है और साथ ही ग़रीब भी। इमाम इब्ने जरीर ने इसे सूरः मायदा की तफ़सीर के शुरू में ज़िक्र किया है लेकिन इसको ज़िक्र करने की मुनासिब जगह यही थी। उसे आम मुसलमानों पर हराम करने की वजह उसके इरादे के ख़िलाफ़ उसके साथ मामला करना था, वल्लाहु आलम।

इमाम शाफ़ई रह. और उनके मुवाफ़िक़ हज़रात ने इस आयत से दलील पकड़ी है कि अपने हाथ से अपना ख़ास पानी (यानी वीर्य) निकाल डालना हराम है, क्योंकि यह भी उन दोनों हलाल सूरतों के अ़लावा है, और मुश्त-ज़नी (हस्त-मैथुन) करने वाला शख़्स भी हद से आगे गुज़र जाने वाला है।

इमाम हसन बिन अ़रफ़ा ने अपने मशहूर जुज़ (किताब) में एक हदीस ज़िक्र की है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि सात क़िस्म के लोग हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआ़ला रहमत की नज़र से न देखेगा, न उन्हें पाक करेगा और न उन्हें आ़लिमों के साथ जमा करेगा। और उन्हें सब से पहले जहन्नम में जाने वालों के साथ जहन्नम में दाख़िल करेगा। यह और बात है कि वे तौबा कर लें। तौबा करने वालों पर ख़ुदा तआ़ला मेहरबानी फ़रमाता है।

1. एक तो हाथ से निकाह करने वाला यानी मुश्त-ज़नी (हस्त-मैथुन) करने वाला।
2. इग़लाम-बाज़ी (पीछे की राह में इच्छा पूरी) करने वाला।
3. और इग़लाम-बाज़ी कराने वाला।
4. और नशे बाज़ शराब का आ़दी।
5. और अपने माँ-बाप को मारने पीटने वाला, यहाँ तक कि वे चीख़-पुकार करने लगें।
6. और अपने पड़ोसियों को तकलीफ़ पहुँचाने वाला, यहाँ तक कि वे उस पर लानत भेजने लगें।
7. और अपनी पड़ोसन से बदकारी करने वाला।

नोटः माँ-बाप को मारना और पड़ोसी को सताना ही बहुत बड़ा ज़ुल्म है, कहाँ यह कि वे चीख़ें-चिल्लायें और उस पर लानत भेजें। यह तो और भी सख़्त बात है।

लेकिन इसमें एक रावी मजहूल (जिसका हाल मालूम नहीं) है। वल्लाहु आलम।

एक और वस्फ़ (ख़ूबी और कमाल) है कि वे अपनी अमानतें और अपने वायदे पूरे करते हैं। अमानत में ख़ियानत नहीं करते, बल्कि अमानत की अदायेगी में आगे बढ़ते और पहल करते हैं। वायदे पूरे करते हैं, इसके ख़िलाफ़ आ़दतें मुनाफ़िक़ों की होती हैं। रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं।

1. जब बात करे झूठ बोले।
2. जब वायदा करे ख़िलाफ़ करे।

3. जब उसको अमानत दी जाये तो उसमें ख़ियानत करे।

फिर एक और वस्फ़ बयान फ़रमाया कि वे नमाज़ों की उनके वक़्तों पर हिफ़ाज़त करते हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. से सवाल हुआ कि सबसे ज़्यादा महबूब अ़मल अल्लाह के नज़दीक क्या है? आपने फ़रमाया कि नमाज़ को वक़्त पर अदा करना। पूछा गया फिर? फ़रमाया माँ-बाप से अच्छा सुलूक करना। पूछा गया फिर? फ़रमाया ख़ुदा की राह में जिहाद करना। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि रुकूअ़ व सज्दे वग़ैरह के वक़्त की हिफ़ाज़त मुराद है। इन आयतों पर दोबारा नज़र डालो, शुरू में भी नमाज़ का बयान हुआ और आख़िर में भी नमाज़ का बयान हुआ, जिससे साबित हुआ कि नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है। हदीस शरीफ़ में है सीधे-सीधे रहो और तुम हरगिज़ इहाता न कर सकोगे, जान लो कि तुम्हारे तमाम आमाल में बेहतरीन अ़मल नमाज़ है। देखो वुज़ू की हिफ़ाज़त सिर्फ़ मोमिन ही कर सकता है।

इन सब सिफ़ात को बयान फ़रमाकर इरशाद होता है कि यही लोग वारिस हैं, जो जन्नतुल-फ़िरदौस के हमेशा के लिये वारिस होंगे। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि ख़ुदा से जब जन्नत माँगो तो जन्नतुल-फ़िरदौस माँगो, वह सबसे आला और बेहतर जन्नत है, वहीं से जन्नत की सब नहरें जारी होती हैं, उसी के ऊपर अल्लाह तआ़ला का अ़र्श है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

फ़रमान है कि तुममें से हर एक की दो-दो जगहें हैं, एक मन्ज़िल (ठिकाना) जन्नत में एक जहन्नम में। जब कोई दोज़ख़ में गया तो उसकी मन्ज़िल के वारिस जन्नती हैं, इसी का बयान इस आयत में है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जन्नती तो अपनी जन्नत की जगह संवार लेता है और जहन्नम की जगह ढहा देता है, और दोज़ख़ी इसके ख़िलाफ़ करता है। काफ़िर जो इबादत के लिये पैदा किये गये थे उन्होंने इबादत छोड़ दी तो उनके लिये जो इनाम थे वे उनसे छीनकर सच्चे मोमिनों के हवाले कर दिये गये। इसी लिये उन्हें वारिस कहा गया।

सही मुस्लिम में है कि कुछ मुसलमान पहाड़ों के बराबर गुनाह लेकर आयेंगे, जिन्हें अल्लाह तआ़ला यहूदियों व ईसाईयों पर डाल देगा और उन्हें बख़्श देगा। एक दूसरी सनद से रिवायत है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को एक-एक यहूदी या ईसाई देगा कि यह तेरा जहन्नम से फ़िदया है। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. ने जब यह हदीस सुनी तो हदीस के रिवायत करने वाले हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु को क़सम दी, उन्होंने तीन मर्तबा क़सम खाकर हदीस को दोहराया। इसी जैसी यह आयत भी है:

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِىْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا........ الخ.

यह जन्नत (जिसका ज़िक्र हुआ) ऐसी है कि हम अपने बन्दों में से उसका मालिक ऐसे लोगों को बना देंगे जो ख़ुदा से डरने वाले हों।

एक और आयत में है:

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِىْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا....... الخ.

और यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिये गये हो अपने नेक (आमाल) के बदले में।

फ़िरदौस रोम की भाषा में बाग़ को कहते हैं। बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि उस बाग़ को कहते हैं जिसमें अंगूर की बैलें हों। वल्लाहु आलम

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۗ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝

और हमने इनसान को मिट्टी के ख़ुलासे (यानी गिज़ा) से बनाया। (12) फिर हमने उसको नुत्फ़े से बनाया जो कि (एक मुक़र्ररा मुद्दत तक) एक महफ़ूज़ मक़ाम (यानी गर्भ) में रहा। (13) फिर हमने उस नुत्फ़े को ख़ून का लोथड़ा बना दिया, फिर हमने उस ख़ून के लोथड़े को (गोश्त की) बोटी बना दिया, फिर हमने उस बोटी (के बाज़ हिस्सों) को हड्डियाँ बना दिया, फिर हमने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया, फिर हमने (उसमें रूह डालकर) उसको एक दूसरी ही (तरह की) मख़्लूक़ बना दिया। सो कैसी बड़ी शान है अल्लाह की जो तमाम बनाने वालों से बढ़कर है। (14) फिर तुम इस (तमाम अजीब क़िस्से) के बाद ज़रूर ही मरने वाले हो। (15) फिर तुम क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किए जाओगे। (16)

इनसान और उसकी पैदाईश

अल्लाह तआला इनसान की पैदाईश की शुरूआत बयान करता है कि आदम की असल मिट्टी से है जो कीचड़ की और बजने वाली मिट्टी की सूरत में थी। फिर आदम के पानी से उनकी औलाद पैदा हुई जैसे फ़रमान है कि ख़ुदा तआला ने तुम्हें मिट्टी से पैदा करके फिर इनसान बनाकर ज़मीन पर फैला दिया। मुस्नद में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ख़ाक की एक मुट्ठी से पैदा किया जिसे तमाम ज़मीन पर से ली थी। पस इसी एतिबार से आदम की औलाद के रंग व रूप मुख़्तलिफ़ (भिन्न) हुए। कोई सुर्ख़ है कोई सफ़ेद है कोई स्याह है कोई दूसरे रंग का है। उनमें नेक हैं और बद भी हैं। "सुम्-म जअ़ल्नाहु" की ज़मीर (Pronoun) इनसान की पूरी प्रजाति की तरफ़ लौट रही है, जैसे दूसरे जगहों पर इरशाद है:

وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝

और इनसान की पैदाईश मिट्टी से शुरू की, फिर उसकी नस्ल को एक बेक़द्र (यानी वीर्य) से बनाया।

एक और आयत में है:

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝

क्या हमने तुमको एक बेक़द्र पानी (यानी वीर्य के क़तरे) से नहीं बनाया, फिर हमने उसको एक निर्धारित वक़्त तक एक सुरक्षित जगह (यानी औरत के गर्भ में) रखा।

पस इनसान के लिये एक निर्धारित मुद्दत तक उसकी माँ का रहम (गर्भ) ही ठिकाना होता है। जहाँ

Maktab E Ashraf

एक हाल से दूसरी हाल की तरफ़ और एक सूरत से दूसरी सूरत की तरफ़ मुन्तक़िल होता रहता है। फिर नुत्फ़े (वीर्य) की जो एक उछलने वाला पानी है, जो मर्द की पीठ और औरत के सीने से निकलता है, शक्ल बदल कर सुर्ख़ रंग की बोटी की शक्ल में बदल जाता है। फिर उसे गोश्त के एक टुकड़े की सूरत में बदल दिया जाता है, जिसमें कोई शक्ल और कोई ख़त नहीं होता। फिर उसमें हड्डियाँ बना दीं, सर हाथ पाँव रग पट्ठे वग़ैरह बनाये, पीठ की हड्डी बनाई। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि इनसान का तमाम बदन सड़ गल जाता है सिवाय रीढ़ की हड्डी के, इसी से पैदा किया जाता और इसी से तैयार किया जाता है। फिर उन हड्डियों को वह गोश्त पहनाता है ताकि वे ढकी और मज़बूत रहें, फिर उसमें रूह फूँकता है, जिससे वह हिलने-जुलने चलने-फिरने के क़ाबिल हो जाये और एक जानदार इनसान बन जाये। देखने, सुनने, समझने और हरकत व सुकून की क़ुदरत अ़ता फ़रमाता है, वह बरकत वाला ख़ुदा सब से अच्छी पैदाईश का पैदा करने वाला है।

हज़रत अ़ली रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) पर चार महीने गुज़र जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ते को भेजता है जो तीन-तीन अन्धेरियों में उसमें रूह फूँकता है। यह मायने हैं कि हम फिर उसे दूसरी ही पैदाईश में पैदा करते हैं यानी दूसरी क़िस्म की इस पैदाईश से मुराद रूह का फूँका जाना है। पस एक हालत में से दूसरी और दूसरी से तीसरी की तरफ़ माँ के पेट में ही हेर-फेर होने के बाद बिल्कुल नासमझ बच्चा पैदा होता है, फिर वह बढ़ता जाता है यहाँ तक कि वह जवान बन जाता है। फिर अधेड़पन आता है, फिर बूढ़ा हो जाता है, फिर बिल्कुल बूढ़ा हो जाता है, ग़र्ज़ कि रूह का फूँका जाना और फिर इन तब्दीलियों का आना शुरू हो जाता है। वल्लाहु आलम

अल्लाह के सच्चे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुम में से हर एक की पैदाईश चालीस दिन तक उसकी माँ के पेट में जमा होती है, फिर चालीस दिन तक वह जमे हुए ख़ून की शक्ल में रहता है, फिर चालीस दिन तक वह गोश्त के लोथड़े की शक्ल में रहता है, फिर अल्लाह तआ़ला फ़रिश्ते को भेजता है जो उसमें रूह फूँकता है, और ख़ुदा तआ़ला के हुक्म से चार बातें लिख ली जाती हैं- रोज़ी, मौत, अ़मल और नेक या बद (बुरा या भला) होना। पस क़सम है उसकी जिसके सिवा कोई माबूदे बर्हक़ नहीं कि एक शख़्स जन्नती का अ़मल करता रहता है यहाँ तक कि जन्नत से सिर्फ़ एक हाथ दूर रह जाता है, लेकिन तक़दीर का वह लिखा ग़ालिब आ जाता है और ख़ात्मे के वक़्त दोज़ख़ के काम करने लगता है और उसी पर मरता है और जहन्नम में पहुँच जाता है। इसी तरह एक इनसान बुरे काम करते करते दोज़ख़ से हाथ भर के फ़ासले पर रह जाता है लेकिन फिर तक़दीर का लिखा आगे बढ़ जाता है और जन्नत के आमाल पर ख़ात्मा होकर जन्नत में दाख़िल हो जाता है। (बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि नुत्फ़ा (वीर्य का क़तरा) जब रहम (गर्भ यानी माँ के पेट) में पड़ता है तो वह हर-हर बाल और नाख़ून की जगह पहुँच जाता है। फिर चालीस दिन के बाद उसकी शक्ल जमे हुए ख़ून जैसी हो जाती है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. अपने सहाबा से बातें बयान कर रहे थे कि एक यहूदी आ गया तो क़ुरैश के काफ़िरों ने उससे कहा यह नुबुव्वत के दावेदार हैं, उसने कहा अच्छा मैं इनसे एक सवाल करता हूँ जिसे नबियों के सिवा और कोई नहीं जानता। आपकी मज्लिस में आकर बैठकर पूछता है कि बताओ इनसान की पैदाईश किस चीज़ से होती है? आप सल्ल. ने फ़रमाया मर्द व औरत के नुत्फ़े से। मर्द का नुत्फ़ा ग़लीज़ और गाढ़ा होता है, उससे हड्डियाँ और पट्ठे बनते हैं और औरत का नुत्फ़ा रक़ीक़ और पतला होता है, उससे गोश्त और ख़ून बनता है। उसने कहा आप सच्चे

हैं, अगले नबियों का भी यही क़ौल है।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) को रहम (गर्भ/ बच्चेदानी) में चालीस दिन गुज़र जाते हैं तो एक फ़रिश्ता आता है और वह अल्लाह तआ़ला से मालूम करता है कि ख़ुदाया! यह नेक होगा या बद? मर्द होगा या औ़रत? जो जवाब मिलता है वह लिख लेता है, और अ़मल और उम्र और नर्मी और सख़्ती सब कुछ लिख लेता है। फिर दफ़्तर (यह लिखी हुई किताब) लपेट लिया जाता है, उसमें फिर किसी कमी-बेशी की गुंजाईश नहीं रहती। बज़्ज़ार की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने रहम (गर्भ) पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया है जो अ़र्ज़ करता है- ख़ुदाया! अब नुत्फ़ा है, ख़ुदाया अब लोथड़ा है, ख़ुदाया अब गोश्त का टुकड़ा है। जब अल्लाह तआ़ला उसे पैदा करना चाहता है वह पूछता है ख़ुदाया मर्द हो या औ़रत? नेकबख़्त हो या बदबख़्त? रिज़्क़ कितना है? ज़िन्दगी की मुद्दत क्या है? इसका जवाब दिया जाता है और ये सब चीज़ें लिख ली जाती हैं। इन सब बातों और अल्लाह की कामिल क़ुदरतों को बयान फ़रमाकर फ़रमाया कि वह सबसे अच्छी पैदाईश करने वाला अल्लाह बरकतों वाला है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने अपने रब की मुवाफ़क़त चार बातों में की है, जब यह आयत उतरी कि हमने इनसान को बजती मिट्टी से पैदा किया है तो बेसाख़्ता (एक दम) मेरी ज़बान से ये अलफ़ाज़ निकले:

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ.

यानी अल्लाह की कैसी बड़ी शान है जो तमाम बनाने वालों से बढ़कर है।

और वही फिर उतरा। ज़ैद बिन साबित अन्सारी रज़ि. को जब रसूले करीम सल्ल. ऊपर वाली आयतें लिखवा रहे थे और यहाँ तक लिखवा चुके-

ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ

कि फिर हमने (उसमें रूह डालकर) एक दूसरी ही (तरह की) मख़्लूक़ बना दिया।

तो हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. ने बेसाख़्ता कहा- 'फ़-तबारकल्लाहु अह्सनुल-ख़ालिक़ीन'

यानी अल्लाह की कैसी बड़ी शान है जो तमाम बनाने वालों से बढ़कर है।

इसे सुनकर अल्लाह के नबी हंस दिये। हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. ने मालूम किया कि या रसूल्लाह! आप क्यों हंसे? आपने फ़रमाया इस आयत के ख़ात्मे (समापन) पर भी यही है। इस हदीस की सनद का एक रावी जाबिर जोअ़फ़ी है जो बहुत ही ज़ईफ़ (कमज़ोर) है और यह रिवायत बिल्कुल मुन्कर है। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि. 'वही' के कातिब (लिखने वाले) मदीना में थे न कि मक्का में। हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. के इस्लाम का वाक़िआ़ भी मदीना का है और यह आयत मक्का में नाज़िल हुई है। पस उपर्युक्त रिवायत बिल्कुल मुन्कर है। वल्लाहु आलम।

इस पहली पैदाईश के बाद तुम मरने वाले हो, फिर क़ियामत के दिन दूसरी बार पैदा किये जाओगे, फिर हिसाब व किताब होगा, भलाई बुराई का बदला मिलेगा।

और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाए और हम मख़्लूक़ (की मस्लेहतों) से बेख़बर न थे। (17)	وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ○

Maktab E Ashraf

सात आसमान

इनसान की पैदाईश का ज़िक्र करके आसमानों की तख़्लीक़ (पैदाईश और बनाने) का ज़िक्र हो रहा है। जिनकी बनावट इनसानी बनावट से बहुत बड़ी, बहुत भारी और बहुत बड़ी सिफ़त वाली है। सूरः अलिफ़ लाम मीम सज्दा में भी इसी का बयान है जिसे हुज़ूर सल्ल. जुमे के दिन सुबह की नमाज़ की पहली रकअ़त में पढ़ा करते थे। वहाँ पहले आसमान व ज़मीन की पैदाईश का ज़िक्र है फिर इनसानी पैदाईश का ज़िक्र है, फिर क़ियामत का और सज़ा जज़ा का ज़िक्र है, वग़ैरह। सात आसमानों के बनाने का ज़िक्र किया है। जैसे फ़रमान है:

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ....... الخ.

सातों आसमान और सब ज़मीनों और उनकी सब चीज़ें अल्लाह तआ़ला की तस्बीह बयान करती हैं। क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ला ने किस तरह ऊपर तले सातों आसमानों को बनाया। अल्लाह तआ़ला वह है जिसने सात आसमान बनाये और उन्हीं जैसी ज़मीनें। उसका हुक्म उनके दरमियान नाज़िल होता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है और तमाम चीज़ों को अपने वसीअ़ (अपार) इल्म से घेरे हुए है। अल्लाह अपनी मख़्लूक़ से ग़ाफ़िल नहीं, जो चीज़ ज़मीन में जाये जो ज़मीन से निकले अल्लाह के इल्म में है। आसमान की बुलन्द व ऊँची चीज़ें, ज़मीन की पोशीदा चीज़ें, पहाड़ों की चोटियाँ, समुद्रों की तह सब उसके सामने खुली हुई है। पहाड़ों की, टीलों की रेत की, समुद्रों की, मैदानों की, दरख़्तों की सब की उसे ख़बर है। दरख़्तों का कोई पत्ता नहीं गिरता जो उसके इल्म में न हो, कोई दाना ज़मीन की अन्धेरियों में ऐसा नहीं जाता जिसे वह जानता न हो, कोई तर-ख़ुश्क चीज़ ऐसी नहीं जो खुली किताब में न हो।

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ○ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ○ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ○ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ

और हमने आसमान से (मुनासिब) मिक़्दार के साथ पानी बरसाया, फिर हमने उसको (मुद्दत तक) ज़मीन में ठहराया, और हम उस (पानी) के ख़त्म कर देने पर (भी) क़ादिर हैं। (18) फिर हमने उस (पानी) के ज़रिये से बाग़ पैदा किए खजूरों के और अंगूरों के, तुम्हारे वास्ते उनमें कसरत से मेवे भी हैं, और उनमें से खाते भी हो। (19) और (उसी पानी से) एक (ज़ैतून का) पेड़ भी (हमने पैदा किया) जो कि तूरे-सीना में (कसरत से) पैदा होता है, जो कि उगता है तेल लिए हुए और खाने वालों के लिए सालन लिए हुए। (20) और तुम्हारे लिए मवेशियों में (भी) ग़ौर करने का मौक़ा है कि हम तुमको उनके पेट में की चीज़ (यानी दूध) पीने को देते हैं,

और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत-से फ़ायदे हैं, और (साथ ही) उनमें से बाज़ को खाते भी हो। (21) और उन पर और कश्ती पर लदे-लदे फिरते (भी) हो। (22)	نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝

ع

यह मीठे पानी के भंडार

अल्लाह तआ़ला की यूँ तो बेशुमार और अनगिनत नेमतें हैं लेकिन चन्द बड़ी-बड़ी नेमतों का यहाँ ज़िक्र हो रहा है कि वह आसमान से हाजत व ज़रूरत के मुताबिक़ पानी बरसाता है। न तो बहुत ज़्यादा कि ज़मीन ख़राब हो जाये और पैदावार सड़ गल जाये, न बहुत कम कि फल अनाज वग़ैरह पैदा ही न हों, बल्कि इस अन्दाज़े से कि खेती हरी-भरी रहे, बाग़ात हरे-भरे रहें, हौज़ तालाब नहरें नदियाँ नाले दरिया बह निकलें, न पीने की कमी हो न पिलाने की, यहाँ तक कि जिस जगह ज़्यादा बारिश की ज़रूरत होती है वहाँ बारिश ज़्यादा होती है और जहाँ कम की ज़रूरत होती है वहाँ कम होती है। और जहाँ की ज़मीन इस क़ाबिल ही नहीं होती वहाँ पानी नहीं बरसता, लेकिन नदियों और नालों के ज़रिये वहाँ क़ुदरत बरसात का पानी पहुँचाकर वहाँ की ज़मीन को सैराब कर देती है। जैसे कि मिस्र के इलाक़े की ज़मीन जो दरिया-ए-नील के पानी से सरसब्ज़ व तरोताज़ा हो जाती है। इसी पानी के साथ सुर्ख़ मिट्टी खिंचकर जाती है जो हब्शा के इलाक़े में होती है, वहाँ की बारिश के साथ वह मिट्टी बहकर पहुँचती है जो ज़मीन पर ठहर जाती है और ज़मीन काश्त के क़ाबिल हो जाती है, वरना वहाँ की नमकीली ज़मीन खेती-बाड़ी के क़ाबिल नहीं। सुब्हानल्लाह! उस पाक ज़ात, हर चीज़ की ख़बर रखने वाले, सब कुछ जानने वाले, रहम व करम करने वाले रब्बे करीम की क्या-क्या क़ुदरतें और हिक्मतें हैं।

ज़मीन में ख़ुदा तआ़ला पानी को ठहरा देता है, ज़मीन में उसको चूस लेने और जज़्ब कर लेने की क़ाबलियत ख़ुदा तआ़ला पैदा कर देता है ताकि दानों और गुठलियों को अन्दर ही अन्दर वह पानी पहुँचा दे। फिर फ़रमाता है कि हम उसके ले जाने और दूर कर देने पर यानी न बरसाने पर भी क़ादिर हैं, अगर चाहें तो नमकीली (यानी जो खेती के क़ाबिल न हो) और पथरीली ज़मीन पर और पहाड़ों और बेकार वनों में बरसा दें। अगर चाहें पानी को कड़वा कर दें, न पीने के क़ाबिल रहे न पिलाने के, न खेत और बाग़ों के मतलब का रहे न नहाने धोने के मक़सद का। अगर चाहें ज़मीन में व क़ुव्वत ही न रखें कि वह पानी को जज़्ब कर ले, चूस ले, बल्कि पानी ऊपर ही ऊपर तैरता फिरे। यह भी हमारे इख़्तियार में है कि ऐसी दूर दराज़ झीलों में पानी पहुँचा दें कि तुम्हारे लिये बेकार हो जाये और तुम कोई फ़ायदा उससे न उठा सको। यह ख़ास ख़ुदा का फ़ज़्ल व करम और उसका लुत्फ़ व रहम है कि वह बादलों से मीठा उम्दा हल्का और अच्छे ज़ायक़े वाला पानी बरसाता है, फिर उसे ज़मीन में पहुँचाता है और इधर-उधर रेल-पेल कर देता है, खेतियाँ अलग पकती हैं, बाग़ात अलग तैयार होते हैं, ख़ुद पीते हो अपने जानवरों को पिलाते हो, नहाते धोते हो, पाकीज़गी और सुथराई हासिल करते हो। वाक़ई अल्लाह की ज़ात तारीफ़ के लायक़ है।

आसमानी बारिश से रब्बुल-आ़लमीन तुम्हारे लिये रोज़ियाँ उगाता है, लहलहाते हुए खेत हैं, कहीं

सरसब्ज़ (हरे-भरे) बाग़ हैं जो अलावा ख़ुशनुमा और अच्छे लगने के मुफ़ीद और फल वाले हैं। खजूर अंगूर जो अ़रब वालों का दिल-पसन्द मेवा है और इसी तरह हर मुल्क वालों के लिये अलग-अलग तरह-तरह के मेवे उसने पैदा कर दिये हैं। जिनकी पूरी शुक्रगुज़ारी भी किसी के बस की नहीं। बहुत मेवे तुम्हें उसने दे रखे हैं जिनकी ख़ूबसूरती भी तुम देखते हो और उनके अच्छे ज़ायक़े से भी खाकर फ़ायदा उठाते हो।

फिर ज़ैतून के दरख़्त (पेड़) का ज़िक्र फ़रमाया। तूरे सीना वह पहाड़ से जिस पर ख़ुदा तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से बातचीत की थी और उसके इर्द-गिर्द (आस-पास) की पहाड़ियाँ। 'तूर' उस पहाड़ को कहते हैं जो हरा और दरख़्तों वाला हो, वरना उसे जबल कहेंगे, तूर नहीं कहेंगे। पस तूरे सीना में जो ज़ैतून का पेड़ पैदा होता है उसमें से तेल निकलता है, जो खाने वालों को सालन का काम देता है। हदीस में है कि ज़ैतून का तेल खाओ और लगाओ, वह मुबारक दरख़्त में से निकलता है। (अहमद)

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के यहाँ एक साहिब आ़शूरा (यानी दस मुहर्रम) की रात को मेहमान बनकर आये तो आपने उन्हें ऊँट की सिरी और ज़ैतून का तेल खिलाया और फ़रमाया यह उस मुबारक दरख़्त का तेल है जिसका ज़िक्र ख़ुदा तआ़ला ने अपने नबी से किया है।

फिर चौपायों का ज़िक्र हो रहा है- और उनसे लिबास वग़ैरह बनाते हैं, उन पर सवार होते हैं, उन पर अपना सामान असबाब लादते हैं और दूर-दराज़ तक पहुँचते हैं कि अगर ये न होते तो वहाँ तक पहुँचने में जान आधी रह जाती। बेशक अल्लाह तआ़ला बन्दों पर मेहरबानी और रहमत वाला है। जैसे फ़रमान है:

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ........ الخ.

क्या वे नहीं देखते कि ख़ुद हमने उन्हें चौपायों का मालिक बना रखा है कि ये उनके गोश्त खायें, उन पर सवारियाँ लें और तरह-तरह के नफ़े (फ़ायदे) हासिल करें। क्या अब भी उन पर हमारी शुक्रगुज़ारी वाजिब नहीं? ये ख़ुश्की की सवारियाँ हैं फिर तरी की सवारियाँ कश्ती जहाज़ वग़ैरह अलग हैं।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ○ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا	और हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा, सो उन्होंने (अपनी क़ौम से) फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह ही की इबादत किया करो, उसके सिवा कोई तुम्हारे लिए माबूद बनाने के लायक़ नहीं, फिर क्या तुम (दूसरों को माबूद बनाने से) डरते नहीं हो? (23) पस (नूह अ़लैहिस्सलाम की यह बात सुन कर) उनकी क़ौम में जो काफ़िर सरदार थे, (अ़वाम से) कहने लगे कि यह शख़्स सिवाय इसके कि तुम्हारी तरह का एक (मामूली) आदमी है और कुछ नहीं, (इस दावे से) उसका मतलब यह है कि तुमसे बरतर होकर रहे, और अल्लाह तआ़ला को (रसूल भेजना) मन्ज़ूर होता तो फ़रिश्तों को भेजता, हमने यह बात अपने पहले

الْاَوَّلِيْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ۝

बड़ों में नहीं सुनी। (24) बस यह एक आदमी है जिसको जुनून हो गया है। सो एक ख़ास वक़्त (यानी उसके मरने के वक़्त) तक उस (की हालत) का और इन्तिज़ार कर लो। (25)

Maktaba E Ashraf

लेकिन इसके बावजूद

हज़रत नूह् अ़लैहिस्सलाम को ख़ुदा तआ़ला ने बशीर व नज़ीर (ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला) बनाकर उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा। आपने उनमें जाकर पैग़ामे ख़ुदा पहुँचाया कि ख़ुदा की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारी इबादतों का हक़्दार कोई नहीं। तुम ख़ुदा के सिवा उसके साथ दूसरों को पूजते हो, अल्लाह से डरते नहीं हो। कौम के बड़ों और सरदारों ने कहा कि यह तो तुम जैसा ही एक इनसान है। नुबुव्वत का दावा करके तुमसे बड़ा बनना चाहता है। सरदारी हासिल करने की फ़िक्र में है। भला इनसान की तरफ़ 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) कैसे आती है? ख़ुदा का इरादा नबी भेजने का होता तो किसी आसमानी फ़रिश्ते को भेज देता। यह तो हमने अपने बाप दादों से नहीं सुनी, यह तो बावला शख़्स है कि ऐसे दावे करता और डींगें मारता है। अच्छा ख़ामोश रहो, देख लो हलाक हो जायेगा।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝
فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ
وَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ
فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ
وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ
وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ
مُّغْرَقُوْنَ ۝ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ
مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

नूह ने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरा बदला ले इस वजह से कि उन्होंने मुझको झुठलाया है। (26) पस हमने (उनकी दुआ़ क़ुबूल की और) उनके पास हुक्म भेजा कि तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म से कश्ती तैयार कर लो, फिर जिस वक़्त हमारा (अ़ज़ाब का) हुक्म (क़रीब) आ पहुँचे और (निशानी उसकी यह है कि) ज़मीन से पानी उबलना शुरू हो तो (उस वक़्त) हर क़िस्म (के जानवरों) में से एक-एक नर और एक-एक मादा यानी दो-दो अ़दद उस (कश्ती) में दाख़िल कर लो, और अपने घर वालों को भी (सवार कर लो) उसको छोड़कर जिस पर उनमें से (ग़र्क़ होने का) हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है। और (यह सुन लो कि) मुझसे काफ़िरों (की निजात) के बारे में कुछ गुफ़्तगू मत करना (क्योंकि) वे सब ग़र्क़ किए जाएँगे। (27) फिर जिस वक़्त तुम और तुम्हारे (मुसलमान) साथी कश्ती में बैठ चुको तो यूँ कहना, शुक्र है ख़ुदा का जिसने हमको काफ़िर

لوگوں से (यानी उनके फ़ेलों और तकलीफ़ों से) निजात दी। (28) और यूँ कहना कि ऐ मेरे रब! मुझको (ज़मीन पर) बरकत का उतारना उतारियो, और आप सब उतारने वालों से अच्छे हैं। (29) इस (ज़िक्र हुए वाक़िए) में बहुत-सी निशानियाँ हैं, और हम (ये निशानियाँ मालूम कराकर अपने बन्दों को) आज़माते हैं। (30)	الَّذِیْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ○ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ○ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِیْنَ ○

Maktaba Ashraf

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़

जब नूह अ़लैहिस्सलाम उनसे तंग आ गये और मायूस हो गये तो अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैं लाचार हो गया हूँ तू मेरी मदद फ़रमा। झुठलाने वालों पर मुझे ग़ालिब कर। उसी वक़्त अल्लाह का फ़रमान सादिर हुआ कि कश्ती बनाओ और ख़ूब मज़बूत लम्बी-चौड़ी। उसमें हर क़िस्म का एक जोड़ा रख लो, हैवानात (जानवरों) नबातात (पेड़-पौधों) फल वग़ैरह वग़ैरह, और उसी में मोमिनों और अपने ऊपर ईमान रखने वाले यार-रिश्तेदारों और क़रीबी लोगों को भी बैठा लो, मगर जिस पर ख़ुदा की तरफ़ से हलाकत व तबाही का फ़ैसला हो चुका है, ईमान नहीं लाये, जैसे आपकी क़ौम के काफ़िर और आपका लड़का और आपकी बीवी। वल्लाहु आलम

और जब तुम आसमानी अ़ज़ाब बारिश और पानी आने की शक्ल में देख लो फिर मुझसे उन ज़ालिमों की सिफ़ारिश न करना। फिर उन पर रहम न करना, न उनके ईमान की उम्मीद रखना। बस फिर तो ये सब ग़र्क़ हो जायेंगे और कुफ़्र ही पर उनका ख़ात्मा होगा। इसका पूरा क़िस्सा सूरः हूद की तफ़सीर में गुज़र चुका है, इसलिये हम यहाँ नहीं दोहराते।

जब तू और तेरे मोमिन साथी कश्ती पर सवार हो जायें तो कहना कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जिसने हमें ज़ालिमों से निजात दी। जैसे फ़रमान है कि ख़ुदा तआ़ला ने तुम्हारी सवारी के लिये कश्तियाँ और चौपाये बनाये हैं ताकि तुम सवारी लेकर अपने रब की नेमत को मानो और सवार होकर कहो कि वह ख़ुदा पाक है जिसने इन जानवरों को हमारे ताबे बना दिया, हालाँकि हममें ख़ुद इतनी ताक़त न थी। यक़ीनन हम अपने रब की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने यही कहा और फ़रमाया कि आओ इसमें बैठ जायें, अल्लाह के नाम के साथ इसका चलना और ठहरना है। पस शुरू चलने के वक़्त भी ख़ुदा को याद किया और जब वह ठहरने लगी तब भी ख़ुदा को याद किया और दुआ़ की कि ख़ुदाया मुझे मुबारक मन्ज़िल पर उतारना और तू ही सबसे बेहतर उतारने वाला है। इसमें यानी मोमिनों की निजात और काफ़िरों की हलाकत (तबाही) में अम्बिया की तस्दीक़ की निशानियाँ हैं, ख़ुदा की ख़ुदाई की अ़लामतें (निशानियाँ) हैं, उसकी क़ुदरत उसका इल्म इससे ज़ाहिर होता है। यक़ीनन रसूलों को भेजकर ख़ुदा तआ़ला अपने बन्दों की आज़माईश और उनका पूरा इम्तिहान कर लेता है।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝
فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ ع ٢
وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ
كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ
يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا
تَشْرَبُوْنَ ۝ۙ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ
اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا
مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ
مُّخْرَجُوْنَ ۝ۙ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا
تُوْعَدُوْنَ ۝ۙ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا
نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝ۙ اِنْ
هُوَ اِلَّا رَجُلُ ۨ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّ
مَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ

फिर हमने नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम के बाद दूसरा गिरोह पैदा किया। (31) फिर हमने उनमें एक पैग़म्बर को भेजा जो उनमें ही के थे, (उन पैग़म्बर ने कहा) कि तुम लोग अल्लाह तआ़ला ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा और कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं, क्या तुम (शिर्क से) डरते नहीं हो? (32)

और (उन पैग़म्बर की यह बात सुनकर) उनकी क़ौम में जो सरदार थे, जिन्होंने (ख़ुदा और रसूल के साथ) कुफ़्र किया था, और आख़िरत के आने को झुठलाया था, और हमने उनको दुनियावी ज़िन्दगी में ऐश व आराम भी दिया था, कहने लगे कि बस यह तो तुम्हारी तरह एक (मामूली) आदमी हैं, (चुनाँचे) ये वही खाते हैं जो तुम खाते हो और वही पीते हैं जो तुम पीते हो। (33) और अगर तुम अपने जैसे एक (मामूली) आदमी के कहने पर चलने लगो तो बेशक तुम (अ़क्ल के) घाटे में हो। (34) क्या यह शख़्स तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और (मरकर) मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे तो (दोबारा ज़िन्दा करके ज़मीन से) निकाले जाओगे? (35) बहुत ही दूर और बहुत ही दूर "की बात" है, जो बात तुमसे कही जाती है। (36) बस ज़िन्दगी तो यही हमारी दुनियावी ज़िन्दगी है कि हममें कोई मरता है और कोई पैदा होता है, और हम दोबारा ज़िन्दा न किए जाएँगे। (37) बस यह एक ऐसा शख़्स है जो अल्लाह पर झूठ बाँधता है, और हम तो हरगिज़ इसको सच्चा न समझेंगे। (38) पैग़म्बर ने दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! मेरा बदला ले, इस वजह से कि उन्होंने मुझको झुठलाया। (39) इरशाद हुआ कि ये लोग जल्द ही शर्मिन्दा होंगे। (40) चुनाँचे उनको एक सख़्त आवाज़

Maktab E Ashraf

Maktab-e-Ashraf

بِمَا كَذَّبُوْنِ ○ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ
نٰدِمِيْنَ ○ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ
فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○

(यानी अ़ज़ाब) ने सच्चे वायदे के मुवाफ़िक़ आ पकड़ा, (जिससे वे सब हलाक हो गए) फिर हम ने उनको कूड़े-करकट (की तरह बरबाद) कर दिया, सो ख़ुदा की मार काफ़िर लोगों पर। (41)

फिर बहुत सी उम्मतें आयीं

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के बाद भी बहुत सी उम्मतें आयीं, जैसे कि 'आ़द', जो उनके फ़ौरन बाद ही थे। या 'समूद' कि उन पर चीख़ का अ़ज़ाब आया था, जैसा कि इस आयत में है। उनमें भी अल्लाह के रसूल आये। ख़ुदा की इबादत और उसकी तौहीद की तालीम दी लेकिन उन्होंने झुठलाया, विरोध किया, रसूलों की पैरवी से इनकार किया, महज़ इस बिना पर कि ये इनसान हैं। क़ियामत को भी न माना, इन जिस्मों के साथ दोबारा ज़िन्दा होने का भी इनकार किया और कहने लगे कि यह बिल्कुल समझ में न आने वाली बात है। मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना और हिसाब-किताब लिया जाना कोई चीज़ नहीं। इस शख़्स ने ये सब बातें अपनी तरफ़ से ख़ुद गढ़ ली हैं, हम ऐसी ग़लत सलत बातों के मानने वाले नहीं।

नबी ने दुआ़ की और उनके मुक़ाबले में ख़ुदा तआ़ला से मदद तलब की। उसी वक़्त जवाब मिला कि तेरे साथ उनकी मुख़ालफ़त (विरोध) अभी-अभी उन पर अ़ज़ाब बनकर बरसेगी और ये परेशान हो जायेंगे। आख़िर एक ज़रबदस्त चीख़ और बेपनाह चिंघाड़ के साथ सब हलाक कर दिये गये, और इसी के वे मुस्तहिक़ भी थे। तेज़ व तुन्द आँधी और पूरी ताक़त व हवा के साथ ही फ़रिश्ते की दिल दहलाने वाली ख़ौफ़नाक आवाज़ ने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया, वे हलाक और तबाह हो गये। सिर्फ़ मकानात के खंडर उनके गुज़रे हुए लोगों की निशानदेही के लिये रह गये। वे कूड़े-करकट की तरह बिल्कुल बेनिशान हो गये। ऐसे ज़ालिमों के लिये दूरी है, उन पर रब ने ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन्हीं का किया हुआ था जो उनके सामने आया। पस लोगो! तुम्हें भी अल्लाह के रसूल सल्ल. की मुख़ालफ़त से डरना चाहिये।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ○ مَا
تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ○
ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً
رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّ

फिर उन (आ़द व समूद) के हलाक होने के बाद हमने और उम्मतों को पैदा किया। (42) (उन उम्मतों में से) कोई उम्मत अपनी मुक़र्ररा मुद्दत से (हलाक होने में) न आगे आ सकती थी और न (उस मुद्दत से) वे लोग पीछे हट सकते थे। (43) फिर (उनके पास) हमने अपने पैग़म्बरों को एक के बाद एक भेजा, जब कभी किसी उम्मत के पास उस उम्मत का (ख़ास) रसूल आया उन्होंने उसको झुठलाया, सो हमने (भी हलाक करने में) एक के बाद एक का नम्बर

Maktab-E-Ashraf

جَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ○	लगा दिया। और हमने उनकी कहानियाँ बना दीं सो ख़ुदा की मार उन लोगों पर जो (अम्बिया के समझाने पर भी) ईमान न लाते थे। (44)

अल्लाह तआ़ला का निरंतर और लगातार पैग़ाम

उनके बाद भी बहुत सी उम्मतें और मख़्लूक़ आयी जो हमारी पैदा की हुई थी। उनकी पैदाईश से पहले उनकी अजल (मुद्दत और मौत) जो क़ुदरत ने मुक़र्रर की थी उसे उसने पूरी की, न उससे आगे बढ़ सके और न उससे पीछे रहे। फिर हमने एक के बाद एक लगातार रसूल भेजे। हर उम्मत में पैग़म्बर आया, उसने लोगों को पैग़ामे ख़ुदा पहुँचाया कि एक अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा किसी की पूजा न करो। कुछ लोग सही रास्ते पर आ गये और कुछ पर अ़ज़ाब का फ़ैसला ग़ालिब आ गया (यानी उनकी तक़दीर ही में न था कि हक़ बात क़बूल करते, जब हक़ क़बूल न किया तो तबाही और अ़ज़ाब का शिकार हुए)। तमाम उम्मतों की अक्सरियत नबियों की मुन्किर रही, जैसा कि सूरः यासीन में फ़रमायाः

يَاحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ..............الخ

अफ़सोस है बन्दों पर, उनके पास जो रसूल आया उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया, इसी लिये हमने एक के बाद एक सबको ग़ारत और फ़ना कर दिया। एक जगह फ़रमान हैः

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ ۢ بَعْدِ نُوْحٍ.........الخ

नूह के बाद भी हमने कई एक बस्तियाँ तबाह कर दीं। उन्हें हमने पुराने अफ़साने बना दिये, क़िस्से उनके बाक़ी रह गये और वे तहस-नहस हो गये। याद रखो बेईमानों (यानी काफ़िरों और ईमान न लाने वालों) के लिये रहमत से दूरी है।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ○ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ○ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ○ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ	फिर हमने मूसा और उनके भाई हारून को अपने अहकाम और खुली दलील देकर फ़िरऔ़न और उसके दरबारियों के पास (भी पैग़म्बर बनाकर) भेजा। (45) सो उन लोगों ने (उनकी तस्दीक़ व इताअ़त से) तकब्बुर किया, और वे लोग थे ही घमंडी। (46) चुनाँचे वे (आपस में) कहने लगे कि क्या हम ऐसे दो शख़्सों पर जो हमारी तरह के आदमी हैं ईमान ले आएँ? हालाँकि उनकी क़ौम (तो ख़ुद) हमारे हुक्म के ताबे हैं। (47) ग़र्ज़ कि वे लोग उन दोनों को झुठलाते ही रहे, पस हलाक किए गए। (48)

Maktab E Ashraf

और (उनके हलाक होने के बाद) हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को किताब (यानी तौरात) अ़ता फ़रमाई ताकि (उसके ज़रिये से) वे लोग हिदायत पाएँ। (49)	الْمُهْلَكِيْنَ ○ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ○

हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनके भाई हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के पास पूरी दलीलें और ज़बरदस्त मोजिज़ों के साथ भेजा लेकिन उन्होंने भी पहले काफ़िरों की तरह अपने नबियों को झुठलाया और मुख़ालफ़त की। और पहले काफ़िरों की तरह यही कहा कि हम अपने जैसे इनसानों की नुबुव्वत के क़ायल नहीं हो सकते। उनके दिल भी बिल्कुल उन जैसे ही हो गये। आख़िरकार एक ही दिन में एक साथ सबको अल्लाह तआ़ला ने दरिया में ग़र्क़ कर दिया और उसके बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को लोगों की हिदायत के लिये तौरात मिली। फिर से मोमिनों के हाथों काफ़िर हलाक हो गये, जिहाद के अहकाम उतरे, इस तरह फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम (क़िब्ती क़ौम) की तरह आ़म अ़ज़ाब से कोई उम्मत हलाक नहीं हुई। एक और आयत में फ़रमान है कि पहली उम्मतों की हलाकत के बाद हमने मूसा को किताब इनायत फ़रमाई जो लोगों के लिये समझ, हिदायत और रहमत थी, ताकि वे नसीहत हासिल करें।

और हमने मरियम (अ़लैहस्सलाम) के बेटे (ईसा अ़लैहिस्सलाम) को और उनकी माँ (हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम) को बड़ी निशानी बनाया, और हमने उन दोनों को एक ऐसी बुलन्द ज़मीन पर लेजाकर पनाह दी जो (ग़ल्लों और मेवों के पैदा होने की वजह से) ठहरने के क़ाबिल और हरी-भरी जगह थी। (50)	وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ○ ع

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी वालिदा हज़रत मरियम को ख़ुदा ने अपनी कामिल क़ुदरत के इज़हार की एक ज़बरदस्त निशानी बनाई। हज़रत आदम को मर्द और औ़रत के बग़ैर पैदा किया, हज़रत हव्वा को सिर्फ़ मर्द से बग़ैर औ़रत के पैदा किया, हज़रत ईसा को सिर्फ़ औ़रत से बग़ैर मर्द के पैदा किया, बाक़ी तमाम इनसानों को मर्द व औ़रत से पैदा किया। "रबूवत" कहते हैं ऊँची ज़मीन को, जो हरी और पैदावार के क़ाबिल हो, वह जगह घास पानी वाली, तरोताज़ा और हरी-भरी थी जहाँ ख़ुदा तआ़ला अपने इस बन्दे और नबी को और उनकी वालिदा साहिबा को जो ख़ुदा की बन्दी थीं, जगह दी थी। वह जारी पानी वाली साफ़ सुथरी हमवार ज़मीन थी। कहते हैं कि यह मिस्र का टुकड़ा था, या दमिश्क़ का या फ़िलिस्तीन का। "रबूवत" रेतीली ज़मीन को भी कहते हैं, चुनाँचे एक बहुत ही ग़रीब हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने किसी सहाबी से फ़रमाया था कि तेरा इन्तिक़ाल रबूवत में होगा। वह रेतीली ज़मीन में फ़ौत हुए। इन तमाम

Maktab E Ashraf

अक्वाल में ज़्यादा क़रीब कौल यह है कि इससे नहर मुराद है जैसे एक और आयत में इस तरह बयान फ़रमाया गया है:

قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا.

कि तेरे रब ने तेरे क़दमों के नीचे एक जारी नहर बहा दी है।

पस यह मक़ाम (स्थान) बैतुल-मुक़द्दस का मक़ाम है। तो गोया इस आयत की तफ़सीर यह आयत है और क़ुरआन की तफ़सीर सबसे पहले क़ुरआन से, फिर हदीस से, फिर अक़्वाल, आमाल और रिवायात से करनी चाहिये।

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ۝ فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝ فَذَرْهُمْ فِىْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ۝ لا نُسَارِعُ لَهُمْ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝

ऐ पैग़म्बरो! तुम (और तुम्हारी उम्मतें) नफ़ीस चीज़ें खाओ और नेक काम (यानी इबादत) करो, (और) मैं तुम सबके किए हुए कामों को ख़ूब जानता हूँ। (51) और (हमने उन सबसे यह भी कहा कि) यह है तुम्हारा तरीक़ा कि वह एक ही तरीक़ा है, और (हासिल उस तरीक़े का यह है) कि मैं तुम्हारा रब हूँ, सो तुम मुझसे डरते रहो। (52) सो उन लोगों ने अपने दीन में अपना तरीक़ा अलग-अलग करके इख़्तिलाफ़ पैदा कर लिया। हर गिरोह के पास जो दीन है वह उसी से ख़ुश है। (53) सो आप उनको उनकी (उसी) जहालत में एक ख़ास वक़्त (यानी मौत तक) रहने दीजिए। (54) क्या ये लोग यूँ गुमान कर रहे हैं कि हम उनको जो कुछ माल व औलाद देते चले जाते हैं (55) तो हम उनको जल्दी-जल्दी फ़ायदा पहुँचा रहे हैं, (यह बात हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग (उसकी वजह) नहीं जानते। (56)

हर एक अपने अक़ीदों पर संतुष्ट है

अल्लाह तआ़ला अपने अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को हुक्म फ़रमाता है कि वे हलाल लुक़्मा खायें और नेक आमाल बजा लाया करें। पस साबित हुआ कि हलाल का लुक़्मा नेक आमाल का मददगार है। अम्बिया ने सब भलाईयाँ जमा कर लीं। क़ौल, फ़ेल, नसीहत और सही राह की तरफ़ रहनुमाई, सब उन्होंने समेट लीं। अल्लाह तआ़ला उन्हें अपने सब बन्दों की तरफ़ से नेक बदले दे। यहाँ कोई रंगत या ज़ायके का बयान नहीं फ़रमाया बल्कि यह फ़रमाया कि हलाल चीज़ें खाओ।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम अपनी वालिदा की बुनने की उजरत (मेहनत मज़दूरी) में से खाते थे। सही हदीस में है कि कोई नबी ऐसा नहीं जिसने बकरियाँ न चराई हों। लोगों ने पूछा और आपने भी? आपने

Maktab E Ashraf

फ़रमाया हाँ मैं भी चन्द क़ीरात पर मक्का वालों की बकरियाँ चराया करता था। एक और हदीस में है कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम अपने हाथ की मेहनत से खाया करते थे। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्दीदा रोज़ा दाऊद का रोज़ा है, और सबसे ज़्यादा पसन्दीदा क़ियाम (नमाज़ में खड़ा होना) दाऊद अ़लैहिस्सलाम का क़ियाम है। आधी रात सोते थे और तिहाई रात नमाज़े तहज्जुद पढ़ते थे, और छठा हिस्सा सो जाते थे। एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते थे। मैदाने जंग में कभी पीठ न दिखाते।

अ़ब्दुल्लाह की वालिदा, शद्दाद की बेटी सहाबिया फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में दूध का एक प्याला शाम के वक़्त भेजा ताकि आप उससे अपना रोज़ा इफ़्तार करें, दिन का आख़िरी हिस्सा था और धूप की तेज़ी थी तो आपने क़ासिद को वापस कर दिया कि अगर तेरी बकरी का होता तो ख़ैर और बात थी। उन्होंने कहलवाया कि या रसूलल्लाह! मैंने यह दूध अपने माल से ख़रीदा है, फिर आपने पी लिया। दूसरे दिन वह साहिबा ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ करती हैं कि या रसूलल्लाह! इस गर्मी में मैंने दूध भेजा, बहुत देर से भेजा था, आपने मेरे क़ासिद को वापस किया? आपने फ़रमाया हाँ मुझे यही फ़रमाया गया है, अम्बिया सिर्फ़ हलाल खाते हैं और सिर्फ़ नेक अ़मल करते है। एक और हदीस में है कि आपने फ़रमाया- लोगो! अल्लाह तआ़ला पाक है, वह सिर्फ़ पाक ही को क़बूल फ़रमाता है। अल्लाह तआ़ला ने नबियों को भी वही हुक्म दिया है जो रसूलों को दिया है कि ऐ रसूलो! पाक चीज़ खाओ और नेक काम करो, मैं तुम्हारे आमाल का आ़लिम (जानने वाला) हूँ। यही हुक्म ईमान वालों को दिया कि ऐ ईमान वालो! जो हलाल चीज़ें हमने तुम्हें दे रखी हैं उन्हें खाओ। फिर आपने एक शख़्स का ज़िक्र किया जो लम्बा सफ़र करता है, बिखरे बालों वाला, धूल-गर्द से भरे चेहरा वाला होता है, लेकिन खाना पीना पहनना हराम का होता है, वह अपने हाथ आसमान की तरफ़ फैलाकर ऐ रब! ऐ रब! कहता है लेकिन नामुम्किन है कि उसकी दुआ़ क़बूल फ़रमाई जाये। इमाम तिर्मिज़ी रह. इस हदीस को हसन ग़रीब बतलाते हैं।

फिर फ़रमाया ऐ पैग़म्बरो! तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है, एक ही मिल्लत है, यानी एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ लोगों को बुलाना, जिसका कोई शरीक नहीं। इसी लिये इसके बाद फ़रमाया कि मैं तुम्हारा रब हूँ। पस मुझसे डरो। सूरः अम्बिया में इसकी तफ़सीर व व्याख्या बयान हो चुकी है।

जिन उम्मतों की तरफ़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम भेजे गये थे उन्होंने ख़ुदा के दीन के टुकड़े कर दिये, और जिस गुमराही पर अड़ गये उसी पर इतराने और ख़ुश होने लगे। इसलिये कि अपने नज़दीक उसी को हिदायत (सही रास्ता) समझ बैठे। पस बतौर डाँट के फ़रमाया कि उन्हें उनके बहकने-भटकने ही में छोड़ दीजिए यहाँ तक कि उनकी तबाही का वक़्त आ जाये। खाने-पीने दो, मस्त व बेख़ुद होने दो, अभी अभी (यानी जल्द ही) मालूम हो जायेगा। क्या ये मग़रूर (घमंडी लोग) यह गुमान करते हैं कि हम जो माल व औलाद उन्हें दे रहे हैं वह उनकी भलाई और नेकी की वजह से उनके साथ सुलूक (अच्छा मामला) कर रहे हैं? हरगिज़ नहीं! यह तो उन्हें धोखा लगा है। इससे समझ बैठे हैं कि जैसे हम यहाँ ख़ुशहाल हैं वहाँ भी ऐसे ही ख़ुशहाल रहेंगे, यह बिल्कुल ग़लत है। जो कुछ हम उन्हें दुनिया में दे रहे हैं वह तो सिर्फ़ ज़रा सी देर की मोहलत है, लेकिन उनको समझ नहीं। यह हक़ीक़त की असल तक पहुँचे ही नहीं। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमाया गयाः

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ...... الخ.

Maktab E Ashraf

कि तुझे उनके माल व औलाद धोखे में न डालें, अल्लाह का इरादा तो यह है कि उससे उन्हें दुनिया में अज़ाब करे।

एक और आयत में है कि यह ढील सिर्फ़ इसलिये दी गयी है कि वे अपने गुनाहों में और बढ़ जायें। एक और जगह है कि मुझे और इस बात के झुठलाने वालों को छोड़ दे, हम उन्हें इस तरह धीरे-धीरे पकड़ेंगे कि उन्हें मालूम भी न हो। एक और आयत में फ़रमाया है:

ذَرْنِىْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا........ الخ.

यानी मुझे और उसे छोड़ दे जिसको मैंने तन्हा (अकेला) पैदा किया है और ख़ूब अधिक माल दिया है, और आज्ञाकारी (बात और हुक्म मानने वाले) बेटे दिये हैं, और सब तरह का सामान उसके लिये मुहैया कर दिया है। फिर उसे हवस है कि मैं उसे और ज़्यादा दूँ। हरगिज़ नहीं! वह हमारी बातों का मुख़ालिफ़ है।

एक और आयत में है:

وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِىْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰىٓ اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا. الخ.

तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें मुझसे मिला नहीं सकती, मुझसे क़रीब तो वह है जो ईमान वाला और नेक अ़मल करने वाला हो.......।

इस मज़मून की और भी बहुत सी आयतें हैं। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे अख़्लाक़ भी तुममें इसी तरह तक़सीम किये हैं जिस तरह रोज़ियाँ तक़सीम फ़रमाई हैं। अल्लाह तआ़ला दुनिया तो उसे भी देता है जिससे मुहब्बत रखे और उसे भी देता है जिससे मुहब्बत न रखे, हाँ दीन सिर्फ़ उसी को देता है जिससे पूरी मुहब्बत रखता हो। पस जिसे ख़ुदा दीन दे समझो कि अल्लाह उससे मुहब्बत रखता है। उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, बन्दा मुसलमान नहीं होता जब तक कि उसका दिल और ज़बान मुसलमान न हो जाये। और बन्दा मोमिन नहीं होता जब तक कि उसके पड़ोसी उसके सताने और तकलीफ़ देने से बेफ़िक्र न हो जायें।

लोगों ने पूछा कि तकलीफ़ देने और सताने से क्या मुराद है? फ़रमाया- धोखेबाज़ी, ज़ुल्म वग़ैरह। सुनो जो बन्दा हराम माल हासिल कर लाये उसके ख़र्च में उसे बरकत नहीं होती, उसका सदक़ा क़बूल नहीं होता, जो छोड़कर जाता है वह उसका जहन्नम का तोशा (सामान) होता है। अल्लाह तआ़ला बुराई को बुराई से नहीं मिटाता, हाँ बुराई को भलाई से दूर करता है। ख़बीस (बुरा) ख़बीस को नहीं मिटाता।

اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ
مُّشْفِقُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
يُؤْمِنُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا
يُشْرِكُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّ

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं (57) और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58) और जो लोग (उस ईमान में) अपने रब के साथ शिर्क नहीं करते हैं। (59) और जो लोग (अल्लाह की राह में) देते हैं जो कुछ देते हैं, और (बावजूद देने के) उनके दिल इस से ख़ौफ़ज़दा होते हैं कि वे अपने रब के पास जाने

वाले हैं। (60) ये लोग (अलबत्ता) अपने फ़ायदे जल्दी-जल्दी हासिल कर रहे हैं, और वे उनकी तरफ़ दौड़ते हैं (न कि ये काफ़िर लोग जिनका ज़िक्र हुआ)। (61)	قُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ۝

Mahtab E Ashraf

नेक लोगों की हालत

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि एहसान और ईमान के साथ ही साथ नेक आमाल और फिर अल्लाह की हैबत (डर और जलाल) से थरथराना और काँपते रहना यह उनकी सिफ़त है। हज़रत हसन रज़ि. फ़रमाते हैं मोमिन नेकी और ख़ौफ़े ख़ुदा का मजमूआ होता है। मुनाफ़िक़ बुराई के साथ निडर और बेख़ौफ़ होता है। ये अल्लाह तआ़ला की शरई और पैदाईशी आयतों और निशानियों को मानते और उन पर यक़ीन रखते हैं। जैसे हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम का वस्फ़ बयान हुआ है कि वह अपने रब के कलिमात और उसकी किताबों का यक़ीन रखती थीं, ख़ुदा की क़ुदरत, क़ज़ा और शरीअ़त का उन्हें कामिल यक़ीन था। अल्लाह के हर हुक्म और मामले को वे महबूब रखते हैं। ख़ुदा के मना किये हुए हर काम को वे नापसन्द रखते हैं, ख़ुदा की तरफ़ से हर ख़बर को वे सच मानते हैं। वे अल्लाह को एक मानने वाले होते हैं, शिर्क से बेज़ार रहते हैं, ख़ुदा को वाहिद और बेनियाज़ जानते हैं, उसे बिना-औलाद और बिना-बीवी का मानते हैं, बेनज़ीर जानते हैं और किसी को उसके बराबर का नहीं समझते। उसके साथ किसी को शरीक नहीं करते। ख़ुदा के नाम पर ख़ैरात करते हैं लेकिन फिर भी डरे रहते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि क़बूल न हुई हो।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि क्या ये वे लोग हैं जिनसे ज़िना, चोरी और शराब पीने के गुनाह हो जाते हैं लेकिन उनके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा होता है? आपने फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ की लड़की! ये वे नहीं, बल्कि ये वे हैं जो नमाज़ें पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं, सदक़े करते हैं लेकिन क़बूल न होने से डरते हैं, यही हैं जो नेकियों में सबक़त करते (आगे बढ़ते) हैं। (तिर्मिज़ी)

इस आयत की दूसरी क़िराअत "युअ्तू-न मा आतौ" भी है। यानी करते हैं जो करते हैं लेकिन दिल उनके डरते हैं। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास अबू आ़सिम गये। आपने मर्हबा कहा और फ़रमाया कि बराबर क्यों नहीं आते हो? जवाब दिया इसलिये कि कहीं आपको तकलीफ़ न हो। अम्माँ! मैं आज एक आयत के अलफ़ाज़ की तहक़ीक़ के लिये हाज़िर हुआ हूँ "युअ्तौ-न मा आतौ" है या "युअ्तू-न मा आतौ" है? आपने फ़रमाया कौनसे अलफ़ाज़ तुम्हारे लिये ज़्यादा पसन्द हैं? मैंने कहा आख़िर के अगर हों तो गोया मैंने सारी दुनिया पा ली, बल्कि उससे ज़्यादा ख़ुशी मुझे होगी। आपने फ़रमाया फिर तुम ख़ुश हो जाओ, ख़ुदा की क़सम मैंने इसी तरह इन अलफ़ाज़ को रसूलुल्लाह सल्ल. को पढ़ते हुए सुना है। इसका एक रावी इस्माईल बिन मुस्लिम मक्की कमज़ोर है। सातों मशहूर क़िराअतों और जमहूर की क़िराअत में वही है जो मौजूदा क़ुरआन में है, और मायने के एतिबार से भी ज़्यादा ज़ाहिर यही मालूम होता है, क्योंकि उन्हें 'साबिक़' (नेकियों में अग्रसर) क़रार दिया है। और अगर दूसरी क़िराअत को लें तो ये साबिक़ नहीं बल्कि दरमियाना और हल्के हो जाते हैं। वल्लाहु आलम

Maktab E Ashraf

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا
كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝
بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ
اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ۝
حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا
هُمْ يَجْئَرُوْنَ ۝ لَا تَجْئَرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ
مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى
عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ
تَنْكِصُوْنَ ۝ مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا
تَهْجُرُوْنَ ۝

और हम (तो) किसी को उसकी वुस्अ़त से ज़्यादा काम करने को नहीं कहते, (पस जो काम बतला रखे हैं, सब आसान ही हैं) और हमारे पास एक दफ़्तर (नामा-ए-आमाल का मह़्फ़ूज़) है, जो ठीक-ठीक (सबका हाल) बता देगा और लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। (62) बल्कि उन काफ़िरों के दिल इस दीन की तरफ़ से जहालत (और शक) में हैं, और इसके अ़लावा उन लोगों के और भी (बुरे-बुरे) अ़मल हैं जिनको ये करते रहते हैं। (63) यहाँ तक कि हम जब उनके ख़ुशहाल लोगों को (मौत के बाद) अ़ज़ाब में धर पकड़ेंगे तो फ़ौरन चिल्ला उठेंगे। (64) (उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) अब मत चिल्लाओ, हमारी तरफ़ से तुम्हारी बिल्कुल मदद न होगी। (65) मेरी आयतें तुमको (रसूल की ज़बानी) पढ़-पढ़कर सुनाई जाया करती थीं तो तुम उल्टे पाँव भागते थे (66) तकब्बुर करते हुए, क़ुरआन का मश़्ग़ला बनाते हुए, (इस क़ुरआन की शान में) बेहूदा बकते हुए। (67)

एक क़ानून

अल्लाह तआ़ला ने शरीअ़त आसान रखी है। ऐसे अहकाम नहीं दिये जो इनसानी ताक़त से ख़ारिज (बाहर) हों। फिर क़ियामत के दिन वह उनके आमाल का हिसाब लेगा जो सबके सब लिखे हुए मौजूद होंगे। यह नामा-ए-आमाल सही-सही तौर पर उनका एक-एक अ़मल बता देगा। किसी तरह का ज़ुल्म किसी पर न किया जायेगा। कोई नेकी कम न होगी। हाँ अक्सर मोमिनों की बुराईयाँ माफ़ कर दी जायेंगी। लेकिन मुश्रिकों के दिल क़ुरआन से बहके और भटके हुए हैं। इसके अ़लावा भी उनके और बुरे आमाल हैं, जैसे शिर्क वग़ैरह जिसे ये धड़ल्ले से कर रहे हैं, ताकि उनकी बुराईयाँ उनको जहन्नम से उरे न रहने दें (यानी जहन्नम में लेजाकर छोड़ें)। चुनाँचे वह हदीस गुज़र चुकी जिसमें फ़रमान है कि इनसान नेकी के काम करते करते जन्नत से सिर्फ़ हाथ भर के फ़ासले पर रह जाता है कि उस पर तक़दीर का लिखा ग़ालिब आ जाता है और बुरे आमाल शुरू कर देता है। नतीजा यह होता है कि जहन्नम में चला जाता है, यहाँ तक कि जब उनमें से आसूदा-हाल दौलत-मन्द लोगों पर अ़ज़ाबे ख़ुदा आ पड़ता है तो अब वे फ़रियाद करने लगते हैं। सूरः मुज़्ज़म्मिल में फ़रमान है कि मुझे और उन मालदार झुठलाने वालों को छोड़ दो, उन्हें कुछ मोहलत और दो, हमारे पास बेड़ियाँ भी हैं, जहन्नम भी है, गले में अटकने वाला खाना भी और दर्दनाक सज़ा भी।

एक और आयत में है:

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ.

यानी हमने उनसे पहले और भी बहुत सी बस्तियों को तबाह कर दिया, उस वक़्त उन्होंने वावेला (चीख़-पुकार) शुरू किया जबकि वह बिल्कुल बेफ़ायदा था।

यहाँ फ़रमाता है कि आज तुम क्यों शोर मचा रहे हो? क्यों फ़रियाद कर रहे हो? कोई भी तुम्हें आज काम नहीं आ सकता। तुम पर अल्लाह के अ़ज़ाब आ पड़े, अब चीख़ना चिल्लाना सब बेकार है। कौन है जो मेरे अ़ज़ाब के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद कर सके? फिर उनका एक बड़ा गुनाह बयान हो रहा है कि ये मेरी आयतों के मुन्किर थे, न सुनते थे और टाल जाते थे। बुलाये जाते थे लेकिन इनकार कर देते थे। तौहीद (अल्लाह के एक होने) का इनकार करते थे, शिर्क पर अ़क़ीदा रखते थे, हुक्म तो बुलन्द व बाला ख़ुदा ही का चलता है।

फिर उनके तकब्बुर और घमंड करने का जो ज़िक्र है उसमें है कि ये हक़ के मुक़ाबले में घमंड करते थे और हक़ पर चलने वालों को कमतर और गिरा हुआ समझते थे। किस वजह से तकब्बुर करते थे इसमें कई क़ौल हैं बाज़ ने कहा कि इससे 'हरम' मुराद है यानी मक्का, ये उसमें बेहूदा बातें और बकवास करते थे। बाज़ ने कहा 'क़ुरआन' है, जिसे ये मज़ाक़ में उड़ाते थे, कभी शायरी कहते थे कभी कहानत (जिन्नात के ज़रिये बताई हुई ग़ैब की ख़बरें) वग़ैरह। या ख़ुद हुज़ूरे पाक सल्ल. हैं, कि रातों को बेकार खड़े हुए गप-शप में कभी हुज़ूर सल्ल. को शायर कहते, कभी काहिन (जिन्नात से मालूम करके ग़ैब की बातें बताने वाला) कहते, कभी जादूगर कहते, कभी झूठा कहते, कभी मजनूँ बतलाते। "अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे" हालाँकि हरम ख़ुदा का घर है, क़ुरआन ख़ुदा का कलाम है, हुज़ूर सल्ल. ख़ुदा के रसूल हैं जिनकी ख़ुदा तआ़ला ने मदद की और मक्के पर क़ाबिज़ किया। उन मुश्रिकों को वहाँ से ज़लील करके निकाला। और यह भी कहा गया है कि मुराद यह है कि ये लोग बैतुल्लाह की वजह से फ़ख़्र करते थे और ख़्याल करते थे कि वे अल्लाह के दोस्त और प्यारे हैं, हालाँकि यह ख़्याल कोरा वहम था।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल किया गया है कि क़ुरैश के मुश्रिक लोग बैतुल्लाह (काबा शरीफ़) पर फ़ख़्र (गर्व) करते थे, अपने को उसका मोहतमिम और मुतवल्ली (प्रबन्धक और व्यवस्थक) बतलाते थे, हालाँकि न ये उसे आबाद करते थे न उसका सही अदब करते थे। इमाम इब्ने अबी हातिम रह. ने यहाँ पर बहुत कुछ लिखा है, हासिल सबका यही है।

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّالَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝ وَلَوِاتَّبَعَ الْحَقُّ

तो क्या उन लोगों ने इस (अल्लाह के) कलाम में ग़ौर नहीं किया, या उनके पास ऐसी चीज़ आई है जो उनके पहले बड़ों के पास नहीं आई थी। (68) या ये लोग अपने रसूल (की दियानत, अमानत और सच्चाई) से वाक़िफ़ न थे इस वजह से उनके इनकारी हुए? (69) या ये लोग आपके बारे में जुनून के क़ायल हैं, (हालाँकि आपका आला दर्जे का सही राय वाला होना मुसल्लम है) बल्कि (उनके झुठलाने की असल वजह यह है कि) यह रसूल उनके पास हक़ बात

Maktab E Ashraf

اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ
وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ
بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝
اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ
وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ
لَنٰكِبُوْنَ ۝ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا
مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝

लेकर आए हैं, और उनमें अक्सर लोग हक़ से नफ़रत रखते हैं। (70) और (अगरचे यह मुहाल है लेकिन अगर फ़र्ज़ कर लो कि) अगर दीने हक़ उनके ख़्यालात के ताबे हो जाता तो तमाम आसमान और ज़मीन और जो उनमें (आबाद) हैं सब तबाह हो जाते, बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत की बात भेजी, सो ये लोग अपनी (नफ़े वाली) नसीहत से भी मुँह मोड़ते हैं। (71) या आप उनसे कुछ आमदनी चाहते हैं, तो आमदनी तो आपके रब की सबसे बेहतर है, और वह सब देने वालों से अच्छा है। (72) और (उनकी हालत का ख़ुलासा यह है कि) आप तो उनको सीधे रास्ते की तरफ़ (जिस को ऊपर हक़ कहा है) बुला रहे हैं (73) और उन लोगों की जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते यह हालत है कि उस (सीधे) रास्ते से हटते जाते हैं। (74) और अगर हम उन पर मेहरबानी फ़रमा दें और उनपर जो तकलीफ़ है उसको हम दूर भी कर दें तो वे लोग (फिर) अपनी गुमराही में भटकते हुए इसरार करते हैं। (75)

सोच-समझ से काम न लिया

अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों के उस फ़ेल पर इनकार कर रहा है जो वे क़ुरआन के न समझने और उसमें ग़ौर व फ़िक्र (विचार और मंथन) न करने में कर रहे थे, और उससे मुँह फेर लेते थे। हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने उन पर अपनी वह पाक और ऊँची किताब नाज़िल फ़रमाई थी जो किसी-नबी पर नहीं उतारी गयी। यह सबसे ज़्यादा कामिल, सम्मानित और अफ़ज़ल किताब है। उनके बाप-दादा जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) में मरे थे जिनके हाथों में कोई ख़ुदाई किताब न थी, उनमें कोई पैग़म्बर नहीं आया था तो उन्हें चाहिये था कि ख़ुदा के रसूल की मानते, किताबुल्लाह की क़द्र करते और दिन रात इस पर अ़मल करते जैसे कि उन ही में से समझदारों ने किया कि वे मुसलमान बने और रसूल के ताबेदार हो गये। अपने आमाल से ख़ुदा को राज़ी कर दिया। अफ़सोस काफ़िरों ने अ़क़्लमन्दी से काम न लिया। क़ुरआन की "मुतशाबा" आयतों के पीछे पड़कर हलाक हो गये। क्या ये लोग मुहम्मद सल्ल. को जानते नहीं? क्या आपकी सच्चाई, अमानत, दियानत उन्हें मालूम नहीं? आप तो उन्हीं में पैदा हुए, उन्हीं में पले, उन्हीं में बड़े हुए फिर क्या वजह है कि आज उसे झूठा कहने लगे जिसे इससे पहले सच्चा कहते थे, उनकी हद से ज़्यादा

इज़्ज़त करते थे।

हज़रत जाफ़र इब्ने अबी तालिब रज़ि. ने हब्श के बादशाह नजाशी रह. से भरे दरबार में यही फ़रमाया था कि अल्लाह रब्बुल-आलमीन ने हममें एक रसूल भेजा है जिसका नसब, जिसकी सच्चाई, जिसकी अमानत हमें ख़ूब मालूम थी। हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि. ने ईरान के बादशाह किसरा से जंग के वक़्त मैदान में यही फ़रमाया था। अबू सुफ़ियान बिन हरब ने रोम के बादशाह से यही फ़रमाया था कि जबकि पूरे दरबार के सामने उसने उनसे और उनके साथियों से पूछा था, हालाँकि उस वक़्त तक वे मुसलमान भी नहीं थे लेकिन उन्हें आपकी सच्चाई, अमानत व दियानत और नसब (ख़ानदान व नस्ल) के उम्दा और अच्छा होने का इक़रार करना पड़ा। कहते थे कि उसे जुनून (पागलपन) है या उसने क़ुरआन अपनी तरफ़ से गढ़ लिया है, हालाँकि बात इस तरह की नहीं, हक़ीक़त सिर्फ़ यह है कि उनके दिल ईमान से ख़ाली हैं, ये क़ुरआन पर नज़रें नहीं डालते, और जो ज़बान पर आता है बक देते हैं।

क़ुरआन तो वह कलाम है जिसके जैसा और जिसकी नज़ीर से सारी दुनिया आजिज़ आ गयी। बावजूद सख़्त मुख़ालफ़त के और बावजूद पूरी-पूरी कोशिश और अत्यंत मुक़ाबले के किसी से न बन पड़ा कि इस जैसा क़ुरआन ख़ुद बना लेता या सबकी मदद लेकर इस जैसी एक ही सूरत (क़ुरआन का एक हिस्सा) बना लाता। यह तो सरासर हक़ है और उन्हें हक़ से चिढ़ है।

बयान किया गया है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक मर्तबा एक शख़्स से फ़रमाया- मुसलमान हो जा, उसने कहा चाहे मुझे उससे नफ़रत हो तब भी? आपने फ़रमाया चाहे ऐसा ही हो (हुज़ूरे पाक को मालूम था कि इस्लाम वह चीज़ है कि जब कोई इसकी हल्की सी मिठास भी पा लेता है तो नफ़रत तो कहाँ इसके बग़ैर चैन नहीं पा सकता, इस पर अपना माल और जान सब कुछ क़ुरबान कर देता है)।

एक रिवायत में है कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल. को रास्ते में मिला, आपने उससे फ़रमाया इस्लाम क़बूल कर। उस पर यह बहुत भारी पड़ा और उसका चेहरा तमतमा उठा। आपने फ़रमाया देखो अगर तुम किसी ग़ैर-आबाद ख़तरनाक रास्ते पर चले जा रहे हो और तुम्हें एक शख़्स मिले जिसके नाम व नसब से, जिसकी सच्चाई और अमानतदारी से तुम बख़ूबी वाक़िफ़ हो, वह तुमसे कहे कि इस रास्ते पर चलो यह खुला, आसान, सीधा और साफ़ है, बताओ तुम उसके बतलाये हुए रास्ते पर चलोगे या नहीं? उसने कहा हाँ ज़रूर। आपने फ़रमाया बस तो यक़ीन मानो क़सम ख़ुदा की तुम इस दुनियावी सख़्त दुश्वार-गुज़ार और ख़तरनाक राह से भी ज़्यादा बुरी राह पर हो और मैं तुम्हें सीधी राह की दावत देता हूँ। मेरी मान लो।

बयान किया गया है कि एक और ऐसे ही शख़्स से रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया था जबकि उसने इस्लाम की दावत को बुरा माना कि बता तो अगर तेरे दो साथी हों, एक तो सच्चा अमानतदार, दूसरा झूठा ख़ियानत करने वाला, तू किससे मुहब्बत करेगा? उसने कहा सच्चे और अमानतदार से। फ़रमाया इसी तरह तुम लोग अपने रब के नज़दीक हो।

इमाम सुद्दी रह. के बक़ौल हक़ से मुराद ख़ुद अल्लाह तआ़ला है, अगर अल्लाह तआ़ला उन्हीं की मर्ज़ी के मुताबिक़ शरीअ़त मुक़र्रर करता तो ज़मीन व आसमान बिगड़ जाते। जैसे एक दूसरी आयत में है कि काफ़िरों ने कहा इन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े शख़्स के ऊपर यह क़ुरआन क्यों न उतरा? इसके जवाब में फ़रमान है कि क्या रहमते ख़ुदा की तक़सीम उनके हाथों में है? एक और आयत में है कि अगर रब की रहमत के ख़ज़ानों के मालिक ये होते तो ये तो अपने बुख़्ल (कन्जूसी) की वजह से दुनिया को तरसा देते। एक और आयत में है कि अगर उन्हें मुल्क के किसी हिस्से का मालिक बना दिया गया होता तो ये तो किसी को एक कोड़ी भी न दिखाते।

पस इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमाया है कि इनसानी दिमाग़ मख़्लूक़ की व्यवस्था की क़ाबलियत में ना-अहल है, यह अल्लाह ही की शान है कि उसकी सिफ़तें, उसके फ़रमान, उसके काम, उसकी शरीअ़त, उसकी तक़दीर, उसकी तदबीर तमाम मख़्लूक़ को हावी (यानी सब पर छाई हुई) है और तमाम मख़्लूक़ की ज़रूरतें पूरी करने और उनकी मस्लेहत के मुताबिक़ है, उसके सिवा न कोई माबूद है न पालनहार। फिर फ़रमाया कि इस क़ुरआन को उनकी नसीहत के लिये हम लाये और ये इससे मुँह मोड़ रहे हैं। फिर इरशाद है कि तू क़ुरआन की तब्लीग़ (पहुँचाने) पर उनसे कोई उजरत नहीं माँगता, तेरी नज़रें ख़ुदा पर हैं वही तुझे इसका अज्र देगा। जैसे फ़रमाया- जो बदला मैं तुमसे माँगू वह भी तुम्हें ही दिया, मैं तो अज्र का तालिब सिर्फ़ ख़ुदा से ही हूँ। एक और आयत में हुज़ूर सल्ल. को हुक्म हुआ- ऐलान कर दो कि न मैं कोई बदला चाहता हूँ न मैं तकल्लुफ़ करने वालों में हूँ। एक और जगह है- कह दे कि मैं तुमसे इस पर कोई उजरत नहीं चाहता, सिर्फ़ तुमसे रिश्तेदारी और ताल्लुक़ का जोश है।

सूरः यासीन में है कि शहर से दूर के किनारे से जो शख़्स दौड़ा हुआ आया उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! नबी की इताअ़त (आज्ञा का पालन) करो जो तुमसे किसी अज्र के इच्छुक नहीं। यहाँ फ़रमाया कि वही बेहतरीन रज़्ज़ाक़ (रोज़ी देने वाला) है। तू लोगों को सही रास्ते की तरफ़ बुला रहा है।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. सोये हुए थे कि दो फ़रिश्ते आये, एक आपकी पायेंती पर बैठा और दूसरा सिरहाने, पहले ने दूसरे से कहा इनकी और इनकी उम्मत की मिसाल बयान करो। उसने कहा इनकी मिसाल उन मुसाफ़िरों के क़ाफ़िले की तरह है जो एक बयाबान चटियल मैदान में थे, न उनके पास तोशा (खाने-पीने का सामान) था, न पानी दाना, न आगे बढ़ने की क़ुव्वत न पीछे हटने की ताक़त, हैरान थे कि क्या होगा, इतने में उन्होंने देखा कि एक भला आदमी एक शरीफ़ इनसान उम्दा लिबास पहने हुए आ रहा है, उसने आते ही उनकी घबराहट और परेशानी देखकर उनसे कहा कि अगर तुम मेरा कहना करो और मेरे पीछे चलो तो मैं तुम्हें फलों से लदे हुए बाग़ों और पानी से भरे हुए हौज़ों पर पहुँचा दूँ। सबने उसकी बात मान ली और उसने उन्हें वास्तव में हरे-भरे तरोताज़ा बाग़ों और जारी चश्मों में पहुँचा दिया। जहाँ उन लोगों ने बिना किसी रोक-टोक के खाया-पिया और ख़ुशहाली की वजह से मोटे-ताज़े हो गये। एक दिन उसने कहा देखो मैं तुम्हें उस तबाही व तंगदस्ती से बचाकर यहाँ लाया और इस राहत व आराम और फ़राग़त में पहुँचाया, अब अगर तुम मेरी मानो तो मैं तुम्हें इससे भी ऊँचे बाग़ों और इससे भी पाक जगह और इससे भी ज़्यादा हरी-भरी जगहों और उम्दा नहरों की तरफ़ ले चलूँ? इस पर एक जमाअ़त तो तैयार हो गयी और उन्होंने कहा हम आपके साथ हैं। लेकिन दूसरी जमाअ़त ने कहा- नहीं! ज़्यादा की ज़रूरत नहीं, बस हम तो यहीं रहेंगे।

अबू यअ़ला मूसली में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं तुम्हारी कमरें पकड़-पकड़कर तुम्हें जहन्नम से रोक रहा हूँ लेकिन तुम परवानों और बरसाती कीड़ों की तरह मेरे हाथों से छूट-छूटकर आग में गिर रहे हो? क्या तुम यह चाहते हो कि मैं तुम्हें छोड़ दूँ? सुनो मैं तो हौज़े-कौसर पर भी तुम्हारा पेशवा और अमीरे क़ाफ़िला हूँ। वहाँ तुम इक्का-दुक्का और गिरोह-गिरोह बनकर मेरे पास आओगे, मैं तुम्हें तुम्हारी निशानियों अ़लामतों और नामों से पहचान लूँगा जैसे कि एक नया आने वाला अन्जान आदमी अपने ऊँटों को दूसरों के ऊँटों से अलग कर लेता और पहचान जाता है। मेरे देखते हुए तुममें से बाज़ को बायीं तरफ़ वाले अ़ज़ाब के फ़रिश्ते पकड़ कर ले जाना चाहेंगे तो मैं अल्लाह की बारगाह में अ़र्ज़ करूँगा कि ख़ुदाया! ये मेरी क़ौम के मेरी उम्मत के लोग हैं। जवाब दिया जायेगा कि आपको मालूम नहीं कि इन्होंने आपके बाद

क्या-क्या बिदुअतें (दीन में नयी-नयी बातें) निकाली थीं। ये तो आपके बाद अपनी ऐड़ियों के बल लौटते ही रहे हैं। मैं उसे भी पहचान लूँगा जो कियामत के दिन अपनी गर्दन पर बकरी लिये हुए आयेगा, बकरी चीख़ रही होगी, वह मेरा नाम लेकर आवाज़ें दे रहा होगा लेकिन मैं उससे साफ़ कह दूँगा कि मैं ख़ुदा के सामने तेरे कुछ काम नहीं आ सकता, मैंने तो ख़ुदा की बातें पहुँचा दी थीं। इसी तरह कोई होगा जो ऊँट को लिये हुए आयेगा, जो बिलबिला रहा होगा, आवाज़ करेगा कि ऐ मुहम्मद! ऐ मुहम्मद! मैं कह दूँगा कि मैं ख़ुदा के यहाँ तेरे लिये कुछ इख़्तियार नहीं रखता हूँ। मैं तो पहुँचा चुका था। बाज़ आयेंगे जिनकी गर्दन पर घोड़ा सवार होगा, जो हिनहिना रहा होगा, वह भी मुझे आवाज़ देगा और मैं यही जवाब दूँगा। बाज़ आयेंगे कि मुश्कें लादे हुए पुकारेंगे या मुहम्मद! या मुहम्मद! मैं कहूँगा मैं तो तेरे किसी मामले का मालिक नहीं, मैं तो पहुँचा चुका था।

इमाम अ़ली बिन मदीनी रह. फ़रमाते हैं कि इस हदीस की सनद है तो हसन लेकिन इसका एक रावी हफ़्स बिन हमीद मजहूल है, लेकिन इमाम यहया इब्ने मईन रह. ने उसे सालेह कहा है और नसाई और इब्ने हिब्बान ने भी उसे सिका (मोतबर) कहा है। आख़िरत का यकीन न रखने वाले, सही रास्ते से हटे हुए हैं।

उनके कुफ़्र की पुख़्तगी बयान हो रही है कि अगर ख़ुदा तआ़ला उनसे सख़्ती को हटा दे और उन्हें क़ुरआन सुना समझा दे तो भी ये अपने कुफ़्र, इस्लाम की दुश्मनी, सरकशी और तकब्बुर से न हटेंगे, जो कुछ नहीं हुआ वह जब होगा तब किस तरह होगा इसका इल्म अल्लाह को है, इसलिये एक दूसरी जगह इरशाद फ़माया है कि अगर अल्लाह तआ़ला उनमें भलाई देखता तो ज़रूर उन्हें सुनाता, अगर उन्हें सुनाता भी तो वे मुँह फेरे हुए उससे घूम जाते, ये तो जहन्नम के सामने खड़े होकर ही यक़ीन करेंगे और उस वक़्त कहेंगे काश! हम लौटा दिये जाते और रब की बातों को न झुठलाते और यक़ीन करने वाले हो जाते, इससे पहले जो छुपा था वह अब खुल गया। बात यह है कि अगर ये लौटा भी दिये जायें (यानी इनको दुनिया में दोबारा भेज दिया जाये) तो फिर से मना किये हुए (वर्जित) कामों की तरफ़ लौट आयेंगे।

यह वह बात है जो होगी नहीं, लेकिन अगर हो तो क्या हो, इसे ख़ुदा जानता है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि लफ़्ज़ "लौ" (अगर ऐसा हो जाये) से जो जुमला (वाक्य) क़ुरआने करीम में है वह कभी वाक़े होने (हक़ीक़त बनकर सामने आने) वाला नहीं।

और हमने उनको अ़ज़ाब में गिरफ़्तार भी किया है, सो उन लोगों ने अपने रब के सामने (पूरे तौर से) इन्किसारी की और न आ़जिज़ी इख़्तियार की। (76) यहाँ तक कि हम जब उनपर सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे तो उस वक़्त बिल्कुल हैरान रह जाएँगे। (77) और वह (अल्लाह तआ़ला) ऐसा (क़ादिर व नेमत देने वाला) है, जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, (लेकिन) तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करते हो। (78) और वह ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में फैला रखा है,	وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ٥ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ٥ وَهُوَ الَّذِىْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ٥ وَهُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ فِى

ع ٤

الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ٥ وَهُوَ الَّذِىْ يُحْيِ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ٥ بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ٥ قَالُوْآ ءَاِذَامِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ٥ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ٥	और तुम सब (क़ियामत में) उसी के पास लाए जाओगे। (79) और वह ऐसा है जो जिलाता है और मारता है, और उसी के इख़्तियार में है रात और दिन का घटना-बढ़ना, सो क्या तुम (इतनी बात) नहीं समझते। (80) बल्कि यह भी वैसी ही बात कहते हैं जो अगले (काफ़िर) लोग कहते चले आए हैं। (81) (यानी) यूँ कहते हैं कि क्या जब हम मर जाएँगे और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे। (82) इसका तो हमसे और (हमसे) पहले हमारे बड़ों से वायदा होता चला आया है, ये कुछ नहीं महज़ बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़ल होती चली आती हैं। (83)

Maktaba Ashraf

और जब अ़ज़ाब आया

फ़रमाता है कि हमने उन्हें उनकी बुराईयों की वजह से सख़्तियों और मुसीबतों में भी मुब्तला किया लेकिन फिर भी न तो उन्होंने अपना कुफ़्र छोड़ा न ख़ुदा की तरफ़ झुके, बल्कि कुफ़्र व गुमराही पर अड़े रहे। न उनके दिल नर्म हुए न ये सच्चे दिल से हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए, न दुआ के लिये हाथ उठाये। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

فَلَوْلَآ اِذْجَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا........ الخ.

कि हमारे अ़ज़ाब को देखकर ये हमारी तरफ़ आ़जिज़ी से क्यों न झुकें? बात यह है कि उनके दिल सख़्त हो गये हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत में उस क़हत-साली (सूखे) का ज़िक्र है जो क़ुरैशियों पर हुज़ूर सल्ल. के न मानने के अ़ज़ाब में आयी थी, जिसकी शिकायत लेकर अबू सुफ़ियान रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये थे और आपको ख़ुदा की क़समें देकर रिश्तेदारियों के वास्ते दिलाकर कहा था कि हम तो लीद और ख़ून खाने लगे हैं। (नसाई)

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि क़ुरैश की शरारतों से तंग आकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने उन पर बददुआ की थी कि जैसे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में सात साल की क़हत-साली आयी थी (यानी सूखा पड़ा था, बारिश न हुई थी) ऐसे ही क़हत से ख़ुदाया तू इन पर मेरी मदद फ़रमा। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत वहब बिन मुनब्बेह रह. को क़ैद कर दिया गया, वहाँ एक नव-उम्र शख़्स ने कहा मैं आपका दिल बहलाने के लिये कुछ शे'र सुना देता हूँ? आपने फ़रमाया इस वक़्त हम अ़ज़ाबे ख़ुदा में हैं और क़ुरआन ने उनकी शिकायत की है जो ऐसे वक़्त भी ख़ुदा की तरफ़ न झुकें। फिर आपने तीन रोज़े बराबर रखे, उनसे सवाल किया गया कि यह बीच में इफ़्तार किये बग़ैर रोज़े कैसे? जवाब दिया कि एक नई चीज़ इधर से हुई

Maktab E Ashraf

यानी क़ैद हुई तो एक नई चीज़ हमने की, यानी इबादत की अधिकता, यहाँ तक कि हुक्मे ख़ुदा आ पहुँचा। अचानक वक़्त आ गया और जिन अ़ज़ाबों का ख़्वाब व ख़्याल भी न था वो आ पड़े तो तमाम ख़ैर से मायूस हो गये, उम्मीद टूट गयी और हैरान रह गये। अल्लाह की नेमतों को देखो उसने कान दिये, आँखें दीं, दिल दिये, अ़क़्ल वह समझ अ़ता फ़रमाई कि ग़ौर व फ़िक्र (सोच-विचार) कर सको, ख़ुदा की वहदानियत (एक होने) को, उसकी कामिल क़ुदरत को समझ सको। लेकिन ज्यों-ज्यों नेमतें बढ़ीं शुक्र कम हुए। जैसे फ़रमान है कि तू अगरचे लालच व तमन्ना करे लेकिन उनमें से अक्सर ग़ैर-ईमान वाले हैं।

फिर अपनी अ़ज़ीमुश्शान बादशाहत और क़ुदरत का बयान फ़रमा रहा है कि मख़्लूक़ को उसने पैदा करके इस लम्बी-चौड़ी ज़मीन पर बाँट (फैला) दिया है, फिर क़ियामत के दिन इन बिखरे हुओं को समेट कर अपने पास जमा करेगा, अब भी उसी ने पैदा किया है फिर भी वही जिलायेगा, कोई छोटा बड़ा आगे का पीछे का बाक़ी न बचेगा, वही बोसीदा और खोखली हड्डियों को ज़िन्दा करने वाला और लोगों को मार डालने वाला है, उसी के हुक्म से दिन चढ़ता है, रात आती है, एक निज़ाम (व्यवस्था) के बाद दूसरा निज़ाम आता जाता है। न सूरज चाँद से आगे निकले न रात दिन से आगे बढ़े, क्या तुममें इतनी भी अ़क़्ल नहीं कि इतनी बड़ी निशानियों को देखकर अपने ख़ुदा को पहचान लो? और उसके ग़लबे और उसके इल्म के क़ायल बन जाओ? बात यह है कि इस ज़माने के काफ़िर हों या पहले ज़मानों के, दिल उन सबके एक से हैं, ज़बानें भी एक ही हैं, वही बकवास जो पहलों की थी बाद वालों की है, कि मरकर मिट्टी हो जाने और सिर्फ़ बोसीदा हड्डियों की सूरत में बाक़ी रह जाने के बाद भी नई पैदाईश में पैदा किये जायेंगे? यह हमारी समझ से बाहर है। हमसे भी यही कहा गया, हमारे बाप दादों को भी इसी से धमकाया गया, लेकिन हमने तो किसी को मरकर ज़िन्दा होते देखा नहीं, हम तो जानते हैं कि यह सिर्फ़ बकवास है।

दूसरी आयत में है कि उन्होंने कहा- क्या जब हम बोसीदा हड्डियाँ हो जायेंगे उस वक़्त भी फिर ज़िन्दा किये जायेंगे? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जिसे तुम अनहोनी बात समझ रहे हो वह तो एक आवाज़ के साथ हो जायेगी और सारी दुनिया अपनी क़ब्रों से निकल कर एक मैदान में हमारे सामने आ जायेगी। सूरः यासीन में भी यह एतिराज़ और जवाब है कि इनसान देखता नहीं कि हमने नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) से पैदा किया, फिर वह ज़िद्दी झगड़ालू बन बैठा, अपनी पैदाईश को भूल गया और हम पर एतिराज़ करते हुए मिसालें देने लगा कि इन बोसीदा हड्डियों को कौन जिलायेगा? ऐ नबी! तुम इन्हें जवाब दो कि इन्हें नये सिरे से वह ख़ुदा पैदा करेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया है, और जो हर चीज़ की पैदाईश (बनाने और पैदा करने) का आ़लिम (जानने वाला) है।

आप (जवाब में) कह दीजिए कि (अच्छा यह बतलाओ कि) यह ज़मीन और जो इस पर रहते हैं, ये किसके हैं? अगर तुमको कुछ ख़बर है। (84) वे ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह के हैं। (तो) उनसे कहिए कि फिर क्यों नहीं ग़ौर "व फ़िक्र" करते? (85) (और) आप यह भी कहिए कि (अच्छा यह बतलाओ कि) इन सात आसमानों का मालिक और आ़लीशान अ़र्श का	قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ٥ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ٥ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ٥

Maktaba Ashraf

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ۝ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

मालिक कौन है? (86) (इसका भी) वे ज़रूर यही जवाब देंगे कि यह भी (सब) अल्लाह का है। (उस वक़्त) आप कहिए कि फिर तुम (उससे) क्यों नहीं डरते? (87) आप (उनसे) यह भी कहिए कि (अच्छा) वह कौन है जिसके हाथ में तमाम चीज़ों का इख़्तियार है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता, अगर तुमको कुछ ख़बर है। (88) (तब भी जवाब में) वे ज़रूर यही कहेंगे कि ये सब सिफ़तें भी अल्लाह ही की हैं, आप (उस वक़्त) कहिए कि फिर तुमको कैसा ख़ब्त हो रहा है? (89) बल्कि हमने उनको सच्ची बात पहुँचाई है, और यक़ीनन ये झूठे हैं। (90)

ग़ैर-इख़्तियारी तौर पर मानना और झुकाव

अल्लाह तआ़ला अपनी वह्दानियत (एक माबूद होने), ख़ालिक़ीयत (हर चीज़ का बनाने और पैदा करने वाला होने) तसर्रुफ़ (क़ब्ज़े) और मिल्कियत का सुबूत देता है ताकि मालूम हो जाये कि माबूदे बर्हक़ सिर्फ़ वही है, उसके सिवा किसी और की इबादत न करनी चाहिये। वह वाहिद (अकेला) है और उसका कोई शरीक नहीं है। बस अपने सम्मानित रसूल को हुक्म देता है कि आप उन मुश्रिकों से मालूम फ़रमायें तो वे साफ़ लफ़्ज़ों में अल्लाह के रब होने का इक़रार करेंगे और इसमें किसी को शरीक नहीं बतलायेंगे (लेकिन यह इक़रार दिल के यक़ीन के साथ नहीं, इख़्तियारी तौर पर नहीं, इसलिये इस इक़रार को ईमान न कहेंगे)। आप उन्हीं के जवाब को लेकर उन्हें क़ायल माक़ूल करें कि जब ख़ालिक़ व मालिक सिर्फ़ अल्लाह है, उसके सिवा कोई नहीं, फिर माबूद भी तन्हा वही क्यों न हो? उसके साथ दूसरों की इबादत क्यों की जाये? हक़ीक़त यही है कि वे अपने माबूदों को भी अल्लाह के बनाये हुए और उसकी मिल्कियत जानते थे लेकिन उन्हें अल्लाह की बारगाह का ख़ास समझ कर इस नीयत से उनकी इबादत करते थे कि वे हमें भी अल्लाह की बारगाह का मुक़र्रब (ख़ास और क़रीबी) बना देंगे।

पस हुक्म होता है कि ज़मीन और ज़मीन की तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ व मालिक कौन है? इसके बारे में उन मुश्रिकों से सवाल करो। उनका जवाब यही होगा कि अल्लाह है "जिसका कोई शरीक नहीं"। अब तुम फिर उनसे कहो कि क्या अब भी इस इक़रार के बाद भी तुम इतना नहीं समझते कि इबादत के लायक़ भी वही है? क्योंकि ख़ालिक़ व राज़िक़ वही है। फिर पूछो कि इस बुलन्द व बाला आसमान का उसकी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ कौन है? जो अ़र्श जैसी ज़बरदस्त चीज़ का रब है, जो मख़्लूक़ की छत है, जैसे कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि अल्लाह की शान बहुत बड़ी है, उसका अ़र्श आसमानों पर इस तरह है और आपने अपने हाथ से गुंबद की तरह बनाकर बतलाया। (अबू दाऊद शरीफ़)

एक और हदीस में सातों ज़मीन और उनकी तमाम मख़्लूक़ कुर्सी के मुक़ाबले पर ऐसी है जैसे किसी

चटियल मैदान में कोई हल्क़ा (छल्ला/ कोई छोटी सी गोल चीज़) पड़ा हो, और कुर्सी अपनी तमाम चीज़ों समेत अ़र्श के मुक़ाबले में भी ऐसी ही है। बाज़ बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है कि अ़र्श की एक जानिब से दूसरी जानिब की दूरी पचास हज़ार साल के फ़ासले की है। और सातवीं ज़मीन से उसकी ऊँचाई पचास हज़ार साल की दूरी की है। अ़र्श का नाम अ़र्श उसकी बुलन्दी की वजह से ही है।

कअ़बे अहबार रज़ि. से नक़ल किया गया है कि आसमान अ़र्श के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे कोई क़िन्दील (चिराग़ और लालटेन) आसमान व ज़मीन के दरमियान हो। मुजाहिद रह. का क़ौल है कि आसमान व ज़मीन अल्लाह के अ़र्श के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे कोई छल्ला किसी चटियल लम्बे-चौड़े मैदान में पड़ा हो। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अ़र्श के मर्तबे और बड़ाई का कोई भी सिवाय अल्लाह तआ़ला के सही अन्दाज़ा नहीं कर सकता। बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि अ़र्श याक़ूत का है।

इस आयत में अ़र्शे अ़ज़ीम कहा गया है और इस सूरत के आख़िर में अ़र्शे करीम कहा गया है। यानी बहुत बड़ा और बहुत ख़ूबी व कमालात वाला। पस लम्बाई-चौड़ाई, विशालता, बड़ाई, अच्छाई व ख़ूबी में वह बहुत ही आला और ऊँचा है। इसी लिये लोगों ने उसे याक़ूते सुर्ख़ कहा है। इब्ने मसऊद रज़ि. का फ़रमान है कि तुम्हारे रब के पास रात दिन कुछ नहीं, उसके अ़र्श का नूर उसके चेहरे के नूर से है। ग़र्ज़ कि इस सवाल का जवाब भी वे यही देंगे कि आसमान और अ़र्श का रब अल्लाह है, तो तुम कहो कि फिर तुम उसके अ़ज़ाब और उसकी सज़ाओं से क्यों नहीं डरते कि उसके साथ दूसरों की इबादत कर रहे हो?

इमाम अबू बक्र इब्ने अबिद्दुन्या अपनी "किताबुत्तफ़क्कुर वल-एतिबार" में एक हदीस लाये हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. उमूमन इस हदीस को बयान फ़रमाया करते थे, कि जाहिलीयत के ज़माने में एक औ़रत पहाड़ की चोटी पर अपनी बकरियाँ चराया करती थी, उसके साथ उसका लड़का भी था। एक बार उसने अपनी माँ से मालूम किया कि अम्माँ जान! तुम्हें किसने पैदा किया है? उसने कहा अल्लाह ने। उस लड़के ने कहा हमारे वालिद को किसने पैदा किया है? उसने जवाब दिया अल्लाह ने। पूछा इन पहाड़ों को अम्माँ किसने बनाया है? माँ ने जवाब दिया कि इनका ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) भी अल्लाह तआ़ला ही है। पूछा और हमारी बकरियों का ख़ालिक़ कौन है? माँ ने कहा अल्लाह ही है। उसने कहा "सुब्हानल्लाह" अल्लाह की इतनी बड़ी शान है। बस इस क़द्र अ़ज़्मत (बड़ाई) उसके दिल में अल्लाह तआ़ला की समा गयी कि वह थर-थर काँपने लगा, पहाड़ से गिर पड़ा और जान अपने पैदा करने वाले को सौंप दी। इसका एक रावी ज़रा ठीक नहीं। वल्लाहु आलम

आगे फ़रमाया- आप पूछिये कि तमाम मुल्क का मालिक हर चीज़ का मुख़्तार कौन है? हुज़ूरे पाक की क़सम उमूमन इन लफ़्ज़ों में होती थी कि उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, और जब कोई ताकीदी क़सम खाते तो फ़रमाते उसकी क़सम जो दिलों का मालिक और उनका फेरने वाला है। फिर यह भी पूछ कि वह कौन है जो सबको पनाह दे और उसकी दी हुई पनाह को कोई तोड़ न सके, और उसके मुक़ाबले पर कोई पनाह न दे सके, किसी की पनाह का वह पाबन्द नहीं। यानी इतना बड़ा सरदार व मालिक कि तमाम मख़्लूक़, मुल्क, हुकूमत उसी के हाथ में है, बतलाओ वह कौन है? अ़रब में दस्तूर था कि क़बीले का सरदार अगर किसी को पनाह दे दे तो सारा क़बीला उसका पाबन्द होता, लेकिन क़बीले में से कोई किसी को अपनी पनाह में ले ले तो सरदार पर उसकी पाबन्दी नहीं थी, पस यहाँ ख़ुदा की अ़ज़्मत व सल्तनत बयान हो रही है कि वह क़ादिरे मुत्लक़ हाकिमे कुल है, उसका इरादा कोई बदल नहीं सकता, उसका कोई हुक्म टल नहीं सकता, उससे कोई पूछताछ नहीं कर सकता, उसकी मंशा के बग़ैर पत्ता हिल नहीं सकता।

Maktab-E-Ashraf

वह सबसे पूछताछ कर ले, लेकिन किसी की मजाल नहीं कि उससे कोई सवाल करे। उसकी बड़ाई और उसकी किब्रियाई, उसका ग़लबा और उसका दबाव, उसकी क़ुदरत, उसकी इ़ज़्ज़त, उसकी हिक्मत, उसका अ़दल बेहद व बेहिसाब और बेमिसाल है, सारी मख़्लूक़ उसके सामनें आ़जिज़, पस्त और लाचार है, रब सारी मख़्लूक़ से पूछताछ और सवाल करने वाला है। उस सवाल का जवाब भी उनके पास सिवाय इसके और नहीं कि वे इक़रार करें कि इतना बड़ा बादशाह ऐसा ख़ुदमुख़्तार एक अल्लाह ही है। कह दे कि फिर तुम पर क्या टपकी पड़ी है? ऐसा कौनसा जादू तुम पर हो गया है कि बावजूद इस इक़रार के फिर भी दूसरों की पूजा और इबादत करते हो? हम तो उनके सामने हक़ ला चुके, रब के एक होने के साथ-साथ उसका अकेला माबूद होना भी बयान कर दिया। सही दलीलें और साफ़ बातें पहुँचा दीं और उनका ग़लत कहने वाला होना ज़ाहिर कर दिया कि ये शरीक बनाने में झूठे हैं, और उनका झूठ ख़ुद उनके इक़रार से ज़ाहिर व स्पष्ट है। जैसे कि सूरत के आख़िर में फ़रमाया कि ख़ुदा के सिवा दूसरों के पुकारने की कोई सनद नहीं...। सिर्फ़ बाप-दादों की तक़्लीद (पैरवी और अनुसरण) पर आ पड़े हैं और यही वे कहते भी थे कि हमने अपने बुज़ुर्गों को इसी पर पाया और हम उनकी पैरवी नहीं छोड़ेंगे।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۠	अल्लाह ने किसी को औलाद क़रार नहीं दिया और न उसके साथ कोई और ख़ुदा है, अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ को (तक़सीम करके) अलग कर लेता और एक-दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह उन (बुरी और बेहूदा) बातों से पाक है जो ये लोग उसके (मुताल्लिक़) बयान करते हैं। (91) जानने वाला है सब छुपे हुए और ज़ाहिर का, ग़र्ज़ कि उन लोगों के शिर्क से वह बुलन्द और पाक है। (92)

ع ٥

वह है सबका मालिक

अल्लाह तआ़ला इससे अपनी बरतरी बयान फ़रमा रहा है कि उसकी औलाद हो या कोई उसका शरीक हो। मुल्क में तसर्रुफ़ (क़ब्ज़े व इख़्तियार) में इबादत का मुस्तहिक़ होने में वह यक्ता है, न उसकी औलाद है न उसका शरीक है। अगर मान लिया जाये कि कई एक ख़ुदा हैं तो हर एक को अपनी मख़्लूक़ का मुस्तक़िल मालिक होना चाहिये तो मौजूदात में निज़ाम (व्यवस्था) क़ायम नहीं रह सकता। हालाँकि कायनात का इन्तिज़ाम मुकम्मल है। ऊपर की दुनिया, नीचे की दुनिया, आसमान व ज़मीन वग़ैरह पूरी तरह नियमित तौर पर अपने-अपने मुक़र्ररा कामों में मशग़ूल हैं, अपने दस्तूर से एक इंच इधर-उधर नहीं होते। पस मालूम हुआ कि इन सबका ख़ालिक़ व मालिक ख़ुदा एक ही है, न कि अलग-अलग बहुत से ख़ुदा। और अगर बहुत से ख़ुदा मान लिये जायें तो यह भी ज़ाहिर है कि हर एक दूसरे को पस्त व मग़लूब करना और ख़ुद को ग़ालिब करना चाहेगा, अगर ग़ालिब आ गया तो मग़लूब (जिस पर कोई दूसरा ग़ालिब आ जाये) ख़ुदा न रहा, अगर ग़ालिब न आया तो वह ख़ुद ख़ुदा नहीं। पस ये दोनों दलीलें बतला रही हैं कि ख़ुदा एक ही है।

मुतकल्लिमीन के यहाँ इस दलील को "दलीले तमानो" कहते हैं। उनकी तक़रीर यह है कि अगर दो

Mahtab E Ashraf

ख़ुदा माने जायें या दो से ज़्यादा, फिर एक तो एक जिस्म की हरकत का इरादा करे और दूसरा उसके सुकून (यानी हरकत न देने) का इरादा करे, अब अगर दोनों की मुराद हासिल न हो तो दोनों ही आजिज़ ठहरे, और जब आजिज़ ठहरे तो ख़ुदा नहीं हो सकते। क्योंकि वाजिब आजिज़ नहीं होता। और यह भी नामुम्किन है कि दोनों की मुराद पूरी हो, क्योंकि एक के ख़िलाफ़ दूसरे की ख़्वाहिश है तो दोनों की मुराद का हासिल होना मुहाल है। और यह मुहाल लाज़िम हुआ है इस वजह से कि दो या दो से ज़्यादा ख़ुदा फ़र्ज़ किये गये थे। पस यह अनेक होना बातिल हो गया। अब रही तीसरी सूरत यानी यह कि एक की ख़्वाहिश पूरी हो और एक की न हो तो जिसकी पूरी हुई वह तो ग़ालिब और वाजिब रहा और जिसकी पूरी न हुई वह मग़लूब हुआ। क्योंकि वाजिब की यह सिफ़त नहीं कि वह मग़लूब हो, तो इस सूरत में भी ख़ुदाओं की अधिक संख्या (एक से ज़ायद होना) बातिल होती है। पस साबित हुआ कि ख़ुदा एक है। वे ज़ालिम सरकश, हद से गुज़र जाने वाले मुश्रिक जो ख़ुदा की औलाद ठहराते हैं और उसके शरीक बतलाते हैं, उनके इन बयान की हुई सिफ़तों से अल्लाह की पाक ज़ात बुलन्द व बाला और ऊँची व पाक है। वह हर उस चीज़ को जानता है जो मख़्लूक़ से छुपी है और उसे भी जो मख़्लूक़ पर ज़ाहिर है। पस वह उन तमाम शरीकों से पाक है जिसे मुन्किर और मुश्रिक लोग अल्लाह का शरीक बतलाते हैं।

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ۝ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۝ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ۝	आप (अल्लाह तआ़ला से) दुआ़ कीजिए कि ऐ मेरे परवर्दिगार! जिस अ़ज़ाब का उन काफ़िरों से वायदा किया जा रहा है, अगर आप मुझको दिखा दें (93) तो ऐ मेरे रब! मुझ को उन ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए। (94) और हम इस बात पर क़ादिर हैं कि जो उनसे वायदा कर रहे हैं आपको भी दिखला दें (95) (लेकिन जब तक उन पर अ़ज़ाब न आए) आप उनकी बदी का दफ़ीया ऐसे बर्ताव से कर दिया कीजिए जो बहुत ही अच्छा (और नर्म) हो, हम ख़ूब जानते हैं जो-जो कुछ ये (आपके बारे में) कहा करते हैं। (96) और आप यूँ दुआ़ किया कीजिए कि ऐ मेरे रब! मैं आपकी पनाह माँगता हूँ, शैतानों के वस्वसों से। (97) और ऐ मेरे रब! आपकी पनाह माँगता हूँ इससे कि शैतान मेरे पास भी आएँ। (98)

अच्छे अख़्लाक़ का प्रदर्शन

सख़्तियों और परेशानियों के उतरने के वक़्त की दुआ़ तालीम हो रही है कि अगर तू उन बदकारों पर अ़ज़ाब लाये और मैं उनमें मौजूद हूँ तो मुझे उन अ़ज़ाबों से बचा लेना। मुस्नद अहमद और तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. की दुआ़ओं में यह जुमला भी होता था कि ख़ुदाया! जब तू किसी क़ौम के

Mahtab E Ashraf

साथ फ़ितने (आज़माईश और उनके इम्तिहान) का इरादा करे तो मुझे फ़ितने में डालने से पहले उठा ले। ख़ुदा तआ़ला इसकी तालीम देने के बाद फ़रमाता है कि हम उन अ़ज़ाबों को तुझे दिखा देने पर क़ादिर हैं जो उन काफ़िरों पर हमारी ओर से उतरने वाले हैं। फिर वह बात सिखाई जाती है जो तमाम मुश्किलों को दूर और दफ़ा करने वाली है, और वह यह कि बुराई करने वाले से भलाई की जाये, ताकि उसकी अ़दावत (दुश्मनी और बैर) मुहब्बत से और नफ़रत उलफ़त से बदल जाये। जैसे एक दूसरी आयत में भी है कि बुराई को भलाई से दूर कर तो जानी दुश्मन दिली दोस्त बन जायेगा, लेकिन यह काम उन ही से हो सकता है जो सब्र करने वाले हों, यानी इस हुक्म पर अ़मल और सिफ़त को सिर्फ़ वही हासिल कर सकते हैं जो लोगों की तकलीफ़ को बरदाश्त कर लेने के आ़दी हो जायें और अगरचे वे बुराई करें लेकिन ये भलाई करते जायें। यह गुण उन ही लोगों का है जो बड़े नसीब वाले हों, दुनिया और आख़िरत की भलाई जिनकी क़िस्मत में हो। इनसान की बुराई से बचने की बेहतरीन तरकीब बतला कर फिर शैतान की बुराई से बचने की तरकीब बतलाई जाती है, कि ख़ुदा से दुआ़ करो कि वह तुम्हें शैतान से बचा ले, इसलिये कि उसके फ़न फ़रेब से बचने के हथियार तुम्हारे पास सिवाय इसके और नहीं। वे सुलूक और एहसान से बस में नहीं आयेंगे। "इस्तिआ़ज़ा" (अल्लाह की पनाह माँगने) के बयान में हम लिख आये हैं कि हुज़ूरे पाक सल्ल. यह दुआ़ पढ़ा करते थेः

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. مِنْ هَمْزِهٖ وَنَفْخِهٖ وَنَفْسِهٖ.

और पनाह माँगता हूँ कि शैतान मेरे किसी काम में रोक और बाधा हो और वह मेरे पास पहुँच जाये।

पस हर एक काम के शुरू में ख़ुदा के ज़िक्र की ख़ुसूसियत है कि वह शैतान की शिर्कत को रोक देता है। खाना पीना, हमबिस्तरी, ज़िबह वग़ैरह तमाम कामों को शुरू करने से पहले अल्लाह का ज़िक्र करना चाहिये। अबू दाऊद में है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम की एक दुआ़ यह भी थीः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَزَمِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَدَمِ وَمِنَ الْغَرَقِ وَاَعُوْذُبِكَ اَنْ يَّتَخَنَّقَنِی الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ.

ऐ अल्लाह मैं तुझसे बुरे बुढ़ापे से और दबकर मर जाने से और डूबकर मर जाने से पनाह माँगता हूँ। और इससे भी कि मौत के वक़्त शैतान मुझको बहकाये।

मुस्नद अहमद में है कि हमें रसूलुल्लाह सल्ल. एक दुआ़ सिखाते थे ताकि नींद उचाट हो जाने की बीमारी को दूर करने के लिये हम सोते वक़्त पढ़ा करेंः

بِسْمِ اللّٰهِ اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ مِنْ شَرِّعِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ.

विस्मिल्लाहि अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन् ग़-ज़बिही व अ़िक़ाबिही मिन् शर्रि इबादिही व मिन् ह-मज़ातिश्शैतानि व अंय्यहज़ुरून।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का दस्तूर था कि अपनी औलाद में से जो होशियार होते उन्हें तो यह दुआ़ सिखा दिया करते और जो छोटे ना-समझ होते, याद न कर सकते, उनके गले में इस दुआ़ को लिखकर डाल देते। अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी यह हदीस है, इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन ग़रीब

बतलाते हैं।

यहाँ तक कि जब उनमें से किसी (के सर) पर मौत आ (खड़ी हो-) ती है, उस वक़्त कहता है कि ऐ मेरे रब! मुझको (दुनिया में) फिर वापस भेज दीजिए। (99) ताकि जिस (दुनिया) को मैं छोड़कर आया हूँ, उसमें फिर जाकर नेक काम करूँ, हरगिज़ (ऐसा) नहीं (होगा)। यह (उसकी) एक बात ही बात है, जिसको यह कहे जा रहा है, और उन लोगों के आगे एक (चीज़) आड़ (की आने वाली) है, (मुराद इससे मौत है) क़ियामत के दिन तक। (100)	حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ٥ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ٥

एक बेवक़्त की तमन्ना

बयान हो रहा है कि मौत के वक़्त काफ़िर और बड़े गुनाहगार सख़्त शर्मिन्दा होते हैं और हसरत व अफ़सोस के साथ आरज़ू करते हैं कि काश हम दुनिया की तरफ़ लौटाये जायें ताकि हम नेक आमाल कर लें, लेकिन उस वक़्त यह उम्मीद फ़ज़ूल यह आरज़ू ला-हासिल है। चुनाँचे सूरः मुनाफ़िक़ून में फ़रमाया-

जो हमने दिया है हमारी राह में देते रहो इससे पहले कि तुममें से किसी की मौत आ जाये। उस वक़्त वह कहेगा कि ख़ुदाया ज़रा सी मोहलत दे दे तो मैं सदक़ा ख़ैरात कर लूँ और नेक बन्दा बन जाऊँ, लेकिन अजल (मुक़र्ररा वक़्त/मौत) आने के बाद किसी को मोहलत नहीं मिलती। तुम्हारे तमाम आमाल से ख़ुदा तआ़ला ख़बरदार है।

इसी मज़मून की और भी बहुत सी आयतें हैं जैसेः

يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ............مِنْ زَوَالٍ.

(सूरः इब्राहीम आयत 44)

يَوْمَ يَاْتِيْ تَاوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ............كُنَّا نَعْمَلُ.

(सूरः आराफ़ आयत 53)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ..........مُوْقِنُوْنَ.

(सूरः सज्दा आयत 12)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا..........لَكٰذِبُوْنَ.

(सूः अन्आ़म आयत 27)

وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ..........مِنْ سَبِيْلٍ.

(सूरः शूरा आयत 44)

قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ.........الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ.

(सूरः मोमिन आयत 11-12)

وهم يصطرخون.........الخ

(सूरः फ़ातिर आयत 37)

वग़ैरह। इन आयतों में बयान हुआ है कि ऐसे बदकार लोग मौत को देखकर क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने की पेशी के वक़्त जहन्नम के सामने खड़े होकर दुनिया में वापस आने की तमन्ना करेंगे और नेक आमाल करने का वायदा करेंगे। लेकिन उस वक़्त उनकी तमन्ना पूरी न होगी। यह तो वह कलिमा है जो मजबूरी में ऐसे वक़्त में उनकी ज़बान से निकल ही जाता है। और यह भी कहते हैं कि अगर ये दुनिया में वापस लौटाये भी जायें तो नेक अ़मल नहीं करेंगे बल्कि वैसे ही रहेंगे जैसे पहले रहते थे। ये तो झूठे और ग़लत बयानी करने वाले हैं। कितना मुबारक (अच्छा) है वह शख़्स जो अपनी ज़िन्दगी में नेक अ़मल करे, और कैसे बदनसीब ये लोग हैं कि आज न इन्हें माल व औलाद की तमन्ना है न दुनिया और दुनिया की सजावट और चमक-दमक की ख़्वाहिश है, सिर्फ़ यह चाहते हैं कि दो रोज़ की ज़िन्दगी और हो जाये तो कुछ नेक आमाल कर लें, लेकिन तमन्ना बेकार, आरज़ू बेसूद, ख़्वाहिश बेजा है।

यह भी नक़ल किया गया है कि उनकी तमन्ना पर उन्हें ख़ुदा डाँट देगा और फ़रमा देगा कि यह भी तुम्हारी बात है, अ़मल अब भी नहीं करोगे। हज़रत उला बिन ज़ियाद रह. कितनी उम्दा बात फ़रमाते हैं, आप फ़रमाते हैं कि तुम यूँ समझ लो कि मेरी मौत आ चुकी थी लेकिन मैंने अल्लाह से दुआ़ की कि मुझे चन्द रोज़ की मोहलत दे दी जाये ताकि मैं नेकियाँ कर लूँ। अल्लाह तआ़ला ने मुझे मोहलत दे दी है। अब तो मुझे चाहिये कि मैं दिल खोलकर नेकियाँ कर लूँ। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि काफ़िर की इस उम्मीद को याद रखो और अपनी ज़िन्दगी की घड़ियाँ अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदारी में बसर करो।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब काफ़िर अपनी क़ब्र में रखा जाता है और अपना जहन्नम का ठिकाना देख लेता है तो कहता है कि मेरे रब मुझे लौटा दे, मैं तौबा कर लूँगा और नेक आमाल करता रहूँगा। जवाब मिलता है कि जितनी उम्र तुझे दी गयी थी तू ख़त्म कर चुका। फिर उसकी क़ब्र उस पर सिमट जाती और तंग हो जाती है और साँप-बिच्छू चिमट जाते हैं। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि गुनाहगारों पर उनकी क़ब्रें बड़ी मुसीबत की जगह होती हैं। उन क़ब्रों में उन्हें काले नाग डसते रहते हैं, जिनमें से एक बहुत बड़ा उसके सिरहाने होता है और एक उतना ही बड़ा पायेंती होता है। वह सर की तरफ़ से डसना और ऊपर चढ़ना शुरू कर देता है, यह पैरों की तरफ़ से काटना और ऊपर चढ़ना शुरू करता है, यहाँ तक कि बीच की जगह आकर दोनों इकट्ठे हो जाते हैं। पस यह है वह बर्ज़ख़ जहाँ ये क़ियामत तक रहेंगे।

"मिंव्वराइहिम" के मायने किये गये हैं कि उनके आगे बर्ज़ख़ एक पर्दा और आड़ है दुनिया और आख़िरत के बीच। वे न तो दुनिया में हैं कि खायें पियें, न आख़िरत में हैं कि आमाल का बदला और जज़ा या सज़ा मिल जाये, बल्कि बीच ही बीच में हैं। पस आयत में ज़ालिमों को डराया जा रहा है कि उन्हें आ़लमे बर्ज़ख़ में भी बड़े भारी अ़ज़ाब होंगे। जैसे फ़रमान है:

وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ.

कि उनके आगे जहन्नम है। एक और आयत में है:

وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ.

यानी उनके आगे बहुत सख़्त अ़ज़ाब हैं।

बर्ज़ख़ का यह अ़ज़ाब उन पर क़ियामत के क़ायम होने तक बराबर जारी रहेगा। जैसे हदीस में है कि वह उसमें बराबर अ़ज़ाब में रहेगा यानी ज़मीन में।

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ○ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ○ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ○	फिर जब (क़ियामत में) सूर फूँका जाएगा तो उनमें (जो) आपसी रिश्ते-नाते (थे) उस दिन न रहेंगे, और न कोई किसी को पूछेगा। (101) सो जिस शख़्स का (ईमान का) पल्ला भारी होगा, तो ऐसे लोग कामयाब (यानी निजात पाने वाले) होंगे। (102) और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा, (यानी वह काफ़िर होगा) सो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया और जहन्नम में हमेशा के लिए रहेंगे। (103) उनके चेहरों को (उस जहन्नम की) आग झुलसती होगी, और उस (जहन्नम) में उनके मुँह बिगड़े हुए होंगे। (104)

आमाल का तौला जाना

जब ज़िन्दा होने का सूर फूँका जायेगा और लोग अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा होकर उठ खड़े होंगे। उस दिन न तो रिश्ते-नाते बाक़ी रहेंगे न कोई किसी को पूछेगा, न बाप को औलाद पर शफ़क़त होगी न औलाद बाप का ग़म खायेगी। अ़जब नफ़्सी-नफ़्सी (अपनी-अपनी जान की पड़ी) होगी। जैसे फ़रमान है कि कोई दोस्त किसी दोस्त से बावजूद एक दूसरे को देखने के कुछ न पूछेगा। साफ़ देखेगा कि क़रीबी शख़्स है, मुसीबत में है गुनाहों के बोझ में दब रहा है लेकिन उसकी तरफ़ तवज्जोह न करेगा, न कुछ पूछेगा बल्कि आँख फेर लेगा। जैसे ख़ुद क़ुरआन में है कि उस दिन आदमी अपने भाई से, अपनी माँ से, अपने बाप से, अपनी बीवी से और अपने बच्चों से भागता फिरेगा.......।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला अगलों पिछलों को जमा करेगा, फिर एक मुनादी ऐलान करेगा कि जिस किसी का कोई हक़ किसी दूसरे के ज़िम्मे हो वह आये और उससे अपना हक़ ले जाये, तो अगरचे किसी का कोई हक़ अपने बाप के ज़िम्मे या अपनी औलाद के ज़िम्मे या अपनी बीवी के ज़िम्मे हो वह भी ख़ुश होता हुआ और दौड़ता हुआ आयेगा और अपने हक़ के तक़ाज़े शुरू करेगा, जैसे इस आयत में है। मुस्नद अहमद की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि फ़ातिमा मेरे जिस्म का एक टुकड़ा है, जो चीज़ उसे नाख़ुश करे वह चीज़ मुझे भी नाख़ुश करती है, और जो चीज़ उसे ख़ुश करे वह मुझे भी ख़ुश करती है। क़ियामत के रोज़ सब रिश्ते-नाते टूट जायेंगे लेकिन मेरा नसब,

Maktab E Ashraf

मेरा सबब, मेरी रिश्तेदारी न टूटेगी। इस हदीस की असल बुख़ारी मुस्लिम में भी है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- फ़ातिमा मेरे जिस्म का एक टुकड़ा है, उसे नाराज़ करने वाली और उसे सताने वाली चीज़ें मुझे नाराज़ करने वाली और तकलीफ़ पहुँचाने वाली हैं। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. ने मिम्बर पर फ़रमाया- लोगों का क्या हाल है कि कहते हैं कि रसूलुल्लाह का रिश्ता भी आपकी क़ौम को कोई फ़ायदा न देगा, ख़ुदा की क़सम मेरा रिश्ता दुनिया और आख़िरत में मिला हुआ है। ऐ लोगो! मैं तुम्हारा मीरे-कारवाँ (यानी जमाअ़त का सरदार) हूँ जब तुम आओगे एक शख़्स कहेगा कि या रसूलल्लाह! मैं फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ हूँ। मैं जवाब दूँगा कि हाँ नसब तो मैंने पहचान लिया, लेकिन तुम लोगों ने मेरे बाद बिदअ़तें ईजाद की थीं और एड़ियों के बल मुर्तद हो गये (यानी दीन से फिर गये) थे।

मुस्नदे अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. में हमने कई सनदों से यह रिवायत वारिद की है कि जब आपने उम्मे-कुलसूम बिन्ते अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. से निकाह किया तो फ़रमाया करते थे ख़ुदा की क़सम मुझे इस निकाह से सिर्फ़ यह ग़र्ज़ थी कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि हर सबब व नसब क़ियामत के दिन कट जायेगा मगर मेरा नसब और सबब बाक़ी रहेगा। यह भी मज़कूर है कि आपने उनका मेहर उनके सम्मान व बुज़ुर्गी की वजह से चालीस हज़ार मुक़र्रर किया था। इब्ने अ़साकिर में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- तमाम रिश्ते-नाते और ससुराली ताल्लुक़ात सिवाय मेरे ताल्लुक़ात के क़ियामत के दिन कट जायेंगे। एक और हदीस में है कि मैंने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि जहाँ मेरा निकाह हुआ है और जिसका निकाह मेरे साथ हुआ है, वे सब जन्नत में भी मेरे साथ रहें, तो ख़ुदा तआ़ला ने मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमाई। जिसकी एक नेकी भी गुनाहों से बढ़ गयी वह कामयाब हो गया, जहन्नम से आज़ाद और जन्नत में दाख़िल हो गया, अपनी मुराद को पहुँच गया, और जिससे डरता था उससे बच गया। और जिसकी बुराईयाँ भलाईयों से बढ़ गयीं वे हलाक हुए और नुक़सान में आ गये।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन तराज़ू पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होगा जो हर इनसान को लाकर तराज़ू के पास बीचों-बीच खड़ा करेगा। फिर नेकी बदी तौली जायेगी। अगर नेकी बढ़ गयी तो बुलन्द आवाज़ से ऐलान करेगा कि फ़ुलाँ पुत्र (या पुत्री फ़ुलाँ) निजात पा गया। अब इसके बाद तबाही उसके पास भी नहीं आयेगी। और अगर बदी बढ़ गयी तो निदा करेगा और सबको सुनाकर कहेगा फ़ुलाँ का बेटा फ़ुलाँ हलाक हुआ, अब वह भलाई से मेहरूम हो गया। इसकी सनद ज़ईफ़ है। दाऊद इब्ने हजर रावी ज़ईफ़ व मतरूक है, ऐसे लोग हमेशा जहन्नम में रहेंगे, दोज़ख़ की आग उनके मुँह झुलसा देगी, चेहरों को जला देगी और कमर को सुलगा देगी। ये बेबस होंगे, आग को हटा न सकेंगे। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि पहले ही शोले की लपट उनका सारा गोश्त पोस्त हड्डियों से अलग करके उनके क़दमों में डाल देगी। वे वहाँ बद-शक्ल होंगे, दाँत निकले हुए होंगे, होंठ ऊपर चढ़ा हुआ और नीचे गिरा हुआ होगा। ऊपर का होंठ तो तालू तक पहुँचा हुआ होगा और नीचे का होंठ नाफ़ तक आ जायेगा।

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا

क्यों क्या तुमको (दुनिया में) मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाया करती थीं और तुम उनको झुठलाया करते थे। (यह उसकी सज़ा मिल रही है)। (105) वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब!

Maktab E Ashraf

(वाक़ई) हमारी बदबख़्ती ने हमको घेर लिया था और (बेशक) हम गुमराह लोग थे। (106) ऐ हमारे रब! हमको इस (जहन्नम) से (अब) निकाल दीजिए, फिर अगर हम दोबारा (ऐसा) करें तो हम बेशक क़ुसूरवार हैं। (107)	شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ٥ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ٥

अपनी ख़ता और जुर्म को स्वीकार करना

काफ़िरों को उनके कुफ़्र, गुनाहों और न मानने पर क़ियामत के दिन जो डाँट-डपट होगी उसका बयान हो रहा है कि उनसे खुदा तआ़ला फ़रमायेगा- मैंने तुम्हारी तरफ़ रसूल भेजे थे, तुम पर किताबें नाज़िल फ़रमायी थीं, तुम्हारे शक-शुब्हे दूर कर दिये थे, तुम्हारी कोई हुज्जत बाक़ी नहीं रखी थी। जैसे फ़रमान है- ताकि लोगों का उज़्र रसूलों के आने के बाद बाक़ी न रहे। और फ़रमाया कि हम जब तक रसूल न भेज दें अ़ज़ाब नहीं करते। एक दूसरी आयत में है कि जब जहन्नम में कोई जमाअ़त जायेगी उससे वहाँ के निगराँ (यानी वहाँ के फ़रिश्ते) पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से आगाह करने वाले आये न थे? उस वक़्त ये बदनसीब लोग इक़रार करेंगे कि बेशक तेरी हुज्जत पूरी हो गयी थी लेकिन हम लोग अपनी बदक़िस्मती और सख़्त-दिली के सबब अपना सुधार न कर सके। अपनी गुमराही पर अड़ गये और सही रास्ते पर न चले। खुदाया! अब तू हमें फिर दुनिया की तरफ़ भेज दे, अगर अब ऐसा करें तो बेशक हम ज़ालिम और सज़ा के मुस्तहिक़ हैं। जैसे फ़रमान है:

فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ.

हमें अपनी ख़ताओं और ग़लतियों का इक़रार है, क्या अब किसी तरह भी छुटकारे की राह मिल सकती है......? लेकिन जवाब दिया जायेगा कि अब सब राहें बन्द हैं, अ़मल करने की जगह (यानी दुनिया) फ़ना हो गयी, अब बदले और जज़ा का स्थान है। तौहीद के वक़्त शिर्क किया अब पछताने से क्या हासिल?

इरशाद होगा कि इसी (जहन्नम) में धुतकारे हुए पड़े रहो और मुझसे बात मत करो। (108) मेरे बन्दों में एक गिरोह था जो (हमसे) अ़र्ज़ किया करते थे कि ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए सो हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहमत फ़रमाईए और आप सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाले हैं। (109) सो तुमने उनका मज़ाक़ बनाया था (और) यहाँ तक (उसका मश्ग़ला किया) कि	قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ٥ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ٥ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ

तَضْحَكُوْنَ ○ اِنِّىْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ○	मश्गले ने तुमको हमारी याद भी भुला दी, और तुम उनसे हंसी-मज़ाक़ किया करते थे। (110) मैंने उनको आज उनके सब्र का यह बदला दिया है कि वही कामयाब हुए। (111)

Mahtab E Ashraf

तुम मुसलमानों से मज़ाक़ करते थे

काफ़िर जब जहन्नम से निकलने की आरज़ू करेंगे तो उन्हें जवाब मिलेगा कि अब तो तुम इसी में ज़िल्लत के साथ पड़े रहो। ख़बरदार अब यह सवाल मुझसे न करना। आह यह कलामे रहमान होगा जो जहन्नमियों को हर ख़ैर से मायूस कर देगा (अल्लाह हमें बचाये ऐ रहमतों वाले ख़ुदा हमें अपने रहम के दामन में छुपा ले और अपनी डाँट-डपट और ग़ुस्से से बचा ले, आमीन)।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जहन्नमी पहले तो जहन्नम क़े दरोग़ा को बुलायेंगे। चालीस साल तक उसे पुकारते रहेंगे लेकिन कोई जवाब न पायेंगे। चालीस बरस के बाद जवाब मिलेगा कि तुम यहीं पड़े रहो। उनकी पुकार की न तो कोई वक़्अ़त जहन्नम के दरोग़ा की नज़र में होगी, न ख़ुदावन्दे करीम के पास। फिर वे डायरेक्ट अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद करेंगे और कहेंगे कि ख़ुदाया! हम अपनी बदबख़्ती की वजह से हलाक हो गये। हम अपनी गुमराही में डूब गये। ख़ुदाया अब तू हमें यहाँ से निजात दे। अगर अब भी हम यही बुरे काम करें तो जो चाहे सज़ा करना। इसका जवाब उन्हें दुनिया की दुगनी उम्र तक न दिया जायेगा। फिर फ़रमाया जायेगा कि रहमत से दूर होकर ज़लील व ख़्वार होकर इसी दोज़ख़ में पड़े रहो और मुझसे कलाम न करो। ये बिल्कुल मायूस हो जायेंगे और गधों की तरह से शोर मचाते जलते झुलसते रहेंगे। उस वक़्त उनके चेहरे बदल जायेंगे, सूरतें बिगड़ जायेंगी, यहाँ तक कि बाज़ मोमिन शफ़ाअ़त की इजाज़त लेकर आयेंगे लेकिन यहाँ किसी को नहीं पहचानेंगे। जहन्नमी उन्हें देखकर कहेंगे कि मैं फ़ुलाँ हूँ लेकिन ये जवाब देंगे कि ग़लत है, हम तुम्हें नहीं पहचानते। अब दोज़ख़ी लोग ख़ुदा को पुकारेंगे और वह जवाब पायेंगे जो ऊपर बयान हुआ। फिर दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जायेंगे और ये वहीं सड़ते रहेंगे। उन्हें शर्मिन्दा और पशेमान करने के लिये उनका एक ज़बरदस्त गुनाह पेश किया जायेगा। वह ख़ुदा के प्यारे बन्दों का मज़ाक़ उड़ाते थे और उनकी दुआ़ओं पर दिल्लगी करते थे। वे मोमिन अपने रब से बख़्शिश व रहमत तलब करते थे, उसे अर्रहमुर्राहिमीन (तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला) कहकर पुकारते थे, लेकिन ये उसे हंसी में उड़ाते थे और उनके बुग़ज़ में रब का ज़िक्र छोड़ बैठते थे। उनकी इबादतों और दुआ़ओं पर हंसते थे और उन्हें मज़ाक़ में उड़ाते थे। जैसे फ़रमान है:

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ.

यानी गुनाहगार ईमान वालों पर हंसते थे। अब उनसे अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मैंने अपने ईमान वाले सब्र करने वाले बन्दों को बदला दिया है, वे नेकबख़्ती, सलामती, निजात और फ़लाह पा चुके हैं और पूरे कामयाब हो चुके हैं।

قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ٥ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ٥ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ٥ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ٥ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ٥	इरशाद होगा (कि अच्छा यह बतलाओ) तुम बरसों की गिनती से किस क़द्र मुद्दत ज़मीन पर रहे होगे? (112) वे जवाब देंगे कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम रहे होंगे, (और सच यह है कि हमको याद नहीं) सो गिनने वालों से पूछ लीजिए। (113) इरशाद होगा कि तुम (दुनिया में) थोड़ी ही मुद्दत रहे (लेकिन) क्या अच्छा होता कि तुम (यह बात दुनिया में) समझते होते। (114) हाँ! तो क्या तुमने यह ख़्याल किया था कि हमने तुमको यूँ ही (हिक्मत से ख़ाली) बेकार पैदा कर दिया है, और यह (ख़्याल किया था) कि तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे? (115) सो अल्लाह तआ़ला बहुत ही आ़लीशान है जो कि हक़ीक़ी बादशाह है, उसके सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं, (और वह) अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है। (116)

एक सवाल

बयान हो रहा है कि दुनिया की थोड़ी सी उम्र में ये बदकारियों में मशग़ूल हो गये, अगर ये नेक काम करने वाले रहते तो ख़ुदा के नेक बन्दों के साथ अपनी नेकियों का बड़ा अज्र पाते। आज उनसे सवाल होगा कि तुम दुनिया में किस क़द्र रहे? वे जवाब देंगे कि बहुत ही कम, एक दिन या इससे भी कम, हिसाब जानने वाले लोगों से मालूम कर लिया जाये। जवाब मिलेगा कि इतनी मुद्दत हो या ज़्यादा लेकिन वास्तव में वह आख़िरत की मुद्दत के मुक़ाबले में बहुत ही कम है। अगर तुम इसी को जानते होते तो उस फ़ानी को इस हमेशा की ज़िन्दगी पर तरजीह न देते, और बुराई करके उस थोड़ी सी मुद्दत में इस क़द्र ख़ुदा को नाराज़ न कर देते। वह ज़रा सा वक़्त अगर सब्र व संयम से अल्लाह तआ़ला की इताअ़त में बसर कर देते तो आज चैन व सुकून था, ख़ुशी ही ख़ुशी थी।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब जन्नती और दोज़ख़ी अपनी-अपनी जगह पहुँच जायेंगे तो अल्लाह तआ़ला मोमिनों से पूछेगा कि तुम दुनिया में कितनी मुद्दत तक रहे? वे कहेंगे यही कोई एक-आध दिन। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि फिर तो तुम बहुत ही अच्छे रहे कि इतनी सी देर की नेकियों का यह बदला पाया कि मेरी रहमत व रज़ामन्दी और जन्नत हासिल कर ली, जहाँ हमेशगी है। फिर जहन्नमियों से यही सवाल होगा, वे भी इतनी ही मुद्दत बतलायेंगे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तुम्हारी तिजारत बड़ी घाटे वाली हुई कि इतनी सी मुद्दत में तुमने मेरी नाराज़गी, गुस्सा और जहन्नम ख़रीद लिया, जहाँ तुम हमेशा पड़े रहोगे। क्या तुम लोग यह समझे हुए हो कि तुम बेकार, बिना किसी इरादे के पैदा किये गये हो? कोई हिक्मत तुम्हारी पैदाईश में नहीं? महज़ खेल के तौर पर तुम्हें पैदा कर दिया गया है? कि जानवरों की तरह

Maktab E Ashraf

तुम उछलते कूदते फिरो? सवाब अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ न हो? यह गुमान ग़लत है, इबादत के लिये अल्लाह के हुक्मों के पूरा करने के लिये पैदा किये गये हो। क्या तुम यह ख़्याल करके फ़ारिग़ हो गये हो कि तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना ही नहीं? यह भी ग़लत ख़्याल है। जैसे फ़रमायाः

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى.

क्या लोग यह गुमान करते हैं कि वे यूँ ही छोड़ दिये जायेंगे? अल्लाह की ज़ात इससे बुलन्द व बरतर है कि वह कोई बेकार और बेफ़ायदा काम करे, बेकार बनाये बिगाड़े, वह सच्चा बादशाह इससे पाक है और उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है जो तमाम मख़्लूक़ को एक छत की तरह घेरे हुए है। वह बहुत भला और बहुत उम्दा है। अच्छी शक्ल व सूरत वाला और बेहतरीन दृश्य वाला है। जैसे फ़रमान है- ज़मीन में हमने हर भले जोड़े को पैदा कर दिया है।

मुसलमानों के ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अज़ीज़ रह. ने अपने आख़िरी ख़ुतबे में अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना (तारीफ़ व प्रशंसा) के बाद फ़रमाया कि लोगो! तुम बेकार और बिना मक़सद के पैदा नहीं किये गये, और तुम यूँ ही न छोड़ दिये जाओगे। याद रखो कि वायदे का एक दिन है जिसमें ख़ुद ख़ुदा तआ़ला फ़ैसले करने और हुक्म फ़रमाने के लिये नाज़िल होगा। वह नुक़सान में पड़ा, उसने ख़सारा उठाया, वह बेनसीब और बदबख़्त हो गया, वह मेहरूम और ख़ाली हाथ रहा जो ख़ुदा की रहमत से दूर हो गया और जन्नत से रोक दिया गया, जिसकी चौड़ाई तमाम ज़मीनों और आसमानों के बराबर है। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि कल क़ियामत के दिन अ़ज़ाबे ख़ुदा से वह बच जायेगा जिसके दिल में उस दिन का ख़ौफ़ आज है। और जो इस फ़ानी दुनिया को उस बाक़ी आख़िरत पर क़ुरबान कर रहा है, इस थोड़े को उस बहुत सारे को हासिल करने के लिये लगातार और बराबर ख़र्च कर रहा है और अपने इस ख़ौफ़ को अमन से बदलने के असबाब मुहैया कर रहा है।

क्या तुम नहीं देखते कि तुमसे अगले (यानी पहले गुज़रे लोग) हलाक हुए। जिनकी जगह लेने वाले अब तुम हो। इसी तरह तुम भी मिटा दिये जाओगे और तुम्हारे बदले आईन्दा आने वाले आयेंगे। यहाँ तक कि एक वक़्त आयेगा कि सारी दुनिया सिमट कर उस मालिक के दरबार में हाज़िरी देगी जो हर चीज़ का असली मालिक व वारिस है। लोगो! ख़्याल तो करो कि तुम दिन रात अपनी मौत से क़रीब हो रहे हो और अपनी क़ब्रों की तरफ़ जा रहे हो। तुम्हारे फल पक रहें हैं, तुम्हारी उम्मीदें ख़त्म हो रही हैं, तुम्हारी उम्रें पूरी हो रही हैं, तुम्हारी मौत नज़दीक आ गयी है, तुम ज़मीन के गड्ढों में दफ़न कर दिये जाओगे, जो छोड़ आये हो दूसरों का हो जायेगा, जो आगे भेज चुके उसे सामने पाओगे। नेकियों के मोहताज होगे, बदियों की सज़ायें भुगतोगे। ऐ अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो इससे पहले कि उसकी बातें सामने आ जायें। इससे पहले कि मौत तुमको उचक जाये। इससे पहले कि जवाबदेही के लिये तैयार हो जाओ। इतना कहा था कि रोने की वजह से आपकी चीख़ें निकलने लगीं, मुँह पर चादर का कोना डालकर रोने लगे और वहाँ मौजूद लोगों की भी चीख़ें और रोना शुरू हो गया।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक बीमार शख़्स जिसे कोई जिन्न सता रहा था, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास आया तो आपने "अ-फ़-हसिब्तुम" से सूरत के ख़त्म तक की (यानी सूरः मोमिनून की आख़िरी चार) आयतें उसके कान में तिलावत फ़रमाईं। वह अच्छा हो गया। जब नबी सल्ल. से इसका ज़िक्र आया तो आपने फ़रमाया- अ़ब्दुल्लाह तुमने उसके कान में क्या पढ़ा था? आपने बतला दिया तो हुज़ूर सल्ल.

Maktab E Ashraf

ने फ़रमाया- तुमने ये आयतें उसके कान में पढ़कर उसे जला दिया। अल्लाह की क़सम अगर कोई ईमान व यक़ीन वाला इन आयतों को किसी पहाड़ पर पढ़े तो वह भी अपनी जगह से टल जाये। अबू नईम ने रिवायत की है कि हमें रसूले करीम सल्ल. ने एक लश्कर में भेजा और हुक्म फ़रमाया कि हम सुबह व शाम-

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ.

'अ-फ़हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम अ्-बसंव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जऊन'

पढ़ते रहें (यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) हमने बराबर इसकी तिलावत दोनों वक़्त जारी रखी, अल्हम्दु लिल्लाह हम सलामती और ग़नीमत के साथ वापस लौटे। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत की डूबने से हिफ़ाज़त कश्तियों में सवार होने के वक़्त यह कहना हैः

بِسْمِ اللّٰهِ الْمَلِكِ الْحَقِّ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ م بِيَمِيْنِهٖ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ. بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ.

बिस्मिल्लाहिल् मलिकिल् हक़्क़ि व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही वल-अर्ज़ु जमीअ़न् क़ब्ज़तुहू यौमल-क़ियामति वस्समावातु मतविय्यातुम् बि-यमीनिही सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून। बिस्मिल्लाहि मजरेहा व मुरसाहा इन्-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्रहीम।

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝	और जो शख़्स (इस बात पर दलील क़ायम होने के बाद) अल्लाह के साथ किसी और माबूद की भी इबादत करे कि जिस (के माबूद होने) पर उसके पास कोई भी दलील नहीं, सो उसका हिसाब उसी के रब के यहाँ होगा, (जिसका लाज़िमी नतीजा यह है कि) यक़ीनन काफ़िरों को फ़लाह न होगी। (117) और आप यूँ कहा करें कि ऐ मेरे रब! (मेरी ख़ताएँ) माफ़ कर और रहम कर, और तू सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है। (118)

ع

काफ़िर कभी फ़लाह नहीं पा सकता

मुश्रिकों को ख़ुदा तआ़ला डरा रहा है और बयान फ़रमा रहा है कि उनके पास उनके शिर्क की कोई दलील नहीं। यह इस बयान हो रहे मज़मून से अलग जुमला है और "फ़-इन्नमा" वाले जुमले के जवाबे-शर्त के संदर्भ में है, यानी उसका हिसाब अल्लाह के यहाँ है। काफ़िर उसके पास कामयाब नहीं हो सकते। वे निजात से मेहरूम रह जाते हैं।

एक शख़्स से रसूलुल्लाह सल्ल. ने मालूम किया कि तू किसको पूजता है? उसने कहा अल्लाह को और फ़ुलाँ-फ़ुलाँ को। आप सल्ल. ने मालूम किया कि उनमें से ऐसा किसे जानता है कि तेरी मुसीबतों में तुझे

Mahtab E Ashraf

काम आये? उसने कहा सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू को। आपने फ़रमाया जब काम आने वाला वही है तो फिर उसके साथ उन दूसरों की इबादत की क्या ज़रूरत है? क्या तेरा ख़्याल है कि वह अकेला तुझे काफ़ी न होगा? उसने कहा मैं यह नहीं कह सकता, अलबत्ता इरादा यह है कि औरों की इबादत करके उसका पूरा शुक्र बजा ला सकूँ। आपने फ़रमाया- सुब्हानल्लाह! इल्म के साथ यह बेइल्मी? जानते हो और फिर अन्जान बने जाते हो? अब उससे कोई जवाब न बन पड़ा। चुनाँचे वह मुसलमान हो जाने के बाद कहा करते थे कि मुझे हुज़ूर सल्ल. ने क़ायल कर दिया। यह हदीस मुर्सल है, तिर्मिज़ी में भी मुस्नद के तौर पर रिवायत है। फिर एक दुआ तालीम फ़रमाई गयी।

'ग़-फ़-र' के मायने जब वह मुत्लक़ हो (यानी किसी के साथ उसकी निस्बत न हो) तो गुनाहों को मिटा देने के और उन्हें लोगों से छुपा देने के आते हैं। और 'रहमत' के मायने सही राह पर क़ायम रखने और अच्छे अक़्वाल व अफ़आ़ल की तौफ़ीक़ देने के होते हैं।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः मोमिनून की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः नूर

सूरः नूर मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 64 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍ م بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ○ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ص وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ج وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ○

यह एक सूरत है जिस (के अलफ़ाज़) को (भी) हम (ही) ने नाज़िल किया है और इस (के मायने यानी अहकाम) को (भी) हम (ही) ने मुक़र्रर किया है और हमने इस सूरत में साफ़-साफ़ आयतें नाज़िल की हैं, ताकि तुम समझो और अ़मल करो। (1) ज़िना कराने वाली औ़रत और ज़िना करने वाला मर्द, सो उनमें से हर एक को सौ दुर्रे मारो, और तुम लोगों को उन दोनों पर अल्लाह के मामले में ज़रा रहम न आना चाहिए अगर अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हो, और दोनों की सज़ा के वक़्त मुसलमानों की एक ज़माअ़त को हाज़िर रहना चाहिए। (2)

Maktab E Ashraf

अहकाम व हिदायात

इस बयान से कि हमने इस सूरत को नाज़िल फ़रमाया है, इस सूरत की अ़ज़मत (बड़ाई) और अहमियत को ज़ाहिर करना है। लेकिन इससे यह मक़सूद नहीं कि और सूरतें अ़ज़मत व सम्मान वाली और अहम नहीं हैं। "फ़रज़्नाहा" के मायने मुजाहिद व क़तादा रह. ने बयान किये हैं कि हलाल व हराम, अमर व नही (हुक्म और मना किये हुए कामों) और हुदूद वग़ैरह का इसमें बयान है। इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि इसे हमने तुम पर और तुम्हारे बाद वालों पर मुक़र्रर कर दिया है। इसमें साफ़-साफ़ खुले-खुले रोशन अहकाम बयान फ़रमाये हैं ताकि तुम नसीहत व सीख हासिल करो, अल्लाह के अहकाम को याद करो और फिर उन पर अ़मल करो। उसके बाद ज़िना की शरई सज़ा बयान फ़रमाई। ज़ानी ग़ैर-शादी शुदा होगा यानी कुंवारा या शादी शुदा होगा। यानी वह जो आज़ाद, बालिग़ और आ़क़िल होने की हालत में शरई निकाह के साथ किसी औ़रत से मिला हो। पस कुंवारा जिसका निकाह अभी नहीं हुआ, वह अगर ज़िना कर बैठे तो उसकी हद (सज़ा) वही है जो इस आयत में बयान हुई, यानी सौ कोड़े। और जमहूर उलेमा के नज़दीक उसे साल भर की जिला-वतनी (देस-निकाला) भी दी जायेगी। हाँ इमाम अबू हनीफ़ा रह. का क़ौल है कि यह जिला-वतनी इमाम की राय पर है, अगर वह चाहे दे चाहे न दे।

जमहूर की दलील तो बुख़ारी व मुस्लिम की वह हदीस है जिसमें है कि दो देहाती रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये, एक ने कहा या रसूलल्लाह! मेरा बेटा इसके यहाँ मुलाज़िम था, वह इसकी बीवी से ज़िना कर बैठा। मैंने उसके फ़िदये में एक सौ बकरियाँ और एक बाँदी दी, फिर मैंने उलेमा से मालूम किया तो मुझे मालूम हुआ कि मेरे बेटे पर शरई सज़ा सौ कोड़ों की है और एक साल जिला-वतनी, और इसकी बीवी पर रजम यानी संगसारी है। आपने फ़रमाया सुनो मैं तुममें अल्लाह की किताब का सही फ़ैसला बयान करता हूँ। बाँदी और बकरियाँ तो तुझे वापस दिलवाई जायेंगी और तेरे बच्चे पर सौ कोड़े और एक साल की जिला-वतनी है। और ऐ अनीस! तू इसकी बीवी का बयान ले (यह हज़रत अनीस क़बीला असलम के एक शख़्स थे) अगर वह अपनी बदकारी और गुनाह का इक़रार करे तो तू उसे संगसार कर देना। चुनाँचे उस बीवी साहिबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने इक़रार किया और उन्हें रजम (संगसार) कर दिया गया। इस हदीस से साबित होता है कि कुंवारे पर सौ कोड़े के साथ ही साल भर तक की जिला-वतनी भी है। और अगर शादी शुदा है तो वह रजम कर दिया जायेगा। चुनाँचे मुवत्ता इमाम मालिक में है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने एक ख़ुतबे में अल्लाह की तारीफ़ व सना के बाद फ़रमाया- लोगो! अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को हक़ के साथ भेजा और आप पर अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई। इस किताबुल्लाह में रजम करने के हुक्म की आयत भी थी जिसे हमने तिलावत की, याद की, उस पर अ़मल भी किया। ख़ुद हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में रजम हुआ और हमने भी उसके बाद रजम किया, मुझे डर लगता है कि कुछ ज़माना गुज़रने के बाद कोई यह न कहने लगे कि हम रजम को किताबुल्लाह में नहीं पाते, ऐसा न हो कि वे ख़ुदा के इस फ़रीज़े को जिसे अल्लाह ने अपनी किताब में उतारा है छोड़कर गुमराह हो जायें। अल्लाह की किताब में रजम का हुक्म मुतलक़ (यानी बिना किसी क़ैद और शर्त के) हक़ है, उस पर जो ज़िना करे और हो शादी शुदा, चाहे मर्द हो या औ़रत, जबकि उसके ज़िना पर शरई दलील हो या हमल (गर्भ) हो, या इक़रार हो। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में इससे भी तफ़सील से है।

मुस्नद अहमद में है कि आपने अपने ख़ुतबे में फ़रमाया- लोग कहते हैं कि रजम यानी संगसारी का

Maktab E Ashraf

मसला हम क़ुरआन में नहीं पाते, क़ुरआन में सिर्फ़ कोड़े मारने का हुक्म है। याद रखो ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. ने रजम किया और हमने भी आपके बाद रजम किया, अगर मुझे यह ख़ौफ़ न होता कि लोग कहेंगे कि क़ुरआन में जो न था उमर ने लिख दिया तो मैं रजम वाली आयत को इसी तरह लिख देता जिस तरह नाज़िल हुई थी। यह हदीस नसाई शरीफ़ में भी है कि आपने अपने ख़ुतबे में रजम का ज़िक्र किया और फ़रमाया- रजम ज़रूरी है, वह अल्लाह तआ़ला की हदों में से एक हद है। ख़ुद हुज़ूर सल्ल. ने रजम किया और हमने भी आप सल्ल. के बाद रजम किया, अगर लोगों के इस कहने का खटका न होता कि उमर ने किताबुल्लाह में ज़्यादती की जो उसमें न थी तो मैं किताबुल्लाह की एक तरफ़ रजम की आयत लिख देता।

उमर बिन ख़त्ताब, अ़ब्दुल्लाह बिन औ़फ़ और फ़ुलाँ और फ़ुलाँ की गवाही है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने रजम किया और हमने भी रजम किया। याद रखो तुम्हारे बाद ऐसे लोग आने वाले हैं जो रजम को, शफ़ाअ़त को और अ़ज़ाबे क़ब्र को झुठलायेंगे, और इस बात को भी कि कुछ लोग जहन्नम से उसके बाद निकाले जायेंगे कि वे कोयला हो गये हों। मुस्नद अहमद में है कि अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- रजम के हुक्म का इनकार करने की हलाकत से बचना......। इमाम तिर्मिज़ी रह. ने भी इसे ज़िक्र किया और इसे सही कहा है।

अबू यअ़्ला मूसली में है कि मर्दान के पास लोग बैठे थे, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि. भी थे, आपने फ़रमाया हम क़ुरआन में पढ़ते थे कि शादी शुदा मर्द या औ़रत जब ज़िना करें तो उन्हें ज़रूर रजम कर दो। मर्दान ने कहा फिर तुमने इस आयत को क़ुरआन में न लिख ली? फ़रमाया सुनो हममें जब इसका ज़िक्र हुआ तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने फ़रमाया- मैं तुम्हारी तशफ़्फ़ी (इत्मीनान और संतुष्टि) करता हूँ। एक शख़्स नबी-ए-अकरम सल्ल. के पास आया, उसने आपसे ऐसा-ऐसा ज़िक्र किया और रजम का बयान किया। किसी ने कहा या रसूलल्लाह! आप रजम की आयत लिख लीजिए। आपने फ़रमाया अब तो मैं उसे लिख नहीं सकता, या इसी के जैसे अलफ़ाज़ फ़रमाये। यह रिवायत नसाई में भी है। पस इन सब हदीसों से साबित हुआ कि रजम की आयत पहले लिखी हुई थी फिर तिलावत में मन्सूख़ हो गयी, और हुक्म बाक़ी रहा। वल्लाहु आलम

ख़ुद हुज़ूरे पाक सल्ल. ने उस शख़्स की बीवी के रजम (संगसार करने) का हुक्म दिया जिसने अपने मुलाज़िम (नौकर) से बदकारी कराई थी। इसी तरह हुज़ूरे पाक सल्ल. ने माअ़िज़ रज़ि. को और एक ग़ामिदिया औ़रत को रजम कराया। इन सब वाक़िआ़त में यह मज़कूर नहीं कि रजम से पहले आपने कोड़े भी लगवाये हों, बल्कि इन सब सही और साफ़ हदीसों में सिर्फ़ रजम का ज़िक्र है, किसी में भी कोड़ों का बयान नहीं है। इसी लिये जमहूर उलेमा-ए-इस्लाम का यही मज़हब है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. और इमाम शाफ़ई रह. भी इसी तरफ़ गये हैं। इमाम अहमद फ़रमाते हैं कि पहले उसे कोड़े मारने चाहियें फिर रजम करना चाहिये, ताकि क़ुरआन व हदीस दोनों पर अ़मल हो जाये। जैसा कि हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अ़ली रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब आपके पास शुराहा लाई गयी जो शादी शुदा औ़रत थी और ज़िना के जुर्म में आयी थी, तो आपने जुमेरात के दिन तो उसे कोड़े लगवाये और जुमे के दिन संगसार करा दिया। और फ़रमाया कि किताबुल्लाह पर अ़मल करके मैंने कोड़े लगवाये और सुन्नते रसूल पर अ़मल करके संगसार कराया। मुस्नद अहमद, सुनने अर्बआ़ और मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मेरी बात ले लो, मेरी बात ले लो। अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये रास्ता निकाल दिया। कुंवारा कुंवारी के साथ ज़िना करे तो सौ कोड़े और साल भर की जिला-वतनी और शादी शुदा शादी शुदा से करे तो रजम। फिर फ़रमाया

कि ख़ुदा के हुक्म के मातहत इस हुक्म के जारी करने में तुम्हें उन पर तरस और रहम न खाना चाहिये। दिल का रहम और चीज़ है और वह तो ज़रूर होगा, लेकिन हद के जारी करने में इमाम को कमी और सुस्ती का प्रदर्शन करना बुरी चीज़ है।

जब इमाम यानी सुल्तान (मुसलमानों के हाकिम) के पास कोई ऐसा वाक़िआ जिसमें हद हो, पहुँच जाये तो उसे चाहिये कि हद (सज़ा) को जारी करे और उसे न छोड़े। हदीस में है, अपने आपस में हदों से दरगुज़र करो (यानी उसको छुपा लो और नज़र-अन्दाज़ करो), जो बात मुझ तक पहुँची और उसमें हद हो तो वह तो वाजिब और ज़रूरी हो गयी। एक और हदीस में है कि एक हद का ज़मीन में क़ायम होना ज़मीन वालों के लिये चालीस दिन की बारिश से बेहतर है। यह भी क़ौल है कि तरस खाकर मार को नर्म न कर दो, बल्कि दरमियाना तौर पर कोड़े लगाओ। यह भी न हो कि हड्डी तोड़ दो। तोहमत लगाने वाले की हद के जारी करने के वक़्त उसके जिस्म पर कपड़े होने चाहियें, हाँ ज़ानी की हद के वक़्त न हों। यह क़ौल हज़रत हम्माद बिन अबू सुलैमान रज़ि. का है। इसे बयान फ़रमाकर आपने यही जुमलाः

وَلَا تَأْخُذْكُمْ........ الخ.

पढ़ा (यानी उन दोनों पर अल्लाह के मामले में तुम्हें रहम न आना चाहिये) तो हज़रत सईद बिन अ़रूबा ने पूछा क्या यह हुक्म में है? कहा हाँ हुक्म में है। और कोड़ों में यानी हद के क़ायम करने में और सख़्त चोट मारने में हज़रत इब्ने उमर रज़ि. की बाँदी ने जब ज़िना किया तो आपने उसके पैरों पर और कमर पर कोड़े मारे तो हज़रत नाफ़े ने इसी आयत का यह जुमला तिलावत किया कि ख़ुदाई हद के जारी करने में तुम्हें तरस न आना चाहिये तो आपने फ़रमाया कि क्या तेरे नज़दीक मैंने इस पर कोई तरस खाया है? सुनो अल्लाह ने उसको मार डालने का हुक्म नहीं दिया, न यह फ़रमाया कि उसके सर पर कोड़े मारे जायें। मैंने उसे ताक़त से कोड़े लगाये हैं और पूरी सज़ा दी है। फिर फ़रमाया कि अगर तुम्हें अल्लाह पर और क़ियामत पर ईमान है तो तुम्हें इस हुक्म की तामील करनी चाहिये और ज़ानियों पर हदें क़ायम करने में आना-कानी न करनी चाहिये। और उन्हें चोट भी सख़्त मारनी चाहिये, लेकिन हड्डी तोड़ने वाली नहीं। ताकि वे अपने इस गुनाह से बाज़ रहें और उनकी यह सज़ा दूसरों के लिये भी इबरत (सबक़) बने। रहम बुरी चीज़ नहीं। एक हदीस में है कि एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह! मैं बकरी को ज़िबह करता हूँ लेकिन मेरा दिल दुखता है। आपने फ़रमाया इस रहम पर भी तुझे अज्र मिलेगा।

फिर फ़रमाता है कि उनकी सज़ा के वक़्त मुसलमानों का मजमा होना चाहिये ताकि सबके दिल में डर बैठ जाये और ज़ानी की रुस्वाई भी हो। ताकि और लोग उससे रुक जायें। उसे खुले तौर पर सज़ा दी जाये, छुपे तौर पर मार-पीटकर न छोड़ा जाये। एक शख़्स और इससे ज़्यादा भी हो जायें तो जमाअ़त हो गयी, और आयत पर अ़मल हो गया। इसी को सामने रखते हुए इमाम मुहम्मद रह. का मज़हब है कि एक शख़्स भी जमाअ़त है। अ़त्तार रह. का क़ौल है कि दो होने चाहियें। सईद बिन जुबैर कहते हैं कि चार हों। ज़ोहरी रह. कहते हैं तीन या तीन से ज़्यादा। इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि चार और उससे ज़्यादा, क्योंकि ज़िना में चार से कम गवाह नहीं हैं। चार हों या उससे ज़्यादा। इमाम शाफ़ई रह. का मज़हब भी यही है। रबीआ़ रह. कहते हैं कि पाँच हों। हसन बसरी रह. के नज़दीक दस। क़तादा रह. कहते हैं कि एक जमाअ़त हो ताकि नसीहत व इबरत और सज़ा हो। नसर बिन अ़ल्क़मा रह. ने उस जमाअ़त की मौजूदगी की वजह यह बयान की है कि वे उन लोगों के लिये जिन पर हद जारी की जा रही है, मग़फ़िरत व बख़्शिश और

Maktaba E Ashraf

रहमत की दुआ करें।

اَلزَّانِىْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ز وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ج وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ○

ज़ानी निकाह भी किसी के साथ नहीं करता सिवाय ज़ानिया या मुश्रिका के, और (इसी तरह) ज़ानिया के साथ भी और कोई निकाह नहीं करता सिवाय ज़ानी या मुश्रिक के, और यह (यानी ऐसा निकाह) मुसलमानों पर हराम (और गुनाह को वाजिब करने वाला) किया गया है। (3)

एक फ़ितरी बात

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि ज़ानी से ज़िना पर रज़ामन्द वही औ़रत होती है जो बदकार हो या मुश्रिका हो, कि वह इस बुरे काम को ऐब ही नहीं समझती। ऐसी बदकार औ़रत से वही मर्द मिलता है जो उसी जैसा बद-चलन (बुरे आचरण वाला) हो या मुश्रिक हो, जो उसके हराम होने का क़ायल ही न हो। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सही सनद के साथ मन्क़ूल है कि यहाँ निकाह से मुराद जिमा (सोहबत और संभोग) है। यानी ज़ानिया औ़रत से ज़िना करने वाला ज़ानी या मुश्रिक मर्द ही होता है, यही क़ौल मुजाहिद, इक्रिमा, सईद बिन जुबैर, उरवा बिन जुबैर, ज़ह्हाक, मिकहोल, मुक़ातिल बिन हय्यान और बहुत से बुज़ुर्ग मुफ़स्सिरीन से नक़ल किया गया है। मोमिनों पर यह हराम है, यानी ज़िना करना और ज़ानिया औ़रतों से निकाह करना या आबरू वाली और पाकदामन औ़रतों को ऐसे ज़ानियों के निकाह में देना। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि इस आयत से मुराद यह है कि ज़िना मुसलमानों पर हराम है। क़तादा रह. वग़ैरह से नक़ल है कि बदकार औ़रतों से निकाह करना मुसलमानों पर हराम है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ.

यानी मुसलमानों को जिन औ़रतों से निकाह करना चाहिये उनमें ये तीनों औसाफ़ (गुण) होने चाहियें- वे पाकदामन हों, वे बदकार न हों, न छुप-लुक कर बुरे लोगों से मेल-मिलाप करने वाली हों। यही तीनों वस्फ़ (ख़ूबियाँ) मर्दों में होने भी बयान फ़रमाये गये हैं। इसलिये इमाम अहमद रह. का फ़रमान है कि नेक और पाकदामन मुसलमान मर्द का निकाह बदकार औ़रत से सही नहीं होता जब तक कि वह तौबा न कर ले, हाँ तौबा के बाद निकाह करना दुरुस्त है। इसी तरह भोली-भाली पाकदामन आबरू वाली औ़रतों का निकाह ज़ानी और बदकार लोगों से आयोजित ही नहीं होता जब तक कि वह सच्चे दिल से अपने इस नापाक फ़ेल से तौबा न कर ले। क्योंकि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि यह मोमिनों पर हराम कर दिया गया है।

एक शख़्स ने उम्मे महज़ूल नाम की एक बदकार औ़रत से निकाह कर लेने की इजाज़त हुज़ूरे पाक सल्ल. से तलब की तो आपने यही आयत पढ़कर सुनाई। एक दूसरी रिवायत में है कि उसके इजाज़त माँगने पर ही यह आयत उतरी।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि एक सहाबी जिनका नाम मुर्सद बिन अबी मुर्सद था, यह मक्का से मुसलमान क़ैदियों को उठा लाया करते थे और मदीने में पहुँचा दिया करते थे। अ़नाक़ नाम की एक बदकार औ़रत

मक्के में रहा करती थी, जाहिलीयत के ज़माने में उनका इस औरत से ताल्लुक़ था। हज़रत मुर्सद रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं एक क़ैदी को लाने के लिये मक्का शरीफ़ गया। मैं एक बाग़ की दीवार के नीचे पहुँच गया, रात का वक़्त था, चाँदनी फैली हुई थी। इत्तिफ़ाक़ से उनाक़ आ पहुँची और मुझे देख लिया, बल्कि पहचान भी लिया और आवाज़ देकर कहा क्या मुर्सद है? मैंने कहा हाँ मुर्सद हूँ। उसने बड़ी ख़ुशी ज़ाहिर की और कहने लगी चलो रात मेरे यहाँ गुज़ारना। मैंने कहा उनाक़! अल्लाह तआ़ला ने ज़िना हराम कर दिया है। जब वह मायूस हो गयी तो उसने मुझे पकड़वाने के लिये शोर मचाना शुरू किया- ऐ ख़ेमे वालो! होशियार हो जाओ देखो चोर आ गया है। यही है जो तुम्हारे क़ैदियों को चुराकर ले जाया करता है। लोगों में जाग हो गयी और आठ आदमी मेरे पकड़ने को मेरे पीछे दौड़े। मैं मुट्ठियाँ बन्द करके ख़न्दक़ के रास्ते भागा और एक ग़ार (गुफा) में जा छुपा (मुट्ठी बन्द करके भागने में तेज़ी आती है)। ये लोग मेरे पीछे ही ग़ार पर आ पहुँचे, लेकिन मैं उन्हें न मिला।

ये वहीं पेशाब करने को बैठे, अल्लाह की क़सम उनका पेशाब मेरे सर पर आ रहा था लेकिन अल्लाह ने उन्हें अन्धा कर दिया, उनकी निगाहें मुझ पर न पड़ीं। इधर-उधर ढूँढकर वापस चले गये। मैंने कुछ देर गुज़ारकर जब यक़ीन कर लिया कि वे फिर सो गये होंगे तो यहाँ से निकला फिर मक्के की राह ली और वहाँ पहुँचकर उस मुसलमान क़ैदी को अपनी कमर पर चढ़ाया और वहाँ से ले भागा। चूँकि वह भारी बदन के थे, मैं जब अज़्ख़र (एक जगह) में पहुँचा तो थक गया, मैंने उन्हें कमर से उतार कर उनके बन्धन खोल दिये और आज़ाद कर दिया। अब उठाता चलाता मदीने पहुँच गया।

चूँकि उनाक़ की मुहब्बत मेरे दिल में थी, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से इजाज़त चाही कि मैं उससे निकाह कर लूँ। आप ख़ामोश हो रहे, मैंने दोबारा यही सवाल किया फिर भी आप ख़ामोश रहे और यह आयत उतरी। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ मुर्सद! ज़ानिया से निकाह ज़ानी या मुश्रिक ही करता है, तू उससे निकाह का इरादा छोड़ दे। इमाम अबू दाऊद और नसाई भी इसे अपनी सुनन की किताबुन्निकाह में लाये हैं। अबू दाऊद वग़ैरह में है कि ज़ानी जिस पर कोड़े लग चुके हों, वह अपने जैसे से ही निकाह कर सकता है। मुस्नद इमाम अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं, तीन क़िस्म के लोग हैं जो जन्नत में न जायेंगे और जिनकी तरफ़ अल्लाह तआ़ला रहमत से न देखेगा।

1. माँ-बाप का नाफ़रमान।

2. वे औरतें जो मर्दों की मुशाबहत करें (यानी रहन-सहन, लिबास और तौर-तरीक़ में मर्दों जैसी बनें)।

3. और "दय्यूस" (यानी भड़वा, जो अपने घर की औरतों को बुरे काम पर लगाये, या उनकी बदकारी पर रज़ामन्द हो)।

और तीन क़िस्म के लोग हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआ़ला रहमत की नज़र से न देखेगा।

1. माँ-बाप का नाफ़रमान।

2. हमेशा का नशे का आ़दी (यानी जो आ़दी न हो मुजरिम वह भी है, लेकिन यह ज़्यादा बड़ा मुजरिम है और अल्लाह की नज़र में नापसन्दीदा है)।

3. और राहे ख़ुदा में देकर एहसान जताने वाला।

मुस्नद में है, आप फ़रमाते हैं कि तीन क़िस्म के लोग हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला ने जन्नत हराम कर दी है।

Maktab-E-Ashraf

1. हमेशा का शराबी।
2. माँ-बाप का नाफ़रमान।
3. और अपने घर वालों में ख़बासत (बदकारी) को बरक़रार रखने वाला।

अबू दाऊद तियालिसी में है कि कोई दैयूस (भड़वा) जन्नत में नहीं जायेगा। इब्ने माजा में है कि जो शख़्स अल्लाह तआला से पाक साफ़ होकर मिलना चाहता है उसे चाहिये कि पाकदामन औरतों से निकाह करे, जो बाँदियाँ न हों। इसकी सनद कमज़ोर है। "दैयूस" कहते हैं बेग़ैरत शख़्स को। नसाई में है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया और कहने लगा कि मुझे अपनी बीवी से बहुत ही मुहब्बत है, लेकिन उसमें यह आदत है कि किसी हाथ को वापस नहीं लौटाती (यानी जो भी उससे बदकारी का ताल्लुक़ क़ायम करना चाहता है तो उसकी बात मान लेती है)। आपने फ़रमाया उसे तलाक़ दे दे। उसने कहा मुझे तो उसके बग़ैर सब्र नहीं आयेगा। आपने फ़रमाया- फिर जा उससे फ़ायदा उठा। लेकिन यह हदीस साबित नहीं। इसका रावी अ़ब्दुल-करीम मज़बूत नहीं। इसका दूसरा रावी हारून है जो इससे क़वी (मज़बूत) है मगर उनकी रिवायत मुर्सल है और यही ठीक भी है। यही रिवायत मुस्नद में है लेकिन इमाम नसाई रह. का फ़ैसला यह है कि इसको मुस्नद करना ग़लती और चूक है और सही यही है कि यह मुर्सल है। यह हदीस और किताबों में दूसरी सनदों से भी मौजूद है। इमाम अहमद रह. तो इसे मुन्कर कहते हैं। इमाम इब्ने क़ुतैबा इसकी तावील करते हैं कि यह जो कहा है कि वह किसी छूने वाले के हाथ को लौटाती नहीं, इससे मुराद सख़ावत (दान करना) है, कि वह किसी साईल (माँगने वाले और हाथ बढ़ाने वाले) से इनकार ही नहीं करती। लेकिन अगर यही मतलब होता तो हदीस में बजाय "लामिसिन्" लफ़्ज़ के "मुल्तमिस" का लफ़्ज़ होना चाहिये था। यह भी कहा गया है कि उसकी ख़सलत ऐसी मालूम होती थी, न यह कि वह बुराई करती थी, क्योंकि अगर यही ऐब उसमें होता तो फिर हुज़ूर सल्ल. उस सहाबी को उसके रखने की इजाज़त न देते क्योंकि यह तो दैयूसी है, जिस पर सख़्त वईद (डाँट और सज़ा की धमकी) आयी है। हाँ यह मुम्किन है कि ख़ानदान को उसकी आदत ऐसी लगी हो और इसका अन्देशा ज़ाहिर किया हो तो आपने मश्विरा दिया कि फिर तलाक़ दे दो, लेकिन जब उसने कहा कि मुझे उससे बहुत ही मुहब्बत है तो आप सल्ल. ने रखने की इजाज़त दे दी। क्योंकि मुहब्बत तो मौजूद है, उसे सिर्फ़ एक ख़तरे के वहम पर तोड़ देना मुम्किन है कोई बुराई पैदा कर दे। वल्लाहु आलम।

ग़र्ज़ कि ज़ानिया औरतों से पाकदामन मुसलमानों को निकाह मना है, हाँ जब वे तौबा कर लें तो निकाह हलाल है। चुनाँचे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से एक शख़्स ने पूछा कि एक ऐसी ही ग़लत औरत से मेरा बुरा ताल्लुक़ था लेकिन अब अल्लाह तआ़ला ने हमें तौबा की तौफ़ीक़ दी तो मैं चाहता हूँ कि उससे निकाह कर लूँ। लेकिन बाज़ लोग कहते हैं कि ज़ानी ही ज़ानिया और मुश्रिका से निकाह करते हैं। आपने फ़रमाया कि नहीं! इस आयत का यह मतलब नहीं, तुम उससे अब निकाह कर सकते हो। जाओ अगर कोई गुनाह हो तो मेरे ज़िम्मे। हज़रत यहया से जब यह ज़िक्र आया तो आपने फ़रमाया कि यह आयत इसके बाद उतरने वाली आयत से मन्सूख़ है। जो यह है:

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ............الخ

और तुम में (यानी आज़ाद लोगों में) जो बिना निकाह के हों तुम उनका निकाह कर दिया करो, और इसी तरह तुम्हारे गुलामों और बाँदियों में से जो निकाह के लायक़ हो उसका भी....... (सूरः नूर आयत 32)

इमाम शाफ़ई रह. भी यही फ़रमाते हैं।

और जो लोग (ज़िना की) तोहमत लगाएँ पाकदामन औरतों को, और फिर (अपने दावे पर) चार गवाह न ला सकें तो ऐसे लोगों को अस्सी दुर्रे लगाओ, और उनकी कोई गवाही कभी क़बूल मत करो, (यह तो दुनिया में उनकी सज़ा हुई) और ये लोग (आख़िरत में भी सज़ा के मुस्तहिक़ हैं क्योंकि) फ़ासिक़ हैं। (4) लेकिन जो लोग इस (तोहमत लगाने) के बाद (ख़ुदा के सामने) तौबा कर लें और अपनी (हालत की) इस्लाह कर लें सो (इस हालत में) अल्लाह तआ़ला ज़रूर मग़फ़िरत करने वाला, रहमत करने वाला है। (5)	وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

पाकदामन औरतों पर बदकारी की तोहमत लगाना

जो लोग किसी औरत पर या किसी मर्द पर ज़िना की तोहमत लगायें और सुबूत न दे सकें तो अस्सी कोड़े लगाये जायेंगे। हाँ अगर गवाही पेश कर दें तो हद (सज़ा) से बच जायेंगे। और जिन पर जुर्म साबित हुआ है उन पर हद (सज़ा) जारी की जायेगी। अगर गवाही और सुबूत पेश न कर सके तो अस्सी कोड़े भी लगेंगे और आगे के लिये हमेशा उनकी गवाही ग़ैर-मक़बूल (अस्वीकारीय) रहेगी, और वे आ़दिल नहीं बल्कि फ़ासिक़ समझे जायेंगे।

इस आयत में जिन लोगों को इस हुक्म से ख़ास और अलग कर दिया है तो बाज़ तो कहते हैं कि यह अलग करना सिर्फ़ फ़ासिक़ (गुनाहगार और ग़ैर-मोतबर) होने से है, यानी तौबा करने के बाद वे फ़ासिक़ नहीं रहेंगे। बाज़ कहते हैं कि न फ़ासिक़ रहेंगे न गवाही में ग़ैर-मोतबर, बल्कि फिर उनकी गवाही भी ली जायेगी। हाँ जो हद (सज़ा) है वह तौबा से किसी तरह हट नहीं सकती। इमाम मालिक, अहमद और शाफ़ई रह. का मज़हब तो यह है कि तौबा से शहादत (गवाही) का मर्दूद (अस्वीकारीय) होना और उन पर से गुनाहगार व बुरे होने का ठप्पा हट जायेगा। हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. और बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त का यही मज़हब है, लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रह. फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ फ़िस्क़ (उनके बुरा होने का ठप्पा) दूर हो जायेगा लेकिन शहादत (गवाही) क़बूल नहीं हो सकती। बाज़ और लोग भी यही कहते हैं। इमाम शाबी और ज़ह्हाक कहते हैं कि अगर उसने इस बात का इक़रार कर लिया कि उसने बोहतान बाँधा (यानी झूठा इल्ज़ाम लगाया) था और फिर तौबा भी पूरी तरह की, तो उसकी शहादत (गवाही) उसके बाद मक़बूल है। वल्लाहु आलम।

Maktab E Ashraf

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ○ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ○ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ○ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ○ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ○	और जो लोग अपनी (निकाह की हुई) बीवियों को (ज़िना की) तोहमत लगाएँ और उनके पास सिवाय अपने ही (दावे के) और कोई गवाह न हों (जिनको संख्या में चार होना चाहिए) तो उनकी गवाही (जो कि रोकने को ख़त्म करने वाली या तोहमत की सज़ा हो) यही है कि चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह कह दे कि बेशक मैं सच्चा हूँ (6) और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझपर ख़ुदा की लानत हो अगर मैं झूठा हूँ। (7) और (उसके बाद उस औरत से (रोकने की या ज़िना की) सज़ा इस तरह टल सकती है कि वह चार बार क़सम खाकर कहे कि बेशक यह मर्द झूठा है (8) और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझपर ख़ुदा का ग़ज़ब हो अगर यह सच्चा हो। (9) और (ऐ मर्दो और औरतो!) अगर यह बात न होती कि तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसका करम है और यह कि अल्लाह तआ़ला तौबा क़बूल करने वाला (और) हिक्मत वाला है तो तुम बड़ी दिक़्क़तों और परेशानियों में पड़ जाते। (10)

ع 7

लिआ़न और उसके अहकाम

इन आयतों में अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन ने उन शौहरों के लिये जो अपनी बीवियों के बारे में बुरी बात कह दें (यानी उन पर बदकारी का इल्ज़ाम लगायें) छुटकारे की सूरत बयान फ़रमाई है। कि जब वे गवाह पेश न कर सकें तो लिआ़न कर लें। उसकी सूरत यह है कि इमाम (मुसलमानों के हाकिम) के सामने आकर वह अपना बयान दे, जब शहादत (गवाही) न पेश कर सके तो हाकिम उससे चार गवाहों के क़ायम-मक़ाम (के स्थान पर) चार क़समें लेगा, और यह क़सम खाकर कहेगा कि वह सच्चा है, जो बात कहता है वह हक़ है। पाँचवीं बार कहेगा कि अगर वह झूठा हो तो उस पर अल्लाह की लानत। इतना कहते ही इमाम शाफ़ई रह. वग़ैरह के नज़दीक उसकी औरत उससे तलाक़-ए-बायना पा जायेगी और हमेशा के लिये हराम हो जायेगी। यह मेहर अदा कर देगा और उस औरत पर ज़िना की हद (सज़ा) साबित हो जायेगी। लेकिन अगर वह औरत भी सामने क़सम खाये तो हद उस पर से हट जायेगी। यह भी चार मर्तबा हलफ़िया बयान देगी कि उसका शौहर झूठा है और पाँचवीं बार कहेगी कि अगर वह सच्चा हो तो उस पर (यानी औरत पर) अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो।

इस बारीकी को भी ख़्याल में रखिये कि औरत के लिये "ग़ज़ब" का लफ़्ज़ कहा गया है। इसलिये कि

Maktab E Ashraf

उमूमन कोई मर्द नहीं चाहता कि वह अपनी बीवी को ख़्वाह-मख़्वाह तोहमत लगाये और ख़ुद को बल्कि अपने कुनबे को भी बदनाम करे। आम तौर पर वह सच्चा ही होता है और अपने सच्चा होने की बिना पर ही वह माज़ूर समझा जाता है। इसलिये पाँचवीं बार उससे यह कहलवाया गया है कि अगर उसका ख़ाविन्द (शौहर) सच्चा हो तो उस पर (यानी मेरे ऊपर) ख़ुदा का ग़ज़ब आये। फिर ग़ज़ब वाले वे होते हैं जो हक़ को जानकर फिर उससे मुँह फेरें।

आगे फ़रमाता है कि अगर अल्लाह का फ़ज़्ल व रहम तुम पर न होता तो तुम पर ऐसी आसानियाँ न होतीं, बल्कि तुम पर मशक़्क़त उतरती। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाया करता है चाहे वे कैसे ही गुनाह हों और चाहे किसी वक़्त भी तौबा हो। वह हकीम है अपनी शरीअ़त (दीन) में, अपने हुक्मों में, अपनी मना की हुई बातों में।

इस आयत के बारे में जो रिवायतें हैं वे भी सुन लीजिए। मुस्नद अहमद में है कि जब यह आयत उतरी तो हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो अन्सार के सरदार हैं, कहने लगे या रसूलल्लाह! क्या यह आयत इसी तरह उतारी गयी है? आपने फ़रमाया अन्सारियो सुनते नहीं हो? यह तुम्हारे सरदार क्या कह रहे हैं? उन्होंने कहा- या रसूलल्लाह! आप माफ़ फ़रमाईये, यह सिर्फ़ उनकी बहुत ज़्यादा बढ़ी हुई ग़ैरत का कारण है, और कुछ नहीं। उनकी ग़ैरत का यह हाल है कि उन्हें कोई अपनी बेटी देने की जुर्रत नहीं करता। हज़रत सअ़द ने फ़रमाया- या रसूलल्लाह! यह तो मेरा ईमान है कि यह हक़ है लेकिन मुझे हैरत हो रही है कि अगर मैं किसी को उसके पाँव पकड़े हुए देख लूँ तो भी मैं उसे कुछ नहीं कह सकता, यहाँ तक कि मैं चार गवाह लाऊँ तब तक तो वह अपना काम पूरा कर लेगा। इस बात को ज़रा सी देर हुई होगी कि हज़रत हिलाल बिन उमैया रज़ि. आये, यह उन तीन शख़्सों में से हैं जिनकी तौबा क़बूल हुई थी। यह अपनी ज़मीन से (खेती/जंगल से) इशा के वक़्त अपने घर आये तो देखा कि घर में एक ग़ैर-मर्द है। ख़ुद आपने अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से उसकी बातें सुनीं। सुबह ही सुबह रसूलुल्लाह सल्ल. से ज़िक्र किया, आपको बहुत बुरा मालूम हुआ और यह बात तबीयत पर बहुत ही भारी गुज़री। अन्सार सब जमा हो गये और कहने लगे कि सअ़द बिन उबादा के क़ौल की वजह से हम इस आफ़त में मुब्तला किये गये हैं। मगर इससे पहले कि रसूलुल्लाह सल्ल. हिलाल बिन उमैया पर तोहमत की हद (सज़ा) लगायें और उसकी शहादत (गवाही) को मर्दूद ठहरायें, हज़रत हिलाल रज़ि. कहने लगे अल्लाह की क़सम मैं सच्चा हूँ और मुझे ख़ुदा तआ़ला से उम्मीद है कि वह मेरा छुटकारा (यानी मेरा सच्चा होना ज़ाहिर) कर देगा।

कहने लगे या रसूलल्लाह! मैं देखता हूँ कि मेरा कलाम आपकी तबीयत पर बहुत भारी गुज़रा। या रसूलल्लाह! मुझे ख़ुदा की क़सम है मैं सच्चा हूँ अल्लाह ख़ूब जानता है, लेकिन चूँकि गवाह पेश नहीं कर सकते थे क़रीब था कि रसूले करीम सल्ल. उन्हें हद मारने को फ़रमायें इतने में 'वही' उतरनी शुरू हुई। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम आपके चेहरे को देखकर निशानी से पहचान गये कि इस वक़्त 'वही' नाज़िल हो रही है। जब 'वही' उतर चुकी तो आपने हज़रत हिलाल की तरफ़ देखकर फ़रमाया ऐ हिलाल! ख़ुश हो जाओ, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये कुशादगी और निजात नाज़िल फ़रमा दी। हज़रत हिलाल रज़ि. कहने लगे अल्लाह का शुक्र है, मुझे ख़ुदा-ए-रहीम की ज़ात से यही उम्मीद थी। फिर आपने हज़रत हिलाल रज़ि. की बीवी को बुलवाया और उन दोनों के सामने "आयते मुलाअ़ना" पढ़कर सुनाई और फ़रमाया देखो आख़िरत का अ़ज़ाब दुनिया के अ़ज़ाब से सख़्त है। हिलाल फ़रमाने लगे या रसूलल्लाह! मैं बिल्कुल सच्चा हूँ। उस औरत ने कहा कि हुज़ूर यह झूठ कह रहा है। आपने हुक्म दिया कि अच्छा लिआ़न करो। हिलाल

से कहा गया कि इस तरह चार क़समें खाओ और पाँचवीं दफ़ा यूँ कहो। हज़रत हिलाल रज़ि. जब चार बार कह चुके और पाँचवीं बार की नौबत आयी तो आपसे कहा गया कि हिलाल अल्लाह से डर जा, दुनिया की सज़ा आख़िरत के अ़ज़ाब से बहुत हल्की है। यह पाँचवीं बार तेरी ज़बान से निकलते ही तुझ पर अ़ज़ाब वाजिब हो जायेगा। आपने कहा या रसूलल्लाह! क़सम ख़ुदा की जिस तरह अल्लाह ने मुझे दुनिया की सज़ा से मेरी सच्चाई की वजह से बचाया इसी तरह आख़िरत के अ़ज़ाब से भी मेरी सच्चाई की वजह से मेरा रब मुझे महफ़ूज़ रखेगा। फिर पाँचवीं दफ़ा के अलफ़ाज़ भी ज़बान से अदा कर दिये।

अब उस औ़रत से कहा गया कि तू चार दफ़ा क़समें खा कि यह झूठा है। जब वह चारों क़समें खा चुकी तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने उसे पाँचवीं दफ़ा के इस कलिमे के कहने से रोका और जिस तरह हज़रत हिलाल रज़ि. को समझाया था उससे भी फ़रमाया, तो उसे कुछ ख़्याल पैदा हो गया, रुकी झिझकी और ज़बान को संभाला। क़रीब था कि अपने क़ुसूर का इक़रार कर ले लेकिन फिर कहने लगी कि मैं हमेशा के लिये अपनी क़ौम को रुस्वा नहीं करूँगी। फिर कह दिया कि अगर उसका (यानी मेरा) ख़ाविन्द सच्चा हो तो उस पर (यानी मेरे ऊपर) ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो। पस हुज़ूरे पाक सल्ल. ने उन दोनों में जुदाई करा दी और हुक्म दे दिया कि इसके जो औलाद हो वह हिलाल की तरफ़ मन्सूब न की जाये, न उसे हराम की औलाद कही जाये। जो उस बच्चे को हरामी कहे या इस औ़रत पर तोहमत रखे वह हद लगाया जायेगा। यह भी फ़ैसला कर दिया कि इसका कोई नान व नफ़क़ा (यानी खाने-रहने वग़ैरह का ख़र्च) इसके ख़ाविन्द (शौहर) पर नहीं, क्योंकि जुदाई कर दी गयी है। न तलाक़ हुई है न ख़ाविन्द का इन्तिक़ाल हुआ है। और फ़रमाया कि देखो अगर यह बच्चा सुर्ख़ सफ़ेद रंग मोटी पिंडलियों वाला पैदा हो तो इसे हिलाल का समझना और अगर वह पतली पिंडलियों वाला स्याही माईल रंग का हुआ तो उस शख़्स का समझना जिसके साथ इस पर इल्ज़ाम क़ायम किया गया है।

जब बच्चा हुआ तो लोगों ने देखा कि वह उस बुरी सिफ़त पर था जो इल्ज़ाम के सही होने की निशानी थी। उस वक़्त रसूले ख़ुदा सल्ल. ने फ़रमाया अगर यह मसला क़समों पर तयशुदा न होता तो मैं उस औ़रत को निश्चित तौर पर हद (सज़ा) लगाता। यह बच्चा बड़ा होकर मिस्र का वाली (हाकिम) बना था और उनकी निस्बत उनकी माँ की तरफ़ थी। (अबू दाऊद)

इस हदीस के और भी बहुत से शाहिद हैं (यानी जो इसके मज़मून को सही साबित करते हैं)। बुख़ारी शरीफ़ में भी यह हदीस है। उसमें है कि जिस वक़्त शुरैक बिन सहमा को तोहमत लगाई गयी थी और हुज़ूर सल्ल. के सामने जब हज़रत हिलाल ने ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया था गवाह पेश करो, वरना तुम्हारी पीठ पर हद (तोहमत के कोड़े) लगेगी। हज़रत हिलाल रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! एक शख़्स अपनी बीवी को बुरे काम पर देखकर गवाह ढूँढने जायेगा? लेकिन हुज़ूरे पाक सल्ल. यही फ़रमाते रहे। उसमें यह भी है कि दोनों के सामने आपने यह भी फ़रमाया कि ख़ुदा ख़ूब जानता है कि तुम दोनों में से एक ज़रूर झूठा है। कहा कि तुममें से कोई तौबा करके अपने झूठ से हटता है? एक और रिवायत में है कि पाँचवीं दफ़ा आपने किसी से कहा कि इसका मुँह बन्द कर दो, फिर उसे नसीहत की और फ़रमाया कि ख़ुदा की लानत से हर चीज़ हल्की है। इसी तरह उस औ़रत के साथ किया गया.........।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि लिआ़न करने वाले मर्द व औ़रत के बारे में मुझसे मालूम किया गया कि क्या उनमें जुदाई करा दी जाये? यह वाक़िआ है हज़रत इब्ने जुबैर रज़ि. की अमीरी के दौर का, मुझसे इसका जवाब कुछ बन न पड़ा तो मैं अपने मकान से चलकर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर की

Maktab E Ashraf

मन्ज़िल (मकान) पर आया और उनसे यही मसला पूछा तो आपने फ़रमाया- सुब्हानल्लाह! सबसे पहले यह बात फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ ने मालूम की थी कि या रसूलल्लाह! कोई शख़्स अपनी औरत को किसी बुरे काम पर पाये तो अगर ज़बान से निकाले तो भी बेशर्मी की बात है, और अगर ख़ामोश रहे तो भी बड़ी बेग़ैरती की ख़ामोशी है। आप सुनकर ख़ामोश हो रहे, फिर वह आया और कहने लगा हुज़ूर! मैंने जो सवाल जनाब से किया था अफ़सोस वही वाक़िआ मेरे यहाँ पेश आया। अल्लाह तआ़ला ने सूरः नूर की यह आयतें नाज़िल फ़रमायीं। आपने दोनों को पास बुलाकर एक-एक को अलग-अलग नसीहत की, बहुत कुछ समझाया लेकिन हर एक ने अपना सच्चा होना ज़ाहिर किया। फिर दोनों ने आयत के मुताबिक़ क़समें खायीं और आपने उनमें जुदाई करा दी।

एक और रिवायत में है कि मैं शाम के वक़्त जुमा के दिन मस्जिद में बैठा हुआ था कि एक अन्सारी ने कहा जबकि कोई शख़्स अपनी बीवी के साथ किसी शख़्स को पाये तो अगर वह उसे मार डाले तो तुम उसे मार डालोगे और अगर ज़बान से निकाले तो तुम गवाही मौजूद न होने की वजह से उसी को कोड़े लगाओगे? और अगर यह अन्धेर देखकर ख़ामोश होकर बैठ जाये तो यह बड़ी बेग़ैरती और बड़ी बेहयाई है। अल्लाह की क़सम अगर मैं सुबह तक ज़िन्दा रहा तो हुज़ूरे पाक सल्ल. से इसके बारे में मालूम करूँगा। चुनाँचे उसने इन्हीं लफ़्ज़ों में हुज़ूरे पाक सल्ल. से पूछा और दुआ की कि अल्लाह इसका फ़ैसला नाज़िल फ़रमा। पस लिआ़न की आयत उतरी और सबसे पहले यही शख़्स उसमें मुब्तला हुआ। एक और रिवायत में है कि हज़रत उवैमर ने हज़रत आ़सिम बिन अ़दी से कहा कि ज़रा जाकर रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम करो कि अगर कोई शख़्स अपनी बीवी के साथ किसी को पाये तो क्या करे? ऐसा तो नहीं कि वह क़त्ल करे तो उसे भी क़त्ल किया जायेगा? चुनाँचे आ़सिम ने रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम किया तो रसूलुल्लाह सल्ल. बहुत नाराज़ हुए। जब उवैमर रज़ि. आ़सिम से मिले तो पूछा कि कहो तुमने हुज़ूर सल्ल. से मालूम किया? और आपने क्या जवाब दिया? आ़सिम ने कहा तुमने मुझसे कोई अच्छी ख़िदमत नहीं ली। अफ़सोस! मेरे इस सवाल पर रसूलुल्लाह सल्ल. ने बुरा माना। हज़रत उवैमर रज़ि. ने कहा कि अच्छा मैं ख़ुद जाकर आपसे मालूम करता हूँ। यहाँ आये तो हुक्म नाज़िल हो चुका था। चुनाँचे लिआ़न के बाद उवैमर रज़ि. ने कहा कि अब अगर मैं उसे अपने घर ले जाऊँ तो गोया मैंने उस पर झूठ की तोहमत बाँधी थी। पस आपके हुक्म से पहले ही उस औरत को जुदा कर दिया। फिर लिआ़न करने वालों का यही तरीक़ा मुक़र्रर हो गया।

एक और रिवायत में है कि यह औरत हामिला (गर्भवती) थी और उसके शौहर ने इससे इनकार किया कि यह हमल (गर्भ) उसका है। इसलिये यह बच्चा अपनी माँ की तरफ़ मन्सूब होता रहा। फिर सुन्नत तरीक़ा यूँ जारी हुआ कि यह अपनी माँ का वारिस होगा और माँ उसकी वारिस होगी। एक मुर्सल और ग़रीब हदीस में है कि आपने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर रज़ि. से पूछा कि अगर तुम्हारे यहाँ ऐसी वारदात हो तो क्या करोगे? दोनों ने कहा गर्दन उड़ा देंगे। ऐसे वक़्त अनदेखी वही कर सकते हैं जो दैयूस हों। इस पर ये आयतें उतरीं। एक रिवायत में है कि सबसे पहला लिआ़न मुसलमानों में हिलाल बिन उमैया रज़ि. और उनकी बीवी के बीच हुआ था।

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ	जिन लोगों ने यह तूफ़ान (हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में) बर्पा किया है (ऐ मुसलमानो!) वह तुम्हारे में का एक (छोटा-सा) गिरोह है, तुम इस (तूफ़ान बन्दी) को

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ○	अपने हक़ में बुरा न समझो बल्कि यह (अन्जाम के एतिबार से) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, उनमें से हर शख़्स को जितना किसी ने कुछ किया था गुनाह हुआ। और उनमें जिसने उस (तूफ़ान) में सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसको सख़्त सज़ा होगी। (11)

Maktaba Ashraf

मुनाफ़िक़ों की बकवास और नबी-ए-पाक के घराने पर डायरेक्ट हमला

इस आयत से लेकर दस आयतों तक उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में नाज़िल हुई हैं जबकि मुनाफ़िक़ों ने आप पर बोहतान बाँधा था। जिस पर ख़ुदा तआ़ला को अपने रसूल से मुहब्बत व ताल्लुक़ की बिना पर ग़ैरत आयी और ये आयतें नाज़िल फ़रमायीं। ताकि रसूलुल्लाह सल्ल. की आबरू पर हर्फ़ न आये। इन बोहतान लगाने वालों की एक पार्टी थी। इस लानती काम में सबसे आगे-आगे अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था जो तमाम मुनाफ़िक़ों का सरदार था, उसी बेईमान ने एक एक कान में बना-बनाकर और मिर्च-मसाला लगाकर ये बातें ख़ूब गढ़-गढ़कर पहुँचाई थीं। यहाँ तक कि बाज़ मुसलमानों की ज़बान भी खुलने लगी थी और यह चर्चा और काना-फूसी क़रीब-क़रीब महीने भर तक चलती रही, यहाँ तक क़ुरआने करीम की ये आयतें नाज़िल हुयीं।

इस वाक़िए का पूरा बयान सही हदीसों में मौजूद है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. की आ़दत थी कि सफ़र में जाने के वक़्त आप अपनी बीवियों के नाम का क़ुर्आ डालते और जिसका नाम निकलता उसे अपने साथ ले जाते। चुनाँचे एक ग़ज़्वे (दीनी लड़ाई) के मौक़े पर मेरा नाम निकला, मैं आपके साथ चली। यह वाक़िआ़ पर्दे की आयतें उतरने के बाद का है। मैं अपने होदज (ऊँट के ऊपर रखे कजावे) में बैठी रहती और जब क़ाफ़िला कहीं उतरता तो मेरा होदज उतार लिया जाता, मैं उसी में बैठी रहती। जब क़ाफ़िला चलता तो यूँ ही होदज रख दिया जाता। हम गये हुज़ूरे पाक सल्ल. ग़ज़्वे (लड़ाई) से फ़ारिग़ होकर वापस लौटे, मदीने के क़रीब आ गये, रात को चलने की आवाज़ लगाई गयी। मैं क़ज़ा-ए-हाजत (शौच की ज़रूरत) के लिये निकली और लश्कर के पड़ाव से दूर जाकर मैंने शौच (पाख़ाने) की ज़रूरत पूरी की। फिर वापस लौटी, लश्कर के पड़ाव के क़रीब आकर मैंने अपने गले को टटोला तो हार न पाया। मैं वापस उसके ढूँढने के लिये चली और तलाश करती रही, यहाँ तक कि लश्कर ने कूच कर दिया। जो लोग मेरा होदज उठाते थे उन्होंने यह समझकर कि मैं आ़दत के अनुसार अन्दर ही हूँ, होदज उठाकर ऊपर रख दिया और चल पड़े। यह भी याद रहे कि उस वक़्त औ़रतें न कुछ ऐसा खाती थीं न वे भारी बदन की बोझल थीं। इसलिये मेरे होदज के उठाने वालों को मेरे होने या न होने का बिल्कुल भी पता न चला और मैं उस वक़्त थोड़ी उम्र की तो थी ही।

ग़र्ज़ कि बहुत देर के बाद मुझे मेरा हार मिला। यहाँ जो मैं पहुँची तो किसी भी आदमी का नाम व निशान न था, न कोई पुकारने वाला न जवाब देने वाला। मैं अपने निशान के मुताबिक़ वहीं पहुँची जहाँ

हमारा ऊँट बैठाया गया था और वहीं इन्तिज़ार में बैठ गयी कि जब आगे चलकर मेरे न होने की ख़बर पायेंगे तो मुझे तलाश करने के लिये यहीं आयेंगे। मुझे बैठे-बैठे नींद आ गयी। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत सफ़वान बिन मुअ़त्तल सुलमी ज़कवानी जो लश्कर के पीछे रहते थे और पिछली रात को चले थे, सुबह के चाँदने में यहाँ पहुँच गये। एक सोते हुए आदमी को देखकर ख़्याल आना ही था, ग़ौर से देखा तो चूँकि पर्दे के हुक्म से पहले मुझे वह देखे हुए थे देखते ही पहचान गये और बुलन्द आवाज़ से उनकी ज़बान से "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न" निकला। उनकी आवाज़ सुनते ही मेरी आँख खुल गयी और मैं अपनी चादर से अपना मुँह ढाँपकर संभल बैठी। उन्होंने झट से अपने ऊँट को बैठाया और उसके हाथ पर अपना पाँव रखा मैं उठी और ऊँट पर सवार हो गयी। उन्होंने ऊँट को खड़ा कर दिया और भगाते हुए ले चले। क़सम ख़ुदा की न वह मुझसे कुछ बोले न मैंने उनसे कोई कलाम किया, न सिवाय "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न" के मैंने उनके मुँह से कोई कलिमा सुना।

दोपहर के क़रीब हम अपने क़ाफ़िले से मिल गये। बस इतनी सी बात का हलाक होने वालों (यानी जिनके मुक़द्दर में अपना मुँह काला करना और क़ियामत तक की ज़िल्लत और तबाही लिखी थी) ने बतंगड़ बना लिया। उनका सबसे बड़ा और बढ़-बढ़कर बातें बनाने वाला अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था। मदीना आते ही मैं बीमार पड़ गयी और महीने भर तक बीमारी में घर में रही, न मैंने कुछ सुना न किसी ने मुझसे कहा, जो कुछ चर्चा लोगों में हो रहा था मैं उससे बिल्कुल बेख़बर थी, अलबत्ता मेरे जी में यह ख़्याल रह-रहकर गुज़रता था कि रसूलुल्लाह की मुहब्बत व तवज्जोह में कमी की क्या वजह है? बीमारी में आ़म तौर पर जो शफ़क़त हुज़ूर को मेरे साथ होती थी इस बीमारी में मैं वह बात न पाती थी। इसलिये मुझे रंज तो बहुत था मगर कोई वजह मालूम न थी। पस हुज़ूरे पाक सल्ल. तशरीफ़ लाते, सलाम करते और मालूम फ़रमाते तबीयत कैसी है? और कोई बात न करते। इससे मुझे बड़ा सदमा होता, मगर बोहतान बाज़ों की तोहमत से मैं बिल्कुल ग़ाफ़िल (बेख़बर) थी।

अब सुनिये उस वक़्त तक घरों में पाख़ाने (शौचालय) बने हुए न थे और अ़रब वालों की पुरानी आ़दत के मुताबिक़ हम लोग मैदान में क़ज़ा-ए-हाजत (पाख़ाने की ज़रूरत पूरी करने) के लिये जाया करते थे। औ़रतें उमूमन रात को जाया करती थीं, घरों में पाख़ाने बनाने से आ़म तौर पर नफ़रत थी। आ़दत के अनुसार मैं उम्मे मिस्तह बिन्ते रहम बिन मुत्तलिब बिन अ़ब्दे मुनाफ़ के साथ क़ज़ा-ए-हाजत के लिये चली, उस वक़्त मैं बहुत ही कमज़ोर हो रही थी, यह उम्मे मिस्तह मेरे वालिद की ख़ाला थीं, उनकी वालिदा सख़र बिन आ़मिर की लड़की थीं, उनके लड़के का नाम मिस्तह बिन इबाद बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब था। जब हम वापस आने लगे तो हज़रत उम्मे मिस्तह का पाँव चादर के दामन में उलझा और बेसाख़्ता उनके मुँह से निकल गया कि मिस्तह बरबाद हो। मुझे बहुत बुरा लगा और मैंने कहा तुमने बहुत बुरा कलिमा बोला, तुम उसे गाली देती हो जिसने जंगे बदर में शिर्कत की। उस वक़्त उम्मे मिस्तह ने कहा भोली बीबी! आपको क्या मालूम, मैंने कहा क्या बात है? उन्होंने फ़रमाया वह भी उन लोगों में है जो आपको बदनाम करते फिरते हैं। मुझे सख़्त हैरत हुई, मैंने उनसे ज़िद की कि कम से कम मुझसे सारा वाक़िआ़ तो कहो। अब उन्होंने तोहमत लगाने वाले लोगों की तमाम कारस्तानियाँ मुझे सुनायीं। मेरे तो हाथों के तोते उड़ गये, रंज व ग़म का पहाड़ मुझ पर टूट पड़ा। मारे सदमे के मैं और बीमार हो गयी। बीमार तो पहले से ही थी, इस ख़बर ने तो निढाल कर दिया। ज्यों-त्यों करके घर पहुँची। अब सिर्फ़ यह ख़्याल था कि अपने मायके जाकर और अच्छी तरह मालूम तो कर लूँ कि क्या वाक़ई मेरे बारे में ऐसी अफ़वाह फैलाई गयी है? और क्या-क्या

मशहूर किया जा रहा है? इतने में रसूलुल्लाह सल्ल. मेरे पास आये, सलाम किया और मालूम फ़रमाया कि क्या हाल है? मैंने कहा अगर आप इजाज़त दें तो मैं अपने वालिद साहिब के यहाँ हो आऊँ? आपने इजाज़त दे दी, मैं यहाँ आयी, अपनी वालिदा से पूछा कि अम्मा जान! लोगों में क्या बातें फैल गयी हैं? उन्होंने फ़रमाया बेटी यह तो बहुत मामूली सी बात है, तुम अपना दिल इतना भारी न करो कि किसी शख़्स की अच्छी बीवी जो उसे महबूब हो और उसकी सौतनें भी हों वहाँ ऐसी बातों का खड़ा होना तो लाज़िमी बात है। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! क्या वाक़ई लोग मेरे बारे में ऐसी अफ़वाहें उड़ा रहे हैं? अब तो मुझे रंज व ग़म ने इस क़द्र घेरा कि बयान से बाहर है। उस वक़्त से जो रोना शुरू हुआ वल्लाह एक दम भर के लिये मेरे आँसू नहीं थमे। मैं सर डालकर रोती रही। किसका खाना पीना, किसका सोना बैठना, कहाँ की बातचीत, ग़म व रंज और रोना है और मैं हूँ।

सारी रात इसी हालत में गुज़ारी कि आँसू की लड़ी न थमे, दिन को भी यही हाल रहा। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने हज़रत अ़ली और उसामा बिन ज़ैद को बुलवाया, 'वही' में देर हुई। ख़ुदा की तरफ़ से आपको कोई बात मालूम न हुई थी, इसलिये आपने इन दोनों हज़रात से मश्विरा किया कि आप मुझे अलग कर दें या क्या करें? हज़रत उसामा ने तो साफ़ कहा कि या रसूलल्लाह! हम आपकी अहल (घराने और बीवी) में कोई बुराई नहीं जानते, हमारे दिल उनकी मुहब्बत व अ़ज़मत और शराफ़त की गवाही देने के लिये हाज़िर हैं। हाँ हज़रत अ़ली ने जवाब दिया कि या रसूलल्लाह! ख़ुदा की तरफ़ से आप पर कोई तंगी नहीं, औ़रतें उनके अ़लावा भी बहुत हैं। अगर आप घर की ख़ादिमा (काम करने वाली) से पूछें तो आपको सही वाक़िआ मालूम हो सकता है।

आपने उसी वक़्त घर की ख़ादिमा बरीरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को बुलवाया और उनसे फ़रमाया कि आयशा की कोई बात शक व शुब्हे वाली कभी भी देखी हो तो बतलाओ। बरीरा ने कहा कि उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है, मैंने उनसे कोई बात कभी इस क़िस्म की नहीं देखी। हाँ सिर्फ़ यह बात है कि कम-उम्री की वजह से ऐसा हो जाता है कि कभी-कभी गुंधा हुआ आटा यूँ ही रखा रहता है और सो जाती हैं तो बकरी आकर खा जाती है। इसके सिवा मैंने कभी भी उनका कोई क़सूर नहीं देखा। चूँकि कोई सुबूत इस वाक़िए का न मिला इसलिये उसी दिन रसूलुल्लाह सल्ल. मिम्बर पर खड़े हुए और मजमे से मुख़ातिब होकर फ़रमाया- कौन है जो मुझे इस तरह की तकलीफ़ों और पीड़ा से बचाये? जिसने मुझे तकलीफ़ें पहुँचाते पहुँचाते अब तो मेरी घर वालियों में भी मुझे ईज़ायें (तकलीफ़ें) पहुँचानी शुरू कर दी हैं। अल्लाह की क़सम मैं जहाँ तक जानता हूँ मुझे अपनी घर वालियों में सिवाय भलाई के कोई चीज़ मालूम नहीं। जिस शख़्स का नाम ये लोग ले रहे हैं मेरी जानकारी तो उसके मुताल्लिक़ भी सिवाय भलाई के और कुछ नहीं। वह मेरे साथ ही घर में आता था।

यह सुनते ही हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु खड़े हो गये और फ़रमाने लगे कि या रसूलल्लाह! मैं मौजूद हूँ अगर वह क़बीला-ए-औस का शख़्स है तो अभी हम उसकी गर्दन तन से अलग कर देंगे। और अगर वह हमारे ख़ज़रज के भाईयों में से है तो भी आप जो हुक्म दें हमें उसकी तामील में कोई उज़्र नहीं होगा। यह सुनकर हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु खड़े हो गये। यह क़बीला-ए-ख़ज़रज के सरदार थे। थे तो यह बड़े नेकबख़्त मगर हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि. की उस वक़्त की गुफ़्तगू से उन्हें अपने क़बीले की ग़ैरत और हिमायत आ गयी और उनकी तरफ़दारी करते हुए हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ से कहने लगे कि न तो तू उसे क़त्ल करेगा न उसके क़त्ल पर तू क़ादिर है। अगर वह तेरे क़बीले

का होता तो तू उसका क़त्ल किया जाना कभी पसन्द न करता। यह सुनकर हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि. खड़े हो गये, यह हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि. के भतीजे होते थे। कहने लगे कि ऐ सअ़द बिन उबादा! तुम झूठ कहते हो। हम उसे ज़रूर मार डालेंगे। आप मुनाफ़िक़ आदमी हैं और मुनाफ़िक़ों की तरफ़दारी कर रहे हैं। अब उनकी तरफ़ से उनका क़बीला और इनकी तरफ़ से इनका क़बीला एक दूसरे के मुक़ाबले पर आ गया और क़रीब था कि औस व ख़ज़्रज के ये दोनों क़बीले आपस में लड़ पड़ें, हुज़ूर सल्ल. ने मिम्बर पर से ही उन्हें समझाना और चुप करना शुरू किया। यहाँ तक कि दोनों तरफ़ ख़ामोशी हो गयी। हुज़ूर सल्ल. भी चुपके हो रहे।

यह तो था वहाँ का वाक़िआ़, मेरा हाल यह था कि यह सारा दिन भी रोने ही में गुज़रा। मेरे इस रोने ने मेरे माँ-बाप के भी होश गुम कर दिये थे। वह समझ बैठे थे कि यह रोना मेरा कलेजा फाड़ देगा। दोनों हैरत-ज़दा ग़मगीन बैठे हुए थे और मुझे तो रोने के सिवा और कोई काम ही न था। इसी हालत में अन्सार की एक औ़रत आयीं और वह भी मेरे साथ रोने लगीं। हम यूँ ही बैठे हुए थे कि अचानक रसूले करीम सल्ल. तशरीफ़ लाये और सलाम करके मेरे पास बैठ गये। क़सम ख़ुदा की जब से यह बोहतान बाज़ी हुई थी आज तक रसूले करीम सल्ल. मेरे पास कभी नहीं बैठे थे। महीना भर गुज़र गया था कि हुज़ूरे पाक की यही हालत थी, कोई 'वही' नहीं आयी थी कि फ़ैसला हो सके। आपने बैठते ही पहले तो तशह्हुद (अत्तहिय्यात) पढ़ा, फिर अम्मा बाद फ़रमाकर फ़रमाया कि ऐ आ़यशा! तेरे बारे में मुझे यह ख़बर पहुँची है। अगर तू वाक़ई पाकदामन है तब तो अल्लाह तआ़ला तेरी पाकीज़गी ज़ाहिर फ़रमा देगा। और अगर वास्तव में तू किसी गुनाह में लिप्त हो गयी है तो अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार कर और तौबा कर। बन्दा जब गुनाह करके अपने गुनाह के इक़रार के साथ ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ झुकता है और उससे माफ़ी तलब करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे बख़्श देता है।

आप इतना फ़रमाकर ख़ामोश हो गये। यह सुनते ही मेरा रोना धोना सब जाता रहा, आँसू थम गये यहाँ तक कि अब मैं आँसू का एक क़तरा भी नहीं पाती थी। मैंने पहले तो अपने वालिद से दरख़्वास्त की कि मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह को आप ही जवाब दीजिए। लेकिन उन्होंने फ़रमाया वल्लाह मेरी समझ में नहीं आता कि मैं हुज़ूर सल्ल. को क्या जवाब दूँ? अब मैंने अपनी वालिदा की तरफ़ देखा और उनसे कहा कि आप रसूलुल्लाह को जवाब दीजिए। लेकिन उन्होंने भी यही कहा कि मैं नहीं समझ सकती कि मैं क्या जवाब दूँ। आख़िर मैंने ख़ुद ही जवाब शुरू किया। मेरी उम्र कुछ ऐसी ज़्यादा न थी और न मुझे क़ुरआन ज़्यादा हिफ़्ज़ था, मैंने कहा- आप सब ने एक बात सुनी उसे अपने दिल में बैठा ली और गोया सच समझ ली। अब अगर मैं किसी बात का इक़रार कर लूँ हालाँकि ख़ुदा को ख़ूब इल्म है कि मैं बिल्कुल बेगुनाह हूँ तो तुम अभी मान लोगे, मेरी और तुम्हारी मिसाल तो बिल्कुल हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का क़ौल है:

فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَاتَصِفُوْنَ.

यानी पस सब्र ही अच्छा है, जिसमें शिकायत का नाम ही न हो, और तुम जो बातें बनाते हो उनमें अल्लाह ही मेरी मदद करे।

इतना कहकर मैंने करवट फेर ली और अपने बिस्तरे पर लेट गयी। क़सम ख़ुदा की मुझे यक़ीन था कि मैं तो पाक हूँ अल्लाह तआ़ला मेरी बराअत (यानी बरी और बेक़सूर होना) अपने रसूल को ज़रूर मालूम करा देगा। लेकिन यह मेरे ख़्याल व गुमान में भी न था कि मेरे बारे में क़ुरआन की आयतें नाज़िल हों। मैं

अपने आपको इससे बहुत कमतर जानती थी, कि मेरे बारे में कलामे ख़ुदा की आयतें उतरें। हाँ मुझे ज़्यादा से ज़्यादा यह ख़्याल होता था कि मुम्किन है ख़्वाब में अल्लाह तआ़ला हुज़ूर सल्ल. को मेरी बराअत दिखा दे। अल्लाह की क़सम अभी न तो हुज़ूरे पाक सल्ल. अपनी जगह से हटे थे और न घर वालों में से कोई घर से बाहर निकला था कि हुज़ूर सल्ल. पर 'वही' उतरनी शुरू हुई और चेहरे पर वही निशान ज़ाहिर हुए जो 'वही' के वक़्त होते थे। पेशानी से पसीने की पाक बूँदें टपकने लगीं, सख़्त जाड़ों में भी 'वही' के उतरने की यही कैफ़ियत हुआ करती थी। जब 'वही' उतर चुकी तो हमने देखा कि हुज़ूर सल्ल. का चेहरा ख़ुशी से खिल रहा है। सबसे पहले आपने मेरी तरफ़ देखकर फ़रमाया- आ़यशा! ख़ुश हो जाओ, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी बराअत (बेक़सूर होना) नाज़िल फ़रमाई। उसी वक़्त मेरी वालिदा ने फ़रमाया कि बेटी! हुज़ूर सल्ल. के सामने खड़ी हो जाओ। मैंने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम न तो मैं आपके सामने खड़ी हूँगी और न सिवाय अल्लाह तआ़ला के और किसी की तारीफ़ करूँगी। उसी ने मेरी बराअत और मेरी पाकीज़गी नाज़िल फ़रमाई है। पस ये दस आयतें (यानी सूरः नूर की आयत 11 से 20 तक) नाज़िल हुयीं। इन आयतों के उतरने के बाद और मेरी पाकदामनी साबित हो चुकने के बाद चूँकि इस शर (बुराई) के फैलाने में हज़रत मिस्तह बिन असासा भी शरीक थे और उन्हें मेरे वालिद साहिब उनकी तंगदस्ती, ग़रीबी और रिश्तेदारी की वजह से हमेशा कुछ देते रहते थे, अब उन्होंने कहा कि जब उस शख़्स ने मेरी बेटी पर तोहमत बाँधने में हिस्सा लिया तो मैं अब उसके साथ कुछ भी सुलूक न करूँगा। इस पर यह आयतः

وَلَا يَأْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ......... الخ.

नाज़िल हुई। यानी तुम में से जो लोग बुज़ुर्गी और वुस्अ़त वाले हैं उन्हें न चाहिये कि रिश्तेदारों, मिस्कीनों और ख़ुदा की राह की मुहाजिरों से सुलूक करने की क़सम खा बैठें। क्या तुम नहीं चाहते कि वह बख़्शिश वाला और मेहरबान ख़ुदा तुम्हें बख़्श दे?

उसी वक़्त हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने फ़रमाया कि क़सम ख़ुदा की मैं बख़्शिश का इच्छुक और तालिब हूँ। चुनाँचे उसी वक़्त से हज़रत मिस्तह रज़ियल्लाहु अ़न्हु का वज़ीफ़ा जारी कर दिया और फ़रमा दिया कि वल्लाह अब उम्र भर इसमें कमी या कोताही न करूँगा।

मेरे इस वाक़िए के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश से भी जो आपकी बीवी साहिबा थीं, मालूम किया था, यही बीवी साहिबा थीं जो हुज़ूर सल्ल की तमाम बीवियों में मेरे मुक़ाबले की थीं। लेकिन यह अपनी परहेज़गारी और दीनदारी की वजह से साफ़ बच गयीं और जवाब दिया कि हुज़ूर! मैं तो सिवाय बेहतरी के आ़यशा के बारे में और कुछ नहीं जानती। मैं अपने कानों को और अपनी निगाह को महफ़ूज़ रखती हूँ। अगरचे उन्हें उनकी बहन हमना बिन्ते जहश ने बहुत कुछ भुलावे भी दिये बल्कि लड़-लड़ पड़ीं लेकिन उन्होंने अपनी ज़बान से मेरी बुराई का कोई कलिमा नहीं निकाला। हाँ उनकी बहन ने तो ज़बान खोल दी और मेरे बारे में हलाक होने वालों में शामिल हो गयीं।

यह रिवायत बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह हदीस की बहुत सी किताबों में है। एक सनद से यह भी आता है कि आपने अपने उस ख़ुतबे में यह भी फ़रमाया था कि जिस शख़्स की तरफ़ मन्सूब करते हैं वह सफ़र हज़र में मेरे साथ रहा, मेरी ग़ैर-मौजूदगी में कभी मेरे घर नहीं आया। उसमें है कि सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि. के मुक़ाबले में जो साहिब खड़े हुए उन्हीं के क़बीले में उम्मे हस्सान थीं। उसमें यह भी है कि उसी ख़ुतबे वाले दिन के बाद रात को मैं उम्मे मिस्तह (मिस्तह की माँ) के साथ निकली थी। उसमें यह भी है कि एक

मर्तबा यह फिसलीं (यानी गिर पड़ीं) और इन्होंने अपने बेटे मिस्तह को कोसा। मैंने मना किया, फिर फिसलीं फिर कोसा, मैंने फिर रोका। फिर उलझीं फिर कोसा, मैंने उन्हें डाँटना शुरू किया। उसी में है कि उसी वक़्त से मुझे बुख़ार चढ़ आया। उसमें है कि मेरी वालिदा के घर पहुँचाने के लिये मेरे साथ हुज़ूर सल्ल. ने एक गुलाम कर दिया था। मैं जब वहाँ पहुँची तो मेरे वालिद ऊपर के घर में थे, क़ुरआन पाक पढ़ने में मशग़ूल थे और वालिदा नीचे के मकान में थीं। मुझे देखते ही मेरी वालिदा ने दरियाफ़्त फ़रमाया कि आज कैसे आना हुआ? मैंने तमाम बिपता कह सुनाई। लेकिन मैंने देखा कि उन्हें यह बात न कोई अनोखी मालूम हुई न इतना सदमा और रंज हुआ जिसकी मुझको उम्मीद और आशा थी। उसमें है कि मैंने वालिदा से पूछा क्या मेरे वालिद साहिब को भी इसका इल्म है? उन्होंने कहा हाँ। मैंने कहा और रसूलुल्लाह तक भी यह बात पहुँची है? जवाब दिया कि हाँ। अब तो मुझे फूट-फूटकर रोना आने लगा, यहाँ तक कि मेरी आवाज़ ऊपर मेरे वालिद साहिब के कान में भी पहुँची। वह जल्दी से नीचे आये, मालूम किया कि क्या बात है? मेरी वालिदा ने कहा कि इन्हें उस तोहमत का इल्म हो गया है जो इन पर लगाई गयी है। यह सुनकर और मेरी हालत देखकर मेरे वालिद साहिब की आँखों में भी आँसू भर आये और मुझसे कहने लगे बेटी मैं तुम्हें क़सम देता हूँ कि इसी वक़्त अपने घर को लौट जाओ। चुनाँचे मैं वापस चली गयी, यहाँ मेरे पीछे घर की ख़ादिमा से भी मेरे बारे में रसूलुल्लाह सल्ल. ने और लोगों की मौजूदगी में दरियाफ़्त फ़रमाया था, जिस पर उसने जवाब दिया कि मैं आयशा में कोई बुराई नहीं देखती सिवाय इसके कि वह आटा गुँधा हुआ छोड़कर उठ खड़ी होती हैं, बेख़बरी से सो जाती हैं, कई बार आटा बकरियाँ खा जाती हैं। बल्कि उसे बाज़ लोगों ने बहुत डाँटा-डपटा भी कि रसूलुल्लाह के सामने सच-सच बात जो हो बता दे। उस पर बहुत सख़्ती की लेकिन उसने कहा वल्लाह एक सुनार ख़ालिस सोने में जिस तरह कोई ऐब किसी तरह भी तपा-तपाकर भी नहीं बता सकता इसी तरह मैं सिद्दीक़ा पर कोई उंगली नहीं उठा सकती।

जब उस शख़्स को इत्तिला पहुँची जिन्हें बदनाम किया जा रहा था तो उसने कहा क़सम ख़ुदा की मैंने तो आज तक किसी औरत का बाज़ू भी खोला ही नहीं। आख़िरकार वह ख़ुदा की राह में शहीद हुए (रज़ियल्लाहु अन्हु)। उसमें है कि रसूलुल्लाह सल्ल. मेरे पास असर की नमाज़ के बाद तशरीफ़ लाये थे, उस वक़्त मेरी माँ और मेरे बाप मेरे दाहिने-बायें बैठे हुए थे, और वह अन्सारी औरत जो आयी थीं वह दरवाज़े पर बैठी हुई थीं। उसमें है कि जब हुज़ूर सल्ल. ने मुझे नसीहत शुरू की और मुझसे हालात मालूम करने लगे तो मैंने कहा हाय कैसी बेशर्मी की बात है! इस औरत का भी तो ख़्याल नहीं? (इससे हज़रत आयशा की शर्म व हया और पाकदामनी का अन्दाज़ा कीजिये कि इस क़िस्म की बातें एक ग़ैर-औरत के सामने करना और सुनना भी गवारा न हुआ, गुनाह और उसका ख़्याल तो बहुत दूर की बात है)।

उसमें है कि मैंने ख़ुदा की तारीफ़ व सना के बाद जवाब दिया था। उसमें यह भी है कि मैंने उस वक़्त हर चन्द हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का नाम याद किया लेकिन वल्लाह वह ज़बान पर न चढ़ा। इसलिये मैंने अबू यूसुफ़ कह दिया। उसमें है कि जब हुज़ूर सल्ल. ने 'वही' के उतरने के बाद मुझे ख़ुशख़बरी सुनाई वल्लाह उस वक़्त मेरा ग़म भरा ग़ुस्सा बहुत ही बढ़ गया था। मैंने अपने माँ-बाप से कहा था कि मैं इस मामले में तुम्हारी भी शुक्रगुज़ार नहीं, तुम सबने एक बात सुनी लेकिन न तुमने इनकार किया न तुम्हें ज़रा भी ग़ैरत आयी। उसमें है कि इस क़िस्से को ज़बान पर लाने वाले हमना, मिस्तह, हस्सान बिन साबित और अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ थे। यह सबका बड़ा था और यही ज़्यादातर लगाता-बुझाता था।

एक और हदीस में है कि मेरे उज़्र की ये आयतें उतरने के बाद रसूलुल्लाह सल्ल. ने दो मर्दों और एक औरत को तोहमत की हद लगाई, हस्सान बिन साबित, मिस्तह बिन असासा और हमना बिन्ते जहश को। एक रिवायत में है कि जब हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपने ऊपर तोहमत लगने का और उसका इल्म आपके वालिद को और हुज़ूर सल्ल. को हो जाने का वाक़िआ मालूम हुआ तो आप बेहोश होकर गिर पड़ीं। जब ज़रा होश में आयीं तो सारा जिस्म तप रहा था, ज़ोर का बुख़ार चढ़ा हुआ था और काँप रही थीं। आपकी वालिदा ने उसी वक़्त लिहाफ़ उढ़ा दिया और रसूले ख़ुदा सल्ल. आये। पूछा क्या हाल है? मैंने कहा जाड़े से बुख़ार चढ़ा है। आपने फ़रमाया शायद इस ख़बर को सुनकर यह हाल हो गया होगा? जब आपके उज़्र की आयतें उतरीं और आपने उन्हें सुनकर फ़रमाया कि यह अल्लाह के फ़ज़्ल से है, न कि आपके, तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने फ़रमाया- तुम रसूलुल्लाह सल्ल. से इस तरह कहती हो? सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया हाँ।

अब आयतों का मतलब सुनिये- जो लोग झूठ, बोहतान गढ़ी हुई बात ले आये और हैं भी वे कई एक, उसे तुम ऐ आले अबी बक्र अपने लिये बुरा न समझो बल्कि अन्जाम के लिहाज़ से दीन व दुनिया में वह तुम्हारे लिये भला है। दुनिया में तुम्हारी सच्चाई साबित होगी, आख़िरत में बुलन्द दर्जे मिलेंगे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बराअत (बेक़सूर होना) क़ुरआने करीम में नाज़िल हुई जिसके आस-पास भी बातिल नहीं आ सकता। यही वजह थी कि जब हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. हज़रत आयशा रज़ि. के पास उनके आख़िरी वक़्त में आये तो फ़रमाने लगे- उम्मुल-मोमिनीन! आप ख़ुश हो जाईये कि आप रसूलुल्लाह सल्ल. की बीवी रहीं और आपके साथ हुज़ूर सल्ल. मुहब्बत से पेश आते रहे, और हुज़ूर सल्ल. ने आपके सिवा और किसी कुंवारी से निकाह नहीं किया, और आपकी बराअत आसमान से नाज़िल हुई।

एक मर्तबा हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत ज़ैनब अपनी अच्छी सिफ़ात और आदतों का ज़िक्र करने लगीं तो हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया- मेरा निकाह आसमान से उतरा (इसमें उस वाक़िए की तरफ़ इशारा है जिसमें हज़रत ज़ैनब से निकाह करने के लिये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नबी पाक सल्ल. को हुक्म हुआ था)। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि. ने फ़रमाया मेरी पाकीज़गी की गवाही क़ुरआन में आसमान से उतरी, जबकि सफ़वान बिन मुअ़त्तल रज़ि. मुझे अपनी सवारी पर बैठा लाये थे। हज़रत ज़ैनब ने पूछा यह तो बतलाओ जब तुम उस ऊँट पर सवार हुई थीं तो तुमने क्या कलिमात कहे थे? आपने फ़रमाया "हस्बियल्लाहु व नेअ़्मल वकील" इस पर वह बोल उठीं कि तुमने मोमिनों का कलिमा कहा था। फिर फ़रमाया जिस-जिसने पाकदामन सिद्दीक़ा पर तोहमत लगाई है हर एक को बड़ा अ़ज़ाब होगा, और जिसने इसकी शुरूआत की है जो इसे इधर-उधर फैलाता रहा है उसके लिये बहुत सख़्त अ़ज़ाब हैं। इससे मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मलऊन है। ठीक क़ौल यही है अगरचे किसी किसी ने कहा कि इससे मुराद हस्सान हैं, लेकिन यह क़ौल ठीक नहीं। चूँकि यह क़ौल भी है, इसलिये हमने इसे बयान कर दिया, वरना इसके बयान में भी कोई नफ़ा नहीं (यानी इसका ज़िक्र भी सही नहीं)। क्योंकि हज़रत हस्सान रज़ि. बड़े-बड़े बुज़ुर्ग सहाबा में हैं, उनकी बहुत सी फ़ज़ीलतें और बुज़ुर्गियाँ हदीसों में मौजूद हैं। यही थे जो काफ़िरों की हिजो (बुराई) के शे'रों का अल्लाह के नबी सल्ल. की तरफ़ से जवाब देते थे, इन्हीं से हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि तुम काफ़िरों की मज़म्मत (बुराई और निंदा) बयान करो, जिब्राईल तुम्हारे साथ हैं।

हज़रत मसरूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैं हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास था कि हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि. आये। हज़रत आयशा रज़ि. ने उन्हें इज़्ज़त के साथ बैठाया। हुक्म दिया

कि उनके लिये गद्दा बिछा दो। जब वह वापस चले गये तो मैंने कहा कि आप उन्हें क्यों आने देती हैं? उनके आने से क्या फ़ायदा? खुदा तआ़ला तो फ़रमाता है कि उनमें से जो तोहमत का वाली है उसके लिये बड़ा अ़ज़ाब है, तो उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ि. ने फ़रमाया- नाबीनाई (अंधा होने) से बड़ा अ़ज़ाब और क्या होगा। यह नाबीना हो गये थे। तो फ़रमाया शायद यह अ़ज़ाबे अ़ज़ीम हो। फिर फ़रमाया तुम्हें नहीं ख़बर? यही तो रसूलुल्लाह सल्ल. की तरफ़ से काफ़िरों के हिजो (बुराई) वाले शे'रों का जवाब देने पर मुक़र्रर थे। एक रिवायत में है कि हज़रत हस्सान रज़ि. ने उस वक़्त हज़रत आ़यशा रज़ि. की मदह (तारीफ़) में शे'र पढ़ा था कि आप पाकदामन भोली तमाम अच्छे कामों के करने वाली और ग़ीबत और बुराई से परहेज़ करने वाली हैं। तो आपने फ़रमाया तुम तो ऐसे न थे। हज़रत आ़यशा रज़ि. फ़रमाती हैं कि मुझे हस्सान के शे'रों से ज़्यादा अच्छे अश्आ़र नज़र नहीं आते और मैं जब कभी उन शे'रों को पढ़ती हूँ तो मेरे दिल में ख़्याल आता है कि हस्सान जन्नती हैं। वह अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब को ख़िताब करके अपने शे'रों में फ़रमाते हैं कि तूने मुहम्मद की हिजो (शे'रों में बुराई) की है, जिसका मैं जवाब देता हूँ और इसका बदला अल्लाह तआ़ला से पाऊँगा। मेरे बाप दादा और मेरी इ़ज़्ज़त आबरू सब मुहम्मद सल्ल. पर क़ुरबान हैं। मैं उन सबको फ़ना करके भी तुम्हारी बद-ज़बानियों के मुक़ाबले से हट नहीं सकता। तुझ जैसा शख़्स जो मेरे नबी सल्ल. के तलवों की बराबरी भी नहीं कर सकता, हुज़ूर सल्ल. की हिजो करे? याद रखो कि तुम जैसे बद, हुज़ूर सल्ल. जैसे नेक पर फ़िदा हैं। जब तुमने हुज़ूर सल्ल. की हिजो की है तो अब मेरी ज़बान से जो तेज़ धारदार बेऐब तलवार से भी तेज़ है, बचकर तुम कहाँ जाओगे?

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ि. से पूछा गया कि क्या यह बेकार और फ़ालतू का कलाम नहीं? आपने फ़रमाया हरगिज़ नहीं, बेकार कलाम तो शायरों की वह बकवास है जो औ़रतों वग़ैरह के बारे में होती है। आपसे पूछा गया क्या क़ुरआन में नहीं कि इस तोहमत में बड़ा हिस्सा लेने वाले के लिये बड़ा अ़ज़ाब है? फ़रमाया हाँ! लेकिन क्या जो अ़ज़ाब उन्हें हुआ वह बड़ा नहीं? आँखें उनकी जाती रहीं, तलवार उन पर उठी, वह तो कहिये कि हज़रत सफ़वान रुक गये वरना अ़जब नहीं कि उनके बारे में यह बात सुनकर उन्हें क़त्ल ही कर डालते।

(आगे उन तोहमत लगाने वाले मोमिनों को नसीहत के अन्दाज़ में मलामत है कि) जब तुम लोगों ने यह बात सुनी थी तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों ने अपने आपस वालों के साथ नेक गुमान क्यों न किया, और (ज़बान से) यूँ क्यों न कहा कि यह खुला झूठ है। (12) (आगे इस अच्छे गुमान के वाजिब होने की वजह इरशाद है कि) ये (तोहमत लगाने वाले) लोग (अपने) उस (क़ौल) पर चार गवाह क्यों न लाए, सो जिस सूरत में ये लोग (क़ायदे के मुवाफ़िक़) गवाह नहीं लाए तो बस अल्लाह के नज़दीक ये झूठे हैं। (13)	لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ○ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ○

Maktab-E-Ashraf

बहुत बड़ा बोहतान

इन आयतों में अल्लाह तबारक व तआ़ला मोमिनों को अदब सिखाता है कि उन्होंने आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की शान में जो कलिमात मुँह से निकाले वे उनकी शायाने शान न थे, बल्कि उन्हें चाहिये था कि यह बात सुनते ही अपनी मोहतरम (सम्मानित और आदरणीय) माँ के साथ कम से कम वह ख़्याल करते जो अपने नफ़्सों के साथ करते, जबकि वे ख़ुद को भी ऐसे काम के लायक़ न पाते तो उम्मुल-मोमिनीन की शान को इससे बहुत आला और ऊँची जानते। एक वाक़िआ़ भी बिल्कुल इसी तरह का हुआ था। हज़रत अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद अन्सारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से उनकी बीवी साहिबा उम्मे-अय्यूब ने कहा कि क्या आपने वह भी सुना जो हज़रत आ़यशा के बारे में कहा जा रहा है? आपने फ़रमाया हाँ! और यक़ीनन यह झूठ है। उम्मे अय्यूब! तुम ही बतलाओ क्या तुम ऐसा कर सकती हो? उन्होंने कहा नऊज़ु बिल्लाह नामुम्किन है। आपने फ़रमाया पस हज़रत आ़यशा तो तुमसे कहीं अफ़ज़ल और बेहतर हैं। जब ये आयतें उतरीं तो पहले तो बोहतान लगाने वालों का ज़िक्र हुआ, यानी हज़रत हस्सान रज़ि. और उनके साथियों का। फिर इन आयतों में हज़रत अबू अय्यूब रज़ि. और उनकी बीवी साहिबा की इस बातचीत का जो ऊपर बयान हुई। यह भी एक क़ौल है कि यह मक़ूला (कहना) हज़रत उबई बिन कअ़ब का था। ग़र्ज़ कि मोमिनों को साफ़-बातिन (दूसरों की तरफ़ से अच्छा गुमान रखने वाला) रहना चाहिये और अच्छे ख़्याल करने चाहियें, बल्कि ज़बान से भी ऐसे वाक़िए की तरदीद (खंडन) करनी और झुठला देना चाहिये। इसलिये कि जितना कुछ वाक़िआ़ गुज़रा उसमें शक व शुब्हे की गुंजाईश भी न थी। उम्मुल-मोमिनीन रज़ि. खुल्लम-खुल्ला सवारी पर सवार होकर दिन दोपहर को भरे लश्कर में पहुँचती हैं। ख़ुद पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल. मौजूद हैं, अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता (जबकि ऐसा हो ही नहीं सकता) कोई भी ऐसी बात होती तो ये इस तरह खुलेआ़म भरे मजमे में न आते, बल्कि ख़ुफ़िया और छुपे तौर पर शामिल हो जाते, जो किसी को कानों-कान ख़बर तक न पहुँचती। पस साफ़ ज़ाहिर है कि बोहतान लगाने वालों की ज़बान ने जो बात गढ़ी वह बिल्कुल झूठ, बोहतान और इल्ज़ाम है, जिससे उन्होंने अपने ईमान और अपनी इज़्ज़त को ग़ारत किया। फिर फ़रमाया कि उन बोहतान बाज़ों ने जो कुछ कहा अपनी सच्चाई पर चार गवाह वाक़िए के क्यों पेश नहीं करते? और जबकि वे गवाह पेश न कर सकें तो शरअ़न ख़ुदा के नज़दीक वे झूठे हैं, फ़ासिक़ व फ़ाजिर (बदकार व गुनाहगार) हैं।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ۝

और अगर तुम पर अल्लाह तआ़ला का करम व फ़ज़्ल न होता दुनिया में और आख़िरत में तो जिस शग़ल में तुम पड़े थे उसमें तुम पर सख़्त अ़ज़ाब आ पड़ता। (14) जबकि तुम इस (झूठ) को अपनी ज़बानों से नक़ल दर नक़ल कर रहे थे और अपने मुँह से ऐसी बात कह रहे थे जिसकी तुमको (किसी दलील से) बिल्कुल ख़बर नहीं, और तुम उसको हल्की बात (यानी गुनाह का सबब न होने वाली) समझ रहे थे, हालाँकि वह अल्लाह के नज़दीक बहुत भारी बात है। (15)

Maktab F. Ashraf

बुरी हरकत और दुस्साहस

फ़रमान है कि ऐ वे लोगो! जिन्होंने सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में अपनी ज़बानों को हरकत दी, अगर ख़ुदा तआ़ला का फ़ज़्ल व करम तुम पर न होता कि वह दुनिया में तुम्हारी तौबा क़बूल कर ले और आख़िरत में तुम्हें तुम्हारे ईमान की वजह से माफ़ फ़रमा दे, तो जिस बोहतान में तुमने अपनी ज़बानें हिलायीं उसमें तुम्हें बड़ा भारी अ़ज़ाब होता। यह आयत उन लोगों के बारे में है जिनके दिलों में ईमान था, लेकिन नादानी में कुछ कह गये थे, जैसे हज़रत मिस्तह, हज़रत हस्सान, हज़रत हमना रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। लेकिन जिनके दिल ईमान से ख़ाली थे, जो इस तूफ़ान को उठाने वाले थे जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल वग़ैरह मुनाफ़िक़ीन, ये लोग इस हुक्म में नहीं। क्योंकि न उनके पास ईमान था न नेक अ़मल। यह भी याद रहे कि जिस बदी पर जो वईद है वह उसी वक़्त साबित होती है जब तौबा न हो और उसके मुक़ाबले में उस जैसी या उससे बड़ी नेकी न हो। जबकि तुम इस बात को फैला रहे थे, इसने सुनकर उससे कही और उसने सुनकर दूसरे से कही।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की क़िराअत में "इज़् तुलक़्क़ूनहू" है, यानी जब तुम इस झूठ का प्रचार कर रहे थे। पहली क़िराअत जमहूर की है और यह क़िराअत उनकी है जिन्हें इस आयत का ज़्यादा इल्म था। और तुम वह बात ज़बान से निकालते थे जिसका तुम्हें इल्म न था। तुम अगरचे इस कलाम को हल्का (यानी मामूली बात) समझते रहे, लेकिन दर असल ख़ुदा के नज़दीक वह बड़ा भारी कलाम था। किसी मुसलमान औ़रत के बारे में ऐसी तोहमत बहुत बड़ा जुर्म है। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल. की पाक बीवी के ऊपर ऐसा कलाम (टिप्पणी) समझ लो कि कितना बड़ा गुनाह हुआ। इसी लिये रब की ग़ैरत अपने नबी सल्ल. की वजह से जोश में आयी और अल्लाह तआ़ला ने 'वही' नाज़िल फ़रमाकर ख़ातिमुल-अम्बिया सैयदुल-मुर्सलीन सल्ल. की पाक बीवी की पाकीज़गी साबित फ़रमाई। हर नबी की बीवी को अल्लाह तआ़ला ने इस बेहयाई (बदकारी और ज़िना) से दूर रखा है। पस कैसे मुम्किन था कि तमाम नबियों की बीवियों से अफ़ज़ल और उनकी सरदार, तमाम नबियों से अफ़ज़ल और इमाम, और तमाम इनसानों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. की बीवी इसमें मुलव्वस हों? हरगिज़ नहीं, यह हो ही नहीं सकता।

पस तुम चाहे इस कलाम को मामूली बात समझो लेकिन हक़ीक़त इसके विपरीत है (यानी यह बहुत भारी और ख़तरनाक बात है)। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि इनसान बाज़ मर्तबा ख़ुदा की नाराज़गी का कोई कलिमा कह गुज़रता है जिसकी कोई अहमियत उसके नज़दीक नहीं होती, लेकिन उसकी वजह से वह जहन्नम के इतने नीचे वाले तबक़े में पहुँच जाता है कि जितनी ज़मीन आसमान से है बल्कि इससे भी ज़्यादा नीचे होता है।

और तुमने जब इस (बात) को (पहले) सुना था तो यूँ क्यों न कहा कि हमारे लिए यह मुनासिब नहीं कि हम ऐसी बात मुँह से भी निकालें, अल्लाह की पनाह यह तो बड़ा बोहतान है। (16) अल्लाह तआ़ला तुमको नसीहत करता है कि फिर ऐसी हरकत मत करना अगर तुम	وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ○ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ

ابدًا ان كنتم مؤمنين ٥ ويبين الله لكم الايت ط والله عليم حكيم٥

ईमान वाले हो। (17) और अल्लाह तआ़ला तुमसे साफ़-साफ़ अहकाम बयान करता है। और अल्लाह तआ़ला बड़ा जानने वाला, बड़ा हिक्मत वाला है। (18)

Maktab E Ashraf

नबी-ए-करीम की पाक बीवियों के साथ अच्छा गुमान रखना निजात का ज़रिया है

पहले तो नेक गुमान रखने का हुक्म दिया, यहाँ दूसरा हुक्म दे रहा है कि भले लोगों की शान में कोई बुराई का कलिमा बिना तहक़ीक़ के हरगिज़ न निकालना चाहिये। बुरे ख़्यालात, गन्दे इल्ज़ामात और शैतानी वस्वसों से दूर रहना चाहिये। कभी ऐसे कलिमात ज़बान से न निकालने चाहियें। अगर दिल में कोई ऐसा शैतानी ख़्याल पैदा भी हो तो ज़बान क़ाबू में रखनी चाहिये। हुज़ूरे पाक का फ़रमान है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के दिलों में पैदा होने वाले वस्वसों (ख़्यालात) को माफ़ फ़रमा दिया है जब तक कि वे ज़बान से न कहें या अ़मल में न लायें। (बुख़ारी व मुस्लिम)

तुम्हें चाहिये था कि ऐसी बेबुनियाद और बेहूदा बात को सुनते ही कह देते कि हम ऐसी बेहूदा और बेकार बात से अपनी ज़बान नहीं बिगाड़ते, हमसे यह बेअदबी नहीं हो सकती कि ख़ुदा के दोस्त और उसके रसूल सल्ल. की बीवी साहिबा के बारे में कोई ऐसी बेहूदा बात कहें। अल्लाह की ज़ात पाक है। देखो ख़बरदार आईन्दा कभी ऐसी हरकत न हो, वरना ईमान के छिन जाने का अन्देशा है। हाँ अगर कोई शख़्स ईमान से ही कोरा हो तो वह बेअदब गुस्ताख़ी और भले लोगों का अपमान करने वाला होता ही है। शरीअ़त के अहकाम को ख़ुदा तआ़ला तुम्हारे सामने खोल-खोलकर बयान फ़रमा रहा है। वह अपने बन्दों की मस्लेहतों से वाक़िफ़ है, उसका कोई हुक्म हिक्मत से ख़ाली नहीं होता।

ان الذين يحبون ان تشيع الفاحشة في الذين امنوا لهم عذاب اليم لا في الدنيا والاخرة ط والله يعلم وانتم لا تعلمون٥

जो लोग (इन आयतों के नाज़िल होने के बाद भी) चाहते हैं कि बेहयाई की बात का मुसलमानों में चर्चा हो, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा (मुक़र्रर) है। और (उस मामले पर इस सज़ा का ताज्जुब मत करो, क्योंकि) अल्लाह तआ़ला जानता है और तुम नहीं जानते। (19)

बुरी और बेहयाई की बातों का फैलाना

यह तीसरी तंबीह है कि जो शख़्स कोई ऐसी बात सुने उसे उसका फैलाना हराम है। जो ऐसी बुरी ख़बरें को उड़ाते फिरते हैं उन्हें दुनियावी सज़ा यानी हद भी लगेगी और आख़िरत की सज़ा यानी अ़ज़ाबे जहन्नम भी होगा। ख़ुदा तआ़ला सब कुछ जानता है, तुम बेइल्म हो। पस तुम्हें अल्लाह की तरफ़ तमाम

Maktaba Ashraf

बातों और मामलों को लौटा देना चाहिये (यानी बिना तहक़ीक़ के ख़ुद फ़ैसला न करें बल्कि यह कहकर बात ख़त्म करें कि भाई असल हक़ीक़त का अल्लाह ही को पता है)।

हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह के बन्दों को न सताओ, उन्हें शर्मिन्दा न करो, उनकी छुपी बातें न टटोलो। जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के ऐबों को टटोलेगा अल्लाह उसके ऐबों के पीछे पड़ जायेगा और उसे यहाँ तक रुस्वा करेगा कि उसके घर वाले भी उसे बुरी नज़र से देखने लगेंगे।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ
اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع ۲ ۸
لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ
خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ
وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ۝

और (ऐ तौबा करने वालो!) अगर यह बात न होती कि तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल व करम है और यह कि अल्लाह तआ़ला बड़ा शफ़ीक़ बड़ा रहीम है तो तुम भी (इस वईद से) न बचते। (20)

ऐ ईमान वालो! तुम शैतान के क़दम-से-क़दम मिलाकर मत चलो (यानी उसके बहकाने पर अ़मल मत करो) और जो शख़्स शैतान के क़दम-से-क़दम मिलाकर चलता है तो वह तो (हमेशा हर शख़्स को) बेहयाई और नामाक़ूल काम करने को ही कहेगा, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल व करम न होता तो तुममें से कोई कभी भी (तौबा करके) पाक व साफ़ न होता। और लेकिन अल्लाह तआ़ला जिसको चाहता है (तौबा की तौफ़ीक़ देकर) पाक-साफ़ कर देता है। और अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनता है, सब कुछ जानता है। (21)

शैतान के क़दम से क़दम न मिलाओ

यानी अगर अल्लाह का फ़ज़्ल व करम और रहम न होता तो उस वक़्त कोई और ही बात हो पड़ती, मगर उसने तौबा करने वालों की तौबा क़बूल फ़रमा ली। पाक होने वालों को शरई हद (सज़ा) के ज़रिये पाक कर दिया। शैतानी तरीक़ों पर, शैतानी राहों पर न चलो, उसकी बातें न मानो। वह तो बुराई का, बदी का, बदकारी का, बेहयाई का हुक्म देता है, पस तुम्हें उसकी बातें मानने से परहेज़ करना चाहिये। उसके अ़मल से बचना चाहिये, उसके वस्वसों (दिल में डाली गयी बातों और ख़्यालात) से दूर रहना चाहिये। ख़ुदा की नाफ़रमानी में हर क़दम शैतान की पैरवी है।

एक शख़्स ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहा कि मैंने फ़ुलाँ चीज़ न खाने की क़सम खा ली है। आपने फ़रमाया यह शैतान का धोखा है, अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दो और उसे खा लो। एक शख़्स ने हज़रत शअ़बी से कहा कि मैंने अपने बच्चे को ज़िबह करने की नज़्र (मन्नत) मानी है। आपने फ़रमाया यह शैतानी हरकत है, ऐसा न करो, उसके बदले में एक भेड़ा ज़िबह कर लो। अबू राफ़ेअ़ रह.

Maktab E Ashraf

कहते हैं कि एक मर्तबा मेरे और मेरी बीवी के बीच झगड़ा हो पड़ा, वह बिगड़ कर कहने लगीं कि एक दिन वह यहूदी है और एक दिन ईसाई है, और उसके तमाम गुलाम आज़ाद हैं, अगर तू अपनी बीवी को तलाक़ न दे दे। मैंने आकर अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से यह मसला दरियाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया यह शैतानी हरकत है। ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा जो उस वक़्त सबसे ज़्यादा दीनी समझ रखने वाली औ़रत थीं, उन्होंने भी यही फ़तवा दिया और आ़सिम बिन उमरा की बीवी ने भी यही बतलाया।

फिर फ़रमाता है कि अगर ख़ुदा का फ़ज़्ल व करम न होता तो तुममें से एक भी ख़ुद को शिर्क व कुफ़्र और बुराई व बदी से न बचा सकता, यह रब का एहसान है कि वह तुम्हें तौबा की तौफ़ीक़ देता है। फिर तुम पर मेहरबानी से रुजू करता है और तुम्हें पाक-साफ़ बना देता है। अल्लाह जिसे चाहे पाक करता है और जिसे चाहे हलाकत के गड्ढे में धकेल देता है। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की बातों को सुनने वाला, उनके अहवाल को जानने वाला है, वह हिदायत के मुस्तहिक़ और गुमराही के हक़दार सब उसकी निगाह में हैं, और इसमें भी उस हकीमे मुतलक़ की बेहिसाब हिक्मत है।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ○	और जो लोग तुममें (दीनी) बुज़ुर्गी और दुनियावी वुस्अ़त वाले हैं, वे रिश्तेदारों को और मसाकीन को और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने से क़सम न खा बैठें। और चाहिए कि वे माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम यह बात नहीं चाहते कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे क़ुसूर माफ़ कर दे बेशक अल्लाह तआ़ला मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (22)

ख़ैर और भलाई से रुकना बुरा है

तुममें से जो कुशादा रोज़ी वाले (यानी ख़ुशहाल) गुंजाईश वाले हैं, सदक़ा और एहसान करने वाले हैं। उन्हें इस बात की क़सम न खानी चाहिये कि वे अपने रिश्तेदारों और अ़ज़ीज़ों को, मिस्कीनों और मुहाजिरों को कुछ देंगे ही नहीं। इस तरह उन्हें मुतवज्जह फ़रमाकर फिर और ज़्यादा नर्म करने के लिये फ़रमाया कि उनकी तरफ़ से कोई क़ुसूर भी हो गया हो तो उन्हें माफ़ कर देना चाहिये। उनसे कोई बुराई या तकलीफ़ पहुँची हो तो उनसे दरगुज़र (माफ़) कर लेना चाहिये। यह भी अल्लाह तआ़ला का संयम व करम और लुत्फ़ व रहम है कि वह अपने नेक बन्दों को भलाई का ही हुक्म देता है।

यह आयत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बारे में उतरी थी, जबकि आपने हज़रत मिस्तह इब्ने असासा रज़ि. के साथ किसी क़िस्म का सुलूक करने (एहसान करने और उनको कुछ देने) से क़सम खा ली थी, क्योंकि हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. पर बोहतान लगाने में यह भी शामिल थे जैसा कि पहली आयतों की तफ़सीर में यह वाक़िआ़ गुज़र चुका है। तो जब असल बात अल्लाह तआ़ला ने ज़ाहिर कर दी, उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा बरी हो गयीं, मुसलमानों के दिल रोशन हो गये, मोमिनों की तौबा क़बूल हो गयी, तोहमत रखने वालों में से बाज़ को शरई हद (सज़ा) लग चुकी तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत

सिद्दीक़े अकबर रज़ि. को हज़रत मिस्तह की तरफ़ मुतवज्जह फ़रमाया जो आपकी ख़ाला साहिबा के बेटे थे और मिस्कीन (ग़रीब और तंगदस्त) शख़्स थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ही उनकी परवरिश कर रहे थे, यह मुहाजिर थे लेकिन इस बारे में इत्तिफ़ाक़ से उनकी ज़बान खुल गयी थी, उन्हें तोहमत की हद लगाई गयी थी। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. की सख़ावत मशहूर थी, क्या अपने क्या ग़ैर सबके साथ आपका सुलूक आ़म था। इस आयत के ख़ुसूसन जब ये अलफ़ाज़ हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. के कान में पड़े कि क्या तुम बख़्शिश के तालिब नहीं हो? आपकी ज़बान से बेसाख़्ता निकल गया कि हाँ क़सम है ख़ुदा की, हमारी तो आरज़ू ही यही है कि ख़ुदा हमें बख़्शे, और उसी वक़्त हज़रत मिस्तह को जो कुछ दिया करते थे जारी कर दिया। गोया इन आयतों में हमें तलक़ीन हुई कि जिस तरह हम चाहते हैं कि हमारी ख़तायें और ग़लतियाँ माफ़ हो जायें, हमें चाहिये कि दूसरों की ख़तायें भी माफ़ कर दिया करें।

यह भी ख़्याल रहे कि जिस तरह आपने पहले फ़रमाया था कि वल्लाह मैं इसके साथ कभी भी सुलूक न करूँगा, अब अ़हद किया कि वल्लाह (अल्लाह की क़सम) मैं इससे कभी भी इसका तयशुदा रोज़ीना (वज़ीफ़ा) न रोकूँगा। सच है सिद्दीक़ सिद्दीक़ ही थे, रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ص وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ۝	(आगे मुनाफ़िक़ों की वईद की तफ़सील है) जो लोग तोहमत लगाते हैं उन औ़रतों को जो पाकदामन हैं (और) ऐसी बातों (के करने) से (बिल्कुल) बेख़बर हैं (और) ईमान वालियाँ हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की जाती है और उनको (आख़िरत में) बड़ा अ़ज़ाब होगा। (23) जिस दिन उनके ख़िलाफ़ उनकी ज़बानें गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पाँव भी (गवाही देंगे), उन कामों की जो कि ये लोग करते थे। (24) उस दिन अल्लाह तआ़ला उनको वाजिबी बदला पूरा-पूरा देगा। और उनको (उस दिन ठीक-ठीक) मालूम होगा कि अल्लाह ही ठीक फ़ैसला करने वाला (और) बात (की हक़ीक़त) को खोल देने वाला है। (25)

पाकदामन औ़रतों पर तोहमत लगाना

जबकि आ़म मुसलमान औ़रतों पर तूफ़ान उठाने वालों की सज़ा यह है तो अम्बिया की बीवियों पर जो मुसलमानों की माँयें हैं, बोहतान बाँधने वालों की सज़ा क्या होगी? और ख़ुसूसन उस बीवी पर जो सिद्दीक़े अकबर रज़ि. की बेटी थीं। उलेमा-ए-किराम में इस पर इजमा (सर्वसम्मति) है कि आयतों के नाज़िल हो चुकने के बाद भी जो शख़्स हज़रत आ़यशा साहिबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को इस इल्ज़ाम से याद करे वह काफ़िर है, क्योंकि उसने क़ुरआन के ख़िलाफ़ किया। आप सल्ल. की दूसरी पाक बीवियों के बारे में सही क़ौल यही है कि वे भी हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की तरह हैं। वल्लाहु आलम

Maktab E Ashraf

फ़रमाता है कि ऐसे तकलीफ़देह बोहतान लगाने वाले दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की लानत के मुस्तहिक़ हैं। जैसे एक दूसरी आयत में हैः

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ......... الخ.

यानी जो लोग ख़ुदा और उसके रसूल सल्ल. को ईज़ा देते (तकलीफ़ देते और सताते) हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में ख़ुदा की फटकार है, और उनके लिये रुस्वा करने वाले अ़ज़ाब तैयार हैं। बाज़ लोगों का ख़्याल है कि यह मख़्सूस है उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ि. के साथ। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. भी यही फ़रमाते हैं। सईद बिन जुबैर रज़ि. मुक़ातिल बिन हय्यान का भी यही क़ौल है। इब्ने जरीर ने भी हज़रत आ़यशा रज़ि. से यह नक़्ल किया है लेकिन फिर जो तफ़सील वार रिवायात लाये हैं उसमें आप पर तोहमत लगने, हुज़ूर सल्ल. पर 'वही' आने और इस आयत के नाज़िल होने का ज़िक्र है, लेकिन इस हुक्म के आपके साथ मख़्सूस होने का ज़िक्र नहीं। पस इस आयत के नाज़िल होने का सबब अगरचे ख़ास हो लेकिन हुक्म आ़म रहता है। मुम्किन है इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह के क़ौल का भी यही मतलब हो। वल्लाहु आलम

बाज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक की तमाम बीवियों का तो यही हुक्म है लेकिन दूसरी मोमिन औ़रतों का यह हुक्म नहीं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि इस आयत से मुराद हुज़ूर सल्ल. की बीवियाँ हैं, कि जो मुनाफ़िक़ लोग इस तोहमत लगाने में थे सब अल्लाह की बारगाह से धुतकारे गये, लानती ठहरे और अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ बन गये। उसके बाद मोमिन औ़रतों पर बदकारी के बोहतान बाँधने (झूठा इल्ज़ाम लगाने) वालों के हुक्म में आयतः

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا........ الخ.

उतरी। (यानी सूरः मोमिन की आयत 4) पस उन्हें कोड़े लगेंगे, अगर उन्होंने तौबा की तो तौबा तो क़बूल है लेकिन उनकी गवाही इसके बाद से हमेशा के लिये ग़ैर-मोतबर रहेगी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने एक मर्तबा सूरः नूर की तफ़सीर बयान करते हुए फ़रमाया कि यह आयत तो हुज़ूर सल्ल. की बीवियों के बारे में उतरी है, उन बोहतान-बाज़ों की तौबा भी क़बूल नहीं। इस आयत में इबहाम है। और चार गवाह न ला सकने की आयत आ़म ईमान वाली औ़रतों पर तोहमत लगाने वालों के हक़ में है, उनकी तौबा मक़बूल है। यह सुनकर मजमे में से लोगों का इरादा हुआ कि आपकी पेशानी चूम लें क्योंकि आपने बहुत ही उम्दा तफ़सीर की थी। इबहाम से मुराद यह है कि तोहमत लगाने का हराम होना तो आ़म है हर पाकदामन औ़रत की शान में, और ऐसे लोग सब मलऊन हैं। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान रह. फ़रमाते हैं कि हर एक बोहतान-बाज़ (झूठा इल्ज़ाम लगाने वाला) इस हुक्म में तो है लेकिन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बतौरे औला हैं। इमाम इब्ने रजीर रह. भी इस हुक्म के आ़म होने को ही पसन्द फ़रमाते हैं और सही भी यही है, और उमूम (हुक्म के आ़म होने) की ताईद में यह हदीस भी है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- सात गुनाहों से बचो जो ग़ारत और हलाक करने वाले हैं। पूछा गया वे क्या-क्या हैं? फ़रमाया अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना, जादू करना, किसी को बेवजह मार डालना, सूद खाना, यतीम का माल हड़प करना, जिहाद से भागना, पाकदामन भोली मोमिन औ़रत पर तोहमत लगाना। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक और हदीस में है कि पाकदामन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाने वाले की सौ साल की नेकियाँ ग़ारत (तबाह व ख़त्म) हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान है कि जब मुश्रिक लोग देखेंगे कि जन्नत में सिवाय नमाज़ियों के और कोई नहीं भेजा जाता तो वे कहेंगे आओ हम भी इनकार कर दें (यानी अपने

Mahtab E Ashraf

शिर्क से मुकर जायें), चुनाँचे ये अपने शिर्क का इनकार कर देंगे। उसी वक़्त उनके मुँह पर मोहर लग जायेगी, हाथ-पाँव गवाही देने लगेंगे और ख़ुदा से कोई बात न छुपा सकेंगे। हुज़ूरे पाक फ़रमाते हैं कि काफ़िरों के सामने जब उनके बुरे आमाल पेश किये जायेंगे तो वे इनकार कर जायेंगे और अपनी बेगुनाही बयान करने लगेंगे तो कहा जायेगा ये हैं तुम्हारे पड़ोसी, ये तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दे रहे हैं। वे कहेंगे ये सब झूठे हैं। कहा जायेगा कि अच्छा ख़ुद तुम्हारे कुनबे क़बीले के लोग मौजूद हैं। वे कह देंगे ये भी झूठे हैं तो कहा जायेगा अच्छा तुम क़समें खाओ, वे क़समें खा लेंगे। फिर अल्लाह उन्हें गूँगा कर देगा और ख़ुद उनके हाथ-पाँव उनके बुरे आमाल की गवाही देंगे। फिर उन्हें जहन्नम में भेज दिया जायेगा।

हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर थे कि आप हंस दिये और फ़रमाने लगे- जानते हो मैं क्यों हंसा? हमने कहा ख़ुदा ही जानता है। आपने फ़रमाया बन्दा क़ियामत के दिन अपने रब से जो हुज्जत-बाज़ी करेगा उस पर यह कहेगा कि ख़ुदाया क्या तूने मुझे ज़ुल्म से नहीं रोका था? अल्लाह फ़रमायेगा हाँ! तो यह कहेगा बस आज जो गवाह मैं सच्चा मानूँ उसी की गवाही मेरे बारे में मोतबर मानी जाये, और वह गवाह मेरे सिवा और कोई नहीं। अल्लाह फ़रमायेगा अच्छा यूँ ही सही, तू ही अपना गवाह रह। अब मुँह पर मोहर लग जायेगी और बदन के हिस्सों और अंगों से सवाल होगा तो वे सारे छुपे भेद खोल देंगे। उस वक़्त बन्दा कहेगा तुम बरबाद हो जाओ, तुम ग़ारत हो जाओ, तुम्हारी तरफ़ से ही तो मैं लड़-झगड़ रहा था। (मुस्लिम)

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते थे ऐ इनसान! तू ख़ुद अपने बुरे आमाल का गवाह है, तेरे जिस्म के तमाम हिस्से तेरे ख़िलाफ़ बोलेंगे, इनका ख़्याल रख, अल्लाह से छुपे और ज़ाहिर में डरता रह। उसके सामने कोई चीज़ पोशीदा नहीं, अन्धेरा उसके सामने चाँदना है, छुपा हुआ उसके सामने खुला हुआ है। अल्लाह के साथ नेक गुमान रखने की हालत में मरो, अल्लाह ही के साथ हमारी क़ुव्वतें हैं।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ۗ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ ع

गन्दी औरतें (हमेशा) गन्दे मर्दों के लायक़ होती हैं, और गन्दे मर्द गन्दी औरतों के लायक़ होते हैं। और पाक-साफ़ औरतें पाक-साफ़ मर्दों के लायक़ होती हैं, और पाक-साफ़ मर्द पाक-साफ़ औरतों के लायक़ होते हैं। ये उस बात से पाक हैं जो ये (मुनाफ़िक़) बकते फिरते हैं। उन (हज़रात) के लिए (आख़िरत में) मग़फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी (यानी जन्नत) है। (26)

बदकार औरतें क़ुदरती तौर पर बदकार मर्दों ही के हिस्से में आती हैं

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि ऐसी बुरी बात बुरे लोगों के लिये है, भली बात के हक़दार भले लोग होते हैं। यानी मुनाफ़िक़ों ने हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. पर तोहमत लगाई और उनकी शान में जो बुरे अलफ़ाज़ अपनी ज़बान से निकाले, इसके लायक़ वही हैं, इसलिये कि वही बद और ख़बीस हैं।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा चूँकि पाक हैं इसलिये वह पाक कलिमों (अलफ़ाज़ और बातों) के लायक़ हैं। वह नापाक बोहतानों से बरी हैं।

यह आयत भी हज़रत आयशा रज़ि. के बारे में नाज़िल हुई है। आयत का साफ़ मतलब यह है कि ख़ुदा के रसूल सल्ल. जो हर तरह तैयब (पाक) हैं, यह बिल्कुल नामुम्किन है कि उनके निकाह में ख़ुदा ऐसी औरत को दे जो ख़बीसा (बदकार) हो। ख़बीस औरतें तो ख़बीस मर्दों के लायक़ होती हैं। इसी लिये फ़रमाया कि ये लोग उन तमाम तोहमतों से पाक हैं जो अल्लाह के दुश्मन उन पर बाँध रहे हैं। उन्हें उनकी बद-कलामियों से जो रंज व तकलीफ़ पहुँची वह भी उनके लिये गुनाहों से मग़फ़िरत का सबब बन जायेगी। और यह चूँकि हुज़ूर सल्ल. की बीवी हैं, जन्नते अ़दन में भी आपके साथ ही रहेंगी।

एक मर्तबा असीर बिन जाबिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह के पास आकर कहने लगे आज तो मैंने वलीद बिन उक़्बा से एक बहुत ही उम्दा बात सुनी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया ठीक है, मोमिन के दिल में पाक बात उतरती है और वह उसके सीने में आ जाती है। फिर वह उसे ज़बान से बयान करता है। वह बात चूँकि भली होती है, भले सुनने वाले उसे अपने दिल में बैठाते हैं। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। मुस्नद अहमद में हदीस है कि जो शख़्स बहुत सी बातें सुने फिर उनमें जो सबसे ख़राब हो उसे बयान करे, उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स बकरियों वाले से एक बकरी माँगे वह उसे कहे कि जा उस रेवड़ में से तुझे जो पसन्द हो ले ले, यह जाये और रेवड़ के कुत्ते का कान पकड़ कर ले जाये। एक और हदीस में है कि हिक्मत का कलिमा मोमिन की गुमशुदा दौलत है, जहाँ उसे पाये ले ले।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ○ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ○ لَيْسَ عَلَيْكُمْ	ऐ ईमान वालो! तुम अपने (ख़ास रहने के) घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल मत हो, जब तक कि (उनसे) इजाज़त हासिल न कर लो। और (इजाज़त लेने से पहले) उनके रहने वालों को सलाम न कर लो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है। (यह बात तुमको इसलिए बतलाई है) ताकि तुम ख़्याल रखो (और इस पर अ़मल करो)। (27) फिर अगर उन घरों में तुमको कोई (आदमी) मालूम न हो तो (भी) उन घरों में न जाओ, जब तक कि तुमको (इजाज़त देने वाले की जानिब से) इजाज़त न दी जाए। और अगर तुमसे (इजाज़त लेने के वक़्त) यह कह दिया जाए कि (इस वक़्त) लौट जाओ, तो तुम लौट आया करो, यही बात तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे आमाल की सब ख़बर है। (अगर ख़िलाफ़ करोगे तो सज़ा के मुस्तहिक़ होगे) (28) तुमको ऐसे मकानों में चले जाने का गुनाह न होगा जिनमें (घर के तौर पर)

Maktab E Ashraf

جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝

कोई न रहता हो, उनमें तुम्हारी कुछ इस्तेमाली ज़रूरत हो। और तुम जो कुछ ज़ाहिरी तौर पर करते हो और जो पोशीदा तौर पर करते हो अल्लाह तआ़ला सब जानता है। (29)

किसी के घर में इजाज़त के बग़ैर दाख़िल मत होओ

शरई अदब बयान हो रहा है कि किसी के घर में दाख़िल होने से पहले इजाज़त माँगो। जब इजाज़त मिले जाओ। पहले सलाम करो, अगर पहली बार की इजाज़त तलबी पर जवाब न मिले तो फिर इजाज़त माँगो, तीन मर्तबा इजाज़त चाहो, अगर फिर भी इजाज़त न मिले तो लौट जाओ। एक सही हदीस में है कि हज़रत अबू मूसा रज़ि. हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. के पास गये। तीन दफ़ा इजाज़त माँगी, जब कोई न बोला तो आप वापस लौट गये। थोड़ी देर में हज़रत उमर रज़ि. ने लोगों से कहा देखो अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस आना चाहते हैं, उन्हें बुला लो। लोग गये, देखा तो वह चले गये हैं। वापस आकर हज़रत उमर रज़ि. को ख़बर दी। दोबारा जब हज़रत अबू मूसा और हज़रत उमर रज़ि. की मुलाक़ात हुई तो हज़रत उमर ने पूछा आप वापस क्यों चले गये थे? जवाब दिया कि हुज़ूरे पाक सल्ल. का हुक्म है कि तीन दफ़ा इजाज़त चाहने के बाद भी अगर इजाज़त न मिले तो वापस हो जाओ, मैंने तीन बार इजाज़त चाही, जब जवाब न आया तो मैं इस हदीस पर अ़मल करके वापस लौट गया। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया इस पर किसी गवाह को पेश करो वरना मैं तुम्हें सज़ा दूँगा। आप वहाँ से उठकर अन्सार के एक मजमे में पहुँचे, सारा वाक़िआ़ उनसे बयान किया और फ़रमाया कि तुममें से किसी ने अगर हुज़ूर सल्ल. का यह हुक्म सुना हो तो मेरे साथ चल कर उमर से कह दे। अन्सार ने कहा यह मसला तो आ़म है, बेशक हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है, हम सबने सुना है, हम अपने सबसे नव-उम्र (थोड़ी उम्र के) लड़के को आपके साथ कर देते हैं, यही गवाही दे आयेंगे। चुनाँचे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. गये और हज़रत उमर रज़ि. से जाकर कहा कि मैंने भी हुज़ूर से यही सुना है। हज़रत उमर रज़ि. उस वक़्त अफ़सोस करने लगे कि बाज़ारों के लेन-देन (यानी तिजारत की व्यस्तता) ने मुझे इस मसले से ग़ाफ़िल रखा।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि. से इजाज़त माँगी, फ़रमाया अस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाह। हज़रत सअ़द ने जवाब में 'व-अ़लैकुमुस्सलाम व रह्मतुल्लाह' तो कह दिया लेकिन इतनी धीमी आवाज़ से कि आप न सुनें। चुनाँचे तीन बार यही हुआ। हुज़ूरे पाक सलाम करते, आप जवाब देते लेकिन इस तरह कि हुज़ूर सल्ल. सुनें नहीं। उसके बाद आप वहाँ से वापस लौट चले। हज़रत सअ़द रज़ि. आपके पीछे लपके हुए आये और कहने लगे- या रसूलल्लाह आपकी तमाम आवाज़ें मेरे कानों में पहुँच रही थीं, मैंने हर सलाम का जवाब भी दिया लेकिन इस ख़्याल से कि मैं आपकी बहुत सारी दुआयें लूँ और ज़्यादा बरकत हासिल करूँ, आपको सुनाई न दे इस तरह जवाब दिया। आप चलिये तशरीफ़ रखिये। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. आ गये। उन्होंने आपके सामने किशमिश लाकर रखीं। आपने उसमें से खाया और फ़ारिग़ होकर फ़रमाने लगे- तुम्हारा खाना नेक लोगों ने खाया, फ़रिश्ते तुम पर रहमत भेज रहे हैं, तुम्हारे यहाँ रोज़ेदारों ने रोज़ा खोला।

एक और रिवायत में है कि जिस वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने सलाम किया और हज़रत सअ़द रज़ि. ने आहिस्ता से जवाब दिया तो उनके लड़के कैस ने अ़र्ज़ किया कि आप हुज़ूर सल्ल. को इजाज़त क्यों नहीं देते? आपने फ़रमाया ख़ामोश रहो, देखो हुज़ूर सल्ल. दोबारा सलाम कहेंगे, हमें दोबारा आपकी दुआ़ मिलेगी। उसमें यह भी है कि उनके यहाँ जाकर हुज़ूर सल्ल. ने गुस्ल किया, हज़रत सअ़द रज़ि. ने ज़ाफ़रान या वरस से रंगी हुई एक चादर पेश की, जिसे आपने जिस्मे मुबारक से लपेट लिया, फिर हाथ उठाकर हज़रत सअ़द रज़ि. के लिये दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! सअ़द बिन उबादा की आल (औलाद और नस्ल) पर अपना दुरूद व रहमत नाज़िल फ़रमा। फिर हुज़ूर सल्ल. ने वहीं खाना खाया। जब वापस जाने का इरादा किया तो हज़रत सअ़द रज़ि. अपने गधे पर पालान कस लाये। हुज़ूर सल्ल. की सवारी के लिये उसे पेश किया और अपने लड़के कैस से कहा तुम हुज़ूरे पाक के साथ-साथ जाओ। यह साथ चले मगर हुज़ूर सल्ल. ने उनसे फ़रमाया कैस आओ तुम भी सवार हो जाओ। उन्होंने कहा हुज़ूर मुझसे तो यह न हो सकेगा। आपने फ़रमाया दो बातों में से एक तुम्हें ज़रूर करनी होगी, या तो मेरे साथ इस जानवर पर सवार हो जाओ या वापस चले जाओ। हज़रत कैस रज़ि. ने वापस जाना मन्ज़ूर कर लिया।

यह बात याद रहे कि इजाज़त माँगने वाला घर के दरवाज़े के बिल्कुल सामने खड़ा न रहे बल्कि दायें बायें थोड़ा सा खिसक कर खड़ा रहे। क्योंकि अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. जब किसी के यहाँ जाते तो उसके दरवाज़े के बिल्कुल सामने खड़े न होते बल्कि इधर या उधर थोड़ा दूर होकर ज़ोर से सलाम कहते, उस वक़्त तक दरवाज़ों पर पर्दे भी लटके न रहा करते थे। हुज़ूर सल्ल. के मकान के दरवाज़े के सामने ही खड़े होकर एक शख़्स ने इजाज़त माँगी तो आपने उसे तालीम दी कि नज़र न पड़े इसी लिये इजाज़त मुक़र्रर की गयी है, फिर दरवाज़े के सामने खड़े होकर आवाज़ देने के क्या मायने? या तो ज़रा सा इधर हो जाओ या उधर। एक और हदीस में है कि अगर कोई तेरे घर में तेरी बिना इजाज़त के झाँकने लगे और तू उसे कंकर मारे जिससे उसकी आँख फूट जाये तो तुझे कोई गुनाह न होगा।

हज़रत जाबिर एक मर्तबा अपने वालिद मरहूम के क़र्ज़े की अदायेगी की फ़िक्र में हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए। दरवाज़ा खटखटाने लगे तो आपने पूछा कौन साहिब हैं? हज़रत जाबिर रज़ि. ने कहा मैं। आपने फ़रमाया मैं मैं? गोया आपने इस कहने को नापसन्द फ़रमाया, क्योंकि "मैं" कहने से यह तो मालूम नहीं हो सकता कि कौन है, जब तक कि नाम या अपनी पहचान न बताई जाये। "मैं" तो हर शख़्स अपने लिये कह सकता है। पस इजाज़त तलब करने का असली मक़सूद हासिल नहीं हो सकता।

सफ़वान बिन उमैया जब मुसलमान हो गये एक मर्तबा कलदा बिन हंबल को आपने रसूलुल्लाह सल्ल. के पास भेजा। आप उस वक़्त वादी के ऊँचे हिस्से में थे। यह सलाम किये बग़ैर और इजाज़त लिये बग़ैर ही आपके पास पहुँच गये। आपने फ़रमाया लौट जाओ और कहो "अस्सलामु अ़लैकुम, क्या मैं आऊँ?" एक और हदीस में है कि क़बीला बनू आ़मिर का एक शख़्स आपके घर आया और कहने लगा मैं अन्दर आ सकता हूँ? आपने गुलाम से फ़रमाया जाओ और उसे इजाज़त माँगने का तरीक़ा सिखाओ कि पहले तो सलाम करे और फिर मालूम करे। उस शख़्स ने सुन लिया और इसी तरह सलाम करके इजाज़त चाही, आपने इजाज़त दे दी और वह अन्दर आ गये। एक और हदीस में है कि आपने अपनी ख़ादिमा से फ़रमाया था। (तिर्मिज़ी) एक और हदीस में है कि कलाम से पहले सलाम होना चाहिये। यह हदीस ज़ईफ़ (कमज़ोर) है, तिर्मिज़ी में मौजूद है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. क़ज़ा-ए-हाजत (पाख़ाने की ज़रूरत) से फ़ारिग़ होकर आ रहे थे लेकिन धूप की

Maktaba Ashraf

ताब न ला सके तो एक क़ुरैशी की झोंपड़ी के पास पहुँचकर फ़रमाया अस्सलामु अ़लैकुम, क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ। उसने कहा सलामती से आ जाओ। आपने फिर यही कहा, उसने फिर यही जवाब दिया। आपके पाँव जल रहे थे, कभी इस क़दम पर सहारा लेते कभी उस क़दम पर। फ़रमाया यूँ कहो कि आ जाओ। उसने कहा आ जाओ, अब आप अन्दर तशरीफ़ ले गये।

हज़रत आ़यशा रज़ि. के पास चार औ़रतें गयीं, इजाज़त चाही- क्या हम अन्दर आ जायें? आपने फ़रमाया नहीं! तुममें जो इजाज़त का तरीक़ा जानती हो उससे कहो कि वह इजाज़त ले, तो एक औ़रत ने पहले सलाम किया फिर इजाज़त माँगी। हज़रत आ़यशा रज़ि. ने इजाज़त दे दी, फिर यही आयत पढ़कर सुनाई। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि अपनी माँ और बहनों के पास भी जाना हो तो ज़रूर इजाज़त ले लिया करो। अन्सार की एक औ़रत ने रसूले करीम सल्ल. से कहा कि मैं बाज़ दफ़ा घर में इस हालत में होती हूँ कि अगर मेरे बाप भी आ जायें या मेरा अपना लड़का भी उस वक़्त आ जाये तो मुझे बुरा मालूम होता है, क्योंकि वह हालत ऐसी नहीं होती कि उस वक़्त किसी की भी निगाह मुझ पर पड़े तो मैं नाख़ुश न होऊँ। और घर वालों में से कोई आ ही जाता है। उस वक़्त यह आयत उतरी। इब्ने अ़ब्बास फ़रमाते हैं- तीन आयतें हैं कि लोगों ने उन पर अ़मल छोड़ रखा है, एक तो यह कि अल्लाह फ़रमाता है तुममें सबसे ज़्यादा बुज़ुर्गी वाला वह है जो सबसे ज़्यादा ख़ौफ़े ख़ुदा रखता हो और लोगों का ख़्याल यह है कि सबसे बड़ा वह है जो सबसे ज़्यादा अमीर हो। और अदब की आयतें भी लोग छोड़ बैठे हैं। हज़रत अ़ता रह. ने पूछा मेरे घर में मेरी यतीम बहनें हैं जो एक ही घर में रहती हैं और मैं ही उन्हें पालता हूँ क्या उनके पास जाने के लिये मुझे इजाज़त की ज़रूरत है? आपने फ़रमाया हाँ! ज़रूर इजाज़त तलब किया करो। मैंने दोबारा यही सवाल किया कि शायद कोई छूट का पहलू निकल आये, लेकिन आपने फ़रमाया क्या तुम उन्हें नंगा देखना पसन्द करोगे? मैंने कहा नहीं। फ़रमाया फिर बिना इत्तिला के हरगिज़ उनके पास भी न जाओ।

हज़रत ताऊस रह. फ़रमाते हैं कि "मुहर्रमात-ए-अबदिया" (यानी वे औ़रतें जो मेहरम हैं, जिनसे निकाह हमेशा के लिये हराम है जैसे माँ बहन बेटी वग़ैरह) पर उनके बिना लिबास यानी नंगे होने की हालत में नज़र पड़ जाये तो इससे ज़्यादा बुराई मेरे नज़दीक और कोई नहीं। इब्ने मसऊद रज़ि. का क़ौल है कि अपनी माँ के पास भी घर में बग़ैर इत्तिला के न जाओ। अ़ता रह. से पूछा गया कि बीवी के पास भी बग़ैर इजाज़त के न जाया जाये? फ़रमाया यहाँ इजाज़त की ज़रूरत नहीं। यह क़ौल भी महमूल है इस पर कि उससे इजाज़त माँगने की ज़रूरत नहीं, फिर भी इत्तिला ज़रूर होनी चाहिये, मुम्किन है वह उस वक़्त ऐसी हालत में हो कि वह नहीं चाहती कि शौहर भी उस हालत में उसे देखे। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मेरे शौहर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद जब मेरे पास घर में आते तो खंखार कर आते, कभी बुलन्द आवाज़ से दरवाज़े के बाहर किसी से बातें करने लगते ताकि घर वालों को आपके आने की इत्तिला हो जाये। चुनाँचे हज़रत मुजाहिद रह. ने "तस्तानिसू" के मायने भी यही किये हैं कि खंखार दे या जूतियों की आहट सुना दे।

एक हदीस में है कि सफ़र से रात के वक़्त बिना इत्तिला के घर आ जाने से हुज़ूर सल्ल. ने मना फ़रमाया है, क्योंकि इससे घर वालों की ख़ियानत (कमियों) को छुपकर टटोलना है। आप एक मर्तबा एक सफ़र से सुबह के वक़्त आये तो हुक्म दिया कि बस्ती के पास लोग उतरें ताकि मदीने में ख़बर मशहूर हो जाये, शाम को अपने घर वालों में जाना, इसलिये कि इस बीच में औ़रतें अपनी सफ़ाई-सुथराई कर लें। एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. से पूछा गया- सलाम तो हम जानते हैं लेकिन "इस्तीनास" का तरीक़ा क्या

है? आपने फ़रमाया "सुब्हानल्लाह" या "अल्हम्दु लिल्लाह" या "अल्लाहु अकबर" बुलन्द आवाज़ से कह देना, या खंखार देना, जिससे घर वाले मालूम कर लें कि फ़ुलाँ आ रहा है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि तीन बार की इजाज़त इसलिये मुक़र्रर की है कि पहली दफ़ा तो घर वाले मालूम कर लें कि फ़ुलाँ है, दूसरी दफ़ा में वे संभल जायें और होशियार हो जायें, तीसरी दफ़ा में अगर वे चाहें इजाज़त दें चाहें मना कर दें। जब इजाज़त न मिले तो फिर दरवाज़े पर ठहरा रहना बुरा है। लोगों के अपने काम और मशग़ले ऐसे ज़रूरी होते थे लेकिन सलाम न करते थे, किसी के यहाँ जाते इजाज़त नहीं लेते थे, यूँही जा धमके, फिर कह दिया मैं आ गया हूँ, तो कई बार यह घर वाले पर भारी और नागवार गुज़रता। ऐसा भी होता कि वह अपने घर में कभी ऐसे हाल में होता कि उसे इसका आना बहुत बुरा लगता। अल्लाह तआ़ला ने ये तमाम बुरे दस्तूर अच्छे आदाब सिखाकर बदल दिये। इसी लिये फ़रमाया कि यही तरीक़ा तुम्हारे लिये बेहतर है। इसमें मकान वाले और आने वाले दोनों को राहत है। ये चीज़ें तुम्हारी नसीहत और भलाई की हैं।

अगर वहाँ किसी को न पाओ तो बिना इजाज़त के अन्दर न जाओ। क्योंकि यह दूसरे की मिल्क में दख़ल देना है, जो नाजायज़ है। मालिके मकान को हक़ है कि अगर वह चाहे तो इजाज़त दे, चाहे रोक दे। अगर तुम्हें कहा जाये कि लौट जाओ तो तुम्हें वापस चले जाना चाहिये। इसमें बुरा मानने की बात नहीं, बल्कि यह तो बड़ा मुनासिब तरीक़ा है। बाज़ मुहाजिरीन सहाबा अफ़सोस किया करते थे कि हमें अपनी पूरी उम्र में इस आयत पर अ़मल करने का मौक़ा नहीं मिला, कोई हमसे कहता लौट जाओ और हम इस आयत पर अ़मल करते हुए वहाँ से वापस हो जाते। इजाज़त न मिलने पर दरवाज़े पर ठहरे रहने को भी मना फ़रमा दिया। अल्लाह तुम्हारे अ़मलों से बाख़बर है।

यह आयत (यानी इसका हुक्म) अगली आयत से मख़्सूस है, इसमें उन घरों में बिना इजाज़त जाने की छूट और रियायत है जहाँ कोई न हो, और वहाँ उसका कोई सामान वग़ैरह हो। जैसे कि मेहमान-ख़ाना वग़ैरह। यहाँ जब पहली मर्तबा इजाज़त मिल गयी फिर हर बार की इजाज़त ज़रूरी नहीं। तो गोया यह आयत पहली आयत से इस्तिसना (हुक्म में उससे बाहर और निकली हुई) है। इसी तरह के ऐसे ही ताजिरों के गोदाम, मुसाफ़िर ख़ाने वग़ैरह हैं, लेकिन पहली बात ज़्यादा ज़ाहिर है। वल्लाहु आलम

ज़ैद कहते हैं कि इससे मुराद "बैतुश-शेअ़र" है (वह नज़्म वाला कलाम जो दो पंक्तियों वाला हो)।

आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिए कि अपनी निगाहें नीची रखें, और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यह उनके लिए ज़्यादा सफ़ाई की बात है। बेशक अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर है जो कुछ लोग किया करते हैं। (30)	قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ؀

मोमिन औरतों को किस तरह रहना चाहिये?

हुक्म होता है कि जिन चीज़ों का देखना हराम कर दिया है उन पर निगाहें न डालो। हराम चीज़ों से आँखें नीची कर लो। अगर मान लो अचानक नज़र पड़ जाये तो भी दोबारा नज़र भरकर न देखो। सही मुस्लिम में है कि हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से अचानक निगाह के बारे में पूछा तो आपने फ़रमाया अपनी निगाह फ़ौरन हटा लो। नीची निगाह करना, इधर या उधर देखने लग जाना,

Maktab E Ashraf

ख़ुदा की हराम की हुई चीज़ का न देखना आयत का मक़सूद है। हज़रत अ़ली रज़ि. से आप सल्ल. ने फ़रमाया- अ़ली! नज़र पर नज़र न जमाओ, अचानक जो नज़र पड़ गयी वह तो माफ़ है, जान-बूझकर माफ़ नहीं। हुज़ूर सल्ल. ने एक मर्तबा फ़रमाया- रास्तों पर बैठने से बचो। लोगों ने कहा हुज़ूर! काम-काज के लिये वह तो ज़रूरी है। आपने फ़रमाया अच्छा तो रास्तों का हक़ अदा करते रहो। उन्होंने कहा वह क्या? फ़रमाया नीची निगाह रखना, किसी को तकलीफ़ न देना, सलाम का जवाब देना, अच्छी बातों की तालीम करना, बुरी बातों से रोकना। आप फ़रमाते हैं कि छह चीज़ों के तुम ज़ामिन (ज़िम्मेदार) हो जाओ मैं तुम्हारे लिये जन्नत का ज़ामिन (ज़मानती) होता हूँ।

1. बात करते हुए झूठ न बोलो।
2. अमानत में ख़ियानत न करो।
3. वायदा-ख़िलाफ़ी न करो।
4. नज़र नीची रखो।
5. हाथों को ज़ुल्म से बचाये रखो।
6. अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो (यानी पाकदामन रहो)।

सही बुख़ारी में है कि जो शख़्स ज़बान और शर्मगाह को ख़ुदा के फ़रमान के मातहत रखे मैं उसके लिये जन्नत का ज़ामिन (ज़मानती) हूँ। उबैदा का क़ौल है कि जिस चीज़ का नतीजा अल्लाह की नाफ़रमानी हो वह कबीरा (बड़ा) गुनाह है। चूँकि निगाह पड़ने के बाद दिल में फ़साद खड़ा होता है इसलिये शर्मगाह को बचाने के लिये नज़रें नीची रखने का हुक्म हुआ, नज़र भी इब्लीस (शैतान) के तीरों में से एक तीर है।

पस ज़िना से बचना भी ज़रूरी है और निगाह नीची रखना भी ज़रूरी है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करो मगर अपनी बीवियों और बाँदियों से। हराम की हुई चीज़ों को न देखने से दिल पाक होता है और दीन साफ़ होता है। जो लोग अपनी निगाह हराम चीज़ों पर नहीं डालते अल्लाह उनकी आँखों में नूर भर देता है और उनके दिल भी नूरानी कर देता है। आप फ़रमाते हैं- जिसकी नज़र किसी औरत के हुस्न व जमाल पर पड़ जाये, फिर वह अपनी निगाह हटा ले, अल्लाह तआ़ला उसके बदले एक ऐसी इबादत उसे अ़ता फ़रमाता है जिसकी लज़्ज़त वह अपने दिल में पाता है। इस हदीस की सनदें तो ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं मगर है यह रग़बत (दिलचस्पी) दिलाने के बारे में। और ऐसी हदीसों में सनद की इतनी ज़्यादा देखभाल नहीं होती। तबरानी में है कि या तो तुम अपनी निगाह नीची रखोगे और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करोगे और अपने मुँह सीधे रखोगे या अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतें बदल देगा। अल्लाह हम सब को अपने अ़ज़ाबों से हिफ़ाज़त फ़रमाये।

फ़रमाते हैं कि 'नज़र' (निगाह) शैतान के तीरों में से एक तीर है। जो शख़्स ख़ौफ़े ख़ुदा से अपनी निगाह रोके रखे अल्लाह उसके दिल में ऐसा ईमानी नूर पैदा कर देता है कि उसे मज़ा आने लगता है। लोगों का कोई अ़मल अल्लाह पर पोशीदा (छुपा) नहीं। वह आँखों की ख़ियानत को, दिल के भेदों को जानता है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि इनसान के ज़िम्मे उसके ज़िना का हिस्सा लिख दिया गया है, जिसे वह लाज़िमी तौर पर पा लेगा। आँखों का ज़िना देखना है, ज़बान का ज़िना बोलना है, कानों का ज़िना सुनना है, हाथों का ज़िना थामना (किसी चीज़ को छूना और पकड़ना) है, पैरों का ज़िना चलना है, दिल का ज़िना ख़्वाहिश तमन्ना और आरज़ू करना है, फिर शर्मगाह या तो सबको सच्चा कर देती है या सबको झूठा बना देती है। (बुख़ारी शरीफ़)

कभी बदन के इन अंगों के बुराई की तरफ़ माईल होने के बाद या तो वह आगे बढ़कर ज़िना कर ही बैठता है तो अपनी हिमाकत से जाता है, या अल्लाह तआ़ला बड़े गुनाह से उसे बचा लेता है और सिर्फ़ इन्हीं बदनी अंगों का गुनाह रह जाता है जो तौबा और दूसरे नेक काम करने से आसानी से मिट जाता है। **(मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)**

अकाबिर बुज़ुर्ग लड़कों को घूरा-घूरी (ताक-झाँक) से भी मना करते थे। सूफ़ी उलेमा में बहुतों ने इस बारे में बहुत कुछ सख़्ती की है। उलेमा की जमाअ़त ने इसे बिल्कुल हराम कहा है, और बाज़ों ने इसे कबीरा गुनाह फ़रमाया है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर आँख क़ियामत के दिन रोयेगी मगर वह आँख जो ख़ुदा की हराम की हुई चीज़ों के देखने से बन्द रहे, और वह आँख जो ख़ुदा की राह में जागती रहे, और वह आँख जो ख़ौफ़े ख़ुदा से रो दे, चाहे उसमें से आँसू सिर्फ़ मक्खी के सर के बराबर ही निकला हो (यानी अल्लाह तआ़ला के यहाँ इतने से रोने की भी बड़ी क़ीमत है)।

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ
وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ
اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ
عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا
لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ
اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ
بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ
نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ
غَيْرِ اُولِى الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ
الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۖ

और (इसी तरह) मुसलमान औ़रतों से (भी) कह दीजिए कि (वे भी) अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, और अपनी ज़ीनत "यानी बनाव-सिंघार" (की जगहों) को ज़ाहिर न करें, मगर जो उस (ज़ीनत की जगह) में से (आ़म तौर पर) खुला रहता है (जिसके हर वक़्त छुपाने में हर्ज है), और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहा करें और अपनी ज़ीनत (की ज़िक्र हुई जगहों) को (किसी पर) ज़ाहिर न होने दें मगर अपने शौहरों पर या अपने (मेहरम रिश्तेदारों पर, यानी) बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने (सगे, माँ-शरीक और बाप-शरीक) भाईयों पर, या अपने भाईयों के बेटों पर या अपनी (सगी, माँ-शरीक और बाप-शरीक) बहनों के बेटों पर या अपनी औ़रतों पर, या अपनी बाँदियों पर, या उन मर्दों पर जो तुफ़ैली (के तौर पर रहते) हों और उनको ज़रा भी तवज्जोह न हो, या ऐसे लड़कों पर जो औ़रतों के पर्दे की बातों से अभी नावाक़िफ़ हैं (मुराद वे लड़के हैं जो अभी बालिग़ होने के क़रीब न हुए हों)। और अपने पाँव को ज़ोर से न रखें कि उनका छुपा हुआ

Maktab E Ashraf

وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ۗ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۝	ज़ेवर मालूम हो जाए। और मुसलमानो! (तुमसे जो इन अहकाम में कोताही हो गई हो तो) तुम सब अल्लाह के सामने तौबा करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (31)

औरतों से संबन्धित अहकाम की एक लम्बी फ़ेहरिस्त

यहाँ अल्लाह तआ़ला मोमिन औरतों को चन्द हुक्म देता है ताकि उनके ग़ैरत वाले मर्दों को तस्कीन हो और जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) की बुरी रस्में निकल जायें। मन्क़ूल है कि असमा बिन्ते मुर्सद रज़ियल्लाहु अ़न्हु का मकान बनू हारिसा के मौहल्ले में था। उनके पास औ़रतें आती थीं और दस्तूर के मुताबिक़ अपने पैरों के ज़ेवर, सीने और बाल खोले हुए आया करती थीं। हज़रत असमा रज़ि. ने कहा यह कैसी बुरी बात है, इस पर ये आयतें उतरीं। पस हुक्म होता है कि मुसलमान औ़रतों को भी अपनी निगाहें नीची रखनी चाहियें, सिवाय अपने शौहर के किसी को शहवत व इच्छा की नज़र से न देखना चाहिये। अजनबी मर्दों की तरफ़ तो देखना ही हराम है चाहे शहवत (जिन्सी इच्छा) से हो चाहे बग़ैर शहवत के।

अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. के पास हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा बैठी थीं कि हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अ़न्हु तशरीफ़ ले आये। यह वाक़िआ़ पर्दे की आयतें उतरने के बाद का है। हुज़ूर सल्ल. ने उनसे फ़रमाया कि पर्दा कर लो। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह वह तो नाबीना (अंधे) हैं, न हमें देखेंगे न पहचानेंगे। आपने फ़रमाया तुम तो नाबीना नहीं हो कि उसे न देखो? हाँ बाज़ उलेमा ने बिना शहवत की नज़र को हराम नहीं कहा। उनकी दलील वह हदीस है जिसमें है कि ईद वाले दिन हबशी लोगों ने मस्जिद में हथियारों के कर्तब शुरू किये और उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को हुज़ूर सल्ल. ने अपने पीछे खड़ा कर लिया। आप देख रही थीं, यहाँ तक कि जी भर गया और थक कर चली गयीं। औ़रतों को भी अपनी अ़स्मत की हिफ़ाज़त करनी चाहिये, बदकारी से दूर रहें, अपना जिस्म किसी को न दिखायें। अजनबी ग़ैर-मर्दों के सामने अपनी ज़ीनत (सिंघार) की किसी चीज़ को जाहिर न करें, हाँ जिसका छुपाना मुम्किन ही न हो तो और बात है। जैसे चादर और ऊपर का कपड़ा वग़ैरह जिनका पोशीदा रखना औ़रतों के लिये नामुम्किन है।

यह भी मन्क़ूल है कि इससे मुराद चेहरा, पहुँचों तक के हाथ और अंगूठी है, लेकिन हो सकता है इससे मुराद यह हो कि यही ज़ीनत (बनाव-सिंघार) के वो स्थान और मौके़ हैं जिनके ज़ाहिर करने से शरीअ़त ने मनाही कर दी है, जबकि हज़रत अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है कि वह अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें यानी बालियाँ हार, पाँव का ज़ेवर वग़ैरह। फ़रमाते हैं कि ज़ीनत दो तरह की है एक तो वह है जिसे शौहर ही देखे जैसे अंगूठी, कंगन, और दूसरी ज़ीनत (सिंघार) वह जिसे ग़ैर भी देखें जैसे ऊपर का कपड़ा। ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि इस आयत में जिन रिश्तेदारों का ज़िक्र है उनके सामने तो कंगन दोपटिया बालियाँ खुल जायें तो हर्ज नहीं, लेकिन और लोगों के सामने सिर्फ़ अंगूठियाँ ज़ाहिर हो जायें तो पकड़ नहीं। एक और रिवायत में अंगूठियों के साथ ही पैर की पाज़ेब का भी ज़िक्र है। हो सकता है कि "जो कि ज़ाहिर और खुला रहता है" की तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह ने मुँह और पहुँचों से की हो जैसे अबू दाऊद में है कि असमा बिन्ते

अबी बक्र रज़ि. हुज़ूरे पाक सल्ल. के पास आयीं, कपड़े बारीक पहने हुए थीं तो आपने मुँह फेर लिया और फ़रमाया जब औरतें बलूग़त (बालिग़ होने की उम्र) को पहुँच जायें तो सिवाय इसके और इसके यानी चेहरे के और पहुँचों के उसको बदन का कोई अंग दिखाना ठीक नहीं। लेकिन यह हदीस मुर्सल है। ख़ालिद बिन दुरैक रह. इसे हज़रत आयशा रज़ि. से रिवायत करते हैं और उनकी हज़रत आयशा रज़ि. से मुलाक़ात साबित नहीं। वल्लाहु आलम

औरतों को चाहिये कि अपने दुपट्टों से या और कपड़े से बुक्कल मार लें ताकि सीना और गले का ज़ेवर छुपा रहे। जाहिलीयत (इस्लाम से पहले के ज़माने) में इसका भी रिवाज न था, औरतें अपने सीनों पर कुछ नहीं डालतीं थीं, बहुत सी बार गर्दन बाल चोटी बालियाँ वग़ैरह साफ़ नज़र आती थीं। एक दूसरी आयत में है ऐ नबी! अपनी बीवियों और मुसलमान औरतों से कह दीजिए कि अपनी चादरें अपने ऊपर लटका लिया करें ताकि वे पहचान ली जायें और सताई न जायें (यानी उनकी एहतियात देखकर आवारा मर्द की हिम्मत ही उन्हें छेड़ने की न हो, अगर वे खुद ही अपने को बना-संवार कर खुले आम सामने आयेंगी तो यह एक तरह से आवारा मर्दों को इस बात की दावत देना है कि हमारे ऊपर हाथ डालो)।

'खुमुर' बहुवचन है ख़िमार का, ख़िमार कहते हैं हर उस चीज़ को जो ढाँप ले। चूँकि दुपटिया सर को ढाँप लेती है इसलिये उसे भी ख़िमार कहते हैं। पस औरतों को चाहिये कि या तो अपनी ओढ़नी से या किसी और कपड़े से अपना गला और सीना भी छुपाये रखें। हज़रत आयशा रज़ि. फ़रमाती हैं कि अल्लाह तआला उन औरतों पर रहम फ़रमाये जिन्होंने शुरू-शुरू में हिजरत की थी कि जब यह आयत उतरी उन्होंने अपनी चादरों को फाड़कर दुपट्टे बनाये। बाज़ ने अपने तहबंद के किनारे काटकर उनसे सर ढक लिया। एक मर्तबा हज़रत आयशा रज़ि. के पास औरतों ने क़ुरैश की औरतों की फ़ज़ीलत बयान करनी शुरू की तो आपने फ़रमाया उनकी फ़ज़ीलत की क़ायल मैं भी हूँ लेकिन वल्लाह मैंने अन्सार की औरतों से बेहतर और अफ़ज़ल औरतें नहीं देखीं, उनके दिलों में किताबुल्लाह की तस्दीक़ और कामिल ईमान है, वे बेशक क़ाबिले क़द्र हैं।

सूरः नूर की जब यह आयतः

وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ............الخ

नाज़िल हुई (यानी वे अपने दुपट्टे अपने गलों पर डाले रहा करें) और उनके मर्दों ने घर में जाकर यह आयत उन्हें सुनाई, उसी वक़्त उन औरतों ने इस पर अ़मल कर लिया और सुबह की नमाज़ में वे आयीं तो सबके सरों पर दुपट्टे मौजूद थे। गोया ढोल रखे हुए हैं।

इसके बाद उन मर्दों का बयान फ़रमाया जिनके सामने औरत हो सकती है और बग़ैर बनाव-सिंगार के उनके सामने शर्म व हया के साथ आ-जा सकती है, चाहे ज़ाहिरी बनाव-सिंगार की बाज़ चीज़ों पर भी उनकी नज़र पड़ जाये। सिवाय शौहर के कि उसके सामने तो औरत अपना पूरा बनाव-सिंगार करे अगरचे चचा और मामूँ भी मेहरम रिश्तेदार हैं लेकिन उनका नाम यहाँ नहीं लिया गया कि मुम्किन है वे अपने बेटों के सामने उनकी ख़ूबसूरती और अच्छाई बयान करें। इसलिये उनके सामने बग़ैर दुपट्टे के न आना चाहिये। फिर फ़रमाया कि तुम्हारी औरतें यानी मुसलमान औरतों के सामने भी इस ज़ीनत के इज़हार में कोई हर्ज नहीं। 'ज़िम्मी' लोगों की औरतों के सामने इसलिये रुख़्सत (छूट और रियायत) नहीं दी गयी कि बहुत मुम्किन है वे अपने मर्दों में उनकी ख़ूबसूरती और ज़ीनत का ज़िक्र करें। मोमिन औरतों से भी अगरचे यह

Maktab E Ashraf

ख़ौफ़ है मगर शरीअ़त ने चूँकि इसे हराम क़रार दिया है इसलिये मुसलमान औ़रतें ऐसा न करेंगी, लेकिन ज़िम्मी काफ़िरों की औ़रतों को इससे कौनसी चीज़ रोक सकती है?

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि किसी औ़रत को जायज़ नहीं कि दूसरी औ़रत से मिलकर उसके औसाफ़ (हुस्न व ख़ूबियाँ) अपने शौहर के सामने इस तरह बयान करे कि गोया वह उसे देख रहा है। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि. को लिखा- मुझे मालूम हुआ है कि बाज़ मुसलमान औ़रतें हम्माम में जाती हैं, उनके साथ मुश्रिक औ़रतें भी होती हैं। सुनो किसी मुसलमान औ़रत के लिये हलाल नहीं कि वह अपना जिस्म किसी ग़ैर-मुस्लिम औ़रत को दिखाये। हज़रत मुजाहिद रह. भी "औ निसाइहिन्-न" की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि इससे मुराद मुसलमान औ़रतें हैं, तो उनके सामने वह ज़ीनत ज़ाहिर कर सकती हैं जो अपने मेहरम रिश्तेदारों के सामने ज़ाहिर कर सकती हैं, यानी गला, बालियाँ और हार। पस मुसलमान औ़रत को नंगे सर किसी मुश्रिक औ़रत के सामने होना जायज़ नहीं। एक रिवायत में है कि जब सहाबा रज़ि. बैतुल-मुक़द्दस पहुँचे तो उनकी बीवियों के लिये दाया यहूदी और ईसाई औ़रतें ही थीं। पस अगर यह साबित हो जाये तो महमूल होगा ज़रूरत पर, या उन औ़रतों की ज़िल्लत पर (यानी यह कि उन औ़रतों से मुसलमान औ़रतें ख़िदमत लिया करती थीं)। फिर उसमें ग़ैर-ज़रूरी जिस्म का खुलना भी नहीं। वल्लाहु आलम। हाँ मुश्रिक औ़रतों में से जो बाँदियाँ हों वे इस हुक्म से ख़ारिज (बाहर) हैं।

बाज़ कहते हैं कि ग़ुलामों का भी यही हुक्म है। अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास उनको देने को एक ग़ुलाम लेकर आये। हज़रत फ़ातिमा रज़ि. उसे देखकर ख़ुद को अपने दुपट्टे में छुपाने लगीं, लेकिन चूँकि कपड़ा छोटा था, सर ढाँपती थीं तो पैर खुल जाते थे और पैर ढाँपती थीं तो सर खुल जाता था। हुज़ूर सल्ल. ने यह देखकर फ़रमाया बेटी क्यों तकलीफ़ करती हो, मैं तो तुम्हारा वालिद (बाप) हूँ और यह तुम्हारा ग़ुलाम है। इब्ने अ़साकिर की रिवायत में है कि उस ग़ुलाम का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन मिस्अ़दा था। यह फ़िज़ारी थे, बहुत ही काले स्याह। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि. ने उनकी परवरिश करके आज़ाद कर दिया था। सिफ़्फ़ीन की जंग में यह हज़रत मुआ़विया रज़ि. के साथ थे और हज़रत अ़ली रज़ि. के सख़्त मुख़ालिफ़ थे। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने औ़रतों से फ़रमाया तुममें से जिस किसी का मुकातब ग़ुलाम हो जिससे यह शर्त हो गयी कि इतना इतना रुपया दे दे तो तू आज़ाद, फिर उसके पास इतनी रक़म भी जमा हो गयी हो तो चाहिये कि उससे पर्दा करे। फिर बयान फ़रमाया कि नौकर-चाकर काम-काज करने वाले उन मर्दों के साथ जो मर्दानगी नहीं रखते, औ़रतों की ख़्वाहिश जिन्हें नहीं, इस मतलब के ही वे नहीं, उनका हुक्म भी मेहरम मर्दों का है। यानी उनके सामने भी अपनी ज़ीनत (सिंगार) के इज़हार में हर्ज नहीं। ये वे लोग हैं जो सुस्त हो गये हैं, औ़रतों के काम के ही नहीं। लेकिन वे मुख़न्नस और हिजड़े जो बद-ज़बान और बुराई फैलाने वाले होते हैं, उनका यह हुक्म नहीं जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में है कि एक ऐसा ही शख़्स हुज़ूर सल्ल. के घर आया था, चूँकि उसे इसी आयत के मातहत आपकी पाक बीवियों ने समझा, उसे मना न किया था, इत्तिफ़ाक़ से उसी वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. आ गये, उस वक़्त वह हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. के भाई अ़ब्दुल्लाह से कह रहा था कि अल्लाह तआ़ला जब ताईफ़ को फ़तह करायेगा तो मैं तुझे ग़ीलान की लड़की दिखाऊँगा कि आते हुए उसके पेट पर चार शिकनें (सलवटें) पड़ती हैं और वापस जाते हुए आठ नज़र आती हैं। इसे सुनते ही हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ख़बरदार! ऐसे लोगों को हरगिज़ न आने दिया करो। इससे पर्दा कर लो। चुनाँचे उसे मदीने से निकाल दिया गया। यह बेदा में रहने लगा, वहाँ से जुमा के रोज़ आ जाता और लोगों से खाने पीने को कुछ

Maktab E Ashraf

ले जाता।

छोटे बच्चों के सामने होने की इजाज़त है, जो अब तक औरतों के मख़्सूस हालात से वाक़िफ़ न हों। औरतों पर उनकी ललचाई नज़रें न पड़ती हों। हाँ जब वे इस उम्र को पहुँच जायें कि उनमें तमीज़ आ जाये, औरतों की ख़ूबियाँ उनकी निगाहों में जचने लगें, ख़ूबसूरत बदसूरत का फ़र्क़ मालूम कर लें, फिर उनसे भी पर्दा है चाहे वे पूरे जवान भी न हुए हों। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- लोगो! औरतों के पास जाने से बचो। पूछा गया कि या रसूलल्लाह! देवर जेठ? आपने फ़रमाया वे तो मौत हैं (यानी चूँकि वे हर वक़्त घर ही में रहते हैं, इसलिये हर हालत उनके सामने आती है, ऐसे में अगर उनके दिल में कोई बुरा इरादा आ जाये तो बचना मुश्किल है, इसलिये उनसे ज़्यादा एहतियात की ज़रूरत है)।

फिर फ़रमाया कि औरतें अपने पैरों को ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से मारकर न चलें। जाहिलीयत (इस्लाम से पहले के ज़माने) में अक्सर ऐसा होता था कि वे ज़ोर से पाँव ज़मीन पर रखकर चलती थीं ताकि पैर का ज़ेवर बजे। इस्लाम ने इससे मना फ़रमा दिया। पस औरत का कोई भी ऐसी हरकत करना मना है जिससे उसका कोई छुपा हुआ सिंगार खुल सके। उसे घर से इत्र और ख़ुशबू लगाकर बाहर निकलना भी मना है।

तिर्मिज़ी में है कि हर आँख ज़ानिया (बदकारी करने वाली) है। औरत जब इत्र लगाकर फूल पहनकर महकती हुई मर्दों की किसी मज्लिस के पास से गुज़रे तो वह ऐसी और ऐसी है, यानी ज़ानिया (बुराई वाली) है। अबू दाऊद में है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. को एक औरत ख़ुशबू से महकती हुई मिली, आपने उससे पूछा क्या तू मस्जिद से आ रही है? उसने कहा हाँ। फ़रमाया क्या तूने ख़ुशबू लगाई है? उसने कहा हाँ। आपने फ़रमाया मैंने अपने हबीब रसूले करीम सल्ल. से सुना है कि जो औरत इस मस्जिद में आने के लिये ख़ुशबू लगाये उसकी नमाज़ मक़बूल नहीं है जब तक कि वह लौटकर जनाबत की तरह ग़ुस्ल न करे (यानी जिस तरह नापाक आदमी पर ग़ुस्ल करना ज़रूरी और नापाकी को दूर करना ज़रूरी है इसी तरह बाहर आने से पहले औरत को ख़ुशबू वग़ैरह को अपने जिस्म से ख़त्म कर देना चाहिये)।

तिर्मिज़ी में है कि अपनी ज़ीनत (सिंगार और सिंगार की जगहों और अंगों) को ग़ैर-जगह ज़ाहिर करने वाली औरत की मिसाल क़ियामत के उस अंधेरे जैसी है जिसमें नूर न हो। अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मर्दों औरतों को रास्ते में मिले-जुले चलते हुए देखकर फ़रमाया- औरतो! तुम इधर-उधर हो जाओ, तुम्हें बीच राह में न चलना चाहिये। यह सुनकर औरतें दीवारों से लगी-लगी चलने लगीं, यहाँ तक कि उनके कपड़े दीवारों से रगड़ते।

फिर फ़रमाता है कि ऐ मोमिनो! मेरा कहा माना करो, इन नेक सिफ़तों (ख़ूबियों और अच्छी बातों) को ले लो, जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) की बुरी ख़स्लतों और आदतों से रुक जाओ। पूरी फ़लाह, निजात और कामयाबी उसी के लिये है जो ख़ुदा का फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) हो। उसके मना किये हुए कामों से रुक जाता हो। अल्लाह ही से हम मदद चाहते हैं।

और तुममें (यानी आज़ाद लोगों में) जो बेनिकाह हों तुम उनका निकाह कर दिया करो, और (इसी तरह) तुम्हारे ग़ुलामों और बाँदियों में से जो इस (निकाह के) लायक़ हो उसका भी। अगर वे लोग मुफ़्लिस होंगे तो ख़ुदा तआ़ला (अगर चाहेगा) उन को अपने फ़ज़्ल से ग़नी	وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ۗ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ

Maktaba E Ashraf

عَلِيْمٌ ○ وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَايَجِدُوْنَ
نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ط
وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ
خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ
اٰتٰكُمْ ط وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ
اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ط وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ
اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ع ○ ع ۴ ۱۰

"मालदार व ख़ुशहाल" कर देगा, और अल्लाह तआ़ला वुस्अ़त वाला है, ख़ूब जानने वाला है। (32) और ऐसे लोगों को कि जिनको निकाह की ताक़त व क़ुदरत नहीं, उनको चाहिए कि (अपने नफ़्स को) क़ाबू करें, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला (अगर चाहे) उनको अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे (फिर निकाह कर लें), और तुम्हारे मम्लूकों "यानी ग़ुलाम बाँदियों" में से जो मुकातब होने के इच्छुक हों तो (बेहतर है कि) उनको मुकातब बना दिया करो, अगर उनमें बेहतरी (के आसार) पाओ। और अल्लाह के (दिए हुए) उस माल में से उनको भी दो जो अल्लाह ने तुमको दे रखा है (ताकि जल्दी आज़ाद हो सकें) और अपनी (मिल्क में मौजूद) बाँदियों को ज़िना कराने पर मजबूर मत करो, (और ख़ास तौर पर) जबकि वे पाकदामन रहना चाहें, महज़ इसलिए कि दुनियावी ज़िन्दगी का कुछ फ़ायदा (यानी माल) तुम को हासिल हो जाए, और जो शख़्स उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किए जाने के बाद (उनके लिए) बख़्शने वाला, मेहरबान है। (33) और हमने तुम्हारे पास खुले-खुले अहकाम भेजे हैं, और जो लोग तुमसे पहले हो गुज़रे हैं उनकी बाज़ हिकायतें भी, और (ख़ुदा से) डरने वालों के लिए नसीहत की बातें (भेजी हैं)। (34)

निकाह

इसमें अल्लाह तआ़ला ने बहुत से अहकाम बयान फ़रमा दिये हैं। सबसे पहले निकाह का। उलेमा की जमाअ़त का ख़्याल है कि जो शख़्स निकाह की क़ुदरत (ताक़त व गुंजाईश) रखता हो उस पर निकाह करना वाजिब है। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि ऐ नौजवानो! तुममें से जो शख़्स निकाह की ताक़त रखता हो। उसे निकाह कर लेना चहिये। निकाह नज़र को नीची रखने वाला, शर्मगाह को बचाने वाला है। और जिसे ताक़त न हो वह लाज़िमी तौर पर रोज़े रखे, यही उसके लिये ख़स्सी होना है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सुनन में है, आप सल्ल. फ़रमाते हैं कि ज़्यादा औलाद जिनसे होने की उम्मीद हो उनसे निकाह करो ताकि नस्ल बढ़े, मैं तुम्हारे साथ दूसरी उम्मतों में फ़ख़्र करने वाला हूँ। एक रिवायत में है कि यहाँ तक कि

Maktab E Ashraf

कच्चे गिरे हुए बच्चे की गिनती के साथ भी।

"अयामा" बहुवचन है "ऐमुन" का। इमाम ज़ोहरी रह. कहते हैं कि अहले लुग़त के नज़दीक बिना बीवी का मर्द और बिना शौहर की औरत को 'ऐम' कहते हैं, चाहे वह शादी शुदा हो या ग़ैर-शादी शुदा हो। फिर और ज़्यादा रग़बत व तवज्जोह दिलाते हुए फ़रमाता है कि अगर वे (निकाह करने वाले) मिस्कीन भी होंगे तो खुदा उन्हें अपने फ़ज़्ल व करम से मालदार बना देगा। चाहे वे आज़ाद हों या ग़ुलाम।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. का क़ौल है कि तुम निकाह के बारे में ख़ुदा का हुक्म मानो वह तुमसे अपना वायदा पूरा करेगा। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि अमीरी को निकाह में तलब करो। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तीन क़िस्म के लोगों की मदद अल्लाह के ज़िम्मे है, निकाह करने वाला जो हराम कारी से बचने की नीयत से निकाह करे। वह तहरीर लिख देने वाला ग़ुलाम जिसका इरादा अदायेगी का हो। वह ग़ाज़ी (अल्लाह के रास्ते का मुजाहिद) जो ख़ुदा की राह में निकला हो। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

इसी की ताईद में वह रिवायत है जिसमें है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने उस शख़्स का निकाह एक औरत से करा दिया जिसके पास सिवाय तहबन्द के और कुछ न था, यहाँ तक कि लोहे की अंगूठी भी उसके पास से नहीं निकली थी, बावजूद इस फ़क़ीरी और ग़रीबी के आपने उसका निकाह करा दिया और मेहर यह ठहराया कि जो क़ुरआन उसे याद है अपनी बीवी को याद करा दे, यह इस बिना पर कि नज़रें ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम पर थीं कि वह मालिक उन्हें वुस्अ़त देगा और इतनी रोज़ी पहुँचायेगा कि उसे और उसकी बीवी को काफ़ी हो।

एक हदीस अक्सर लोग ज़िक्र किया करते हैं कि फ़क़ीरी में भी निकाह किया करो, अल्लाह तुम्हें ग़नी (मालदार) कर देगा। मेरी निगाह से तो यह हदीस गुज़री नहीं न किसी मज़बूत सनद से न कमज़ोर सनद से, और न हमें ऐसी ग़ैर-मशहूर रिवायत की इस मज़मून में कोई ज़रूरत है, क्योंकि क़ुरआन की इस आयत और इन हदीसों में यह चीज़ मौजूद है।

फिर हुक्म दिया कि जिन्हें निकाह की हिम्मत व ताक़त नहीं (यानी माली एतिबार से या किसी और मजबूरी से) वे हरामकारी से बचें। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं ऐ जवान लोगो! तुममें से जो निकाह की वुस्अ़त रखते हों वे निकाह कर लें, यह निगाह को नीची करने वाला, शर्मगाह को बचाने वाला है। और जिसे उसकी ताक़त न हो वह अपने ज़िम्मे रोज़ों का रखना ज़रूरी कर ले, यही उसके लिये ख़स्सी होना (यानी शहवत और जवानी के जोश को ठंडा करना) है। यह आयत मुत्लक़ है और सूरः निसा की आयत इससे ख़ास है, यानी यह फ़रमानः

وَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنكُمْ طَوْلاً .... الخ

पस बाँदियों से निकाह करने से बेहतर सब्र करना है। इसलिये कि उस सूरत में औलाद पर ग़ुलामी का हर्फ़ आता है। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि जो मर्द किसी औरत को देखे और उसके दिल में ख़्वाहिश पैदा हो, उसे चाहिये कि अगर उसकी बीवी मौजूद हो तो उसके पास चला जाये वरना ख़ुदा की ख़ुदाई में नज़रें डाले और सब्र करे, यहाँ तक कि ख़ुदा उसे ग़नी कर दे।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला उन लोगों से फ़रमाता है जो ग़ुलामों के मालिक हैं कि अगर उनके ग़ुलाम उनसे अपनी आज़ादी के बारे में कोई (मुआ़हिदे की) तहरीर करनी चाहें तो वे इनकार न करें। ग़ुलाम अपनी कमाई में वह माल जमा करके अपने आक़ा को दे देगा और आज़ाद हो जायेगा। अक्सर उलेमा फ़रमाते हैं

Maktab E Ashraf

कि यह हुक्म ज़रूरी नहीं, फ़र्ज़ व वाजिब नहीं बल्कि बतौर इस्तेहबाब (यानी अच्छा और बेहतर होने) के और ख़ैरख़्वाही के है। आक़ा को इख़्तियार है कि गुलाम जबकि कोई हुनर जानता हो और वह कहे कि मुझसे इतना रुपया ले लो और मुझे आज़ाद कर दो, तो उसे इख़्तियार है चाहे इस क़िस्म का मुआहिदा कर ले या न करे। उलेमा की एक और जमाअत आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ को लेकर कहती है कि आक़ा पर वाजिब है कि जब उसका गुलाम उससे अपनी आज़ादी की तहरीर (लिखित मुआहिदा) चाहे तो वह उसकी बात को क़बूल कर ले।

हज़रत उमर रज़ि. के ज़माने में हज़रत अनस रज़ि. ने इनकार किया, दरबारे फ़ारूक़ी में यह मुक़द्दिमा गया, आपने हज़रत अनस रज़ि. को हुक्म दिया और उनके न मानने पर कोड़े लगवाये और यही आयत तिलावत फ़रमाई, यहाँ तक कि उन्होंने तहरीर लिखवा दी। (बुख़ारी)

अ़ता रह. से दोनों क़ौल मन्क़ूल हैं। इमाम शाफ़ई रह. का पहला क़ौल यही था लेकिन नया क़ौल यह है कि वाजिब नहीं। क्योंकि हदीस में है कि मुसलमान का माल बग़ैर उसकी दिली ख़ुशी के हलाल नहीं। इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि यह वाजिब नहीं। मैंने नहीं सुना कि किसी इमाम ने किसी आक़ा को मजबूर किया हो कि वह अपने गुलाम की आज़ादी की तहरीर लिखे। ख़ुदा का यह हुक्म बतौर इजाज़त के है, न कि बतौर वजूब के। यही क़ौल इमाम अबू हनीफ़ा रह. वग़ैरह का है।

इमाम इब्ने जरीर रह. के नज़दीक मुख़्तार (पसन्दीदा) क़ौल वजूब का है। ख़ैर से मुराद अमानत-दारी सच्चाई माल और माल के हासिल करने पर क़ुदरत वग़ैरह है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अगर तुम अपने उन गुलामों में जो तुम से मुकातबा करना चाहें माल के कमाने की क्षमता देखो तो उनकी इस ख़्वाहिश को पूरी कर दो, वरना नहीं। क्योंकि उस सूरत में वे लोगों पर अपना बोझ डालेंगे यानी उनसे सवाल करेंगे और रक़म पूरी करना चाहेंगे।

इसके बाद फ़रमाया है कि उन्हें अपने माल में से कुछ दो। यानी जो रक़म तय हो चुकी है उसमें से कुछ माफ़ कर दो, चौथाई या तिहाई या आधा या कुछ हिस्सा। यह मतलब भी बयान किया गया है कि ज़कात के माल में से उनकी मदद करो। आक़ा भी और दूसरे मुसलमान भी उसे माले ज़कात दें ताकि वह मुक़र्ररा रक़म पूरी करके आज़ाद हो जाये। पहले हदीस गुज़र चुकी है कि जिन तीन क़िस्म के लोगों की मदद अल्लाह पर ज़रूरी है उनमें से एक यह भी है लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा मशहूर है। हज़रत उमर रज़ि. के गुलाम अबू उमैया ने 'मुकातबा' किया था (यानी अपनी आज़ादी की तहरीर कुछ माल के बदले लिखवाई थी) जब वह अपनी रक़म की पहली क़िस्त लेकर आया तो आपने फ़रमाया जाओ अपनी इस रक़म में दूसरों से भी मदद तलब करो। उसने जवाब दिया कि अमीरुल-मोमिनीन! आप आख़िरी क़िस्त तक तो मुझे ही मेहनत करने दीजिए। फ़रमाया नहीं! मुझे डर है कि कहीं ख़ुदा के इस फ़रमान को हम छोड़ न बैठें कि उन्हें अल्लाह का वह माल दो जो उसने तुम्हें दे रखा है। पस यह पहली क़िस्तें थीं जो इस्लाम में अदा की गयीं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. की आ़दत थी कि शुरू-शुरू में आप कुछ न देते थे, न माफ़ फ़रमाते थे, क्योंकि यह ख़्याल होता था कि ऐसा न हो कि आख़िर में यह रक़म पूरी न कर सके तो मेरा दिया हुआ मुझे ही वापस आ जाये। हाँ आख़िरी क़िस्तें होतीं तो जो चाहते अपनी तरफ़ से माफ़ कर देते। एक ग़रीब मरफ़ूअ़ हदीस में है कि चौथाई छोड़ दो, लेकिन सही यह है कि वह हज़रत अ़ली रज़ि. का क़ौल है।

फिर फ़रमाता है कि अपनी बाँदियों से ज़बरदस्ती बदकारियाँ न कराओ। जाहिलीयत (इस्लाम से पहले के ज़माने) के बुरे तरीक़ों में एक तरीक़ा यह भी था कि वे अपनी बाँदियों को मजबूर करते थे कि वे

ज़िनाकारी करायें और वह रक़म अपने मालिकों को दें। इस्लाम ने आकर इस बुरी रस्म को तोड़ा। नक़ल किया गया है कि यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक़ के बारे में उतरी है, वह ऐसा ही करता था, ताकि रुपया भी मिले और बाँदियों की औलाद से सरदारी की शान भी बढ़े। उसकी लौंडी (बाँदी) का नाम मुआ़ज़ा थ। एक और रिवायत में है कि उसका नाम मसीका था, और थी यह इस्लाम वाली, तो यह बदकारी से इनकार करती थी। जाहिलीयत में तो यह काम चलता रहा यहाँ तक कि उसे नाजायज़ औलाद भी हुई, लेकिन इस्लाम लाने के बाद उसने इनकार कर दिया। उस पर इस मुनाफ़िक़ ने उसे मारा-पीटा। पस यह आयत उतरी।

नक़ल किया गया है कि बदर का एक क़ुरैशी क़ैदी अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के पास था, वह चाहता था कि वह उसकी लौंडी (बाँदी) से मिले जबकि लौंडी अपने इस्लाम लाने की वजह से हरामकारी से बचती थी। अ़ब्दुल्लाह की ख़्वाहिश थी कि यह क़ुरैशी से मिले, इसलिये उसे मजबूर करता था और मारता पीटता था, तो यह आयत उतरी।

एक और रिवायत में है कि यह मुनाफ़िक़ों का सरदार अपनी उस बाँदी को अपने मेहमानों की ख़ातिर तवाज़ो के लिये भेज दिया करता था। इस्लाम के बाद उस बाँदी से जब यह इरादा किया गया तो उसने इनकार कर दिया और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से अपनी यह मुसीबत बयान की। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ि. ने दरबारे मुहम्मदी में यह बात पहुँचाई, आपने हुक्म दिया कि उस बाँदी को उसके यहाँ न भेजो। उसने लोगों में शोर मचाना शुरू किया कि देखो मुहम्मद हमारी बाँदियों को छीन लेता है, इस पर यह आसमानी हुक्म उतरा।

एक रिवायत में है कि मसीका और मुआ़ज़ा दो बाँदियाँ दो शख़्सों की थीं जो उनसे बदकारी कराते थे। इस्लाम के बाद मसीका और उसकी माँ ने आकर हुज़ूर सल्ल. से शिकायत की, इस पर यह आयत उतरी। यह जो फ़रमाया गया है कि अगर बाँदियाँ पाकदामनी का इरादा करें, इससे यह मतलब न लिया जाये कि अगर उनका इरादा यह न हो तो फिर कोई हर्ज नहीं, क्योंकि उस वक़्त वाक़िआ़ यही था इसलिये यूँ फ़रमाया गया। बस अक्सरियत और ग़लबे के तौर पर यह फ़रमाया गया, कोई क़ैद और शर्त नहीं है। इससे ग़र्ज़ उनकी यह थी कि माल हासिल हो, औलाद हो जो बाँदी और ग़ुलाम बनें। हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने पछने लगाने की उजरत, बदकारी की उजरत, काहिन की उजरत से मना फ़रमा दिया है। एक और रिवायत में है कि नाई की उजरत और पछने लगवाने की कमाई और कुत्ते की क़ीमत ख़बीस (बुरी और नाजायज़) है। फिर फ़रमाता है कि यह जो शख़्स उन बाँदियों पर ज़बरदस्ती करे तो उन्हें तो ख़ुदा उनकी मजबूरी की वजह से बख़्श देगा और उनके मालिकों को जिन्होंने उन पर ज़ोर डाला था उन्हें पकड़ लेगा। इस सूरत में यही गुनाहगार हैं। बल्कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. की क़िराअत में "रहीम" के बाद "व इस्मुहुन्-न अ़ला मन् अक्र-हहुन्-न" है, यानी उस हालत में ज़बरदस्ती करने वालों पर गुनाह है।

एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत की ख़ता से भूल से और जिन कामों पर वे मजबूर कर दिये जायें उन पर ज़बरदस्ती की जाये उनसे दरगुज़र फ़रमा लिया है (यानी उन पर उनकी पकड़ न होगी)। इन अहकाम को तफ़सील से बयान करने के बाद फ़रमान होता है कि हमने अपने कलाम क़ुरआने करीम की यह स्पष्ट और रोशन आयतें तुम्हारे सामने बयान फ़रमा दीं, अगले (पहले गुज़रे) लोगों के वाक़िआ़त भी तुम्हारे सामने आ चुके कि उनकी हक़ की मुख़ालफ़त का अन्जाम क्या और कैसा हुआ? वे एक अफ़साना बना दिये गये और आने वालों के लिये एक इबरतनाक (सबक़ लेने वाला) वाक़िआ़ बना

Maktab E Ashraf

दिये गये, ताकि मुतक़्क़ी (परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाले) उनसे इब्रत हासिल करें और ख़ुदा की नाफ़रमानियों से बचें।

हज़रत अली रज़ि. फ़रमाते थे कि क़ुरआन में तुम्हारे इख़्तिलाफ़ (मतभेदों और विवादों) के फ़ैसले मौजूद हैं, तुमसे अगलों की ख़बरें मौजूद हैं, बाद में होने वाले मामलात और बातों के अहवाल बयान हैं, यह मुफ़स्सल (यानी एक स्पष्ट किताब) है, बकवास नहीं, इसे जो भी बेपरवाही से छोड़ेगा उसे ख़ुदा बरबाद कर देगा, और जो इसके सिवा (यानी क़ुरआन को छोड़कर) दूसरी किताब में हिदायत तलाश करेगा उसे ख़ुदा तआ़ला गुमराह कर देगा।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِىْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِىْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۝	अल्लाह तआ़ला नूर (हिदायत) देने वाला है आसमानों का और ज़मीन का, उसके नूर (हिदायत) की अ़जीब हालत ऐसी है जैसे (फ़र्ज़ करो) एक ताक़ है (और) उसमें एक चिराग़ है (और) वह चिराग़ एक क़िन्दील में है (और वह क़िन्दील ताक़ में रखा है, और) वह क़िन्दील ऐसा (साफ़-सुथरा) है जैसे एक चमकदार सितारा हो, (और) वह चिराग़ एक निहायत मुफ़ीद दरख़्त (के तेल) से रोशन किया जाता है कि वह ज़ैतून (का दरख़्त) है, जो (किसी आड़ के) न पूरब रुख़ है और न पश्चिम रुख़ है। उसका तेल (इस क़द्र साफ़ और सुलगने वाला है) अगर उसको आग भी न छुए लेकिन ऐसा मालूम होता है कि ख़ुद-ब-ख़ुद जल उठेगा। (और जब आग भी लग गई तब तो) नूर पर नूर है और अल्लाह तआ़ला अपने (इस हिदायत के नूर) तक जिसको चाहता है राह दे देता है, और अल्लाह तआ़ला लोगों (की हिदायत) के लिए (ये) मिसालें बयान फ़रमाता है, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (35)

ज़मीन व आसमान का नूर

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह हादी (हिदायत देने वाला) है आसमान वालों और ज़मीन वालों को। वही उन दोनों में सूरज चाँद और सितारों की तदबीर (इन्तिज़ाम व व्यवस्था) करता है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह का नूर हिदायत है। इब्ने जरीर इसी को इख़्तियार करते हैं। हज़रत उबई बिन कअ़ब फ़रमाते हैं कि उसके नूर की मिसाल यानी उसका नूर रखने वाले मोमिन की जिसके सीने में ईमान व क़ुरआन है उसकी मिसाल अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमाई है। सबसे पहले

तो अपने नूर का ज़िक्र किया फिर मोमिन की नूरानियत का, कि ख़ुदा पर ईमान रखने वाले के नूर की मिसाल। बल्कि हज़रत उबई इसको इस तरह पढ़ते थेः

مَثَلُ نُوْرِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ.

कि उसके नूर की मिसाल जो ईमान लाया।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का इस तरह पढ़ना मन्क़ूल हैः

كَذٰلِكَ نُوْرُ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ.

कि ऐसा ही नूर है उसका जो ईमान लाया अल्लाह पर।

बाज़ की क़िराअत में "अल्लाहु नव्व-र" है यानी उसने आसमान व ज़मीन को नूरानी बना दिया है। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि उसी के नूर से आसमान व ज़मीन रोशन हैं। सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि जिस दिन ताईफ़ वालों ने रसूलुल्लाह सल्ल. को बहुत तकलीफ़ पहुँचाई थी आपने अपनी दुआ़ में फ़रमाया थाः

اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِىْ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلَحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اَنْ يَّحِلَّ بِىْ غَضَبُكَ اَوْيَنْزِلَ بِىْ سَخْطُكَ لَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ.

इस दुआ़ में है कि मैं तेरे चेहरे के उस नूर की पनाह में आ रहा हूँ जो अन्धेरों को रोशन कर देता है और जिस पर दुनिया व आख़िरत की बेहतराई मौक़ूफ़ है........।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. रात को तहज्जुद के लिये उठते, तब यह फ़रमाते कि ख़ुदाया तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें लायक़ हैं, तू आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ इनमें है सबका नूर है.......। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि तुम्हारे रब के यहाँ रात और दिन नहीं, उसके चेहरे के नूर से उसके अ़र्श का नूर है।

"नूरिही" (उसका नूर) में 'उस' से मुराद बाज़ के नज़दीक तो लफ़्ज़ 'अल्लाह' ही है, यानी अल्लाह की हिदायत जो मोमिन के दिल में है, उसकी मिसाल यह है। और बाज़ के नज़दीक मोमिन है, जिस पर इस आयत का मज़मून दलालत कर रहा है, यानी मोमिन के दिल के नूर की मिसाल एक ताक़ की तरह है। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमाया है कि एक शख़्स है जो अपने रब की दलील और साथ ही शाहिद लिये हुए है।

पस मोमिन के दिल की सफ़ाई को बिल्लोर के फ़ानूस से तश्बीह (मिसाल) दी और फिर क़ुरआन और शरीअ़त से जो मदद उसे मिलती रहती है उसकी तश्बीह दी ज़ैतून के उस तेल से जो ख़ुद साफ़-सुथरा, चमकीला और रोशन है। पस ताक़ और ताक़ में चिराग़ और वह भी रोशन चिराग़। यहूदियों ने एतिराज़ के तौर पर कहा था कि ख़ुदा का नूर आसमानों के पार कैसे होता है? तो मिसाल देकर समझाया गया कि जैसे फ़ानूस के शीशे से रोशनी। पस फ़रमाया कि अल्लाह नूर है आसमानों का और नूर है ज़मीन का।

'मिशकात' के मायने घर के ताक़ के हैं। यह मिसाल अल्लाह ने अपनी फ़रमाँबरदारी की दी है, और अपनी ताअ़त (आज्ञा मानने) को नूर फ़रमाया है, फिर इसके और भी बहुत से नाम हैं। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि हब्शा की लुग़त (भाषा) में इसे ताक़ कहते हैं। बाज़ कहते हैं कि ऐसा ताक़ जिसमें कोई और सुराख़ वग़ैरह न हो। फ़रमाते हैं कि उसी में क़िन्दील (फ़ानूस या लालटैन) रखी जाती है। पहला क़ौल ज़्यादा मज़बूत है, यानी क़िन्दील रखने की जगह। चुनाँचे क़ुरआन में भी है कि उसमें चिराग़ है। पस मिस्बाह से

Mahtab E Ashraf

Maktab_E_Ashraf

मुराद नूर है, यानी क़ुरआन और ईमान जो मुसलमान के दिल में होता है।

सुद्दी रह. कहते हैं कि चिराग़ मुराद है। फिर फ़रमाया यह रोशनी जिसमें बहुत ही जोत है, यह साफ़ क़िन्दील में है। यह मिसाल है मोमिन के दिल की। फिर वह क़िन्दील ऐसी है जैसे मोती जैसा चमकीला रोशन सितारा। यानी चमकदार और रोशन सितारा है जो ख़ूब ज़ाहिर और बड़ा हो।

फिर उस चिराग़ में तेल भी मुबारक पेड़ ज़ैतून का हो। फिर वह ज़ैतून का पेड़ भी न पूर्वी (पूरब की दिशा में) है कि शुरू दिन से धूप आ जाये और न पश्चिमी दिशा में है कि सूरज के छुपने से पहले उस पर से साया हट जाये, बल्कि बीच की जगह में है। सुबह से शाम तक सूरज की साफ़ रोशनी में है। पस उसका तेल भी बहुत साफ़, चमकदार और मोतदिल होता है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि वह पेड़ मैदान में है, कोई पेड़ या पहाड़ या ग़ार (गुफ़ा) या कोई और चीज़ उसे छुपाये हुए नहीं है। इस वजह से उस पेड़ का तेल बहुत साफ़ होता है। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि सुबह से शाम तक खुली हवा और साफ़ धूप उसे पहुँचती रहती है, क्योंकि वह खुले मैदान में दरमियान की जगह है, इसी वजह से उसका तेल बहुत साफ़, रोशन और चमकदार होता है। उसे न पूर्वी कह सकते हैं और न पश्चिमी, ऐसा पेड़ बहुत सरसब्ज़ और खिला होता है। पस जैसे यह दरख़्त आफ़तों से बचा हुआ होता है उसी तरह मोमिन फ़ितनों से महफ़ूज़ होता है। अगर किसी फ़ितने की आज़माईश में पड़ता भी है तो अल्लाह तआ़ला उसे साबित-क़दम रखता है।

पस उसे चार सिफ़तें क़ुदरत दे देती है- बात में सच, हुक्म में अ़दल, मुसीबतों पर सब्र, नेमत पर शुक्र। फिर वह दूसरे तमाम इनसानों में ऐसा होता है जैसे कोई ज़िन्दा जो मुर्दों में हो। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं- अगर यह पेड़ दुनिया में ज़मीन पर होता तो ज़रूरी था कि पूर्वी होता या पश्चिमी, लेकिन यह तो नूरे ख़ुदा की मिसाल है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि यह मिसाल है नेक मर्द की, जो न यहूदी है न ईसाई। इन सब अक़्वाल में बेहतरीन पहला क़ौल है कि वह ज़मीन के बीच में है कि सुबह से शाम तक बिना किसी आड़ के हवा और धूप पहुँचती है, क्योंकि किसी तरफ़ से कोई आड़ नहीं, तो लाज़िमी तौर पर ऐसे पेड़ का तेल बहुत ज़्यादा साफ़ और लतीफ़ व चमकदार होगा। इसी लिये फ़रमाया कि ख़ुद वह तेल इतना लतीफ़, साफ़ और चमकदार है गोया बग़ैर जलाये रोशनी दे। नूर पर नूर है, यानी ईमान का नूर, फिर उस पर नेक आमाल का नूर। ख़ुद ज़ैतून का तेल रोशन, फिर वह जल रहा है और रोशनी दे रहा है। पस उसे पाँच नूर हासिल हो जाते हैं- उसका कलाम नूर है, उसका अ़मल नूर है, उसका आना नूर है, उसका जाना नूर है और उसका आख़िरी ठिकाना नूर है, यानी जन्नत।

हज़रत कअ़ब रह. से मन्क़ूल है कि यह मिसाल है रसूलुल्लाह सल्ल. की, कि आपकी नुबुव्वत इस क़द्र ज़ाहिर (स्पष्ट) है कि अगर आप न भी फ़रमायें फिर भी लोगों पर ज़ाहिर हो जाये जैसे कि ज़ैतून, कि बग़ैर रोशन किए रोशन है, तो यहाँ दो नूर जमा हैं एक ज़ैतून का, एक आग का। उनके मजमूए से रोशनी हासिल हुई। इसी तरह नूरे क़ुरआन, नूरे ईमान जमा हो जाते हैं और मोमिन का दिल रोशन हो जाता है। अल्लाह तआ़ला जिसे पसन्द फ़रमाये उसे अपनी हिदायत की राह पर लगा देता है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ात को एक अन्धेरे में पैदा किया, फिर उस दिन उन पर अपना नूर डाला, जिसे वह नूर पहुँचा उसने राह पाई और जो मेहरूम रहा वह गुमराह हुआ। इसी लिये कहता हूँ कि क़लम ख़ुदा के इल्म के मुताबिक़ चलकर ख़ुश्क हो गया। (मुस्नद वग़ैरह)

अल्लाह तआ़ला ने मोमिन के दिल की हिदायत की मिसाल नूर से देकर फिर फ़रमाया कि अल्लाह ये

मिसालें लोगों के समझने के लिये बयान फ़रमा रहा है, उसके इल्म में भी कोई उस जैसा नहीं, वह हिदायत व गुमराही के हर मुस्तहिक़ को अच्छी तरह जानता है। मुस्नद की एक हदीस में है कि दिलों की चार क़िस्में हैं- एक तो साफ़ और रोशन, एक ग़िलाफ़ दार और बंधा हुआ, एक उल्टा और औंधा, एक फिरा हुआ उल्टा सीधा। पहला तो मोमिन का दिल है जो नूरानी होता है। दूसरा दिल काफ़िरों का दिल है। तीसरा मुनाफ़िक़ का दिल है कि उसने जाना फिर अनजान हो गया, पहचान लिया फिर इनकारी हो गया। चौथा दिल वह है जिसमें ईमान भी है निफ़ाक़ भी है। ईमान की मिसाल तो उसमें एक तरकारी के पेड़ की तरह है कि अच्छा पानी उसे बढ़ा देता है, और निफ़ाक़ की मिसाल उसमें एक फोड़े की तरह है कि ख़ून पीप उसे उभार देता है, अब जो ग़ालिब आ गया वह उस दिल पर छा जाता है।

فِىْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ
فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ
وَالْاٰصَالِ ۝ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ
وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ
وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ
فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۝ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ
اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ
وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

वे ऐसे घरों में (इबादत करते) हैं जिनके मुताल्लिक़ अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनका अदब किया जाए, और उनमें अल्लाह का नाम लिया जाए, उनमें ऐसे लोग सुबह व शाम अल्लाह तआ़ला की पाकी (नमाज़ों में) बयान करते हैं। (36) जिनको अल्लाह की याद से और (ख़ास तौर पर) नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से न ख़रीद ग़फ़लत में डालने पाती है और न बेच, (और) वे ऐसे दिन (की पकड़) से डरते रहते हैं जिसमें बहुत-से दिल और बहुत-सी आँखें उलट जाएँगी (37) अन्जाम (उन लोगों का) यह होगा कि अल्लाह उनको उनके आमाल का बहुत ही अच्छा बदला देगा (यानी जन्नत), और (अ़लावा जज़ा के) उनको अपने फ़ज़्ल से और भी ज़्यादा देगा, और अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे बेशुमार देता है। (38)

मोमिनों की बाज़ सिफ़तें

मोमिन के दिल की और उसमें जो हिदायत व इल्म है उसकी मिसाल ऊपर वाली आयत में उस रोशन चिराग़ से दी थी जो शीशे की हाँडी में हो, और साफ़ ज़ैतून के रोशन तेल में जल रहा हो। इसलिये यहाँ उसकी जगह बयान फ़रमाई कि हो भी उन मकानात (स्थानों) यानी मस्जिदों में जो सबसे बेहतरीन और महबूबे ख़ुदा जगहें हैं। जहाँ उसकी इबादत की जाती है और उसकी तौहीद बयान होती है। जिनकी निगहबानी (हिफ़ाज़त व निगरानी) का और जिनके पाक-साफ़ रखने का और बेहूदा बातों और कामों से जिनके बचाने का ख़ुदा तआ़ला ने हुक्म दिया है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि "अन् तुर्फ़-अ़" के मायने उसमें बेहूदगी न करने के हैं। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद यही मस्जिदें हैं जिनके बनाने, आबाद करने, अदब और

Maktab E Ashraf

पाकीज़गी का हुक्मे खुदा है। कअ़ब रह. कहा करते थे कि तौरात में लिखा हुआ है कि ज़मीन में मेरे घर मस्जिदें हैं, जो भी वुज़ू करके मेरे घर पर मेरी मुलाक़ात के लिये आयेगा मैं उसकी इज़्ज़त करूँगा। हर उस शख़्स पर जिससे मिलने के लिये कोई उसके घर जाये हक़ है कि वह उसकी तकरीम (सम्मान) करे।

(तफ़सीर इब्ने अबी हातिम)

मस्जिदों के बनाने, उनका अदब व एहतिराम करने, उन्हें ख़ुशबूदार और पाक-साफ़ रखने के बारे में बहुत सी हदीसें मौजूद हैं जिन्हें अल्हम्दु लिल्लाह मैंने एक मुस्तक़िल किताब में लिखा है। यहाँ भी उनमें से थोड़ी बहुत ज़िक्र करता हूँ। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी हासिल करने की नीयत से मस्जिद बनाये अल्लाह तआ़ला उसके लिये उसी जैसा घर जन्नत में बनाता है। (इब्ने माजा) हुज़ूर सल्ल. ने हुक्म दिया कि महलों में मस्जिदें बनाई जायें, पाक-साफ़ और ख़ुशबूदार रखी जायें। (तिर्मिज़ी वग़ैरह) हज़रत उमर रज़ि. का फ़रमान है कि लोगों के लिये मस्जिदें बनाओ जहाँ उन्हें जगह मिले लेकिन सुर्ख़ या ज़र्द रंग से बचो ताकि लोग फ़ितने में न पड़ें। (बुख़ारी शरीफ़)

एक ज़ईफ़ (कमज़ोर) सनद से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि जब तक किसी क़ौम ने अपनी मस्जिदों को टिप-टॉप वाली, फूल-बूटे और रंग रोग़न वाली न बनायीं उनके आमाल बुरे नहीं होते। (इब्ने माजा) इसकी सनद कमज़ोर है। आप फ़रमाते हैं कि मुझे मस्जिदों को बुलन्द व बाला (यानी ऊँची) और पुख़्ता बनाने का हुक्म नहीं दिया गया। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. हदीस के रावी फ़रमाते हैं कि तुम यक़ीनन मस्जिदों को फूल-बूटों वाली और रंगदार करोगे जैसे कि यहूदियों व ईसाईयों ने किया। (अबू दाऊद) फ़रमाते हैं कि क़ियामत क़ायम न होगी जब तक कि लोग मस्जिदों के बारे में आपस में एक दूसरे पर फ़ख़्र व ग़ुरूर न करने लगें (कि हमारी मस्जिद तुम्हारी मस्जिद से ज़्यादा अच्छी और सजी हुई है)। (अबू दाऊद वग़ैरह)

एक शख़्स मस्जिद में अपने ऊँट को ढूँढता हुआ आया और कहने लगा- है कोई जो मुझे सुर्ख़ ऊँट (अ़रब में सुर्ख़ ऊँट बहुत ज़्यादा क़ीमती माल था) का पता दे? आपने बद्दुआ़ की कि ख़ुदा करे तुझे न मिले, मस्जिदें तो जिस मतलब के लिये बनाई गयी हैं उसी काम के लिये हैं। (मुस्लिम) हुज़ूर सल्ल. ने मस्जिदों में व्यापार तिजारत ख़रीद व फ़रोख़्त करने से और वहाँ शे'र गाये जाने से मना फ़रमा दिया है। (अहमद वग़ैरह) फ़रमान है कि जिसे मस्जिद में ख़रीद व फ़रोख़्त करते हुए देखो तो कहो कि अल्लाह तेरी तिजारत में नफ़ा न दे, और जब किसी को गुमशुदा जानवर मस्जिद में तलाश करता हुआ पाओ तो कहो कि अल्लाह करे न मिले। (तिर्मिज़ी)

इरशाद है कि बहुत सी बातें मस्जिद के लायक़ नहीं, मस्जिद को रास्ता न बनाया जाये, मस्जिद में हथियार न निकाले जायें, मस्जिद में तीर कमान पर न लगाया जाये न तीर फैलाये जायें, न कच्चा गोश्त लाया जाये, न यहाँ हद लगाई (यानी कोई सज़ा जारी की) जाये, न यहाँ बातें और क़िस्से कहे जायें, न उसे बाज़ार बनाया जाये। (इब्ने माजा)

फ़रमान है कि हमारी मस्जिदों से अपने बच्चों को, दीवानों (बेअ़क़्ल और पागल) को और ख़रीद व बेच को और लड़ाई झगड़े को और बुलन्द आवाज़ से बोलने को और हदों के जारी करने को और तलवारों के नंगी करने को रोको। उनके दरवाज़ों पर वुज़ू वग़ैरह की जगह बनाओ और जुमे के दिन उन्हें ख़ुशबू से महका दो। (इब्ने माजा) इसकी सनद ज़ईफ़ है। बाज़ उलेमा ने बिना सख़्त ज़रूरत के मस्जिदों को गुज़र की जगह बनाने (रास्ते के तौर पर इस्तेमाल करने) को मक्रूह कहा है। एक क़ौल में है कि जो शख़्स बग़ैर नमाज़ पढ़े मस्जिद से गुज़र जाये फ़रिश्ते उस पर ताज्जुब करते हैं। हथियारों और तीरों से जो मना फ़रमाया

यह इसलिये कि मुसलमान वहाँ बड़ी तादाद में जमा होते हैं, ऐसा न हो कि किसी को लग जाये, इसी लिये हुज़ूर सल्ल. का हुक्म है कि कोई तीर या नेज़ा लेकर गुज़रे तो उसे चाहिये कि उसका फल अपने हाथ में रखे ताकि किसी को तकलीफ़ न पहुँचे।

कच्चा गोश्त लाना इसलिये मना है कि डर है कहीं उसमें से ख़ून न टपके, जैसे कि माहवारी वाली औरत को भी इसी वजह से मस्जिद में आने की मनाही कर दी गयी है। मस्जिद में हद लगाना और क़िसास (क़त्ल का बदला) लेना इसलिये मना किया गया कि कहीं ऐसा न हो कि वह शख़्स मस्जिद को नापाक कर दे। बाज़ार बनाना इसलिये मना है कि वह ख़रीद व बेच की जगह है और मस्जिद में ये दोनों बातें मना हैं, क्योंकि मस्जिदें अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ की जगह हैं, जैसा कि हुज़ूर सल्ल. ने उस देहाती से फ़रमाया था जिसने मस्जिद के एक कोने में पेशाब कर दिया था कि मस्जिदें इसलिये नहीं बनीं बल्कि वह ख़ुदा के ज़िक्र और नमाज़ की जगह है। फिर उसके पेशाब पर बड़ा डोल पानी का बहाने का हुक्म दिया।

एक दूसरी हदीस में है कि अपने बच्चों को अपनी मस्जिदों से रोको, इसलिये कि खेल-कूद ही उनका काम है और मस्जिद में यह मुनासिब नहीं। चुनाँचे फ़ारूक़े आज़म रज़ि. जब किसी बच्चे को मस्जिद में खेलता हुआ देख लेते तो उसे कोड़े से पीटते और इशा की नमाज़ के बाद मस्जिद में किसी को न रहने देते। दीवानों (पागल और बेअ़क़्लों) को भी मस्जिदों से रोका गया, क्योंकि वे बेअ़क़्ल होते और लोगों के मज़ाक़ का ज़रिया होते हैं, और मस्जिद इस तमाशे के लायक़ नहीं। और यह भी है कि उनकी गंदगी और नापाकी वग़ैरह का ख़ौफ़ है। ख़रीद व बेच से रोका गया क्योंकि वह अल्लाह के ज़िक्र से बाधा और रुकावट है। झगड़े और झगड़ों के फ़ैसले इसलिये मना कर दिये गये कि उसमें आवाज़ें बुलन्द होती हैं, ऐसे अलफ़ाज़ भी निकल जाते हैं जो मस्जिद के अदब के ख़िलाफ़ हैं। अक्सर उलेमा का क़ौल है कि फ़ैसले मस्जिद में न किये जायें, इसी लिये इस जुमले के बाद बुलन्द आवाज़ निकालने से मना फ़रमाया।

हज़रत सायब बिन यज़ीद कन्दी रह. फ़रमाते हैं- मैं मस्जिद में खड़ा था कि अचानक मुझ पर किसी ने कंकर फेंका, मैंने देखा तो वह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. थे। मुझसे फ़रमाने लगे जाओ उन दोनों शख़्सों को मेरे पास लाओ। जब मैं आपके पास उन्हें लाया तो आपने मालूम किया तुम कौन हो? या पूछा कि तुम कहाँ के हो? उन्होंने कहा हम ताईफ़ के रहने वाले हैं। आपने फ़रमाया अगर तुम यहाँ के रहने वाले होते तो मैं तुम्हें सज़ा देता, तुम मस्जिदे नबवी में ऊँची-ऊँची आवाज़ों से बोल रहे हो? (बुख़ारी)

एक शख़्स की ऊँची आवाज़ सुनकर जनाब उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने फ़रमाया था- जानता भी है कि तू कहाँ है? (नसाई) और मस्जिद के दरवाज़ों पर वुज़ू की और पाकीज़गी हासिल करने की जगह बनाने का हुक्म दिया। मस्जिदे नबवी के क़रीब ही कुएँ थे जिनसे पानी खींचकर पीते थे और वुज़ू व पाकीज़गी (तहारत और सफ़ाई) हासिल करते थे और जुमे के दिन उसे ख़ुशबूदार करने का हुक्म हुआ क्योंकि उस दिन लोग बड़ी संख्या में जमा होते हैं, चुनाँचे अबू यअ़ला मूसली में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि. हर जुमे के दिन मस्जिदे नबवी को महका दिया करते थे।

बुख़ारी व मुस्लिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जमाअ़त की नमाज़ इनसान की अकेली नमाज़ पर जो घर में या दुकान पर पढ़ी जाये पच्चीस दर्जे ज़्यादा सवाब रखती है, यह इसलिये कि जब वह अच्छी तरह वुज़ू करके सिर्फ़ नमाज़ के इरादे से चलता है तो हर-हर क़दम के उठाने पर उसका एक दर्जा बढ़ता है और एक गुनाह माफ़ होता है, और जब नमाज़ पढ़ चुकता है फिर जब तक वह अपनी नमाज़ की जगह रहता है फ़रिश्ते उस पर दुरूद भेजते रहते हैं। कहते हैं कि ख़ुदाया! इस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा और इस

पर रहम कर, और जब तक जमाअ़त के इन्तिज़ार में रहे नमाज़ का सवाब मिलता रहता है। दारे क़ुतनी में है कि मस्जिद के पड़ोसी की नमाज़ मस्जिद के सिवा नहीं होती। सुनन में है कि अन्धेरों में मस्जिद जाने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन्हें क़ियामत के दिन पूरा-पूरा नूर मिलेगा। यह भी मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है कि मस्जिद में जाने वाला पहले अपना दाहिना क़दम रखे और यह दुआ़ पढ़े। बुख़ारी शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. जब मस्जिद में आते यह कहते:

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

अऊ़ज़ु बिल्लाहिल् अ़ज़ीमि व बि-वज्हिहिल् करीमि व सुल्तानिहिल् क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीम।

फ़रमान है कि जब कोई शख़्स यह पढ़ता है तो शैतान कहता है मेरे शर (बुराई) से यह तमाम दिन के लिये महफ़ूज़ हो गया। मुस्लिम में हुज़ूरे पाक का फ़रमान मौजूद है कि तुम में से जब कोई मस्जिद में जाना चाहे तो यह दुआ़ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

अल्लाहुम्मफ़्तह् ली अब्वा-ब रह्मति-क।

ख़ुदाया मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

और जब मस्जिद से बाहर जाये तो यह कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क।

ऐ परवर्दिगार! तू मेरे लिये अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े खोल दे।

इब्ने माजा वग़ैरह में है कि जब तुम में से कोई मस्जिद में जाये तो अल्लाह के नबी पर सलाम भेजे उसके बाद "अल्लाहुम्मफ़्तह् ली अब्वा-ब रह्मति-क" पढ़े और जब मस्जिद से निकले तो नबी सल्ल. पर सलाम भेजकर फिर "अल्लाहुम्-म इअ़्सिम्नी मिनश्शैतानिर्रजीम" पढ़े।

तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि जब आप मस्जिद में आते तो दुरूद पढ़कर "अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़ुनूबी वफ़्तह् ली अब्वा-ब रह्मति-क" पढ़ते, और जब मस्जिद से बाहर निकलते तो दुरूद के साथ "अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़ुनूबी वफ़्तह् ली अब्वा-ब फ़ज़्लि-क" पढ़ते। इस हदीस की सनद मुत्तसिल नहीं।

ग़र्ज़ कि ये और इन जैसी और बहुत सी हदीसें इस आयत से संबन्धित हैं जो मस्जिद और अहकामे मस्जिद के साथ ताल्लुक़ रखती हैं। एक और आयत में है कि तुम हर मस्जिद में अपना मुँह सीधा रखो और ख़ुलूस के साथ सिर्फ़ ख़ुदा को पुकारो। एक और आयत में है कि मस्जिदें अल्लाह ही की हैं। उसका नाम उनमें लिया जाये, यानी किताबुल्लाह की तिलावत की जाये, सुबह शाम वहाँ ख़ुदा तआ़ला की तस्बीह (पाकीज़गी) बयान करते रहें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जहाँ कहीं क़ुरआन में तस्बीह का लफ़्ज़ है वहाँ मुराद नमाज़ है। पस यहाँ मुराद सुबह और अ़सर की नमाज़ है। पहले पहले यही दो नमाज़ें फ़र्ज़ हुयी थीं पस वही याद दिलाई गयीं। रिजाल (मर्द) कहने में इशारा है उनके बेहतरीन मक़ासिद, उनकी पाक नीयतों और आला कामों की तरफ़ कि ये ख़ुदा के घरों को आबाद रखने वाले हैं। उसमें ऐसे भी मर्द हैं जिन्होंने जो अ़हद ख़ुदा तआ़ला से किये थे उन्हें पूरे कर दिखाये। हाँ औरतों के लिये तो मस्जिद की नमाज़ से अफ़ज़ल घर की

नमाज़ है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि औरत की नमाज़ अपने घर में बेहतर है उसके हुजरे की नमाज़ से, और उसके हुजरे की नमाज़ से अन्दर वाले कमरे की नमाज़ अफ़ज़ल है। मुस्नद में है कि औरतों की बेहतरीन मस्जिद घर के अन्दर का कोना है।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अबू हमीद साअिदी रज़ि. की बीवी साहिबा रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुयीं और कहा हुज़ूर! मैं आपके साथ नमाज़ अदा करना बहुत पसन्द करती हूँ। आपने फ़रमाया यह मुझे भी मालूम है लेकिन मसला यह है कि तेरी अपने घर की नमाज़ अंगनाई की नमाज़ से और हुजरे की नमाज़ घर की नमाज़ से और घर की कोठरी की नमाज़ हुजरे की नमाज़ से अफ़ज़ल है। और मौहल्ले की मस्जिद से अफ़ज़ल घर की नमाज़ है, और मौहल्ले की मस्जिद की नमाज़ मेरी मस्जिद की नमाज़ से अफ़ज़ल है। यह सुनकर माई साहिबा ने अपने घर की बिल्कुल तन्हाई के कोने में एक जगह को बतौर मस्जिद के मुक़र्रर कर लिया और आख़िरी घड़ी तक वहीं नमाज़ पढ़ती रहीं। हाँ अलबत्ता औरतों के लिये भी मस्जिद में मर्दों के साथ नमाज़ पढ़ना जायज़ ज़रूर है बशर्ते कि मर्दों पर अपनी ज़ीनत (सिंगार और ख़ूबसूरती वग़ैरह) ज़ाहिर न होने दें, और न ख़ुशबू लगाकर निकलें। सही हदीस में फ़रमाने रसूल है कि अल्लाह की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों से न रोको। (बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह) अबू दाऊद में है कि औरतों के लिये उनके घर अफ़ज़ल हैं। एक और हदीस में है कि वे ख़ुशबू इस्तेमाल करके न निकलें। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि आपने औरतों से फ़रमाया- जब तुम में से कोई मस्जिद आना चाहे तो ख़ुशबू को हाथ भी न लगाये।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि मुसलमान औरतें सुबह की नमाज़ में आती थीं, फिर वे अपनी चादरों में लिपटी हुई चली जाती थीं और रात का किसी क़द्र अन्धेरा होने की वजह से वे पहचानी नहीं जाती थीं। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि औरतों ने ये जो नई-नई बातें निकाली हैं अगर रसूलुल्लाह सल्ल. इन बातों को पा लेते तो उन्हें मस्जिदों में आने से रोक देते, जैसा कि बनी इस्राईल की औरतें रोक दी गयीं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

ऐसे लोग जिन्हें ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से नहीं रोकती, जैसे इरशाद है कि ऐ ईमान वालो! माल व औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें। सूरः जुमा में है कि जुमा की अज़ान सुनकर अल्लाह की तरफ़ चल पड़ो और तिजारत छोड़ दो। मतलब यह है कि उन नेक लोगों को दुनिया और उसकी दौलत व पूँजी आख़िरत और अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं कर सकती, उन्हें आख़िरत और वहाँ की नेमतों पर पूरा यक़ीन है। वे उन्हें बाक़ी समझते हैं और यहाँ की चीज़ों को फ़ानी जानते हैं। इसलिये इन्हें छोड़कर उस तरफ़ तवज्जोह करते हैं। अल्लाह तआ़ला की इताअ़त को, उसकी मुहब्बत को, उसके अहकाम को मुक़द्दम करते हैं। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. ने एक मर्तबा व्यापारी हज़रात को अज़ान सुनकर अपने काम-काज छोड़कर मस्जिद की तरफ़ जाते हुए देखकर यही आयत तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया- ये लोग उन्हीं में से हैं। इब्ने उमर रज़ि. से भी यही मन्क़ूल है। अबूदर्दा रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं व्यापार व तिजारत करूँ अगरचे उसमें मुझे तीन सौ अशरफ़ियाँ मिलती हों लेकिन मैं नमाज़ों के वक़्त ज़रूर सबको छोड़कर चला जाऊँगा। मेरा मतलब यह हरगिज़ नहीं कि तिजारत करना हराम है, बल्कि यह है कि हममें यह वस्फ़ (ख़ूबी और कमाल) होना चाहिये जो इस आयत में बयान हुआ है।

सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह नमाज़ के लिये जा रहे थे, देखा कि मदीना शरीफ़ के सौदागर अपनी-अपनी

Maktab E Ashraf

दुकानों पर कपड़े ढककर नमाज़ के लिये गये हुए हैं और कोई भी दुकान में मौजूद नहीं, तो यही आयत पढ़ी और फ़रमाया ये उन्हीं में से हैं जिनकी तारीफ़ अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाई है। इस बात का बुज़ुर्गों और पहले के हज़रात में यहाँ तक ख़्याल था कि तराज़ू उठाये हुए तौल रहे हैं और अज़ान कान में पड़ी तो तराज़ू रख दी और मस्जिद की तरफ़ चल दिये। फ़र्ज़ नमाज़ जमाअ़त के साथ मस्जिद में अदा करने का उन्हें इश्क़ था। वे वक़्तों की, अरकान की, आदाब की हिफ़ाज़त के साथ नमाज़ों के पाबन्द थे। यह इसलिये कि दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा था, क़ियामत का आना बरहक़ (निश्चित और यक़ीनी) जानते थे। उस दिन की ख़ौफ़नाकी से वाक़िफ़ थे कि बहुत सख़्त घबराहट, बड़ी परेशानी और बेहद उलझन की वजह से आँखें पत्थरा जायेंगी, दिल उड़ जायेंगे, कलेजे दहल जायेंगे। जैसे एक जगह फ़रमाया कि मेरे नेक बन्दे मेरी मुहब्बत की बिना पर मिस्कीनों को खाना खिलाते हैं और यतीमों व क़ैदियों को भी, और कह देते हैं कि हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये खिला रहे हैं, हमारा मक़सद तुमसे शुक्रिया तलब करने या बदला लेने का नहीं, हमें तो अपने परवर्दिगार से उस दिन का डर है जबकि लोग मारे रंज व ग़म के मुँह बसोरे हुए और तेवरियाँ बदले हुए होंगे। पस ख़ुदा उन्हें उस दिन की मुसीबतों से निजात देगा और उन्हें तरोताज़गी, हंसी ख़ुशी और राहत व आराम से मिला देगा, और उनके सब्र के बदले उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अ़ता फ़रमायेगा।

यहाँ भी फ़रमाता है कि उनकी नेकियाँ मक़बूल हैं, उनकी बुराईयाँ माफ़ हैं, उनके एक-एक अ़मल का बेहतरीन बदला मय ज़्यादती और फ़ज़्ले ख़ुदा के यहाँ ज़रूर मिलना है। जैसे फ़रमान है कि अल्लाह तआ़ला एक ज़र्रे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता। एक और आयत में है कि नेकी दस गुनी कर दी जाती है। एक और आयत में है कि जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ देगा उसे अल्लाह तआ़ला बढ़ा-चढ़ाकर ज़्यादा से ज़्यादा करके देगा। क़ुरआन का फ़रमान है:

يُضَاعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ.

कि वह बढ़ा देता है जिसके लिये चाहे।

यहाँ फ़रमान है कि वह जिसे चाहे बेहिसाब देता है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के पास एक मर्तबा दूध लाया गया, आपने अपनी मज्लिस के साथियों में से हर एक को पिलाना चाहा मगर सब रोज़े से थे इसलिये आप ही के पास फिर से बरतन आया। आपने यही आयत "यख़ाफ़ू-न" से पढ़ी और पी लिया। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन जबकि अव्वल व आख़िर के सब लोग जमा होंगे अल्लाह तआ़ला एक मुनादी को हुक्म देगा जो बुलन्द आवाज़ से आवाज़ लगायेगा, जिसे तमाम मेहशर वाले सुनेंगे कि आज सबको मालूम हो जायेगा कि ख़ुदा के यहाँ सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग (बड़ाई व इ़ज़्ज़त वाला) कौन है। फिर फ़रमायेगा वे लोग खड़े हो जायें जिन्हें व्यापार तिजारत अल्लाह के ज़िक्र से रोकता न था। पस वे खड़े हो जायेंगे और वे बहुत कम ही होंगे। सबसे पहले उन्हें हिसाब से फ़ारिग़ कर दिया जायेगा। आप फ़रमाते हैं कि उनकी नेकियों का अज्र यानी जन्नत उन्हें मिलेगी और अल्लाह का अतिरिक्त फ़ज़्ल यह होगा कि जिन लोगों ने उनके साथ एहसान किये होंगे और वे शफ़ाअ़त के मुस्तहिक़ भी होंगे, उन सबकी शफ़ाअ़त का मन्सब (हक़ और पात्रता) उन्हें हासिल हो जायेगा।

Maktab E Ashraf

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْآ اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۗ حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۗ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۗ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ۝

और जो लोग काफ़िर हैं उनके आमाल ऐसे हैं कि एक चटियल मैदान में चमकता हुआ रेत, कि प्यासा आदमी उसको (दूर से) पानी ख़्याल करता है, यहाँ तक कि जब उसके पास आया तो उसको (जो समझ रखा था) कुछ भी न पाया और क़ज़ा-ए-इलाही को पाया, सो अल्लाह तआ़ला ने उस (की उम्र) का हिसाब उसको बराबर-सराबर चुका दिया (यानी उम्र का ख़ात्मा कर दिया), और अल्लाह तआ़ला दम भर में हिसाब (यानी फ़ैसला) कर देता है। (39) या वे ऐसे हैं जैसे बड़े गहरे समुद्र में अन्दरूनी अन्धेरे, कि उसको एक बड़ी लहर ने ढाँक लिया हो, उस (लहर) के ऊपर दूसरी लहर उसके ऊपर बादल है (ग़र्ज़) ऊपर नीचे बहुत-से अंधेरे (ही अंधेरे) हैं, कि अगर (कोई ऐसी हालत में) अपना हाथ निकाले (और देखना चाहे) तो देखने का एहतिमाल भी नहीं, और जिसको अल्लाह तआ़ला ही नूर (हिदायत) न दे उसको (कहीं से भी) नूर मयस्सर नहीं हो सकता। (40)

चमकते हुए रेत के ढेर

ये दो मिसालें हैं और दो क़िस्म के काफ़िरों की हैं जैसे सूरः ब-क़रह के शुरू में दो मिसालें दो क़िस्म के मुनाफ़िक़ों की बयान हुई हैं। एक आग की, एक पानी की। और जैसे सूरः रअ़द में हिदायत व इल्म की जो इनसान के दिल में जगह पकड़ जाये। ऐसी ही दो मिसालें आग और पानी की बयान हुई हैं, दोनों सूरतों में इन आयतों की पूरी तफ़सीर गुज़र चुकी है। अल्हम्दु लिल्लाह।

यहाँ पहली मिसाल तो उन काफ़िरों की है जो कुफ़्र की तरफ़ दूसरों को भी बुलाते हैं और अपने आपको हिदायत (सही रास्ते) पर समझते हैं, हालाँकि वे बिल्कुल बेराह (यानी ग़लत रास्ते पर) हैं। उनकी तो ऐसी मिसाल है जैसे किसी प्यासे को जंगल में दूर से रेत का चमकता हुआ तूदा (ढेर) दिखाई देता है और वह उसे पानी की दरियाई लहर समझ बैठता है। "क़ीउन्" के मायने चटियल, विस्तृत और फैले हुए मैदान के हैं। ऐसे ही मैदानों में सराब (वह रेत जिसे देखकर पानी का धोखा हो) नज़र आया करते हैं। दोपहर के वक़्त बिल्कुल यही मालूम होता है कि पानी का विशाल दरिया लहरें ले रहा है। जंगल में जो प्यासा हो, पानी की तलाश में हो, एक बारगी तो वह दूर से चमकते हुए इस रेत को देखता है तो उसकी बाँछें खिल जाती हैं और उसे पानी समझ कर जान तोड़ कोशिश करके वहाँ तक पहुँचता है। लेकिन हैरत व अफ़सोस से अपना मुँह पीट लेता है जब देखता है कि वहाँ पानी का क़तरा छोड़ नाम व निशान भी नहीं।

इसी तरह ये काफ़िर हैं कि अपने दिल में समझे बैठे हैं कि हमने बहुत कुछ आमाल किये हैं, बहुत सी भलाईयाँ (नेकियाँ और पुण्य) जमा कर ली हैं, लेकिन क़ियामत वाले दिन देखेंगे कि एक नेकी भी उनके पास नहीं, या तो उनकी बुरी नीयत की वजह से वे ग़ारत हो चुकी हैं या शरीअ़त के मुताबिक़ न होने से बरबाद हो गयी हैं। ग़र्ज़ कि उनके यहाँ पहुँचने से पहले उनके काम जहन्नम में पहुँच चुके हैं, यहाँ ये बिल्कुल ख़ाली हाथ रह गये हैं। हिसाब किताब के मौक़े पर ख़ुदा तआ़ला ख़ुद मौजूद है और वह एक-एक अ़मल का हिसाब ले रहा है और कोई अ़मल क़ाबिले सवाब नहीं निकलता। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि यहूदियों से क़ियामत के दिन सवाल होगा कि तुम दुनिया में किसकी इबादत करते रहे? वे जवाब देंगे कि ख़ुदा के बेटे 'उज़ैर' की। कहा जायेगा कि झूठे हो, ख़ुदा का कोई बेटा नहीं। अच्छा बतलाओ अब क्या चाहते हो? वे कहेंगे ख़ुदाया हम बहुत प्यासे हो रहे हैं, हमें पानी पिलवाया जाये, तो उनसे कहा जायेगा कि देखो वह क्या नज़र आ रहा है? तुम वहाँ क्यों नहीं जाते? अब उन्हें दूर से जहन्नम ऐसी नज़र आयेगी जैसे दुनिया में सराब होता है, जिस पर बहते हुए पानी का धोखा होता है। ये वहाँ जायेंगे और दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे।

यह मिसाल तो थी उनकी जो अपनी जहालत और अज्ञानता के बावजूद ख़ुद को जानने वाला और सही राह पर समझते हैं। अब उनकी मिसाल सुनिये जो कोरे मुक़ल्लिद थे, अपनी अ़क्ल व समझ से बिल्कुल काम ही न लेते थे। ये वे लोग थे कुफ़्र के सरदारों और पेशवाओं की कोरी तक़लीद करते थे और आँखें बन्द करके उनकी पैरवी पर लगे हुए थे। उनकी मिसाल गहरे समुद्र की तह की अंधेरियों जैसी है जिसे ऊपर से तह-ब-तह मौजों ने ढाँप रखा हो और फिर ऊपर से बादल ढाँके हुए हो। यानी अंधेरियों पर अंधेरियाँ हों, यहाँ तक कि हाथ को हाथ भी सुझाई न देता हो।

यही हाल इन कमीने जाहिल काफ़िरों का है कि कोरे पैरोकार हैं (यानी अ़क्ल व समझ से बिल्कुल काम नहीं लेते) यहाँ तक कि जिसकी तक़लीद (पैरवी और अनुसरण) के पीछे पड़े हुए हैं उसे भी सही तौर पर नहीं पहचानते, उसका भी हक़ या नाहक़ पर होना उन्हें मालूम नहीं। हर एक के पीछे हो लेते हैं, लेकिन नहीं मालूम कि वह उन्हें कहाँ लेजा रहा है। चुनाँचे मिसाल के तौर पर कहा जाता है कि किसी जाहिल से पूछा गया "कहाँ जा रहा है?" उसने कहा इनके साथ जा रहा हूँ। पूछने वाले ने फिर दरियाफ़्त किया कि ये कहाँ जा रहे हैं? उसने कहा मुझे तो मालूम नहीं। पस जैसे उस समुद्र पर मौजें उठ रही हैं उसी तरह काफ़िर के दिल पर, उसके कानों पर, उसकी आँखों पर पर्दे पड़े हुए हैं जैसे फ़रमान है कि अल्लाह ने उनके दिलों पर और कानों पर मोहर लगा दी है.......। एक और आयत में इरशाद होता है:

اَفَرَاَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰهُ......... الخ.

तूने उन्हें देखा जिन्होंने इच्छा-परस्ती शुरू कर रखी है और ख़ुदा ने उन्हें इल्म पर बहका दिया है और उनके दिलों और कानों पर मोहर लगा दी है, और उनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया है.....।

हज़रत उबई बिन कअ़ब फ़रमाते हैं कि ऐसे लोग पाँच अंधेरों में होते हैं- कलाम, अ़मल, जाना, आना और अन्जाम सब अन्धेरों में है, जिसे ख़ुदा तआ़ला अपने नूर की तरफ़ हिदायत न करे वह नूरानियत से ख़ाली रह जाता है, जहालत में मुब्तला रहकर हलाकत (तबाही) में पड़ जाता है। जैसे फ़रमाया:

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ........الخ

Mahtab E Ashraf

जिसे ख़ुदा गुमराह करे उसके लिये कोई हादी (हिदायत देने वाला) नहीं होता।

इसके मुक़ाबले में मोमिनों की मिसाल के बयान में फ़रमाया था कि अल्लाह अपने नूर की हिदायत करता है जिसे चाहे। अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीम व करीम से हमारी दुआ़ है कि वह हमारे दिलों में नूर पैदा कर दे, हमारे दायें-बायें भी नूर को बढ़ा दे और उसे बहुत बड़ा और ज़्यादा करे, आमीन।

اَلَمْ تَرَاَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝	(ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ कि आसमानों में और ज़मीन में (मख़्लूक़ात) हैं, और (ख़ासकर) परिन्दे जो पर फैलाए हुए (उड़ते फिरते) हैं सबको अपनी-अपनी दुआ़ और अपनी तस्बीह मालूम है, और अल्लाह तआ़ला को उन लोगों के सब कामों का पूरा इल्म है। (41) और अल्लाह तआ़ला ही की हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में, और अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ (सबको) लौटकर जाना है। (42)

अल्लाह की पाकी और तारीफ़

तमाम के तमाम इनसान, जिन्नात, फ़रिश्ते और हैवान यहाँ तक कि जमादात (यानी बेजान चीज़ें) भी अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान करने) में मशग़ूल हैं। और इस मक़ाम पर है कि सातों आसमान और सब ज़मीनें और उनमें जो हैं सब अल्लाह की पाकीज़गी के बयान में मशग़ूल हैं। अपने परों से उड़ने वाले परिन्दे भी अपने रब की इबादत और पाकीज़गी के बयान में हैं। उन सबको जो तस्बीह लायक़ (मुनासिब) थी ख़ुदा तआ़ला ने उन्हें सिखा दी। मालिके असली, मुख़्तारे कुल, माबूदे हक़ीक़ी, आसमान व ज़मीन का बादशाह सिर्फ़ वही है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसके हुक्मों को कोई टालने वाला नहीं, क़ियामत के दिन सबको उसी के सामने हाज़िर होना है। वह जो चाहेगा अपनी मख़्लूक़ात में हुक्म फ़रमायेगा। बुरे लोग बुरे बदले पायेंगे, नेक लोग नेकियों का फल हासिल करेंगे, ख़ालिक़ व मालिक वही है, दुनिया और आख़िरत का वास्तविक हाकिम वही है और उसी की ज़ात तारीफ़ व ख़ूबी के लायक़ है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِىْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ	क्या तुझको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला (एक) बादल को (दूसरे बादल की तरफ़) चलता करता है (और) फिर उस बादल (के मजमूए) को आपस में मिला देता है, फिर उसको तह-ब-तह करता है, फिर तू बारिश को देखता है कि उस (बादल) के बीच में से निकलती है, और उसी बादल से यानी उसके

Maktaba E Ashraf

يَشَآءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۭ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝	बड़े-बड़े हिस्सों में से ओले बरसाता है, फिर उनको जिस (की जान पर या माल) पर चाहता है गिराता है और जिससे चाहता है उसको हटा देता है, (और) उस बादल की बिजली की चमक की यह हालत है कि ऐसा मालूम होता है कि गोया उसने अब बीनाई "यानी आँखों की रोशनी" ली। (43) (और तथा) अल्लाह तआ़ला रात और दिन को (भी) बदलता रहता है, इस (सब मजमूए) में समझ रखने वालों के लिए दलील हासिल करने (का मौक़ा) है। (44)

उठते हुए बादल

पतले धुएँ जैसे बादल अव्वल-अव्वल तो अल्लाह की क़ुदरत से उठते हैं, फिर मिल-जुलकर वे जिस्म व वजूद वाले हो जाते हैं और एक दूसरे के ऊपर जम जाते हैं। फिर उनमें से बारिश बरसती है, हवायें चलती हैं, ज़मीन को क़ाबिल बनाती हैं, फिर बादल को उठाती हैं, फिर उन्हें मिलाती हैं, फिर वे पानी से भर जाते हैं, फिर बरस पड़ते हैं। फिर आसमान से औलों के बरसाने का ज़िक्र है।

फिर फ़रमाया कि बारिश और औले जहाँ ख़ुदा बरसाना चाहे वहाँ उसकी रहमत से बरसते हैं और जहाँ न चाहे नहीं जाते। या यह मतलब है कि औलों से जिनकी चाहे खेतियाँ और बाग़ात ख़राब कर देता और जिन पर मेहरबानी फ़रमाये उन्हें बचा लेता है। फिर बिजली की चमक की क़ुव्वत बयान हो रही है कि क़रीब है कि वह आँखों की रोशनी खो दे। दिन रात में हर तरह का इख़्तियार भी उसी के क़ब्ज़े में है, जब चाहता है दिन को छोटा और रात को बड़ी करता है, और जब चाहता है रात को बड़ी करके दिन को छोटा कर देता है। ये तमाम निशानियाँ हैं जो इस बात को ज़ाहिर करती हैं कि इनके ऊपर क़ुदरत रखने वाली एक ताक़त है, वह ख़ुदा तआ़ला है, ये उसकी अ़ज़मत (बड़ाई) को ज़ाहिर करती हैं। जैसे फ़रमान है कि आसमान व ज़मीन की पैदाईश और रात दिन की भिन्नता में अ़क़्लमन्दों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝	और अल्लाह तआ़ला ही ने हर चलने वाले जानदार को (पानी का हो या ख़ुश्की का) पानी से पैदा किया है। फिर उनमें बाज़े तो वे (जानवर) हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं, और बाज़े उनमें वे हैं जो दो पैरों पर चलते हैं, और बाज़े उनमें वे हैं जो चार (पैरों) पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहता है बनाता है। बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है। (45)

Maktab E Ashraf

तरह-तरह की मख़्लूक़ात

अल्लाह तआ़ला अपनी कामिल क़ुदरत और ज़बरदस्त सल्तनत का बयान फ़रमाता है कि उसने एक ही पानी से तरह-तरह की मख़्लूक़ पैदा कर दी है। साँप वग़ैरह को देखो जो अपने पेट के बल चलते हैं। वह बड़ा क़ादिर है जो चाहता है हो जाता है, जो नहीं चाहता हरगिज़ नहीं हो सकता। वह हर चीज़ पर क़ादिर व मुख़्तार है।

हमने (हक़ के) समझाने वाली दलीलें नाज़िल फ़रमाई हैं, और (उन आ़म में से) जिस को अल्लाह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमाता है। (46)	لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ○

खुली और स्पष्ट निशानियाँ

ये हिक्मत भरे अहकाम, ये रोशन मिसालें इस क़ुरआने करीम में अल्लाह ही ने बयान फ़रमाई हैं। अ़क़्लमन्दों को इनके समझने की तौफ़ीक़ दी है। रब जिसे चाहे अपनी सीधी राह पर लगाये।

और (ये मुनाफ़िक़) लोग (ज़बान से) दावा करते हैं कि हम अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान ले आए और हुक्म माना, फिर उसके बाद (दावे की सच्चाई ज़ाहिर होने के मौक़े पर) उनमें का एक गिरोह नाफ़रमानी करता है। और ये लोग (दिल में) बिल्कुल भी ईमान नहीं रखते। (47) और ये लोग जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ इस ग़र्ज़ से बुलाए जाते हैं कि रसूल उनके (और उनके मुख़ालिफ़ के) दरमियान फ़ैसला कर दें तो उनमें का एक गिरोह किनारा करता है। (48) और अगर उनका हक़ (किसी की तरफ़ वाजिब) हो तो सर झुकाए हुए आपके पास चले आते हैं। (49) क्या उनके दिलों में (जड़ पकड़े हुए कुफ़्र का) रोग है या ये (नुबुव्वत की तरफ़ से) शक में पड़े हैं, या उनको यह अन्देशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उन पर ज़ुल्म (न) करने लगें, (सो इनमें से कोई सबब) नहीं (है) बल्कि (असली सबब यह है) कि ये लोग ज़ुल्म पर	وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ ۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ○ وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ○ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ○ؕ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○ؑ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا ع ٦ ١٢

Maktab-e-Ashraf

دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ط وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ٥ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ٥

उतरे हुए (होते) हैं। (50) मुसलमानों का क़ौल तो जबकि उनको (किसी मुक़द्दमे में) अल्लाह की और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि उनके दरमियान में फ़ैसला कर दें, यह है कि वे (दिली ख़ुशी से) कहते हैं कि हमने सुन लिया और मान लिया, और ऐसे लोग (आख़िरत में) फ़लाह पाएँगे। (51) और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल का कहा माने और अल्लाह से डरे और उसकी मुख़ालफ़त से बचे, बस ऐसे लोग कामयाब होंगे। (52)

ज़ाहिर में ईमान मगर दिल ईमान से ख़ाली

मुनाफ़िक़ों का हाल बयान हो रहा है कि ज़बान से तो ईमान व आज्ञा के पालन का इक़रार करते हैं लेकिन दिल के ख़िलाफ़ हैं, अ़मल कुछ है क़ौल कुछ है। और वजह यह है कि ईमान दिलों में होता नहीं। हदीस में है कि जो शख़्स बादशाह के सामने बुलवाया जाये और वह न जाये तो वह ज़ालिम है, और नाहक़ पर है। जब उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाया जाता है, क़ुरआन व हदीस को मानने को कहा जाता है तो ये मुँह फेर लेते हैं और तकब्बुर (घमंड) करने लगते हैं जैसे क़ुरआन पाक में एक दूसरे स्थान पर फ़रमायाः

اَلَمْ تَرَاِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ.........صُدُوْدًا.

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे इस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो आपकी तरफ़ नाज़िल की गयी और उस किताब पर भी जो आप से पहले नाज़िल की गयी। अपने मुक़द्दिमे शैतान के पास ले जाना चाहते हैं हालाँकि उनको यह हुक्म हुआ है कि उसको न मानें, और शैतान उनको बहका कर बहुत दूर ले जाना चाहता है। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस हुक्म की तरफ़ जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाया है और रसूल की तरफ़, तो आप मुनाफ़िक़ों की यह हालत देखेंगे कि वे आपसे किनारा करते हैं। (सूरः निसा आयत 60-61)

वहाँ अगर उन्हें शरई फ़ैसले में अपना नफ़ा नज़र आता हो तो लम्बे-लम्बे कलिमे पढ़ते हुए गर्दन हिलाते हुए हंसी ख़ुशी चले आयेंगे और जब मालूम हो जाये कि शरई फ़ैसला उनकी दिली इच्छा के ख़िलाफ़ है, दुनियावी स्वार्थ के विरुद्ध है तो मुड़कर हक़ की तरफ़ देखेंगे भी नहीं। पस ऐसे लोग पक्के काफ़िर हैं। इसलिये कि वे तीन हाल से ख़ाली नहीं- या तो उनके दिलों में ही बेईमानी बैठ गयी है, या उन्हें दीने ख़ुदा की हक़्क़ानियत (हक़ और सही होने) में शक व शुब्हात हैं, या डर है कि कहीं ख़ुदा व रसूल उनका हक़ न मार लें, उन पर ज़ुल्म व सितम न कर लें, और ये तीनों सूरतें कुफ़्र की हैं। अल्लाह उनमें से हर एक को जानता है, जो जैसा बातिन में है ख़ुदा तआ़ला पर सब कुछ ज़ाहिर है। दर असल यही लोग फ़ाजिर (बुरे और बदकार) हैं, ज़ालिम हैं, ख़ुदा और रसूले ख़ुदा इससे पाक हैं।

हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में ऐसे काफ़िर जो ज़ाहिर में (दिखावे के लिये) मुसलमान थे बहुत से थे, उन्हें

Maktab E Ashraf

जब अपना मतलब क़ुरआन व हदीस में निकलता नज़र आता तो नबी पाक की ख़िदमत में अपने झगड़े पेश करते और जब उन्हें दूसरों से मतलब निकलता हुआ नज़र आता तो सरकारे मुहम्मदी में आने से साफ़ इनकार कर जाते। पस यह आयत उतरी और हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जिन दो शख़्सों में कोई झगड़ा हो और वे इस्लामी हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसले की तरफ़ बुलाया जायें और वे उसको तस्लीम न करें तो वे ज़ालिम हैं और नाहक़ पर हैं। यह हदीस ग़रीब है।

फिर सच्चे मोमिनों की शान बयान होती है कि वे किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह के सिवा किसी तीसरी चीज़ को दीन में दाख़िल नहीं समझते। वे तो क़ुरआन व हदीस सुनते ही, उसकी तरफ़ की आवाज़ कान में पड़ते ही साफ़ कह देते हैं कि हमने सुना और माना। ये कामयाब, बामुराद और निजात पाने वाले लोग हैं। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. जो बदरी सहाबी हैं, अन्सारी हैं, अन्सारियों के एक सरदार हैं, उन्होंने अपने भतीजे जनादा बिन उमैया से अपने इन्तिक़ाल के वक़्त फ़रमाया कि आओ मुझसे सुन लो कि तुम्हारे ज़िम्मे क्या है? सुनना और मानना, सख़्ती में भी आसानी में भी, नाख़ुशी में भी, उस वक़्त भी जबकि तेरा हक़ दूसरे को दिया जा रहा हो अपनी ज़बान को अ़दल (इन्साफ़) और सच्चाई के साथ सीधी रख, काम के अहल लोगों से काम को न छीन, हाँ अगर किसी खुली नाफ़रमानी का वे हुक्म दें तो न मानना। किताबुल्लाह (क़ुरआन शरीफ़) के ख़िलाफ़ कोई भी कहे हरगिज़ न मानना। किताबुल्लाह की पैरवी में लगे रहना। हज़रत अबूदर्दा रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस्लाम बग़ैर ख़ुदा की इताअ़त के नहीं और बेहतरी जो कुछ है वह जमाअ़त में और ख़ुदा की, उसके रसूल की और मुसलमानों के ख़लीफ़ा (हाकिम) की और आ़म मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही में है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस्लाम की मज़बूत रस्सी, ख़ुदा के एक होने की गवाही, नमाज़ की पाबन्दी, ज़कात की अदायेगी और मुसलमानों के बादशाह की इताअ़त (आज्ञा का पालन करना) है। जो हदीसें व रिवायात, किताबुल्लाह सुन्नते रसूलुल्लाह की इताअ़त के बारे में और मुसलमान बादशाहों के मानने के बारे मन्क़ूल हैं, वे इस क़द्र कसरत से हैं कि सब यहाँ किसी तरह बयान हो ही नहीं सकते। जो शख़्स ख़ुदा और रसूल का फ़रमाँबरदार बन जाये, जो हुक्म मिले बजा लाये, जिन चीज़ों से रोक दें रुक जाये, जो गुनाह हो जाये उससे डरता रहे, आगे के लिये उससे बचता रहे, ऐसे लोग तमाम भलाईयों को समेटने वाले और तमाम बुराईयों से बच जाने वाले हैं। दुनिया और आख़िरत में वे निजात पाने वाले हैं।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ

और वे लोग बड़ा ज़ोर लगाकर क़समें खाया करते हैं कि अल्लाह की क़सम! (हम ऐसे फ़रमाँबर्दार हैं कि) अगर आप उनको (यानी हमको) हुक्म दें तो वे अभी निकल खड़े हों, (आप उनसे) कह दीजिए कि बस क़समें न खाओ, (तुम्हारी) फ़रमाँबरदारी (की हक़ीक़त) मालूम है, (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखता है। (53) आप कहिए कि अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल की इताअ़त करो, फिर अगर तुम लोग (इताअ़त

وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ○	से) मुँह मोड़ोगे तो समझ लो कि रसूल के ज़िम्मे वही (तब्लीग़) है जिसका उन पर भार रखा गया है, और तुम्हारे ज़िम्मे वह है जिसका तुम पर भार रखा गया है। और अगर तुमने उनकी इताअ़त कर ली तो राह पर जा लगोगे, और (बहरहाल) रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। (54)

Maktab E Ashraf

तुम्हारी हक़ीक़त मालूम है

अहले निफ़ाक़ (यानी मुनाफ़िक़ों) का हाल बयान हो रहा है कि वे पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल. के पास आकर अपनी ईमानदारी और ख़ैरख़्वाही जताते हुए क़समें खा-खाकर यक़ीन दिलाते थे कि हम जिहाद के लिये तैयार बैठे हैं, बल्कि उसके लिये बेक़रार हैं, बस आपके हुक्म की देर है, हुक्म होते ही घर-बार बाल-बच्चे छोड़कर मैदाने जंग में पहुँच जायेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- उनसे कह दो कि क़समें न खाओ, तुम्हारी इताअ़त (हुक्म के मानने) की हक़ीक़त तो ज़ाहिर व स्पष्ट है, ज़बानी डींगें बहुत हैं, अ़मली हिस्सा शून्य है। तुम्हारी क़समों की हक़ीक़त भी मालूम है, दिल में कुछ है ज़बान पर कुछ है। जितनी ज़बान मोमिन है उतना ही दिल काफ़िर है। ये क़समें सिर्फ़ मुसलमानों की हमदर्दी हासिल करने के लिये हैं। इन क़समों को तो ये लोग ढाल (अपने बचाव का सामान) बनाये हुए हैं, तुमसे ही नहीं बल्कि काफ़िरों के सामने भी उनकी मुवाफ़क़त की और उनकी इमदाद की क़समें खाते हैं, लेकिन इतने बुज़दिल हैं कि उनका साथ भी ख़ाक नहीं दे सकते।

इस जुमले के एक मायने यह भी हो सकते हैं कि तुम्हें तो माक़ूल और पसन्दीदा इताअ़त का रास्ता अपनाना चाहिये न कि क़समें खाने और डींगें मारने का। तुम्हारे सामने मुसलमान मौजूद हैं, देखो! न वे क़समें खाते हैं न बढ़-बढ़कर बातें बनाते हैं, हाँ काम के वक़्त सबसे आगे निकल आते हैं और बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। अल्लाह पर किसी का कोई अ़मल छुपा नहीं, वह अपने बन्दों के एक-एक अ़मल से बाख़बर है। हर गुनाहगार व फ़रमाँबरदार उस पर ज़ाहिर है, हर एक के बातिन पर भी उसकी निगाहें वैसी ही हैं जैसी ज़ाहिर पर, अगरचे तुम ज़ाहिर कुछ करो लेकिन वह बातिन पर भी आगाह है। अल्लाह और उसके रसूल की यानी क़ुरआन की और हदीसों की इत्तिबा करो, अगर तुम उससे मुँह मोड़ लो, उसे छोड़ दो तो उस गुनाह का वबाल मेरे नबी (सल्ल.) पर नहीं, उसके ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ामे ख़ुदा का पहुँचाना और अमानत का अदा कर देना है। तुम पर वह है जिसके ज़िम्मेदार तुम हो, यानी क़बूल करना वग़ैरह। हिदायत सिर्फ़ रसूल की फ़रमाँबरदारी में है, इसलिये सिराते मुस्तक़ीम (सीधे और सही रास्ते) का दाअ़ी (दावत देने वाला) वही है, वह सिराते मुस्तक़ीम उस ख़ुदा तक पहुँचाता है जिसका राज-पाट तमाम ज़मीन व आसमान में है। रसूलुल्लाह सल्ल. के ज़िम्मे सिर्फ़ पहुँचा देना ही है, हिसाब सब का हमारे ज़िम्मे है। जैसा कि एक दूसरी जगह पर फ़रमायाः

فَذَكِّرْ إِنَّمَآ أَنتَ مُذَكِّرٌ .... الخ.

Maktab E Ashraf

कि तू सिर्फ़ नसीहत करने और भलाई की तालीम देने वाला है, उन्हें नसीहत कर दिया कर, तू उनका वकील या दरोग़ा नहीं।

फ़ायदाः वहब बिन मुनब्बेह रह. फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल के एक नबी शअ़्या की तरफ़ अल्लाह की 'वही' आयी कि तू बनी इस्राईल के मजमे में खड़ा हो जा, मैं तेरी ज़बान से जो चाहूँगा निकलवाऊँगा। चुनाँचे आप खड़े हुए तो आपकी ज़बान से अल्लाह के हुक्म से यह ख़ुतबा बयान हुआ-

ऐ आसमान! सुन, ऐ ज़मीन! ख़ामोश रह, अल्लाह तआ़ला एक शान पूरी करना और एक मामले की तदबीर करना चाहता है, जिसे वह पूरा करने वाला है। वह चाहता है कि जंगलों को आबाद कर दे, वीरानों को बसा दे, बयाबानों को हरा-भरा बना दे, फ़क़ीरों को मालदार कर दे, चरवाहों को बादशाह बना दे, अनपढ़ों में से एक उम्मी को नबी बनाकर भेजे जो न बुरी बात ज़बान पर लाने वाला हो और न बुरे अख़्लाक़ वाला हो, न बाज़ारों में शोर व गुल करने वाला हो। इतना मिस्कीन सिफ़त और विनम्रता व आ़जिज़ी करने वाला हो कि उसके दामन की हवा से वह चिराग़ भी न बुझे जिसके पास से वह गुज़रा हो। अगर वह सूखे बाँसों पर पैर रखकर चले तो भी चरचराहट किसी के कान में न पहुँचे। मैं उसे बशीर व नज़ीर (ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला) बनाकर भेजूँगा, वह ज़बान का पाक होगा, अन्धी आँखें उसकी वजह से रोशन हो जायेंगी, बहरे कान उसके सबब सुनने लगेंगे, पर्दा पड़े दिल उसकी बरकत से खुल जायेंगे। हर-हर भले काम से मैं उसे संवारूँगा। हर-हर अच्छे अख़्लाक़ से मैं उसे नवाज़ूँगा। सकीनत (दिल का सुकून व इत्मीनान) उसका लिबास होगी, नेकी उसका चलन होगी, तक़वा उसका ज़मीर होगा, हिक्मत उसकी बातें होंगी, सच्चाई व वफ़ा उसकी तबीयत होगी, माफ़ी व दरगुज़र करना और उम्दगी व भलाई चाहना उसकी ख़स्लत होगी, हक़ उसकी शरीअ़त होगी, अ़दल (इन्साफ़ और दरमियानी राह) उसकी सीरत होगी, हिदायत उसकी इमाम होगी, इस्लाम उसकी मिल्लत होगी, अहमद उसका नाम होगा (सल्ल.), गुमराही के बाद उसकी वजह से हिदायत फैला दूँगा, जहालत के बाद इल्म चमक उठेगा, पस्ती के बाद उसकी वजह से तरक़्क़ी होगी। अनजान-पना उसकी ज़ात से पहचानने से बदल जायेगा, कमी ज़्यादती से बदल जायेगी, फ़क़ीरी को उसकी वजह से अमीरी से बदल दूँगा। उसकी ज़ात से अलग-अलग हुए और बिछड़े लोगों को मैं मिला दूँगा। जुदाई के बाद उल्फ़त होगी, फूट के बाद मिलाप और एकता होगी, विवाद और मतभेद के बाद इत्तिफ़ाक़ होगा, विभिन्न दिल और विभिन्न ख़्वाहिशें एक हो जायेंगी, अल्लाह के बेशुमार बन्दे हलाकत से बच जायेंगे, उसकी उम्मत को मैं तमाम उम्मतों से बेहतर कर दूँगा जो लोगों के नफ़े और भलाई के लिये होगी, भलाईयों का हुक्म करने वाली बुराईयों से रोकने वाली होगी। वे अल्लाह को एक मानने वाले, ईमान की दौलत वाले और मुख़्लिस होंगे, ख़ुदा के जितने रसूल ख़ुदा की तरफ़ से जो कुछ लाये हैं ये सबको मानेंगे किसी के इनकारी न होंगे।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ	(ऐ पूरी उम्मत!) तुममें जो लोग ईमान लाएँ और नेक अ़मल करें उनसे अल्लाह तआ़ला वायदा फ़रमाता है कि उनको (इस इत्तिबा की बरकत से) ज़मीन में हुकूमत अ़ता फ़रमाएगा, जैसा कि उनसे पहले (हिदायत वाले) लोगों को हुकूमत दी थी। और जिस दीन को (अल्लाह

Maktab E Ashraf

قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ○	तआ़ला ने) उनके लिए पसन्द फ़रमाया है (यानी इस्लाम) उसको उनके (आख़िरत के नफ़े के) लिए क़ुव्वत देगा, और उनके इस ख़ौफ़ के बाद उसको अमन से बदल देगा, बशर्ते कि मेरी इबादत करते रहें (और) मेरे साथ किसी क़िस्म का शिर्क न करें। और जो शख़्स इस (वायदे के ज़ाहिर होने) के बाद नाशुक्री करेगा तो ये लोग बेहुक्म हैं। (55)

ख़ुदा तआ़ला का वायदा

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने रसूल सल्ल. से वायदा फ़रमा रहा है कि आपकी उम्मत को वह ज़मीन का मालिक बना देगा, लोगों का सरदार कर देगा, मुल्क उनकी वजह से आबाद होगा, अल्लाह के बन्दे उनसे ख़ुश होंगे। आज ये लोगों से डरे-सहमे हैं कल ये अमन व इत्मीनान के साथ होंगे, हुकूमत इनकी होगी, सल्तनत इनके हाथों में होगी। अल्हम्दु लिल्लाह यही हुआ भी। मक्का, ख़ैबर, बेहरीन, जज़ीरा-ए-अ़रब और यमन तो ख़ुद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. की मौजूदगी में फ़तह हो गये। हिज्र के मजूसियों ने जिज़या देकर मातहती क़बूल कर ली, शाम के बाज़ हिस्सों का भी यही हाल हुआ, हिरक़्ल बादशाह ने तोहफ़े तहाईफ़ रवाना किये। मिस्र के हाकिम ने भी ख़िदमते अक़्दस में तोहफ़े भेजे, स्कन्दरिया के बादशाह मक़ोक़स ने और अ़म्मान के शाहों ने यही किया और इस तरह अपनी इताअ़त-गुज़ारी का सुबूत दिया। हबशा के बादशाह अस्महा तो मुसलमान हो ही गये थे और उनके बाद जो हबशा का बादशाह बना उसने भी सरकारे मुहम्मदी में अ़क़ीदत-मन्दी (आस्था) के साथ तोहफ़े रवाना किये।

फिर जबकि अल्लाह तआ़ला रब्बुल-आ़लमीन ने अपने मोहतरम रसूल को अपनी मेहमानदारी में बुलवा लिया, आपकी ख़िलाफ़त सिद्दीके अकबर रज़ि. ने संभाली तो जज़ीरा-ए-अ़रब की हुकूमत को मज़बूत और मुस्तक़िल बनाई, साथ ही एक भारी लश्कर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद सैफ़ुल्लाह रज़ि. की अगुवाई में ईरानी रियासतों की तरफ़ भेजा जिसने वहाँ विजयों और कामयाबियों का सिलसिला शुरू किया, कुफ़्र के पेड़ों को छाँट दिया और इस्लामी पौधे हर तरफ़ लगा दिये। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि. वग़ैरह हज़रात के नेतृत्व में शाम के मुल्कों की तरफ़ लश्कर इस्लाम के जाँबाज़ों का रवाना किया उन्होंने भी यहाँ इस्लाम का झण्डा बुलन्द किया और सलीबी निशान (ईसाईयों के धार्मिक निशान) गिराये।

मिस्र की तरफ़ मुजाहिदीन का लश्कर हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ि. की सरदारी में रवाना फ़रमाया। बसरा, दश्मिक़, हर्रान वग़ैरह की विजयों के बाद आप भी आख़िरत की दुनिया को रवाना हुए और अल्लाह की तरफ़ से दिल में डाले गये इशारे के सबब हज़रत उमर रज़ि. जैसे ज़बरदस्त ताक़तवर हाथों में सल्तनते इस्लाम की बाग-डोर दे गये। सच तो यह है कि आसमान के नीचे किसी नबी के बाद ऐसे पाक ख़लीफ़ों का दौर नहीं हुआ। आपकी तबीयत की क़ुव्वत, आपकी नेक सीरत, आपके अ़दल व इन्साफ़ का कमाल, आपकी ख़ुदा-तरसी की मिसाल दुनिया में आपके बाद तलाश करना महज़ बेसूद और बिल्कुल ला-हासिल है।

Maktab E Ashraf

तमाम मुल्के शाम, मिस्र का पूरा इलाक़ा, मुल्क फ़ारस का अधिकतर हिस्सा आपकी ख़िलाफ़त के ज़माने में फ़तह हुआ। किसरा की हुकूमत के टुकड़े उड़ गये, ख़ुद किसरा को मुँह छुपाने के लिये कोई जगह न मिली, ज़बरदस्त ज़िल्लत व अपमान के साथ भागता फिरा। क़ैसर (रोम के बादशाह) को फ़ना कर दिया, नाम मिटा दिया। शाम की सल्तनत से अलग होना पड़ा, क़ुस्तुनतुनिया में जाकर मुँह छुपाया।

इन सल्तनतों (बादशाहतों) की सदियों की दौलत और जमा किये हुए बेशुमार ख़ज़ाने इन अल्लाह के बन्दों ने ख़ुदा के नेक-नफ़्स और मिस्कीन-ख़स्लत बन्दों पर ख़र्च किये और ख़ुदा के वे वायदे पूरे हुए जो उसने अपने हबीब नबी करीम सल्ल. की ज़बानी किये थे। आप पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. की ख़िलाफ़त का दौर आता है और पूरब व पश्चिम की आख़िरी हदों तक ख़ुदा का दीन फैल जाता है। इस्लामी लश्कर एक तरफ़ मध्य-पूर्व तक और दूसरी तरफ़ पश्चिम की आख़िरी हदों तक पहुँचकर दम लेते हैं और मुजाहिदों की चमकदार तलवारें ख़ुदा की तौहीद को दुनिया के कोने-कोने और चप्पे-चप्पे में पहुँचा देती हैं। उन्दुलुस, क़ब्रुस, क़ैरवान व सब्ता यहाँ तक कि चीन तक आपके ज़माने में फ़ुतूहात हुयीं। किसरा क़त्ल कर दिया गया, उसका मुल्क बल्कि उसका नाम व निशान तक खोद कर फेंक दिया गया और हज़ारों बरस के आतिश-कदे (आग के अलाव) बुझा दिये गये और हर ऊँचे टीले से अल्लाहु अकबर की आवाज़ें आने लगीं। दूसरी तरफ़ मदाईन, इराक़, ख़ुरासान, अहवाज़ सब फ़तह हो गये। तुर्कों से जंगे अ़ज़ीम (ज़बरदस्त युद्ध) हुई, आख़िर उनका बड़ा बादशाह ख़ाक़ान ख़ाक में मिला, ज़लील व ख़्वार हुआ और ज़मीन के पूर्वी और पश्चिमी कोनों ने अपने ख़िराज हज़रत उस्मान की बारगाहे ख़िलाफ़त में पहुँचवाये। हक़ तो यह है कि मुजाहिदीन की इन जाँबाज़ियों में जान डालने वाली चीज़ हज़रत उस्मान रज़ि. की तिलावते क़ुरआन की बरकत थी। आपको क़ुरआन से कुछ ऐसा शग़फ़ (मोह और लगाव) था जो बयान से बाहर है। क़ुरआन के जमा करने, उसके हिफ़्ज़ करने, उसकी इशाअ़त (प्रसार) करने, उसके संभालने में जो नुमायाँ (विशेष) ख़िदमतें हज़रत उस्मान रज़ि. के ज़रिये सामने आईं वे यक़ीनन बेमिसाल हैं, उनकी कोई नज़ीर नहीं।

आपके ज़माने को देखो और अल्लाह के रसूल सल्ल. की इस पेशीनगोई (भविष्यवाणी) को देखो कि आपने फ़रमाया था- मेरे लिये ज़मीन समेट दी गयी, यहाँ तक कि मैंने पूरब व पश्चिम देख लिया। जल्द ही मेरी उम्मत की सल्तनत वहाँ तक पहुँच जायेगी जहाँ तक इस वक़्त मुझे दिखाई गयी है। मुसलमानो! रब के इस वायदे को, पैग़म्बर की इस पेशीनगोई को देखो फिर इतिहास के पन्ने पलटो और अपनी गुज़िश्ता बड़ाई व शान को देखो, आओ नज़रें डालो कि आज तक इस्लाम का झण्डा अल्हम्दु लिल्लाह बुलन्द है और मुसलमान उन मुजाहिदीने किराम की फ़तह की हुई ज़मीनों में शाहाना हैसियत से चल-फिर रहे हैं। अल्लाह और उसके रसूल सच्चे हैं।

मुसलमानो! अफ़सोस और सौ बार अफ़सोस है उस पर जो क़ुरआन व हदीस के दायरे से बाहर निकले, हसरत और सौ बार हसरत उस पर जो अपने बाप-दादा (यानी पूर्वजों) के ज़ख़ीरे को ग़ैर के हवाले करे। अपने बाप-दादाओं के ख़ून के क़तरों से ख़रीदी हुई चीज़ को अपनी नालायक़ियों और बेदीनियों से ग़ैर की भेंट चढ़ा दे और चैन से बैठा लेटा रहे। अल्लाह हमें कामिल ईमान अ़ता करे, अल्लाह हमें सच्चा ज़ौक़ दे, अल्लाह हमें इस्लामी सिपाही बनाये, अल्लाह हमें अपने लश्कर की तौफ़ीक़ दे, अल्लाह हमें अपना लश्करी (सिपाही) बना ले, आमीन आमीन।

Maktab-E-Ashraf

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि लोगों का काम भलाई से जारी रहेगा यहाँ तक कि उनमें बारह ख़लीफ़ा हों। फिर आपने एक जुमला आहिस्ता से कहा जो हदीस के बयान करने वाले हज़रत जाबिर बिन समुरा सुन न सके तो उन्होंने अपने वालिद साहिब से पूछा कि अल्लाह के नबी ने क्या फ़रमाया? उन्होंने बयान किया कि यह फ़रमाया है- यह सबके सब क़ुरैशी होंगे। (मुस्लिम) आपने यह बात उस शाम को बयान फ़रमाई थी जिस दिन हज़रत माअिज़ बिन मालिक रज़ि. को रजम (संगसार) किया गया था। पस मालूम हुआ कि उन बारह ख़लीफ़ों का होना ज़रूरी है, लेकिन याद रहे कि वे ये ख़लीफ़ा नहीं जो शियाओं ने समझ रखे हैं, क्योंकि शियाओं के इमामों में तो बहुत से वे भी हैं जिन्हें ख़िलाफ़त व सल्तनत का कोई हिस्सा भी पूरी उम्र में नहीं मिला था, और ये बारह ख़लीफ़ा होंगे, सबके सब क़ुरैशी होंगे, इन्साफ़ का हुक्म करने वाले होंगे, उनकी ख़ुशख़बरी अगली किताबों में भी है, और यह भी शर्त नहीं है कि ये सबके सब एक के बाद एक होंगे, बल्कि उनका होना यक़ीनी है चाहे कुछ लगातार हों और कुछ अलग-अलग ज़मानों में हों। चुनाँचे चारों ख़लीफ़ा तो तरतीब वार हुए। सबसे पहले अबू बक्र रज़ि., फिर उमर रज़ि., फिर उस्मान रज़ि., फिर अ़ली रज़ि.। उनके बाद फिर सिलसिला टूट गया, फिर भी ऐसे ख़लीफ़ा हुए और मुम्किन है कि आगे चलकर भी हों, उनके सही ज़मानों का इल्म अल्लाह ही को है। हाँ इतना यक़ीनी है कि हज़रत इमाम महदी रहमतुल्लाहि अ़लैहि भी उन्हीं बारह में से होंगे जिनका नाम हुज़ूर सल्ल. के नाम से, जिनकी कुन्नियत हुज़ूर की कुन्नियत से मुताबिक़ होगी। तमाम ज़मीन को अ़दल व इन्साफ़ से भर देंगे जैसे कि वह ज़ुल्म व ना-इन्साफ़ी से भर गयी होगी।

हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि मेरे बाद ख़िलाफ़त तीस साल रहेगी, फिर काट खाने वाला मुल्क हो जायेगा। अबुल-आ़लिया इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा रज़ि. बीस साल तक मक्के में रहे, ख़ुदा की तौहीद और उसकी इबादत की तरफ़ दुनिया को दावत देते रहे, लेकिन यह ज़माना छुपे रहने, डर ख़ौफ़ और बेइत्मीनानी का था, जिहाद का हुक्म नहीं आया था। मुसलमान बेहद कमज़ोर थे। उसके बाद हिजरत का हुक्म हुआ। मदीना पहुँचे अब जिहाद का हुक्म मिला, जिहाद शुरू हुआ, दुश्मनों ने चारों तरफ़ से घेर रखा था, मुसलमान बहुत डरे हुए थे। ख़तरे से कोई वक़्त ख़ाली नहीं जाता था। सुबह शाम सहाबा हथियारों से लैस रहते थे। एक सहाबी ने एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. से कहा या रसूलल्लाह! क्या हम इसी तरह ख़ौफ़ खाये हुए रहेंगे? या रसूलल्लाह! क्या हमारी ज़िन्दगी की कोई घड़ी भी इत्मीनान और चैन से नहीं गुज़रेगी? या रसूलल्लाह! हथियार उतार कर भी हमें कभी चैन का साँस लेना मयस्सर आयेगा या नहीं? आपने पूरे सुकून से फ़रमाया- कुछ दिन और सब्र कर लो, फिर इस क़द्र अमन व इत्मीनान हो जायेगा कि पूरी मज्लिस भरे दरबार में तकिया लगाये आराम से बैठे हुए होंगे। एक के पास क्या किसी के पास कोई हथियार न होगा, क्योंकि कामिल अमन व अमान, पूरा चैन व सुकून होगा। उसी वक़्त यह आयत उतरी, फिर तो अल्लाह के नबी जज़ीरा-ए-अ़रब (अ़रब के इलाक़े) पर ग़ालिब आ गये। अ़रब भर में कोई काफ़िर न रहा, मुसलमानों के दिल ख़ौफ़ से ख़ाली हो गये और हथियार हर वक़्त लगाये रहना ज़रूरी न रहा। फिर इसी अमन व राहत का दौर-दौरा हुज़ूर सल्ल. के ज़माने के बाद भी तीन ख़िलाफ़तों तक रहा, यानी अबू बक्र, उमर व उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के ज़मानों तक। फिर मुसलमान उन झगड़ों में पड़ गये जो ज़ाहिर हुए, फिर ख़ौफ़ज़दा रहने लगे और पहरेदार, चौकीदार और निगराँ वग़ैरह मुक़र्रर किये, अपनी हालतों को बदल दिया तो ख़ुद भी बदल गये।

Maktab E Ashraf

बाज़ पहले बुज़ुर्गों से नकल किया गया है कि उन्होंने हज़रत अबू बक्र रज़ि. की ख़िलाफ़त की हक़्क़ानियत (सही और हक़ होने) के बारे में इस आयत को पेश किया। हज़रत बरा बिन आज़िब कहते हैं कि जिस वक़्त यह आयत उतरी उस वक़्त हम इन्तिहाई ख़ौफ़ और परेशानी व बेक़रारी की हालत में थे, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ........ الخ.

यानी वह वक़्त भी था कि तुम बेहद कमज़ोर और थोड़े थे, और क़दम-क़दम और दम-दम पर डरे रहते थे, ख़ुदा तआला ने तुम्हारी संख्या बढ़ा दी, तुम्हें क़ुव्वत व ताक़त इनायत फ़रमाई और अमन व अमान दिया। फिर बयान फ़रमाया कि जैसे उनसे पहले के लोगों को उसने ज़मीन का मालिक कर दिया था, जैसा कि हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमायाः

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ........ الخ.

बहुत मुम्किन है कि बल्कि बहुत क़रीब है कि अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को हलाक कर दे और तुम्हें उनका जानशीन (जगह लेने वाला) बना दे। एक और आयत में है:

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ.

यानी हमने उन पर एहसान करना चाहा जो ज़मीन भर में सबसे ज़्यादा ज़ईफ़ व कमज़ोर थे।

फिर फ़रमाया कि उनके दीन को जो अल्लाह का पसन्दीदा है जमा देगा और उसे क़ुव्वत व ताक़त देगा। हज़रत अ़दी बिन हातिम रज़ि. जब बतौर वफ़्द आपके पास आये तो आपने उनसे फ़रमाया- क्या तूने हैरा को देखा है? उसने जवाब दिया कि मैं हैरा को नहीं जानता, हाँ नाम सुना है। आपने फ़रमाया- उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अल्लाह तआ़ला मेरे इस दीन को पूरी तरह फैलायेगा, यहाँ तक अमन व अमान हो जायेगा कि हैरा से एक औ़रत सवार तन्हा निकलेगी और वह बैतुल्लाह तक पहुँचकर तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर वापस होगी, न ख़ौफ़ज़दा होगी न वह किसी के अमन में होगी। यक़ीन मान कि किसरा बिन हरमुज़ ईरान के बादशाह के ख़ज़ाने फ़तह होंगे। हज़रत अ़दी रज़ि. ने ताज्जुब से पूछा कि ईरान के बादशाह किसरा बिन हरमुज़ के ख़ज़ाने मुसलमानों के क़ब्ज़े में आयेंगे? आपने फ़रमाया हाँ! इसी किसरा बिन हरमुज़ के। माल इस क़द्र बढ़ जायेगा कि क़बूल करने वाला न मिलेगा।

हज़रत अ़दी रज़ि. फ़रमाते हैं कि अब तुम देख लो कि वास्तव में हैरा से औ़रतें बग़ैर किसी पनाह के आती-जाती हैं। इस पेशीनगोई (भविष्यवाणी) को पूरा होते हुए हमने देख लिया। दूसरी पेशीनगोई तो मेरी निगाहों के सामने पूरी हुई। किसरा के ख़ज़ाने फ़तह करने वालों में ख़ुद मैं मौजूद था। और तीसरी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) भी यक़ीनन पूरी होकर रहेगी, क्योंकि वह भी रसूलुल्लाह सल्ल. का इरशाद है।

मुस्नद अहमद में हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि इस उम्मत को तरक़्क़ी और संख्या में बढ़ोतरी के लिये मदद और दीन की इशाअ़त (फैलाव और प्रसार) की ख़ुशख़बरी दो, हाँ जो शख़्स आख़िरत का इल्म दुनिया के हासिल करने के लिये हासिल करे वह जान ले कि आख़िरत में उसे कोई हिस्सा न मिलेगा।

फिर फ़रमाता है कि वे मेरी ही इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी को शरीक न करेंगे। मुस्नद में है, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं एक गधे पर रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ आपके पीछे बैठा हुआ था, मेरे और आपके बीच सिर्फ़ पालान की लकड़ी थी। आपने मेरे नाम से मुझे आवाज़ दी, मैंने कहा

Maktab E Ashraf

जी मैं हाज़िर हूँ। फिर थोड़ी देर चलने के बाद इसी तरह मुझे पुकारा और मैंने भी उसी तरह जवाब दिया। आपने फ़रमाया जानते हो अल्लाह का हक़ अपने बन्दों पर क्या है? मैंने कहा अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानता है। आपने फ़रमाया बन्दों पर ख़ुदा का हक़ तो यह है कि वे उसी की इबादत करें, उसके साथ किसी को शरीक न करें। फिर थोड़ी सी देर चलने के बाद मुझे पुकारा और मैंने जवाब दिया तो आपने फ़रमाया जानते हो जब बन्दे अल्लाह का हक़ अदा करें तो अल्लाह के ज़िम्मे बन्दों का हक़ क्या है? मैंने जवाब दिया कि अल्लाह और उसके रसूल ही को पूरा इल्म है। आपने फ़रमाया कि उन्हें अ़ज़ाब न करे।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

फिर फ़रमाया इसके बाद जो मुन्किर हो जाये वह यक़ीनन फ़ासिक़ है यानी इसके बाद भी जो मेरी फ़रमाँबरदारी (आज्ञा का पालन) छोड़ दे उसने मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ किया है, और यह सख़्त और बहुत बड़ा गुनाह है। शाने ख़ुदा देखो कि जिस ज़माने में जितना इस्लाम का ज़ोर रहा उतनी ही अल्लाह की मदद हुई। सहाबा अपने ईमान में बढ़े हुए थे, फ़ुतूहात (विजयों और कामयाबियों) में सबसे आगे निकल गये। ज्यों-ज्यों ईमान कमज़ोर होता गया दुनियावी हालत, सल्तनत व शान और दबदबा भी जाता रहा।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि मेरी उम्मत में से एक जमाअ़त हमेशा हक़ पर रहेगी और वह ग़ालिब और स्थिर रहेगी, उनके मुख़ालिफ़ उनका कुछ न बिगाड़ सकेंगे, क़ियामत तक इसी तरह रहेगी। एक और रिवायत में है- यहाँ तक कि ख़ुदा का वायदा आ जाये। एक और रिवायत में है- यहाँ तक कि यह जमाअ़त सबसे आख़िर में दज्जाल से जिहाद करेगी। एक और हदीस में है कि हज़रत ईसा के उतरने तक ये लोग काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे। ये सब रिवायतें सही हैं और सब का एक ही मतलब है।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○ ع ١٣	**और (मुसलमानो!) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात दिया करो और (बाक़ी अहकाम में भी) रसूल की इताअ़त किया करो ताकि तुम पर (कामिल) रहम किया जाए। (56) (ऐ मुख़ातब!) काफ़िरों के बारे में यह ख़्याल मत करना (कि हमारे क़हर से बचने के लिए) ज़मीन (के किसी हिस्से) में (भागकर हमको) हरा देंगे, और (आख़िरत में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और बहुत ही बुरा ठिकाना है। (57)**

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फ़रमाँबरदारी

अल्लाह तआ़ला अपने ईमान वाले बन्दों को सिर्फ़ अपनी इबादत का हुक्म देता है, कि उसी के लिये नमाज़ें पढ़ते रहो और साथ ही उसके बन्दों के साथ एहसान व सुलूक करते रहो। ज़ईफ़ों, मिस्कीनों, फ़क़ीरों की ख़बरगीरी (यानी ख़्याल) करते रहो। माल में से ख़ुदा तआ़ला का हक़ यानी ज़कात निकालते रहो और हर चीज़ में अल्लाह के रसूल सल्ल. की इताअ़त (हुक्म का पालन) करते रहो। जिस बात का वह हुक्म फ़रमायें उसको पूरा करो, जिससे वह रोकें रुक जाओ। यक़ीन जानो कि ख़ुदा की रहमत हासिल करने का यही तरीक़ा है। चुनाँचे एक दूसरी आयत में है:

Maktab-E-Ashraf

أُولَٰٓئِكَ سَيَرۡحَمُهُمُ ٱللَّهُ.

यही लोग हैं जिन पर ज़रूर-ज़रूर ख़ुदा की रहमत नाज़िल होती है।

ऐ नबी! यह गुमान न करना कि आपको झुठलाने वाले और आपकी न मानने वाले हम पर ग़ालिब आ जायेंगे, या इधर-उधर भागकर हमारे बेपनाह अ़ज़ाब से बच जायेंगे। हम तो उनका असली ठिकाना जहन्नम में मुक़र्रर कर चुके हैं। जो रहने और लौटने के एतिबार से बहुत ही बुरी जगह है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لِيَسۡتَـٔۡذِنكُمُ ٱلَّذِينَ مَلَكَتۡ أَيۡمَٰنُكُمۡ وَٱلَّذِينَ لَمۡ يَبۡلُغُواْ ٱلۡحُلُمَ مِنكُمۡ ثَلَٰثَ مَرَّٰتٖۚ مِّن قَبۡلِ صَلَوٰةِ ٱلۡفَجۡرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُم مِّنَ ٱلظَّهِيرَةِ وَمِنۢ بَعۡدِ صَلَوٰةِ ٱلۡعِشَآءِۚ ثَلَٰثُ عَوۡرَٰتٖ لَّكُمۡۚ لَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ وَلَا عَلَيۡهِمۡ جُنَاحُۢ بَعۡدَهُنَّۚ طَوَّٰفُونَ عَلَيۡكُم بَعۡضُكُمۡ عَلَىٰ بَعۡضٖۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلۡأٓيَٰتِۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٞ ۝ وَإِذَا بَلَغَ ٱلۡأَطۡفَٰلُ مِنكُمُ ٱلۡحُلُمَ فَلۡيَسۡتَـٔۡذِنُواْ كَمَا ٱسۡتَـٔۡذَنَ ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِمۡۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمۡ ءَايَٰتِهِۦۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٞ ۝ وَٱلۡقَوَٰعِدُ مِنَ ٱلنِّسَآءِ ٱلَّٰتِي لَا يَرۡجُونَ نِكَاحٗا فَلَيۡسَ عَلَيۡهِنَّ جُنَاحٌ أَن

ऐ ईमान वालो! (तुम्हारे पास आने के लिए) तुम्हारे मम्लूकों "यानी ग़ुलाम बाँदियों वग़ैरह" को और तुम में से जो अभी बालिग़ होने की हद को नहीं पहुँचे, उनको तीन वक़्तों में इजाज़त लेना चाहिए- (एक तो) सुबह की नमाज़ से पहले, और (दूसरे) जब (सोने के लिए) दोपहर को अपने (कुछ) कपड़े उतार दिया करते हो, और (तीसरे) इशा की नमाज़ के बाद। ये तीन वक़्त तुम्हारे पर्दों के (वक़्त) हैं, (और) इन वक़्तों के अ़लावा न तुम पर कोई इल्ज़ाम है और न (बिना इजाज़त चले आने में) उन पर कुछ इल्ज़ाम है, (क्योंकि) वे कसरत से तुम्हारे पास आते-जाते रहते हैं, कोई किसी के पास और कोई किसी के पास। इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुमसे (अपने) अहकाम साफ़-साफ़ बयान करता है, और अल्लाह तआ़ला जानने वाला, हिक्मत वाला है। (58) और जिस वक़्त तुममें के वे लड़के (जिनका हुक्म ऊपर आया है) बालिग़ होने की हद को पहुँचें तो उनको भी उसी तरह इजाज़त लेना चाहिए जैसा कि उनसे अगले (यानी उनसे बड़ी उम्र के) लोग इजाज़त लेते हैं, इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुमसे अपने अहकाम साफ़-साफ़ बयान करता है, और अल्लाह तआ़ला जानने वाला, हिक्मत वाला है। (59) और बड़ी-बूढ़ी औ़रतें जिनको (किसी के) निकाह (में आने) की कुछ उम्मीद न रही हो, उनको (अलबत्ता) इस बात में कोई गुनाह नहीं कि वे अपने (फ़ालतू) कपड़े उतार दें,

Maktaba Ashraf

يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍ بِزِيْنَةٍ ط وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ط وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ○	बशर्ते कि बनने-सँवरने (की जगहों) का इज़हार न करें। और (अगरचे बड़ी-बूढ़ियों को मुँह खोलने की इजाज़त है लेकिन अगर) इससे भी एहतियात रखें तो उनके लिए और ज़्यादा बेहतर है। और अल्लाह तआ़ला (सब कुछ) सुनता है, (सब कुछ) जानता है। (60)

इजाज़त लेने से संबन्धित कुछ और अहकाम

इस आयत में क़रीबी रिश्तेदारों को भी हुक्म हो रहा है कि वे भी इजाज़त हासिल करके आया करें। इससे पहले की इस सूरत की शुरू की आयत में जो हुक्म था वह अजनबियों के लिये था। पस फ़रमाता है कि तीन वक़्तों में गुलामों को बल्कि नाबालिग़ बच्चों को भी इजाज़त माँगनी चाहिये- सुबह की नमाज़ से पहले, क्योंकि वह सोने का वक़्त होता है। दोपहर को जबकि इनसान दो घड़ी राहत हासिल करने के लिये उमूमन अपने घर में ऊपर के कपड़े उतार कर सोता है, और इशा की नमाज़ के बाद, क्योंकि वह भी बाल-बच्चों के साथ सोने का वक़्त है। पस इन तीन वक़्तों में न जायें, न मालूम इनसान बेफ़िक्री से अपने घर में किस हालत में हो। इसलिये घर के बाँदी-गुलाम और छोटे बच्चे भी बिना इत्तिला इन वक़्तों में चुप-चाप न घुस आयें। हाँ इन ख़ास वक़्तों के अ़लावा उन्हें आने के लिये इजाज़त माँगने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि उनका आना-जाना तो ज़रूरी है, बार-बार के आने-जाने वाले हैं, हर वक़्त इजाज़त लेना उनके लिये और साथ ही तुम्हारे लिये परेशानी की चीज़ होगी। एक हदीस में है कि बिल्ली नजिस (नापाक) नहीं, वह तो तुम्हारे घरों में तुम्हारे आस-पास घूमने फिरने वाली है (मतलब यह है कि जो चीज़ें बहुत ज़्यादा पेश आती है शरीअ़त उनमें ज़्यादा सख़्ती भी नहीं करती)। हुक्म तो यही है और अ़मल इस पर बहुत कम है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि तीन आयतों पर आ़म तौर पर लोगों ने अ़मल छोड़ रखा है- एक तो यही आयत, और एक सूरः निसा की आयतः

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُو الْقُرْبٰى........الخ

(सूरः निसा आयत 8) और एक सूरः हुजुरात की आयतः

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ... الخ.

(सूरः हुजुरात आयत 13)

शैतान लोगों पर छा गया और उन्हें इन आयतों पर अ़मल करने से ग़ाफ़िल कर दिया, गोया इन पर ईमान ही नहीं। मैंने तो अपनी इस बाँदी से भी कह रखा है कि इन तीनों वक़्तों में बिना इजाज़त के हरगिज़ न आये। पहली आयत में तो इन तीनों वक़्तों में लौंडी-गुलामों और नाबालिग़ बच्चों को भी इज़ाज़त लेने का हुक्म है, दूसरी आयत में मीरास की तक़सीम के वक़्त जो रिश्तेदार और यतीम मिस्कीन आ जायें उन्हें अल्लाह के नाम पर कुछ देने और उनसे नर्मी से बात करने का हुक्म है, और तीसरी आयत में हसब-नसब (नस्ल, ख़ानदान और ज़ात) पर फ़ख़्र न करने बल्कि क़ाबिले इकराम अल्लाह के ख़ौफ़ के होने का ज़िक्र है।

हज़रत शअ़बी रह. से किसी ने पूछा- क्या यह आयत मन्सूख़ हो गयी (यानी इस पर अ़मल का हुक्म

नहीं रहा) है? आपने फ़रमाया हरगिज़ नहीं। उसने कहा फिर लोगों ने इस पर अ़मल क्यों छोड़ रखा है? फ़रमाया अल्लाह से तौफ़ीक़ तलब करनी चाहिये। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत पर अ़मल छोड़ने की एक बड़ी वजह मालदारी और ख़ुशहाली है। पहले तो लोगों के पास इतना भी न था कि अपने दरवाज़ों पर पर्दे लटका लेते, या बड़े और खुले घर, कई अलग-अलग कमरों वाले होते, इसी लिये बहुत सी बार बाँदी-गुलाम बेख़बरी में चले आते थे और मियाँ-बीवी मशग़ूल होते तो आने वाले भी शर्मा जाते और घर वालों पर भी नागवार और बुरा गुज़रता। अब जबकि अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को कुशादगी (ख़ुशहाली और मालदारी) दी, कमरे अलग-अलग बन गये, दरवाज़े बाक़ायदा लग गये, दरवाज़ों पर पर्दे पड़ गये तो सुरक्षित हो गये। हुक्मे ख़ुदावन्दी की मस्लेहत पूरी हो गयी, इसलिये इजाज़त की पाबन्दी उठ गयी और लोगों ने इसमें सुस्ती और ग़फ़लत शुरू कर दी।

सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि यही तीन वक़्त ऐसे हैं कि इनसान को ज़रा फ़ुर्सत होती है। घर में होता है, ख़ुदा जाने किस हालत में हो, इसलिये लौंडी-गुलामों को भी इजाज़त का पाबन्द कर दिया, क्योंकि उस वक़्त में उमूमन लोग अपनी घर वालियों से मिलते हैं, नहा-धोकर आराम से घर से निकलें और नमाज़ों में शामिल हों। यह भी रिवायत किया गया है कि एक अन्सारी सहाबी ने हुज़ूर सल्ल. के लिये कुछ खाना पकाया, लोग बिना इजाज़त उनके घर जाने लगे। हज़रत असमा रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! यह तो बहुत ही बुरी बात है कि गुलाम बिना इजाज़त घर में आ जायें, मुम्किन है कि मियाँ-बीवी एक ही कपड़े में हों। पस यह आयत उतरी। इस आयत के मन्सूख़ (निरस्त) न होने पर इस आयत के ख़ात्मे के अलफ़ाज़ भी दलालत करते हैं कि इसी तरह अल्लाह अपनी आयतें बयान करता है और अल्लाह सब कुछ जानने वाला और हिक्मत वाला है। हाँ बच्चे जब बलूग़त (बालिग़ होने की उम्र) को पहुँच जायें तो फिर उन्हें इन तीन वक़्तों के अ़लावा और वक़्तों में भी इजाज़त लेनी चाहिये। छोटे बच्चों को घर में अपने माँ-बाप के पास जाने के लिये भी इन तीन वक़्तों में जिनका बयान ऊपर गुज़रा इजाज़त माँगनी ज़रूरी है, लेकिन बालिग़ होने के बाद तो हर वक़्त इत्तिला करके ही जाना चाहिये जैसा कि और बड़े लोग इजाज़त माँग कर आते हैं, चाहे अपने हों चाहे पराये। जो बूढ़ी औरतें इस उम्र को पहुँच जायें कि न अब उन्हें मर्द की ख़्वाहिश रहे न निकाह की उम्मीद, हैज़ (माहवारी) भी बन्द हो जाये, उम्र से उतर जायें तो उन पर पर्दे की वो पाबन्दियाँ नहीं जो दूसरी औरतों पर हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि आयतः

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ....... الخ.

(यानी सूरः नूर की आयत 31) के हुक्म से यह आयत अलग और बाहर है। इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि ऐसी औरतों को इजाज़त है कि वे बुर्क़ा और चादर उतार दिया करें, सिर्फ़ दुपट्टे और कुर्ते पायजामे में रहें। आपकी क़िराअत भी "अंय्यज़अ्-न मिन् सियाबिहिन्-न" है, मुराद इससे दुपट्टे के ऊपर की चादर है। पस बुढ़िया औरतें जबकि मोटा और चौड़ा दुपट्टा ओढ़े हुए हों तो उन्हें उसके ऊपर और चादर डालना ज़रूरी नहीं। लेकिन मक़सूद इससे भी यह है कि सिंगार का इज़्हार न हो।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से जब इस क़िस्म के सवालात औरतों ने किये तो आपने फ़रमाया- तुम्हारे लिये बनाव-सिंगार बेशक हलाल और अच्छा है लेकिन ग़ैर-मर्दों की आँखें ठण्डी करने के लिये नहीं। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि. की बीवी साहिबा बिल्कुल बुढ़िया हो गयीं तो आपने अपने गुलाम के हाथों अपने सिर के बालों में मेहंदी लगवाई। जब उनसे इसका सवाल किया गया तो फ़रमाया मैं उन उम्र-रसीदा

Maktab E Ashraf

औरतों में हूँ जिन्हें ख़्वाहिश नहीं रही। आख़िर में फ़रमाया कि अगरचे चादर का न लेना उन बड़ी औरतों के लिये जायज़ तो है मगर फिर भी अफ़ज़ल यही है कि चादरों और बुर्क़ों में ही रहें। अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनने जानने वाला है।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى
الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ
حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ
بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ
اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ
تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ
بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ
عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۧ ع ۸ ۱۴

न तो अन्धे आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न लंगड़े आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न बीमार आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न ख़ुद तुम्हारे लिए इस बात में (कुछ हर्ज है) कि तुम अपने घरों से (जिनमें बीवी और औलाद के घर भी आ गए) खाना खा लो, या अपने बाप के घर से या अपनी माँओं के घर से या अपने भाईयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या उन घरों से जिनकी कुन्जियाँ तुम्हारे इख़्तियार में हैं या अपने दोस्तों के घरों से, (फिर इसमें भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि सब मिलकर खाओ या अलग-अलग (खाओ), फिर (यह भी जान लो कि) जब तुम अपने घरों में जाने लगा करो तो अपने लोगों को सलाम कर लिया करो, (जो कि) दुआ़ के तौर पर (है, और) जो ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर है, (और) बरकत वाली उम्दा चीज़ है। (अल्लाह ने जिस तरह ये अहकाम बतलाये) इसी तरह अल्लाह तुम से (अपने) अहकाम बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो (और अ़मल करो)। (61)

कुछ माज़ूर व मजबूर लोगों का ज़िक्र

इस आयत में जिस हर्ज के न होने का ज़िक्र है उसके बारे में हज़रत अ़ता वग़ैरह तो फ़रमाते हैं कि इससे अन्धे लूले लंगड़े का जिहाद में न आना मुराद है। जैसे कि सूरः फ़तह में है, तो ये लोग अगर जिहाद में शामिल न हों तो इन पर उनके माक़ूल शरई उज़्र की वजह से कोई हर्ज नहीं। सूरः बराअत में है:

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى......... الخ.

Maktab E Ashraf

कि बड़ों-बूढ़ों पर और बीमारों पर और मुफ़लिसों पर जबकि वे दिल की गहराई से ख़ुदा के दीन के और अल्लाह के रसूल के ख़ैरख़्वाह (भला चाहने वाले और हमदर्द) हों, कोई हर्ज नहीं। भले लोगों पर कोई डाँट और सज़ा नहीं, अल्लाह माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है। उन पर भी इसी तरह कोई हर्ज नहीं जो सवारी नहीं पाते और तेरे पास आते हैं तो तेरे पास से भी उन्हें सवारी नहीं मिल सकती....।

हज़रत सअ़द रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि लोग अन्धों लूलों लंगड़ों और बीमारों के साथ खाना खाने में हर्ज जानते थे, कि ऐसा न हो कि वे खा न सकें और हम ज़्यादा खा लें, या अच्छा अच्छा खा लें, तो इस आयत में उन्हें इजाज़त मिली कि इसमें तुम पर कोई हर्ज नहीं। बाज़ लोग घिन करके भी उनके साथ खाने को नहीं बैठते थे, ये जाहिलाना आ़दतें शरीअ़त ने ख़त्म कर दीं। मुजाहिद रह. से मन्क़ूल है कि लोग ऐसे लोगों को अपने बाप भाई बहन वग़ैरह क़रीबी रिश्तेदारों के यहाँ पहुँचा आते थे कि वे वहाँ खा लें, ये लोग इससे आ़र (शर्म महसूस) करते कि हमें औरों के घर ले जाते हैं, इस पर यह आयत उतरी। सुद्दी रह. का क़ौल है कि इनसान जब अपने बहन भाई वग़ैरह के घर जाता तो वे न होते और औ़रतें कोई खाना उन्हें पेश करतीं तो ये उसे नहीं खाते थे कि मर्द तो हैं नहीं, न उनकी इजाज़त है, तो अल्लाह तआ़ला ने उसके खा लेने की इजाज़त व छूट अ़ता फ़रमाई।

यह जो फ़रमाया कि ख़ुद तुम पर भी हर्ज नहीं। यह तो ज़ाहिर ही था, बयान इसका इसलिये किया गया कि और चीज़ का उस पर अ़त्फ़ (जोड़ लगाना) हो और उसके बाद बयान इस हुक्म में बराबर हो। बेटों के घरों का भी यही हुक्म है अगरचे लफ़्ज़ों में बयान नहीं आया लेकिन यह भी इसी के सिलसिले में है, बल्कि इसी आयत से दलील पकड़ करके बाज़ों ने कहा है कि बेटे का माल बाप के माल के जैसा है। मुस्नद और सुनन में कई सनदों से हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- तू और तेरा माल तेरे बाप का है। और जिन लोगों के नाम आये हैं उनसे दलील लेकर बाज़ ने कहा है कि क़राबत दारों (अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों) का खाना-पीना और ज़रूरी ख़र्चा बाज़ का बाज़ पर वाजिब है, जैसे कि इमाम अबू हनीफ़ा रह. और इमाम अहमद रह. के मज़हब का मशहूर मक़ूला है। जिसकी कुन्जियाँ तुम्हारी मिल्कियत में हैं, इससे मुराद ग़ुलाम और पहरेदार व निगराँ हैं कि वे अपने आक़ा के माल से ज़रूरत व दस्तूर के अनुसार खा-पी सकते हैं।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बयान है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल. जंग में जाते तो हर एक की तमन्ना यही होती कि हम भी आपके साथ जायें। जाते हुए अपने ख़ास दोस्तों को अपनी कुन्जियाँ (चाबियाँ) दे जाते और उनसे कह देते कि जिस चीज़ के खाने की तुम्हें ज़रूरत हो हम तुम्हें इजाज़त देते हैं, लेकिन फिर भी ये लोग अपने आपको अमीन समझकर और इस ख़्याल से कि कहीं उन लोगों ने दिल न चाहते हुए इजाज़त दी हो, किसी खाने पीने की चीज़ को न छूते, इस पर यह हुक्म नाज़िल हुआ।

फिर फ़रमाया कि अपने दोस्तों के घरों से भी खा लेने में तुम्हारी कोई पकड़ नहीं, जबकि तुम्हें इल्म हो कि वे इससे बुरा न मानेंगे और उन पर यह नागवार और भारी न गुज़रेगा। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि तू जब अपने दोस्त के यहाँ जाये तो उसकी बिना इजाज़त के खाना खा लेने की तुझे इजाज़त है। फिर फ़रमाया कि तुम पर साथ बैठकर खाना खाने में और अकेले-अकेले होकर खाने में भी कोई गुनाह नहीं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब यह आयत उतरीः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ........الخ

Maktab E Ashraf

कि ऐ ईमान वालो! एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आपस में कहा कि खाने पीने की चीज़ें भी माल हैं, तो हमें यह भी हलाल नहीं कि एक दूसरे के साथ खायें। चुनाँचे वे इससे भी रुक गये, इस पर यह आयत उतरी। इसी तरह अकेले खाना खाने से भी कराहियत करते थे जब तक कोई साथ न हो, न खाते थे। इसलिये अल्लाह तआला ने इस हुक्म में दोनों बातों की इजाज़त दी, यानी दूसरों के साथ खाने की और तन्हा खाने की। क़बीला-ए-बनू किनाना के लोग विशेष तौर पर इस मर्ज़ में मुब्तला थे, भूखे होते थे लेकिन जब तक साथ खाने वाला कोई न हो खाते न थे। सवारी पर सवार होकर साथ खाने वाले की तलाश में निकलते थे, पस इस आयत में अल्लाह तआला ने तन्हा (अकेले) खाने की छूट और इजाज़त नाज़िल फ़रमाकर जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) की इस सख़्त रस्म को मिटा दी। इस आयत में अगरचे तन्हा खाने की रियायत और इजाज़त है लेकिन यह याद रहे कि लोगों के साथ मिलकर खाना अफ़ज़ल है, और ज़्यादा बरकत भी इसी में है। मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम खाते तो हैं लेकिन आसूदगी हासिल नहीं होती (यानी खाने से तबीयत नहीं भरती) आपने फ़रमाया शायद तुम अलग-अलग खाते होगे, जमा होकर एक साथ बैठकर अल्लाह का नाम लेकर खाओ तो तुम्हें बरकत दी जायेगी। इब्ने माजा वग़ैरह में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मिलकर खाओ, तन्हा न खाओ, बरकत मिलकर बैठने में है।

फिर तालीम हुई कि घरों में सलाम करके जाया करो। हज़रत जाबिर रज़ि. का फ़रमान है कि जब तुम घरों में जाओ तो ख़ुदा का सिखाया हुआ बरकत वाला और उम्दा सलाम कहा करो (यानी वही सलाम जो इस्लाम में सिखाया गया है, उसी में सलामती और बरकत की बात है)। मैंने तो आज़माया है कि यह सरासर बरकत है। इब्ने ताऊस रह. फ़रमाते हैं कि तुम में से जो घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम कहे। हज़रत अ़ता रह. से पूछा गया कि क्या यह वाजिब है? फ़रमाया मुझे तो याद नहीं कि इसके वाजिब होने का क़ायल कोई हो, लेकिन हाँ मुझे यह बहुत ही पसन्द है कि जब भी घर में जाओ सलाम करके जाओ, मैं तो इसे कभी नहीं छोड़ता। हाँ यह और बात है कि भूल जाऊँ। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जब मस्जिद में जाओ तो कहो "अस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाह" और जब अपने घर में जाओ तो अपने बाल-बच्चों को सलाम करो, और जब किसी ऐसे घर में जाओ जहाँ कोई न हो तो इस तरह कहो "अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन"। यह भी मन्क़ूल है कि यूँ कहोः

"बिस्मिल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि अस्सलामु अ़लैना मिर्रब्बिना, अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्ला-हिस्सालिहीन"।

हज़रत क़तादा रह. कहते हैं कि अपने घर वालों के पास सलाम करके जाओ और ग़ैर-आबाद (वीरान पड़े) घरों में जाते हुए यूँ सलाम करोः

"अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन"।

यह हुक्म इसलिये दिया जा रहा है कि ऐसे वक़्तों में तुम्हारे सलाम का जवाब ख़ुदा के फ़रिश्ते देते हैं। हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुझे नबी सल्ल. ने पाँच बातों की नसीहत की है, फ़रमाया है-

1. ऐ अनस! कामिल वुज़ू करो, तुम्हारी उम्र बढ़ेगी।
2. जो मेरा उम्मती मिले सलाम करो, नेकियाँ बढ़ेंगी।
3. घर में सलाम करके जाया करो, घर की ख़ैरियत बढ़ेगी।

Maktab E Ashraf

4. चाश्त की नमाज़ पढ़ते रहो तुमसे अगले लोग जो अल्लाह वाले बन गये थे उनका तरीक़ा यही था।

5. ऐ अनस! छोटों पर रहम करो, बड़ों की इज़्ज़त व सम्मान करो, तुम क़ियामत के दिन मेरे साथी होगे।

फिर फ़रमाता है कि यह ख़ैर की दुआ है जो ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से तुम्हें तालीम की गयी है, बरकत वाली और उम्दा है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने तो अत्तहिय्यात क़ुरआन ही से सीखी है, नमाज़ की अत्तहिय्यात यूँ है:

اَلتَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ لِلّٰهِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ. اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ.

अत्तहिय्यातुल-मुबारकातुस्स-लवातुत्-तय्यिबातु लिल्लाहि अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू। अस्सलामु अ़लै-क अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब-रकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन।

इसे पढ़कर नमाज़ी को अपने लिये दुआ़ करनी चाहिये, फिर सलाम फेर दे। इन्ही हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरफ़ूअ़न सही मुस्लिम शरीफ़ में इससे अलग भी मौजूद है। वल्लाहु आलम

इस सूरत के अहकाम का ज़िक्र करके फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के सामने अपने वाज़ेह (स्पष्ट और खुले) और मुफ़ीद अहकाम खोल-खोलकर इसी तरह बयान फ़रमाया करता है, ताकि वे ग़ौर व फ़िक्र करें, सोचें समझें और अ़क़्लमन्दी हासिल करें।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○	बस मुसलमान तो वही हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं, और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम पर होते हैं जिस के लिए लोगों को जमा किया गया है (और इत्तिफ़ाक़न वहाँ से जाने की ज़रूरत पड़ती है) तो जब तक आपसे इजाज़त न ले लें, नहीं जाते। (ऐ पैग़म्बर!) जो लोग आपसे (ऐसे मौक़ों पर) इजाज़त लेते हैं, बस वही अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब ये (ईमान वाले लोग) ऐसे मौक़ों पर अपने किसी (ज़रूरी) काम के लिए आपसे (जाने की) इजाज़त तलब करें तो उनमें से जिसके लिए आप चाहें इजाज़त दे दिया करें, और (इजाज़त देकर भी) आप उनके लिए अल्लाह तआ़ला से मग़फ़िरत की दुआ़ कीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला, मेहरबान है। (62)

Maktab E Ashraf

नबी-ए-पाक के पास से रुख़्सत होने का तरीक़ा

अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को एक अदब और भी सिखाता है कि जैसे आते हुए इजाज़त माँगकर आते हो ऐसे ही जाने के वक़्त भी मेरे नबी से इजाज़त माँगकर जाओ। ख़ुसूसन ऐसे वक़्त जबकि मजमा हो और किसी ज़रूरी मामले पर मज्लिस हो रही हो। मिसाल के तौर पर नमाज़े जुमा है या नमाज़े ईद है या जमाअ़त है या कोई और मश्विरे की मज्लिस है, वग़ैरह वग़ैरह। तो ऐसे मौक़ों पर जब तक हुज़ूर सल्ल. से इजाज़त न ले लो हरगिज़ इधर-उधर न जाओ। पूरे मोमिन की एक निशानी यह भी है। फिर अपने नबी सल्ल. से फ़रमाया कि जब ये अपने किसी ज़रूरी काम के लिये आपसे इजाज़त चाहें तो आप उनमें से जिसे चाहें इजाज़त दे दिया करें और उनके लिये बख़्शिश की दुआयें भी करते रहें। अबू दाऊद वग़ैरह में है कि जब तुम में से कोई किसी मज्लिस में जाये तो मज्लिस वालों पर सलाम कर लिया करे, और जब वहाँ से आना चाहे तो भी सलाम करे। आख़िरी दफ़ा का सलाम पहली मर्तबा के सलाम से कुछ कम नहीं है (यानी इस बाद वाले में भी उतना ही सवाब मिलेगा)। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम साहिब ने इसे हसन फ़रमाया है।

तुम लोग रसूल के बुलाने को ऐसा (मामूली बुलाना) मत समझो जैसा तुममें एक-दूसरे को बुलाता है, अल्लाह तआ़ला उन लोगों को ख़ूब जानता है जो (दूसरे की) आड़ में होकर तुममें से (हुज़ूरे पाक की मज्लिस से) खिसक जाते हैं। सो जो लोग अल्लाह के हुक्म की (जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वास्ते से पहुँचा है) मुख़ालफ़त करते हैं उनको इससे डरना चाहिए कि उनपर (दुनिया में) कोई आफ़त (न) आ पड़े, या उन पर (आख़िरत में) कोई दर्दनाक अ़ज़ाब नाज़िल (न) हो जाए। (63)	لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ۝

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अदब व एहतिराम

लोग हुज़ूर सल्ल. को जब बुलाते तो आपके नाम या कुन्नियत से मामूली तौर पर जैसे आपस में एक दूसरे को पुकारा करते थे, तो अल्लाह तआ़ला ने इस गुस्ताख़ी से मना फ़रमाया कि नाम न लो बल्कि या नबीयल्लाह! या रसूलल्लाह! कहकर पुकारो, ताकि आपकी बुज़ुर्गी और इज़्ज़त व अदब का लिहाज़ रहे। इसी के जैसी यह आयत है:

لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا.

(ऐ ईमान वालो तुम लफ़्ज़ 'राअ़िना' मत कहा करो और 'उन्ज़ुरना' कह दिया करो- सूरः ब-क़रह आयत 104) और इसी जैसी यह आयत है:

Muftah E Ashraf

لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ

(सूरः हुजुरात आयत 2) यानी ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ पर बुलन्द न करो, आपके सामने ऊँची ऊँची आवाज़ों में न बोलो, जैसे कि बेतकल्लुफ़ी से आपस में एक दूसरे के सामने ज़बान चलाते हो। अगर ऐसा किया तो तुम्हारे सब आमाल ग़ारत हो जायेंगे और तुमको पता भी न चलेगा।

यहाँ फ़रमाया कि जो लोग आपके हुजरों के पीछे से पुकारते हैं उनमें के अक्सर बेअ़क्ल हैं। अगर वे सब्र करते यहाँ तक कि आप उनके पास आ जाते तो यह उनके लिये बेहतर था। पस यह सब आदाब सिखाये गये कि आप से ख़िताब किस तरह करें, आपसे बातचीत किस तरह करें, आपके सामने किस तरह बोलें चालें, बल्कि पहले तो आपसे सरगोशियाँ (चुपके-चुपके बातें) करने के लिये सदक़ा करने का हुक्म भी था। एक मतलब तो इस आयत का यह हुआ। दूसरा मतलब यह है कि रसूल सल्ल. की दुआ़ को तुम आपस की अपनी दुआ़ओं की तरह न समझो, आपकी दुआ़ तो मक़बूल व मुस्तजाब है। ख़बरदार कभी हमारे नबी को तकलीफ़ न देना, कहीं ऐसा न हो कि उनके मुँह से कोई कलिमा निकल जाये तो तहस-नहस हो जाओ। इससे अगले जुमले की तफ़सीर में मुक़ातिल बिन हय्यान रह. फ़रमाते हैं कि जुमे के दिन ख़ुतबे में बैठा रहना मुनाफ़िक़ों पर बहुत भारी पड़ता था, मस्जिद में आ जाने और ख़ुतबा शुरू हो जाने के बाद कोई शख़्स बग़ैर हुज़ूरे पाक सल्ल. की इजाज़त के नहीं जा सकता था। जब किसी को कोई ऐसी ही ज़रूरत होती तो इशारे से आपसे इजाज़त चाहता और आप इजाज़त दे देते, इसलिये कि ख़ुतबे की हालत में बोलने से जुमा बातिल हो जाता है, तो ये मुनाफ़िक़ आड़ ही आड़ में नज़रें बचाकर सरक जाते थे।

सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि जमाअ़त में जब ये मुनाफ़िक़ होते तो एक दूसरे की आड़ लेकर भाग जाते। ख़ुदा के पैग़म्बर और ख़ुदा की किताब से हट जाते, सफ़ से निकल जाते, हुक्म के ख़िलाफ़ करने पर आमादा हो जाते। जो लोग रसूल के हुक्म, आपकी सुन्नत, आपके फ़रमान व तरीक़े और आपकी शरीअ़त के ख़िलाफ़ करें वे सज़ा पाने वाले होंगे। इनसान को अपने अक़वाल व अफ़आ़ल रसूले ख़ुदा सल्ल. की सुन्नतों और हदीसों से मिलाने चाहियें, जो मुवाफ़िक़ हों अच्छे हैं जो मुवाफ़िक़ न हों वे मरदूद हैं।

बुख़ारी व मुस्लिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो ऐसा अ़मल करे जिस पर हमारा हुक्म न हो वह मरदूद (अस्वीकारीय) है। ज़ाहिर या बातिन में भी जो शरीअ़ते मुहम्मदिया के ख़िलाफ़ करे उसके दिल में कुफ़्र व निफ़ाक़, बिदअ़त व बुराई का बीज बो दिया जाता है, या उसे सख़्त अ़ज़ाब होता है या तो दुनिया में ही क़त्ल, क़ैद, हद (सज़ा) वग़ैरह से या आख़िरत में वहाँ के अ़ज़ाब से। मुस्नद अहमद में हदीस है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने आग जलाई, जब वह रोशन हुई तो पतंगे और परवाने जमा हो गये और वे धड़ाधड़ उसमें गिरने लगे। अब यह उन्हें बहुत रोक रहा है लेकिन वो हैं कि शौक़ से उसमें गिरे जाते हैं, और उस शख़्स के रोकने से नहीं रुकते। यही हालत मेरी और तुम्हारी है, कि तुम आग में गिरना चाहते हो और मैं तुम्हारी कोलियाँ भर-भरकर तुम्हें उससे रोक रहा हूँ कि आग में न घुसो, आग से बचो, लेकिन तुम मेरी नहीं मानते और उस आग में घुसे चले जा रहे हो। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ۭ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ	(और यह भी) याद रखो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में (मौजूद) है सब ख़ुदा ही का है। अल्लाह तआ़ला उस हालत को भी

जानता है जिस पर तुम (अब) हो, और उस दिन को जिसमें सब उसके पास (ज़िन्दा करके) लाए जाएँगे। फिर वह उनको सब जतलायेगा जो कुछ उन्होंने किया था, और अल्लाह तआ़ला (तो) सब कुछ जानता है। (64)	اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۧ

Maktab E Ashraf

ع ٩ ١٥

ख़ुदा तआ़ला को सब इल्म है

ज़मीन व आसमान का मालिक, ग़ैब व हाज़िर का जानने वाला, बन्दों के छुपे-खुले आमाल को जानने वाला अल्लाह ही है।

फ़रमाता है कि जिस हाल पर तुम हो, जिन आमाल व अ़क़ीदों के करने और मानने वाले तुम हो ख़ुदा पर सब रोशन है। आसमान व ज़मीन का एक ज़र्रा भी ख़ुदा पर पोशीदा नहीं। जो तुम अ़मल करो, जो हालत तुम्हारी हो उस पर सब कुछ ज़ाहिर है। कोई ज़र्रा उससे छुपा हुआ नहीं। हर छोटी बड़ी चीज़ किताबे मुबीन में महफ़ूज़ (लिखी हुई और सुरक्षित) है। बन्दों के तमाम ख़ैर व शर (अच्छाई और बुराई) का वह आ़लिम है। कपड़ों में ढक जाओ, छुप-लुककर कुछ करो हर पोशीदा और ज़ाहिर उस पर बराबर है। सरगोशियाँ (चुपके-चुपके बातें करना अर्थात कानाफूसी) और बुलन्द आवाज़ की बातें उसके कानों में हैं। तमाम जानदारों (प्राणियों) को रोज़ी पहुँचाने वाला वही है, हर एक जानदार के हाल को जानने वाला वही है, और सब कुछ लौहे-महफ़ूज़ में पहले से ही दर्ज है। ग़ैब की कुन्जियाँ (चाबियाँ) उसके पास हैं, जिन्हें उसके सिवा कोई और नहीं जानता। ख़ुश्की तरी की हर-हर चीज़ को वह जानता है, किसी पत्ते का झड़ना उसके इल्म से बाहर नहीं। ज़मीन की अन्धेरियों के अन्दर का दाना और कोई तर व ख़ुश्क चीज़ ऐसी नहीं जो किताबे मुबीन में न हो।

इस मज़मून की और भी बहुत सी आयतें और हदीसें हैं। जब मख़्लूक़ अल्लाह की तरफ़ लौटाई जायेगी उस वक़्त उनके सामने उनकी छोटी से छोटी नेकी और बदी पेश कर दी जायेगी। तमाम अगले पिछले आमाल देख लेगा। अ़मल-नामे को डरता हुआ देखेगा। अपनी पूरी ज़िन्दगी के हालात उसमें पाकर हैरत ज़दा (आश्चर्य चकित) होकर कहेगा कि यह कैसी किताब है जिसने बड़ी तो बड़ी कोई छोटी से छोटी चीज़ भी नहीं छोड़ी, जो जिसने किया था वह वहाँ मौजूद पायेगा। तेरे रब की ज़ात ज़ुल्म से पाक है।

आख़िर में फ़रमाया कि ख़ुदा बड़ा ही जानने वाला है, हर चीज़ उसके इल्म में है।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः नूर की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Mahtab E Ashraf

सूरः फ़ुरक़ान

सूरः फ़ुरक़ान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 77 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۙ○ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا○	**बड़ी आ़लीशान ज़ात है जिसने यह फ़ैसले की किताब (यानी क़ुरआन) अपने ख़ास बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर नाज़िल फ़रमाई ताकि वह (बन्दा) तमाम दुनिया जहान वालों के लिए डराने वाला हो। (1) ऐसी ज़ात जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की हुकूमत हासिल है, और उसने किसी को (अपनी) औलाद क़रार नहीं दिया, और न कोई हुकूमत में उसका साझी है, और उसने (तमाम मुम्किन चीज़ों में से) हर (मौजूद) चीज़ को पैदा किया, फिर सबका अलग-अलग अन्दाज़ रखा। (2)**

सिर्फ़ अल्लाह ही की ज़ात इबादत के लायक़ है

अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत का बयान फ़रमाता है ताकि लोगों पर उसकी अ़ज़्मत (बड़ाई) ज़ाहिर हो जाये कि उसने इस पाक कलाम को अपने बन्दे मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. पर नाज़िल फ़रमाया है। सूरः कहफ़ के शुरू में भी अपनी तारीफ़ इसी वस्फ़ से बयान की है, यहाँ अपनी ज़ात का बरकत वाला होना बयान फ़रमाया और यही वस्फ़ (ख़ूबी और कमाल) बयान किया। यहाँ लफ़्ज़ "नज़्ज़-ल" फ़रमाया जिससे बार-बार कसरत से उतरना साबित होता है। जैसा कि अल्लाह का एक दूसरी जगह फ़रमान है:

وَالْكِتَابَ الَّذِیْ نَزَّلَ عَلٰی رَسُوْلِهٖ وَالْكِتَابَ الَّذِیْ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ.

पस पहली किताबों को लफ़्ज़ "अन्ज़-ल" से और इस आख़िरी किताब को लफ़्ज़ "नज़्ज़-ल" से बयान फ़रमाना इसी लिये है कि पहली किताबें एक साथ उतरती रहीं और क़ुरआने करीम थोड़ा-थोड़ा करके ज़रूरत के मुताबिक़ उतरता रहा, कभी कुछ आयतें कभी कुछ सूरतें कभी कुछ अहकाम। इसमें एक बड़ी हिक्मत यह भी थी कि लोगों को उस पर अ़मल में मुश्किल न हो, ख़ूब याद हो जाये और मान लेने के लिये दिल खुल जायें। जैसे कि इसी सूरत में फ़रमाया है कि काफ़िरों का एक एतिराज़ यह भी है कि क़ुरआने करीम इस नबी पर एक साथ क्यों न उतरा? जवाब दिया गया है कि इस तरह इसलिये उतरा कि उसके साथ तेरा दिली ताल्लुक़ और जोड़ रहे, और हमने ठहरा-ठहरा कर (यानी थोड़ा-थोड़ा करके) नाज़िल फ़रमाया यह जो

Mehtab E Ashraf

भी बात बनायेंगे हम उसका सही और जचा-तुला जवाब देंगे जो ख़ूब तफ़सील वाला होगा। यही वजह है कि यहाँ इस आयत में इसका (क़ुरआन का) नाम फ़ुरक़ान रखा, इसलिये कि यह हक़ व बातिल में, हिदायत व गुमराही में फ़र्क़ करने वाला है। इससे भलाई बुराई में, हलाल हराम में तमीज़ होती है।

क़ुरआने करीम की यह पाक सिफ़त बयान फ़रमाकर जिस पर क़ुरआन उतरा उनकी एक पाक सिफ़त बयान की गयी है कि वह ख़ास इसकी इबादत में लगे रहने वाले हैं। उसके मुख़्लिस बन्दे हैं। यह वस्फ़ (ख़ूबी और कमाल) सबसे आला वस्फ़ है, इसी लिये बड़ी-बड़ी नेमतों के बयान के मौक़े पर हुज़ूर सल्ल. का यही वस्फ़ बयान फ़रमाया गया है। जैसे मेराज के मौक़े पर फ़रमायाः

سُبْحَانَ الَّذِیْ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ........الخ

पाक है वह ज़ात जो अपने बन्दे (मुहम्मद सल्ल.) को रात के वक़्त मस्जिदे हराम (यानी काबे की मस्जिद) से मस्जिदे अक़्सा (यानी बैतुल-मुक़द्दस) तक जिसके आस-पास (यानी मुल्क शाम में) हमने बरकतें रखी हैं, ले गया............। (सूरः बनी इस्राईल आयत 1)

और जैसे अपनी ख़ास इबादत नमाज़ के मौक़े पर फ़रमायाः

وَاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ.........الخ

और जब बन्दा-ए-ख़ुदा यानी हज़रत मुहम्मद सल्ल. ख़ुदा की इबादत के लिये खड़े होते हैं.....।

यही वस्फ़ (सिफ़त और ख़ूबी) क़ुरआने करीम के उतरने और आपके पास बुज़ुर्ग फ़रिश्ते के आने के इकराम के ज़िक्र के मौक़े पर बयान फ़रमाया। फिर इरशाद हुआ कि इस पाक किताब का आपकी तरफ़ उतरना इसलिये है कि आप तमाम जहान के लिये आगाह करने वाले बन जायें। ऐसी किताब जो सरासर हिक्मत व हिदायत वाली है, जो तफ़सीली, सम्मानित, स्पष्ट बयान करने वाली और मज़बूत है, जिसके आस पास बातिल (ग़ैर-हक़) फटक नहीं सकता। जो हिक्मत वाले और क़ाबिले तारीफ़ ख़ुदा की तरफ़ से उतारी हुई है। आप इसकी तब्लीग़ दुनिया भर में कर दें, हर सुर्ख़ व सफ़ेद को, हर दूर व नज़दीक वाले को ख़ुदा के अ़ज़ाब से डरा दें, जो भी आसमान के नीचे और ज़मीन के ऊपर है उसकी तरफ़ आप रसूल बनाकर भेजे गये हैं। जैसा कि ख़ुद हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि मैं तमाम सुर्ख़ व सफ़ेद इनसानों की तरफ़ भेजा गया हूँ। एक और फ़रमान है कि मुझे पाँच बातें ऐसी दी गयी हैं जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गयी थीं। उनमें से एक यह है कि हर नबी अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता रहा लेकिन मैं तमाम दुनिया की तरफ़ भेजा गया हूँ। ख़ुद क़ुरआने करीम में हैः

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا.

ऐ नबी! ऐलान कर दो कि ऐ दुनिया के लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ ख़ुदा का पैग़म्बर हूँ।

फिर फ़रमाया कि मुझे रसूल बनाकर भेजने वाला, मुझ पर यह किताब उतारने वाला वह ख़ुदा है जो आसमान व ज़मीन का अकेला मालिक है। वह जिस काम को करना चाहे उसे कह देता है कि हो जा, वह उसी वक़्त हो जाता है। वही मारता और जिलाता है, उसकी कोई औलाद नहीं, न उसका कोई शरीक है, हर चीज़ उसी की मख़्लूक़ (पैदा की हुई और बनाई हुई) और उसी की परवरिश के ताबे है। सबका ख़ालिक़, मालिक, रज़्ज़ाक़, माबूद और रब वही है। हर चीज़ का अन्दाज़ा मुक़र्रर करने वाला (यानी तक़दीर लिखने वाला) और तदबीर (व्यवस्था) करने वाला वही है।

Maktaba Ashraf

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا○	और (बावजूद हक़ तआ़ला के ऐसे बेमिस्ल होने के) उन मुश्रिकों ने ख़ुदा (की तौहीद) को छोड़कर और ऐसे माबूद क़रार दिए हैं जो किसी चीज़ के पैदा करने वाले नहीं, और (बल्कि) वे ख़ुद मख़्लूक़ "यानी पैदा किए हुए" हैं, और ख़ुद अपने लिए न किसी नुक़सान (के हटाने) का इख़्तियार रखते हैं और न किसी नफ़े (के हासिल करने) का, और न किसी के मरने का इख़्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का, और न किसी को (क़ियामत में) दोबारा जिलाने का। (3)

दूसरों को माबूद बनाना कितनी बड़ी हिमाक़त है

मुश्रिकों की जहालत बयान हो रही है कि वे ख़ालिक़ व मालिक, क़ादिर व मुख़्तार बादशाह को छोड़कर उनकी इबादतें करते हैं जो एक मच्छर का पर भी नहीं बना सकते, बल्कि वे ख़ुद ख़ुदा के बनाये हुए और उसी के पैदा किये हुए हैं। वे अपने आपको भी किसी नफ़ा-नुक़सान पहुँचाने के मालिक नहीं, कहाँ यह कि किसी दूसरे का भला कर दें, या दूसरे का नुक़सान कर दें, या दूसरी कोई बात कर सकें। वे अपनी मौत और ज़िन्दगी या दोबारा ज़िन्दा होकर उठने का भी इख़्तियार नहीं रखते, फिर अपनी इबादत करने वालों की इन चीज़ों के मालिक वे कैसे हो जायेंगे? बात यही है कि इन तमाम कामों का मालिक अल्लाह ही है, वही जिलाता और मारता है, वही अपनी तमाम मख़्लूक़ को क़ियामत के दिन नये सिरे से पैदा करेगा, उस पर यह काम मुश्किल नहीं। एक का पैदा करना और सबको पैदा करना, एक को मौत के बाद ज़िन्दा करना और सबको करना उस पर एक जैसा और बराबर है। एक आँख झपकाने में उसका हुक्म पूरा हो जाता है, सिर्फ़ एक आवाज़ के साथ तमाम मरी हुई मख़्लूक़ ज़िन्दा होकर उसके सामने एक चटियल मैदान में खड़ी हो जायेगी। एक दूसरी आयत में फ़रमाया है कि सिर्फ़ एक दफ़ा की आवाज़ के साथ सारी मख़्लूक़ हमारे हुज़ूर में हाज़िर हो जायेगी। वही माबूदे बरहक़ है, उसके सिवा न कोई रब है न इबादत के लायक़ है। उसका चाहा होता है, बिना उसके चाहे कुछ भी नहीं होता, वह माँ बाप से, लड़की लड़कों से, अपने जैसे किसी साथी व नज़ीर से, वज़ीर व शरीक से पाक है, वह तन्हा है, वह बेनियाज़ है, न उसने किसी को जना, न वह जना गया, उस जैसा कोई नहीं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨافْتَرٰهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا○ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ	और काफ़िर (यानी मुश्रिक) लोग (क़ुरआन के बारे में) यूँ कहते हैं कि यह तो कुछ भी नहीं निरा झूठ है, जिसको एक शख़्स (यानी पैग़म्बर) ने गढ़ लिया है, और दूसरे लोगों ने उस (गढ़ने) में उसकी मदद की है। सो ये लोग बड़े ज़ुल्म

Maktab E Ashraf

الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِىَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِىْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

और झूठ के दोषी हुए। (4) और ये (काफ़िर) लोग यूँ कहते हैं कि यह (क़ुरआन) बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़ल होती चली आती हैं, जिनको उस शख़्स (यानी पैग़म्बर) ने लिखवा लिया है, फिर वही (मज़ामीन) उसको सुबह व शाम पढ़कर सुनाए जाते हैं। (5) आप (उसके जवाब में) कह दीजिए कि इस (क़ुरआन) को तो उस ज़ात ने उतारा है जिसको सब छुपी बातों की, चाहे वे आसमान में हों या ज़मीन में, ख़बर है। वाक़ई अल्लाह तआ़ला मग़फ़िरत करने वाला, रहमत करने वाला है। (6)

पहले लोगों की बेसनद बातें

मुश्रिकों की एक जहालत ऊपर की आयतों में बयान हुई जो अल्लाह पाक की ज़ात से संबन्धित थी। यहाँ दूसरी जहालत बयान हो रही है जो रसूले करीम की ज़ाते पाक से संबन्धित है, कि वे कहते हैं कि इस क़ुरआन को तो उसने औरों की मदद से ख़ुद ही झूठ गढ़ लिया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि यह है उनका ज़ुल्म और झूठ जिसके बातिल होने का ख़ुद उन्हें भी इल्म है, लेकिन ख़ुद अपनी मालूमात के ख़िलाफ़ कहते हैं। कभी कहने लगते हैं कि अगली (पहली आसमानी) किताबों के क़िस्से उसने (यानी नबी करीम सल्ल. ने) लिखवा लिये हैं, वही सुबह शाम उसकी मज्लिस में पढ़े जा रहे हैं। यह झूठ भी वह है जिसमें किसी को कोई शक न हो सके, इसलिये कि सिर्फ़ अहले मक्का ही नहीं बल्कि दुनिया जानती है कि हमारे नबी सल्ल. उम्मी थे (ज़ाहिरी तालीम पढ़े हुए न थे), न लिखना जानते थे न पढ़ना, चालीस साल तक नुबुव्वत से पहले की ज़िन्दगी आपने उन्हीं लोगों में गुज़ारी थी और इस तरह कि इतनी मुद्दत में एक वाक़िआ भी, आपकी ज़िन्दगी का एक लम्हा भी ऐसा न था जिस पर कोई उंगली उठा सके। आपका एक-एक वस्फ़ वह था जिस पर ज़माना शैदा (फ़िदा) था, जिस पर मक्का वाले रश्क (ईर्ष्या) करते थे। आपकी आ़म मक़बूलियत और महबूबियत, बुलन्द-अख़्लाक़ी और मामलात की उम्दगी इतनी बढ़ी हुई थी कि हर-हर दिल में आपके लिये जगह थी। आ़म ज़बानें आपको "मुहम्मद अमीन" के सम्मानित ख़िताब से पुकारती थीं। दुनिया आपके क़दमों तले आँखें बिछाती थी। कौनसा दिल था जो मुहम्मद सल्ल. का घर न हो? कौनसी आँख थी जिसमें मुहम्मद सल्ल. की इज़्ज़त न हो? कौनसा मजमा था जिसमें आपका ज़िक्र भलाई के साथ न हो? कौन वह शख़्स था जो आपकी बुज़ुर्गी, सच्चाई, अमानत, नेकी और भलाई का क़ायल न हो?

फिर जबकि ख़ुदा के सबसे बुलन्द सम्मान (यानी नुबुव्वत) से आप सम्मानित किये गये, आसमानी 'वही' के आप अमीन बनाये गये तो सिर्फ़ बाप दादों के तरीक़े को मिटता हुआ देखकर ये बेवक़ूफ़ लोग बिना तली के लोटे की तरह लुढ़क गये, थाली के बैंगन की तरह इधर से उधर होने लगे, बातें बनाने और आपकी बुराई करने लगे। लेकिन झूठ के पाँव कहाँ? कभी आपको शायर कहते, कभी जादूगर, कभी मजनूँ

और कभी झूठा। हैरान थे कि क्या कहें? और किस तरह अपने जाहिलाना तरीक़े और चलन को बाक़ी रखें और अपने झूठे माबूदों के झण्डे औंधे न होने दें, और किस तरह इस अंधेरी दुनिया को नूरे ख़ुदा से जगमगाने न दें?

अब उन्हें जवाब मिलता है कि क़ुरआन की सच्ची, हक़ीक़त के मुताबिक़ और हक़ ख़बरें ख़ुदा की दी हुई हैं, जो ग़ैब का जानने वाला है, जिससे एक ज़र्रा पोशीदा नहीं। गुज़रे हुए ज़माने का जो बयान इसमें है वह हक़ है, जो आने वाले समय की ख़बर इसमें हैं वो सच हैं। ख़ुदा के सामने हो चुकी और होने वाली बात बराबर है, वह ग़ैब को भी इसी तरह जानता है जिस तरह ज़ाहिर को।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला अपनी शाने ग़फ़्फ़ारियत और शाने रहम व करम को बयान फ़रमाता है, ताकि बुरे लोग भी उससे मायूस न हों। कुछ भी किया हो अब भी उसकी तरफ़ झुक जायें, तौबा करें, अपने किये पर पछतायें, शर्मिन्दा हों और रब की रज़ा चाहें। उस रहीम की रहमत के क़ुरबान जाईये कि ऐसे नाफ़रमान, अल्लाह व रसूल के ऐसे दुश्मन और ऐसे बोहतान लगाने वाले, इस क़द्र तकलीफ़ें देने वाले लोगों को भी अपनी आ़म रहमत की दावत देता है और अपने करम की तरफ़ उन्हें बुलाता है। वे ख़ुदा को बुरा कहें, वे कलामे ख़ुदा पर बातें बनायें और ख़ुदा तआ़ला उन्हें अपनी रहमत की तरफ़ बुलाये, अपने फ़ज़्ल व करम की तरफ़ दावत दे, इस्लाम और हिदायत उन पर पेश करे, अपनी भली बातें उनको समझाये।

चुनाँचे एक दूसरी आयत में ईसाईयों की "तस्लीस-परस्ती" (तीनी ख़ुदाओं को पूजने) का ज़िक्र करके उनकी सज़ा को बयान करके फ़रमायाः

اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ.

ये लोग क्यों अल्लाह से तौबा नहीं करते? और क्यों उसकी तरफ़ झुक कर उससे अपने गुनाहों की माफ़ी तलब नहीं करते? वह तो बड़ा ही बख़्शने वाला और बहुत ही मेहरबान है। मोमिनों को सताने और उन्हें फ़ितने में डालने वालों का ज़िक्र करके सूरः बुरूज में फ़रमाया कि अगर ऐसे लोग भी तौबा कर लें, अपने बुरे कामों से हट जायें तो मैं भी उन पर से अपने अ़ज़ाब हटा लूँगा और रहमतों से नवाज़ दूँगा।

इमाम हसन बसरी रह. ने किस मज़े की बात बयान फ़रमाई है! आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा के रहम व करम को देखो ये लोग उसके नेक चहीते बन्दों को सतायें, मारें पीटें, क़त्ल करें और वह उन्हें तौबा और अपने रहम व करम की तरफ़ बुलाते हैं। वाक़ई अल्लाह की ज़ात अ़ज़ीम और उसकी शान बड़ी है।

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝ اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا

और ये (काफ़िर) लोग (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में) यूँ कहते हैं कि इस रसूल को क्या हुआ कि वह (हमारी तरह) खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है, उसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया कि वह उसके साथ रहकर डराता। (7) या उसके पास (ग़ैब से) कोई ख़ज़ाना आ पड़ता या उसके पास कोई (ग़ैबी) बाग़ होता जिससे यह खाया करता। और (ईमान वालों से) ये ज़ालिम यूँ (भी) कहते हैं कि तुम लोग एक

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

مَّسْحُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ
الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝ ع ۱۶
تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا
مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝ بَلْ
كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ
بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝ۚ اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ
بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ۝ وَاِذَآ
اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا
هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ؕ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝

बेअ़क़्ल आदमी की राह पर चल रहे हो। (8) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) देखिए तो ये लोग आपके लिए कैसी अ़जीब-अ़जीब बातें बयान कर रहे हैं, सो (उन ख़ुराफ़ात से) वे (बिल्कुल) गुमराह हो गए, फिर वे राह नहीं पा सकते। (9)

वह ज़ात बड़ी आ़लीशान है कि अगर वह चाहे तो आपको (काफ़िरों की) उस (फ़रमाईश) से (भी) अच्छी चीज़ दे दे, यानी बहुत-से (ग़ैबी) बाग़ात जिनके नीचे से नहरें बहती हों, और आपको बहुत-से महल दे दे (10) बल्कि ये लोग क़ियामत को झूठ समझ रहे हैं और (अन्जाम इसका यह होगा कि) हमने ऐसे शख़्स के लिए जो कि क़ियामत को झूठ समझे, दोज़ख़ तैयार कर रखी है। (11) वह उनको दूर से देखेगी तो वे लोग (दूर ही से) उसका जोश व ख़रोश सुनेंगे। (12) और (फिर) जब वे उस (दोज़ख़) की किसी तंग जगह में हाथ-पाँव जकड़ कर डाल दिए जाएँगे तो वहाँ मौत ही मौत पुकारेंगे। (13) (उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) एक मौत को न पुकारो बल्कि बहुत-सी मौतों को पुकारो। (14)

ये तो ख़ालिस हिमाक़तें हैं

इस हिमाक़त (बेवक़ूफ़ी) को मुलाहिज़ा फ़रमाईये कि रसूल की रिसालत के इनकार की वजह यह बयान करते हैं कि यह खाने पीने का मोहताज क्यों है? और बाज़ारों में तिजारत और लेन-देन के लिये आता-जाता क्यों है? इसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? कि वह इसके दावे की तस्दीक़ करता, लोगों को इसके दीन की तरफ़ बुलाता और अ़ज़ाबे ख़ुदा से आगाह करता। फ़िरऔ़न ने यह भी कहा थाः

فَلَوْلَآ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ.......... الخ.

कि उस पर सोने के कंगन क्यों नहीं डाले गये? या उसकी इमदाद के लिये आसमान से फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गये?

चूँकि उन तमाम काफ़िरों के दिल एक से हैं, हुज़ूर सल्ल. के ज़माने के काफ़िरों ने भी कहा कि अच्छा यह नहीं तो इसे कोई ख़ज़ाना ही दे दिया जाता कि यह ख़ुद आराम से अपनी ज़िन्दगी बसर करता और दूसरों को भी देता। या इसके साथ कोई चलता-फिरता बाग़ होता कि यह अपने खाने-पीने से तो बेफ़िक्र हो

Maktab E Ashraf

जाता। बेशक यह सब कुछ ख़ुदा पर आसान है (यानी वह अगर चाहे तो पैग़म्बरों और अपने नेक बन्दों को दुनियावी दौलत से भी नवाज़ दे, चुनाँचे बाज़ अम्बिया को बेहिसाब माल से नवाज़ा, हुकूमतों का मालिक बनाया) लेकिन फ़िलहाल इन चीज़ों के न देने में ही हिक्मत है। ये ज़ालिम मुसलमानों को भी बहकाते हैं और कहते हैं कि तुम तो एक ऐसे शख़्स के पीछे लग लिये हो जिस पर किसी ने जादू किया है। देखो तो सही कैसी बेबुनियाद बातें बनाते हैं? किसी एक बात पर जम ही नहीं सकते, इधर-उधर करवटें ले रहे हैं, कभी जादूगर कह दिया तो कभी जादू से पीड़ित बता दिया, कभी शायर कह दिया कभी जिन्नात का सिखाया हुआ कह दिया, कभी झूठा कहा कभी मजनूँ। हालाँकि ये सब बातें बिल्कुल बेहूदा और बकवास हैं और इनका ग़लत होना इससे भी वाज़ेह है कि ख़ुद उनमें तज़ाद (विरोधाभास) है, किसी एक बात पर ख़ुद उन मुश्रिकों को भरोसा नहीं। गढ़ते हैं फिर छोड़ते हैं, फिर गढ़ते हैं फिर बदलते हैं, किसी बात पर जमते ही नहीं (जमें कैसे! जमना तो सच्चाई पर होता है और वह उन्हें हासिल नहीं)। जिधर मुतवज्जह होते हैं राह भूलते और ठोकरें खाते हैं। हक़ तो एक होता है, उसमें टकराव और विरोधाभास नहीं हो सकता। नामुम्किन है कि ये लोग इन भूल-भुलैयों से निकल सकें। बेशक अगर रब चाहे तो जो ये काफ़िर कहते हैं उससे बेहतर अपने नबी को दुनिया ही में दे दे, वह बड़ी बरकतों वाला है।

पत्थर से बने हुए घर को अ़रब के लोग 'क़स्र' कहते हैं, चाहे वह बड़ा हो चाहे छोटा। हुज़ूर सल्ल. को तो अल्लाह तआ़ला की जानिब से फ़रमाया गया था कि अगर आप चाहें तो ज़मीन के ख़ज़ाने और यहाँ की कुन्जियाँ (चाबियाँ) आपको दे दी जायें? और इस क़द्र दुनिया का मालिक कर दिया जाये कि किसी और को इतनी न मिली हो? साथ ही आख़िरत की आपकी तमाम नेमतें ज्यों की त्यों बरक़रार रहें, लेकिन आपने इसे पसन्द न फ़रमाया और जवाब दिया कि नहीं! मेरे लिये तो सब कुछ आख़िरत में ही जमा हो।

फिर फ़रमाता है कि ये जो कुछ कहते हैं सिर्फ़ तकब्बुर (घमंड और अकड़), दुश्मनी, ज़िद और हठधर्मी के तौर पर कहते हैं, यह नहीं कि उनका कहा हुआ हो जाये तो ये मुसलमान हो जायेंगे, उस वक़्त फिर और कुछ बहाना और कमी निकालेंगे। उनके दिल में तो यह ख़्याल जमा हुआ है कि क़ियामत नहीं आयेगी, और ऐसे लोगों के लिये हमने भी दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है, जो उनकी बरदाश्त से बाहर है। जो भड़काने और सुलगाने वाली झुलस देने वाली तेज़ आग का है। अभी जहन्नम उनसे सौ साल के फ़ासले पर होगी तभी उनकी नज़रें उस पर और उसकी निगाहें उन पर पड़ेंगी, वहीं जहन्नम ग़ज़बनाक हो जायेगी और जोश व ख़रोश से आवाज़ें निकालेगी, जिसे ये बदनसीब सुन लेंगे और उनके दिमाग़ हवा हो जायेंगे। होश जाते रहेंगे, हाथों के तोते उड़ जायेंगे, जहन्नम उन बदकारों पर दाँत पीस रही और ग़ुस्से के मारे बल खा रही होगी, और शोर मचा रही होगी कि कब इन काफ़िरों का निवाला बनाऊँ? और कब इन ज़ालिमों से बदला लूँ?

सूरः मुल्क में है कि जब ये लोग उसमें डाले जायेंगे तो दूर ही से उसकी ख़ौफ़नाक आवाज़ें सुनेंगे और वह ऐसी भड़क रही होगी कि गोया मारे जोश के फट पड़ेगी। इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जो शख़्स मेरी तरफ़ वह बात मन्सूब करे जो मैंने न कही हो और जो शख़्स अपने माँ-बाप के सिवा दूसरों को अपना माँ-बाप कहे और ग़ुलाम अपने आक़ा के अ़लावा किसी दूसरे की तरफ़ अपनी ग़ुलामी की निस्बत करे वह जहन्नम की दोनों आँखों के बीच अपना ठिकाना बना ले। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! क्या जहन्नम की भी आँखें हैं? आपने फ़रमाया हाँ! क्या तुमने ख़ुदा के कलाम की यह आयत नहीं सुनी?

Maktab E Ashraf

اِذَا رَأَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ........ الخ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

एक मर्तबा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. हज़रत रबीअ़ वग़ैरह को साथ लिये हुए कहीं जा रहे थे, रास्ते में लुहार की दुकान आयी, आप वहाँ ठहर गये और लोहा जो आग में तपाया जा रहा था उसे देखने लगे। हज़रत रबीअ़ का तो बुरा हाल हो गया, अल्लाह के अ़ज़ाब का नक़्शा आँखों में घूम गया। क़रीब था कि बेहोश होकर गिर पड़ें। उसके बाद आप नहर फ़ुरात के किनारे गये, वहाँ आपने तन्दूर को देखा कि उसके बीच में आग शोले मार रही रही है, बेसाख़्ता आपकी ज़बान से यह आयत निकल गयी। इसे सुनते ही हज़रत रबीअ़ बेहोश होकर गिर पड़े, चारपाई पर डालकर आपको घर पहुँचाया गया, सुबह से लेकर दोपहर तक हज़रत अ़ब्दुल्लाह उनके पास बैठे रहे और होश में लाने की कोशिश करते रहे लेकिन हज़रत रबीअ़ को होश न आया।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब जहन्नमी को जहन्नम की तरफ़ घसीटा जायेगा तो जहन्नम चीख़ेगी और एक ऐसी झुरझुरी लेगी कि मेहशर के तमाम लोग डर जायेंगे। एक और रिवायत में है कि बाज़ लोगों को जब दोज़ख़ की तरफ़ ले चलेंगे तो दोज़ख़ सिमट जायेगी, अल्लाह तआ़ला मालिक व रहमान उससे पूछेगा यह क्या बात है? वह जवाब देगी कि ख़ुदाया! ये तो अपनी दुआ़ओं से तेरी जहन्नम से पनाह माँगा करता था आज भी पनाह माँग रहा है। अल्लाह तआ़ला को रहम आ जायेगा, हुक्म होगा इसे छोड़ दो। कुछ और लोगों को ले चलेंगे, वे कहेंगे परवर्दिगार! हमारा गुमान तो तेरे बारे में यह न था। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा फिर तुम क्या समझ रहे थे? वे कहेंगे यही कि तेरी रहमत हमें छुपा लेगी, तेरा करम हमारे शामिले हाल होगा, तेरी विशाल रहमत हमें अपने दामन में ले लेगी। अल्लाह तआ़ला उनकी आरज़ू भी पूरी करेगा और हुक्म दे देगा कि मेरे इन बन्दों को भी छोड़ दो। कुछ और लोग घसीटे हुए आयेंगे, उन्हें देखते ही जहन्नम उनकी तरफ़ शोर मचाती हुई बढ़ेगी और इस तरह झुरझुरी लेगी कि मेहशर का तमाम मजमा ख़ौफ़ज़दा (भयभीत) हो जायेगा।

हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब जहन्नम मारे ग़ुस्से के थरथरायेगी और शोर व ग़ुल और चीख़ व पुकार और जोश व ख़रोश (उफान) शुरू करेगी उस वक़्त तमाम क़रीबी फ़रिश्ते और बड़े रुतबे वाले अम्बिया भी काँपने लगेंगे, यहाँ तक कि अल्लाह के ख़लील (दोस्त) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम भी अपने घुटनों के बल गिर पड़ेंगे और कहने लगेंगे कि ख़ुदाया! मैं आज तुझसे सिर्फ़ अपनी जान की सलामती चाहता हूँ और कुछ नहीं माँगता। ये लोग जहन्नम के ऐसे तंग व अंधेरे मकान में ठूँस दिये जायेंगे जैसे भाला किसी सुराख़ में।

एक और रिवायत में हुज़ूर सल्ल. से इस आयत के बारे में सवाल होना और आपका यह फ़रमाना मज़कूर है कि जैसे कील दीवार में मुश्किल से गाड़ी जाती है इसी तरह उन दोज़ख़ियों को ठूँसा जायेगा। ये उस वक़्त ख़ूब जकड़े हुए होंगे, बाल-बाल बंधा हुआ होगा। वहाँ वे मौत को, फ़ौत को, हलाकत को, हसरत को पुकारने लगेंगे। उनसे कहा जायेगा एक मौत को क्यों पुकारते हो? क्यों न सैंकड़ों हज़ारों मौतों को पुकारो। मुस्नद अहमद में है कि सबसे पहले इब्लीस (शैतान) को जहन्नमी लिबास पहनाया जायेगा, यह उसे पेशानी पर रखकर पीछे से घसीटता हुआ अपनी ज़ुर्रियत (नस्ल और पैरोकारों) को पीछे लगाये हुए मौत व हलाकत को पुकारता हुआ दौड़ता फिरेगा। उसके साथ ही उसकी औलाद भी हसरत व अफ़सोस, मौत व फ़ना होने को पुकार रही होगी। उस वक़्त उनसे यह कहा जायेगा। "सबूर" से मुराद मौत, हलाकत, हसरत,

Maktab E Ashraf

अफ़सोस, ख़सारा, बरबादी वग़ैरह है। जैसे कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़िरऔन से कहा थाः

وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا.

ऐ फ़िरऔन! मैं तो समझता हूँ कि तू मिटकर बरबाद होकर ही रहेगा।

शायर भी लफ़्ज़ सबूर को हलाकत व बरबादी के मायने में लाये हैं।

قُلْ اَذٰلِكَ خَیْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِیْرًا ۝ لَهُمْ فِیْهَا مَا یَشَآءُوْنَ خٰلِدِیْنَ ؕ كَانَ عَلٰی رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُوْلًا ۝	आप (उनको यह मुसीबत सुनाकर) कहिए कि (यह बतलाओ कि) क्या यह (मुसीबत की हालत) अच्छी है या वह हमेशा रहने की जन्नत (अच्छी है) जिसका ख़ुदा से डरने वालों से वायदा किया गया है, कि वह उनके लिए (उनकी इताअ़त का) सिला है, और उनका (आख़िरी) ठिकाना। (15) (और) उनको वहाँ वे सब चीज़ें मिलेंगी जो कुछ वे चाहेंगे (और) वे (उसमें) हमेशा रहेंगे। (ऐ पैग़म्बर!) यह एक वायदा है जो आपके रब के ज़िम्मे है और माँगने के क़ाबिल है। (16)

हमेशा रहने की जन्नत

ऊपर उन बदकारों का बयान फ़रमाया जो ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ औंधे मुँह जहन्नम की तरफ़ घसीटे और सर के बल वहाँ फेंक दिये जायेंगे। बंधे बंधाये होंगे और तंग व अंधेरी जगह में होंगे, न छूट सकेंगे न हरकत कर सकेंगे, न भाग सकेंगे, न निकल सकेंगे। फिर फ़रमाता है कि बतलाओ ये अच्छे हैं या वे जो दुनिया में गुनाहों से बचते रहे, ख़ुदा का ख़ौफ़ दिल में रखते रहे और आज उसके बदले अपने असली ठिकाने में पहुँच गये यानी जन्नत में। जहाँ मनमानी नेमतें, हमेशा की लज़्ज़तें, हमेशा की ख़ुशियाँ उनके लिये मौजूद हैं। उम्दा खाने, अच्छे बिछौने, बेहतरीन सवारियाँ, पुर तकल्लुफ़ लिबास, बहुत उम्दा मकानात, बनी संवरी पाकीज़ा हूरें, सुकून बख़्श मन्ज़र उनके लिये मुहैया हैं। जहाँ तक किसी की निगाहें तो कहाँ ख़्यालात भी नहीं पहुँच सकते। न उन राहतों के बयानात किसी कान में पहुँचे। फिर उनके कम हो जाने, ख़राब हो जाने, टूट जाने, ख़त्म हो जाने का भी कोई ख़तरा नहीं। न वे वहाँ से निकालें जायेंगे न वो नेमतें कम होंगी। कभी फ़ना न होने वाली बेहतरीन ज़िन्दगी, हमेशा की राहत व दौलत उन्हें मिल गयी और उनकी हो गयी। यह सब अल्लाह तआ़ला का एहसान व इनाम है जो उन पर हुआ और जिसके यह मुस्तहिक़ थे। रब का वायदा है जो उसने अपने ज़िम्मे कर लिया है, जो होकर रहने वाला है, जिसका पूरा न होना नामुम्किन है, जिसका ग़लत होना मुहाल है। उससे उसके वायदे को पूरा करने का सवाल करो, उससे जन्नत तलब करो, उसे उसका वायदा याद दिलाओ। यह भी उसका फ़ज़्ल है कि उसके फ़रिश्ते उससे दुआ़यें करते हैं कि रब्बुल-अ़लमीन! मोमिन बन्दों से जो तेरा वायदा है उसे पूरा कर, और उन्हें जन्नते अ़दन में ले जा। क़ियामत के दिन मोमिन कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! तेरे वायदे को सामने रखकर हम अ़मल करते रहे, आज तू अपना वायदा पूरा कर।

Maktaba Ashraf

यहाँ पहले जहन्नमियों का ज़िक्र करके फिर सवाल के बाद जन्नतियों का ज़िक्र हुआ। सूरः साफ़्फ़ात में जन्नतियों का ज़िक्र करके फिर सवाल के बाद जहन्नमियों का ज़िक्र हुआ। वहाँ फ़रमाया-

क्या यही बेहतर है या ज़क़्क़ूम का दरख़्त? जिसे हमने ज़ालिमों के लिये फ़ितना बना रखा है (इसमें फ़ितना और इम्तिहान इस तरह है कि वे अगर वे इसको तस्लीम कर लें कि जहन्नम की आग में पेड़ है तो मोमिन, और अगर यह सोच लें कि आग में पेड़ का क्या मतलब! और इनकार करें तो काफ़िर), जो जहन्नम की जड़ से निकलता है, जिसके फल ऐसे बदनुमा हैं जैसे साँप के फन। दोज़ख़ी उसे खायेंगे और उसी से पेट भरना पड़ेगा। फिर खौलता हुआ गर्म पानी पीप वग़ैरह से मिला-जुला पीने को दिया जायेगा, फिर उनका ठिकाना जहन्नम होगा, उन्होंने अपने बाप दादों को गुमराह पाया और बिना समझे-बूझे उनके पीछे लपकना शुरू कर दिया।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِیْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِیْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًاۢ بُوْرًا ۝ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ۝

और जिस दिन अल्लाह उन (काफ़िर) लोगों को और जिनको वे लोग ख़ुदा के अ़लावा पूजते थे उन (सब) को जमा करेगा, फिर (उन माबूदों से) फ़रमायेगा, क्या तुमने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था या ये (ख़ुद ही हक़ के) रास्ते से गुमराह हो गए थे? (17) वे (माबूद) अ़र्ज़ करेंगे कि अल्लाह की पनाह! हमारी क्या मजाल थी कि हम आपके सिवा और कारसाज़ों को तजवीज़ करते, और लेकिन आपने (तो) उनको और उनके बड़ों को (ख़ूब) ऐश व आराम दिया, यहाँ तक कि वे (आपकी) याद को भुला बैठे, और ये लोग ख़ुद ही बरबाद हुए। (18) (उस वक़्त अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि) लो तुम्हारे इन माबूदों ने तो तुमको तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया, सो (अब) तुम न तो ख़ुद (अ़ज़ाब को) टाल सकते हो और न (किसी दूसरे की तरफ़ से) मदद दिए जा सकते हो। और जो (जो) तुममें ज़ालिम (यानी मुश्रिक) होगा हम उसको बड़ा अ़ज़ाब चखाएँगे। (19)

गुमराह और सही रास्ते से भटके हुए

बयान हो रहा है कि मुश्रिक जिन-जिनकी इबादतें ख़ुदा के सिवा करते रहे क़ियामत के दिन उन्हें उनके सामने इस पर अ़ज़ाब के अ़लावा ज़बानी डाँट-फटकार भी की जायेगी, ताकि वे नादिम (शर्मिन्दा) हों। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम, हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते जिन-जिनकी इबादत हुई थी सब मौजूद होंगे और आ़बिद (इबादत और पूजा करने वाले) भी सब उसी मजमे में हाज़िर होंगे। उस वक़्त अल्लाह तबारक व

तआ़ला माबूदों (जिनकी पूजा और इबादत की जाती थी) से दरियाफ़्त फ़रमायेगा- क्या तुमने मेरे इन बन्दों से अपनी इबादत करने को कहा था? या ये ख़ुद ही ऐसा करने लगे? चुनाँचे एक दूसरी आयत में है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से भी यही सवाल होगा, जिसका वह जवाब देंगे कि मैंने इन्हें हरगिज़ इस बात की तालीम नहीं दी, जैसा कि तुझ पर सब कुछ ज़ाहिर है। मैंने तो इनसे वही कहा था जो तूने मुझसे कहा था कि इबादत के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह ही है। ये सब माबूद जो ख़ुदा के सिवा थे, ख़ुदा के सच्चे बन्दे थे और शिर्क से बेज़ार थे, जवाब देंगे कि किसी मख़्लूक़ को या हमको या उनको यह लायक़ ही न था कि तेरे सिवा किसी और की इबादत करें, हमने हरगिज़ इन्हें शिर्क की तालीम नहीं दी, इन्होंने ख़ुद ही अपनी ख़ुशी से दूसरों की पूजा शुरू कर दी थी। हम इनसे और इनकी इबादतों से बेज़ार (बेताल्लुक़ और नफ़रत करने वाले) हैं। हम इनके इस शिर्क से बरी और बेताल्लुक़ हैं, हम तो ख़ुद तेरे आ़बिद (इबादत करने वाले) हैं, फिर यह कैसे मुम्किन था कि हम माबूदियत (ख़ुदा और पूज्य होने) के मन्सब पर आ जाते? यह तो हमारे लायक़ ही न था, तेरी ज़ात इससे बहुत पाक और बरतर है कि कोई तेरा शरीक हो।

चुनाँचे एक और आयत में सिर्फ़ फ़रिश्तों से इस सवाल व जवाब का होना भी बयान हुआ है। "नत्तख़िज़ु" की दूसरी क़िराअत "नत्तख़िज़ु" भी है, यानी किसी तरह नहीं हो सकता था, न यह हमारे लायक़ था कि लोग हमें पूजने लगें और तेरी इबादत छोड़ दें। क्योंकि हम तो ख़ुद तेरे बन्दे हैं, तेरे दर के भिखारी हैं। मतलब दोनों सूरतों में क़रीब-क़रीब एक ही है। उनके बहकने की वजह हमारी समझ में तो यह आती है कि उन्हें उम्रें मिलीं, खाने पीने को मिलता रहा, बदमस्ती में बढ़ते गये यहाँ तक कि जो नसीहत (अच्छी और भलाई की बात) रसूलों की मारिफ़त पहुँची थी उसे भुला दी, तेरी इबादत से और सच्ची तौहीद से हट गये। ये लोग थे ही बेख़बर, हलाकत के गड्ढे में गिर पड़े, तबाह व बरबाद हो गये। "बूरन" से मतलब हलाकत वाले ही हैं, जैसे इब्ने ज़बअ़री ने अपने शे'र में इस लफ़्ज़ को इस मायने में बाँधा है।

अब अल्लाह तआ़ला इन मुश्रिकों से फ़रमायेगा लो अब तो ये तुम्हारे माबूद ख़ुद तुम्हें झुठला रहे हैं, तुम तो इन्हें अपना समझकर इस ख़्याल से कि ये तुम्हें ख़ुदा के ख़ास और क़रीबी बना देंगे, इनकी पूजा-पाठ कर रहे थे, आज ये तुमसे कोसों दूर भाग रहे हैं, तुमसे एक किनारे हो रहे और बेज़ारी ज़ाहिर कर रहे हैं। जैसे इरशाद है:

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غَافِلُوْنَ. وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِيْنَ.

यानी उससे ज़्यादा गुमराह कौन है जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है जो क़ियामत तक उसकी ख़्वाहिश पूरी न कर सकें, बल्कि वे तो उनकी दुआ़ से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। मेहशर वाले दिन ये सब उन सबके दुश्मन हो जायेंगे और उनकी इबादतों के साफ़ इनकारी हो जायेंगे।

पस क़ियामत के दिन ये मुश्रिक लोग न तो अपनी जानों से अ़ज़ाबे ख़ुदा हटा सकेंगे और न अपनी मदद कर सकेंगे, न किसी को अपना मददगार पायेंगे। तुम में से जो भी ख़ुदा-ए-वाहिद के साथ शिर्क करे हम उसे ज़बरदस्त और बहुत सख़्त अ़ज़ाब करेंगे।

और हमने आपसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी	وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ

إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۗ أَتَصْبِرُونَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ○	चलते-फिरते थे। और हमने तुम (तमाम ही मुकल्लफ़ लोगों) में एक को दूसरे के लिए आज़माईश बनाया है, क्या तुम सब्र करोगे? (यानी सब्र करना चाहिए) और आपका रब ख़ूब देख रहा है। (20)

Maktab E Ashraf

यह सिलसिला तो पहले से चला आता है

काफ़िर जो इस बात पर एतिराज़ करते थे कि नबी को खाने-पीने और तिजारत वग़ैरह से क्या मतलब? इसका जवाब दिया जा रहा है कि पहले सब पैग़म्बर भी इनसानी ज़रूरतें रखते थे, खाना पीना उनके साथ भी लगा हुआ था, व्यापार तिजारत और रोज़ी-रोटी कमाने का काम वे भी किया करते थे। ये चीज़ें नुबुव्वत के ख़िलाफ़ नहीं। हाँ अल्लाह तआ़ला अपनी ख़ास इनायत से उन्हें वो पाकीज़ा सिफ़तें, नेक आ़दतें, उम्दा अक़वाल, पसन्दीदा अफ़आ़ल, स्पष्ट दलीलें, आला मोजिज़े देता है, कि हर अ़क़्ले सलीम वाला, हर दाना-बीना (समझदार) मजबूर हो जाता है कि उनकी नुबुव्वत को तस्लीम करे और उनकी सच्चाई को मान ले। इसी आयत जैसी यह आयत भी है:

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا .... الخ.

यानी तुझसे पहले भी जितने नबी आये सब शहरों में रहने वाले इनसान ही थे। एक और आयत में है:

وَمَا جَعَلْنَا جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ .... الخ.

कि हमने उन्हें ऐसे जुस्से (बदन और जिस्म वाले) नहीं बनाये थे कि वे खाने पीने से आज़ाद हों। हम तो तुममें से एक-एक की आज़माईश एक-एक से कर लिया करते हैं ताकि फ़रमाँबरदार और नाफ़रमान ज़ाहिर हो जायें। साबिर (सब्र करने वाले) और ग़ैर-साबिर मालूम हो जायें। तेरा रब दाना-बीना (सब कुछ जानने और देखने वाला) है, ख़ूब जानता है कि नुबुव्वत का मुस्तहिक़ कौन है। जैसे फ़रमायाः

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ.

रिसालत के ओहदे की अहलियत (पात्रता) किसमें है इसे ख़ुदा ही जानता है। उसी को इसका भी इल्म है कि हिदायत का मुस्तहिक़ कौन है, और कौन नहीं। चूँकि ख़ुदा का इरादा बन्दों का इम्तिहान लेने का है इसलिये नबियों को उमूमन मामूली हालत में रखता है, वरना अगर उन्हें बहुत ज़्यादा दुनिया देता तो उनके माल के लालच में बहुत से लोग उनके साथ हो जाते, तो फिर सच्चे झूठे मिल जाते।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है, रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है- मैं ख़ुद तुझे और तेरी वजह से और लोगों को आज़माने वाला हूँ। मुस्नद अहमद में है, आप फ़रमाते हैं कि अगर मैं चाहता तो मेरे साथ सोने-चाँदी के पहाड़ चलते रहते। एक और सही हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. को नबी और बादशाह बनने में और नबी और बन्दा बनने में इख़्तियार दिया गया तो आपने बन्दा और नबी बनना पसन्द फ़रमाया। आप पर और आपके सहाबा पर बेशुमार दुरूद व सलाम और अल्लाह की रहमतें नाज़िल हों, आमीन। **(अल्लाह का शुक्र है कि पारा नम्बर 18 की तफ़सीर मुकम्मल हुई।)**

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर उन्नीस

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ۭ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ۝ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ۝ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ۝

और जो लोग हमारे सामने पेश होने से अन्देशा नहीं करते (इस वजह से कि इसके मुन्किर हैं) वे यूँ कहते हैं कि हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं आते, या हम अपने रब को देख लें, ये लोग दिलों में अपने को बहुत बड़ा समझ रहे हैं, और ये लोग (इनसानियत की) हद से बहुत दूर निकल गए हैं। (21) जिस दिन ये लोग फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन (क़ियामत में) मुजरिमों (यानी काफ़िरों) के लिए कोई ख़ुशी की बात न होगी, और (अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को देखकर) कहेंगे कि पनाह है, पनाह है। (22) और हम (उस दिन) उनके (यानी काफ़िरों के) उन (नेक) कामों की तरफ़ जो कि वे (दुनिया में) कर चुके थे मुतवज्जह होंगे, सो उनको ऐसा (बेकार) कर देंगे जैसे परेशान ग़ुबार। (23) (अलबत्ता) जन्नत वाले उस दिन ठिकाने में भी अच्छे रहेंगे और आरामगाह में भी ख़ूब अच्छे होंगे। (24)

असल मक़सद तो इनकार है, बेकार के बहाने बनाते हैं

काफ़िर लोग नुबुव्वत के इनकार का एक बहाना यह भी बनाते थे कि अगर ख़ुदा को कोई रसूल भेजना ही था तो किसी फ़रिश्ते को क्यों न भेजता। चुनाँचे एक दूसरी आयत में है कि वे एक बहाना यह भी करते थे:

لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ.

यानी जब तक ख़ुद हमें वह न दिया जाये जो रसूलों को दिया गया है हम हरगिज़ ईमान न लायेंगे।

मतलब यह कि जिस तरह दूसरे नबियों के पास ख़ुदा की तरफ़ से फ़रिश्ता 'वही' लेकर आता है, हमारे पास भी आये। और यह भी हो सकता है कि उनका मुतालबा यह हो कि फ़रिश्तों को देख लें, ख़ुद फ़रिश्ते आकर हमें समझायें और नबी करीम हुज़ूर सल्ल. की नुबुव्वत की तस्दीक़ (पुष्टि) करें तो हम आपको नबी मान लेंगे। जैसे एक और आयत में है कि कुफ़्फ़ार ने कहा:

اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا.

Maktab E Ashraf

यानी तू अल्लाह को ले आ या फ़रिश्तों को आँखों के सामने हमारे पास ले आ।

इसकी पूरी तफ़सीर सूरः बनी इस्राईल में गुज़र चुकी है। यहाँ भी उनका यही मुतालबा बयान हुआ है कि या तो हमारे ऊपर फ़रिश्ते उतरें या हम अपने रब को देख लें। उनके मुँह से यह बात इसलिये निकली कि ये ख़ुद को बहुत कुछ समझने लगे थे और इनका गुरूर हद से बढ़ गया था। इनकी ईमान लाने की नीयत न थी, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ........ الخ

यानी अगर हम उन पर फ़रिश्तों को उतारते और उनसे मुर्दे बातें करते और भी तमाम चीज़ें ग़ैब की हम उनके सामने कर देते तब भी उन्हें ईमान लाना नसीब न होता।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि फ़रिश्तों को ये देखेंगे लेकिन उस वक़्त इनके लिये उनका देखना कुछ अच्छा न होगा। इससे मुराद मौत के क़रीब का वक़्त है, जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों के पास आते हैं और ख़ुदा के ग़ज़ब की और जहन्नम की आग की उन्हें ख़बर सुनाते हैं और कहते हैं कि ऐ ख़बीस रूह! जो ख़बीस और नापाक जिस्म में थी, गर्म हवाओं और गर्म पानी की तरफ़ और गर्म सायों की तरफ़ चल। वह निकलने से रुकती है और बदन में छुपती फिरती है, इस पर फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी कमरों पर मारते हैं, जैसा कि फ़रमान है:

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ........ الخ.

यानी काश कि तू ज़ालिमों को उनकी मौत की सख़्तियों के वक़्त देखता जबकि फ़रिश्ते उन्हें मारने के लिये हाथ बढ़ाते हुए होंगे और कह रहे होंगे- अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब चखने पड़ेंगे, क्योंकि तुम अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे नाहक़ इल्ज़ामात तराशते थे और उसकी आयतों से तकब्बुर करते थे।

मोमिनों का हाल इसके बिल्कुल उलट और विपरीत होगा, उनको मौत के वक़्त ख़ुशख़बरियाँ सुनाई जाती हैं और हमेशा की ख़ुशियों की बशारतें दी जाती हैं। जैसे अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا...........الخ

कि जिन्होंने अल्लाह को अपना रब कहा और माना, फिर इस पर जमे रहे, उनके पास हमारे फ़रिश्ते आते हैं और कहते हैं कि तुम न डरो और न ग़म करो, बल्कि उन जन्नतों में जाने की ख़ुशी मनाओ जिनका तुमसे वायदा किया जाता रहा है। हम तुम्हारे वाली हैं, दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी। तुम जो कुछ चाहोगे पाओगे और जिस चीज़ की ख़्वाहिश करोगे मौजूद हो जायेगी। यह तुम्हारी मेहमानदारी होगी बख़्शने वाले मेहरबान ख़ुदा की तरफ़ से।

सही हदीस में है कि फ़रिश्ते मोमिन की रूह से कहते हैं कि ऐ पाक रूह! जो पाक जिस्म में थी, तू अल्लाह तआ़ला के रहम और रहमत की तरफ़ चल, जो तुझसे नाराज़ नहीं है। सूरः इब्राहीम की आयत "युसब्बितुल्लाहुल्लज़ी-न आमनू........" की तफ़सीर में ये सब हदीसें तफ़सील से बयान हो चुकी हैं। बाज़ों ने कहा है इससे मुराद क़ियामत के दिन फ़रिश्तों का देखना है, हो सकता है कि दोनों मौक़ों पर फ़रिश्तों का देखना मुराद हो। इसमें एक क़ौल की दूसरे क़ौल से कोई मुख़ालफ़त और टकराव नहीं। क्योंकि दोनों मौक़ों पर हर नेक व बद शख़्स फ़रिश्तों को देखेगा, मोमिनों को रहमत और अल्लाह के राज़ी होने की ख़ुशख़बरी

के साथ फ़रिश्तों का दीदार होगा और काफ़िरों को लानत व फटकार और अ़ज़ाब की ख़बरों के साथ।

फ़रिश्ते उस वक़्त उन काफ़िरों से साफ़ कह देंगे कि अब फ़लाह व बहबूद तुम पर हराम है। "हिज्र" के लफ़्ज़ी मायने रोक के हैं। चुनाँचे क़ाज़ी जब किसी को उसकी मुफ़लिसी या बेअ़क़्ली या कम-उम्री की वजह से माल के तसर्रुफ़ (यानी उसमें अपना इख़्तियार चलाने) से रोक दे तो कहते हैं "ह-जरल् क़ाज़ी अ़ला फ़ुलानिन्" (यानी क़ाज़ी ने फ़ुलाँ पर रोक लगा दी)। हतीम को भी हिज्र कहते हैं इसलिये कि वह तवाफ़ करने वालों को अपने अन्दर तवाफ़ करने से रोक देता है, बल्कि उसके बाहर से तवाफ़ किया जाता है। अ़क़्ल को भी अ़रबी में 'हिज्र' कहते हैं, इसलिये कि वह भी इनसान को बुरे कामों से रोक देती है।

पस फ़रिश्ते उनसे कहते हैं कि जो ख़ुशख़बरियाँ मोमिनों को इस वक़्त मिलती हैं उससे तुम मेहरूम हो। यह मायने तो इस बिना पर हैं कि इस जुमले को फ़रिश्तों का क़ौल कहा जाये। दूसरा क़ौल यह है कि यह मक़ूला उस वक़्त काफ़िरों का होगा, वे फ़रिश्तों को देखकर कहेंगे कि ख़ुदा करे तुम हमसे आड़ में रहो, तुम हमारे पास न आ सको। अगरचे यह मायने भी हो सकते हैं लेकिन यह समझ से ज़रा दूर के मायने हैं। ख़ासकर उस वक़्त कि जब इसके ख़िलाफ़ वह तफ़सीर जो हमने ऊपर बयान की पुराने उलेमा और बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है। अलबत्ता हज़रत मुजाहिद रह. से एक क़ौल ऐसा मन्क़ूल है, लेकिन उनसे स्पष्ट तौर पर यह भी नक़ल है कि यह क़ौल फ़रिश्तों का होगा। वल्लाहु आलम।

फिर क़ियामत के दिन आमाल के हिसाब के वक़्त उनके आमाल ग़ारत और अकारत (यानी बेकार और बरबाद) हो जायेंगे। ये जिन्हें अपनी निजात का ज़रिया समझे हुए थे वे बेकार हो जायेंगे, क्योंकि या तो वे ख़ुलूस के साथ न थे या सुन्नत के मुताबिक़ न थे, और जो अ़मल इन दोनों से या इनमें से एक चीज़ से ख़ाली हो वह ख़ुदा के नज़दीक क़ाबिले क़ुबूल नहीं। इसलिये काफ़िरों के नेक आमाल भी मरदूद हैं। हमने उनके आमाल को मुलाहिज़ा किया (यानी देखा) और उनको बिखरे हुए ज़र्रों की तरह कर दिया कि वे सूरज की किरणें जो किसी सुराख़ में से आ रही हों उनमें नज़र आते हैं। लेकिन कोई उन्हें पकड़ना चाहे तो हाथ नहीं लगते। जिस तरह पानी जो ज़मीन पर बहा दिया जाये, वह फिर हाथ नहीं आ सकता, या ग़ुबार जो हाथ नहीं लग सकता, या दरख़्तों के पत्तों का चूरा जो हवा में बिखर गया हो, या राख और ख़ाक जो उड़ती फिरती हो। इसी तरह उनके आमाल हैं जो महज़ बेकार हो गये, उनका कोई सवाब उनके हाथ नहीं लगेगा, इसलिये कि या तो उनमें ख़ुलूस न था (यानी नेक नीयत के साथ सिर्फ़ अल्लाह के लिये न थे) या मुताबिक़े शरीअ़त न थे, या दोनों ख़ूबियाँ न थीं। पस जब यह आ़लिम व आ़दिल, हाकिमे हक़ीक़ी (यानी अल्लाह तआ़ला) के सामने पेश हुए तो बिल्कुल निकम्मे साबित हुए। इसी लिये उसे रद्दी और हाथ न लगने वाली चीज़ से तशबीह (संज्ञा) दी गई। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۨ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ .... الخ

यानी काफ़िरों के आमाल की मिसाल राख जैसी है, जिसे तेज़ हवा उड़ा दे........।

इनसान की नेकियाँ बाज़ बदियों से भी ज़ाया हो जाती हैं, जैसे सदक़ा ख़ैरात, कि वह एहसान जताने और तकलीफ़ पहुँचाने से ज़ाया हो जाता है। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान हैः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى...... لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا.

ऐ ईमान वालो! तुम एहसान जतलाकर और तकलीफ़ पहुँचाकर अपनी ख़ैरात को बरबाद मत करो,

उस शख़्स की तरह जो अपना माल ख़र्च करता है महज़ लोगों को दिखलाने के लिये और ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर, सो उस शख़्स की हालत ऐसी है जैसे एक चिकना पत्थर हो और उस पर कुछ मिट्टी आ गयी हो, फिर उस पर ज़ोर की बारिश पड़ जाये तो उसको बिल्कुल साफ़ कर दे। ऐसे लोगों को अपनी कमाई ज़रा भी हाथ न लगेगी।

एक और आयत में उनके आमाल की मिसाल उस रेत के टीले से दी गई है जो दूर से लहर मारते हुए दरिया की तरह दिखाई देता है। जिसे देखकर प्यासा आदमी पानी समझता है, लेकिन पास आता है तो मालूम होता है कि उसका ख़्याल क़तई ग़लत था। इसकी तफ़सीर भी अल्लाह के फ़ज़्ल से गुज़र चुकी है।

फिर फ़रमाया कि इनके मुक़ाबले में जन्नतियों की भी सुन लो, क्योंकि ये दोनों फ़रीक़ बराबर नहीं। जन्नती तो बुलन्द दर्जों में, आला बालाख़ानों (चौबारों) में अमन व अमान, राहत व आराम के साथ ऐश व मस्ती में होंगे। ठिकाना अच्छा, मन्ज़र दिल को मोह लेने वाला, हर राहत मौजूद, दिल को ख़ुश करने वाली हर चीज़ सामने, जगह अच्छी, मकान पाक, मन्ज़िल मुबारक, सोने बैठने रहने सहने का आराम। इसके विपरीत जहन्नमी हैं कि दोज़ख़ के नीचे के तब्क़ों में जकड़-बन्द, ऊपर नीचे दायें बायें आग, हसरत व अफ़सोस, रंज व ग़म, फुकना जलना, बेक़रारी जिगर-सोज़ी, ठिकाना बुरा, मन्ज़िल बुरी, मन्ज़र ख़ौफ़नाक, अज़ाब सख़्त।

नेक लोगों के जिनके दिल में ईमान था आमाल मक़बूल हुये, जज़ायें दी गईं, बदले मिले, जहन्नम से बचे, जन्नत के वारिस व मालिक बने। पस ये जो तमाम भलाईयों को समेट बैठे और वे जो हर नेकी से मेहरूम रहे, कहीं बराबर हो सकते हैं? इसलिये नेकों की सआ़दत (नेकबख़्ती और ख़ुशक़िस्मती) बयान फ़रमाकर बुरों की बदबख़्ती पर तंबीह कर दी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि कोई घड़ी ऐसी भी होगी कि जन्नती अपनी हूरों के साथ दिन व दोपहर को आराम फ़रमायें और जहन्नमी शैतानों के साथ जकड़े हुए दोपहर को घबरायें। सईद बिन जुबैर कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला आधे दिन में बन्दों के हिसाब से फ़ारिग़ हो जायेगा। पस जन्नतियों के दोपहर के सोने का वक़्त जन्नत में होगा और जहन्नमियों का जहन्नम में।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं- मुझे मालूम हुआ है कि किस वक़्त जन्नती जन्नत में जायेंगे और जहन्नमी जहन्नम में। यह वह वक़्त होगा जो यहाँ दुनिया में दोपहर का वक़्त होता है कि लोग अपने घरों को दो घड़ी आराम हासिल करने की ग़र्ज़ से लौटते हैं। जन्नतियों का यह क़ैलूला (दोपहर का आराम) जन्नत में होगा। मछली की कलेजी उन्हें पेट भरकर खिलाई जायेगी। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. का बयान है कि दिन आधा हो इससे पहले ही पहले जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में क़ैलूला करेंगे। फिर आपने यही आयत पढ़ी। और यह आयत भी पढ़ीः

ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاْ اِلَى الْجَحِيْمِ.

यानी फिर उनका लौटना जहन्नम की तरफ़ है।

जन्नत में जाने वाले सिर्फ़ एक मर्तबा अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर पेश होंगे, यही आसानी से हिसाब लेना है। फिर ये जन्नत में जाकर दोपहर का आराम करेंगे। जैसा कि फ़रमाने ख़ुदा हैः

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ. فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا. وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا.

यानी जो शख़्स अपना आमाल-नामा दाहिने हाथ में दिया जायेगा उससे बहुत आसान हिसाब लिया जायेगा, और वह अपने वालों की तरफ़ ख़ुशी-ख़ुशी लौटेगा। उसका ठिकाना और मन्ज़िल बेहतर है।

Maktaba E Ashraf

Maktaba Ashraf

सफ़वान बिन मुहरिज़ रह. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन दो शख़्सों को लाया जायेगा, एक तो वह जो सारी दुनिया का बादशाह था, उससे हिसाब लिया जायेगा तो उसकी पूरी उम्र में एक नेकी भी न निकलेगी, पस उसे जहन्नम के दाख़िले का हुक्म मिलेगा। फिर दूसरा शख़्स आयेगा जिसने एक कम्बल में दुनिया गुज़ारी थी, जब उससे हिसाब लिया जायेगा तो यह कहेगा कि ख़ुदाया मेरे पास दुनिया में थां ही क्या जिसका हिसाब लिया जायेगा? अल्लाह फ़रमायेगा यह सच्चा है, इसे छोड़ दो। उसे जन्नत में जाने की इजाज़त दी जायेगी। फिर कुछ समय के बाद दोनों को बुलाया जायेगा तो जहन्नमी बादशाह तो एक जले हुए कोयले के जैसा हो गया होगा। उससे पूछा जायेगा- कहो किस हाल में हो? यह कहेगा बहुत ही बुरे हाल में और निहायत ख़राब जगह में। फिर जन्नती को बुलाया जायेगा, उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकता होगा। उससे पूछा जायेगा- कहो कैसी गुज़र रही है? यह कहेगा अल्हम्दु लिल्लाह बहुत अच्छी, और बहुत ही बेहतर जगह में हूँ। अल्लाह फ़रमायेगा जाओ अपनी-अपनी जगह फिर चले जाओ।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ○ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ○ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ○ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ○ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ○

और जिस दिन आसमान एक बदली पर से फट जाएगा, और (उस बदली के साथ) फ़रिश्ते (ज़मीन पर) कसरत से उतारे जाएँगे। (25) (और) उस दिन हक़ीक़ी हुकूमत (ख़ुदा-ए-) रहमान (ही) की होगी, और वह (दिन) काफ़िरों पर बड़ा सख़्त दिन होगा। (26) और जिस दिन ज़ालिम (यानी काफ़िर आदमी इन्तिहाई हसरत से) अपने हाथ काट खाएगा (और) कहेगा क्या अच्छा होता मैं रसूल के साथ (दीन की) राह पर लग लेता। (27) हाय मेरी शामत (कि ऐसा न किया, और) क्या अच्छा होता कि मैं फ़ुलाँ शख़्स को दोस्त न बनाता। (28) उस (कमबख़्त) ने मुझको नसीहत आने के बाद उससे बहका (और हटा) दिया, और शैतान तो इनसान को (ऐन वक़्त पर) मदद करने से जवाब दे ही देता है। (29)

वक़्त निकलने के बाद हसरत व नाकामी का एहसास

क़ियामत के दिन जो हौलनाक बातें पेश आयेंगी उनमें से एक आसमान का फट जाना और नूरानी बादल का ज़ाहिर होना भी है। जिसकी रोशनी से आँखें चकाचौंध हो जायेंगी। फिर फ़रिश्ते उतरेंगे और मैदाने मेहशर में तमाम इनसानों को घेर लेंगे। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों में फ़ैसले के लिये तशरीफ़ लायेगा जैसा कि फ़रमान है:

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا اَنْ يَّاْتِيَهُمُ.........الخ

Maktab E Ashraf

यानी क्या उन्हें इस बात का इन्तिज़ार है कि अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते बादलों में आयें....।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपनी तमाम मख़्लूक़ को, सब इनसानों और तमाम जिन्नात को एक ही मैदान में जमा करेगा। तमाम जानवर चौपाये दरिन्दे परिन्दे और तमाम मख़्लूक़ वहाँ होगी, फिर पहला आसमान फटेगा और उसके फ़रिश्ते आयेंगे जो ज़मीन और पहले आसमान की तमाम मख़्लूक़ की गिनती से भी ज़्यादा होंगे। फिर दूसरा आसमान फटेगा, उसके फ़रिश्ते आयेंगे जो ज़मीन और पहले आसमान की तमाम मख़्लूक़ की गिनती से भी ज़्यादा होंगे। फिर तीसरा आसमान फटेगा, उसके फ़रिश्ते दोनों आसमानों के फ़रिश्ते और ज़मीन की मख़्लूक़ से भी ज़्यादा होंगे, ये भी सब को घेरकर खड़े हो जायेंगे। फिर इसी तरह चौथा फिर पाँचवाँ फिर छठा फिर सातवाँ फिर हमारा रब तआ़ला बादल के साये में तशरीफ़ लायेगा। उसके इर्द-गिर्द (चारों तरफ़) सबसे बड़े रुतबे वाले पाक फ़रिश्ते होंगे जो सातों आसमानों और सातों ज़मीनों की तमाम मख़्लूक़ से भी ज़्यादा होंगे। उन पर सींगों जैसे निशान होंगे, वे अल्लाह तआ़ला की तस्बीह (पाकी) व तहलील (उसका अकेला माबूद होना) और उसकी पाकीज़गी बयान करेंगे। उनके तलवे से लेकर टख़्ने तक का फ़ासला पाँच सौ साल का रास्ता होगा, और टख़्ने से घुटने तक भी इतना ही, और घुटने से नाफ़ तक का भी इतना ही फ़ासला होगा, और नाफ़ से गर्दन तक का भी इतना ही फ़ासला होगा और गर्दन से कान की लौ तक भी इतना ही फ़ासला होगा और उसके ऊपर सींग का भी इतना ही फ़ासला होगा।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान है कि क़ियामत का नाम "यौमे तलाक़" इसी लिये है कि उसमें ज़मीन व आसमान वाले मिलेंगे। उन्हें देखकर पहले तो मेहशर वाले समझ लेंगे कि हमारा अल्लाह आया लेकिन ये समझा देंगे कि वह आने वाला है, अभी तक नाज़िल नहीं हुआ। फिर जबकि सातों आसमानों के फ़रिश्ते आ जायेंगे अल्लाह तआ़ला अपने अ़र्श पर तशरीफ़ लायेगा, जिसे फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे जिनके टख़्ने से घुटने तक सत्तर साल का रास्ता है, और एक मोंढे से दूसरे मोंढे के बीच भी सत्तर साल का रास्ता है। हर फ़रिश्ता दूसरे से अलग और भिन्न है, हर एक की ठोड़ी सीने से लगी हुई है और ज़बान पर "सुब्हानल् मलिकिल् क़ुद्दूस" का वज़ीफ़ा है।

नोटः ऊपर जो 'यौमे तलाक़' का लफ़्ज़ आया है, सो याद रखें कि अ़रबी में एक 'तलाक़' का लफ़्ज़ 'तोए' से है, जिसके मायने अलग होने के हैं। उसी से 'तलाक़' बोला जाता है जिसमें मियाँ-बीवी में जुदाई होती है। और एक 'तलाक़' लफ़्ज़ 'ता' से आता है जिसके मायने मिलने और मुलाक़ात के हैं, यहाँ मेहशर के दिन को इसी मायने में 'यौमे-तलाक़' (मिलने का दिन) कहा गया है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

उनके सरों पर एक फैली हुई सी चीज़ है जैसे क़न्नात, उसके ऊपर अ़र्श होगा। इस रिवायत में एक रावी अ़ली बिन जदआ़न हैं जो कमज़ोर हैं और इस हदीस में मुन्कर होने की बहुत सी बातें हैं। सूर की मशहूर हदीस में भी इसी के क़रीब-क़रीब मन्क़ूल है। वल्लाहु आलम।

एक दूसरी आयत में है कि उस दिन हो पड़ने वाली हो पड़ेगी, आसमान फटकर फ़ुसफ़ुसा हो जायेगा, उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे और उस दिन तेरे रब का अ़र्श आठ फ़रिश्ते लिये हुए होंगे। शहर बिन होशब कहते हैं कि उनमें से चार की तस्बीह तो यह होगीः

सुब्हानकल्लाहुम्-म व बि-हम्दि-क लकल्-हम्दु अ़ला हिल्मि-क बअ़्-द इल्मि-क।

Maktab E Ashraf

यानी ख़ुदाया तू पाक है, तू क़ाबिले तारीफ़ व प्रशंसा है। बावजूद इल्म के फिर भी बुर्दबारी बरतना तेरा वस्फ़ है, जिस पर हम तेरी तारीफ़ों के साथ हैं, तेरे ही लिये सब तारीफ़ है कि तू बावजूद क़ुदरत के माफ़ फ़रमाता रहता है।

अबूबक्र बिन अ़ब्दुल्लाह रह. कहते हैं कि अ़र्श को उतरता देखकर मेहशर वालों की आँखें फट जायेंगी, जिस्म काँप उठेंगे, दिल हिल जायेंगे। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ की तरफ़ उतरेगा तो दरमियान में सत्तर हज़ार पर्दे होंगे। बाज़ नूर के, बाज़ अंधेरों के। उस अंधेरे में से एक ऐसी आवाज़ निकलेगी जिससे दिल टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। शायद इनकी यह रिवायत उन्हीं दो थेलों में से ली हुई होगी (मतलब यह है कि यह रिवायत ज़्यादा क़ाबिले एतिबार नहीं)। वल्लाहु आलम

उस दिन सिर्फ़ ख़ुदा ही की बादशाहत होगी, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ......... الخ

आज मुल्क किसके लिये है? सिर्फ़ अल्लाह ग़ालिब व क़हहार के लिये।

सही हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला आसमानों को अपने दाहिने हाथ से लपेट लेगा और ज़मीनों को अपने दूसरे हाथ में ले लेगा। फिर फ़रमायेगा मैं मालिक हूँ मैं यहाँ हूँ। ज़मीन के बादशाह कहाँ हैं? तकब्बुर करने वाले कहाँ हैं? वह दिन कुफ़्फ़ार पर बड़ा भारी पड़ेगा। इसी का बयान एक और जगह भी है कि काफ़िरों पर वह दिन बहुत भारी गुज़रेगा। हाँ मोमिनों को उस दिन बिल्कुल भी घबराहट या परेशानी न होगी। हुज़ूर सल्ल. से कहा गया कि या रसूलल्लाह! पचास हज़ार साल का दिन तो बहुत ही लम्बा पड़ेगा? आपने फ़रमाया उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि मोमिन पर तो वह एक वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ से भी हल्का और आसान होगा। पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम के तरीक़े से और आपके लाये हुए खुले हक़ से हटकर रसूलुल्लाह सल्ल. की राह के सिवा दूसरी राहें चलने वाले उस दिन बड़े ही नादिम (पछताने वाले) होंगे और हसरत व अफ़सोस के साथ अपने हाथ चबायेंगे। अगरचे इसका नुज़ूल उक़्बा बिन अबी मुईत के बारे में हो या किसी और के बारे में, लेकिन हुक्म के एतिबार से यह हर ऐसे ज़ालिम को शामिल है। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ........... الخ

जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में उलट-पुलट किये जायेंगे, यूँ कहते होंगे कि ऐ काश! हमने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की होती और हमने रसूल की इताअ़त की होती। (सूरः अहज़ाब आयत 66)

पस हर ज़ालिम क़ियामत के दिन पछतायेगा, अपने हाथों को चबायेगा और रो-पीटकर कहेगा काश कि मैंने नबी की राह इख़्तियार की होती, काश कि मैंने फ़ुलाँ की अ़क़ीदत-मन्दी न की होती, जिसने मुझे सही और हक़ राह से गुमराह कर दिया।

उमैया बिन ख़लफ़ और उसके भाई उबई बिन ख़लफ़ का भी यही हाल होगा और उनके सिवा ऐसे लोगों का भी यही होगा। कहेगा कि उसने मुझे ज़िक्र यानी क़ुरआन से बेराह कर दिया, हालाँकि वह मुझे पहुँच चुका था। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि शैतान इनसान को रुस्वा करने वाला है। वह उसे नाहक़ की तरफ़ बुलाता है और हक़ से घुमा (यानी दूसरी तरफ़ रुख़ मोड़) देता है।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ۝

और (उस दिन) रसूल कहेंगे कि ऐ मेरे रब! मेरी (इस) क़ौम ने इस क़ुरआन को (जिस पर अ़मल करना वाजिब था) बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर रखा था। (30) और हम इसी तरह (यानी जिस तरह ये लोग आपसे दुश्मनी और बैर रखते हैं) मुजरिम लोगों में से हर नबी के दुश्मन बनाते रहे हैं, और हिदायत करने और मदद करने को आपका रब काफ़ी है। (31)

Maktaba E Ashraf

नबी अ़लैहिस्सलाम की एक शिकायत

क़ियामत के दिन अल्लाह के सच्चे रसूल नबी करीम हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपनी उम्मत की शिकायत अल्लाह की बारगाह में करेंगे कि ये लोग न क़ुरआन की तरफ़ झुकते थे न रग़बत से क़बूलियत के साथ सुनते थे, बल्कि औरों को भी इसके सुनने से रोकते थे। जैसा कि कुफ़्फ़ार का मक़ूला ख़ुद क़ुरआन में है कि वे कहते थेः

لَاتَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ.

कि इस क़ुरआन को न सुनो और इसके पढ़े जाने के वक़्त शोर व हंगामा करो।

यही इसका छोड़ रखना था। न इस पर ईमान लाते थे, न इसे सच्चा जानते थे, न इस पर ग़ौर व फ़िक्र करते थे, न इसे समझने की कोशिश करते थे, न इस पर अ़मल था, न इसके अहकाम को पूरा करते थे, न इसके मना किये हुए कामों से रुकते थे, बल्कि इसको छोड़कर दूसरे कलामों में मशग़ूल व व्यस्त रहते थे, जैसे शे'र-शायरी, ग़ज़लियात, बाजे गाजे, राग रागनियाँ, इसी तरह और लोगों के कलाम से दिलचस्पी लेते थे और उन पर आ़मिल थे। यही इसे छोड़ देना था। हमारी दुआ़ है कि अल्लाह करीम व मन्नान जो हर चीज़ पर क़ादिर है, हमें तौफ़ीक़ दे कि हम उसकी नामर्ज़ी के कामों से अलग हो जायें और उसके पसन्दीदा कामों की तरफ़ झुक जायें। वह हमें अपने कलाम की समझ दे और दिन रात इसी पर अ़मल करने की हिदायत दे, जिससे वह ख़ुश हो। वह करीम व वह्हाब (करम करने वाला और देने वाला) है।

फिर फ़रमाया कि ऐ नबी! जिस तरह आपकी क़ौम में क़ुरआन को नज़र-अन्दाज़ कर देने वाले लोग हैं इसी तरह पहली उम्मतों में भी ऐसे लोग थे जो ख़ुद कुफ़्र करके दूसरों को अपने कुफ़्र में शरीक करते थे, और अपनी गुमराही फैलाने की फ़िक्र में लगे रहते थे। जैसे कि अल्लाह का फ़रमान हैः

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا.......... الخ

यानी इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन शयातीन व इनसान बना दिये हैं।

फिर फ़रमाया कि जो रसूलुल्लाह सल्ल. की ताबेदारी करे, अल्लाह की किताब पर ईमान लाये, ख़ुदा की 'वही' पर यक़ीन करे उसका हादी और मददगार ख़ुद ख़ुदा-ए-तआ़ला है। मुश्रिकों की जो ख़स्लत ऊपर बयान हुई इससे उनकी ग़र्ज़ यह थी कि लोगों को हिदायत पर न आने दें और अपने आप मुसलमानों पर ग़ालिब रहें। इसलिये क़ुरआन ने फ़ैसला किया कि ये नामुराद (असफ़ल) ही रहेंगे। अल्लाह अपने नेक बन्दों

Maktab E Ashraf

को ख़ुद हिदायत करेगा और मुसलमानों की ख़ुद मदद करेगा। यह मामला और ऐसों का मुक़ाबला कुछ तुझ से ही नहीं, पहले तमाम नबियों के साथ भी यही होता रहा है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ
الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ
بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ○ وَلَا يَاْتُوْنَكَ
بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ
تَفْسِيْرًا ○ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى
وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا
وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ○ ع 1

और काफ़िर लोग यूँ कहते हैं कि उन (पैग़म्बर) पर यह क़ुरआन एक ही बार में क्यों नाज़िल नहीं किया गया, इस तरह (धीरे-धीरे हमने) इसलिए (नाज़िल किया) है ताकि हम उसके ज़रिये आपके दिल को क़वी रखें, और (इसी लिए) हमने इसको बहुत ठहरा-ठहराकर उतारा है। (32) और ये लोग कैसा ही अ़जीब सवाल आपके सामने पेश करें मगर हम (उसका) ठीक जवाब और वज़ाहत में (भी) बढ़ा हुआ आपको इनायत कर देते हैं। (33) ये लोग वे हैं जो अपने मुँहों के बल जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएँगे, ये लोग जगह में भी बदतर हैं और तरीक़े में भी बहुत गुमराह हैं। (34)

एक बेकार का एतिराज़

काफ़िरों का एक एतिराज़ यह भी था कि जैसे तौरात इन्जील ज़बूर वग़ैरह एक साथ पैग़म्बरों पर नाज़िल होती रहीं, यह क़ुरआन एक ही बार में आँ हज़रत सल्ल. पर नाज़िल क्यों न हुआ? अल्लाह तआ़ला ने इसके जवाब में फ़रमाया कि हाँ वाक़ई यह अनेक बार में और टुकड़े-टुकड़े होकर उतरा है, तेईस बरस में नाज़िल हुआ है, जैसी जैसी ज़रूरत पड़ती गई, जो-जो वाक़िआ़त होते रहे, अहकाम नाज़िल होते गये, ताकि मोमिनों का दिल जमा रहे। ठहर-ठहरकर अहकाम उतरें ताकि एक दम अ़मल मुश्किल न हो, वज़ाहत के साथ बयान हो जाये। समझ में आ जाये, तफ़सीर भी साथ ही साथ होती रहे।

हम इनके तमाम एतिराज़ों का सही और सच्चा जवाब देंगे, जो इनके बयान से भी ज़्यादा वाज़ेह (स्पष्ट) होगा। जो कमी ये बयान करेंगे हम इनकी तसल्ली कर देंगे, सुबह-शाम रात-दिन सफ़र-हज़र में बार-बार इस नबी की इज़्ज़त और अपने ख़ास बन्दों की हिदायत के लिये हमारा कलाम हमारे नबी की पूरी ज़िन्दगी तक उतरता रहेगा, जिससे हुज़ूर सल्ल. की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत भी ज़ाहिर होती रहेगी। दूसरे अम्बिया पर एक मर्तबा में ही सारा कलाम आ गया और इस बेहतरीन नबी से बार-बार ख़ुदा तबारक व तआ़ला ख़िताब करता रहा ताकि इस क़ुरआन की अ़ज़मत भी ज़ाहिर हो जाये कि यह इतनी लम्बी मुद्दत में नाज़िल हुआ। पस नबी सल्ल. भी सब नबियों में आला और क़ुरआन भी सब कलामों में ऊँचा। और लतीफ़ा यह है कि क़ुरआन को दोनों अ़ज़मतें (सम्मान और बड़ाईयाँ) मिलीं। यह एक साथ लौहे-महफ़ूज़ से 'भला-ए-आला' में उतरा। लौहे-महफ़ूज़ से पूरा-का-पूरा दुनिया वाले आसमान तक पहुँचा, फिर ज़रूरत के अनुसार थोड़ा-थोड़ा करके नाज़िल होता रहा।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि सारा क़ुरआन एक दफ़ा ही शबे-क़द्र में दुनिया वाले आसमान

पर नाज़िल हुआ, फिर बीस साल तक ज़मीन पर उतरता रहा। फिर इसके सुबूत में आपने "व ला यअ्तून-क बि-म-सलिन्......." (सूरः फ़ुरक़ान आयत 33) और आयत "व क़ुरआनन् फ़रक़्नाहु......" (सूरः बनी इस्राईल आयत 106) तिलावत फ़रमाई।

इसके बाद काफ़िरों की जो बुरी हालत क़ियामत के दिन होने वाली है उसका बयान फ़रमाया कि बहुत बुरी हालत और बहुत बड़ी ज़िल्लत में उनका हश्र जहन्नम की तरफ़ होगा। ये औंधे मुँह घसीटे जायेंगे, यही बुरे ठिकाने वाले और सबसे बढ़कर गुमराह हैं।

एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि काफ़िरों का हश्र मुँह के बल कैसे होगा? आपने फ़रमाया जिसने उन्हें पैर के बल चलाया है वह सर के बल चलाने पर भी क़ादिर है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ۚ ۝ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۚ ۝ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝	और तहक़ीक़ कि हमने मूसा को किताब (यानी तौरात) दी थी, और हमने उनके साथ उनके भाई हारून को (उनका) मददगार बनाया था। (35) फिर हमने (दोनों को) हुक्म दिया कि दोनों आदमी उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी (तौहीद की) दलीलों को झुठलाया है, सो हमने उनको (अपने क़हर से) बिल्कुल ही ग़ारत कर दिया। (36) और नूह की क़ौम को भी हम हलाक कर चुके हैं, जब उन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमने उनको (तूफ़ान से) ग़र्क़ कर दिया, और हमने उन (के वाक़िए) को लोगों (की इबरत) के लिए एक निशान बना दिया, और (आख़िरत में) हमने उन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। (37) और हमने आद और समूद और रस्स वालों और उनके बीच-बीच में बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर दिया। (38) और हमने हर एक के वास्ते अजीब-अजीब (यानी असरदार) मज़ामीन बयान किए, और (जब न माना तो) हमने सबको बिल्कुल बरबाद ही कर दिया। (39) और ये (मक्का के काफ़िर) उस बस्ती पर होकर गुज़रे हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए। (मुराद लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम की बस्ती है) सो क्या ये लोग उसको देखते नहीं रहते, बल्कि ये लोग मरकर जी उठने का अन्देशा ही नहीं रखते। (यानी आख़िरत के इनकारी हैं)। (40)

Maktab E Ashraf

कुछ और नाफ़रमान व घमंडी क़ौमें

अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों और आपके मुख़ालिफ़ों को अपने अ़ज़ाब से डरा रहा है कि तुमसे पहले जिन लोगों ने मेरे नबियों की न मानी, उनसे दुश्मनी की, उनकी मुख़ालफ़त की, मैंने उन्हें तहस-नहस कर दिया। फ़िरऔनियों का हाल तुम सुन चुके हो कि मूसा और हारून को उनकी तरफ़ नबी बनाकर भेजा लेकिन उन्होंने न माना, जिसके कारण अ़ज़ाबे ख़ुदा आ गया और सब हलाक कर दिये गये। क़ौमे नूह को देखो! उन्होंने भी हमारे रसूल को झुठलाया और चूँकि एक रसूल का झुठलाना तमाम नबियों को झुठलाना है, इस वास्ते यहाँ 'रुसुल' जमा (बहुवचन) करके कहा गया। और यह इस वजह से भी कि अगर मान लो उनकी तरफ़ हमारे बहुत सारे रसूल भी भेजे जाते तो भी ये सब के साथ वही सुलूक करते जो नूह अ़लैहिस्सलाम नबी के साथ किया। यह मतलब नहीं कि उनकी तरफ़ बहुत से रसूल भेजे गये थे, उनके पास सिर्फ़ हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ही आये थे, जो साढ़े नौ सौ साल तक उनमें रहे, हर तरह उन्हें समझाया बुझाया, लेकिन सिवाय चन्द थोड़े से लोगों के कोई ईमान न लाया। इसलिये अल्लाह ने सब को ग़र्क़ कर दिया, सिवाय उनके जो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के साथ कश्ती में थे, एक भी आदमी रू-ए-ज़मीन पर न बचा। लोगों के लिये उनकी हलाकत इबरत व सीख का सबब बना दी गई। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि पानी के उफान के वक़्त हमने तुम्हें कश्ती में सवार कर लिया ताकि तुम इसे अपने लिये सबक़ और नसीहत का ज़रिया बनाओ और कश्ती को हमने तुम्हारे लिये तूफ़ान से निजात पाने और लम्बे-लम्बे सफ़र तय करने का ज़रिया बना दिया, ताकि तुम अल्लाह की इस नेमत को याद रखो कि उसने आ़लमगीर (विश्व-व्यापी) तूफ़ान से तुम्हें बचा लिया और ईमान वालों की औलाद में रखा।

क़ौमे आ़द वालों और क़ौमे समूद वालों का क़िस्सा तो कई बार बयान हो चुका है, जैसा कि सूरः आराफ़ वग़ैरह में "अस्हाबुर्रस्स" के बारे में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि ये भी समूदियों की बस्ती वाले थे। इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि ये फ़लज वाले थे, जिनका ज़िक्र सूरः यासीन में है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह भी मन्क़ूल है कि 'आज़र बायजान' के एक कुएँ के पास उनकी बस्ती थी। इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि उन्हें कुएँ वाले इसलिये कहा जाता है कि उन्होंने अपने पैग़म्बर को कुएँ में डाल दिया था।

इब्ने इस्हाक़ मुहम्मद बिन कअ़ब रह. से नक़ल करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- एक स्याह फ़ाम (काले रंग का) ग़ुलाम सबसे पहले जन्नत में जायेगा, अल्लाह तआ़ला ने एक बस्ती वालों की तरफ़ अपना नबी भेजा था लेकिन उस बस्ती वालों में से सिवाय उसके कोई भी ईमान न लाया, बल्कि उन्होंने अल्लाह के नबी को एक ग़ैर-आबाद कुएँ में वीरान मैदान में डाल दिया और उसके मुँह पर एक बड़ी भारी चट्टान रख दी कि यह वहीं मर जायें। यह ग़ुलाम जंगल में जाता, लकड़ियाँ काटकर लाता, उन्हें बाज़ार में फ़रोख़्त करता और रोटी वग़ैरह ख़रीद कर कुएँ पर आता, उस पत्थर को सरका देता जो कई आदमियों से खिसक न सकता था। लेकिन ख़ुदा तआ़ला उसके हाथों उसे सरका देता। यह एक रस्सी में लटका कर रोटी और पानी उस पैग़म्बर के पास पहुँचा देता जिसे वह खा पी लेते। मुद्दतों यूँ ही होता रहा। एक मर्तबा यह गया, लकड़ियाँ काटीं चुनीं जमा कीं, गठरी बाँधी, इतने में नींद का ग़लबा हुआ सो गया, अल्लाह तआ़ला ने उस पर नींद डाल दी, सात साल तक वह सोता रहा, सात साल के बाद आँख खुली, अंगड़ाई ली और करवट बदलकर फिर सो गया, सात साल के बाद फिर आँख खुली तो उसने अपनी लकड़ियों की गठरी उठाई और शहर की तरफ़ चला। उसे यही ख़्याल था कि ज़रा सी देर के लिये सो गया था। शहर में आकर

लकड़ियाँ फ़रोख़्त कीं, अपनी आदत के मुताबिक़ खाना ख़रीदा और वहीं पहुँचा। देखता है कि कुआँ तो वहाँ है ही नहीं। बहुत ढूँढा लेकिन न मिला। यहाँ यह हुआ था कि क़ौम के दिल ईमान की तरफ़ राग़िब हो (झुक) गये, उन्होंने जाकर अपने नबी को कुएँ से निकाला, सब के सब ईमान लाये, फिर नबी वफ़ात कर गये। नबी भी अपनी ज़िन्दगी में उस हब्शी ग़ुलाम को तलाश करते रहे लेकिन उसका पता न चला। फिर उस नबी के इन्तिक़ाल के बाद यह शख़्स अपनी नींद से जगाया गया। नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि पस यह हब्शी ग़ुलाम है जो सबसे पहले जन्नत में जायेगा। यह रिवायत मुर्सल है और यह ग़रीब व मुन्कर भी है और शायद इसमें रिवायत करने वाले की तरफ़ से कुछ इज़ाफ़ा भी है। वल्लाहु आलम।

इस रिवायत को इन 'अस्हाबे रस्स' (कुएँ वालों) पर चस्पाँ भी नहीं कर सकते इसलिये कि यहाँ तो ज़िक्र हुआ है कि उन्हें हलाक कर दिया गया। हाँ एक तौजीह तो हो सकती है कि ये लोग तो हलाक कर दिये गये फिर उनकी नस्लें ठीक हो गईं और उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ मिली। इमाम इब्ने जरीर रह. का फ़रमान है कि 'अस्हाबे रस्स' वे हैं जिनका ज़िक्र सूरः बुरूज में है, जिन्होंने ख़न्दक़ें खुदवाई थीं। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाया कि इस बीच और भी बहुत सी उम्मतें आईं जो हलाक कर दी गईं। हमने उन सब के सामने अपना कलाम बयान कर दिया था, दलीलें पेश कर दी थीं, मोजिज़े दिखाये थे, उनके उज़्र मिटा दिये थे, फिर सब को ग़ारत और बरबाद कर दिया। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि नूह के बाद की भी बहुत सी बस्तियाँ हमने ग़ारत (हलाक व बरबाद) कर दीं। 'क़र्न' कहते हैं उम्मत को, जैसे फ़रमान है कि उनके बाद हमने बहुत सी क़र्न यानी उम्मतें पैदा कीं। 'क़र्न' की मुद्दत बाज़ के नज़दीक एक सौ बीस साल है। कोई कहता है सौ साल, कोई कहता है अस्सी साल, कोई कहता है चालीस साल। और भी बहुत से क़ौल हैं, ज़्यादा वाज़ेह बात यह है कि एक ज़माने वाले एक क़र्न हैं, जब वे सब मर जायें तो दूसरा क़र्न शुरू होता है, जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सबसे बेहतर ज़माना मेरा ज़माना है।

फिर फ़रमाता है कि सदूम नाम की बस्ती के पास से तो ये अ़रब के लोग बराबर गुज़रते रहते हैं, यहीं लूती आबाद थे, जिन पर ज़मीन उलट दी गई और आसमान से पत्थर बरसाये गये, और बुरी बारिश उन पर बरसाई जो पत्थरों से भरी थी। ये दिन रात वहाँ से आवा-जाही रखते हैं फिर भी अ़क़्लमन्दी को काम में नहीं लाते। ये बस्तियाँ तो तुम्हारे गुज़रने वाले रास्तों में हैं, इनके वाक़िआ़त मशहूर हैं, क्या तुम इन्हें नहीं देखते? यक़ीनन देखते हो लेकिन इब्रत (सबक़ और नसीहत) की आँखें हैं ही नहीं कि समझ सको और ग़ौर करो कि उनकी नालायक़ियों की वजह से वे ख़ुदा के अ़ज़ाब का शिकार हो गये, मिटा दिये गये। इस पर तो वह ग़ौर करे जो क़ियामत का क़ायल (मानने वाला) हो, उन्हें क्या सबक़ और नसीहत हासिल होगी जो क़ियामत के ही इनकारी हैं। दोबारा ज़िन्दा होने ही को मुहाल (नामुम्किन) जानते हैं।

और जब ये लोग आपको देखते हैं तो बस आपसे हँसी करने लगते हैं, (और कहते हैं) कि क्या यही हैं जिनको ख़ुदा तआ़ला ने रसूल बनाकर भेजा है। (41) इस शख़्स ने तो हमको हमारे माबूदों से हटा ही दिया होता अगर हम उन पर (मज़बूती से) क़ायम न रहते। और	وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۖ أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۝ إِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ

Maktab E Ashraf

وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ○ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ○ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ○	(मरने के बाद) जल्दी ही उनको मालूम हो जाएगा जब अ़ज़ाब का मुआ़यना करेंगे कि कौन शख़्स गुमराह था। (42) ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आपने उस शख़्स की हालत भी देखी जिसने अपना ख़ुदा अपनी नफ़्सानी इच्छा को बना रखा है, सो क्या आप उसकी निगरानी कर सकते हैं? (43) या आप ख़्याल करते हैं कि उनमें अक्सर सुनते या समझते हैं, ये तो महज़ चौपायों की तरह हैं (कि वे बात को न सुनते हैं, न समझते हैं) बल्कि ये उनसे भी ज़्यादा बेराह हैं। (44)

ع

कायनात के सरदार से, कायनात के सबसे बुरे इनसान का मज़ाक़

काफ़िर लोग अल्लाह के बरतर व बेहतर पैग़म्बर हज़रत अहमदे मुज्तबा मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखकर हंसी-मज़ाक़ उड़ाते थे, बुराईयाँ करते थे। यही हालत हर ज़माने के काफ़िरों की अपने नबियों के साथ रही, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ.

तुझसे पहले रसूलों का भी मज़ाक़ उड़ाया गया। कहने लगे वह तो कहिये कि हम जमे रहे वरना इस रसूल ने तो हमें बहकाने में कोई कमी न रखी थी। अच्छा इन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि ये कहाँ तक हिदायत पर थे। अ़ज़ाब को देखते ही आँखें खुल जायेंगी। असल यह है कि इन लोगों ने इच्छा-परस्ती शुरू कर रखी है। नफ़्स व शैतान जिस चीज़ को अच्छी ज़ाहिर करता है ये भी उसे अच्छी समझने लगते हैं। भला इनका ज़िम्मेदार तू कैसे ठहर सकता है?

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) में अ़रब की हालत यह थी कि जहाँ किसी सफ़ेद गोल-मोल पत्थर को देखा उसकी पूजा करने लगे। उससे अच्छा कोई नज़र पड़ गया तो उसके सामने झुक गये और पहले को छोड़ दिया। फिर फ़रमाता है ये तो चौपायों (जानवरों) से भी बदतर हैं, न इनके कान हैं न दिल हैं, चौपाये तो ख़ैर क़ुदरती तौर पर आज़ाद हैं लेकिन ये जो इबादत करने के लिये पैदा किये गये थे ये उनसे भी ज़्यादा बहक गये, बल्कि ख़ुदा के सिवा और दूसरों की इबादत करने लगे, और हुज्जत क़ायम होने के बाद, रसूलों के पहुँच चुकने के बाद भी ख़ुदा की तरफ़ नहीं झुकते, उसकी तौहीद और रसूलुल्लाह सल्ल. की रिसालत को नहीं मानते।

Maktaba E Ashraf

اَلَمْ تَرَ اِلٰی رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝	(ऐ मुख़ातब!) क्या तुमने अपने रब (की क़ुदरत) पर नज़र नहीं की, उसने साये को किस तरह (दूर तक) फैलाया है। और अगर वह चाहता तो उसको एक हालत पर ठहराया हुआ रखता। फिर हमने सूरज को उस (साये के लम्बा और कम होने) पर निशानी मुक़र्रर किया। (45) फिर हमने उसको अपनी तरफ़ आहिस्ता-आहिस्ता समेट लिया। (46) और वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दे की चीज़ और नींद को राहत की चीज़ बनाया, और दिन को ज़िन्दा होने का वक़्त बनाया। (47)

आयात व निशानियाँ

अल्लाह तआ़ला के वजूद और उसकी क़ुदरत पर दलीलें बयान हो रही हैं कि विभिन्न, अनेक और एक दूसरे के विपरीत चीज़ों को वह पैदा कर रहा है। साये को वह बढ़ाता है, कहते हैं कि वक़्त सुबह सादिक़ से लेकर सूरज के निकलने तक अगर वह चाहता तो इसे एक ही हालत पर रख देता। जैसे फ़रमान है कि अगर वह रात ही रात रखे तो कोई दिन नहीं कर सकता, और अगर दिन ही दिन रखे तो कोई रात नहीं ला सकता। अगर सूरज न निकलता तो साये का हाल ही मालूम न होता, हर चीज़ अपनी ज़िद (मुख़ालिफ़ और उलट) से पहचानी जाती है। साये के पीछे धूप, धूप के पीछे साया, यह भी क़ुदरत का निज़ाम है। फिर धीरे-धीरे हम उसे यानी साये को या सूरज को अपनी तरफ़ समेट लेते हैं, एक घटता जाता है दूसरा बढ़ता जाता है, और यह इन्क़िलाब (बदलाव) तेज़ी से होता जाता है। कोई जगह सायेदार बाक़ी नहीं रहती सिर्फ़ घरों छप्परों और दरख़्तों के नीचे साया रह जाता है, और उनके भी ऊपर धूप खिली हुई होती है। आहिस्ता आहिस्ता थोड़ा थोड़ा करके हम उसे अपनी तरफ़ समेट लेते हैं।

उसी ने रात को तुम्हारे लिये लिबास बनाया है कि वह तुम्हारे वजूद पर छा जाती है और उसे ढाँप लेती है। जैसे फ़रमान है- क़सम है रात की जबकि वह ढाँप ले। उसी ने नींद को राहत व सुकून का सबब बनाया है कि उस वक़्त हरकत रुक जाती है। फिर दिन भर के काम-काज से जो थकन चढ़ गई थी वह उस आराम से उतर जाती है, बदन और रूह को राहत हासिल हो जाती है। फिर दिन को उठ खड़े होते हो, फैल जाते हो और रोज़ी की तलाश में लग जाते हो, जैसे फ़रमान है कि उसने अपनी रहमत से रात दिन को मुक़र्रर कर दिया है ताकि तुम सुकून व आराम भी हासिल कर लो और अपनी रोज़ियाँ भी तलाश कर लो।

وَهُوَ الَّذِیْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَیْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً	और वह ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वे (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिल को) ख़ुश कर देती हैं, और हम आसमान से पानी बरसाते हैं

जो पाक-साफ़ करने की चीज़ है। (48) ताकि उसके ज़रिये से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें, और अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत-से चार पैरों वाले और बहुत-से आदमियों को सैराब कर दें। (49) और हम उस (पानी) को (मस्लेहत के मुताबिक़) उन लोगों के दरमियान तक़सीम कर देते हैं, ताकि लोग ग़ौर करें। सो (चाहिए था कि ग़ौर करके उसका हक़ अदा करते, लेकिन) अक्सर लोग बग़ैर नाशुक्री किए न रहे। (50)	طَهُوْرًا ۝ لِّنُحْیِیَ بِهٖ بَلْدَةً مَّیْتًا وَّنُسْقِیَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِیَّ كَثِیْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَیْنَهُمْ لِیَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤی اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝

ये निशानियाँ

अल्लाह तआ़ला अपनी एक और क़ुदरत बयान फ़रमा रहा है कि वह बारिश से पहले बारिश की खुशख़बरी देने वाली हवायें चलाता है। उन हवाओं में रब ने बहुत से ख़्वास (विशेषतायें) रखे हैं, बाज़ बादलों को बिखेर देती हैं, बाज़ उससे पहले ज़मीन को तैयार कर देती हैं, बाज़ बादलों को पानी से भर देती और उन्हें बोझल कर देती हैं। आसमान से हम पाक-साफ़ पानी बरसाते हैं कि वह पाकीज़गी का ज़रिया बने।

हज़रत साबित बनानी रह. का बयान है कि मैं हज़रत अबुल-आ़लिया रह. के साथ बारिश के ज़माने में निकला। बसरा के रास्ते उस वक़्त बड़े गन्दे हो रहे थे, आपने ऐसे रास्ते पर नमाज़ अदा की। मैंने आपको तवज्जोह दिलाई तो आपने फ़रमाया इसे आसमान के पाक पानी ने पाक कर दिया। ख़ुदा फ़रमाता है कि हम आसमान से पाक पानी बरसाते हैं। हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा ने इसे पाक उतारा है, इसे कोई चीज़ नापाक नहीं करती। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा गया कि "बीरे बुज़ाआ" से वुज़ू कर लें? यह एक कुँआ है जिसमें गन्दगी और कुत्तों के गोश्त फेंके जाते हैं। आपने फ़रमाया पानी पाक है इसे कोई चीज़ नापाक नहीं करती। इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद ने इसे ज़िक्र किया है। इमाम अबू दाऊद और इमाम तिर्मिज़ी ने इसे सही कहा है। नसाई शरीफ़ में भी यह रिवायत है।

अ़ब्दुल-मलिक बिन मरवान के दरबार में एक मर्तबा पानी का ज़िक्र छिड़ा तो ख़ालिद बिन यज़ीद ने कहा- कुछ पानी आसमान के होते हैं और बाज़ पानी वह होता है जिसे बादल समुद्र से पीता है और उसे गरज कड़क और बिजली मीठा कर देती है, लेकिन उससे ज़मीन में पैदावार नहीं होती, हाँ आसमानी पानी से पैदावार उगती है। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि आसमान के पानी के हर क़तरे से चारा घास वग़ैरह पैदा होता है, या समुद्र में लुअ्लुअ् या मोती पैदा होते हैं:

فِی الْبَرِّ بُرٌّ وَّفِی الْبَحْرِ دُرٌّ.

यानी ज़मीन में गेहूँ और समुद्र में मोती।

फिर फ़रमाया कि इसी से हम ग़ैर-आबाद, बंजर ज़मीन को ज़िन्दा कर देते हैं, वह लहलहाने लगती

Maktab E Ashraf

और तरोताज़ा हो जाती है, जैसे फ़रमान है:

فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا ٱلْمَآءَ ٱهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ....الخ

और जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है......। (सूरः हा-मीम सज्दा आयत 39)

मुर्दा ज़मीन के ज़िन्दा हो जाने के अलावा यह पानी हैवानों और इनसानों के पीने में भी आता है, उनके खेतों और बाग़ात को पिलाया जाता है, जैसे फ़रमान है कि ख़ुदा वही है जो लोगों की ना-उम्मीदी के बाद उन पर बारिशें बरसाता है। एक और आयत में है कि ख़ुदा की रहमत की निशानियाँ देखो कि किस तरह मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है। फिर फ़रमाता है कि साथ ही मेरी क़ुदरत का एक नज़ारा यह भी देखो कि बादल उठता है, गरजता है लेकिन जहाँ मैं चाहता हूँ बरसता है। इसमें भी हिक्मत व हुज्जत है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि कोई साल किसी साल से कम-ज़्यादा बारिश का नहीं लेकिन अल्लाह जहाँ चाहे बरसाये, जहाँ चाहे न बरसाये। पस चाहिये था कि इन निशानात को देखकर ख़ुदा की इन ज़बरदस्त हिक्मतों और क़ुदरतों को सामने रखकर इस बात को भी मान लेते कि बेशक हम दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे, और यह भी जान लेते कि बारिशें हमारे गुनाहों की शामत से बन्द कर ली जाती हैं, तो हम गुनाह छोड़ दें। लेकिन इन लोगों ने ऐसा नहीं किया बल्कि हमारी नेमतों पर और नाशुक्री की। एक मुर्सल हदीस इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से कहा कि मैं बादल के बारे में कुछ पूछना चाहता हूँ। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया बादलों पर जो फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं वे ये हैं, आप इनसे जो चाहें मालूम फ़रमा लें। उसने कहा या रसूलल्लाह! हमारे पास तो ख़ुदा का हुक्म आता है कि फ़ुलाँ-फ़ुलाँ शहर में इतने-इतने क़तरे बरसाओ, हम अल्लाह के हुक्म का पालन करते हैं।

बारिश जैसी नेमत के वक़्त अक्सर लोगों के कुफ़्र का एक तरीक़ा यह भी है कि वे कहते हैं- हम पर फ़ुलाँ-फ़ुलाँ सितारे की वजह से बारिश बरसाई गई है। चुनाँचे सही हदीस में है कि एक मर्तबा बारिश बरसने के बाद रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- लोगो! जानते हो तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया? उन्होंने कहा अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानने वाला है। आपने फ़रमाया सुनो! अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मेरे बन्दों में से बहुत से मोमिन हो गये और बहुत से काफ़िर हो गये, जिन्होंने कहा कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से यह बारिश हम पर बरसी है, वे तो मेरे साथ ईमान रखने वाले और सितारों के असरात का इनकार करने वाले हुए, और जिन्होंने कहा कि हम पर फ़ुलाँ-फ़ुलाँ सितारे के असर से पानी बरसाया गया है वे काफ़िर और सितारों पर ईमान लाने वाले हुए।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِى كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيرًا ۝ فَلَا تُطِعِ ٱلْكَٰفِرِينَ وَجَٰهِدْهُم بِهِۦ جِهَادًا كَبِيرًا ۝ وَهُوَ ٱلَّذِى مَرَجَ ٱلْبَحْرَيْنِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ	और अगर हम चाहते तो (आपके अ़लावा इसी ज़माने में) हर बस्ती में एक पैग़म्बर भेज देते। (51) सो (इस नेमत के शुक्रिये में) आप काफ़िरों की ख़ुशी का काम न कीजिए और क़ुरआन से उनका ज़ोर से मुक़ाबला कीजिए। (52) (आगे फिर तौहीद का बयान है) और वह ऐसा है जिसने दो दरियाओं को सूरत के एतिबार से मिला दिया जिनमें एक (का पानी)

Maktab E Ashraf

بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۭ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ۝	तो मीठा सुकून-बख़्श है और एक (का पानी) खारा कड़वा है। और उनके दरमियान में (अपनी क़ुदरत से) एक पर्दा और एक मज़बूत रोक रख दी। (53) और वह ऐसा है जिसने पानी से (यानी नुत्फ़े से) आदमी को पैदा किया, फिर उसको ख़ानदान वाला और ससुराल वाला बनाया। और (ऐ मुख़ातब!) तेरा रब बड़ी क़ुदरत वाला है। (54)

अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है

अगर रब चाहता तो हर-हर बस्ती में एक-एक नबी भेज देता, लेकिन उसने तमाम दुनिया की तरफ़ सिर्फ़ एक ही नबी भेजा है, और फिर उसे हुक्म दे दिया है कि इस क़ुरआन का वअ़ज़ (नसीहत और पैग़ाम) सब को सुना दे। जैसा कि फ़रमान है कि मैं इस क़ुरआन से तुम्हें और जिस-जिसको यह पहुँचे होशियार कर दूँ। और उन तमाम जमाअ़तों में से जो भी इससे कुफ़्र करे उसके वायदे की जगह जहन्नम है। एक और फ़रमान है कि तू मक्के वालों को और हर तरफ़ के लोगों को आगाह कर दे। एक और आयत में है कि ऐ नबी! आप कह दीजिये कि ऐ तमाम लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल बनकर आया हूँ। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि मैं सुर्ख़ व स्याह सब की तरफ़ भेजा गया हूँ। बुख़ारी व मुस्लिम की एक और हदीस में है कि तमाम अम्बिया अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे जाते रहे और मैं आ़म लोगों की तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूँ। फिर फ़रमाया कि काफ़िरों का कहना न मानना और इस क़ुरआन के साथ उनसे बहुत बड़ा जिहाद करना। जैसे कि इरशाद है:

يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ.......... الخ

यानी ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करते रहो (जिहाद सिर्फ़ तलवार ही से नहीं होता बल्कि सही रास्ता दिखाने और नसीहत व वअ़ज़ की लगातार कोशिश व मेहनत भी जिहाद है)।

उसी रब ने पानी को दो तरह का बनाया है मीठा और खारा। नहरों चश्मों और कुओं का पानी उमूमन मीठा, साफ़ और अच्छे ज़ायक़े का होता है। बाज़ ठहरे हुए समुद्रों का पानी खारा और बुरे ज़ायक़े का होता है। अल्लाह तआ़ला की इस नेमत पर भी शुक्र करना चाहिये कि उसने मीठे पानी की हर तरफ़ रेल-पेल कर दी कि लोगों को नहाने धोने और अपने खेत और बाग़ात को पानी देने में आसानी रहे। पूरब व पश्चिम को घेरने वाले समुद्र खारी पानी के उसने बहा दिये जो ठहरे हुए हैं, इधर उधर बहते नहीं, लेकिन मौजें मार रहे हैं, उफान पर हैं, बाज़ में उतार-चढ़ाव है। हर महीने की शुरू की तारीख़ों में तो उनमें ज़्यादती और बहाव होता है, फिर चाँद के घटने के साथ वह घटता जाता है, यहाँ तक कि आख़िर में अपनी हालत पर आ जाता है। फिर जहाँ चाँद चढ़ा यह भी चढ़ने लगा, चौदह तारीख़ तक बराबर चाँद के साथ चढ़ता रहा, फिर उतरना शुरू हुआ। इन तमाम समुद्रों को उसी ख़ुदा ने पैदा किया है, वह ज़बरदस्त क़ुदरत वाला है। खारा और गर्म पानी अगरचे पीने के काम नहीं आता लेकिन हवाओं को साफ़ कर देता है, जिससे इनसानी ज़िन्दगी हलाकत में न पड़े, उसमें जानवर मर जाते हैं, उनकी बदबू दुनिया वालों को नहीं सता सकती। खारे

Maktab E Ashraf

पानी के सबब उसकी हवा सेहत के लिये मुफ़ीद और उसका ज़ायक़ा पाक तैयब होता है। नबी करीम सल्ल. से जब समुद्र के पानी के बारे में सवाल हुआ कि क्या हम उससे वुज़ू कर लें? तो आपने फ़रमाया उसका पानी पाक है और उसका मुर्दा हलाल है। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई और अहले सुनन रह. ने इसे रिवायत किया है और इसकी सनद भी सही है। फिर उसकी इस क़ुदरत को देखो कि महज़ अपनी ताक़त और अपने हुक्म से एक को दूसरे से अलग कर रखा है, न खारा मीठे में मिल सके न मीठा खारे में मिल सके, जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ٥ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ........ الخ.

उसने दोनों समुद्र जारी कर दिये कि दोनों मिल जायें और उन दोनों के बीच एक हिजाब (आड़ और पर्दा) क़ायम कर दिया है कि हद से न बढ़ें। फिर तुम अपने रब की किस-किस नेमत का इनकार करते हो?

एक और आयत में है कि कौन है वह जिसने ज़मीन को रहने के लायक़ (यानी ठिकाना) बनाया और इसमें जगह-जगह दरिया जारी कर दिये, इस पर पहाड़ क़ायम कर दिये और दो समुद्रों के बीच ओट (एक आड़) कर दी, क्या अल्लाह के साथ और कोई माबूद है? बात यह है कि इन मुश्रिकों के अक्सर लोग बेइल्म (ज्ञान से ख़ाली) हैं। उसने इनसान को मामूली और बेहैसियत नुत्फ़े (वीर्य की बूँद) से पैदा किया है, फिर इसे ठीक-ठाक और बराबर बनाया है और अच्छी पैदाईश में पैदा करके फिर इसे मर्द या औरत बनाया। फिर इसके लिये नसब (ख़ानदान और नस्ल) के रिश्तेदार बना दिये, फिर कुछ मुद्दत बाद ससुराली रिश्ते क़ायम कर दिये, इतने बड़े ख़ुदा-ए-क़ादिर की क़ुदरतें तुम्हारे सामने हैं।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۭ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ٥ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ٥ قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ٥ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۭ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ٥ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

और (बावजूद इसके) ये (मुश्रिक) लोग (ऐसे) ख़ुदा को छोड़कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको कुछ नफ़ा पहुँचा सकती हैं और न उनको कुछ नुक़सान पहुँचा सकती हैं, और काफ़िर तो अपने रब का मुख़ालिफ़ है। (55) और हमने आपको सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि (मोमिनों को जन्नत की) ख़ुशख़बरी सुनाएँ, और (काफ़िरों को दोज़ख़ से) डराएँ। (56) आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कोई मुआवज़ा नहीं माँगता, हाँ जो शख़्स यूँ चाहे कि अपने रब तक (पहुँचने का) रास्ता इख़्तियार कर ले। (57) और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा रखिए (और इत्मीनान के साथ) उसकी तस्बीह व तारीफ़ बयान करने में लगे रहिए, और वह (ख़ुदा) अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी (तौर पर) ख़बरदार है। (58) वह ऐसा है जिसने आसमान व ज़मीन और जो कुछ

Maktaba Ashraf

اِسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۝ السجدة	उनके दरमियान में है सब छह दिन (की मिक़दार) में पैदा किया, फिर (शाही) तख़्त पर क़ायम हुआ, वह बड़ा मेहरबान है, सो उसकी शान किसी जानने वाले से पूछना चाहिए। (काफ़िर क्या जानें)। (59) और जब उन (काफ़िरों) से कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो (जहालत व बैर की वजह से) कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है? क्या हम उसको सज्दा करने लगेंगे जिसको तुम सज्दा करने के लिए हमको कहोगे? और उससे उनको और ज़्यादा नफ़रत होती है। (60) ❁ (सज्दा)

❁ सज्दा नम्बर - 7

काफ़िरों की बेवक़ूफ़ी और जहालत

मुश्रिकों की जहालत बयान हो रही है कि वे बुत-परस्ती (मूर्ती-पूजन) करते हैं और बिना दलील व हुज्जत उनकी पूजा करते हैं, जो न नफ़े के मालिक हैं न नुक़सान के। सिर्फ़ बाप-दादों की देखा-देखी नफ़्सानी इच्छाओं से उनकी मुहब्बत व अ़ज़मत (सम्मान व इ़ज़्ज़त) दिल में जमाये हुए हैं और ख़ुदा व रसूल से दुश्मनी और मुख़ालफ़त रखते हैं। शैतानी लश्कर में हो गये हैं और मोमिनों के मुख़ालिफ़ हो गये हैं। लेकिन याद रखें कि अन्जामकार (अन्ततः) ग़लबा अल्लाह वालों को ही होगा। ये इस उम्मीद में हैं कि उनके ये झूठे माबूद इनकी इमदाद करेंगे, हालाँकि यह बिल्कुल ग़लत है, ये ख़्वाह-म-ख़्वाह उनकी तरफ़ से अड़े हुए हैं, अच्छा अन्जाम और भलाई मोमिनों ही का है। दुनिया व आख़िरत में उनका परवर्दिगार उनकी मदद करेगा। इन काफ़िरों को तो शैतान सिर्फ़ ख़ुदा की मुख़ालफ़त पर उभार देता है और कुछ नहीं, सच्चे ख़ुदा की अ़दावत (नफ़रत व दुश्मनी) उनके दिल में डाल देता है, शिर्क की मुहब्बत बैठा देता है, ये ख़ुदाई अहकाम से पीठ फेर लेते हैं।

फिर अल्लाह तआ़ला अपने रसूल सल्ल. से ख़िताब करके फ़रमाता है कि हमने तुम्हें मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और काफ़िरों (जो अल्लाह का इनकार करें उन) को डराने वाला बनाकर भेजा है। मानने वालों (यानी ईमान लाने वालों और नेक काम करने वालों) को जन्नत की ख़ुशख़बरी दीजिये और नाफ़रमानों को जहन्नम के अ़ज़ाबों से मुत्तला (अवगत) फ़रमा दीजिये। लोगों में आ़म तौर पर ऐलान कर दीजिये कि मैं अपनी तब्लीग़ का बदला, अपने वअ़ज़ (दीनी नसीहत) का मुआ़वज़ा तुमसे नहीं चाहता, मेरा इरादा इससे सिवाय ख़ुदा की रज़ामन्दी की तलाश के और कुछ नहीं। मैं सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि तुम में से जो सही रास्ते पर आना चाहे उसके सामने सही रास्ता ज़ाहिर कर दूँ और खोल दूँ।

ऐ पैग़म्बर! आप अपने तमाम कामों में उस ख़ुदा पर भरोसा रखिये जो हमेशगी और दवाम वाला है, जो मरने और फ़ना होने से पाक है, जो अव्वल व आख़िर, ज़ाहिर व बातिन और हर चीज़ का जानने वाला है, जो हमेशा बाक़ी रहने वाला, ज़िन्दा और सबको थामने वाला है। वह हर चीज़ का मालिक और रब है, उसको अपना मददगार व पनाह की जगह ठहराईये, उसी की ज़ात ऐसी है कि उस पर तवक्कुल (भरोसा)

Maktab E Ashraf

किया जाये, हर घबराहट में उसी की तरफ़ झुका जाये। वह काफ़ी है, वही मददगार है, वही कामयाबी देने वाला और ताईद करने वाला है। जैसे फ़रमान है:

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ........ الخ

ऐ नबी! जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रब की तरफ़ से उतारा गया है उसे पहुँचा दीजिये। अगर आपने यह न किया तो आपने रिसालत (अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने) का हक़ अदा नहीं किया। आप बेफ़िक्र रहिये, ख़ुदा आपको लोगों के बुरे इरादे से बचा लेगा।

एक मुर्सल हदीस में है कि मदीने की किसी गली में हज़रत सलमान रज़ि. रसूलुल्लाह सल्ल. को सज्दा करने लगे तो आपने फ़रमाया ऐ सलमान! मुझे सज्दा न कर, सज्दे के लायक़ वह है जो हमेशा की ज़िन्दगी वाला है, जिस पर कभी मौत नहीं। (इब्ने अबी हातिम) और उसी की पाकी व तारीफ़ बयान करता रह। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. इसकी तामील में फ़रमाया करते थे-

"सुब्हानकल्लाहुम्-म रब्बुना व बि-हम्दि-क"

मुराद इससे यह है कि इबादत अल्लाह ही की कर, तवक्कुल और भरोसा सिर्फ़ उसी की ज़ात पर कर। जैसे फ़रमान है कि पूरब व पश्चिम का रब वही है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। तू उसी को अपना कारसाज़ समझ। एक और जगह इरशाद फ़रमायाः

فَاعْبُدْ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ.

उसी की इबादत कर, उसी पर भरोसा रख।

एक और आयत में है- ऐलान कर दे कि उसी रहमान के हम बन्दे हैं और उसी पर हमारा कामिल भरोसा है। उस पर बन्दों के सब अ़मल ज़ाहिर हैं, कोई ज़र्रा उससे पोशीदा नहीं, कोई भेद की बात भी उससे छुपी नहीं। वही तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ व मालिक और क़ाबिज़ है। वही हर जानदार को रोज़ी देने वाला है, उसने अपनी क़ुदरत व बड़ाई से आसमान व ज़मीन जैसी ज़बरदस्त मख़्लूक़ को सिर्फ़ छह दिन में पैदा कर दिया है। फिर (अपनी शान के मुताबिक़) अ़र्श पर क़ायम हुआ। कामों की तदबीरों का अन्जाम उसी की तरफ़ से और उसी के हुक्म और तदबीर से है। उसका फ़ैसला सच्चा और अच्छा होता है। जो अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात का इल्म रखता हो तो उससे उसकी शान के बारे में मालूम करे। यह ज़ाहिर है कि ख़ुदा की ज़ात की पूरी ख़बर रखने वाले, उसकी ज़ात से पूरे वाक़िफ़ नबी करीम सल्ल. ही थे, जो दुनिया और आख़िरत में तमाम इनसानों के सरदार थे, जो एक बात भी अपनी तरफ़ से नहीं कहते थे बल्कि जो फ़रमाते थे वह अल्लाह का फ़रमान ही होता था। आपने जो-जो सिफ़तें ख़ुदा की बयान की हैं सब हक़ हैं। आपने जो ख़बरें दीं सब सच हैं। इमाम आप ही हैं। तमाम झगड़ों का फ़ैसला आप ही के हुक्म से किया जा सकता है, जो आपकी बात बतलाये वह सच्चा जो आपके ख़िलाफ़ कहे वह मर्दूद (रद्द किये जाने के लायक़) चाहे कोई भी हो। अल्लाह तआ़ला स्पष्ट लफ़्ज़ों में इरशाद फ़रमा चुकाः

فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ........ الخ

तुम अगर किसी चीज़ में झगड़ो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ लौटाओ।

एक और जगह फ़रमान हैः

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ.

Mahtab E Ashraf

तुम जिस चीज़ में भी इख़्तिलाफ़ (झगड़े और मतभेद) करो, उसका फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ है। एक और जगह फ़रमान है:

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا .... الخ

तेरे रब की बातें जो ख़बरों में सच्ची और हुक्म व मनाही में अ़दल की (इन्साफ़ पर आधारित) हैं, पूरी हो चुकीं।

यह भी मन्क़ूल है कि इससे क़ुरआन मुराद है। मुश्रिक लोग अल्लाह तआ़ला के सिवा औरों को सज्दे करते थे, उनसे जब रहमान को सज्दा करने को कहा जाता था तो कहते थे कि हम रहमान को नहीं जानते, वे इससे मुन्किर थे कि ख़ुदा का नाम रहमान है। जैसे हुदैबिया वाले साल हुज़ूर सल्ल. ने सुलह-नामे के कातिब (लिखने वाले) से फ़रमाया- बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखो, तो मुश्रिकों ने कहा न हम रहमान को जानें न रहीम को, हमारे रिवाज के मुताबिक़ "बिस्मिकल्लाहुम्-म" लिख। इसके जवाब में यह आयत उतरी:

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِادْعُوا الرَّحْمٰنَ.......... الخ

कह दे कि अल्लाह को पुकारो या रहमान को, जिस नाम से उसे चाहो पुकारो, उसके बहुत से बेहतरीन नाम हैं। वही अल्लाह है वही रहमान है।

पस मुश्रिक लोग कहते थे कि क्या सिर्फ़ तेरे कहने से हम ऐसा कर लें? ग़र्ज़ यह कि वे नफ़रत में और ज़्यादा बढ़ गये। इसके विपरीत मुसलमानों का यह हाल है कि वे अल्लाह की इबादत करते हैं, जो रहमान व रहीम है, उसी को इबादत के लायक़ समझते हैं और उसी के लिये सज्दे करते हैं। उलेमा रह. का इत्तिफ़ाक़ है कि सूरः फ़ुरक़ान की इस आयत के पढ़ने और सुनने वाले पर सज्दा मशरू (लाज़िमी और वाजिब) है, जैसे कि इसकी जगह इसकी तफ़सील मौजूद है। वल्लाहु आलम

वह ज़ात बहुत आलीशान है। जिसने आसमान में बड़े-बड़े सितारे बनाए और इस (आसमान) में एक चिराग़ (यानी सूरज) और नूरानी चाँद बनाया। (61) और वह ऐसा है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने-जाने वाले बनाए, (और ये तमाम दलीलें) उस शख़्स के लिए हैं जो समझना चाहे या शुक्र करना चाहे। (62)	تَبٰرَكَ الَّذِىْ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ○ وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا○

रोशन सूरज और चमकता हुआ चाँद

अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत (बड़ाई), क़ुदरत व बुलन्दी को देखो कि उसने आसमान में बुरूज (सितारों के स्थान) बनाये। इससे मुराद या तो बड़े-बड़े सितारे हैं या चौकीदारी के बुरुज हैं। पहला क़ौल ज़्यादा स्पष्ट है और हो सकता है कि बड़े-बड़े सितारों से मुराद भी यही बुरुज हों। एक दूसरी आयत में है कि दुनिया वाले आसमान को हमने सितारों के साथ सजाया। 'सिराज' से मुराद सूरज है जो चमकता रहता है और एक चिराग़ की तरह है। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا.

और हमने रोशन चिराग़ यानी सूरज बनाया। और चाँद बनाया जो मुनव्वर और रोशन है दूसरे नूर से जो सूरज के अलावा है।

जैसे फ़रमान है कि उसने सूरज को रोशन बनाया और चाँद को नूर बनाया। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया थाः

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا........ الخ

क्या तुम देख नहीं रहे कि ख़ुदा तआ़ला ने ऊपर-नीचे सात आसमान पैदा किये और उनमें चाँद को नूर बनाया और सूरज को चिराग़ बनाया। दिन रात एक दूसरे के पीछे आने-जाने वाले हैं।

उसकी क़ुदरत का निज़ाम है, यह जाता है वह आता है। इसका जाना उसका आना है। जैसे फ़रमान है कि उसने तुम्हारे लिये सूरज चाँद को एक दूसरे के पीछे आने-जाने वाले बनाये हैं। एक और जगह है कि रात दिन को ढाँप लेती है और जल्दी-जल्दी उसे तलब करती आती है, न सूरज चाँद से आगे बढ़ सके न रात दिन से आगे निकल सके। इसी से उसकी इबादतों के वक़्त उसके बन्दों को मालूम होते हैं। रात का छूटा हुआ अ़मल दिन में पूरा कर लें और दिन का रह गया अ़मल रात को अदा कर लें। सही हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला रात को अपने हाथ फैलाता है ताकि रात का गुनाहगार तौबा कर ले। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने एक दिन जुमा की नमाज़ में बड़ी देर लगा दी, सवाल पर फ़रमाया कि रात का मेरा वज़ीफ़ा कुछ बाक़ी रह गया था तो मैंने चाहा कि उसे पूरा या उसकी क़ज़ा कर लूँ फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। 'ख़िल्फ़तन्' का एक मतलब यह भी है कि एक दूसरे से अलग और विपरीत, यानी दिन रोशन रात अंधेरी, उसमें उजाला इसमें अंधेरा, यह नूरानी वह अंधकार से भरी।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ○ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ○ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ○ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ○ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ○	और (हज़रते) रहमान के (ख़ास) बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर आ़जिज़ी के साथ चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे (जहालत की बात करते हैं) तो वे बुराई को दफ़ा करने की बात कहते हैं। (63) और जो रातों को अपने रब के आगे सज्दे और क़ियाम (यानी नमाज़) में लगे रहते हैं। (64) और जो दुआ़एँ माँगते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमसे जहन्नम को दूर रखिए क्योंकि उसका अ़ज़ाब पूरी तबाही है। (65) बेशक वह जहन्नम बुरा ठिकाना और बुरा मक़ाम है। (66) (यह तो उनकी जिस्मानी इबादतों की हालत है) और (माली इबादतों में उनका यह तरीक़ा है कि) वे जब ख़र्च करने लगते हैं तो न फ़ुज़ूल-ख़र्ची करते हैं और न तंगी करते हैं, और उनका ख़र्च करना इस (कमी-बेशी) के दरमियान एतिदाल (दरमियानी राह) पर होता है। (67)

Maktab E Ashraf

अल्लाह के नेक बन्दे

अल्लाह के मोमिन बन्दों की सिफ़ात बयान हो रही हैं कि वे ज़मीन पर सुकून व वक़ार के साथ, तवाज़ो व आजिज़ी, मिस्कीनी और विनम्रता से चलते फिरते हैं। घमंड, अकड़, फ़साद और ज़ुल्म व सितम नहीं करते। जैसे हज़रत लुक़मान रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने लड़के से फ़रमाया था कि अकड़ कर न चला कर, यह मतलब हरगिज़ नहीं कि बनावट से कमर झुका कर बीमारों की तरह क़दम-क़दम चलना, यह तो रियाकारों का काम है कि वे खुद को लोगों को दिखाने के लिये और दुनिया की निगाहें अपनी तरफ़ आकर्षित करने के लिये ऐसा करते हैं। नबी करीम सल्ल. की आ़दत इसके बिल्कुल उलट थी, आपकी चाल ऐसी थी कि गोया आप किसी ऊँचाई से उतर रहे हैं, और गोया कि ज़मीन आपके लिये लपेटी जा रही है।

पहले के बुज़ुर्गों ने बीमारों की तकलीफ़ वाली चाल को मक्रूह फ़रमाया है। फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने एक नौजवान को देखा कि वह आहिस्ता-आहिस्ता चल रहा है, आपने उससे मालूम किया कि क्या तू कुछ बीमार है? उसने कहा नहीं, आपने फ़रमाया फिर यह क्या चाल है? ख़बरदार अब इस तरह चला तो कोड़े खायेगा। ताक़त के साथ जल्दी-जल्दी चला करो। पस यहाँ मुराद तस्कीन और वक़ार के साथ शरीफ़ाना चलना है, न कि कमज़ोरों और बीमारों की तरह। चुनाँचे एक हदीस में है कि जब नमाज़ के लिये आओ तो दौड़कर न आओ बल्कि वक़ार के साथ आओ, जो जमाअ़त के साथ मिल जाये अदा कर लो और जो निकल जाये उसे पूरी कर लो।

इमाम हसन बसरी रह. ने इस आयत की तफ़सीर में बहुत ही उम्दा बात इरशाद फ़रमाई है कि मोमिनों की आँखें, उनके कान और उनके बदन के अंग झुके हुए और रुके हुए रहते हैं, यहाँ तक कि बेवक़ूफ़ लोग उन्हें बीमार समझ लेते हैं। हालाँकि वे बीमार नहीं होते बल्कि अल्लाह के ख़ौफ़ से झुके जाते हैं। वैसे पूरे तन्दुरुस्त हैं लेकिन दिल खुदा के ख़ौफ़ से भरे हैं। आख़िरत का इल्म दुनिया जमा करने और यहाँ के ठाठ से उन्हें रोके हुए है। ये क़ियामत के दिन कहेंगे कि खुदा का शुक्र है जिसने हम से ग़म को दूर कर दिया। इससे कोई यह न समझ ले कि उन्हें दुनिया में खाने-पीने वग़ैरह का ग़म लगा रहता था, नहीं! नहीं! खुदा की क़सम दुनिया का कोई ग़म उनके पास भी नहीं फटकता था। हाँ उन्हें आख़िरत का खटका हर वक़्त लगा रहता था, जन्नत के लिये किसी काम को वे भारी नहीं जानते थे, हाँ जहन्नम का ख़ौफ़ उन्हें रुलाता रहता था। जो शख़्स खुदा के ख़ौफ़ दिलाने से भी ख़ौफ़ न खाये उसका नफ़्स हसरतों का मालिक है। जो शख़्स खाने पीने को ही खुदा की नेमत समझे वह कम-इल्म और अ़ज़ाब में फंसा हुआ है।

फिर अपने नेक बन्दों का एक और वस्फ़ बयान फ़रमाया कि जब जाहिल लोग उनसे जहालत की बातें करते हैं तो ये भी उनकी तरह जहालत पर नहीं उतर आते बल्कि नज़र-अन्दाज़ करते और किनारा कर लेते हैं, माफ़ फ़रमा देते हैं और सिवाय भली बात के गन्दी बातों से अपनी ज़बान ख़राब नहीं करते। जैसे कि रसूलुल्लाह सल्ल. की आ़दते मुबारक थी कि जैसे-जैसे दूसरा शख़्स आप पर तेज़ होता आप उतने ही नर्म होते, यही वस्फ़ (ख़ूबी और कमाल) क़ुरआने करीम की इस आयत में बयान हुआ है:

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ.

कि मोमिन लोग बेहूदा बातें सुनकर मुँह फेर लेते हैं।

एक हदीस हसन सनद से मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. के सामने किसी शख़्स ने दूसरे को

Maktab-E-Ashraf

बुरा-भला कहा लेकिन उसने पलट कर जवाब दिया कि तुझ पर सलाम हो। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया तुम दोनों के बीच फ़रिश्ता मौजूद था, वह तेरी तरफ़ से गालियाँ देने वाले को जवाब देता था, वह जो गाली देता था फ़रिश्ता कहता था यह नहीं बल्कि तू। और जब तू कहता था तुझ पर सलाम तो फ़रिश्ता कहता था इस पर नहीं तुझ पर। तू ही सलामती का पूरा हक़दार है। पस फ़रमान है कि ये अपनी ज़बान को गन्दी नहीं करते, बुरा कहने वालों को बुरा नहीं कहते, सिवाय भले कलिमे के ज़बान से और कोई लफ़्ज़ नहीं निकालते। इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि दूसरा इन पर ज़ुल्म करे तो ये सुलह और बरदाश्त करते हैं। दिनों को अल्लाह के बन्दों के साथ इस तरह गुज़ारते हैं कि उनकी कड़वी-कसीली सुन लेते हैं और रात को इस हालत में गुज़ारते हैं कि उसका बयान अगली आयत में है। फ़रमाता है कि रात ख़ुदा की इबादत और उसकी इताअ़त में बसर होती है। बहुत कम सोते हैं, सुबह को इस्तिग़फ़ार करते हैं, करवटें बिस्तरों से अलग रहती हैं। दिनों में अल्लाह का ख़ौफ़ होता है, रहमत की उम्मीद होती है, और रातों की घड़ियों को ख़ुदा की इबादतों में गुज़ारते हैं। दुआ़यें माँगते हैं कि ख़ुदाया अ़ज़ाबे जहन्नम हम से दूर रख, वह तो हमेशा का और लाज़िमी अ़ज़ाब है। जैसे कि एक शायर ने अल्लाह की शान बताई है:

اِنْ يُّعَذِّبْ يَكُنْ غَرَامًا وَاِنْ يُّعْطِ ☆ جَزِيْلًا فَاِنَّهٗ لَا يُبَالِيْ

यानी उसके अ़ज़ाब भी सख़्त और लाज़िमी और हमेशा वाले, और उसकी अ़ता और इनाम भी बेहद अनगिनत और बेहिसाब।

जो चीज़ आये और हट जाये वह ग़राम नहीं। ग़राम वह है जो आने के बाद हटने और दूर होने का नाम ही न ले। यह मायने भी किये गये हैं कि अ़ज़ाबे जहन्नम तावान (जुर्माना) है जो नेमत के नाशुक्रों और काफ़िरों से लिया जायेगा। उन्होंने ख़ुदा के दिये को उसकी राह में नहीं लगाया, लिहाज़ा आज उसका तावान यह भरना पड़ेगा कि जहन्नम को भर दें। वह बुरी जगह है, बुरा मन्ज़र है, तकलीफ़ देने वाली और मुसीबतों से भरी है। हज़रत मालिक बिन हारिस का बयान है कि जब दोज़ख़ी को दोज़ख़ में फेंक दिया जायेगा तो ख़ुदा ही जानता है कि कितनी मुद्दत तक वह नीचे ही नीचे को चलता रहेगा। उसके बाद जहन्नम के एक दरवाज़े पर उसे रोक दिया जायेगा और कहा जायेगा- आप बहुत प्यासे हो रहे होंगे लो एक जाम तो पी लो। यह कहकर उन्हें काले नाग और ज़हरीले बिच्छुओं के ज़हर का एक प्याला पिलाया जायेगा जिसके पीते ही उनकी खालें अलग झड़ जायेंगी, बाल अलग हो जायेंगे, रगें अलग जा पड़ेंगी, हड्डियाँ अलग-अलग हो जायेंगी। हज़रत उबैद इब्ने उमैर रह. फ़रमाते हैं कि जहन्नम में कुओं जैसे गड्ढे हैं, उनमें साँप हैं जैसे बुख़्ती ऊँट, और बिच्छू हैं जैसे ख़च्चर, जब किसी जहन्नमी को जहन्नम में डाला जाता है तो वे वहाँ से निकल आते हैं और उसे लिपट जाते हैं। होंठों पर सरों पर और जिस्म के और हिस्सों पर डस्ते और डंक मारते हैं जिससे उनके सारे बदन में ज़हर फैल जाता है और फुकने लगते हैं, सारे सर की खाल झुलस कर गिर पड़ती है। फिर वे साँप चले जाते हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जहन्नमी एक हज़ार साल तक जहन्नम में चिल्लाता रहेगा "या हन्नानु या मन्नानु" तब अल्लाह तआ़ला हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से फ़रमायेगा जाओ देखो यह क्या कह रहा है? हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आकर देखेंगे कि सब जहन्नमी बुरे हाल में सर झुकाये रो रहे और फ़रियाद कर रहे हैं। जाकर अल्लाह के हुज़ूर में ख़बर करेंगे, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा फिर जाओ फ़ुलाँ-फ़ुलाँ जगह यह शख़्स है, जाओ और उसे ले आओ। आप अल्लाह के हुक्म से जायेंगे और उसे लाकर ख़ुदा के सामने खड़ा कर देंगे। अल्लाह तआ़ला उससे मालूम फ़रमायेगा कि तू कैसी

जगह में है? यह जवाब देगा कि ख़ुदाया ठहरने की बुरी जगह और सोने बैठने की भी बदतरीन जगह है। ख़ुदा फ़रमायेगा अच्छा अब इसे इसकी जगह वापस कर आओ तो यह गिड़गिड़ायेगा, अ़र्ज़ करेगा कि ऐ मेरे अर्हमुर्राहिमीन ख़ुदा! जबकि तूने मुझे उससे बाहर निकाला तो तेरी ज़ात ऐसी नहीं कि फिर मुझे उसमें दाख़िल कर दे, मुझे तो तुझसे रहम व करम की ही उम्मीद है। ख़ुदाया! बस अब मुझ पर रहम फ़रमा। जब तूने मुझे जहन्नम से निकाला तो मैं ख़ुश हो गया था कि अब तू उसमें न डालेगा। इस पर रहमान व रहीम ख़ुदा को भी रहम आ जायेगा और फ़रमायेगा अच्छा मेरे बन्दे को छोड़ दो।

फिर उनका एक और वस्फ़ बयान होता है कि न तो वे ख़र्च करने में बख़ील हैं न बेजा ख़र्च करते हैं, न ज़रूरी ख़र्चों में कोताही करते हैं, बल्कि बीच की राह से काम लेते हैं, न ऐसा करते हैं कि अपने वालों को, बाल-बच्चों को भी तंग रखें, न ऐसा करते हैं कि जो हो लुटा दें। इसी का हुक्म ख़ुदा तआ़ला ने दिया है। फ़रमाता हैः

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً........ الخ

यानी न तो अपने हाथ अपनी गर्दन से बाँध और न उन्हें बिल्कुल ही छोड़ दे......।

मुस्नद अहमद में अल्लाह के रसूल का फ़रमान है कि अपनी गुज़रान (ज़िन्दगी गुज़ारने) में दरमियानी चाल चलना इनसान की समझदारी की दलील है। एक और हदीस में है कि जो इफ़रात व तफ़रीत (कमी-बेशी) से बचता है, वह कभी फ़क़ीर व मोहताज नहीं होता। बज़्ज़ार की हदीस में है कि अमीरी में, फ़क़ीरी में, इबादत में दरमियानी चाल बड़ी ही बेहतरीन और अच्छी चीज़ है। इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि राहे ख़ुदा में कितना ही चाहो दो, इसका नाम फ़ुज़ूलख़र्ची नहीं है। हज़रत अयास बिन मुआ़विया रह. फ़रमाते हैं कि जहाँ कहीं तू ख़ुदा के हुक्म से आगे बढ़ जाये वही इसराफ़ (फ़ुज़ूलख़र्ची) है। और बुज़ुर्गों का क़ौल है कि ख़ुदा की नाफ़रमानी में जो माल ख़र्च किया जाये वह इसराफ़ है।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

और जो कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और माबूद की पूजा नहीं करते, और जिस शख़्स (के क़त्ल करने) को अल्लाह तआ़ला ने हराम फ़रमाया है उसको क़त्ल नहीं करते, हाँ मगर हक़ पर। और वे ज़िना नहीं करते, और जो शख़्स ऐसे काम करेगा तो सज़ा से उसको साबक़ा पड़ेगा। (68) कि क़ियामत के दिन उसका अ़ज़ाब बढ़ता चला जाएगा और वह उस (अ़ज़ाब) में हमेशा-हमेशा ज़लील (व रुस्वा) होकर रहेगा। (69) मगर जो (शिर्क व गुनाहों से) तौबा कर ले और ईमान (भी) ले आए और नेक काम करता रहे तो अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों के (पिछले) गुनाहों की जगह नेकियाँ इनायत फ़रमायेगा। और अल्लाह तआ़ला माफ़

Mahtab E Ashraf

करने वाला, रहम करने वाला है। (70) और जो शख़्स (गुनाहों से) तौबा करता है और नेक काम करता है तो वह (भी अज़ाब से बचा रहेगा, क्योंकि वह) अल्लाह तआला की तरफ़ ख़ास तौर पर रुजू कर रहा है। (71)	غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ٥ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ٥

मोमिनों की कुछ और सिफ़ात

हुज़ूर सल्ल. से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. ने सवाल किया कि सबसे बुरा गुनाह क्या है? आपने फ़रमाया तेरा ख़ुदा के साथ शिर्क करना, हालाँकि उसी अकेले ने तुझे पैदा किया है। उन्होंने कहा इससे कम? फ़रमाया तेरा अपनी औलाद को इस ख़ौफ़ से मार डालना कि तू उसे खिलायेगा कहाँ से। पूछा इसके बाद? फ़रमाया तेरा अपने पड़ोस की किसी औ़रत से बदकारी करना। पस इसकी तस्दीक़ में अल्लाह तआ़ला ने ये आयतें नाज़िल फ़रमाईं। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में मौजूद है। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. बाहर जाने लगे, तन्हा थे मैं भी साथ हो लिया। आप एक ऊँची जगह पर बैठ गये, मैं आपसे नीचे बैठ गया और उस तन्हाई के मौक़े को ग़नीमत समझ कर हुज़ूर सल्ल. से वे सवालात किये जो ऊपर मज़कूर हुए। आख़िरी हज में हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- चार गुनाहों से बहुत बचो- अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने, किसी हुर्मत वाले नफ़्स (यानी जिसका क़त्ल करना तुम्हारे लिये जायज़ न हो) का क़त्ल, ज़िना और चोरी। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने सहाबा रज़ि. से पूछा- ज़िना के बारे में तुम क्या कहते हो? उन्होंने जवाब दिया वह हराम है और क़ियामत तक हराम है। आपने फ़रमाया हाँ! सुनो इनसान का अपने पड़ोस की औ़रत से ज़िना करना दूसरी दस (10) औ़रतों के ज़िना से भी बदतर है (यानी ज़िना तो हर औ़रत के साथ हराम है लेकिन पड़ोस की औ़रत के साथ यह बुरा काम करने से पड़ोसी का हक़ भी ज़ाया होता है और उसका भरोसा भी टूटता है)।

फिर आपने फ़रमाया चोरी के बारे में क्या कहते हो? उन्होंने यही जवाब दिया कि वह हराम है। ख़ुदा और रसूल उसे हराम क़रार दे चुके हैं। आपने फ़रमाया सुनो! दस जगह की चोरी भी इतनी बुरी नहीं जितनी पड़ोस की एक जगह की चोरी। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि शिर्क के बाद इससे बड़ा गुनाह कोई नहीं कि इनसान अपना नुत्फ़ा (यानी वीर्य का क़तरा) उस रहम (गर्भ) में डाले जो उसके लिये हलाल नहीं। यह भी रिवायत है कि बाज़ मुश्रिक लोग हुज़ूर सल्ल. के पास आये और कहा हज़रत! आपकी दावत अच्छी है सच्ची है, लेकिन हमने तो शिर्क भी किया है, क़त्ल भी किया है, ज़िनाकारियाँ भी की हैं, और ये सब काम बहुत ज़्यादा किये हैं, तो फ़रमाईये हमारे लिये क्या हुक्म है? इस पर यह आयत उतरी, और यह आयत भी नाज़िल हुई:

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ.........الخ

यानी ऐ मेरे वे बन्दो! जिन्होंने (कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों के ज़रिये) अपने ऊपर ज़्यादतियाँ की हैं वे अल्लाह की रहमत से मायूस न हों......।

Maktaba Ashraf

रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है- अल्लाह तुम्हें इससे मना फ़रमाता है कि तुम ख़ालिक़ को छोड़कर मख़्लूक़ की इबादत करो, और इससे भी मना फ़रमाता है कि अपने कुत्ते को तो पालो और अपने बच्चे को क़त्ल कर डालो। और इससे भी मना फ़रमाता है कि अपनी पड़ोसन से बदकारी करो। 'असाम' जहन्नम की एक वादी का नाम है, यही वे वादियाँ हैं जिनमें ज़ानियों को अ़ज़ाब दिया जायेगा। इसके मायने अ़ज़ाब व सज़ा के भी आते हैं। हज़रत लुक़मान हकीम रह. की नसीहतों में है कि ऐ बच्चे! ज़िना से बचना, इसके शुरू में डर और ख़ौफ़ है और इसका अन्जाम शर्मिन्दगी और अफ़सोस है।

यह भी है कि 'ग़ैय' और 'असाम' दोज़ख़ के दो कुएँ हैं अल्लाह हमें महफ़ूज़ रखे। असाम के मायने बदले के भी आते हैं और यही आयत के ज़ाहिर से मालूम होता है और गोया इसके बाद की आयत इसी बदले और सज़ा की तफ़सीर है, कि उसे बार बार अ़ज़ाब दिया जायेगा, सख़्ती की जायेगी और ज़िल्लत के हमेशा वाले अ़ज़ाब में फंस जायेगा। अल्लाह तआ़ला हम सबको उससे महफ़ूज़ फ़रमाये।

इन कामों के करने वाले की सज़ा तो बयान हो चुकी, मगर इस सज़ा से वे बच जायेंगे जो दुनिया ही में इससे तौबा कर लें। किसी को यह शुब्हा न हो कि इस आयतः

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا......... الخ

यानी जो किसी मोमिन को जान-बूझकर क़त्ल कर दे तो उसके लिये दोज़ख़ का हमेशा का अ़ज़ाब है।

यह आयत बयान हो रहे मज़मून के ख़िलाफ़ नहीं, अगरचे यह आयत मदनी है। इसलिये कि वह मुत्लक़ (बिना किसी क़ैद के) है तो उसका मतलब यह होगा कि वे क़ातिल जो अपने इस फ़ेल से तौबा न करें। और यह आयत उन क़ातिलों के बारे में है जो तौबा कर लें। फिर मुश्रिकों की बख़्शिश न होने का बयान फ़रमाया है और सही हदीसों से भी क़ातिल की तौबा की मक़बूलियत साबित है। जैसे उस शख़्स का क़िस्सा जिसने एक सौ क़त्ल किये थे, फिर तौबा की और उसकी तौबा क़बूल हुई वग़ैरह। ये वे लोग हैं जिनकी बुराईयाँ ख़ुदा तआ़ला भलाईयों से बदल देता है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि ये वे लोग हैं जिन्होंने इस्लाम क़बूल करने से पहले गुनाह के काम किये थे, इस्लाम में आने के बाद नेकियाँ कीं तो अल्लाह ने उन्हें गुनाह के बदले नेकियों की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई। इस आयत की तिलावत के वक़्त आप एक अ़रबी शे'र पढ़ते थे, जिसमें हालात की तब्दीली का बयान है, जैसे गर्मी से ठंडक। हज़रत अ़ता बिन अबी रबाह फ़रमाते हैं- यह दुनिया का ज़िक्र है कि इनसान की बुरी ख़स्लत को ख़ुदा तआ़ला अपनी मेहरबानी से नेक आ़दत से बदल देता है। सईद इब्ने जुबैर रह. का बयान है कि बुतों की पूजा के बदले ख़ुदा तआ़ला की इबादत की तौफ़ीक़ उन्हें मिली। मोमिनों से लड़ने के बजाय काफ़िरों से जिहाद करने लगे कि मुश्रिक औ़रतों से निकाह के बजाय मोमिन औ़रतों से निकाह किये। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि गुनाह के बदले सवाब के अ़मल करने लगे, शिर्क के बदले तौहीद व इख़्लास मिला, बदकारी के बदले पाकदामनी हासिल हुई, कुफ़्र के बदले इस्लाम मिला। एक मायने तो इस आयत के यह हुए। दूसरे मायने यह हैं कि ख़ुलूस के साथ उनकी जो तौबा थी उससे ख़ुश होकर अल्लाह तआ़ला ने उनके गुनाहों को नेकियों से बदल दिया। यह इसलिये कि तौबा के बाद जब उन्हें अपने पिछले गुनाह याद आते थे तो उन्हें शर्मिन्दगी होती थी। ये ग़मगीन हो जाते थे, शर्माने लगते थे और इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से माफ़ी की दुआ़) करते थे। इस वजह से उनके गुनाह इताअ़त से बदल गये अगरचे वे उनके नामा-ए-आमाल में गुनाह के तौर पर लिखे हुए थे लेकिन क़ियामत के दिन वे सब

Maktaba Ashraf

नेकियाँ बन जायेंगे जैसा कि हदीसों और बुज़ुर्गों के अक़वाल से साबित है।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं उस शख़्स को पहचानता हूँ जो सब से आख़िर में जहन्नम से निकलेगा और सबसे आख़िर में जन्नत में जायेगा। यह एक वह शख़्स होगा जिसे ख़ुदा के सामने लाया जायेगा, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि इसके बड़े-बड़े गुनाहों को छोड़कर छोटे गुनाहों के बारे में इससे पूछताछ करो। चुनाँचे उससे सवाल होगा कि फ़ुलाँ दिन तूने फ़ुलाँ काम किया था? फ़ुलाँ दिन फ़ुलाँ गुनाह किया था? यह एक का भी इनकार न कर सकेगा, इक़रार करेगा। आख़िर में कहा जायेगा कि तुझे हमने हर गुनाह के बदले नेकी दी। अब तो उसकी बाँछें खिल जायेंगी और कहेगा ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने और भी बहुत से आमाल किये थे जिन्हें यहाँ पा नहीं रहा हूँ। यह फ़रमाकर हुज़ूर सल्ल. इस क़द्र हंसे कि आपके मसूढ़े देखे जाने लगे। (मुस्लिम)

आप फ़रमाते हैं कि जब इनसान सोता है तो फ़रिश्ता शैतान से कहता है कि मुझे अपना सहीफ़ा जिसमें इसके गुनाह लिखे हुए हैं दे, वह देता है तो एक-एक नेकी के बदले दस-दस गुनाह वह उसके सहीफ़े से मिटा देता है, और उन्हें नेकियाँ लिख देता है। पस तुम में से जो भी सोने का इरादा करे वह तैंतीस बार अल्लाहु अक्बर और चौंतीस बार अल्हम्दु लिल्लाह कहे और तैंतीस बार सुब्हानल्लाह कहे, यह मिलकर सौ मर्तबा हो गये। (इब्ने अबिद्दुन्या)

हज़रत सलमान फ़रमाते हैं कि इनसान को क़ियामत के दिन नामा-ए-आमाल दिया जायेगा, वह पढ़ना शुरू करेगा तो ऊपर उसकी बुराईयाँ दर्ज होंगी जिन्हें पढ़कर यह कुछ ना-उम्मीद सा होने लगेगा। उसी वक़्त उसकी नज़र नीचे की तरफ़ पड़ेगी तो अपनी नेकियाँ लिखी हुई पायेगा। जिससे कुछ ढारस बंधेगी, अब दोबारा ऊपर की तरफ़ देखेगा तो वहाँ की बुराईयों को भलाईयों में बदला हुआ पायेगा। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि बहुत से लोग ख़ुदा के सामने आयेंगे जिनके पास बहुत कुछ गुनाह होंगे, पूछा कि वे कौनसे लोग होंगे? आपने फ़रमाया वे जिनकी बुराईयों को अल्लाह तआ़ला भलाईयों से बदल देगा। हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नती जन्नत में चार क़िस्म के लोग जायेंगे- मुत्तक़ीन यानी परहेज़गारी करने वाले। फिर शाकिरीन यानी शुक्रे ख़ुदा करने वाले। फिर ख़ाईफ़ीन यानी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले। फिर अस्हाबे यमीन यानी जिन्हें दायें हाथ में नामा-ए-आमाल मिले होंगे। पूछा गया कि उन्हें अस्हाबे यमीन क्यों कहा जाता है? जवाब दिया इसलिये कि उन्होंने नेकियाँ बदियाँ सब कुछ की थीं, उनके अ़मल-नामे उनके दाहिने हाथ में मिले, अपनी बदियों का एक-एक हर्फ़ पढ़कर ये कहने लगे कि ख़ुदाया हमारी नेकियाँ कहाँ हैं? यहाँ तो सब बदियाँ लिखी हुई हैं। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला उनकी बुराईयों को मिटा देगा और उनके बदले नेकियाँ लिख देगा। उन्हें पढ़कर ख़ुश होकर अब तो ये दूसरों से कहेंगे आओ हमारे अ़मल-नामे देखो। जन्नतियों में के ज़्यादातर यही होंगे। इमाम अ़ली बिन हुसैन ज़ैनुल-आ़बिदीन रह. फ़रमाते हैं कि बुराईयों को भलाईयों से बदलना आख़िरत में होगा। मक्होल रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला उनके गुनाहों को बख़्शेगा और उन्हें नेकियाँ देगा। हज़रत मक्होल ने एक मर्तबा हदीस बयान की कि एक बूढ़े ज़ईफ़ आदमी जिनकी भवें आँखों पर आ गई थीं, रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ करने लगे या रसूलल्लाह! मैं एक ज़ईफ़ शख़्स हूँ जिसने कोई ग़द्दारी कोई बदकारी बाक़ी नहीं छोड़ी, मेरे गुनाह इस क़द्र बढ़ गये हैं कि अगर तमाम इनसानों पर तक़सीम हो जायें तो सब के सब ग़ज़बे ख़ुदा में गिरफ़्तार हो जायें। क्या मेरी बख़्शिश भी हो सकती है? क्या मेरी तौबा भी क़बूल हो सकती है? आपने फ़रमाया कि मुसलमान हो जाओ। उसने कलिमा पढ़ लिया- 'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू

ला शरी-क लहू व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू' तो आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला तेरी तमाम बुराईयों का गुनाह बदकारियाँ सब कुछ माफ़ कर देगा, बल्कि जब तक तू इस पर क़ायम रहेगा अल्लाह तआ़ला तेरी बुराईयाँ भलाईयों से बदल देगा। उसने फिर पूछा हुज़ूर! मेरे छोटे-बड़े गुनाह सब माफ़ हो जायेंगे? आपने फ़रमाया हाँ, सब के सब। फिर तो वह शख़्स ख़ुशी-ख़ुशी वापस जाने लगा और तकबीर व तहलील (यानी अल्लाह की बड़ाई और उसका अकेले माबूद होना) पुकारता हुआ लौट गया। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु। (इब्ने जरीर)

एक सहाबी हुज़ूरे अक़्दस सल्ल. के दरबार में हाज़िर होकर अ़र्ज़ करते हैं कि अगर किसी शख़्स ने सारे ही गुनाह किये हों, जो जी में आया हो पूरा किया हो तो क्या ऐसे शख़्स की तौबा भी क़बूल हो सकती है? आपने फ़रमाया तुम मुसलमान हो गये? उसने कहा जी हाँ। आपने फ़रमाया अब नेकियाँ करो, बुराईयों से बचो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह भी नेकियाँ कर देगा। उसने कहा मेरी ग़द्दारियाँ और बदकारियाँ भी? आपने फ़रमाया हाँ! अब वह अल्लाहु अक्बर कहता हुआ वापस चला गया। (तबरानी)

एक औ़रत हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. के पास आई और दरियाफ़्त किया कि मुझसे बदकारी हो गई, उससे बच्चा हो गया, मैंने उसे मार डाला, अब क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है? आपने फ़रमाया कि अब न तेरी आँखें ठंडी हो सकती हैं न ख़ुदा के यहाँ तेरी क़द्र हो सकती है। तेरे लिये तौबा हरगिज़ नहीं। वह रोती पीटती वापस चली गई। सुबह की नमाज़ हुज़ूर सल्ल. के साथ पढ़कर मैंने यह वाक़िआ़ बयान किया तो आपने फ़रमाया तूने उससे बहुत ही बुरी बात कही। क्या तू इन आयतों को क़ुरआन में नहीं पढ़ताः

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ............اِلَّا مَنْ تَابَ.........الخ

(यानी यही आयतें जिनकी तफ़सीर बयान हो रही है)

मुझे बड़ा रंज हुआ और मैं लौटकर उस औ़रत के पास पहुँचा और उसे ये आयतें पढ़कर सुनाईं। वह ख़ुश हो गई, उसी वक़्त सज्दे में गिर पड़ी और कहने लगी कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने मेरे लिये निजात की सूरत पैदा कर दी। (तबरानी)

एक और रिवायत में है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. का पहला जवाब सुनकर वह हसरत व अफ़सोस के साथ यह कहती हुई वापस चली कि हाय-हाय यह अच्छी सूरत क्या जहन्नम के लिये बनाई गई थी? उसमें यह भी है कि जब हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. को अपनी ग़लती का इल्म हुआ तो उस औ़रत को ढूँढने के लिये तमाम मदीना और एक-एक गली छान मारी, लेकिन कहीं पता न चला। इत्तिफ़ाक़ से रात को वह औ़रत फिर आई, तब हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने उन्हें सही बात बताई। उसमें यह भी है कि उसने अल्लाह की तारीफ़ करते हुए कहा कि उसने मेरे लिये छुटकारे की सूरत बनाई और मेरी तौबा की क़बूलियत रखी। यह कहकर उसके साथ जो बाँदी थी उसे आज़ाद कर दिया। उस बाँदी की एक लड़की भी थी, और सच्चे दिल से तौबा कर ली।

फिर फ़रमाता है और अपने आ़म लुत्फ़ व करम, फ़ज़्ल व रहम की ख़बर देता है कि जो भी ख़ुदा की तरफ़ झुके और अपने बुरे आमाल और गुनाहों पर शर्मिन्दा होकर तौबा करे अल्लाह तआ़ला उसकी सुनता है, क़बूल फ़रमाता है और उसे बख़्श देता है। जैसे कि इरशाद हैः

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْيَظْلِمْ نَفْسَهٗ........الخ

Maktab E Ashraf

कि जो बुरा अ़मल करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करे (यानी उस गुनाह की माफ़ी माँगे) वह अल्लाह को ग़फ़ूर (माफ़ करने वाला) व रहीम (रहम करने वाला) पायेगा।

एक और जगह इरशाद है:

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ هُوَيَقْبَلُ التَّوْبَةَ........ الخ

क्या उन्हें यह भी नहीं मालूम कि अल्लाह तआ़ला तौबा को क़बूल फ़रमाने वाला है।

एक और आयत में है:

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ........ الخ

मेरे उन बन्दों से जो गुनाहगार हैं कह दीजिये कि वे मेरी रहमत से ना-उम्मीद न हों....। यानी तौबा करने वाला मेहरूम नहीं।

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ○ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ○ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ○	और वे बेहूदा बातों में शामिल नहीं होते, और अगर (इत्तिफ़ाक़ से) बेहूदा मश्ग़लों के पास को होकर गुज़रें तो सन्जीदगी के साथ गुज़र जाते हैं। (72) और वे ऐसे हैं कि जिस वक़्त उनको अल्लाह के अहकाम के ज़रिये से नसीहत की जाती है तो उन (अहकाम) पर बहरे अन्धे होकर नहीं गिरते। (73) और वे ऐसे हैं कि दुआ़ करते रहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हम को हमारी बीवियों और हमारी औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक (यानी राहत) अ़ता फ़रमा, और हमको मुत्तक़ियों का अफ़सर बना दे। (74)

मोमिन बन्दों की कुछ और ख़ुसूसियतें

अल्लाह के नेक बन्दों की नेक सिफ़ात और ख़ुसूसियतें (विशेषतायें) बयान हो रही हैं कि वे झूठी गवाही नहीं देते। कहा गया है कि इससे मुराद यह है कि शिर्क नहीं करते, बुत-परस्ती से बचते हैं। और यह भी क़ौल है कि वे झूठ नहीं बोलते, बुराईयों और गुनाहों में लिप्त नहीं होते। कुफ़्र से अलग रहते हैं। बेहूदा और बेकार कामों से परहेज़ करते हैं। गाना नहीं सुनते, मुश्रिकों की ईद (यानी महफ़िलों) में शरीक नहीं होते। ख़ियानत नहीं करते, बुरी मज्लिसों में उठना-बैठना नहीं रखते। शराब नहीं पीते। शराब-ख़ानों में नहीं जाते। उसकी तरफ़ कोई चाव नहीं रखते। हदीस में भी है कि सच्चे मोमिन को चाहिये कि उस दस्तरख़्वान पर न बैठे जिस पर शराब का दौर चल रहा हो।

और यह भी मतलब है कि झूठी गवाही नहीं देते। बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मैं तुम्हें सबसे बड़ा गुनाह बता दूँ? तीन बार यही फ़रमाया। सहाबा ने कहा हाँ या रसूलल्लाह। आपने फ़रमाया अल्लाह के साथ शिर्क करना, माँ-बाप की नाफ़रमानी करना, उस वक़्त आप तकिये पर टेक लगाये बैठे हुए थे। अब उससे अलग होकर फ़रमाने लगे सुनो! और झूठी बात कहना, सुनो! और झूठी

गवाही देना। इसे बार-बार फ़रमाते रहे यहाँ तक कि हम अपने दिल में कहने लगे कि काश रसूलुल्लाह ख़ामोश हो जाते।

लफ़्ज़ों से ज़्यादा ज़ाहिर तो यह है कि वे झूठ के पास नहीं जाते। इसलिये आगे बयान हुआ कि इत्तिफ़ाक़न गुज़र जायें तो वे उससे दिलचस्पी नहीं लेते, मुँह फेरे मुड़ जाते हैं। एक मर्तबा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. किसी खेल के पास से गुज़रे तो मुँह फेरे हुए बग़ैर रुके चले गये। अल्लाह के नज़दीक करीम हो गये। ख़ुदा के इन बुज़ुर्ग बन्दों का एक वस्फ़ यह भी है कि क़ुरआन की आयतें सुनकर उनके दिल दहल जाते हैं, उनके ईमान और तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) बढ़ जाते हैं। जबकि इसके विपरीत काफ़िर लोग हैं कि उन पर कलामे इलाही का असर नहीं होता, वे अपने बुरे आमाल से बाज़ नहीं रहते, न अपना कुफ़्र छोड़ते हैं न सरकशी, तकब्बुर और जहालत व गुमराही से बाज़ आते हैं। ईमान वालों के ईमान बढ़ जाते हैं और बीमार दिल वालों की गन्दगी उभर आती है। पस काफ़िर ख़ुदा की आयतों से बहरे और अंधे हो जाते हैं।

इन मोमिनों की हालत इसके उलट है। न ये हक़ से बहरे हैं न ये हक़ से अंधे हैं। सुनते हैं, समझते हैं, नफ़ा हासिल करते हैं, अपना सुधार करते हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो पढ़ते हैं लेकिन अंधा बहरापन नहीं छोड़ते। हज़रत शअ़बी रह. से सवाल हुआ कि एक शख़्स आता है और दूसरों को सज्दे में पाता है लेकिन उसे मालूम नहीं कि किस आयत को पढ़कर सज्दा किया गया है, तो क्या वह भी उनके साथ सज्दा करे? तो आपने यही आयत पढ़ी, यानी सज्दा न करे इसलिये कि उसने न सज्दे की आयत पढ़ी, न सुनी, न सोची, तो मोमिन को कोई काम अंधाधुंध न करना चाहिये, जब तक उसके सामने किसी चीज़ की हक़ीक़त न हो उसमें शामिल न होना चाहिये।

फिर उन बुज़ुर्ग बन्दों की एक दुआ़ बयान होती है कि वे अल्लाह तआ़ला से तलब करते हैं कि उनकी औलाद भी उनकी तरह फ़रमाँबरदार, इबादत-गुज़ार, अल्लाह वाली और शिर्क से बचने वाली हो, ताकि दुनिया में भी उस नेक औलाद से उनका दिल ठंडा रहे और आख़िरत में भी ये उन्हें अच्छी हालत में देखकर ख़ुश हों। इस दुआ़ से उनकी ग़र्ज़ ख़ूबसूरती और सुन्दरता की नहीं बल्कि नेकी, अच्छी आ़दतें और उम्दा अख़्लाक़ हैं। मुसलमान की सच्ची ख़ुशी इसमें है कि वह अपने अहल व अ़याल (बाल-बच्चों और घर वालों) को, दोस्त अहबाब को ख़ुदा का फ़रमाँबरदार देखे। वे ज़ालिम न हों, सच्चे मुसलमान हों।

हज़रत मिक़दाद रज़ि. को देखकर एक साहिब फ़रमाने लगे- उन आँखों को मुबारकबाद हो जिन्होंने पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल. की ज़ियारत की है, काश कि हम भी हुज़ूर सल्ल. को देखते और तुम्हारी तरह उनकी सोहबत का फ़ैज़ (लाभ) हासिल करते। इस पर हज़रत मिक़दाद रज़ि. नाराज़ हुए तो नुफ़ैर (रिवायत बयान करने वाले) कहते हैं कि मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि इस बात में तो कोई बुराई नहीं, फिर यह ख़फ़ा क्यों हो रहे हैं? इतने में हज़रत मिक़दाद ने फ़रमाया- लोगों को क्या हो गया है कि उस चीज़ की आरज़ू करते हैं जो क़ुदरत ने उन्हें नहीं दी। ख़ुदा ही को इल्म है कि अगर ये उस वक़्त होते तो इनका क्या हाल होता। अल्लाह की क़सम वे लोग भी तो रसूलुल्लाह सल्ल. के ज़माने में थे जिन्होंने न आपकी तस्दीक़ की न तावेदारी की और औंधे मुँह जन्नहम में गये (जैसे अबू जहल, अबू लहब वग़ैरह)। तुम अल्लाह का एहसान नहीं मानते कि ख़ुदा ने तुम्हें इस्लाम में और मुसलमान घरों में पैदा किया। पैदा होते ही तुम्हारे कानों में ख़ुदा की तौहीद (अल्लाह के एक होने) और हज़रत मुहम्मद सल्ल. की रिसालत पड़ी और उन बलाओं से तुम बचा लिये गये जो तुमसे पहले लोगों पर आई थीं। हुज़ूर सल्ल. तो ऐसे ज़माने में तशरीफ़ लाये थे जिस

वक़्त दुनिया की गुमराही और जहालत अपनी इन्तिहा (चरम सीमा) पर थी। उस वक़्त दुनिया वालों के नज़दीक बुत-परस्ती से बेहतर कोई मज़हब न था।

आप फ़ुरक़ान (अल्लाह का कलाम) लेकर आये, हक़ व बातिल में तमीज़ की, बाप बेटे जुदा हो गये (यानी किसी का बाप मुसलमान हुआ तो किसी का बेटा, इस तरह उनमें मज़हबी जुदाई हो गयी)। मुसलमान अपने बाप दादों, बेटों पोतों, दोस्त अहबाब को कुफ़्र पर देखते, उनसे उन्हें कोई मुहब्बत प्यार नहीं होता था बल्कि कुढ़ते थे कि ये जहन्नमी हैं, इसी लिये उनकी दुआयें यह होती थीं कि हमें, हमारी औलाद और बीवियों की तरफ़ से आँखों की ठंडक अ़ता फ़रमा, क्योंकि कुफ़्फ़ार को देखकर उनकी आँखें ठंडी नहीं होती थीं। इस दुआ का आख़िरी जुमला यह है कि हमें लोगों का रहबर बना दे कि हम उन्हें नेकी की तालीम दें। लोग भलाई में हमारी पैरवी करें, हमारी औलाद हमारी राह पर चले ताकि सवाब बढ़ जाये और उनकी नेकियों के सबब हम भी नेक बन जायें। रसूले करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि इनसान के मरते ही उसके आमाल ख़त्म हो जाते हैं मगर तीन चीज़ें- नेक औलाद, जो उसके लिये दुआ करे (जबकि वे मोमिन हों), या इल्म जिससे उसके बाद नफ़ा उठाया जाये, या सदक़ा-ए-जारिया (यानी कोई ऐसी नेकी और अ़मल जो मरने के बाद भी जारी रहे, जैसे कोई मस्जिद, दीनी मदरसा, कुआँ, सबील, नल, सराय, दीनी किताबों का प्रकाशन और इसी तरह के दूसरे काम)।

ऐसे लोगों को (जन्नत में रहने को) बालाख़ाने मिलेंगे इस वजह से कि वे (दीन और बन्दगी पर) साबित क़दम रहे, और उनको उस (जन्नत) में (फ़रिश्तों की ओर से) बाक़ी रहने की दुआ और सलाम मिलेगा। (75) (और) उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे, वह कैसा अच्छा ठिकाना और मक़ाम है। (76) आप (आम तौर पर लोगों से) कह दीजिए कि मेरा रब तुम्हारी ज़रा भी परवाह न करेगा अगर तुम इबादत न करोगे। सो तुम जो (अल्लाह के अहकाम को) झूठा समझते हो तो जल्द ही यह (झूठा समझना तुम्हारे लिए) वबाले (जान) होगा। (77)	أُولَٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَ يُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَاۤؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝ع

अल्लाह के इन नेक बन्दों का इनाम

मोमिनों की पाक सिफ़तें (ख़ूबियाँ और विशेषतायें), उनके भले अक़वाल, उम्दा अफ़आ़ल बयान फ़रमाकर उनका बदला बयान हो रहा है कि उन्हें जन्नत मिलेगी जो बहुत ही ऊँची जगह है। इस वजह से कि जो इन सिफ़ात पर जमे रहे वहाँ उनकी इज़्ज़त होगी, सम्मान होगा, अदब व एहतिराम होगा। उनके लिये सलामती है, उन पर सलामती है, जन्नत के हर-हर दरवाज़े से फ़रिश्ते हाज़िरे ख़िदमत होते हैं और सलाम करके कहते हैं कि तुम्हारा अन्जाम बेहतर हो गया, क्योंकि तुम सब्र करने वाले थे। ये वहाँ हमेशा रहेंगे, न निकलेंगे न निकाले जायेंगे, न नेमतें कम होंगी न राहतें फ़ना होंगी। ये ख़ुशनसीब हैं, जन्नतों में

Maktab E Ashraf

हमेशा रहेंगे। उनके रहने सहने, राहत व आराम करने की जगह बड़ी सुहानी पाक साफ़ है, देखने में सुहानी रहने में आरामदेह। ख़ुदा ने अपनी मख़्लूक़ को अपनी इबादत और तस्बीह व तहलील के लिये पैदा किया है। अगर मख़्लूक़ यह न बजा लाये तो वह ख़ुदा के नज़दीक बहुत ही बुरी और बेहैसियत है। ईमान के बग़ैर इनसान बिल्कुल नाकारा है। अगर अल्लाह को काफ़िरों की आरज़ू होती तो वह उन्हें भी इबादत की तरफ़ झुका देता। लेकिन ख़ुदा के नज़दीक ये किसी गिनती ही में नहीं।

काफ़िरो! तुमने झुठलाया अब तुम यह न समझो कि बस मामला ख़त्म हो गया। नहीं! इसका वबाल तुम्हारे साथ ही साथ है। दुनिया और आख़िरत में तुम बरबाद होगे। अ़ज़ाबे ख़ुदा तुमसे चिमटे हुए है। इसी सिलसिले की एक कड़ी बदर (इस्लाम व कुफ़्र की पहली लड़ाई) के दिन कुफ़्फ़ार की पस्पाई और शिकस्त थी, जैसा कि हज़रत इब्ने मसऊद वग़ैरह से मन्क़ूल है। क़ियामत के दिन की सज़ा अभी बाक़ी है।

अल्लाह का शुक्र है सूरः फ़ुरक़ान की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः शु-अ़रा

सूरः शु-अ़रा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 227 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

طٰسٓمّٓ ٥ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ٥
لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ٥ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ
السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا
خٰضِعِيْنَ ٥ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ
الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ
مُعْرِضِيْنَ ٥ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ

ता-सीम्-मीम्। (1) ये (मज़ामीन जो आप पर नाज़िल होते हैं) वाज़ेह किताब (यानी क़ुरआन) की आयतें हैं। (2) शायद आप उनके ईमान न लाने पर (रंज करते-करते) अपनी जान दे देंगे। (3) अगर हम (उनको मोमिन करना) चाहें तो उन पर आसमान से एक बड़ी निशानी नाज़िल कर दें, फिर उनकी गर्दनें उस निशानी से झुक जाएँ। (4) और (उनकी हालत यह है कि) उनके पास कोई ताज़ा तंबीह (हज़रते) रहमान की तरफ़ से ऐसी नहीं आती जिससे ये बेरुख़ी न करते हों। (5) सो उन्होंने (दीने हक़ को) झूठा बतला दिया, सो अब जल्द ही उनको

اَنْـبـٰٓـؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ٥ اَوَلَمْ يَـرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَـمْ اَنْـبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُـلِّ زَوْجٍ كَـرِيْمٍ ٥ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۖ وَمَـا كَـانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ٥ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ٥	उस बात की हक़ीक़त मालूम हो जाएगी जिसके साथ यह हंसी-मज़ाक़ किया करते थे। (6) क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस क़द्र उम्दा-उम्दा क़िस्म की बूटियाँ उगाई हैं। (7) इसमें (तौहीद की) एक बड़ी निशानी है, और उनमें अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (8) और बेशक आपका रब ग़ालिब है, रहीम है। (9)

ع ٥

ईमान व इस्लाम की दावत को आ़म करने के लिये आपकी कोशिशें

हुरूफ़े मुक़त्तआ़त की बहस सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में गुज़र चुकी है। आगे फ़रमान है कि ये आयतें क़ुरआन में की हैं जो बहुत वाज़ेह, बिल्कुल साफ़ और हक़ व बातिल, भलाई व बुराई के दरमियान फ़ैसला और फ़र्क़ करने वाला है। इन लोगों के ईमान न लाने से आप दिल में रंजीदा और ग़मगीन न हों। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद है:

فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ.

तू इनके ईमान न लाने पर हसरत व अफ़सोस न कर। एक और आयत में है:

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ......... الخ

कहीं ऐसा तो नहीं कि तू उनके पीछे अपनी जान खो दे।

चूँकि हमारी ख़्वाहिश (इच्छा और मर्ज़ी) ही नहीं कि लोगों को ईमान पर ज़बरदस्ती करें, अगर हम यह चाहते तो कोई ऐसी चीज़ आसमान से उतारते कि ये ईमान लाने पर मजबूर हो जाते, मगर हम तो इनका इख़्तियारी ईमान तलब करते हैं। एक और आयत में है:

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا..... الخ

अगर तेरा रब चाहे तो रू-ए-ज़मीन के तमाम लोग मोमिन हो जायें। क्या तू लोगों पर जब्र (ज़बरदस्ती) करेगा? जब तक कि वे मोमिन न हो जायें।

एक और आयत में है कि अगर तेरा रब चाहता तो तमाम लोगों को एक ही उम्मत बना देता। यह दीन व मज़हब का अलग-अलग और विभिन्न होना भी उसका मुक़र्रर किया हुआ और उसकी हिक्मत को ज़ाहिर करने वाला है। उसने रसूल भेज दिये, किताबें उतार दीं, अपनी दलील व हुज्जत क़ायम कर दी। इनसान को ईमान लाने में मुख़्तार कर दिया, अब वे जौनसी राह पर चाहे लग जायें।

जब कभी आसमानी किताब नाज़िल हुई बहुत से लोगों ने उससे मुँह मोड़ लिया, बावजूद तेरी पूरी

आरज़ू के अक्सर लोग बिना-ईमान ही रहेंगे। सूरः यासीन में फ़रमाया कि बन्दों पर अफ़सोस है, उनके पास जो भी रसूल आया उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया। एक और आयत में है कि हमने एक के बाद एक लगातार पैग़म्बर भेजे, लेकिन जिस उम्मत के पास उनका रसूल आया उसने अपने रसूल को झुठलाने में कमी न की।

यहाँ भी इसके बाद फ़रमाया कि इस नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ की क़ौम ने भी इसे झुठलाया है, इन्हें भी इसका बदला जल्द ही मिल जायेगा। इन ज़ालिमों को बहुत जल्दी अपने झुठलाने का अन्जाम मालूम हो जायेगा। फिर अपनी शान व शौकत, क़ुदरत व बड़ाई, इज़्ज़त व बुलन्दी बयान फ़रमाता है। जिस कलाम को और जिसके क़ासिद को तुम झूठा कह रहे हो वह इतना बड़ा क़ादिर व क़य्यूम है कि उसी ने सारी ज़मीन बनाई है, और इसमें जानदार और बेजान चीज़ें पैदा की हैं। खेत फल बाग़ व बहार सब उसी का रचाया हुआ है। इमाम शअ़बी रह. फ़रमाते हैं कि लोग ज़मीन की पैदावार हैं, जो जन्नती हैं वे करीम (सम्मानित और ख़ुशनसीब) हैं और जो दोज़ख़ी हैं वे बदबख़्त हैं। इसमें पैदा करने वाले की क़ुदरत की बहुत सी निशानियाँ हैं कि उसने फैली हुई ज़मीन को और ऊँचे आसमान को पैदा कर दिया, इसके बावजूद भी अक्सर लोग ईमान नहीं लाते बल्कि उल्टा नबियों को झूठा कहते हैं, उसकी किताबों को नहीं मानते, उसके हुक्मों के ख़िलाफ़ करते हैं, उसके मना किये हुए कामों में दिलचस्पी लेते हैं। बेशक तेरा रब हर चीज़ पर ग़ालिब है, उसके सामने मख़्लूक़ आ़जिज़ है। साथ ही वह अपने बन्दों पर मेहरबान है, नाफ़रमानों के अ़ज़ाब में जल्दी नहीं करता, ताख़ीर और ढील देता है, ताकि वे अपने बुरे आमाल से बाज़ आ जायें। लेकिन फिर भी जब वे सीधी राह पर नहीं आते तो उन्हें सख़्ती से पकड़ लेता है और उनसे पूरा इन्तिक़ाम (बदला) लेता है। हाँ जो तौबा करे, उसकी तरफ़ झुके और उसका फ़रमाँबरदार हो जाये वह उस पर उसके माँ-बाप से भी ज़्यादा रहम व करम करता है।

وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۙ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝ وَيَضِيْقُ صَدْرِىْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِىْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝ وَلَهُمْ عَلَىَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝ۚ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۝ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝	और (उन लोगों से कहिए कि) जब आपके रब ने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को पुकारा (और हुक्म दिया) कि तुम उन ज़ालिम लोगों के पास जाओ (10) यानी फ़िरऔ़न की क़ौम के, (और ऐ मूसा! देखो) क्या ये लोग (हमारे ग़ज़ब से) नहीं डरते? (11) उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मुझको यह अन्देशा है कि वे मुझको झुठलाने लगें। (12) और (तबई तौर पर ऐसे वक़्त में) मेरा दिल तंग होने लगता है और मेरी ज़बान (अच्छी तरह) नहीं चलती, इसलिए हारून के पास भी 'वही' भेज दीजिए। (13) और मेरे ज़िम्मे उन लोगों का एक जुर्म भी है, सो मुझको यह अन्देशा है कि वे लोग मुझको (रिसालत की तब्लीग़ से पहले) क़त्ल कर डालें। (14) इरशाद हुआ क्या मजाल है, सो (अब) तुम दोनों हमारे

Maktab E Ashraf

اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۝ؕ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِیْنَا وَلِیْدًا وَّلَبِثْتَ فِیْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِیْنَ ۝ۙ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِیْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ۝ قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّیْنَ ۝ؕ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِیْ رَبِّیْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِیْ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۝ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَیَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۝ؕ	अहकाम लेकर जाओ, हम (हिमायत और इमदाद से) तुम्हारे साथ हैं, सुनते हैं। (15) सो तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और (उससे) कहो कि हम रब्बुल-आलमीन के भेजे हुए हैं। (16) (और तौहीद की तरफ़ दावत के साथ यह हुक्म भी लाए हैं) कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। (17) (दोनों हज़रात गए और फ़िरऔन से सब मज़ामीन कह दिए) फ़िरऔन कहने लगा कि (आहा! तुम हो) क्या हमने तुम को बचपन में परवरिश नहीं किया, और तुम अपनी (उस) उम्र में बरसों रहा-सहा किए। (18) और तुमने अपनी वह हरकत भी की थी जो की थी, (यानी क़िब्ती को क़त्ल किया था) और तुम बड़े नाशुक्रे हो। (19) (हज़रत) मूसा ने जवाब दिया कि (वाक़ई) उस वक़्त वह हरकत मैं कर बैठा था और मुझसे ग़लती हो गई थी। (20) फिर जब मुझको डर लगा तो मैं तुम्हारे यहाँ से फ़रार हो गया फिर मुझको मेरे रब ने अक़्ल व समझ "यानी ख़ुसूसी सूझ-बूझ" अता फ़रमाई और मुझको पैग़म्बरों में शामिल कर दिया। (21) और (रहा परवरिश करने का एहसान जतलाना सो) वह यह नेमत है जिसका तू मुझ पर एहसान रखता है कि तूने बनी इस्राईल को सख़्त ज़िल्लत में डाल रखा था। (22)

मूसा अ़लैहिस्सलाम की फ़िरऔन को सही राह पर लाने की बेइन्तिहा कोशिश

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे, अपने रसूल और अपने कलीम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को जो हुक्म दिया था उसे बयान फ़रमा रहा है कि तूर की दायीं तरफ़ से आपको आवाज़ दी। आपसे सरगोशियाँ कीं (यानी धीमी आवाज़ में गुफ़्तगू की), आपको अपना रसूल और चुनिन्दा बनाया और आपको फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा जो ज़ुल्म पर कमर बाँधे हुए थे। ख़ुदा का डर और परहेज़गारी नाम को भी उनमें नहीं थी। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी चन्द कमज़ोरियाँ अल्लाह तआ़ला के सामने बयान कीं जो अल्लाह की इनायत व करम से दूर कर दी गईं जैसा कि सूरः तॉ-हा में आपके सवालात के इज़हार के

Maktab E Ashraf

बाद है:

قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى.

यानी ऐ मूसा! तेरे सब सवालात पूरे कर दिये गये।

यहाँ आपके ये उज़्र बयान हुए हैं कि मुझे डर है कि वे मुझे झुठला देंगे। मेरा सीना तंग है, मेरी ज़बान लुकनत वाली है (यानी बोलने में रवानी नहीं, बात साफ़ नहीं निकलती) तू हारून को भी मेरे साथ नबी बना दे, और मैंने उन्हीं में से एक क़िब्ती को बिना क़ुसूर के मार डाला था जिस सबब से मैंने मिस्र छोड़ा, अब जाते हुए डर लगता है कहीं वे मुझसे बदला न ले लें। अल्लाह तआ़ला ने जवाब दिया कि किसी बात का खटका न रखो, हम तुम्हारे साथी बना देते हैं और तुम्हें रोशन दलील देते हैं। वे लोग तुम्हें कोई ईज़ा (तकलीफ़) न पहुँचा सकेंगे। मेरा वायदा है कि तुमको ग़ालिब कर दूँगा, तुम मेरी आयतें लेकर जाओ तो सही, मेरी मदद तुम्हारे साथ रहेगी। मैं तुम्हारी और उनकी सब बातें सुनता रहूँगा।

जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है कि मैं तुम दोनों के साथ हूँ सुनता देखता रहूँगा। मेरी हिफ़ाज़त मेरी मदद मेरी ताईद तुम्हारे साथ है। तुम फ़िरऔन के पास जाओ और उस पर अपनी रिसालत का इज़हार करो। जैसे दूसरी आयत में है- उससे कहो कि हम दोनों में से हर एक ख़ुदा का भेजा हुआ है। फ़िरऔन से कहो कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को भेज दे, वे ख़ुदा के मोमिन हैं, तूने उन्हें अपना ग़ुलाम बना रखा है और उनकी दशा ख़राब कर रखी है, ज़िल्लत के साथ उनसे अपने काम लेता है, उन्हें तरह-तरह के अ़ज़ाब (यातनाओं) में जकड़ रखा है। अब उन्हें आज़ाद कर दे।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के इस पैग़ाम को फ़िरऔन ने बहुत ही अपमान और बेतवज्जोही से सुना और आपको डाँटकर कहने लगा कि क्या तू वही नहीं कि हमने तुझे अपने यहाँ पाला? मुद्दतों तक तेरी ख़बरगीरी करते रहे, उस एहसान का बदला तूने यह दिया कि हम में से एक शख़्स को मार डाला और हमारी नाशुक्री की? जिसके जवाब में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- ये सब बातें नुबुव्वत से पहले की हैं, जबकि मैं ख़ुद बेख़बर था।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. की क़िराअत में बजाय "मिनज़्ज़ॉल्लीन" के "मिनल-जाहिलीन" है, यानी मैं बेख़बर और नावाक़िफ़ों में से था। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने साथ ही फ़रमाया कि फिर वह पहला हाल जाता रहा, दूसरा दौर आया और ख़ुदा तआ़ला ने मुझे अपना रसूल बनाकर तेरी तरफ़ भेजा। अब अगर तू मेरा कहा मानेगा तो सलामती पायेगा, और अगर मेरी नाफ़रमानी करेगा तो हलाक होगा। उस ख़ता के बाद जबकि मैं तुम में से भाग गया उसके बाद अल्लाह का यह फ़ज़्ल मुझ पर हुआ। अब पुराने क़िस्से याद न कर मेरी आवाज़ पर लब्बैक कह, सुन अगर एक मुझ पर तूने एहसान किया है तो मेरी क़ौम पर तूने ज़ुल्म व ज़्यादती की है। उनको बुरी तरह ग़ुलाम बना रखा है। क्या मेरे साथ का सुलूक और उनके साथ की यह संगदिली और बुरा सुलूक बराबर हो जायेगा?

फ़िरऔन (से इस बात का कोई जवाब न बन पड़ा तो उस) ने कहा कि रब्बुल-आ़लमीन की माहियत (और हक़ीक़त) क्या है? (23) मूसा ने जवाब दिया कि वह रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ (मख़्लूक़ात) उनके	قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا

تَسْتَمِعُوْنَ ٥ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ
الْاَوَّلِيْنَ ٥ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ
اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ٥ قَالَ رَبُّ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ٥

दरमियान में है उसका, अगर तुमको यक़ीन करना हो (तो यह पता बहुत काफ़ी है)। (24) फ़िरऔ़न ने अपने आस-पास वालों से कहा कि तुम लोग सुनते हो (कि सवाल कुछ और जवाब कुछ)? (25) मूसा ने फ़रमाया कि वह परवर्दिगार है तुम्हारा और तुम्हारे पहले बुज़ुर्गों का। (26) फ़िरऔ़न (न समझा और) कहने लगा कि यह तुम्हारा रसूल जो (अपने ख़्याल के मुताबिक़) तुम्हारी तरफ़ रसूल होकर आया है, मजनूँ (मालूम होता) है। (27) मूसा ने फ़रमाया कि वह परवर्दिगार है पूरब और पश्चिम का, और जो कुछ उनके दरमियान में है उसका भी, अगर तुमको अ़क्ल हो (तो इसी से मान लो)। (28)

Maktab-E-Ashraf

फ़िरऔ़न का घमंड और सरकशी

चूँकि फ़िरऔ़न ने अपनी प्रजा को बहका रखा था और उन्हें यक़ीन दिला दिया था कि माबूद और रब सिर्फ़ मैं ही हूँ मेरे सिवा कोई नहीं। इसलिये सब का अ़क़ीदा यही था। जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं रब्बुल-आ़लमीन का रसूल हूँ तो उसने कहा कि रब्बुल-आ़लमीन है क्या चीज़? मक़सद यही था कि मेरे सिवा कोई रब ही नहीं, तू जो कह रहा है बिल्कुल ग़लत है। चुनाँचे एक दूसरी आयत में है कि उसने पूछाः

فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى.......... الخ

ऐ मूसा तुम दोनों का रब कौन है?

इसके जवाब में हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि जिसने हर एक की पैदाईश की है, और जो सब का हादी (सही राह दिखाने और हिदायत देने वाला) है। यहाँ पर यह याद रहे कि बाज़ मन्तिक़ियों ने यहाँ ठोकर खाई (यानी इस आयत का मतलब समझने में ग़लती की) है और कहा है कि फ़िरऔ़न का सवाल ख़ुदा की हक़ीक़त के बारे में था, यह बिल्कुल ग़लत है। इसलिये कि माहियत (हक़ीक़त) को तो जब पूछता जबकि पहले वजूद का क़ायल होता, वह तो सिरे से ख़ुदा के वजूद का ही मुन्किर था। अपने इस अ़क़ीदे को ज़ाहिर करता था और एक-एक को यही अ़क़ीदा घोट-घोटकर पिला रहा था, अगरचे इसके ख़िलाफ़ दलाईल व हुज्जतें उसके सामने खुल गये थे। पस उसके इस सवाल पर कि रब्बुल-आ़लमीन कौन है? हज़रत कलीमुल्लाह ने जवाब दिया कि वह सब का ख़ालिक़ है, सब का मालिक है, सब पर क़ादिर है, सब का माबूद है, बेमिस्ल है, अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। ऊपर की दुनिया आसमान और उसकी मख़्लूक़, नीचे की दुनिया ज़मीन और इसकी कायनात सब उसी की पैदा की हुई है। इनके दरमियान की चीज़ें हवा परिन्द वग़ैरह सब उसके सामने झुके हुए और उसके इबादत-गुज़ार हैं। अगर तुम्हारे दिल यक़ीन की दौलत

Maktab E Ashraf

से ख़ाली नहीं हुए, अगर तुम्हारी निगाहें रोशन हैं तो रब्बुल-आ़लमीन को ये औसाफ़ उसकी ज़ात के मानने के लिये काफ़ी हैं।

यह सुनकर फ़िरऔ़न से चूँकि कोई जवाब न बन सका इसलिये बात को मज़ाक़ में टालने के लिये लोगों को अपने सिखाये बताये हुए अ़क़ीदे पर जमाने के लिये उनकी तरफ़ देखकर कहने लगा लो और सुनो! यह मेरे सिवा किसी और को ही ख़ुदा मानता है! ताज्जुब की बात है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उसकी बेतवज्जोही पर घबराये नहीं और अल्लाह के वजूद के दलाईल बयान करने शुरू कर दिये कि तुम सब का और पहलों का मालिक और परवर्दिगार वही है। आज अगर तुम फ़िरऔ़न को ख़ुदा मानते हो तो ज़रा इसे सोचो कि फ़िरऔ़न से पहले यहाँ वालों का ख़ुदा कौन था? इसके वजूद से पहले आसमान व ज़मीन का वजूद था, इनका मूजिद (बनाने वाला और आविष्कारक) कौन था? बस वही मेरा रब है, वही तमाम जहानों का रब है, उसी का भेजा हुआ मैं हूँ।

फ़िरऔ़न दलाईल की इस क़ुव्वत की ताब न ला सका, कोई जवाब वन न पड़ता था। कहने लगा कि इसे छोड़ो, यह तो कोई पागल आदमी है। अगर ऐसा न होता तो मेरे सिवा दूसरे को रब क्यों मानता। हज़रत मूसा ने फिर भी अपनी तक़रीर को जारी रखा, उसके बेहूदा कलाम को नज़र-अन्दाज़ करके फ़रमाने लगे कि सुनो! पूरब व पश्चिम का मालिक जो है वही मेरा रब है। वह सूरज चाँद सितारे पूरब से चढ़ाता है पश्चिम की तरफ़ उतारता है। अगर फ़िरऔ़न अपने ख़ुदाई दावे में सच्चा है तो ज़रा एक दिन इसके ख़िलाफ़ करके दिखा दे कि पश्चिम से निकाले और पूरब को ले जाये, यही बात इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने ज़माने के बादशाह से मुनाज़रे के वक़्त कही थी। पहले तो ख़ुदा का वस्फ़ (सिफ़त और ख़ूबी) बयान किया कि वह जिलाता मारता है, लेकिन उस बेवक़ूफ़ ने जबकि इस वस्फ़ के ख़ुदा के साथ ख़ास होने का इनकार किया और कहने लगा यह तो मैं भी कर सकता हूँ। तो आपने बावजूद इसी दलील में बहुत सी गुंजाईश होने के इससे भी वाज़ेह दलील उसके सामने रखी कि अच्छा मेरा रब पूरब से सूरज निकालता है तू उसे पश्चिम से निकाल। अब तो हवास गुम हो गये।

इसी तरह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की ज़बानी ताबड़-तोड़ ऐसी एक के बाद एक वाज़ेह और रोशन दलीलें सुनकर फ़िरऔ़न के होश व हवास गुम हो गये। वह समझ गया कि अगर एक मैंने न माना तो क्या? ये वाज़ेह दलीलें इन सब पर तो असर कर जायेंगी। इसलिये अब अपनी क़ुव्वत को काम में लाने का इरादा कर लिया और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को डराने धमकाने लगा। जैसा कि आगे आ रहा है।

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰـهًا غَيْرِىْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ٥ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَىْءٍ مُّبِيْنٍ ٥ قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ٥ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ٥ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَآءُ

फ़िरऔ़न (आख़िर झुंझलाकर) कहने लगा कि अगर तुम मेरे सिवा कोई और माबूद तजवीज़ करोगे तो मैं तुमको जेलख़ाने भेज दूँगा। (29) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अगर मैं कोई साफ़ और खुली दलील पेश करूँ तब भी (न मानेगा)? (30) फ़िरऔ़न ने कहा कि अच्छा तो वह दलील पेश करो, अगर तुम सच्चे हो। (31) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी लाठी डाल दी तो वह एकदम एक नुमायाँ अज़्दहा बन

لِلنّٰظِرِيْنَ۝ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ۝ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ۝ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ۝ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ۝

गया। (32) और दूसरा (मोजिज़ा) अपना हाथ (गिरेबान में देकर) बाहर निकाला तो वह यकायक सब देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया। (33)

फ़िरऔन ने दरबार वालों से जो उसके आस-पास (बैठे) थे, कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है। (34) इसका (असल) मतलब यह है कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारी सरज़मीन से बाहर कर दे, सो तुम लोग क्या मश्विरा देते हो? (35) दरबारियों ने कहा कि आप उनको और उनके भाई को (थोड़ी) मोहलत दीजिए और शहरों में चपरासियों को (हुक्मनामे देकर) भेज दीजिए (36) कि वे (सब शहरों से) तमाम माहिर जादूगरों को आपके पास लाकर हाज़िर कर दें। (37)

Maktaba Ashraf

फ़िरऔन की हज़रत मूसा को धमकियाँ

जब मुबाहसे (गुफ़्तगू और मुनाज़रे) में फ़िरऔन हारा, दलील व बयान में ग़ालिब न आ सका तो क़ुव्वत व ताक़त का प्रदर्शन करने लगा और अपने ग़लबे व दबदबे से हक़ को दबाने का इरादा किया। कहने लगा कि ऐ मूसा! मेरे सिवा किसी और को माबूद बनायेगा तो जेल में सड़ा-सड़ाकर तेरी जान लूँगा। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम भी चूँकि वअ़ज़ व नसीहत तो कर ही चुके थे, आपने भी इरादा किया कि मैं भी इसे और इसकी क़ौम को दूसरी तरह क़ायल करूँ। तो फ़रमाने लगे अगर अपनी सच्चाई पर किसी ऐसे मोजिज़े का इज़हार करूँ कि तुम्हें भी क़ायल होना पड़े तब? फ़िरऔन इसके अ़लावा क्या कर सकता था कि कहा- अच्छा अगर तू सच्चा है तो पेश कर। आपने सुनते ही अपनी लकड़ी जो आपके हाथ में थी उसे ज़मीन पर डाल दिया, बस उसका ज़मीन पर पड़ना था कि वह एक अज़्दहा की शक्ल बन गई, और अज़्दहा भी बहुत बड़ा तेज़ कुचलियों वाला, हैबतनाक, डरावनी और ख़ौफ़नाक शक्ल वाला। मुँह फाड़े हुए फनफ़नाता हुआ। साथ ही अपने गिरेबान में हाथ डालकर निकाला तो वह चाँद की तरह चमकता हुआ निकला। फ़िरऔन की क़िस्मत चूँकि ईमान से ख़ाली थी, ऐसे खुले और स्पष्ट मोजिज़े देखकर भी अपनी बदबख़्ती पर अड़ा रहा। और तो कुछ बन न पड़ा अपने साथियों और दरबारियों से कहने लगा भई यह तो बड़ा जादूगर निकला। पस अपने वालों को इससे उसने रोकना चाहा कि कहीं वे इसे मोजिज़ा न समझ लें। उनसे कहने लगा कि ये तो जादू के चमत्कार हैं। बेशक इतना तो मैं भी मान गया कि यह अपने जादूगरी के फ़न में पूरा उस्ताद है।

फिर उन्हें हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की दुश्मनी पर आमादा करने के लिये और बात बनाई कि यह

ऐसे ही चमत्कार और कर्तब दिखा-दिखाकर लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह कर लेगा। और जब लोग इसके साथी हो जायेंगे तो यह बग़ावत का झंडा बुलन्द करेगा, फिर मग़लूब करके इस मुल्क में अपना क़ब्ज़ा कर लेगा, तो इसके ख़ात्मे की कोशिश अभी से करनी चाहिये। बतलाओ तुम्हारी राय क्या है? अल्लाह की क़ुदरत देखो कि फ़िरऔ़नियों से ख़ुदा ने वह बात कहलवाई जिसमें हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को आ़म तब्लीग़ का मौक़ा मिले और लोगों पर हक़ वाज़ेह (स्पष्ट) हो जाये। यानी जादूगरों को मुक़ाबले के लिये बुलवाना।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝ وَّقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُونَ ۝ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ۝ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۝ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝

ग़र्ज़ वे जादूगर एक मुक़र्ररा दिन के ख़ास वक़्त पर जमा किए गए। (38) और फिर (फ़िरऔ़न की तरफ़ से) लोगों को यह इश्तिहार दिया गया कि क्या तुम लोग जमा होगे? (यानी जमा हो जाओ) (39) ताकि अगर जादूगर ग़ालिब आ जाएँ तो हम उन्हीं की राह पर रहें। (40) फिर जब वे जादूगर (फ़िरऔ़न की पेशी में) आए तो फ़िरऔ़न से कहने लगे कि अगर हम (मूसा पर) ग़ालिब आ गए तो क्या हमको कोई बड़ा सिला (और इनाम) मिलेगा? (41) फ़िरऔ़न ने कहा, हाँ! और (उस पर ज़ायद यह कि) तुम उस सूरत में (हमारे) क़रीबी लोगों में दाख़िल हो जाओगे। (42) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उनसे फ़रमाया कि तुमको जो कुछ डालना हो (मैदान में) डालो। (43) सो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डालीं और कहने लगे कि फ़िरऔ़न के इक़बाल 'यानी बुलन्दी और इज़्ज़त' की क़सम बेशक हम ही ग़ालिब आएँगे। (44) फिर मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी लाठी डाली, सो डालने के साथ ही (अज़्दहा बनकर) उनके तमाम-के-तमाम बनाए हुए धन्धे को निगलना शुरू कर दिया। (45) सो (यह देखकर) जादूगर (ऐसे मुतास्सिर हुए कि) सब सज्दे में गिर पड़े। (46) (और पुकार-पुकारकर) कहने लगे कि हम ईमान ले आए रब्बुल-आ़लमीन पर। (47) जो मूसा और हारून का भी रब है। (48)

Maktab E Ashraf

हक़ व बातिल का आमना-सामना

बातिल की शिकस्त और हक़ की फ़तह

मुनाज़रा ज़बानी हो चुका, अब अ़मली मुनाज़रा हो रहा है। इस मुनाज़रे (मुक़ाबले) का ज़िक्र सूरः आराफ़, सूरः तॉ-हा और इस सूरत में है। क़िब्तियों का इरादा ख़ुदा के नूर को बुझाने का था और अल्लाह का इरादा उसकी नूरानियत को फैलाने का था। पस अल्लाह का इरादा ग़ालिब रहा। ईमान व कुफ़्र का मुक़ाबला जब कभी हुआ ईमान कुफ़्र पर ग़ालिब ही रहा। अल्लाह तआ़ला हक़ को बातिल पर ग़ालिब करता है, बातिल का सर फट जाता है और लोगों के बातिल इरादे हवा में उड़ जाते हैं। हक़ आ जाता है, बातिल भाग खड़ा होता है। यहाँ भी यही हुआ, हर-हर शहर में सिपाही भेजे गये, हर तरफ़ से बड़े नामी गिरामी जादूगर जमा किये गये जो अपने फ़न में कामिल और उस्तादे ज़माना थे। कहा गया है कि उनकी तायदाद बारह या पन्द्रह या सत्रह या उन्नीस या कुछ ऊपर तीस या अस्सी हज़ार की या इससे कम व बेश थी। सही तायदाद ख़ुदा ही को मालूम है। उन तमाम के उस्ताद और सरदार चार शख़्स थे- साबूर, ग़ाज़ूर, हत्हत और यस्फ़ी। चूँकि सारे मुल्क में ऐलान हो चुका था, हर तरफ़ से लोगों के गिरोह के गिरोह और जमाअ़त की जमाअ़त निर्धारित वक़्त से पहले मिस्र में जमा हो गये। चूँकि यह क़ायदा है कि प्रजा अपने राजा और बादशाह के मज़हब पर होती है, सब की ज़बान से यही निकलता था कि जादूगरों के ग़लबे के बाद हम उनकी राह लग जायेंगे। यह किसी ज़बान से न निकला कि जिस तरफ़ हक़ होगा हम उसी तरफ़ हो जायेंगे।

अब मौक़े पर फ़िरऔ़न मय अपनी आन-बान के निकला, तमाम सरदार और बड़े लोग साथ थे। लश्कर, फ़ौज, पलटन साथ थी। जादूगरों को अपने दरबार में सामने बुलवाया, जादूगरों ने बादशाह से अ़हद लेना चाहा इसलिये कहा कि जब हम ग़ालिब आ जायें तो बादशाह हमें अपने इनामात से तो नहीं भूल जायेंगे? फ़िरऔ़न ने जवाब दिया वाह! यह कैसे हो सकता है। न सिर्फ़ ईनामात बल्कि मैं तुम्हें अपने ख़ास रईसों (दरबार के सरदारों) में शामिल कर लूँगा और तुम हमेशा मेरे पास और मेरे साथ ही रहा करोगे। तुम मेरे मुक़र्रब बन जाओगे, मेरी पूरी की पूरी तवज्जोह तुम्हारी ही तरफ़ रहेगी। वे ख़ुशी-ख़ुशी मैदान की तरफ़ चल दिये। वहाँ जाकर मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहने लगे- बोलो तुम पहले अपनी उस्तादी दिखाते हो या हम दिखायें? हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया नहीं! तुम ही शुरूआ़त करो, ताकि तुम्हारे दिल में कोई अरमान न रह जाये। यह जवाब पाते ही उन्होंने अपनी छड़ियाँ और रस्सियाँ मैदान में डाल दीं और कहने लगे फ़िरऔ़न की इ़ज़्ज़त से ग़लबा हमारा ही रहेगा। जैसे जाहिल अ़वाम किसी काम को करते हैं तो कहते हैं कि यह फ़ुलाँ के सवाब से।

सूरः आराफ़ में है कि जादूगरों ने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, उन्हें दहशत में डाल दिया और बड़ा भारी जादू ज़ाहिर किया। सूरः तॉ-हा में है कि उनकी लाठियाँ और रस्सियाँ उनके जादू से हिलती और चलती मालूम होने लगीं....। अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपने हाथ में जो लकड़ी थी उसे मैदान में डाल दिया, जिसने सारे मैदान में उनकी जो कुछ नज़र-बन्दियों की चीज़ें थीं सब को हज़म कर लिया। पस हक़ ज़ाहिर हो गया और बातिल दब गया और उनकी की-कराई सब ग़ारत हो गई। यह कोई हल्की सी बात और मामूली दलील न थी, जादूगर तो इसे देखते ही मुसलमान हो गये कि जो शख़्स जादू के इतने माहिर उस्तादों के मुक़ाबले में आता है, उसका हाल जादूगरों का सा नहीं, वह कोई बात नहीं करता, यक़ीनन

हमारा जादू जादू है और इसके पास ख़ुदाई मोजिज़ा है। वे तो उसी वक़्त वहीं के वहीं ख़ुदा के सामने सज्दे में गिर गये और उसी मजमे में सबके सामने अपने ईमान लाने का ऐलान किया कि हम रब्बुल-आ़लमीन पर ईमान ला चुके। फिर अपना क़ौल और स्पष्ट करने के लिये यह भी साथ ही कह दिया कि रब्बुल-आ़लमीन से हमारी मुराद वह रब है जिसे हज़रत मूसा और हारून अपना रब कहते हैं। इतना बड़ा मोजिज़ा इस क़द्र इन्क़िलाब फ़िरऔ़न ने अपनी आँखों से देखा लेकिन मलऊन की क़िस्मत में ईमान न था, फिर भी आँखें न खुलीं और अपनी जान का दुश्मन हो गया और लगा अपनी ताक़त से हक़ को कुचलने। कहने लगा कि हाँ मैं जान गया, मूसा तुम सब का उस्ताद था, इसे तुमने पहले भेज दिया फिर तुम सब दिखाने को मुक़ाबले के लिये आये और योजना के मुताबिक़ मैदान में हार गये, और इसकी बात मान गये। पस तुम्हारा मक्र और फ़रेब खुल गया।

فَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۚ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ع	फ़िरऔ़न कहने लगा कि हाँ, तुम मूसा पर ईमान ले आए बिना इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? ज़रूर (मालूम होता है कि) यह (जादू में) तुम सबका उस्ताद है, जिसने तुमको जादू सिखाया है। सो अब तुमको हक़ीक़त मालूम हुई जाती है। (और वह यह है कि) मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूँगा, और तुम सबको सूली पर लटकाऊँगा (ताकि औरों को सबक़ मिले) (49) उन्होंने जवाब दिया कि कुछ हर्ज नहीं हम अपने मालिक के पास जा पहुँचेंगे। (50) (और) हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा परवर्दिगार हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे, इस वजह से कि हम (इस मौक़े पर हाज़िरीन में से) सबसे पहले ईमान लाए हैं। (51)

फ़िरऔ़न का मोमिनों से धमकी भरा ख़िताब

सुब्हानल्लाह! कैसे कामिल ईमान वाले लोग थे, हालाँकि अभी अभी ईमान में आये थे लेकिन उनके सब्र और दीन पर जमाव का क्या कहना कि फ़िरऔ़न जैसा ज़ालिम व जाबिर हाकिम पास खड़े होकर डरा धमका रहा है और वे निडर और बेख़ौफ़ होकर उसकी मंशा के ख़िलाफ़ जवाब दे रहे हैं। कुफ़्र के पर्दे दिल से दूर हो गये हैं, इस वजह से सीना ठोक कर मुक़ाबले पर आ गये हैं और माद्दी ताक़तों से बिल्कुल मरऊब नहीं होते। उनके दिलों में यह बात जम गई है कि मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास ख़ुदा का दिया हुआ मोजिज़ा है, यह जादू नहीं, उसी वक़्त हक़ को क़ुबूल किया।

फ़िरऔ़न इस इक़्दाम पर फ़ौरन आग-बगूला हो गया और कहने लगा कि तुमने तो मुझे कोई चीज़ ही न समझा, मुझसे बाग़ी हो गये, मुझसे पूछा भी नहीं और मूसा की मान ली? यह कहकर फिर इस ख़्याल से कि कहीं वहाँ मजमे में मौजूद लोगों पर इनके हार जाने, बल्कि मुसलमान हो जाने का असर न पड़े, उसने

उन्हें समझाने को एक बात बनाई और कहने लगा कि हाँ तुम सब इसके शागिर्द हो और यह तुम्हारा उस्ताद है। तुम सब छोटे हो और यह तुम्हारा बड़ा है। तुम सब को इसी ने जादू सिखाया है। उसके इस तकब्बुर और इल्ज़ाम को देखो, यह सिर्फ़ फ़िरऔन की बेईमानी और दग़ाबाज़ी थी वरना उससे पहले न जादूगरों ने हज़रत कलीमुल्लाह को देखा था न ख़ुदा के रसूल उनकी सूरत से आशना थे। पैग़म्बरे ख़ुदा तो जादू जानते ही न थे, किसी को क्या सिखाते?

यह बात कहकर फिर धमकाना शुरू किया और अपनी ज़ालिमाना रविश पर उतर आया। कहने लगा मैं तुम्हारे सब के हाथ-पाँव विपरीत दिशा से काट दूँगा और फिर तुम्हें सूली दूँगा, और एक को भी इस सज़ा से न छोडूँगा। सब ने एक ज़बान में जवाब दिया कि ऐ बादशाह! इसमें हर्ज ही क्या है? तुझसे जो हो सके कर गुज़र, हमें बिल्कुल परवाह नहीं। हमें तो ख़ुदा की तरफ़ लौटकर जाना है। हमें उसी से मिलना है, जितनी तकलीफ़ तू हमें देगा उतना अज्र व सवाब हमारा रब हमें अ़ता फ़रमायेगा। हक़ पर मुसीबत सहना बिल्कुल मामूली बात है, जिसका हमें बिल्कुल भी ख़ौफ़ नहीं। हमारी तो अब यही आरज़ू है कि हमारा रब हमारे पिछले गुनाहों पर हमारी पकड़ न करे, जो मुक़ाबला तूने हमसे करवाया है उसका वबाल हम पर से हट जाये और इसके लिये हमारे पास इसके सिवा कोई वसीला नहीं कि हम सबसे पहले ख़ुदा वाले बन जायें, ईमान में आगे बढ़ें। इस जवाब पर वह और भी बिगड़ा और उन सब को उसने क़त्ल करा दिया।

और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि मेरे (उन) बन्दों को रातों-रात (मिस्र से बाहर) निकाल ले जाओ, (और फ़िरऔन की जानिब से) तुम लोगों का पीछा किया जाएगा। (52) फ़िरऔन ने (पीछा करने की तदबीर के लिए आस-पास के) शहरों में चपरासी दौड़ा दिए। (53) (और यह कहला भेजा) कि ये लोग (यानी बनी इस्राईल हमारे मुक़ाबले में) थोड़ी-सी जमाअ़त है। (54) और उन्होंने हमको बहुत ग़ुस्सा दिलाया है। (55) और हम सब एक हथियारों से लेस जमाअ़त (और बाक़ायदा फ़ौज) हैं। (56) ग़र्ज़ कि हमने उनको बाग़ों से और चश्मों से "निकाला" (57) और ख़ज़ानों से और उम्दा मकानात से निकाल बाहर किया। (58) (हमने उनके साथ तो) यूँ किया, और उनके बाद बनी इस्राईल को उनका मालिक बनाया। (59)	وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ○ فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ○ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ○ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ○ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ○ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ○ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ○ كَذٰلِكَ ۗ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ○

बनी इस्राईल का मुसीबतों और ग़ुलामी से छुटकारा

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी नुबुव्वत का बहुत सारा ज़माना गुज़ारा, ख़ुदा की आयतें और

दलीलें उन पर वाज़ेह कर दीं, लेकिन उनका सर नीचा न हुआ। उनका तकब्बुर न टूटा, उनकी बद-दिमाग़ी में कोई फ़र्क़ न आया। तो अब इसके अ़लावा कोई चीज़ बाक़ी न रही कि उन पर अ़ज़ाबे ख़ुदा आ जाये और ये ग़ारत हों। मूसा अ़लैहिस्सलाम को ख़ुदा की 'वही' आई कि रातों-रात बनी इस्राईलियों को लेकर मेरे हुक्म के मुताबिक़ चल दो। बनी इस्राईल ने उस मौक़े पर क़िब्तियों से बहुत से ज़ेवर बतौर माँगे के लिये और चाँद चढ़ने के वक़्त चुप-चाप चल दिये। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि उस रात चाँद ग्रहन था। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने रास्ते में दरियाफ़्त फ़रमाया कि हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र कहाँ है? बनी इस्राईल की एक बुढ़िया ने क़ब्र बतला दी। आपने ताबूते यूसुफ़ अपने साथ उठा लिया। कहा जाता है कि ख़ुद आपने ही उसे उठाया था। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की वसीयत थी कि बनी इस्राईल जब यहाँ से जाने लगें तो आपका ताबूत अपने साथ लेते जायें।

इब्ने अबी हातिम की एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. किसी देहाती के यहाँ मेहमान हुए उसने आपकी बड़ी ख़ातिर-तवाज़ो की, वापसी में आपने फ़रमाया कभी हमसे मदीने में भी मिल लेना। कुछ दिनों बाद देहाती आपके पास आया। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कुछ चाहिये? उसने कहा हाँ एक तो ऊँटनी दीजिये मय होदज के, और एक बकरी दीजिये जो दूध देती हो। आपने फ़रमाया अफ़सोस तूने बनी इस्राईल की बुढ़िया जैसा सवाल न किया। सहाबा रज़ि. ने पूछा वह वाक़िआ क्या है? आपने फ़रमाया जब हज़रत कलीमुल्लाह बनी इस्राईल को लेकर चले तो रास्ता भूल गये, हज़ार कोशिश की लेकिन राह नहीं मिली। आपने लोगों को जमा करके पूछा यह क्या अंधेरा है? तो उलेमा-ए-बनी इस्राईल ने कहा बात यह है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने आख़िरी वक़्त हमसे अ़हद लिया था कि जब हम मिस्र से चलें तो आपके ताबूत को भी यहाँ से अपने साथ लेते जायें। हज़रत मूसा कलीमुल्लाह ने दरियाफ़्त किया कि तुममें से कौन जानता है कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र कहाँ है? सब ने इनकार कर दिया कि हम नहीं जानते, बल्कि सिवाय एक बुढ़िया के और कोई भी आपकी क़ब्र से वाक़िफ़ नहीं। आपने उस बुढ़िया के पास आदमी भेजकर उससे कहलवाया कि मुझे हज़रत यूसुफ़ की क़ब्र दिखला। बुढ़िया ने कहा हाँ दिखलाऊँगी लेकिन पहले अपना हक़ ले लूँ। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा तू क्या चाहती है? उसने जवाब दिया कि जन्नत में आपका साथ मुझे मयस्सर हो। आप पर उसका यह सवाल बहुत भारी पड़ा, उसी वक़्त 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम) आई कि इसकी बात मान लो, इसकी शर्त मन्ज़ूर कर लो। अब वह आपको एक झील के पास ले गई जिसके पानी का रंग भी बदल चुका था। कहा कि इसका पानी निकाल डालो, जब पानी निकाल डाला और ज़मीन नज़र आनी लगी तो कहा अब यहाँ खोदो, खोदना शुरू हुआ तो क़ब्र ज़ाहिर हो गई, उसे साथ ले लिया। अब जो चलने लगे तो रास्ता साफ़ नज़र आने लगा और सीधी राह पर लग गये। लेकिन यह हदीस बहुत ही ग़रीब है, बल्कि दुरुस्त यह है कि यह मौक़ूफ़ है, यानी रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान ही नहीं। वल्लाहु आलम।

ये लोग तो अपने रास्ते लग गये, उधर फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों की सुबह के वक़्त जो आँख खुलती है तो चौकीदार ग़ुलाम वग़ैरह कोई नहीं, सख़्त नाराज़गी और ग़ुस्सा दिखाने लगे और मारे ग़ुस्से के सुर्ख़ हो गये। जब यह मालूम हुआ कि बनी इस्राईल तो रात को सब के सब फ़रार हो गये हैं तो और भी सन्नाटा छा गया। उसी वक़्त फ़िरऔ़न अपने लश्कर जमा करने लगा, सब को जमा करके उनसे कहने लगा कि यह बनी इस्राईल का एक छोटा सा गिरोह है, ये मामूली से ज़लील और बेहैसियत लोग हैं। हर वक़्त उनसे हमें कोफ़्त होती रहती है, तकलीफ़ पहुँचती रहती है और फिर हर वक़्त हमें उनकी तरफ़ से खटका लगा रहता

है। यह मायने 'हाज़िरून' की किराअत पर हैं। पहले बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त ने इसे 'हज़िरून' भी पढ़ा है, यानी हम हथियार-बन्द हैं। मैं इरादा कर चुका हूँ कि अब उन्हें उनकी सरकशी का मज़ा चखा दूँ। उन सब को एक साथ घेरकर गाजर मूली की तरह काटकर डाल दो। अल्लाह की शान कि यह बात उसी पर लौट पड़ी और वह मय अपनी क़ौम और लाव-लश्कर के ब-यक वक़्त हलाक हुआ। उस पर और उसके पैरोकारों पर अल्लाह की लानत हो।

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि ये लोग अपनी ताक़त और भारी संख्या के घमंड पर बनी इस्राईल का पीछा करने और उन्हें नेस्त व नाबूद करने के इरादे से निकल खड़े हुए। इस बहाने हमने उन्हें उनके बाग़ों से चश्मों और नहरों से ख़ज़ानों और सजे हुए व रौनक़दार मकानों से बाहर निकाला और जहन्नम में पहुँचा दिया। वे अपने ऊँचे व बुलन्द, शान व शौकत वाले महलों, हरे भरे बाग़ों, जारी नहरों, ख़ज़ानों बादशाहत, मुल्क, तख़्त व ताज, माल व ओ़हदे सबको छोड़कर बनी इस्राईल के पीछ मिस्र से निकले। और हमने उनकी ये तमाम चीज़ें बनी इस्राईल को दिलवा दीं, जो आज तक पस्त और ख़स्ता हाल थे, ज़लील व नादार थे। चूँकि हमारा इरादा हो चुका था कि हम उन कमज़ोरों को उभारें और इन दबे-कुचले लोगों को तरक़्क़ी इनायत फ़रमायें और इन्हें सरदार और वारिस बना दें, वह इरादा हमने पूरा किया।

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ۝ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝

ग़र्ज़ कि सूरज निकलने के वक़्त उनको पीछे से जा लिया। (60) फिर दोनों जमाअ़तें (आपस में ऐसी क़रीब हुईं कि) एक-दूसरे को देखने लगीं, तो मूसा के साथ वाले (घबराकर) कहने लगे कि (ऐ मूसा!) बस हम तो हाथ आ गए। (61) (मूसा अ़लैहि. ने) फ़रमाया हरगिज़ नहीं, क्योंकि मेरे साथ मेरा रब है, वह मुझको (दरिया से निकलने का) अभी रास्ता बतला देगा। (62) फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी को दरिया पर मारो, चुनाँचे (उन्होंने उस पर लाठी मारी जिससे) वह (दरिया) फट गया, और हर हिस्सा इतना (बड़ा) था जैसा बड़ा पहाड़। (63) और हमने दूसरे फ़रीक़ को भी उस जगह के क़रीब पहुँचा दिया। (64) और (क़िस्से का अन्जाम यह हुआ कि) हमने मूसा को और उनके साथ वालों को सबको बचा लिया। (65) फिर दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (66) (और) इस वाक़िए में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उन (काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (67) और आपका रब बड़ा ज़बरदस्त है (और) बड़ा मेहरबान है। (68)

Maktaba E Ashraf

दुनिया का सबसे बड़ा सरकश विनाशक मौजों की भेंट

फ़िरऔ़न अपने तमाम लाव-लश्कर को, तमाम रिआ़या और प्रजा को, मिस्र और मिस्र से बाहर के लोगों को और अपनी क़ौम के लोगों को लेकर दन्दनाता हुआ बड़ी शान से बनी इस्राईल को तहस-नहस करने के इरादे से चला। बाज़ कहते हैं कि उनकी तायदाद लाखों से भी ज़्यादा थी, उनमें से एक लाख तो सिर्फ़ स्याह रंग के घोड़ों पर सवार थे, लेकिन यह ख़बर अहले किताब की है जो विचारनीय है। हज़रत कअ़ब से तो मन्क़ूल है कि आठ लाख ऐसे घोड़ों पर सवार थे। हमारा तो ख़्याल है कि ये सब बनी इस्राईल की बढ़ा-चढ़ाकर बयान की हुई रिवायतें हैं। इतना तो क़ुरआन से साबित है कि फ़िरऔ़न अपनी पूरी जमाअ़त को लेकर चला मगर क़ुरआन ने तायदाद बयान नहीं फ़रमाई, न इसका इल्म हमें कुछ नफ़ा देने वाला है। सूरज निकलने के वक़्त उनके पास यह पहुँच गया। काफ़िरों ने मोमिनों और मोमिनों ने काफ़िरों को देख लिया। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथियों के मुँह से बेसाख़्ता निकल गया कि ऐ मूसा! अब बतलाओ क्या करें, हम तो पकड़ लिये गये। आगे दरिया-ए-क़ुल्ज़ुम है पीछे फ़िरऔ़न का टिड्डी लश्कर है, न ठहर ही सकते हैं और न भागने ही का मौक़ा है।

ज़ाहिर है कि नबी और ग़ैर-नबी का ईमान बराबर नहीं होता। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम निहायत ठंडे दिल से जवाब देते हैं कि घबराओ नहीं, तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं पहुँच सकती। मैं अपनी राय से तुम्हें लेकर नहीं निकला बल्कि अह्कमुल-हाकिमीन के हुक्म से तुम्हें लेकर चला हूँ। वह वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। उनके अगले हिस्से पर हारून अ़लैहिस्सलाम थे। उन्हीं के साथ यूशा बिन नून थे और आले फ़िरऔ़न का मोमिन शख़्स था। और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम लश्कर के आख़िरी हिस्से में थे। मारे घबराहट और रास्ता न पाने के सारे बनी इस्राईल हैरान व परेशान होकर ठहर गये और बेचैनी के साथ हज़रत मूसा से दरियाफ़्त करने लगे कि क्या इस राह पर चलने का ख़ुदा का हुक्म था? आपने फ़रमाया हाँ। इतनी देर में तो फ़िरऔ़नी लोग सर पर आ पहुँचे। उसी वक़्त ख़ुदा की 'वही' आई कि ऐ नबी! इस दरिया पर अपनी लकड़ी मारो और फिर मेरी क़ुदरत का करिश्मा देखो। आपने लकड़ी मारी जिसके लगते ही अल्लाह के हुक्म से पानी फट गया। उस परेशानी के वक़्त में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ माँगी। इब्ने अबी हातिम में इन अलफ़ाज़ में वह दुआ़ नक़ल की गयी है:

يَامَنْ كَانَ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَالْمُكَوِّنُ كُلَّ شَيْءٍ وَالْكَائِنُ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ اِجْعَلْ لَنَا مَخْرَجًا.

यानी ऐ वह ज़ाते पाक जो हर चीज़ से पहले था और हर चीज़ को वजूद बख़्शने वाला है, और सबके बाद भी रहेगा, हमारे लिये कोई रास्ता निकाल दे।

यह दुआ़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मुँह से निकली ही थी कि ख़ुदा की 'वही' आई कि दरिया पर अपनी लकड़ी मारो। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि उस रात अल्लाह तआ़ला ने दरिया की तरफ़ पहले से ही अपना पैग़ाम भेज दिया था कि जब मेरे पैग़म्बर मूसा आयें और तुझे लकड़ी मारें तो आपकी सुनना और मानना। पस समुद्र (दरिया) में उस रात भर मौजों का उफान रहा, उसकी मौजें इधर-उधर टकराती फिरीं कि न मालूम अल्लाह के पैग़म्बर कब और किधर से आ जायें और मुझे लकड़ी मार दें। ऐसा न हो कि मुझे ख़बर न लगे और मैं उनके हुक्म का पालन न कर सकूँ। जब बिल्कुल किनारे पहुँच गये तो आपके साथी हज़रत यूशा बिन नून ने फ़रमाया ऐ नबी! अल्लाह का आपको क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया यही

कि मैं समुद्र पर अपनी लकड़ी मारूँ। उन्होंने कहा फिर क्या देर है? चुनाँचे आपने लकड़ी मारकर फ़रमाया ख़ुदा के हुक्म से तू फट और मुझे चलने का रास्ता दे दे। बस उसी वक़्त वह फट गया, रास्ते बीच में साफ़ नज़र आने लगे और उसके आस-पास पानी पहाड़ की तरह खड़ा हो गया। उसमें बारह रास्ते निकल आये। बनी इस्राईल के क़बीले भी बारह थे। फिर अल्लाह की क़ुदरत से हर दो जमाअ़तों के बीच जो पहाड़ था उसमें ताक़ से बन गये ताकि हर एक दूसरे को ख़ैरियत से आता देखे, पानी दीवारों की तरह हो गया और हवा को हुक्म हुआ उसने बीच से पानी और ज़मीन को ख़ुश्क करके रास्ते साफ़ कर दिये। पस उस ख़ुश्क रास्ते से आप मय अपनी क़ौम के बिना खटके जाने लगे।

फिर फ़िरऔ़नियों को अल्लाह तआ़ला ने दरिया के क़रीब कर दिया। फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इस्राईल सबको तो निजात मिल गई और बाक़ी सब काफ़िर उसी दरिया में ग़र्क़ हो गये। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि फ़िरऔ़न को जब बनी इस्राईल के भाग जाने की ख़बर मिली तो उसने एक बकरी ज़िबह की और कहा इसकी खाल उतरे इससे पहले मेरे पास छह लाख का लश्कर जमा हो जाना चाहिये। मूसा अ़लैहिस्सलाम भागम-भाग दरिया के किनारे जब पहुँच गये, दरिया से फ़रमाने लगे तू फट जा, कहीं हट जा और हमें जगह दे दे। उसने कहा यह क्या तकब्बुर की बातें कर रहे हो? क्या मैं इससे पहले भी कभी फटा हूँ? और हटकर किसी इनसान को जगह दी है, जो तुझे दूँगा? आपके साथ जो बुज़ुर्ग शख़्स थे उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के नबी! क्या यही रास्ता और यही जगह ख़ुदा की बतलाई हुई है? आपने फ़रमाया हाँ! यही। उन्होंने कहा फिर न तो आप झूठे हैं न आपसे ग़लत फ़रमाया गया है। आपने दोबारा यही कहा, फिर भी कुछ न हुआ, उस बुज़ुर्ग शख़्स ने दोबारा भी यही सवाल किया, आपने यही जवाब दिया। उसी वक़्त 'वही' उतरी कि समुद्र पर अपनी लकड़ी मारो। अब आपको ख़्याल आया और लकड़ी मारी, लकड़ी लगते ही समुद्र ने रास्ता दे दिया। बारह राहें ज़ाहिर हुईं हर फ़िर्क़ा अपने रास्ते को जान गया और अपनी राह लग गया। और एक दूसरे को देखते हुए पूरे इत्मीनान के साथ चल दिये। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तो बनी इस्राईल को लेकर पार निकल गये और फ़िरऔ़नी उनका पीछा करने में समुद्र में आ गये कि ख़ुदा के हुक्म से समुद्र का पानी जैसा था वैसा हो गया और सब को डुबो दिया। जब सबसे आख़िरी बनी इस्राईली निकला और सबसे आख़िरी क़िब्ती समुद्र में आ गया उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला के हुक्म से समुद्र का पानी एक हो गया और सारे के सारे क़िब्ती एक-एक करके डुबो दिये गये।

इसमें बड़ी इब्रतनाक निशानी है कि किस तरह गुनाहगार बरबाद होते हैं और नेक किरदार वाले कामयाब और ख़ुश होते हैं। लेकिन फिर भी अक्सर लोग ईमान जैसी दौलत से मेहरूम हैं। बेशक तेरा रब अ़ज़ीज़ (ग़ालिब) व रहीम है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ
وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا
فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ۝ قَالَ هَلْ
يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۝ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ

और आप उन लोगों के सामने इब्राहीम (अ़लैहि.) का क़िस्सा बयान कीजिए। (69) जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो? (70) उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत किया करते हैं, (और) हम उन्हीं की (इबादत) पर जमे बैठे रहते हैं। (71) (इब्राहीम अ़लैहि.

أَوْ يَضُرُّوْنَ ۝ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا

كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ

تَعْبُدُوْنَ ۝ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ۝

فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

ने) फ़रमाया कि क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इनको पुकारा करते हो? (72) या ये तुमको कुछ नफ़ा पहुँचाते हैं या ये तुमको कुछ नुक़सान पहुँचा सकते हैं? (73) उन लोगों ने कहा कि (इनकी इबादत करने की यह वजह तो) नहीं, बल्कि हमने अपने बड़ों को इसी तरह करते देखा है। (74) (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि भला तुमने उनको (ग़ौर से) देखा भी जिनकी तुम इबादत किया करते हो? (75) तुम भी और तुम्हारे पुराने बड़े भी (76) कि ये (जिनकी इबादत की जा रही है) मेरे (यानी तुम्हारे) लिए नुक़सान का सबब हैं, मगर हाँ रब्बुल-आ़लमीन (की इबादत पूरी तरह नफ़ा देने वाली है) (77)

Maktab E Ashraf

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की तब्लीग़ी कोशिशें

तमाम तौहीद वालों (अल्लाह को एक मानने वालों) के सरदार, ख़ुदा के बन्दे, रसूल और अल्लाह के दोस्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ बयान हो रहा है। हुज़ूर सल्ल. को हुक्म हो रहा है कि आप अपनी उम्मत को यह वाक़िआ़ सुना दें ताकि वे इख़्लास, तवक्कुल और एक ख़ुदा की इबादत और शिर्क और मुश्रिकों से बेज़ारी में आपकी पैरवी करें। आप पहले दिन से ख़ुदा की तौहीद पर क़ायम थे और आख़िरी दिन तक उसी तौहीद पर जमे रहे। अपनी क़ौम और अपने बाप से फ़रमाया कि यह बुत-परस्ती (बुतों को पूजना) क्या कर रहे हो? उन्होंने जवाब दिया कि हम तो पुराने वक़्त से इन बुतों की बन्दगी और इबादत करते चले आये हैं। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उनकी ग़लती को उन पर वाज़ेह करके उनकी ग़लत रविश बेनक़ाब करने के लिये एक बात और भी बयान फ़रमाई कि तुम जो इनसे दुआ़यें करते हो और दूर नज़दीक से इनको पुकारते हो, तो क्या ये तुम्हारी पुकार सुनते हैं? या जिस नफ़े के हासिल करने के लिये तुम इन्हें पुकारते हो वह नफ़ा तुम्हें पहुँचा सकते हैं? या अगर तुम इनकी इबादत छोड़ दो तो क्या ये तुम्हें नुक़सान पहुँचा सकते हैं? इसका जवाब जो क़ौम की तरफ़ से मिला वह साफ़ ज़ाहिर है कि उनके माबूद इन कामों में से किसी काम को नहीं कर सकते। उन्होंने साफ़ कहा कि हम तो अपने बड़ों की तक़लीद (पैरवी और अनुसरण) की वजह से बुत-परस्ती पर जमे हुए हैं। इसके जवाब में हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने उनसे और उनके झूठे माबूदों से अपनी बराअत और बेज़ारी (यानी बेताल्लुक़ी और नफ़रत) का एलान कर दिया। साफ़ फ़रमा दिया कि तुम और तुम्हारे माबूद जिनकी तुम और तुम्हारे बाप-दादा पूजा करते रहे, उन सबसे मैं बेज़ार हूँ। वे सब मेरे दुश्मन हैं, मैं सिर्फ़ सच्चे रब्बुल-आ़लमीन का इबादत करने वाला हूँ। मैं ख़ालिस तौहीद (अल्लाह को एक मानने) पर हूँ। जाओ तुमसे और तुम्हारे माबूदों से जो हो सके कर लो।

Maktab E Ashraf

अल्लाह के नबी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से यही फ़रमाया था कि तुम और तुम्हारे सारे माबूद मिलकर अगर मेरा कुछ बिगाड़ सकते हो तो सोचना काहे का। हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया था कि मैं तुमसे और ख़ुदा-ए-वाहिद के सिवाय और तमाम माबूदों से बेज़ार हूँ। तुम सब अगर मुझे कुछ नुक़सान पहुँचा सकते हो तो पहुँचा दो। मेरा भरोसा अपने रब की ज़ात पर है, तमाम जानदार उसके मातहत हैं, वह सीधी राह वाला है। इसी तरह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे माबूदों से बिल्कुल नहीं डरता, डर तो तुम्हें मेरे रब से रखना चाहिये जो सच्चा अल्लाह है। आपने ऐलान कर दिया था कि मुझमें और तुम में अ़दावत (दुश्मनी और बैर) है, जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ। मैं ऐ बाप! तुझसे, तेरी क़ौम और तेरे माबूदों से बरी हूँ। सिर्फ़ अपने रब से आरज़ू है कि वह मुझे सही रास्ता दिखलाये। इसी को यानी "ला इला-ह इल्लल्लाहु" को उन्होंने कलिमा बना लिया।

जिसने मुझको (और इसी तरह सबको) पैदा किया, फिर वही मुझको (मेरी मस्लेहतों की तरफ़) रहनुमाई करता है। (78) और जो कि मुझको खिलाता-पिलाता है। (79) और जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो वही मुझको शिफ़ा देता है। (80) और जो मुझको (वक़्त पर) मौत देगा। फिर (क़ियामत के दिन) मुझको ज़िन्दा करेगा। (81) और जिससे मुझको यह उम्मीद है कि मेरी ग़लतियों को क़ियामत के दिन माफ़ कर देगा। (82)	اَلَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ یَهْدِیْنِۙ۝ وَالَّذِیْ هُوَ یُطْعِمُنِیْ وَیَسْقِیْنِۙ۝ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِۙ۝ وَالَّذِیْ یُمِیْتُنِیْ ثُمَّ یُحْیِیْنِۙ۝ وَالَّذِیْٓ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓئَتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِؕ۝

अल्लाह की ज़ात पर यह यक़ीन

हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम अपने रब की सिफ़ात बयान फ़रमाते हैं कि मैं इन सिफ़तों वाले रब का ही आ़बिद (इबादत करने वाला) हूँ। उसके सिवा और किसी की इबादत नहीं करूँगा। पहला वस्फ़ यह कि वह मेरा ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है, उसी ने अन्दाज़ा मुक़र्रर किया है और वही मख़्लूक़ात की उसकी तरफ़ रहबरी करता है। दूसरा वस्फ़ मेरे रब का यह है कि वह रज़्ज़ाक़ है, आसमान व ज़मीन के तमाम असबाब (साधन) उसी ने मुहैया किये हैं। बादलों का उठाना, फैलाना, उनसे बारिश बरसाना, उससे ज़मीन को ज़िन्दा करना, फिर पैदावार का उगाना, उसी का काम है। वही मीठा और प्यास बुझाने वाला पानी हमें देता है और अपनी मख़्लूक़ को भी। ग़र्ज़ खिलाने पिलाने वाला वही है, साथ ही बीमारी तन्दुरुस्ती भी उसी के हाथ में है, लेकिन ख़लीलुल्लाह का कमाले अदब देखिये कि बीमारी की निस्बत तो अपनी तरफ़ की और शिफ़ा की निस्बत अल्लाह तआ़ला की तरफ़, अगरचे बीमारी भी उसी की तरफ़ से मुक़द्दर की हुई है और उसी की बनाई हुई चीज़ है। यही बारीकी सूरः फ़ातिहा की दुआ़ में भी है कि इनाम व हिदायत की निस्बत तो ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ की है और ग़ज़ब के करने वाले को ज़िक्र नहीं किया, और गुमराही बन्दे की तरफ़ मन्सूब कर दी है।

सूरः जिन्न में जिन्नात का क़ौल भी मुलाहिज़ा हो, जहाँ उन्होंने कहा है कि हमें नहीं मालूम कि ज़मीन

वाली मख़्लूक़ के साथ बुराई का इरादा किया गया है या उनके साथ उनके रब ने भलाई का इरादा किया है। यहाँ भी भलाई की निस्बत रब की तरफ़ की गई है और बुराई के इरादे में यह निस्बत ज़ाहिर नहीं की गई। इसी तरह यह आयत है कि जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो मेरी शिफ़ा पर सिवाय उस ख़ुदा के और कोई क़ादिर नहीं। दवा में तासीर पैदा करना भी उसी के बस की चीज़ है। मौत व ज़िन्दगी पर क़ादिर भी वही है। शुरूआ़त व इन्तिहा उसी के हाथ में है। उसी ने पहली बार पैदा किया है वही दोबारा लौटायेगा। दुनिया और आख़िरत में गुनाहों की बख़्शिश पर भी वही क़ादिर है। वह जो चाहता है करता है, ग़फ़ूर व रहीम (माफ़ करने और रहम करने वाला) वही है।

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَّأَلْحِقْنِي بِالصّٰلِحِيْنَ ٥ وَاجْعَلْ لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ٥ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ٥ وَاغْفِرْ لِأَبِيْٓ إِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ٥ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ٥ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ٥ إِلَّا مَنْ أَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ٥	ऐ मेरे रब! मुझको हिक्मत अ़ता फ़रमा और (अपनी निकटता के दर्जों में) मुझको (आला दर्जे के) नेक लोगों में शामिल फ़रमा। (83) और मेरा ज़िक्र आगे आने वालों में जारी रख। (84) और मुझको जन्नतुन्-नअ़ीम के हक़दारों में से कर। (85) और मेरे बाप (को ईमान की तौफ़ीक़ देकर उस) की मग़फ़िरत फ़रमा, कि वह गुमराह लोगों में है। (86) और जिस दिन सब ज़िन्दा होकर उठेंगे उस दिन मुझको रुस्वा न करना। (87) उस दिन में कि (निजात के लिए) न माल काम आएगा और न औलाद। (88) मगर हाँ (उसकी निजात होगी) जो अल्लाह तआ़ला के पास (कुफ़्र व शिर्क से) पाक दिल लेकर आएगा। (89)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़

'हुक्म' से मुराद आ़म अ़क्ल, ख़ुदाई किताब और नुबुव्वत है। आप अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि मुझे यह चीज़ अ़ता फ़रमाकर दुनिया और आख़िरत में नेक लोगों में शामिल रख। चुनाँचे सही हदीस में है कि रसूले करीम सल्ल. ने भी आख़िरी वक़्त में दुआ़ माँगी थी कि ख़ुदाया आला रफ़ीक़ों में मिला दे। तीन बार यही दुआ़ की। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल. की यह दुआ़ भी नक़ल की गयी है:

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَمِتْنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَلْحِقْنَا بِالصَّالِحِيْنَ غَيْرَ خَزَايَا وَلَا مُبَدِّلِيْنَ.

यानी ऐ अल्लाह! हमें इस्लाम पर ज़िन्दा रख, और मुसलमान होने की हालत में हमें मौत दे, और नेकों में मिला दे। इस हाल में कि न रुस्वाई हो न तब्दीली।

फिर और दुआ़ करते हैं कि मेरे बाद भी मेरा भला ज़िक्र लोगों में जारी रहे। लोग नेक बातों में मेरी पैरवी करते रहें। ख़ुदा तआ़ला ने भी उनका ज़िक्र पिछली नस्लों में बाक़ी रखा, हर एक आप पर सलाम भेजता है। ख़ुदा किसी नेक बन्दे की नेकी अकारत और ज़ाया नहीं करता। एक जहान है जिनकी ज़बानें

Maktab E Ashraf

आपकी तारीफ़ व तौसीफ़ से तर हैं। दुनिया में भी ख़ुदा ने उन्हें ऊँचाई और भलाई दी, उमूमन हर मज़हब के लोग हज़रत इब्राहीम से मुहब्बत रखते हैं और दुआ़ करते हैं कि मेरा अच्छा ज़िक्र दुनिया जहान में बाक़ी रहे, वहाँ आख़िरत में भी जन्नती बनाया जाऊँ। और ख़ुदाया मेरे गुमराह बाप को भी माफ़ फ़रमा, लेकिन अपने काफ़िर बाप के लिये यह इस्तिग़फ़ार (माफ़ी तलब) करना एक वायदे पर था। जब आप पर उसका दुश्मने ख़ुदा होना खुल गय। कि वह कुफ़्र पर ही मरा तो आपके दिल से उसकी इ़ज़्ज़त व मुहब्बत जाती रही और इस्तिग़फ़ार करना भी छोड़ दिया।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बड़े साफ़-दिल और बुर्दबार थे। हमें भी जहाँ हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की पैरवी करने का हुक्म मिला है वहीं यह भी फ़रमा दिया गया है कि इस बात में उनकी पैरवी न करना (यानी किसी काफ़िर के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ न करना)।

फिर दुआ़ करते हैं कि मुझे क़ियामत के दिन की रुस्वाई से बचा लेना, जबकि तमाम अगली पिछली मख़्लूक़ ज़िन्दा होकर एक मैदान में खड़ी होगी। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की अपने वालिद से मुलाक़ात होगी। आप देखेंगे कि उसका मुँह ज़िल्लत और गर्द व ग़ुबार से भरा हुआ है। एक और रिवायत में है कि उस वक़्त आप अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेंगे कि परवर्दिगार! तेरा मुझसे वायदा है कि क़ियामत के दिन मुझको रुस्वा न करेगा। अल्लाह फ़रमायेगा सुन ले जन्नत तो काफ़िर पर क़तई हराम है। एक और रिवायत में है कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने बाप को इस हालत में देखकर फ़रमायेंगे कि देखो मैं तुमसे नहीं कह रहा था कि मेरी नाफ़रमानी न करो, बाप जवाब देगा अच्छा अब न करूँगा। आप ख़ुदा तआ़ला की जनाब में अ़र्ज़ करेंगे कि परवर्दिगार! तूने मुझसे वायदा किया है कि इस दिन मुझे रुस्वा न फ़रमायेगा। अब इससे बढ़कर और रुस्वाई क्या होगी कि मेरा बाप इस तरह रहमत से दूर है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ मेरे ख़लील! मैंने तो जन्नत को काफ़िरों पर हराम कर दिया है। फिर फ़रमायेगा ऐ इब्राहीम! देख तेरे पैरों तले क्या है? आप देखेंगे कि एक बदसूरत बिज्जू कीचड़ पानी में लुथड़ा खड़ा है, जिसके पाँव पकड़ कर जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। हक़ीक़त में यही उनके वालिद होंगे जो इस सूरत में कर दिये गये और अपनी मुक़र्ररा जगह पहुँचा दिये गये।

उस दिन इनसान अगर अपना फ़िदया (बचाव के लिये बदला) माल से अदा करना चाहे तो चाहे दुनिया भर के ख़ज़ाने दे दे लेकिन बेफ़ायदा है, न उस दिन औलाद फ़ायदा देगी। अगर तमाम दुनिया वालों को बदले में देना चाहे फिर भी ला-हासिल और बेकार। उस दिन नफ़ा देने वाली चीज़ ईमान, इख़्लास है, और शिर्क व मुश्रिकों से नफ़रत व बेज़ारी है। जिसका दिल नेक हो यानी शिर्क व कुफ़्र के मैल-कुचैल से साफ़ हो, अल्लाह को सच्चा जानता हो, क़ियामत को यक़ीनी मानता हो, हश्र व नश्र (यानी मरने के बाद ज़िन्दा होने और हिसाब-किताब होने) पर ईमान रखता हो, ख़ुदा की तौहीद का क़ायल और आ़मिल हो, निफ़ाक़ वग़ैरह का दिल रोगी न हो, बल्कि ईमान व इख़्लास और नेक अ़क़ीदे से दिल सही और तन्दुरुस्त हो, बिद्अ़तों से नफ़रत रखता हो और सुन्नत से इत्मीनान और लगाव रखता हो।

और (उस दिन) ख़ुदा से डरने वालों (यानी ईमान वालों) के लिए जन्नत नज़दीक कर दी जाएगी। (90) और गुमराहों (यानी काफ़िरों) के लिए दोज़ख़ सामने ज़ाहिर की जाएगी। (91)	وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۝ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا

Maktab E Ashraf

كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝ؕ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ۝ۙ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ۝ؕ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۝ۙ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ۙ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ۝ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ۝ۙ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ۝ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ؑ	और (उस दिन) उनसे कहा जाएगा कि वे माबूद कहाँ गए जिनकी तुम इबादत करते थे (92) अल्लाह के अलावा। क्या (इस वक़्त) वे तुम्हारा साथ दे सकते हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं? (93) फिर (यह कहकर) वे (माबूद) और गुमराह लोग (94) और शैतान का लश्कर सब के सब दोज़ख़ में औंधे मुँह डाल दिए जाएँगे। (95) वे काफ़िर दोज़ख़ में गुफ़्तगू करते हुए (उन माबूदों से) कहेंगे (96) कि अल्लाह की क़सम! बेशक हम खुली गुमराही में थे। (97) जबकि तुमको (इबादत में) रब्बुल-आ़लमीन के बराबर करते थे। (98) और हमको तो बस इन बड़े मुजरिमों ने (जो कि गुमराही की बुनियाद रखने वाले थे) गुमराह किया। (99) सो (अब) न कोई हमारा सिफ़ारिशी है (कि छुड़ा ले) (100) और न कोई मुख़्लिस दोस्त है (कि ख़ाली दिल को तसल्ली ही दे) (101) सो क्या अच्छा होता कि हमको (दुनिया में) फिर वापस जाना मिलता ताकि हम मुसलमान हो जाते। (102) बेशक इस वाक़िए में (भी हक़ के तालिबों के लिए) एक बड़ी इबरत है, और (इसके बावजूद) उन (मक्का के मुश्रिकों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (103) बेशक आपका रब बड़ा ज़बरदस्त, रहमत वाला है। (104)

ع ٥ ٩

जन्नत मोमिनों का बेहतरीन ठिकाना

जिन लोगों ने नेकियाँ की थीं, बुराईयों से बचे थे, जन्नत उस दिन उनके पास ही उनके सामने ही सज-धजकर मौजूद होगी। और सरकशों व नाफ़रमानों के लिये इसी तरह जहन्नम ज़ाहिर होगी। उसमें से एक गर्दन निकल खड़ी होगी जो गुनाहगारों की तरफ़ ग़ज़बनाक (गुस्से से भरे) तेवरों से नज़र डालेगी और इस तरह शोर मचायेगी कि दिल उड़ जायेंगे, कलेजे हिल जायेंगे और मुश्रिकों से डाँट-डपट के साथ फ़रमाया जायेगा कि तुम्हारे झूठे माबूद जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पूजते थे कहाँ हैं? क्या वे तुम्हारी कुछ मदद कर सकते हैं या ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं? नहीं नहीं! बल्कि आ़बिद (इबादत और पूजा करने वाला) व माबूद (जिसकी इबादत की जाये) सब दोज़ख़ में उल्टे लटक रहे और जल भुन रहे हैं। ताबेदार और जिसकी ताबेदारी की गयी सब ऊपर तले जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे। साथ ही शैतान के तमाम लश्करी भी

अव्वल से लेकर आख़िर तक। वहाँ नीचे दर्जे के लोग बड़े लोगों से झगड़ेंगे और कहेंगे कि हमने ज़िन्दगी भर तुम्हारी मानी, आज तुम हमें अ़ज़ाब से क्यों नहीं छुड़ाते? सच तो यह है कि हम ही पागल गुमराह थे। राह से दूर हो गये थे कि तुम्हारे हुक्मों को अल्लाह के हुक्मों के बराबर और उन जैसा समझ बैठे थे, और रब्बुल-आ़लमीन के साथ तुम्हारी भी इबादत करते रहे। गोया तुम्हें रब के बराबर समझे हुए थे। अफ़सोस हमें इस ग़लत और ख़तरनाक राह पर मुजरिमों ने लगाये रखा। अब तो हमारा कोई सिफ़ारिशी भी न रहा। आपस में पूछेंगे कि क्या कोई हमारा शफ़ी (सिफ़ारिश करने वाला) है? जो हमारी शफ़ाअ़त करे या ऐसा भी हो सकता है कि हम दोबारा दुनिया की तरफ़ लौटाये जायें और वहाँ जाकर अब तक के किये हुए आमाल के ख़िलाफ़ (उलट और विपरीत यानी अच्छे आमाल) करें? यहाँ हमारा कोई सिफ़ारिशी हमें नज़र नहीं आता, कोई क़रीबी सच्चा दोस्त भी नज़र नहीं आता कि वही हमारी हमदर्दी व ग़मख़्वारी करे। क्योंकि वे जानते हैं कि अगर किसी नेक शख़्स से हमारी दोस्ती होती तो वह आज ज़रूर हमें नफ़ा देता, और अगर कोई हमारा वली और दोस्त होता तो ज़रूर हमारी शफ़ाअ़त के लिये आगे बढ़ता। और अगर हमें फिर से दुनिया में जाना मिलता तो हम ख़ुद अपने इन बुरे आमाल की तलाफ़ी और भरपाई कर लेते। अपने रब की ही मानते और उसी की इबादतें करते। लेकिन हक़ तो यह है कि ये सदा के बदबख़्त अगर दोबारा भी दुनिया में लाये जायें तो वही बुरे आमाल फिर से शुरू करें।

सूरः सॉद में भी इन जहन्नमियों के झगड़े का बयान करके अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि उनका यह झगड़ा यक़ीनन होगा। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से जो कुछ फ़रमाया, दलीलें उन्हें दीं और उन पर तौहीद की वज़ाहत की, उसमें यक़ीनन ख़ुदा की ख़ुदाई पर और उसके बेमिस्ल होने पर साफ़ हुज्जत मौजूद है। लेकिन फिर भी अक्सर लोग ईमान से रुके हुए हैं। इसमें कोई शक नहीं कि तेरा पालनहार परवर्दिगार पूरे ग़लबे और क़ुव्वत वाला, साथ ही बख़्शिश व रहम वाला है।

नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया। (105) जबकि उनसे उनकी बिरादरी के भाई नूह ने फ़रमाया कि क्या तुम (अल्लाह तआ़ला से) नहीं डरते? (106) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (107) सो (इसका तक़ाज़ा यह है कि) तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (108) और (साथ ही यह कि) मैं तुमसे कोई (दुनियावी) सिला नहीं माँगता, मेरा सिला तो बस रब्बुल-आ़लमीन के ज़िम्मे है। (109) सो (मेरी इस बेग़र्ज़ी का तक़ाज़ा भी यह है कि) तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (110)	كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ۞ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۞ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۞ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۞ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۞

क़ौमे नूह की नाफ़रमानी

ज़मीन पर सबसे पहले जब बुत-परस्ती (मूर्ती-पूजन) शुरू हुई और लोग शैतानी राहों पर लगने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने अपने बुलन्द रुतबे वाले रसूलों के सिलसिले को हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से शुरू किया,

जिन्होंने आकर लोगों को ख़ुदा के अ़ज़ाबों से डराया और उसकी सज़ाओं से उन्हें आगाह किया। लेकिन वे अपने नापाक करतूतों से बाज़ न आये। ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अ़लावा दूसरी चीज़ों) की इबादत न छोड़ी बल्कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को झूठा कहा, उनके दुश्मन बन गये और उनको तकलीफ़ें पहुँचाने पर उतर आये। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का झुठलाना गोया तमाम पैग़म्बरों से इनकार करना था, इसलिये आयत में फ़रमाया गया कि क़ौमे नूह ने नबियों को झुठलाया।

हज़रत नूह ने पहले तो उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ रखने की नसीहत की कि तुम जो ग़ैरुल्लाह की इबादत करते हो तो अ़ज़ाबे ख़ुदा का तुम्हें डर नहीं? जिस तरह तौहीद की तालीम के बाद अपनी रिसालत की तलक़ीन की और फ़रमाया कि मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुदा का रसूल बनकर आया हूँ और हूँ भी अमानत दार, उसका पैग़ाम बिल्कुल ज्यों का त्यों तुम्हें सुना रहा हूँ। पस तुम्हें अपने दिलों को ख़ुदा के ख़ौफ़ से पुर रखना चाहिये और मेरी तमाम बातों को बिना चूँ व चरा के मान लेना चाहिये। और सुनो! मैं तुमसे अपनी इस तब्लीग़ और दीनी अहकाम पहुँचाने पर कोई उजरत नहीं माँगता, मेरा मक़सद इससे सिर्फ़ यही है कि मेरा रब मुझे इसका बदला और सवाब अ़ता फ़रमायेगा। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो, मेरी सच्चाई, ख़ैरख़्वाही तुम पर ख़ूब रोशन है। साथ ही दियानत दारी और अमानत दारी भी तुम पर स्पष्ट है।

قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ۝ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ۝ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

वे लोग कहने लगे कि क्या हम तुमको मानेंगे हालाँकि रज़ील "यानी समाजी तौर पर कमज़ोर व कम दर्जे के" लोग तुम्हारे साथ हो लिए हैं। (111) नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि उनके (पेशे और) काम से मुझको क्या बहस (112) उनसे हिसाब किताब लेना बस ख़ुदा का काम है। क्या ख़ूब हो कि तुम इसको समझो। (113) और मैं ईमान वालों को दूर करने वाला नहीं हूँ। (114) मैं तो साफ़ तौर पर एक डराने वाला हूँ। (115)

कितनी बेवक़ूफ़ी की बात

क़ौमे नूह ने अपने पैग़म्बर को जवाब दिया कि चन्द मामूली, घटिया और छोटे लोगों ने तेरी बात मानी है, हमसे यह नहीं हो सकता कि उन रज़ीलों (छोटे और मामूली लोगों) का साथ दें और तेरी मान लें। इसके जवाब में ख़ुदा के पैग़म्बर ने जवाब दिया- मेरा फ़र्ज़ नहीं कि कोई हक़ क़बूल करने को आये तो मैं उससे उसकी क़ौम और पेशा दरियाफ़्त करता फिरूँ। अन्दरूनी हालात पर इत्तिला रखना, हिसाब लेना अल्लाह का काम है। अफ़सोस तुम्हें इतनी भी समझ नहीं, तुम्हारी इस ग़लत ख़्वाहिश को पूरी करना मेरे इख़्तियार से बाहर है कि मैं उन मिस्कीनों से अपनी महफ़िल ख़ाली करा लूँ। मैं तो ख़ुदा की तरफ़ से एक आगाह कर देने वाला हूँ जो भी माने वह मेरा और जो न माने वह अपनी जाने। शरीफ़ (बड़ा आदमी) हो या रज़ील (छोटा और कम-दर्जे का) हो। अमीर हो या ग़रीब हो, जो मेरी माने मेरा है और मैं उसका हूँ।

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ۝ فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝

वे लोग कहने लगे कि अगर तुम (इस कहने-सुनने से) ऐ नूह! बाज़ न आओगे तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। (116) नूह (अ़लैहि.) ने दुआ़ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! (मेरी क़ौम) मुझको (बराबर) झुठला रही है। (117) सो आप मेरे और उनके दरमियान में एक (अ़मली) फ़ैसला कर दीजिए, और मुझको और जो ईमान वाले मेरे साथ हैं उनको (उस हलाकत से) निजात दीजिए। (118) तो हमने (उनकी दुआ़ क़बूल की और) उनको और जो उनके साथ भरी कश्ती में (सवार) थे उनको निजात दी। (119) फिर उसके बाद हमने बाक़ी लोगों को डुबो दिया। (120) इस (वाक़िए) में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (121) और बेशक आपका रब ज़बरदस्त (और) मेहरबान है। (122)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को धमकियाँ

लम्बी मुद्दत तक हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम उनमें रहे। दिन रात उन्हें अल्लाह की राह की दावत देते रहे, लेकिन जैसे-जैसे आप अपनी नेकी में बढ़ते गये वे अपनी बदी में ज़्यादा होते गये। आख़िरकार ज़ोर बाँधते-बाँधते साफ़ कह दिया कि अगर अब हमें अपने दीन की दावत दी तो हम तुझ पर पथराव करके तेरी जान ले लेंगे। आपके हाथ भी अल्लाह की बारगाह में उठ गये, क़ौम के झुठलाने की शिकायत आसमान पर चढ़ी और आपने फ़तह की दुआ़ की। फ़रमाया ख़ुदाया! मैं मग़लूब और आ़जिज़ हूँ। मेरी मदद कर। मेरे साथ मेरे साथियों को भी बचा ले। पस अल्लाह तआ़ला ने आपकी दुआ़ क़बूल की, इनसानों जानवरों और सामान व असबाब से खचाखच भरी हुई कश्ती में सवार हो जाने का हुक्म दे दिया। उसके बाद आसमान व ज़मीन से तूफ़ान उमड़ आया और रू-ए-ज़मीन के कुफ़्फ़ार का ख़ात्मा कर दिया गया। यक़ीनन यह वाक़िआ़ भी सबक़ लेने के लायक़ है। लेकिन फिर भी अक्सर लोग बेयक़ीन हैं। इसमें कोई शक नहीं कि रब बड़े ग़लबे वाला है, लेकिन वह मेहरबान भी बहुत है।

كَذَّبَتْ عَادُ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اِنِّيْ لَكُمْ

क़ौमे आ़द ने पैग़म्बरों को झुठलाया। (123) जबकि उनसे उन (की बिरादरी) के भाई हूद ने कहा कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो? (124) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (125)

Maktabah Ashraf

رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ۝ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۝ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَاتَّقُوا الَّذِىْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۝ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۝ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝

सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (126) और मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कोई सिला नहीं माँगता, बस मेरा सिला तो रब्बुल-आलमीन के ज़िम्मे है। (127) क्या तुम हर ऊँचे मक़ाम पर एक यादगार (के तौर पर इमारत) बनाते हो, जिसको महज़ फ़ुज़ूल (बिला ज़रूरत) बनाते हो। (128) और बड़े-बड़े महल बनाते हो, जैसे दुनिया में तुमको हमेशा रहना है। (129) और जब किसी की पकड़-धकड़ करने लगते हो तो बिल्कुल जाबिर (और ज़ालिम) बनकर पकड़ करते हो। (130) सो तुम (को चाहिए कि) अल्लाह तआ़ला से डरो, और (चूँकि मैं रसूल हूँ इसलिए) मेरी इताअ़त करो। (131) और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से इमदाद की जिनको तुम जानते हो (132) (यानी) मवेशी और बेटों (133) और बाग़ों और चश्मों से तुम्हारी इमदाद की। (134) (अगर तुम इन हरकतों से बाज़ न आए तो) मुझको तुम्हारे हक़ में एक बड़े सख़्त दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है। (135)

क़ौमे आ़द

हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान हो रहा है कि उन्होंने आ़द वालों को जो अहक़ाफ़ के रहने वाले थे, ख़ुदा की तरफ़ बुलाया। अहक़ाफ़ मुल्के यमन में हज़्रे-मौत के पास रेतीले पहाड़ों के क़रीब है। उनका ज़माना हज़रत नूह के बाद का है। सूरः आराफ़ में भी उनका ज़िक्र गुज़र चुका है कि उन्हें क़ौमे नूह का जानशीन (जगह लेने वाला) बनाया गया और उन्हें बहुत कुछ कुशादगी और वुस्अ़त (यानी गुंजाईश और ख़ुशहाली) दी गई। डील-डोल के बड़े क़ुव्वत व ताक़त के पूरे माल औलाद वाले, खेत और बाग़ात फल और अनाज उनके पास बहुत ज़्यादा, दौलत व माल, नहरें और चश्मे ग़र्ज़ यह कि हर तरह का आराम व आसानी मुहैया, लेकिन रब की तमाम नेमतों की नाक़द्री करने वाले और ख़ुदा तआ़ला के साथ शिर्क करने वाले थे। अपने नबी को झुठलाया, यह उन्हीं में से थे। उन्होंने समझाया बुझाया, अल्लाह का ख़ौफ़ व डर दिखाया, अपना रसूल होना ज़ाहिर फ़रमाया, अपनी इताअ़त और ख़ुदा की इबादत व वह्दानियत की दावत दी, जैसे कि नूह अ़लैहिस्सलाम ने दी थी। अपना बेलाग (यानी बेग़र्ज़ और बेलालच) होना, किसी चीज़ का तालिब न होना बयान फ़रमाया। अपने ख़ुलूस का भी ज़िक्र किया। ये जो फ़ख़्र (इतराने) और दिखावे के तौर पर अपने माल बरबाद करते थे और ऊँचे-ऊँचे मशहूर टीलों पर बुलन्द व बाला निशानियाँ अपनी ताक़त और

माल के इज़हार के लिये बनाते थे, इस बेकार काम से उन्हें उनके नबी हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने रोका, क्योंकि इसमें बेकार दौलत का खोना, वक़्त का बरबाद करना और मशक़्क़त उठाना है। जिससे दीन दुनिया का कोई फ़ायदा हाथ नहीं आता। बड़े-बड़े पुख़्ता और बुलन्द बुरुज (गुंबद) और मीनार बनाते थे, जिसके बारे में उनके नबी ने नसीहत की कि क्या तुम यह समझ बैठे हो कि यहीं हमेशा रहोगे? दुनिया की मुहब्बत ने तुम्हें आख़िरत भुला दी है? लेकिन याद रखो कि तुम्हारी यह चाहत बेसूद है। दुनिया फ़ना होने वाली है, तुम ख़ुद फ़ना होने वाले हो।

इब्ने अबी हातिम में है कि जब मुसलमानों ने ग़ूता में महलों और बाग़ात की तामीर आला पैमाने पर ज़रूरत से ज़्यादा शुरू कर दी तो हज़रत अबू दर्दा रज़ि. ने मस्जिद में खड़े होकर फ़रमाया कि ऐ दमिश्क़ के रहने वालो सुनो! लोग सब जमा हो गये तो आपने अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना के बाद फ़रमाया कि तुम्हें शर्म नहीं आती, तुमने वह जमा करना शुरू कर दिया जो तुम खा नहीं सकते, तुमने वे मकानात बनाने शुरू कर दिये जो तुम्हारे रहने-सहने के काम नहीं आते, तुमने वे लम्बी-लम्बी आरज़ूएँ करनी शुरू कर दीं जो पूरी होनी मुहाल हैं। क्या तुम भूल गये कि तुमसे पहले लोगों ने दौलत संभाल-संभाल कर रखी थी, बड़े ऊँचे ऊँचे पुख़्ता और मज़बूत महल तामीर किये थे, बड़ी-बड़ी आरज़ूयें बाँधी थीं, लेकिन नतीजा यह हुआ कि वे धोखे में रह गये, उनकी पूँजी बरबाद हो गई, उनके मकानात और बस्तियाँ उजड़ गईं।

आ़द वालों को देखो कि अ़दन से लेकर अ़म्मान (ओमान) तक उनके घोड़े और ऊँट थे, लेकिन आज वे कहाँ हैं? है ऐसा कोई बेवक़ूफ़ कि क़ौमे आ़द की मीरास को दो दिर्हमों के बदले भी ख़रीदे? उनके माल व मकानात का बयान फ़रमाकर उनकी क़ुव्वत व ताक़त को बयान करके फ़रमाया कि बड़े सरकश, घमंडी और सख़्त लोग थे। उनके नबी अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें अल्लाह से डरने और अपनी इताअ़त करने (हुक्मों को मानने) का हुक्म दिया कि इबादत रब की करो और इताअ़त उसके रसूल की करो। फिर वे नेमतें याद दिलाईं जो अल्लाह ने उन पर इनाम की थीं, जिन्हें वे ख़ुद जानते थे, जैसे चौपाये जानवर और औलाद, बाग़ात और दरिया। फिर अपनी शंका ज़ाहिर की कि अगर तुमने मुझको झुठलाया और मेरी मुख़ालफ़त पर जमे रहे तो तुम पर अ़ज़ाबे ख़ुदा बरस पड़ेंगे, अच्छे और बुरे दोनों पहलू दिखाये लेकिन बेसूद रहे।

वे लोग बोले कि हमारे नज़दीक तो दोनों बातें बराबर हैं, चाहे तुम नसीहत करो और चाहे नसीहत करने वाले मत बनो। (136) यह तो बस अगले लोगों की एक (मामूली) आ़दत (और रस्म) है। (137) और (तुम जो हमको अ़ज़ाब से डराते हो तो) हमको हरगिज़ अ़ज़ाब न होगा। (138) ग़र्ज़ कि उन लोगों ने हूद (अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया तो हमने उनको (आँधी के अ़ज़ाब से) हलाक कर दिया, बेशक इस (वाक़िए) में भी बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उनमें अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (139) और बेशक आपका रब ज़बरदस्त (और) मेहरबान है। (140)	قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ۝ اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ ع

Maktab E Ashraf

क़ौम की बद-नसीबी, दावत से मुँह फेरना और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से पकड़

हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम के असरदार (प्रभावी) बयानात ने और आपके दिलचस्पी और डर भरे ख़ुतबों ने क़ौम पर कोई असर नहीं किया और उन्होंने साफ़ कह दिया कि आप हमें वअ़ज़ सुनायें, नसीहत करें या न करें हम तो अपनी रविश (चलन और तरीक़े) को छोड़ नहीं सकते। हम आपकी बात मानकर अपने ख़ुदाओं से अलग हो जायें यह यक़ीनन मुहाल है। हमारे ईमान आपसे मायूस हो जायें। हम आपकी नहीं मानेंगे। वास्तव में काफ़िरों का यही हाल है, उन्हें समझाना बेसूद रहता है। अल्लाह तआ़ला ने अपने आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल. से भी यही फ़रमाया कि इन अज़ली काफ़िरों पर आपकी नसीहत बिल्कुल असर नहीं करने की, नसीहत कर देने और होशियार कर देने के बाद भी वैसे ही रहेंगे जैसे पहले थे। ये तो क़ुदरती तौर पर ईमान से मेहरूम कर दिये गये हैं। जिन पर तेरे रब की बात सादिक़ आने (सच्ची साबित होने) वाली है। इन्हें ईमान नसीब नहीं होगा।

'ख़ुलुक़ुल्-अव्वलीन' की दूसरी क़िराअत 'ख़ल्क़ुल्-अव्वलीन' भी है। यानी जो बातें तू हमें कहता है ये तो अगलों (हमसे पहलों) की कही हुई हैं। जैसे क़ुरैशियों ने नबी करीम सल्ल. से कहा था कि अगलों की कहानियाँ हैं जो सुबह व शाम तुम्हारे सामने पढ़ी जाती हैं। यह एक बोहतान (झूठी बात) है जिसे तूने गढ़ लिया है और कुछ लोग अपने हिमायती कर लिये हैं वग़ैरह। मशहूर क़िराअत की बिना पर यह मायने हुए कि जिस पर हम हैं वहीं हमारे बाप-दादा का मज़हब है, हम तो उन्हीं की राह पर चलेंगे, और इसी रविश पर रहेंगे, जियेंगे फिर मर जायेंगे जैसे वे मर गये, यह बात बिल्कुल नहीं कि हम ख़ुदा के यहाँ फिर ज़िन्दा किये जायेंगे। यह भी ग़लत है कि हमें अ़ज़ाब किया जायेगा। आख़िरकार उनके झुठलाने और मुख़ालफ़त की वजह से उन्हें हलाक कर दिया गया। सख़्त तेज़ व तुन्द आँधी उन पर भेजी गई और ये बरबाद कर दिये गये। यही पहले वाली आ़द क़ौम वाले थे जिन्हें 'इरमे ज़ातिल-इमाद' कहा गया है। ये इरम बिन साम बिन नूह की नस्ल में से थे। ये लोग अ़मद में रहते थे। इरम हज़रत नूह के पोते का नाम है न कि किसी शहर का, अगरचे बाज़ लोगों से यही मन्क़ूल है लेकिन इसके क़ायल बनी इस्राईल हैं, उनसे सुन-सुनाकर औरों ने भी यही कह दिया है। हक़ीक़त में इसकी कोई मज़बूत दलील नहीं। इसी लिये क़ुरआन ने इरम का ज़िक्र करते ही फ़रमाया है:

لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ.

कि उन जैसा और कोई शहर में पैदा नहीं किया गया।

अगर इससे मुराद शहर होता तो यूँ फ़रमाया जाता कि उस जैसा और कोई शहर बनाया नहीं गया। क़ुरआने करीम की एक और आयत में है:

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ........ الخ

आ़द वालों ने ज़मीन पर तकब्बुर (घमंड) किया और दावा किया कि हमसे बढ़कर क़ुव्वत वाला कौन है। क्या वे इसे भी भूल गये कि उनका पैदा करने वाला उनसे ज़्यादा क़वी और ताक़तवर है। दर असल

Maktab E Ashraf

उन्हें हमारी आयतों से इनकार था। यह हम पहले बयान कर चुके हैं कि उन पर सिर्फ़ बैल के नथने के बराबर हवा छोड़ी गई थी, जिसने उनका, उनके शहरों का, उनके मकानात का नाम व निशान मिटा दिया। जहाँ से गुज़र गई सफ़ाया कर दिया। शायें-शायें करती तमाम चीज़ों का सत्यानास करती चली थी। तमाम क़ौम के सर अलग हो गये और धड़ अलग, अ़ज़ाबे ख़ुदा आता देखकर क़िलों में, महलों में, सुरक्षित मकानों में घुस गये थे, ज़मीन में गड्ढ़े खोद-खोदकर आधे-आधे जिस्म उनमें डालकर महफ़ूज़ हुए थे लेकिन भला अ़ज़ाबे ख़ुदा को कोई चीज़ रोक सकती है? वह एक मिनट के लिये भी किसी को मोहलत और दम लेने देता है? सब ख़त्म कर दिये गये। और इस वाक़िए को बाद में आने वालों के लिये एक इब्रत का निशान बना दिया गया, और उनमें से अक्सर लोग बेईमान ही रहे, ख़ुदा का ग़लबा और रहम दोनों मुसल्लम थे।

क़ौमे समूद ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया। (141) जबकि उनसे उनके भाई सालेह (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया, क्या तुम (अल्लाह तआ़ला से) नहीं डरते? (142) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (143) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (144) और मैं तुमसे इस पर कुछ सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला तो रब्बुल-आ़लमीन के ज़िम्मे है। (145)	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

क़ौमे समूद और हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम

अल्लाह तआ़ला के बन्दे और रसूल हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ बयान हो रहा है कि आप अपनी क़ौम समूद की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गये थे। ये लोग अ़रब थे, हिज्र नाम के शहर में रहते थे जो वादी-ए-क़ुरा और मुल्के शाम के बीच है। ये आ़द वालों के बाद और इब्राहीम की क़ौम से पहले थे। मुल्क शाम (सीरिया) की तरफ़ जाते हुए आपका उस जगह से गुज़रने का बयान सूरः आराफ़ की तफ़सीर में पहले गुज़र चुका है। उन्हें उनके नबी ने अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाया कि ये अल्लाह की तौहीद को मानें और हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की रिसालत का इक़रार करें, लेकिन उन्होंने भी इनकार किया और अपने कुफ़्र पर जमे रहे। ख़ुदा के पैग़म्बर को झूठा कहा, बावजूद अल्लाह से डरते रहने के, नसीहत सुनने के परहेज़गारी इख़्तियार न की। बावजूद रसूले अमीन की मौजूदगी के हिदायत का रास्ता इख़्तियार न किया, हालाँकि नबी का साफ़ ऐलान था कि मैं अपना कोई बोझ तुम पर डाल नहीं रहा, मैं तो इस रिसालत की तब्लीग़ के अज्र का तालिब सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला से हूँ। इसके बाद अल्लाह की नेमतें उन्हें याद दिलाईं।

क्या तुमको इन्हीं चीज़ों में बेफ़िक्री से रहने दिया जाएगा जो यहाँ (दुनिया में) मौजूद हैं। (146) यानी बाग़ों में और चश्मों में (147) और खेतों और उन खजूरों में जिनके गुफ्फे ख़ूब गुँधे हुए हैं (148) और क्या (इसी ग़फ़लत	اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ۝ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا

فٰرِهِيْنَ ○ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ○ وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ○ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ○	की वजह से) तुम पहाड़ों को तराश-तराशकर इतराते हो (और फ़ख़्र करते हुए) मकान बनाते हो? (149) सो अल्लाह तआ़ला से डरो और मेरा कहना मानो। (150) और उन (बन्दगी) की हदों से निकल जाने वालों का कहना मत मानो (151) जो सरज़मीन में फ़साद किया करते हैं और (कभी) सुधार (की बात) नहीं करते। (152)

बड़ी कारामद नसीहतें

हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम में वअ़ज़ (दीनी नसीहत) फ़रमाते हैं, उन्हें अल्लाह की नेमतें याद दिलाते हैं और उसके अ़ज़ाब से डराते हैं कि वह जो तुम्हें यह कुशादा रोज़ियाँ (यानी ख़ुशहाली) दे रहा है, जिसने तुम्हारे लिये बाग़ात और चश्मे, खेतियाँ और फल-फूल मुहैया फ़रमा दिये हैं, अमन चैन से जो तुम्हारी ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहा है, तुम उसकी नाफ़रमानियाँ करके इन्हीं नेमतों में और इसी अमन व अमान में नहीं छोड़े जा सकते। इन बाग़ों और दरियाओं में, इन खेतों और इन खजूर के बाग़ों में जिनके ख़ोशे (गुच्छे) खजूरों की ज़्यादती की वजह से बोझल हो रहे हैं, और झुके पड़ते हैं, जिनमें तह-ब-तह खजूरें भरपूर लग रही हैं, जो नर्म, ख़ुशनुमा, मीठी और अच्छे-ज़ायक़े वाली खजूरों से लदे हुए हैं, तुम ख़ुदा की नाफ़रमानियाँ करके यह आराम बचा नहीं सकते। ख़ुदा ने तुम्हें इस वक़्त जिन मज़बूत पुर-तकल्लुफ़ बुलन्द और उम्दा घरों में रख छोड़ा है, ख़ुदा की तौहीद और मेरी रिसालत के इनकार के बाद ये भी बाक़ी नहीं रह सकते। अफ़सोस तुम ख़ुदा की नेमत की क़द्र नहीं करते। अपना वक़्त अपना रुपया बेजा बरबाद करके यह नक़्श व निगार (यानी सजावट) वाले मकानात पहाड़ों में तकल्लुफ़ और बनावट से सिर्फ़ बड़ाई, दिखावे के लिये, अपनी शान और क़ुव्वत के प्रदर्शन के लिये तराश रहे हो, जिसमें कोई नफ़ा नहीं बल्कि इसका वबाल तुम्हारे सरों पर मंडला रहा है। पस तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिये और मेरी पैरवी करनी चाहिये। अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले), राज़िक़ (रिज़्क़ देने वाले), नेमतें देने वाले, मोहसिन की इबादत और उसकी फ़रमाँबरदारी और उसकी तौहीद की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जह होना चाहिये। जिसका नफ़ा तुम्हें दुनिया और आख़िरत में मिले। तुम्हें उसका शुक्र अदा करना चाहिये, उसकी पाकीज़गी व एक माबूद होने को बयान करना चाहिये। सुबह शाम उसकी इबादत करनी चाहिये। तुम्हें अपने इन मौजूदा सरदारों की हरगिज़ न माननी चाहिये, ये तो अल्लाह की हदों (तय की हुई सीमाओं) से आगे बढ़ गये हैं। तौहीद की इत्तिबा (पैरवी) को भुला बैठे हैं, ज़मीन में फ़साद मचा रहे हैं। नाफ़रमानी, गुनाह और बदकारी पर ख़ुद लगे हुए हैं और दूसरों को भी उसी तरफ़ बुला रहे हैं। हक़ की मुवाफ़क़त और पैरवी करके इस्लाह की कोशिश नहीं करते।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ○ مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ	उन लोगों ने कहा कि तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है। (153) तुम बस हमारी ही तरह के एक (मामूली) आदमी हो,

Maktab E Ashraf

كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ○ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ
لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ○
وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ
يَوْمٍ عَظِيْمٍ ○ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا
نٰدِمِيْنَ ○ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ○
وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ○ ع ٨ ١٩ ١٢

(और आदमी नबी होता नहीं) सो कोई मोजिज़ा पेश करो अगर तुम सच्चे हो। (154) सालेह ने फ़रमाया कि यह एक ऊँटनी है पानी पीने के लिए एक बारी इसकी है और एक मुक़र्ररा दिन में एक बारी तुम्हारी। (यानी तुम्हारे मवेशियों की) (155) और इसको बुराई (तकलीफ़ देने की नीयत) के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको एक भारी दिन का अ़ज़ाब आ पकड़े। (156) सो उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला, फिर (अपनी हरकत पर) शर्मिन्दा हुए। (157) फिर (आख़िर) अज़ाब ने उनको आ लिया, बेशक इस (वाक़िए) में बड़ी इबरत है। और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (158) और बेशक आपका रब बड़ा ज़बरदस्त, बहुत मेहरबान है (कि बावजूद क़ुदरत के मोहलत देता है)। (159)

Maktab E Ashraf

वही जहालत भरा और अहमक़ाना जवाब

समूदियों (क़ौमे समूद वालों) ने अपने नबी को जवाब दिया कि तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। अगरचे एक मायने यह भी किये गये हैं कि वह तो मख़्लूक़ में से है, और इसकी दलील में अ़रबी का एक शे'र भी पेश किया जाता है, लेकिन ज़्यादा ठीक मायने पहले ही हैं। इसी के साथ उन्होंने कहा तू तो हम जैसा एक इनसान है, नामुम्किन है कि हम में से तो किसी पर 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) न आये और तुझ पर आ जाये? कुछ नहीं, यह सिर्फ़ बनावट है, बिल्कुल झूठ है। अच्छा हम कहते हैं कि अगर तू वाक़ई सच्चा नबी है तो कोई मोजिज़ा दिखा। उस वक़्त उनके छोटे बड़े सब जमा थे और एक ज़बान होकर सब ने मोजिज़ा तलब किया था। आपने पूछा कि तुम क्या मोजिज़ा देखना चाहते हो? उन्होंने कहा कि यह सामने की बड़ी चट्टान है, यह हमारे देखते ही फटे और इसमें से एक गयाभन ऊँटनी इस रंग की ऐसी ऐसी निकले। आपने फ़रमाया अच्छा अगर मैं रब से दुआ़ करूँ और वह यही मोजिज़ा मेरे हाथों तुम्हें दिखा दे फिर तो तुम्हें मेरी नुबुव्वत के मानने में कोई उज़्र न होगा? सब ने पुख़्ता वायदा किया कि हाँ हम सब ईमान लायेंगे और आपकी नुबुव्वत मान लेंगे।

आपने उसी वक़्त नमाज़ शुरू कर दी, फिर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की। उसी वक़्त वह पत्थर फटा और फ़रमाईशी ऊँटनी उनके देखते हुए उसमें से निकली। कुछ लोग तो इक़रार और वायदे के मुताबिक़ मोमिन हो गये, लेकिन अक्सर लोग फिर भी काफ़िर के काफ़िर ही रहे। आपने फ़रमाया सुनो! एक दिन यह पानी पियेगी और एक दिन पानी की बारी तुम्हारी मुक़र्रर रहेगी। अब तुम में से कोई इसे बुराई न पहुँचाये

Maktab E Ashraf

वरना तुम पर बहुत बुरा और सख़्त अ़ज़ाब उतर पड़ेगा।

एक मुद्दत तक तो वे रुके रहे, ऊँटनी उनमें रही, चारा चुगती और अपनी बारी वाले दिन पानी पीती। उस दिन ये लोग उसके दूध से सैर हो जाते, लेकिन एक मुद्दत के बाद उनकी बदबख़्ती ने उन्हें आ घेरा। उनमें के एक बड़े मलऊन ने ऊँटनी के मार डालने का इरादा कर लिया और तमाम शहर वाले उसके मुवाफ़िक़ हो गये (यानी उसकी बुरी योजना में उससे सहमत हो गये)। चुनाँचे उसकी कोचें (टाँगें) काटकर उसे मार डाला, जिसके नतीजे में उन्हें सख़्त शर्मिन्दगी व पशेमानी उठानी पड़ी। अल्लाह के अ़ज़ाब ने उन्हें अचानक आ दबोचा, उनकी ज़मीनें हिला दी गईं और एक चीख़ से सब के सब हलाक कर दिये गये। दिल उड़ गये, कलेजे टुकड़े-टुकड़े हो गये और वहम व गुमान भी जिस चीज़ का न था वह हो गई। सब ग़ारत हो गये और दुनिया जहान के लिये यह ख़ौफ़नाक वाक़िआ़ इबरत (सीख और नसीहत) का सबब हो गया। इतनी बड़ी निशानी अपनी आँखों से देखकर भी उनमें के अक्सर लोगों को ईमान लाना नसीब न हुआ। इसमें कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ग़ालिब है और वह रहीम भी है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ۝ۚۖ اِذْ
قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ۚ اِنِّيْ
لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوْنِ ۝ۚ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ
اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ؕ

लूत की क़ौम ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया। (160) जबकि उनसे उनके भाई (हज़रत) लूत (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो? (161) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (162) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (163) और मैं तुमसे इस पर कोई सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला तो रब्बुल-आ़लमीन के ज़िम्मे है। (164)

क़ौमे लूत

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे और रसूल हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान फ़रमा रहा है। उनका नाम लूत हारान बिन आज़र था। यह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम के भतीजे थे। उन्हें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में बहुत बड़ी उम्मत की तरफ़ भेजा था। ये लोग सदूम और उसके पास बसते थे। आख़िरकार ये भी ख़ुदा के अ़ज़ाब में पकड़े गये, सब के सब हलाक हुए और उनकी बस्तियों की जगह एक झील सड़े हुए खारे पानी की बाक़ी रह गई। यह अब तक भी ग़ौर के इलाक़े में मशहूर है जो कि बैतुल-मुक़द्दस और करक व शोबक के बीच है।

उन लोगों ने भी रसूले ख़ुदा को झुठलाया, आपने उन्हें अल्लाह की नाफ़रमानी छोड़ने और अपनी ताबेदारी करने की हिदायत की। अपना रसूल होकर आना ज़ाहिर किया, उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया, ख़ुदा की बातें मान लेने को फ़रमाया। ऐलान कर दिया कि मैं तुमसे कुछ माँगता नहीं, मैं सिर्फ़ ख़ुदा के वास्ते तुम्हारी ख़ैरख़्वाही (हमदर्दी) कर रहा हूँ। तुम अपने इस ख़बीस फ़ेल (गन्दे काम) से बाज़ आओ यानी औरतों को छोड़कर मर्दों से अपनी जिन्सी इच्छा पूरी करने से रुक जाओ। लेकिन उन्होंने ख़ुदा के रसूल की न मानी, बल्कि उनको तकलीफ़ें पहुँचाईं।

Muftah E Ashraf

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ
اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ۝ قَالُوْا
لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمُخْرَجِيْنَ ۝ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ
الْقَالِيْنَ ۝ رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا
يَعْمَلُوْنَ ۝ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا
عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ دَمَّرْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ
مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ
مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ ع ٩ ١٣

क्या तमाम दुनिया जहान वालों में से तुम (यह हरकत करते हो कि) मर्दों से बदफ़ेली करते हो? (165) और तुम्हारे रब ने जो तुम्हारे लिए बीवियाँ पैदा की हैं उनको नज़र-अन्दाज़ किए रहते हो? बल्कि (असल बात यह है कि) तुम (इनसानियत की) हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (166) वे कहने लगे कि ऐ लूत! अगर तुम (हमको कहने-सुनने से) बाज़ नहीं आओगे तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। (167) लूत (अ़लैहि.) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे इस काम से सख़्त नफ़रत रखता हूँ। (168) (हज़रत) लूत ने दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! मुझ को और मेरे (ख़ास) मुताल्लिक़ीन को उनके इस काम (के वबाल) से निजात दे। (169) सो हमने उनको और उनके मुताल्लिक़ीन को सबको निजात दी (170) सिवाय एक बुढ़िया के, वह (अ़ज़ाब के अन्दर) रह जाने वालों में रह गई। (171) फिर हमने और सबको हलाक कर दिया। (172) और हमने उन पर एक ख़ास क़िस्म की (यानी पत्थरों की) बारिश बरसाई, सो क्या बुरी बारिश थी जो उन लोगों पर बरसी जिनको (अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से) डराया गया था। (173) बेशक इस (वाक़िए) में (भी) इबरत है, और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (174) और बेशक आपका परवर्दिगार बड़ी क़ुदरत वाला, बड़ी रहमत वाला है। (175)

क़ौमे लूत की बद-अ़मलियाँ और नसीहत न मानना

अल्लाह के नबी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को उनकी ख़ास बदकारी से रोका कि तुम लड़कों से बदफ़ेली न करो। अपनी बीवियों से ख़्वाहिश पूरी करो, जिन्हें ख़ुदा ने तुम्हारे लिये जोड़ा बना दिया है। रब की मुक़र्ररा हदों का अदब और एहतिराम करो। इसका जवाब उनके पास यही था कि ऐ लूत! अगर तू बाज़ न आया तो हम तुझे जिला-वतन कर देंगे (यानी आपके वतन से निकाल देंगे)। उन्होंने आपस में मश्विरा किया कि इन पाकबाज़ लोगों को तो अलग कर दो। यह देखकर आपने उनसे बेज़ारी और अलग

होने का ऐलान कर दिया और फ़रमाया कि तुम्हारे इस बुरे काम से मैं नाराज़ हूँ। मैं इसे पसन्द नहीं करता। मैं ख़ुदा के सामने इससे अपनी बराअत का इज़हार करता हूँ। फिर अल्लाह तआ़ला से उनके लिये बददुआ़ की और अपनी और अपने घराने की निजात तलब की। अल्लाह तआ़ला ने सब को निजात दी मगर आपकी बीवी ने अपनी क़ौम का साथ दिया और उन्हीं के साथ तबाह हुई जैसा कि सूरः आराफ़, सूरः हूद और सूरः हिज्र में तफ़सील से इसका बयान गुज़र चुका है। आप मोमिनों को लेकर ख़ुदा के फ़रमान के मुताबिक़ उस बस्ती से चल खड़े हुए। हुक्म था कि आपके निकलते ही उन पर अ़ज़ाब आयेगा। उस वक़्त पलट कर उनकी तरफ़ देखना भी नहीं, फिर उन सब पर अ़ज़ाब बरसा और सब बरबाद कर दिये गये। उन पर आसमान से संगबारी (पत्थरों की बारिश) हुई और उनका बुरा अन्जाम हुआ। यह भी इब्रतनाक (सीख लेने वाला) वाक़िआ़ है। उनमें से भी अक्सर बेईमान थे। रब के ग़लबे में, उसके रहम में कोई शक नहीं।

ऐका वालों ने (भी जिनका ज़िक्र सूरः हिज्र के आख़िर में गुज़रा है) पैग़म्बरों को झुठलाया। (176) जबकि उनसे शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो? (177) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (178) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। (179) और मैं तुमसे इस पर कोई सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला तो रब्बुल-आ़लमीन के ज़िम्मे है। (180)	كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

शुऐब अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम

ये लोग मद्यन के रहने वाले थे। हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम भी उन्हीं में से थे। आपको उनका भाई सिर्फ़ इसलिये नहीं कहा गया कि इस आयत में उन लोगों की निस्बत 'ऐका' की तरफ़ की है, जिसे ये लोग पूजते थे। ऐका एक दरख़्त (पेड़) था, यही वजह है कि जैसे और नबियों को उनकी उम्मतों का भाई फ़रमाया इन्हें उनका भाई नहीं कहा गया, वरना ये लोग भी उन्हीं की क़ौम में से थे। जिन लोगों की रसाई इस नुक्ते तक नहीं हुई वे कहते हैं कि ये लोग आपकी क़ौम में न थे, इसलिये हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को उनका भाई नहीं फ़रमाया गया, यह दूसरी ही क़ौम थी।

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम की तरफ़ भी भेजे गये थे और उन लोगों की तरफ़ भी। बाज़ कहते हैं कि एक तीसरी उम्मत की तरफ़ भी आपको नबी बनाकर भेजा गया था। चुनाँचे हज़रत इक्रिमा रह. से नक़ल है कि किसी नबी को अल्लाह तआ़ला ने दो मर्तबा नहीं भेजा सिवाय हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम के, कि एक मर्तबा उन्हें मद्यन वालों की तरफ़ भेजा और उनके झुठला देने की वजह से उन्हें एक चिंघाड़ के साथ हलाक कर दिया और दोबारा उन्हें ऐका वालों की तरफ़ भेजा और उनके झुठलाने की वजह से उन पर भी अ़ज़ाब आया और वे बरबाद हुए। लेकिन यह याद रहे कि इसके रावियों में इस्हाक़ बिन बशर है। क़तादा का क़ौल है कि 'अस्हाबे रस्स' (रस्स वाले) और 'अस्हाबे ऐका' (ऐका वाले) शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम है। और एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि अस्हाबे ऐका और अस्हाबे मद्यन एक ही हैं।

Maktab E Ashraf

वल्लाहु आलम।

इब्ने असाकिर में है, रसूले करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ौमे मद्यन और अस्हाबे ऐका दो क़ौमें हैं और उन दोनों उम्मतों की तरफ़ अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को भेजा था, लेकिन यह हदीस ग़रीब है और इसके मरफ़ूअ़ होने में कलाम है। बहुत मुम्किन है कि मौक़ूफ़ ही हो। सही बात यही है कि दोनों एक ही उम्मत है, दोनों जगह उनके वस्फ़ (सिफ़ात और विशेषतायें) अलग-अलग बयान हुए हैं मगर वह एक ही है। इसकी एक बड़ी दलील यह भी है कि दोनों क़िस्सों में हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम का वअ़ज़ (नसीहत और दीनी उपदेश) एक ही है। दोनों में नाप-तौल सही करने का हुक्म दिया है।

तुम लोग पूरा नापा करो, और (हक़ वाले का) नुक़सान मत किया करो। (181) और (इसी तरह तौलने की चीज़ों में) सीधी तराज़ू से तौला करो। (182) और लोगों का उनकी चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और सरज़मीन में फ़साद मत मचाया करो। (183) और उस (ख़ुदा-ए-क़ादिर) से डरो जिसने तुमको और तमाम अगली मख़्लूक़ात को पैदा किया। (184)	اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ۚ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۚ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۚ وَاتَّقُوا الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ۗ

कुछ नसीहतें

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम को नाप-तौल दुरुस्त करने की हिदायत कर रहे हैं। डंडी मारने और नाप-तौल में कमी करने से रोकते हैं। फ़रमाते हैं कि जब किसी को कोई चीज़ नाप-तौलकर दो तो पैमाना भरकर दो, उसके हक़ में से कम न करो। इसी तरह दूसरे से जब लो तो ज़्यादा लेने की कोशिश और चालाकी न करो। यह क्या कि लेने के वक़्त पूरा लो और देने के वक़्त कम दो? लेन-देन दोनों साफ़ और पूरा रखो। तराज़ू अच्छी रखो जिसमें तौल सही आये, बट्टे भी पूरे रखो, तौल में अ़दल (इन्साफ़ और बराबरी) करो, डंडी न मारो, कम न तौलो, किसी को उसकी चीज़ कम न दो। किसी की राह न मारो (यानी रहज़नी न करो), चोरी-चकारी लूटमार ग़ारतगरी रहज़नी से बचो। लोगों को डरा धमका कर, भयभीत करके उनके माल न लूटो। उस ख़ुदा के अ़ज़ाबों का ख़ौफ़ रखो जिसने तुम्हें और सब अगलों को पैदा किया है, जो तुम्हारा और तुम्हारे बड़ों का रब है। यही वअ़ज़ (दीनी नसीहत) इस आयत में हैः

وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا.

और वह (शैतान) तुम में से एक भारी मख़्लूक़ को गुमराह कर चुका (है) सो क्या तुम नहीं समझते थे? (सूरः यासीन आयत 62)

Maktab E Ashraf

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ۝ وَمَآ
اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ
السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ
رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ
فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ
وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ ع ١٠ ١٤

वे लोग कहने लगे कि बस तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है। (185) और तुम तो महज़ हमारी तरह (के) एक (मामूली) आदमी हो, और हम तो तुमको झूठे लोगों में से ख़्याल करते हैं। (186) सो अगर तुम सच्चों में से हो तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो। (187) शुऐब ने कहा कि तुम्हारे आमाल को मेरा रब (ही) ख़ूब जानता है। (188) सो वे लोग (बराबर) उनको झुठलाया किए, फिर उनको सायबान के वाक़िए ने आ पकड़ा, बेशक वह बड़े सख़्त दिन का अ़ज़ाब था। (189) (और) इस (वाक़िए) में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (190) और बेशक आपका रब बड़ी क़ुव्वत वाला और बड़ी रहमत वाला है। (191)

क़ौमे शुऐब की नाफ़रमानी और बदबख़्ती

समूदियों (समूद क़ौम वालों) ने जो जवाब अपने नबी को दिया था वही जवाब इन लोगों ने भी अपने नबी को दिया, कि तुझ पर तो किसी ने जादू कर दिया है, तेरी अ़क़्ल ठिकाने नहीं रही, तू हम जैसा ही इनसान है, बल्कि हमें तो यक़ीन है कि तू झूठा आदमी है, ख़ुदा ने तुझे नहीं भेजा। अच्छा अगर तू अपने दावे में सच्चा है तो हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दे। आसमानी अ़ज़ाब हम पर ले आ, यहाँ तक कहा कि या तो तू हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दे जैसे कि तेरा ख़्याल है या तू अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्तों को ले आ। एक दूसरी आयत में है कि उन्होंने कहा ख़ुदाया! अगर यह तेरे पास से है और हक़ है तो तू आसमान से पत्थर बरसा दे। इसी तरह उन जाहिल काफ़िरों ने कहा कि तू हम पर आसमान का टुकड़ा गिरा दे।

पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि ख़ुदा को तुम्हारे आमाल बख़ूबी (अच्छी तरह) मालूम हैं। जिस लायक़ तुम हो वह ख़ुद कर देगा। अगर तुम उसके नज़दीक आसमानी अ़ज़ाब के क़ाबिल हो तो बहुत जल्द तुम पर आसमानी अ़ज़ाब आ जायेगा। ख़ुदा ज़ालिम नहीं कि बेगुनाहों को सज़ा दे। आख़िरकार जिस क़िस्म का अ़ज़ाब ये माँग रहे थे उसी क़िस्म का अ़ज़ाब उन पर आ पड़ा।

उन्हें सख़्त गर्मी महसूस हुई। सात दिन तक गोया ज़मीन उबलती रही, किसी जगह किसी साये में ठंडक या राहत मयस्सर न हुई। तड़प उठे, बेक़रार हो गये, सात दिन के बाद उन्होंने देखा कि एक काला बादल उनकी तरफ़ चला आ रहा है। वह आकर उनके सरों पर छा गया। ये सब गर्मी और हरारत से

परेशान हो गये थे। उसके नीचे जा बैठे। जब सारे के सारे उसके साये में पहुँच गये, वहीं बादल से आग बरसने लगी, साथ ही ज़मीन ज़ोर-ज़ोर से झटके खाने लगी और इस ज़ोर की आवाज़ आई जिससे उनके दिल फट गये, जान निकल गई और सारे के सारे लम्हों में तबाह व वीरान हो गये। उस दिन के साये वाले सख़्त अ़ज़ाब ने उनमें से एक को भी बाक़ी न छोड़ा।

सूरः आराफ़ में तो फ़रमाया गया है कि एक ज़लज़ले के साथ ही ये सब हलाक हो गये। सूरः हूद में बयान हुआ है कि उनकी तबाही का कारण एक ख़तरनाक व दिल को फाड़ देने वाली चीख़ थी, और यहाँ बयान हुआ कि उन्हें सायबान के दिन अ़ज़ाब ने थाम लिया। तो तीनों मक़ामात पर तीनों अ़ज़ाबों का एक एक करके ज़िक्र हर मक़ाम की इबारत की मुनासबत की वजह से हुआ। सूरः आराफ़ में उनकी ख़बासत (बुरी हरकत) का ज़िक्र है कि उन्होंने हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को धमकाया था कि अगर तुम हमारे दीन में न आये तो हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को शहर से निकाल देंगे। चूँकि वहाँ नबी के दिल को हिला देने का ज़िक्र था, इसलिये अ़ज़ाब में भी उनके जिस्मों को मय दिलों के हिला देने वाले यानी ज़लज़ले और झटके का ज़िक्र हुआ। सूरः हूद में ज़िक्र है कि उन्होंने अपने नबी को बतौर मज़ाक़ कहा था कि आप तो बड़े बुर्दबार और भले आदमी हैं। मतलब यह था कि बड़े बक्की बकवास करने वाले और बुरे आदमी हैं तो वहाँ अ़ज़ाब में चीख़ और चिंघाड़ का बयान हुआ। यहाँ चूँकि उनकी आरज़ू आसमान के टुकड़े गिरने की थी तो अ़ज़ाब का ज़िक्र भी छज्जे जैसे बादल के टुकड़े से हुआ। वाक़ई अल्लाह की शान अ़ज़ीम है और उसकी ज़ात पाक है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का बयान है कि सात दिन तक वह गर्मी पड़ी कि अल्लाह की पनाह! कहीं ठंडक का नाम नहीं। तिलमिला उठे। उसके बाद एक बादल उठा और चढ़ा, उसके साये में एक शख़्स पहुँचा और वहाँ राहत और ठंडक पाकर उसने दूसरों को भी बुलाया। जब सब जमा हो गये तो बादल फटा और उसमें से आग बरसी। यह भी मन्क़ूल है कि बादल जो बतौर सायबान (साया करने वाली चीज़) के था, उनके जमा होते ही हट गया और सूरज से उन पर आग बरसी, जिससे वे ख़त्म हो गये।

मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुरज़ी रह. फ़रमाते हैं कि मद्यन वालों पर तीनों अ़ज़ाब आये, शहरों में ज़लज़ला आया जिससे डरकर वे लोग शहर की हदों से बाहर आ गये। बाहर जमा होते ही घबराहट, परेशानी और बेकली शुरू हो गई तो वहाँ से भाग पड़े, लेकिन शहर में जाने से डरे। वहीं देखा कि एक जगह एक बादल का टुकड़ा है। एक उसके नीचे गया और उसकी ठंडक महसूस करके सबको आवाज़ दी कि यहाँ आ जाओ, यहाँ जैसी ठंडक और सुकून तो कभी देखा ही नहीं। यह सुनते ही सब उसके नीचे जमा हो गये, कि अचानक एक चीख़ की आवाज़ आई जिससे कलेजे फट गये और सब के सब मर गये।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि सख़्त गरज, कड़क और गर्मी शुरू हुई जिससे साँस घुटने लगे और बेचैनी हद को पहुँच गई। घबराकर शहर छोड़कर मैदान में जमा हो गये। यहाँ बादल आया जिसके नीचे ठंडक और राहत हासिल करने के लिये सब जमा हुए। वहीं आग बरसी और सब जल-भुन गये। यह था सायबान वाले बड़े भारी दिन का अ़ज़ाब, जिसने उनका नाम व निशान तक न छोड़ा। यक़ीनन यह वाक़िआ़ सरासर इब्रत (सबक़ लेने) और अल्लाह की क़ुदरत की एक ज़बरदस्त निशानी है। उनमें से अक्सर बेईमान थे। ख़ुदा तआ़ला अपने बुरे बन्दों से इन्तिक़ाम (बदला) लेने में ग़ालिब है, कोई उसे मग़लूब नहीं कर सकता (यानी उसकी ताक़त को चुनौती नहीं दे सकता) वह अपने नेक बन्दों पर मेहरबान है, उन्हें बचा

Maktaba E Ashraf

लिया करता है।

और यह क़ुरआन रब्बुल-आलमीन का भेजा हुआ है। (192) इसको अमानत दार फ़रिश्ता लेकर आया है (193) आपके दिल पर ताकि आप (भी) अन्य डराने वालों में से हों (194) साफ़ अरबी ज़बान में "नाज़िल किया" (195)	وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ۝

यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से उतारा हुआ है

सूरत की शुरूआत में क़ुरआने करीम का ज़िक्र आया था। वही ज़िक्र फिर तफ़सील से बयान हो रहा है कि यह किताब क़ुरआने करीम अल्लाह तआला ने अपने बन्दे और अपने नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल फ़रमाई है। रूहुल-अमीन से मुराद हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं जिनके वास्ते से 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) तमाम रसूलों के सरदार पर उतरी है। जैसे फ़रमान है यानी इस क़ुरआन को अल्लाह के हुक्म से हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने तेरे दिल पर नाज़िल फ़रमाया है। यह क़ुरआन पिछली तमाम आसमानी किताबों को सच्चा बताने वाला है। हमारे यहाँ ऐसा मुकर्रम (इज़्ज़त व सम्मान वाला) है कि इसका दुश्मन हमारा दुश्मन है।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जिससे रूहुल-अमीन बोले उसे ज़मीन नहीं खाती (जैसा कि अम्बिया के जिस्मों को मिट्टी नहीं खाती)। इस बुज़ुर्ग और बुलन्द रुतबे वाले फ़रिश्ते ने जो फ़रिश्तों का सरदार है, तेरे दिल पर इस पाक और बेहतर कलामे ख़ुदा को नाज़िल फ़रमाया है, जो हर तरह के मैल-कुचैल से कमी ज़्यादती से, नुक़सान और टेढ़ से पाक है। ताकि तू ख़ुदा के मुख़ालिफ़ों को, गुनाहगारों को अल्लाह की सज़ा से महफ़ूज़ रहने की रहबरी कर सके, और मानने वालों, अल्लाह व रसूल के फ़रमान के ताबेदारों को ख़ुदा की मग़फ़िरत व रज़ामन्दी की ख़ुशख़बरी पहुँचा सके।

यह वाज़ेह और साफ़ अरबी ज़बान में है, ताकि हर शख़्स समझ सके, पढ़ सके, किसी का उज़्र बाक़ी न रहे, और हर एक पर क़ुरआने करीम ख़ुदा तआला की हुज्जत बन जाये। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. ने सहाबा रज़ि. के सामने बहुत ही उम्दा अन्दाज़ में बादल की विशेषतायें बयान कीं जिसे सुनकर सहाबा यह कह उठे कि या रसूलल्लाह! आप तो कमाल दर्जे की फ़सीह व बलीग़ ज़बान (यानी बहुत ही ऊँचे दर्जे की और उम्दा अरबी भाषा) बोलते हैं। आपने फ़रमाया भला मेरी ज़बान ऐसी पाकीज़ा क्यों न होगी, क़ुरआन भी तो मेरी ज़बान में उतरा है। इमाम सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) अरबी में उतरी है, यह और बात है कि हर नबी ने अपनी क़ौम के लिये उनकी ज़बान में तर्जुमा कर दिया। क़ियामत के दिन सुरयानी ज़बान होगी, हाँ जन्नतियों की ज़बान अरबी होगी। (इब्ने अबी हातिम)

और इस (क़ुरआन) का ज़िक्र पहली उम्मतों की (आसमानी) किताबों में (भी) है। (196) क्या उन लोगों के लिए यह बात दलील नहीं है कि इस (पेशीनगोई) को बनी इस्राईल के उलेमा	وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝

Maktab-E-Ashraf

जानते हैं। (197) और अगर (फ़र्ज़ करो) हम इस (क़ुरआन) को किसी अ़जमी (ग़ैर-अ़रबी) पर नाज़िल कर देते (198) फिर वह (ग़ैर-अ़रबी) उनके सामने इसको पढ़ भी देता, ये लोग (अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी और बैर की वजह से) तब भी इसको न मानते। (199)	وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बेसत और क़ुरआन का ज़िक्र

फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल हुई पहली किताबों में भी इस पाक और आख़िरी कलाम की पेशगोई (भविष्यवाणी) और तस्दीक़ व सिफ़त मौजूद है। पहले गुज़रे नबियों ने भी इसकी बशारत (ख़ुशख़बरी) दी है, यहाँ तक कि उन तमाम नबियों के आख़िरी नबी जिनके बाद हुज़ूर सल्ल. तक और कोई नबी न था, यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम, उन्होंने बनी इस्राईल को जमा करके जो ख़ुतबा दिया उसमें फ़रमाते हैं कि ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुदा का भेजा हुआ रसूल हूँ जो अगली किताबों की तस्दीक़ करने के साथ ही आने वाले रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. की बशारत तुम्हें सुनाता हूँ। ज़बूर हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की किताब का नाम है, यहाँ ज़बूर का लफ़्ज़ किताबों के मायने में है। जैसे फ़रमान है:

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ.

जो कुछ ये कह रहे हैं सब किताबों में लिखा हुआ है।

फिर फ़रमाया कि अगर ये समझें, ज़िद (हठधर्मी) और तास्सुब न करें तो क़ुरआन की हक़्क़ानियत (सच्चा होने) पर यह दलील ही क्या कम है कि ख़ुद बनी इस्राईल के उलेमा इसे मानते हैं। उनमें से जो हक़ कहने वाले और बे-तास्सुब हैं, वे तौरात की आयतों का लोगों पर इज़हार कर रहे हैं, जिनमें हुज़ूर सल्ल. की बेसत (नबी बनकर तशरीफ़ लाने) और क़ुरआन का ज़िक्र और आपकी सच्चाई की ख़बर है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम, हज़रत सलमान फ़ारसी और उन जैसे हक़ का इज़हार करने वाले हज़रात ने दुनिया के सामने तौरात व इन्जील की वे आयतें रख दीं जो हुज़ूर सल्ल. की बुलन्द शान और आला रुतबे को ज़ाहिर करने वाली थीं।

इसके बाद आयत का मतलब यह है कि अगर इस उम्दा, बेहतरीन और बेमिसाल कलाम को हम किसी अ़जमी (ग़ैर-अ़रबी) पर नाज़िल फ़रमाते तो कोई शक हो ही नहीं सकता था कि यह हमारा कलाम है, मगर क़ुरैश के मुश्रिक लोग अपने कुफ़्र और अपनी सरकशी में इतने बढ़ गये हैं कि उस वक़्त भी वे ईमान न लाते। जैसे फ़रमान है कि अगर आसमान का दरवाज़ा भी इनके लिये खोल दिया जाता और ये ख़ुद चढ़ जाते तब भी यही कहते कि हमें नशा पिला दिया गया है, हमारी आँखों पर पर्दा डाल दिया गया है। एक और आयत में है कि अगर इनके पास फ़रिश्ते आ जाते और मुर्दे बोल उठते तब भी इन्हें ईमान नसीब न होता। इन पर अ़ज़ाब का कलिमा साबित हो चुका, हिदायत का रास्ता इनके लिये बन्द हो चुका।

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِىْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ۝ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ۝ ذِكْرٰى وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

हमने इसी तरह (सख़्ती और इसरार के साथ) इस ईमान न लाने को उन नाफ़रमानों के दिलों में डाल रखा है। (200) ये लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान न लाएँगे जब तक कि सख़्त अ़ज़ाब को (मरने के वक़्त या बर्ज़ख़ में या आख़िरत में) न देख लेंगे। (201) जो अचानक उनके सामने आ खड़ा होगा, और उनको (पहले से) ख़बर भी न होगी। (202) फिर (उस वक़्त जान को बनेगी) कहेंगे कि क्या (किसी तौर पर) हमको (कुछ) मोहलत मिल सकती है? (203) क्या (हमारी डाँट और धमकियों को सुनकर) ये लोग हमारे अ़ज़ाब का जल्द आना चाहते हैं? (204) ऐ मुख़ातब! ज़रा बतलाओ तो अगर हम उनको चन्द साल तक ऐश में रहने दें, (205) फिर जिस (अ़ज़ाब) का उनसे वायदा है वह उनके सर पर आ पड़े, (206) तो उनका वह ऐश किस काम आ सकता है। (207) और जितनी बस्तियाँ (इनकार करने वालों की) हमने (अ़ज़ाब से) ग़ारत की हैं सब में डराने वाले (पैग़म्बर) आए। (208) (जब न माना तो अ़ज़ाब नाज़िल हुआ) नसीहत के वास्ते, "यानी पैग़म्बर नसीहत के वास्ते आए" और हम (बज़ाहिर देखने में भी) ज़ालिम नहीं हैं। (209)

मुजरिमों का बुरा अन्जाम

अल्लाह के रसूलों को झुठलाने, उनके साथ कुफ़्र करने, इनकार करने और अल्लाह व रसूल के पैग़ाम को क़बूल न करने को इन मुजरिमों के दिल में बैठा दिया है। ये जब तक अ़ज़ाब अपनी आँखों से न देख लें ईमान नहीं लायेंगे। उस वक़्त अगर ईमान लाये भी तो बिल्कलु बेसूद और बेकार होगा। लानत पड़ चुकी होगी, बुराई मिल चुकी होगी, न पछताना काम आयेगा न माज़िरत नफ़ा देगी। अ़ज़ाबे ख़ुदा आयेंगे और अचानक उनकी बेख़बरी में ही आ जायेंगे। उस वक़्त इनकी ये तमन्नायें कि अगर ज़रा सी भी मोहलत पायें तो नेक बन जायें बेसूद होगी। एक इन्हीं पर क्या मौक़ूफ़ (निर्भर) है हर ज़ालिम फ़ाजिर काफ़िर बदकार अ़ज़ाब को देखते ही सीधा हो जाता है, तौबा-तिल्ला करता है, मगर सब ला-हासिल (बेफ़ायदा) है।

फ़िरऔन ही को देखिये, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उसके लिये बददुआ़ की जो क़बूल हुई। अ़ज़ाब

Maktab E Ashraf

को देखकर डूबते हुए कहने लगा कि अब मैं मुसलमान होता हूँ। लेकिन जवाब मिला कि यह ईमान बेसूद (कोई फ़ायदा देने वाला नहीं) है। इसी तरह इन आयतों में है कि हमारे अ़ज़ाब को देखकर ईमान का इक़रार किया....।

फिर उनकी एक और बदबख़्ती बयान हो रही है कि वे अपने नबियों से कहते थे कि अगर तुम सच्चे हो तो अ़ज़ाबे ख़ुदा लाओ। और अगर हम उन्हें मोहलत दें और कुछ मुद्दत तक उन्हें अ़ज़ाबों से बचाये रखें फिर उनके पास हमारे मुक़र्ररा अ़ज़ाब आ जायें तो उनका माल, उनकी नेमतें, उनकी शान व दबदबा ग़र्ज़ कोई चीज़ उन्हें ज़रा सा भी फ़ायदा नहीं दे सकती। उस वक़्त तो यही मालूम होगा कि शायद एक सुबह या एक शाम ही दुनिया में रहे। जैसे एक दूसरी आयत में है:

يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْيُعَمَّرُ......... الخ

कि उनमें से एक-एक की तमन्ना है कि वह हज़ार-हज़ार साल जिये। लेकिन इतनी उम्र भी अल्लाह के अ़ज़ाब से हटा नहीं सकती।

यहाँ भी यही फ़रमाया कि इनके असबाब इन्हें कुछ काम न आयेंगे। उसके औंधा करने के वक़्त उसकी तमाम ताक़तें और असबाब यूँ ही रह जायेंगे। चुनाँचे सही हदीस में है कि काफ़िर को क़ियामत के दिन लाया जायेगा, फिर आग में एक ग़ोता दिलवाकर पुछा जायेगा कि तूने कभी राहत व आराम उठाया? तो कहेगा ख़ुदा की क़सम मैंने कभी कोई राहत नहीं देखी। और एक उस शख़्स को लाया जायेगा जिसने पूरी उम्र वाक़ई कोई राहत चखी ही न हो, उसे जन्नत की हवा खिलाकर लाया जायेगा और सवाल होगा क्या तूने उम्र भर में कोई बुराई (यानी परेशानी और तकलीफ़) देखी है? वह कहेगा ख़ुदाया तेरी ज़ाते पाक की क़सम मैंने कभी कोई तकलीफ़ नहीं उठाई।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. उमूमन यह शे'र पढ़ा करते थे कि जब तू अपनी मुराद को पहुँच गया तो गोया तूने कभी किसी तकलीफ़ का नाम भी नहीं सुना। अल्लाह तआ़ला इसके बाद अपने अ़दल (इन्साफ़) की ख़बर देता है कि कभी उसने हुज्जत पूरी करने से पहले किसी उम्मत को ख़त्म नहीं किया। रसूलों को भेजता है, किताबें उतारता है, ख़बरें देता है, होशियार करता है, फिर न मानने वालों पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़ते हैं। फ़रमाया कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि अम्बिया के भेजने से पहले ही हमने किसी उम्मत पर अ़ज़ाब भेज दिये हों। डराने वाले भेजकर नसीहत करके उज़्र हटाकर फिर न मानने पर अ़ज़ाब होता है। जैसे फ़रमाया कि तेरा रब किसी बस्ती को हलाक नहीं करता जब तक उन बस्तियों की मुख्य बस्ती में किसी रसूल को न भेज दे, जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाये।

और इस (क़ुरआन) को शैतान (जो काहिनों के पास आया करते थे) लेकर नहीं आए। (210) और यह उन (की हालत) के मुनासिब ही नहीं, और वे इस पर क़ादिर भी नहीं। (211) क्योंकि वे शयातीन (आसमानी 'वही') सुनने से रोक दिए गए हैं। (212)	وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ○ وَمَا يَنْبَغِىْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ○ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ○

ये क़िस्मत के मारे और बद-नसीब

यह किताबे अ़ज़ीज़ (यानी क़ुरआन पाक) जिसके आस-पास भी बातिल (ग़ैर-हक़) फटक नहीं सकता। जो हिक्मत वाले और क़ाबिले तारीफ़ ख़ुदा की तरफ़ से उतरी है। जिसे रूहुल-अमीन जो क़ुव्वत व ताक़त वाले हैं लेकर आये हैं। इसे शयातीन नहीं लाये, फिर उनके न लाने पर तीन वजहें बयान की गईं- एक तो यह कि वे इसके लायक़ ही नहीं, उनका काम मख़्लूक़ को बहकाना है न कि सही रास्ते पर लाना। अच्छे कामों को हुक्म करना और बुरे कामों से रोकना जो इस किताब की शान है, उनके सरासर ख़िलाफ़ है। यह नूर है, यह हिदायत है, यह दलील है और शयातीन इन तीनों चीज़ों से चिढ़ते हैं। वे ज़ुल्मत (अंधकार) के शैदाई (चाहने वाले), वे गुमराही के हीरो, वे जहालत के पसन्द करने वाले हैं। पस इस किताब में और उनमें तबई तौर पर ही कोई तालमेल नहीं है। कहाँ वे कहाँ यह।

दूसरी वजह यह है कि वे जहाँ इसके अहल (हक़दार और पात्र) नहीं, उनमें इसके उठाने और लाने की ताक़त भी नहीं। यह तो वह इ़ज़्ज़त व सम्मान और मर्तबे वाला काम है कि अगर किसी बड़े पहाड़ पर भी उतरे तो उसे चिकनाचूर कर दे। फिर तीसरी वजह यह बयान फ़रमाई कि वे तो इसके नुज़ूल (अल्लाह की तरफ़ से उतरने) के वक़्त हटा दिये गये थे। उन्हें तो सुनना भी नहीं मिला, तमाम आसमान पर सख़्त पहरा-चौकी (निगरानी) थी। ये सुनने के लिये चढ़ते थे तो इन पर आग बरसाई जाती थी। इसका एक हर्फ़ सुन लेना भी उनकी ताक़त से बाहर था, ताकि ख़ुदा का कलाम महफ़ूज़ (सुरक्षित) तरीक़े पर उसके नबी को पहुँचे और आपके ज़रिये से अल्लाह की मख़्लूक़ को पहुँचे। जैसे सूरः जिन्न में ख़ुद जिन्नात का मक़ूला बयान हुआ है कि हमने आसमान को टटोला तो उसे सख़्त पहरे-चौकी से भरपूर पाया और जगह-जगह शोले मुतैयन पाये। पहले तो हम बैठकर इक्का-दुक्का बात उड़ा लाया करते थे लेकिन अब तो कान लगाते ही शोला लपकता है और जलाकर भस्म कर देता है......।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ
الْمُعَذَّبِيْنَ ۝ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ۝
وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ
مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ
الرَّحِيْمِ ۝ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۝

सो (ऐ पैग़म्बर!) तुम अल्लाह के साथ किसी और माबूद की इबादत मत करना, कभी तुमको सज़ा होने लगे। (213) और (इस मज़्मून से) आप (सबसे पहले) अपने नज़दीक के कुनबे को डराईये। (214) और उन लोगों के साथ (तो शफ़क़त भरी) इन्किसारी से पेश आईए जो मुसलमानों में दाख़िल होकर आपकी राह पर चलें। (215) और अगर ये लोग (जिन को आपने डराया है) आपका कहा न मानें तो आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारे फ़ेलों से बेज़ार हूँ। (216) और आप ख़ुदा-ए-क़ादिर रहीम पर भरोसा रखिए। (217) जो आपको जिस वक़्त कि आप (नमाज़ के लिए) खड़े होते हैं (218)

और (तथा नमाज़ शुरू करने के बाद) नमाज़ियों के साथ आपके उठने-बैठने को देखता है। (219) वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (220)	وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيْنَ ۝ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

Mahtab E Ashraf

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ हिदायतें

खुद अपने नबी से ख़िताब करके अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि सिर्फ़ मेरी ही इबादत कर, मेरे साथ किसी को शरीक न कर। जो भी ऐसा न करे वह ज़रूर सज़ा का हक़दार है। अपने क़रीबी रिश्तेदारों को होशियार कर दे कि सिवाय ईमान के कोई चीज़ निजात दिलाने वाली नहीं। फिर हुक्म देता है कि अल्लाह को एक मानने वाले, सुन्नते रसूल की पैरवी करने वाले लोगों से आ़जिज़ी व विनम्रता के साथ मिलता जुलता रह, और जो भी मेरी न माने चाहे कोई भी हो तू उससे बेताल्लुक़ हो जा, और अपनी बेज़ारी का इज़हार कर दे। एक और जगह इरशाद है तू उस क़ौम को डरा दे जिनके बड़े भी डराये नहीं गये, और जो ग़फ़लत (लापरवाही) में पड़े हुए हैं। एक और आयत में हैः

لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا.

कि तू मक्के वालों और उसके आस-पास वालों सब को डरा दे।

एक और आयत में है कि तू इससे होशियार कर दे जो अपने रब के पास जमा होने से ख़ौफ़ज़दा हो (यानी डर) रहे हैं। एक दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया कि तू इससे परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी सुना दे और सरकशों (नाफ़रमानों) को डरा दे। एक और आयत में फ़रमायाः

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْ بَلَغَ.

ताकि मैं इस क़ुरआन के साथ तुम्हें और जिसे भी यह पहुँचे डरा दूँ।

एक और जगह फ़रमान है कि उसके साथ इन तमाम फ़िर्क़ों में से जो भी कुफ़्र करे उसकी सज़ा जहन्नम है। सही मुस्लिम की हदीस में है कि उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, इस उम्मत में से जिसके कान में मेरी शोहरत (मेरी दावत) पड़ जाये चाहे यहूदी हो या ईसाई, फिर वह मुझ पर ईमान न लाये तो वह ज़रूर जहन्नम में जायेगा। इस आयत की तफ़सीर में बहुत सी हदीसें हैं उन्हें सुन लीजियेः

1. मुस्नद अहमद में है कि जब अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी तो नबी करीम सल्ल. सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ गये और "या सबाहाह्" करके आवाज़ दी। लोग जमा हो गये, जो नहीं आ सकते थे उन्होंने अपने आदमी भेज दिये। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ऐ अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद! ऐ फ़ेहर की औलाद! बतलाओ अगर मैं तुमसे कहूँ कि इस पहाड़ के पीछे तुम्हारे दुश्मन का लश्कर पड़ा हुआ है, घात में है, मौक़ा पाते ही तुम सब को क़त्ल कर डालेगा तो क्या तुम मुझे सच्चा समझोगे? सब ने एक ज़बान होकर कहा कि हाँ! हम आपको सच्चा ही समझेंगे। अब आपने फ़रमाया सुन लो मैं तुम्हें आने वाले सख़्त अ़ज़ाबों से डराने वाला हूँ। इस पर अबू-लहब मलऊन ने कहा तू हलाक हो जाये, यही सुनाने के लिये तूने हमें बुलाया था? इसके जवाब में सूरः 'तब्बत् यदा' उतरी। (बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह)

2. मुस्नद अहमद में है कि इस आयत के उतरते ही अल्लाह के नबी सल्ल. खड़े हो गये और फ़रमाने

लगे ऐ फ़ातिमा मुहम्मद की बेटी! ऐ सफ़िया अ़ब्दुल-मुत्तलिब की बेटी! सुनो मैं तुम्हें ख़ुदा के यहाँ कुछ काम नहीं आ सकता। हाँ मेरा जो माल हो जितना तुम चाहो मैं देने के लिये तैयार हूँ। (मुस्लिम)

3. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत के उतरते ही हुज़ूर सल्ल. ने क़ुरैशियों को बुलाया और उन्हें एक-एक करके और सब को एक साथ ख़िताब करके फ़रमाया ऐ क़ुरैशियो! अपनी जानें जहन्नम से बचा लो। ऐ कअ़ब के ख़ानदान वालो! अपनी जानें आग से बचा लो। ऐ हाशिम की औलाद के लोगो! ख़ुद को ख़ुदा के अ़ज़ाब से छुड़ा लो। ऐ अ़ब्दुल-मुत्तलिब के लड़को! ख़ुदा के अ़ज़ाब से बचने की कोशिश करो। ऐ फ़ातिमा मुहम्मद की बेटी! अपनी जान को दोज़ख़ से बचा लो। अल्लाह की क़सम मैं अल्लाह के यहाँ की किसी चीज़ का मालिक नहीं, बेशक तुम्हारी क़राबत-दारी (रिश्तेदारी) है जिसके दुनियावी हुक़ूक़ मैं हर तरह से अदा करने को तैयार हूँ। (मुस्लिम वग़ैरह)

बुख़ारी व मुस्लिम में भी अलफ़ाज़ की थोड़ी सी तब्दीली के साथ यह हदीस मन्क़ूल है। उसमें यह भी है कि आपने अपनी फूफी हज़रत सफ़िया और अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा से यह भी फ़रमाया कि मेरे माल में से जो चाहो तलब कर लो। अबू यअ़्ला में है कि आपने फ़रमाया ऐ क़ुसई की, ऐ हाशिम की, ऐ अ़ब्दे मुनाफ़ की औलाद! याद रखो मैं डराने वाला हूँ और मौत बदल देने वाली है, उसका छापा आ रहा है और क़ियामत आने वाली है जिसका वायदा (यानी वक़्त मुक़र्रर) है।

4. मुस्नद अहमद में है कि जब हुज़ूर सल्ल. पर यह आयत उतरी तो आप एक पहाड़ी पर चढ़ गये, जिसकी चोटी पर पत्थर थे। वहाँ पहुँचकर आपने फ़रमाया ऐ अ़ब्दे मुनाफ़ की औलाद! मैं तो सिर्फ़ होशियार कर देने वाला हूँ। मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने दुश्मन को देखा और दौड़कर अपने मुताल्लिक़ीन (संबन्धियों और ताल्लुक़ रखने वालों) को होशियार करने के लिये आया ताकि वे अपना बचाव कर लें। दूर से ही उसने शोर मचाना शुरू कर दिया ताकि पहले ही ख़बरदार हो जायें। (मुस्लिम नसाई वग़ैरह)

5. हज़रत अ़ली रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब यह आयत उतरी तो नबी करीम सल्ल. ने अपने अहले बैत (घर वालों) को जमा किया, ये तीस शख़्स थे। जब ये खा-पी चुके तो नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कौन है जो मेरा क़र्ज़ अपने ज़िम्मे ले और मेरे बाद मेरे वायदे पूरे करे, वह जन्नत में भी मेरा साथी और मेरे घर वालों में मेरा ख़लीफ़ा होगा। एक शख़्स ने कहा आप तो एक समुद्र हैं, आपके साथ कौन खड़ा हो सकता है? तीन दफ़ा आपने फ़रमाया लेकिन कोई तैयार न हुआ तो मैंने कहा या रसूलल्लाह! मैं इसके लिये तैयार हूँ। (मुस्नद अहमद)

एक और सनद से इससे ज़्यादा तफ़सील के साथ रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद को जमा किया जो एक जमाअ़त की जमाअ़त थी और बड़े खाने वाले थे। एक-एक शख़्स एक-एक बकरी का बच्चा खा जाता था। एक बड़ा बंटा दूध का पी जाता था। आपने उन सब के खाने के लिये सिर्फ़ तीन पाव के क़रीब खाना पकवाया, लेकिन ख़ुदा ने उसी में इतनी बरकत दी कि सब पेट भरकर खा चुके और ख़ूब सैर होकर पी चुके। लेकिन न तो खाने में कमी नज़र आई न पीने की चीज़ घटती हुई मालूम होती थी। फिर आपने फ़रमाया ऐ अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद! मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ास तौर पर और तमाम लोगों की तरफ़ उमूमन नबी बनाकर भेजा गया हूँ। इस वक़्त तुम मेरा एक मोजिज़ा भी देख चुके हो। अब तुम में से कौन तैयार है कि मुझसे बैअ़त करे कि वह मेरा भाई और मेरा साथी होगा। लेकिन एक शख़्स भी मजमे में से खड़ा न हुआ सिवाय मेरे। और मैं उस वक़्त उम्र के लिहाज़ से उन सब से छोटा था। आपने फ़रमाया तुम बैठ जाओ, तीन मर्तबा आपने यही फ़रमाया और तीनों मर्तबा सिवाय मेरे और कोई

खड़ा न हुआ। तीसरी मर्तबा आपने मेरी बैअ़त ली।

इमाम बैहक़ी "दलाईले-नुबुव्वत" में रिवायत लाये हैं कि जब यह आयत उतरी तो आपने यह फ़रमाया अगर मैं अपनी क़ौम के सामने फ़ौरन ही इसे पेश करूँगा तो वे न मानेंगे और ऐसा जवाब देंगे जो मुझ पर भारी गुज़रेगा। पस आप ख़ामोश हो गये। इतने में जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और फ़रमाने लगे हज़रत! अगर आपने अल्लाह के हुक्म की तामील में देरी की तो डर है कि आपको सज़ा होगी। उसी वक़्त आपने हज़रत अ़ली रज़ि. को बुलाया और फ़रमाया मुझे हुक्म हुआ है कि मैं अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराऊँ। मैंने यह ख़्याल करके कि अगर पहले ही से उनसे कहा गया तो वे मुझे ऐसा जवाब देंगे जिससे मुझे ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचेगी, मैं ख़ामोश रहा, लेकिन जिब्राईल आये और कहा कि अगर तूने ऐसा न किया तो तुझे अ़ज़ाब होगा। तो अब ऐ अ़ली! तुम एक बकरी ज़िबह करके गोश्त पका लो और कोई तीन सैर अनाज भी तैयार कर लो, और एक बरतन दूध का भी भर लो, और अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद को भी जमा कर लो। मैंने ऐसा ही किया और सब को दावत दी। चालीस आदमी जमा हुए या एक आध कम या एक आध ज़्यादा होंगे। उनमें आपके चचा भी थे- अबू तालिब, हमज़ा, अ़ब्बास। अबू लहब काफ़िर ख़बीस भी था। मैंने सालन पेश किया तो आपने उसमें से एक बोटी लेकर कुछ खाया फिर उसे हंडिया में डाल दिया और फ़रमाया अल्लाह का नाम लो और खाना शुरू करो। सबने खाना शुरू किया, यहाँ तक कि पेट भर गये लेकिन ख़ुदा की क़सम गोश्त उतना ही था जितना रखते वक़्त रखा था, सिर्फ़ उनकी उंगलियों के निशानात तो थे मगर गोश्त कुछ भी न घटा था, हालाँकि उनमें से एक-एक उतना गोश्त तो खा लेता था। फिर मुझसे फ़रमाया ऐ अ़ली! इन्हें पिलाओ। मैं दूध का बरतन लाया, सबने बारी-बारी पेट भरकर पिया और ख़ूब तबीयत भरी, लेकिन दूध बिल्कुल कम न हुआ। हालाँकि उनमें से एक एक उतना दूध पी लिया करता था।

अब हुज़ूर सल्ल. ने कुछ फ़रमाना चाहा लेकिन अबू लहब जल्दी से उठ खड़ा हुआ और कहने लगा लो साहिब! अब मालूम हुआ कि यह तमाम जादूगरी महज़ इसलिये थी। चुनाँचे मजमा उसी वक़्त खड़ा हो गया और हर एक अपनी राह लग गया। हुज़ूर सल्ल. को नसीहत व तब्लीग़ करने का मौक़ा न मिला। दूसरे दिन आपने हज़रत अ़ली रज़ि. से फ़रमाया आज फिर उसी तरह की दावत करो क्योंकि कल उसने मुझे कहने का वक़्त ही नहीं दिया था, मैंने फिर इसी तरह का इन्तिज़ाम किया। सब को दावत दी, आये खाया पिया फिर कल की तरह आज भी अबू लहब ने खड़े होकर वही बात कही और इसी सब तरह तितर-बितर हो गये। तीसरे दिन फिर हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़ली से यही फ़रमाया। आज जब सब खा-पी चुके तो हुज़ूर सल्ल. ने जल्दी से अपनी गुफ़्तगू शुरू कर दी और फ़रमाया- ऐ अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलादो! अल्लाह की क़सम कोई नौजवान शख़्स अपनी क़ौम के पास इससे बेहतर भलाई नहीं लाया जो मैं तुम्हारे पास लाया हूँ। दुनिया व आख़िरत की भलाई मैं लाया हूँ।

एक और रिवायत में इसके बाद यह भी है कि आपने फ़रमाया- अब बतलाओ तुम में से कौन मेरी मुवाफ़क़त करता (यानी मेरी बात मानता) है और कौन मेरा साथ देता है? मुझे अल्लाह तआ़ला का हुक्म हुआ है कि पहले मैं तुम्हें उसकी राह की दावत दूँ। जो आज मेरी मान लेगा वह मेरा भाई होगा और उसे ये दर्जे मिलेंगे। सब लोग ख़ामोश हो गये, लेकिन हज़रत अ़ली रज़ि. जो उस वक़्त उस मजमे में सबसे कम उम्र थे, दुखती आँखों वाले, मोटे पेट वाले और भरी पिंडलियों वाले थे, बोल उठे या रसूलल्लाह! इस मामले में मैं आपका साथी बनना क़बूल करता हूँ। आपने मेरी गर्दन पर हाथ रखकर फ़रमाया कि यह मेरा भाई और ऐसी-ऐसी फ़ज़ीलतों वाला है। तुम इसकी सुनो और मानो। यह सुनकर वे सब लोग हंसते हुए उठ खड़े

हुए और अबू तालिब से कहने लगे ले अब तू अपने बच्चे (यानी हज़रत अली) की सुन और मान। लेकिन इसका रावी अ़ब्दुल-ग़फ़्फ़ार बिन क़ासिम बिन अबी मरियम मतरूक है (यानी उसकी हदीसें नहीं ली जातीं), कज़्ज़ाब (झूठा) है और है भी शिया। इब्ने मदीनी वग़ैरह फ़रमाते हैं कि यह हदीसें गढ़ लिया करता था। हदीस के दूसरे इमामों ने भी इसे ज़ईफ़ (कमज़ोर) लिखा है।

Maktab E Ashraf

एक और रिवायत में है कि उस दावत में सिर्फ़ बकरी के एक पाँव का गोश्त पका था। उसमें यह भी है कि जब हुज़ूर सल्ल. खुतबा देने लगे तो उन्होंने झट कह दिया कि आज जैसा जादू तो हमने कभी नहीं देखा, इस पर आप ख़ामोश हो गये। उसमें आपका खुतबा यह है कि कौन है जो मेरा क़र्ज़ अपने ज़िम्मे ले और मेरे अपनों में मेरा ख़लीफ़ा (जानशीन और उत्तराधिकारी) बने। इस पर सब ख़ामोश रहे और अ़ब्बास भी चुप थे, सिर्फ़ अपने माल की कन्जूसी की वजह से। मैं अ़ब्बास को ख़ामोश देखकर ख़ामोश रहा, आपने दोबारा यही फ़रमाया, दोबारा भी ख़ामोशी थी, अब तो मुझसे न रहा गया और मैं बोल पड़ा। मैं उस वक़्त उन सब से गिरी-पड़ी हालत वाला दुखती आँखों वाला, बड़े पेट वाला और बोझल (यानी भारी) पिंडलियों वाला था। इन रिवायतों में जो हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि कौन मेरा क़र्ज़ अपने ज़िम्मे लेता है और मेरे अहल (घर वालों) की मेरे बाद हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे लेता है, इससे मतलब आपका यह था कि जब मैं इस दीनी तब्लीग़ को फैलाऊँगा और लोगों को खुदा की तौहीद की तरफ़ बुलाऊँगा तो सब के सब मेरे दुश्मन हो जायेंगे और मुझे क़त्ल कर देंगे। यही खटका आपको लगा रहा यहाँ तक कि यह आयत उतरीः

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ.........الخ

कि अल्लाह तआ़ला तुझे लोगों की ईज़ा-रसानी (तकलीफ़ पहुँचाने) से बचा लेगा।

उस वक़्त आप बेख़तर हो गये। उससे पहले आप अपनी हिफ़ाज़त कराते थे लेकिन इस आयत के उतरने के बाद वह भी ख़त्म कर दी। उस वक़्त वास्तव में तमाम बनू हाशिम में हज़रत अ़ली रज़ि. से ज़्यादा ईमान वाला और तस्दीक़ व यक़ीन वाला कोई न था, इसी लिये आपने ही हुज़ूर सल्ल. के साथ इक़रार किया। उसके बाद हुज़ूर सल्ल. ने सफ़ा पहाड़ी पर आ़म दावत दी और लोगों को तौहीदे ख़ालिस (सिर्फ़ अल्लाह को माबूद बनाने) की तरफ़ बुलाया, और अपनी नुबुव्वत का ऐलान किया।

इब्ने अ़साकिर में है कि एक मर्तबा हज़रत अबूदर्दा रज़ि. मस्जिद में बैठे हुए दीनी बयान फ़रमा रहे थे, फ़तवे दे रहे थे, मज्लिस खचाखच भरी हुई थी, हर एक की निगाहें आपके चेहरे पर थीं और शौक़ से सुन रहे थे, लेकिन आपके लड़के और घर के आदमी आपस में बहुत ही बेपरवाही से अपनी बातों में मशग़ूल थे। किसी ने हज़रत अबू दर्दा रज़ि. को तवज्जोह दिलाई कि और सब लोग तो दिल से आपकी इल्मी बातों में दिलचस्पी ले रहे हैं और आपके घर के लोग इससे बिल्कुल बेपरवाह हैं, वे अपनी बातों में निहायत बेपरवाही से मशग़ूल हैं। तो आपने जवाब में फ़रमाया- मैंने रसूले खुदा सल्ल. से सुना है कि दुनिया से बिल्कुल एक तरफ़ हो जाने वाले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम होते हैं, और उन पर सबसे ज़्यादा सख़्त और भारी उनके क़रीबी रिश्तेदार होते हैं। इसी बारे में ये आयतें उतरीं:

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ.................. تَعْمَلُوْنَ.

कि आप अपने नज़दीक के कुनबे वालों को डराईये.........। (सूरः शु-अ़रा आयत 214-216)

फिर फ़रमाता है कि अपने तमाम मामलात में अल्लाह ही पर भरोसा रखो, वही तुम्हारा हाफ़िज़ व मददगार है, वही तुम्हारी ताईद करने वाला और तुम्हारे कलिमे को बुलन्द करने वाला है। उसकी निगाहें हर

Maktab E Ashraf

वक़्त तुम पर ही हैं। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है:

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا.

अपने रब के हुक्मों पर सब्र कर, तू हमारी आँखों के सामने है।

यह भी मतलब है कि जब तू नमाज़ के लिये खड़ा होता है तो हमारी आँखों के सामने होता है। हम तुम्हारे रुकूअ़ व सज्दों को देखते हैं। खड़े हो या बैठे या किसी हालत में हो हमारी नज़रों में हो। यानी तू तन्हाई में नमाज़ पढ़े तो हम देखते हैं और जमाअ़त से पढ़े तो हमारी निगाह के सामने होता है। यह भी मतलब है कि अल्लाह तआ़ला नमाज़ की हालत में आपको जिस तरह आपके सामने की चीज़ें दिखाता था आपके पीछे के मुक़्तदी आपकी निगाह में रहते थे। चुनाँचे सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाया करते थे- सफ़ें दुरुस्त कर लिया करो, मैं तुम्हें अपने पीछे से भी देखता रहता हूँ। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. यह मतलब भी बयान करते हैं कि नबी की पीठ से दूसरे नबी की पीठ की तरफ़ मुन्तक़िल होना हम बराबर देखते रहे हैं यहाँ तक कि आप एक नबी होने की हैसियत से दुनिया में आये। वह ख़ुदा अपने बन्दों की बातें ख़ूब सुनता है, उनकी हर हरकत को ख़ूब जानता है। जैसे फ़रमायाः

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ......... الخ

तू जिस हालत में हो, तू जो क़ुरआन पढ़ता है, तू जो अ़मल करे उस पर हम शाहिद (यानी हम उसको देख रहे) हैं......।

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ۝ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ۝ وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ۝ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ۭ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝ ع 11 15

(ऐ पैग़म्बर! लोगों से कह दीजिए कि) क्या मैं तुमको बतला दूँ शैतान किस पर उतरा करते हैं। (221) (सुनो!) ऐसे शख़्सों पर उतरा करते हैं जो (पहले से) झूठ बोलने वाले, बड़े बद-किरदार हों। (222) और जो (शैतानों की ख़बरें सुनने के लिए) कान लगा देते हैं, और वे कसरत से झूठ बोलते हैं। (223) और शायरों की राह तो बेराह लोग चला करते हैं। (224) (ऐ मुख़ातब!) क्या तुमको मालूम नहीं कि वे (शायर) लोग (ख़्याली मज़ामीन के) हर मैदान में हैरान फिरा करते हैं (225) और ज़बान से वे बातें कहते हैं जो करते नहीं। (226) हाँ! मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए, और उन्होंने (अपने शे'रों में) कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया, और उन्होंने उसके बाद कि उन पर ज़ुल्म हो चुका है (उसका) बदला लिया, और जल्द ही उन लोगों को मालूम हो जायेगा जिन्होंने (अल्लाह के हुक़ूक़ वग़ैरह में) ज़ुल्म कर रखा है कि कैसी जगह उनको लौटकर जाना है। (227)

Maktab E Ashraf

शैतान के यार-दोस्त

मुश्रिक लोग कहा करते थे कि मुहम्मद (नबी करीम सल्ल.) का लाया हुआ यह क़ुरआन हक़ नहीं, इसने इसे ख़ुद गढ़ लिया है, या इसके पास जिन्नों का सरदार आता है जो इसे यह सिखा जाता है। पस अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्ल. को इस एतिराज़ से पाक किया और साबित किया कि आप जिस क़ुरआन को लाये हैं वह अल्लाह का कलाम है, उसी का उतारा हुआ है। बुलन्द रुतबे वाला, अमानतदार और ताक़तवर फ़रिश्ता इसे लाया है। यह किसी शैतान या जिन्न की तरफ़ से नहीं, शयातीन तो क़ुरआन की तालीम से चिड़ते हैं। इसकी तालीम तो उनके बिल्कुल ख़िलाफ़ है। उन्हें क्या पड़ी है कि ऐसा पाकीज़ा और सही रास्ता दिखाने वाला क़ुरआन लायें और लोगों को नेक राह बतलायें। वे तो अपने जैसे इनसानी शैतानों के पास आते हैं, जो ख़ूब झूठ बोलने वाले हों, बुरे किरदार (बुरे आचरण वाले) और गुनाहगार हों। ऐसे काहिनों (ग़ैब की बातें बताने वालों), बदकारों और झूठे लोगों के पास जिन्नात और शयातीन पहुँचते हैं, क्योंकि वे भी झूठ और बुरे अ़मल वाले हैं। उचटती हुई कोई एक-आध बात सुनी सुनाई पहुँचाते हैं और वह एक बात जो आसमान से छुपते-छुपाते सुन ली थी उसमें अपनी तरफ़ से मिलाकर काहिनों के कान में डाल दी। उन्होंने अपनी तरफ़ से फिर बहुत से हाशिये चढ़ाकर लोगों में फैला दी। बस अब एक सच्ची बात तो सच्ची निकली, लोगों ने उनकी और सौ झूठी बातें भी सच्ची मान लीं और तबाह हुए।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि लोगों ने काहिनों के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल. से सवाल किया तो आपने फ़रमाया वे कोई चीज़ नहीं हैं। लोगों ने कहा हुज़ूर! कभी-कभी तो उनकी कोई बात सही भी निकल आती है? आपने फ़रमाया हाँ यह वही बात होती है जो जिन्नात आसमान से उड़ा लाते हैं और उनके कान में कह कर जाते हैं। फिर उसके साथ सौ झूठ अपनी तरफ़ से मिलाकर कह देते हैं। सही बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में यह भी है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी काम का फ़ैसला आसमान पर करता है तो फ़रिश्ते अदब के साथ अपने पर (पंख) झुका देते हैं। ऐसी आवाज़ आती है जैसे किसी चट्टान पर ज़न्जीर बजाई जाती हो। जब वह घबराहट उनके दिलों से दूर हो जाती है तो आपस में मालूम करते हैं कि रब का क्या हुक्म सादिर हुआ? (यानी कुछ पर इतनी घबराहट होती है जिन्हें पूरी तरह होश नहीं रहता, जबकि बहुत सों की हालत सही रहती है, उन्हीं से ये पूछते हैं) दूसरे जवाब देते हैं कि हक़ फ़रमाया और वह आ़लीशान और बहुत बड़ी अ़ज़मत वाला है। कभी-कभी अल्लाह के मामले और हुक्म चोरी-छुपे सुनने वाले किसी जिन्न के कान में भी पड़ जाते हैं जो इस तरह एक पर एक होकर वहाँ तक पहुँचे हुए होते हैं। हदीस को रिवायत करने वाले हज़रत सुफ़ियान ने अपने हाथों की उंगलियाँ फैलाकर उस पर दूसरा हाथ इस तरह रखकर उन्हें हिलाकर बतलाया कि इस तरह। अब ऊपर वाला नीचे वाले और वह अपने नीचे वाले को बात बतला देता है, यहाँ तक कि जादूगर और काहिन (जिन्नात से सुनकर ग़ैब की बातें बताने वालों) को वह बात पहुँचा देते हैं। कभी ऐसा होता है कि बात पहुँचाने से पहले शोला पहुँच जाता है और कभी इससे पहले ही वे पहुँचा देते हैं। उसमें काहिन व जादूगर अपने सौ झूठ मिलाकर मशहूर करता है। चूँकि वह एक बात सच्ची निकलती है लोग सब को ही सच समझने लगते हैं। इन तमाम हदीसों का बयान आयतः

حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ..........الخ

यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो एक-दूसरे से पूछते हैं कि तुम्हारे

Maktab E Ashraf

परवर्दिगार ने क्या हुक्म फ़रमाया.........। (सूरः सबा आयत 23) की तफ़सीर में आयेगा, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में यह भी है कि फ़रिश्ते आसमानी अमर (मामले और हुक्म) की बातचीत बादलों पर करते हैं, जिसे शैतान सुनकर काहिनों को पहुँचाते हैं और वे एक सच में सौ झूठ मिला लेते हैं। फिर फ़रमाता है कि काफ़िर शायरों की ताबेदारी गुमराह लोग करते हैं। अ़रब के शायरों का दस्तूर था कि किसी की निंदा और बुराई अपने शे'रों में कर डालते थे और लोगों की एक जमाअ़त उनके साथ हो जाती थी और उनकी हाँ में हाँ मिलाने लगती थी।

रसूलुल्लाह सल्ल. सहाबा की एक जमाअ़त के साथ अ़रज में जा रहे थे कि एक शायर शे'र पढ़ता हुआ मिला। आपने फ़रमाया इस शैतान को पकड़ लो, या फ़रमाया रोक लो। तुम में से कोई शख़्स ख़ून और पीप से अपना पेट भरे यह इससे बेहतर है कि वह शे'रों से अपना पेट भर ले। (यानी अगर शे'रों का मज़्मून ग़लत हो, वरना अच्छे शे'रों को तो आपने पसन्द फ़रमाया है)। इन्हें जंगल की ठोकरें खाते किसने नहीं देखा। हर बेहूदा बात में ये घुस जाते हैं। कलाम के हर फ़न में बोलते हैं। कभी किसी की तारीफ़ में ज़मीन व आसमान को एक कर देते हैं, कभी किसी की बुराई में आसमान व ज़मीन सर पर उठाते हैं। झूठी तारीफ़ें, चापलूसी की बातें, झूठी बुराईयाँ, गढ़ी हुई बुराईयाँ इनके हिस्से में आई हैं। ये ज़बान के भाँड होते हैं, लेकिन काम के काहिल (सुस्त और निकम्मे)।

एक अन्सारी आदमी और एक दूसरी क़ौम के शख़्स ने एक दूसरे की बुराई बयान करने में मुक़ाबला किया जिसमें दोनों की क़ौम के बड़े-बड़े लोग भी उनके साथी हो गये। पस इस आयत में यही है कि उनका साथ देने वाले गुमराह लोग वे बातें बका करते हैं जिन्हें कभी की न हों। इसी लिये उलेमा ने इस बात में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया है कि अगर किसी शायर ने अपने शे'र में किसी ऐसे गुनाह का इक़रार किया है जिस पर शरई सज़ा वाजिब होती हो तो आया वह हद (सज़ा) उस पर जारी की जायेगी या नहीं? दोनों तरफ़ उलेमा गये हैं (यानी बाज़ ने कहा कि उसने एक गुनाह का इक़रार किया इसलिये सज़ा जारी होगी, और बाज़ ने इसी बिना पर कि ये लोग बहुत सी ऐसी बातें कह जाते हैं जो करते नहीं, उस पर सज़ा जारी करने को मना किया है)। वाक़ई वे फ़ख़्र व ग़ुरूर के साथ ऐसी बातें बक देते हैं कि मैंने यह किया और यह किया, हालाँकि न कुछ किया हो न करते हों।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत नोमान बिन अ़दी बिन नज़ला को बसरे के शहर नीसान का गवर्नर मुक़र्रर किया था। वह शायर थे। एक मर्तबा अपने शे'रों में कहा कि क्या हसीनों को यह इत्तेला नहीं हुई कि उनका महबूब नीसान में है, जहाँ हर वक़्त शीशे के गिलास से शराब का दौर चल रहा है और गाँव की भोली लड़कियों के गाने और उनके नाच व मस्ती उपलब्ध हैं। हाँ अगर मेरे किसी दोस्त से हो सके तो इससे बड़े और भरे हुए जाम मुझे पिलाये, लेकिन इनसे छोटे जाम मुझे नापसन्द हैं। ख़ुदा करे अमीरुल-मोमिनीन को यह ख़बर न पहुँचे वरना वह बुरा मानेंगे और सज़ा देंगे। ये अश्आ़र सच-मुच हज़रत अमीरुल-मोमिनीन तक पहुँचे, आप सख़्त नाराज़ हुए और उसी वक़्त आदमी भेजा कि मैंने तुझे तेरे ओ़हदे से हटा दिया। और आपने एक ख़त भेजा जिसमें बिस्मिल्लाह के बाद सूरः मोमिन की शुरू की तीन आयतें:

حٰمٓ ○ ....اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ.

Maktaba Ashraf

लिखकर फिर तहरीर फ़रमाया कि तेरे अश्आर मैंने सुने, मुझे सख़्त रंज हुआ। मैं तुझे तेरे ओहदे (पद) से हटाता हूँ। चुनाँचे उस ख़त को पढ़ते ही हज़रत नोमान दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हुए और अदब से अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरुल-मोमिनीन! वल्लाह मैंने कभी न शराब पी न नाच रंग और गाना बाजा देखा सुना। यह तो सिर्फ़ शायराना तरंग थी। आपने फ़रमाया यही मेरा ख़्याल है, लेकिन मेरी हिम्मत तो नहीं पड़ती कि ऐसे बुरे और अश्लील शायर को कोई ओहदा दूँ। (यह हज़रत उमर रज़ि. की हद दर्जे की एहतियात और उनके साथ-साथ सबको तंबीह थी कि बेकार कामों में वक़्त गंवाना और दिमाग़ की सलाहियत खोना अच्छा नहीं)।

पस मालूम हुआ कि हज़रत उमर रज़ि. के नज़दीक शायर अपने शे'र में किसी जुर्म के ऐलान पर अगरचे सज़ा का मुस्तहिक़ तो न माना जायेगा इसलिये कि वे कहते हैं करते नहीं, हाँ वे क़ाबिले मलामत और डाँट-फटकार के हक़दार ज़रूर हैं। चुनाँचे हदीस में है कि पेट को लहू पीप से भर लेना अश्आर से भर लेने से बेहतर है। मतलब यह है कि रसूलुल्लाह सल्ल. न तो शायर हैं न जादूगर हैं, न काहिन (जिन्नात से मालूम करके आगे की बातें बताने वाले) हैं न अपनी तरफ़ से कोई बात गढ़ने वाले हैं। आपका ज़ाहिरी हाल ही आपके इन ऐबों और कमियों से पाक और बरी होने का बड़ा गवाह है। जैसे फ़रमाया गया कि यह रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से उतरी है, रूहुल-अमीन ने आप सल्ल. के दिल पर नाज़िल फ़रमाई है। अ़रबी भाषा में है, इसलिये कि आप सल्ल. लोगों को होशियार कर दें, इसे शयातीन लेकर नहीं आते न यह उनके लायक़ है, न उनके बस की बात है। वे तो इसके सुनने से भी अलग कर दिये गये हैं, जो झूठे, अपनी तरफ़ से गढ़ने वाले और बुरे किरदार वाले होते हैं, उनके पास शयातीन आते हैं। जो उचटती हुई बातें सुन-सुनाकर उनके कानों में गुड़गुड़ाते हैं, महज़ झूठ बोलने वाले वे ख़ुद होते हैं। शायरों की पुश्त-पनाही ओबाशों और आवारा लोगों का काम है, वे तो हर वादी में ठोकरें खाते रहते हैं। ज़बानी बातें बनाते हैं अ़मल से कोरे रहते हैं।

इसके बाद जो फ़रमान है उसका शाने-नुज़ूल (अल्लाह की तरफ़ से उतरने का सबब) यह है कि इससे अगली आयत में शायरों की मज़म्मत (बुराई और निंदा) है। जब वह उतरी तो रसूलुल्लाह सल्ल. के दरबार के शायर हज़रत हस्सान बिन साबित, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा, हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ि. रोते हुए दरबारे नबवी में हाज़िर हुए और कहने लगे या रसूलल्लाह! शायरों की तो गत बनी और हम भी शायर हैं। उसी वक़्त आपने यह दूसरी आयत तिलावत फ़रमाई कि ईमान लाने वाले और नेक अ़मल करने वाले तुम हो, अल्लाह का ज़िक्र ख़ूब अधिकता के साथ करने वाले तुम हो, मज़लूम होकर बदला न लेने वाले तुम हो, पस तुम उनसे अलग हो, उन शायरों में शामिल नहीं हो। (इब्ने अबी हातिम वग़ैरह)

एक रिवायत में हज़रत कअ़ब का नाम नहीं। एक रिवायत में सिर्फ़ हज़रत अ़ब्दुल्लाह की इस शिकायत पर कि या रसूलल्लाह शायर तो मैं भी हूँ इस दूसरी आयत का नाज़िल होना नक़ल किया गया है। लेकिन यह क़ौल ग़ौर-तलब है। क्योंकि यह सूरत मक्किया है, अन्सार में के शायर हज़रात मक्का में न थे, वे सब मदीने में थे। फिर उनके बारे में इस आयत का नाज़िल होना यक़ीनन विचारणीय होगा, और जो हदीसें बयान हुईं वे मुर्सल हैं। इस वजह से उन पर एतिमाद नहीं हो सकता। यह आयत बेशक उन शायरों के हुक्म से कुल शायरों को अलग करने के बारे में है, और सिर्फ़ यही अन्सारी शायर हज़रात नहीं बल्कि अगर किसी शायर ने भी अपने जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के ज़माने में इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ भी अश्आर कहे हों और फिर वह मुसलमान हो जाये, तौबा करे और उसके बाद में ज़िक्रे ख़ुदा ख़ूब ज़्यादा करे तो बेशक वह इस निंदा और हुक्म से अलग है। नेकियाँ बुराईयों को दूर कर देती हैं, जबकि उसने

मुसलमानों को और दीने ख़ुदा को बुरा कहा था वह ख़ुद बुरा था, लेकिन जब उसने तारीफ़ की तो वह बुराई अच्छाई से बदल गई। जैसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़बअ़री रज़ि. ने इस्लाम से पहले हुज़ूर सल्ल. की हिजो (शे'रों में बुराई) बयान की थी, लेकिन इस्लाम के बाद बड़ी तारीफ़ बयान की और अपने अश्आ़र में उस हिजो का उज़्र भी बयान कर दिया कि उस वक़्त मैं शैतानी पंजे में फंसा हुआ था। इसी तरह अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब बावजूद आपका चचाज़ाद भाई होने के आपका जानी दुश्मन था और बहुत ही हिजो (बुराईयाँ बयान) किया करता था। जब मुसलमान हो गये तो ऐसे मुसलमान हुए कि दुनिया भर में हुज़ूर सल्ल. से ज़्यादा महबूब उन्हें कोई न था। अक्सर आपकी तारीफ़ किया करते थे, और बहुत ही अ़क़ीदत व मुहब्बत रखते थे।

सही मुस्लिम में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि अबू सुफ़ियान सख़र बिन हरब जब मुसलमान हुआ तो हुज़ूर सल्ल. से कहने लगा- मुझे तीन चीज़ें अ़ता फ़रमाईये, एक तो यह कि मेरे लड़के मुआ़विया को अपना कातिब (लिखने वाला) बनाईये। दूसरे मुझे काफ़िरों से जिहाद के लिये भेजिये और मेरे साथ कोई लश्कर कर दीजिये ताकि जिस तरह मैं कुफ़्र में मुसलमानों से लड़ा करता था अब इस्लाम में काफ़िरों की ख़बर लूँ। आपने दोनों बातें क़बूल फ़रमा लीं। एक तीसरी दरख़्वास्त भी की जो क़बूल की गई। पस ऐसे लोग इस आयत के हुक्म से इस दूसरी आयत के ज़रिये अलग कर लिये गये। अल्लाह का ज़िक्र चाहे वे अपने शे'रों में ख़ूब ज़्यादा करें चाहे किसी और तरह अपने कलाम में, यक़ीनन वह पहले किये गुनाहों का बदला और कफ़्फ़ारा है। अपनी मज़लूमी का बदला लेते हैं यानी काफ़िरों की हिजो (बुराई करने) का जवाब देते हैं। ख़ुद हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत हस्सान रज़ि. से फ़रमाया था कि इन कुफ़्फ़ार की हिजो (यानी शे'रों में बुराई बयान) करो, जिब्राईल तुम्हारे साथ हैं। हज़रत कअ़ब बिन मालिक शायर ने जब शायरों की बुराई क़ुरआन में सुनी तो हुज़ूर सल्ल. से अ़र्ज़ किया। आपने फ़रमाया तुम उनमें से नहीं हो, मोमिन तो जिस तरह अपनी जान से जिहाद करता है इसी तरह अपनी ज़बान से जिहाद करता है। वल्लाह तुम लोगों के अश्आ़र तो उन्हें मुजाहिदों के तीरों की तरह छेद डालते हैं।

आगे फ़रमाया कि ज़ालिमों को अपना अन्जाम अभी मालूम हो जायेगा, उन्हें उज़्र-माज़िरत (यानी बातें बनाना और मजबूरी ज़ाहिर करना) कुछ काम न आयेगा। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि ज़ुल्म से बचो, इससे मैदाने क़ियामत में अंधेरों में रह जाओगे। आयत आ़म है चाहे शायर हों चाहे ग़ैर-शायर, सब को शामिल है।

हज़रत हसन रज़ि. ने एक ईसाई के जनाज़े को जाते हुए देखकर यही आयत तिलावत फ़रमाई थी। आप जब इस आयत की तिलावत करते तो इस क़द्र रोते कि हिचकी बंध जाती। रोम में जब हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद तशरीफ़ ले गये उस वक़्त एक साहिब नमाज़ पढ़ रहे थे। जब उन्होंने इस आयत की तिलावत की तो आपने फ़रमाया इससे मुराद बैतुल्लाह की बरबादी करने वाले हैं। और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद मक्का वाले हैं। यह भी मन्क़ूल है कि इससे मुराद मुश्रिक लोग हैं। हक़ीक़त यह है कि आयत आ़म है सब को शामिल है।

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने अपने इन्तिक़ाल के वक़्त अपनी वसीयत सिर्फ़ दो लाईनों में लिखी जो यह थी:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, यह है वसीयत अबू बक्र सिद्दीक़ बिन अबी क़ुहाफ़ा की, उस वक़्त जबकि वह दुनिया छोड़ रहे थे। जिस वक़्त काफ़िर भी मोमिन हो जाता है और गुनाहगार व बदकार भी तौबा कर लेता है और काज़िब (झूठा) सच्चा समझा जाता है, मैं तुम पर अपना ख़लीफ़ा उमर बिन ख़त्ताब को बनाकर जा

Maktab E Ashraf

रहा हूँ। अगर वह अ़दल (सही राह पर चलें और इन्साफ़) करें तो बहुत अच्छा और मेरा अपना गुमान भी उनके साथ यही है, और अगर वह ज़ुल्म करें और कोई तब्दीली कर दें तो मैं ग़ैब नहीं जानता, ज़ालिमों को बहुत जल्द मालूम हो जायेगा कि किस लौटने की जगह वे लौटते हैं।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः शु-अ़रा की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः नम्ल

सूरः नम्ल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 93 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

طٰسٓ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ
مُّبِيْنٍ○ هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ○
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ
وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ○ اِنَّ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ
فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ○ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ
الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ
الْاَخْسَرُوْنَ○ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ
لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ○

तॉ-सीन। ये (आयतें जो आप पर नाज़िल की जाती हैं) आयतें हैं क़ुरआन की, और एक वाज़ेह किताब की। (1) ये (आयतें) ईमान वालों के लिए हिदायत (का ज़रिया) और ख़ुशख़बरी सुनाने वाली हैं। (2) जो (मुसलमान) ऐसे हैं कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात देते हैं, और वे आख़िरत पर (पूरा) यक़ीन रखते हैं। (3) (यह तो ईमान वालों की सिफ़त है, और) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके (बुरे) आमाल उनकी नज़र में पसन्दीदा कर रखे हैं। सो वे (अपनी इस दोहरी जहालत में हक़ से दूर) भटकते-फिरते हैं। (4) ये वे लोग हैं जिनके लिए (मरने के वक़्त भी) सख़्त अ़ज़ाब (होने वाला) है, और वे लोग आख़िरत में (भी) सख़्त घाटे में हैं। (कि कभी निजात न होगी) (5) और आपको यक़ीनन एक बड़ी हिक्मत वाले, इल्म वाले की जानिब से क़ुरआने हकीम दिया जा रहा है। (6)

यह अल्लाह का कलाम है

हुरूफ़े मुक़त्तआ़त जो कि सूरतों के शुरू में आते हैं उन पर पूरी तरह बहस सूरः ब-क़रह के शुरू में

Maktab E Ashraf

हम कर चुके हैं। यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं।

क़ुरआने करीम जो खुली हुई वाज़ेह रोशन और ज़ाहिर किताब है, ये उसकी आयतें हैं, जो मोमिनों के लिये हिदायत व ख़ुशख़बरी हैं, क्योंकि वही इस पर ईमान लाते हैं, इसकी इत्तिबा करते हैं, इसे सच्चा जानते हैं, इसमें जो हुक्म अहकाम हैं उन पर अ़मल करते हैं। यही वे लोग हैं जो नमाज़ सही तौर से पढ़ते हैं, फ़र्ज़ों में कमी नहीं करते, इसी तरह ज़कात भी नहीं रोकते, आख़िरत पर कामिल यक़ीन रखते हैं। मौत के बाद ज़िन्दगी और जज़ा सज़ा को भी मानते हैं। जन्नत व दोज़ख़ को हक़ जानते हैं। चुनाँचे एक और आयत में भी है कि ईमान वालों के लिये तो यह क़ुरआन हिदायत और शिफ़ा है और बेईमानों के कान तो बहरे हैं, उनमें रूई (डाट) दिये हुए हैं। इससे ख़ुशख़बरी परहेज़गारों को है और बदकारों को इसमें वईद (सज़ा की धमकी और डाँट) है।

यहाँ यह भी फ़रमाता है कि जो इसे झुठलायें और क़ियामत के आने को न मानें हम भी उन्हें छोड़ देते हैं उनकी बुराईयाँ उन्हें अच्छी लगती हैं उसी में वे बढ़ते और फलते फूलते रहते हैं और अपनी सरकशी और गुमराही में बढ़ते रहते हैं। उनकी निगाहें और दिल उलट जाते हैं। उन्हें दुनिया और आख़िरत में बहुत सख़्त सज़ायें होंगी और क़ियामत के दिन तमाम मेहशर वालों में सबसे ज़्यादा ख़सारे में यही रहेंगे। बेशक आप हमारे नबी हम से ही क़ुरआन ले रहे हैं, हम हकीम हैं, 'अमर' 'नही' (यानी अच्छे कामों के हुक्म और बुरे कामों से रोकने) की हिक्मत को बख़ूबी जानते हैं। अ़लीम हैं छोटे बड़े तमाम कामों से बख़ूबी ख़बरदार हैं। पस क़ुरआन की तमाम ख़बरें बिल्कुल सच्ची हैं और इसके हुक्म अहकाम सब के सब सरासर अ़दल व इन्साफ़ वाले हैं। जैसे फ़रमान हैः

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا.

और आपके रब का कलाम वास्तविकता और अ़दल के एतिबार से कामिल है, उसके कलाम को कोई बदलने वाला नहीं। (सूरः अन्आ़म आयत 116)

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّیْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ○ فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِیَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِی النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

(इसलिए आप उनके इनकार से ग़मगीन न होईये, उस वक़्त का क़िस्सा याद कीजिए) जब कि मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं अभी (जाकर) वहाँ से (या तो रास्ते की) कोई ख़बर लाता हूँ या तुम्हारे पास (वहाँ से) आग का शोला (किसी लकड़ी वग़ैरह में लगा हुआ) लाता हूँ ताकि तुम सेंको। (7) सो जब उस (आग) के पास पहुँचे तो उनको (अल्लाह की जानिब से) आवाज़ दी गई कि जो इस आग के अन्दर हैं (यानी फ़रिश्ते) उन पर भी बरकत हो और जो इसके पास है (यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम) उस पर भी (बरकत हो) और रब्बुल-आ़लमीन पाक है। (8)

Maktab E Ashraf

وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا
جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى
لَا تَخَفْ قف اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَىَّ
الْمُرْسَلُوْنَ ۝ ۖ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ
حُسْنًا ۢ بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِىْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ
مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ قف فِىْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى
فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً
قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ ج وَجَحَدُوْا بِهَا
وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ ع ١٢

ऐ मूसा! बात यह है कि मैं (जो बेकैफ़ियत के कलाम कर रहा हूँ) अल्लाह हूँ, ज़बरदस्त, हिक्मत वाला। (9) और (ऐ मूसा!) तुम अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो, सो जब उन्होंने उस को इस तरह हरकत करते देखा जैसे साँप हो तो पीठ फेरकर भागे, और पीछे मुड़कर भी न देखा। (इरशाद हुआ कि) ऐ मूसा! डरो नहीं, हमारे हुज़ूर में (यानी नुबुव्वत का सम्मान दिए जाने के वक़्त) पैग़म्बर नहीं डरा करते। (10) हाँ, मगर जिससे कोई क़ुसूर हो जाए, फिर बुराई (हो जाने) के बाद उसकी जगह नेक काम कर ले (यानी तौबा कर ले) तो मैं मग़फ़िरत वाला, रहमत वाला हूँ। (11) और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान के अन्दर ले जाओ (और फिर निकालो), वह बिना किसी ऐब (यानी बिना किसी कोढ़ वग़ैरह की बीमारी) के रोशन होकर निकलेगा, नौ मोजिज़ों में से हैं, (जिनके साथ तुमको) फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ (भेजा जाता है क्योंकि) वे बड़े हद से निकल जाने वाले लोग हैं (12) ग़र्ज़ कि उन लोगों के पास जब हमारे (दिए हुए) मोजिज़े पहुँचे (जो) निहायत वाज़ेह (थे) तो वे लोग (उन सबको देखकर भी) बोले, यह खुला जादू है। (13) (और) ग़ज़ब तो यह था कि ज़ुल्म और तकब्बुर की राह से उन (मोजिज़ों) के (बिल्कुल) मुन्किर हो गए, हालाँकि उनके दिलों ने उनका यक़ीन कर लिया था। सो देखिए कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ उन फ़साद फैलाने वालों का। (14)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की नुबुव्वत

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने महबूब सल्ल. को मूसा अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ याद दिला रहे हैं कि ख़ुदा ने उन्हें किस तरह बुज़ुर्ग बनाया, उनसे कलाम किया, उन्हें ज़बरदस्त मोजिज़े अ़ता फ़रमाये और फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के पास अपना रसूल बनाकर भेजा, लेकिन काफ़िरों ने आपका इनकार किया, अपने कुफ़्र व तकब्बुर से न हटे, आपकी इत्तिबा और पैरवी न की। फ़रमाते हैं कि जब मूसा अ़लैहिस्सलाम

अपनी अहल (बीवी) को लेकर चले और रास्ता भूल गये, रात आधी हो गई और वह भी सख़्त अंधेरे वाली। आपने देखा कि एक जानिब से आग का शोला सा दिखाई देता है। अपनी बीवी से फ़रमाया कि तुम तो यहीं ठहरो, मैं उस रोशनी के पास जाता हूँ हो सकता है कि वहाँ जो हो उससे रास्ता मालूम हो जाये या मैं वहाँ से कुछ आग ले आऊँ कि तुम उससे ज़रा सेंक लो। ऐसा ही हुआ भी कि आप वहाँ से एक बड़ी ख़बर लाये और बहुत बड़ा नूर हासिल किया।

फ़रमाते हैं कि जब वहाँ पहुँचे उस मन्ज़र को देखकर हैरान रह गये। देखते हैं कि एक हरा-भरा दरख़्त (पेड़) है। उस पर आग लिपट रही है, शोले तेज़ हो रहे हैं और दरख़्त की हरियाली और बढ़ रही है। नज़र उठाई तो देखा कि वह नूर आसमान तक पहुँचा हुआ है। वास्तव में वह आग न थी बल्कि नूर था और नूर भी रब्बुल-आ़लमीन वह्दहू ला शरीक का।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ताज्जुब में थे और कोई बात समझ में नहीं आती थी कि अचानक आवाज़ आई कि इस नूर में जो है पाकी वाला और बुज़ुर्गी वाला है और इसके पास जो फ़रिश्ते हैं वे मुक़द्दस (पवित्र) हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह सोता नहीं और न सोना उसकी शान के लायक़ है। वह तराज़ू को झुकाता और ऊँची करता है। रात के काम उसकी तरफ़ दिन से पहले और दिन के काम रात से पहले चढ़ जाते हैं। उसका हिजाब (पर्दा और आड़) नूर है या आग है। अगर वे हट जायें तो उसके चेहरे की तजल्लियाँ हर उस चीज़ को जला दें जिस पर उसकी निगाहें पहुँच रही हैं, यानी तमाम कायनात को।

अबू उबैद रह. हदीस के बयान करने वाले ने यह हदीस बयान फ़रमाकर यही आयत तिलावत की। ये अलफ़ाज़ इब्ने अबी हातिम के हैं और इसकी असल सही मुस्लिम में है। पाक है वह अल्लाह जो तमाम जहान का पालनहार है, जो चाहता है करता है। मख़्लूक़ में से कोई भी उसके जैसा नहीं, उसकी बनाई हुई चीज़ों और मख़्लूक़ात में से कोई चीज़ किसी के इहाते में नहीं, वह बुलन्द व बाला है, सारी मख़्लूक़ से अलग है, ज़मीन व आसमान उसे घेर नहीं सकते, वह अकेला और बेनियाज़ है। वह मख़्लूक़ के जैसा होने से पाक है।

फिर ख़बर दी कि ख़ुद अल्लाह तआ़ला उनसे ख़िताब फ़रमा रहा है। वही इस वक़्त गुफ़्तगू कर रहा है जो सब पर ग़ालिब है, सब उसके मातहत और हुक्म के ताबे हैं। वह अपने अक़वाल (बातों) व अफ़आ़ल (कामों) में हिक्मत वाला है। उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि ऐ मूसा! अपनी लकड़ी को अपने हाथ से ज़मीन पर डाल दो ताकि तुम अपनी आँखों से देख सको कि ख़ुदा तआ़ला कुछ भी करने पर क़ादिर है। वह हर चीज़ पर क़ादिर है। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद सुनते ही लकड़ी को ज़मीन पर डाल दिया, उसी वक़्त वह एक फनूफनाता हुआ साँप बन गई और बहुत बड़े जिस्म का साँप बड़ी डरावनी सूरत का, और बावजूद इसके कि एक बड़ा और भारी जिस्म है लेकिन फिर भी तेज़-तेज़ चलने वाला। उसे जीता जागता चलता फिरता ज़बरदस्त अज़्दहा देखकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम डर से गये। 'जान्न' का लफ़्ज़ क़ुरआने करीम में है। ये एक क़िस्म के साँप हैं जो बहुत तेज़ी से हरकत करने वाले और गुंडली लगाने वाले होते हैं। हदीस में है, रसूले करीम सल्ल. ने घरों में रहने वाले ऐसे साँपों के क़त्ल से मनाही फ़रमाई (शायद इसलिये कि उनमें अक्सर जिन्नात होते हैं, और अगर साँप भी हों तो आ़म तौर पर नुक़सान नहीं पहुँचाते, फिर भी मारने की इजाज़त है)।

ग़र्ज़ कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उसे देखकर डर और दहशत के मारे ठहर न सके और पीठ फेरकर वहाँ से भाग खड़े हुए। ऐसे भयभीत थे कि मुड़कर भी न देखा। उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आवाज़ दी

कि ऐ मूसा! डरो नहीं, मैं तो तुम्हें अपना चुना हुआ, मक़बूल रसूल और बड़े रुतबे वाला पैग़म्बर बनाना चाहता हूँ।

इस आयत में इनसान के लिये बहुत बड़ी बशारत (अच्छी ख़बर) है कि जिसने भी कोई बुराई का काम किया हो फिर वह उस पर नादिम (शर्मिन्दा) हो जाये, उस काम को छोड़ दे, तौबा करे, अल्लाह की तरफ़ झुक जाये तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़बूल फ़रमा लेता है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

وَاِنِّی لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ............ الخ

जो भी तौबा कर ले और ईमान लाये और नेक अ़मल करे और सही रास्ते पर चले मैं उसके गुनाहों का बख़्शने वाला हूँ। एक दूसरी जगह फ़रमान है:

وَمَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ یَظْلِمْ نَفْسَهٗ.......... الخ

जो शख़्स किसी बुराई को कर बैठे या कोई गुनाह उससे हो जाये फिर अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करे तो वह यक़ीनन अल्लाह तआ़ला को ग़फ़ूर (माफ़ करने वाला) व रहीम (रहम करने वाला) पायेगा।

इस मज़मून की आयतें अल्लाह के कलाम में और भी बहुत सारी हैं। लकड़ी के साँप बन जाने के मोजिज़े के साथ ही हज़रत मूसा को एक और मोजिज़ा दिया जाता है कि आप जब भी अपने गिरेबान में हाथ डालकर बाहर निकालेंगे तो वह चाँद की तरह चमकता हुआ निकलेगा। ये दो मोजिज़े उन नौ मोजिज़ों में से हैं जिनसे मैं तेरी वक़्त वक़्त पर ताईद करता रहूँगा ताकि फ़ासिक़ (बदकार) फ़िरऔन और उसकी फ़ासिक़ क़ौम के दिलों में तेरी नुबुव्वत का सुबूत जगह पकड़ जाये। ये नौ मोजिज़े वे थे जिनका ज़िक्र इस आयत में किया गया है:

وَلَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسٰی تِسْعَ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ........... الخ

(यानी सूरः बनी इस्राईल आयत 101 में)

जिसकी पूरी तफ़सीर भी इसी आयत के तहत में गुज़र चुकी है।

जब ये स्पष्ट, ज़ाहिर, साफ़ और खुले मोजिज़े फ़िरऔ़नियों को दिखाये गये तो वे अपनी ज़िद में आकर कहने लगे- यह तो जादू है, लो हम अपने जादूगरों को बुला लेते हैं, मुक़ाबला कर लो। उस मुक़ाबले में अल्लाह ने हक़ को ग़ालिब किया और ये लोग पस्त हो गये। मगर फिर भी न माने, अगरचे दिलों में उसकी हक़्क़ानियत (हक़ और सही होना) जम चुकी थी लेकिन ज़ाहिरी मुक़ाबले से न हटे, सिर्फ़ ज़ुल्म और तकब्बुर की बिना पर हक़ को झुठलाते रहे। अब तू देख ले कि उन मुफ़सिदों (बिगाड़ और ख़राबी फैलाने वालों) का अन्जाम किस क़द्र हैरतनाक और कैसा कुछ सबक़ लेने वाला हुआ। एक ही मर्तबा एक ही साथ सारे दरिया में डुबो दिये गये।

पस ऐ इस आख़िरी नबी के झुठलाने वालो! तुम इस नबी को झुठलाकर इत्मीनान से न बैठो, क्योंकि यह तो मूसा अ़लैहिस्सलाम से भी अफ़ज़ल और बड़े रुतबे वाले हैं। इनकी दलीलें और मोजिज़े भी उन दलीलों और मोजिज़ों से बड़े हैं। ख़ुद आपका वजूद, आपकी आ़दतें व अख़्लाक़, पहले उतरी आसमानी किताबों और पहले नबियों की आपके बारे में बशारतें और उनके ख़ुदा का अ़हद व पैमान, ये सब चीज़ें आप में हैं। पस तुम्हें न मानकर निडर और बेख़ौफ़ न रहना चाहिये (यानी आपका इनकार करने वाले और आपको तकलीफ़ देने वाले पहली उम्मतों के लोगों से भी ज़्यादा अ़ज़ाब और सख़्त पकड़ के हक़दार हैं)।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ
عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ○ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ
دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ
الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَىْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا
لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ○ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ
جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ
يُوْزَعُوْنَ ○ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ
النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ
ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ
سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ○
فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ
اَوْزِعْنِىْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِىْٓ
اَنْعَمْتَ عَلَىَّ وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنْ اَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِىْ بِرَحْمَتِكَ فِىْ
عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ○

और हमने दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) और सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) को (शरीअ़त और बादशाहत चलाने का) इल्म अ़ता फ़रमाया, और उन दोनों ने (शुक्र अदा करने के लिए) कहा कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए लायक़ हैं, जिसने हमको अपने बहुत-से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत दी। (15) और दाऊद (अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद उन) के क़ायम मुक़ाम सुलैमान हुए, और उन्होंने (शुक्र ज़ाहिर करने के लिए) कहा कि ऐ लोगो! हमको परिन्दों की बोली (समझने) की तालीम दी गई है, और हमको (हुकूमत के सामान के मुताल्लिक़) हर क़िस्म की (ज़रूरी) चीज़ें दी गई हैं। वाक़ई यह (अल्लाह तआ़ला का) साफ़ फ़ज़्ल है। (16) और सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) के लिए (जो) उनका लश्कर जमा किया गया, उनमें जिन्न भी थे और इनसान भी और परिन्दे भी, (जो किसी बादशाह के ताबे नहीं होते) और (इस कसरत से थे कि) उनको (चलने के वक़्त) रोका जाता था। (17) यहाँ तक कि जब चींवटियों के एक मैदान में आए तो एक चींवटी ने (दूसरी चींवटियों से) कहा कि ऐ चींवटियो! अपने-अपने सूराख़ों में जा घुसो, कहीं तुमको सुलैमान और उनका लश्कर बेख़बरी में न कुचल डालें। (18) सो सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) उसकी बात से मुस्कुराते हुए हँस पड़े और कहने लगे कि ऐ मेरे रब! मुझको इस पर हमेशगी दीजिए कि मैं नेक काम किया करूँ जिससे आप ख़ुश हों, और मुझको अपनी (ख़ास) रहमत से अपने (आला दर्जे के) नेक बन्दों में दाख़िल रखिए। (19)

कायनात के एक अ़ज़ीमुश्शान बादशाह और हक़ीर चींवटी की गुफ़्तगू

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला उन नेमतों की ख़बर दे रहा है जो उसने अपने बन्दे हज़रत सुलैमान

Maktab E Ashraf

और हज़रत दाऊद अलैहिमुस्सलाम पर इनाम फ़रमाई थीं, कि किस तरह दोनों जहान की दौलत से उन्हें मालामाल फ़रमाया। उन नेमतों के साथ ही अपने शुक्रिये की भी तौफ़ीक़ दी थी। दोनों बाप बेटे हर वक़्त अल्लाह की नेमतों पर उसकी शुक्रगुज़ारी किया करते थे और उसकी तारीफ़ें करते रहते थे। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. ने लिखा है कि जिस बन्दे को अल्लाह तआ़ला जो नेमतें दे और उन पर वह अल्लाह की तारीफ़ करे तो उसकी तारीफ़ उन नेमतों से बहुत अफ़ज़ल है। देखो ख़ुद किताबुल्लाह में यह नुक्ता मौजूद है। फिर आपने यही आयत लिखकर लिखा कि उन दोनों पैग़म्बरों को जो नेमत दी गई थी इसे उससे अफ़ज़ल और बड़ी नेमत कहा है।

हज़रत दाऊद के वारिस हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम हुए। इससे मुराद माल की विरासत नहीं बल्कि मुल्क व नुबुव्वत की विरासत है। अगर माली मीरास मुराद होती तो इसमें सिर्फ़ हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ही का नाम न आता क्योंकि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की सौ बीवियाँ थीं। अम्बिया के माल की विरासत नहीं बटती। चुनाँचे तमाम अम्बिया के सरदार हुज़ूरे अक़्दस सल्ल. का इरशाद है कि हम अम्बिया की जमाअ़त हैं, हमारी मीरास नहीं बटा करती, हम जो कुछ छोड़ जायें वह सदक़ा है।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ख़ुदा की नेमतें याद करते हैं। फ़रमाते हैं कि यह पूरा मुल्क और यह ज़बरदस्त ताक़त कि इनसान जिन्न परिन्द सब हुक्म के ताबे हैं। परिन्दों की ज़बान समझ लेते हैं, यह ख़ास ख़ुदा का फ़ज़्ल व करम है जो किसी इनसान पर न हुआ। बाज़ जाहिलों ने कहा है कि उस वक़्त परिन्दे भी इनसानी ज़बान बोलते थे, यह महज़ उनकी बेइल्मी है। भला समझो तो सही अगर वाक़ई यही बात होती तो फिर इसमें हज़रत सुलैमान की ख़ुसूसियत ही क्या थी? जिसे आप फ़ख़्र से बयान करते कि हमें परिन्दों की ज़बान सिखा दी गई, फिर तो हर शख़्स परिन्दों की बोली समझता और हज़रत सुलैमान की ख़ुसूसियत जाती रहती। यह बिल्कुल ग़लत है, परिन्द और हैवानात हमेशा से ऐसे ही रहे, उनकी बोलियाँ भी ऐसी ही रहीं।

यह अल्लाह का ख़ास फ़ज़्ल था कि हज़रत सुलैमान हर चरिन्द-परिन्द की ज़बान समझ लेते थे। साथ ही यह नेमत भी हासिल हुई थी कि एक बादशाहत में जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है वे सब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को क़ुदरत ने मुहैया कर दी थीं। यह था ख़ुदा का खुला एहसान आप पर।

मुस्नद इमाम अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हज़रत दाऊद बहुत ही ग़ैरत वाले थे। जब आप घर से बाहर जाते तो दरवाज़ा बन्द करके जाते। फिर किसी को अन्दर जाने की इजाज़त न थी। एक मर्तबा आप इसी तरह बाहर तशरीफ़ ले गये, थोड़ी देर के बाद एक बीवी साहिबा की नज़र उठी तो देखती हैं कि घर के बीचों-बीच एक साहिब खड़े हैं। हैरान हो गईं और दूसरों को दिखाया। आपस में सब कहने लगीं यह कहाँ से आ गये? दरवाज़े बन्द हैं, यह दाख़िल कैसे हुए? ख़ुदा की क़सम दाऊद के सामने हमारी सख़्त रुस्वाई होगी। इतने में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम भी आ गये। आपने भी उन्हें खड़ा देखा और दरियाफ़्त किया कि तुम कौन हो? उसने जवाब दिया वह जिसे कोई रोक और दरवाज़ा न रोक सके। जो किसी बड़े से बड़े की बिल्कुल भी परवाह न करे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम समझ गये और फ़रमाने लगे मर्हबा हो मर्हबा हो (यानी आपका आना अच्छा है) आप मलकुल-मौत (मौत का फ़रिश्ता) हैं। उस वक़्त मलकुल-मौत ने आपकी रूह क़ब्ज़ की। सूरज निकल आया और आप पर धूप आ गई तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने परिन्दों को हुक्म दिया कि वे हज़रत दाऊद पर साया करें। उन्होंने अपने पंख खोलकर ऐसी गहरी छाँव कर दी कि ज़मीन पर अंधेरा सा छा गया। फिर हुक्म दिया कि एक-एक करके अपने सब परों (पंखों) को समेट लो।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने पूछा या रसूलल्लाह! परिन्दों ने पंख कैसे समेटे? आपने अपना हाथ समेट कर बतलाया कि इस तरह। इस पर उस दिन सुर्ख़ रंग के गिद्ध ग़ालिब आ गये। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का लश्कर जमा हुआ जिसमें इनसान जिन्न परिन्द सब थे। आपसे क़रीब इनसान थे, फिर जिन्न थे। परिन्दे आपके सर पर रहते थे, गर्मियों में साया कर लेते थे। सब अपने-अपने दर्जे पर क़ायम थे, जिसकी जो जगह मुक़र्रर थी वहीं वह रहता। जब उन लश्करों को लेकर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम चले, एक जंगल पर गुज़र हुआ जहाँ चींवटियों का लश्कर था। हज़रत सुलैमान के लश्कर को देखकर एक चींवटी ने दूसरी चींवटी से कहा कि जाओ अपने अपने सूराख़ों में चली जाओ, कहीं ऐसा न हो कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का लश्कर चलता हुआ तुम्हें रौंद डाले और उन्हें इल्म भी न हो।

हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि उस चींवटी का नाम 'हरस' था। यह बनू शाबान के क़बीले से थी, थी भी लंगडी। उसे ख़ौफ़ हुआ कि ये सब कुचल और पिस न जायें। यह सुनकर हज़रत सुलैमान को तबस्सुम बल्कि हंसी आ गई और उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि ख़ुदाया! मुझे अपनी उन नेमतों का शुक्र अदा करना नसीब कर जो तूने मुझ पर इनाम की हैं। जैसे परिन्दों और हैवानों की ज़बान (बोलियाँ) सिखा देना वग़ैरह, तथा जो नेमतें तूने मेरे माँ-बाप पर इनाम की हैं। वे मुसलमान मोमिन हुए वग़ैरह। और मुझे नेक अ़मल करने की तौफ़ीक़ दी जिनसे तू ख़ुश हो, और जब मेरी मौत आ जाये तो मुझे अपने नेक बन्दों और बुलन्द रुतबे वाले साथियों में मिला दे। जो तेरे दोस्त हैं।

मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह वादी (घाटी) शाम (मुल्क सीरिया) में थी। बाज़ और जगह बतलाते हैं। यह चींवटी मक्खियों के बराबर थी और भी अक़वाल हैं। नौफ़ बकाली कहते हैं कि यह भेड़िये के बराबर थी। मुम्किन है असल में लफ़्ज़ ज़ुबाब हो यानी मक्खी के बराबर और कातिब (लिखने वाले) की ग़लती से वह ज़िआ़ब लिख दिया गया हो यानी भेड़िया। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम चूँकि जानवरों की बोलियाँ समझते थे, इस बात को भी समझ गये और बेइख़्तियार हंसी आ गई।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक मर्तबा हज़रत सुलैमान बिन दाऊद अ़लैहिस्सलाम 'इस्तिस्क़ा' (यानी बारिश के लिये दुआ़ करने के लिये निकले तो देखा एक चींवटी उल्टी लेटी हुई अपने पाँव आसमान की तरफ़ उठाये दुआ़ कर रही है कि ख़ुदाया हम भी तेरी मख़्लूक़ हैं, पानी बरसने की ज़रूरत हमें भी है। अगर पानी न बरसा तो हम हलाक हो जायेंगे। चींवटी की यह दुआ़ सुनकर आपने लोगों में ऐलान किया कि लौट चलो किसी और ही की दुआ़ से तुम पानी पिलाये गये। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि नबियों में से किसी नबी को एक चींवटी ने काट लिया, उन्होंने चींवटियों के सूराख़ में आग लगाने का हुक्म दे दिया, उसी वक़्त ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से 'वही' आई कि ऐ पैग़म्बर सिर्फ़ एक चींवटी के काटने पर तूने गिरोह के गिरोह को जो हमारा तस्बीह पढ़ने वाला था, हलाक कर दिया? तुझे बदला ही लेना था तो उसी से लेता।

और (एक बार यह क़िस्सा हुआ कि) सुलैमान ने परिन्दों की हाज़िरी ली, तो हुदहुद को न देखा, फ़रमाने लगे कि यह क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देखता, क्या कहीं ग़ायब हो गया है? (20) मैं उसको (ग़ैर-हाज़िरी पर)	وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ۝

सख़्त सज़ा दूँगा, या उसको ज़िबह कर डालूँगा या वह कोई साफ़ हुज्जत (और ग़ैर-हाज़िरी का उज़्र) मेरे सामने पेश करे। (21)	لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْلَا۠اَذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ۝

Maktab E Ashraf

हुदहुद और सुलैमान अ़लैहिस्सलाम

हुदहुद (कठ-बढ़ई, एक ख़ूबसूरत परिन्दा जिसके सर पर ताज होता है) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की फ़ौज का मुहन्दिस (हिसाब के अंकों का माहिर, नजूमी) का काम करता था कि पानी कहाँ है? ज़मीन के अन्दर का पानी उसे इसी तरह दिखाई देता था जैसे कि ज़मीन के ऊपर की चीज़ लोगों को नज़र आती है। जब सुलैमान अ़लैहिस्सलाम जंगल में होते उससे दरियाफ़्त करते पानी कहाँ है? यह बता देता कि फ़ुलाँ जगह है, इतने नीचे है, इतना है वग़ैरह। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम उसी वक़्त जिन्नात को हुक्म देते और कुआँ खोद लिया जाता। एक दिन इसी तरह जंगल में थे परिन्दों की तफ़तीश की ताकि पानी की तलाश का हुक्म दें, इत्तिफ़ाक़ से वे मौजूद न थे। इस पर आपने फ़रमाया आज हुदहुद नज़र नहीं पड़ता, क्या परिन्दों में वह कहीं छुप गया है जो मुझे नज़र न आया, या वाक़ई वह हाज़िर नहीं?

एक मर्तबा हज़रत इब्ने अ़ब्बास से यह तफ़सीर सुनकर नाफ़े बिन अर्ज़क़ ख़ारिजी ने एतिराज़ किया था, यह बकवासी हर वक़्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. की बातों पर बेजा एतिराज़ किया करता था। कहने लगा बस आज तुम हार गये। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने फ़रमाया यह क्यों? उसने कहा जो यह फ़रमाते हैं कि हुदहुद ज़मीन के नीचे का पानी देख लेता था, यह कैसे सही हो सकता है कि बच्चा जाल बिछाकर उसे मिट्टी से ढककर दाना डालकर हुदहुद को शिकार कर लेता है। अगर वह ज़मीन के अन्दर का पानी देखता है तो ज़मीन के ऊपर का जाल उसे क्यों नज़र नहीं आता? आपने फ़रमाया अगर मुझे यह ख़्याल न होता कि तू यह समझ जायेगा कि इब्ने अ़ब्बास लाजवाब हो गया तो मुझे जवाब की ज़रूरत न थी। सुन! जिस वक़्त क़ज़ा आ जाती है आँखें अन्धी हो जाती हैं और अ़क़्ल जाती रहती है। नाफ़े लाजवाब हो गया और कहने लगा वल्लाह अब आप पर एतिराज़ न करूँगा।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बरज़ी एक वलीयुल्लाह शख़्स थे। पीर जुमेरात का रोज़ा पाबन्दी से रखा करते थे। अस्सी साल की उम्र थी। एक आँख से काने थे। सुलैमान बिन ज़ैद ने उनसे आँख के जाने का सबब मालूम किया तो आपने इसके बताने से इनकार कर दिया। यह भी पीछे पड़ गये, महीनों गुज़र गये, न वह बताते न यह सवाल छोड़ते, आख़िर तंग आकर फ़रमाया लो सुन लो! दो ख़ुरासानी आदमी मेरे पास बरज़ा में जो दमिश्क़ के पास एक शहर है आये और मुझसे कहा कि मैं उन्हें बरज़ा की वादी में ले जाऊँ। मैं उन्हें वहाँ ले गया। उन्होंने अंगीठियाँ निकालीं, बख़ूर (एक तरह की अगरबत्ती) निकाले और जलाने शुरू किये, यहाँ तक कि तमाम वादी ख़ुशबू से महकने लगी और हर तरफ़ से साँपों की आमद शुरू हो गई, लेकिन ये बेपरवाही से बैठे रहे, किसी साँप की तरफ़ तवज्जोह तक न करते थे। थोड़ी देर में एक साँप आया जो हाथ भर का था और उसकी आँखें सोने की तरह चमक रही थीं। ये बहुत ख़ुश हुए और कहने लगे ख़ुदा का शुक्र है हमारी साल भर की मेहनत ठिकाने लगी। उन्होंने उस साँप को लेकर उसकी आँख में सलाई फेरकर अपनी आँखों में सलाई फेर ली। मैंने उनसे कहा कि मेरी आँखों में भी यह सलाई फेर दो, उन्होंने इनकार

कर दिया, मैंने उनसे मिन्नत ख़ुशामद की, बड़ी मुश्किल से वे राज़ी हो गए और मेरी दाहिनी आँख में वह सलाई फेर दी। अब जो मैं देखता हूँ तो ज़मीन मुझे एक शीशे की तरह मालूम होने लगी जैसी ऊपर की चीज़ें नज़र आती थीं ऐसी ही ज़मीन के अन्दर की चीज़ें भी देख रहा था। उन्होंने मुझसे कहा अच्छा अब आप हमारे साथ ही कुछ दूर चलिये, मैंने मन्ज़ूर कर लिया। वे बातें करते हुए मुझे साथ लिये हुए चले। जब मैं बस्ती से बहुत दूर निकल गया तो दोनों ने मुझे दोनों तरफ़ से पकड़ लिया और एक ने अपनी उंगली डालकर मेरी आँख निकाल ली और उसे फेंक दिया और मुझे यूँ ही बंधा हुआ वहीं पटख़ कर दोनों कहीं चल दिये। इत्तिफ़ाक़न वहाँ से एक क़ाफ़िला गुज़रा और उन्होंने मुझे उस हालत में देखकर रहम खाया, बन्दिशों से आज़ाद किया और मैं चला आया। यह क़िस्सा है मेरी आँख के जाने का। (इब्ने असाकिर)

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के उस हुदहुद का नाम अ़म्बर था। आप फ़रमाते हैं कि अगर हक़ीक़त में वह ग़ैर-हाज़िर है तो मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा, उसके पर नुचवा दूँगा और उसे फेंक दूँगा कि कीड़े मकोड़े खा जायें, या मैं उसे हलाल कर दूँगा, या यह कि वह अपने ग़ैर-हाज़िर होने की कोई माक़ूल वजह बयान कर दे। इतने में हुदहुद आ गया, जानवरों ने उसे ख़बर दी कि आज तेरी ख़ैर नहीं। बादशाह सलामत अ़हद कर चुके हैं कि वह तुझे मार डालेंगे। उसने कहा यह बयान करो कि आपके अलफ़ाज़ क्या थे? उन्होंने बयान किये तो ख़ुश होकर कहने लगा फिर तो मैं बच जाऊँगा। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि उसके बचाव की वजह उसका अपनी माँ के साथ अच्छा सुलूक था।

नोटः हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने लिखा है कि ये क़ौल इन बुज़ुर्गों के नहीं जैसे हुदहुद का नाम, उसका अपनी माँ से अच्छा सुलूक करना, या जैसे पहले उस चींवटी का नाम तक ज़िक्र किया। इनकी कोई सही सनद नहीं, बस इन हज़रात की तरफ़ इन बातों की निस्बत कर दी गयी। **हिन्दी अनुवादक**

फ़-म-क-स ग़ै-र बईदिन् फ़क़ा-ल अ-हत्तु बिमा लम् तुहित् बिही व जिअ्तु-क मिन् स-बइम् बि-न-बइंय्-यक़ीन○ इन्नी वजत्तुम्-र-अ-तन् तम्लिकुहुम् व ऊतियत् मिन् कुल्लि शैइंव्-व लहा अ़र्शुन् अ़ज़ीम○ वजत्तुहा व क़ौमहा यस्जुदू-न लिश्शम्सि मिन् दूनिल्लाहि व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्मालहुम् फ़-सद्दहुम् अ़निस्सबीलि फ़हुम् ला	सो थोड़ी ही देर में वह आ गया और (सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से) कहने लगा कि मैं ऐसी बात मालूम करके आया हूँ जो आपको मालूम नहीं हुई। (और मुख़्तसर बयान उसका यह है कि) मैं आपके पास क़बीला सबा की एक तहक़ीक़ी ख़बर लाया हूँ। (22) मैंने एक औरत को देखा कि वह उन लोगों पर बादशाही कर रही है, और उसको (बादशाही के लिए ज़रूरी चीज़ों में से) हर क़िस्म का सामान मयस्सर है, और उसके पास एक बड़ा (और क़ीमती) तख़्त है। (23) मैंने उसको और उस (औरत) की क़ौम को देखा कि वे ख़ुदा (की इबादत) को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हैं, और शैतान ने उनके (उन) (कुफ़्रिया) आमाल को उनकी नज़र में पसन्दीदा कर रखा है, और उनको हक़ रास्ते

Maktab E Ashraf

يَهْتَدُوْنَ ۝ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِىْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝ السجدة	से रोक रखा है, सो वे (हक़ के) रास्ते पर नहीं चलते (24) कि उस ख़ुदा को सज्दा नहीं करते जो (ऐसा क़ादिर है कि) आसमान और ज़मीन की पोशीदा चीज़ों को (जिनमें बारिश और पेड़-पौधे वग़ैरह भी हैं) बाहर लाता है, और (ऐसा आ़लिम है कि) तुम जो कुछ (दिल में) पोशीदा रखते हो और जो (कुछ ज़बान वग़ैरह से) ज़ाहिर करते हो वह सबको जानता है। (25) (पस) अल्लाह ही ऐसा है कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और वह अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है। (26) ❁ (सज्दा)

❁ सज्दा नम्बर - 8

हुदहुद का जवाब

हुदहुद की ग़ैर-हाज़िरी को थोड़ी सी देर गुज़री थी कि वह आ गया। उसने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! जिस बात की आपको ख़बर नहीं मैं उसकी एक नई ख़बर लेकर आपके पास हाज़िर हुआ हूँ। मैं सबा से आ रहा हूँ और पुख़्ता यक़ीनी ख़बर लाया हूँ। उनके सबा हमीर थे और यमन के बादशाह थे। एक औ़रत उनकी बादशाहत कर रही है, उसका नाम बिल्क़ीस बिन्ते शुरहबील था। यह सब की मलिका (रानी) थी। क़तादा रह. कहते हैं कि उसकी माँ जिन्न औ़रत थी, उसके क़दम का पिछला हिस्सा चौपाये के खुर जैसा था। एक और रिवायत में है कि उसकी माँ का नाम रिफ़ाआ़ था। इब्ने जुरैज कहते हैं कि उसके बाप का नाम ज़ी-सुर्ख़ और माँ का नाम बल्तआ़ था। लाखों का उसका लाव-लश्कर था, उसकी बादशाही एक औ़रत को करते हुए मैंने पाया। उसके मुशीर वज़ीर तीन सौ बारह शख़्स हैं, उनमें से हर एक के मातहत (अधीन) बारह हज़ार की टुकड़ी है। उसकी ज़मीन का नाम मअ़रिब है, यह सनआ़ से तीन मील के फ़ासले पर है। यही क़ौल ज़्यादा सही मालूम होता है। उसका अक्सर हिस्सा यमन का मुल्क है। वल्लाहु आलम।

हर क़िस्म के दुनियावी ज़रूरी असबाब उसे मुहैया हैं। उसका बहुत ही शानदार तख़्त है जिस पर वह बैठती है। सोने से मंढा हुआ है और जड़ाव और मरवारीद की कारीगरी उस पर हुई है। यह अस्सी हाथ ऊँचा और चालीस हाथ चौड़ा था। छह सौ औ़रतें हर वक़्त उसकी ख़िदमत में मौजूद रहती थीं, उसका "दीवाने ख़ास" जिसमें यह तख़्त था बहुत बड़ा महल था। बुलन्द व ऊँचा, खुला और फ़राख़, पुख़्ता मज़बूत और साफ़ जिसके पूर्वी हिस्से में तीन सौ साठ ताक़ थे और इतने ही पश्चिमी हिस्से में। उसे इस कारीगरी से बनाया था कि हर दिन सूरज एक ताक़ से निकलता और उसी के सामने वाले ताक़ से गुरूब होता। दरबार वाले सुबह शाम उसे सज्दा करते। राजा प्रजा सब सूरज के पुजारी थे, ख़ुदा का पुजारी उनमें एक भी न था। शैतान ने बुराईयाँ उन्हें अच्छी कर दिखाई थीं और उनको गुमराह कर रखा था। वे सही रास्ते पर आते ही न थे। जबकि सही रास्ता यह है कि सिर्फ़ अल्लाह ही की ज़ात को सज्दे के लायक़ माना जाये, न कि सूरज चाँद और सितारों को। जैसे फ़रमाने क़ुरआन है कि रात दिन, सूरज चाँद सब अल्लाह की क़ुदरत की निशानियाँ हैं, तुम्हें सूरज को चाँद को सज्दा न करना चाहिये। सज्दा सिर्फ़ उसी अल्लाह को करना

चाहिये जो इनका ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है.....।

'ख़बउन्' की तफ़सीर पानी, बारिश और पैदावार से भी की गई है। क्या अ़जब कि हुद्हुद की जिसमें यही सिफ़त थी यही मुराद हो। और तुम्हारे हर छुपे और ज़ाहिर काम को भी वह जानता है। खुली छुपी बात उस पर बराबर है। वही तन्हा माबूदे बर्हक़ है, वही अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है, जिससे बड़ी कोई चीज़ नहीं। चूँकि हुद्हुद ख़ैर की तरफ़ बुलाने वाला, एक अल्लाह की इबादत का हुक्म देने वाला, उसके सिवा ग़ैर के सज्दे से रोकने वाला था इसी लिये उसके क़त्ल की मनाही कर दी गई। मुस्नद अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा में है कि नबी सल्ल. ने चार जानवरों का क़त्ल मना फ़रमा दिया- चींवटी, शहद की मक्खी, हुद्हुद और सरद यानी लटूरा...।

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِىْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ۝ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّىْۤ اُلْقِىَ اِلَىَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَىَّ وَاْتُوْنِىْ مُسْلِمِيْنَ ۝ ع	सुलैमान (अ़लैहि. ने यह सुनकर) फ़रमाया कि हम अभी देखते हैं कि तू सच कहता है या झूठों में से है। (27) (अच्छा) मेरा यह ख़त ले जा और इसको उसके पास डाल देना, फिर (ज़रा वहाँ से) हट जाना, फिर देखना कि आपस में क्या सवाल व जवाब करते हैं। (28) बिल्क़ीस ने (ख़त पढ़कर अपने सरदारों से मश्विरे के लिए) कहा कि ऐ दरबार वालो! मेरे पास एक ख़त (जिसका मज़्मून) निहायत बा-वक़्अ़त (है), डाला गया है। (29) वह सुलैमान की तरफ़ से है और उसमें यह (मज़्मून) है, (पहले) बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम (30) (और उसके बाद यह कि) तुम मेरे मुक़ाबले में तकब्बुर मत करो और मेरे पास ताबेदार होकर चले आओ। (31)

सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का इरादा

हुद्हुद की ख़बर सुनते ही हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने इसकी तहक़ीक़ शुरू कर दी कि अगर यह सच्चा है तो क़ाबिले माफ़ी है, और अगर झूठा है तो क़ाबिले सज़ा है। उसी से फ़रमाया कि मेरा यह ख़त बिल्क़ीस को जो वहाँ की हाकिम है, दे आ। उस ख़त को चोंच में लेकर या पंख से बंधवाकर उड़ा, वहाँ पहुँचकर बिल्क़ीस के महल में गया, वह उस वक़्त अपने तन्हाई के कमरे में थी। उसने ताक़ में से वह ख़त उसके सामने रख दिया और अदब के साथ एक तरफ़ हो गया। उसे सख़्त ताज्जुब मालूम हुआ, हैरत हुई और साथ ही कुछ ख़ौफ़ व दहशत भी हुई। ख़त को उठाकर मोहर तोड़कर ख़त खोलकर पढ़ा, उसके मज़्मून से वाक़िफ़ होकर अपने सरदारों और वज़ीरों को जमा किया और कहने लगी कि एक सम्मानित ख़त मेरे सामने डाला गया है, उस ख़त का सम्मानित होना उस पर इससे भी ज़ाहिर हो गया था कि एक जानवर उसे लाता है, वह होशियारी और एहतियात से पहुँचाता है, सामने अदब से रखकर एक तरफ़ को हो जाता है, तो

Maktab e Ashraf

जान गई थी कि यह ख़त मुकर्रम (सम्मानित और आदरणीय) है और किसी इज़्ज़त दार और बड़े रुतबे वाले शख़्स का भेजा हुआ है। फिर ख़त का मज़्मून सब को पढ़कर सुनाया। यह ख़त सुलैमान का है और इसके शुरू में 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' लिखा हुआ है, साथ ही मुसलमान होने और फ़रमान के अधीन आने की दावत है। अब सब ने पहचान लिया कि यह ख़ुदा के पैग़म्बर का दावत-नामा है और हम में से किसी को उनके मुक़ाबले की हिम्मत व ताक़त नहीं।

फिर ख़त के मज़्मून और उसकी भाषायिक ख़ूबी व कमाल ने सब को हैरान कर दिया कि यह मुख़्तसर सी इबारत बहुत सी बातों पर हावी है। गोया कि दरिया को कूज़े (प्याले) में बन्द कर दिया है।

उलेमा-ए-किराम का मक़ूला (कहना और राय) है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से पहले किसी ने ख़त में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखी। एक ग़रीब और ज़ईफ़ हदीस इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत बरीदा रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम सल्ल. के साथ जा रहा था, आपने फ़रमाया मैं एक ऐसी आयत जानता हूँ जो मुझसे पहले सुलैमान बिन दाऊद के बाद किसी नबी पर नहीं उतरी। मैंने कहा हुज़ूर! वह कौनसी आयत है? आपने फ़रमाया मस्जिद से जाने से पहले ही तुझे बता दूँगा। अब आप निकलने लगे एक पैर मस्जिद से बाहर रख भी दिया मेरे जी में आया कि शायद आप भूल गये इतने में आपने यह आयत पढ़ी। एक और रिवायत में है कि जब तक यह आयत नहीं उतरी थी हुज़ूर सल्ल. 'वि-इस्मिकल्लाहुम्-म' तहरीर फ़रमाया करते थे। जब यह आयत उतरी आपने 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' लिखना शुरू किया।

ख़त का मज़्मून सिर्फ़ इस क़द्र था कि मेरे सामने सरकशी न करो, मुझे मजबूर न करो, मेरी बात मान लो, तकब्बुर से काम न लो, ईमान वाले अल्लाह को एक मानने वाले और फ़रमाँबरदार बनकर मेरे पास चले आओ।

बिल्क़ीस ने कहा कि ऐ दरबार वालो! तुम मुझको मेरे इस मामले में राय दो (कि मुझको सुलैमान के साथ क्या मामला करना चाहिए और) मैं किसी बात का क़तई फ़ैसला नहीं करती जब तक कि तुम लोग मेरे पास मौजूद न हो। (32) वे लोग कहने लगे कि हम बड़े ताक़तवर और बड़े लड़ने वाले हैं, और (आगे) इख़्तियार तुमको है, सो तुम ही (मस्लेहत देख लो, जो कुछ (तजवीज़ करके) हुक्म देना हो। (33) बिल्क़ीस कहने लगी कि बादशाहों (का क़ायदा है कि) जब किसी बस्ती में (मुख़ालफ़त के तौर पर) दाख़िल होते हैं तो उसको तबाह व बरबाद कर देते हैं, और उसके रहने वालों में जो इज़्ज़तदार हैं, उनको ज़लील किया करते हैं, और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे। (34) और मैं	قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ۝ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ۝ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ

Maktab-E-Ashraf

उन लोगों के पास कुछ हदिया भेजती हूँ फिर देखूँगी कि वे ऐलची (वहाँ से) क्या (जवाब) लेकर आते हैं। (35)	اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ○

बिल्क़ीस का मश्विरा

बिल्क़ीस ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का ख़त उन्हें सुनाकर उनसे मश्विरा तलब किया और कहा कि तुम जानते हो जब तक तुमसे मैं मश्विरा न कर लूँ तुम मौजूद न हो तो मैं चूँकि किसी मामले का फ़ैसला तन्हा नहीं कर लेती, इस बारे में भी तुमसे मश्विरा करती हूँ। बतलाओ क्या राय है? सब ने मुत्तफ़िक़ तौर पर (सर्वसम्मति से) जवाब दिया कि हमारी जंगी ताक़त बहुत कुछ है, और हमारी ताक़त मुसल्लम है। इस तरफ़ से तो इत्मीनान है, आगे आपका जो हुक्म हो, हम ताबेदारी के लिये मौजूद हैं। इसमें एक हद तक लश्कर के सरदारों ने लड़ाई और मुक़ाबले की तरफ़ रग़बत (अपनी दिलचस्पी) दी थी, लेकिन बिल्क़ीस चूँकि समझदार, परिणाम पर नज़र रखने वाली थी और हुदहुद के हाथों ख़त के मिलने का एक खुला मोजिज़ा देख चुकी थी, यह भी मालूम कर लिया था कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की ताक़त के मुक़ाबले में मेरा लाव-लश्कर कोई हक़ीक़त नहीं रखता। अगर लड़ाई की नौबत आई तो अ़लावा मुल्क की बरबादी के मैं भी सलामत न रह सकूँगी, इसलिये उसने अपने वज़ीरों और मुशीरों (सलाहकारों) से कहा- बादशाहों का क़ायदा है कि जब वे किसी मुल्क को फ़तह करते हैं तो उसे बरबाद कर देते हैं, वहाँ के इज़्ज़तदार और सम्मानित लोगों को ज़लील कर देते हैं। लश्कर के सरदार, शहर के बादशाह ख़ुसूसियत से उनकी निगाहों में चढ़ जाते हैं। अल्लाह तआ़ला ने भी इसकी तस्दीक़ फ़रमाई कि वास्तव में यह सही है, वे ऐसा ही किया करते थे।

उसके बाद उसने जो तरकीब सोची थी कि एक चाल चले और सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से मुवाफ़क़त करके सुलह कर ले, वह उसने उनके सामने पेश की। कहा कि इस वक़्त तो मैं एक बहुत क़ीमती तोहफ़ा उन्हें भेजती हूँ और उसके बाद देखती हूँ कि मेरे क़ासिदों से वह क्या फ़रमाते हैं। बहुत मुम्किन है कि वह इसे क़बूल फ़रमा लें और हम आईन्दा भी उन्हें यह रक़म बतौर जिज़्ये (टैक्स) के भेजते रहें और उन्हें हम पर चढ़ाई करने की ज़रूरत न पड़े। इस्लाम की क़बूलियत में इसी तरह हदिये के भेजने में उसने निहायत समझ व अ़क़्ल से काम लिया, वह जानती थी कि रुपया पैसा वह चीज़ है कि फ़ौलाद को भी नर्म कर देता है, तथा उसे यह भी आज़माना था कि देखें वह हमारे इस माल को भी क़बूल करते हैं या नहीं? अगर क़बूल कर लिया तो समझ लो कि वह एक बादशाह हैं, फिर उनसे मुक़ाबला करने में कोई हर्ज नहीं, और अगर वापस कर दिया तो नुबुव्वत में शक नहीं, फिर मुक़ाबला सरासर बेफ़ायदा बल्कि नुक़सानदेह है।

सो जब वह ऐलची सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) के पास पहुँचा (और तोहफ़े पेश किए तो सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, क्या तुम लोग (यानी बिल्क़ीस वग़ैरह) माल से मेरी जो कुछ मुझको दे रखा है वह उससे कहीं बेहतर है	فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ بَلْ اَنْتُمْ

بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ۝ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَ لَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝	जो तुमको दे रखा है। हाँ तुम ही अपने इस हदिए पर इतराते होगे। (सो ये तोहफ़े हम न लेंगे) (36) तुम (इनको लेकर) उन लोगों के पास लौट जाओ, सो हम उन पर ऐसी फ़ौजें भेजते हैं कि उन लोगों से उनका ज़रा मुक़ाबला न हो सकेगा और हम उनको वहाँ से ज़लील करके निकाल देंगे, और वे (हमेशा के लिए) मातहत हो जाएँगे। (37)

यह चाल यहाँ नहीं चलेगी

बिल्क़ीस ने बहुत ही क़ीमती तोहफ़ा हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास भेजा, सोना मोती जवाहिर वग़ैरह। सोने की भारी संख्या में ईंटें, सोने के बरतन वग़ैरह। बाज़ कहते हैं कि कुछ लड़के औरतों के लिबास में और कुछ औरतें लड़कों के लिबास में भेजीं और कहा कि अगर इन्हें वह पहचान लें तो उन्हें नबी मान लेना चाहिये। जब ये हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँचे तो आपने सब को वुज़ू करने का हुक्म दिया। लड़कियों ने तो बरतन से पानी बहाकर अपने हाथ धोये और लड़कों ने बरतन में ही हाथ डालकर पानी लिया। इससे आपने दोनों को पहचान लिया और अलग-अलग कर दिया कि ये लड़कियाँ हैं और ये लड़के हैं।

बाज़ कहते हैं कि इस तरह पहचाना कि लड़कियों ने तो पहले अपने हाथ के अन्दरूनी हिस्से को धोया और लड़कों ने ज़ाहिरी हिस्से को पहले धोया। यह भी मन्क़ूल है कि उनमें से एक जमाअ़त ने तो कोहनी से हाथ धोना शुरू किया और उंगलियों तक धोया और एक जमाअ़त ने इसके उलट और विपरीत हाथ की उंगलियों से शुरू करके कोहनी तक ले गये। ये सब बातें हो सकती हैं, कोई क़ाबिले इनकार नहीं।

यह भी मज़कूर है कि बिल्क़ीस ने एक बरतन भेजा था कि इसे ऐसे पानी से पुर कर दो जो न ज़मीन का हो न आसमान का, तो आपने घोड़े दौड़ाये और उनके पसीनों से वह बरतन भर दिया। उसने कुछ ख़र-मोहरे और एक लड़ी भेजी थी, आपने उन्हें लड़ी में पिरो दिया। ये सब अक़्वाल उमूमन बनी इस्राईल की रिवायतों से लिये जाते हैं, अब ख़ुदा ही को इल्म है कि इनमें कौनसा हुआ या कुछ भी नहीं हुआ? अलबत्ता बज़ाहिर तो अलफ़ाज़े क़ुरआनी से मालूम होता है कि आपने उस मलिका (रानी) के तोहफ़े की तरफ़ बिल्कुल भी तवज्जोह ही न की और उसे देखते ही फ़रमाया कि क्या तुम मुझे माली रिश्वत देकर शिर्क पर बाक़ी रखना चाहते हो? यह बिल्कुल नामुम्किन है। मुझे मेरे रब ने बहुत कुछ दे रखा है। मुल्क, माल, लाव-लश्कर सब मेरे पास मौजूद है। तुम से हर तरह बेहतर हालत में हूँ। अल्हम्दु लिल्लाह। तुम ही अपने हदिये से ख़ुश रहो, यह काम तुम ही को सौंपा कि माल से राज़ी हो जाओ और तोहफ़ा तुम्हें झुका दे, यहाँ तो दो ही चीज़ें हैं या शिर्क छोड़ दो या तलवार रोको।

यह भी कहा गया है कि उसके क़ासिद पहुँचें इससे पहले हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने जिन्नात को हुक्म दिया और उन्होंने एक हज़ार महल तैयार कर दिये। जिस वक़्त क़ासिद राजधानी में पहुँचे उन महलों को देखकर होश जाते रहे और कहने लगे यह बादशाह तो हमारे इस तोहफ़े को अपना अपमान समझेगा, यहाँ तो सोना मिट्टी की हैसियत भी नहीं रखता। इससे भी यह साबित हुआ कि बादशाहों को जायज़ है कि

Maktab-e-Ashraf

ग़ैर-मुल्की लोगों के लिये कुछ तकल्लुफ़ात करें और क़ासिदों के सामने अपनी शान व शौकत का इज़हार करें। फिर आपने क़ासिदों से फ़रमाया कि ये हदिये उनही को वापस करो और उनसे कह दो कि मुक़ाबले की तैयारी कर लें। याद रखो मैं वह लश्कर लेकर चढ़ाई करूँगा कि वे सामने आ ही नहीं सकते। उन्हें हम से जंग करने की ताक़त ही नहीं। हम उन्हें उनकी सल्तनत से पूरी तरह ज़िल्लत व अपमान के साथ निकाल देंगे। उनके तख़्त व ताज बरबाद कर देंगे।

जब क़ासिद उस तोहफ़े को वापस लेकर पहुँचे और शाही पैग़ाम भी सुना दिया तो बिल्क़ीस को आपकी नुबुव्वत का यक़ीन हो गया और ख़ुद भी और तमाम लश्कर और रियाया (पब्लिक) मुसलमान हो गई, और अपने लश्करों समेत वह हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हो गई। जब आपने उसका यह इरादा मालूम किया तो बहुत ख़ुश हुए और अल्लाह का शुक्र अदा किया।

قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِىْ بِعَرْشِهَا
قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِىْ مُسْلِمِيْنَ ○ قَالَ عِفْرِيْتٌ
مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ
مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّىْ عَلَيْهِ لَقَوِىٌّ اَمِيْنٌ ○ قَالَ
الَّذِىْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ
قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۗ فَلَمَّا رَاٰهُ
مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ
رَبِّىْ ۖ لِيَبْلُوَنِىْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۗ وَمَنْ
شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ
فَاِنَّ رَبِّىْ غَنِىٌّ كَرِيْمٌ ○

सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम को 'वही' से या किसी परिन्दे वग़ैरह के ज़रिये से उसका चलना मालूम हुआ तो उन्होंने) फ़रमाया कि ऐ दरबारियो! तुममें कोई ऐसा है जो उस (बिल्क़ीस) का तख़्त इससे पहले कि वे लोग मेरे पास ताबेदार होकर आएँ, हाज़िर कर दे? (38) एक ताक़तवर हैकल जिन्न ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि मैं उसको आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दूँगा, इससे पहले कि आप अपने इजलास से उठें, और (अगरचे वह बहुत भारी है मगर) मैं उस (के लाने) पर ताक़त रखता हूँ (और अगरचे वह बड़ा क़ीमती जवाहिरात से जड़ा हुआ है, मगर) मैं अमानतदार (भी) हूँ। (39) जिसके पास किताब का इल्म था उस (इल्म वाले) ने (उस जिन्न से) कहा कि मैं उसको तेरे सामने आँख झपकने से पहले लाकर खड़ा कर सकता हूँ। पस जब सुलैमान (अ़लैहि.) ने उसको सामने रखा देखा तो (ख़ुश होकर शुक्र के तौर पर) कहने लगे कि यह भी मेरे रब का एक फ़ज़्ल है, ताकि वह मेरी आज़माईश करे कि मैं शुक्र करता हूँ या (ख़ुदा न करे) नाशुक्री करता हूँ। और (ज़ाहिर है कि) जो शख़्स शुक्र करता है वह अपने ही नफ़े के लिए शुक्र करता है, (अल्लाह तआ़ला का कोई नफ़ा नहीं) और (इसी तरह) जो नाशुक्री करता है, मेरा रब ग़नी है और करीम है। (40)

Maktab E Ashraf

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की एक और तदबीर

जब क़ासिद (पैग़ाम लाने वाला यानी दूत) वापस पहुँचता है और बिल्क़ीस को दोबारा पैग़ामे नुबुव्वत पहुँचाता है तो वह समझ लेती है और कहती है वल्लाह यह सच्चे पैग़म्बर हैं और पैग़म्बर का मुक़ाबला करके कोई पनप नहीं सकता। उसी वक़्त दोबारा क़ासिद भेजा कि मैं अपनी क़ौम के सरदारों समेत हाज़िरे ख़िदमत होती हूँ ताकि ख़ुद आपसे मिलकर दीनी मालूमात हासिल करूँ। और आपसे अपने इत्मीनान व संतुष्टि कर लूँ। यह कहलवा कर यहाँ अपना नायब एक हो बनाया, सल्तनत के इन्तिज़ामात उसके सुपुर्द किये, अपना अमूल्य क़ीमती जड़ाव तख़्त जो सोने का था सात महलों में ताले के अन्दर बन्द किया और अपने क़ायम-मक़ाम (उत्तराधिकारी) को उसकी हिफ़ाज़त की ख़ास ताकीद की और बारह हज़ार सरदार जिनमें से हर एक की मातहती में हज़ारों आदमी थे, अपने साथ लिये और सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के मुल्क की तरफ़ चल दी। जिन्नात क़दम-क़दम और दम-दम की ख़बरें आपको पहुँचाते रहते थे। जब आपको मालूम हुआ कि वह क़रीब पहुँच चुकी है तो आपने अपने एक दरबार में जिसमें जिन्न व इनसान सब मौजूद थे फ़रमाया- कोई है जो उसके तख़्त को उसके पहुँचने से पहले यहाँ पहुँचा दे? क्योंकि जब वह यहाँ आ जायेगी और इस्लाम में दाख़िल हो जायेगी फिर उसका माल हम पर हराम हो जायेगा (यह क़ौल क़तादा रह. का है, बहुत मुम्किन है कि इसकी असल भी कोई बनी इस्राईल की रिवायत हो)। यह सुनकर एक ताक़तवर अभिमानी जिन्न जिसका नाम कोज़न था और जो एक बड़े पहाड़ के जैसा था, बोल पड़ा कि अगर आप मुझे हुक्म दें तो आपका दरबार ख़त्म होने से पहले मैं ला देता हूँ। आप लोगों के फ़ैसले करने, झगड़े चुकाने और इन्साफ़ देने को सुबह से दोपहर तक दरबारे आ़म में तशरीफ़ रखा करते थे। उसने कहा मैं उस तख़्त के उठा लाने की ताक़त रखता हूँ और हूँ भी अमानतदार, उसमें से कोई चीज़ चुराऊँगा नहीं।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं चाहता हूँ कि इससे भी पहले मेरे पास वह पहुँच जाये। इससे मालूम होता है कि अल्लाह के नबी हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की उस तख़्त के मंगवाने से ग़र्ज़ यह थी कि अपने एक ज़बरदस्त मोजिज़े का और पूरी ताक़त का सुबूत बिल्क़ीस को दिखायें कि उसका तख़्त जिसे उसने सात ताला लगे हुए मकानों में रखा था वह उसके आने से पहले दरबारे सुलैमानी में मौजूद है (वह ग़र्ज़ न थी जो ऊपर क़तादा रह. की रिवायत से बयान हुई)। हज़रत सुलैमान के इस जल्दी के तक़ाज़े को सुनकर जिसके पास किताबी इल्म था वह बोला। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि यह आसिफ़ थे जो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के कातिब थे। इनके बाप का नाम बर्ख़िया था, अल्लाह वाले थे, इस्मे आज़म जानते थे, पक्के मुसलमान थे, बनी इस्राईल में से थे।

मुजाहिद रह. कहते हैं कि उनका नाम इस्तूम था। एक रिवायत में बलीख़ भी बयान किया गया है। उनका नाम लक़ब ज़िन्नूर था। अ़ब्दुल्लाह बिन लहीआ़ का क़ौल है कि यह ख़ज़िर थे लेकिन यह क़ौल बहुत ग़रीब है। उन्होंने कहा कि आप अपनी निगाह दौड़ाईये जहाँ तक पहुँचे नज़र कीजिये अभी आप देख ही रहे होंगे कि मैं उसे ला दूँगा। पस हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने यमन की तरफ़ जहाँ उसका तख़्त था नज़र की, इधर की यह खड़े होकर वुज़ू करके दुआ़ में मशग़ूल हुए और कहा 'या ज़ल्जलालि वल्-इकरामि' या यह फ़रमाया 'या इला-हना व इलाहु कुल्लि शैइन् इलाहन् वाहिदन् ला इला-ह इल्ला अन्-त इअ्तिनी बि-अ़रशिहा' उसी वक़्त बिल्क़ीस का तख़्त सामने आ गया। इतनी ज़रा सी देर में यमन से बैतुल-मुक़द्दस में वह तख़्त पहुँच गया और सुलैमानी लश्कर के देखते हुए ज़मीन में से निकल आया।

Maktab E Ashraf

जब सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने उसे अपने सामने मौजूद देख लिया तो फ़रमाया यह सिर्फ़ मेरे रब का फ़ज़्ल है ताकि वह मुझे आज़मा ले कि मैं शुक्रगुज़ारी करता हूँ या नाशुक्री। जो शुक्र करे वह अपना ही नफ़ा करता है, और जो नाशुक्री करे वह अपना ही नुक़सान करता है। ख़ुदा तआ़ला बन्दों की बन्दगी से बेनियाज़ (यानी उसे इसकी ज़रूरत नहीं) है, और ख़ुद बन्दों से भी। उसकी अ़ज़मत किसी की मोहताज नहीं। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ........ الخ

जो नेक अ़मल करता है वह अपने लिये और जो बुराई करता है वह अपने लिये।

एक और जगह है कि जो नेकी करते हैं वे अपने लिये ही अच्छाई जमा करते हैं। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था- तुम और रू-ए-ज़मीन के सब इनसान भी अगर अल्लाह से कुफ़्र करने लगो तो अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ोगे, वह बेपरवाह और तारीफ़ का पात्र है। सही मुस्लिम शरीफ़ में है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे सब अगले पिछले इनसान जिन्नात बेहतर से बेहतर और नेकबख़्त से नेकबख़्त हो जायें तो मेरा मुल्क बढ़ नहीं जायेगा, और अगर सब के सब बदबख़्त और बुरे बन जायें तो मेरा मुल्क घट नहीं जायेगा, यह तो सिर्फ़ तुम्हारे आमाल हैं जो जमा होंगे और तुमको ही मिलेंगे। जो भलाई देखे तो अल्लाह का शुक्र करे और जो बुराई देखे तो सिर्फ़ अपने नफ़्स को ही मलामत करे।

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ○ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ط قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ج وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ○ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ○ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ج فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ط

(उसके बाद सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बिल्क़ीस की अ़क्ल आज़माने के लिए) हुक्म दिया कि उसके लिए उसके तख़्त की सूरत बदल दो, हम देखें कि उसको इसका पता लगता है या उसकी गिनती उन्हीं में है जिनको (ऐसी बातों का) पता नहीं लगता। (41) सो जब (बिल्क़ीस) आई तो उससे (तख़्त दिखाकर) कहा गया कि क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है? वह कहने लगी कि हाँ है तो ऐसा ही, और (यह भी कहा कि) हम लोगों को तो इस वाक़िए से पहले ही (आपकी नुबुव्वत की) तहक़ीक़ हो चुकी है, और हम (उसी वक़्त से दिल से) मानने वाले हो चुके हैं। (42) और उसको (ईमान लाने से) अल्लाह के अ़लावा दूसरों की इबादत ने (जिसकी उसको आ़दत थी) रोक रखा था, (और वह आ़दत इसलिए पड़ गई थी कि) वह काफ़िर क़ौम में की थी। (43) (बिल्क़ीस से) कहा गया कि इस महल में दाख़िल हो। (वह चलीं, रास्ते

قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ؕ قَالَتْ
رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ
سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۠ ؑ ع ٣ ١٨

में हौज़ आया) तो जब उसका आँगन देखा तो उसको पानी (से भरा हुआ) समझा, और (उसके अन्दर घुसने के लिए) अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं। (उस वक़्त) सुलैमान ने फ़रमाया कि यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है, (उस वक़्त बिल्क़ीस) कहने लगीं कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने (अब तक) अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया था, (कि शिर्क में मुब्तला थी) और मैं अब सुलैमान के साथ (यानी उनके तरीक़े पर) होकर रब्बुल-आ़लमीन पर ईमान लाई। (44)

Mastan E Ashraf

बिल्क़ीस की हैरानी

उस तख़्त के आ जाने के बाद हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने हुक्म दिया कि इसमें थोड़ी-बहुत तब्दीली कर डालो। पस कुछ हीरे और जवाहिर बदल दिये गये, रंग व रोग़न में तब्दीली कर दी गई। नीचे ऊपर से भी कुछ बदल दिया गया। कुछ कमी ज़्यादती भी कर दी गई ताकि बिल्क़ीस की आज़माईश करें कि वह अपने तख़्त को पहचान लेती है या नहीं? जब वह पहुँची तो उससे कहा गया कि क्या तेरा तख़्त यही है? उसने जवाब दिया कि बिल्कुल इसी जैसा है। इस जवाब से उसकी दूरबेनी, अ़क़्लमन्दी और समझदारी ज़ाहिर है कि दोनों पहलू सामने रखे, देखा कि तख़्त बिल्कुल मेरे तख़्त जैसा है, और बज़ाहिर उसका यहाँ पहुँचना नामुम्किन है तो ऐसी एहतियात की बात कही।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया इससे पहले ही हमें इल्म दिया गया था और हम मुसलमान थे। बिल्क़ीस को ख़ुदा के सिवा औरों की इबादत ने और उसके कुफ़्र ने तौहीदे ख़ुदा से रोक दिया था। और यह भी हो सकता है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बिल्क़ीस को ग़ैरुल्लाह की इबादत से रोक दिया जो इससे पहले काफ़िरों में से थी। लेकिन पहले क़ौल की ताईद इससे भी हो सकती है कि मलिका (रानी) ने इस्लाम क़बूल करने का ऐलान महल में ही दाख़िल होने के बाद किया है, जैसे जल्द ही बयान होगा।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने जिन्नात के हाथों एक महल बनवाया था जो सिर्फ़ शीशे और काँच का था, और उसके नीचे पानी से ऊपर तक भरा हुआ हौज़ था। शीशा बहुत ही साफ़-शफ़्फ़ाफ़ था। आने वाला शख़्स शीशे का फ़र्क़ और पहचान नहीं कर सकता था, बल्कि उसे यही मालूम होता था कि पानी ही पानी है, हालाँकि उसके ऊपर शीशे का फ़र्श था। बाज़ लोगों का बयान है कि इस कारीगरी से हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का उद्देश्य यह था कि आप उससे निकाह करना चाहते थे (लेकिन यह क़ौल सही नहीं) लेकिन यह सुना था कि उसकी पिंडलियाँ बहुत ख़राब हैं और उसके टख़्ने चौपायों के खुर जैसे हैं, इसकी तहक़ीक़ के लिये आपने ऐसा किया था।

जब वह यहाँ आने लगी तो पानी के हौज़ को देखकर अपने पाँयचे उठाये। आपने देख लिया कि जो बात मुझे पहुँचाई गई है ग़लत है, इसकी पिंडलियाँ और पैर बिल्कुल आ़म इनसानों जैसे ही हैं, कोई नई बात या बदसूरती नहीं। हाँ चूँकि वह कुंवारी थीं, पिंडलियों पर बाल बड़े बड़े थे, आपने उस्तरे से मुंडवाने का

मश्विरा दिया, लेकिन उसने कहा कि उसकी बरदाश्त मुझसे न हो सकेगी। आपने जिन्नों से कहा कोई और चीज़ बतलाओ जिससे ये बाल जाते रहें। पस उन्होंने हड़ताल पेश की, यह दवा सबसे पहले हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के हुक्म से ही तलाश की गई। महल में बुलाने की वजह यह थी कि वह अपने मुल्क से अपने दरबार से अपनी रौनक़ से अपने साज़ व सामान से अपने ऐश व आराम और ख़ुद अपने से बड़ी हस्ती देख ले और अपनी शान व शौकत नज़रों से गिर जाये, जिसके साथ ही तकब्बुर व ग़ुरूर का ख़ात्मा भी यक़ीनी था।

जब यह अन्दर आने लगी और हौज़ के किनारे पर पहुँची तो उसे मौजें मारता हुआ दरिया समझ कर पाँयचे उठा लिये। उसी वक़्त कहा गया कि आपको ग़लत-फ़हमी (भ्रम) हुई यह तो शीशा है। आप इसी के ऊपर से बग़ैर क़दम भिगोये आ सकती हैं। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँचते ही उसके कान में सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने तौहीद का पैग़ाम डाला और सूरज-परस्ती की बुराई सुनाई। उस महल को देखते ही, उस हक़ीक़त पर नज़र डालते ही, दरबार के ठाठ देखते ही इतना तो वह समझ गई कि मेरा मुल्क तो इसके पासंग भी नहीं। नीचे पानी है ऊपर शीशा है बीच में तख़्ते सुलैमानी है। ऊपर से परिन्दों का साया है, जिन्नात व इनसान सब हाज़िर और हुक्म के अधीन हैं। जब उसको तौहीद (ईमान लाने और अल्लाह को एक मानने) की दावत दी गई तो बेदीनों की तरह उसने भी गुमराही भरा जवाब दिया जिससे ख़ुदा की शान में गुस्ताख़ी लाज़िम आती थी। उसे सुनते ही सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के सामने सज्दे में गिर पड़े और आपको देखकर आपका सारा लश्कर भी। अब तो वह बहुत ही नादिम (शर्मिन्दा) हुई। उधर से हज़रत सुलैमान ने डाँटा कि यह क्या कह दिया? उसने कहा मुझसे ग़लती हुई और उसी वक़्त रब की तरफ़ झुक गई और कहने लगी ख़ुदाया! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, अब मैं सुलैमान के साथ अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन पर ईमान ले आई। चुनाँचे सच्चे दिल से मुसलमान हो गई।

इब्ने अबी शैबा में यहाँ पर एक ग़रीब क़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के वास्ते से ज़िक्र किया है कि आप फ़रमाते हैं- हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तख़्त पर विराजमान होते तो आपके पास कुर्सियों पर इनसान बैठते, फिर उनके पास वाली कुर्सियों पर जिन्न बैठते, फिर उनके बाद शयातीन बैठते, फिर हवा उस तख़्त को ले उड़ती और फिर ऊपर फ़िज़ा में रोके रखती, फिर परिन्दे आकर अपने पंखों से साया कर लेते, फिर आप हवा को हुक्म देते और वह परवाज़ करके सुबह-सुबह महीने भर के फ़ासले पर पहुँचा देती। इसी तरह शाम को महीने भर की दूरी तय होती।

एक मर्तबा इसी तरह जा रहे थे परिन्दों की देखभाल जो की तो हुदहुद को ग़ायब पाया। बड़े नाराज़ हुए और फ़रमाया कि क्या वह झमघटे में मुझे नज़र नहीं पड़ता या ग़ैर-हाज़िर है? अगर वाक़ई वह ग़ैर-हाज़िर है तो मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा बल्कि ज़िबह कर दूँगा, या यह कि वह ग़ैर-हाज़िरी की कोई माक़ूल वजह बयान कर दे। ऐसे मौक़े पर परिन्दों के पर नुचवा कर आप ज़मीन पर डलवा देते थे, कीड़े मकोड़े खा जाते थे, उसके बाद थोड़ी ही देर में वह ख़ुद हाज़िर होता है। अपना जाना और वहाँ की सब ख़बर लाना बयान करता है। हज़रत सुलैमान उसकी सच्चाई की आज़माईश के लिये उसे मलिका-ए-सबा (मुल्क सबा की रानी) के नाम एक चिट्ठी देकर दोबारा भेजते हैं, जिसमें रानी को हिदायत होती है कि मेरी नाफ़रमानी न करो और मुसलमान होकर मेरे पास आ जाओ। उस ख़त को देखते ही मलिका (रानी) के दिल में उस ख़त की और उसके लिखने वाले की इज़्ज़त समा जाती है। वह अपने दरबारियों से मश्विरा करती है, वे अपनी

Maktaba Ashraf

क़ुव्वत, ताक़त, फ़ौज वग़ैरह बयान करके कह देते हैं कि हम तैयार हैं सिर्फ़ इशारे की देर है। लेकिन यह बुरे वक़्त और अपनी शिकस्त के अन्जाम को ख़्याल करके इस इरादे से बाज़ रहती है और दोस्ती का सिलसिला इस तरह शुरू करती है कि तोहफ़े और हदिये हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास भेजती है जिसे सुलैमान अ़लैहिस्सलाम वापस कर देते हैं और चढ़ाई की धमकी देते हैं। अब यह अपने यहाँ से चलती है। जब क़रीब पहुँच जाती है और उसके लश्कर की गर्द सुलैमान अ़लैहिस्सलाम देख लेते हैं तो फ़रमाते हैं कि इसका तख़्त उठा लाओ। एक जिन्न कहता है कि मैं अभी लाता हूँ आप यहाँ से उठें इससे पहले उसे देख लीजिये। आपने फ़रमाया इससे जल्द मुम्किन है? इस पर यह तो ख़ामोश हो गया लेकिन ख़ुदा के इल्म वाले ने कहा अभी एक आँख झपकते ही। इतने में देखा कि जिस कुर्सी पर पाँव रखकर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तख़्ते शाही पर चढ़े थे उसी के नीचे से बिल्क़ीस का तख़्त ज़ाहिर हुआ। आपने शुक्रे ख़ुदा अदा किया, लोगों को नसीहत की और उसमें कुछ रद्दोबदल करने का हुक्म दिया।

उसके आते ही उससे इस तख़्त के बारे में पूछा तो उसने कहा गोया यह वही है। उसने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से दो चीज़ें तलब कीं, एक तो ऐसा पानी जो न ज़मीन से निकला हो न आसमान से बरसा हो, आपकी आ़दत थी कि जब कुछ पूछने की ज़रूरत पड़ती तो पहले इनसानों से दरियाफ़्त करते फिर जिन्नात से, फिर शैतानों से। इस सवाल के जवाब में शैतानों ने कहा कि यह कोई चीज़ नहीं, घोड़े दौड़ाईये और उनके पसीने से उसका प्याला भर दीजिये। इस सवाल के पूरा होने के बाद उसने दूसरा सवाल किया कि ख़ुदा तआ़ला का रंग कैसा है? इसे सुनकर आप उछल पड़े, उसी वक़्त सज्दे में गिर पड़े और ख़ुदा तआ़ला से अ़र्ज़ की कि बारी तआ़ला इसने ऐसा सवाल किया कि मैं तो इसे तुझसे मालूम भी नहीं कर सकता। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जवाब मिला कि बेफ़िक्र हो जाओ मैंने उसका इन्तिज़ाम कर दिया। आप सज्दे से उठे और फ़रमाया तूने क्या पूछा था, उसने कहा पानी के बारे में मेरा सवाल था जो आपने पूरा किया और तो मैंने कुछ नहीं पूछा। वह ख़ुद और उसके सारे लश्करी दूसरे सवाल को ही भूल गये। आपने लश्करियों से पूछा कि इसने दूसरा सवाल क्या किया था? सब ने यही जवाब दिया कि सिवाय पानी के इसने और कोई दूसरा सवाल नहीं किया। शैतानों के दिल में ख़्याल आया कि अगर सुलैमान ने इसे पसन्द कर लिया और इसे अपने निकाह में ले लिया और औलाद भी हो गई तो यह हमसे हमेशा के लिये गये, इसलिये उन्होंने हौज़ बनाया, उसे पानी से भरा और ऊपर से शीशे का फ़र्श बना दिया। इस अन्दाज़ और कारीगरी से कि देखने वाले को मालूम ही न दे, वह तो पानी ही समझे। जब बिल्क़ीस दरबार में आई और वहाँ से गुज़रना चाहा तो पानी जानकर अपने पाँयचे उठा लिये। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने पिंडलियों के बाल देखकर नापसन्दीदगी का इज़्हार किया, लेकिन साथ ही फ़रमाया कि इन बालों को दूर करने की कोशिश करो, तो कहा गया कि उस्तरे से मूँड सकते हैं? आपने फ़रमाया उसका निशान मुझे नापसन्द है, और कोई तरकीब बताओ, पस शयातीन ने तिला बना दिया जिसके लगाते ही बाल उड़ गये। पस सबसे पहले बाल सफ़ा तिला सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के हुक्म से ही तैयार हुआ है।

इमाम इब्ने अबी शैबा ने इस क़िस्से को नक़ल करके लिखा है कि यह कितना अच्छा क़िस्सा है, लेकिन मैं कहता हूँ कि बिल्कुल मुन्कर और सख़्त ग़रीब (यानी मोतबर नहीं) है। यह अ़ता बिन साईब का वहम है जो उसने इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के नाम से बयान कर दिया है, और अन्दाज़े के ज़्यादा क़रीब बात यह है कि यह बनी इस्राईल के दफ़्तरों से लिया गया है जो मुसलमानों में कअ़ब और वहब ने राईज कर दिया

Maktab E Ashraf

था। अल्लाह उनसे दरगुज़र (यानी उनके क़ुसूर को माफ़) फ़रमाये। पस इन क़िस्सों का कोई भरोसा नहीं, बनी इस्राईल तो नई-नई बातें निकालने में माहिर थे। बदल लेना, गढ़ लेना, कमी ज़्यादती कर लेना उनकी आ़दत में दाख़िल था। ख़ुदा का शुक्र है कि हमें उसने उनका मोहताज नहीं रखा, हमें किताब दी और अपने नबी के ज़रिये वे बातें पहुँचाई जो नफ़े में, वज़ाहत में, बयान में उनकी बातों से बहुत आला और ऊँची हैं। साथ ही बहुत मुफ़ीद और बहुत ज़्यादा एहतियात वाली। इस पर अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है।

"सरह" कहते हैं महल को और हर बुलन्द ऊँची इमारत को। चुनाँचे फ़िरऔ़न मलऊन ने भी अपने वज़ीर हामान से यही कहा था "या हामानुब्नु ली सर्हन्" यानी ऐ हामान मेरे लिये एक बहुत ऊँची इमारत बना। यमन के एक ख़ास मुम्ताज़ और बुलन्द महल का नाम भी 'सरह' था। इससे मुराद वह इमारत है जो मज़बूत, बराबर और क़वी हो। यह इमारत बिल्लोर और साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे से बनाई गई थी। सन्दल में एक क़िला है उसका नाम भी मारिद है। मक़सद सिर्फ़ इतना है कि जब उस मलिका (रानी) ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की यह शान व बड़ाई, यह शौकत यह सल्तनत देखी और इसमें ग़ौर व फ़िक्र के साथ ही हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की सीरत (अख़्लाक़, आचरण), उनकी नेकी और उनकी दावत सुनी तो यक़ीन आ गया कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। उसी वक़्त मुसलमान हो गई। अपने अगले शिर्क व कुफ़्र से तौबा कर ली और दीने सुलैमान की ताबेदार और पैरोकार बन गई। अल्लाह की इबादत करने लगी जो ख़ालिक़ मालिक, हर चीज़ पर क़ाबिज़ और मुख़्तारे कुल है।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا
اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَاهُمْ فَرِيْقٰنِ
يَخْتَصِمُوْنَ ○ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ
بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ
وَبِمَنْ مَّعَكَ ۗ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ
اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ○

और हमने (क़ौमे) समूद के पास उनके (बिरादरी के) भाई सालेह (अ़लैहिस्सलाम) को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, यह (पैग़ाम देकर) कि तुम अल्लाह की इबादत करो, सो अचानक उनमें दो फ़रीक़ हो गए जो (दीन के बारे में) आपस में झगड़ने लगे। (45) सालेह (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि ऐ भाईयो! तुम नेक काम (यानी तौबा व ईमान) से पहले अ़ज़ाब को क्यों जल्दी माँगते हो? तुम लोग अल्लाह के सामने (कुफ़्र से) माफ़ी क्यों नहीं चाहते? जिससे उम्मीद हो कि तुम पर रहम किया जाए (यानी अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहो)। (46) वे लोग कहने लगे कि हम तो तुमको और तुम्हारे साथ वालों को मन्हूस समझते हैं। सालेह (अ़लैहिस्सलाम) ने (जवाब में) फ़रमाया कि तुम्हारी (इस) नहूसत का सबब अल्लाह के इल्म में है, बल्कि तुम लोग वे हो कि (कुफ़्र की बदौलत) अ़ज़ाब में मुब्तला होगे। (47)

Maktab E Ashraf

क़ौमे समूद और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम

हज़रत सालेह जब अपनी क़ौम 'समूद' के पास आये और ख़ुदा की रिसालत (पैग़ाम पहुँचाने का फ़रीज़ा) अदा करते हुए उन्हें तौहीद (अल्लाह के एक मानने) की दावत दी तो उनमें दो फ़रीक़ बन गये, एक जमाअ़त मोमिनों की दूसरा गिरोह काफ़िरों का। ये आपस में गुथ गये, जैसे एक दूसरी जगह है कि घमंडियों ने कमज़ोरों से कहा कि क्या तुम सालेह को रसूले ख़ुदा मानते हो? उन्होंने जवाब दिया कि हम खुल्लम-खुल्ला ईमान ला चुके हैं। उन्होंने कहा बस हम तो ऐसे ही कट्टर काफ़िर हैं। आपने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम्हें क्या हो गया है कि बजाय रहमत तलब करने के अ़ज़ाब माँग रहे हो? तुम इस्तिग़फ़ार करो ताकि अल्लाह की रहमत नाज़िल हो। उन्होंने जवाब दिया कि हमारा तो यक़ीन है कि हमारी तमाम मुसीबतों का कारण तू है और तेरे ये मानने वाले। यही फ़िरऔ़नियों ने हज़रत मूसा से कहा था कि जो भलाईयाँ हमें मिलती हैं उनके हक़दार तो हम हैं ही, लेकिन जो बुराईयाँ (आफ़तें और मुसीबतें) पहुँचती हैं वे सब तेरी और तेरे साथियों की वजह से हैं। एक और आयत में हैः

وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ.......... الخ

यानी अगर उन्हें कोई भलाई मिल जाती है तो कहते हैं यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर उन्हें कोई बुराई पहुँच जाती है तो कहते हैं यह तेरी जानिब से है। तू कह दे कि सब अल्लाह ही की तरफ़ से है। यानी अल्लाह की क़ज़ा व क़द्र (पहले से तयशुदा तक़दीर की वजह) से है। सूरः यासीन में भी काफ़िरों का अपने नबियों को यही कहना मौजूद हैः

قَالُوْآ اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ............الخ

हम तो तुम से बदशगुनी लेते हैं, अगर तुम लोग बाज़ न रहे तो हम तो तुम्हें पत्थर मार-मारकर हलाक कर देंगे और सख़्त सज़ा देंगे।

नबियों ने जवाब दिया कि तुम्हारी बदशगुनी (यानी बुरा समझना और मुसीबतों का सबब) तो हर वक़्त तुम्हारे वजूद में मौजूद है। यहाँ है कि हज़रत सालेह ने जवाब दिया कि तुम्हारी बदशगुनी (बुरा गुमान) तो अल्लाह के पास है। यानी वही तुम्हें इसका बदला देगा। बल्कि तुम तो फ़ितने में डाले हुए लोग हो, तुम्हें आज़माया जा रहा है, फ़रमाँबरदारी से भी और नाफ़रमानी से भी, और बावजूद तुम्हारी नाफ़रमानी के तुम्हें ढील दी जा रही है, यह ख़ुदा की तरफ़ से मोहलत है, इसके बाद पकड़ है।

وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ٥ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَاشَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا	और (कुफ़्र के सरग़ना) उस बस्ती में नौ शख़्स थे जो सरज़मीन में (यानी बस्ती से बाहर तक भी) फ़साद किया करते थे, और (ज़रा भी) सुधार न करते थे। (48) उन्होंने कहा कि सब आपस में (इस पर) अल्लाह की क़सम खाओ कि हम रात के वक़्त सालेह और उनके मुताल्लिक़ीन (ईमान वालों को) जा मारेंगे, फिर (तहक़ीक़ के वक़्त) हम उनके वारिस से कह

Muftab E Ashraf

لَصٰدِقُوْنَ ○ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ○ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ○ فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ○ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ○	देंगे कि हम उनके मुताल्लिक़ीन और ख़ुद उनके मारे जाने में मौजूद (भी) न थे, और हम बिल्कुल सच्चे हैं। (49) और (यह मशिवरा करके) उन्होंने एक ख़ुफ़िया तदबीर की, और एक ख़ुफ़िया तदबीर हमने की और (उस तदबीर की) उनको ख़बर भी न हुई। (50) सो देखिए उनकी शरारत का क्या अन्जाम हुआ कि हमने उनको (ज़िक्र हुए तरीक़े पर) और (फिर) उनकी क़ौम को सबको (आसमानी अ़ज़ाब से) ग़ारत कर दिया। (51) सो ये उनके घर हैं जो वीरान पड़े हैं, उनके कुफ़्र के सबब से बिला-शुब्हा इस (वाक़िए) में बड़ी इबरत है समझदारों के लिए। (52) और हमने ईमान और तक़्वे वालों को निजात दी। (53)

विरोधियों और मुख़ालिफ़ों की जमाअ़त, उनकी शरारत और ख़ुदा तआ़ला का इब्रतनाक अ़ज़ाब

क़ौमे समूद के लोगों के शहर में नौ फ़सादी शख़्स थे, जिनकी तबीयत में ख़ैर (भलाई और नेकी) थी ही नहीं। यही उनके रईस और सरदार थे। इन्हीं के मशिवरे और हुक्म से ऊँटनी को मार डाला गया था। उनके नाम ये हैं- दुअ़मा, दअ़ीम, हरमा, हरीम, दाब, सवाब, रियाब, मिस्तह, क़िदार बिन सालिफ़, यही आख़िरी शख़्स वह है जिसने अपने हाथ से ऊँटनी की कोचें काटी थीं, जिसका बयान इन आयतों में है:

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ.

(सूरः क़मर आयत 29)

اِذِ انْبَعَثَ اَشْقٰهَا.

(सूरः शम्स आयत 12)

यही वे लोग थे जो दिर्हम के सिक्के को थोड़ा सा क़ुतर लेते थे और उसे चलाते थे। सिक्के को काटना भी एक तरह का फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) था, इनका यह फ़साद भी था और दीगर फ़साद भी बहुत सारे थे। इस नापाक गिरोह ने जमा होकर मशिवरा किया कि आज रात को सालेह और उसके घराने को क़त्ल कर डालो। इस पर सब ने हलफ़ उठाये और मज़बूत अ़हद व पैमान किये। लेकिन ये लोग हज़रत सालेह तक पहुँचें इससे पहले अ़ज़ाबे ख़ुदा इन तक पहुँच गया और इनका सत्यानास कर दिया। ऊपर से एक चट्टान लुढ़कती हुई आई और इन सब सरदारों के सर फूट गये। सारे ही एक साथ मर गये। इनके हौसले बहुत बढ़ गये थे, ख़ुसूसन जब इन्होंने सालेह की ऊँटनी को क़त्ल किया और देखा कि कोई अ़ज़ाब

Maktaba Ashraf

नहीं आया तो अब अल्लाह के नबी के क़त्ल पर आमादा हुए। मश्विरे किये कि चुपचाप अचानक उसे और उसके बाल बच्चों को हलाक कर दो और उसके वली वारिसों और कौम से कह दो कि हमें क्या ख़बर? अगर सालेह नबी है तो फिर तो वह हमारे हाथ लगने का नहीं, वरना उसे भी उसकी ऊँटनी के साथ सुला दो। इस इरादे से चले। रास्ते में ही थे कि फ़रिश्ते ने पत्थर से इन सब के दिमाग़ के परख़्चे उड़ा दिये।

इनके मश्विरों में जो जमाअ़त शरीक थी उन्होंने जब देखा कि उन्हें गये हुए एक लम्बा समय हो गया और वापस नहीं लौटे तो ये ख़बर लेने चले, देखा कि सब के सब सर फटे हुए हैं, कलेजे निकल पड़े हैं और सब मुर्दा हैं। उन्होंने हज़रत सालेह पर उनके क़त्ल की तोहमत रखी और उन्हें मार डालने के लिये चढ़े, लेकिन उनकी कौम हथियार लगाकर आ गई और कहने लगी देखो इसने तुमसे कहा है कि तीन दिन में तुम पर अ़ज़ाबे ख़ुदा आयेगा, अब तीन दिन गुज़र जाने दो, अगर यह सच्चा है तो इसके क़त्ल से ख़ुदा को और नाराज़ करोगे और ज़्यादा सख़्त अ़ज़ाब आयेंगे, और अगर यह झूठा है तो फिर तुम्हारे हाथ से बचकर कहाँ जायेगा? चुनाँचे वे लोग चले गये। वास्तव में उनसे अल्लाह के नबी हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने साफ़ फ़रमा दिया था कि तुमने ख़ुदा की ऊँटनी को क़त्ल किया है, तुम तीन दिन तक तो मज़े उड़ा लो फिर ख़ुदा का सच्चा वायदा होकर रहेगा। ये लोग हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की ज़बानी यह सुनकर कहने लगे कि यह तो इतनी मुद्दत कह रहा है आओ हम आज ही इससे फ़ारिग़ हो जायें।

जिस पत्थर से ऊँटनी निकली थी उस पहाड़ी पर हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की एक मस्जिद थी, जहाँ आप नमाज़ पढ़ा करते थे, उन्होंने मश्विरा किया कि जब वह नमाज़ को आये उसी वक़्त रास्ते में ही उसका काम तमाम कर दो। जब पहाड़ी पर चढ़ने लगे तो देखा कि ऊपर से एक चट्टान लुढ़कती हुई आ रही है, उससे बचने के लिये एक ग़ार (गुफा) में घुस गये। चट्टान आकर ग़ार के मुँह पर इस तरह भिड़ गई कि मुँह बिल्कुल बन्द हो गया। सब के सब हलाक हो गये और किसी को पता भी न चला कि कहाँ गये। इन्हें यहाँ यह अ़ज़ाब आया, उधर वे हलाक कर दिये गये, न इनकी ख़बर उन्हें हुई और न उनकी ख़बर इन्हें।

हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम और ईमान वाले लोगों में से किसी का कुछ भी न बिगाड़ सके और ख़ुद ख़ुदा के अ़ज़ाब में अपनी जानें खो दीं। उन्होंने मक्र (चालाकी और फ़रेब) किया, हमने उनकी चालबाज़ी का मज़ा उन्हें चखा दिया और उन्हें इसका पहले बिल्कुल इल्म न हो सका। अन्जाम कार उनकी फ़रेब बाज़ियों का यह हुआ कि सब के सब तबाह व बरबाद हुए। ये उनकी बस्तियाँ जो उजाड़ पड़ी हैं उनके ज़ुल्म की वजह से ये हलाक हो गये। इनके रौनक़ दार शहर तबाह कर दिये गये। इल्म वाले लोग इन निशानियों से इब्रत (सबक़ और सीख) हासिल कर सकते हैं। हमने ईमान वालों और परहेज़गारों को बाल-बाल बचा लिया।

और हमने लूत (अ़लैहिस्सलाम) को भेजा था जबकि उन्होंने अपनी कौम से फरमाया कि क्या तुम बेहयाई का काम करते हो? हालाँकि समझदार हो। (54) क्या तुम मर्दों के साथ शहवत (जिन्सी इच्छा) पूरी करते हो औरतों को छोड़कर, (और इसके बुरा होने में कोई शुब्हा	وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

Maktab E Ashraf

تَجْهَلُوْنَ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ع

नहीं) बल्कि (इस बारे में) तुम (बिल्कुल) जहालत कर रहे हो। (55) सो (इस तक़रीर का) उनकी क़ौम से कोई उचित जवाब न बन पड़ा सिवाय इसके कि आपस में कहने लगे कि लूत के लोगों को तुम अपनी बस्ती से निकाल दो, (क्योंकि) ये लोग बड़े पाक-साफ़ बनते हैं। (56) सो हमने (उस क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल किया और) लूत (अ़लैहिस्सलाम) को और उनके मुताल्लिक़ीन को बचा लिया, सिवाय उनकी बीवी के, उसको हमने उन्हीं लोगों में तजवीज़ कर रखा था जो अ़ज़ाब में रह गए थे। (57) और हमने उन पर एक नई तरह की बारिश बरसाई, सो उन लोगों की क्या बुरी बारिश थी जो डराये गये थे। (58)

बदकार और बुरी राह चलने वाली क़ौम

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे और रसूल हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ बयान फ़रमा रहा है कि आपने अपनी उम्मत यानी अपनी क़ौम को उसके इस नालायक़ फ़ेल पर जिसका करने वाला उनसे पहले कोई न हुआ था, यानी "इग़लाम बाज़ी" (लड़कों से अपनी जिन्सी इच्छा पूरी करने, पाख़ाने की जगह में सोहबत करने) पर डराया। तमाम क़ौम की यह हालत थी कि मर्द मर्दों से औ़रतें औ़रतों से अपनी शहवत पूरी कर लिया करती थीं (ज़ाहिर है कि जब मर्द औ़रतों को छोड़ देंगे तो औ़रतें भी ग़ैर-फ़ितरी तरीक़ों को ही अपनायेंगी)। साथ ही इतने बेहया हो गये थे कि इस बुरे फ़ेल को छुपकर करना भी कुछ इतना ज़रूरी नहीं जानते थे, अपने मजमों में इस तरह की हरकतें किया करते थे। औ़रतों को छोड़कर मर्दों के पास आते थे। इसलिये आपने फ़रमाया कि अपनी इस जहालत से बाज़ आओ, तुम ऐसे गये गुज़रे और इतने नादान हो गये कि शरई पाकीज़गी के साथ ही तुमसे तबई तहारत भी जाती रही। जैसे एक दूसरी आयत में है:

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ....... الخ

क्या तुम मर्दों के पास आते हो और औ़रतों को जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे जोड़े बनाये हैं छोड़ते हो? बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि जब लूत और उनके मानने वाले तुम्हारे इस फ़ेल (बदफ़ेली) से बेज़ार हैं और वे न तुम्हारी मानते हैं न तुम उनकी तो फिर हमेशा के लिये इस झगड़े को ख़त्म क्यों नहीं कर देते। लूत के घराने को देस-निकाला देकर उनके रोज़मर्रा के कचोकों (रोक-टोक) से निजात हासिल कर लो।

जब काफ़िरों ने पुख़्ता इरादा कर लिया, उस पर जम गये और उस पर इत्तिफ़ाक़ (यानी सब की सहमति) हो गया तो अल्लाह ने उन ही को हलाक कर दिया और अपने पाक बन्दे हज़रत लूत

अलैहिस्सलाम और उनके घराने व मानने वालों को उनसे और जो अ़ज़ाब उन पर आये उनसे बचा लिया। हाँ आपकी बीवी जो क़ौम के साथ ही थी वह पहले ही से उन हलाक होने वालों में लिखी जा चुकी थी। वह यहाँ बाक़ी रह गई और अ़ज़ाब के साथ तबाह हुई। क्योंकि यह उन्हें उनके दीन और उनके तरीक़ों में मदद देती थी, उनके बुरे आमाल को पसन्द करती थी, उसी ने हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़बर क़ौम को दी थी। लेकिन यह ख़्याल रहे कि ख़ुदा न करे उनकी बदकारी और ग़लत चलन में यह शरीक न थी, अल्लाह के नबी की बुज़ुर्गी (शान और रुतबे) के ख़िलाफ़ है कि उनकी बीवी बदकार हो।

उस क़ौम पर आसमान से पत्थर बरसाये गये, जिन पर उनके नाम खुदे हुए थे। हर एक पर उसी के नाम का पत्थर आया और एक भी उनमें से बच न सका। ज़ालिमों की सज़ा दूर नहीं, उन पर अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो चुकी थी, उन्हें डराया और धमकाया जा चुका था, रिसालत की तब्लीग़ काफ़ी तौर पर पहुँच चुकी थी, लेकिन उन्होंने मुख़ालफ़त में, झुठलाने में और अपनी बेईमानी पर अड़े रहने में कमी नहीं की। अल्लाह के नबी हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को तकलीफ़ें पहुँचाईं बल्कि उन्हें निकाल देने का इरादा किया, उसी वक़्त इस बुरी बारिश (यानी पत्थरों की बारिश) ने उन्हें फ़ना कर दिया।

आप (तौहीद का बयान करने के लिए ख़ुतबे के तौर पर) कहिए कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए लायक़ हैं और उसके उन बन्दों पर सलाम (नाज़िल) हो जिनको उसने मुन्तख़ब फ़रमाया "यानी चुन लिया" है। क्या अल्लाह बेहतर है या वे चीज़ें जिनको वे शरीक ठहराते हैं। (59)	قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

इन नाफ़रमान और सरकश क़ौमों की हलाकत ख़ुदा तआ़ला का एक एहसान है

हुज़ूर सल्ल. को हुक्म हो रहा है- आप कहें कि सारी तारीफ़ों के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। उसी ने अपने बन्दों को अपनी बेशुमार नेमतें अ़ता फ़रमा रखी हैं। उसकी सिफ़तें बुलन्द और ऊँची हैं। उसके नाम बुलन्द और पाक हैं। और हुक्म होता है कि आप ख़ुदा के बरगुज़िदा (चुने हुए और मक़बूल) बन्दों पर सलाम भेजें जैसे अम्बिया और रसूल, उन पर अल्लाह की बेशुमार रहमतें और दुरूद व सलाम नाज़िल हों। जैसा कि एक और आयत में बयान है:

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ................ الخ

आपका रब जो बड़ी अ़ज़्मत वाला है उन बातों से पाक है जो ये (काफ़िर) बयान करते हैं। और सलाम हो पैग़म्बरों पर, और तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिये हैं जो तमाम आ़लम का परवर्दिगार है।

(सूरः साफ़्फ़ात आयत 180-182)

बरगुज़िदा (चुने हुए और मक़बूल) बन्दों से मुराद नबी करीम सल्ल. के सहाबा हैं और ख़ुद अम्बिया

अ़लैहिमुस्सलाम तो बदर्जा-औला इसमें दाख़िल हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपने नबियों और उनके ताबेदारों के बचा लेने और मुख़ालिफ़ों (विरोधियों और उनके दुश्मनों) के ग़ारत (तबाह व बरबाद) कर देने की नेमत बयान फ़रमाकर अपनी तारीफ़ें करने और अपने नेक बन्दों पर सलाम भेजने का हुक्म दिया। इसके बाद बतौर सवाल के मुश्रिकों के इस फ़ेल पर इनकार किया कि वे अल्लाह तआ़ला के साथ उसकी इबादत में दूसरों को शरीक ठहरा रहे हैं, जिनसे ख़ुदा पाक और बरी है।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है कि उन्नीसवें पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktaba Ashraf

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर बीस

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝	या वह ज़ात (बेहतर है) जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया, और उसने आसमान से तुम्हारे लिए पानी बरसाया। फिर उस (पानी) के ज़रिये हमने रौनक़दार बाग़ उगाए (वरना) तुमसे तो मुम्किन न था कि तुम उन (बाग़ों) के दरख़्तों को उगा सको। (यह सुनकर बतलाओ कि) क्या अल्लाह तआ़ला के साथ (इबादत में शरीक होने के लायक़) कोई और माबूद है? (मगर मुश्रिक लोग फिर भी नहीं मानते) बल्कि ये ऐसे लोग हैं कि (दूसरों को) ख़ुदा के बराबर ठहराते हैं। (60)

इस दुनिया का पालनहार

बयान हो रहा है कि पूरी कायनात का ख़ालिक़, सब का पैदा करने वाला, सब को रोज़ियाँ देने वाला, सब की हिफ़ाज़तें करने वाला, तमाम जहान की तदबीर (इन्तिज़ाम व व्यवस्था) करने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। इन बुलन्द आसमानों को, इन चमकते सितारों को उसी ने पैदा किया है। इस भारी बोझल ज़मीन को, इन बुलन्द चोटियों वाले पहाड़ों को, इन फैले हुए मैदानों को उसी ने पैदा किया है। खेतियाँ बाग़ात फल फूल दरिया समुद्र हैवानात जिन्नात इनसान ख़ुश्की और तरी के आ़म जानदार उसी एक के बनाये हुए हैं। आसमानों से पानी उतारने वाला वही है, उसे अपनी मख़्लूक़ की रोज़ी का ज़रिया उसी ने बनाया है। बाग़ात खेत सब वही उगाता है, जो अच्छे लगने के साथ-साथ बेहद मुफ़ीद होते हैं, अच्छे ज़ायक़े वाले होने के साथ ही ज़िन्दगी को क़ायम रखने वाले होते हैं। तुम में से या तुम्हारे झूठे माबूदों में से कोई भी न किसी चीज़ के पैदा करने की क़ुदरत रखता है न किसी दरख़्त के उगाने की। अल्लाह तआ़ला की ख़ालिक़ियत (पैदा करने की शान) और उसके रोज़ी पहुँचाने वाला होने को मुश्रिक लोग भी मानते हैं। जैसे एक दूसरी आयत में बयान हुआ है:

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ.......... الخ

यानी अगर तू उनसे सवाल करे कि आसमान से पानी बरसा कर मुर्दा ज़मीन को किसने ज़िन्दा कर दिया? तो भी उनका यही जवाब होगा कि अल्लाह तआ़ला ने। ग़र्ज़ ये जानते हैं और मानते हैं कि हर चीज़ का पैदा करने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है, लेकिन इनकी अ़क़्लें मारी गई हैं कि इबादत के वक़्त अल्लाह तआ़ला के साथ औरों को भी शरीक कर लेते हैं। इसके बावजूद कि जानते हैं कि वे न पैदा करने वाले हैं न रोज़ी देने वाले। और इस बात का फ़ैसला तो आसानी से हर अ़क़्लमन्द कर सकता है कि इबादत के लायक़ वही है जो ख़ालिक़, मालिक और रज़्ज़ाक़ है। इसी लिये यहाँ इस आयत में भी सवाल किया कि

Maktab E Ashraf

क्या माबूदे बर्हक़ के साथ कोई और भी इबादत के लायक़ है? क्या ख़ुदा के साथ मख़्लूक़ को पैदा करने में, मख़्लूक़ की रोज़ी पहुँचाने में कोई और भी शरीक है? चूँकि वे मुश्रिक ख़ालिक़ राज़िक़ सिर्फ़ अल्लाह ही को मानते थे और इबादत औरों की भी करते थे, इसलिये एक दूसरी आयत में फ़रमायाः

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ......... الخ

ख़ालिक़ और ग़ैर-ख़ालिक़ बराबर नहीं हैं। फिर ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) मख़्लूक़ (पैदा की हुई चीज़) को कैसे एक कर रहे हो? यह याद रहे कि इन आयतों में "अम्-मन्" (या वह ज़ात) जहाँ-जहाँ है वहाँ यही मायने हैं कि एक तो वह जो इन तमाम कामों को कर सके और इन पर क़ादिर हो, दूसरा वह जिसने इनमें से न तो किसी काम को किया और न कर सकता हो, क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? अगरचे दूसरी जानिब को लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया लेकिन कलाम के अन्दाज़ से साफ़ मालूम हो रहा है और आयत में साफ़-साफ़ यह भी हैः

آللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ.

यानी क्या ख़ुदा बेहतर है या जिन्हें वे शरीक करते हैं?

आयत के ख़ात्मे पर फ़रमाया- बल्कि ये वे लोग हैं जो ख़ुदा का शरीक ठहरा रहे हैं।

आयत "अम्-मन् हु-व क़ानितुन आनाअल्लैलि......" भी ऐसी ही आयत है। यानी एक वह शख़्स जो अपने दिल में आख़िरत का डर रखकर अपने रब की रहमत का उम्मीदवार हो, जो कि रातों को नमाज़ में गुज़ारता हो (तहज्जुद पढ़ता हो) यानी वह उस जैसा नहीं हो सकता जिसके आमाल ऐसे न हों। एक और जगह फ़रमाया कि आ़लिम और बे-इल्म बराबर नहीं। अ़क़्लमन्द ही नसीहत से फ़ायदा उठाते हैं। एक वह जिसका सीना इस्लाम के लिये खुला हुआ हो और वह अपने रब की तरफ़ से नूर लिये हुए हो, वह उस जैसा नहीं जिसके दिल में इस्लाम की तरफ़ से नफ़रत हो, और सख़्त-दिल हो। अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद अपनी ज़ात के बारे में फ़रमायाः

اَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ........ الخ

यानी वह जो मख़्लूक़ की हर-हर हरकत और ठहराव से वाक़िफ़ हो, तमाम ग़ैब की बातों को जानता हो, क्या उसके बराबर है जो कुछ भी न जानता हो? बल्कि जिसकी आँखें और कान ही न हों। जैसे तुम्हारे ये बुत हैं। एक जगह फ़रमान हैः

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ قُلْ سَمُّوْهُمْ. الخ

ये ख़ुदा तआ़ला के शरीक ठहरा रहे हैं, इनसे कह ज़रा उनके नाम तो मुझे बतलाओ।

पस इन सब आयतों का मतलब यही है कि ख़ुदा ने अपनी सिफ़तें बयान फ़रमाई हैं, फिर वे सिफ़तें किसी में न होने की ख़बर दी है।

या वह ज़ात जिसने ज़मीन को (मख़्लूक़ के) ठहरने की जगह बनाया और उसके दरमियान नहरें बनाईं और उस (ज़मीन) के ठहराने के लिए पहाड़ बनाए, और दो दरियाओं	اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ

Muftah E Ashraf

الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۭ ءَاِلٰـهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

के बीच एक हद्दे-फ़ासिल "यानी एक आड़" बनाई। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (मगर मुश्रिक लोग नहीं मानते) बल्कि उनमें ज़्यादातर तो (अच्छी तरह) समझते भी नहीं। (61)

अल्लाह की क़ुदरत की ये निशानियाँ और दलीलें

ज़मीन को अल्लाह तआ़ला ने साकिन (ठहरने वाली या ठहरने का स्थान) बनाया ताकि दुनिया आराम से अपनी ज़िन्दगी बसर कर सके और इस फैले हुए फ़र्श पर राहत पा सके। जैसे एक दूसरी आयत में है:

اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا....... الخ

अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को तुम्हारे लिये ठहरी हुई साकिन बनाई और आसमान को छत बनाया। उसने ज़मीन पर पानी के दरिया बहा दिये जो इधर-उधर बहते रहते हैं और मुल्क-मुल्क पहुँचकर ज़मीन को सैराब करते हैं, ताकि ज़मीन से खेत बाग़ वग़ैरह उगें। उसने ज़मीन की मज़बूती के लिये इस पर पहाड़ों की मेख़ें (कीलें) गाड़ दीं ताकि वह तुम्हें हिला-जुला न सके, ठहरी रहे। उसकी क़ुदरत देखो कि एक खारी समुद्र है एक मीठा है, दोनों बह रहे हैं, बीच में कोई रोक आड़ पर्दा नहीं, लेकिन क़ुदरत ने एक को एक से अलग कर रखा है। न कड़वा मीठे में मिल सके न मीठा कड़वे में। खारी अपने फ़ायदे पहुँचाता रहे, मीठा अपने फ़ायदे देता रहे। इसका साफ़-सुथरा, अच्छे ज़ायक़े वाला पानी लोग पियें, जानवरों को पिलायें, बाड़ियाँ बाग़ात वग़ैरह में यह पानी पहुँचायें, नहायें धोयें वग़ैरह। खारी पानी अपने फ़ायदे से लोगों को लाभान्वित करे, यह हर तरफ़ से घेरे हुए है ताकि हवा ख़राब न हो। एक दूसरी आयत में भी इन दोनों का बयान मौजूद है:

وَهُوَ الَّذِىْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ......... الخ

यानी इन दोनों समुद्रों का जारी करने वाला अल्लाह ही है, और उसी ने इन दोनों के दरमियान उनमें एक सीमा तय करने वाली हद रख दी है। यहाँ ये क़ुदरतें अपनी जताकर फिर सवाल करता है कि क्या ख़ुदा के अ़लावा कोई और भी ऐसा है जिसने ये काम किये हों या कर सकता हो? ताकि वह भी लायक़े इबादत समझा जाये। अक्सर लोग महज़ अज्ञानता के सबब अल्लाह के अ़लावा दूसरी चीज़ों की इबादत करते हैं। इबादतों के लायक़ सिर्फ़ वही है।

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ۭ ءَاِلٰـهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝

या वह ज़ात जो बेक़रार आदमी की सुनता है, जब वह उसको पुकारता है, और (उसकी) मुसीबत को दूर कर देता है, और तुमको ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाता है। (यह सुनकर अब बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (मगर) तुम लोग बहुत ही कम याद रखते हो। (62)

परेशान हाल और उस पर हमारी तवज्जोह व इनायत

सख़्तियों और मुसीबतों के वक़्त पुकारे जाने के क़ाबिल उसी की ज़ात है। बेकस बेबस लोगों का सहारा वही है। मुसीबत के मारे उसको पुकारते हैं, उसी की तरफ़ लौ लगाते हैं। जैसे फ़रमाया कि तुम्हें समुद्र के तूफ़ान ज़िन्दगी से मायूस कर देते हैं तो तुम उसी को पुकारते हो, उसी के सामने रोते और फ़रियाद करते हो और सब को भूल जाते हो। उसी की ज़ात ऐसी है कि हर एक बेक़रार वहाँ पनाह ले सकता है, मुसीबत के मारे लोगों की मुसीबत उसके सिवा कोई भी दूर नहीं कर सकता।

एक शख़्स ने रसूले ख़ुदा सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि हुज़ूर! आप किस चीज़ की तरफ़ हमें बुला रहे हैं? आपने फ़रमाया अल्लाह की तरफ़ जो अकेला है, जिसका कोई शरीक नहीं, जो उस वक़्त तुझे काम आता है जब तू किसी के ऐबों को छुपाने में फंसा हुआ हो, वही है कि जब तू जंगलों में राह भूलकर उसे पुकारे तो वह तेरी रहनुमाई कर दे। तेरा कोई खो गया हो और तू उससे इल्तिजा करे तो वह उसे तुझसे मिला दे। क़हत-साली (सूखा और अकाल) हो गई हो और तू उससे दुआयें करे तो वह मूसलाधार बारिश तुझ पर बरसा दे। उसने कहा या रसूलल्लाह! मुझे नसीहत कीजिये। आपने फ़रमाया किसी को बुरा न कह, नेकी के किसी काम को हल्का और मामूली न समझ अगरचे अपने मुसलमान भाई से हंसते चेहरे से मिलना ही हो, अगरचे अपने डोल से किसी प्यासे को एक घूँट पानी का दे देना ही हो। और अपने तहबन्द को आधी पिण्डली तक रख, न माने तो ज़्यादा से ज़्यादा टख़्ने तक, उससे नीचे लटकाने से बचता रह। इसलिये कि यह फ़ख़्र व ग़ुरूर है, जिसे ख़ुदा नापसन्द करता है। (मुस्नद अहमद)

एक रिवायत में उनका नाम जाबिर बिन सलीम है। उसमें है कि जब मैं हुज़ूर सल्ल. के पास आया आप एक चादर से गोट लटकाये बैठे थे जिसके फन्दे आपके क़दमों पर गिर रहे थे। मैंने आकर पूछा कि तुम में ख़ुदा के रसूल मुहम्मद कौन हैं? आपने अपने हाथ से ख़ुद अपनी तरफ़ इशारा किया, मैंने कहा या रसूलल्लाह! मैं एक गाँव का रहने वाला आदमी हूँ अदब तमीज़ कुछ नहीं जानता, मुझे इस्लाम की तालीम दीजिये। आपने फ़रमाया किसी छोटी सी नेकी को भी हक़ीर (मामूली और बेवक़अ़त) न समझ, अगरचे अपने मुसलमान भाई से अच्छे अन्दाज़ के साथ मुलाक़ात ही हो, और अगरचे अपने डोल में से किसी पानी मांगने वाले के बरतन में ज़रा सा पानी डाल देना ही हो। अगर कोई तेरी किसी ऐसी बात को जानता हो और वह तुझे शर्म दिलाये तो तू उसे उसकी ऐसी ही बात पर शर्म न दिला। ताकि तुझको अज्र मिले और वह गुनाहगार बन जाये। टख़्ने से नीचे कपड़ा लटकाने से परहेज़ कर, क्योंकि यह तकब्बुर है जो ख़ुदा को पसन्द नहीं, और किसी को भी हरगिज़ गाली न देना। फ़रमाते हैं कि यह सुनने के बाद से लेकर आज तक मैंने कभी किसी इनसान बल्कि किसी जानवर को भी गाली नहीं दी।

ताऊस रह. किसी बीमार की बीमारपुर्सी को गये, बीमार ने कहा मेरे लिये ख़ुदा से दुआ कीजिये। आपने फ़रमाया तुम ख़ुद अपने लिये दुआ करो। बेक़रार की बेक़रारी के वक़्त की दुआ को ख़ुदा क़बूल फ़रमाता है। वहब रह. फ़रमाते हैं- मैंने पहली आसमानी किताब में पढ़ा है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम जो शख़्स मुझ पर यक़ीन और भरोसा करे और मुझे थाम ले मैं उसे उसके मुख़ालिफ़ों से बचा लूँगा और ज़रूर बचा लूँगा चाहे आसमान व ज़मीन और तमाम मख़्लूक़ उसकी मुख़ालफ़त पर और उसको सताने पर ही तुल जाये। और जो मुझ पर भरोसा न करे, मेरी पनाह में न आये तो मैं उसे अमन व अमान में रहते हुए भी अगर चाहूँगा तो ज़मीन में धंसा दूँगा और उसकी कोई मदद न

Maktaba Ashraf

करूँगा।

एक बहुत ही अजीब वाक़िआ़ हाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर रह. ने अपनी किताब में नक़ल किया है। एक साहिब फ़रमाते हैं कि मैं एक ख़च्चर पर लोगों को दमिश्क़ से ज़ेदानी लेजाया करता था और उसी किराये पर मेरी गुज़र-बसर थी। एक मर्तबा एक शख़्स ने ख़च्चर किराये पर ले लिया, मैंने उसे सवार कराया और ले चला। एक जगह जहाँ दो रास्ते थे, उसने कहा इस राह पर चलो, मैंने कहा मैं इससे वाक़िफ़ नहीं हूँ सीधी राह यही है। उसने कहा नहीं! मैं पूरी तरह वाक़िफ़ हूँ यह बहुत नज़दीक का रास्ता है। मैं उसके कहने से उसी रास्ते पर चला, थोड़ी देर के बाद मैंने देखा कि एक जंगल बयाबान में हम आ गये हैं, जहाँ कोई रास्ता नज़र नहीं आता, निहायत ख़तरनाक जंगल और बन (वन) है, और हर तरफ़ लाशें पड़ी हुई हैं। मैं सहम गया। वह मुझसे कहने लगा ज़रा लगाम थाम लो मुझे यहाँ उतरना है। मैंने लगाम थाम ली, वह उतरा और अपना तहबन्द ऊँचा करके कपड़े ठीक करके छुरी निकाल कर मुझ पर हमला किया। मैं वहाँ से सरपट भागा लेकिन उसने मेरा पीछा किया और मुझे पकड़ लिया। मैं उसे क़समें देने लगा, लेकिन उसने ख़्याल भी न किया। मैंने कहा अच्छा यह ख़च्चर और तमाम सामान जो मेरे पास है तू ले ले और मुझे छोड़ दे। उसने कहा यह तो मेरा हो ही चुका लेकिन मैं तुझे ज़िन्दा छोड़ना चाहता ही नहीं। मैंने उसे ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया, आख़िरत के अ़ज़ाबों का ज़िक्र किया लेकिन इस चीज़ ने भी उस पर कोई असर न किया और वह मेरे क़त्ल पर तुला रहा। अब मैं मायूस हो गया, मरने के लिये तैयार हो गया और उससे मिन्नत व समाजत की कि आप मुझे दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर लेने दीजिये। उसने कहा अच्छा जल्दी पढ़ ले। मैंने नमाज़ शुरू की लेकिन ख़ुदा की क़सम मेरी ज़बान से क़ुरआन का एक हर्फ़ नहीं निकलता था, यूँ ही हाथ बाँधे ख़ौफ़ज़दा खड़ा हुआ था और वह जल्दी मचा रहा था। उसी वक़्त इत्तिफ़ाक़ से यह आयत मेरी ज़बान पर आ गईः

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوٓءَ.

यानी ख़ुदा ही है जो बेक़रार की बेक़रारी के वक़्त उसकी दुआ़ को सुनता और क़बूल फ़रमाता है, और बेबसी व बेकसी को सख़्ती और मुसीबत को दूर कर देता है।

पस इस आयत का ज़बान से जारी होना था कि मैंने देखा कि बीचों बीच जंगल में से एक घोड़े सवार तेज़ी से अपना घोड़ा भगाये नेज़ा ताने हमारी तरफ़ चला आ रहा है और बग़ैर कुछ कहे उस डाकू के पेट में उसने अपना नेज़ा घुसेड़ दिया जो उसके जिगर के आर-पार हो गया। वह उसी वक़्त बेजान होकर गिर पड़ा। सवार ने बाग मोड़ी और जाना चाहा लेकिन मैं उसके क़दमों से लिपट गया और रोकर कहने लगा ख़ुदा के लिये यह तो बतलाओ कि तुम कौन हो? उसने कहा मैं उसका भेजा हुआ हूँ जो मजबूरों बेकसों और बेबसों की दुआ़ क़बूल फ़रमाता और मुसीबत व आफ़त को टाल देता है। मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और वहाँ से अपना ख़च्चर और माल लेकर सही सालिम वापस लौटा।

इसी क़िस्म का एक और वाक़िआ़ भी है कि मुसलमानों के एक लश्कर ने एक जंग में काफ़िरों से शिकस्त उठाई और वापस लौटे। उनमें से एक मुसलमान जो बड़े सख़ी थे उनका घोड़ा बहुत तेज़ रफ़्तार था, रास्ते में अड़ गया। उस अल्लाह के वली ने बहुत कोशिश की लेकिन जानवर ने क़दम ही न उठाया, आख़िर आ़जिज़ आकर उसने कहा क्या बात है जो तू अड़ गया। ऐसे ही मौक़े के लिये तो मैंने तेरी ख़िदमत की थी और तुझे प्यार से पाला था। घोड़े को ख़ुदा ने ज़बान दी उसने जवाब दिया- वजह यह है

कि आप मेरा घास दाना साईस (घोड़े की निगरानी करने वाले) को सौंप देते थे, वह उसमें से चुरा लेता था, मुझे बहुत कम खाने को देता था और मुझ पर ज़ुल्म करता था। ख़ुदा के उस नेक बन्दे ने कहा अब तू चल मैं ख़ुदा को हाज़िर व नाज़िर जानकर वायदा करता हूँ कि अब से तुझे मैं ख़ुद ही खिलाया करूँगा। जानवर यह सुनते ही तेज़ी से लपका और उन्हें अमन के मक़ाम तक पहुँचा दिया। वायदे के मुताबिक़ अब से यह बुज़ुर्ग अपने उस जानवर को ख़ुद ही खिलाया करते थे। लोगों ने इसकी वजह पूछी उन्होंने किसी से वाक़िआ कह दिया जिसकी आ़म शोहरत हो गई और लोग इस वाक़िए को सुनने के लिये उनके पास दूर-दूर से आने लगे। रोम के बादशाह को जब यह ख़बर पहुँची तो उसने चाहा कि किसी तरह उन्हें अपने शहर में बुला ले। बहुत कोशिशें कीं लेकिन बेसूद रहीं। आख़िर में उसने एक शख़्स को भेजा कि किसी तरह हीले हवाले से उन्हें बादशाह तक पहुँचाये। यह शख़्स पहले मुसलमान था फिर मुर्तद (बेदीन) हो गया था, यह बादशाह के पास से चला, यहाँ आकर उनसे मिला, अपना इस्लाम ज़ाहिर किया, तौबा की और निहायत नेक बनकर रहने लगा, यहाँ तक कि उस वलीयुल्लाह को इस पर पूरा भरोसा हो गया और इसे नेक दीनदार समझ कर उन्होंने दोस्ती पैदा कर ली और साथ-साथ फिरने लगे। इसने अपना पूरा रसूख़ जमा कर अपनी ज़ाहिरी दीनदारी के फ़रेब में उन्हें फंसाकर उधर बादशाह को इत्तिला कर दी कि फ़ुलाँ वक़्त दरिया के किनारे पर एक मज़बूत हिम्मत वाले शख़्स को भेजो, मैं उन्हें लेकर वहाँ आ जाऊँगा और उस शख़्स की मदद से उन्हें गिरफ़्तार कर लूँगा। यहाँ से उन्हें फ़रेब देकर ले चला और उसी जगह पहुँचाया। अचानक यह शख़्स ज़ाहिर हुआ और उस बुज़ुर्ग पर हमला किया। उधर से इस मुर्तद (बेदीन) ने हमला किया। उस नेक दिल शख़्स ने उस वक़्त आसमान की तरफ़ निगाहें उठाईं और यह दुआ़ की कि ख़ुदाया इस शख़्स ने तेरे नाम से मुझे धोखा दिया है, मैं तुझसे यह इल्तिजा करता हूँ कि तू जिस तरह चाहे मुझे इन दोनों से बचा ले। वहीं जंगल से दो दरिन्दे (फाड़ खाने वाले जानवर) आते दिखाई दिये और उन दोनों शख़्सों को उन्होंने दबोच लिया और टुकड़े टुकड़े करके चल दिये। यह बन्दा-ए-ख़ुदा अमन व अमान के साथ वहाँ से सही व सालिम वापस तशरीफ़ ले लाये।

अल्लाह तआ़ला अपनी इस शाने रहमत को बयान फ़रमाकर आगे इरशाद फ़रमाते हैं कि वही तुम्हें ज़मीन का जानशीन (एक दूसरे की जगह लेने वाला) बनाता है। एक दूसरे के पीछे आ रहा है और लगातार यह सिलसिला चला जा रहा है। जैसे फ़रमान है:

إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ .... الخ

अगर वह चाहे तो तुम सब को यहाँ फ़ना कर दे और किसी और ही को तुम्हारा जानशीन (जगह लेने वाला) कर दे। जैसे कि ख़ुद तुम्हें दूसरों का ख़लीफ़ा बना दिया है। एक और आयत में है:

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ......... الخ

उस ख़ुदा ने तुम्हें ज़मीनों का जानशीन बनाया है और तुम में से एक को एक पर दर्जों में बढ़ा दिया है। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को भी ख़लीफ़ा कहा गया है, वह इसी एतिबार से कि उनकी औलाद एक दूसरे की जानशीन (जगह लेने वाली) होगी। जैसा कि सूरः ब-क़रह की इस आयत की तफ़सीर में विस्तृत तौर पर गुज़र चुका है:

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ.......... الخ

(यानी सूरः ब-क़रह की आयत 30 की तफ़सीर में)

इस आयत के इस जुमले से भी यही मुराद है कि एक के बाद एक, एक ज़माने के बाद दूसरा ज़माना, एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम। पस यह ख़ुदा की क़ुदरत है और इसमें मख़्लूक़ की मस्लेहत है वरना अगर वह चाहता तो सब को एक ही वक़्त एक साथ पैदा कर देता और एक साथ फ़ना कर देता। लेकिन अब उसने यह रखा कि एक मरे एक पैदा हो।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया, उनसे उनकी नस्ल फैलाई और दुनिया में एक ऐसा तरीक़ा रखा कि दुनिया वालों की रोज़ियाँ और उनकी ज़िन्दगियाँ तंग न हों वरना सारे इनसान एक साथ शायद ज़मीन में बहुत तंगी से गुज़ारा करते और एक-एक को नुक़सानात पहुँचते। पस मौजूदा तर्ज़ (तरीक़ा और चलन) ख़ुदा की हिक्मत पर दलील है, सब की पैदाईश का मौत के आने-जाने का वक़्त उसके नज़दीक मुक़र्रर है। एक-एक उसके इल्म में है, उसकी निगाह से कोई ओझल नहीं। वह एक दिन ऐसा भी लाने वाला है कि सब को एक ही मैदान में जमा करे और उनके फ़ैसले करे। नेकी बदी का बदला दे।

इन अपनी क़ुदरतों को बयान करने के बाद फ़रमाता है कि है कोई जो इन कामों को कर सकता हो? और जब नहीं कर सकता तो इबादत के लायक़ भी वह नहीं हो सकता। ऐसी साफ़ दलीलें बहुत कम सोची जाती हैं, और इनसे भी नसीहत बहुत कम लोग हासिल करते हैं।

(अच्छा फिर और कमालात सुनकर बतलाओ कि ये बुत बेहतर हैं) या वह ज़ात जो तुमको ख़ुश्की और दरिया की अंधेरियों में रास्ता सुझाता है, और जो कि हवाओं को बारिश से पहले भेजता है जो (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिलों को) ख़ुश कर देती हैं। (यह सुनकर बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (हरगिज़ नहीं, बल्कि) अल्लाह तआला, उन लोगों के शिर्क से बरतर है। (63)	اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِىْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا ۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

ज़रा ग़ौर तो करो!

आसमान व ज़मीन में ख़ुदा तआला ने ऐसी निशानियाँ रख दी हैं कि ख़ुश्की और तरी में जो राह भूल जाये वह उन्हें देखकर सही रास्ता इख़्तियार कर ले। जैसे फ़रमाया- सितारों से लोग राह पाते हैं समुद्रों में और ख़ुश्की में, उन्हें देखकर अपना रास्ता ठीक कर लेते हैं। पानी भरे बादलों बरसने से पहले ठंडी और भीनी-भीनी हवायें वह चलाता है जिससे लोग समझ लेते हैं कि अब रहमत बरसेगी। ख़ुदा के सिवा इन कामों का करने वाला कोई नहीं, न कोई इन पर क़ादिर है। तमाम शरीकों से वह अलग और पाक है, सब से बुलन्द है।

या वह ज़ात जो मख़्लूक़ात को अव्वल बार पैदा करता है (यह तो मानी हुई बात है), फिर	اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ

उसको दोबारा ज़िन्दा करेगा और जो कि आसमान (से पानी बरसाकर) और ज़मीन से (पैड़-पौधे वग़ैरह निकालकर) तुमको रिज़्क़ देता है। (यह सुनकर अब बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? आप कहिए कि (अच्छा) तुम (उनके इबादत के मुस्तहिक़ होने पर) अपनी दलील पेश करो अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो। (64)	يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○

कौन है जो इन कामों को अन्जाम देता है

फ़रमान है कि ख़ुदा वह है जो अपनी कामिल क़ुदरत से मख़्लूक़ात को बिना किसी नमूने के पैदा कर रहा है, फिर उन्हें फ़ना करके दोबारा पैदा करेगा। जब तुम उसे पहली दफ़ा पैदा करने पर क़ादिर मान रहे हो तो दोबारा पैदाईश जो इससे बहुत आसान है, इस पर क़ादिर क्यों नहीं मानते? आसमान से बारिश बरसाना, ज़मीन से अनाज उगाना और तुम्हारी रोज़ी का सामान आसमान व ज़मीन से पैदा करना उसी का काम है। जैसे सूरः तारिक़ में फ़रमाया- पानी वाले आसमान की और फूटने वाली ज़मीन की क़सम। एक और आयत में है:

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ.......... الخ

यानी ख़ुदा जानता है हर उस चीज़ को जो ज़मीन में जाये और जो उससे बाहर आये। और जो आसमान से उतरे और जो उस पर चढ़े।

पस आसमान से पानी बरसाने वाला और उसे ज़मीन में इधर से उधर तक पहुँचाने वाला और उसकी वजह से तरह-तरह के फल फूल अनाज घास पात उगाने वाला वही है जो तुम्हारी और तुम्हारे जानवरों की रोज़ियाँ हैं। यक़ीनन ये तमाम चीज़ें एक अ़क़्ल वाले के लिये ख़ुदा की बड़ी निशानियाँ हैं। अपनी इन क़ुदरतों और अपने ज़बरदस्त एहसानों को बयान फ़रमाकर फ़रमाया कि क्या ख़ुदा के साथ इन कामों का करने वाला कोई और भी है जिसकी इबादत की जाये? अगर तुम ख़ुदा के अ़लावा और दूसरों को माबूद मानने के दावे को दलील से साबित कर सकते हो तो वह दलील पेश करो। लेकिन चूँकि उनके पास कोई दलील नहीं, इसलिये एक दूसरी आयत में फ़रमा दिया कि ख़ुदा के साथ जो दूसरे को पूजे जिसकी कोई दलील भी उसके पास न हो वह यक़ीनन काफ़िर और निजात से मेहरूम है।

आप कह दीजिए कि जितनी मख़्लूक़ात आसमानों और ज़मीन (यानी दुनिया में) मौजूद हैं, (उनमें से) कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता, सिवाय अल्लाह के, और (इसी वजह से) उन (मख़्लूक़ात) को यह ख़बर नहीं कि वे कब दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे। (65) बल्कि	قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ○ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي

Maktab E Ashraf

आख़िरत के बारे में (ख़ुद) उनका इल्म (उसके ज़ाहिर होने के बारे में) नहीं है, बल्कि ये लोग उससे शक में हैं, बल्कि यह उससे अन्धे बने हुए हैं। (66)	الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِیْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ۠ ؏

ग़ैब का इल्म

अल्लाह तआ़ला अपने नबी को हुक्म देता है कि वह सारे जहाँ को बता दें कि सारी मख़्लूक़ आसमान की हो या ज़मीन की, ग़ैब का इल्म कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह तआ़ला के, जो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, कोई और ग़ैब का जानने वाला नहीं। सिवाय ख़ुदा के कोई इनसान, जिन्न, फ़रिश्ता ग़ैब का जानने वाला नहीं। जैसे फ़रमान है:

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ لَا یَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ.

यानी ग़ैब की कुन्जियाँ उसके पास हैं जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता।

एक और जगह फ़रमान है:

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ......... الخ

ख़ुदा तआ़ला ही को क़ियामत का इल्म है, वही बारिश बरसाता है, वही मादा के पेट के बच्चे से वाक़िफ़ है, कोई नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा। न किसी को यह ख़बर है कि वह कहाँ मरेगा। अ़लीम व ख़बीर (हर चीज़ का जानने वाला और हर बात की ख़बर रखने वाला) सिर्फ़ अल्लाह ही है। और भी इस मज़्मून की बहुत सी आयतें हैं। मख़्लूक़ तो यह भी नहीं जानती कि क़ियामत कब आयेगी, आसमानों और ज़मीनों के रहने वालों में से एक भी वाक़िफ़ नहीं कि क़ियामत का वक़्त कौनसा है? जैसे एक दूसरी जगह अल्लाह का फ़रमान है:

ثَقُلَتْ فِی السَّمٰوٰتِ......... الخ

सब पर यह इल्म मुश्किल और बोझल है, वह तो अचानक आ जायेगी।

हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का फ़रमान है- जो कहे कि हुज़ूर सल्ल. कल की बात जानते थे उसने अल्लाह तबारक व तआ़ला पर बहुत बड़ा बोहतान बाँधा, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ज़मीन व आसमान वालों में से कोई भी ग़ैब की बात जानने वाला नहीं। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने सितारों में तीन फ़ायदे रखे हैं- आसमान की ज़ीनत (सजावट और ख़ूबसूरती), भूले भटकों की रहबरी और शैतानों की मार। किसी और बात का इनके साथ अ़क़ीदा रखना अपनी राय से बात बनाना, तकलीफ़ उठाना, अपने हिस्से को खोना है। जाहिलों ने सितारों के साथ इल्मे नजूम को जोड़कर फ़ुज़ूल बातें बनाई हैं कि इस सितारे के वक़्त जो निकाह करे यूँ होगा, फ़ुलाँ सितारे के मौक़े पर सफ़र करने से यह होता है, फ़ुलाँ सितारे के वक़्त जो पैदा होगा वह ऐसा ऐसा होगा, वग़ैरह वग़ैरह। ये सब ढकोसले हैं। उनकी बकवास के लिये ख़िलाफ़ अक्सर होता रहता है। हर सितारे के वक़्त कोई गोरा-काला, ठिगना-लम्बा ख़ूबसूरत और बद-शक्ल पैदा होता ही है। न कोई जानवर ग़ैब जाने न किसी परिन्दे से ग़ैब हासिल हो सके, न सितारे ग़ैब की रहनुमाई करें। सुनो! ख़ुदाई फ़ैसला हो चुका है कि आसमान और ज़मीन की तमाम

मख़्लूक़ ग़ैब से बेख़बर है, उन्हें तो अपने जी उठने का वक़्त भी मालूम नहीं है। (इब्ने अबी हातिम)

सुब्हानल्लाह हज़रत क़तादा रह. का यह क़ौल कितना सही और किस क़द्र मुफ़ीद मालूमात से भरा है। फिर फ़रमाता है कि उनके इल्मे आख़िरत के वक़्त जानने से तंग आ गये हैं, आ़जिज़ आ गये हैं। एक क़िराअत में "बल् अद्र-क" है, यानी सब के सब इल्मे आख़िरत का सही वक़्त न जानने में बराबर हैं, जैसे कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के सवाल के जवाब में फ़रमाया था कि मेरा और तेरा दोनों का इल्म इसके जवाब से आ़जिज़ है। पस यहाँ भी फ़रमाया कि आख़िरत से उनके इल्म ग़ायब हैं। चूँकि काफ़िर लोग अपने रब से जाहिल हैं (यानी उसको नहीं जानते) इसलिये ये आख़िरत के भी मुन्किर हैं, वहाँ तक इनके इल्म पहुँचते ही नहीं। एक क़ौल यह भी है कि आख़िरत में इनको इल्म हासिल होगा लेकिन उस वक़्त वह बेकार है। जैसे एक दूसरी जगह है कि जिस दिन ये हमारे पास पहुँचेंगे बड़े ही सुनने-देखने वाले बन जायेंगे लेकिन आज ज़ालिम खुली गुमराही में होंगे। फिर फ़रमाता है- बल्कि ये तो शक ही में हैं। इससे मुराद काफ़िर हैं। जैसे एक जगह फ़रमान है:

وَعُرِضُوا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا........ الخ

यानी ये लोग अपने रब के सामने क़तार बाँधे पेश किये जायेंगे, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि हमने जिस तरह तुम्हें पहली बार में पैदा किया था अब हम तुम्हें लाये हैं, लेकिन तुम तो यही समझते रहे कि क़ियामत कोई चीज़ ही नहीं। मुराद यह है कि तुम में से काफ़िर यह समझते रहे। पस उपरोक्त आयत में भी काफ़िर लोग ही मुराद हैं। इसी लिये आख़िर में फ़रमाया कि ये तो इस अंधेपन में है, नाबीना हो रहे हैं, आँखें बन्द कर रखी हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ○ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ○ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ○ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ○	और ये काफ़िर यूँ कहते हैं कि क्या हम लोग जब (मरकर) मिट्टी हो गए और (इसी तरह) हमारे बड़े भी, तो क्या (फिर) हम (ज़िन्दा करके क़ब्रों से) निकाले जाएँगे? (67) इसका तो हमसे और हमारे बड़ों से (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से) पहले से वायदा होता चला आया है, ये बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़ल होती चली आई हैं। (68) आप कह दीजिए कि तुम ज़मीन में चल-फिरकर देखो कि मुजरिम लोगों का अन्जाम क्या हुआ। (69) और (अगर वाज़ेह नसीहतों के बावजूद फिर भी मुख़ालफ़त पर कमर कसे हुए हैं तो) आप उन पर ग़म न कीजिए और जो कुछ ये शरारतें कर रहे हैं उनसे तंग न होईये। (70)

Maktab E Ashraf

एक बेहूदा ख़्याल

यहाँ बयान हो रहा है कि क़ियामत का इनकार करने वालों की समझ में अब तक यह नहीं आया कि मरने और सड़-गल जाने के बाद, मिट्टी और ख़ाक हो जाने के बाद हम दोबारा कैसे पैदा किये जायेंगे? वे इस पर सख़्त ताज्जुब में हैं। कहते हैं कि मुद्दतों से यह सुनते तो चले आते हैं लेकिन हमने तो किसी को मरने के बाद ज़िन्दा होते देखा नहीं, सुनी सुनाई बातें हैं। उन्होंने अपने अगलों से उन्होंने अपने पहले वालों से सुनीं, हम तक पहुँचीं लेकिन हैं सब अ़क़्ल से दूर। अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. को जवाब बतलाता है कि इनसे कहो- ज़रा ज़मीन में चल-फिरकर देखें कि रसूलों को झूठा जानने वालों और क़ियामत के न मानने वालों का कैसा दर्दनाक अन्जाम हुआ, हलाक और तबाह हो गये। और नबियों तथा ईमान वालों को ख़ुदा ने बचा लिया। यह नबियों की सच्चाई की दलील है। फिर अपने नबी को तसल्ली दी कि ये तुझे और मेरे कलाम को झुठलाते हैं लेकिन तू इन पर अफ़सोस और रंज न कर, इनके पीछे अपनी जान को घुन न लगा, ये तेरे साथ जो मक्र व हीले-बाज़ियाँ कर रहे हैं और जो चालें चल रहे हैं हमें ख़ूब इल्म है, तू बेफ़िक्र रह, तुझे और तेरे दीन को तरक़्क़ी देने वाले हम हैं। दुनिया जहान पर तुझे हम बुलन्दी देंगे।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ
لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ وَاِنَّ
رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ
مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ
غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ
كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

और ये लोग (निडर होकर) यूँ कहते हैं कि यह (अ़ज़ाब व क़हर का) वायदा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो (तो बतलाओ)? (71) आप कह दीजिए कि अ़जब नहीं कि जिस अ़ज़ाब की तुम जल्दी मचा रहे हो उसमें से कुछ तुम्हारे पास ही आ लगा हो। (72) और (अब तक जो देर हो रही है उसकी वजह यह है कि) आपका रब लोगों पर (अपना) बड़ा फ़ज़्ल रखता है, और लेकिन अक्सर आदमी (इस बात पर) शुक्र नहीं करते। (73) और आपके रब को सब ख़बर है जो कुछ उनके दिलों में छुपा है और जिसको वे ऐलानिया करते हैं। (74) और आसमान और ज़मीन में ऐसी कोई छुपी हुई चीज़ नहीं जो लौहे महफ़ूज़ में न हो। (75)

एक सवाल का जवाब

मुश्रिक लोग चूँकि क़ियामत के आने के क़ायल थे ही नहीं, जुर्रत से उसे जल्दी तलब करते थे और कहते थे कि अगर सच्चे हो तो बताओ वह कब आयेगी? अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्ल. के वास्ते से जवाब मिल रहा है कि मुम्किन है कि वह बिल्कुल ही क़रीब आ गई हो। जैसे एक आयत में है:

عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا.

कि हो सकता है वह क़रीब ही आ लगी हो।

एक और जगह है कि ये अ़ज़ाब को जल्दी तलब कर रहे हैं और जहन्नम तो काफ़िरों को घेरे हुए है। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा का तो इनसानों पर बहुत ही फ़ज़्ल व करम है, उसकी बेशुमार नेमतें इनके पास हैं, फिर भी अक्सर नाशुक्रे हैं। जिस तरह तमाम ज़ाहिरी बातें और चीज़ें उस पर खुली और ज़ाहिर हैं इसी तरह तमाम बातिनी उमूर (अन्दरूनी और छुपे मामलात और बातें) भी उस पर ज़ाहिर हैं। जैसे फ़रमायाः

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّالْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ.

तुम में से कोई शख़्स कोई बात चुपके से कहे और जो पुकार कर कहे, और जो शख़्स रात में कहीं हो और जो दिन में चले-फिरे, ये सब (ख़ुदा के इल्म में) बराबर हैं।

एक और आयत में हैः

يَعْلَمُ السِّرَّوَاَخْفٰى.

और (उसके इल्म की शान यह है कि) अगर तुम पुकारकर बात कहो तो वह चुपके से कही हुई बात और उससे भी ज़्यादा छुपी बात को जानता है।

एक दूसरी आयत में हैः

اَلَاحِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ........ الخ

(सूरः हूद आयत 5)

मतलब यही है कि हर छुपे-खुले का वह आ़लिम (जानने वाला) है। फिर बयान फ़रमाता है कि हर ग़ायब हाज़िर का उसे इल्म है, वह अ़ल्लामुल-ग़ुयूब है, आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ें चाहे तुमको उनका इल्म हो या न हो, ख़ुदा के यहाँ खुली किताब में लिखी हुई हैं। जैसे फ़रमान है कि क्या तू नहीं जानता कि आसमान व ज़मीन की हर एक चीज़ का आ़लिम ख़ुदा है, सब कुछ किताब में मौजूद है, अल्लाह पर यह सब कुछ आसान है।

बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर अक्सर उन बातों (की हक़ीक़त) को ज़ाहिर करता है जिसमें वे इख़्तिलाफ़ करते हैं। (76) और यक़ीनन वह ईमान वालों के लिए (ख़ास) हिदायत और (ख़ास) रहमत है। (77) यक़ीनन आपका परवर्दिगार उनके दरमियान अपने हुक्म से (वह अ़मली) फ़ैसला क़ियामत के दिन करेगा। और वह ज़बरदस्त (और) इल्म वाला है। (78) सो (जब वह ऐसा है तो) आप अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखिए। यक़ीनन आप बिल्कुल हक़ (तरीक़े) पर हैं। (79) आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को	اِنَّ هٰذَاالْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَالَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ○ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ○ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ○ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ○ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ

Maktab E Ashraf

الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ○ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ○	अपनी आवाज़ सुना सकते हैं, (ख़ासकर) जब वे पीठ फेरकर चल दें। (80) और न आप अन्धों को उनकी गुमराही से (बचाकर) रास्ता दिखलाने वाले हैं, आप तो सिर्फ़ उन्हीं को सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं (और) फिर वे मानते (भी) हैं। (81)

क़ुरआन पाक हिदायत की किताब है

क़ुरआन पाक की हिदायत बयान हो रही है कि इसमें जहाँ रहमत है वही यह फ़ुरक़ान (हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाली) भी है, और साथ ही बनी इस्राईल (यानी जिनको तौरात व इन्जील दी गयी थी) के इख़्तिलाफ़ात (मतभेदों) का फ़ैसला भी है। जैसे हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में यहूदियों ने तोहमत रख दी थी और ईसाईयों ने उन्हें उनकी हद से आगे बढ़ा दिया था। क़ुरआन ने फ़ैसला किया और इफ़रात व तफ़रीत (यानी हद से आगे बढ़ने या नबियों का मर्तबा घटाने) को छोड़कर हक़ बात बतला दी कि वह ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं। वे ख़ुदा के हुक्म से पैदा हुए हैं, उनकी वालिदा (हज़रत मरियम) निहायत पाकदामन हैं, सही और बिल्कुल बेशक व शुब्हा बात यही है। और यह क़ुरआन मोमिनों के दिल की हिदायत और उनके लिये सरासर रहमत है। क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला इनके फ़ैसले करेगा जो बदला लेने में ग़ालिब है और बन्दे के अक़वाल व अफ़आ़ल (बातों और कामों) का आ़लिम (ख़ूब जानने वाला) है। तुझे उस पर कामिल भरोसा रखना चाहिये। अपने रब की रिसालत (पैग़ाम) की तब्लीग़ में कोताही न करनी चाहिये। तू सरासर हक़ पर है, मुख़ालिफ़ (विरोधी) लोग हमेशा के बदबख़्त हैं। उन पर तेरे रब की बात सादिक़ आ चुकी (यानी सच साबित हो चुकी) है कि उन्हें ईमान नसीब नहीं होगा चाहे तू उन्हें तमाम मोजिज़े दिखा दे। तू मुर्दों को नफ़ा देने वाला कलाम नहीं बना सकता।

इसी तरह ये काफ़िर लोग हैं कि इनके दिलों पर पर्दे हैं, इनके कानों में बोझ हैं, ये भी क़बूलियत का सुनना नहीं सुनेंगे। और न तू बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकता है जबकि वे पीठ मोड़े मुँह फेरे जा रहे हों। और तू अन्धों को उनकी गुमराही में रहनुमाई भी नहीं कर सकता, तू सिर्फ़ उन ही को सुना सकता है यानी क़बूल सिर्फ़ वही करेंगे जो कान लगाकर सुनेंगे और दिल लगाकर समझेंगे। साथ ही ईमान व इस्लाम भी उनमें हो। ख़ुदा और रसूल के मानने वाले हों, दीने ख़ुदा के क़ायल (मानने वाले) व आ़मिल (अ़मल करने वाले) हों।

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ○ ع	और जब (क़ियामत का) वायदा उनपर पूरा होने को होगा तो हम उनके लिए ज़मीन से एक (अ़जीब) जानवर निकालेंगे कि वह उनसे बातें करेगा, कि (काफ़िर) लोग हमारी (यानी अल्लाह तआ़ला की) आयतों पर यक़ीन न लाते थे। (82)

क़ियामत के क़रीब ज़ाहिर होने वाला एक ख़ास जानवर

Maktab E Ashraf

जिस जानवर का यहाँ ज़िक्र है यह लोगों के बिल्कुल बिगड़ जाने और दीने ख़ुदा को छोड़ बैठने के वक़्त आख़िरी ज़माने में ज़ाहिर होगा, जबकि लोगों ने दीने हक़ को बदल दिया होगा। बाज़ कहते हैं कि यह मक्का शरीफ़ से निकलेगा, बाज़ कहते हैं कि किसी और जगह से, जिसकी तफ़सील अभी आयेगी इन्शा-अल्लाह तआ़ला। वह बोलेगा, बातें करेगा और कहेगा कि लोग ख़ुदा की आयतों का यक़ीन नहीं करते थे। इब्ने जरीर इसी क़ौल को पसन्दीदा और अच्छा कहते हैं लेकिन यह क़ौल क़ाबिले क़बूल नहीं। वल्लाहु आलम।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि वह उन्हें ज़ख़्मी करेगा। एक रिवायत में है कि दोनों असर करेगा, यह क़ौल बहुत मुनासिब है और दोनों बातों में कोई मुनाफ़ात (टकराव और विरोधाभास) नहीं। वल्लाहु आलम। वे हदीसें और अक़वाल जो "दाब्बतुल-अर्ज़" (ज़मीन से निकलने वाले जानवर) के बारे में नक़ल किये गये हैं, उनमें से कुछ हम यहाँ बयान करते हैं। सही बात तक पहुँचने में मददगार अल्लाह ही है।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम एक बार बैठे हुए क़ियामत का ज़िक्र कर रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्ल. अ़रफ़ात से आये, हमें इस ज़िक्र में मशग़ूल देखकर फ़रमाने लगे कि क़ियामत क़ायम न होगी जब तक कि तुम दस निशानियाँ न देख लो। सूरज का पश्चिम से निकलना, धुआँ, दाब्बतुल-अर्ज़, याजूज माजूज का निकलना, ईसा बिन मरियम का उतरना और दज्जाल का निकलना, पश्चिम व पूरब और अ़रब के इलाक़े में तीन मर्तबा ज़मीन का धंसना और एक आग का अ़दन से निकलना जो लोगों का हश्र करेगी (यानी उन्हें एक जगह जमा करेगी), उन्हीं के साथ रात गुज़ारेगी और उन्हीं के साथ दोपहर का सोना सोयेगी। (मुस्लिम वग़ैरह)

अबू दाऊद तियालिसी में है कि दाब्बतुल-अर्ज़ (ज़मीन से निकलने वाला जानवर) तीन मर्तबा निकलेगा, दूर-दराज़ जंगल से ज़ाहिर होगा और उसका ज़िक्र शहर यानी मक्का तक न पहुँचेगा। फिर एक लम्बे ज़माने के बाद दोबारा ज़ाहिर होगा और लोगों की ज़बानों पर उसका क़िस्सा चढ़ जायेगा, यहाँ तक कि मक्का में भी उसकी शोहरत पहुँचेगी। फिर जबकि लोग ख़ुदा की सब से ज़्यादा हुर्मत व अ़ज़मत वाली (सम्मानित) मस्जिदे हराम (यानी काबा शरीफ़ की मस्जिद) में होंगे, उसी वक़्त अचानक दाब्बतुल-अर्ज़ उन्हें वहीं दिखाई देगा। रुक्न व मक़ाम के बीच अपने सर से मिट्टी झाड़ रहा होगा, लोग उसे देखकर इधर-उधर होने लगेंगे। यह मोमिनों की जमाअ़त के पास जायेगा और उनके मुँह को एक रोशन सितारे की तरह मुनव्वर और चमकदार कर देगा, न उससे भाग कर कोई बच सकता है न छुपकर, यहाँ तक कि एक शख़्स नमाज़ शुरू करके उससे पनाह चाहेगा, यह उसके पीछे आकर कहेगा कि अब नमाज़ को खड़ा हुआ है? फिर उसकी पेशानी पर निशान कर देगा और चला जायेगा। उसके इन निशानों के बाद काफ़िर मोमिन का साफ़ तौर पर इम्तियाज़ (फ़र्क़ और पहचान) हो जायेगा, यहाँ तक कि मोमिन काफ़िर से कहेगा ऐ काफ़िर! मेरा हक़ अदा कर और काफ़िर मोमिन से कहेगा कि ऐ मोमिन! मेरा हक़ दे। यह रिवायत हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद रज़ि. से मौक़ूफ़न भी नक़ल की गयी है।

एक रिवायत में है कि हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में होगा जबकि आप बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कर रहे होंगे, लेकिन इसकी सनद सही नहीं है। सही मुस्लिम में है कि सबसे पहले जो निशानी ज़ाहिर होगी वह सूरज का पश्चिम से निकलना और दाब्बतुल-अर्ज़ (ज़मीन से निकलने वाले

Maktab E Ashraf

जानवर) का चाश्त के वक्त आ जाना है। इन दोनों में से जो पहले होगा उसके बाद ही दूसरा होगा। सही मुस्लिम शरीफ़ में है, आपने फ़रमाया कि छह चीज़ों के आने से पहले-पहले नेक आमाल कर लो- सूरज का पश्चिम से निकलना, धुएँ का आना, दज्जाल का आना, दाब्बतुल-अर्ज़ का आना और तुम में से हर एक का ख़ास अम्र (मामला) और आम अम्र। यह हदीस और सनदों से दूसरी किताबों में भी है। अबू दाऊद तियालिसी में है, आप फ़रमाते हैं कि दाब्बतुल-अर्ज़ के साथ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लकड़ी और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की अंगूठी होगी। काफ़िरों की नाक पर लकड़ी से मोहर लगायेगा और मोमिनों के मुँह अंगूठी से मुनव्वर (रोशन और चमकदार) कर देगा, यहाँ तक कि एक दस्तरख़्वान पर बैठे हुए मोमिन काफ़िर सब ज़ाहिर होंगे। एक और हदीस में है जो मुस्नद अहमद की है कि काफ़िरों की नाक पर अंगूठी से मोहर करेगा और मोमिनों के चेहरे लकड़ी से चमका देगा। इब्ने माजा में हज़रत बरीदा रज़ि. से रिवायत है कि मुझे लेकर रसूलुल्लाह सल्ल. मक्का के पास के एक जंगल में गये, मैंने देखा कि एक सूखी ज़मीन है जिसके इर्द-गिर्द रेत है। फ़रमाने लगे यहीं से दाब्बतुल-अर्ज़ (ज़मीन से निकलने वाला जानवर) निकलेगा। इब्ने बरीदा कहते हैं कि उसके कई साल बाद मैं हज के लिये निकला तो मुझे लकड़ी दिखाई दी जो मेरी इस लकड़ी के बराबर थी। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसके चार पैर होंगे, सफ़ा पहाड़ी की खुड़ में से निकलेगा, इस क़द्र तेज़ी से निकलेगा जैसे कोई बहुत ही तेज़ रफ़्तार घोड़ा हो, लेकिन फिर भी तीन दिन में उसके जिस्म का तीसरा हिस्सा भी बाहर न आया होगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ि. से जब उसके बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया- जियाद में एक चट्टान है, उसके नीचे से निकलेगा, मैं अगर वहाँ होता तो मैं तुम्हें वह चट्टान दिखा देता, यह सीधा पूरब की तरफ़ जायेगा और इतनी ताक़त से चिल्लायेगा कि हर तरफ़ उसकी आवाज़ पहुँच जायेगी। फिर शाम (मुल्क सीरिया) की तरफ़ जायेगा, वहाँ भी चीख़ लगाकर यमन की तरफ़ मुतवज्जह होगा, यहाँ भी आवाज़ लगाकर शाम के वक़्त मक्का से चलकर सुबह अस्फ़ान पहुँच जायेगा। लोगों ने पूछा फिर क्या होगा? फ़रमाया मुझे मालूम नहीं।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का क़ौल है कि मुज़्दलिफ़ा की रात को निकलेगा। हज़रत अज़ीज़ के एक कलाम की हिकायत है कि सद्दूम के नीचे से यह निकलेगा, इसके कलाम को सब सुनेंगे, हामिला (गर्भवती) के हमल (गर्भ) वक़्त से पहले गिर जायेंगे, मीठा पानी कड़वा हो जायेगा, दोस्त दुश्मन बन जायेंगे, हिक्मत जल जायेगी, इल्म उठ जायेगा, नीचे की ज़मीन बातें करेगी, इनसान की वे तमन्नायें होंगी जो कभी पूरी न हों, उन चीज़ों की कोशिश होगी जो कभी हासिल न हों। उस बारे में काम करेंगे जिसे खायेंगे नहीं। अबू हुरैरह रज़ि. का क़ौल है कि उसके जिस्म पर सब रंग होंगे, उसके दो सींगों के बीच सवार के लिये एक फ़र्सख़ की राह होगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह मोटे नेज़े और भाले की तरह होगा। हज़रत अली रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसके बाल होंगे, खुर होंगे, दाढ़ी होगी, दुम न होगी। तीन दिन में यह मुश्किल से एक तिहाई बाहर आयेगा, हालाँकि तेज़ घोड़े की चाल चलता होगा। अबू ज़ुबैर का क़ौल है कि उसका सर बैल के सर के जैसा होगा, आँखें ख़िन्ज़ीर (सुअर) के जैसी होंगी, कान हाथी जैसे होंगे, सींग की जगह ऊँट की तरह होगी। शुतरमुर्ग़ जैसी गर्दन होगी, शेर जैसा सीना होगा, चीते जैसा रंग होगा, बिल्ली जैसी कमर होगी, मेंढे जैसी दुम होगी, ऊँट जैसे पाँव होंगे, हर दो जोड़ के दरमियान बारह गज़ का फ़ासला होगा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लकड़ी और हज़रत सुलैमान की अंगूठी साथ होगी, हर मोमिन की पेशानी पर अपने असा-ए-मूसवी (हज़रत मूसा की छड़ी) से निशान कर देगा जो फैल जायेगा और उसका चेहरा रोशन व

नूरानी हो जायेगा, और हर काफ़िर के चेहरे पर हज़रत सुलैमान की अंगूठी से निशान लगा देगा जो फैल जायेगा और उसका सारा चेहरा स्याह (काला) हो जायेगा। फिर तो इस तरह मोमिन काफ़िर ज़ाहिर हो जायेंगे कि ख़रीद व फ़रोख़्त के वक़्त खाने पीने के वक़्त लोग एक दूसरे को ऐ मोमिन और ऐ काफ़िर कहकर बुलायेंगे। दाब्बतुल-अर्ज़ एक-एक का नाम लेकर उनको जन्नत की ख़ुशख़बरी या जहन्नम की बुरी ख़बर सुनायेगा। यही इस आयत का मतलब है।

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ○ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ○ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ○

और जिस दिन (क़ब्रों से ज़िन्दा करने के बाद) हम हर उम्मत से एक गिरोह उन लोगों का (हिसाब के लिए) जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे, फिर उनको रोका जाएगा। (83) यहाँ तक कि जब (ठहरने की जगह में) हाज़िर हो जाएँगे तो अल्लाह इरशाद फ़रमाएगा कि क्या तुमने मेरी आयतों को झुठलाया था, हालाँकि तुम उनको अपने इल्मी घेरे में भी नहीं लाए, बल्कि और भी क्या-क्या काम करते रहे। (84) और (अब वह वक़्त है कि) उन पर (अ़ज़ाब का) वायदा पूरा हो गया, इस वजह से कि (दुनिया में) उन्होंने (बड़ी-बड़ी) ज़्यादतियाँ की थीं, सो वे लोग बात भी न कर सकेंगे। (85) क्या उन्होंने इस पर नज़र नहीं की कि हमने रात बनाई, ताकि लोग उसमें आराम करें, (और यह आराम मौत की तरह है) और दिन बनाया जिसमें देखें, (और यह मौत के बाद ज़िन्दा होने जैसा है, पस) बिला शुब्हा इसमें बड़ी-बड़ी दलीलें हैं, उन (ही) लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (86)

मेहशर का दिन

ख़ुदा की बातों को न मानने वालों का ख़ुदा के सामने हश्र होगा और वहाँ उन्हें डाँट-डपट होगी ताकि उनकी ज़िल्लत व हिक़ारत हो, हर क़ौम में से हर ज़माने के ऐसे लोगों के जत्थे (गिरोह के गिरोह) अलग-अलग पेश होंगे। जैसे फ़रमान है:

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ.

ज़ालिमों को और उनके जोड़ों को जमा करो। और जैसे फ़रमान है:

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ.

Maktab E Ashraf

जबकि नफ़्सों की जोड़ियाँ मिलाई जायेंगी।

ये सब एक दूसरे को धक्के देंगे, पहले वाले बाद वालों को रद्द कर देंगे। फिर सब के सब जानवरों की तरह हंका कर ख़ुदा के सामने लाये जायेंगे। उनके हाज़िर होते ही वह बारी तआ़ला निहायत ग़ुस्से से उनसे बाज़पुर्स (सवाल और पूछगछ) करेगा। ये नेकियों से ख़ाली हाथ होंगे। जैसा कि फ़रमायाः

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰیo وَلٰـكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰی o

यानी न इन्होंने सच्चाई की थी न नमाज़ें पढ़ी थीं, बल्कि झुठलाया था और मुँह मोड़ा था। पस इन पर हुज्जत साबित हो जायेगी और कोई उज़्र न कर सकेंगे। जैसे एक और जगह फ़रमान हैः

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ.

यह वह दिन है कि बोल न सकेंगे और न कोई माक़ूल उज़्र पेश कर सकेंगे, और न ग़ैर-माक़ूल उज़्र की इजाज़त पायेंगे।

पस इनके ज़िम्मे बात साबित हो जायेगी, भौंचक्के और हैरान रह जायेंगे, अपने ज़ुल्म का ख़ूब बदला पायेंगे। दुनिया में ज़ालिम थे अब जिसके सामने खड़े होंगे वह आ़लिमुल-ग़ैब (तमाम छुपी बातों का भी जानने वाला) है। कोई बात बनाये न बनेगी।

फिर अपनी क़ुदरते कामिला का बयान फ़रमाता है और अपनी शान की बुलन्दी बतलाता और अपनी अ़ज़ीमुश्शान सल्तनत दिखाता है जो खुली दलील है उसकी इताअ़त की फ़र्ज़ियत पर और उसके हुक्मों के बजा लाने पर, और उसके मना किये हुए कामों से रुके रहने की ज़रूरत पर और उसके नबियों को सच्चा मानने की असलियत पर कि उसने रात को पुरसुकून (सुकून से भरी) बनाया ताकि तुम उसमें आराम हासिल कर लो और दिन भर की थकान दूर कर लो। और दिन को रोशन बनाया ताकि तुम अपनी मआ़श (रोज़ी और कमाई) की तलाश कर लो। तिजारत के सफ़र का कारोबार आसानी से कर सको। ये तमाम चीज़ें एक मोमिन के लिये काफ़ी से ज़्यादा दलील हैं।

और जिस दिन सूर में फूँक मारी जाएगी, सो जितने आसमान और ज़मीन में हैं सब घबरा जाएँगे मगर जिसको ख़ुदा चाहे (वह उस घबराहट से और मौत से महफ़ूज़ रहेगा), और सबके सब उसी के सामने दबे-झुके रहेंगे। (87) और तू (जिन) पहाड़ों को देख रहा है और उनको ख़्याल कर रहा है कि ये (अपनी जगह से) हरकत न करेंगे, हालाँकि वे बादलों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे। यह ख़ुदा का काम होगा। जिसने हर चीज़ को (मुनासिब अन्दाज़ पर) मज़बूत बना रखा है। यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर	وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِی الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَo وَتَرَی الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِیَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِیْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَیْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَo مَنْ جَآءَ

Maktab E Ashraf

بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ○ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ ۗ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○	है। (88) जो शख़्स नेकी (यानी ईमान) लाएगा सो उस शख़्स को उस (नेकी के अज्र) से बेहतर (अज्र) मिलेगा, और वे लोग बड़ी घबराहट से उस दिन अमन में रहेंगे। (89) और जो शख़्स बुराई (यानी कुफ़्र व शिर्क) लाएगा तो वे लोग औंधे मुँह आग में डाल दिए जाएँगे, (और उनसे कहा जाएगा कि) तुमको उन्हीं आमाल की सज़ा दी जा रही है जो तुम (दुनिया में) किया करते थे। (90)

और जब सूर फूँका जायेगा

अल्लाह तआ़ला क़ियामत की घबराहट और बेचैनी को बयान फ़रमा रहा है। सूर में हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से फूँक मारेंगे, उस वक़्त ज़मीन पर सबसे बुरे लोग होंगे। देर तक सूर में फूँक मारते रहेंगे, जिससे सब परेशान हाल हो जायेंगे सिवाय शहीदों के जो ख़ुदा के यहाँ ज़िन्दा हैं और रोज़ियाँ दिये जाते हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से एक दिन किसी ने दरियाफ़्त किया कि यह आप क्या फ़रमाया करते हैं कि इतने-इतने वक़्त तक क़ियामत आ जायेगी। आपने 'सुब्हानल्लाह' या 'ला इला-ह इल्लल्लाह' और कोई ऐसा ही ताज्जुब का कलिमा कहा और फ़रमाने लगे सुनो! अब तो जी चाहता है कि किसी से कोई हदीस बयान ही न करूँ। मैंने यह कहा था कि जल्द ही तुम बड़ी-बड़ी बातें देखोगे, बैतुल्लाह ख़राब हो जायेगा और यह होगा और वह होगा वग़ैरह। रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि दज्जाल मेरी उम्मत में चालीस ठहरेगा, मैं नहीं जानता कि चालीस दिन या चालीस महीने या चालीस साल। फिर अल्लाह तआ़ला हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को नाज़िल फ़रमायेगा, वह सूरत व शक्ल में बिल्कुल हज़रत उरवा बिन मसऊद जैसे होंगे। आप उसे ढूँढ निकालेंगे और उसे हलाक कर देंगे। फिर सात साल ऐसे गुज़रेंगे कि दुनिया में दो शख़्स ऐसे न होंगे जिनमें आपस में बुग़ज़ व बैर और दुश्मनी हो। फिर अल्लाह तआ़ला शाम (सीरिया देश) की तरफ़ से एक भीनी-भीनी ठंडी हवा चलायेगा जिससे हर मोमिन फ़ौत हो (यानी मर) जायेगा, एक ज़र्रे के बराबर भी जिसके दिल में ख़ैर या ईमान होगा उसकी रूह भी क़ब्ज़ हो जायेगी। यहाँ तक कि अगर कोई शख़्स किसी पहाड़ की खोह में घुस गया होगा तो यह हवा वहीं जाकर उसे फ़ना कर देगी। अब ज़मीन पर सिर्फ़ बुरे लोग रह जायेंगे जो परिन्दों जैसे हल्के और चौपायों जैसे बेअ़क़्ल होंगे। उनमें से भलाई बुराई की तमीज़ उठ जायेगी, उनके पास शैतान पहुँचेगा और कहेगा तुम शर्माते नहीं कि इन बुतों की पूजा छोड़ बैठे हो? ये बुतपरस्ती शुरू कर देंगे। ख़ुदा इन्हें रोज़ियाँ पहुँचाता रहेगा और ख़ुश व प्रसन्न रखेगा। ये इसी मस्ती में होंगे कि सूर फूँकने का हुक्म मिल जायेगा, जिसके कान में आवाज़ पड़ी वहीं दायें बायें लौटने लगेगा। सबसे पहले उसे वह शख़्स सुनेगा जो अपने ऊँटों के लिये हौज़ सही कर रहा होगा, सुनते ही बेहोश हो जायेगा और सब लोग बेहोश होना शुरू हो जायेंगे। फिर अल्लाह तआ़ला शबनम (ओस) की तरह की एक बारिश बरसायेगा जिससे लोगों के जिस्म उगने लगेंगे। फिर दोबारा सूर में फूँका जायेगा जिससे सब उठ खड़े होंगे। वहीं आवाज़ लगेगी कि लोगो! अपने रब के

पास चलो, वहाँ ठहरो तुम से सवाल जवाब होगा। फिर फ़रमाया जायेगा कि आग का हिस्सा निकालो, पूछा जायेगा कि कितनों में से कितने? तो फ़रमाया जायेगा कि हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे। यह होगा वह दिन जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा। यह होगा वह दिन जब पिंडली की ज़ियारत कराई जायेगी। पहला सूर फूँकना तो घबराहट का सूर फूँकना होगा, दूसरा बेहोशी और मौत का, तीसरा दोबारा ज़िन्दा होकर रब्बुल-आलमीन के दरबार में पेश होने का।

हर एक ज़लील व ख़्वार होकर, पस्त व लाचार होकर, बेबस व मजबूर होकर, मातहत और अधीन होकर खुदा के सामने हाज़िर होगा। एक से भी बन न पड़ेगी कि उसका हुक्म मानने से इनकार कर दे, या हुक्म का पालन न करे। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान हैः

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُوْنَ بِحَمْدِهِ.

जिस दिन अल्लाह तआ़ला तुम्हें बुलायेगा और तुम उसकी तारीफ़ बयान करते हुए उसकी फ़रमाँबरदारी करोगे। एक और आयत में है कि फिर जब वह तुम्हें ज़मीन में से बुलायेगा तो तुम सब निकल खड़े होगे। सूर की हदीस में है कि तमाम रूहें सूर के सुराख़ में रखी जायेंगी और जब जिस्म क़ब्रों से उठ रहे होंगे तो सूर फूँक दिया जायेगा। रूहें उड़ने लगेंगी, मोमिनों की रूहें नूरानी होंगी, काफ़िरों की रूहें स्याह होंगी। रब्बुल-आ़लमीन ख़ालिक़े-कुल फ़रमा देगा कि मेरे जलाल की मेरी इज़्ज़त की क़सम है, हर रूह अपने बदन में चली जाये, जिस तरह ज़हर रगों और ख़ून में फैल जाता है इसी तरह रूहें अपने जिस्मों में फैल जायेंगी और लोग अपनी-अपनी जगह से सर झाड़ते हुए उठ खड़े होंगे। जैसे फ़रमाया कि उस दिन क़ब्रों से इस तरह जल्दी निकलेंगे जिस तरह अपनी इबादत की तरफ़ दौड़े भागे जाते थे। ये बुलन्द पहाड़ जिन्हें तुम गड़ा हुआ देख रहे हो ये उस दिन उड़ते बादलों की तरह इधर-उधर फैले हुए और टुकड़े-टुकड़े हुए दिखाई देंगे। इनका चूरा होगा, ये चलने फिरने लगेंगे और आख़िर रेज़ा-रेज़ा होकर बेनाम व निशान हो जायेंगे। ज़मीन साफ़ हथेली जैसी हो जायेगी। यह है सिफ़त उस कारीगर की जिसकी हर कारीगरी हिक्मत वाली, मज़बूत, पुख़्ता और आला होती है। जिसकी बुलन्द क़ुदरत इनसानी समझ में नहीं आ सकती। बन्दों के तमाम अच्छे बुरे आमाल से वह वाक़िफ़ है, हर हर फ़ेल की सज़ा व जज़ा ज़रूर देगा।

इस मुख़्तसर बयान के बाद तफ़सील बयान फ़रमाई कि नेकी इख़्लास तौहीद लेकर जो आयेगा वह एक के बदले दस पायेगा और उस दिन की घबराहट से महफ़ूज़ रहेगा। और लोग घबराहट में अ़ज़ाब में होंगे, यह उस वक़्त अमन व सवाब में होगा। बालाख़ानों में राहत व इत्मीनान से होगा। और जिसकी बुराईयाँ ही बुराईयाँ हों या जिसकी बुराई भलाईयों से ज़्यादा हों उसे उनका बदला मिलेगा, अपनी-अपनी करनी अपनी-अपनी भरनी। अक्सर मुफ़स्सिरीन से नक़ल किया गया है कि बुराई से मुराद शिर्क है।

मुझको तो यही हुक्म मिला है कि मैं इस शहर (यानी मक्का) के (हक़ीक़ी) मालिक की इबादत किया करूँ जिसने इस (शहर) को एहतिराम वाला (सम्मानित) बनाया है। और (उसकी इबादत क्यों न की जाए जबकि वह ऐसा है कि) सब चीज़ें उसी की (मिल्क) हैं।	اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَىْءٍ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَتْلُوَا

الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ
لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ
الْمُنْذِرِيْنَ ○ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ
اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ○ ع

और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि मैं फ़रमाँबरदार रहूँ। (91) और (मुझको) यह (भी हुक्म मिला है) कि मैं क़ुरआने करीम पढ़-पढ़कर सुनाऊँ, तो (मेरी तब्लीग़ के बाद) जो शख़्स राह पर आएगा, सो वह अपने ही फ़ायदे के लिए राह पर आएगा। और जो शख़्स गुमराह रहेगा तो आप कह दीजिए (कि मेरा कोई नुक़सान नहीं, क्योंकि) मैं तो सिर्फ़ डराने वाले पैग़म्बरों में से हूँ। (92) और आप (यह भी) कह दीजिए कि सब ख़ूबियाँ ख़ालिस अल्लाह ही के लिए साबित हैं, वह तुमको जल्द ही अपनी निशानियाँ (यानी क़ियामत के वाक़िआत) दिखला देगा। सो तुम (उनके ज़ाहिर होने के वक़्त) उनको पहचानोगे, और आपका रब उन कामों से बेख़बर नहीं जो तुम सब लोग कर रहे हो। (93)

चन्द अहकाम

अल्लाह तआ़ला अपने मोहतरम नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि आप लोगों में ऐलान कर दीजिये कि मैं इस शहर मक्का में रब की इबादत का, उसकी फ़रमाँबरदारी का मामूर (पाबन्द) हूँ। जैसे इरशाद है कि ऐ लोगो! अगर तुम्हें मेरे दीन में शक है तो हुआ करे, मैं तो जिनकी तुम इबादत कर रहे हो उनकी इबादत हरगिज़ नहीं करने का, मैं उसी ख़ुदा का आ़बिद हूँ जो तुम्हारी मौत व ज़िन्दगी का मालिक है। यहाँ जो मक्का शरीफ़ की तरफ़ अपने रब होने की निस्बत की यह मक्का शरीफ़ के सम्मान और शराफ़त के इज़हार के लिये है। जैसे फ़रमायाः

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ........ الخ

उन्हें चाहिये कि इस शहर के रब की इबादत करें जिसने उन्हें औरों की भूख के वक़्त आसूदा (ख़ुशहाल) और ख़ौफ़ के वक़्त बेख़ौफ़ कर रखा है।

यहाँ फ़रमाया कि इस शहर को हुर्मत व इ़ज़्ज़त वाला (सम्मानित) उसने बनाया है। जैसे बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने मक्का फ़तह होने वाले दिन फ़रमाया कि यह शहर उसी वक़्त से एहतिराम व सम्मान वाला है जब से अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया है। यह ख़ुदा की हुर्मत देने से हुर्मत वाला ही रहेगा, यहाँ तक कि क़ियामत आ जाये। न इसके काँटे काटे जायेंगे न इसका शिकार डराया जाये, न इसमें गिरी-पड़ी चीज़ किसी की उठाई जाये। हाँ जो उठाकर मालिक को पहुँचाना चाहे उसके लिये जायज़ है। इसकी घास न काटी जाये....।

यह हदीस बहुत सी सनदों से अनेक किताबों में मौजूद है। जैसे कि अहकाम की किताबों में तफ़सील से मौजूद है।

फिर इस ख़ास चीज़ की मिल्कियत साबित करके अपनी आ़म मिल्कियत का ज़िक्र फ़रमाता है कि हर चीज़ का रब और मालिक वही है, उसके सिवा न कोई मालिक न माबूद। और मुझे यह हुक्म भी मिला है कि मैं इख़्लास वाला, अल्लाह को एक मानने वाला और फ़रमाँबरदार होकर रहूँ। और मुझे यह भी फ़रमाया गया है कि मैं लोगों को ख़ुदा का कलाम पढ़कर सुनाऊँ। जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि हम ये आयतें और यह हिक्मत वाला ज़िक्र तेरे सामने तिलावत करते हैं। एक और आयत में है कि हम तुझे मूसा और फ़िरऔ़न का सही वाक़िआ़ सुनाते हैं। मतलब यह है कि मैं मुबल्लिग़ हूँ मैं तुम्हें जगा रहा हूँ तुम्हें डरा रहा हूँ अगर मेरी मान कर सही रास्ते पर आओगे तो अपना ही भला करोगे, और अगर मेरी न मानी तो मैं अपने तब्लीग़ (अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने) के फ़र्ज़ को अदा करके अपनी ज़िम्मेदारी से बरी हो गया हूँ। पहले रसूलों ने बस यही किया था, ख़ुदा का कलाम पहुँचाकर अपना दामन पाक कर लिया। जैसे फ़रमान है कि तुझ पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, हिसाब हमारे ज़िम्मे है। एक और जगह फ़रमाया कि तू सिर्फ़ डरा देने वाला है और हर चीज़ पर वकील अल्लाह ही है। अल्लाह के लिये तारीफ़ है जो बन्दों की बेख़बरी में उन्हें अ़ज़ाब नहीं करता, बल्कि पहले अपना पैग़ाम पहुँचाता है, अपनी हुज्जत ख़त्म करता है, भला बुरा समझा देता है। हम तुम्हें ऐसी आयतें (निशानियाँ) दिखायेंगे कि तुम ख़ुद क़ायल हो जाओ। जैसे फ़रमायाः

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِى الْاٰفَاقِ........... الخ

हम उन्हें ख़ुद उनके नफ़्सों में और उनके आस-पास ऐसी निशानियाँ दिखायेंगे कि जिनसे उन पर हक़ ज़ाहिर हो जाये।

अल्लाह तआ़ला तुम्हारे करतूत से ग़ाफ़िल नहीं बल्कि उसका इल्म हर छोटी बड़ी चीज़ को घेरे हुए है। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि देखो लोगो ख़ुदा को किसी चीज़ से, अपने किसी अ़मल से ग़ाफ़िल न जानना, वह एक-एक मच्छर से एक-एक पतंगे से और एक-एक ज़र्रे से बाख़बर है। उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. से मरवी है कि अगर वह ग़ाफ़िल होता इनसान के क़दमों के निशान से जिन्हें हवा मिटा देती है ग़फ़लत कर जाता, लेकिन वह उन निशानात का भी हाफ़िज़ और आ़लिम (जानने और निगरानी रखने वाला) है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह. अक्सर इन दो शे'रों को पढ़ते रहा करते थे जो या तो आपके हैं या किसी और केः

اِذَا مَاخَلَوْتَ الدَّهْرَيَوْمًافَلَا تَقُلْ ☆ خَلَوْتُ وَلٰكِنْ قُلْ عَلَىَّ رَقِيْبُ

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ يَغْفُلُ سَاعَةً ☆ وَلَا اَنَّ مَا يَخْفٰى عَلَيْهِ يَغِيْبُ

यानी जब किसी वक़्त भी तू ख़ल्वत और तन्हाई में हो तो ख़ुद को तन्हा और अकेला न समझना बल्कि अपने ख़ुदा को वहाँ भी हाज़िर व नाज़िर जानना। वह एक लम्हा भी किसी से ग़ाफ़िल नहीं, न कोई छुपी और पोशीदा चीज़ उसके इल्म से बाहर है।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः नम्ल की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः क़सस

सूरः क़सस मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 88 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तफ़सीर सूरः तॉ-सीम्-मीमः मुस्नद अहमद में हज़रत मादीकरब से नक़ल है कि हम हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. के पास आये और उनसे दरख़्वास्त की कि वह हमें सूरः तॉ-सीम्-मीम दो सौ आयतों वाली पढ़कर सुनायें, तो आपने फ़रमाया मुझे तो यह याद नहीं, तुम हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत से जाकर सुनो, जिन्हें ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. ने सिखाई है। चुनाँचे हम आपके पास गये और आपने हमें यह मुबारक सूरत पढ़कर सुनाई। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु।

طٰسٓمّٓ ○ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ○ نَتۡلُوۡا عَلَيۡكَ مِنۡ نَّبَاِ مُوۡسٰى وَفِرۡعَوۡنَ بِالۡحَقِّ لِقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ○ اِنَّ فِرۡعَوۡنَ عَلَا فِى الۡاَرۡضِ وَجَعَلَ اَهۡلَهَا شِيَعًا يَّسۡتَضۡعِفُ طَآئِفَةً مِّنۡهُمۡ يُذَبِّحُ اَبۡنَآءَهُمۡ وَيَسۡتَحۡىٖ نِسَآءَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ○ وَنُرِيۡدُ اَنۡ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيۡنَ اسۡتُضۡعِفُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَنَجۡعَلَهُمۡ اَئِمَّةً وَّنَجۡعَلَهُمُ الۡوٰرِثِيۡنَ ○ۙ

तॉ-सीम्-मीम् (1) ये (मज़ामीन जो आप पर 'वही' किए जाते हैं) वाज़ेह (मायनों वाली) किताब (यानी क़ुरआन) की आयतें हैं। (2) हम आपको मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और फ़िरऔ़न का कुछ क़िस्सा ठीक-ठीक पढ़कर (यानी नाज़िल करके) सुनाते हैं। उन लोगों के (नफ़े के) लिए जो ईमान रखते हैं। (3) फ़िरऔ़न (मिस्र की) सरज़मीन में बहुत बढ़-चढ़ गया था, और उसने वहाँ के रहने वालों को मुख़्तलिफ़ क़िस्में कर रखा था, कि उन (निवासियों में) से एक जमाअ़त (यानी बनी इस्राईल) का ज़ोर घटा रखा था, (इस तरह से कि) उनके बेटों को ज़िबह कराता था और उनकी औ़रतों (यानी लड़कियों) को ज़िन्दा रहने देता था, वाक़ई वह बड़ा फ़सादी था। (4) (ग़र्ज़ कि फ़िरऔ़न तो इस ख़्याल में था) और हमको यह मन्ज़ूर था कि जिन लोगों का ज़ोर (मिस्र की) ज़मीन में घटाया जा रहा था, हम उन पर (दुनियावी व दीनी) एहसान करें, और (वह एहसान यह कि) उनको (दीन में) पेशवा बना दें, और (दुनिया में) उनको (मुल्क का) मालिक बनाएँ। (5) और

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوا يَحْذَرُونَ ○	(मालिक होने के साथ) उनको ज़मीन में हुकूमत दें, और फ़िरऔन और हामान और उनके पैरोकारों को उन (बनी इस्राईल) की जानिब से वे (नागवार) वाक़िआत दिखलाएँ जिनसे वे बचाव कर रहे थे। (6)

Maktab-E-Ashraf

फ़िरऔन की सरकशी और बनी इस्राईल पर अल्लाह की रहमत

हुरूफ़े मुक़त्तआत का बयान पहले गुज़र चुका है। ये आयतें हैं वाज़ेह, स्पष्ट, रोशन, साफ़ और खुले क़ुरआन की। तमाम कामों की असलियत, पहले गुज़री और आईन्दा की तमाम ख़बरें इसमें हैं, और सब सच्ची और खुली। हम तेरे सामने मूसा और फ़िरऔन का वाक़िआ बयान करते हैं। जैसे एक दूसरी आयत में है कि हम तेरे सामने बेहतरीन वाक़िआ बयान करते हैं। इस तरह कि गोया तू उसके होने के वक़्त वहीं मौजूद था (यानी वाक़िआ इतनी तफ़सील से और इतने दिलकश अन्दाज़ में बयान होगा कि सुनने वाला यह महसूस करे कि यह मेरा सुना हुआ नहीं बल्कि देख हुआ है)।

फ़िरऔन एक घमंडी, सरफिरा और बद्-दिमाग़ इनसान था। उसने लोगों पर बुरी तरह क़ब्ज़ा जमा रखा था और उन्हें आपस में लड़वा-लड़वा कर उनमें फूट और इख़्तिलाफ़ डलवाकर उन्हें कमज़ोर करके ख़ुद उन पर ज़ुल्म व ज़्यादती के साथ हुकूमत कर रहा था। ख़ुसूसन बनी इस्राईल को तो उस ज़ालिम ने नेस्त-नाबूद करने देने का इरादा कर लिया था, हालाँकि मज़हबी एतिबार से उस वक़्त ये सब से अच्छे थे। बुरी तरह इन्हें ज़लील कर रखा था, तमाम घटिया काम इनसे लिया करता था और दिन रात ये बेचारे बेगार में घिसटते रहते थे। इस पर भी उसका ग़ुस्सा ठंडा न होता था। यह उनके लड़कों को क़त्ल कर डालता था कि ये क़ुव्वत वाले न हो जायें और इसलिये भी कि ये ज़लील व ख़्वार रहें। इसलिये भी कि उसे डर था कि इनमें से एक बच्चे के हाथों मेरी हुकूमत तबाह होने वाली है।

बात यह है कि जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम मिस्र की हुकूमत में से मय अपनी बीवी साहिबा हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के जा रहे थे और यहाँ के सरकश बादशाह ने हज़रत सारा को अपनी बाँदी बनाने के लिये आपसे छीन लिया था, जिन्हें ख़ुदा ने उस काफ़िर से महफ़ूज़ रखा और उसे उन पर हाथ बढ़ाने की क़ुदरत ही हासिल न हुई। उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने पेशीनगोई (भविष्यवाणी) के तौर पर फ़रमाया था कि तेरी औलाद में से एक लड़के के हाथों मुल्के मिस्र इस क़ौम से जाता रहेगा और इनका बादशाह उसके सामने ज़िल्लत के साथ हलाक होगा। चूँकि बनी इस्राईल में यह रिवायत चली आ रही थी और उनके पढ़ने-पढ़ाने में शामिल थी जिसे क़िब्ती भी सुनते थे, जो फ़िरऔन की क़ौम के थे, उन्होंने दरबार में मुख़बिरी की, जब से फ़िरऔन ने यह ज़ालिमाना और बेरहम क़ानून बना दिया कि बनी इस्राईल के बच्चे क़त्ल कर दिये जायें और उनकी बच्चियाँ छोड़ दी जायें। लेकिन रब को जो मन्ज़ूर होता है वह अपने वक़्त पर होकर ही रहता है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ज़िन्दा रह गये और ख़ुदा ने आपके हाथों उस

Maktab E Ashraf

पुराने सरकश को ज़लील व रुस्वा किया।

चुनाँचे फ़रमान है कि हमने उन ज़ईफ़ों और कमज़ोरों पर रहम करना चाहा। ज़ाहिर है कि ख़ुदा के इरादे का पूरा होना यक़ीनी है। जैसे फ़रमायाः

وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ......... الخ

कि हमने इस दबी-कुचली (यानी मज़लूम) क़ौम को उनकी तमाम चीज़ों का मालिक बना दिया।

फ़िरऔन ने अपनी सारी ताक़त का प्रदर्शन किया लेकिन उसे ख़ुदाई ताक़त का अन्दाज़ा ही न था। आख़िर ख़ुदा का इरादा ग़ालिब रहा और जिस एक बच्चे की ख़ातिर हज़ारों बेगुनाह बच्चों का ख़ूने नाहक़ बहाया था उस बच्चे को क़ुदरत ने उसी की गोद में पलवाया, परवान चढ़ाया और उसी के हाथों उसका उसके लश्कर का और उसके मुल्क व माल का ख़ात्मा कराया, ताकि वह जान ले कि वह ख़ुदा का एक ज़लील व मिस्कीन, मजबूर व बेबस ग़ुलाम था। और रब के इरादे पर किसी का इरादा ग़ालिब नहीं रह सकता। हज़रत मूसा और उनकी क़ौम को ख़ुदा ने मिस्र की बादशाहत दी और फ़िरऔन जिस बात से डर रहा था वह सामने आ गयी और तबाह व बरबाद हुआ। वाक़ई तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ
فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا
تَخَافِىْ وَلَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ
وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ
فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ
فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا
خٰطِئِيْنَ ۝ وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ
عَيْنٍ لِّىْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ
يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۝

और (जब मूसा पैदा हुए तो) हमने मूसा की वालिदा को इल्हाम किया कि तुम उनको दूध पिलाओ। फिर जब तुम उनके बारे में (जासूसों के ख़बर पाने का) अन्देशा हो तो (बिना किसी डर और ख़तरे के) उनको (नील) दरिया में डाल देना। और न तो (डूब जाने का) अन्देशा करना और न (जुदाई पर) ग़म करना, (क्योंकि) हम ज़रूर उनको फिर तुम्हारे ही पास वापस पहुँचा देंगे और (फिर अपने वक़्त पर) उनको पैग़म्बर बना देंगे। (7) तो फ़िरऔन के लोगों ने मूसा को (यानी मय सन्दूक़ के) उठा लिया, ताकि वह उन लोगों के लिए दुश्मन और ग़म का सबब बनें। बिला शुब्हा फ़िरऔन और हामान और उनके पैरोकार (इस बारे में) बहुत चूके। (8) और फ़िरऔन की बीवी (हज़रत आसिया) ने (फ़िरऔन से) कहा कि यह (बच्चा) मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है, इसको क़त्ल मत करो, अजब नहीं कि (बड़ा होकर) हमको कुछ फ़ायदा पहुँचाए या हम इसको अपना बेटा ही बना लें, और उन लोगों को (अन्जाम की) ख़बर न थी। (9)

Mahtab Ashraf

मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔन का घर

नक़ल है कि जब बनी इस्राईल के हज़ारों बच्चे क़त्ल हो चुके तो क़िब्तियों को अन्देशा हुआ कि अगर बनी इस्राईल ख़त्म हो गये तो जितने ज़लील (घटिया और गिरे हुए) काम और बेहूदा ख़िदमतें हुकूमत उनसे ले रही है कहीं हमसे न लेने लगे, तो दरबार में मीटिंग हुई और यह राय क़रार पाई कि एक साल मार डाले जायें और दूसरे साल क़त्ल न किये जायें। हज़रत हारून उस साल पैदा हुए जिस साल बच्चों को क़त्ल न किया जाता था, लेकिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उस साल पैदा होते हैं जिस साल बनी इस्राईल के लड़के आ़म तौर पर तलवार की भेंट चढ़ रहे थे। औ़रतें गश्त करती रहती थीं और हामिला (गर्भवती) औ़रतों की निगरानी रखती थीं, उनके नाम लिख लिये जाते थे। पैदाईश के वक़्त ये औ़रतें पहुँच जाती थीं, अगर लड़की हुई है तो वापस चली जाती थीं और अगर लड़का हुआ है तो फ़ौरन जल्लादों को ख़बर कर देती थीं। ये लोग तेज़ छुरे लिये हुए उसी वक़्त आ जाते और माँ-बाप के सामने उनके बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करके चले जाते थे।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा को जब आपका हमल (गर्भ) ठहरा तो आ़म हमल की तरह वह ज़ाहिर न हुआ और जो औ़रतें इस तफ़्तीश पर मामूर थीं और जितनी दाईयाँ आती थीं किसी को हमल का पता ही न चला। यहाँ तक कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पैदा भी हो गये, आपकी वालिदा को अब सख़्त घबराहट हुई और हर वक़्त डरी-सहमी रहने लगीं और अपने इस बच्चे से मुहब्बत भी इतनी थी कि किसी माँ को अपने बच्चे से उतनी नहीं हुई होगी। एक माँ पर ही क्या मौक़ूफ़ है ख़ुदा तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का चेहरा ऐसा ही बनाया था कि जिसकी नज़र उन पर पड़ जाती थी उसके दिल में उनकी मुहब्बत बैठ जाती थी। जैसे अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّىْ.

मैंने अपने पास की मुहब्बत तुझ में डाल दी थी।

पस जबकि हज़रत मूसा की वालिदा हर वक़्त परेशान, डरी और ग़मगीन रहने लगीं तो ख़ुदा ने उनके दिल में ख़्याल डाला कि इसे दूध पिलाती रहे और ख़ौफ़ के मौक़े पर इन्हें दरिया-ए-नील में बहा दे, जिसके किनारे पर ही आपका मकान था। चुनाँचे यही किया कि एक सन्दूक़ बना लिया, उसमें हज़रत मूसा को रख दिया। दूध पिला दिया करती थीं और उसमें सुला देतीं। जहाँ कोई ऐसा ख़तरनाक मौक़ा आया उस सन्दूक़ को दरिया में छोड़ देतीं और एक डोरी से उसे बाँधकर रखा था। ख़ौफ़ (ख़तरे और डर) के टल जाने के बाद उसे खींच लेतीं।

एक मर्तबा एक ऐसा शख़्स घर में आने लगा जिससे आपकी वालिदा को बहुत घबराहट हुई, दौड़ उठीं और बच्चे को सन्दूक़ में लिटाकर दरिया में बहा दिया और जल्दी और घबराहट में डोरी बाँधना भूल गईं। सन्दूक़ पानी की मौजों के साथ तेज़ी से बहने लगा और बहता-बहता फ़िरऔ़न के महल के पास से गुज़रा। महल की बाँदियों ने उसे उठा लिया और फ़िरऔ़न की बीवी के पास ले गईं। रास्ते में उन्होंने उसे डर के मारे खोला न था कि ऐसा न हो कोई तोहमत उन पर लग जाये। जब फ़िरऔ़न की बीवी के पास उसे खोला गया तो देखा कि उसमें एक बहुत ही ख़ूबसूरत नूरानी चेहरे वाला सही सालिम बच्चा लेटा हुआ है, जिसे देखते ही उनका दिल मुहब्बत व शफ़क़त से भर गया और उस बच्चे की प्यारी शक्ल दिल में उतर

गई। इसमें भी रब तआ़ला की मस्लेहत थी कि फ़िरऔ़न की बीवी को सही रास्ता (यानी अल्लाह के दीन का) दिखाये और फ़िरऔ़न के सामने उसका डर लाये और उसके ग़ुरूर को चकनाचूर करे।

फ़रमाता है कि आले फ़िरऔ़न! ने उस सन्दूक़ को उठा लिया और आख़िरकार वह उनकी दुश्मनी और उनके रंज व मलाल का कारण बना। मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं 'लियकू-न' का लाम 'लामे आ़क़िबत' है 'लामे तालील' नहीं। इसलिये कि इसका इरादा न था। बज़ाहिर यह ठीक भी मालूम होता है लेकिन मायने को देखते हुए 'लाम' को 'तालील' समझने में कोई हर्ज नज़र नहीं आता, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सन्दूक़ का उठाने वाला इसलिये ही बनाया था कि ख़ुदा इसे उनके लिये दुश्मन बना दे और उनके रंज व ग़म का कारण बनाये। बल्कि इसमें एक लुत्फ़ यह भी है कि जिससे वे (फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम) बचना चाहते थे वही उन पर मुसल्लत किया गया। इसी लिये इसके बाद ही फ़रमाया गया कि फ़िरऔ़न व हामान और उनके साथी ग़लती पर थे।

रिवायत में है कि हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. ने 'फ़िर्क़ा क़दरिया' के लोगों को जो कि तक़दीर के मुन्किर हैं, एक ख़त में लिखा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के साबिक़ इल्म में फ़िरऔ़न के दुश्मन और उसके लिये रंज व ग़म का सबब थे जैसे कि क़ुरआन की इस आयत से साबित है, लेकिन तुम कहते हो कि अगर फ़िरऔ़न चाहता तो मूसा उसके मददगार और दोस्त होते।

फिर फ़रमाता है कि उस बच्चे को देखते ही फ़िरऔ़न परेशान हुआ, ऐसा न हो कि किसी इस्राईली औ़रत ने इसे फेंक दिया हो और कहीं यह वही न हो जिसके फ़ना करने के लिये हज़ारों बच्चों को फ़ना कर चुका हूँ। यह सोचकर उसने उन्हें भी क़त्ल करना चाहा, लेकिन उसकी बीवी हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उसकी सिफ़ारिश की और कहा कि मुम्किन है यह बच्चा हमारी आँखों की ठंडक साबित हो। फ़िरऔ़न ने जवाब दिया कि तेरी आँखों की ठंडक हो तो हो लेकिन मुझे तो आँखों की ठंडक की ज़रूरत नहीं। ख़ुदा की शान देखिये यही हुआ, हज़रत आसिया रज़ि. को ख़ुदा ने अपना दीन नसीब फ़रमाया और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वजह से उन्होंने हिदायत पाई और उस घमंडी को ख़ुदा ने अपने नबी के हाथों हलाक किया।

नसाई वग़ैरह के हवाले से सूरः तॉ-हा की तफ़सीर में हदीसे फ़ुतून में यह क़िस्सा पूरा बयान हो चुका है। हज़रत आसिया फ़रमाती हैं कि शायद यह हमें नफ़ा पहुँचाये। उनकी उम्मीद ख़ुदा ने पूरी फ़रमाई। दुनिया में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उनकी हिदायत का ज़रिया बने और आख़िरत में जन्नत में जाने का। और कहती हैं यह भी हो सकता है कि हम इसे अपना बच्चा बना लें। उनके कोई औलाद न थी तो चाहा कि हज़रत मूसा को मुँह बोला बेटा बना लें। उनमें से किसी को शऊर न था कि क़ुदरत किस तरह पोशीदा पोशीदा (ख़ामोशी से) अपना इरादा पूरा कर रही है।

और (उधर यह क़िस्सा हुआ कि) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की वालिदा का दिल (अनेक ख़्यालों के आने से) बेक़रार हो गया, क़रीब था कि वह मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का हाल सबपर ज़ाहिर कर देतीं, अगर हम उनके दिल को इस ग़र्ज़ से मज़बूत न किए रहें कि यह (हमारे	وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِىْ بِهٖ لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَتْ

Maktab E Ashraf

لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ○ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ○ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ع

لربع ۱ ع۴

वायदे पर) यक़ीन किए (बैठी) रहें। (10) उन्होंने मूसा की बहन (यानी अपनी बेटी) से कहा कि ज़रा मूसा का सुराग़ तो लगा, सो उन्होंने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को दूर से देखा और उन लोगों को (यह) ख़बर न थी (कि यह उनकी बहन हैं और इस फ़िक्र में आई हैं)। (11) और हमने पहले ही से मूसा (हज़रत अ़लैहिस्सलाम) पर दूध पिलाने वालियों की बन्दिश कर रखी थी, सो वह (इस मौक़े को देखकर) कहने लगीं, क्या मैं तुम लोगों को किसी ऐसे घराने का पता बता दूँ जो तुम्हारे लिए इस बच्चे की परवरिश करें, और वे दिल से इसकी ख़ैरख़्वाही करें। (12) ग़र्ज़ कि हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी वालिदा के पास (अपने वायदे के मुवाफ़िक़) वापस पहुँचा दिया, ताकि उनकी आँखें ठंडी हों और ताकि (जुदाई के) ग़म में न रहें, और ताकि इस बात को जान लें कि अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा (होता) है, लेकिन (अफ़सोस की बात है कि) अक्सर लोग (इसका) यक़ीन नहीं रखते। (13)

माँ की मुहब्बत जोश में

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा (माँ) ने जब आपको सन्दूक़चे में डालकर फ़िरऔ़नियों के ख़ौफ़ की वजह से दरिया में बहा दिया और बहुत परेशान हुई और सिवाय ख़ुदा के सच्चे रसूल और अपने जिगर के टुकड़े हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के आपको किसी और चीज़ का ख़्याल ही न रहा, सब्र व सुकून जाता रहा, दिल में सिवाय हज़रत मूसा की याद के और कोई ख़्याल ही न आता था। अगर ख़ुदा की तरफ़ से उनकी दिलजोई और तसल्ली न कर दी जाती तो वह बेसब्री में राज़ फ़ाश कर देतीं। लोगों से कह देतीं कि इस तरह मेरा बच्चा ज़ाया हो गया। लेकिन ख़ुदा ने उनका दिल ठहरा दिया, ढारस और तस्कीन दे दी और उन्हें पूरा यक़ीन करा दिया कि तेरा बच्चा तुझे ज़रूर मिल जायेगा। मूसा अ़लैहिस्सलाम की माँ ने अपनी बड़ी बच्ची से जो ज़रा समझदार थीं फ़रमाया कि बेटी तुम उस सन्दूक़ पर नज़र जमाकर किनारे-किनारे चली जाओ, देखो क्या अन्जाम होता है? मुझे भी ख़बर करना। यह उसे दूर-दूर से देखती हुई चलीं, लेकिन इस अन्दाज़ से कि कोई और न समझ सके कि यह उनका ख़्याल रखती हुई उनके साथ-साथ जा रही हैं। फ़िरऔ़न के महल तक पहुँचते हुए और वहाँ से उसकी बाँदियों को उठाते हुए उनकी बहन ने देखा फिर वहीं बाहर खड़ी रह गईं कि शायद कुछ मालूम हो सके कि अन्दर क्या हो रहा है। वहाँ यह हुआ कि जब हज़रत

Maktab-e-Ashraf

आसिया ने फ़िरऔन को उसके ख़ूनी इरादे से बाज़ रखा और बच्चे को अपनी परवरिश में ले लिया तो शाही महल में जितनी दाईयाँ थीं सब को बच्चा दिया गया, हर एक ने बड़ी मुहब्बत से उन्हें दूध पिलाना चाहा लेकिन अल्लाह के हुक्म से हज़रत मूसा ने किसी के दूध का एक घूँट भी न पिया। आख़िर अपनी बाँदियों के हाथ बाहर भेजा कि बाहर किसी दाया को तलाश करो और जिसका दूध यह पिये उसे ले आओ। चूँकि रब्बुल-आलमीन को यह मन्ज़ूर न था कि उसका नबी अपनी वालिदा के सिवा और किसी का दूध पिये और इसमें सबसे बड़ी मस्लेहत यह थी कि इस बहाने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अपनी माँ तक पहुँच जायें। बाँदियाँ और ख़ादिमायें जब आपको लेकर बाहर निकलीं तो आपकी बहन साहिबा ने पहचान लिया, लेकिन उन पर ज़ाहिर न किया और न उन्हें ख़ुद कोई पता चल सका। आपकी वालिदा अगरचे पहले बहुत परेशान थीं लेकिन इसके बाद ख़ुदा ने उन्हें सब्र व सुकून दे दिया था और वह ख़ामोश और मुत्मईन थीं। बहन ने उन्हें कहा कि तुम इस क़द्र परेशान क्यों हो? उन्होंने कहा यह बच्चा किसी दाई का दूध नहीं पीता, हम इसके लिये किसी और दाई की तलाश में हैं। यह सुनकर हज़रत मूसा की बहन ने फ़रमाया कि अगर तुम कहो तो मैं एक दाई का पता दूँ? मुम्किन है यह बच्चा उनका दूध पी ले, वह इसकी परवरिश करें और इसकी हमदर्दी करें। यह सुनकर उन्हें कुछ शक गुज़रा कि यह लड़की इस लड़के की असलियत से और इसके माँ-बाप से वाक़िफ़ है, इसे गिरफ़्तार कर लिया और इससे पूछा कि तुझे क्या मालूम कि वह औरत इसकी परवरिश और ख़ैरख़्वाही (हमदर्दी) करेगी? उसने फ़ौरन जवाब दिया- सुब्हानल्लाह! कौन न चाहेगा शाही दरबार में उसकी इज़्ज़त हो, इनाम व सम्मान की ख़ातिर कौन इस बच्चे से हमदर्दी न करेगा? उनकी समझ में भी आ गया कि हमारा पहला गुमान ग़लत था, यह तो ठीक कह रही है। इसे छोड़ दिया और कहा अच्छा चल उसका मकान दिखा। यह उन्हें लेकर अपने घर आई अपनी वालिदा की तरफ़ इशारा करके कहा इन्हें दीजिये। सरकारी आदमियों ने उन्हें दिया तो बच्चा उनका दूध पीने लगा। फ़ौरन यह ख़बर हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को दी गई इसे सुनकर आप बहुत ख़ुश हुईं, उन्हें अपने महल में बुलाया और बहुत कुछ इनाम व इकराम दिया, लेकिन यह इल्म न था कि वास्तव में यही इस बच्चे की वालिदा (माँ) हैं। सिर्फ़ इस वजह से कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनका दूध पिया था वह उनसे ख़ुश हुईं।

कुछ दिनों तक यूँ ही काम चलता रहा आख़िरकार एक दिन हज़रत आसिया ने फ़रमाया मेरी ख़ुशी है कि तुम महल में ही आ जाओ, यहीं रहो सहो और इसे दूध पिलाती रहो। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की माँ ने जवाब दिया कि यह तो मुझसे नहीं हो सकता, मैं बाल बच्चों वाली हूँ मेरे मियाँ भी हैं। मैं इन्हें अपने घर दूध पिला दिया करूँगी, फिर आपके यहाँ भेज दिया करूँगी। यही तय हुआ और इसी पर फ़िरऔन की बीवी भी रज़ामन्द हो गईं। हज़रत मूसा की माँ का ख़ौफ़ अमन से, फ़क़ीरी अमीरी से, भूख ख़ुशहाली से, ज़िल्लत इज़्ज़त से बदल गई। रोज़ाना इनाम व इकराम पातीं, खाना कपड़ा शाही तरीक़े पर मिलता और अपने प्यारे बच्चे को अपनी गोद में पालतीं। एक ही रात या एक दिन, या एक रात एक दिन के बाद ही ख़ुदा ने उसकी मुसीबत को राहत से बदल दिया।

हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स अपना काम-धंधा करे और उसमें अल्लाह का ख़ौफ़ और मेरी सुन्नतों का लिहाज़ करे उसकी मिसाल हज़रत मूसा की माँ के जैसी है कि अपने ही बच्चे को दूध पिलाये और उजरत भी ले। अल्लाह की ज़ात पाक है उसी के हाथ में तमाम काम हैं, उसी का चाहा हुआ होता है और जिस काम को वह न चाहे हरगिज़ नहीं होता। यक़ीनन वह हर उस शख़्स की मदद करता है जो उस पर तवक्कुल (भरोसा और यक़ीन) करे, अपनी फ़रमाँबरदारी करने वाले का मददगार वही है, वह अपने नेक

बन्दों के आड़े वक़्त काम आता है, उनकी तकलीफ़ों को टालता है और उनकी तंगी फ़राख़ी से बदलता है और हर रंज के बाद राहत अ़ता फ़रमाता है। पस पाक और अ़ज़ीम है उसकी शान।

फिर फ़रमाता है कि हमने उसे उसकी माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि उसकी आँखें ठंडी रहें और उसे अपने बच्चे का सदमा न रहे और वह ख़ुदा के वायदों को भी सच्चा समझे और यक़ीन मान ले कि वह ज़रूर नबी और रसूल भी होने वाला है। अब आपकी वालिदा इत्मीनान से आपकी परवरिश में मशग़ूल हो गईं और इसी तरह परवरिश की जिस तरह एक बुलन्द दर्जे वाले पैग़म्बर की होनी चाहिये। हाँ रब की हिक्मतें बेइल्मों की निगाह से ओझल रहती हैं, वे ख़ुदा की हिक्मतों के कारणों को और फ़रमाँबरदारी के नेक अन्जाम को नहीं सोचते। ज़ाहिरी नफ़े नुक़सान में उलझे रहते हैं और दुनिया पर इतराते रहते हैं। उन्हें यह नहीं जचता कि मुम्किन है कि जिसे वह बुरा समझ रहे हैं वह अच्छा हो, और बहुत मुम्किन है कि जिसे वे अच्छा समझ रहे हैं वह बुरा हो। एक काम को बुरा जानते हों मगर क्या ख़बर कि उसमें क़ुदरत ने क्या फ़ायदे छुपाकर रखे हैं।

और जब (परवरिश पाकर) अपनी भरी जवानी (की उम्र) को पहुँचे और (जिस्मानी और अ़क़्ली ताक़त से) दुरुस्त हो गए हमने उनको हिक्मत और इल्म अ़ता फ़रमाया, और हम नेक काम करने वालों को इसी तरह सिला दिया करते हैं (यानी नेक अ़मल से इल्मी फ़ैज़ में तरक़्क़ी होती है)। (14) और मूसा शहर में (यानी मिस्र में कहीं बाहर से) ऐसे वक़्त पहुँचे कि वहाँ के (अक्सर) निवासी बेख़बर (पड़े सो रहे) थे, तो उन्होंने वहाँ दो आदमियों को लड़ते देखा, एक तो उनकी बिरादरी में का था और दूसरा उनके मुख़ालिफ़ों में से था। सो वह जो उनकी बिरादरी का था उसने मूसा से उसके मुक़ाबले में जो उनके मुख़ालिफ़ों में से था मदद चाही, तो मूसा ने उसको (एक) घूँसा मारा, सो उसका काम ही तमाम कर दिया। मूसा कहने लगे कि यह तो शैतानी हरकत हो गई। बेशक शैतान (भी आदमी का) खुला दुश्मन है (ग़लती में डाल देता है)। (15) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझसे क़ुसूर हो गया है, आप माफ़ फ़रमा दीजिए, सो अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमा दिया। बिला-शुब्हा वह बड़ा माफ़ करने	وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ○ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۡ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۡ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ○ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ

Maktab E Ashraf

فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۗ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ
الرَّحِيمُ ○ قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ
فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِّلْمُجْرِمِينَ ○

वाला, रहमत करने वाला है। (16) मूसा ने (यह भी) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! चूँकि आपने मुझ पर बड़े-बड़े इनामात फ़रमाए हैं, सो कभी मैं मुजरिमों की मदद न करूँगा। (17)

एक नागवार वाक़िआ और हज़रत मूसा का मिस्र को छोड़ना

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के लड़कपन का ज़िक्र करके अब उनकी जवानी का वाक़िआ बयान हो रहा है कि अल्लाह ने उन्हें हिक्मत व इल्म अ़ता फ़रमाया, यानी नुबुव्वत दी। नेकी के रास्ते पर चलने वाले ऐसा ही बदला पाते हैं। फिर उस वाक़िए का ज़िक्र हो रहा है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मिस्र छोड़ने का कारण बना और जिसके बाद ख़ुदा की रहमत ने उनका रुख़ किया। यह मिस्र छोड़कर मद्यन की तरफ़ चल दिये। आप एक मर्तबा शहर में आते हैं या तो मग़रिब के बाद या ज़ोहर के वक़्त कि लोग खाने पीने या सोने में मशग़ूल हैं, रास्ते ज़्यादा नहीं चल रहे। तो देखते हैं कि दो शख़्स लड़-झगड़ रहे हैं, एक इस्राईली है दूसरा क़िब्ती है। इस्राईली ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से क़िब्ती की शिकायत की और उसका ज़ोर व ज़ुल्म बयान किया, जिस पर आपको ग़ुस्सा आ गया और एक घूँसा उसे खींच मारा, जिससे वह उसी वक़्त मर गया। हज़रत मूसा घबरा गये और कहने लगे यह तो शैतानी काम है और शैतान दुश्मन और गुमराह है और उसका गुमराह करने वाला होना भी ज़ाहिर है। फिर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी तलब करने लगे और इस्तिग़फ़ार करने लगे। ख़ुदा ने उन्हें बख़्श दिया। वह बख़्शने वाला मेहरबान है ही। अब कहने लगे ख़ुदाया तूने जो रुतबा व इज़्ज़त, बुज़ुर्गी और नेमत मुझे अ़ता फ़रमाई है मैं उसे सामने रखकर वायदा करता हूँ कि आईन्दा कभी नाफ़रमान की किसी मामले में मुवाफ़क़त और मदद नहीं करूँगा।

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا
الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ ۚ
قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ○ فَلَمَّا
أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ
لَّهُمَا ۙ قَالَ يَا مُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي
كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۖ إِنْ تُرِيدُ
إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا
تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ○

फिर मूसा को शहर में सुबह हुई ख़ौफ़ और घबराहट की हालत में कि अचानक (देखते क्या हैं कि) वही शख़्स जिसने गुज़री कल इमदाद चाही थी वह फिर उनको मदद के लिए पुकार रहा है। मूसा (अ़लैहिस्सलाम) उससे फ़रमाने लगे बेशक तू खुला बुरे रास्ते वाला (आदमी) है। (18) सो जब मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उस पर हाथ बढ़ाया जो उन दोनों का मुख़ालिफ़ था, वह इस्राईली कहने लगा ऐ मूसा! क्या (आज) मुझको क़त्ल करना चाहते हो जैसा कि कल एक आदमी को क़त्ल कर चुके हो। (मालूम होता है कि) बस तुम दुनिया में अपना ज़ोर बिठलाना चाहते हो और सुलह (और मिलाप) करवाना नहीं चाहते। (19)

Mahtab E Ashraf

राज़ का खुल जाना

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के घूँसे से क़िब्ती मर गया इसलिये आपकी तबीयत पर घबराहट थी, शहर में डरते सहमते आये कि देखें क्या बातें हो रही हैं, कहीं राज़ तो नहीं खुल गया? देखते हैं कि कल वाला इस्राईली आज फिर एक क़िब्ती से लड़ रहा है। आपको देखते ही कल की तरह आज भी उसने फ़रियाद की और दुहाई देने लगा। आपने फ़रमाया तुम बड़े शर्री आदमी हो, यह सुनते ही वह घबरा गया। जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उस ज़ालिम क़िब्ती को रोकने के लिये उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाना चाहा तो यह शख़्स अपने कमीनेपन और बुज़दिली से समझ बैठा कि आपने मुझे बुरा कहा है और मुझे पकड़ना चाहते हैं। अपनी जान बचाने के लिये शोर मचाना शुरू कर दिया कि मूसा क्या जैसे तूने कल एक शख़्स का ख़ून किया आज मेरी जान लेना चाहता है? कल का वाक़िआ़ सिर्फ़ उसी की मौजूदगी में हुआ था इसलिये किसी को पता न चला था, लेकिन आज उसकी ज़बान से उस क़िब्ती को पता चल गया कि यह काम मूसा का है। उस बुज़दिल डरपोक ने यह भी साथ ही कहा कि तू तो ज़मीन पर सरकश बनकर रहना चाहता है और तेरी तबीयत में ही इस्लाह (भलाई और सुधार का माद्दा) नहीं। क़िब्ती यह सुनकर भागा दौड़ा दरबारे फ़िरऔ़न में पहुँचा और वहाँ मुख़बिरी की। फ़िरऔ़न की बदगुमानी और नाराज़गी की अब कोई हद न रही और फ़ौरन सिपाही दौड़ाये कि मूसा को लाकर पेश करें।

और (उस मजमे में) एक शख़्स शहर के (उस) किनारे से (जहाँ यह मश्विरा हो रहा था) दौड़े हुए आए (और) कहने लगे कि ऐ मूसा! दरबार वाले आपके मुताल्लिक़ मश्विरा कर रहे हैं कि आपको क़त्ल कर दें। सो आप (यहाँ से) चल दीजिए। मैं आपकी ख़ैरख़्वाही कर रहा हूँ। (20)	وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ز قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ○

एक ईमान वाले शख़्स की हमदर्दी

उस आने वाले को 'रिज्ल' कहा गया है। रिज्ल कहते हैं पैरों को। उसने जब देखा कि सिपाही हज़रत मूसा का पीछा करने जा रहे हैं तो यह अपने पैरों पर तेज़ी से दौड़ा और एक क़रीब के रास्ते से निकल कर झट से आपको इत्तिला दे दी कि यहाँ के सरदार और हाकिम आपके क़त्ल का इरादा कर चुके हैं, आप शहर छोड़ दीजिये। मैं आपका ख़ैरख़्वाह (भला चाहने वाला और हमदर्द) हूँ। मेरी मान लीजिये।

पस (यह सुनकर) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) वहाँ से (किसी तरफ़ को) निकल गए ख़ौफ़ और घबराहट की हालत में, (और चूँकि रास्ता मालूम न था, दुआ़ के तौर पर) कहने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको इन ज़ालिम लोगों से बचा लीजिए। (21)	فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ز قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○ ع وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِىْ ٢ ع ٨ ٥

سَوَآءَ السَّبِيْلِ○ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ
وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬
وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ
قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى
يُصْدِرَ الرِّعَآءُ سكتة وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ○
فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ
رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ○

और जब मूसा (अ़लैहि.) मद्यन की तरफ़ हो लिए, कहने लगे कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (किसी अमन की जगह का) सीधा रास्ता चलाएगा। (चुनाँचे ऐसा ही हुआ और मद्यन जा पहुँचे)। (22) और जब मद्यन के पानी (यानी कुँए) पर पहुँचे तो उस पर (विभिन्न) आदमियों का एक मजमा देखा जो पानी पिला रहे थे। और उन लोगों से एक तरफ़ (अलग) को दो औरतें देखीं कि वे (अपनी बकरियाँ) रोके खड़ी हैं। मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने (उनसे) पूछा तुम्हारा क्या मतलब है? वे दोनों बोलीं कि (हमारा मामूल यह है कि) हम (अपने जानवरों को) उस वक़्त तक पानी नहीं पिलाते जब तक ये चरवाहे पानी पिलाकर (जानवरों को) हटाकर न ले जाएँ, और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं। (23) पस (यह सुनकर) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उनके लिए पानी (खींचकर उनके जानवरों को) पिलाया फिर (वहाँ से) हटकर साये में जा बैठे, फिर (अल्लाह से) दुआ़ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! (इस वक़्त) जो नेमत भी आप मुझको भेज दें मैं उसका (सख़्त) ज़रूरतमन्द हूँ। (24)

मोमिन का सफ़र

फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के इरादे जब उस शख़्स की ज़बानी आपको मालूम हो गये तो आप वहाँ से निकल खड़े हुए। चूँकि इससे पहले ज़िन्दगी में आपके दिन शहज़ादों की तरह गुज़रे थे सो बहुत कड़ा मालूम हुआ, लेकिन ख़ौफ़ व घबराहट के साथ इधर-उधर देखते सीधे चले जा रहे थे और ख़ुदा तआ़ला से दुआ़यें माँगते जा रहे थे कि ख़ुदाया मुझे इन ज़ालिमों से यानी फ़िरऔ़नियों से निजात दे। नक़ल है कि ख़ुदा तआ़ला ने आपकी रहबरी के वास्ते एक फ़रिश्ता भेजा था जो घोड़े पर आपके पास आया और आपको रास्ता दिखा गया। वल्लाहु आलम।

थोड़ी देर में आप जंगलों और बयाबानों से निकलकर मद्यन के रास्ते पर पहुँच गये तो ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे मुझे ज़ाते बारी से उम्मीद है कि वह सही रास्ते पर ही ले जायेगा। अल्लाह ने आपकी उम्मीद भी पूरी की और दुनिया व आख़िरत की सीधी राह न सिर्फ़ बतलाई बल्कि औरों को भी सीधी राह बताने वाला बनाया। मद्यन के पास कुएँ पर आये तो देखा कि चरवाहे पानी खींच-खींचकर अपने-अपने जानवरों को पिला रहे हैं। वहीं आपने यह भी मुलाहिज़ा फ़रमाया कि दो लड़कियाँ अपनी बकरियों को उन जानवरों

Muktaba E Ashraf

के साथ पानी पीने से रोक रही हैं, तो आपको उन बकरियों और उन लड़कियों की हालत पर कि ये बेचारियाँ पानी निकाल कर पिला नहीं सकतीं और इन चरवाहों में से कोई इसका रवादार नहीं कि अपने खींचे हुए पानी में से इनकी बकरियों को भी पिला दे, आपको रहम आया। उनसे पूछा कि तुम अपने जानवरों को इस पानी से क्यों रोक रही हो? उन्होंने जवाब दिया कि हम तो पानी निकाल नहीं सकते, जब ये अपने जानवरों को पानी पिलाकर चले जायेंगे तो बचा-खुचा पानी हम अपनी बकरियों को पिला देंगे। हमारे वालिद साहिब हैं लेकिन वह बहुत ही बूढ़े हैं।

इस पर आपने ख़ुद ही उन जानवरों को पानी खींचकर पिला दिया। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. फ़रमाते हैं कि उस कुएँ के मुँह को उन चरवाहों ने एक बड़े पत्थर से बन्द कर दिया था, जिस चट्टान को दस आदमी मिलकर सरका सकते थे, आपने बिल्कुल अकेले उस पत्थर को हटा दिया और एक ही डोल निकाला था जिसमें ख़ुदा ने बरकत दी और उन दोनों लड़कियों की बकरियाँ सैर हो गईं। अब आप थके हारे भूखे प्यासे एक पेड़ के साये के नीचे बैठ गये।

मिस्र से मदयन तक पैदल भागे दौड़े आये थे, पैरों में छाले पड़ गये थे, खाने को कुछ पास था नहीं, दरख़्तों के पत्ते और घास फूँस खाते रहे थे। पेट पीठ से लग रहा था और घास का सब्ज़ रंग बाहर से नज़र आ रहा था, आधी खजूर से भी उस वक़्त आप तरसे हुए थे। हालाँकि उस वक़्त सारी मख़्लूक़ से ज़्यादा बरगुज़िदा (मक़बूल और पसन्दीदा) ख़ुदा के नज़दीक आप थे।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि दो रात का सफ़र करके मैं मदयन गया और वहाँ के लोगों से उस दरख़्त का पता पूछा जिसके नीचे अल्लाह के कलीम ने आराम किया था। लोगों ने एक दरख़्त की तरफ़ इशारा किया, मैंने देखा कि वह एक सरसब्ज़ (हरा-भरा) दरख़्त है। मेरा जानवर भूखा था, उसने उस में मुँह डाला, पत्ते मुँह में लेकर बड़ी देर तक बड़ी दिक़्क़त के साथ चबाता रहा लेकिन आख़िर उसने निकाल डाले। मैंने हज़रत मूसा के लिये दुआ की और वहाँ से वापस लौट आया।

एक और रिवायत में है कि आप उस दरख़्त को देखने गये थे जिससे ख़ुदा ने आपसे बातें की थीं, जैसा कि इसका बयान आगे आयेगा। इन्शा-अल्लाह तआ़ला। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि यह बबूल का दरख़्त था। ग़र्ज़ यह कि उस दरख़्त के नीचे बैठकर आपने ख़ुदा तआ़ला से दुआ़ की कि ऐ रब! मैं तेरे एहसानों का मोहताज हूँ। अ़ता रह. का क़ौल है कि उन लड़कियों ने भी आपकी दुआ़ सुनी।

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰهُمَا تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ز قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ط فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ لا قَالَ لَا تَخَفْ وقفة نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ٥ قَالَتْ	मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास एक लड़की आई कि शर्माती हुई चलती थी, (और आकर) कहने लगी कि मेरे वालिद तुमको बुलाते हैं, ताकि तुमको उसका सिला दें जो तुमने हमारी ख़ातिर (हमारे जानवरों को) पानी पिला दिया था। सो जब उनके पास पहुँचे और उनसे तमाम हाल बयान किया तो उन्होंने (तसल्ली दी और) कहा कि (अब) अन्देशा न करो तुम ज़ालिम लोगों से बच आए। (25) (फिर) एक लड़की ने कहा कि अब्बा जान! आप इनको नौकर रख

Mahtab E Ashraf

اِحْدٰهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ اِنَّ خَيْرَ مَنِ
اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ○ قَالَ اِنِّيْۤ
اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ
عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ
اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ
اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ
اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ○ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ
وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا
عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ
وَكِيْلٌ ○ع

लीजिए, क्योंकि अच्छा नौकर वह शख़्स है जो मज़बूत (हो और) अमानतदार (भी) हो। (26) वह (बुज़ुर्ग मूसा अ़लैहिस्सलाम से) कहने लगे कि मैं चाहता हूँ कि इन दोनों लड़कियों में से एक को तुम्हारे साथ ब्याह दूँ, इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी नौकरी करो, फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो यह तुम्हारी तरफ़ से (एहसान) है। और मैं (इस मामले में) तुम पर कोई मशक़्क़त डालना नहीं चाहता, (और) तुम मुझको इन्शा-अल्लाह तआ़ला अच्छे मामले वाला पाओगे। (27) मूसा (अ़लैहिस्सलाम रज़ामन्द हो गए और) कहने लगे कि (बस तो) यह बात मेरे और आपके दरमियान (पक्की) हो चुकी, मैं इन दो मुद्दतों में से जिस (मुद्दत) को पूरा कर दूँ, मुझ पर कोई जब्र न होगा, और हम जो (मामले की) बातचीत कर रहे हैं अल्लाह तआ़ला इसका गवाह (काफ़ी) है। (28)

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की पेशकश

उन दोनों बच्चियों की बकरियों को जबकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने पानी पिला दिया तो ये अपनी बकरियाँ लेकर वापस अपने घर गईं। बाप ने देखा कि आज वक़्त से पहले ये आ गई हैं तो मालूम किया कि आज क्या बात है? उन्होनें सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। आपने उसी वक़्त उन दोनों में से एक को भेजा कि जाओ उसे मेरे पास बुला लाओ। वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आई और जैसा कि पाकदामन औ़रतों का दस्तूर होता है, शर्म व हया से अपनी चादर में लिपटी हुई पर्दे के साथ चल रही थीं, मुँह भी चादर के किनारे से छुपाये हुए थीं। फिर इस समझदारी और सच्चाई को देखिये कि सिर्फ़ यही नहीं कहा कि मेरे अब्बा आपको बुला रहे हैं, क्योंकि इसमें शक व शुब्हे की बातों की गुन्जाईश थी, साफ़ कह दिया कि मेरे वालिद आपको मज़दूरी देने के लिये और उस एहसान का बदला उतारने के लिये बुला रहे हैं, जो आपने हमारी बकरियों को पानी पिलाकर हमारे साथ किया है।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को जो भूखे प्यासे, एक अजनबी मुसाफ़िर थे, यह मौक़ा ग़नीमत मालूम हुआ, यहाँ आकर उन्हें एक बुज़ुर्ग समझ कर उनके सवाल पर अपना सारा वाक़िआ़ बिना किसी कमी ज़्यादती के कह सुनाया। उन्होंने तसल्ली दी और फ़रमाया अब ख़ौफ़ क्या है? उन ज़ालिमों के हाथ से आप छूट आये। यहाँ उनकी हुकूमत नहीं। बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यह बुज़ुर्ग हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम थे जो मद्यन वालों की तरफ़ ख़ुदा के पैग़म्बर बनकर आये थे, यही मशहूर क़ौल है। इमाम हसन बसरी रह.

और बहुत से उलेमा यही फ़रमाते हैं। तबरानी की एक हदीस में है कि जब हज़रत सअ़द अ़नज़ी रज़ि. अपनी क़ौम की तरफ़ से ऐलची (दूत) बनकर रसूले करीम सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया कि शुऐब की क़ौम के आदमी को और मूसा की ससुराल वाले को मर्हबा हो कि तुम्हें हिदायत की गई। बाज़ कहते हैं कि यह हज़रत शुऐब के भतीजे थे। कोई कहता है कि क़ौमे शुऐब के एक मोमिन मर्द थे। बाज़ का क़ौल है कि शुऐब अ़लैहिस्सलाम का ज़माना तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने से बहुत पहले का है, उनका क़ौल क़ुरआन में अपनी क़ौम से यह नक़ल किया गया है:

وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ.

कि लूत की क़ौम तुमसे कुछ दूर नहीं।

और यह भी क़ुरआन से साबित है कि लूतियों की हलाकत हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में हुई थी, और यह भी बहुत ज़ाहिर है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बीच का ज़माना बहुत लम्बा ज़माना है, तक़रीबन चार सौ साल का, जैसा कि अक्सर इतिहासकारों का क़ौल है, हाँ बाज़ लोगों ने इस इश्काल का यह हल निकाला है कि हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की बड़ी लम्बी उम्र हुई थी, उनका मक़सद ग़ालिबन इस एतिराज़ से बचना है। वल्लाहु आलम।

एक और बात भी ख़्याल में रहे कि अगर यह बुज़ुर्ग हज़रत शुऐब ही होते तो चाहिये था कि क़ुरआन में इस मौक़े पर उनका नाम साफ़ ले दिया जाता। हाँ अलबत्ता बाज़ हदीसों में आया है कि यह हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम थे, लेकिन उन हदीसों की सनदें सही नहीं जैसा कि हम अभी आगे ज़िक्र करेंगे इन्शा-अल्लाह तआ़ला। बनी इस्राईल की किताबों में उनका नाम सेरून बतलाया गया है। वल्लाहु आलम।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के साहिबज़ादे फ़रमाते हैं कि सेरून हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम के भतीजे थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल है कि यह यस्रिबी थे। इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि यह बात उस वक़्त साबित होती जबकि इसके बारे में कोई ख़बर सही साबित होती और ऐसा है नहीं।

उनकी दोनों साहिबज़ादियों (बेटियों) में से एक बाप को तवज्जोह दिलाने वाली बेटी थीं जो आपको बुलाने के लिये गई थीं, कहा कि इन्हें आप हमारी बकरियों की चराई पर रख लीजिये, क्योंकि वही काम करने वाला अच्छा होता है जो क़वी (ताक़तवर) और अमानतदार हो। बाप ने पूछा बेटी तुमने कैसे जान लिया कि इनमें दोनों वस्फ़ (गुण) हैं? बच्ची ने जवाब दिया कि दस क़वी आदमी मिलकर जिस पत्थर को उस कुएँ से हटा सकते थे इन्होंने तन्हा उसे हटा दिया, इससे इनकी ताक़त का अन्दाज़ा आसानी से हो सकता है। इनकी ईमानदारी का इल्म मुझे इस तरह हुआ कि जब मैं इन्हें लेकर आपके पास आने लगी तो इसलिये कि रास्ते से नावाक़िफ़ थे मैं आगे हो ली, इन्होंने कहा नहीं! तुम मेरे पीछे रहो और जहाँ रास्ता बदलना हो उस तरफ़ कंकर फेंक देना मैं समझ लूँगा कि मुझे इस रास्ते पर चलना चाहिये।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि तीन शख़्सों जैसी अ़क़्लमन्दी, मामला फ़हमी, दानाई और दूर बीनी किसी और में नहीं पाई गई। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की दानाई, जबकि उन्होंने अपने बाद ख़िलाफ़त के लिये जनाब उमर रज़ि. को नामज़द किया। हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम के ख़रीदने वाले मिस्री, जिन्होंने पहली ही नज़र में हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम को पहचान लिया और जाकर अपनी बीवी साहिबा से फ़रमाया कि इन्हें अच्छी तरह रखो। और उस बुज़ुर्ग की साहिबज़ादी जिन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में अपने बाप से सिफ़ारिश की कि इन्हें अपने काम पर रख लीजिये।

यह सुनते ही उस बच्ची के बाप ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया कि अगर आप पसन्द फ़रमायें तो मैं इस मेहर पर इन दोनों बच्चियों में से एक का निकाह आपके साथ कर देता हूँ कि आप आठ साल तक हमारी बकरियाँ चरायें। उन दोनों का नाम सफ़ूरा और लय्या था, या सफ़ूरा और शरक़ा, या सफ़ूरा और लय्या। अस्हाबे अबी हनीफ़ा रह. ने इसी से इस्तिदलाल किया है कि जब कोई शख़्स इस तरह की बै करे कि इन दोनों गुलामों में ‹. एक को एक सौ के बदले फ़रोख़्त करता हूँ और ख़रीदार मन्ज़ूर कर ले तो यह बै साबित और सही है। वल्लाहु आलम।

उस बुज़ुर्ग ने कहा आठ साल तो ज़रूरी हैं हाँ उसके बाद के दो साल का आपको इख़्तियार है। अगर आप अपनी ख़ुशी से दो साल तक और भी मेरा काम करें तो अच्छा है, वरना आप पर लाज़िम नहीं। आप देखेंगे कि मैं बुरा आदमी नहीं, आपको तकलीफ़ न दूँगा। इमाम औज़ाई रह. ने इससे इस्तिदलाल करके फ़रमाया है कि अगर कोई कहे मैं फ़ुलाँ चीज़ को नक़द दस पर और उधार बीस पर बेचता हूँ तो बै सही है और ख़रीदार को इख़्तियार है कि दस पर नक़द या बीस पर उधार ले ले। वह इस हदीस का भी यही मतलब ले रहे हैं जिसमें है जो शख़्स दो बै एक बै में करे, उसके लिये कमी वाली बै है या सूद, लेकिन यह मज़हब ग़ौर-तलब है, जिसकी तफ़सील का यह मक़ाम नहीं। वल्लाहु आलम।

इमाम अहमद रह. और उनके साथियों ने इस आयत से इस्तिदलाल करके कहा है कि खाने पीने और कपड़े पर किसी को मज़दूरी और काम-काज पर लगा लेना दुरुस्त है। इसकी दलील में इब्ने माजा की एक हदीस भी है जो इस बात में है कि मज़दूर मुक़र्रर करना इस मज़दूरी पर कि वह पेट भरकर खाना खा लिया करेगा। इसमें हदीस लाये हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सूरः तॉ-सीन की तिलावत की। जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़िक्र तक पहुँचे तो फ़रमाने लगे- मूसा ने अपने पेट के भरने और अपनी शर्मगाह को बचाने के लिये आठ साल या दस साल के लिये ख़ुद को मुलाज़िम कर लिया। इस हदीस का एक रावी मुस्लिमा बिन अ़ली है जो ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। यह हदीस दूसरी सनद से भी मरवी है, लेकिन वह सनद भी एतिराज़ से ख़ाली नहीं।

हज़रत मूसा ने उन बुज़ुर्ग की इस शर्त को क़बूल कर लिया और फ़रमाया- हम तुम में यह तयशुदा फ़ैसला है, मुझे इख़्तियार होगा कि चाहे दस साल पूरे करूँ या आठ साल के बाद छोड़ दूँ। आठ साल के बाद आपका कोई हक़्क़े मज़दूरी मुझ पर लाज़िमी नहीं। हम अल्लाह तआ़ला को अपने इस मामले पर गवाह करते हैं, उसी की कारसाज़ी काफ़ी है। अगरचे दस साल पूरे करना जायज़ है लेकिन वह फ़ाज़िल (अतिरिक्त) चीज़ है, ज़रूरी नहीं। ज़रूरी आठ साल हैं जैसे मिना के आख़िरी दो दिन के बारे में ख़ुदा का हुक्म है और जैसे कि हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हमज़ा बिन अ़मर अस्लमी रज़ि. से फ़रमाया था जो ख़ूब ज़्यादा रोज़े रखा करते थे कि अगर तुम सफ़र में रोज़ा रखो तो तुम्हें इख़्तियार है और न रखो तो तुम्हें इख़्तियार है, इसके बावजूद कि दूसरी दलील है यानी रखना अफ़ज़ल है। चुनाँचे इसकी दलील भी आ चुकी है कि हज़रत मूसा ने दस साल ही पूरे किये।

बुख़ारी शरीफ़ में सईद बिन जुबैर से यहूदियों ने सवाल किया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने आठ साल पूरे किये या दस साल? तो आपने फ़रमाया मुझे ख़बर नहीं। फिर मैं अ़रब के बहुत बड़े आ़लिम हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के पास गया और उनसे यही सवाल किया तो आपने फ़रमाया इन दोनों में से जो ज़्यादा और पाक मुद्दत थी वही आपने पूरी की, यानी दस साल। अल्लाह के पैग़म्बर जो कहते हैं पूरा करते हैं।

Maktab E Ashraf

हदीसे फ़ुतून में है कि सवाल करने वाला ईसाई था, लेकिन बुख़ारी में जो है वही बेहतर है। वल्लाहु आलम।

इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से सवाल किया कि हज़रत मूसा ने कौनसी मुद्दत पूरी की थी? तो जवाब मिला कि इन दोनों में से जो कामिल और मुकम्मल मुद्दत थी। एक मुर्सल हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. से किसी ने यह पूछा, आपने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा, जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने और फ़रिश्ते से, यहाँ तक कि फ़रिश्ते ने अल्लाह तआ़ला से, अल्लाह तआ़ला ने जवाब दिया कि दोनों में से पाक और पूरी मुद्दत यानी दस साल। एक हदीस में है कि हज़रत अबूज़र रज़ि. के सवाल पर हुज़ूर सल्ल. ने दस साल की मुद्दत पूरी करना बतलाकर यह भी फ़रमाया कि अगर तुझसे पूछा जाये कि किस लड़की से हज़रत मूसा ने निकाह किया था तो जवाब देना कि दोनों में से जो छोटी थी।

एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने लम्बी मुद्दत को पूरा करना बतलाया। फिर फ़रमाया कि जब हज़रत मूसा हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से रुख़्सत लेकर जाने लगे तो अपनी बीवी साहिबा से फ़रमाया- अपने वालिद से कुछ बकरियाँ ले लो, जिनसे हमारा गुज़ारा हो जाये। आपने अपने वालिद से सवाल किया जिस पर उन्होंने वायदा किया कि इस साल जितनी चितकबरियाँ होंगी सब तुम्हारी हैं। हज़रत मूसा ने बकरियों के पेट पर अपनी लकड़ी फेरी तो हर एक को दो-दो तीन-तीन बच्चे हुए और सब के सब चितकबरे, जिनकी नस्ल अब तक भी तलाश करने से मिल सकती है। दूसरी रिवायत में है कि हज़रत शुऐब की सब बकरियाँ काले रंग की ख़ूबसूरत थीं। जितने बच्चे उनके उस साल हुए सब के सब बेऐब थे, और बड़े-बड़े भरे हुए थनों वाले और ज़्यादा दूध देने वाले। इन तमाम रिवायतों का मदार अ़ब्दुल्लाह बिन लहीआ़ पर है जो हाफ़िज़े (याददाश्त) के अच्छे नहीं, और डर है कि यह रिवायतें मरफ़ूअ़ न हों। चुनाँचे एक दूसरी सनद से यह अनस बिन मालिक से मौक़ूफ़न मरवी है और उसमें यह भी है कि सब बकरियों के बच्चे उस साल चितकबरे हुए सिवाय एक बकरी के, जिन सब को आप (हज़रत मूसा) ले गये।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖٓ
اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ
امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ
مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ
تَصْطَلُوْنَ ۝ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ
الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ
الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ لا وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا

ग़र्ज़ कि जब मूसा (अ़लैहिस्सलाम) उस मुद्दत को पूरा कर चुके और (हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की इजाज़त से) अपनी बीवी को लेकर (मिस्र को या मुल्क शाम को) रवाना हुए तो उनको तूर पहाड़ की तरफ़ से एक (रोशनी) आग (की शक्ल में) दिखलाई दी। उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि तुम (यहीं) ठहरे रहो, मैंने एक आग देखी है (मैं वहाँ जाता हूँ) शायद मैं तुम्हारे पास वहाँ से (रास्ते की कुछ) ख़बर लाऊँ या कोई आग का (दहकता हुआ) अंगारा ले आऊँ, ताकि तुम सेंको। (29) सो जब वह उस आग के पास पहुँचे तो उनको उस मैदान की दाहिनी ओर से (जो कि मूसा अ़लैहिस्सलाम की दाहिनी जानिब था) उस मुबारक मक़ाम में एक दरख़्त में से आवाज़ आई कि ऐ मूसा! मैं

Maktab-e-Ashraf

تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝	अल्लाह रब्बुल-आलमीन हूँ। (30) और यह (भी आवाज़ आई) कि तुम अपनी लाठी डाल दो, सो उन्होंने जब उसको लहराता हुआ देखा जैसा पतला साँप (तेज़) होता है, तो पीठ फेरकर भागे और पीछे मुड़कर भी न देखा। (हुक्म हुआ कि) ऐ मूसा! आगे आओ और डरो मत, तुम (हर तरह) अमन में हो। (31) तुम अपना हाथ गिरेबान के अन्दर डालो (और फिर निकालो) वह बिना किसी मर्ज़ के निहायत रोशन होकर निकलेगा। और ख़ौफ़ (दूर करने) के वास्ते अपना (वह) हाथ (फिर) अपने गिरेबान और (बग़ल) से (पहले की तरह) बदस्तूर मिला लेना, सो ये (तुम्हारी नुबुव्वत की) दो सनदें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास जाने के वास्ते, (जिसका तुमको हुक्म दिया जाता है) क्योंकि वे बड़े नाफ़रमान लोग हैं। (32)

नुबुव्वत मिलना और फ़िरऔन के दरबार में हक़ का ऐलान

पहले यह बयान किया जा चुका है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दस साल पूरे किये थे। क़ुरआन के इस लफ़्ज़ 'अल-अजल्' से भी इसी की तरफ़ इशारा है। वल्लाहु आलम। बल्कि हज़रत मुजाहिद रह. का तो क़ौल है कि दस साल और भी गुज़ारे। इस क़ौल में सिर्फ़ यही तन्हा हैं। वल्लाहु आलम।

अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को ख़्याल और शौक़ पैदा हुआ कि वतन जाऊँ और अपने परिजनों व रिश्तेदारों से मिल आऊँ। चुनाँचे आप अपनी बीवी और अपनी बकरियों को लेकर वहाँ से चले। रात को बारिश होने लगी, ठंडी हवायें चलने लगीं और सख़्त अंधेरा हो गया। आप हर चन्द चिराग़ जलाते थे मगर रोशनी नहीं होती थी। सख़्त ताज्जुब में और हैरान थे, इतने में देखते हैं कि कुछ दूर आग रोशन है। अपनी बीवी से फ़रमाया कि तुम यहाँ ठहरो वहाँ कुछ रोशनी दिखाई देती है, मैं वहाँ जाता हूँ अगर कोई वहाँ हुआ तो उससे रास्ता ही मालूम कर लूँगा इसलिये कि हम राह भूले हुए हैं, या मैं वहाँ से कुछ आग ले आऊँगा जिससे तुम ताप लो और जाड़े का कुछ समाधान हो जाये। जब आप वहाँ पहुँचे तो उस वादी की दायीं तरफ़ के पश्चिमी पहाड़ से आवाज़ सुनाई दी, जैसा कि क़ुरआन की एक दूसरी आयत में है:

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ........ الخ

(यह आयत आगे आ रही है, इसी सूरत की आयत 44)

इससे मालूम होता है कि हज़रत मूसा आग के इरादे से क़िब्ले की तरफ़ चले थे और पश्चिमी पहाड़

आपकी दायीं तरफ़ था, और एक सरसब्ज़ हरे-भरे पेड़ में आग नज़र आ रही थी जो पहाड़ के दामन में मैदान से मिला हुआ था। यह वहाँ जाकर इस हालत को देखकर हैरान रह गये कि हरे और सब्ज़ दरख़्त में से आग के शोले निकलते दिखाई देते हैं, लेकिन आग किसी चीज़ में जलती हुई नहीं दिखाई देती। उस वक़्त ख़ुदा की तरफ़ से आवाज़ आई।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने उस दरख़्त को जिसमें से हज़रत मूसा को आवाज़ आई थी देखा है, वह सरसब्ज़, हरा-भरा पेड़ है, जो चमक रहा है। बाज़ कहते हैं कि यह 'अ़लीक़' (जानवरों के घास) का पेड़ था। बाज़ कहते हैं कि वह 'ओ़सज' का दरख़्त था और आपकी लकड़ी भी उसी दरख़्त की थी। हज़रत मूसा ने सुना कि आवाज़ आ रही है- ऐ मूसा! मैं हूँ रब्बुल-आ़लमीन हूँ जो इस वक़्त तुझसे कलाम कर रहा हूँ। मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ। मेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, न मेरे सिवा कोई रब है, मैं इससे पाक हूँ कि कोई मुझ जैसा हो। मख़्लूक़ में से कोई भी मेरा शरीक नहीं। मैं यक्ता बेमिस्ल और वह्दहू ला शरीक हूँ। मेरी ज़ात, मेरी सिफ़ात, मेरे अफ़आ़ल, मेरे अक़्वाल में मेरा कोई शरीक साझी नहीं। मैं हर तरह से पाक और नुक़सान से दूर हूँ।

इसी आवाज़ में फ़रमान हुआ कि अपनी लकड़ी ज़मीन पर गिरा दो और मेरी क़ुदरत देख लो। एक दूसरी आयत में है कि पहले दरियाफ़्त किया गया कि ऐ मूसा! तुम्हारे दायें हाथ में क्या है? आपने जवाब दिया कि यह मेरी लकड़ी है, जिस पर मैं टेक लगाता हूँ और जिससे अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ लेता हूँ और दूसरे भी मेरे बहुत से काम इससे निकलते हैं। अब उस लकड़ी की हक़ीक़त आपकी ज़बान से कहलवाकर, लकड़ी को लकड़ी जचा कर फिर ज़मीन पर उन्हीं के हाथों फिंकवाई। वह ज़मीन पर गिरते ही एक फनफनाता हुआ अज़्दहा बनकर इधर-उधर फ़रार्टे भरने लगी। यह इस बात की दलील थी कि बोलने वाला वाक़ई ख़ुदा है, जो हर तरह की क़ुदरत का मालिक है। वह जिस चीज़ को जो फ़रमा दे टल नहीं सकता। सूरः तॉ-हा की तफ़सीर में इसका बयान भी पूरा गुज़र चुका है।

उस ख़ौफ़नाक साँप को जो बावजूद बहुत बड़ा और बहुत मोटा होने के तीर की तरह इधर-उधर जा रहा था, मुँह खोलता था तो मालूम होता था कि अभी निगल जायेगा, जहाँ से गुज़रता था पत्थर टूट-टूट जाते थे, उसे देखते ही मूसा सहम गये और घबराहट के मारे ठहर न सके, उल्टे पाँव भागे और मुड़कर भी न देखा। वहीं ख़ुदा की तरफ़ से आवाज़ आई कि ऐ मूसा! इधर आ, डर नहीं, तू मेरे अमन में है। अब मूसा का दिल ठहर गया, इत्मीनान से बेख़ौफ़ होकर वहीं अपनी जगह आकर अदब से खड़े हो गये। यह मोजिज़ा अ़ता फ़रमाकर दूसरा मोजिज़ा यह दिया कि हज़रत मूसा अपना हाथ गिरेबान में डालकर निकालते तो वह चाँद की तरह चमकने लगता और बहुत भला मालूम होता। यह नहीं कि कोढ़ के दाग़ की तरह सफ़ेद हो जाये, यह भी आपने अल्लाह के हुक्म से वहीं किया और अपने हाथ को चाँद की तरह रोशन देख लिया। फिर हुक्म दिया कि तुम्हें इस साँप से या किसी घबराहट डर ख़ौफ़ रौब से दहशत मालूम हो तो अपने बाज़ू अपने बदन से मिला लो, तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला उसका डर ख़ौफ़ जाता रहेगा। और यह भी है कि जो शख़्स डर और दहशत के वक़्त अपना हाथ अपने दिल पर ख़ुदा के इस फ़रमान के तहत रख ले तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला उसका डर ख़ौफ़ जाता रहेगा। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि शुरू में हज़रत मूसा के दिल पर फ़िरऔ़न का बहुत ख़ौफ़ था फिर आप जब उसे देखते तो यह दुआ़ पढ़तेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَدْرَاُبِكَ فِیْ نَحْرِهٖ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अद्र-उ बि-क फ़ी नहरिही व अऊज़ु बि-क मिन् शर्रिही।

ऐ अल्लाह मैं तुझे उसके मुक़ाबले में करता हूँ और उसकी बुराई से तेरी पनाह में आता हूँ।

अल्लाह तआला ने उनके दिल से रौब व ख़ौफ़ हटा लिया और फ़िरऔन के दिल में डाल दिया। फिर तो उसका यह हाल हो गया था कि हज़रत मूसा को देखते ही उसका पेशाब निकल जाता था। ये दोनों मोजिज़े यानी अ़सा-ए-मूसा (हज़रत मूसा की लाठी) और यदे-बेज़ा (चमकता हाथ) देकर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अब फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के पास रिसालत लेकर जाओ और बतौर दलील ये मोजिज़े पेश करो, और उन फ़ासिक़ों (बदकारों) को राहे ख़ुदा दिखाओ।

قَالَ رَبِّ اِنِّیْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ یَّقْتُلُوْنِ ۝ وَاَخِیْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّیْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِیَ رِدْاً یُّصَدِّقُنِیْۤ ز اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یُّكَذِّبُوْنِ ۝ قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِیْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا یَصِلُوْنَ اِلَیْكُمَا ۚ بِاٰیٰتِنَاۤ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ۝	उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैंने उनमें से एक आदमी का ख़ून कर दिया था, सो मुझको अन्देशा है कि (कहीं पहली ही बार में) वे लोग मुझको क़त्ल कर दें। (33) और मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे ज़्यादा रवाँ है, तो उनको भी मेरा मददगार बनाकर मेरे साथ रिसालत दे दीजिए कि वह मेरी तक़रीर की ताईद और तस्दीक़ करेंगे। क्योंकि मुझको अन्देशा है कि वे लोग (यानी फ़िरऔन और उसके दरबारी) मुझको झुठलाएँ। (34) इरशाद हुआ कि (बेहतर है) हम अभी तुम्हारे भाई को तुम्हारे हाथ की क़ुव्वत बनाए देते हैं। (एक दरख़्वास्त तो यह मन्ज़ूर हुई) और हम तुम दोनों को एक ख़ास रौब व दबदबा (और हैबत) अ़ता करते हैं जिससे उन लोगों को तुमपर पहुँच और ताक़त न होगी। (पस) हमारे मोजिज़े लेकर जाओ। तुम दोनों और जो तुम्हारी पैरवी करने वाला होगा (उन लोगों पर) ग़ालिब रहोगे। (35)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की गुज़ारिश

यह गुज़र चुका कि हज़रत मूसा फ़िरऔन से ख़ौफ़ खाकर उसके शहर से भाग निकले थे। जब ख़ुदा तआला ने वहीं उसके पास नबी बनकर जाने को फ़रमाया तो आपको वह सब याद आ गया और अ़र्ज़ करने लगे कि ख़ुदाया उनके एक आदमी की जान मेरे हाथ से निकल गई थी, तो ऐसा न हो कि वे मेरे क़त्ल के पीछे लग जायें। हज़रत मूसा ने बचपन के ज़माने में जबकि आपके सामने बतौर तजुर्बे के एक आग का अंगारा और एक खजूर या एक मोती रखा गया तो आपने अंगारा पकड़ लिया था और मुँह में डाल लिया था, इस वास्ते आपकी ज़बान में कुछ लुक्नत (साफ़ न बोल पाने की कैफ़ियत) पैदा हो गई थी और इसी लिये आपने अपनी ज़बान के बारे में ख़ुदा से दुआ माँगी थी कि मेरी ज़बान की गिरह खोल दे

Maktaba E Ashraf

ताकि लोग मेरी बात समझ सकें और मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना दे, उससे मेरे बाज़ू मज़बूत कर और उसे मेरे काम में शरीक कर, ताकि नुबुव्वत व रिसालत का फ़रीज़ा अदा हो और तेरे बन्दों को तेरी किब्रियाई (बड़ाई) की दावत दे सकें।

यहाँ भी आपकी यही दुआ़ नक़ल की गयी है कि आपने फ़रमाया- मेरे भाई हारून को मेरे साथ ही अपना रसूल बना कि वह मेरा मददगार व वज़ीर हो जाये। वह मेरी बातों को बयान करे ताकि मेरे हाथ मज़बूत रहें और दिल बढ़ा हुआ रहे। और यह भी बात है कि दो आवाज़ें एक आवाज़ के मुक़ाबले में ज़्यादा मज़बूत और असरदार होती हैं, मैं अकेला रहा तो डर है कि कहीं वे मुझे झुठला न दें और हारून साथ हुआ तो मेरी बातें भी लोगों को समझा दिया करेगा। अल्लाह तआ़ला ने जवाब दिया कि तेरा सवाल मन्ज़ूर है, हम तेरे भाई से तुझको सहारा देंगे और उसे भी तेरे साथ नबी बना देंगे। जैसा कि एक दूसरी आयत में है:

قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى.

ऐ मूसा! तेरा सवाल पूरा कर दिया गया।

एक और आयत में है कि हमने अपनी रहमत से उसे और उसके भाई हारून को भी नबी बना दिया। इसी लिये बाज़ पहले बुज़ुर्गों का फ़रमान है कि किसी भाई ने अपने भाई पर ऐसा एहसान नहीं किया जो हज़रत मूसा ने हज़रत हारून पर किया। ख़ुदा से दुआ़ करके उन्हें नबी बनवा दिया। (अगरचे अल्लाह के फ़ैसले में यह पहले ही से था कि वह नबी बनेंगे, मगर हज़रत मूसा की दुआ़ के बाद उसका ऐलान होगा यह भी अल्लाह ने मुक़द्दर किया हुआ था)। यह मूसा की बुज़ुर्गी की बड़ी दलील है कि ख़ुदा तआ़ला ने उनकी ऐसी दुआ़ भी रद्द न की। वाक़ई आप ख़ुदा के नज़दीक बड़े ही मर्तबे वाले थे।

फिर फ़रमाता है कि हम तुम दोनों को ज़बरदस्त दलीलें और कामिल हुज्जतें देंगे। फ़िरऔ़न के मानने वाले तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं दे सकते, क्योंकि तुम मेरा पैग़ाम मेरे बन्दों के नाम पहुँचाने वाले हो। ऐसों को मैं ख़ुद दुश्मनों से बचाता हूँ उनका मददगार और ताईद करने वाला मैं ख़ुद बन जाता हूँ। अन्जामकार तुम और तुम्हारे मानने वाले ही ग़ालिब आयेंगे। जैसे फ़रमान है- अल्लाह तय कर चुका है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब आयेंगे। अल्लाह तआ़ला क़ुव्वत वाला, इज़्ज़त वाला है। एक और आयत में है:

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا....... الخ

हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में भी मदद करते हैं.....।

इब्ने जरीर रह. के नज़दीक आयत के मायने यह हैं कि हमारे दिये हुए ग़लबे की वजह से फ़िरऔ़नी तुम्हें तकलीफ़ न पहुँचा सकेंगे और हमारी दी हुई आयतों (निशानियों) की वजह से ग़लबा सिर्फ़ तुम्हें ही हासिल होगा। लेकिन पहले जो मतलब बयान हुआ उससे भी यही साबित है इसलिये इसकी कोई ज़रूरत नहीं। वल्लाहु आलम

फ़लम्मा जा-अहुम् मूसा बिआयातिना बय्यिनातिन् क़ालू فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا	ग़र्ज़ कि जब उन लोगों के पास मूसा हमारी खुली दलीलें लेकर आए तो उन लोगों ने (मोजिज़ों को देखकर) कहा कि यह तो (महज़) एक जादू है कि (ख़्वाह-मख़्वाह ख़ुदा तआ़ला

فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝	पर) झूठ गढ़ा जाता है। और हमने ऐसी बात कभी नहीं सुनी कि हमारे अगले बाप-दादों के वक़्त में भी हुई हो। (36) और मूसा (अ़लैहि.) ने उसके जवाब में फ़रमाया कि मेरा परवर्दिगार उस शख़्स को ख़ूब जानता है जो सही दीन उसके पास से लेकर आया है, और जिसका उस आ़लम "यानी आख़िरत" का अन्जाम अच्छा होने वाला है। (और) यक़ीनन ज़ालिम लोग कभी फ़लाह न पाएँगे। (37)

हक़ की तरफ़ दावत पर फ़िरऔ़नियों का बेहूदा जवाब

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम नुबुव्वत और अल्लाह के साथ कलाम करने के सम्मान से सम्मानित होकर अल्लाह के हुक्म से मिस्र पहुँचे और फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों को ख़ुदा की तौहीद और अपनी रिसालत की तलक़ीन के साथ ही जो मोजिज़े ख़ुदा ने दिये थे उन्हें दिखलाया। सब को मय फ़िरऔ़न के पक्का यक़ीन हो गया कि बेशक मूसा ख़ुदा के पैग़म्बर हैं, लेकिन मुद्दतों का ग़ुरूर और पुराना कुफ़्र सर उठाये बग़ैर न रहा और कहने लगे- यह सिर्फ़ जादू है। अब अपने दबदबे और क़ुव्वत व ताक़त से हक़ के मुक़ाबले पर जम गये और ख़ुदा के नबियों का मुक़ाबला करने पर तुल गये। कहने लगे कि हमने तो नहीं सुना कि ख़ुदा एक है और हम तो क्या हमारे अगले बाप दादों के कान भी आशना नहीं थे, हम सब के सब मय अपने बड़ों छोटों के बहुत से ख़ुदाओं को पूजते रहे। यह नई बातें लेकर कहाँ से आ गया? हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि मुझे और तुमको ख़ुदा ख़ूब जानता है, वही हम तुम में फ़ैसला करेगा कि हम में से हिदायत पर कौन है। और कौन नेक अन्जाम वाला है इसका इल्म भी ख़ुदा ही को है। वह फ़ैसला कर देगा और तुम जल्द ही देख लोगे कि ख़ुदाई ताईद किसका साथ देती है। ज़ालिम यानी मुश्रिक कभी अच्छे अन्जाम वाले और कामयाब नहीं हुए, वे निजात से मेहरूम हैं।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي	और (मूसा अ़लैहिस्सलाम की दलीलें देख कर सुनकर) फ़िरऔ़न कहने लगा कि ऐ दरबार वालो! मुझको तो तुम्हारा अपने सिवा कोई ख़ुदा मालूम नहीं होता, तो ऐ हामान! तुम हमारे लिए मिट्टी (की ईंटें बनवाकर उन) को आग में (पज़ावा लगाकर) पकवाओ फिर (उन पक्की ईंटों से) मेरे वास्ते एक बुलन्द इमारत बनवाओ ताकि मैं (उस पर चढ़कर) मूसा के ख़ुदा को देखूँ-भालूँ, और मैं तो (इस दावे में कि मेरे सिवा और कोई ख़ुदा है) मूसा को झूठा

Maktab E Ashraf

الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ○ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ○ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ○ وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِىْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ○ ع	ही समझता हूँ। (38) और फ़िरऔन और उसके ताबेदारों ने नाहक़ दुनिया में सर उठा रखा था और यूँ समझ रहे थे कि उनको हमारे पास लौटकर आना नहीं है। (39) तो हमने (तकब्बुर की सज़ा में) उसको और उसके ताबेदारों को पकड़कर दरिया में फेंक दिया (यानी डुबो दिया) सो देखिए ज़ालिमों का क्या अन्जाम हुआ? (40) (और मूसा अ़लैहि. का क़ौल ज़ाहिर हो गया) और हमने उन लोगों को ऐसा सरदार बनाया था जो (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते रहे और (इसी वास्ते) क़ियामत के दिन (ऐसे बेसहारा रह जाएँगे कि) कोई उनका साथ न देगा। (41) और (ये लोग दोनों जहान में घाटे में रहे, चुनाँचे) दुनिया में भी हमने उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन भी वे बदहाल लोगों में से होंगे। (42)

फ़िरऔन का दुस्साहस

फ़िरऔन की सरकशी और उसके ख़ुदाई दावे का ज़िक्र हो रहा है कि उसने अपनी क़ौम को बेअ़क्ल बनाकर उनसे अपना दावा मनवा लिया और उसने उनको जमा करके कहा कि तुम्हारा रब मैं ही हूँ। सबसे आला और सबसे बुलन्द हस्ती मेरी ही है। इसी बिना पर ख़ुदा ने उसे दुनिया और आख़िरत के अ़ज़ाबों में पकड़ लिया और दूसरों के लिये उसे इब्रत (एक सबक़) बनाया। उन कमीनों ने उसे ख़ुदा मानकर उसका दिमाग़ यहाँ तक बढ़ा दिया कि उसने कलीमे ख़ुदा हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से डाँटकर कहा कि सुन ले! अगर तूने मेरे सिवा किसी और को अपना माबूद बनाया तो मैं तुझे क़ैद में डलवा दूँगा। उन्हीं कमीने और घटिया लोगों में बैठकर अपना दावा उनसे मनवाकर अपने ही जैसे अपने ख़बीस वज़ीर हामान से कहता है कि तू एक पकावा बना और उसमें ईंटें पकवा और मेरे लिये एक बहुत बुलन्द व ऊँचा महल बना ताकि मैं झाँक लूँ कि वास्तव में ही मूसा का कोई ख़ुदा है भी या नहीं। अगरचे मुझे उसके झूठा होने का इल्म तो है मगर मैं उसका झूठ सब पर ज़ाहिर करना चाहता हूँ। इसी का बयान इस आयत में है:

يَاهَامَانُ ابْنِ لِي صَرْحًا......... الخ

और फ़िरऔन ने कहा ऐ हामान! मेरे वास्ते एक ऊँची इमारत बनाओ शायद मैं आसमान पर जाने की राहों तक पहुँच जाऊँ। (सूरः मोमिन आयत 36)

चुनाँचे एक बुलन्द महल बनाया गया कि उससे ऊँचा दुनिया में नहीं देखा गया। यह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को न सिर्फ़ दावा-ए-रिसालत में ही झूठा जानता था बल्कि यह तो अल्लाह तआ़ला के वजूद का भी क़ायल न था। चुनाँचे क़ुरआन में है कि हज़रत मूसा से उसने कहा:

Maktab-E-Ashraf

وَمَارَبُّ الْعٰلَمِيْنَ.

रब्बुल-आलमीन क्या है?

और उसने यह भी कहा था कि अगर तूने मेरे सिवा किसी को अल्लाह (ख़ुदा) जाना तो मैं तुझे क़ैद कर दूँगा। इस आयत में भी है कि उसने अपने दरबारियों से कहा कि मेरे इल्म में तो सिवाय मेरे तुम्हारा ख़ुदा कोई और नहीं। जब उसकी और उसकी क़ौम की नाफ़रमानी और सरकशी हद से गुज़र गई, अल्लाह के मुल्क में उनके फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) की कोई इन्तिहा न रही, उनके अक़ीदे खोटे पैसे जैसे हो गये, क़ियामत के हिसाब किताब के बिल्कुल इनकारी बन बैठे तो आख़िरकार ख़ुदाई अ़ज़ाब उन पर बरस पड़े और रब ने उन्हें ताक लिया और बीज तक खोद दिया। सब को अपने अ़ज़ाब में पकड़ लिया और एक ही दिन एक ही वक़्त एक साथ सबको दरिया में डुबो दिया। लोगो! सोच लो कि ज़ालिमों का कैसा इब्रतनाक अन्जाम होता है। हमने उन्हें जहन्नमियों का इमाम बना दिया है, कि ये लोगों को उन कामों की तरफ़ बुलाते हैं जिनसे वे ख़ुदा के अ़ज़ाब में मुब्तला हों। जो भी उनकी रविश (तरीक़े और चलन) पर चला उसे वे जहन्नम में ले गये, जिसने भी रसूलों को झुठलाया और ख़ुदा को न माना वह उनकी राह पर है। क़ियामत के दिन भी उनकी कुछ न चलेगी, कहीं से उन्हें कोई इमदाद न पहुँचेगी। दोनों जहान में ये नुक़सान और घाटे में रहेंगे, जैसा कि एक दूसरी जगह फ़रमान है:

اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ.

हमने उन्हें उलट-पुलट कर रख दिया और कोई उनका मददगार न हुआ।

दुनिया में भी ये मलऊन (फटकार के हक़दार) हुए। ख़ुदा की, उसके फ़रिश्तों की, उसके नबियों की और तमाम नेक बन्दों की उन पर लानत है। जो भी भला आदमी उनका नाम सुनेगा उन पर फटकार भेजेगा। दुनिया में भी मलऊन हुए और आख़िरत में भी बुरे होंगे। जैसे फ़रमान है:

اُتْبِعُوْا فِىْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيَامَةِ.

और इस दुनिया में भी लानत उनके साथ-साथ रही और क़ियामत के दिन भी बुरा इनाम है जो उनको दिया गया। (सूरः हूद आयत 99)

यहाँ भी फटकार वहाँ भी लानत।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ○	और हमने मूसा को अगली उम्मतों (यानी नूह की क़ौम और आ़द व समूद) के हलाक करने के बाद किताब (यानी तौरात) दी थी, जो लोगों (यानी बनी इस्राईल) के लिए दानिश-मन्दियों "यानी अ़क्ल व समझ" का सबब और हिदायत और रहमत थी, ताकि वे (उससे) नसीहत हासिल करें। (43)

एक मुक़द्दस और पवित्र किताब

इस आयत में एक लतीफ़ बात यह है कि फ़िरऔ़नियों की हलाकत के बाद उम्मतें उसी तरह

Maktaba Ashraf

आसमानी अ़ज़ाब से हलाक नहीं हुई बल्कि जिस उम्मत ने सरकशी की उसकी सरकशी का बदला उसी ज़माने के नेक लोगों के हाथों ख़ुदा ने दिलवा दिया। मोमिन हज़रात मुश्रिकों से जिहाद करते रहे, जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः

وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ بِالْخَاطِئَةِ.

यानी फ़िरऔ़न और जो उम्मतें उससे पहले हुईं और पलट दी जाने वाली बस्तियों के रहने वाले यानी क़ौमे लूत, ये सब लोग बड़े-बड़े क़सूरों के मुर्तकिब (करने वाले/मुजरिम) हुए। और अपने-अपने ज़माने के रसूलों की नाफ़रमानियों पर कमर कस ली तो ख़ुदा तआ़ला ने इन सब को भी बड़ा सख़्त पकड़ा। उस गिरोह की हलाकत के बाद भी ख़ुदा के इनाम हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल होते रहे, जिनमें से एक बहुत बड़े इनाम का ज़िक्र यहाँ है कि उन्हें तौरात मिली। उस तौरात के नाज़िल होने के बाद किसी क़ौम को आसमान के आ़म अ़ज़ाब से हलाक नहीं किया गया सिवाय उस बस्ती के चन्द मुजरिमों के जिन्होंने ख़ुदा की हुर्मत (हराम कर देने) के ख़िलाफ़ हफ़्ते (शनिवार) के दिन शिकार खेला था और ख़ुदा ने उन्हें सुअर और बन्दर बना दिया था। यह वाक़िआ बेशक हज़रत मूसा के बाद का है, जैसा कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. ने बयान फ़रमाया है और इसके बाद ही आपने अपने क़ौल की ताईद में यह आयत पढ़ी (जिसकी यह तफ़सीर बयान हो रही है)।

एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद किसी क़ौम को अ़ज़ाब से हलाक नहीं किया। ऐसे अ़ज़ाब जितने आये आप से पहले आये। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। फिर तौरात के औसाफ़ (ख़ूबियाँ) बयान हो रहे हैं कि वह लोगों को गुमराही से निकालने वाली थी और रब की रहमत थी, नेक आमाल की तरफ़ हादी (रहनुमाई करने वाली) थी, ताकि लोग उससे हिदायत हासिल करें और नसीहत भी, और सही रास्ते पर आ जायें।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ○ وَلٰـكِنَّـآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰـكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ○ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰـكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ	और आप (तूर पहाड़ की) पश्चिमी ओर मौजूद न थे, जबकि हमने मूसा को अहकाम दिए थे और (ख़ास वहाँ तो क्या मौजूद होते) आप (तो) उन लोगों में से (भी) न थे जो (उस ज़माने में) मौजूद थे। (44) और लेकिन (बात यह है कि हमने मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद) बहुत-सी नस्लें पैदा कीं। फिर उन पर लम्बा ज़माना गुज़र गया, और आप मद्यन वालों में भी न रहते थे कि आप (वहाँ के हालात देखकर उन हालात के मुताल्लिक़) हमारी आयतें उन लोगों को पढ़-पढ़कर सुना रहे हों, और लेकिन हम ही (आपको) रसूल बनाने वाले हैं। (45) और (इसी तरह) आप तूर की (पश्चिमी) ओर (जिसका ज़िक्र हुआ) में उस वक़्त (भी) मौजूद

Maktab E Ashraf

اَتٰـــهُمْ مِّنْ نَّـذِيْــرٍ مِّـنْ قَبْـلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ بِـمَـا قَـدَّمَـتْ اَيْـدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝	न थे, जब हमने (मूसा को) पुकारा था, और लेकिन (इसका इल्म भी इसी तरह हासिल हुआ कि) आप अपने रब की रहमत से नबी बनाए गए, ताकि आप ऐसे लोगों को डराएँ जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला (नबी) नहीं आया, क्या अ़जब है कि नसीहत क़बूल करें। (46) और हम रसूल न भी भेजते अगर यह बात न होती कि उन पर उनके किरदारों के सबब (जो कि अ़क्ल के एतिबार से बुरे हैं) कोई मुसीबत (दुनिया या आख़िरत में) नाज़िल होती, तो यह कहने लगते कि ऐ हमारे रब! आपने हमारे पास कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा, ताकि हम आपके अहकाम की पैरवी करते, और (उन अहकाम और रसूल पर) ईमान लाने वालों में होते। (47)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ख़िताब

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ सल्ल. की नुबुव्वत की दलील देता है कि एक वह शख़्स है जो उम्मी (बिना पढ़ा-लिखा) हो, जिसने एक हर्फ़ भी न पढ़ा हो, जो अगली किताबों से पूरी तरह नाआशना हो, जिसकी क़ौम इल्मी मश्ग़लों और गुज़रे ज़माने की तारीख़ (इतिहास) से बिल्कुल बेख़बर हो। वह तफ़सील और वज़ाहत के साथ उम्दा अन्दाज़ में बिल्कुल सच्चे ठीक और सही पहले गुज़रे वाक़िआ़त किस तरह बयान करे जैसे कि उसके अपने चश्मदीद हों और जैसे कि वह ख़ुद उनके होने के वक़्त वहीं मौजूद हो। क्या यह इस बात की दलील नहीं कि उसको ख़ुदा की तरफ़ से ये सब कुछ बतलाया जाता है और ख़ुदा तआ़ला ख़ुद अपनी 'वही' के ज़रिये से उन्हें वे तमाम बातें बतलाता है। हज़रत मरियम सिद्दीक़ा का वाक़िआ़ बयान फ़रमाते हुए भी क़ुरआन ने इस चीज़ को पेश किया और फ़रमाया है:

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ.........الخ

जबकि वे हज़रत मरियम की तरबियत और परवरिश के लिये क़लमें डालकर फ़ैसले कर रहे थे, उस वक़्त तू उनके पास मौजूद न था, और न तू उस वक़्त था जबकि वे आपस में झगड़ रहे थे।

पस मौजूद न होने और बेख़बरी के बावजूद आपका इस तरह उस वाक़िए को बयान करना कि गोया आप वहीं मौजूद थे और आपके सामने ही तमाम वाक़िआ़त गुज़र रहे थे, आपकी नुबुव्वत की दलील है। और इस बात का साफ़ निशान है कि आप अल्लाह की तरफ़ से भेजी हुई 'वही' से यह कह रहे हैं। इसी तरह हज़रत नूह का वाक़िआ़ बयान फ़रमाकर फ़रमाया:

تِلْكَ مِنْ اَنْبَآءِ الْغَيْبِ.........الخ

Maktaba Ashraf

ये ग़ैब की ख़बरें हैं जिन्हें हम 'वही' के ज़रिये तुम तक पहुँचा रहे हैं। तू और तेरी सारी क़ौम इस 'वही' से पहले इन वाक़िआत से बिल्कुल बेख़बर थी। अब सब्र के साथ देखता रह और यक़ीन मान कि ख़ुदा से डरते रहने वाले नेक अन्जाम वाले होते हैं।

सूरः यूसुफ़ के आख़िर में इरशाद हुआ है कि ये ग़ैब की ख़बरें हैं जिन्हें हम 'वही' के ज़रिये तेरे पास भेज रहे हैं। तू उनके पास उस वक़्त मौजूद न था जबकि युसूफ़ के भाईयों ने पुख़्ता इरादा कर लिया था और तदबीरों में लग गये थे। सूरः तॉ-हा में आ़म तौर पर फ़रमायाः

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَاقَدْسَبَقَ.

इसी तरह हम तेरे सामने पहले की ख़बरें बयान फ़रमाते हैं।

पस यहाँ भी मूसा अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश, उनकी नुबुव्वत की शुरूआ़त वग़ैरह अव्वल से आख़िर तक बयान फ़रमाकर फ़रमाया कि ऐ मुहम्मद! तुम पश्चिमी पहाड़ की तरफ़ जहाँ पूर्वी पेड़ में से जो वादी के किनारे था, ख़ुदा ने अपने कलीम से जो बातें कहीं, उस वक़्त मौजूद न थे, बल्कि अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने 'वही' के ज़रिये आपको ये सब मालूमात कराईं ताकि यह आपकी नुबुव्वत की दलील हो जाये। उन ज़मानों पर जो मुद्दतों से चले आ रहे हैं और ख़ुदा की बातों को वे भूल चुके हैं। अगले नबियों की 'वही' उनके हाथों से गुम हो चुकी है। और न आप मद्यन में रहते थे कि वहाँ के नबी हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम के हालात बयान करते, जो उन पर और उनकी क़ौम में वाक़े हुए थे, बल्कि हमने 'वही' के ज़रिये आपको ये सब ख़बरें पहुँचाईं और तमाम जहान की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा। और न आप तूर पहाड़ की तरफ़ थे जबकि हमने आवाज़ दी।

नसाई शरीफ़ में है, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आवाज़ दी गई कि ऐ उम्मते मुहम्मद! तुम मुझसे माँगो इससे पहले मैंने तुम्हें दे दिया था, और तुम मुझसे दुआ़ करो इससे पहले मैं क़बूल कर चुका। मुक़ातिल रह. कहते हैं कि हमने आपकी उम्मत को जो अभी बाप-दादों की पीठ में थी, आवाज़ दी कि जब आपको नबी बनाकर भेजा जाये तो वे आपकी इत्तिबा (पैरवी और हुक्मों का पालन) करें। क़तादा रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि हमने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को आवाज़ दी। यही ज़्यादा सही और मुताबिक़ है, क्योंकि ऊपर उमूमी बयान था, यहाँ ख़ास तौर से ज़िक्र किया। जैसे एक दूसरी आयत में है:

وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰى.........الخ

जबकि तेरे परवर्दिगार ने मूसा को आवाज़ दी।

एक और आयत में है कि वादी-ए-मुक़द्दस (पवित्र घाटी) में ख़ुदा ने अपने कलीम को पुकारा। एक और आयत में है कि तूर पहाड़ की दायीं ओर की तरफ़ से हमने उसे पुकारा और सरगोशियाँ (धीमे-धीमे अन्दाज़ से बातें) करते हुए उसे अपना क़ुर्ब (निकटता) अ़ता फ़रमाया।

फिर फ़रमाता है कि इनमें से एक वाक़िआ़ भी न तेरी हाज़िरी का है न तेरा चश्मदीद है, बल्कि यह ख़ुदा की 'वही' है जो वह अपनी रहमत से तुझ पर नाज़िल फ़रमा रहा है। और यह भी उसकी रहमत है कि तुझे अपने बन्दों की तरफ़ अपना नबी बनाकर भेजा कि तू उन लोगों को आगाह और होशियार कर दे जिनके पास तुझसे पहले कोई नबी नहीं आया, ताकि वे नसीहत हासिल करें और हिदायत पायें। और इसलिये भी कि उनकी कोई दलील (यानी कोई बहाना और उज़्र) बाक़ी न रह जाये। ये अपने कुफ़्र की वजह से अ़ज़ाब को आता देखकर यह न कह सकें कि इनके पास कोई रसूल आया ही नहीं था जो इन्हें

Maktaba Ashraf

सही रास्ते की तालीम देता। जैसा कि एक दूसरी जगह अपनी मुबारक किताब क़ुरआने करीम के नुज़ूल (उतरने) को बयान फ़रमाकर फ़रमाया कि यह इसलिये है ताकि तुम यह न कह सको कि किताब तो हमसे पहले की दोनों जमाअ़तों पर उतरी थी लेकिन हम तो इस पढ़ने-पढ़ाने से बिल्कुल बेख़बर थे। और अगर हम पर किताब नाज़िल होती तो यक़ीनन हम उनसे ज़्यादा सही रास्ते पर आ जाते। अब बताओ कि ख़ुद तुम्हारे पास भी तुम्हारे रब की दलील और हिदायत व रहमत आ चुकी। एक और आयत में है कि रसूल ख़ुशख़बरियाँ देने वाले, डराने वाले हैं, ताकि इन रसूलों के बाद किसी को कोई हुज्जत ख़ुदा पर बाक़ी न रह जाये। एक और आयत में फ़रमायाः

يَاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْجَاءَ كُمْ رَسُوْلُنَا عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ...... الخ

ऐ अहले किताब! इस ज़माने में जो रसूलों की ग़ैर-मौजूदगी का चला आ रहा था, हमारा रसूल तुम्हारे पास आ चुका, अब तुम यह नहीं कह सकते कि हमारे पास कोई बशीर (ख़ुशख़बरी देने वाला) नज़ीर (डराने वाला) नहीं पहुँचा, लो ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला तुम्हारे पास ख़ुदा की तरफ़ से आ पहुँचा....। और दूसरी आयतें भी इस मज़मून की बहुत सी हैं। ग़र्ज़ कि रसूल आ चुके और तुम्हारा यह उज़्र (बहाना) ख़त्म हो गया कि अगर रसूल आते तो हम उनको मानते और मोमिन (ईमान वाले) हो जाते।

فَلَمَّا جَآءَ هُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ۭ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظَاهَرَا ۣ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ○ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَ هُمْ ۭ وَمَنْ اَضَلُّ	सो जब हमारी तरफ़ से उन लोगों के पास हक़ बात पहुँची तो (उसमें शुब्हा निकालने के लिए यूँ) कहने लगे कि उनको ऐसी किताब क्यों न मिली जैसी मूसा को मिली थी, क्या जो किताब मूसा को मिली थी इससे पहले ये लोग उसके इनकार करने वाले नहीं हुए? ये लोग तो यूँ कहते हैं कि दोनों जादू हैं जो एक-दूसरे के मुवाफ़िक़ "यानी अनुकूल" हैं। और यूँ भी कहते हैं कि हम तो दोनों में से किसी को भी नहीं मानते। (48) आप कह दीजिए कि अच्छा तो (तौरात और क़ुरआन के अ़लावा) तुम कोई और किताब अल्लाह के पास से ले आओ जो हिदायत करने में उन दोनों से बेहतर हो, मैं उसी की पैरवी करने लगूँगा, अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो। (49) फिर (इस हुज्जत पेश करने के बाद) अगर ये लोग आपका (यह) कहना न कर सकें तो आप समझ लीजिए कि ये लोग महज़ अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर चलते हैं। और ऐसे शख़्स से ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पर चलता हो

Maktaba Ashraf

बग़ैर इसके कि अल्लाह की जानिब से कोई दलील (उसके पास) हो, (और) अल्लाह तआ़ला ऐसे ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं किया करता। (50) और हमने इस कलाम (यानी क़ुरआन) को उन लोगों के लिए वक़्त-वक़्त पर एक के बाद एक भेजा, ताकि ये लोग (बार-बार ताज़ा-बताज़ा सुनने से) नसीहत मानें। (51)	مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝

यह उनकी बहाने-बाज़ी और बकवास है

पहले बयान हुआ कि अगर नबियों के भेजने से पहले हम उन पर अ़ज़ाब भेज देते तो ये कह सकते थे कि अगर रसूल हमारे पास आते तो हम ज़रूर उनकी मानते। इसलिये हमने रसूल भेजे, ख़ास तौर पर हुज़ूरे अकरम हज़रत मुहम्मद सल्ल. को नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ बनाकर भेजा। जब हुज़ूर सल्ल. उनके पास पहुँचे तो उन्होंने आँखें फेर लीं, मुँह मोड़ लिये और तकब्बुर व दुश्मनी के साथ कहने लगे कि जैसे हज़रत मूसा को बहुत से मोजिज़े दिये गये थे, जैसे लकड़ी और हाथ और तूफ़ान और टिड्डियाँ और जुएँ और मेंढक और ख़ून और अनाज व फलों की कमी वग़ैरह, जिनसे अल्लाह के दुश्मन तंग आ गये और दरिया को चीरना और बादल का साया करना और मन्न व सलवा का उतारना वग़ैरह, जो ज़बरदस्त और बड़े-बड़े मोजिज़े थे, इन्हें क्यों नहीं दिये गये? अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ये लोग जिस वाक़िए को मिसाल के तौर पर पेश करते हैं और जैसे मोजिज़े तलब करते हैं ये ख़ुद (यानी इनके बाप-दादा) उन्हीं मोजिज़ों को हज़रत मूसा के हाथों देखकर ही कौनसा ईमान लाये थे जो अब इनके ईमान की कोई तमन्ना करे? इन्होंने तो उन तमाम मोजिज़ों को देखकर साफ़ कहा था कि ये दोनों भाई हमें बड़ों की ताबेदारी से हटाना चाहते हैं और अपनी बड़ाई हमसे मनवाना चाहते हैं, हम तो हरगिज़ इन्हें मानकर नहीं देंगे। दोनों नबियों को झुठलाते रहे, आख़िर हलाक कर दिये गये।

इसलिये फ़रमाया कि इनके बड़े जो हज़रत मूसा के ज़माने में थे, उन्होंने ख़ुद मूसा के साथ कुफ़्र किया था और उन मोजिज़ों को देखकर साफ़ कह दिया था कि ये दोनों भाई जादूगर हैं, आपस में मुत्तफ़िक़ होकर हमें ज़ेर करने और ख़ुद को बड़ा मनवाने के लिये आये हैं। हम इन दोनों में से किसी को नहीं मानेंगे। यहाँ अगरचे ज़िक्र सिर्फ़ हज़रत मूसा का है लेकिन चूँकि हज़रत हारून उनके साथ ऐसे रले-मिले थे कि गोया दोनों एक थे, तो एक के ज़िक्र को ही दूसरे के ज़िक्र के लिये काफ़ी समझा। जैसे शायर का क़ौल है कि जब मैं किसी जगह का इरादा करता हूँ तो मैं नहीं जानता कि वहाँ मुझे नफ़ा मिलेगा या मेरा नुक़सान होगा? तो यहाँ भी शायर ने ख़ैर (अच्छाई और भलाई) का लफ़्ज़ तो कहा है मगर शर (बुराई) का लफ़्ज़ बयान नहीं किया, क्योंकि ख़ैर व शर दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यहूदियों ने क़ुरैश से कहा- तुम मुहम्मद पर यह एतिराज़ करो, उन्होंने किया और जवाब पाकर ख़ामोश हो गई। एक क़ौल यह भी है कि दोनों जादूगरों से मुराद हज़रत मूसा और नबी करीम सल्ल. हैं। एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद हज़रत ईसा और हुज़ूर सल्ल. हैं, लेकिन इस तीसरे क़ौल में तो बहुत ही दूर की और

समझ में न आने वाली बात है, और दूसरे से भी पहला क़ौल मज़बूत, उम्दा और बहुत क़वी है। वल्लाहु आलम।

यह मतलब 'साहिरान' की क़िराअत पर है, और जिनकी क़िराअत 'सिहरानि' है वे कहते हैं कि इससे तौरात और क़ुरआन मुराद है, जो एक दूसरे की तस्दीक़ करने वाली हैं। कोई कहता है कि मुराद तौरात व इन्जील है, किसी का क़ौल है कि इन्जील और क़ुरआन मुराद है। वल्लाहु सुब्हानहू व तआ़ला आलम।

लेकिन इस क़िराअत पर भी बज़ाहिर तौरात व क़ुरआन के मायने ठीक हैं, क्योंकि इसके बाद ही फ़रमाने ख़ुदा है कि तुम भी इन दोनों से ज़्यादा हिदायत वाली कोई किताब ख़ुदा के यहाँ से लाओ जिसकी ताबेदारी मैं करूँ। तौरात व क़ुरआन को एक ही जगह क़ुरआने करीम में बयान फ़रमाया गया है, जैसा कि फ़रमायाः

قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِیْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰی نُوْرًا وَّهُدًی لِّلنَّاسِ.

आप कहिए कि वह किताब किसने नाज़िल की है जिसको मूसा लाए थे? (जिसकी यह कैफ़ियत है) कि वह नूर है और लोगों के लिए हिदायत है। (सूरः अन्आ़म आयत 91)

पस यहाँ तौरात के नूर व हिदायत होने का ज़िक्र फ़रमाकर फिर फ़रमायाः

وَهٰذَا كِتَابٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبَارَكٌ.

और इस किताब को भी हमने ही बरकत वाली बनाकर उतारा है।

और सूरत के आख़िर में फ़रमायाः

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتَابَ.

फिर हमने मूसा को किताब दी।

एक और जगह फ़रमान है कि इस हमारी उतारी हुई मुबारक किताब की तुम पैरवी करो, ख़ुदा से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाये। जिन्नात का क़ौल क़ुरआन में है कि उन्होंने कहा- हमने वह किताब सुनी जो मूसा के बाद उतारी गई है, जो अपने से पहले की दूसरी आसमानी किताबों की तस्दीक़ करने वाली है। वरक़ा बिन नोफ़ल का क़ौल हदीस की किताबों में मौजूद है, उन्होंने कहा था कि यह वही ख़ुदा के राज़दार भेदी हैं जो हज़रत मूसा के बाद आपकी तरफ़ भेजे गये।

जिस शख़्स ने गहरी नज़र से इल्मे दीन का मुताला (अध्ययन) किया है उस पर यह बात बिल्कुल ज़ाहिर है कि आसमानी किताबों में सबसे ज़्यादा सम्मान व शराफ़त और बुज़ुर्गी वाली किताब तो यही क़ुरआन मजीद है, जो अल्लाह हमीद व मजीद ने अपने रऊफ़ुर्रहीम नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ सल्ल. पर नाज़िल फ़रमाई। इसके बाद तौरात शरीफ़ का दर्जा है जिसमें हिदायत व नूर था, जिसके मुताबिक़ अम्बिया और उनके मातहत हुक्म अहकाम जारी करते रहे। इन्जील तो सिर्फ़ तौरात को पूरा करने वाली और बाज़ हराम को हलाल करने वाली थी, इसी लिये यहाँ फ़रमाया कि इन दोनों किताबों में से बेहतर किताब अगर तुम ख़ुदा के यहाँ से लाओ तो मैं उसकी ताबेदारी के लिये तैयार हूँ। फिर फ़रमाया कि जो आप कहते हैं वह भी अगर ये न करें और न आपकी ताबेदारी में आयें तो जान ले कि दर असल इन्हें दलील व तर्क की कोई हाजत ही नहीं, ये झगड़ालू और इच्छा-परस्त हैं। और ज़ाहिर है कि ख़्वाहिश के पाबन्द लोगों से जो ख़ुदाई हिदायत से ख़ाली हों, बढ़कर कोई ज़ालिम नहीं। उसमें व्यस्त रहकर जो लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करें वे

आख़िर तक सही राह (हिदायत के रास्ते) से मेहरूम रह जाते हैं, हमने उनके लिये तफ़सीली क़ौल बयान कर दिया, स्पष्ट कर दिया, साफ़ कर दिया। अगली पिछली बातें बयान कर दीं, क़ुरैशियों के सामने सब कुछ ज़ाहिर कर दिया।

बाज़ इससे रिफ़ाआ को मुराद लेते हैं और उनके साथ और नौ आदमी। यह रिफ़ाआ हज़रत सफ़िया बिन्ते हैवा के मामूँ थे, जिन्होंने तमीमा बिन्ते वहब को तलाक़ दी थी, जिनका दूसरा निकाह अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर से हुआ था।

(और) जिन लोगों को हमने क़ुरआन से पहले (आसमानी) किताबें दी हैं (उनमें जो इन्साफ़ पसन्द हैं) वे इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं। (52) और जब क़ुरआन उनके सामने पढ़ा जाता है तो कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए, बेशक यह हक़ है (जो) हमारे रब की तरफ़ से (नाज़िल हुआ है, और) हम तो इस (के आने) से पहले भी मानते थे। (53) उन लोगों को उनकी पुख़्तगी की वजह से दोहरा सवाब मिलेगा, और वे लोग नेकी (और बरदाश्त) से बुराई (और तकलीफ़) को दफ़ा कर देते हैं, और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से (अल्लाह तआ़ला की राह में) ख़र्च करते हैं। (54) और जब (किसी से अपने बारे में) कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उसको (भी) टाल जाते हैं, और (सही चलन के तौर पर) कह देते हैं कि (हम कुछ जवाब नहीं देते) हमारा किया हमारे सामने आएगा और तुम्हारा किया तुम्हारे सामने आएगा। (भाई) हम तुमको सलाम करते हैं, हम बे-समझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। (55)	اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ○ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ○ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ز سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ز لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ○

उन पर सलामती और अल्लाह की रहमत हो

अहले किताब (यहूद व ईसाई लोगों) के उलेमा जो दर हक़ीक़त ख़ुदा के दोस्त थे, उनके पाकीज़ा औसाफ़ (ख़ूबियाँ और कमालात) बयान हो रहे हैं कि वे क़ुरआन को मानते हैं। जैसे फ़रमान है कि जिन्हें हमने किताब दी है और वे समझ बूझ कर पढ़ते हैं, उनका तो इस क़ुरआन पर ईमान है। एक दूसरी आयत में है कि कुछ अहले किताब ऐसे भी हैं जो ख़ुदा को मानकर तुम्हारी तरफ़ उतरी हुई किताब को और अपनी तरफ़ उतरी हुई किताब को भी मानते हैं और ख़ुदा से डरते रहते हैं। एक और जगह है कि पहले के अहले किताब ऐसे भी हैं कि हमारे इस क़ुरआन की आयतें सुनकर सज्दों में गिर पड़ते हैं और ज़बान से कहते हैं:

Maktab-E-Ashraf

سُبْحَانَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا.

कि हमारा रब वायदा-ख़िलाफ़ी से पाक है, बेशक हमारे रब का वायदा ज़रूर पूरा ही होता है। एक दूसरी आयत में है:

وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى........ الخ

यानी मुसलमानों के साथ दोस्ती के एतिबार से सब लोगों से ज़्यादा क़रीब उन्हें पाओगे जो ख़ुद को नसारा (ईसाई) कहते हैं। इसलिये कि उनमें उलेमा और मशाईख़ (बुज़ुर्ग और नेक लोग) हैं, और ये लोग तकब्बुर व ग़ुरूर से ख़ाली हैं, और क़ुरआन सुनकर रो देते हैं और कह उठते हैं कि हमारा ईमान है ख़ुदाया हमें भी अपने दीन के मानने वालों में लिख लीजिये।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. का बयान है कि जिनके हक़ में यह फ़रमाया गया है ये सत्तर बुज़ुर्ग उलेमा थे, जो हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हब्शा के बादशाह नजाशी के भेजे हुए आये थे। हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें सूरः यासीन सुनाई जिसे सुनकर वे रोने लगे और मुसलमान हो गये। उन्हीं के बारे में ये आयतें उतरीं, कि ये उन्हें सुनते ही अपने ईमान व इख़्लास वाला होने का इक़रार करते हैं और क़बूल करके मोमिन मुस्लिम बन जाते हैं। उनकी सिफ़तों पर ख़ुदा तआ़ला भी उन्हें दोहरा अज्र देता है, एक पहली किताब को मानने का दूसरा क़ुरआन को मानने और इस पर अ़मल करने का। ये हक़ की पैरवी पर साबित-क़दमी करते (यानी जमे रहते) हैं जो दर असल एक मुश्किल और अहम काम है।

हुज़ूरे पाक सल्ल. का इरशाद है कि तीन क़िस्म के लोगों को दोहरा अज्र मिलता है, उस अहले किताब को जो अपने नबी को मानकर फिर मुझ पर भी ईमान लाये। उस ग़ुलाम मम्लूक को जो अपने आक़ा के हुक्म की तामील के साथ ही ख़ुदा तआ़ला के हुक़ूक़ की अदायेगी भी करता रहे और वह शख़्स जिसके पास बाँदी (ख़ादिमा) हो जिसे वह अदब व इल्म सिखाये, फिर आज़ाद करके उससे निकाह कर ले। क़ासिम बिन अबू उमामा रज़ि. कहते हैं कि मक्का के फ़तह होने वाले दिन मैं रसूलुल्लाह सल्ल. की सवारी के साथ ही और बिल्कुल पास ही था, आपने बहुत बेहतरीन बातें इरशाद फ़रमाईं जिनमें यह भी फ़रमाया कि यहूद व ईसाईयों में से जो मुसलमान हो जाये उसे दोहरा अज्र मिलता है, और उसके आ़म मुसलमानों के बराबर हुक़ूक़ हैं।

फिर उनकी अच्छी सिफ़ात बयान हो रही हैं कि ये बुराई का बदला बुराई से नहीं लेते बल्कि माफ़ कर देते हैं, दरगुज़र कर देते हैं और नेक सुलूक ही करते हैं। अपनी हलाल रोज़ियाँ अल्लाह के नाम पर ख़र्च करते हैं और अपने बाल-बच्चों का पेट भी पालते हैं। ज़कात सदक़ात ख़ैरात में भी बुख़्ल (कन्जूसी) नहीं करते। बेहूदा और बेकार बातों और कामों से बचते रहते हैं। ऐसे लोगों से दोस्तियाँ नहीं करते, ऐसी मज्लिसों से दूर रहते हैं, बल्कि कभी अचानक गुज़र हो भी जाये तो बुज़ुर्गाना तौर पर (यानी सन्जीदा अन्दाज़ में) हट जाते हैं। ऐसों से मेलजोल, ताल्लुक़ व मुहब्बत नहीं करते, साफ़ कह देते हैं कि तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ हमारे आमाल हमारे साथ, यानी जाहिलों की सख़्त-कलामी भी बरदाश्त कर लेते हैं, उन्हें ऐसा जवाब नहीं देते कि वे और भड़कें, बल्कि निगाह बचा लेते हैं और आँख बचाकर निकल जाते हैं। चूँकि ख़ुद पाक-नफ़्स हैं इसलिये पाकीज़ा कलाम ही मुँह से निकालते हैं। कह देते हैं कि तुम पर सलाम हो, हम न जाहिलाना रविश (तरीक़े और चलन) पर चलें न जहालत को पसन्द करें।

Maktaba Ashraf

इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल. के पास हब्शा से तक़रीबन बीस नसरानी (ईसाई) आये। आप उस वक़्त मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। यहीं ये भी बैठ गये और बातचीत शुरू की। उस वक़्त क़ुरैशी लोग अपनी-अपनी बैठकों में काबे के इर्द-गिर्द बैठे हुए थे। उन ईसाई उलेमा ने जब सवालात कर लिये और जवाबात से उनकी तसल्ली और संतुष्टि हो गई तो आपने दीने इस्लाम उनके सामने पेश किया और क़ुरआने करीम की तिलावत करके उन्हें सुनाया। चूँकि ये लोग पढ़े लिखे सन्जीदा और रोशन-दिमाग़ थे, क़ुरआन ने उनके दिलों पर असर किया और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने फ़ौरन दीने इस्लाम क़बूल कर लिया, ख़ुदा पर और ख़ुदा के रसूल पर ईमान लाये। क्योंकि हुज़ूर सल्ल. की जो-जो सिफ़तें उन्होंने अपनी आसमानी किताबों में पढ़ी थीं सब आप में मौजूद पाईं। जब ये लोग आपके पास से जाने लगे तो अबू जहल बिन हिशाम मलऊन अपने आदमियों को लिये हुए उन्हें रास्ते में मिला और तमाम क़ुरैशियों ने मिलकर उन्हें ताने देने शुरू किये और बुरा कहने लगे कि तुम से बुरा वफ़्द (जमाअ़त और गिरोह) किसी क़ौम का नहीं देखा, तुम्हारी क़ौम ने तुम्हें इस शख़्स के हालात मालूम करने के लिये भेजा, यहाँ आकर तुमने अपने बाप-दादा के मज़हब को छोड़ दिया और इसका ऐसा रंग तुम पर चढ़ा कि ज़रा सी देर में अपने दीन को छोड़कर दीन बदल दिया और इसी का कलिमा पढ़ने लगे? तुम से ज़्यादा अहमक़ हमने तो किसी को नहीं पाया, वग़ैरह। उन्होंने ठंडे दिल से यह सब सुन लिया और जवाब दिया कि हम तुम्हारे साथ जाहिलाना बातें करना पसन्द नहीं करते, हमारा दीन हमारे साथ तुम्हारा मज़हब तुम्हारे साथ। हमने जिस बात में अपनी भलाई देखी उसे क़बूल कर लिया।

यह भी कहा जाता है कि यह वफ़्द नजरान के ईसाईयों का था। वल्लाहु आलम। यह भी कहा गया है कि ये आयतें उन्हीं के बारे में उतरी हैं। हज़रत ज़ोहरी रह. से इन आयतों का शाने नुज़ूल पूछा गया तो आपने फ़रमाया मैं तो अपने उलेमा से यही सुनता चला आया हूँ कि ये आयतें नजाशी और उनके साथियों के बारे में उतरी हैं। और सूरः मायदा की आयत नम्बर 82 और 83 भी उन्हीं के बारे में नाज़िल हुई हैं।

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ
يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِينَ ○ وَقَالُوا إِن نَّتَّبِعِ الْهُدَىٰ
مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَا ۚ أَوَلَمْ نُمَكِّن
لَّهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ
شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ○

आप जिसको चाहें हिदायत नहीं कर सकते बल्कि अल्लाह जिसको चाहे हिदायत कर देता है, और हिदायत पाने वालों का इल्म (भी) उसी को है। (56) और ये लोग कहते हैं कि अगर हम आपके साथ होकर (इस दीन की) हिदायत पर चलने लगें तो फ़ौरन अपने मक़ाम (स्थान) से मारकर निकाल दिए जाएँ। क्या हमने उनको अमन व शान्ति वाले हरम में जगह न दी, जहाँ हर क़िस्म के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से (यानी हमारी क़ुदरत और हमारे देने से) खाने को मिलते हैं, और लेकिन उनमें अक्सर लोग (इसको) नहीं जानते। (57)

हिदायत ख़ुदा तआ़ला ही देते हैं

ऐ नबी! किसी को हिदायत पर ला खड़ा करना तुम्हारे क़ब्ज़े की चीज़ नहीं। आप पर तो सिर्फ़ पैग़ामे ख़ुदा के पहुँचा देने का फ़रीज़ा है। हिदायत का मालिक ख़ुदा है, वह अपनी हिक्मत के साथ जिसे चाहे हिदायत कबूल करने की तौफ़ीक़ बख़्शता है। जैसे फ़रमान है:

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰهُمْ.

तेरे ज़िम्मे उनकी हिदायत नहीं, वह चाहे तो हिदायत बख़्शे।

एक और आयत में है:

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ.

यानी चाहे तू कितनी ही तमन्ना और आरज़ू करे लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लायेंगे। यह ख़ुदा ही के इल्म में है कि हिदायत का हक़दार कौन है और गुमराही का मुस्तहिक़ कौन है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि यह आयत रसूलुल्लाह सल्ल. के चचा अबू तालिब के बारे में उतरी है, जो आपका बहुत तरफ़दार था और हर मौक़े पर आपकी मदद करता रहता था और आपका साथ देता था। आपसे दिल से मुहब्बत करता था लेकिन यह मुहब्बत रिश्तेदारी की वजह से तबई थी, शरई न थी। जब उसकी मौत का वक़्त क़रीब आया तो हुज़ूर सल्ल. ने उसे इस्लाम में आने की दावत दी और ईमान लाने की रग़बत दिलाई, लेकिन तक़दीर का लिखा और ख़ुदा का चाहा ग़ालिब आया और वह अपने कुफ़्र पर अड़ा रहा। हुज़ूर सल्ल. उसके इन्तिक़ाल के वक़्त उसके पास आये और अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमैया भी उनके पास बैठे हुए थे। आपने फ़रमाया- 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहो मैं इसकी वजह से ख़ुदा के यहाँ आपका सिफ़ारिशी बन जाऊँगा। अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह कहने लगे अबू तालिब क्या तू अपने बाप अ़ब्दुल-मुत्तलिब के मज़हब से फिर जायेगा? अब हुज़ूर सल्ल. समझाते और दोनों उसे रोकते यहाँ तक कि आख़िरी कलिमा उसकी ज़बान से यही निकला कि मैं यह कलिमा नहीं पढ़ता और मैं अ़ब्दुल-मुत्तलिब के मज़हब पर हूँ। आपने फ़रमाया बेहतर है कि मैं आपके लिये रब से इस्तिग़फ़ार करूँगा जब तक कि मुझे उससे रोक न दिया जाये। लेकिन उसी वक़्त यह आयत उतरी:

مَاكَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى.

यानी नबी को और मोमिन को हरगिज़ यह बात मुनासिब नहीं कि वे मुश्रिकों के लिये इस्तिग़फ़ार करें अगरचे वे उनके नज़दीकी रिश्तेदार ही क्यों न हों और इसी अबू तालिब के बारे में आयत:

اِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ اَحْبَبْتَ..........الخ

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) भी नाज़िल हुई। (सही मुस्लिम वग़ैरह)

तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि अबू तालिब की मौत की बीमारी में हुज़ूर सल्ल. ने उससे कहा चचा! 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहो, मैं इसकी गवाही क़ियामत के दिन दे दूँगा, तो उसने कहा अगर मुझे अपने ख़ानदाने क़ुरैश के इस ताने का ख़ौफ़ न हो कि इसने मौत की घबराहट की वजह से यह कह लिया तो मैं इसे कहकर तेरी आँखों को ठंडा कर देता, मगर फिर भी इसे सिर्फ़ तेरी ख़ुशी के लिये कहता। इस पर यह आयत उतरी। दूसरी रिवायत में है कि आख़िरकार उसने कलिमा पढ़ने से इनकार कर दिया और साफ़ कह

Maktab E Ashraf

दिया कि मेरे भतीजे! मैं तो अपने बड़ों की रविश (तरीक़े और दीन) पर हूँ और इसी बात पर उसकी मौत हुई कि वह अ़ब्दुल-मुत्तलिब के मज़हब पर है।

रोम के बादशाह क़ैसर का क़ासिद जब रसूले करीम सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और क़ैसर का ख़त ख़िदमते नबवी में पेश किया तो आपने उसे अपनी गोद में रखकर उससे फ़रमाया तू किस क़बीले से है? उसने कहा तनूख़ क़बीले का मैं आदमी हूँ। आपने फ़रमाया क्या तेरा इरादा है कि तू अपने बाप हज़रत इब्राहीम के दीन पर आ जाये? उसने जवाब दिया कि मैं जिस क़ौम का क़ासिद हूँ जब तक उनके पैग़ाम का जवाब उन्हें न पहुँचा दूँ उनके मज़हब को नहीं छोड़ सकता। आपने मुस्कुराकर अपने सहाबा की तरफ़ देखकर यही आयत पढ़ी। मुश्रिक लोग अपने ईमान न लाने की एक वजह यह भी बयान करते थे कि हम आपकी लाई हुई हिदायत को मान लें तो हमें डर लगता है कि इस दीन के मुख़ालिफ़ जो हमारे हर तरफ़ हैं और तायदाद में माल में हमसे बहुत ज़्यादा हैं वे हमारे दुश्मन बन जायेंगे, हमें तकलीफ़ पहुँचायेंगे और हमें बरबाद कर देंगे। अल्लाह फ़रमाता है कि यह हीला भी उनका ग़लत है, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हरमे मोहतरम में रखा है, जहाँ शुरू दुनिया से अब तक अमन व अमान रहा है, तो यह कैसे हो सकता है कि कुफ़्र की हालत में तो ये यहाँ अमन से रहें और जब ख़ुदा के सच्चे दीन को क़बूल करें तो अमन उठ जाये? यही तो वह शहर है कि ताईफ़ वग़ैरह विभिन्न मक़ामात से फल फ़्रूट, सामान व असबाब, माले तिजारत वग़ैरह की आमद कसरत से रहती है। तमाम चीज़ें यहाँ खिंची चली आती हैं और हम इन्हें बैठे बिठाये रोज़ियाँ पहुँचा रहे हैं, लेकिन इनमें की अक्सरियत बेइल्म है। इसी लिये ऐसे मामूली और बेकार के बहाने और बेजा उ़ज़्र पेश करते हैं। नक़ल है कि यह कहने वाला हारिस बिन आ़मिर बिन नोफ़ल था।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ ۭبَطِرَتْ
مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ
مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۭ وَكُنَّا نَحْنُ
الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى
حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا
وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝

और हम बहुत-सी ऐसी बस्तियाँ हलाक कर चुके हैं जो अपने ऐश के सामान पर इतराते थे। सो (देख लो) ये उनके घर (तुम्हारी आँखों के सामने पड़े) हैं कि उनके बाद आबाद ही न हुए मगर थोड़ी देर के लिए, और आख़िरकार (उनके उन सब सामानों के) हम ही मालिक रहे। (58) और आपका रब बस्तियों को (पहली ही बार में) हलाक नहीं किया करता जब तक कि उन (बस्तियों) के मुख्य स्थान में किसी पैग़म्बर को न भेज ले, कि वह उन लोगों को हमारी आयतें पढ़-पढ़कर सुनाए। और हम उन बस्तियों को हलाक नहीं करते मगर उसी हालत में कि वहाँ के रहने वाले बहुत ही शरारत करने लगें। (59)

हम ज़ुल्म नहीं करते

मक्का वालों को होशियार किया जाता है कि जो अल्लाह की बहुत सी नेमतें हासिल करके इतरा रहे हैं

Maktab E Ashraf

और सरकशी व बड़ाई करते थे और ख़ुदा से कुफ़्र करते थे, ख़ुदा की रोज़ियाँ खाते और उसकी नमक-हरामी करते थे, उन्हें ख़ुदा तआ़ला ने इस तरह तबाह व बरबाद किया कि आज कोई उनको जानता तक नहीं। जैसे एक दूसरी आयत में है:

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً.

और अल्लाह तआ़ला एक बस्ती वालों की (अ़जीब) हालत बयान फ़रमाते हैं कि वे अमन व इत्मीनान में थे। उनके खाने-पीने की चीज़ें बड़ी फ़रागत से हर (चार) तरफ़ से उनके पास पहुँचा करती थीं। सो उन्होंने ख़ुदा की नेमतों की बेक़द्री की। उस पर अल्लाह ने उनको इन हरकतों के सबब (एक घेरने वाले) क़हत (सूखे और अकाल) और ख़ौफ़ का मज़ा चखा दिया।

यहाँ फ़रमाता है कि उनकी उजड़ी हुई बस्तियाँ अब तक उजड़ी हुई पड़ी हैं। कुछ यूँ ही सी आबादी अगरचे हो गई हो लेकिन देखो उनके खंडरों से आज तक वहशत (वीरानी) बरस रही है। हम ही उनके मालिक रह गये हैं। हज़रत कअ़्ब का क़ौल है कि उल्लू से हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने मालूम किया कि तू खेती अनाज क्यों नहीं खाता? उसने कहा इसलिये कि इसी के सबब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जन्नत से निकाले गये। पूछा पानी क्यों नहीं पीता? कहा इसलिये कि क़ौमे नूह इसमें डुबो दी गई। पूछा वीराने में क्यों रहता है? कहा इसलिये कि वह अल्लाह की मीरास है। फिर हज़रत कअ़्ब रह. ने 'व कुन्ना नहनुल-वारिसीन' पढ़ा।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला अपने अ़दल व इन्साफ़ को बयान फ़रमा रहा है कि वह किसी को ज़ुल्म से हलाक नहीं करता। पहले उन पर अपनी हुज्जत पूरी करता है, उनका उज़्र दूर करता है, रसूलों को भेजकर अपना कलाम उन तक पहुँचाता है। इस आयत से यह भी मालूम होता है कि हुज़ूर सल्ल. की नुबुव्वत आ़म थी, आप मक्का शरीफ़ में मबऊ़स हुए थे और तमाम अ़रब व अ़जम (ग़ैर-अ़रब) की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गये। जैसे फ़रमान है:

لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا.

ताकि मक्का वालों और दूसरे शहर वालों को डरा दे। और एक जगह फ़रमाया:

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا.

कह दे कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)। एक और आयत में है

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْ ۢ بَلَغَ.

ताकि इस क़ुरआन से मैं तुम्हें डरा दूँ और हर उस शख़्स को जिस तक यह क़ुरआन पहुँचे। एक दूसरी आयत में है:

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ.

इस क़ुरआन के साथ दुनिया वालों में से जो भी कुफ़्र करे उसके वादे की जगह जहन्नम है। एक और जगह अल्लाह का फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا........ الخ

यानी तमाम बस्ती और आबादियों को हम क़ियामत से पहले हलाक करने वाले हैं, या सख़्त अ़ज़ाब करने वाले हैं....।

पस ख़बर दी कि क़ियामत से पहले वह सब बस्तियों को बरबाद कर देगा। एक दूसरी आयत में है कि जब तक रसूल न भेज दें अ़ज़ाब नहीं करते। पस हुज़ूर की बेसत को आ़म कर दी और तमाम जहान के लिये कर दी, और मक्के में जो कि तमाम दुनिया का केन्द्र है (मक्का शरीफ़ दुनिया के बीच में है) आपको मबऊस फ़रमाकर सारी दुनिया पर अपनी हुज्जत ख़त्म कर दी। बुख़ारी व मुस्लिम में हुज़ूर सल्ल. का इरशाद मौजूद है कि मैं तमाम स्याह व सफ़ेद की तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूँ इसलिये नुबुव्वत व रिसालत को आप पर ख़त्म (मुकम्मल) कर दिया, आपके बाद से क़ियामत तक न कोई नबी आयेगा न रसूल। कहा गया है कि उम्मुल-क़ुरा से मुराद केन्द्र और बड़ी बस्ती है।

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝	और जो कुछ तुमको दिया दिलाया गया है वह महज़ (चन्द दिन का) दुनियावी ज़िन्दगी के बरतने के लिए है, और यहीं की (सज-धज है) और जो (अज्र व सवाब) अल्लाह के यहाँ है वह इससे बहुत ज़्यादा बेहतर है, और ज़्यादा (यानी हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। क्या तुम लोग (इस फ़र्क़ को) नहीं समझते? (60) भला वह शख़्स जिससे हमने एक पसन्दीदा वायदा कर रखा है। फिर वह शख़्स उस (वायदे की चीज़) को पाने वाला है, क्या उस शख़्स के जैसा हो सकता है जिसको हमने दुनियावी ज़िन्दगी का चन्द दिन का फ़ायदा दे रखा है। फिर वह क़ियामत के दिन उन लोगों में से होगा जो गिरफ़्तार करके लाए जाएँगे। (61)

ع ٦/٩

एक अच्छा वायदा

अल्लाह तआ़ला दुनिया की हिक़ारत, इसकी रौनक़ की नापायदारी व ज़िल्लत, इसका फ़ानी होना और बुराई बयान फ़रमा रहा है, और इसके मुक़ाबले में आख़िरत की नेमतों की पायदारी, हमेशगी, बड़ाई और क़ियाम (बाक़ी रहने) का ज़िक्र फ़रमा रहा है। जैसे इरशाद है:

مَاعِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَاعِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ.

कि तुम्हारे पास जो कुछ है वह फ़ना होने वाला है, और ख़ुदा के पास तमाम चीज़ें बक़ा वाली हैं।

ख़ुदा के पास जो है वह नेक लोगों के लिये बहुत ही बेहतर और उम्दा है। आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया तो कुछ नहीं लेकिन अफ़सोस कि लोग दुनिया के पीछे पड़े हुए और आख़िरत से ग़ाफ़िल हो रहे हैं

जो बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसी है जैसे तुम में से कोई समुद्र में उंगली डुबोकर निकाल ले, फिर देख ले कि उसकी उंगली पर जो पानी है वह समुद्र के मुक़ाबले में कितना है। अफ़सोस कि इस पर भी लोग अपनी कम-इल्मी और बेइल्मी के सबब दुनिया के मतवाले हो रहे हैं। ख़्याल कर लो कि एक तो वह जो ख़ुदा पर, ख़ुदा के नबी पर ईमान रखता हो और एक वह जो ईमान न लाया हो, क्या नतीजे के एतिबार से ये दोनों बराबर हो सकते हैं? ईमान वाले के साथ तो ख़ुदा का जन्नत का और अपनी बेशुमार अनमिट व ग़ैर-फ़ानी नेमतों का वायदा है, और काफ़िर के साथ वहाँ के अ़ज़ाब का डरावा है, अगरचे दुनिया में कुछ रोज़ ऐश ही उठा ले। नक़ल है कि यह हुज़ूर सल्ल. और अबू जहल मलऊन के बारे में नाज़िल हुआ है। एक क़ौल यह भी है कि हज़रत हमज़ा, हज़रत अ़ली और अबू जहल के बारे में यह आयत उतरी है। ज़ाहिर यह है कि आयत आ़म है। जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि जन्नती मोमिन अपने रब के दर्जों से झाँक कर जहन्नमी काफ़िर को जहन्नम के जेलख़ाने में देखकर कहेगा:

لَوْلَانِعْمَةُ رَبِّىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ.

अगर मुझ पर मेरे रब का इनाम न होता तो मैं भी इन अ़ज़ाबों में फंस जाता। एक और आयत में है:

وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنُّ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ.

जिन्नात को यक़ीन है कि वे हाज़िर किये जाने वालों में से हैं।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِ ىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ○ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ز مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ○ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْاَنَّهُمْ	और (वह दिन याद करने के क़ाबिल है) जिस दिन अल्लाह उन काफ़िरों को (झिड़की के तौर पर) पुकार कर कहेगा कि वे मेरे शरीक कहाँ हैं, जिनको तुम (हमारा शरीक) समझ रहे थे? (62) जिन पर (गुमराह करने की वजह से) ख़ुदा का फ़रमाया हुआ (यानी अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ होना) साबित हो चुका होगा। वे बोल उठेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! बेशक ये वही लोग हैं जिनको हमने बहकाया, हमने उनको वैसा ही (बिना किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती) बहकाया जैसा कि हम ख़ुद बहके थे, और हम आपकी मौजूदगी में उन (के ताल्लुक़ात) से अ़लैहदगी इख़्तियार करते हैं (और) ये लोग (हक़ीक़त में) हमको न पूजते थे। (63) और (उस वक़्त उन मुश्रिकों से मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर) कहा जाएगा कि (अब) अपने उन शरीकों को बुलाओ, चुनाँचे वे (इन्तिहाई हैरत से बेक़रारी

كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ٥ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ٥ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ٥ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ٥

के साथ) उनको पुकारेंगे, सो वे जवाब भी न देंगे। और (उस वक़्त) ये लोग (अपनी आँखों से) अज़ाब देख लेंगे। ऐ काश! ये लोग (दुनिया में) सही रास्ते पर होते, (तो यह मुसीबत न आती)। (64) और जिस दिन उन काफ़िरों से पुकार कर पूछेगा कि तुमने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? (65) सो उस दिन उन (के ज़ेहन) से सारे मज़ामीन गुम हो जाएँगे, तो वे (अपने आप भी न समझ सकेंगे और) आपस में पूछताछ भी न कर सकेंगे। (66) लेकिन जो शख़्स (कुफ़्र व शिर्क से दुनिया में) तौबा करे और ईमान ले आए और नेक काम किया करे तो ऐसे लोग उम्मीद है कि (आख़िरत में) कामयाबी पाने वालों में से होंगे। (67)

आख़िरत का दिन और काफ़िरों से एक सवाल

मुश्रिकों (अल्लाह के साथ अक़ीदे और इबादत में दूसरों को शरीक करने वालों) को क़ियामत के दिन पुकारकर सामने खड़ा करके अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमायेगा कि दुनिया में जिन्हें तुम मेरे सिवा पूजते रहे और पत्थरों को मानते रहे वे कहाँ हैं? उन्हें पुकारो और देखो कि वे तुम्हारी कुछ मदद करते हैं? या वे ख़ुद अपनी कोई मदद कर सकते हैं? यह सिर्फ़ बतौर डाँट-डपट के होगा। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ........ الخ

यानी हम तुम्हें वैसे ही तन्हा-तन्हा (अलग-अलग) और एक-एक करके लाये जैसे हमने पहली बार में पैदा किया था, और जो कुछ हमने तुम्हें दिया दिलाया था वह सब तुम अपने पीछे ही छोड़ आये हो। हम तो आज तुम्हारे किसी सिफ़ारिशी को भी नहीं देखते, जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराए हुए थे। तुम में और उनमें कोई लगाव नहीं रहा और तुम्हारे सब शरीक आज तुमसे खोए हुए हैं, जिन पर अ़ज़ाब हो चुका। यानी शयातीन और सरकश (अल्लाह के नाफ़रमान) लोग, कुफ़्र की बुनियाद डालने वाले और शिर्क की तरफ़ बुलाने वाले ये सब बड़े-बड़े लोग उस दिन कहेंगे कि ख़ुदाया हमने इन्हें गुमराह किया और इन्होंने हमारी कुफ़्र की बातें सुनीं और मानीं, जैसे हम बहके हुए थे इन्हें भी बहकाया। हम इनकी इबादत से तेरे सामने बेज़ारी (नफ़रत और बेताल्लुक़ी) का इज़्हार करते हैं। जैसे एक दूसरी आयत में है:

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً....... الخ

उन्होंने अल्लाह के सिवा और दूसरे माबूद बना लिये ताकि वे उनके लिये इ़ज़्ज़त का सबब और ज़रिया बनें, लेकिन ऐसा नहीं होगा। ये तो उनकी इबादत से भी इनकार कर जायेंगे और उल्टे उनके दुश्मन बन जायेंगे। एक और आयत में है:

Maktab E Ashraf

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْمِنْ دُوْنِ اللّٰهِ....... الخ

उससे बढ़कर गुमराह कौन है जो ख़ुदा के सिवा दूसरों को पुकारता है, जो क़ियामत की घड़ी तक उन्हें न जवाब दे सकें, वे उनकी पुकार से भी ग़ाफ़िल हों और क़ियामत के दिन लोगों के हश्र के मौक़े पर उनके दुश्मन बन जायें। और इस बात से साफ़ इनकार कर दें कि उन्होंने उनकी इबादत की थी।

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था कि तुमने जिन बुतों की इबादत शुरू कर रखी है उनसे सिर्फ़ दुनिया ही की दोस्ती है, क़ियामत के दिन तो तुम सब एक दूसरे के मुन्किर हो जाओगे और एक दूसरे पर लानत भेजोगे........। एक और आयत में है:

اِذْتَبَرَّءَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا......... الخ

यानी जो ताबेदारी करने वाले थे वे उनसे जो ताबेदारी करते रहे बरी और बेज़ार हो जायेंगे। अ़ज़ाब को सामने देखते हुए सब ताल्लुक़ात टूट जायेंगे.......।

उनसे फ़रमाया जायेगा कि दुनिया में जिन्हें पूजते रहे आज उन्हें क्यों नहीं पुकारते? अब ये पुकारेंगे लेकिन कोई जवाब न पायेंगे और इन्हें यक़ीन हो जायेगा कि ये आग के अ़ज़ाब में जायेंगे। उस वक़्त आरज़ू करेंगे कि काश यह सही रास्ते वाले (यानी अल्लाह के दीन पर) होते! जैसे क़ुरआन में एक जगह इरशाद है:

وَيَوْمَ يُنَادِيْ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ........ الخ

जिस दिन फ़रमाया जायेगा कि मेरे उन शरीकों को आवाज़ दो जिन्हें तुम बहुत कुछ समझ रहे थे। ये पुकारेंगे लेकिन वे जवाब तक न देंगे और हम इनके और उनके बीच आड़ कर देंगे। मुजरिम लोग दोज़ख़ को देखेंगे, फिर यक़ीन कर लेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं, लेकिन उससे बचने की कोई राह न पायेंगे। उसी क़ियामत वाले दिन इन सब को सुनाकर एक सवाल यह भी होगा कि तुमने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया? और कहाँ तक उनका साथ दिया? पहले तौहीद (अल्लाह को एक मानने यानी अल्लाह पर ईमान लाने) के बारे में पूछताछ थी, अब रिसालत (अल्लाह के रसूलों को मानने और उनके पैग़ाम को क़बूल करने) के बारे में सवाल व जवाब हो रहे हैं। इसी तरह क़ब्र में भी सवाल होता है कि तेरा रब कौन है? तेरा नबी कौन है? और तेरा दीन क्या है? मोमिन जवाब देता है कि मेरा माबूद सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है और मेरे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. हैं जो ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल थे। हाँ काफ़िर से कोई जवाब नहीं बन पड़ता, वह घबराहट और परेशानी से कहता है कि मुझे इसकी कोई ख़बर नहीं, अंधा बहरा हो जाता है। जैसे फ़रमायाः

مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَفِى الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا.

जो शख़्स यहाँ अन्धा है वह वहाँ भी अन्धा और राह भूला हुआ रहेगा। तमाम दलीलें उनकी निगाहों से हट जायेंगी, रिश्ते-नाते नस्ल व ख़ानदान की कोई क़द्र न होगी, नसब-नामों का कोई सवाल न होगा। हाँ दुनिया में तौबा करने वाले, ईमान और नेकी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बेशक फ़लाह और निजात हासिल कर लेंगे। यहाँ "अ़सा" यक़ीन के मायने में है, यानी मोमिन ज़रूर कामयाब होंगे।

और आपका रब जिस चीज़ को चाहता है पैदा करता है और (जिस हुक्म को चाहता है)	وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَايَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ مَاكَانَ

لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝	पसन्द करता है। उन लोगों को (अहकाम) तजवीज़ करने का कोई हक़ हासिल नहीं। अल्लाह तआ़ला उनके शिर्क से पाक और बरतर है। (68) और आपका रब सब चीज़ों की ख़बर रखता है, जो उनके दिलों में पोशीदा रहता है और जिसको ये ज़ाहिर करते हैं। (69) और अल्लाह तआ़ला वही (कामिल सिफ़ात वाला) है, उसके सिवा कोई माबूद (होने को क़ाबिल) नहीं, तारीफ़ (और प्रशंसा) के लायक़ दुनिया और आख़िरत में वही है, और हुकूमत भी (क़ियामत में) उसी की होगी, तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। (70)

Maktab E Ashraf

हुक्म सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला ही का है

सारी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला), तमाम इख़्तियारात वाला अल्लाह ही है। न उसका शरीक न उसका साझी, जो चाहे पैदा करे, जिसे चाहे अपना ख़ास बन्दा बना ले। जो चाहता है होता है, जो नहीं चाहता हो ही नहीं सकता। तमाम मामलात, सब ख़ैर शर उसी के हाथ में हैं। सबको उसी की तरफ़ लौटकर जाना है, किसी को इख़्तियार ही नहीं। यही लफ़्ज़ इसी मायने में इस आयत में आया है:

مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ.

यानी किसी मोमिन मर्द और मोमिन औ़रत के लिये कोई गुंजाईश नहीं है जबकि अल्लाह और उसका रसूल किसी काम का हुक्म दे दें कि फिर उनको उस काम में कोई इख़्तियार बाक़ी रहे। (सूरः अहज़ाब- 36)

दोनों जगह लफ़्ज़ "मा" नफ़ी करने के लिये है अगरचे इब्ने जरीर रह. ने यह कहा है कि "मा" मायने में "अल्लज़ी" के है, यानी ख़ुदा पसन्द करता है उसे जिसमें भलाई हो। और इसी मायने को लेकर मोतज़िली फ़िर्क़े के लोगों नेक लोगों की रियायत पर दलील पकड़ी है, लेकिन सही बात यही है कि यहाँ "मा" नफ़ी के मायने में है, जैसा कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह से मन्क़ूल है। यह आयत इसी बयान में है कि मख़्लूक़ की पैदाईश में तक़दीर मुक़र्रर करने में, इख़्तियार में ख़ुदा अकेला ही है और किसी शरीक व नज़ीर से पाक है। इसी लिये आयत के ख़ात्मे पर फ़रमाया कि जिन बुतों वग़ैरह को वे अल्लाह का शरीक ठहरा रहे हैं, जो न किसी चीज़ को बना सकें न किसी तरह का इख़्तियार रखें, अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला उन सबसे पाक और बहुत दूर है।

फिर फ़रमाया कि सीनों और दिलों में छुपी हुई बातें भी ख़ुदा जानता है और वे सब भी इसी तरह ज़ाहिर हैं जिस तरह खुल्लम-खुल्ला और ज़ाहिरी बातें। पोशीदा बात कहो या ऐलान से कहो वह सब का आ़लिम (जानने वाला) है। रात में और दिन में जो हो रहा है उस पर कुछ छुपा नहीं। माबूद होने में भी वह यक्ता है, उसके सिवा कोई ऐसा नहीं जिसकी तरफ़ मख़्लूक़ अपनी हाजतें ले जाये, जिससे मख़्लूक़ आ़जिज़ी

Maktab E Ashraf

करे, जो मख़्लूक़ का ठिकाना व मर्कज़ हो, जो इबादत के लायक़ हो। ख़ालिक़े मुख़्तार, रब, मालिक वही है। जो कुछ कर रहा है सब लायक़े तारीफ़ है। उसका अ़दल व हिक्मत उसी के साथ है। उसके हुक्मों को कोई रद्द नहीं कर सकता, उसके इरादों को कोई टाल नहीं सकता। हिक्मत व रहमत का ग़लबा (ज़्यादती) उसी की ज़ाते पाक में है, तुम सब क़ियामत के दिन उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। वह सब को उनके आमाल का बदला देगा। उस पर तुम्हारे कामों में से कोई काम छुपा नहीं, वह उस रोज़ नेकों को जज़ा और बदों को सज़ा देगा और अपनी मख़्लूक़ में फ़ैसले फ़रमायेगा।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰـهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ○ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰـهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ○ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○	आप (उन लोगों से) कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर हमेशा के लिए क़ियामत तक रात ही रहने दे तो ख़ुदा के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रोशनी को ले आए, तो क्या तुम (तौहीद की ऐसी साफ़ दलीलों को) सुनते नहीं? (71) आप कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर हमेशा के लिए क़ियामत तक दिन ही रहने दे, तो ख़ुदा तआ़ला के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए, जिसमें तुम आराम पाओ। क्या तुम (इस क़ुदरत के गवाह को) देखते नहीं? (72) और (वह नेमत देने वाला ऐसा है कि) उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया, ताकि रात में आराम करो और ताकि (दिन में) उसकी रोज़ी तलाश करो, और ताकि (इन दोनों नेमतों पर) तुम (अल्लाह का) शुक्र करो। (73)

अल्लाह के अ़लावा किसी के इख़्तियार में कुछ नहीं

अल्लाह का एहसान देखो कि बग़ैर तुम्हारी कोशिश और तदबीर के दिन रात बराबर आगे पीछे आ रहे हैं। अगर रात ही रात रहे तो तुम आ़जिज़ आ जाओ, तुम्हारे काम रुक जायें, तुम पर ज़िन्दगी वबाल हो जाये, तुम थक जाओ, उकता जाओ। किसी को न पाओ जो तुम्हारे लिये दिन निकाल सके कि तुम उसकी रोशनी में चलो-फिरो, अपने काम-काज कर लो। अफ़सोस तुम सुनकर अनसुनी कर देते हो। इसी तरह अगर वह तुम पर दिन ही दिन रखे और रात आये ही नहीं तो भी तुम्हारी ज़िन्दगी तल्ख़ (कड़वी और बद-मज़ा) हो जाये। बदन का निज़ाम उलट-पुलट हो जाये, थक जाओ, तंग आ जाओ। कोई नहीं जिसे क़ुदरत हो कि वह रात ला सके जिसमें तुम राहत व आराम कर सको, लेकिन तुम आँखें रखते हुए ख़ुदा की इन निशानियों और मेहरबानियों को देखते ही नहीं।

Maktab E Ashraf

यह भी उसका एहसान है कि उसने दिन रात दोनों पैदा कर दिये हैं कि रात को तुम्हें सुकून व आराम हासिल हो और दिन को तुम काम-काज, कारोबार, खेती-बाड़ी, सफ़र और काम-धंधा कर सको। तुम्हें चाहिये कि तुम उस मालिके हक़ीक़ी, उस क़ादिरे मुत्लक़ का शुक्र अदा करो, दिन को रात को उसकी इबादत करो, रात के गुनाहों की तलाफ़ी दिन में और दिन के गुनाहों की तलाफ़ी (भरपाई) रात में कर लिया करो। ये मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) चीज़ें क़ुदरत के नमूने हैं और इसलिये हैं कि तुम नसीहत पकड़ो और रब का शुक्र अदा करो।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ ع ١٥ ١٠

और जिस दिन अल्लाह तआ़ला उनको पुकार कर फ़रमायेगा कि जिनको तुम मेरा शरीक समझते थे वे कहाँ गए? (74) और हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह निकाल लाएँगे, फिर हम (उन मुश्रिकों से) कहेंगे कि (अब) अपनी (कोई) दलील (शिर्क के सही होने के दावे पर) पेश करो, सो (उस वक़्त) उनको मालूम हो जाएगा कि सच्ची बात ख़ुदा ही की थी, और (दुनिया में) जो कुछ बातें गढ़ा करते थे (आज) किसी का पता न रहेगा। (75)

शिर्क की कोई दलील है तो लाओ

मुश्रिकों को दूसरी दफ़ा डाँट दी जायेगी और फ़रमाया जायेगा कि दुनिया में जिन्हें मेरा शरीक ठहरा रहे थे वे आज कहाँ हैं? हर उम्मत में से एक गवाह यानी उस उम्मत का पैग़म्बर चुन लिया जायेगा और मुश्रिकों से कहा जायेगा कि अपने शिर्क की कोई दलील पेश करो। उस वक़्त ये यक़ीन कर लेंगे कि वास्तव में इबादत के लायक़ अल्लाह के सिवा और कोई नहीं। कोई जवाब न दे सकेंगे, हैरान रह जायेंगे और तमाम झूठ और बोहतान भूल जायेंगे।

اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ص وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ق اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ۝ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰكَ اللّٰهُ الدَّارَ

क़ारून मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की बिरादरी में से था, सो वह (माल की ज़्यादती की वजह से) उन लोगों के मुक़ाबले में तकब्बुर करने लगा और (उस माल की ज़्यादती यह थी कि) हमने उसको इस क़द्र ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी कुन्जियाँ कई-कई ताक़तवर शख़्सों को बोझल कर देती थीं। जबकि उसको उसकी बिरादरी ने (समझाने के तौर पर) कहा कि तू (इस माल व शान पर) इतरा मत, वाक़ई अल्लाह तआ़ला इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। (76) और

(यह भी कहा कि) तुझको जितना दे रखा है उसमें आ़लमे आख़िरत की भी जुस्तजू किया कर, और दुनिया से अपना हिस्सा (आख़िरत में ले जाना) मत भूल, और जिस तरह ख़ुदा तआ़ला ने तेरे साथ एहसान किया तू भी (बन्दों के साथ) एहसान किया कर। दुनिया में फ़साद का इच्छुक मत हो, बेशक अल्लाह फ़सादियों को पसन्द नहीं करता। (77)	الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَ اَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ۝

Mahtab E Ashraf

क़ारून हलाक हो गया

मन्क़ूल है कि क़ारून हज़रत मूसा के चचा का लड़का था। उसका नसब यह है- क़ारून पुत्र युस्हब पुत्र क़ाहिस। और मूसा अ़लैहिस्सलाम का नसब यह है मूसा पुत्र इमरान पुत्र क़ाहिस। इब्ने इस्हाक़ की तहक़ीक़ यह है कि यह हज़रत मूसा का चचा था। लेकिन अक्सर उलेमा चचा का लड़का बतलाते हैं। यह बहुत अच्छी आवाज़ वाला था, तौरात बड़ी उम्दा आवाज़ से पढ़ता था, इसलिये इसे लोग मुनव्वर कहते थे। लेकिन जिस तरह सामरी ने निफ़ाक़ का मामला किया था, यह दुश्मने ख़ुदा भी मुनाफ़िक़ हो गया था। चूँकि बहुत मालदार था इसलिये मग़रूर (घमंडी) हो गया और ख़ुदा को भूल बैठा था। क़ौम में आ़म तौर पर जिस लिबास का दस्तूर था इसने उससे बालिश्त भर नीचा लिबास बनवाया था जिससे इसका ग़ुरूर (इतराहट तकब्बुर) और इसकी दौलत ज़ाहिर हो। इसके पास इस क़द्र माल था कि इसके ख़ज़ाने की चाबियाँ उठाने पर एक जमाअ़त मुक़र्रर थी। इसके बहुत से ख़ज़ाने थे, हर ख़ज़ाने की चाबी अलग थी जो बालिश्त भर की थी। जब ये चाबियाँ इसकी सवारी के साथ ख़च्चरों पर लादी जातीं तो इसके लिये साठ ख़च्चर मुक़र्रर थे। वल्लाहु आलम।

क़ौम के बुज़ुर्ग, नेक लोगों और आ़लिमों ने जब इसकी सरकशी और तकब्बुर हद से बढ़ते हुए देखा तो इसे नसीहत की कि इतना मत अकड़, इस क़द्र ग़ुरूर न कर, अल्लाह का नाशुक्रा न बन, वरना ख़ुदा की रहमत से मेहरूम हो जायेगा। क़ौम के वाईज़ीन (नसीहत करने वालों) ने कहा कि यह जो ख़ुदा की नेमतें तेरे पास हैं इन्हें ख़ुदा की रज़ामन्दी के कामों में ख़र्च कर ताकि आख़िरत में भी तेरा हिस्सा हो जाये। हम यह नहीं कहते कि दुनिया में कुछ ऐश व आराम और मस्ती बिल्कुल न कर। नहीं! अच्छा खा, अच्छा पी, अच्छा पहन, अच्छा ओढ़, नेमतों से जायज़ फ़ायदा उठा, निकाह से राहत उठा, हलाल चीज़ें बरत, लेकिन जहाँ अपना ख़्याल रखे वहाँ मिस्कीनों (ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों) का भी ख़्याल रख। जहाँ अपने नफ़्स को नहीं भूलता वहाँ ख़ुदा के तय किये हुए हुक़ूक़ भी मत भूल। तुझ पर तेरे नफ़्स का भी हक़ है, तेरे मेहमान का भी तुझ पर हक़ है, तेरे बाल-बच्चों का भी तुझ पर हक़ है, मिस्कीन ग़रीब का भी तेरे माल में हक़ है। हर हक़दार का हक़ अदा कर और जैसे ख़ुदा ने तेरे साथ सुलूक (अच्छाई का मामला) किया है तू औरों के साथ सुलूक व एहसान कर। अपने इस बिगाड़ और फ़साद वाले रवैये को बदल डाल, अल्लाह की मख़्लूक़ को सताने से बाज़ आ जा। अल्लाह फ़सादियों (बिगाड़ और ख़राबी पैदा करने और फैलाने वालों) से मुहब्बत नहीं रखता।

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ○

क़ारून (यह सुनकर कहने लगा कि) मुझको तो यह सब कुछ मेरी ज़ाती हुनरमन्दी "यानी कमाल और योग्यता" से मिला है, क्या उस (क़ारून) ने (निरंतर ख़बरों से) यह न जाना कि अल्लाह तआ़ला उससे पहले पिछली उम्मतों में ऐसे-ऐसों को हलाक कर चुका है जो (माली) ताक़त में (भी) उससे कहीं बढ़े हुए थे और मजमा (भी) उनका (उससे) ज़्यादा था। और मुजरिमों से (तहक़ीक़ करने के लिए) उनके गुनाहों का सवाल न करना पड़ेगा। (78)

क़ारून की हिमाक़त

क़ौम के उलेमा की नसीहतों को सुनकर क़ारून ने जो जवाब दिया उसका ज़िक्र हो रहा है कि उसने कहा- आप अपनी नसीहतों को रहने दीजिये, मैं ख़ूब जानता हूँ कि ख़ुदा ने मुझे जो दे रखा है उसका मुस्तहिक़ मैं था, मैं एक अ़क़्लमन्द, समझदार, दाना शख़्स हूँ। मैं इस क़ाबिल हूँ और इसे ख़ुदा भी जानता है इसी लिये उसने मुझे यह दौलत दी है। बाज़ इनसानों का यह ख़ास्सा (विशेषता) होता है जैसे क़ुरआन में है कि जब इनसान को तकलीफ़ पहुँचती है तब तो बड़ी आ़जिज़ी से हमें पुकारता है और जब कोई नेमत व राहत उसे हम दे देते हैं तो कह देता है कि यह तो मुझे मेरे इल्म और क़ाबलियत की वजह से हासिल हुई है जैसा कि फ़रमायाः

اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ.

यानी ख़ुदा जानता था कि मैं इसका मुस्तहिक़ हूँ इसलिये उसने मुझे यह दिया है।

एक दूसरी आयत में है कि अगर हम उसे मुसीबत के बाद कोई रहमत चखायें तो कह उठता है कि यह मेरे लिये है, इसका हक़दार तो मैं था ही। बाज़ लोगों ने कहा है कि क़ारून इल्मे कीमिया जानता था, लेकिन यह क़ौल बिल्कुल ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। बल्कि कीमिया का इल्म वास्तव में है ही नहीं, क्योंकि किसी चीज़ के ऐन (असली जोहर) को बदल देना यह ख़ुदा ही की क़ुदरत की बात है, जिस पर कोई और क़ादिर नहीं। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि अगर तमाम मख़्लूक़ भी जमा हो जाये तो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकती। सही हदीस में है कि ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान है- उससे बढ़कर कौन ज़ालिम होगा जो कोशिश करता है कि मेरी तरह पैदाईश करे, अगर वह सच्चा है तो एक ज़र्रा या एक जौ ही बना दे। यह हदीस उनके बारे में है जो तस्वीरें उतारते हैं और सिर्फ़ ज़ाहिरी सूरत की नक़ल करते हैं, उनके लिये यह फ़रमाया। फिर जो यह दावा करे कि वह कीमिया जानता है और एक चीज़ की काया पलट कर सकता है, एक ज़ात से दूसरी ज़ात बना देता है, जैसे लोहे को सोना वग़ैरह तो साफ़ ज़ाहिर है कि यह पूरी तरह झूठ और बिल्कुल मुहाल है, और जहालत व गुमराही है। हाँ यह और बात है कि रंग वग़ैरह बदल कर धोखेबाज़ी करें, लेकिन हक़ीक़त में यह नामुम्किन है। यह कीमिया बनाने वाले जो कोरे झूठे, जाहिल, बदकार और

Maktab E Ashraf

बोहतान बाज़ हैं, यह सिर्फ़ दावा करके मख़्लूक़ को धोखे में डालने वाले हैं। हाँ यह ख़्याल रहे कि अल्लाह के बाज़ वली और नेक बन्दों के हाथों जो करामतें ज़ाहिर हो जाती हैं और कभी-कभी चीज़ें तब्दील हो जाती हैं उनका हमें इनकार नहीं, वह ख़ुदा की तरफ़ से उन पर एक ख़ास फ़ज़्ल होता है और वह भी उनके बस का नहीं होता, न उनके क़ब्ज़े में होता है, न वह कोई कारीगरी, हुनर या इल्म है। वह तो महज़ ख़ुदा के फ़रमान का नतीजा है जो अल्लाह अपने फ़रमाँबरदार नेक बन्दों के हाथों में अपनी मख़्लूक़ को दिखा देता है। चुनाँचे मन्क़ूल है कि हज़रत हैवा बिन शुरैह मिस्री रह. से एक मर्तबा किसी साईल (माँगने वाले) ने सवाल किया, आपके पास कुछ न था और उसकी हाजतमन्दी और ज़रूरत को देखकर आप बहुत रन्जीदा हो रहे थे, आख़िर आपने एक कंकर ज़मीन से उठा लिया और कुछ देर अपने हाथों में उलट-पुलट करके ज़रूरत मन्द की झोली में डाल दिया तो वह सोने का डला बन गया। मोजिज़े और करामतें हदीसों और बुज़ुर्गों के अक़वाल में और भी बहुत सी मज़कूर हैं जिन्हें यहाँ बयान करना मज़मून को लम्बा करना होगा।

बाज़ हज़रात का क़ौल है कि क़ारून "इस्मे आज़म" जानता था जिसे पढ़कर उसने अपनी मालदारी की दुआ़ की तो इस क़द्र दौलतमन्द हो गया। क़ारून के इस जवाब के रद्द में अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि यह ग़लत है कि मैं जिस पर मेहरबान होता हूँ उसे दौलतमन्द कर देता हूँ, नहीं! उससे पहले उससे ज़्यादा दौलतमन्द और ख़ुशहाल लोगों को मैंने तबाह कर दिया है, तो यह समझ लेना कि मालदारी मेरी मुहब्बत की निशानी है, बिल्कुल ग़लत है। जो मेरा शुक्र अदा न करे, कुफ़्र पर जमा रहे, उसका अन्जाम बुरा होता है। क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह तआ़ला इनसे ज़्यादा मालदार और आबादी में अधिकता वाली बस्तियों को हलाक कर चुका है जो माल और अफ़राद में इनसे बहुत ज़्यादा थे। अल्लाह तआ़ला उन्हें उनके कुफ़्र और शिर्क की वजह से हलाक कर चुका है। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि गुनाहगारों से उनके गुनाहों की ज़्यादती और अधिकता की वजह से सवाल और पूछगछ भी न होगी। यानी उनके गुनाहों के दफ़्तर इतने ज़्यादा भरे होंगे कि उनसे पूछगछ करना ही बेकार होगा।

उसका ख़्याल था कि मुझमें ख़ैर है इसलिये ख़ुदा का यह फ़ज़्ल मुझ पर हुआ है, वह जानता है कि मैं इस मालदारी का अहल (हक़दार) हूँ। अगर ख़ुदा मुझसे ख़ुश न होता और मुझे अच्छा आदमी न जानता तो मुझे अपनी यह नेमत भी न देता।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِىْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ
يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ
اُوْتِىَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝

फिर (एक बार ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि) वह अपने ठाठ (और शान) से अपनी बिरादरी के सामने निकला। जो लोग (उसकी बिरादरी में) दुनिया के तालिब थे (अगरचे मोमिन हों) कहने लगे, क्या ख़ूब होता कि हमको भी वह साज़ो-सामान मिला होता जैसा कि क़ारून को मिला है। वाक़ई वह बड़ा नसीब वाला है। (79) और जिन लोगों को (दीन की) समझ अ़ता हुई थी वे (उन लालचियों से) कहने लगे, अरे तुम्हारा नास हो, (तुम इस दुनिया पर क्या

Maktab E Ashraf

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ○

ललचाते हो) अल्लाह के घर का सवाब (इस दुनियावी शान-शौकत से) हज़ार दर्जे बेहतर है, जो ऐसे शख़्स को मिलता है कि ईमान लाए और नेक अ़मल करे, और (फिर) वह (सवाब पूरे तौर पर) उन्हीं को दिया जाता है जो (दुनिया की हिर्स व लालच से) सब्र करने वाले हैं। (80)

ग़लत तमन्नायें

क़ारून एक दिन बहुत ही क़ीमती पोशाक पहनकर, सज-धजकर, उम्दा सवारी पर सवार होकर अपने गुलामों को आगे पीछे क़ीमती और उम्दा वर्दियाँ पहनाये हुए लेकर बड़े ठाठ से इतराता और अकड़ता हुआ निकला। उसका यह ठाठ और यह सज-धज देखकर दुनिया से मुहब्बत करने वालों के मुँह में पानी भर आया और कहने लगे काश कि हमारे पास इतना माल होता। यह तो बड़ा ख़ुशनसीब और बड़ी क़िस्मत वाला है। उलेमा-ए-किराम ने उनकी यह बात सुनकर उन्हें इस ख़्याल से रोकना चाहा और उन्हें समझाने लगे कि देखो ख़ुदा ने जो कुछ अपने मोमिन और नेक बन्दों के लिये अपने यहाँ तैयार कर रखा है वह इससे कहीं ज़्यादा बेहतर, उम्दा, देरपा और रौनक़दार है। तुम्हें उन दर्जों को हासिल करने के लिये इस दो दिन की ज़िन्दगी को सब्र से गुज़ारना चाहिये। जन्नत साबिरों (सब्र करने वालों) का हिस्सा है।

यह मतलब भी है कि ऐसे पाक कलिमे सब्र करने वालों ही की ज़बान से निकलते हैं जो दुनिया की मुहब्बत से दूर और आख़िरत की मुहब्बत में चूर होते हैं। इस सूरत में मुम्किन है कि यह कलाम उन वाअ़िज़ों (नसीहत करने वालों और समझाने वालों) का न हो, बल्कि उनके कलाम की और उनकी तारीफ़ में यह पिछला जुमला ख़ुदा की तरफ़ से ख़बर हो।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۚ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ○ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ

फिर हमने उस (क़ारून) को और उसके महल-सराय को (उसकी शरारत बढ़ जाने से) ज़मीन में धंसा दिया। सो कोई ऐसी जमाअ़त न हुई जो उसको अल्लाह (के अ़ज़ाब) से बचा लेती, और न वह ख़ुद ही अपने को बचा सका। (81) और कल (यानी पिछले क़रीबी ज़माने में) जो लोग उस जैसे होने की तमन्ना कर रहे थे, वे (उसको ज़मीन में धंसता देखकर) कहने लगे, बस जी यूँ मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और (जिसको चाहे) तंगी से देने लगता

है। अगर हम पर अल्लाह तआ़ला की मेहरबानी न होती तो हमको भी धंसा देता, बस जी मालूम हुआ कि काफ़िरों को कामयाबी नहीं होती। (82)	وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

Mustafa E Ashraf

क़ारून का ज़मीन के अन्दर धंसना

ऊपर क़ारून की सरकशी और बेईमानी का ज़िक्र हो चुका, यहाँ उसके अन्जाम का बयान हो रहा है। एक हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि एक शख़्स अपना तहबन्द लटकाये फ़ख़्र (गुरूर और तकब्बुर) से जा रहा था कि उसे ज़मीन में धंसा दिया गया जो क़ियामत तक धंसता हुआ चला जायेगा। (बुख़ारी)

मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि दो चादरों में अकड़ता हुआ निकला था कि ख़ुदा ने ज़मीन को हुक्म दिया- इसे निगल जा। 'किताबुल-अ़जाईब' में है, नोफ़ल बिन मुसाहिक़ कहते हैं कि नजरान की मस्जिद में मैंने एक नौजवान को देखा जवानी के नशे में चूर, गठे हुए बदन वाला बाँका तिरछा, अच्छे रंग व रौग़न वाला ख़ूबसूरत शक्ल वाला। मैं निगाहें जमाकर उसके जमाल व कमाल को देखने लगा तो उसने कहा क्या देख रहे हो? मैंने कहा आपके हुस्न व जमाल को देख रहा हूँ और ताज्जुब मालूम हो रहा है। उसने जवाब दिया तू ही क्या ख़ुद अल्लाह तआ़ला को भी ताज्जुब है। नोफ़ल कहते हैं कि इस कलिमे के कहते ही वह घटने लगा, उसका रंग रूप उड़ने लगा और क़द पस्त होने लगा, यहाँ तक कि एक बालिश्त के बराबर रह गया, जिसे उसका कोई क़रीबी रिश्तेदार अपनी आस्तीन में डालकर ले गया (यह रिवायत मोतबर नहीं, न मालूम कैसे नक़ल कर दिया गया। हज़रत अ़ल्लामा अन्ज़र शाह कश्मरी रह. ने इसे बेबुनियाद क़रार दिया है। **हिन्दी अनुवादक**)।

यह भी मज़कूर है कि क़ारून की हलाकत हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की बददुआ़ से हुई थी और इसके सबब में बहुत कुछ इख़्तिलाफ़ (अलग-अलग रायें) है। एक सबब तो यह बयान किया जाता है कि उस मलऊन ने एक बदकार औ़रत को कुछ माल देकर इस बात पर आमादा किया कि ऐन उस वक़्त जब हज़रत मूसा बनी इस्राईल में खड़े होकर ख़ुतबा दे रहे हों, वह आये और आप से कहे कि तू वही है ना जिसने मेरे साथ ऐसा-ऐसा (यानी बुरा काम) किया। उस औ़रत ने यही कहा। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम काँप उठे और उसी वक़्त नमाज़ की नीयत बाँध ली, दो रक्अ़त अदा करके उस औ़रत की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे तुझे उस ख़ुदा की क़सम जिसने समुद्र में से रास्ता दिया और तेरी क़ौम को फ़िरऔ़न के मज़ालिम (अत्याचारों) से निजात दी, और भी बहुत से एहसान उसने किये कि तू जो कुछ सच्चा वाक़िआ़ है उसे बयान कर। यह सुनकर उस औ़रत का रंग बदल गया और उसने सही वाक़िआ़ सब के सामने बयान कर दिया और अपनी ख़ता की अल्लाह से माफ़ी माँगी और सच्चे दिल से तौबा कर ली। हज़रत मूसा फिर सज्दे में गिर गये और क़ारून की सज़ा चाही, ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से 'वही' नाज़िल हुई कि मैंने ज़मीन को तेरे ताबे कर दिया है। आपने सज्दे से सर उठाया और ज़मीन से कहा कि तू इसे और इसके महल को निगल ले। ज़मीन ने यही किया।

दूसरा सबब यह बयान किया जाता है कि जब क़ारून की सवारी इस आन-बान से निकली, सफ़ेद क़ीमती ख़च्चर पर बहुत क़ीमती पोशाक पहने सवार था, उसके ग़ुलाम भी सब के सब रेशमी लिबासों में

Maktab E Ashraf

थे। उधर मूसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुतबा पढ़ रहे थे, बनी इस्राईल का मजमा था। यह जब वहाँ से निकला तो सब की निगाहें इस पर और इसकी धूम-धाम पर लग गईं। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इसे देखकर पूछा आज इस तरह कैसे निकले हो? उसने कहा बात यह है कि एक बात ख़ुदा ने तुम्हें दे रखी है और एक फ़ज़ीलत मुझे दे रखी है, अगर तुम्हारे पास नुबुव्वत है तो मेरे पास रुतबा और शान व शौकत है, और अगर आपको मेरी फ़ज़ीलत में शक हो तो मैं तैयार हूँ कि आप और मैं चलें और ख़ुदा से दुआ़ करें। देख लीजिये कि ख़ुदा किसकी दुआ़ क़बूल फ़रमाता है। आप इस बात पर तैयार हो गये और उसे लेकर चले। हज़रत मूसा ने फ़रमाया ले अब पहले मैं दुआ़ करूँ या तू करता है? उसने कहा नहीं मैं करूँगा। अब उसने दुआ़ माँगनी शुरू की, ख़त्म कर ली लेकिन क़बूल न हुई। हज़रत मूसा ने कहा अब मैं दुआ़ करता हूँ। उसने कहा हाँ कीजिये। आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि ख़ुदाया ज़मीन को हुक्म कर कि जो मैं कहूँ मान ले। अल्लाह ने आपकी दुआ़ क़बूल फ़रमाई और 'वही' आई कि मैंने ज़मीन को तेरी इताअ़त (हुक्म मानने) का हुक्म दे दिया है। हज़रत मूसा ने यह सुनकर ज़मीन से फ़रमाया ऐ ज़मीन! इसे और इसके लोगों को पकड़ ले, वहीं ये लोग अपने क़दमों तक ज़मीन में धंस गये। आपने फ़रमाया और पकड़ ले, ये अपने घुटनों तक धंस गये, आपने फ़रमाया और पकड़ ले, ये मोंढों तक ज़मीन में धंस गये। फिर फ़रमाया इनके ख़ज़ाने और इनके माल भी यहीं ले आ। उसी वक़्त उनके तमाम ख़ज़ाने और तमाम माल आ गये और उन्होंने अपनी आँखों से उन सब को देख लिया। फिर आपने अपने हाथ से इशारा किया कि इनको इन ख़ज़ानों समेत अपने अन्दर कर ले। उसी वक़्त ये सब ग़ारत हो गये और ज़मीन जैसी थी वैसी ही हो गई।

नक़ल है कि सातवीं ज़मीन तक ये लोग यूँ ही धंसते चले गये। यह क़ौल भी है कि हर रोज़ ये लोग एक इनसान के क़द के बराबर नीचे की तरफ़ धंसते जा रहे हैं, क़ियामत तक इसी अ़ज़ाब में रहेंगे। यहाँ पर और भी बनी इस्राईली रिवायतें बहुत सी हैं लेकिन हमने उनका बयान छोड़ दिया है। न तो माल उन्हें काम आया न शान व शौकत और दबदबा, न दौलत व जायदाद। न कोई उनकी मदद के लिये उठा न ये ख़ुद अपना बचाव कर सके। तबाह हो गये, बेनिशान हो गये, मिट गये और मिटा दिये गये। अल्लाह तआ़ला हमें अपनी पनाह में रखे।

उस वक़्त तो उन लोगों की भी आँखें खुल गईं जो क़ारून के माल और उसकी इज़्ज़त को ललचाई हुई नज़रों से देखा करते थे और उसे बड़े नसीब वाला समझ कर उस पर रश्क (ईर्ष्या) करते थे कि काश हम ऐसे ही दौलत मन्द होते। वे कहने लगे अब देख लिया कि वाक़ई सच है कि दौलतमन्द होना कुछ ख़ुदा की रज़ामन्दी का सबब नहीं, यह तो ख़ुदा की हिक्मत है जिसे चाहे ज़्यादा दे जिसे चाहे कम कर दे। जिस पर चाहे तुस्अ़त करे जिस पर चाहे तंगी करे। उसकी हिक्मतें वही जानता है। एक हदीस में भी है कि अल्लाह तआ़ला ने तुम में अख़्लाक़ की भी इसी तरह तक़सीम की है जिस तरह रोज़ी की, माल तो ख़ुदा की तरफ़ से उसके दोस्तों को भी मिलता है और उसके दुश्मनों को भी। अलबत्ता ईमान ख़ुदा की तरफ़ से उसी को मिलता है जिसे ख़ुदा चाहता हो। क़ारून के इस धंसाये जाने को देखकर वे जो उस जैसा बनने की उम्मीदें कर रहे थे कहने लगे कि अल्लाह का लुत्फ़ व एहसान हम पर न होता तो हमारी उस तमन्ना के बदले जो हमारे दिल में थी कि काश हम भी ऐसे ही होते तो अल्लाह तआ़ला हमें भी इसके साथ धंसा देता। वह काफ़िर था और काफ़िर ख़ुदा के यहाँ फ़लाह (कामयाबी और ख़ैर पाने) के लायक़ नहीं होते। न उन्हें दुनिया में कामयाबी मिले न आख़िरत ही में छुटकारा पायें।

Maktab-E-Ashraf

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ○ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○

यह आलमे-आख़िरत हम उन्हीं लोगों के लिए ख़ास करते हैं जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना, और अच्छा अन्जाम परहेज़गार लोगों को मिलता है। (83) जो शख़्स (क़ियामत के दिन) नेकी लेकर आएगा उसको उस (नेकी की वजह) से बेहतर (बदला) मिलेगा, और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा सो ऐसे लोगों को जो कि बुराई के काम करते हैं उतना ही बदला मिलेगा जितना वे करते थे। (84)

आख़िरत का जहान

फ़रमाता है कि जन्नत और आख़िरत की नेमत सिर्फ़ उन्हीं को मिलेगी जिनके दिल अल्लाह के ख़ौफ़ से भरे हुए हों और दुनिया की ज़िन्दगी तवाज़ो, आजिज़ी, विनम्रता और अख़्लाक़ के साथ गुज़ार दें। किसी पर ऊँचाई बड़ाई न समझें। इधर-उधर फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) न फैलायें, सरकशी और बुराई न करें। किसी का माल नाहक़ न मारें, ख़ुदा की ज़मीन पर ख़ुदा की नाफ़रमानियाँ न करें।

हज़रत अ़ली से मन्क़ूल है कि जिसे यह बात अच्छी लगे कि उसकी जूती का तस्मा अपने साथी की जूती के तस्मे से अच्छा हो तो वह भी इस आयत में दाख़िल है। इससे मुराद यह है कि जब वह फ़ख़्र व ग़ुरूर करे, और अगर सिर्फ़ सजने-संवरने के तौर पर चाहता है तो इसमें कोई हर्ज नहीं। जैसे सही हदीस से साबित है कि एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह! मेरी तो यह ख़ुशी रहती है कि मेरी चादर भी अच्छी हो, मेरी जूती भी अच्छी हो, तो क्या यह तकब्बुर है? आपने फ़रमाया नहीं नहीं! यह ख़ूबसूरती है। अल्लाह तआ़ला जमील (ख़ूबसूरती और जमाल वाला) है और वह जमाल (ख़ूबसूरती) को पसन्द फ़रमाता है। फिर फ़रमाया जो हमारे पास नेकी लायेगा वह बहुत सी नेकियों का सवाब पायेगा। यह फ़ज़्ल व मेहरबानी का मामला है और बुराई का बदला सिर्फ़ उसी के मुताबिक़ सज़ा है, यह अ़दल व इन्साफ़ का मामला है। एक दूसरी आयत में है:

مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ .... الخ

जो बुराई लेकर आयेगा वह औंधे मुँह आग में जायेगा। तुम्हें वही बदला दिया जायेगा जो तुम करते रहे।

اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ

जिस ख़ुदा ने आप पर क़ुरआन (के अहकाम पर अ़मल और उसकी तब्लीग़) को फ़र्ज़ किया है वह आपको (आपके) असली वतन (यानी मक्का शरीफ़) में फिर पहुँचाएगा। आप (उनसे)

Maktab E Ashraf

بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ○ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ○ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۣ كُلُّ شَىْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ○ ع	फ़रमा दीजिए कि मेरा रब ख़ूब जानता है कि (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) कौन सच्चा दीन लेकर आया है और कौन खुली गुमराही में (मुब्तला) है। (85) और आपको (अपने नबी होने से पहले) यह उम्मीद न थी कि आप पर यह किताब नाज़िल की जाएगी, मगर महज़ आपके रब की मेहरबानी से इसका उतरना हुआ, सो आप उन काफ़िरों की ज़रा भी ताईद न कीजिए। (86) और जब अल्लाह के अहकाम आप पर नाज़िल हो चुके तो ऐसा न होने पाए (जैसा अब तक भी नहीं होने पाया) कि ये लोग आपको उन अहकाम से रोक दें और आप (बदस्तूर) अपने रब (के दीन) की तरफ़ (लोगों को) बुलाते रहिए, और उन मुश्रिकों में शामिल न होईए। (87) और (जिस तरह अब तक आप शिर्क से पाक और महफ़ूज़ हैं उसी तरह आगे भी) अल्लाह तआ़ला के साथ किसी माबूद को न पुकारना, उसके सिवा कोई माबूद (होने के क़ाबिल) नहीं, (इसलिए कि) सब चीज़ें फ़ना होने वाली हैं सिवाय उसकी ज़ात के, उसी की हुकूमत है (जिसका पूरे तौर पर ज़हूर क़ियामत में है) और उसी के पास तुम सबको जाना है। (पस सबको उनके किये का बदला देगा)। (88)

الثلثة ٩ ع ١٢

एक वायदा

अल्लाह तआ़ला अपने नबी को हुक्म फ़रमाता है कि रिसालत की तब्लीग़ (अल्लाह के पैग़ाम का पहुँचाना) करते रहें, लोगों को कलामे ख़ुदा सुनाते रहें, ख़ुदा तआ़ला आपको क़ियामत की तरफ़ वापस ले जाने वाला है। और वहाँ नुबुव्वत के बारे में पूछगछ और सवाल होगा। जैसे फ़रमान है:

فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ.

यानी उम्मतों से और रसूलों से सबसे हम दरियाफ़्त फ़रमायेंगे।

एक और आयत में है कि रसूलों को जमा करके ख़ुदा तआ़ला पूछेगा कि तुम्हें क्या जवाब दिया गया? एक दूसरी आयत में है कि नबियों को और गवाहों को लाया जायेगा। 'मआ़द' से मुराद जन्नत भी हो सकती है, मौत भी हो सकती है, दोबारा की ज़िन्दगी भी हो सकती है कि दोबारा जियें और जन्नत में

दाख़िल हों। सही बुख़ारी में है कि इससे मुराद मक्का है। मुजाहिद रह. से नक़ल है कि इससे मुराद मक्का है जो आपकी पैदाईश की जगह (जन्म-भूमि) थी। इमाम ज़ह्हाक रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर मक्का से निकले, अभी जोहफ़ा ही में थे कि आपके दिल में मक्के का शौक़ पैदा हुआ। पस यह आयत उतरी और आपसे वायदा हुआ कि आप वापस मक्का जायेंगे। इससे यह भी निकलता है कि यह आयत मदनी हो हालाँकि पूरी सूरत मक्की है। यह भी कहा गया है कि मुराद इससे बैतुल-मुक़द्दस है, शायद इस कहने वाले की ग़र्ज़ इससे भी क़ियामत है, इसलिये कि बैतुल-मुक़द्दस ही मेहशर की ज़मीन है। इन तमाम अक़्वाल में मुताबक़त (तालमेल) की सूरत यह है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कभी तो इसकी तफ़सीर की आपके मक्के की तरफ़ लौटने से जो फ़त्हे-मक्का से पूरी हुई, और यह हुज़ूर सल्ल. की उम्र के पूरा होने की एक ज़बरदस्त निशानी थी जैसा कि आपने सूरः नस्र (इज़ा जा-अ......) की तफ़सीर में फ़रमाया, जिसकी हज़रत उमर रज़ि. ने भी मुवाफ़क़त की थी, और नबी करीम हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि तू जो जानता है वही मैं भी जानता हूँ। यही वजह है कि इन्हीं से इस आयत से जहाँ मक्का मन्क़ूल है वहाँ हुज़ूर सल्ल. का इन्तिक़ाल भी नक़ल है। और कभी क़ियामत से तफ़सीर की, क्योंकि मौत के बाद क़ियामत है। और कभी जन्नत से तफ़सीर की जो आपका ठिकाना और आपकी तब्लीग़े रिसालत का बदला है कि आपने जिन्नात व इनसानों को ख़ुदा के दीन की दावत दी और आप तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा कामिल, ज़्यादा फ़सीह और ज़्यादा अफ़ज़ल थे।

फिर फ़रमाया कि अपने मुख़ालिफ़ों और झुठलाने वालों से कह दो कि हम में से हिदायत वालों और गुमराही वालों को ख़ुदा अच्छी तरह जानता है। तुम देख लोगे कि अच्छा अन्जाम किसका होता है और दुनिया और आख़िरत में बेहतरी और भलाई किसके हिस्से में आती है।

फिर अपनी एक और ज़बरदस्त नेमत बयान फ़रमाता है कि 'वही' के उतरने से पहले आपको कभी यह ख़्याल भी न गुज़रता था कि आप पर अल्लाह की किताब नाज़िल होगी, यह तो तुझ पर और तमाम मख़्लूक़ पर रब की रहमत हुई कि उसने तुझ पर अपनी पाक और अफ़ज़ल किताब नाज़िल फ़रमाई। अब तुम्हें हरगिज़ काफ़िरों का मददगार न होना चाहिये बल्कि उनसे अलग रहना चाहिये, उनसे बेज़ारी ज़ाहिर कर देनी चाहिये और उनसे मुख़ालफ़त का ऐलान कर देना चाहिये।

फिर फ़रमाया कि ख़ुदा की तरफ़ से उतरी हुई आयतों से ये लोग कहीं तुझे रोक न दें, यानी जो तेरे दीन की मुख़ालफ़त करते और लोगों को तेरी ताबेदारी से रोकते हैं तू इससे ग़मगीन और परेशान न होना, अपने काम पर लगे रहना, अल्लाह तेरे कलिमे को पूरा करने वाला है, तेरे दीन की ताईद करने वाला है, तेरी रिसालत को ग़ालिब करने वाला है। तमाम दीनों पर तेरे दीन को ऊँचा करने वाला है। तू अपने रब की इबादत की तरफ़ लोगों को बुलाता रह, जो अकेला और ला-शरीक है। तुझे नहीं चाहिये कि मुश्रिकों का साथ दे। अल्लाह के साथ किसी और को न पुकार, इबादत के लायक़ वही है। माबूद होने के क़ाबिल उसी की अ़ज़ीमुश्शान ज़ात है, वही हमेशा रहने वाला और बाक़ी है। वह ज़िन्दा और तमाम चीज़ों को क़ायम रखने और थामने वाला है, तमाम मख़्लूक़ मर जायेगी और उस पर फ़ना कभी तारी न होगी। जैसे फ़रमायाः

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝

हर चीज़ फ़ानी है, बस सिर्फ़ तेरे रब का चेहरा (यानी ज़ाते पाक) ही बाक़ी रह जायेगा। जो बुज़ुर्गी

Maktab E Ashraf

और बड़ाई वाला है। 'वज्हुन्' (चेहरे) से मुराद ज़ात है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा सच्चा कलिमा लबीद शायर का है जो उसने कहा है:

اَلَا كُلُّ شَیْءٍ مَا خَلَا اللّٰهُ بَاطِلٌ

याद रखो कि ख़ुदा के सिवा सब कुछ बातिल है।

मुजाहिद और सुफ़ियान सौरी रह. से मन्क़ूल है कि हर चीज़ बातिल है मगर वो काम जो ख़ुदा की रज़ा हासिल करने के लिये किये जायें उनका सवाब रह जाता है। शायरों के शे'रों में भी 'वज्हुन' का लफ़्ज़ इसी मतलब के लिये इस्तेमाल किया गया है। मुलाहिज़ा हो:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ ذَنْبًا لَسْتُ مُحْصِيَهٗ ☆ رَبَّ الْعِبَادِ اِلَيْهِ الْوَجْهُ وَالْعَمَلُ

मैं अल्लाह से जो तमाम बन्दों का रब है, जिसकी तरफ़ तवज्जोह और इरादा है, जिसके लिये अ़मल हैं अपने उन तमाम गुनाहों की बख़्शिश चाहता हूँ जिन्हें मैं शुमार भी नहीं कर सकता।

यह क़ौल पहले क़ौल के ख़िलाफ़ नहीं। यह भी अपनी जगह सही है कि इनसान के तमाम आमाल अकारत (बेकार) हैं, सिर्फ़ उन्हीं नेकियों के बदले का मुस्तहिक़ है जो ख़ालिस अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये की हों। और पहले क़ौल का मतलब भी बिल्कुल सही है कि सब जानदार व बेजान चीज़ फ़ानी और ख़त्म होने वाली है सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआ़ला की ज़ाते पाक है जो फ़ना और ज़वाल से ऊपर है। वही अव्वल व आख़िर है, हर चीज़ से पहले था और हर चीज़ के बाद रहेगा।

मन्क़ूल है कि जब हज़रत इब्ने उमर रज़ि. अपने दिल को मज़बूत करना चाहते थे तो जंगल में किसी खंडर के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और दर्दनाक आवाज़ से कहते कि इसका बानी (बनाने वाला) कहाँ है? फिर ख़ुद जवाब में यही आयत पढ़ते। हुक्म, मुल्क और मिल्कियत उसी की है, मालिक व क़ाबिज़ और हर तरह का इख़्तियार रखने वाला वही है। उसके हुक्म को कोई रद्द नहीं कर सकता। क़ियामत के दिन में सब उसी की तरफ़ लौटाये जायेंगे। वह सब को उनकी नेकियों बदियों का बदला देगा। नेक को नेक बदला और बुरों को बुरी सज़ा।

अल्लाह का शुक्र है कि सूरः क़सस की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः अ़न्कबूत

सूरः अ़न्कबूत मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 69 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

الٓمّٓ ۝ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ
يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ۝ اَمْ حَسِبَ
الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ط
سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) (बाज़े मुसलमान जो काफ़िरों के तकलीफ़ पहुँचाने से घबरा जाते हैं, तो) क्या उन लोगों ने यह ख़्याल कर रखा है कि वे इतना कहने पर छूट जाएँगे कि हम ईमान ले आए और उनको (क़िस्म-क़िस्म की मुसीबतों से) आज़माया न जाएगा? (2) और हम तो (ऐसे ही वाक़िआ़त से) उन लोगों को भी आज़मा चुके हैं जो उनसे पहले (मुसलमान) हो गुज़रे हैं। सो अल्लाह तआ़ला उन लोगों को (ज़ाहिरी इल्म से) जानकर रहेगा जो (ईमान के दावे में) सच्चे थे, और झूठों को भी जानकर रहेगा। (3) हाँ, क्या जो लोग बुरे-बुरे काम कर रहे हैं वे यह ख़्याल करते हैं कि हमसे कहीं निकल भागेंगे? उनकी यह तजवीज़ निहायत ही बेहूदा है। (4)

इम्तिहान और आज़माईश ज़रूरी है

हुरूफ़े मुक़त्तआ़त की बहस सूरः ब-क़रह के शुरू में गुज़र चुकी है।

फिर फ़रमाता है- यह नामुम्किन है कि मोमिनों को भी इम्तिहान से छोड़ दिया जाये। सही हदीस में है कि सबसे ज़्यादा सख़्त इम्तिहान नबियों का होता है, फिर नेक लोगों का, फिर उनसे कम दर्जे वाले, फिर उनसे कम दर्जे वाले का। इनसान का इम्तिहान उसके दीन के अन्दाज़े के मुताबिक़ होता है, अगर वह अपने दीन में सख़्त है तो मुसीबतें भी सख़्त नाज़िल होती हैं। इसी मज़मून का बयान इस आयत में भी है:

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ.

क्या तुमने यह गुमान कर लिया है कि तुम छोड़ दिये जाओगे? हालाँकि अभी अल्लाह तआ़ला ने यह ज़ाहिर नहीं किया कि तुममें से मुजाहिद कौन है और साबिर कौन है।

इसी तरह सूरः बराअत और सूरः ब-क़रह में गुज़र चुका है कि क्या तुमने यह सोच रखा है कि तुम

जन्नत में यूँ ही चले जाओगे? और पहले लोगों जैसे सख़्त इम्तिहान के मौक़े तुम पर न आयेंगे, कि उन्हें भूख दुख दर्द वग़ैरह पहुँचे, यहाँ तक कि रसूल और उनके साथ के ईमान वाले बोल उठे कि ख़ुदा की मदद कहाँ है? यक़ीन मानो कि ख़ुदा की मदद क़रीब है।

यहाँ भी फ़रमाया कि इनसे पहले मुसलमानों की भी जाँच-पड़ताल की गई, उन्हें भी सर्द गर्म चखाया ताकि जो अपने दावे में सच्चे हैं और जो सिर्फ़ ज़बानी दावा करते हैं उनमें तमीज़ हो जाये। इससे यह न समझा जाये कि ख़ुदा उसे जानता न था, वह हो चुकी बात को और होने वाली बात को ख़ूब जानता है। इस पर अहले सुन्नत वल-जमाअ़त के तमाम इमामों का इजमा (सर्वसम्मति) है। पस यहाँ 'इल्म' (जानना) 'रुअ्यत' यानी देखने के मायने में है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. 'लिनअ्ल-म' के मायने 'लि-नरा' करते हैं। क्योंकि देखने का ताल्लुक़ मौजूद चीज़ों से होता है और इल्म इससे आ़म है। फिर फ़रमाता है जो ईमान नहीं लाये वे भी यह गुमान न करें कि इम्तिहान से बच जायेंगे, बड़े-बड़े अ़ज़ाब और सख़्त सज़ायें उनकी घात में हैं। ये हमारे हाथ से निकल नहीं सकते, हमसे आगे बढ़ नहीं सकते, इनके यह गुमान निहायत बुरे हैं जिनका बुरा नतीजा वे जल्द ही देख लेंगे।

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ○ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○	जो शख़्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है, सो (उसको तो ऐसे-ऐसे हादसों से परेशान न होना चाहिए क्योंकि) अल्लाह तआ़ला (से मिलने) का वह मुक़र्ररा वक़्त ज़रूर आने वाला है (जिससे सारे ग़म दूर हो जाएँगे), और वह सब कुछ सुनता, सब कुछ जानता है। (5) और जो शख़्स मेहनत करता है, वह अपने ही (नफ़े के) लिए मेहनत करता है, (वरना) ख़ुदा तआ़ला को (तो) तमाम जहान वालों में किसी की हाजत नहीं। (6) और (वह नफ़ा जो नेकी करने से पहुँचता है उसका बयान यह है कि) जो लोग ईमान लाते हैं और नेक काम करते हैं। हम उनके गुनाह उनसे दूर कर देंगे और उनको उनके (उन) आमाल (ईमान और नेक कामों) का (हक़ से) ज़्यादा अच्छा बदला देंगे। (7)

अल्लाह की मुलाक़ात, जिससे बढ़कर कोई दौलत नहीं

जिन्हें आख़िरत के बदलों की उम्मीद है और उसे सामने रखकर वे नेकियाँ करते हैं, उनकी उम्मीदें पूरी होंगी और उन्हें न ख़त्म होने वाले सवाब मिलेंगे। अल्लाह दुआ़ओं का सुनने वाला और तमाम कायनात का जानने वाला है। ख़ुदा का ठहराया हुआ वक़्त टलता नहीं। फिर फ़रमाता है कि हर नेक अ़मल करने वाला अपने ही नफ़े के लिये करता है। अल्लाह तआ़ला बन्दों के आमाल से बेपरवाह है, अगर सारे इनसान मुत्तक़ी (नेक और परहेज़गार) बन जायें तो ख़ुदा की बादशाही में कोई इज़ाफ़ा नहीं हो सकता। हज़रत हसन

Maktaba Ashraf

फ़रमाते हैं कि जिहाद तलवार चलाने का ही नाम नहीं, इनसान नेकियों की कोशिश में लगा रहे यह भी एक तरह का जिहाद है। इसमें शक नहीं कि तुम्हारी नेकियाँ ख़ुदा को कोई काम नहीं आतीं, लेकिन फिर भी उसकी यह मेहरबानी है कि वह तुम्हें नेकियों पर बदले देता है। उनकी वजह से तुम्हारी बुराईयाँ माफ़ कर देता है, छोटी से छोटी नेकी की क़द्र करता है और उस पर बड़े से बड़ा अज्र देता है। एक-एक नेकी का सात-सात सौ गुना बदला इनायत फ़रमाता है और बदी को या तो बिल्कुल ही माफ़ फ़रमा देता है या उसी के बराबर सज़ा देता है। वह ज़ुल्म से पाक है, नेकियों को बढ़ाता है और अपने पास से बड़ा अज्र देता है। ईमान वालों की मुताबिके सुन्नत नेकियाँ क़बूल फ़रमाता है, उनके गुनाहों से दरगुज़र कर लेता है और उनके अच्छे आमाल का बदला इनायत फ़रमाता है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝	और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है। और (उसके साथ यह भी कह दिया है कि) अगर वे दोनों तुझ पर इस बात का दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा शरीक ठहराए जिस (के माबूद होने) की कोई (सही) दलील तेरे पास नहीं है, तो तू उनका कहना न मानना, तुम सबको मेरे ही पास लौटकर आना है। सो मैं तुमको तुम्हारे सब काम (नेक हों या बुरे) जतला दूँगा। (8) और (तुममें) जो लोग ईमान लाए होंगे और नेक अमल किए होंगे, हम उनको नेक बन्दों (के दर्जे) में (जो कि जन्नत है) दाख़िल कर देंगे। (9)

माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक

पहले अपनी तौहीद (एक माबूद होने) पर मज़बूती के साथ कारबन्द रहने का हुक्म फ़रमाकर अब माँ-बाप के साथ अच्छे सुलूक व एहसान का हुक्म देता है। क्योंकि उन्हीं से इनसान का वजूद होता है। बाप ख़र्च करता और परवरिश करता है। माँ मुहब्बत रखती और पालती है। एक दूसरी आयत में फ़रमान है:

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا.......... الخ

अल्लाह तआ़ला फ़ैसला कर चुका है कि तुम उसके सिवा और किसी की इबादत न करो और माँ-बाप की पूरी इताअ़त करो। उन दोनों का या उनमें से एक का बुढ़ापे का ज़माना आ जाये तो उन्हें उफ़ भी न कहना, डाँट-डपट तो बिल्कुल ही मुनासिब नहीं, बल्कि उनके साथ अदब से कलाम करना और तवाज़ो के साथ (यानी नर्मी आजिज़ी से) उनके सामने झुके रहना और अल्लाह से उनके लिये दुआ़ करना कि ख़ुदाया इन पर ऐसा ही रहम कीजिये जैसे ये बचपन में मुझ पर किया करते थे। लेकिन हाँ यह ख़्याल रहे कि अगर वे शिर्क की तरफ़ बुलायें तो उनका कहना न मानना। समझ लो कि एक दिन तुम्हें मेरे सामने खड़ा होना

Mahtab E Ashraf

है। उस वक़्त मैं अपनी इबादत का और मेरे फ़रमान के तहत माँ-बाप की इताअ़त करने का बदला दूँगा। और नेक लोगों के साथ हश्र करूँगा (यानी क़ियामत में उठाऊँगा)। अगर तुमने अपने माँ-बाप की वे बातें नहीं मानीं जो मेरे अहकाम के ख़िलाफ़ नहीं तो वे चाहे कैसे ही हों मैं तुम्हें उनसे अलग कर लूँगा। क्योंकि क़ियामत के दिन इनसान उसके साथ होगा जिसे वह दुनिया में चाहता था। इसी लिये इसके बाद ही फ़रमाया कि ईमान वालों और नेक अ़मल वालों को मैं अपने नेक बन्दों में मिला दूँगा।

हज़रत सअ़द रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेरे बारे में चार आयतें उतरीं जिनमें से एक आयत यह भी है। यह इसलिये उतरी कि मेरी माँ ने मुझसे कहा कि ऐ सअ़द! क्या ख़ुदा का हुक्म मेरे साथ नेकी करने का नहीं? अगर तूने मुहम्मद की नुबुव्वत से इनकार न किया तो वल्लाह मैं खाना पीना छोड़ दूँगी। चुनाँचे उसने यही किया, यहाँ तक कि लोग ज़बरदस्ती उसका मुँह खोलकर गिज़ा हलक़ में पहुँचा देते थे, पस यह आयत उतरी। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

और बाज़े आदमी ऐसे भी हैं जो कह देते हैं कि हम अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए, फिर जब उनको अल्लाह के रास्ते में कुछ तकलीफ़ पहुँचाई जाती है तो लोगों के तकलीफ़ पहुँचाने को ऐसा (बड़ा) समझ जाते हैं जैसे ख़ुदा का अ़ज़ाब। और अगर (कभी) कोई (मुसलमानों की) मदद आपके रब की तरफ़ से आ पहुँचती है तो (उस वक़्त) कहते हैं कि हम तो (दीन व अ़क़ीदे में) तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह को दुनिया-जहान वालों के दिलों की बातें मालूम नहीं? (यानी उनके दिल ही में ईमान न था)। (10) और (ये वाक़िआ़त इसलिए होते रहते हैं कि) अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को मालूम करके रहेगा और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम करके रहेगा। (11)	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ۭ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۭ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ○ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ○

ये कमज़ोर दिल वाले मुनाफ़िक़ लोग

उन मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र हो रहा है जो ईमानी दावे कर लेते हैं लेकिन जहाँ मुख़ालिफ़ों की तरफ़ से कोई दुख पहुँचा ये उसे ख़ुदा का अ़ज़ाब समझ कर मुर्तद हो जाते (यानी दीन इस्लाम से फिर जाते और कुफ़्र में दाख़िल हो जाते) हैं। यही मायने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह ने किये हैं, जैसे एक दूसरी आयत में है:

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ....الخ

यानी लोग एक किनारे खड़े होकर अल्लाह की इबादत करते हैं। अगर राहत मिली तो मुत्मईन हो गये,

Maktab E Ashraf

और अगर मुसीबत पहुँची तो मुँह फेर लिया.......।

यहाँ यही बयान हो रहा है कि अगर हुज़ूर को कोई ग़नीमत मिली, कोई फ़तह हासिल हुई तो अपना दीनदार होना ज़ाहिर करने लगते हैं। एक और आयत में है:

اَلَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ......... الخ

वे तुम्हें देखते रहते हैं, अगर फ़तह व नुसरत हुई, आवाज़ लगाने लगते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं हैं? और अगर काफ़िरों की बन आई तो उनसे अपनी साज़बाज़ जताने लगते हैं कि देखो हमने तुम्हारा साथ दिया और तुम्हें बचा लिया। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- बहुत मुम्किन है कि ख़ुदा अपने नेक बन्दे को बिल्कुल ही ग़ालिब कर दे, फिर तो ये अपनी इस छुपी हुई हरकत पर ख़ूब नादिम (शर्मिन्दा) हो जायेंगे। यहाँ फ़रमाया कि यह क्या बात है, इन्हें इतना भी मालूम नहीं कि ख़ुदा आ़लिमुल-ग़ैब है, जहाँ ज़बान से निकली बातों को जानता है वहाँ दिल की बातें और इरादे भी उसे मालूम हैं। अल्लाह तआ़ला भलाईयाँ बुराईयाँ पहुँचाकर नेक व बद मोमिन व मुनाफ़िक़ को अलग-अलग कर देगा, नफ़्स के पुजारी और दुनियावी फ़ायदे के इच्छुक एक किनारे हो जायेंगे और नफ़े नुक़सान में ईमान को न छोड़ने वाले ज़ाहिर हो जायेंगे। जैसे एक दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया:

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصَّابِرِيْنَ.

हम तुम्हें आज़माते रहा करेंगे यहाँ तक कि तुम में से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को हम दुनिया के सामने ज़ाहिर कर दें और तुम्हारी ख़बरें देख भाल लें।

उहुद के इम्तिहान का ज़िक्र करके फ़रमाया कि ख़ुदा मोमिनों को जिस हालत पर वे थे रखने वाला न था, जब तक कि ख़बीस व तैयब (नापाक व पाक और अच्छे व बुरे) की तमीज़ न कर ले।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ۭ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۡ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ ع ١٣

और काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि तुम (दीन में) हमारी राह चलो और (क़ियामत में) तुम्हारे गुनाह हमारे ज़िम्मे, हालाँकि ये लोग उनके गुनाहों में से ज़रा भी नहीं ले सकते, ये बिल्कुल झूठ बक रहे हैं। (12) और (अलबत्ता यह होगा कि) ये लोग अपने गुनाह अपने ऊपर लादे होंगे और अपने (उन) गुनाहों के साथ (ही) कुछ गुनाह और (भी लादे हुए होंगे) और ये लोग जैसी-जैसी झूठी बातें बनाते थे, क़ियामत में उनसे पूछताछ (और फिर सज़ा) ज़रूर होगी। (13)

काफ़िरों की बकवास और बेहूदा गोई

क़ुरैश के काफ़िर लोग मुसलमानों को बहकाने के लिये उनसे यह भी कहते थे कि तुम हमारे मज़हब पर अ़मल करो, अगर इसमें कोई गुनाह हो तो वह हमारी गर्दन पर। हालाँकि यह उसूली तौर पर ग़लत है

Muftah E Ashraf

कि किसी का बोझ कोई और उठाये। ये बिल्कुल झूठे हैं, कोई अपने रिश्तेदार के गुनाह भी अपने ऊपर नहीं ले सकता। दोस्त दोस्त को उस दिन न पूछेगा। हाँ ये लोग अपने गुनाहों के बोझ उठायेंगे और जिन्हें इन्होंने गुमराह किया है उनके बोझ भी इन पर लाद दिये जायेंगे, मगर वे गुमराह होने वाले भी हल्के न होंगे। उनका बोझ उन पर है। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ........ الخ

यानी ये अपने बोझ उठायेंगे और जिन्हें बहकाया था उनके बहकाने का गुनाह भी इन पर होगा।

नोटः किसी दूसरे आदमी को ग़लत रास्ते पर लगाने, गुमराह करने और किसी बुरी रिवायत व चलन को आ़म करने पर उस पर अ़मल करने वाले के साथ-साथ उसको भी गुनाह होगा जिसने उसकी बुनियाद डाली थी। यह गोया उस अ़मल करने वाले के अ़मल के गुनाह का बोझ नहीं बल्कि उस गुनाह की तरग़ीब देने का गुनाह है, और यह ख़ुद अपनी जगह बहुत बड़ा जुर्म है। गोया यह अपने ही गुनाह का बोझ हुआ न कि दूसरे के अ़मल और गुनाह का बोझ।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

सही हदीस में है कि जो हिदायत की तरफ़ लोगों को दावत दे क़ियामत तक जो लोग उस हिदायत पर चलेंगे उन सब को जितना सवाब होगा उतना ही इस एक को होगा, लेकिन उनके सवाब में से घटकर नहीं। इसी तरह जिसने बुराई फैलाई उस पर जो भी अ़मल करने वाले हों उन सब को जितना गुनाह होगा उतना ही इस एक को होगा, लेकिन उनके गुनाहों में कोई कमी नहीं होगी।

एक और हदीस में है कि ज़मीन पर जितना ख़ून बहाया जाता है (यानी नाहक़ क़त्ल होते हैं) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का वह लड़का जिसने अपने भाई को नाहक़ क़त्ल कर दिया था उस पर इस ख़ून का वबाल पड़ता है। इसलिये कि ज़ुल्म के तौर पर (नाहक़) क़त्ल उसी से शुरू हुआ।

इनके तमाम बोहतान झूठ इल्ज़ाम-तराशी की इनसे क़ियामत के दिन पूछताछ होगी। हज़रत उमामा रज़ि. ने फ़रमाया- हुज़ूर सल्ल. ने ख़ुदा की तमाम रिसालत पहुँचा दी। आपने यह भी फ़रमाया है कि ज़ुल्म से बचो क्योंकि क़ियामत वाले दिन अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमायेगा- मुझे अपनी इज़्ज़त और अपने जलाल की क़सम! आज एक ज़ुल्म को भी न छोडूँगा। फिर एक ऐलान करने वाला आवाज़ करेगा कि फ़ुलाँ फ़ुलाँ कहाँ है? वह आयेगा और पहाड़ के पहाड़ नेकियों के उसके साथ होंगे, यहाँ तक कि मेहशर में मौजूद लोगों की निगाहें उसकी तरफ़ उठने लगेंगी। वह ख़ुदा के सामने आकर खड़ा हो जायेगा फिर मुनादी निदा करेगा कि इसकी तरफ़ किसी का कोई हक़ हो, इसने किसी पर ज़ुल्म किया हो, वह आ जाये और अपना बदला ले ले। अब तो इधर-उधर से लोग उठ खड़े होंगे और उसे घेरकर ख़ुदा के सामने खड़े हो जायेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मेरे इन बन्दों को इनके हक़ दिलवाओ। फ़रिश्ते कहेंगे ख़ुदाया कैसे दिलवायें? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा इसकी नेकियाँ लो और इन्हें दो। चुनाँचे यूँ ही किया जायेगा, यहाँ तक कि एक नेकी भी बाक़ी न रहेगी और अभी बाज़ मज़लूम और हक़दार बाक़ी रह जायेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि इन्हें भी बदला दो। फ़रिश्ते कहेंगे अब तो इसके पास एक नेकी भी नहीं रही, अल्लाह तआ़ला हुक्म देगा कि इनके गुनाह इस पर लाद दो। फिर हुज़ूर सल्ल. ने घबराकर इस आयत की तिलावत फ़रमाईः

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ........ الخ

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

इब्ने अबी हातिम में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ऐ मुआ़ज़! क़ियामत के दिन मोमिन की तमाम

Maktaba Ashraf

कोशिशों के बारे में (यानी उसके हर-हर अमल और हरकत के बारे में) सवाल किया जायेगा, यहाँ तक कि उसकी आँखों के सुर्मे से और उसके मिट्टी के गूँधने से भी। देख ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन कोई और तेरी नेकियाँ ले ले।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ۖ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ○ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ○	और हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम की तरफ़ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, सो वह उनमें पचास साल कम एक हज़ार बरस रहे (और क़ौम को समझाते रहे)। फिर (जब उस पर भी वे बाज़ न आए तो) उनको तूफ़ान ने आ दबाया, और वे बड़े ज़ालिम लोग थे। (14) फिर (उस तूफ़ान के आने के बाद) हमने उनको और कश्ती वालों को (उस तूफ़ान से) बचा लिया, और हमने इस वाक़िए को तमाम जहान वालों के लिए इबरत का सबब बनाया। (15)

एक हज़ार साल तक लगातार तब्लीग़

इसमें नबी करीम सल्ल. की तसल्ली है। आपको ख़बर दी जाती है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम इतनी लम्बी मुद्दत तक अपनी क़ौम को ख़ुदा की तरफ़ बुलाते रहे, दिन रात पोशीदा और ज़ाहिर हर तरह आपने उन्हें ख़ुदा के दीन की दावत दी, लेकिन वे अपनी सरकशी और गुमराही में ही बढ़ते गये। बहुत कम लोग आप पर ईमान लाये। आख़िरकार ख़ुदा का ग़ज़ब उन पर पानी के तूफ़ान की शक्ल में आया और उन्हें तहस-नहस कर दिया। तो ऐ पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ आप अपनी क़ौम की इस तक्ज़ीब (यानी आपको झुठलाने) को नया ख़्याल न करें, आप अपने दिल को रन्जीदा न करें। हिदायत व गुमराही ख़ुदा के हाथ में है। जिन लोगों का जहन्नम में जाना तय हो चुका है उन्हें तो कोई भी हिदायत नहीं दे सकता। वे चाहे तमाम निशानियाँ देख लें लेकिन उन्हें ईमान नसीब नहीं होगा। आख़िरकार जैसे नूह अ़लैहिस्सलाम को निजात मिली और क़ौम डूब गई इसी तरह आख़िर में कामयाबी आप ही को मिलेगी और आपके मुख़ालिफ़ व विरोधी नाकाम होंगे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि चालीस साल की उम्र में नूह अ़लैहिस्सलाम को नुबुव्वत मिली और नुबुव्वत के बाद साढ़े नौ सौ साल तक आपने अपनी क़ौम को तब्लीग़ की। तूफ़ान की आ़लमगीर (विश्व-व्यापी) तबाही के बाद हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम साठ साल तक ज़िन्दा रहे, यहाँ तक कि इनसानों की नस्ल फैल गई और दुनिया में ये काफ़ी संख्या में नज़र आने लगे।

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत नूह की कुल उम्र साढ़े नौ सौ साल की थी, तीन सौ साल तो आपके किसी दावत के बग़ैर गुज़रे, तीन सौ साल तक ख़ुदा की तरफ़ अपनी क़ौम को बुलाते रहे और साढ़े तीन सौ साल तूफ़ान के बाद ज़िन्दा रहे। लेकिन यह क़ौल ग़रीब है और आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ से तो यही मालूम होता है कि आप साढ़े नौ सौ साल तक अपनी क़ौम को ख़ुदा की वह्दानियत (एक अल्लाह के माबूद होने) की तरफ़ बुलाते रहे।

Maktab E Ashraf

औन बिन अबी शद्दाद रह. कहते हैं कि जब आपकी उम्र साढ़े तीन सौ साल की थी उस वक़्त अल्लाह की 'वही' आपको आई। उसके बाद साढ़े नौ सौ बरस तक आप लोगों को कलामे ख़ुदा पहुँचाते रहे। इसके बाद फिर साढ़े तीन सौ साल की और उम्र पाई। लेकिन यह भी ग़रीब क़ौल है। ज़्यादा ठीक हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल नज़र आता है। वल्लाहु आलम।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने मुजाहिद रह. से पूछा कि हज़रत नूह अपनी क़ौम में कितनी मुद्दत तक रहे? उन्होंने कहा साढ़े नौ सौ साल। आपने फ़रमाया फिर उस वक़्त से लोगों के अख़्लाक़ उनकी उम्रें और अ़क़्लें घटती ही चली आईं। जब क़ौमे नूह पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम से अपने नबी को और ईमान वालों को जो आपके साथ आपके हुक्म से तूफ़ान से पहले कश्ती में सवार हो चुके थे, बचा लिया। सूरः हूद में इसकी पूरी तफ़सील गुज़र चुकी है। इसलिये हम यहाँ दोबारा ज़िक्र नहीं करते।

हमने उस कश्ती को दुनिया के लिये इबरत और सीख लेने का निशान बना दिया। या तो ख़ुद उस कश्ती को जैसे कि हज़रत क़तादा रह. का क़ौल है कि इस्लाम के शुरू ज़माने तक वह जूदी पहाड़ पर थी, या यह कि उस कश्ती को देखकर फिर पानी के सफ़र के लिये जो कश्तियाँ लोगों ने बनाईं उनको, कि उन्हें देखकर ख़ुदा का वह बचाना याद आ जाता है। जैसे फ़रमान हैः

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ○ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ....... الخ

हमारी क़ुदरत की एक निशानी उनके लिये यह भी है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में बैठा लिया, और हमने उनके लिये और भी उस जैसी सवारियाँ बना दीं......।

सूरः हाक़्क़ा में फ़रमाया- जब पानी का तूफ़ान आया तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार कर लिया और इस वाक़िए को तुम्हारे लिये यादगार बना दिया, ताकि जिन कानों को ख़ुदा ने याद रखने की ताक़त दी है वे याद रखें। यहाँ शख़्स से जिन्स की तरफ़ चढ़ाव लिया है जैसे इस आयत में दुनिया वाले आसमान के लिये सितारों का एक सजावट होना बयान करके उनकी नौईयत का शैतानों के लिये एक कोड़ा और मार होना बयान कियाः

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا.............الخ

और हमने क़रीब के आसमान को चिराग़ों (यानी सितारों) से सजा रखा है, और हमने उनको (यानी सितारों को) शैतानों को मारने का ज़रिया और साधन भी बनाया है।

इसी तरह क़ुरआन की एक और आयत में इनसान का मिट्टी से पैदा होना ज़िक्र करके फ़रमाया- फिर हमने उसे नुत्फ़े की शक्ल में एक ठहरने की जगह में पहुँचा दिया। हाँ यह भी हो सकता है कि आयत में 'हा' की ज़मीर को सज़ा और अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाया जाये। वल्लाहु आलम।

नोटः मतलब यह है कि जैसे यह मुम्किन है कि 'हमने बनाया उसको' में 'उस' से मुराद कश्ती और तूफ़ान से निजात देना हो सकता है, इसी तरह यहाँ 'उस' से मुराद अल्लाह का अ़ज़ाब और सज़ा हो, कि हमने उस अ़ज़ाब और सज़ा को बाद में आने वालों और दुनिया के लिये एक सबक़ की निशानी बनाया है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

यहाँ यह ख़्याल रहे कि तफ़सीर इब्ने कसीर के बाज़ नुस्ख़ों में शुरू तफ़सीर में कुछ इबारत ज़्यादा है जो बाज़ नुस्ख़ों में नहीं। वह यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को साढ़े नौ सौ साल

Maktab E Ashraf

तक का आज़माया जाना बयान किया और उनकी क़ौम को उनकी इताअ़त के साथ आज़माना बतलाया, कि उनके झुठलाने की वजह से ख़ुदा ने उन्हें ग़र्क़ कर दिया। फिर उसके बाद जला दिया। फिर क़ौमे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की आज़माईश का ज़िक्र किया कि उन्होंने भी अल्लाह के नबी की फ़रमाँबरदारी व पैरवी न की। फिर लूत अ़लैहिस्सलाम की आज़माईश का ज़िक्र किया और उनकी क़ौम का हश्र बयान फ़रमाया। फिर हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के वाक़िआत सामने रखे। फिर क़ौमे आ़द, क़ौमे समूद, क़ारून वालों, फ़िरऔनियों हामानियों वग़ैरह का ज़िक्र किया, जो अल्लाह पर ईमान न लाये और उसको एक न मानने की वजह से उन्हें भी तरह-तरह की सज़ायें दी गईं। फिर तमाम रसूलों के सरदार अपने पैग़म्बरे आज़म सल्ल. के तकलीफ़ें उठाने और मुश्रिकों व मुनाफ़िक़ों के ज़रिये सताये जाने का ज़िक्र किया और आपको हुक्म फ़रमाया कि अहले किताब से बेहतरीन तरीक़े पर मुनाज़रा (गुफ़्तगू और बहस-मुबाहसा) करें।

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ
رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ
وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَاِنْ
تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ
وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝

और हमने इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से (जो कि बुत-परस्त थे) फ़रमाया कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। (16) तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज़ बुतों को पूज रहे हो, और (उसके मुताल्लिक़) झूठी बातें घड़ते हो। तुम ख़ुदा को छोड़कर जिनको पूज रहे हो वे तुमको कुछ भी रिज़्क़ देने का इख़्तियार नहीं रखते। सो तुम रिज़्क़ ख़ुदा के पास से तलाश करो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र अदा करो, और तुमको उसी के पास लौटकर जाना है। (17) और अगर तुम लोग मुझको झूठा समझो तो (मेरा कुछ नुक़सान नहीं, क्योंकि) तुमसे पहले भी बहुत-सी उम्मतें (अपने पैग़म्बरों को) झूठा समझ चुकी हैं, और (उनका भी कुछ नुक़सान नहीं हुआ। वजह उसकी यह है कि) पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ (बात का) साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। (18)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम

अल्लाह को एक मानने वालों और ईमान लाने वालों के इमाम, अम्बिया के बाप हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम का बयान हो रहा है कि उन्होंने अपनी क़ौम को अल्लाह की तौहीद की दावत दी, रियाकारी से बचने और दिल में परहेज़गारी क़ायम करने का हुक्म दिया। उसकी नेमतों पर शुक्रगुज़ारी

करने को फ़रमाया। और इसका नफ़ा भी बतलाया कि दुनिया व आख़िरत की बुराईयाँ इससे दूर हो जायेंगी और दोनों जहान की नेमतें इससे मिल जायेंगी। साथ ही उन्हें बतलाया कि जिन बुतों की तुम पूजा कर रहे हो ये तो न कोई नफ़ा दे सकते हैं न कोई नुक़सान पहुँचा सकते हैं। तुमने ख़ुद ही इनके नाम और इनके हुलिये और शक्लें बना ली हैं। वे तो तुम्हारी तरह मख़्लूक़ हैं, बल्कि तुमसे भी कमज़ोर हैं। ये तो तुम्हारी रोज़ियों के भी मुख़्तार नहीं। अल्लाह ही से रोज़ी तलब करो। इसी का ख़ास करके इस आयत में बयान फ़रमायाः

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.

कि हम सब तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं।

यही हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा की दुआ में है:

رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ.

ऐ मेरे अल्लाह! मेरे लिये अपने पास ही जन्नत में मकान बना।

चूँकि उसके सिवा कोई रिज़्क़ नहीं दे सकता इसलिये तुम उससे रोज़ी तलब करो, और जब उसकी दी हुई रोज़ी खाओ तो उसके सिवा दूसरे की इबादत भी न करो। उसकी नेमतों का शुक्र भी बजा लाओ, तुम में से हर एक उसी की तरफ़ लौटने वाला है। वह हर आमिल (अमल करने वाले) को उसी के अमल का बदला देगा। देखो मुझे झूठा कहकर ख़ुश न हो लो, नज़रें डालो कि तुमसे पहले जिन्होंने नबियों को झूठा कहा उनकी कैसी दुर्गत बनी। याद रखो नबियों का काम सिर्फ़ पैग़ामे इलाही पहुँचा देना है। हिदायत का देना या न देना ख़ुदा के हाथ में है। ख़ुद को सआदत-मन्दों (नेकबख़्तों) में बनाओ, बदबख़्तों में शामिल न करो। हज़रत क़तादा रह. तो फ़रमाते हैं कि इसमें नबी करीम सल्ल. की और ज़्यादा तसल्ली की गई है। इस मतलब का तक़ाज़ा तो यह है कि पहला कलाम तो ख़त्म हुआ और यहाँ से लेकर 'फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही' तक यह सब इबारत एक अलग मज़मून के तौर पर है। इब्ने जरीर रह. ने तो खुले लफ़्ज़ों में यही कहा है, लेकिन क़ुरआन के अलफ़ाज़ से तो बज़ाहिर मालूम होता है कि यह सब कलाम हज़रत इब्राहीम ख़लीलुर्रहमान अलैहिस्सलाम का है। आप क़ियामत के क़ायम होने की दलीलें पेश कर रहे हैं, क्योंकि इस तमाम कलाम के बाद आपकी क़ौम का जवाब ज़िक्र हुआ है।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنْشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يُعَذِّبُ

क्या उन लोगों को यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला किस तरह मख़्लूक़ को अव्वल बार पैदा करता है (कि नापैदी की हालत से वजूद में लाता है), फिर वही दोबारा उसको पैदा करेगा, यह अल्लाह के नज़दीक बहुत ही आसान बात है। (19) आप (उन लोगों से) कहिए कि तुम लोग मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि ख़ुदा तआ़ला ने मख़्लूक़ को किस तौर पर अव्वल बार पैदा किया है। फिर अल्लाह तआ़ला पिछली बार भी पैदा करेगा। बेशक अल्लाह

Mastab E Ashraf

مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ
تُقْلَبُوْنَ ۝ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى
الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ وَالَّذِيْنَ ع 2 14
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا
مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (20) जिसको चाहेगा अज़ाब देगा (यानी जो उसका हक़दार होगा) और जिस पर चाहे रहमत फ़रमा देगा (यानी जो उसका अहल होगा) और तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। (21) और न तुम ज़मीन में (छुपकर ख़ुदा को) हरा सकते हो और न आसमान में (उड़कर), और ख़ुदा के सिवा न तुम्हारा कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। (22)

और जो लोग ख़ुदा की आयतों के और (ख़ास तौर पर) उसके सामने जाने के इनकारी हैं, वे लोग (क़ियामत में) मेरी रहमत से नाउम्मीद होंगे, और यही हैं जिनको दर्दनाक अज़ाब होगा। (23)

दोबारा पैदा करना और मरने के बाद की ज़िन्दगी

देख रहे हैं कि वे कुछ न थे फिर अल्लाह ने पैदा कर दिया, लेकिन फिर भी मरकर जीने के क़ायल नहीं हालाँकि इस पर किसी दलील की ज़रूरत नहीं, जो प्रारम्भ (यानी पहली बार) में पैदा कर सकता है उस पर दोबारा पैदा करना बहुत ही आसान है। फिर उन्हें हिदायत करते हैं कि तुम ज़मीन की दूसरी और निशानियों पर ग़ौर करो। आसमानों को सितारों को ज़मीनों को पहाड़ों को दरख़्तों को जंगलों को नहरों को दरियाओं को समुद्रों को फलों को खेतों को देखो तो सही कि ये सब कुछ न था फिर ख़ुदा ने सब कुछ कर दिया, क्या तमाम निशानियाँ ख़ुदा की क़ुदरत को तुम पर ज़ाहिर नहीं करतीं? तुम नहीं देखते कि इतना बड़ा कारीगर, क़ुदरत वाला ख़ुदा क्या कुछ नहीं कर सकता। वह तो सिर्फ़ "हो जा" के कहने से तमाम को रचा देता है, वह ख़ुदमुख़्तार है उसे साधनों और सामान की ज़रूरत नहीं। इसी मज़मून को दूसरी जगह फ़रमाया कि वही नई पैदाईश में पैदा करता है, वही दोबारा पैदा करेगा, और यह तो उस पर बहुत आसान है। फिर फ़रमाया कि ज़मीन में चल-फिरकर देखो अल्लाह ने इनकी पहली बार की पैदाईश किस तरह की तो तुम्हें मालूम हो जायेगा कि क़ियामत के दिन की दूसरी पैदाईश की क्या कैफ़ियत होगी। अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, जैसे फ़रमाया कि हम उन्हें दुनिया के हर हिस्से में और ख़ुद उनकी अपनी जानों में अपनी निशानियाँ इस क़द्र दिखायेंगे कि उन पर हक़ ज़ाहिर हो जायेगा। एक और जगह इरशाद है:

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ......... الخ

क्या वे बग़ैर किसी चीज़ के पैदा किये गये या वे ख़ुद ही अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) हैं? कुछ नहीं ये बेयक़ीन लोग हैं। यह ख़ुदा की शान है कि जिसे चाहे अज़ाब करे जिस पर चाहे रहम करे। वह हाकिम है, क़ब्ज़े वाला है, जो चाहता है जो इरादा करता है कर देता है कोई उसके हुक्म को टाल नहीं

सकता, कोई उसके इरादे को बदल नहीं सकता, कोई उससे चूँ व चरा कर नहीं सकता। कोई उससे सवाल कर ही नहीं सकता और वह सब पर ग़ालिब है जिससे चाहे पूछ बैठे, सब उसके क़ब्ज़े में हैं, उसकी मिल्क में हैं, ख़ल्क़ (पैदा करने और बनाने) का ख़ालिक़, अम्र (हुक्म करने) का मालिक वही है। उसने जो कुछ किया सरासर अ़दल (इन्साफ़ पर आधारित) है, इसलिये कि वही मालिक है, वह ज़ुल्म से पाक है।

Maktab E Ashraf

हदीस शरीफ़ में है कि अगर अल्लाह तआ़ला सातों आसमानों वालों और सातों ज़मीनों वालों को अ़ज़ाब करे तब भी वह ज़ालिम नहीं। अ़ज़ाब और रहम सब उसकी चीज़ें हैं। सब के सब क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ लौटाये जायेंगे, उसी के सामने हाज़िर होकर पेश होंगे। ज़मीन और आसमान वालों में से कोई उसे मग़लूब नहीं कर (झुका नहीं) सकता, बल्कि सब पर वही ग़ालिब है। हर एक उससे काँप रहा है, सब उसके दर के फ़क़ीर और वह सबसे ग़नी (बेपरवाह) है। तुम्हारा कोई वली और मददगार उसके सिवा नहीं। अल्लाह की आयतों से कुफ़्र करने वाले, उसकी मुलाक़ात को न मानने वाले ख़ुदा की रहमत से मेहरूम हैं और उनके लिये दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक दुख को और ज़्यादा बढ़ाने वाले अ़ज़ाब हैं।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا
اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ
مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ ۙ

सो (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की इस दिल को छू लेने वाली तक़रीर के बाद) उनकी क़ौम का (आख़िरी) जवाब बस यह था कि (आपस में) कहने लगे कि उनको या तो क़त्ल कर डालो या उनको जला दो। (चुनाँचे जलाने का सामान किया) सो अल्लाह ने उनको उस आग से बचा लिया। बेशक इस वाक़िए में उन लोगों के लिए जो कि ईमान रखते हैं, कई निशानियाँ हैं। (24) और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने (वअ़ज़ यानी तक़रीर में यह भी) फ़रमाया कि तुमने जो ख़ुदा को छोड़कर बुतों को (माबूद) तजवीज़ कर रखा है, बस यह तुम्हारे दुनिया के आपसी ताल्लुक़ात की वजह से है। फिर क़ियामत में (तुम्हारा यह हाल होगा कि) तुममें से एक दूसरे का मुख़ालिफ़ हो जाएगा और एक दूसरे पर लानत करेगा। और (अगर तुम इस बुत-परस्ती से बाज़ न आए तो) तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और तुम्हारा कोई हिमायती न होगा। (25)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को धमकियाँ

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का यह दलीलों से पुर वअ़ज़ (नसीहत) भी उन लोगों के दिलों पर असर न कर सका और उन्होंने यहाँ भी अपनी उसी बदबख़्ती का प्रदर्शन किया। जवाब तो इन दलीलों का दे नहीं

सकते थे लिहाज़ा अपनी क़ुव्वत से हक़ को दबाने लगे और अपनी ताक़त से सच को झुठलाने लगे। कहने लगे एक गड्ढा खोदो, उसमें आग भड़काओ और उस आग में इसे डाल दो कि जल जाये। लेकिन ख़ुदा ने उनके इस मक्र व चाल को उन ही पर लौटा दिया। लम्बे समय तक लकड़ियाँ जमा करते रहे और एक गड्ढा खोदकर उसके इर्द-गिर्द दीवारें खड़ी करके लकड़ियों में आग लगा दी। जब उसके शोले आसमान तक पहुँचने लगे और इतनी ज़ोर की आग रोशन हुई कि ज़मीन पर कहीं इतनी आग नहीं देखी गई तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को पकड़कर मिन्जनीक़ (एक तरह की गोफन) में डालकर झुलाकर (यानी घुमाकर) उस आग में डाल दिया। लेकिन ख़ुदा ने उसे अपने ख़लील (दोस्त) पर बाग़ व बहार बना दिया। आप कई दिन के बाद सही व सालिम उसमें से निकल आये। यह और इस जैसी और क़ुरबानियाँ थीं जिनके सबब आपको इमामत का मन्सब (ओहदा और मक़ाम) अ़ता हुआ। आपने अपना नफ़्स रहमान के लिये, अपना जिस्म आग के लिये, अपनी औलाद क़ुरबानी के लिये, अपना माल मेहमान के लिये वक़्फ़ कर दिया, यही वजह है कि दुनिया के तमाम दीनों वाले आपसे मुहब्बत रखते हैं। अल्लाह तआ़ला ने आग को आपके लिये बाग़ बना दिया। इस वाक़िए में ईमान वालों के लिये अल्लाह की क़ुदरत की बहुत सी निशानियाँ हैं। आपने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि जिन बुतों को तुमने माबूद बना रखा है ये सब खेल दुनिया तक है। तुम्हारी यह बुत-परस्ती चाहे तुम्हारे को दुनिया की मुहब्बत हासिल करा दे लेकिन क़ियामत के दिन मामला इसके विपरीत हो जायेगा। आपस की मुहब्बत और दोस्ती की जगह नफ़रत और इत्तिफ़ाक़ के बदले इख़्तिलाफ़ हो जायेगा। एक दूसरे से झगड़ोगे, एक दूसरे पर इल्ज़ाम रखोगे, एक दूसरे पर लानत भेजोगे, एक दूसरे गिरोह पर फटकार बरसायेगा। सब दोस्त दुश्मन बन जायेंगे, हाँ परहेज़गार नेक लोग आज भी एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह (हमदर्द, भला चाहने वाले) और दोस्त रहेंगे।

काफ़िर लोग सब के सब मैदाने क़ियामत की ठोकरें खा-खाकर आख़िरकार जहन्नम में जायेंगे। कोई इतना भी न होगा कि उनकी किसी तरह की मदद कर सके। हदीस में है कि तमाम अगलों पिछलों को ख़ुदा तआ़ला एक मैदान में जमा करेगा, कौन जान सकता है कि दोनों दिशाओं में से किस तरफ़? हज़रत उम्मे हानी ने जो हज़रत अ़ली की बहन हैं, जवाब दिया कि अल्लाह और उसका रसूल ही ज़्यादा इल्म वाला है। फिर एक मुनादी (ऐलान करने वाला) अ़र्श के नीचे से आवाज़ देगा ऐ अल्लाह को एक मानने वालो! तो तौहीद (ईमान) वाले अपना सर उठायेंगे। फिर यही आवाज़ लगायेगा फिर तीसरी बार यही पुकारेगा और कहेगा अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी तमाम ख़ताओं को माफ़ फ़रमा दिया। अब लोग खड़े होंगे और आपस की नाचाक़ियों (विवादों और झगड़ों) और लेन-देन का मुतालबा करेंगे तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आवाज़ दी जायेगी कि ऐ ईमान वालो! तुम तो आपस में एक दूसरे को माफ़ कर दो, तुम्हें अल्लाह बदला देगा।

सो (इतने वअ़ज़ और नसीहत पर भी उनकी क़ौम ने न माना) सिर्फ़ लूत (अ़लैहिस्सलाम) ने उनकी तस्दीक़ फ़रमाई और (इब्राहीम ने) फ़रमाया कि मैं अपने परवर्दिगार की (बतलाई हुई जगह की) तरफ़ वतन छोड़ करके चला जाऊँगा, बेशक वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (26) और हमने (हिजरत के बाद) उनको	فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّیْ مُهَاجِرٌ اِلٰی رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِیْ ذُرِّیَّتِهِ

Maktab E Ashraf

इस्हाक़ (बेटा) और याक़ूब (पोता) इनायत फ़रमाया, और हमने उनकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब (के सिलसिले) को क़ायम रखा, और हमने उनका सिला उनको दुनिया में भी दिया और आख़िरत में भी (बड़े दर्जे के) नेक बन्दों में होंगे। (27)	النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِى الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ○

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम

कहा जाता है कि हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के भतीजे थे। लूत बिन हारून बिन आज़र। आपकी सारी क़ौम में से एक तो हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ईमान लाये थे और एक हज़रत सारा जो आपकी बीवी थीं। एक रिवायत में है कि जब आपकी बीवी को उस ज़ालिम बादशाह ने अपने सिपाहियों के ज़रिये अपने पास बुलवाया तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा था कि देखो मैंने अपना रिश्ता तुमसे भाई बहन का बतलाया है, तुम भी यही कहना, क्योंकि इस वक़्त दुनिया में मेरे और तुम्हारे सिवा कोई मोमिन नहीं है, तो मुम्किन है कि इससे मुराद यह हो कि कोई मियाँ-बीवी हमारे सिवा ईमान वाला नहीं। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम आप पर ईमान लाये थे मगर उसी वक़्त हिजरत करके मुल्क शाम चले गये थे, फिर अहले सदूम की तरफ़ नबी बनाकर भेज दिये गये थे, जैसा कि बयान गुज़रा और कुछ तफ़सील आगे भी आयेगी।

हिजरत का इरादा या तो हज़रत इब्राहीम ने किया जैसा कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और इमाम ज़ह्हाक रह. का बयान है, तो गोया हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के ईमान लाने के बाद आपने अपनी क़ौम से ताल्लुक़ ख़त्म कर लिया और अपना इरादा ज़ाहिर किया कि और किसी जगह जाऊँ शायद वहाँ के लोग ईमान ले आयें। इ़ज़्ज़त अल्लाह की, उसके रसूलों और मोमिनों की है। हिक्मत वाले अक़्वाल व अफ़आ़ल, तक़दीर शरीअ़त अल्लाह की है।

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि आप कूफ़े से हिजरत करके शाम की तरफ़ गये। हदीस में है कि हिजरत के बाद की हिजरत हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की हिजरत की तरफ़ होगी। उस वक़्त ज़मीन पर सबसे बुरे लोग बाक़ी रह जायेंगे जिन्हें ज़मीन थूक देगी और ख़ुदा उनसे नफ़रत करेगा, उन्हें आग सुअरों और बन्दरों के साथ लिये फिरेगी। रातों को दिनों को उन्हीं के साथ रहेगी और उनकी झड़न खाती रहेगी। एक और रिवायत में है कि जो उनमें से पीछे रहेगा उसे यह आग खा जायेगी और पूरब की तरफ़ से कुछ लोग मेरी उम्मत में ऐसे निकलेंगे जो क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा (यानी सिर्फ़ ज़बान से पढ़ेंगे, अ़मली तौर पर उसका कुछ असर न लेंगे)। उनके एक जत्थे के ख़ात्मे के बाद दूसरा गिरोह खड़ा होगा, यहाँ तक कि आपने बीस से भी ज़्यादा बार इसे दोहराया। यहाँ तक कि उन्हीं के आख़िरी गिरोह में दज्जाल निकलेगा।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का बयान है कि एक ज़माना तो हम पर वह था कि हम एक मुसलमान भाई के लिये दिर्हम व दीनार कोई चीज़ नहीं समझते थे, अपनी दौलत अपने भाई ही की समझते थे। फिर वह ज़माना आया कि दौलत हमें अपने मुस्लिम भाई से ज़्यादा अ़ज़ीज़ (प्यारी) मालूम होने लगी।

मैंने हुज़ूर सल्ल. से सुना है कि अगर तुम बैलों की दुमों के पीछे लग जाओगे (यानी खेती करोगे) और तिजारत में मशग़ूल हो जाओगे और ख़ुदा की राह का जिहाद छोड़ दोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी गर्दनों में ज़िल्लत के पट्टे डाल देगा जो उस वक़्त तक तुमसे अलग न होंगे जब तक तुम फिर से वहीं न आ जाओ जहाँ थे, और तुम तौबा न कर लो। फिर वही हदीस बयान की जो ऊपर गुज़री और फ़रमाया कि मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो क़ुरआन पढ़ेंगे और बुरे आमाल में लिप्त होंगे। क़ुरआन उनके हलक़ों से नीचे नहीं उतरेगा। उनके इल्म को देखकर तुम अपने इल्मों को हक़ीर (बहुत कम और बेहैसियत) समझने लगोगे। वे मुसलमानों को क़त्ल करेंगे। पस जब ये लोग ज़ाहिर हों तुम इन्हें क़त्ल कर देना, फिर निकलें फिर मार डालना, फिर ज़ाहिर हों फिर क़त्ल कर देना। वह भी ख़ुशनसीब है जो इन्हें क़त्ल करे और वह भी ख़ुशनसीब है जो इनके हाथों क़त्ल किया जाये। जब उनके गिरोह निकलेंगे तो अल्लाह उन्हें बरबाद कर देगा, फिर निकलेंगे फिर बरबाद हो जायेंगे, इसी तरह हुज़ूर ने कोई बीस मर्तबा बल्कि इससे भी ज़्यादा बार यही फ़रमाया।

हमने इब्राहीम को इस्हाक़ नाम का बेटा दिया और इस्हाक़ को याक़ूब नाम का। जैसे फ़रमान है कि जब हज़रत इब्राहीम ख़लीलुर्रहमान अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को और उनके माबूदों को छोड़ दिया तो अल्लाह तआ़ला ने आपको इस्हाक़ व याक़ूब दिया और हर एक को नबी बनाया, इसमें यह भी इशारा है कि पोता भी आपकी मौजूदगी में हो जायेगा। इस्हाक़ बेटे थे और याक़ूब ज़ायद थे।

एक दूसरी आयत में है कि हमने इब्राहीम की बीवी साहिबा को इस्हाक़ के पीछे याक़ूब की बशारत (ख़ुशख़बरी) दी और फ़रमाया कि क़ौम के छोड़ने के बदले अल्लाह तुमको दिल से जज़ा देंगे। जिससे तुम्हारी आँखें ठंडी रहीं। पस साबित हुआ कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम हज़रत इस्हाक़ के बेटे थे, यही हदीस से भी साबित है। क़ुरआन की एक और आयत में है कि क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब हज़रत याक़ूब की मौत का वक़्त आया तो वह अपने लड़कों से कहने लगे तुम मेरे बाद किसकी इबादत करोगे? उन्होंने कहा आपके और आपके वालिद इस्माईल इस्हाक़ के माबूद की जो यक्ता और अकेला है, कोई उसका शरीक नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि करीम बिन करीम बिन करीम युसूफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से जो नक़ल है कि इस्हाक़ व याक़ूब हज़रत इब्राहीम अ़लैहि. के फ़रज़न्द (बेटे) थे, इससे मुराद फ़रज़न्द के फ़रज़न्द को फ़रज़न्द कह देना है। यह नहीं कि सुलबी फ़रज़न्द दोनों थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. तो कहाँ अदना आदमी भी ऐसी ग़लत बात नहीं कह सकता।

हमने उन्हीं की औलाद में किताब व नुबुव्वत रख दी। ख़लील का ख़िताब उन्हें मिला, इमाम उन्हें कहा गया, फिर उनके बाद उन्हीं की नस्ल में नुबुव्वत व हिक्मत रही, बनी इस्राईल के तमाम अम्बिया हज़रत याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम की नस्ल से हैं। हज़रत ईसा तक तो यह सिलसिला यूँ ही चलता रहा, बनी इस्राईल के इस आख़िरी पैग़म्बर ने अपनी उम्मत को साफ़ कह दिया कि मैं तुम्हें नबी-ए-अ़रबी क़ुरैशी हाशमी ख़ातिमुर्रुसुल तमाम इनसानों के सरदार की बशारत (ख़ुशख़बरी) देता हूँ जिन्हें ख़ुदा ने चुन लिया है। आप हज़रत इस्माईल की नस्ल में से थे। हज़रत इस्माईल की औलाद में से आपके सिवा और कोई नबी नहीं हुआ।

हमने उन्हें दुनिया के सवाब भी दिये और आख़िरत की नेकियाँ भी अ़ता फ़रमाईं। दुनिया में खुला

रिज़्क़, पाक जगह, नेक बीवी, तारीफ़ व नेकनामी और ज़िक्रे ख़ैर दिया। सारी दुनिया के दिलों में आपकी मुहब्बत डाल दी। इसके बावजूद कि अपनी इताअ़त की तौफ़ीक़ रोज़-बरोज़ और ज़्यादा दी। पूरी इताअ़त व फ़रमाँबरदारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ार दी, तौफ़ीक़ के साथ दुनिया की भलाईयाँ भी अ़ता फ़रमाईं। और आख़िरत में भी नेक लोगों में रखा। जैसे फ़रमान है कि इब्राहीम फ़रमाँबरदारों की जमाअ़त में से था, तौहीद वाला था, मुश्रिकों में से न था। आख़िरत में भले लोगों का साथी हुआ।

Maktaba Ashraf

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ○ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۭ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ○ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ○ ع	और हमने लूत (अ़लैहिस्सलाम) को पैग़म्बर बनाकर भेजा, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले किसी ने दुनिया जहान वालों में नहीं किया। (28) क्या तुम मर्दों से फ़ेल "यानी बुरा काम" करते हो? (वह बेहयाई का काम यही है) और तुम डाका डालते हो, और (ग़ज़ब यह है कि) अपनी भरी मज्लिस में नामाक़ूल हरकत करते हो। सो उनकी क़ौम का (आख़िरी) जवाब बस यह था कि तुम हम पर अल्लाह का अ़ज़ाब ले आओ अगर तुम (इस बात में) सच्चे हो (कि ये काम अ़ज़ाब को लाने वाले हैं)। (29) लूत (अ़लैहिस्सलाम) ने दुआ़ की, ऐ मेरे रब! मुझको इन फ़साद "यानी बिगाड़" पैदा करने वाले लोगों पर ग़ालिब (और इनको अ़ज़ाब से हलाक) कर दे। (30)

ع ٣ ٨ ١٥

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की तंबीह

लूतियों (हज़रत लूत की क़ौम के लोगों) की मशहूर बुरी आ़दत (लड़कों के साथ बदफ़ेली) से हज़रत लूत उन्हें रोकते हैं कि तुम जैसी ख़बासत तुम से पहले तो कोई जानता भी न था। कुफ़्र, रसूलों को झुठलाना, अल्लाह के हुक्मों की मुख़ालफ़त तो ख़ैर और भी करते रहे मगर मर्दों से शहवत (जिन्सी इच्छा) पूरी करना तो किसी ने भी नहीं किया। उनमें दूसरी बुरी ख़स्लत यह थी कि रास्ते रोकते थे, डाके डालते थे, क़त्ल व फ़साद करते थे, माल लूट लेते थे, मज्लिसों में खुलेआ़म बुरी बातें और बेहूदा हरकतें करते थे। कोई किसी को नहीं रोकता था, यहाँ तक कि बाज़ का क़ौल है कि वे लवातत (बदफ़ेली) भी खुलेआ़म करते थे। गोया समाज का एक मश्ग़ला यह भी था। हवायें निकाल कर हंसते थे, मेंढे लड़वाते थे, मुर्ग़ लड़वाते थे और बहुत बुरी-बुरी हरकतें करते थे। खुलेआ़म मज़े लेकर गुनाह करते थे।

हदीस में है कि राह चलतों पर आवाज़ें कसते थे, कंकर पत्थर फेंकते रहते थे, सीटियाँ बजाते थे, कबूतर बाज़ी करते थे, नंगे हो जाते थे। कुफ़्र व दुश्मनी, सरकशी, ज़िद और हठधर्मी यहाँ तक बढ़ी हुई थी कि नबी के समझाने पर कहने लगे- जा-जा बस नसीहत छोड़, जिस अ़ज़ाब से डरा रहा है उसे ले आ। हम

भी तेरी सच्चाई देखें। आजिज़ आकर हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने भी ख़ुदा के आगे हाथ फैला दिये कि ख़ुदाया इन बिगड़े हुए और फ़साद फैलाने वालों पर मुझे ग़लबा दे, मेरी मदद कर।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ
قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ
اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۚ قَالَ اِنَّ
فِيْهَا لُوْطًا ۭ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ڒ
لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڒ كَانَتْ مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَلَمَّآ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا
سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا
تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۣ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ
اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝
اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا
مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

और हमारे (वे) भेजे हुए फ़रिश्ते जब इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के पास ख़ुशख़बरी लेकर आए तो (बातचीत के दौरान में) उन फ़रिश्तों ने (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से) कहा कि हम उस बस्ती वालों को हलाक करने वाले हैं, (क्योंकि) वहाँ के रहने वाले बड़े शरीर हैं। (31) इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि वहाँ तो लूत (अ़लैहिस्सलाम भी मौजूद) हैं। फ़रिश्तों ने कहा कि जो-जो वहाँ (रहते) हैं हमको सब मालूम हैं। हम उनको और उनके ख़ास मुताल्लिक़ीन को बचा लेंगे सिवाय उनकी बीवी के, कि वह अ़ज़ाब में रह जाने वालों में होगी। (32) (यह बातचीत तो इब्राहीम अ़लैहि. से हुई) और (फिर वहाँ से फ़ारिग़ होकर) जब हमारे वे भेजे हुए लूत के पास पहुँचे तो लूत (अ़लैहि.) उन (के आने) की वजह से रन्जीदा हुए और उनके सबब तंगदिल हुए। और (फ़रिश्तों ने जब यह हाल देखा तो) वे फ़रिश्ते कहने लगे कि आप (किसी बात का) अन्देशा न करें और न रन्जीदा हों, हम आप और आपके ख़ास मुताल्लिक़ीन को बचा लेंगे सिवाय आपकी बीवी के, कि वह अ़ज़ाब में रह जाने वालों में होगी। (33) (और आपको मय मुताल्लिक़ीन उससे बचाकर) हम इस बस्ती के (बक़िया) रहने वालों पर एक आसमानी अ़ज़ाब उनकी बदकारियों की सज़ा में नाज़िल करने वाले हैं। (34) और हमने उस बस्ती के कुछ ज़ाहिरी निशान (अब तक) रहने दिए हैं उन लोगों (की इबरत) के लिए जो अ़क्ल रखते हैं। (35)

फ़रिश्तों की हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह से गुफ़्तगू

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की जब न मानी गई बल्कि सुनी भी न गई तो आपने अल्लाह तआ़ला से

Maktab E Ashraf

मदद तलब की, जिस पर फ़रिश्ते भेजे गये। इनसानी शक्ल में ये फ़रिश्ते पहले बतौर मेहमान हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के घर आये। आपने मेहमान-नवाज़ी का सामान तैयार किया और उनके सामने ला रखा। जब देखा कि उन्हें उसकी रग़बत (रुचि) नहीं तो दिल ही दिल में डर गये। फ़रिश्तों ने उनकी दिलजोई शुरू की और ख़बर दी कि एक नेक बच्चा उनके यहाँ पैदा होगा। हज़रत सारा जो वहाँ मौजूद थीं यह सुनकर ताज्जुब करने लगीं जैसा कि सूरः हूद और सूरः हिज्र में मुफ़स्सल तफ़सीर गुज़र चुकी है।

अब फ़रिश्तों ने अपना इरादा ज़ाहिर किया जिसे सुनकर हज़रत ख़लीलुर्रहमान अ़लैहिस्सलाम को ख़्याल आया कि अगर वे लोग कुछ और ढील दिये जायें तो हो सकता है कि सही रास्ते पर आ जायें। इसलिये फ़रमाने लगे कि वहाँ तो लूत हैं। फ़रिश्तों ने जवाब दिया हम उनसे ग़ाफ़िल नहीं हैं। हमें हुक्म है कि उन्हें और उनके ख़ानदान को बचा लें। हाँ उनकी बीवी तो बेशक हलाक होगी। क्योंकि वह अपनी क़ौम के कुफ़्र में उनका साथ देती रही है।

यहाँ से रुख़्सत होकर ख़ूबसूरत युवकों की सूरतों में ये हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँचे। इन्हें देखते ही हज़रत लूत दुविधा और असमंजस में पड़ गये कि अगर इन्हें पास ठहराते हैं तो इनकी ख़बर पाते ही वे लोग चढ़कर आ जायेंगे, मुझे तंग करेंगे और इन्हें परेशान करेंगे। अगर नहीं ठहराता तो यह उन्हीं के हाथ पड़ जायेंगे। क़ौम की ख़स्लत से वाक़िफ़ थे इसलिये रन्जीदा और ग़मगीन हो गये। लेकिन फ़रिश्तों ने उनकी यह घबराहट दूर कर दी कि आप घबराईये नहीं, रंजीदा न होईये हम तो ख़ुदा के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं। उन्हें ग़ारत करने के लिये आये हैं। आप और आपका ख़ानदान सिवाय आपकी बीवी के बच जायेगा। बाक़ी इन सब पर आसमानी अ़ज़ाब आयेगा और इन्हें इनकी बदकारी का नतीजा दिखा दिया जायेगा।

फिर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने उनकी बस्तियों को ज़मीन से उठाया, आसमान तक ले गये और वहाँ से उलट दिया। फिर उन पर उनके नाम व निशान लगे पत्थर बरसाये गये और जिस अ़ज़ाबे ख़ुदा को वे दूर समझ रहे थे वह क़रीब ही निकल आया। उनकी बस्तियों की जगह एक कड़वे गन्दे और बदबूदार पानी की झील रह गई। जो लोगों के लिये इबरत (सबक़ और नसीहत) हासिल करने का ज़रिया है, और अ़क़्लमन्द लोग इस ज़ाहिरी निशान को देखकर उनकी बुरी तरह हलाकत को याद करके ख़ुदा की नाफ़रमानियों पर दिलेरी न करें। अ़रब के सफ़र में रात दिन यह मन्ज़र उनके सामने था।

और मद्यन वालों के पास हमने उन (की बिरादरी) के भाई शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को पैग़म्बर बनाकर भेजा। सो उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो (और शिर्क छोड़ दो) और क़ियामत के दिन से डरो, और सरज़मीन में फ़साद मत फैलाओ। (36) सो उन लोगों ने शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया, पस ज़लज़ले ने उनको आ पकड़ा, फिर वे अपने घरों में औंधे गिरकर रह गए। (37)	وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝

मद्यन की सरज़मीन पर एक पैग़म्बर की पुकार

खुदा के बन्दे और उसके सच्चे रसूल हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने मद्यन में अपनी कौम को वअ़ज़ (दीनी नसीहत और बयान) किया, उन्हें एक अल्लाह जिसका कोई शरीक नहीं की इबादत का हुक्म दिया। उन्हें खुदा के अ़ज़ाब और उसकी सज़ाओं से डराया। उन्हें क़ियामत के होने का यक़ीन दिलाकर फ़रमाया कि उस दिन के लिये कुछ तैयारियाँ कर लो। उस दिन का ख़्याल रखो, लोगों पर ज़ुल्म व ज़्यादती न करो। खुदा की ज़मीन में फ़साद न करो, बुराईयों से अलग रहो। उनमें एक ऐब यह भी था कि नाप-तौल में कमी करते थे। लोगों के हक़ मारते, डाके डालते, रास्ते बन्द कर देते थे। साथ ही खुदा और उसके रसूल से कुफ़्र करते थे। उन्होंने पैग़म्बर की नसीहतों पर कान तक न धरा बल्कि उन्हें झूठा कहा, इस पर उन पर अ़ज़ाबे खुदा बरस पड़ा। सख़्त भौंचाल आया और साथ ही इतनी तेज़ व सख़्त आवाज़ आई कि दिल फट गये, रूहें परवाज़ कर गईं और घड़ी की घड़ी में सब का ढेर हो गया। उनका पूरा क़िस्सा सूरः आराफ़ और सूरः शुअ़रा में गुज़र चुका है।

وَعَادًا وَّثَمُوْدَاْ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ۝ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ۝ فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

और हमने आ़द और समूद को भी (उनके बैर और मुख़ालफ़त की वजह से) हलाक किया, और यह हलाक होना तुमको उनके रहने के स्थानों से नज़र आ रहा है। और (उनकी यह हालत थी कि) शैतान ने उनके (बुरे) आमाल को उनकी नज़र में अच्छा कर रखा था, और (इस तरह से) उनको (हक़) रास्ते से रोक रखा था, और वे लोग (वैसे) होशियार थे। (38) और हमने क़ारून और फ़िरऔ़न और हामान को भी (उनके कुफ़्र के सबब) हलाक किया। और उन (तीनों) के पास मूसा (अ़लैहिस्सलाम हक़ की) खुली दलीलें लेकर आए थे, फिर उन लोगों ने ज़मीन में सरकशी की और (हमारे अ़ज़ाब से) भाग न सके। (39) तो हमने हर एक को उसके गुनाह की सज़ा में पकड़ लिया। सो उनमें बाज़ों पर तो हमने तेज़ हवा भेजी और उनमें बाज़ों को हौलनाक आवाज़ ने आ दबाया। और उनमें बाज़ को हमने ज़मीन में धंसा दिया। और उनमें बाज़ को हमने (पानी में) डुबो दिया। और अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन यही लोग (शरारतें करके) अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते थे। (40)

Maktab E Ashraf

क़ौमे आ़द व समूद

आ़द वाले हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम की क़ौम थी। अहक़ाफ़ में रहते थे जो यमन के शहरों में हज़रे-मौत के क़रीब है। समूदी हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के लोग थे। ये हिज्र में बस्ते थे जो वादी-ए-क़ुरा के क़रीब है। अ़रब के रास्ते में उनकी बस्ती आती थी जिसे ये अच्छी तरह जानते थे।

क़ारून एक दौलत वाला शख़्स था जिसके भरपूर ख़ज़ानों की चाबियाँ एक जमाअ़त की जमाअ़त उठाती थी। फ़िरऔ़न मिस्र का बादशाह था और हामान उसका वज़ीरे आज़म था। उसके ज़माने में हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अ़लैहिस्सलाम नबी होकर उसकी तरफ़ गये थे। ये दोनों क़िब्ती काफ़िर थे। जब उनकी सरकशी हद से गुज़र गई तो ख़ुदा की तौहीद के मुन्किर हो गये, रसूलों को तकलीफ़ें दीं और उनकी न मानी तो अल्लाह तआ़ला ने उन सब को तरह-तरह के अ़ज़ाब से हलाक किया। आ़दियों पर हवायें भेजीं, उन्हें अपनी क़ुव्वत व ताक़त का बड़ा घमण्ड था, किसी को अपने मुक़ाबले का न जानते थे, उन पर हवा भेजी जो बड़ी तेज़ व सख़्त थी, जो उन पर ज़मीन के पत्थर उड़ा-उड़ाकर बरसाने लगी। आख़िरकार ज़ोर पकड़ते पकड़ते यहाँ तक बढ़ गई कि उन्हें उचक ले जाती और आसमान के क़रीब लेजाकर फिर गिरा देती। सर के बल गिरते और सर अलग हो जाता। ऐसे हो जाते जैसे खजूर के दरख़्त जिनके तने अलग हों और शाख़ें अलग हों।

क़ौमे समूद वालों पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हुई। दलाईल दे दिये गये, उनकी तलब के मुवाफ़िक़ पत्थर में से उनके देखते हुए ऊँटनी निकली लेकिन फिर भी उन्हें ईमान नसीब न हुआ, बल्कि सरकशी में बढ़ते रहे। ख़ुदा के नबी हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम को धमकाने और डराने लगे और ईमान वाले बन्दों से भी कहने लगे कि हमारे शहर छोड़ दो वरना हम तुम्हें संगसार कर देंगे। उन्हें एक चीख़ ने टुकड़े-टुकड़े कर दिया। दिल दहल गये, कलेजे उड़ गये और सब की रूहें निकल गईं।

क़ारून ने सरकशी और तकब्बुर किया, रब्बुल-आ़लमीन की नाफ़रमानी की, ज़मीन में फ़साद मचा दिया, अकड़-अकड़ कर चलने लगा, बस ख़ुदा ने उसे मय उसके महलों के ज़मीन में धंसा दिया जो आज तक धंसता जा रहा है।

फ़िरऔ़न, हामान और उनके लश्करों को सुबह ही सुबह एक ही घड़ी में दरिया में ग़र्क़ कर दिया। उनमें से एक भी न बचा जो उनका नाम तो कभी लेता। अल्लाह ने यह जो कुछ किया उन पर ज़ुल्म न था बल्कि उनके ज़ुल्म का बदला था। उनके करतूत का फल था, उनकी करनी की भरनी थी। यह बयान यहाँ एक तरतीब के तौर पर है कि पहले झुठलाने वाली उम्मतों का ज़िक्र हुआ फिर उनमें से हर एक को अ़ज़ाब से हलाक करने का। किसी ने कहा है कि सब से पहले जिन पर पत्थरों का मींह बरसाने का ज़िक्र है उनसे मुराद लूती हैं, और ग़र्क़ की जाने वाली क़ौम क़ौमे नूह है, यह ठीक क़ौल नहीं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह मन्क़ूल तो है लेकिन इसकी सनद मुत्तसिल नहीं है। इन दोनों क़ौमों की हलाकत का ज़िक्र इसी सूरत में तफ़सील से बयान हो चुका है। फिर काफ़ी फ़ासले के बाद यह बयान हुआ है। क़तादा रह. से यह भी नक़ल है कि पत्थरों का मींह (बारिश) जिन पर बरसाया गया उनसे मुराद लूती हैं और जिन्हें चीख़ से हलाक किया गया उनसे मुराद शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम है, लेकिन यह क़ौल भी इन आयतों से दूर और हटा हुआ है। वल्लाहु आलम

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ۝

जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा और कारसाज़ तजवीज़ कर रखे हैं, उन लोगों की मिसाल मकड़ी जैसी मिसाल है, जिसने एक घर बनाया, और कुछ शक नहीं कि सब घरों में ज़्यादा बोदा मकड़ी का घर होता है। अगर वे (हक़ीक़ते हाल को) जानते तो ऐसा न करते। (41) अल्लाह तआ़ला (तो) उन सब चीज़ों (की हक़ीक़त और कमज़ोरी) को जानता है जिस-जिसको वे लोग ख़ुदा के सिवा पूज रहे हैं। (पस वे चीज़ें तो बहुत ही कमज़ोर हैं) और वह (अल्लाह तआ़ला) ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (42) और हम इन (क़ुरआनी) मिसालों को लोगों के (समझाने के) लिए बयान करते हैं, और मिसालों को बस इल्म वाले लोग ही समझते हैं। (43)

मकड़ी का घर

जो लोग अल्लाह तआ़ला रब्बुल-आ़लमीन के सिवा औरों की परस्तिश और पूजा-पाठ करते हैं उनकी कमज़ोरी और बेवक़ूफ़ी का बयान हो रहा है। ये उनसे मदद के, रोज़ी के, सख़्ती में काम आने के उम्मीदवार होते हैं। इनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई मकड़ी के जाले में बारिश, धूप और सर्दी से पनाह चाहे। अगर इनमें इल्म होता तो ये ख़ालिक़ (पैदा करने वाले यानी अल्लाह तआ़ला) को छोड़कर मख़्लूक़ (यानी जिनको ख़ुद पैदा किया गया है) से उम्मीदें न बाँधते। पस इनका हाल ईमान वाले बन्दों के हाल से बिल्कुल अलग और विपरीत है। वे एक मज़बूत सुतून को थामे हुए हैं और ये मकड़ी के जाले में अपना सर छुपाये हुए हैं। उनका दिल ख़ुदा की तरफ़, उनका जिस्म नेक आमाल की तरफ़ मश़ग़ूल है और इनका दिल मख़्लूक़ की तरफ़ और जिस्म उसकी पूजा-पाठ की तरफ़ झुका हुआ है।

फिर अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों को डरा रहा है कि वह उनसे, उनके शिर्क से और उनके झूठे माबूदों से ख़ूब आगाह है। उन्हें उनकी शरारत का वह मज़ा चखायेगा कि याद करेंगे। उन्हें ढील देने में भी उसकी मस्लेहत व हिक्मत है, न यह कि वह अ़लीम ख़ुदा उनसे बेख़बर हो। हमने तो मिसालों से भी मसाईल समझा दिये, लेकिन उनके सोचने समझने का माद्दा, उनमें ग़ौर व फ़िक्र करने की तौफ़ीक़ सिर्फ़ अ़मल करने वाले उ़लेमा को होती है, जो अपने इल्म में पूरे हैं।

इस आयत से साबित हुआ कि ख़ुदा तआ़ला की बयान की हुई मिसालों को समझ लेना सच्चे इल्म की दलील है। हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने एक हज़ार मिसालें रसूले करीम सल्ल. से सीखी समझी हैं। (मुस्नद अहमद) इससे आपकी फ़ज़ीलत और आपकी इल्मियत ज़ाहिर है। हज़रत अ़मर बिन मुर्रा फ़रमाते हैं कि कलामुल्लाह शरीफ़ की जो आयत मेरी तिलावत में आये और उसके तफ़सीली मायने-मतलब मेरी समझ में न आयें तो मेरा दिल दुखता है, मुझे सख़्त तकलीफ़ होती है और मैं डरने लगता हूँ कि कहीं

Maktab E Ashraf

खुदा के नज़दीक मेरी गिनती जाहिलों में तो नहीं हो गई। क्योंकि फ़रमाने खुदा यही है कि हम इन मिसालों को लोगों के सामने पेश कर रहे हैं, लेकिन सिवाय आ़लिमों के इन्हें दूसरे समझ नहीं सकते।

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۝	अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को मुनासिब तौर पर बनाया है। ईमान वालों के लिए इसमें (अल्लाह के इबादत का हक़दार होने की) बड़ी दलील है। (44)

यह कायनात कोई खेल नहीं

अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी क़ुदरत का बयान हो रहा है कि वही आसमानों और ज़मीनों का ख़ालिक़ (बनाने वाला) है। उसने इन्हें खेल-तमाशे के तौर पर या बेकार नहीं बनाया, बल्कि इसलिये बनाया कि यहाँ लोगों को बसाये, फिर उनकी नेकियाँ बदियाँ देखे। क़ियामत के दिन उनके आमाल के मुताबिक़ उन्हें बदला दे। बुरों को उनके बुरे आमाल पर सज़ा और नेकों को उनकी नेकियों पर जज़ा (यानी अच्छा बदला) इनायत हो।

अल्लाह का शुक्र है कि बीसवाँ पारा अपनी तफ़सीर के साथ मुकम्मल हुआ।

Maktab E Ashraf

इस तफ़सीर में इस्तेमाल किये गये कुछ अलफ़ाज़ के मायने

अ़र्श/अ़र्शे-मुअ़ल्ला:- वह आसमान जहाँ अल्लाह तआ़ला का तख़्त है। यह या इस जैसे दूसरे अलफ़ाज़ लोगों को समझाने के लिये हैं, इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं कि अल्लाह तआ़ला किसी ख़ास तख़्त पर बैठता है। उसकी ज़ात इन चीज़ों से पाक है।

अ़रफ़ात:- मक्का शरीफ़ के पास का वह मैदान जिसमें हज के मौक़े पर 9 ज़िलहिज्जा को सब हाजी हज़रात जमा होते हैं।

इद्दत:- वह वक़्त जिसमें तलाक़ या पति के मर जाने के बाद औ़रत किसी से निकाह नहीं कर सकती।

इल्लिय्यीन:- जन्नत का नाम, जन्नत के एक आला मक़ाम का नाम, जन्नत के बुलन्द दर्जे, बुलन्द दर्जे के लोग, आसमानों पर रहने वाले फ़रिश्ते।

क़ब्र:- गोर, तुर्बत, वह गढ़ा जिसमें मुर्दे को दफ़न करते हैं।

क़िब्ला:- मक्का शरीफ़ में अल्लाह का घर जिसकी तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।

ग़ार:- ज़मीन के नीचे या पहाड़ वग़ैरह में खोह, गड्ढा।

जन्नत:- बाग़, स्वर्ग, फ़िरदौस।

जन्नतुल-मावा:- आराम का बाग़, जन्नत।

जन्नतुल-बक़ीअ़:- मदीने का एक क़ब्रिस्तान जिसमें अहले-बैत और बहुत से सहाबा किराम दफ़न हैं।

जन्नतुल-मुअ़ल्ला:- मक्का मुकर्रमा का क़ब्रिस्तान।

तहतुस्सरा:- पाताल, ज़मीन का सब से निचला हिस्सा।

दोज़ख़:- जहन्नम, नर्क, वह जगह जहाँ काफ़िर व मुश्रिक और गुनाहगार क़ियामत के बाद रखे जायेंगे।

पुलसिरात:- दोज़ख़ के ऊपर का वह पुल जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है।

बैतुल्लाह:- अल्लाह का घर, काबा शरीफ़।

बैतुल-मुक़द्दस:- फ़िलिस्तीन में अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिये बनायी हुई वह इमारत जिसको हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अ़लैहिमस्सलाम ने बनाया।

बैतुल-मामूर:- ख़ाना काबा के बिल्कुल ऊपर आसमानों पर अल्लाह का घर जहाँ भारी तायदाद में फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला की इबादत और तवाफ़ में मशग़ूल हैं।

Maktab E Ashraf

मस्जिदे हरामः- वह मस्जिद जो काबा शरीफ़ के इहाते में है।

मस्जिदे-अक़्साः- बैतुल-मुक़द्दस में वह मस्जिद जो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बनाई है।

सिज्जीनः- दोज़ख़ की एक घाटी का नाम। एक स्थान का नाम जिसमें काफ़िरों और बदकारों के आमाल नामे हैं।

सिद्रतुल-मुन्तहाः- हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम का मक़ाम। बेरी का वह पेड़ जो सातवें आसमान पर है।

सुफ़्फ़ाः- चबूतरा, मस्जिदे नबवी के पास वह चबूतरा जहाँ सहाबा दीन की तालीम सीखने के लिये क़ियाम करते और इबादत में मशग़ूल रहते थे।

हफ़्त अक़्लीमः- सात विलायतें, मुराद पूरी दुनिया है।

हौज़े-कौसरः- जन्नत की एक नहर, जन्नत का एक हौज़।

हरमः- काबा शरीफ़ के चारों ओर कुछ किलो मीटर तक का वह इलाक़ा जिसमें न किसी जानवर का शिकार किया जा सकता है न ख़ुद उगने वाली घास या पेड़-पौधे वग़ैरह को काटा जा सकता है।

हिजाज़ः- अ़रब देश का वह पश्चिमी भाग जिसमें मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा और जेद्दा आदि शहर स्थित हैं।

शख़्सियात, जमाअ़तें, क़ौमें और मिल्लतें

अहले-बैतः- घर के, ख़ानदानी, रिश्तेदार। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के कुनबे के हज़रात, जिनमें हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम शामिल हैं।

अन्सारः- यह **नासिर** का बहुवचन है जिसके मायने हैं मददगार। मुराद है मदीन के रहने वाले वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और अपने दीन के लिये अपने वतन को छोड़कर आये मुसलमानों की मदद की और उन्हें सहारा दिया।

अस्हाबे-सुफ़्फ़ाः- वे सहाबा किराम जो **सुफ़्फ़ा** पर रहते थे।

अस्हाबे-कहफ़ः- ग़ार वाले, वे पाँच या सात या नौ ईसाई जो अपने ज़माने के काफ़िर बादशाह के डर से ग़ार (खोह) में जा छुपे थे, जहाँ वे सो गये। उनके साथ एक कुत्ता भी है।

अहले किताबः- किताब वाले, उन पैग़म्बरों को मानने और पैरवी करने वाले जिन पर कोई आसमानी किताब उतरी है। इससे यहूदी और ईसाई भी मुराद होते हैं।

अ़जमः- अ़रब देशों के अ़लावा बाक़ी सारी दुनिया के लिये अ़जम का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जाता है। वैसे अ़जम के मायने आते हैं गूँगा।

अ़मालीक़/अ़मालिक़ाः- एक जाति जो हज़रत **मूसा** अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में बैतुल-मुक़द्दस के आस-पास आबाद थी। ये अ़रब के क़बीलों में से निकली हुई क़ौम थी जो बहुत से ख़ित्तों में फैल

गयी थी, इनमें से मुल्क शाम के बादशाह भी हुए।

आदः- एक कौम जिसके पैग़म्बर हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम थे।

ईसाईः- हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पैरोकार। ईसाई धर्म को मानने वाले।

काफ़िरः- ख़ुदा तआ़ला को न मानने वाला। बेदीन।

काहिनः- जिन्नात से मालूम करके ग़ैब की ख़बरें बताने वाला, क़िस्मत का हाल बताने वाला, ज्योतिषी। इसका स्त्रीलिंग **काहिना** आता है।

ग़ाज़ीः- काफ़िरों से लड़ने वाला मुस्लिम, बहादुर, सूरमा।

गुलाम/बाँदीः- ज़र-ख़रीद, बन्दा। पहले ज़माने में इनसानों की ख़रीद व बेच के लिये मण्डियाँ लगती थीं। इसके अ़लावा इस्लामी शरीअ़त की परिभाषा में ग़ुलाम-बाँदी के कुछ ख़ास मायने हैं। मगर अब वह ग़ुलाम बाँदी नहीं पाये जाते, लेकिन भविष्य में उनका वजूद हो भी सकता है।

जमहूरः- अक्सरियत (जैसे जमहूर फ़ुक़हा, जमहूर मुहद्दिसीन)।

जिन्नातः- अल्लाह की एक मख़्लूक़ जो आग से पैदा की गयी है। छुपी हुई मख़्लूक़।

ज़िम्मीः- वह काफ़िर जो इस्लामी हुकूमत का आज्ञाकारी हो और उससे जिज़या (उसकी जान, माल और आबरू की हिफ़ाज़त का टैक्स) लिया जाये। इसका स्त्रीलिंग **ज़िम्मिया** आता है।

दज्जालः- एक झूठा शख़्स जो आख़िरी ज़माने में पैदा होगा और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उसको क़त्ल करेंगे।

ताबिईः- मुहद्दिसीन की परिभाषा में वह मुसलमान जिसने किसी सहाबी-ए-रसूल को देखा हो। इसका बहुवचन **ताबिईन** आता है।

नबीः- अल्लाह तआ़ला का पैग़ाम पहुँचाने वाला। पैग़ाम या ख़बर पहुँचाने वाला।

फ़रिश्तेः- अल्लाह की एक मख़्लूक़ जो नूर से बनी हुई है। नेक, भोला-भाला।

फ़क़ीहः- इस्लामी क़ानून का माहिर, शरई मसलों से वाक़िफ़। इसका बहुवचन **फ़ुक़हा** आता है।

बनी इस्राईलः- इस्राईल की सन्तान, यहूद की क़ौम। इस्राईल हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का लक़ब (उपनाम) है।

बिद्अ़तीः- दीन में कोई नई बात निकालने वाला, कोई नई रस्म ईजाद करने वाला।

मिल्लतः- दीन, शरीअ़त, फ़िर्क़ा, क़ौम, गिरोह।

मोमिनः- ईमान लाने वाला, ईमान वाला। इसका स्त्रीलिंग **मोमिना** आता है।

मुहाजिरः- वह मुसलमान शख़्स जिसने रसूलुल्लाह सल्ल. के ज़माने में मक्का से मदीना को हिजरत की। अपने वतन को छोड़ने वाला। इसका स्त्रीलिंग **मुहाजिरा** आता है।

मुहद्दिसः- हदीस के इल्म का जानने वाला। इसका बहुवचन **मुहद्दिसीन** आता है।

मुजाहिदः- कोशिश करने वाला, अल्लाह की राह में लड़ने वाला, काफ़िरों से जिहाद करने वाला।

मेहरमः- क़रीबी रिश्तेदार होने के कारण जिस शख़्स से किसी औरत का निकाह नहीं हो सकता

Maktab E Ashraf

वह उसका मेहरम होता है जैसे बाप, भाई, चचा आदि।

मजूसीः- आग को पूजने वाला, ज़रदुश्त का पैरो, पारसी।

मुनाफ़िकः- जो शख़्स ज़ाहिर में मुसलमान हो और दिल से काफ़िर हो। रियाकार, जिसके दिल में कुछ हो और ज़बान पर कुछ। इसका स्त्रीलिंग **मुनाफ़िक़ा** आता है।

मुश्रिकः- अल्लाह तआ़ला की ख़ुदाई में किसी और को शरीक करने वाला, मूर्तिपूजक।

मुर्तदः- दीन इस्लाम से फिर जाने वाला।

याजूज-माजूजः- दो इनसानी क़ौमें जिनका ज़िक्र क़ुरआन में आया है। ये क़ियामत के क़रीब निकलेंगी।

रसूलः- पैग़ाम पहुँचाने वाला, ख़ुदा की तरफ़ से भेजा हुआ। पैग़म्बर जो किताबे इलाही लाये।

राहिबः- ईसाई आ़बिद व ज़ाहिद, पादरी, दुनिया से ला-ताल्लुक़, संन्यासी। इसका स्त्रीलिंग राहिबा आता है।

सहाबीः- रसूले पाक सल्ल. के साथी या वे मुसलमान जिन्होंने आपको ईमान की हालत में देखा हो। इसका स्त्रीलिंग **सहाबिया** और बहुवचन **सहाबा** आता है।

समूदः- एक क़ौम जिसके पैग़म्बर हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम थे।

हवारीः- हज़रत ईसा के प्रारम्भिक अनुयायी।

हरबीः- दुश्मन, लड़ाका, दारुल-हरब का रहने वाला।

इस्लामी महीनों के नाम

मुहर्रम, सफ़र, रबीउल-अव्वल, रबीउस्सानी, जमादियुल-अव्वल, जमादियुस्सानी, रजब, शाबान, रमज़ान, शव्वाल, ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा।

चार मशहूर आसमानी किताबें

तौरातः- वह आसामानी किताब जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर उतरी।

ज़बूरः- वह आसमानी किताब जो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर उतरी।

इन्जीलः- वह आसमानी किताब जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर उतरी।

क़ुरआन मजीदः- वह आसामानी किताब जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई। यह आख़िरी आसमानी किताब है।

और ज़्यादा अलफ़ाज़ और मायने के लिये देखें इसी तफ़सीर की पहली जिल्द के आख़िरी पृष्ठ।